TEXT BOOK FOR

SR.SECONDARY COURSE

HINDI

BOARD OF SCHOOL EDUCATION HUBLI, KARNATAKA

ಬೋರ್ಡ್ ಆಫ್ ಸ್ಕೂಲ್ ಎಜುಕೇಶನ್ ಹುಬ್ಬಳ್ಳಿ, ಕರ್ನಾಟಕ

Upper Ground Floor, IT Park, Deshpande Nagar

0836-4061132

www.bseh.ac.in

contact@bseh.ac.in

भाग-1

पाठ | पृष्ठ सख्या

मॉड्यूल-1
कविता का पठन

1. कविता कैसे पढ़े 1-11
2. रैदास 12-29
3. तुलसीदास 30-43
4. मीराबाई 44-58
5. रहीम 59-75

मॉड्यूल-2
गद्य का पठन

6. गद्य कैसे पढ़े 76-101
7. पेड़ और एक था ठूँठ 102-116
8. दो कलाकार 117-140
9. अच्छा कैसे लिखे 141-158

मॉड्यूल-3
लेखन कैशल

10. सार कैसे लिखे 159-184
11. बिहारी 1-18
12. पद्माकर 19-28
13. सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' 29-44
14. महादेवी वर्मा 45-56

मॉड्यूल-2
गद्य का पठन

15. अनुराधा 57-83
16. अनपढ़ बनाये रखने की साजिश 44-104
17. पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ 105-122
18. कुटज 123-148

भाग-2

पाठ	पृष्ठ सख्या
मॉड्यूल-3	
लेखन कैशल	
19. पत्र कैसे लिखे	149-170
20. भाव पल्लवन कैसे करे	171-184
21. प्रतिवेदन, टिप्पण, प्रारूपण	185-205
मॉड्यूल-1	
कविता का पठन	
22. रामधारी सिंह दिनकर	1-15
23. गजानन माधव मुक्तिबोध	16-28
24. राजेन्द्र उपाध्याय	29-42
25. हिन्दी कविता की विकास यात्रा	43-82
मॉड्यूल-2	
गद्य का पठन	
26. क्रोध	83-104
27. आखिरी चट्टान	105-124
28. जिजीविषा की विजय	125-144
मॉड्यूल-3	
लेखन कैशल	
29. निबंध कैसे लिखे	145-164
30. तालिका आरेख निर्माण.... आदि	165-170
31. परियोजना लेखन	181-193
मॉड्यूल-4	
उपन्यास पठन	
32. विराटा की पद्मिनी	1-157
मॉड्यूल-2	
गद्य पठन	
33. तीन लघुकथाए	158-167

भाग-3

पाठ | पृष्ठ सख्या

मॉड्यूल-5
सूचना प्रौद्योगिकी और हिन्दी

A

34A. सूचना प्रौद्योगिकी स्वरूप और महत्त्व	1-30
35A. संचार माध्यम और उनके प्रकार	31-38
36A. संचार की प्रक्रिया	39-54
37A. संचार माध्यम के प्रमुख अवयव	55-67
38A. संचार माध्यम की भाषा	68-84

B

34B. वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक विकास	98-115
35B. भारतीय विज्ञान	116-135
36B. जनसंख्या वृद्धि और विज्ञान	136-154
37B. कम्प्यूटर और हिन्दी	155-170
38B. विज्ञान की भाषा	171-194

301hi01

1

कविता कैसे पढ़ें

बचपन में आपने बहुत सी कविताएँ याद की होंगी। कई कविताएँ पढ़ी भी होंगी। अब तक आप तरह-तरह की कविताओं से परिचित हो चुके हैं। इन कविताओं को पढ़ते हुए शायद आपके मन में एक प्रश्न बार-बार उठा होगा कि कविता है क्या? वे तत्त्व क्या हैं जो कविता को गद्य से अलग करते हैं? इस प्रश्न का उत्तर ढूँढ़ते समय आपने महसूस किया होगा कि कविता में मुख्य रूप से भावों और गद्य में प्रायः विचारों की प्रधानता होती है।

मनुष्य अपने हर अनुभव को किसी-न-किसी प्रकार से अभिव्यक्त करने का प्रयास करता है। कई बार आदमी अपने जिस अनुभव को कहकर अथवा बोलकर अभिव्यक्त नहीं कर पाता उसे गुनगुनाकर या रंगों के माध्यम से, इशारे से अथवा अभिनय के द्वारा आसानी से प्रकट कर देता है। कविता भाषा का एक ऐसा ही माध्यम है, जिसके द्वारा भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं। कविता में सौंदर्य तथा भावना की सहज अभिव्यक्ति होती है, जो पाठक के मन को आसानी से छू जाती है।

प्रस्तुत पाठ में हम कविता क्या है, इसे क्यों और कैसे पढ़ा जाना चाहिए आदि प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने का प्रयास करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता के महत्त्व का उल्लेख कर सकेंगे;
- कविता के अवयवों का सूचीकरण कर सकेंगे;
- कविता क्यों तथा कैसे पढ़ी जाए, बता सकेंगे;
- कविता के भावपक्ष तथा शिल्प सौंदर्य की व्याख्या कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

अपनी पसंद की किसी भी कविता की चार पंक्तियाँ यहाँ लिखकर उसमें निहित मूलभाव को स्पष्ट कीजिए

कविता

____

____

____

____

____

मूलभाव

____

____

____

____

____

1.1 आइए समझें

कविता का स्वरूप

आप जानते हैं कि कविता साहित्य की सबसे प्राचीन विधा है। अधिकांश प्राचीन भारतीय ग्रंथों की रचना कविता में ही हुई है। कविता को पारिभाषित करने तथा इसके स्वरूप को पहचानने का प्रयास प्राचीन काल से ही होता रहा है। प्राचीन संस्कृत ग्रंथों में कहा गया है कि 'शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्' अर्थात् शब्द और अर्थ के सुंदर सामंजस्य को ही काव्य कहा जाता है। इसी परिभाषा को आधार मानकर प्राचीन काव्य शास्त्रियों ने काव्य की आत्मा को ढूँढ़ने का प्रयास किया था। किसी ने रस को कविता की आत्मा माना तो किसी ने ध्वनि को, किसी ने रीति को माना, तो किसी ने वक्रोक्ति को और किसी ने अलंकार को। किंतु बाद में हिंदी साहित्य में कविता की परिभाषा दूसरे ढंग से की जाने लगी।

प्राचीन काल में अलंकारों का बहुत महत्त्व था, परंतु आधुनिक काल में अलंकारहीन कविता की परंपरा चल पड़ी। छंद के भी बंधन नहीं रह गए। छंदहीन कविताओं की झड़ी-सी लग गई। कविता शब्द के गूढ़ अर्थ से अलग होकर सामान्य शब्दों के प्रयोग

द्वारा व्यंग्य और विरोध को उजागर करने लगी। उदाहरण के लिए निम्नलिखित काव्य पंक्तियाँ देखिए–

कुछ लोग मूर्तियाँ बनाकर
फिर
बेचेंगे क्रांति की (अथवा)
(षड्‌यंत्र की)
कुछ और लोग
सारा समय
कसमें खाएँगे
लोकतंत्र की।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने कविता की परिभाषा तथा स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा है, *''हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द-विधान करती आई है, उसे कविता कहते हैं।''* कविता से मानव भाव की रक्षा होती है। मानो वे पदार्थ या व्यापार विशेष नेत्रों के सामने नाचने लगते हैं। वे मूर्तिमान होते दिखाई देने लगते हैं। उसकी उत्तमता या अनुत्तमता का विवेचन करने में बुद्धि से काम लेने की ज़रूरत नहीं पड़ती। कविता की प्रेरणा से मनोवेगों काऽप्रवाह फूट पड़ता है। तात्पर्य यह है कि कविता मनोवेगों को जाग्रत करने का उत्तम साधन है।

कुछ इसी तरह की परिभाषा आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने भी दी है, *''कविता का लोक प्रचलित अर्थ वह वाक्य है, जिसमें भावावेश हो, कल्पना हो, पदलालित्य हो तथा प्रयोजन की सीमा समाप्त हो चुकी हो।''*

भावतत्त्व

व्यक्ति के भीतर उठने वाली भावनाएँ, कल्पनाएँ और अनुभव।

इस प्रकार कविता का स्वरूप उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर कुछ इस तरह निर्धारित किया जा सकता है।

- कविता में भाव तत्त्व की प्रधानता होती है।
- कल्पना के मिश्रण से सौंदर्य चित्रण को कविता में सहज और ग्राह्य बनाया जाता है।
- कविता में चिंतन अथवा विचारों की जटिलता नहीं होती।
- कविता की शब्दावली गद्‌य से विशिष्ट होती है। इसमें लयात्मकता अनिवार्य रूप से मौजूद होती है तथा शब्दों का संयोजन पाठक के हृदय को सहज ही छू जाता है। कम-से-कम शब्दों में बड़ी-से-बड़ी बात अथवा समस्या को बहुत ही सुंदर ढंग से चित्रित किया जाता है।
- कविता में केवल अर्थ ग्रहण कराकर बात को स्पष्ट करने की क्षमता नहीं होती, बल्कि इसके द्वारा बिंब-विधान भी किया जाता है। कविता का बिंब-विधान ही पाठक के मन में कविता के प्रभाव को स्थायित्व प्रदान करता है। बिंब एक प्रकार का शब्द चित्र होता है, जो कविता में ही उपस्थित होता है। इसी कारण

कविता का अर्थ अभिधा की अपेक्षा लक्षणा अर्थात् स्थिति की लाक्षणिकता के आधार पर ग्रहण किया जाता है।

साथ में दिए चित्र को ध्यानपूर्वक देखिए...। आपको कैसा लग रहा है या आप क्या देख रहे हैं? आप देख रहे हैं– एक स्त्री, इसके अलावा एक और चेहरा आपको नज़र आ रहा होगा। यह नारी भी हो सकती या कोई नर... वह क्या सोच रहा है? दिए गए दो गोले किसके प्रतीक हैं... चाँद का या सूरज का... रात का चित्र है या दिन का...? इसके अतिरिक्त भी आप बहुत कुछ सोच रहे हैं... सोच सकते हैं... बिल्कुल समान स्थिति कविता के साथ भी होती है। किसी एक कविता को पढ़ने के बाद अलग-अलग व्यक्ति अलग-अलग तरीके से कविता का भाव ग्रहण करता है।

पाठगत प्रश्न 1.1

सही विकल्प का चयन कर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

1. कविता में ....तत्त्व की प्रधानता होती है।

   (क) भाव, (ख) विचार, (ग) कल्पना, (घ) एक

2. आधुनिक कविता में ....कविता की परंपरा चल पड़ी।

   (क) अलंकृत, (ख) अलंकारहीन, (ग) छंदबद्ध, (घ) वक्रोक्तिमूलक

3. किसने कहा है कि 'कविता हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य द्वारा रचित वाणी विधान है।'

   (क) आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, (ख) बाबू गुलाब राय, (ग) आचार्य रामचंद्र शुक्ल (घ) दंडी

4. कविता में अनिवार्य रूप से मौजूद होती है।

   (क) उत्तमता, (ख) लयात्मकता, (ग) क्षमता, (घ) चित्रात्मकता

1.2 कविता का महत्त्व

आपने अनुभव किया होगा कि यदि कभी आप अपनी बात को ठीक से अभिव्यक्त नहीं कर पाते या अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना चाहते हैं और नहीं कर पाते, तब कविता की एक या दो पंक्तियाँ ही आपकी समस्या को आसान बना देती हैं। तुलसीदास की एक चौपाई अथवा बिहारी के एक दोहे का जितना असर सुनने वाले पर होगा, शायद उतना असर एक कहानी सुनाने से न हो। कवि बिहारी द्वारा राजा जयसिंह को भेजे गए एक दोहे का असर यह हुआ था कि वे अपनी नवविवाहिता पत्नी के मोह से मुक्त

टिप्पणी

होकर राज्य की रक्षा के लिए निकल पड़े थे। कविता के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने भी कहा है कि कविता की प्रेरणा से कार्य में प्रव त्ति बढ़ जाती है।

प्राचीन काल में कविता को मनोरंजन का साधन भी समझा जाता था। दरबारों में कवि कविताएँ सुनाकर राजाओं का मनोरंजन किया करते थे। तब कविता पाठ्यक्रम में पढ़ाई जाने वाली कोई चीज़ नहीं थी। आप कभी-कभी सोचते होंगे कि कविता भी भला कोई पढ़ने की चीज है? यह मनोरंजन की चीज़ कैसे हो सकती है? इसके न तो शब्द समझ में आते हैं, न इसमें कही गई बात। इससे तो कहानी-उपन्यास अच्छे हैं, जिनमें कही गई बात आसानी से समझ में आ जाती है। उसके लिए कविता की तरह किसी व्याख्या की ज़रूरत नहीं होती।

लेकिन इस तरह आपका सोचना ठीक नहीं होगा, क्योंकि कविता सिर्फ़ मनोरंजन की वस्तु नहीं है। चूँकि कविता कम-से-कम शब्दों और अपनी विशिष्ट भाषा तथा शिल्प-सौंदर्य से बातों को स्पष्ट करते हुए चलती है और बहुत-सी बातें उसमें छिपी रहती हैं जिन्हें समझने के लिए उन्हें खोलते रहना आवश्यक होता है। अतः यह गद्य की अपेक्षा कठिन लगती है। लेकिन यह भी तो देखिए कि कविता ही है, जो अधिक देर तक आपको याद रह जाती है। उदाहरण के लिए आप उपयुक्त समय और स्थान पर आसानी से इसका उपयोग कर सकते हैं। अब आप बताइए कि कविता कैसे मनोरंजन की वस्तु हुई? इस संबंध में रामचन्द्र शुक्ल ने भी कहा है कि प्रायः लोग कहते हैं कि कविता का अंतिम उद्देश्य मनोरंजन है, पर मेरी समझ में मनोरंजन उसका अंतिम उद्देश्य नहीं है। कविता कम-से-कम शब्दों में जितनी सरल, सुगढ़ तथा लयात्मक ढंग से अधिक-से-अधिक बातें व्यक्त कर सकती है, उतना गद्य नहीं। इसीलिए कविता अधिक समय तक याद रहती है। लयात्मक होने के कारण इसे कहीं भी गुनगुनाया जा सकता है। दूर सुनसान रास्ते में अकेले चला जा रहा राही कविता गुनगुनाकर अपना मनोरंजन कर लेता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि कविता हमारे जीवन की अन्य आवश्यकताओं की तरह ही एक प्रमुख आवश्यकता है। कविता के माध्यम से प्राप्त होनेवाला सुख किसी भी भौतिक सुख से अलग और बेहतर होता है। यहाँ पर आप यह न समझें कि कविता केवल किताबों और अखबारों में छपी हुई ही होती है। बल्कि गीत, गज़ल, फिल्मी धुन, नज़्म, शेर आदि सभी कविता के ही विभिन्न रूप हैं। आप अवश्य ही कुछ-न-कुछ गुनगुनाते रहते होंगे और इसका आनंद लेते होंगे।

1.3 कविता के अवयव

कविता के अवयव से हमारा तात्पर्य उन तत्त्वों से है जिनसे मिलकर कविता बनती है, अथवा कविता पढ़ते समय जिन तत्त्वों पर मुख्य रूप से हमारा ध्यान आकर्षित होता है।

काव्य अर्थात् कविता के आरंभिक काल से ही कविता के स्वरूप को समझने का प्रयास विद्वानों ने किया है। प्राचीन काल में भारतीय काव्यशास्त्र के अंतर्गत कविता

टिप्पणी

की तुलना एक सुंदर युवती से की गई है और कहा गया है कि शब्दार्थ जिसका शरीर है, अलंकार जिसके आभूषण हैं, रीति शारीरिक अवयवों का गठन है; गुण, स्वभाव और रस आत्मा है। इन अवयवों के अलावा छंद को भी काव्य का अवयव माना गया है।

इस आधार पर काव्य के छह अवयव बताए गए हैं। किंतु आधुनिक काल तक आते-आते इन अवयवों के विषय में विद्वानों की मान्यता बदल गई। छंद, रीति, रस और अलंकारों पर विशेष ध्यान नहीं दिया गया। इसके स्थान पर कविता में कथ्य अर्थात् कही जाने वाली बात और विचार-द ष्टि अर्थात् कवि के चिंतन को विशेष महत्त्व दिया जाने लगा। किंतु उपर्युक्त अवयवों को पूरी तरह बेकार साबित करके इन्हें कविता से अलग नहीं किया जा सकता। इसीलिए कविता के बारे में अब कहा जाने लगा है कि काव्य का अंतरंग उसका बोधपक्ष (भाव पक्ष) है और बहिरंग कलापक्ष (शिल्प सौंदर्य)। दोनों ही महत्त्वपूर्ण हैं। अंतरंग काव्य को उत्कर्षमय बनाते हैं तो बहिरंग कलापक्ष को सार्थकता प्रदान करते हैं।

कथ्यः कविता में कवि जो बात कहना चाहता है उसे 'कथ्य' कहते हैं।

विचार-द ष्टिः तरह-तरह के विचारों, अनुभवों और तर्कों के बाद व्यक्ति के मन में जो विचार बनता है और उसी विचार के आधार पर लगातार रचना करता रहता है उसे विचार-द ष्टि कहते हैं। जब इसी प्रकार द ष्टि को दूसरे लोग अपनाना शुरू कर देते हैं और अपना आदर्श मानने लगते हैं तो वह विचारधारा का रूप ले लेती है।

इस प्रकार हम कविता के अवयवों को दो भागों में विभाजित करके देख सकते हैं—भावपक्ष तथा कलापक्ष।

1.3.1 भावपक्ष

भावपक्ष कविता का वह पक्ष है जिसमें कवि का चिंतन, उसकी सोच तथा उसका संदेश होता है। इन्हें हम तीन प्रमुख रूपों में देखते हैं—**कथ्य, रस** तथा **विचार-द ष्टि**। कथ्य का अर्थ होता है कविता में कही गई बात। कविता के माध्यम से कवि क्या कहना चाहता है, उसका संदेश क्या है तथा कवि की भावनाओं के स्रोत क्या हैं और उन भावनाओं के पीछे कौन-सी बातें छिपी हैं। प्राचीनकाल में रस को कविता की आत्मा माना जाता था और तब कविता में रस का समावेश सप्रयास किया जाता था, किंतु आधुनिक कविता में रस अपने आप कथ्य और भाषा के कौशल से उत्पन्न हो जाते हैं। कविता के अवयवों में आज भी रस का महत्त्वपूर्ण स्थान है। रस कविता के वे तत्त्व होते हैं, जो पाठक के अंदर सोये हुए स्थायी भावों को जगा कर कथ्य को ग्रहण कराने में सहायता पहुँचाते हैं तथा पाठक को भी कवि की मनःस्थिति तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। यहाँ **विचार-द ष्टि** से मतलब है कि कवि का विचार स्रोत क्या है, वह किसी चिंतन परंपरा से प्रभावित है अथवा नहीं और यदि है तो उसके विचारों में कौन से मूल तत्त्व हैं जो पूर्ण चिंतन-परंपरा से उसके विचारों को जोड़ते अथवा अलग करते हैं। भावपक्ष कविता का आधार और सबसे महत्त्वपूर्ण पक्ष माना जाता है। आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि कविता में भावना प्रधान होती है और गद्य में विचार। इसीलिए भावपक्ष कविता का महत्त्वपूर्ण पक्ष होता है। इसे काव्य की आत्मा तक कहा गया है। काव्य के भावपक्ष में **कल्पना** भी एक प्रमुख अवयव है। जो चीज वास्तव में होती नहीं है किंतु कवि स्मरण कर या अपने सोच के आधार पर उसका चित्र खींच देता है वह कल्पना के द्वारा ही संभव हो पाता है। कई बार आप पढ़ते होंगे कि दो चिड़ियाँ आपस में बात करती दिखाई जाती हैं। चिड़ियों का बोलना या बात करना कवि की कल्पना द्वारा रची गई चीज़ है।

कल्पनाः किसी वस्तु या स्थिति के बारे में सोचना और उसके तरह-तरह के चित्र अपने मन में खींचने की क्रिया को कल्पना कहते हैं।

1.3.2 कलापक्ष

कलापक्ष कविता का वह पक्ष होता है जिसके द्वारा कवि अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति

करता है। इसमें कवि का शिल्पचातुर्य दिखाई देता है। कितने कलात्मक ढंग से और किन वस्तुओं के उत्कृष्ट प्रयोग से कवि ने अपनी बात को अभिव्यक्त करने की कोशिश की है, वह कलापक्ष के अंतर्गत दिखाई देता है। कलापक्ष में भाषा-शैली, छंद, अलंकार आदि प्रमुख तत्त्व होते हैं। आइए, अब हम इन प्रमुख तत्त्वों का अलग-अलग विश्लेषण करते हैं–

भाषा-शैली

आपको ऊपर यह बात बार-बार याद दिलाई गई है कि कविता की भाषा विशिष्ट होती है। कम-से-कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में कवि अपनी बातें कहता है तो वह कविता का रूप ले लेती है। इस प्रकार कविता के कलापक्ष के अंतर्गत भाषा का बारीकी से अध्ययन किया जाता है क्योंकि इसी के माध्यम से वह बात स्पष्ट होती है, जो कवि ने कही है। भाषा को कवि ने किस कौशल और कलात्मकता के साथ परोसा है, वह कवि की शैली कही जाती है।

छंद

कविता की भाषा प्रवाहमयी होती है। इसलिए कविता को प्राचीन समय में छंदों के माध्यम से रचा जाता था। छंद का अर्थ होता है भाषा के लयात्मक रूप को एक निश्चित ढाँचे में बाँध कर रखना; जैसे–दोहा, चौपाई, सोरठा, सवैया आदि छंदों के भेद हैं। कुछ छंदों में मात्राओं की गणना की जाती है और कुछ छंदों को वर्णों की संख्या के आधार पर पहचाना जाता है। मात्रा के आधार पर रचे गए छंदों को 'मात्रिक छंद' तथा वर्णों के आधार पर रचे गए छंदों को 'वार्णिक छंद' कहते हैं।

हिंदी कविता में छायावाद युग के बाद छंदों का प्रचलन आवश्यक नहीं रह गया। अब आधुनिक समय में छंदों का प्रयोग कुछ कवि ही करते हैं। इसलिए छंद अब कविता का अवयव नहीं रहा है। आधुनिक कविता का स्वरूप मुक्त छंद हो गया है।

अलंकार

प्राचीन कविता में भाषा के कौशल से कवि अलंकारों का स जन सप्रयास करते थे किंतु अब कवि अलंकारों पर अधिक ध्यान नहीं देते। लेकिन, कवि के भाषा कौशल तथा कथ्य की भंगिमा के कारण अलंकारों की सहज उत्पत्ति को रोका नहीं जा सकता। आज अलंकार कविता के महत्त्वपूर्ण अंग भले ही न हों, किंतु एक अवयव के रूप में अवश्य माने जाते हैं।

अन्य

आधुनिक कविता में रस, छंद और अलंकारों का जानबूझ कर प्रयोग नहीं किया जाता है, किंतु कुछ ऐसे तत्त्व हैं जिन्हें जानबूझ कर भी कविता में लाने का प्रयास किया जाता है। आधुनिक कविता में उन तत्त्वों का कौशलपूर्वक प्रयोग आसानी से देखा जा सकता है। इन तत्त्वों में मुख्य रूप से प्रतीक और बिंब का उल्लेख किया जा सकता है।

क्या आप जानते हैं कि 'प्रतीक' किसे कहते हैं? प्रतीक का अर्थ है किसी वस्तु के माध्यम से किसी अन्य वस्तु अथवा घटना से संबंधित बात का कहा जाना। उदाहरण के लिए आपने सूरदास का भ्रमरगीत सार पढ़ते समय गोपियों द्वारा बार-बार भ्रमर शब्द का प्रयोग ज़रूर पढ़ा होगा। आप तो जानते हैं कि भ्रमर यानी भौंरे का रंग काला होता है। उद्धव का रंग भी काला था और कृष्ण साँवले। भौंरे का स्वभाव है फूलों पर डोलते हुए रसपान करना। यानी प्रकारांतर से गोपियाँ भौंरे के माध्यम से उद्धव पर व्यंग्य करती हैं और कुछ हद तक कृष्ण को भी उलाहना दे देती हैं। यहाँ भ्रमर प्रतीक के रूप में आया है।

उसी प्रकार बिंब का अर्थ होता है परछाई अर्थात् भाषा कौशल के द्वारा किसी स्थिति का चित्र खींचा जाना। जब बात कहने पर चित्र स्पष्ट होने लगे तो उसे बिंब कहते हैं। कई बार आप कविता पढ़ते समय ऐसा अनुभव करते होंगे कि जो बात कही जा रही है उससे कई बातों का आभास मिल रहा है। दूसरी स्थितियों और घटनाओं के भी चित्र आँखों के सामने उभरते चले जा रहे हैं। इसी भाषा कौशल को बिंब कहते हैं।

इस प्रकार उपर्युक्त सभी तत्त्व मिलकर कविता की रचना में सहयोग प्रदान करते हैं अतः कविता को पढ़ते समय इन सभी अवयवों पर ध्यान देना भी आवश्यक हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 1.2

निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए:

1. कविता की प्रेरणा से कार्य में ....बढ़ती है। (प्रव त्ति, कुव त्ति, व त्ति)
2. प्राचीन विद्वानों ने ....को कविता की आत्मा माना है। (बिंब, रस, लय)
3. प्रतीक तथा बिंब..........पक्ष के तत्त्व हैं। (भाव, कला, विचार)

1.4 कविता कैसे पढ़ी जाए

कविता के संबंध में इतना कुछ पढ़ लेने के बाद अब आपके मन में विचार आ रहा होगा कि कविता पढ़ी कैसे जाए, ताकि आसानी से समझ में आ जाए और उसमें की गई बात का आशय भी स्पष्ट हो जाए।

कविता को पढ़ने का ढंग गद्य से भिन्न होता है। आपने कवि सम्मेलनों, आकाशवाणी अथवा दूरदर्शन पर कवियों को कविताएँ पढ़ते तो सुना ही होगा। जब कभी कवि स्वयं अपनी कविताएँ सुनाते होंगे, तब वे आपको कठिन नहीं लगती होंगी। बल्कि कई बार तो कविता सुनने के लिए आप अपने बाकी सारे काम छोड़-छाड़ कर बैठ जाते हैं। इसके पीछे क्या कारण है? एक कविता जो कवि सम्मेलन में सुनाई जा रही है, वह आपको अच्छी लगती है और एक कविता जो किताबों में छपी है वह समझ में नहीं आ रही।

जानते हैं क्यों? इसके पीछे एक प्रमुख कारण होता है– कविता के पढ़ने का ढंग। कविता को पढ़ने का अंदाज़ कविता को कठिन और आसान बनाता है। इसलिए कविता को ठीक से समझने और आनंद प्राप्त करने के लिए ज़रूरी है कविता को ठीक से यानी उचित लय, तान के साथ पढ़ना। कविता पढ़ने के लिए कुछ सामान्य बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी होता है–

- कविता पढ़ने का उद्देश्य सिर्फ़ शब्दों के अर्थ जान लेने, उसकी सामान्य व्याख्या समझ लेने अथवा व्याकरण संबंधी विशेषताओं को जान लेने-भर से पूरा नहीं हो जाता। कविता पढ़ने की सार्थकता तो तब है, जब कवि के द्वारा व्यक्त भावनाओं तक पहुँचकर उसके द्वारा कही गई बात को ग्रहण कर लिया जाए। इसके लिए आवश्यक है कि यह जानकारी भी प्राप्त की जाए कि कवि ने किस परिस्थिति में अथवा किस वातावरण में कविता लिखी है। जैसे स्वतंत्रता-संग्राम के समय की कविताओं को पढ़ते समय उस समय की ऐतिहासिक प ष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त कर ली जाए तो कविता में कही गई बातें अपने आप स्पष्ट होती चली जाएँगी। अथवा मध्यकालीन राजा की प्रशंसा में लिखी गई कविता को पढ़ते समय उसकी ऐतिहासिक प ष्ठभूमि को न समझते हुए आधुनिक परिवेश से जोड़ दिया जाए तो कविता में कही गई बात स्पष्ट नहीं हो पाएगी। इसलिए कविता पढ़ते समय उसके रचनाकाल और रचनात्मक परिवेश की भी जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है।

- कोई भी कविता पढ़ते समय अगर संभव हो तो कविता के रचयिता अर्थात् कवि का संक्षिप्त परिचय भी प्राप्त कर लिया जाए। इससे कविता में निहित रस, विचारद ष्टि तथा भावनात्मक तत्त्वों को समझने में सहायता मिलती है। इससे भावपक्ष को समझने में भी आसानी होती है।

- कविता का सस्वर पाठ किया जाना चाहिए। इससे उचित यति-गति, लय आदि से कविता के अर्थ खुलने लगते हैं। पढ़ने की उचित शैली से कविता को समझने में बहुत अंतर आ जाता है। इससे कविता में नाद-सौंदर्य के आ जाने से कथ्य मन में बैठते चले जाते हैं और भाषा संबंधी छोटी-मोटी जटिलताएँ अपने आप स्पष्ट होती चली जाती हैं।

- कविता के कलापक्ष को समझने के लिए भाषा, छंद, अलंकार तथा प्रतीक-बिंबों की स्पष्ट समझ भी आवश्यक होती है क्योंकि कविता कम-से-कम शब्दों में अपनी बात कह जाती है, अतः कलात्मक समझ के बिना कविता में कही गई बात को विस्तार और गहराई से ग्रहण करना संभव नहीं होता।

- कविता की भाषा को भी समझने का प्रयास किया जाना चाहिए। कविता की भाषा का अर्थ केवल शब्दों के अर्थ जानना ही नहीं, बल्कि भाषा के माध्यम से चित्रात्मकता तथा भावात्मकता की अभिव्यक्ति का विश्लेषण भी होना चाहिए।

- संबंधित कविता के समान कोई और पढ़ी हुई कविता ध्यान में आ रही हो तो उससे प्रस्तुत कविता की तुलना की जानी चाहिए तथा दोनों में समानता और असमानता का अध्ययन किया जाना चाहिए।

टिप्पणी

इस प्रकार कविता पढ़ने के लिए साहित्य तथा अन्य विषयों की भी गहन जानकारी अपेक्षित रहती है। कविता पढ़ते समय यदि उसके सीधे अर्थों की ओर भागने की कोशिश की जाएगी तो कठिनाई पैदा हो जाएगी। कविता पढ़ने का अर्थ है कवि की उस मनःस्थिति तक पहुँचने की कोशिश करना, जिसमें रमकर कवि ने रचना की है। इसे कहते हैं कवि की अनुभूति को पकड़ने की कोशिश करना।

पाठगत प्रश्न 1.3

उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए:

1. कविता पढ़ने के ढंग से कविता का ....बदल जाता है। (भाव, अर्थ, शब्द)
2. कविता पढ़ने के लिए कवि का परिचय जानना .... ।
   (जरूरी नहीं है, भी आवश्यक है, परिस्थिति पर निर्भर करता है)
3. कविता का ....किया जाना चाहिए।
   (सस्वर पाठ, मनमाना पाठ, रुक-रुक कर पाठ)

1.5 आपने क्या सीखा

- कविता में भाव तत्त्व की प्रधानता होती है। कविता गद्य की अपेक्षा कम शब्दों और प्रवाहपूर्ण भाषा में लिखी जाने के कारण व्यक्ति के मन पर अधिक प्रभाव डालती है।
- कविता के दो महत्त्वपूर्ण पक्ष होते हैं– भावपक्ष और कलापक्ष अर्थात् शिल्प-सौंदर्य।
- जिसमें कवि की कल्पना, रस, विचार और संदेश शामिल होते हैं, उसे भावपक्ष कहते हैं। छंद अलंकार, भाषा, शैली आदि कलापक्ष के अंतर्गत आते हैं।
- कविता पढ़ने के लिए उसके रचनात्मक परिवेश, कवि का परिचय तथा रस, छंद, अलंकार आदि का ज्ञान आवश्यक होता है।
- सस्वर पाठ से कविता का भाव स्पष्ट होता है तथा अर्थ खुलते हैं।
- भाव और निहित रस के अनुसार ही भाषा में काव्य के अंग (छंद, अलंकार आदि) उभर कर सामने आते हैं।
- इससे कविता का शिल्प-सौंदर्य निखर उठता है।
- कविता के मुख्य अवयव निम्नलिखित होते हैं:

कविता के प्रमुख अवयव

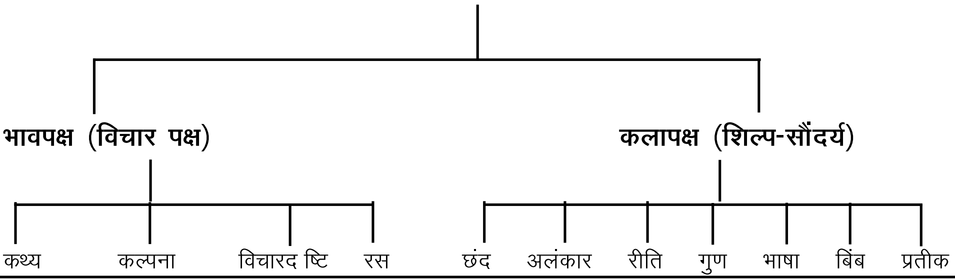

1.6 योग्यता विस्तार

समाचार पत्रों के रविवारीय अथवा मासिक और पाक्षिक पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित कविताओं का अध्ययन कीजिए।

1.7 पाठांत प्रश्न

1. कविता किसे कहते हैं? विभिन्न विद्वानों के कथनों द्वारा पुष्टि कीजिए।
2. कविता के कलापक्ष से आप क्या समझते हैं? यह भावपक्ष से किस प्रकार भिन्न होता है।
3. कविता के आधुनिक काल में प्रमुख रूप से प्रयुक्त होने वाले किंहीं दो अवयवों के बारे में चर्चा कीजिए।
4. कविता के सस्वर पाठ से क्या तात्पर्य है?
5. प्रतीक तथा बिंब किसे कहते हैं?

1.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

1.1 1. भाव 2. अलंकारहीन
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल 4. लयात्मकता

1.2 1. प्रवृत्ति 2. रस
3. कला

1.3 1. अर्थ 2. भी आवश्यक है
3. सस्वर पाठ

301hi02

2

रैदास

आप संत कवि कबीर की रचनाएँ माध्यमिक स्तर पर पढ़ चुके हैं। अब आपके सामने कबीर के ही समकालीन कवि रैदास की कुछ रचनाएँ प्रस्तुत हैं।

सामूहिक जन-चेतना को जाग्रत करके, शोषित मानवता में नवीन स्फूर्ति का संचार करने वाले उच्चकोटि के विनम्र संतों में रैदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। आपने उस समय के धार्मिक आडंबरवादियों के प्रति क्षमा-भाव भी प्रकट किया। भक्ति-भाव में प्रतिक्षण आत्मविभोर रहते हुए भी रैदास ने दिव्य-द ष्टि से समय और समाज की आवश्यक माँगों को पहचान कर अपनी बात कही। संत रैदास की रचनाओं में भक्ति-भाव के दर्शन होते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- संत रैदास की निर्गुण भावधारा और विचारधारा पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- भक्ति-मार्ग में ऊँच-नीच, जाति-पाँति का भेद नहीं होता, इसे स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि द्वारा प्रयुक्त भाषा की शिल्पगत विशेषताओं पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

पाणी हिम भया, हिम है गया विलाय।
जो कछु था सोई भया, अब कछु कह्या न जाय।।

उपर्युक्त पंक्तियों में कबीर ने कहा है कि जिस प्रकार पानी से बर्फ बनती है और बर्फ पुनः पानी बन कर पानी में ही मिल जाती है। ठीक उसी प्रकार उन्होंने

आत्मा और परमात्मा को एक माना है। ब्रह्म ही जगत में एकमात्र सत्ता है। उसके अतिरिक्त संसार में कुछ नहीं है।

इसी प्रकार आत्मा और परमात्मा के एक हो जाने से संबंधित एक और उदाहरण यहाँ पर लिखिए –

____

____

2.1 मूलपाठ

आइए, संत रैदास के कुछ पदों का आनंद लेते हुए एक बार वाचन करते हैं:

पद

1. नरहरि ! चंचल है मति मेरी,
कैसे भगति करूँ मैं तेरी।।
तूँ मोंहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई।
तूँ मोंहि देखै, तोहि न देखूँ, यह मति सब बुधि खोई।
सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन, क त उपकार न माना।।
मैं, तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं, कैसे करि निस्तारा।
कह 'रैदास' कृष्ण करुणामय ! जै जै जगत-अधारा।।

2. जिह कुल साधू बैसनौ होइ।
बरन अबरन रंकु नहि ईसुरु बिमल बासु जानिऐ जग सोइ।।
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम चंडार मलेछ मन सोइ।
होइ पुनीत भगवत भजन ते आपु तारि तारे कुल दोइ।।
धंनि सु गाउ धंनि सो ठाउ धंनि पुनीत कुटंब सभ लोइ।
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस होई रस मगन डारे बिखु खोइ।।
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पूरैन पात रहै जल समीप भनि रविदास जनमे जगि ओइ।।

शब्दार्थ

मति	– बुद्धि
भगति	– भक्ति
हौं	– मैं
घट	– जीव, प्राण
रमसि	– रमते हैं, निवास करते हैं
निस्तार	– छूटना
मैं, तैं	– अपना, पराया
बरन अबरन	– सवर्ण अवर्ण
तजे	– त्यागना, छोड़ना
बिखु	– विष
खोई	– खुही (गन्ने का रस निकालने के बाद बचा हिस्सा)
जिनि	– जिसने
ईसुरु	– संपन्न
पुरैन पात	– कमल का पत्ता
बिमल	– पवित्र
बासु	– गंध
धनि	– धन्य है
गाउ	– गाँव
ठाउ	– स्थान, जगह
लोई	– लोग, चमक, ज्वाला

3. प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा'।

दोहे

1. हरि सा हीरा छाड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।।

2. रैदास कहै जाकै रिदै रहै रैंनि दिन राम।
सो भगता भगवान समि क्रोध न व्यापै कांम।।

3. जा देषें घिण उपजै नरक कुंड है वास।
प्रेम भगति तैं उधरे प्रगट जन रैदास।।

शब्दार्थ

बास – महक, सुगंध
घन – बादल
जोति – ज्योति
बरै – जलती है
जमपुरि – यमपुर/मृत्यु का घर
सति – सच
भाषै – कहते हैं
रिदै – हृदय
समि – समान
व्यापै – फैलना
देषें – देखना
घिण – घृणा
वास – रहना

2.2 आइए समझें

अंश - 1

पद - 1

आइए एक बार पहले पद को पुनः पढ़ लेते हैं।

नरहरि ! चंचल है मति मेरी,
कैसे भगति करूँ मैं तेरी।।
तूँ मोंहि देखै, हौं तोहि देखूँ, प्रीति परस्पर होई।
तूँ मोंहि देखै, तोहि न देखूँ

प्रसंग

प्रस्तुत पद में कवि रैदास ने ईश्वर के निराकार रूप का वर्णन किया है, जिसका न आदि है न अंत। दूसरी ओर भक्त माया से बँधा रहने के कारण अत्यंत चंचल रहता है। भक्त की इसी विवशता का यहाँ वर्णन किया गया है।

व्याख्या

हे ईश्वर ! मेरी बुद्धि अत्यंत चंचल है, आप ही बताएँ कि मैं आपकी भक्ति किस प्रकार करूँ? अर्थात मैं माया-जाल में फँसा होने के कारण सदैव किसी-न-किसी मोह बंधन में बँधा रहता हूँ जिससे मैं पूर्णतः एकाग्र होकर ईश्वर की भक्ति में लीन नहीं हो पा रहा हूँ। यही मेरी विवशता है जिसे मैं आपके सम्मुख व्यक्त कर रहा हूँ।

टिप्पणी

ईश्वर निराकार है, अतः कवि उस निराकार ब्रह्म को संबोधित कर कहता है कि तुम मुझे देख सकते हो क्योंकि तुम्हारी द ष्टि सर्वव्यापी है किंतु मैं तुम्हें नहीं देख सकता क्योंकि तुम्हारा कोई रूप नहीं है तो भला, प्रीति कैसे हो? यद्यपि मनोवैज्ञानिक नियम तो यही है कि जब हम एक-दूसरे को देखते हैं, आकर्षण बढ़ता है, तभी प्रीति होती है। अतः किसी को बिना देखे प्रीति कैसे हो सकती है। इसलिए बिना तुम्हें देखे प्रीति करना तो चाहता हूँ किंतु मति भ्रमित हो जाती है, प्रीति नहीं कर पा रहा हूँ। तुम सबके हृदय में सदैव विराजमान हो, तुम्हारे में गुण ही गुण हैं और मुझ जैसे माया-मोह में फँसे जीव में अवगुण ही अवगुण भरे हैं, यहाँ तक कि तुम्हारे द्वारा किए गए उपकार भी मुझ जैसा अवगुणी समझ नहीं पाता। मैं अपनी नासमझी के कारण सदैव अपने-पराए, हमारे-तुम्हारे की माया में फँसा रहता हूँ। भला तुम ही बताओ कि मैं अब उस द्वंद्व से कैसे छुटकारा पाऊँ ? रैदास जी कहते हैं, हे करुणामय कृष्ण ! यह सारा संसार तुम्हारे ही सहारे चल रहा है, मैं तुम्हारी जय-जयकार करता हूँ।

टिप्पणी

संत रैदास भारतीय अद्वैत वेदांत के समर्थक थे जिनके अनुसार आत्मा और ब्रह्म दोनों ही हैं दोनों में कोई अंतर नहीं है। आत्मा माया में लिप्त होने के कारण ही जीव कहलाती है। जीव माया में लिप्त रहता है और नाशवान है, चंचल है, अस्थिर है। ब्रह्म निर्गुण है, अचल है, अटल है। इसी भाव की झाँकी रैदास के इस पद में दिखाई देती है जब वे कहते हैं –

सब घट अंतर रमसि निरंतर, मैं देखन नहिं जाना।

इसी प्रकार के विचार कबीर के इस दोहे में भी द्रष्टव्य हैं –

सो साईं तन में बसै, भ्रम्यो न जणैं तास।
कहैं कबीर विचार करि जिन कोई खोजें दूरि।।

उपर्युक्त पद दास्य भाव की भक्ति का सुंदर उदाहरण है।

यह मति सब बुधि खोई।
सब घट अंतर रमसि निरंतर
मैं देखन नहिं जाना।
गुन सब तोर, मोर सब औगुन,
क त उपकार न माना।।
मैं, तैं, तोरि-मोरि असमझि सौं,
कैसे करि निस्तारा।
कह 'रैदास' कृष्ण करुणामय !
जै जै जगत-अधारा।।

पद - 2

आइए, अब दूसरा पद हम सस्वर पढ़ते हैं –

प्रसंग

इस पद द्वारा संत रैदास यह प्रतिपादित करना चाहते हैं कि भक्ति मार्ग में जाति-पाँति का कोई बंधन नहीं होता। नीच कही जाने वाली जाति में जन्म लेने वाला व्यक्ति जिसके हृदय में प्रेम भक्ति का संचार है, वह उस ब्राह्मण से कहीं अधिक अच्छा है, जो भगवान की भक्ति के प्रति उदासीन है।

व्याख्या

संत रैदास भक्ति की महत्ता बताते हुए कहते हैं कि जिस कुल में ईश्वर-भक्त जन्म ले, वही कुल उच्च और पवित्र कुल माना जाता है। चाहे वह सवर्ण कुल हो या

अवर्ण, गरीब हो या अमीर। कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर की द ष्टि में सच्चा भक्त या ईश्वर का प्रिय व्यक्ति वही है जो पुण्यात्मा है, अच्छे कर्म करने वाला है और सच्चे मन से ईश्वर की भक्ति करता है। इसी भाव को एक स्थान पर रहीम ने इस प्रकार व्यक्त किया है –

ऊँचे कुल का जनमियाँ करनी ऊँच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा साधु निंदा सोय।।

आगे की पंक्तियों में कवि अपने उपर्युक्त विचार की पुष्टि में कहता है कि चाहे व्यक्ति किसी भी वर्ग अथवा जाति का क्यों न हो यदि वह सच्चे मन और पवित्र भाव से भगवान का भजन करे, तो उसे स्वयं तो मुक्ति मिलती ही है साथ ही उसके दोनों कुल (माता-पिता) मुक्ति पा जाते हैं। कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि भगवान के भजन में बड़ी शक्ति है। धन्य है वह धरती, धन्य है वह स्थान, धन्य हैं उसके पवित्र परिवार के लोग, जिसमें एक सच्चा भक्त जन्म लेता है।

जिन भक्तों ने ईश्वर प्रेम रूपी रस का पान कर लिया है, उन्हें सांसारिक रस में कोई आनंद नहीं आता। वह तो अपने प्रेम रूपी रस में ही मगन हो सांसारिक माया रूपी विषाक्त आकर्षणों को खोई के समान फेंक देता है।

जिह कुल साधू बैसनो होई।
बरन अबरन रंकु नहि ईसुरु बिमल
बासु जानिए जग सोई।।
चंडार मलेछ मन सोइ।
ब्रहमन बैस सूद अरु ख्यत्री डोम
होइ पुनीत भगवत भजन ते आपु
तारि तारे कुल दोइ।।
धनि सु गाउ धनि सो ठाउ
धनि पुनीत कुटुंब सभ लोइ।
जिनि पीआ सार रसु तजे आन रस
होई रस मगन डारे बिखु खोइ।।
पंडित सूर छत्रपति राजा भगत
बराबरि अउरु न कोइ।
जैसे पूरैन पात रहै जल समीप भनि
रविदास जनमे जगि ओइ।।

कवि भक्त की महत्ता बताते हुए कहता है कि पंडित, वीर, छत्रपति राजा कोई भी क्यों न हो, वह भक्त की बराबरी नहीं कर सकता। भक्त तो इन सबसे ऊपर है। कवि रैदास कहते हैं कि इस संसार में उसी तरह रहना चाहिए जैसे जल में कमल का पत्ता रहता है, जो जल में ही पैदा होता है और जल से ही प्राण-शक्ति ग्रहण करते हुए भी जल की एक बूँद अपने ऊपर ठहरने नहीं देता और पानी के ऊपर ही तैरता रहता है। इसी प्रकार मनुष्य को भी संसार में पैदा होकर भी, इसी में रहते हुए संसार से निरपेक्ष रह कर भक्ति में लीन रहना चाहिए।

टिप्पणी

संत रैदास अत्यंत सहिष्णु संत थे, अतः जिस बात को बुरा भी मानते थे, उसे बड़ी सहिष्णुता से समझाते थे। जैसे भक्ति के क्षेत्र में जाति-पाँति का भेदभाव वे भ्रमपूर्ण मानते थे। फिर भी वर्णाश्रम व्यवस्था पर टीका-टिप्पणी न करके, उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भक्ति-मार्ग पर चलने वाला हर व्यक्ति बराबर है, चाहे वह किसी जाति या व्यवसाय का हो। नीच से नीच व्यक्ति भी अपनी अनन्य भक्ति के कारण परम पद को प्राप्त कर सकता है। यद्यपि जाति व्यवस्था की जड़ें भारतीय समाज के बहुत नीचे स्तर तक व्याप्त हैं। किंतु स्वातंयोत्तर भारत में अनेक संवैधानिक प्रयासों से ये जड़ें हिलाई जा चुकी हैं और वर्तमान स्थिति में जाति की सीमा नगण्य है– वस्तुतः मनुष्य का कर्म ही महत्त्वपूर्ण है। द ष्टव्य है कि आज से हजारों वर्ष पूर्व रैदास जैसे संत कवि ने मनुष्य को इस संकीर्णता से ऊपर उठ कर ईश्वर प्रेम का पाठ पढ़ाया था, जो मूल रूप से हमें नैतिकता की ओर ले जाता है।

ईश्वर के दरबार में सब बराबर हैं, हम सब उसी की संतान हैं। कवि के इसी विचार की पुष्टि में निम्नलिखित पंक्ति द्रष्टव्य है –

"एक बिंदु से ब्रह्म रच्यौ है, को बाहमन को सूद।"

कवि की *"जिनि पिआ सार रसु, तजै आन रस होइ। रसमन डारै बिखु खोई,"* पंक्ति में 'बिखु खोई' में **रूपक अलंकार** है। सार-रस भक्ति रूपी रस की ओर इंगित करता है। यहाँ आन रस, सांसारिक आकर्षणों की ओर संकेत करता है। 'रस मगन' से तात्पर्य भक्ति के परम रस से प्राप्त आनंद से है।" जिसे इस रस का आनंद मिल जाए वह व्यक्ति सांसारिक आनंदों को विष के समान समझ कर खोई की तरह फेंक देगा।

पाठगत प्रश्न 2.1

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि अपनी बुद्धि को चंचल कहता है, क्योंकि बुद्धि
   (क) माया-मोह के चक्कर में पड़ी रहती है
   (ख) ईश्वर के रूपाकार की कल्पना नहीं कर पाती
   (ग) ईश्वर-भक्ति में लीन नहीं हो पाती
   (घ) ईश्वर को देख नहीं पाती
2. कवि ईश्वर से प्रेम न कर पाने में अपने को असमर्थ पा रहा है, क्योंकि
   (क) सुंदर रूप बिना देखे प्रेम नहीं होता
   (ख) ईश्वर का कोई रूप नहीं जिससे प्रेम किया जाए
   (ग) कवि की बुद्धि चंचल है
   (घ) ईश्वर में आकर्षण की कमी है
3. ईश्वर के सम्मुख ऊँच-नीच, अवर्ण-सवर्ण का कोई भेद नहीं होता, क्योंकि
   (क) सभी प्राणियों में लाल रक्त का संचार होता है
   (ख) सभी प्राणियों में ईश्वर निवास करता है
   (ग) ईश्वर के सम्मुख सभी प्राणी समान हैं
   (घ) सभी ईश्वर की भक्ति समान भाव से करते हैं
4. सार रस से कवि का तात्पर्य है –
   (क) भक्ति रस   (ग) ज्ञान रस
   (ख) प्रेम रस   (घ) आन रस

टिप्पणी

अंश - 2

संकेत पाठ

पद - 3

आइए ! इस पद को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लेते हैं।

इसको पढ़ने के बाद आपके मन में कुछ जिज्ञासाएँ, कुछ भाव-विचार उठे होंगे। आइए उन पर विचार करें।

- कवि प्रभु के समक्ष स्वयं को समर्पित करता हुआ ईश्वर को चंदन और स्वयं को पानी की उपमा देता है। चंदन की सुगंध भक्त के शरीर के अंग-प्रत्यंग में कैसे व्यापत है, सोचिए ! कल्पना कीजिए पानी मिलाकर कर चंदन के घिसे जाने की।
- इसी भाँति ईश्वर बादल, चाँद, दीपक और मोती है। भक्त ने स्वयं को क्रमशः मोर, चकोर, बाती और धागा के रूप में व्यक्त किया है। उन सबकी तुलना करते हुए कवि ने भक्त और भगवान के अन्यतम संबंधों की चर्चा कर डाली।
- इस पद में दास्य भक्ति का सुंदर रूप दिखाई देता है। भक्त का भगवान से आत्म निवेदन है कि वह जैसा भी है भगवान के चरणों में पूर्णतः समर्पित है। उसका अपना कुछ नहीं। जो कुछ है वह ईश्वर का प्रकाश और प्रसाद है।

प्रभुजी तुम चंदन हम पानी, जाकी अंग-अंग बास समानी।
प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा, जैसे चितवत चंद चकोरा।
प्रभुजी तुम दीपक हम बाती, जाकी जोति बरै दिन राती।
प्रभुजी तुम मोती हम धागा, जैसे सोनहिं मिलत सोहागा।
प्रभुजी तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै 'रैदासा'।

टिप्पणी

संत रैदास ने उपुर्यक्त पद में ईश्वर और दास का अटूट संबंध व्यक्त करते हुए आराध्य के प्रति पूर्ण समर्पण भाव की अभिव्यक्ति की है। भगवान के प्रति सच्चा प्रेम ही सर्वोपरि है और भक्त को निरंतर भगवान की उपासना में लगे रहना चाहिए। भक्त पपीहे की भाँति है, जो स्वाति की बूँद रूपी ईश्वर के लिए एकाग्र होकर प्रतीक्षा करता है। भक्त और भगवान का यह मिलन चंदन और पानी तथा सोने और सुहागे की भाँति होना चाहिए। इस प्रकार यह प्रेम आत्म-निवेदन से पूर्ण है जिसमें भक्त स्वयं को परमात्मा के चरणों में पूर्णतः विलीन कर देना चाहता है।

यहाँ संत रैदास ने स्वयं को भगवान का दास माना है। इसे दास्य भाव की भक्ति कहते हैं। जहाँ भक्त अपना सर्वस्व अपने प्रभु को समर्पित कर देता है, वहाँ उसका कुछ भी नहीं रह जाता। वह अपने पास जो कुछ भी श्रेष्ठ और सुंदर पाता है, वह सब उसी ज्योतिमान का प्रकाश और प्रसाद है।

कवि सिद्ध करना चाहता है कि भक्त की महत्ता तभी बढ़ती है, जब ईश्वर का संपर्क मिलता है। दोनों एक-दूसरे से अनन्य रूप से जुड़े हुए हैं। जब भक्त में 'मैं' की भावना समाप्त हो जाती है, तभी वह ईश्वर के पास पहुँच पाता है।

सामान्यतः 'सोने में सुहागा' का प्रयोग मुहावरे के अर्थ में भी किया जाता है, जिसका अर्थ है किसी विशेष वस्तु में दूसरी वस्तु के मेल से उसमें विशिष्ट गुण

का समावेश हो जाना। भाव यह है कि सोने जैसी बहुमूल्य वस्तु जब सुहागा (जो एक प्रकार का रसायन है) से मिलती है, तो वह और भी निखर जाती है और उसकी दमक बढ़ जाती है और सुहागे का अस्तित्व समाप्त हो जाता है। कहने का तात्पर्य यह है कि जब भक्त और भगवान का भेद समाप्त हो जाए, तभी भक्ति सार्थक होती है।

कवि ने उपर्युक्त पद में द ष्टांत अलंकार का सुंदर प्रयोग किया है जैसे– दीपक बाती आदि। *'प्रभुजी तुम घन बन हम मोरा जैसे चितवत चंद चकोरा'* पद का साम्य भाव कवि रहीम की निम्नलिखित पंक्तियों में द्रष्टव्य है –

तै रहीम मन आपुनो, कीन्हों चारु चकोर,
निसि बासर लाग्यौ रहै, चारु चंद की ओर।।

उपमा

जहाँ पर एक वस्तु की तुलना दूसरी वस्तु से की जाती है, वहाँ **उपमा अलंकार** होता है। जैसे, किसी सुंदर स्त्री के मुख की तुलना चंद्रमा से की जाए, तो वहाँ पर उपमा अलंकार होता है। इसमें जिस वस्तु की तुलना (स्त्री का मुख) की जाती है, उसे 'उपमेय' तथा जिस वस्तु से (चंद्रमा) तुलना की जाती है, उसे 'उपमान' कहते हैं।

किंतु यदि यहीं पर स्त्री के मुख की तुलना किसी ऐसी वस्तु से की जाती कि मुख और उस वस्तु में भेद करना मुश्किल हो जाता है, तब यहाँ **रूपक अलंकार** होता क्योंकि जहाँ पर उपमेय और उपमान में आरोप दिखाई देता है, वहाँ पर **रूपक अलंकार** होता है। जैसे इसी पाठ के दूसरे पद में 'बिखु खोई' में रूपक है। आप समझ चुके हैं कि यहाँ रूपक इसलिए है यहाँ पर उपमेय 'बिखु' अर्थात विष और उपमान 'खोई' में इतनी समानता दिखाई गई है कि दोनों एक ही हैं।

द ष्टांत

जहाँ पर उपमेय तथा उपमान में बिंब-प्रतिबिंब का भाव झलकता हो, वहाँ पर **द ष्टांत अलंकार** होता है। *"कान्हा क पा कटाक्ष की करै कामना दास। चातक चित में चेत ज्यों स्वाति बूँद की आस।"* इसमें क ष्ण की आँखों की तुलना स्वाति नक्षत्र के पानी से तथा सेवक अथवा भक्त की तुलना चातक पक्षी से की जाती है। किंतु यहाँ उपमा अलंकार न होकर द ष्टांत अलंकार होगा, क्योंकि तुलना उदाहरण देते हुए की गई है अर्थात द ष्टांत के साथ की गई है।

पाठगत प्रश्न 2.2

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्न का उत्तर दीजिए–

1. चकोर चाँद को क्यों देखता रहता है ?
   (क) चाँद उसे देखने में सुंदर लगता है
   (ख) चाँदनी रात में ही उसका चकोरी से मिलन होता है

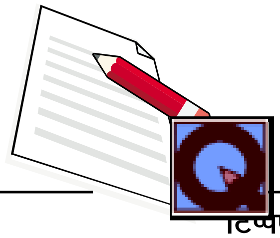

टिप्पणी

(ग) चाँद की चाँदनी से उसे शीतलता मिलती है

(घ) चाँद और चकोरी में कोई अंतर नहीं है

2. इस पद में संत रैदास ने ईश्वर की उपमा कई उपमानों से दी है तथा भक्त-भगवान के संबंध को कई रूपों में प्रस्तुत किया है। नीचे इसका एक उदाहरण दिया जा रहा है, अन्य का उसी पर आधारित उपयुक्त मिलान कीजिए :

ईश्वर	**भक्त**
चंदन	बाती
घन	सुहागा
दीपक	दास
मोती	चकोर
स्वामी	पानी
चाँद	मोर
सोना	धागा

अंश - 3

अब तक आपने कबीर, रहीम, तुलसीदास आदि द्वारा लिखे दोहे पढ़े होंगे। दोहा छंद में दो पंक्तियाँ होती हैं। किंतु *'ये देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर'* की कहावत को चरितार्थ करते हैं।

इन दोहों को आइए एक-एक करके पढ़ लेते हैं।

दोहा - 1

प्रसंग

प्रस्तुत सभी दोहों में कवि रैदास ने ईश्वर भक्ति की महिमा का गुणगान किया है।

व्याख्या

हरि सा हीरा छाड़ि करि।
करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी
सति भाषै रैदास।।

कवि रैदास का सत्य कथन है कि ईश्वर-भक्ति जैसा हीरा बड़े यत्नों से मिलता है। उसे छोड़ने से किसी अन्य सांसारिक माया-मोह की ओर चित्त लगाने वाला व्यक्ति यमलोक ही जाएगा। उसे स्वर्ग या इस संसार से मोक्ष की कामना नहीं करनी चाहिए अर्थात् संसार में केवल ईश्वर-भक्ति ही ऐसी अमूल्य वस्तु है कि उसके सामने सभी सांसारिक वस्तुएँ फीकी हैं। यदि हम सांसारिक माया-मोह में डूबे रहे, तो निश्चित ही म त्यु के पश्चात् हमारा पुनः-पुनः इस लोक में आवागमन बना रहेगा अर्थात् बार-बार प थ्वी पर जन्म लेना होगा। संत रैदास ठीक कहते हैं कि यदि मुक्ति प्राप्त करनी है और बार-बार जन्म लेने के चक्र से बचना है, तो उसका एक ही रास्ता है– ईश्वर की भक्ति।

टिप्पणी

क्या आप बता सकते हैं *'हरि सा हीरा'* में कौन-सा अलंकार है ? हाँ, आप उपमा अलंकार के बारे में जानते हैं। यहाँ उपमा अलंकार ही है, क्योंकि यहाँ ईश्वर की तुलना हीरे से की गई है।

ऐसा माना जाता है कि धातुओं में सबसे मूल्यवान धातु हीरा है। अतः हरि की भक्ति यदि हीरे के समान है, तो अन्य सांसारिक वस्तुएँ उसके सामने तुच्छ हैं।

इसके साथ ही ईश्वर-भक्ति में वह शक्ति है, जिसके द्वारा भक्त को मोक्ष प्राप्त होता है, जबकि अन्य सांसारिक वस्तुओं के मोहजाल में बँधने पर मानव की शक्ति क्षीण होती जाती है। वह उसी में उलझता जाता है और अंत में म त्यु को प्राप्त होता है। इसी सत्य की ओर कवि का संकेत है।

संत रविदास ने मनुष्य योनि को सर्वश्रेष्ठ माना है और उनके अनुसार यही जन्म भगवद् भक्ति और साधना के लिए स्वर्णिम अवसर है। इसी देह से परलोक की प्राप्ति होती है अर्थात् मानव शरीर के माध्यम से ही अधिक-से-अधिक भक्ति की जा सकती है और ईश्वर के निकट पहुँचा जा सकता है, मुक्ति प्राप्त की जा सकती है।

दोहा - 2

प्रसंग

इस दोहे में भक्ति की महत्ता बताई गई है। सदाचरण के लिए काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को त्याज्य (त्यागने योग्य) माना गया है।

रैदास कहै जाकै रिदै
रहै रैनि दिन राम।
सो भगता भगवान समि क्रोध न
व्यापै काम।।

व्याख्या

संत रैदास के विचार से जिसके हृदय में रात-दिन राम का नाम है, राम का वास है, वह भक्त भगवान के समान है। ऐसे भक्त को काम, क्रोध आदि की माया नहीं सताती क्योंकि वह इन सभी जंजालों से अपने को मुक्त कर, स्वयं को नियंत्रित करके ईश्वर भक्ति के परम पद पर पहुँच चुका है। कहने का तात्पर्य यह है कि भक्ति-मार्ग पर चल कर भक्त भगवान की श्रेणी में पहुँच जाता है, यह भक्ति की महिमा है। अतः इस उच्च पद पर पहुँचने के लिए मानव का जीवन में भक्ति के मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर है।

टिप्पणी

ऐसा माना जाता है कि काम, क्रोध, लोभ, मोह सांसारिक माया-मोह हैं, जब तक मनुष्य इन बंधनों में उलझा रहता है, तब तक वह सच्ची भक्ति नहीं कर पाता। एक बार वह भक्ति के सच्चे मार्ग पर चल पड़े, तब इनकी माया उसे नहीं सताएगी क्योंकि तब तक भक्त अपने ईश में विलीन हो चुका होगा।

यह भक्ति साधना की उच्चतम स्थिति है, जहाँ भक्त ब्रह्म को पहचान कर उसमें एकाकार हो जाने का अनुभव करने लगता है और तब वह सांसारिक आकर्षणों से बहुत दूर चला जाता है।

दोहा - 3

प्रसंग

रैदास ने समाज में प्रचलित जाति प्रथा के कारण कुछ वर्णों में व्याप्त हीन-ग्रंथि को उखाड़ फेंकने के लिए भक्ति का सहारा लिया। समाज के आडंबरवादियों को उन्होंने यह समझाने की कोशिश की कि मात्र किसी जाति विशेष में जन्म लेने से कोई व्यक्ति ऊँचा-नीचा नहीं हो सकता। उसके बड़प्पन की कसौटी उसका चिंतन, आचरण और कर्म है। उसी ओर संकेत से वह इस दोहे में अपने विचार प्रकट करते हैं।

व्याख्या

जा देखें घिण उपजै
नरक कुंड है वास।
प्रेम भगति तैं उधरे
प्रगट जन रैदास।।

सामाजिक द ष्टि से नीची कही जाने वाली जातियाँ, जिन्हें देखकर ही उच्च वर्ग के लोग घ णा से मुख मोड़ लेते हैं, वे लोग जिन बस्तियों में रहते हैं वे नरक के समान गंदी हैं – किंतु उन्हीं में से कोई भी मनुष्य ईश्वर भक्ति और प्रेम के बल पर अपने चिंतन और आचरण से प्रभु का भक्त भी बन सकता है। उदाहरण देते हुए कहते हैं कि रैदास स्वयं भक्ति कर इससे उबर चुके हैं अर्थात् रैदास (जिनको निम्न जाति में पैदा होने का बोध सदा ही सताता रहा) निम्नकुल में पैदा होने के कारण सदैव घ णा के पात्र रहे, लोगों की द ष्टि में उनका निवास नरक कुंड था (क्योंकि वहाँ दिन-रात चमड़े की सड़ाँध से वातावरण दूषित रहता था) वहीं रहकर स्वयं रैदास ईश्वर-भक्ति के बल पर समाज के लिए आदर्श बनकर प्रकट हुए। कवि के कहने का यही तात्पर्य है कि – *''जाति–पाँति पूछे नहिं कोई, हरि को भजै सो हरि का होई।''*

टिप्पणी

छोटी जाति में जन्म लेकर भी रैदास ने उच्चतम संस्कार विकसित किए तथा वे अपने युग के महामानव बने। वे कहते हैं कि

जाति ओछा, पाँति ओछा, ओछा जनमु हमारा।
राजा राम की सेवा न कीन्हीं कहि रविदास चमारा।।

इस प्रकार रैदास ने अपने कुल, जाति और जन्म पर स्वाभिमान प्रकट किया है। इन्होंने आचरण और कर्म की गरिमा की केवल बात ही नहीं की, बल्कि अपना उदाहरण स्वयं प्रस्तुत किया और सामाजिक चेतना को एक नवीन दिशा दी। रैदास ने ज्ञान के सहारे ही अनन्य प्रेम की सीढ़ी चढ़कर ब्रह्म को प्राप्त किया।

वह मानते हैं कि माया-मोह से घिरा हुआ व्यक्ति घ णा का पात्र होता है। उसका निवास भी नर्क के समान प्रतीत होता है। किंतु यदि इसी व्यक्ति के हृदय में ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पैदा हो जाए, उसके ज्ञान-चक्षु खुल जाएँ, वह ईश्वर को पहचान ले, तो वह सच्चा भक्त कहला सकता है।

पाठगत प्रश्न 2.3

उचित विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. मनुष्य के पास काम-क्रोध से मुक्ति प्राप्त करने का एक मात्र रास्ता है –

   (क) स्वयं पर नियंत्रण (ग) ईश्वर का स्मरण करना

   (ख) उच्चकुल में जन्म लेना (घ) सांसारिक माया में फँसे रहना

2. कवि के अनुसार नरक कुंड का आशय क्या है?
3. सच्ची भक्ति का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

2.3 शिल्प सौंदर्य

संत रैदास आचरण में मूलतः संत थे और साधना में लीन रहते थे। उनकी भक्ति सरल और सहज थी। आप पढ़ चुके हैं कि रैदास निराकर ब्रह्म में ही विश्वास रखते थे और उन्हें ही अपना ईश्वर मानते थे उन्होंने परमात्मा को क ष्ण, राम, गोविंद आदि के नाम से स्मरण किया। वे विद्वान नहीं थे किंतु उनकी वाणी का स्रोत वह स्थान था, जहाँ मात्र साधक ही पहुँच सकता है।

संत रैदास की काव्य-रचना का उद्देश्य साहित्य-स जन बिल्कुल नहीं था। वे पहले भक्त थे बाद में कवि। फिर भी अपने विचार व्यक्त करने के लिए उन्होंने जिस काव्य की रचना की वह संत परंपरा के किसी कवि की तुलना में कम नहीं थी। उनमें काव्य प्रतिभा थी इसी कारण जनता के समक्ष जो विचार वे रखना चाहते थे उसमें पूर्णतः सफल रहे। अपनी अनुभूतियों के संप्रेषण के लिए उन्होंने भावनाओं को सहज रूप में लिया और अपनी रचनाओं में व्यंजनाओं का प्रयोग किया है, जैसे –

हरि सा हीरा छांड़ि करि करैं आन की आस।
ते नर जमपुरि जाइसी सति भाषै रैदास।।

संत रविदास ने दोहों और पदों में काव्य रचनाएँ कीं। इनके काव्य में रसानुभूति और आध्यात्मिक विचारों की झलक है। ये सभी पद गेय हैं अर्थात् इन्हें गाया जा सकता है और ये विभिन्न राग-रागनियों में बँधे हुए हैं।

वैराग्य और साधना से युक्त भाषा में विनम्रता और आत्मसम्मान का भाव है। सभी पद ब्रजभाषा में रचित हैं किंतु उनमें पूर्वी अवधी के शब्दों के प्रयोग, जैसे – मति, बुछि, गन, तोर आदि से अवधी का पुट आ गया है। खड़ी बोली की विभक्तियों तथा उर्दू-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है, जैसे – गरीब, निवाजु आदि स्थानीय शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है, जैसे – सूँ। सब मिलाकर रैदास की भाषा भावों के साँचे में ढली है।

रैदास ने अपने भावों की अभिव्यक्ति के लिए उपमा, रूपक, द ष्टांत आदि अलंकारों का प्रयोग किया है।

रूपक तो बहुत बन पड़े हैं, जैसे –

जिनि पिआ सार रस
तजै आनु रस होई रसमगन डारे बिखु खोई।

'सार रस' और *'बिखु खोई'* में रूपक अलंकार है।

इसी प्रकार – *'हरि सा हीरा छाँड़ि करि करैं आन की आस।'* में *'हरि सा हीरा'* में उपमा अलंकार है।

रैदास ने भक्ति के क्षेत्र में 'अष्टांग साधना' को अपनाया, जिसमें सदन, सेवा, सत्त, नाम, ध्यान, प्रणति, प्रेम तथा विलय को अंग के रूप में स्वीकार किया। सदन का भाव ग हस्थ जीवन से है। इसके साथ ही साधना के मार्ग पर बढ़ने में सेवा का महत्त्व है। संत ने साधना मार्ग दिखाया, ईश्वर के नाम की पहचान हुई और ईश्वर में ध्यान लगाने से उसके प्रति आत्मसमर्पण का भाव उत्पन्न होता है। इसे ही रैदास ने प्रणति कहा। इसके बाद साधक का ईश्वर के प्रति प्रेम इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि वह भगवान से तादात्म्य की स्थिति में पहुँच जाता है। यही है विलय की दशा। इस प्रकार रैदास की वाणी का आधार उनकी वैयक्तिक अनुभूति है, जो अंतर्मन को अनायास छू लेने वाली स्वाभाविक शब्दावली में व्यक्त हुई है।

आइए, दोहे के बारे में और जानकारी प्राप्त करें।

मध्यकालीन कविता में दोहा छंद अत्यंत लोकप्रिय रहा है। दोहे में दो-दो चरणों के दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 13–13 तथा सम चरणों में अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं तथा अंत में लघु (।) अवश्य होना चाहिए। दूसरे और चौथे चरण तुकांत (तुक के साथ अंत होने वाले शब्द, जैसे–काज-राज) होने चाहिए।

उदाहरण के लिए यह दोहा देखें:

S I I I I I I   S I   I I   I I   I S I   I I   S I
धूर धरत नित शीश पर, कहु रहीम किहि काज।
पहला चरण (13 मात्राएँ)   दूसरा चरण (11 मात्राएँ)

I I   I I I I S S   I S   S S I I I I S I
जिहि रज मुनि पत्नी तरी, सो ढूँढ़त गजराज।।
तीसरा चरण (13 मात्राएँ)   चौथा चरण (11 मात्राएँ)

अब आप सोच रहे होंगे कि ये मात्राएँ क्या होती हैं? तो ह्रस्व और दीर्घ वर्णों के बारे में तो आप जानते ही हैं। जहाँ पर ह्रस्व वर्ण होता है वहाँ एक मात्रा का प्रयोग करते हैं तथा इसे 'लघु' कहते हैं। लघु का संकेत 'I' होता है। 'धरत' शब्द में तीन लघु वर्ण हैं 'ध', 'र' और 'त' इसलिए इनकी मात्राओं का क्रम 'I I I' होता है। जहाँ पर दीर्घ स्वर का प्रयोग होता हैं, वहाँ पर दो मात्राएँ होती हैं। इसे 'गुरु' कहते हैं। गुरु का संकेत 'S' होता है। संयुक्त वर्णों में पहले आने वाला वर्ण भी गुरु होता है।

टिप्पणी

जैसे रहीम में 'ही' दीर्घ है, इसलिए इसकी दो मात्राएँ होंगी। इसी प्रकार पत्नी में 'प' गुरु होगा, क्योंकि संयुक्त शब्द का पहला वर्ण है, इसलिए इसकी भी दो मात्राएँ होंगी।

पाठगत प्रश्न 2.4

1. उपमा, रूपक तथा द ष्टांत अलंकार का एक-एक पठित उदाहरण यहाँ लिखिए।
   (क) **उपमा :** .... (ग) **द ष्टांत :** ....
   (ख) **रूपक :** ....
2. निम्नलिखित की दो-दो विशेषताएँ लिखिए–
   (क) **लघु** (ख) **गुरु**

उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

3. 'हरि सा हीरा छाँड़ि करि, करैं आन की आस' में कुल कितनी मात्राएँ हैं?
   (क) 13 (ग) 24
   (ख) 16 (घ) 22

2.4 आइए, स्वयं पढ़ें

अभी तक आपने संत कवि रैदास के तीन पद पढ़े, उन्हीं की समकालीन कवयित्री सहजोबाई द्वारा रचित एक पद दिया जा रहा है। इसका वाचन करें।

पद

ज्यों ज्यों राम नाम ही तारै।
जान अजान अगिन जो छूवै, वह जारै पै जारै।।
उल्टा सुलटा बीज गिरै ज्यों, धरती माही कैसे।
उपजि रहै निहचै करि जानौ, हरि सुमिरन है ऐसै।।
वेद पुरानन में मथि काढ़ा, राम नाम तत सारा।
तीन कांड में अधिक जानौ, पाप जलावन हारा।।
हिरदा सुद्ध करै बुधि निरमल, ऊँची पदवी देवैं।
चरनदास कहै 'सहजो बाई', बाधा सब हरि लेवैं।।

शब्दार्थ

तारै	–	मोक्ष दिलाना
अगिन	–	अग्नि
जारै	–	जलना
निहचै	–	निश्चय ही
मथि	–	मथकर
काढ़ा	–	निकाला
तत	–	तत्व
तीन कांड	–	तीनों लोक

शब्दार्थ

पोथी – पुराण

मुआ – मरण

आखर – अक्षर

प्रेम – ईश्वर भक्ति से तात्पर्य

आपने पढ़ा

भक्त कवियों की वाणी से ईश-महिमा उनकी वंदना से ही मुखरित है।

- राम नाम की महिमा ऐसी है कि जाने-अनजाने आप कभी भी कहीं भी उसका स्मरण कर लीजिए– आप पापमुक्त हो जाएँगे।
- धरती पर गिरे बीज की उत्पादकता में किंचित दोष नहीं आता, चाहे किसी भी रूप में उसे बिखेर दें। ठीक उसी प्रकार तो ईश्वर स्मरण भी उतना ही महिमाकारी है।
- तीनों लोकों के पापों का हरण करने वाला राम नाम ही है।

आशा है आपको इन बिंदुओं से पद को ठीक से समझने में सहायता मिली होगी।

आइए, अब कबीर का एक दोहा पढ़ते हैं।

"पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ, पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय।।"

- चाहे संत कवि हों, चाहे निर्गुण या सगुण भक्त कवि, सभी ने एक स्वर से ईश्वर-प्रेम की महत्ता सिद्ध की है।
- ईश्वर भक्ति, ईश्वर प्रेम ही व्यक्ति को पंडित कहलाने का अधिकारी बनाता है। वेद-पुराण या मोटी-मोटी पुस्तकें पढ़ लेना नहीं।

पाठगत प्रश्न 2.5

पढित अंश के आधार पर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. अग्नि और धरती पर गिरे बीज की तुलना किससे की गई है ?

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प का चुनाव कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2. तीन कांड से तात्पर्य है –

   (क) रामचरित मानस के तीन कांड   (ग) तीन दशाएँ

   (ख) तीनों लोक (धरती, आकाश, पाताल)   (घ) स्वर्ग लोक

3. शुद्ध हृदय और निर्मल बुद्धि किन मनुष्यों की होती है–

   (क) जो पोथी-पुराण पढ़े   (ग) जो ईश्वर-भक्ति में लीन हो

   (ख) जो धर्म का ज्ञाता हो   (घ) जो अच्छा व्यवहार करने वाला हो

4. कबीर की द ष्टि से पंडित किसे कहेंगे ?

   (क) जो राम के प्रेम में डूबा है   (ग) जो मंदिर में पूजा-पाठ करता है

   (ख) जो बड़ी-बड़ी पोथियाँ पढ़ चुका है   (घ) जो परिवार से प्रेम करता है

2.5 आपने क्या सीखा

1. रैदास द्वारा रचित पदों और दोहों में भक्ति रस का माधुर्य भाव भरा हुआ है, जिन्हें सस्वर गाया जा सकता है।
2. रैदास के पद और दोहे भक्ति भाव से परिपूर्ण हैं। इनमें सदैव इस बात पर बल दिया कि किसी भी कुल में जन्म लेने से कुछ नहीं होता। सच्ची भक्ति मात्र से मानव उच्च श्रेयस्कर पद प्राप्त कर सकता है।
3. ईश्वर-भक्ति ही सच्ची भक्ति है, जब भक्त और ईश्वर में कोई भेद नहीं रह जाता तब ही मनुष्य की भक्ति सार्थक सिद्ध होती है।
4. भक्त और भगवान के संबंध को कवि रैदास ने अलग-अलग ढंग से स्पष्ट करने की चेष्टा की है, जैसे– चंदन-पानी, घन-मोर, दीपक-बाती, मोती-धागा, चाँद-चकोर, सोना-सुहागा आदि।
5. रैदास ने अपनी काव्य रचनाओं में ब्रजभाषा का प्रयोग किया है। जिसमें यत्र-तत्र अवधी की शब्दावली भी है। वैसे आपने जगह-जगह अरबी और फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग भी किया है।
6. रैदास ने काव्य की रचनापदों और दोहों के रूप में की। दोहे में दो-दो चरणों के दो-दो दल अर्थात चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 13–13 तथा सम चरणों अर्थात दूसरे और चौथे चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं।

2.6 योग्यता विस्तार

(क) कवि परिचय

संत किसी देश या जाति में नहीं, अपितु पूरे मानव समाज की अमूल्य संपत्ति होते हैं। हमारा दुर्भाग्य है कि हमारे देश के महापुरुष और संत अपने विषय में प्रायः मौन रहे। इससे उनकी गरिमा में सदैव व द्धि ही हुई। यह संसार क्षण भंगुर है, अतः तू माया मोह के जाल में मत फँस। यह तो सैमल के फूल के समान है, जो कुछ दिन खिलकर मुरझा जाएगा। कभी उनके परवर्ती शिष्यों ने उनके विषय में कुछ लिखा, तो कभी जनमानस में प्रचलित जनश्रुतियों से ही उनके जीवन और मूल्यों का कुछ बोध होता है। अनेक ग्रंथों में इनके अनेक नाम प्रचलित हैं, किंतु अधिकतर विद्वानों की मान्यतानुसार इनका नाम रैदास था। कुछ पदों के आधार पर उनकी जाति, कुल, परिवार और निवास की स्थिति का कुछ विवरण मिलता है। भक्तिकाल के अनुसार रैदास रामानंद के शिष्य थे। कई साक्ष्यों के अनुसार कबीर और रैदास समकालीन थे। कबीर उम्र में रैदास से कुछ छोटे थे। अतः ये पंद्रहवीं शताब्दी के मध्य में हुए होंगे, ऐसा माना जाता है।

रैदास की भक्ति से प्रतिपादित अनेक जनश्रुतियाँ हैं। जैसे मान्यता है कि मीराबाई ने उन्हें अपना गुरु माना था। वे जीवनभर पर्यटन करते रहे और अंत में 1684 में चित्तौड़ में उन्होंने अपनी देह का त्याग किया। संत रैदास ने कुल कितनी रचनाएँ की, यह भी ठीक से ज्ञात नहीं। फिर भी जो उपलब्ध हैं, उनमें – 'रैदास बानी', 'रैदासजी की साखी तथा पद', 'प्रहलाद लीला' आदि प्रमुख हैं।

(ख) कबीर के निम्नलिखित दोहे पढ़िए।

लाली मेरे लाल की, जित देखूँ तित लाल।
लाली देखन मैं चली, मैं भी हो गई लाल।।

कबीर कहते हैं कि मेरे प्रिय लाला की लाली (प्रभाव) चारों ओर व्याप्त है। मैं उनसे मिलने गई तो मैं भी ब्रह्ममय हो गई। अर्थात मेरा ब्रह्म (आत्मा) से मिलन हो गया और जीव ब्रह्म में मिलकर एक हो गए।

यह ऐसा संसार है जैसा सेवा फूल।
दिन दस के ब्यौहार में झूठे रंग न भूल।।

2.7 पाठांत प्रश्न

1. कवि ने ईश्वर की उपमा किन-किन से दी है ? कोई पाँच उदाहरण सहित बताइए।
2. रैदास ने किस आधार पर ईश्वर को निर्गुण माना? पद से उदाहरण देकर अपने उत्तर की पुष्टि कीजिए।
3. ईश्वर भक्ति से सांसारिक व्यक्ति को क्या लाभ मिलता है?
4. *"जिहि कुल साधु बैसनौ होई"* पंक्ति में व्यक्त कवि के भावों को स्पष्ट कीजिए।
5. कवि ने किन व्यक्तियों के यमपुर जाने की बात की है और क्यों ?
6. रैदास ने अपने काव्य में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है, उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
7. वर्तमान संदर्भ में रैदास के विचारों की महत्ता प्रतिपादित कीजिए।
8. निम्नलिखित पद को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

   गुरु पैयाँ लागौं राम लखा दीजो रे।
   जनम जनम का सोया मनुवाँ, सबदन मार जगा दीजो रे।।
   घट अँधियार नैन नहिं सूझै, ज्ञान का दीप जगा दीजो रे ।
   बिस की लहर उठत घट अंतर, अमरित बूँद चुवा दीजो रे।।
   गहिरी नदिया अगम बहै धरवा, खेय के पार लगा दीजो रे।
   'धरमदास' की अरज गुसाँईं, अबकै खेप निभा दीजो रे।।

(क) उपरोक्त पद के रचयिता का नाम बताइए।

(ख) *'घट अँधियार नैन नहिं सूझै, ज्ञान का दीप जगा दीजो रे'* से कवि का क्या आशय है?

(ग) पद का मूल भाव क्या है?

(घ) कवि ने *'गहिरी नदिया'* किसे कहा है?

(ङ) कवि को ईश्वर क्या मारकर जगाता है?

2.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

2.1 1. (क) 2. (क)

3. (ग) 4. (क)

2.2 1. (क)

2.

चंदन	–	पानी
घन	–	मोर
दीपक	–	बाती
मोती	–	धागा
स्वामी	–	दास
चाँद	–	चकोर
सोना	–	सुहागा

2.3 1. (ग) 2. स्वयं ढूँढ़िए 3. किसी भी परिस्थिति में

2.4 1. और 2. स्वयं कीजिए 3. (ग) अपना कर्म करना और ईश्वर का स्मरण करना।

2.5 1. राम नाम से 2. (ख) 3. (ग) 4. (क)

301hi03

3

तुलसीदास

रामचरितमानस का पाठ प्रायः हर घर में होता है। क्या आप जानते हैं कि इसकी रचना किसने की है? तुलसीदास ने। रामचरितमानस और तुलसी देशभर में प्रसिद्ध हैं। पढ़े लिखे हों या अनपढ़, गरीब हों या अमीर – रामचरितमानस और तुलसीदास में सबकी श्रद्धा है।

रामचरितमानस में राम की कथा है– अयोध्या के राजा दशरथ के पुत्र राम की। दशरथ के चार पुत्र थे। चारों में परस्पर गहरा प्रेम था। राम इनमें सबसे बड़े थे। सबके आदर के पात्र थे और राम भी सबसे प्रगाढ़ प्रेम करते थे। रामचरितमानस में राम और भरत के प्रेम की चर्चा अनेक स्थानों पर हुई है। अयोध्याकांड में यह प्रसंग बड़ा ही मार्मिक बन पड़ा है। इस पाठ में हम उसके एक छोटे से अंश का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भरत और राम के प्रेम की गहराई का वर्णन कर सकेंगे;
- बड़े भाई राम के प्रति भरत की आदर भावना का उल्लेख कर सकेंगे;
- भरत के चरित्र की विशेषताओं की सूची बना सकेंगे;
- निर्धारित उदाहरणों के आधार पर तुलसी की भाषा और शिल्प सौंदर्य की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

यह चित्र रामचरितमानस के किस सोपान से संबंधित है, बताइए।

चित्र 3.1

3.1 मूलपाठ

आइए, सर्वप्रथम संपूर्ण काव्यांश को एक बार पढ़ लें।

भरत का भ्रात प्रेम

(रामचरितमानस से उद्ध त)

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई। गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू। कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह-जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ। अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर क पा सनेहु बिसेषी। खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू। कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु कृपा रीति जियँ जोही। हारेहुँ खेल जितावहिं मोही।।

दो०   महूँ सनेह सकोच बस, सनमुख कही न बैन।
      दरसन त पित न आजु लगि, पेम पिआसे नैन।।२६०।।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा। नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा। अपनीं समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकता प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।

शब्दार्थ

अनुकूल अघाई – पूर्णतः अपने पक्ष में
नीरज-नयन – कमल जैसे नेत्र
पुलकि – रोमांचित होकर
मुनिनाथ – वसिष्ठ
कहब मोर – मुझे जो कहना था
निबाहा – निभा दिया, मेरी ओर से कह दिया
कोह – क्रोध
सनेहू – स्नेह
विसेषी – विशेष
खुनिस – रंजिश, अप्रसन्नता
परिहरेऊँ न – नहीं छोड़ा
जियँ जोही – हृदय में देखा है
महूँ – मैंने भी
कही न बैन – बात नहीं कही
त पित – तृप्त
विधि – विधाता
जननी मिस – माँ के बहाने
बीचु पारा – अंतर पैदा कर दिया
सुचाली – सदाचारी
कुचाली – दुराचारी
को भा – कौन हुआ
फरइ – फलती है
कोदव – कोदो (एक प्रकार का मोटा अनाज)
सुसाली – एक प्रकार का शालि नामक धान,
संबुक – घोंघा
मुक्ता – मोती
काहू – किसी को भी
उदधि – सागर
अवगाहू – अथाह

टिप्पणी

शब्दार्थ

अघ	– पाप
परिपाकू	– फल, परिणाम
काकू	– व्यंग्य
नीक	– अच्छा
हेरि	– देखकर
परिनामू	– परिणाम
सति भाऊ	– सच्चे मन से
प्रपंचु	– कपट

बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा। एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू। लागत मोहि नीक परिनामू।।

दो० साधु सभाँ गुर प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।२६१।।

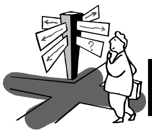

3.2 बोध प्रश्न

1. 'सिसुपन ते परिहरेउँ न संगू, कबहूँ न कीन्ह मोर मन भंगू'
   उपर्युक्त पंक्ति कौन किसके बारे में कह रहा है ?
   (क) कौन ....
   (ख) किसके बारे में ....
2. 'प्रभुक पा की रीति' किस पंक्ति से प्रकट हो रही है –
   (क) नीरज नयन नेह जल बाढ़े
   (ख) खेलत खुनिस न कबहूँ देखी
   (ग) हारेहुँ खेल जितावहिं मोही
   (घ) लागत मोहि नीक परिनामू
3. भरत माँ के प्रति अपराध भाव से ग्रस्त हैं, क्योंकि –
   (क) कैकेयी ने राम को वनवास दिया
   (ख) कैकेयी ने भरत से परामर्श नहीं किया
   (ग) भरत कैकेयी को भी चित्रकूट ले आया
   (घ) भरत ने कैकेयी को बुरा-भला कहा

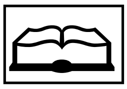

3.3 आइए समझें

भरत का भ्रात प्रेम

आइए, 'भरत का भ्रात प्रेम' के प्रथम अंश को पुनः पढ़ें।

प्रसंग

आप यह तो जानते ही हैं कि सीता और लक्ष्मण सहित राम के वन चले जाने पर अयोध्यावासी बड़े दुखी हुए थे। राम के छोटे भाई भरत को सबसे अधिक दुख हुआ था। बता सकते हैं क्यों ? कैकेयी ने राजा दशरथ से राम के लिए वनवास और भरत के लिए राज्याभिषेक का वरदान माँगा था। भरत के लिए यह बात अकल्पनीय

थी। राजगद्दी पर तो बड़े भाई का अधिकार होता है, किंतु यहाँ उन्हें वनवास दे दिया गया। भरत को लगता था कि इस सब के दोषी वही हैं। इससे भरत को अपयश मिल सकता था। इसलिए भरत अपने कुल-गुरु वसिष्ठ और राजपरिवार सहित अयोध्या के नागरिकों को साथ लेकर राम को लौटाने के लिए वन की ओर चल पड़े। तुलसी ने रामचरितमानस के अयोध्याकांड में उसी अवसर का वर्णन किया है।

प्रथम अंश

सुनि मुनि बचन राम रुख पाई।
गुरु साहिब अनुकूल अघाई।
लखि अपनें सिर सबु छरु भारू।
कहि न सकहिं कछु करहिं बिचारू।
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज-नयन नेह-जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा।
एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।
मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ।
अपराधिहु पर कोह न काऊ।
मो पर क पा सनेहु बिसेषी।
खेलत खुनिस न कबहूँ देखी।।
सिसुपन तें परिहरेउँ न संगू।
कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू।
मैं प्रभु क पा रीति जियँ जोही।
हारेहुँ खेल जितावहिं मोही।।
महूँ सनेह सकोच बस,
सनमुख कही न बैन।
दरसन त पित न आजु लगि,
पेम पिआसे नैन।

अर्थ

मुनि के वचन सुनकर और श्रीरामचंद्रजी का रुख अपने पक्ष में पाकर– गुरु तथा स्वामी को पूर्णतः अपने अनुकूल जानकर सारा बोझ अपने ही ऊपर समझकर भरतजी कुछ कह नहीं पा रहे थे। वे विचार करने लगे। शरीर से पुलकित होकर वे शरीर में सभा में खड़े हो गए। उनके कमल के समान नेत्रों में प्रेमाश्रुओं की बाढ़ आ गई। वे बोले– मेरा कहना तो मुनिनाथ ने निबाह दिया (जो कुछ मैं कह सकता था वह उन्होंने ही कह दिया)। इससे अधिक मैं क्या कहूँ? अपने स्वामी राम का स्वभाव मैं जानता हूँ। वे अपराधी पर भी कभी क्रोध नहीं करते। मुझ पर तो उनकी विशेष क पा और स्नेह है। मैंने खेल में भी कभी उनकी अप्रसन्नता नहीं देखी। बचपन से ही मैंने उनका साथ नहीं छोड़ा और उन्होंने भी मेरे मन को कभी नहीं तोड़ा (मेरे मन के प्रतिकूल कभी उन्होंने कोई काम नहीं किया)। मैंने प्रभु की कृपा करने की रीति को हृदय से भलीभाँति देखा है (अनुभव किया है)। मेरे हारने पर भी खेल में प्रभु जिताते रहे हैं। मैंने भी प्रेम और संकोचवश कभी उनके सामने मुँह नहीं खोला। प्रेम के प्यासे मेरे नेत्र आज तक प्रभु राम के दर्शन से त प्त नहीं हुए।

चित्र 3.2

व्याख्या

चित्रकूट में राम ने भरत के स्वभाव की बड़ी प्रशंसा की। उनका रुख देखकर वसिष्ठ ने भरत को संकेत दिया कि वे अपने हृदय की बात राम के समक्ष रखें।

यही तो भरत चाहते थे। वे ऐसे अवसर की प्रतीक्षा में ही थे कि कब गुरु वसिष्ठ और राम दोनों अनुकूल हों। अवसर प्राप्त होने पर उनके शरीर में सिहरन हुई। वे सभा के समक्ष बोलने के लिए खड़े तो हुए पर बोलने से पूर्व उनकी आँखों से प्रेम के आँसू बह चले। फिर बोले– मुझे जो कहना था वह तो मुनियों में श्रेष्ठ गुरु वसिष्ठ ने स्वयं कह ही दिया है, मैं उससे अधिक क्या कहूँ। मैं अपने भाई राम के स्वभाव से

बचपन से ही परिचित हूँ। मैंने उन्हें कभी भी अपराधी पर क्रोध करते नहीं देखा। और मुझ पर तो उनकी विशेष क पा रही है। बचपन में आपस में खेलते समय भी मैंने उन्हें कभी अप्रसन्न नहीं देखा। मेरे बड़े भाई की मुझ पर सदैव इतनी अधिक क पा रही है कि यदि मैं कभी खेल हार जाता तो भी वे मुझे जिता ही देते थे। मैंने तो बचपन से ही कभी उनका साथ नहीं छोड़ा और सदा यह पाया कि उन्होंने मेरा मन कभी नहीं दुखाया। यह राम का बड़प्पन है कि वे कभी किसी का मन नहीं तोड़ते।

क्या आप बता सकते हैं कि भरत के इस कथन के पीछे क्या अभिप्राय हो सकता है ? जी हाँ ! यहाँ दो अभिप्राय प्रतीत होते हैं। एक तो यह कि वे स्पष्ट कह रहे हैं कि मैंने बचपन से ही राम का साथ कभी नहीं छोड़ा। अब इतनी दीर्घ अवधि के लिए उनका वियोग मैं कैसे सह सकता हूँ। दूसरा संकेत और भी महत्त्वपूर्ण है। वह है – *'कबहुँ न कीन्ह मोर मन भंगू'* अर्थात् राम ने कभी भी भरत का दिल नहीं दुखाया। अतः आज भी उन्हें विश्वास है कि राम उनका मन नहीं तोड़ेंगे और उनके आग्रह पर वापस अयोध्या लौट चलेंगे।

किसी पर कृपा करने की राम की रीति भी भरत को ज्ञात है। उन्होंने उस रीति पर मनन किया है और पाया है कि वे तो हारे हुए को भी जिता देते हैं।

भरत कहते हैं कि मैंने प्रेम और संकोच के कारण उनके सामने कभी मुख नहीं खोला। शिष्टाचार की परंपरा रही है कि बड़ों के सामने उद्दंडता का व्यवहार नहीं किया जाता। बड़ों के सामने मुख खोलना उनका अनादर है, जो भरत ने कभी नहीं किया। वे तो बस राम का दर्शन ही करते रहे किंतु दर्शनों से भी आज तक त प्त नहीं हुए। उनकी आँखें सदा राम के प्रेम की प्यासी ही बनी रहीं।

अंश - 2

आगे की पंक्तियों को पुनः पढ़िए।

बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा।
नीच बीचु जननी मिस पारा।
यहउ कहत मोहि आजु न सोभा।
अपनी समुझि साधु सुचि को भा।।
मातु मंदि मैं साधु सुचाली।
उर अस आनत कोटि कुचाली।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली।
मुकता प्रसव कि संबुक काली।।
सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू।
मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू।
जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।
हृदयँ हेरि हारेउँ सब ओरा।
एकहि भाँति भलेहिं भल मोरा।
गुरु गोसाइँ साहिब सिय रामू।
लागत मोहि नीक परिनामू।।

प्रसंग

यह भरत के शब्दों में राम के भ्रात स्नेह की स्म ति थी, जो उन्हें बार-बार याद आ रही थी। पर भरत के मन को बीच की घटनाओं की पीड़ा भी साल रही थी। उन्हें बार-बार अपनी माँ कैकयी की करनी भी याद आ रही थी और वे आत्मग्लानि से भर जाते थे। तुलसी ने भरत की इसी मनोदशा का वर्णन किया है।

अर्थ

भरत कहते हैं कि विधाता मेरा दुलार न सह सका। उसने नीच माता के बहाने (मेरे और स्वामी के बीच) अंतर डाल दिया। यह भी कहना आज मुझे शोभा नहीं देता; क्योंकि अपनी समझ से कौन साधु और पवित्र हुआ है ? (अर्थात जिसको दूसरे साधु और पवित्र मानें, वही साधु है, वही शुद्ध है) माता नीच है और मैं सदाचारी और साधु हूँ। ऐसा हृदय में लाना ही करोड़ दुराचारों के समान है। क्या कोदो की बाली

उत्तम धान फल सकती है ? क्या काली घोंघी मोती उत्पन्न कर सकती है? स्वप्न में भी किसी को दोष देने का लेश भी नहीं है। मेरा अभाग्य ही अथाह समुद्र है। मैंने अपने पापों का परिणाम समझे बिना ही माता को कटु वचन कहकर व्यर्थ ही जलाया। मैं अपने हृदय में सब ओर खोज कर हार गया (मेरी भलाई का कोई साधन नहीं सूझता)। एक ही प्रकार से मेरा भला है। वह यह है कि गुरु महाराज सर्वसमर्थ और रामजी मेरे स्वामी हैं। इसी से परिणाम मुझे अच्छा जान पड़ता है। साधुओं की सभा में गुरु वसिष्ठ और स्वामी राम के समीप इस पवित्र तीर्थ स्थान में मैं सत्य भाव से कहता हूँ। यह प्रेम है या प्रपंच (छल-कपट)? झूठ है या सच? इसे (सर्वज्ञ) मुनि वसिष्ठ जी और (अंतर्यामी) श्री रघुनाथजी जानते हैं।

व्याख्या

भरत का कथन अभी चल रहा है। उन्होंने राम की प्रीति का स्मरण किया, और उन्हें लगा कि विधाता उनके और राम के बीच गहरे प्रेम भाव को सहन नहीं कर सका। इसलिए उसने राम और भरत के स्नेह के बीच माता कैकेयी को उपस्थित कर मानों एक रुकावट डाल दी। भरत यह कह तो गए पर तुरंत ही उन्हें लगा कि यह कथन उन्हें शोभा नहीं देता। उन्हें ऐसा क्यों लगा होगा ? एक तो यही कि पुत्र होने के कारण माँ की निंदा करना उचित नहीं है, पर स्थिति ऐसी ही आ पड़ी है। दूसरा कारण यह भी है कि कोई अपने आपको सुजान कैसे कह सकता है। आशय यह है कि कोई यह न समझे कि भरत स्वयं को पवित्र और सज्जन मान रहे हैं। अपने मानने भर से कुछ नहीं होता, हाँ ! लोग मानें तब बात और है।

भरत कहते हैं – यह सोचना कि माँ बुरी है और मैं सदाचारी और सज्जन हूँ, ठीक नहीं है। ऐसा भाव मन में आना करोड़ों दुराचरणों जैसा है। 'कोटि कुचाली' पर ध्यान दीजिए। माँ को बुरा मानने का असद् विचार वस्तुतः करोड़ों असद् विचारों जैसा बुरा है। अब आप शंका कर सकते हैं कि कैकेयी ने राम को वनवास दिलाया था, इसका समाधान भरत कैसे करेंगे। भरत के पास इसके दो कारण हैं – पहला है कैकेयी के स्वभाव की विशेषता। भरत उदाहरण देकर पूछ रहे हैं– भला कोदो के पौधे से शालिधान की बालें कैसे आएँगी। इसे दूसरी कहावत से भी कह सकते हैं– बबूल के पेड़ पर आम कैसे लगेंगे। अर्थ यह भी है कि जब माँ में ही दोष है तो मैं निर्दोष कैसे हो सकता हूँ।

भरत स्पष्ट करते हैं कि स्वप्न में भी किसी को दोष देना ठीक नहीं। किसी का रत्तीभर भी दोष नहीं है, दोष तो बस भरत के भाग्य का है। मेरा दुर्भाग्य अथाह सागर है। उसकी कोई सीमा नहीं। कैकेई के द्वारा राम को बनवास का वरदान माँगना मेरे ही दुर्भाग्य सागर की एक लहर है। भरत को इतने से ही संतोष नहीं होता। अपने को कोसते हुए वे आगे कहते हैं– मैंने अपने पापों का परिणाम जाने बिना ही माँ को भला-बुरा कह कर उसके मन को चोट पहुँचाई। अब मैं अपने हृदय में अपनी भलाई के उपाय ढूँढ-ढूँढ कर हार गया हूँ। कोई उपाय सूझता ही नहीं। अब तो यही कहा जा सकता है कि समर्थ गुरु निकट बैठे हैं और भाई राम तथा भाभी सीता मेरे स्वामी हैं। इस सुयोग को देखकर मुझे विश्वास है कि जो भी परिणाम होगा वह अच्छा ही होगा।

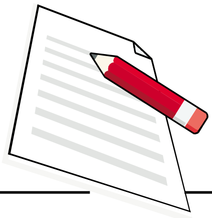

उसी बात का और विस्तार करते हुए भरत कहते हैं कि यहाँ पर सज्जनों की सभा बैठी है, गुरु वशिष्ठ और स्वामी राम निकट बैठे हैं, यह स्थान चित्रकूट भी पवित्र तीर्थस्थल है और मैं जो कह रहा हूँ उसके पीछे भी सात्विक भाव है। मुनिवर वसिष्ठ जी और राम यह भली-भाँति जानते हैं कि मेरी बातें प्रेम से भरी हैं या छल से, झूठी हैं या सच्ची।

टिप्पणी

आइए, तुलसीदास की काव्य-कला की बानगी भी देखें :

1. भरत जब बोलने खड़े होते हैं तो उनकी आँखें प्रेम से डबडबा जाती हैं। पर कवि उसे अपनी शैली में कहता है – *'नीरज नयन नेह जल बाढ़े।'* कमल जैसी आँखों में स्नेह का जल भर गया। स्नेहाधिक्य से भावावेश के कारण आँखों से आँसू उमड़ आए।

   उपमा और रूपक अलंकार की निकटता देखिए –

   यहाँ पर आँखों की उपमा कमल से दी गई है, इसलिए 'नीरज नयन' में उपमा अलंकार और 'नेह जल' में रूपक अलंकार है। उपमा और रूपक के बारे में तो आप रैदास वाले पाठ में पढ़ ही चुके हैं।

   'नीरज' के समान कोमल सुंदर आँखों में (उपमा) नेह का जल (रूपक) बढ़ गया है।

2. बड़ी विनम्र शैली में वाक् चातुरी (बोलने की समझदारी) की झलक देखिए–

   > *"मैं जानउँ निज नाथ सुभाऊ, अपराधिहु पर कोह न काऊ।।*
   > *मौं पर क पा सनेहु बिसेखी ....*

   मैं राम के स्वभाव को जानता हूँ, यह कहने के लिए भरत उन्हें निज नाथ (मेरे स्वामी) कहते हैं। भाई-भाई के बीच भी बड़े भाई को स्वामी मानने का भाव है और स्वामी के स्वभाव में स्वामित्व वाला बड़प्पन या अहंकार नहीं है। अपराधी पर भी क्रोध न करना उनका स्वभाव है। यहाँ 'अपराधी' शब्द को तुलसी जानबूझ कर लाए हैं। संकेत यह है कि भरत से (उसकी माँ से) जो हुआ है वह अपराध से कम नहीं, पर राम का स्वभाव है कि अपराधी पर क्रोध न करना। इस जानकारी से ही भरत निश्चित नहीं कर देते, वे यह भी कहते हैं कि मुझ पर राम की विशेष क पा रही है, अतः वे बिल्कुल क्रोध नहीं करेंगे और मुझे क्षमा कर देंगे।

3. रामचरित मानस में भरत अपनी माँ को तब बहुत बुरा भला कहते हैं, जब उन्हें ननिहाल से लौट कर अयोध्या की घटनाओं की सूचना मिलती है। वह क्रोध और आवेश तात्कालिक था। वे माँ पर बरस पड़े थे और इस प्रकार वे माँ के प्रति दुर्व्यवहार के दोषी हो गए थे। तुलसी उन्हें इस आक्षेप से मुक्त कराना चाहते हैं, इसलिए यहाँ भरत से कहलाते हैं –

सपनेहुँ दोस कलेसु न काहू। मोर अभाग उदधि अवगाहू।
बिनु समुझें निज अघ परिपाकू। जारिउँ जायँ जननि कहि काकू।।

4. अंतिम दोहे में भी बड़ा अर्थ-गांभीर्य है। भरत यह आश्वासन देना चाहते हैं कि उनकी बातों में छल कपट नहीं है, वे सत्य बोल रहे हैं। प्रमाण स्वरूप स्पष्ट करना चाहते हैं कि वैसे ही सामान्य स्थितियों में भी छल या झूठ संभव नहीं फिर यहाँ तो ऐसी पाँच स्थितियाँ हैं, जिनमें झूठ बोलने का प्रश्न ही नहीं उठता, जैसे –

    1. सज्जनों की सभा
    2. कुल-गुरु वसिष्ठ की निकटता
    3. स्वामी राम और सीता का सान्निध्य
    4. चित्रकूट जैसा पावन तीर्थ
    5. भरत के मन का सात्विक भाव

   ऐसे वातावरण में सामान्यतः कोई भी झूठ नहीं बोल सकता, अतः भरत जो कह रहे हैं, उस पर अविश्वास का कोई कारण ही नहीं।

5. तुलसीदास का रामचरित मानस रामकथा के माध्यम से आदर्श व्यवहार और आचरण की सीख भी देता है। इस अंश में एक ओर भाइयों के परस्पर प्रेम की और दूसरी ओर गुरुजनों का सम्मान करने की सीख है, जो आज के संदर्भों में भी उपयुक्त और प्रासंगिक है।

पाठगत प्रश्न 3.1

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. भरत के अनुसार कौन-सी विशेषता राम के स्वभाव की है?
   (क) वे अपराधी पर क्रोध नहीं करते हैं।
   (ख) खेलते समय जीते हुए को भी हरा देते हैं।
   (ग) वे भरत का दिल दुखाते हैं।
   (घ) वे लक्ष्मण से अधिक प्रेम करते हैं।
2. 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' कथन में कौन-सा अलंकार नहीं है ?
   (क) उपमा (ग) रूपक
   (ख) उत्प्रेक्षा (घ) अनुप्रास
3. रामचरित मानस में सबसे अधिक किस छंद का प्रयोग किया गया है ?
   (क) सवैया (ग) चौपाई
   (ख) कवित्त (घ) घनाक्षरी।

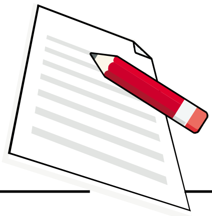

टिप्पणी

3.4 शिल्प सौंदर्य

तुलसी की काव्य कला की बानगी आप देख चुके हैं। भाव और शिल्प क्षेत्रों में वे बेजोड़ हैं। आइए यहाँ काव्य-शिल्प की द ष्टि से एक बार पुनः अवलोकन करें।

1. **अलंकारों का सहज प्रयोग :** तुलसी की कविता में भाव-वर्णन के साथ-साथ अलंकार स्वाभाविक रूप में पिरोए गए हैं, थोपे नहीं गए। जैसे :

   (क) 'नीरज नयन नेह जल बाढ़े' – नीरज के समान भरत के नेत्रों में स्नेह का जल बढ़ गया। उपमा, रूपक अनुप्रास का सहज सौंदर्य।

   (ख) पग-पग पर **अनुप्रास** के सहज प्रयोग में भी तुलसी सिद्धहस्त हैं; विशेष कर छेकानुप्रास (केवल एक बार आव त्ति) में जैसे –

   – *सुनि* ***मुनिवचन राम रुख पाई***
   – *पुलकि* ***सरीर सभाँ*** *भए ठाड़े*
   – ***खेलत खुनिस*** *न कबहूँ देखी।*

   वस्तुतः ऐसे प्रयोग यत्र-तत्र प्रचुर मात्रा में हैं। आप स्वयं खोजकर लिखिए।

   व त्यनुप्रास–एकाधिकबार आव त्ति का एक उदाहरण दर्शनीय है:

   – *ह्रदय हेरि हारेउँ सब ओरा।*
   एकहि भाँति भलेहि भल मोरा।।

   (ग) उदाहरण/द ष्टांत – *फाइ कि कोदव बालि सुसाली।*
   मुकता प्रसव कि संबुक काली।।

   (घ) उपमा – मोर अभाग उदधि अवगाहू।

2. **नादात्मकता** – मधुर वर्णों के प्रयोग से कविता में नादात्मकता भी तुलसी की कविता का प्रमुख गुण है। जैसे :

   - *सुनि मुनि वचन राम रुख पाई*
   - *नीरज नयन नेह जब बाढ़े*
   - *मातु मंदि मैं साधु सुचाली*
   - *अपनी समुझि साधु सुचि को भा*
   - *जारिउँ जायँ जननि कहि काकू*

3. **साभिप्राय प्रयोग** – तुलसी अनेक शब्दों में से सर्वाधिक उपयुक्त शब्द का जानबूझ कर चयन करते हैं। इससे कविता में अर्थ गांभीर्य भी आ गया है। जैसे :

   साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
   प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

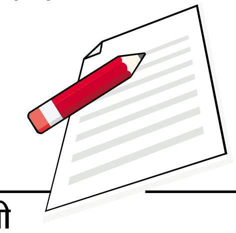

उपर्युक्त दोहे में 'झूठ' न बोलने के लिए पाँच बहुत ही सबल कारण एक दोहे में पिरोए गए हैं।

4. **प्रांजल अवधी** – तुलसीदास ने मानस की रचना अवधी भाषा में की है, किंतु उनकी अवधी बहुत मधुर प्रांजल शब्दावली से युक्त है– जैसे :

पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।
नीरज नयन नेह-जल बाढ़े।।

5. **दोहा-चौपाई छंद** – दोहा और चौपाई तुलसी के प्रिय छंद हैं। इनसे कथा-प्रवाह में सहायता मिलती है और पाठक/श्रोता रस-विभोर हो जाता है।

रामचरित मानस में प्रमुख रूप से दोहा तथा चौपाई छंदों का प्रयोग किया गया है। दोहा छंद के बारे में तो आप रैदास को पढ़ते हुए जान ही चुके हैं। चौपाई के बारे में संक्षेप में नीचे दिया जा रहा है। आइए, इसे समझें।

चौपाई

चौपाई एक प्रकार का मात्रिक छंद है। इसमें दो चरण होते हैं। दोनों चरणों की मात्राएँ बराबर (16–16) होती हैं। इसलिए इसे मात्रिक समछंद भी कहते हैं।

इस छंद के अंत में दो गुरु वर्णों का प्रयोग आवश्यक होता है।

I I I   ISI   IS I I   SS
पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े।   = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु
S I | | | | S | | | S S
नीरज नयन नेह जल बाढ़े।।   = 16 मात्राएँ अंत में दो गुरु

चौपाई छंद का प्रयोग तुलसीदास के रामचरित मानस तथा जायसी के पद्मावत में अधिक पढ़ने को मिलता है।

3.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आपने तुलसी के 'रामचरित मानस' के कुछ अंशों को समझ लिया है।

तुलसी के समान ही मलिक मुहम्मद जायसी ने भी अवधी में काव्य रचना की है और दोहा और चौपाई छंदों को अपनाया है। आइए, जायसी की कुछ पंक्तियों का भी आनंद लें :

फागुन पवन झकोरा बहा। चौगुन सीउ जाइ नहिं सहा।।
तन जस पियर पात भा मोरा। तेहि पर बिरह देइ झझकोरा।।
तरिवर झरहिं, झरहि बन ढाँखा। भई ओनंत फूलि फरि साखा।।
करहिं बनसपति हिये हुलासू। मो कह भा जग दून उदासू।।
फागु करहिं सब चाँचरि जोरी। मोहि तन लाइ दीन्हि जस होरी।।
जौ पै पीउ जरत अस पावा। जरत मरत मोहिं रोष न आवा।।
राति दिवस बस यह जिउ मोरे। लगौं निहोर कंत अब तोरे।।चौ।।

शब्दार्थ

सीउ – शीत
पियर पात – पीला पत्ता
ओनंत भई – झुक गई
मोहि तन लाइ – मेरा तन विरह से
दीन्हि जस होरी होलिका – सा जल रहा है।
कंत – पति

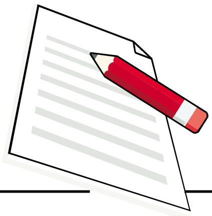

टिप्पणी

यह तन जारौं छार कै, कहौं कि 'पवन उड़ाउ'।
मकु तेहि मारग उड़ि परौ, कंत धरैं जहँ पाँउ।।दो।।

शब्दार्थ

जारौं छार – जलाकर राख बना दूँ
उड़ाउ – उड़ा लो
मकु – थोड़ा सा
कंत धरै जहँ पाउँ – मेरे पति जहाँ अपने पैर रखें

अवधी की उपर्युक्त पंक्तियों को आपने पढ़ा। क्या आप इसका केंद्रीय भाव समझ पाए ? फागुन का (वसंत का) मौसम आया है। चारों ओर फूलों-फलों से लदी डालें झुक गई हैं और नायिका अपने को पीले पत्ते-सा कह रही है? सोचिए क्यों? क्योंकि उसका पति उससे दूर है। वह विरह की अग्नि में जल रही है, जैसे होली जल रही हो। उसे उसका पति जलता हुआ भी देख ले तो उसे जल मरने का पश्चात्ताप नहीं होगा।

अंत में दोहे को एक बार और पढ़िए। जायसी का यह दोहा बहुत प्रसिद्ध है। विरहिनी की इच्छा क्या है ? जलकर राख हो जाना ही नहीं, वह राख उड़कर कहाँ गिरे, इस पर भी उसका विशेष आग्रह है। पढ़कर बताइए कि वह राख के रूप में कहाँ गिरना चाहती है ? क्यों ?

पाठगत प्रश्न 3.2

आइए, अब इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. वसंत में भी नायिका का शरीर पीले पत्ते-सा दुर्बल और कांतिहीन क्यों हो गया?
2. वसंत में व क्षों में क्या-क्या परिवर्तन दिखाई देते हैं?
3. जब लोग होली खेल रहे थे, तब नायिका होली के समान क्यों जल रही थी?
4. रात-दिन वह क्या सोचा करती है?
5. राख बन जाने पर वह उड़कर कहाँ गिरना चाहती है ? क्यों?

3.6 आपने क्या सीखा

1. राम और भरत में परस्पर गहरा प्रेम है। भरत के मन में राम के प्रति आदर भाव है और वे चाहते हैं कि राम अयोध्या वापस लौट चलें और उनके साथ ही रहें।
2. आवेश में कैकई के प्रति कहे वचनों के लिए भरत के मन में पश्चात्ताप भी है।
3. तुलसी की भाषा और कथन भंगिमाओं की भी आपने अनेक विशेषताएँ पढ़ीं। कवि शब्दों का प्रयोग बड़ी चातुरी से करता है। मनोभावों के चित्रण में वह सिद्धहस्त है।
4. अनुप्रास के अतिरिक्त उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, द ष्टांत आदि अलंकारों का तुलसी दास ने अपने काव्य में सुंदर प्रयोग किया है।
5. तुलसी ने रामचरित मानस की रचना अवधी भाषा में की है।

3.7 योग्यता विस्तार

तुलसीदास भक्तिकाल की सगुण काव्यधारा के राम-भक्त कवि हैं। उनका जन्म संवत् 1589 (1532 ई.) में उत्तर प्रदेश के सोरों नामक स्थान में हुआ। कहा जाता है कि उनका प्रारंभिक जीवन बड़ी कठिनाइयों में बीता। बाबा नरहरिदास के वे शिष्य थे और उन्हीं से राम कथा में दीक्षित हुए।

तुलसीदास के लिखे हुए छोटे-बड़े बारह ग्रंथों का उल्लेख आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने किया है। इनमें प्रमुख हैं – दोहावली, कवितावली, गीतावली, रामचरित मानस और विनय पत्रिका। सभी रचनाओं में भावों की विविधता तुलसी की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होंने रामकथा के विविध प्रसंगों के माध्यम से पारिवारिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन के आदर्शों को जनता के सामने रखा। तुलसी की भक्ति भावना, सीधी, सरल और साध्य है। राम उनके आदर्श हैं और मर्यादा पुरुष हैं। रामचरित मानस में तुलसी ने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त दिखाकर वैष्णवों और शैवों में समन्वय करने का प्रयास किया। राम कथा को लेकर संस्कृत और हिंदी में अनेक रचनाएँ हैं, परंतु भरत का जो रूप तुलसी ने दिखाया है, वह रघुवंश या वाल्मीकि रामायण में भी नहीं है।

भावों की विविधता के साथ-साथ तुलसी की शैली में भी विविधता है। सूरदास की पद-शैली, चारणों की छप्पय, कवित्त, सवैया पद्धति-दोहा-नीतिकाव्यों की भक्ति पद्धति और प्रेमाख्यानों की दोहा-चौपाई पद्धति आदि का सफल प्रयोग तुलसी ने किया है। तुलसी ने अपने समय की दोनों साहित्यिक भाषाओं– अवधी और ब्रज का प्रयोग किया। मानस के अतिरिक्त अधिकांश रचनाओं की भाषा ब्रज है, जिस पर तुलसी का अद्‌भुत अधिकार है।

3.8 पाठांत प्रश्न

1. 'बिधि न सकेउ सहि मोर दुलारा– 'भरत की इस मान्यता का क्या कारण है?
2. 'साधु सभाँ गुरु-प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ'– कहकर भरत क्या प्रमाणित करना चाहते हैं?
3. 'राम और भरत का प्रेम अद्वितीय था।' तुलसी के कथनों से प्रमाण देकर सिद्ध कीजिए।
4. भरत को माँ के प्रति आक्रोश क्यों था ? अपनी प्रतिक्रिया को वे उचित क्यों नहीं मानते ?
5. तुलसी की काव्य-शैली की दो विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए।
6. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित प्रमुख अलंकारों का उल्लेख कीजिए :

   (क) सुनि मुनि वचन राम रुख पाई

   (ख) नीरज नयन नेह जल बाढ़े

टिप्पणी

(ग) मोर अभाग उदधि अवगाहू।

(घ) मातु मंदि मैं साधु सुचाली। उर अस आनत कोटि कुचाली।।
फरइ कि कोदव बालि सुसाली। मुकुता प्रसव कि संबुक काली।।

7. 'भरत का भ्रात प्रेम' शीर्षक वाक्यांश की आज के संदर्भों में प्रासंगिकता बताइए।

8. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) पुलकि सरीर सभाँ भए ठाढ़े। नीरज नयन नेह जल बाढ़े।
कहब मोर मुनिनाथ निबाहा। एहि तें अधिक कहौं मैं काहा।।

(ख) साधु सभाँ गुरु प्रभु निकट, कहउँ सुथल सति भाउ।
प्रेम प्रपंचु कि झूठ फुर जानहिं मुनि रघुराउ।।

9. निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त छंद का नाम लिखिए–

(क) शांति दिवस बस यह जिउ मोरे।
लगौं निहोर कंत अब तोरे।।

(ख) राम नाम मनि दीप धरु जीह देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरेहु, जो चाहसि उजियार।।

10. निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
चितवति चकित चहूँदिसि सीता। कहँ गए नप किसोर मनु चिंता।।
लता ओट सब सखिन्ह लखाए। श्यामल गौर किसोर सुहाए।।
देखि रूप लोचन ललचाने। हरणे जनु निज निधि पहिचाने।।
थके नयन रघुपति छवि देखें। जनु पलकन्हिं परिहरीं निमेषें।।

(क) उपर्युक्तऽकविता किस छंद में लिखी गई है?

(ख) इसमें श्यामल और किसोर शब्द किसके लिए प्रयुक्त हुए हैं?

(ग) किसका रूप देखकर सीता की आँखें ललचाने लगीं?

(घ) 'पलकन्हिं परिहरी निमेषें' की व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए।

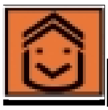

3.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) भरत, (ख) राम 2. (ग) 3. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1. (क) 2. (ख) 3. (ग)

3.2 1. अपने पति से वियोग के कारण

2. शाखाएँ फूलों और फलों से लद जाती हैं। व क्ष प्रसन्न जान पड़ते हैं।

3. वह विरह की आग में जल रही थी

4. वह रात-दिन कामना करती है कि जैसे भी हो उसका पति उसे मिले।

5. जिस मार्ग से होकर उसका पति चले, वह उस मार्ग पर राख के रूप में बिछ जाना चाहती है। उसकी इच्छा है कि इस प्रकार मरने के बाद ही सही, उसका पति से मिलन तो हो पाएगा।

टिप्पणी

4

मीराँबाई

301hi04

आप रैदास तथा तुलसीदास की कविताओं का आस्वादन कर चुके हैं। भक्तिकाव्य की इस रसधारा में विशिष्ट नारी व्यक्तित्व भी शामिल है, जिसका नाम है मीराँबाई। मीराँबाई श्री कृष्ण की अनन्य भक्त थीं, किंतु वे कृष्ण भक्ति के विभिन्न संप्रदायों में से किसी में भी विधिवत दीक्षित नहीं थीं। उनकी भक्ति 'माधुर्य भाव' की भक्ति कही जाती है। माधुर्य भाव की भक्ति के अंतर्गत भक्त और भगवान में प्रेम का संबंध होता है। मीराँबाई श्री कृष्ण के प्रेम में डूबी हुई हैं। उन्हें वे प्रायः गिरधर, साँवरा या प्रीतम के नाम से पुकारती हैं। उनके समूचे काव्य में इस प्रेम की अभिव्यक्ति अनेक प्रकार से हुई है। प्रेम के मिलन और विरह, दोनों ही पक्षों की सुंदर अभिव्यक्ति उनके काव्य में मिलती है। यह अभिव्यक्ति अत्यंत सीधे-सादे और सरल रूप में हुई है, जिसमें प्रेम, विश्वास और समर्पण की भावना विद्यमान है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पदों के सौंदर्य-स्थलों का उल्लेख कर सकेंगे;
- मीराँ के काव्य के भाव पक्ष पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- मीराँ की समर्पण भाव की भक्ति का स्पष्टीकरण कर सकेंगे;
- मीराँ की विरह-वेदना पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- मीराँ के जीवन के कटु अनुभवों का उल्लेख कर सकेंगे;
- मीराँ की काव्यात्मक अभिव्यक्ति पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. आपने मीराँ का कोई-न-कोई पद अवश्य ही पढ़ा अथवा सुना होगा। अपने पदों में मीराँ ने कृष्ण के अनेक नामों का प्रयोग किया है, ये नाम हैं –

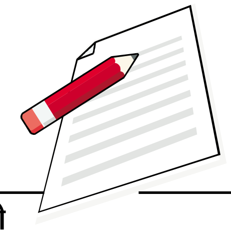

गिरधर, गोविंद, साँवरा (श्याम), हरि, कृष्ण। इनके अतिरिक्त भी आपने कृष्ण के नाम पढ़े या सुने होंगे। उन्हें लिखिए –

....

....

....

2. जिससे आप प्रेम करते हैं,

(क) उसके संग अधिक-से-अधिक रहना चाहते हैं।

(ख) उसकी पसंद-नापसंद का विशेष ध्यान रखते हैं।

ऐसी और अनेक बातें हो सकती हैं, उन्हें यहाँ लिखिए –

(ग) ....

(घ) ....

(ङ) ....

4.1 मूलपाठ

आइए, हम 'मीराँबाई की पदावली' से उद्ध त उनके कुछ पदों का आनंद लें :

पद

1. मैं गिरधर के घर जाऊँ।। टेक।।
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।
मीराँ के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।।

शब्दार्थ

गिरधर गिरिधर	– श्रीक ष्ण
म्हाँरो>म्हारो	– हमारे
हमारो	– हमारा
साँचो	– सच्चा
प्रीतम	– प्रियतम
रैण/रैन	– रात
भोर	– प्रातःकाल
रैणदिना	– रात-दिन
वाके	– उसके
ज्यूँ-त्यूँ	– किसी भी तरह से अर्थात् हर प्रकार से
वाहि	– उसे
पहिरावै	– पहनाए
सोई	– वही
उणकी	– उनकी
तितही	– वहीं

मॉड्यूल - 1
कविता का पठन

टिप्पणी

2. माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लियां बजन्ता ढोल।
थे कह्याँ मुंहाधो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

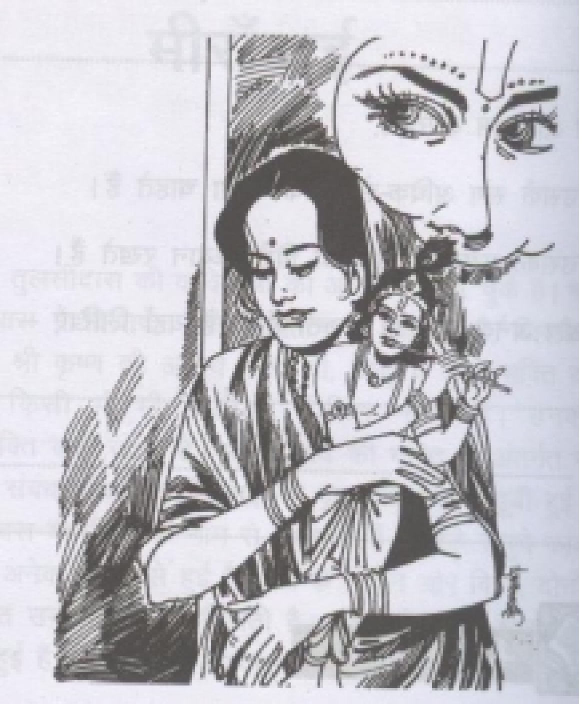

चित्र 4.1

3. सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयाँ मण एक णा मानी हो।
बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मण रोस णा ठानी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

शब्दार्थ

माई री	– ब्रज तथा राजस्थानी का एक सामान्य संबोधन (यहाँ हे सखी!)
म्हाँ	– मैं (ने)
थे	– तुम
कह्याँ	– कहती हो
छाणे	– छिपकर
म्हाँ काँ	– मैं कहती हूँ
चोड्डे	– चौड़े में अर्थात् खुले-आम
बजंता ढोल	– ढोल बजाकर, खुलेआम
मुंहाघो, मंहगो	– महँगा
सस्तो	– सस्ता
तराजाँ तोल	– तराजू में तोलकर
तण	– तन
वाराँ	– वारती हूँ, न्योछावर करती हूँ।
जीवण	– जीवन
अमोलक	– अमूल्य
मोल	– कीमत, दाम, मूल्य
मीरां कूं	– मीरा को
दरसण>दरसन	– दर्शन
दीज्याँ	– दीजिए
पूरब जणम	– पूर्व जन्म अर्थात् पिछला जन्म
कोल>कौल	– वचन
नसाणी	– नष्ट हो गई है
रो	– का
निहारत	– निहारते हुए अर्थात् देखते हुए
बिहानी	– बीत गई
दयां	– दी
बिन देख्याँ	– बिना देखे
कल ना पणाँ	– कल नहीं पड़ती अर्थात चैन नहीं मिलता
रोस>रोष	– क्रोध
अंग	– शरीर
खीण>क्षीण	– कमजोर, दुबला
व्याकुल भयाँ	– व्याकुल हो गई हूँ
बाणी	– बोली, आवाज़
अंतर वेदन	– हृदय की वेदना
पीड़ णा जाणी	– पीड़ा नहीं जानी
घणकूँ>घन को	– बादल को
रट	– रट लगाना
मछरी	– मछली
पाणी	– पानी
सुध बुध बिसराणी	– सुध-बुध खो बैठी है।

हिंदी

4.2 आइए समझें

पद - 1

प्रसंग

प्रस्तुत पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीराँ की अनन्य भक्ति तथा समर्पण भाव द ष्टिगोचर होता है। समर्पण भी भक्ति के नाना रूपों में से एक है। अपने आराध्य के इशारे पर उठने-बैठने, उसकी इच्छानुसार ही रहने तथा उस पर सर्वस्व न्योछावर कर देने के माध्यम से मीराँ ने इस समर्पण-भाव को व्यक्त किया है।

मैं गिरधर के घर जाऊँ।। टेक।।
गिरधर म्हाँरों साँचों प्रीतम, देखत रूप लुभाऊँ।
रैण पड़ै तब ही उठि जाऊँ, भोर भये उठि आऊँ।
रैणदिना वाके सँग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ।
जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितहीं बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ
मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि मैं तो गिरधर के घर जाती हूँ, वही मेरा सच्चा प्रियतम है और मैं उसके रूप-सौंदर्य पर मुग्ध हूँ अर्थात् कृष्ण के परम सौंदर्य ने मेरे मन में दर्शन का लोभ उत्पन्न कर दिया है, अतः मैं उसके प्रेम के वशीभूत होकर उसके घर जाती हूँ। रात होते ही मैं उसके घर जाने के लिए तत्पर हो जाती हूँ तथा प्रातःकाल होते ही वहाँ से उठ आती हूँ। मैं रात-दिन उसके साथ खेलती हूँ तथा हर प्रकार से उसे रिझाने तथा प्रसन्न करने का प्रयत्न करती हूँ। अब वह मुझे जो भी पहनाए मैं वही पहनूँगी तथा जो कुछ खाने को दे, वही खा लूँगी। आशय है कि मैंने अपनी इच्छा-अनिच्छा, रुचि-अरुचि सभी से मुक्त होकर पूर्ण रूप से कृष्ण के प्रति समर्पण कर दिया है। मीराँ इसी भाव को और स्पष्ट करते हुए कहती हैं कि मेरी और उनकी (श्रीकृष्ण की) प्रीति पुरानी है और मैं उनके बिना एक पल भी नहीं रह सकती। वह जहाँ चाहे मैं वहीं बैठ जाऊँगी और यदि वह मुझे बेचना भी चाहे तो मैं सहर्ष बिक जाऊँगी। मीराँ कहती हैं कि गिरधर नागर यानी श्रीकृष्ण मेरे स्वामी हैं तथा मैं बार-बार उन पर न्योछावर होती हूँ।

टिप्पणी

1. आपने महसूस किया होगा कि इस पद में श्रीकृष्ण के प्रति मीराँ की समर्पण-भावना व्यक्त हुई है। समर्पण प्रेम और भक्ति का अनिवार्य अंग है। समर्पण का अर्थ है– अपनी इच्छा-अनिच्छा, रुचि-अरुचि, मान-अपमान आदि से मुक्त हो प्रिय या आराध्य के आदेश या इच्छा के अनुसार व्यवहार करना अर्थात् 'स्व' या 'मैं' की भावना से छुटकारा पाना। जब प्रेमी या भक्त 'मैं' की भावना से छूट जाता है तो उसकी आत्मा निर्मल हो जाती है। माया और मोह इस 'मैं' की भावना का ही परिणाम है, इससे मुक्त व्यक्ति ही सच्चे आनंद की प्राप्ति करता है। आत्मबद्धता में इस निर्मल आनंद की प्राप्ति नहीं होती। कबीर ने भी कहा है–

    जब मैं था तब हरि नहिं, अब हरि है मैं नाहिं।

2. 'समर्पण-भाव' मीराँ के अन्य पदों में भी अत्यंत मुखरता से व्यक्त हुआ है फिर भी इस पद की निम्नलिखित पंक्तियाँ विशेष रूप से द्रष्टव्य हैं –

जो पहिरावै सोई पहिरूँ, जो दे सोई खाऊँ।
मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण बिण पल न रहाऊँ।
जहाँ बैठावें तितही बैठूँ, बेचे तो बिक जाऊँ।

3. आपने ध्यान दिया होगा कि प्रस्तुत पद में मीराँ ने कृष्ण को अपना सच्चा प्रियतम कहा है। प्रीतम के साथ ''साँचो'' विशेषण ध्यान देने योग्य है। प्रियतम स्वयं अतिशयवाचक अर्थात सर्वाधिक प्रिय है, फिर उसके साथ 'साँचो' क्यों? संभवतः मीराँ श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम को लौकिक संबंध से अलग करने के लिए 'साँचो' प्रीतम कहती हैं। मीराँ के यहाँ अन्यत्र भी ऐसे प्रयोग मिलते हैं, कभी सच्चा प्रीतम तो कभी सच्ची प्रीत।

चित्र 4.2

(क) स्याम प्रीत रो बाँधि घूँघर्‌याँ, मोहण म्हारो साँच्याँ री।

(ख) अबिनासी सुँ बालवाँ है, जिन सूँ साँची प्रीत।

4. अगर आप मीराँ के और बहुत से पदों को पढ़ेंगे तो पाएँगे कि 'देखत रूप लुभाऊँ', यह अभिव्यक्ति मीराँ के पदों में बहुतायत से मिलती है। कृष्ण का मोहक रूप मीराँ को भा गया है। उसने नेत्रों के रास्ते मीराँ के हृदय में प्रवेश कर लिया है और अब उनका मन कृष्ण के रूप-सौंदर्य का दीवाना हो गया है। इसी भाव की पुनराव त्ति को देखते हुए कुछ विद्वानों ने मीराँ के प्रेम को 'प्रथम द ष्टिजन्य प्रेम' (लव एट फर्स्ट साइट) भी कहा है।

5. मीराँ के काव्य में कृष्ण को किसी भाँति रिझाने का भाव भी प्रमुखता से मिलता है, कुछ उदाहरण देखिए –

(क) *जिह जिह विधि रीझै हरी, सोई विधि कीजै, हो।*

6. *'मेरी उनकी प्रीत पुराणी'*, इस भाव की अभिव्यक्ति भी मीराँ के काव्य में बार-बार होती है। एक उदाहरण और देखें –

पूरब जनम री प्रीत पुराणी, जाणा णा गिरधारी।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. मीराँ किसके घर जाने की बात कहती है?

(क) कृष्ण के
(ग) अपनी माँ के
(ख) अपनी सहेली के
(घ) अपने पति के

टिप्पणी

2. 'मेरी उनकी प्रीत पुराणी' में किन दो लोगों के बीच की प्रीति की बात कही गई है?

   (क) कृष्ण-राधा (ग) कृष्ण-मीराँ

   (ख) कृष्ण-रूक्मिणी (घ) राम-सीता

3. इस पद में मीराँ किसको बेचने की बात कहती है?

4. मीराँ किस समय कृष्ण के घर जाना चाहती है?

पद - 2

आइए दूसरे पद को एक बार फिर ध्यान से पढ़ लें।

प्रसंग

प्रस्तुत पद में मीराँ ने कृष्ण के साथ अपने प्रेम संबंध की घोषणा अत्यंत साहस और द ढ़ता से की है। संभवतः राजवंश और लोक जीवन से मिलने वाली लांछना इस पद की भूमिका में है। यद्यपि यहाँ उसका बहुत स्पष्ट उल्लेख नहीं है, पर अन्यत्र ऐसा उल्लेख मिलता है। इस पद में इस साहसपूर्ण स्वीकृति के साथ-साथ कृष्ण से पूर्व जन्म के साथ का भी संकेत है।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि 'हे सखी ! मैंने तो श्रीकृष्ण को मोल ले लिया है अर्थात् मैंने कृष्ण के साथ अपने संबंध का मूल्य भी चुकता किया है। तुम कहती हो कि मैं उनसे यह संबंध छिपकर रखती हूँ और मैं कहती हूँ कि मैंने खुले में ढोल बजा कर श्रीकृष्ण को मोल लिया है अर्थात् उन्हें खुले आम अपना लिया है। आशय है कि मुझे कृष्ण के प्रति अपने प्रेम को गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं है। मुझे उनसे प्रेम है और मैं सार्वजनिक तौर पर इस प्रेम की घोषणा करती हूँ। मीराँ आगे कहती हैं कि 'हे सखी, तुम कहती हो कि यह सौदा मँहगा है पर मेरा मानना है कि यह बहुत सस्ता है; क्योंकि मैंने यह सौदा तराजू पर तोलकर किया है अर्थात् मैंने पूर्ण रूप से सोच-विचार कर, जाँच-परख कर ही ऐसा किया है और इसका जो मूल्य मैंने चुकाया है (लोक अपवाद, कुल-संबंधियों से मिलने वाली भर्त्सना और लांछना आदि) वह तुम्हारी द ष्टि में अधिक हो सकता है, पर मेरी द ष्टि में श्रीकृष्ण को पाने के लाभ की तुलना में बहुत कम है। मैंने तो उन पर अपना तन-मन और जीवन सभी कुछ न्योछावर कर दिया है अर्थात् मैं अपने इस अमूल्य सौदे यानी श्रीकृष्ण से प्रेम संबंध पर स्वयं न्योछावर हूँ। दूसरा अर्थ यह भी हो सकता है कि मैंने अपना सब कुछ, जो अमूल्य था, कीमत के रूप में श्रीकृष्ण पर न्योछावर कर दिया। आगे, मीराँ पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराते हुए श्रीकृष्ण से दर्शन देने की प्रार्थना करती हैं।

माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल।।टेक।।
थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लिया बजन्ता ढोल।
थे कह्यो मुंहाघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीरां कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

टिप्पणी

1. आइए इस पद की पहली पंक्ति *'माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल'*, पर विचार करें। इसका एक अर्थ यह भी लगाया जाता है – कि हे सखी! मैंने श्रीकृष्ण

को मोल ले लिया है और अब उन पर मेरा पूर्ण अधिकार है। किंतु यह अर्थ ग्रहण करने पर आगे की पंक्तियों से भाव का सामंजस्य नहीं बैठता। हालाँकि प्रेम में पूर्ण अधिकार के भाव की अभिव्यक्ति भी साहित्य में मिलती है, उदाहरण के लिए कबीर का यह दोहा देखें –

नैनां अन्तरि आव तूँ, ज्यूँ हौं नैन झँपेउँ।
ना हौं देखौं और कूँ, ना तुझ देखन देउँ।।

ब्रजभाषा में 'मैं' के लिए 'हौं' का प्रयोग होता है, 'देखौं' मतलब है देखूँगा तथा 'देउँ', का अर्थ है 'दूँगा'। मीराँ के इस पद में यह भाव नहीं है। मीराँ के अन्य पदों में भी प्रायः यह भाव नहीं मिलता जैसा कि आपने देखा होगा, वे यह अधिकार अपने प्रियतम को ही देती हैं।

2. आपने ध्यान दिया होगा कि प्रस्तुत पद की अंतिम पंक्ति में दर्शन की अभिलाषा है। भक्ति और प्रेम में यह अभिलाषा निरंतर बनी रहती है। समूचे भक्ति साहित्य में ऐसी बहुत सी उक्तियाँ मिलती हैं।

3. इसी पंक्ति में मीराँ ने श्रीकृष्ण को पूर्व जन्म में दिए गए वचन का स्मरण कराया है। पूर्व जन्म के साथ का ज़िक्र बहुत से पदों में मिलता है, जिनमें से एक का संदर्भ आपको पिछले पद की टिप्पणी में दिया जा चुका है। यहाँ अगले जन्म में दर्शन देने के श्रीकृष्ण के वचन की याद दिलायी गई है।

4. अगर आप इस पद की पहली तीन पंक्तियों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आपके समक्ष यह स्पष्ट हो जाएगा कि इनमें लोक-प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सुंदर प्रयोग किया गया है, ये मुहावरे हैं – मोल लेना, ढोल बजा कर लेना, तराजू के तोल कर लेना।

पाठगत प्रश्न 4.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दिए गए विकल्पों में से उचित कथन पर सही का चिह्न (√) अंकित करते हुए दीजिए:

1. मीराँ का मानना है
   (क) जैसी उनकी मर्जी होगी, वे वैसे ही रहेंगी।
   (ख) कृष्ण के घर जाकर सामाजिक तौर-तरीकों का पालन करेंगी।
   (ग) कृष्ण की इच्छाओं के अनुरूप व्यवहार करेंगी।
   (घ) कृष्ण की बातों को सोच-विचार कर ही मानेंगी।
2. मीराँ श्रीकृष्ण पर अपना तन और जीवन न्योछावर करती हैं क्योंकि :
   (क) वे कृष्ण से प्रेम करती हैं।
   (ख) वे कृष्ण को वचन दे चुकी हैं।

(ग) उन्होंने कृष्ण को मोल ले लिया है।

(घ) उनका मन समाज से त्रस्त है।

3. मीराँ श्रीकृष्ण से दर्शन देने के लिए कहती हैं क्योंकि

(क) अब जैसे कृष्ण चाहते हैं वे वैसे ही रहती हैं।

(ख) अब वे कृष्ण को मोल ले चुकी हैं।

(ग) वे मंदिर में उनके दर्शन नहीं कर पातीं।

(घ) कृष्ण ने पिछले जन्म में उन्हें दर्शन देने का वचन दिया था।

4. मीराँ किस बात को डंके की चोट पर स्वीकार करती हैं?

5. कृष्ण के प्रति मीराँ का प्रेम किस प्रकार का है?

पद - 3

प्रसंग

प्रस्तुत पद में भी मीराँ ने विरह की वेदना को अभिव्यक्त किया है। विरहिणी की नींद उड़ जाना तथा प्रियतम के बिना किसी भाँति चैन न पड़ना – इस भाव को मीराँ ने अत्यंत मार्मिकता के साथ प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयां मन एक न माणी हो।
बिन देख्याँ कल ना पणाँ मण रोस णा ठाणी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्यारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

व्याख्या

मीराँ कहती हैं कि हे सखी, प्रियतम के वियोग में हमारी नींद जाती रही है, प्रियतम की राह देखते हुए सारी रात व्यतीत हो गई है। हालाँकि सारी सखियों ने मिलकर मुझे सीख दी थी, पर मेरे मन ने उनकी एक न मानी और मैंने कृष्ण से यह स्नेह संबंध जोड़ ही लिया। अब यह हालत है कि उन्हें देखे बिना मुझे चैन नहीं पड़ता और बेचैनी भी जैसे मुझे अच्छी लगने लगी है। मेरा सारा शरीर अत्यंत दुबला और व्याकुल हो गया है तथा मेरे मुख पर सिर्फ प्रियतम का ही नाम है। मीराँ कहती हैं, हे सखी! मेरे विरह ने मुझे जो आंतरिक पीड़ा दी है, उस पीड़ा को कोई नहीं जान पाता। जैसे चातक बादल की ओर एक टक द ष्टि लगाए रहता है और मछली पानी के बिना नहीं रह पाती, तड़पती रहती है, ठीक उसी प्रकार मैं, अपने प्रियतम के लिए तड़पती हूँ। प्रिय के वियोग में मैं अत्यंत व्याकुल हो गई हूँ और इस व्याकुलता में मैं अपनी सुध-बुध भी खो बैठी हूँ।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत पद में विरह-वेदना की आंतरिक अनुभूति को अत्यंत मार्मिक ढंग से व्यक्त किया गया है। आप जानते ही होंगे कि जब हमारा प्रिय व्यक्ति हमसे दूर होता है तो हमारा मन उससे मिलने के लिए कितना बेचैन होता है। इस बेचैनी की तीव्रता को ठीक-ठीक बयान कर पाना बहुत कठिन होता है। इस पद

टिप्पणी

में मीराँ ने विरह से त्रस्त व्यक्ति की मनोदशा का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है।

2. आइए, हम इस पद से भाव-साम्य रखने वाली इन पंक्तियों को देखें –

(क) *कबीर देखत दिन गया, निस भी देखत जाइ।*
विरहणि पिव पावै नहीं, जियरा तलपै माइ।। – **कबीर**

(ख) *बिनु जल मीन तलफ़ जस जीऊ।*
चातक भइउँ कहत 'पीउ–पीउ' – **जायसी**

(ग) *नैना भये अनाथ हमारे।*
वै हरि जज, हम मीन बापुरीं, कैसे जिवहिं निनारे।।
हम चातक चकोर स्यामघन, बदन-सुधा नित प्यारे।।
मधुबन बसत आस दरसन की, जोई नैन मग हारे।। – **सूरदास**

3. आप जानते हैं कि हमारे सामूहिक विश्वास आमतौर पर वैज्ञानिक या ऐतिहासिक होते हैं अथवा अनुभव के आधार पर बनते हैं। इन विश्वासों को हम सत्य का नाम देते हैं। लेकिन हमारे कुछ विश्वास तर्क या विज्ञान या अनुभव से परे भी होते हैं और हम उन्हें भी सत्य रूप में प्रस्तुत करते हैं (लेकिन यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक विश्वास सत्य ही हो। यद्यपि हमारे विश्वास सत्य पर ही आधारित होने चाहिए)। कविता में भी कुछ ऐसे विश्वास होते हैं जो वास्तविक रूप से सत्य न भी हों पर एक मान्यता के रूप में कायम हैं, इन्हें हम 'कवि-सत्य' कहते हैं। ऐसी ही एक मान्यता यह है कि चातक नामक पक्षी स्वाति नक्षत्र में बादलों से गिरने वाली बूँद को पीकर ही प्यास बुझाता है, अन्य किसी प्रकार के जल को ग्रहण नहीं करता, भले ही प्यास से उसके प्राण निकल जाएँ। इसीलिए, भक्ति और प्रेम की एकाग्रता तथा अनन्य भाव की अभिव्यक्ति के लिए कवियों को चातक-भाव सर्वाधिक उपयुक्त लगता है। भक्ति-काव्य में चातक-भाव की विशेष प्रतिष्ठा है। उदाहरण के लिए देखिए–

(क) *चातक होइ पुकारु पियासा।*
पीउ न पानि सेवाति की आसा – **जायसी**

(ख) *एक भरोसो एक बल, एक आस बिस्वास।*
एक राम घन स्याम हित, चातक तुलसीदास।। – **तुलसीदास**

4. प्रेम की पीड़ा आंतरिक पीड़ा है, इसे वही समझता है जिस पर गुज़रती है – यह भाव हिंदी कविता में तथा स्वयं मीराँ की कविता में खूब मिलता है। ऐसे ही भाव रखने वाली इन पंक्तियों को भी देखिए –

(क) *हेरी मैं तो दरद दिवाणी, मेरो दरद न जाणै कोई।*
घायल की गति घायल जाणै, कि जिण लाई होई।। – **मीराँबाई**

(ख) *चोट सताणी विरह की, सब तन जरजर होइ।*
मारण हारा जाणि है, कै जिहि लागी सोइ – **कबीर**

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही {√} का चिह्न अंकित कीजिए:

1. मीराँ की रातों की नींद उड़ गई है क्योंकि,
   (क) उन्हें अपने परिवार से धमकियाँ मिल रही हैं।
   (ख) मीराँ का सारा शरीर दर्द से पीड़ित है।
   (ग) वे प्रियतम कृष्ण के वियोग में बेचैन रहती हैं।
   (घ) उनके मन में एक प्रकार का आंतरिक डर बैठ गया है।
2. भक्ति में चातक-भाव की प्रतिष्ठा इसलिए है, कि वह
   (क) सदैव ऊपर ईश्वर की तरफ़ देखता रहता है।
   (ख) स्वाति नक्षत्र में गिरने वाली बूँद के प्रति अनन्य भाव रखता है।
   (ग) बादलों के आने की प्रतीक्षा करता है।
   (घ) पानी की शुद्धता और पवित्रता का पूरा ध्यान रखता है।
3. मीराँ की आंतरिक पीड़ा का कारण क्या है?
4. इस पद में चातक और मछली किसके प्रतीक हैं?

4.3 भाव सौंदर्य

आपने मीराँबाई के पदों को पढ़ा, समझा और उनका आनंद लिया। इन पदों में मीराँ ने श्रीकृष्ण के प्रति अपने अनन्य प्रेम और भक्ति का सुंदर निरूपण किया है। प्रियतम श्रीकृष्ण की बाँकी छवि उनके मन-मस्तिष्क में गहरे पैठ गई है – इतने गहरे कि वे अपने अस्तित्व के बोध को भी खो बैठी हैं। वे प्रेम की इस अनुभूति को इस प्रकार से सँजोए रखना चाहती हैं कि पूर्ण रूप से स्वयं को इस प्रेम के प्रति समर्पित कर देती हैं। जब वे समर्पित हैं, तो उनका उठना, बैठना, सोना, जागना, पहनना, ओढ़ना, खाना, पीना तथा मान, अपमान, राग, द्वेष सभी कुछ कृष्ण के लिए है, फिर चाहे लोक-अपवाद मिले या परिवार और राजसत्ता की ओर से यातनाएँ – वे अपने प्रेम की शक्ति से सबको परास्त कर देती हैं, किसी की चिंता नहीं करतीं। प्रेम के मिलन की पुलक, उत्साह और आनंद तथा विरह की पीड़ा, व्याकुलता और वेदना, सभी भावों की उन्होंने अत्यंत सहज, सुंदर और सटीक अभिव्यक्ति की है। व्यक्तिगत जीवन-अनुभवों से प्राप्त अनुभूति की तीव्रता उनके काव्य का निजी वैशिष्ट्य है, जो मध्यकालीन साहित्य में कम देखने को मिलता है। यद्यपि संत-काव्य में अनुभूति की गहनता

मिलती है पर वह कहीं-कहीं है, जब कि मीरॉं के समूचे काव्य में अनुभूति की तीव्रता और सघनता पाई जाती है।

भक्ति काव्य में मीरॉं एक अलग व्यक्तित्व की स्वामिनी है। उनके काव्य का अध्ययन करने वाले, उन्हें कभी संत काव्य की परंपरा में रखते हैं, कभी महाप्रभु वल्लभाचार्य की पुष्टिमार्गी परंपरा में। मीरॉं में कभी चैतन्य महाप्रभु की माधुर्य भाव की भक्ति की परंपरा दिखाई देती है, तो कभी सूफी काव्य-परंपरा से भाव-साम्य भी देखा जा सकता है, पर सत्य यह है कि मीरॉं इन सभी परंपराओं से अलग अपनी छाप छोड़ती है। पंद्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी में वैयक्तिक अनुभूतियों की ऐसी अभिव्यंजना वास्तव में अनूठी है। यह परंपरा आगे अधिक ठोस रूप में घनानंद तथा छायावाद के कवियों में ही मिलती है। इस रूप में मीरॉं के काव्य को प्रव त्ति स्थापक (Trend Setter) भी माना जा सकता है।

4.4 शिल्प सौंदर्य

काव्य रूप की द ष्टि से मीरॉं का काव्य गीतिकाव्य के अंतर्गत आता है। अनुभूति की तीव्रता और सघनता प्रायः गीतिकाव्य में ही व्यक्त होती है। गीतिकाव्य के आवश्यक तत्त्व हैं – भावानुभूति, वैयक्तिकता, संगीतात्मकता, संक्षिप्तता तथा शैली की कोमलता।

पहले दो तत्त्वों पर हम विस्तार से चर्चा कर चुके हैं। यही वे तत्त्व हैं जो गीत या गाने से गीति को अलग करते हैं। मीरॉं के काव्य का अध्ययन करने पर पता चलता है कि मीरॉं ने संभवतः संगीत और न त्य की भी शिक्षा पायी थी पदावली में संग हीत उनके पद लगभग सत्तर भिन्न रागों में निबद्ध हैं। उन्हें 'पीलू राग' अत्यंत प्रिय है। यद्यपि कृष्ण भक्ति काव्य में प्रायः राग निबद्ध रचनाएँ मिलती हैं, पर मीरॉं के काव्य में राग-रागनियों का विशेष महत्त्व है। आत्मानुभूति की प्रमुखता के कारण संक्षिप्तता उनके यहाँ सायास नहीं लाई जाती है, न ही वे किसी तरह खींच-खाँच कर आवश्यक पंक्तियाँ जुटाती हैं। उनका पद चार पंक्तियों में भी सिमट जाता है, तो कभी-कभी भावानुकूल विस्तार भी ग्रहण कर लेता है। उनकी शैली तो कोमल है ही। इस प्रकार वे गीतिकाव्य की सभी आवश्यकताओं का सुंदर निर्वाह करती हैं।

मीरॉं ने न तो रस, अलंकार, वक्रोक्ति, ध्वनि आदि तथा बिंब, प्रतीक, अप्रस्तुत योजना, अन्योक्ति आदि का चमत्कार प्रस्तुत किया है और न ही वे भाव तथा विचारगत शब्दावली के जाल में उलझती हैं। वे तो अत्यंत सहज ढंग से साधारण भाषा में अपने हृदय की बात रखती हैं, उनका शिल्पगत सौंदर्य उनकी भावानुभूति की तीव्रता से ही अपना आकार ग्रहण करता है। तथापि आचार्य परशुराम चतुर्वेदी ने मीरॉं पदावली में पंद्रह प्रकार के छंदों तथा रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा अत्युक्ति, उदाहरण, विभावना, स्वभावोक्ति, अर्थातंरन्यास, श्लेष, वीप्सा आदि अलंकारों को रेखांकित किया है।

मीरॉं की भाषा मूलतः ब्रजभाषा है, जिसमें राजस्थानी तथा गुजराती के शब्दों की प्रचुरता भी है। खड़ी बोली के पूर्व रूप को भी मीरॉं के काव्य में यत्र-तत्र देखा जा सकता है। कुछ उदाहरण इस प्रकार हैं –

खड़ी बोली

1. पिव मेरा मैं पीव की

2. जोगी मत जा, मत जा, मत जा

3. ऐसे वर का क्या करूँ जो जनमे और मर जाय।

4. हँस कर निकट बुलावे

5. देश विदेश संदेश न पहुँचे।

6. सुरत की कछनी काछूँगी।

राजस्थानी – *'मेरी उणकी प्रीति पुराणी उण बिन पल न रहाऊँ।'*

ब्रजभाषा – *'पंक्तियाँ मैं कैसे लिखूँ लिख्यो री न जाए।'*

पाठगत प्रश्न 4.4

1. मीराँ की काव्य रचना किस संप्रदाय से जुड़ी हुई थी–

   (क) ज्ञानमार्गी साधना (ग) वल्लभाचार्य का पुष्टि मार्ग

   (ख) सूफ़ी काव्यधारा (घ) उपर्युक्त में किसी से नहीं।

2. मीराँ की भाषा में अभाव है –

   (क) चित्रात्मकता का (ग) क्लिष्टता का

   (ख) नाद सौंदर्य का (घ) बिंब का।

3. मीराँ के भक्ति गीत समकालीन कवियों से किस अर्थ में भिन्न हैं?

4. काव्य रूप की द ष्टि से मीराँ के पद किसके अंतर्गत आते हैं?

4.5 आइए, स्वयं पढ़ें

मीराँ के गीतों का आनंद आपने लिया। आइए 'कबीर' के इस पद को भी पढ़ें:

दुलहनीं गावहु मंगलचार,
हमारे घरि आये हो राजा राम भरतार।
तन रति करि मैं, मन रति करिहूँ पंचतत बराती।
रामदेव मोरे पाहुनैं आये, मैं जोबन मैमाती।।
सरीर सरोवर बेदी करिहूँ, ब्रह्मा बेद उचार।
रामदेव संग भाँवरि लेहूँ, धनि धनि भाग हमार।।
सुर तैतीसूँ कौतिग आये, मुनियर सहस अठ्यासी।
कहै कबीर हमें ब्याहि चले हैं, पुरिष एक अबिनासी।।

शब्दार्थ

भरतार – पति
रति – प्रेम
पंचतत – पंच तत्व (प थ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश)
पाहुनैं – मेहमान
जोबन – यौवन
मैमाती – मद से भरा
उचार – उच्चारण
कौटिक – करोड़
मुनियर – मुनिवर
सहस > सहस्र – हजार
पुरिष – पुरुष
अबिनासी – जो सदा रहता है (ईश्वर)

पद को पढ़कर आप यह तो समझ गए होंगे कि इसमें किसी विवाह उत्सव की चर्चा है। कैसे? भरतार (पति) कौन है? उसे कैसा पुरुष कहा गया है? भक्त अपने आप को 'जोबन मदमाती' क्यों कह रहा है? इस बारात में बराती कौन है ? दूल्हा कौन है? वेदी किस की है? विवाह कराने वाला मुख्य वैदिक पुरोहित कौन है? भाँवर कौन ले रहा है? किन पंक्तियों से पता चला है कि इस विवाह में सभी देवता और मुनि भी पधारे हैं?

आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर तो ढूँढ़ लिए। पर क्या आप यह समझ पाए कि यह विवाह-मिलन वस्तुतः किस-किस के बीच है? यों सोचकर देखिए कि यह 'आत्मा' और 'परमात्मा' का मिलन है। इस संदर्भ में पूरे पद को एक बार और समझिए और नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पाठगत प्रश्न 4.5

1. 'दुलहिनीं' संबोधन किसके लिए है –
   (क) गाँव की स्त्रियों के लिए
   (ख) आत्मा के लिए
   (ग) घर की नई बहू के लिए
   (घ) स्वयं कवि के लिए
2. पंचतत्त्वों से क्या तात्पर्य है ?
3. कवि अपने को भाग्यवान क्यों मानता है ?
4. किस पंक्ति से पता चलता है कि देवता और मुनि भी विवाह के अवसर पर पधारे थे?

4.6 आपने क्या सीखा

1. मीराँ का काव्य किसी बँधी-बँधाई काव्य परंपरा में नहीं आता।
2. मीराँ के पदों का वैशिष्ट्य उनकी तीव्र आत्मानुभूति में निहित है।
3. मीराँ के काव्य का विषय है – श्रीकृष्ण के प्रति उनका अनन्य प्रेम और भक्ति।
4. मीराँ ने प्रेम के मिलन (संयोग) तथा विरह (वियोग) दोनों पक्षों की सुंदर अभिव्यति की है।
5. श्रीकृष्ण के प्रति अपने प्रेम में मीराँ किसी भी प्रकार की बाधा या यातना से विकल नहीं होतीं। लोक का भय अथवा परिवार की प्रताड़ना दोनों का ही वे द ढ़ता के साथ सामना करती हैं।
6. गीतिकाव्य की द ष्टि से मीराँ के काव्य का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। वे इस क्षेत्र में मध्यकालीन काव्य में सबसे अलग दिखाई पड़ती हैं।
7. मीराँ की रचनाएँ विभिन्न राग-रागनियों पर आधारित हैं तथा उन्होंने अनेक प्रकार के छंदों का प्रयोग किया है।

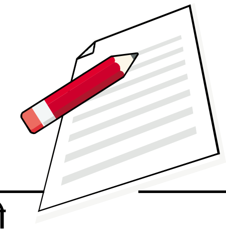

8. मीराँ की भाषा राजस्थानी और गुजराती मिश्रित ब्रज है तथा सरल अभिव्यक्ति उनकी शैली की प्रमुख विशेषता है।

4.7 योग्यता विस्तार

कवयित्री परिचय

मीराँ के काव्य का अध्ययन करते समय हमने देखा कि मीराँ ने अपने पदों में निजी जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति की है किंतु यह विचित्र संयोग है कि न तो मीराँ के काव्य से उनके जन्म, जीवन-काल और माता, पिता, पति आदि के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी मिलती है और न ही किसी अन्य स्रोत से। उपलब्ध जानकारियों के अनुसार पंद्रहवीं या सोलहवीं शती में जन्मी मीराँ का मायका मेड़ता में था तथा ससुराल मेवाड़ के प्रसिद्ध राजवंश में। ऐसा कहा जाता है कि बचपन में ही माता ने श्री गिरधर की मूर्ति को उनका पति बता दिया था, तभी से मीराँ श्रीकृष्ण को अपना पति मानने लगीं और उनके विवाह के बाद भी यह क्रम चलता रहा। मीराँ निर्भीक, साहसी और द ढ़ विचारों वाली थीं। स्वयं द्वारा चुने गए मार्ग और विचारों की सत्यता के प्रति आश्वस्त मीराँ समस्त विघ्न और बाधाओं का डटकर सामना करती थीं। उन्हें जीवन में कभी भी हताशा या निराशा नहीं हुई।

यद्यपि मीराँ द्वारा रचित कई काव्य-कृतियों का उल्लेख किया जाता है, पर उनके जीवन-व त्त की भाँति मीराँबाई की पदावली में संग हीत पदों के अतिरिक्त अन्य रचनाएँ उपलब्ध नहीं हैं। यूँ मीराँ की पदावली का संपादन कई लोगों ने किया है, पर आचार्य परशुराम चतुर्वेदी द्वारा संपादित 'मीराँबाई की पदावली' सर्वाधिक प्रामाणिक संग्रह है। इसकी भूमिका में आचार्य जी ने मीराँ के जीवन तथा उनके काव्य पर भी विस्तार से विचार प्रस्तुत किए हैं। इसके अतिरिक्त नरोत्तम स्वामी की पुस्तक 'मीराँ मंदाकिनी' भी उल्लेखनीय है। मीराँबाई के जीवन और उनके काव्य पर विचार तथा विश्लेषण की द ष्टि से बंगीय हिंदी परिषद् द्वारा प्रकाशित 'मीराँ स्म ति ग्रंथ' का भी विशेष महत्त्व है। मीराँ के काव्य की उत्कृष्टता इसी बात से स्पष्ट हो जाती है कि उनके पद हिंदी भाषी प्रदेशों के अतिरिक्त गुजरात, बंगाल तथा उड़ीसा आदि प्रांतों में भी अत्यंत श्रद्धा के साथ गाए जाते हैं।

4.8 पाठांत प्रश्न

1. मीराँ की भक्ति-भावना पर टिप्पणी कीजिए।
2. मीराँ के पदों में गेयता (संगीतात्मकता) है, सिद्ध कीजिए।
3. क्या मीराँ की रचनाओं को किसी संप्रदाय से जोड़ना उचित है ?
4. मीराँ की भाषा की विशेषताएँ उदाहरण देकर बताइए।
5. निम्नलिखित की संप्रसंग व्याख्या कीजिए–

   (क) माई री म्हाँ लियाँ गोविन्दाँ मोल ।।टेक।।

टिप्पणी

थे कह्याँ छाणे म्हाँ काँ चोड्डे, लिया बजन्ता ढोल।
थे कह्यो मुंहाघो म्हाँ कह्याँ सस्तो, लिया री तराजाँ तोल।
तण वारा म्हाँ जीवण वीराँ, वाराँ अमोलक मोल।
मीराँ कूँ प्रभु दरसण दीज्याँ, पूरब जणम को कोल।।

(ख) सखी म्हारी नींद नसाणी हो।
पिय रो पंथ निहारत सब रैण बिहाणी हो।।टेक।।
सखियन सब मिल सीख दयां मण एक णा मानी हो।
बिन देख्याँ कल ना पड़ाँ मण रोस णा ठानी हो।
अंग खीण व्याकुल भयाँ मुख पिय पिय बाणी हो।
अंतर वेदन बिरह री म्हारी पीड़ णा जाणी हो।
ज्यूँ चातक घणकूँ रटै, मछरी ज्यूँ पाणी हो।
मीराँ व्याकुल बिरहणी, सुध बुध बिसराणी हो।।

6. निम्नलिखित पद को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

निसिदिन बरसत नैन हमारे।
सदा रहत पावस रितु हम पर जब से स्याम सिधारे।।
अंजन थिर न रहत अँखियन में, कर कपोल भये कारे।
कंचुकि-पट सूखत नहिं कबहूँ, उर बिच बहत पनारे।।

(क) गोपियों के हाथ और गाल काले क्यों हो जाते हैं ?

(ख) गोपियाँ रात-दिन क्यों रोती हैं ?

(ग) 'उर बिच बहत पनारे' से गोपियाँ क्या कहना चाहती हैं ?

(घ) 'सदा पावस रितु रहने' से क्या आशय है ?

4.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. (क) 2. (ग) 3. अपने आपको, 4. रात में

4.2 1. (ग) 2. (क) 3. (घ), 4. कृष्ण से अपने प्रेम संबंध को
5. समर्पण भाव की माधुर्य भक्ति

4.3 1. (ग) 2. (ख) 3. कृष्ण से वियोग 4. मीराँबाई का

4.4 1. (घ) 2. (घ) 3. माधुर्य भक्ति, समर्पण भाव गीत पारंपरिक नहीं है 4. गति काव्य

4.5 1. (क) 2. प थ्वी, जल, वायु, अग्नि और आकाश 3. राम को अपने सर्वस्व (पति) रूप में पाकर 4. सुर तैतीसूं ....

5

रहीम

301hi05

आप कुछ भक्तिकालीन कविताएँ पढ़ चुके हैं। आपने अनुभव किया होगा कि इस काल की कविता में ईश्वर-भक्ति के साथ मनुष्य की दैनिक जीवन की उलझनों का वर्णन भी है और उनसे छुटकारा पाने के लिए आवश्यक नैतिक बल प्राप्त करने के उपायों का भी उल्लेख है। इसीलिए इस कविता को धर्म और नीति की कविता के रूप में जाना जाता है। कवि रहीम भक्तिकाल और रीतिकाल के मिलन बिंदु पर हैं। उन्होंने भक्ति, नीति और श्रृंगार का बहुत सुंदर निरूपण किया है। वे विशेष रूप से अपने नीतिपरक दोहों के लिए विख्यात हैं। रहीम को लोक-व्यवहार का बहुत अच्छा ज्ञान था। उनके लिखे दोहे कहावतों और लोकोक्तियों का रूप ग्रहण कर चुके हैं। तभी तो रहीम का काव्य बहुत लोकप्रिय है। छंदों में उन्हें दोहा, सोरठा तथा बरवै अधिक प्रिय हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- निर्धारित दोहों का भाव स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- प्रयुक्त अंतर्कथाओं का दैनिक जीवन में उपयुक्त प्रयोग कर सकेंगे;
- भाव और शिल्प सौंदर्य का विश्लेषण कर सकेंगे;
- रहीम की रचना-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

आपने आस-पास ऐसे बहुत से लोगों को देखा होगा जो अचानक ऊँचे पद पर पहुँच गए या बहुत-सी संपत्ति मिल गई। और उनका व्यवहार सामान्य नहीं रहा। कुछ प्रसंग

टिप्पणी

याद कीजिए। यदि किसी बच्चे के कोई रिश्तेदार उसके लिए कुछ बहुत अच्छे खिलौने ले आएँ और वैसे खिलौने उसके या उसके मित्रों के पास न रहें हों तो आमतौर पर ऐसे बच्चे का अपने मित्रों के बीच व्यवहार पहले जैसा सहज नहीं रहता।

कुछ ऐसे परिवार आपने देखे होंगे, जो अत्यंत सामान्य स्तर पर जीवन-निर्वाह कर रहे हों, किंतु उनका कोई लड़का या लड़की अच्छी नौकरी में चुन लिया जाए, तो पूरे परिवार का अपने पड़ोसियों और रिश्तेदारों के प्रति व्यवहार बदल जाता है। ऐसे उदाहरण आपके आस-पास बहुत से हैं, कुछ याद करके यहाँ लिखिए।

____

____

____

5.1 मूलपाठ

आइए, अब रहीम की कविता का आनंद लें:

दोहे

1. जो रहीम ओछो बढ़ै, तौ अति ही इतराय।
   प्यादे सों फ़रजी भयो, टेढ़ो-टेढ़ो जाय।।

2. जो रहीम गति दीप की, कुल कपूत गति सोय।
   बारे उजियारो लगै, बढ़ै अँधेरो होय।।

3. रहिमन अँसुआ नैन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ।
   जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ।।

4. यह रहीम निज संग लै, जनमत जगत न कोय।
   बैर, प्रीति, अभ्यास, जस, होत होत ही होय।।

शब्दार्थ

ओछो – छिछोरा, गलत तरीके से
अति – बहुत, अधिक
प्यादा – शतरंज के खेल का एक मोहरा पैदल (यह सीधे खानों में चलता है)
ते – से
फ़रजी – शतरंज के खेल का वज़ीर (यह तिरछे खानों में चलता है)
बारे – 1. बाल्यकाल में (कपूत के अर्थ में)
2. जलाने पर (दीपक के अर्थ में)
बढ़ै – 1. बड़े होने पर (कपूत के अर्थ में)
2. बुझने पर (दीपक के अर्थ में)
अँसुआ – आँसू
नैन – नेत्र, आँखें
ढरि – ढुलककर
जिय – हृदय, दिल
गेह – ग ह, घर
कस – क्यों
जनमत – जन्म लेते ही (पैदा होते ही)
जगत – दुनिया
बैर – शत्रुता (दुश्मनी)
प्रीति – प्रेम (प्यार)
अभ्यास – किसी काम को करने की दक्षता
जस – यश, कीर्ति

5. टूटे सुजन मनाइए, जो टूटे सौ बार।
   रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

6. काज परै कछु और है, काज सरै कछु और।
   रहिमन भाँवर के भये, नदी सेरावत मौर।।

7. वे रहीम नर धन्य हैं, पर उपकारी अंग।
   बाँटनवारे के लगै, ज्यों मेंहदी को रंग।।

सोरठा

8. रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियावै मान बिनु।
   बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

बरवै

9. बाहिर लैकै दियवा, वारन जाय।
   सासु ननद ढिग पहुँचत, देत बुझाय।।

10. लैकै सुघरु खुरुपिया, पिय के साथ।
    छइबैं एक छतरिया, बरखत पाथ।।

शब्दार्थ

सुजन – स्वजन (अपने लोग, कुटुम्बी), अच्छे लोग
पोहिए – पिरोइए (पिरोते हैं)
मुक्ताहार – मोतियों का हार
काज – काम
काज सरे – काम निकलने पर
भाँवर – विवाह के समय के फेरे
सेरावत – सिराना (नदी में प्रवाहित करना)
मौर – दूल्हे के सिर पर पहनाया जाने वाला एक आभूषण, मुकुट
नर – मनुष्य
पर – दूसरे के
उपकारी – भलाई करने वाला
अंग – शरीर
बाँटनवारे – बाँटने वाले
न सुहाय – नहीं भाता है (अच्छा नहीं लगता है)
अमी – अमत
मान बिनु – बिना सम्मान के (बिना आदर के)
विष – जहर
मरिबो – मरना
भलो – अच्छा, रुचिकर

दियवा – दिया
वारन – बालने, जलाने
ढिग – समीप (पास)
सुघरु – सुग हस्थिन (सुघड़)
छइबैं – छाएँगी ओढ़ाएँगे
खुरुपिया – खुरपी
बरखत – वर्षा हो रही है
पाथ – मार्ग

टिप्पणी

5.2 आइए समझें

आइए, पहले दोहे को एक बार फिर से पढ़ें

प्रसंग

जो व्यक्ति किसी कारणवश अपने गुण और सामर्थ्य से अधिक कुछ पा लेता है वह घमंडी हो जाता है तथा अपने मूल व्यवहार का त्याग कर इतराने लगता है। प्रस्तुत दोहे में रहीम ने शतरंज के खेल के माध्यम से ऐसे व्यक्तियों के मनोविज्ञान को स्पष्ट किया है।

जो रहीम ओछो बढ़ै,
तो अति ही इतराय।
प्यादे सों फ़रज़ी भयो,
टेढ़ो-टेढ़ो जाय।।

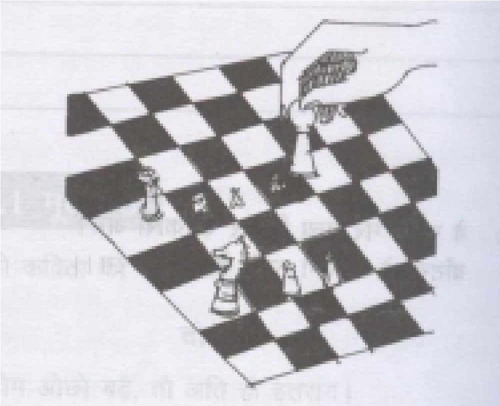

व्याख्या

आइए, सबसे पहले हम शतरंज के खेल के प्रासंगिक हिस्से को समझें। शतरंज के खेल में प्यादे की चाल सामने की ओर के सीधे खानों में एक-एक खाने की होती है तथा वजीर सीधे और तिरछे (आड़े) खानों में कितनी भी दूरी तक चल सकता है। जब कोई प्यादा एक-एक खाना चलते हुए आखिरी खाने तक पहुँच जाता है, तो उस खाने में मूल रूप से रहने वाले मोहरे के बराबर हो जाता है अर्थात् उसी की चाल चलने लगता है। अतः यदि कोई प्यादा वज़ीर के खाने तक पहुँच जाए तो वह वज़ीर के समकक्ष हो जाएगा तथा उसी की चाल चलने लगेगा।

रहीम कहते हैं कि यदि किसी साधारण व्यक्ति को किन्हीं कारणों से कोई ऊँचा पद मिल जाता है, तो वह उतना ही इतराने लगता है जैसे कि शतरंज के खेल में प्यादा फ़रजी बनते ही टेढ़ा-टेढ़ा चलने लगता है अर्थात् जब किसी व्यक्ति को उसके गुण, शक्ति और सामर्थ्य से बढ़कर कुछ अधिक (पद, पैसा इत्यादि) प्राप्त हो जाता है, तो वह अपने सहज व्यवहार को त्यागकर घमंड से भर जाता है और अन्य लोगों से सीधे मुँह बात नहीं करता।

टिप्पणी

(क) ''प्यादे से फ़रज़ी भयो टेढ़ो-टेढ़ो जाय'' रहीम की अत्यंत प्रभावशाली सूक्तियों में से एक है। जनता के बीच यह कहावत के रूप में खूब प्रचलित है।

(ख) आइए, इस प्रसंग में तुलसी की यह पंक्ति देखें - 'प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं।' (प्रभुता पाकर किसे अहंकार नहीं होता।)

टिप्पणी

दोहा - 2

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने 'बारे' और 'बढ़ै' के श्लेष से दीपक और कपूत की तुलना की है। घर में कुपुत्र अर्थात् नालायक बेटे की बचपन की हरकतें जितनी अच्छी लगती हैं, बड़े होने पर उसकी वही हरकतें दुखदायी हो जाती हैं।

व्याख्या

आइए, सबसे पहले हम 'बारे' और 'बढ़ै' का अर्थ दीपक के संदर्भ में समझ लें। आजकल बिजली के आ जाने के कारण दिये का चलन समाप्त हो गया है, अतः ये शब्द आपके लिए अपरिचित हो सकते हैं। बिजली के घर-घर पहुँचने से पहले रात को रोशनी प्राप्त करने के लिए 'दिये' प्रयोग में लाए जाते थे। भारतीय संस्कृति में शब्दों का प्रयोग अत्यंत सावधानी से करने की परंपरा रही है। यदि कोई शब्द अपने आम प्रयोग में किसी अनिष्ट या अशुभ संकेत रखता है तो उसे शुभ, पवित्र तथा जीवन और रोज़गार से संबंधित बातों में प्रयोग नहीं किया जाता। आपने दुकान के संदर्भ में 'बढ़ाना' क्रिया का प्रयोग सुना होगा। चूँकि दुकान बंद करना दुकानदार के रोज़गार के बंद होने का भी अर्थ रखता है, इसलिए कुछ समय तक (रोज शाम को) 'दुकान बंद करना' की जगह 'दुकान बढ़ाना' कहा जाता है। इसी प्रकार, चूँकि 'दिया' प्रकाश देता है इसलिए 'दिया बुझाना' की जगह 'दिया बढ़ाना' तथा 'दिया जलाना' की जगह 'दिया बालना' का प्रयोग किया जाता था। ब्रज भाषा में 'ल' वर्ण की जगह अक्सर 'र' का प्रयोग किया जाता है जैसे—पालना-पारना, डोली-डोरी आदि। इसी कारण 'बाले' (बालपन पर) के स्थान पर 'बारे' और 'बालने' (दिया जलाने) के स्थान पर 'बारे' का प्रयोग है।

जो रहीम गति दीप की,
कुल कपूत गति सोय।
बारे उजियारो लगै,
बढ़ै अँधेरो होय।।

कुपुत्र या पुत्र के अर्थ में 'बारे' का अर्थ बाल्यकाल में अर्थात् बचपन में होगा तथा 'बढ़ै' का उम्र बढ़ने या सयाना होने पर।

अब इस दोहे की व्याख्या करें:

रहीम कहते हैं कि दीपक की और परिवार में उत्पन्न कुपुत्र की गति एक समान होती है। जिस प्रकार दीपक के 'बालने' पर प्रकाश फैलता है अर्थात् वह प्रसन्नता का कारण होता है और 'बढ़ जाने' पर अँधेरा हो जाता है अर्थात् वह व्यक्ति को असमर्थ और असहाय बना देता है और इस तरह दुख का कारण बन जाता है। उसी प्रकार नालायक पुत्र भी अपनी चेष्टाओं और शरारतों के कारण बाल्यकाल में तो अच्छा लगता है पर बड़े होने पर उसकी वही हरकतें अत्यंत दुखदायी हो जाती हैं। बचपन में माता-पिता बच्चे की वात्सल्यमयी क्रीड़ाओं और चेष्टाओं से प्रसन्न होते हैं, किंतु बड़े होने पर अगर यही बालक वैसी ही शरारतें करता रहे तो कपूत सिद्ध होता है, और दुःख का कारण हो जाता है।

टिप्पणी

(क) इस दोहे में 'बारे' तथा 'बढ़ै' शब्दों का एक-एक बार ही प्रयोग हुआ है पर ये 'दीपक' और 'कपूत' के लिए भिन्न-भिन्न अर्थ देते हैं। अतः इन दोनों शब्दों में एक से अधिक अर्थ देने के कारण **श्लेष अलंकार** है। **श्लेष** का अर्थ होता है चिपका हुआ। जब एक शब्द से कई अर्थ प्रकट हों तो वहाँ पर श्लेष अलंकार होता है। प्रस्तुत दोहे के माध्यम से आपने श्लेष का उदाहरण तो समझ ही लिया है।

(ख) 'कुल कपूत' में 'क' वर्ण की आव त्ति होने से **अनुप्रास अलंकार** है।

(ग) दो बिल्कुल भिन्न चीजों में समानता प्रस्तुत करके रहीम ने अपनी विलक्षण प्रतिभा और सूक्ष्म अवलोकन-शक्ति का परिचय दिया है।

(घ) उजाले और अंधेरे से क्रमशः सुख और दुख का अर्थ प्राप्त होता है। साहित्य में ये प्रतीकार्थ रूढ़ हो चुके हैं।

पाठगत प्रश्न 5.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) शतरंज में प्यादे की चाल तिरछे खानों वाली होती है।
   (ख) कोई भी प्यादा आख़िरी खाने में पहुँच कर उसी मोहरे के समकक्ष हो जाता है।
   (ग) सामान्यतः व्यक्ति आकस्मिक रूप से महत्त्व पाकर घमंडी हो जाता है।
   (घ) दीपक बालने को 'दिया बढ़ाना' कहा जाता है।
   (ङ) कुपुत्र बड़ा होने पर अत्यंत दुख देता है।
   (च) जब कोई शब्द एक से अधिक अर्थ देता है तो वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
2. शतरंज का प्यादा किस श्रेणी के लोगों का प्रतीक है?
3. साधारण व्यक्ति अचानक ऊँचा उठ जाने पर कैसा हो जाता है?
4. रहीम के दूसरे दोहे में दीपक किसका प्रतीक है?
5. इस दोहे में 'बारे' शब्द का क्या अर्थ है?

दोहा - 3

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने आँसुओं के द्वारा मन का दुख प्रकट होने की बात के उदाहरण से घर की बात घर के भीतर ही रखने का संकेत किया है।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि आँखों से आँसू निकलकर व्यक्ति के हृदय के दुख को व्यक्त कर देते हैं और वे करें भी क्यों नहीं, जब किसी को घर से निकाला जाएगा तो वह घर का भेद तो दूसरों तक पहुँचाएगा ही।

यहाँ दो बातों का उल्लेख अत्यंत आवश्यक है: शास्त्रों में मानव देह का वर्णन घर के रूप में किया गया है जिसके दस दरवाजे हैं, जिनमें दो दरवाजे दोनों नेत्र हैं।

रामकथा में रावण द्वारा अपने छोटे भाई विभीषण को अपमानित करके लंका से निकाल देने का प्रसंग है। घर से निकाले जाने पर विभीषण राम से आ मिला और उसी ने राम को लंका के समस्त भेद तथा रावण की म त्यु का रहस्य भी बताया। इसी से जनता में कहावत भी मशहूर है – 'घर का भेदी लंका ढावै।'

रहिमन अँसुआ नैन ढरि,
जिय दुख प्रगट करेइ।
जाहि निकारो गेह ते,
कस न भेद कहि देइ।।

दोहा - 4

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने वैर, प्रेम, अभ्यास और कीर्ति के विषय में बताया है कि ये चीजें कोई भी व्यक्ति जन्म से प्राप्त नहीं करता बल्कि ये समय के साथ-साथ विकसित होती हैं।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि वैर अर्थात् शत्रुता, प्रेम, किसी कार्य को करने का कौशल तथा यश व्यक्ति के जन्मजात गुण नहीं होते और न ही अल्प समय में प्राप्त होते हैं, बल्कि ये धीरे-धीरे ही बढ़ते हैं अर्थात् केवल निरंतरता से ही इनका विकास होता है। आइए, इन पर क्रम से विचार करें।

वैर मन का वह भाव है जो अपने आलम्बन का नाम आते ही जाग जाता है अर्थात् यदि हमारा किसी व्यक्ति से वैर है, तो उसका नाम सुनते ही या उसकी शक्ल देखते ही, हमारे भीतर यह भाव जागने लगता है। वैर, घ णा और क्रोध का मिश्रित रूप है। वैर के मायने केवल लड़ाई या दुश्मनी नहीं हैं। लड़ाई या दुश्मनी तो किसी भी छोटे या बड़े कारण से हो सकती है जो या तो कारण के खत्म हो जाने अथवा कुछ समय बीतने पर समाप्त भी हो जाती है। किंतु, वैर मूलतः व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति या व्यक्तियों के प्रति पूर्ण अस्वीकार की भावना है, जो घ णा या अहित-साधन के द्वारा व्यक्त होती है। यह अस्वीकार लंबी अवधि तक नकारात्मक भावों के एकत्रित होते रहने से ही उत्पन्न होता है। वैर के बारे में आप 'क्रोध' पाठ में विस्तार से पढ़ेंगे।

यह रहीम निज संग लै
जनमत जगत न कोय।
बैर प्रीति अभ्यास, जस,
होत होत ही होय।।

प्रीति अर्थात् प्रेम भी समय के साथ ही गाढ़ा होता है। किसी की क्षणिक समीपता से जो सकारात्मक भाव हमारे मन में होता है, उसे अक्सर प्रेम कह दिया जाता है, किंतु वह प्रेम नहीं महज आकर्षण होता है। प्रेम साहचर्यजन्य होता है अर्थात् साथ रहने से पैदा होता है। प्रेम वैर के विपरीत पूर्ण स्वीकार की भावना है। हम जिससे प्रेम करते हैं उसके लिए कुछ भी करने को तत्पर रहते हैं और यह भावना केवल लंबे समय तक साथ रहने से ही उत्पन्न होती है।

अभ्यास तो स्वयं स्पष्ट है कि समयावधि से ही आता है। किसी काम को करने का कौशल काम के लगातार करते रहने से ही प्राप्त होता है। फिर यह अभ्यास चाहे संगीत का हो या हॉकी खेलने का, ड्राइविंग का हो या चित्र बनाने का या किसी अन्य काम का। यश अर्थात् कीर्ति (प्रसिद्धि) भी लंबे समय तक किसी क्षेत्र में सतत श्रेष्ठ कार्य करते रहने का ही परिणाम है।

चर्चा और यश में अंतर है। चर्चा कुछ समय तक होती है, यश दीर्घकालिक होता है। चर्चा प्रायोजित हो सकती है किंतु यश महत्त्वपूर्ण योगदान से ही प्राप्त होता है।

टिप्पणी

(क) *'जनमत जगत'* तथा *'होत होत ही होय'* में क्रमशः 'ज' 'त' तथा 'ह' वर्णों की आव त्ति से अनुप्रास अलंकार है।

(ख) *'होत होत ही होय'* कथन का चारुत्व और अनुप्रास अलंकार दर्शनीय है।

(ग) प्रस्तुत दोहे में रहीम ने कम शब्दों में बहुत अधिक कह दिया है। गहन विचारों का इतने कम शब्दों में तथा इतनी सरल भाषा में अत्यंत सहजता से कह देने की विशेषता तुलसी के बाद रहीम में ही दिखाई पड़ती है।

पाठगत प्रश्न 5.2

निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए :

1. (क) आँखों से निकले आँसू व्यक्ति के मन के दुख को व्यक्त कर देते हैं।
   (ख) आँखें मानव देह रूपी घर के दो दरवाज़े हैं।
   (ग) राम को लंका के सारे भेद उनके गुप्तचरों ने बताए थे, न कि विभीषण ने।
   (घ) प्रेम साथ रहने से ही उत्पन्न होता है।
   (ङ) वैर जन्मजात होता है।
   (च) किसी क्षेत्र में सतत श्रेष्ठ प्रदर्शन से व्यक्ति को यश प्राप्त होता है।
2. व्यक्ति के हृदय के दुख को कौन व्यक्त करता है?
3. विभीषण लंका से निकाले जाने पर किसकी शरण में जाता है?
4. परस्पर साथ रहने से कौन-से भाव उत्पन्न होते हैं?

दोहा - 5

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में रहीम ने सज्जनों तथा अपने लोगों (स्वजन) के रूठ जाने पर उन्हें बार-बार मनाने की बात कही है।

टूटे सुजन मनाइए,
जो टूटें सौ बार।
रहिमन फिरि-फिरि पोहिए
टूटे मुक्ताहार।।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि जिस प्रकार मोतियों के हार के टूट जाने पर मोतियों को फेंका नहीं जाता बल्कि उन्हें बार-बार धागे में पिरोकर फिर से हार बना दिया जाता है; उसी प्रकार श्रेष्ठ लोगों तथा अपने लोगों (कुटुंबी, संबंधी, मित्र आदि) के रूठने या नाराज़ होने पर उन्हें हर बार मना लेना चाहिए। (सुजन शब्द का अर्थ है – सु+जन अर्थात् श्रेष्ठ लोग तथा स्व+जन अर्थात् अपने लोग, दोनों ही रूपों में ग्रहण किया जा सकता है। दोनों अर्थ ग्रहण करने पर अर्थ-सौंदर्य बढ़ जाता है।)

टिप्पणी

(क) 'सुजन' में श्लेष अलंकार है। जिसे आप व्याख्या पढ़ने पर समझ ही गए होंगे।

(ख) श्रेष्ठ मनुष्यों का मोतियों से साम्य सुंदर है, उपयुक्त भी है और प्रचलित भी।

(ग) बहुत सादा और सरल तरीके से लोक-व्यवहार की नीति को व्यक्त किया गया है।

(घ) रहीम का यह दोहा लोक में बहुत अधिक प्रचलित है।

5.3 आइए, स्वयं पढ़ें

दोहा - 6

आपने रहीम के पाँच दोहों का आनंद लिया। इस आनंद के साथ-साथ आपने इस बात पर भी ज़रूर ध्यान दिया होगा कि दोहे के अर्थ और भाव को कैसे समझा जाए। क्या अब आप खुद किसी दोहे की व्याख्या कर सकते हैं। क्यों नहीं, बिल्कुल कर सकते हैं अगर ... अगर आपको थोड़ी-सी मदद मिल जाए, यही न ...।

तो फिर हो जाइए तैयार और एक बार दोहा सं. 6 को पढ़ डालिए। मूलपाठ में शब्दों के अर्थ तो मिल ही रहे हैं, कुछ आवश्यक संकेत मदद के लिए यहाँ मौजूद हैं:

काज परे कछु और है,
काज सरे कछु और।
रहिमन भाँवर के भये,
नदी सेरावत मौर।।

- प्रसंग है काम पड़ने और काम निकल जाने पर मनुष्य के व्यवहार में बदलाव
- उदाहरण है विवाह में दूल्हे द्वारा सिर पर पहना जाने वाला एक प्रकार का मुकुट। 'कुछ और' कहकर कवि ने व्यवहार को स्पष्ट न करते हुए भी बहुत कुछ स्पष्ट

कर दिया। यह वक्रोक्ति का अच्छा उदाहरण है। सीधे-सीधे बात न कहकर किसी अन्य प्रकार से उसे व्यक्त करना **वक्रोक्ति** कहलाता है। 'और' शब्द के प्रयोग के कुछ और उदाहरण देखिए:

(i) *वह चितवन औरे कछु जिहि बस होत सुजान*

(ii) *कहते हैं कि गालिब का है अंदाज़-ए-बयां* ***और***

दोहा - 7

मूलपाठ से दोहा संख्या 7 को शब्दार्थ सहित पढ़िए। यह तो आप समझ ही गए होंगे कि दोहे में परोपकारी मनुष्यों के विषय में कहा गया है।

वे रहीम नर धन्य हैं,
पर उपकारी अंग।
बाँटनवारे के लगे, ज्यों
मेंहदी को रंग।।

आप कुछ लोगों को यह कहते सुनते होंगे कि 'क्या रखा है परोपकार में'। रहीम के इस दोहे की दूसरी पंक्ति में इसका कुछ संकेत है, ज़रा ध्यान दीजिए। हाँ... आया न पकड़ में। तो अब कागज़-कलम उठाइए और एक अच्छी-सी व्याख्या लिख डालिए। देखिए, इसमें **द ष्टांत अलंकार** भी है। इसके बारे में हम पहले आपको बता चुके हैं।

पाठगत प्रश्न 5.3

1. निम्नलिखित कथनों में सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) रहीम ने श्रेष्ठ लोगों की तुलना माला के धागे से की है।
   (ख) यदि किसी अपने से मनमुटाव हो जाए तो उसकी परवाह नहीं करनी चाहिए।
   (ग) 'सुजन' शब्द में श्लेष अलंकार है।
   (घ) काम पड़ने पर लोग किसी को बहुत अधिक महत्त्व देते हैं किंतु बाद में उसे भुला देते हैं।
   (ङ) भाँवर पड़ने के बाद दूल्हा नित्य मौर को सिर पर धारण करता है।
   (च) परोपकारी मनुष्य दूसरों का भला करने के साथ-साथ अपने अस्तित्व को सार्थक करता है।
   (छ) मेंहदी बाँटने वाले के हाथों में भी रच जाती है।
   (ज) व्यक्ति को परोपकारी नहीं होना चाहिए।
2. इस दोहे में मोती किसका प्रतीक है?
3. रहीम किन लोगों को मनाने की बात कहता है?
4. इस दोहे में रहीम ने किस तरह के मनुष्य को धन्य कहा है?

अभी तक आपने कवि रहीम के दोहे पढ़े। आइए अब उनका एक सोरठा पढ़ते हैं। आपके मन में अवश्य ही प्रश्न उठा होगा कि यह सोरठा क्या होता है? इसके बारे में हम इसी पाठ में आगे पढ़ेंगे।

सोरठा - 8

प्रसंग

प्रस्तुत सोरठे में रहीम ने आत्मसम्मान के महत्त्व को रेखांकित किया है।

व्याख्या

रहीम कहते हैं कि यदि कोई मेरे आत्मसम्मान को ठेस पहुँचा कर अम त पिलाए तो वह मुझे स्वीकार नहीं हैं, जबकि प्रेम और सम्मान के साथ यदि कोई ज़हर भी प्रस्तुत करे तो मुझे उसे पीकर मर जाना अच्छा लगेगा। व्यक्ति को आत्मसम्मान की रक्षा करनी चाहिए। यदि किसी से उसका आत्मसम्मान छीन लिया जाए तो जीवन में कुछ भी नहीं बचता, फिर वह अमर होकर भी क्या करेगा और यदि, कहीं प्रेम और सम्मान मिलता है तो ज़हर पीने में भी नुकसान नहीं, क्योंकि जीवन में प्रेम से अधिक पाने को और कुछ भी नहीं है। सामाजिक संबंधों की ऊष्मा और सार्थकता प्रेम में ही है। जहाँ प्रेम है, वहाँ व्यक्ति के सम्मान की रक्षा भी है। इसी आत्मसम्मान की रक्षा के लिए व्यक्ति से लेकर राष्ट्रों तक ने युद्ध लड़े हैं। बहुत से लोगों ने निजी आत्मसम्मान की रक्षा के लिए प्राणों की आहुति दी है। इसके बिना जीवन की कल्पना ही क्या? और यह मिल जाए तो फिर और जीने की कामना भी छोड़ी जा सकती है। दुनिया की सारी चीज़ें (यथा–धन– दौलत, पद आदि) आज हैं, कल नहीं भी हो सकतीं और यदि आज नहीं हैं तो कल प्राप्त की जा सकती हैं पर व्यक्ति सम्मान को एक बार खोकर पुनः प्राप्त नहीं कर सकता।

रहिमन मोहिं न सुहाय
अमी पियावै मान बिनु।
बरु विष देय बुलाय,
मान सहित मरिबो भलो।।

टिप्पणी

(क) आत्मसम्मान पर दुनिया की विभिन्न भाषाओं के बहुत से कवियों और शायरों ने बहुत सारी कविताएँ लिखी हैं। यहाँ सिर्फ़ दो उदाहरण प्रस्तुत हैं:

(i) *आवत ही हुलसै नहीं, नैनन नहीं सनेह।*
तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसै मेह।। – तुलसीदास

(जहाँ आपको देखकर दूसरे व्यक्ति को प्रसन्नता न हो और उसकी आँखों में प्रेम न दिखाई पड़े, वहाँ चाहे सोना बरस रहा हो तो भी नहीं जाना चाहिए।)

(ii) *बंदगी में भी वो आज़ाद-ओ-खुदबीं हैं कि हम।*
उलटे फिर आएँ दर-ए-काबा अगर वा न हुआ।। – गालिब

(हम भक्ति में भी इतने स्वाभिमानी हैं कि अगर हमारे पहुँचने पर काबे का दरवाज़ा खुला न हो तो उलटे लौट आएँ।)

(ख) इस सोरठे की दूसरी पंक्ति सूक्ति के रूप में इस तरह प्रचलित है – *'प्रेम सहित मरिबो भलो जो विष देय बुलाय।'*

टिप्पणी

बरवै - 9

बाहिर लैकै दियवा,
बारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत
देत बुझाय।।

प्रसंग

प्रस्तुत बरवै में रहीम ने आतुरता से प्रिय की प्रतीक्षा में रत ग हस्थ नायिका के मनोभावों का वर्णन किया है।

व्याख्या

शाम हो चुकी है। नायिका के पति के घर लौटने का समय हो गया है। वह दिन भर के बिछुड़े अपने प्रिय से मिलने को आतुर है। उसका एक-एक पल प्रिय की आहट की प्रतीक्षा में है। यह आतुरता इतनी बढ़ चुकी है कि उससे घर के भीतर नहीं रुका जा रहा। वह बार-बार दिया जलाकर द्वार पर जाती है, पर अपने आवेग के खुल जाने तथा सास और ननद के ताने के डर से रास्ते में बैठी अपनी सास और ननद तक पहुँचते-पहुँचते उसे बुझा देती है। नायिका ग हस्थ है और अपनी आतुरता को प्रकट नहीं होने देना चाहती। साथ ही, उसे भय भी है कि बाहर जाने पर सास और ननद उसे ताना भी दे सकती हैं और प्रताड़ित भी कर सकती हैं।

टिप्पणियाँ

(क) ग हस्थ प्रेम का अत्यंत सुंदर चित्रण है।

(ख) लोक संस्कृति पर रहीम की गहरी पकड़ का उत्तम उदाहरण है।

(ग) श्रं गार रस है तथा भाषा अवधी है।

5.4 आइए, स्वयं पढ़ें

बरवै - 10

लैकै सुघरु खुरुपिया,
पिय के साथ।
छइबैं एक छतरिया,
बरखत पाथ।।

आपने अभी-अभी एक बरवै छंद का आनंद लिया। अब अगले बरवै को ध्यान से पढ़िए। शब्द तो सभी समझ में आ ही रहे होंगे, हाँ बस मानक हिंदी से थोड़ा-सा भिन्न रूप है बोलचाल की अवधी के इन शब्दों का। थोड़ा-सा प्रयास करते ही आप सभी शब्द समझ जाएँगे।

यह भी पहले बरवै की तरह ही ग हस्थ प्रेम का चित्र है। भला, क्या करना चाहती है नायिका? और किसके साथ? इन प्रश्नों के उत्तर बहुत स्पष्ट हैं और इन्हीं की व्याख्या को विशेषत: रेखांकित करना है...।

पाठगत प्रश्न 5.6

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने 'हाँ' और गलत के सामने 'नहीं' लिखिए:
   (क) आत्मसम्मान की रक्षा किसी भी कीमत पर करनी चाहिए। ....
   (ख) अम त ज़हर की तुलना में हर स्थिति में बेहतर है। ....

(ग) नायिका दीपक को इसलिए बुझा देती है कि कहीं उसकी सास बेकार में तेल खर्च करने पर न डाँटे। ....

(घ) पति की प्रतीक्षा में व्याकुल नायिका बार-बार द्वार तक जाना चाहती है। ....

(ङ) नायिका छतरी लेकर अपने पति के साथ निकलती है। ....

(च) बरसते हुए मार्ग में छप्पर की छतरी छाने के लिए नायिका खुरपी लेकर घर से निकलती है। ....

2. पठित सोरठे के आधार पर बताइए रहीम को क्या अच्छा नहीं लगता?
3. कवि को किस स्थिति में मरना भी अच्छा लगता है?
4. बरवै दस में कवि ने किस ऋतु का वर्णन किया है?
5. दोनों बरवै किस भाषा में लिखे गए हैं?

5.5 भाव और शिल्प सौंदर्य

रहीम के प्रत्येक दोहे, सोरठे और बरवै के अनूठे भावों का आपने आनंद लिया और उनकी शिल्पगत विशेषताओं से भी आप परिचित हुए। अब आप यहाँ पर अन्य पिछले पाठों के समान कुछ पंक्तियाँ रहीम के भाव और शिल्प सौंदर्य पर लिखिए।

....

....

....

....

....

आपको याद है न, रैदास का पाठ पढ़ते हुए आपने दोहे के बारे में जाना था। तुलसीदास के पाठ में भी आपने कुछ दोहे और साथ में चौपाइयाँ पढ़ी थीं। अब क्या आप बता सकते हैं कि दोहा किसे कहते हैं? यहाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

टिप्पणी

अब क्या आप बता सकते हैं कि सोरठा किसे कहते हैं? आप एक काम कीजिए। रहीम के सोरठे को इस प्रकार पढ़िए: पहले दूसरा चरण, फिर पहला, फिर तीसरा और अंत में चौथा! क्या कुछ लगा? जी हाँ, सोरठा दोहे का ठीक उलटा होता है। इसमें भी दो-दो चरणों के दो दल होते हैं पर दोहे के विपरीत इसके विषम अर्थात् पहले और तीसरे चरण में 11-11 तथा सम अर्थात् दूसरे और चौथे चरण में 13-13 मात्राएँ होती हैं। पहले और तीसरे चरण तुकांत होते हैं। उदाहरण के लिए यह सोरठा देखें:

रहिमन मोहि न सुहाय, अमी पियावत मान बिन।
पहला चरण (11 मात्राएँ) दूसरा चरण (13 मात्राएँ)

जो विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।
तीसरे चरण (11 मात्राएँ) चौथा चरण (13 मात्राएँ)

बरवै

बरवै छंद में भी दो-दो चरणों के दो दल होते हैं पर 12+7 की यति से 19 मात्राएँ होती हैं अर्थात इसके पहले और तीसरे चरण में 12-12 मात्राएँ तथा दूसरे और चौथे चरण में 7-7 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक दल के अंत में जगण (ISI) होता है। उदाहरण के लिए यह बरवै देखें:

बाहर लैके दियवा	वारन जाय।
।। ।।	।। ।
पहला चरण (12 मात्राएँ)	दूसरा चरण (7 मात्राएँ)
सासु ननद ढिग पहुँचत	देत बुझाय।।
। ।।। ।। ।।।।	। । ।
तीसरा चरण (12 मात्राएँ)	चौथा चरण (7 मात्राएँ)

5.6 आइए, स्वयं पढ़ें

रहीम की कविता का आस्वादन आप कर चुके हैं। आपने रहीम के दोहे पढ़ते समय जाना है कि रहीम अपने आसपास के वातावरण से कोई भी व्यवहार या क्रिया चुनते हैं और उससे कोई गंभीर नीतिपरक बात बता देते हैं। आपने पाठ में यह भी पढ़ा कि नीति की ऐसी ही बातें तुलसी के दोहों और चौपाइयों में भी मिलती हैं। आइए, हम तुलसी के एक दोहे को पढ़ें:

मुखिया मुख सो चाहिए, खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अँग, तुलसी सहित बिबेक।।

यह तो आप समझ गए होंगे कि इस दोहे में बताया गया है कि मुखिया कैसा होना चाहिए। मुख-जैसा। अब सोचकर देखिए मुख-जैसा मुखिया क्यों कहा? स्वस्थ रहने के लिए हम भोजन करते हैं। किस अंग से? क्या वह अंग केवल अपना ध्यान रखता है? तो मुखिया को किसका ध्यान रखना चाहिए? मुखिया में आप क्या गुण आवश्यक समझते हैं? विवेक का क्या आशय है? मुखिया में विवेक क्यों आवश्यक है।

शब्दार्थ

मुखिया – घर, कबीले देश या किसी संस्था का प्रमुख
मुख-सो – मुख-सा (जैसा)
पाले पोसै – पालन-पोषण करे
अँग – शरीर, देश
विवेक – न्याय-अन्याय, सत्य-असत्य, उचित-अनुचित आदि को ध्यान रखने वाली बुद्धि

नीचे दिए गए दोहे मैं तुलसी की एक नीति है, एक सुझाव है; आइए, पढ़ें:–

> आवत ही हर्षे नहीं, नैंनन नहीं सनेह।
> तुलसी तहाँ न जाइए, कंचन बरसे मेह।।

तुलसी कहते हैं–वहाँ न जाइए जहाँ सोना बरस रहा हो। सोना बरसना–संपन्नता के लिए है। तो क्या तुलसी धनी-संपन्न घर में न जाने की बात करते हैं? तुलसी का संकेत समझने के लिए दोहे की पहली पंक्ति एक बार फिर पढ़िए। ऐसा संपन्न व्यक्ति जो आपके आने पर प्रसन्न नहीं होता, मिलने से प्रसन्नता नहीं प्रकट करता, वहाँ जाना आत्मसम्मान गँवाना है।

उपर्युक्त दोहों को आप कितना समझे? आइए, नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

- मुखिया कैसा होना चाहिए?
- मुखिया की तुलना मुख से क्यों की गई है?
- विवेकी होना मुखिया के लिए क्यों आवश्यक है?
- स्वाभिमानी व्यक्ति को कहाँ नहीं जाना चाहिए?
- अतिथि के आने पर स्वाभाविक प्रतिक्रिया क्या होनी चाहिए?

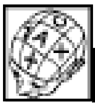

5.7 आपने क्या सीखा

1. रहीम को लोक-संस्कृति, लोक-व्यवहार तथा शास्त्रों का गहरा ज्ञान था। उन्होंने इस ज्ञान को सामान्य भाषा में बड़ी सहजता के साथ अपनी कविता में व्यक्त किया है। वे साधारण मनुष्य के दैनिक जीवन से उदाहरण लेकर नीति की गूढ़ बातों को आसानी से समझा देते हैं। सूक्ष्म अवलोकन, शास्त्रज्ञान और सहज अभिव्यक्ति उनकी निजी विशेषता है।
2. यद्यपि रहीम ने फ़ारसी और संस्कृत में भी काव्य-रचना की है तथा अरबी और तुर्की भाषा में अनुवाद किए हैं, पर वे ब्रज और अवधी भाषा की काव्य रचनाओं के लिए जनता के बीच अधिक जाने जाते हैं। ब्रज तथा अवधी दोनों भाषाओं पर समान अधिकार रखने वाले कवियों में तुलसी के बाद रहीम का नाम सबसे ऊपर है।
3. आपने रहीम की कविता पढ़ते हुए दोहा, सोरठा और बरवै छंदों का आनंद लिया है। आप जानते हैं कि दोहे में 13-11–13-11 की यति से चार चरण होते हैं जबकि सोरठे में इसके उलटे अर्थात् 11-13–11-13 की यति से। बरवै छंद में 12-7–12-7 की यति से कुल चार चरण होते हैं।
4. जब किसी बात को समझाने के लिए अपने आस-पास के क्रियाकलाप, लोक में प्रचलित कथाओं अथवा पौराणिक प्रसंगों से उदाहरण दिए जाते हैं, तो उन्हें द ष्टांत कहते हैं। रहीम ने अपनी कविता में द ष्टांतों का बहुत सटीक प्रयोग किया है।

टिप्पणी

5. रहीम का समय भक्तिकाल और रीतिकाल के बीच की कड़ी है। उनकी कविता के केंद्र में भक्ति, नीति और शृंगार के तत्त्व हैं।

5.8 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

रहीम का जन्म 17 दिसंबर 1556 ई. को लाहौर में हुआ था। इनका पूरा नाम अब्दुर्रहीम ख़ानख़ाना था। रहीम के पिता बैरम खाँ अकबर के संरक्षक थे। तुर्क पिता तथा मेव माता के पुत्र रहीम में दोनों परंपराओं का समन्वय मिलता है। उन्हें अरबी, फ़ारसी, तुर्की भाषाओं के साथ संस्कृत और ब्रज तथा अवधी भाषा का पर्याप्त ज्ञान था। शास्त्र तथा लोक-संस्कृति और लोक-व्यवहार में उन्हें दक्षता हासिल थी।

रहीम कलम के साथ-साथ तलवार के भी धनी थे। वे अकबर के मंत्री और सेनापति थे तथा उनकी गिनती नवरत्नों में होती थी। उन्होंने बहुत से युद्ध भी लड़े तथा उनमें विजय हासिल की। वे श्रेष्ठ कवि, योद्धा और दानवीर थे और उनके व्यक्तित्व में उदारता, सच्चरित्रता, सहजता और विनम्रता जैसे गुण थे। दान के संबंध में उनकी विनम्रता का उदाहरण देखें।

देनहार कोई और है, भेजत है दिन रैन।
लोग भरम हम पर करैं, यातें नीचे नैन।।

रहीम के जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव आते रहे। राजस्वी जीवन, पारिवारिक त्रासदियाँ, युद्ध की विभीषिका, कैद खाने की यंत्रणा—सभी को उन्होंने भोगा तथा इनसे प्राप्त भावों और विचारों को बड़ी सहजता से अपने काव्य में प्रस्तुत किया।

रहीम की प्रमुख रचनाएँ, 'दोहावली', 'नगर शोभा', 'बरवै नायिका-भेद' 'शृंगार सोरठा' आदि हैं। विस्तृत अध्ययन के लिए डॉ. विद्यानिवास मिश्र द्वारा संपादित 'रहीम ग्रंथावली' का अध्ययन कीजिए।

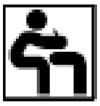

5.9 पाठांत प्रश्न

1. रहीम ने प्यादे और फ़रज़ी का दृष्टांत क्यों दिया है?
2. आँसुओं को आँखों से बाहर क्यों नहीं निकालना चाहिए?
3. रहीम ने आत्मसम्मान की रक्षा का महत्त्व कैसे समझाया है?
4. निम्नलिखित का भाव स्पष्ट कीजिए:

   (क) टूटे सुजन मनाइए, जो टूटें सौ बार।
   रहिमन फिरि-फिरि पोहिए, टूटे मुक्ताहार।।

   (ख) काज परे कछु और है, काज सरै कछु और।
   रहमिन भाँवर के भये, नदी सेरावत मौर।।

(ग) बाहर लैकै दियवा, वारन जाय।
सासु ननद ढिग पहुँचत देत बुझाय।।

(घ) रहिमन मोहिं न सुहाय, अमी पियावै मान बिनु।
बरु विष देय बुलाय, मान सहित मरिबो भलो।।

5. 'होत होत ही होय' में कौन-सा अलंकार है?

6. यमक और श्लेष अलंकार में अंतर स्पष्ट कीजिए तथा प्रत्येक का एक-एक उदाहरण भी दीजिए।

7. निम्नलिखित दोहे पढ़ कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

सुंदर जाके बित्त है, सो वह राखै गोइ।
कौड़ी फिरै उछालतो जो टुटपूँज्यो होइ।।

मन ही बड़ौ कपूत है, मन ही बड़ौ सपूत।
'सुंदर' जौ मन थिर रहै, तौ मन ही अवधूत।।

(क) यहाँ 'बित्त' का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(ख) मन स्थिर होने पर मनुष्य किस अवस्था को प्राप्त कर लेता है?

(ग) कौड़ी उछालते फिरने वाले को कवि ने टुटपुंजिया क्यों कहा है?

(घ) कवि द्वारा मन की महिमा का बखान के पीछे क्या आशय है?

5.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

5.1 (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) नहीं (ङ) हाँ (च) नहीं
2. सामान्य श्रेणी 3. घमंडी 4. कुपुत्र 5. बचपन, दिया जलाना

5.2 (क) हाँ (ख) हाँ (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ
2. आँसू 3. राम 4. प्रेम, बैर

5.3 (क) नहीं (ख) नहीं (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ (छ) हाँ (ज) नहीं
2. श्रेष्ठ लोग, अपने लोग, अच्छे लोग 3. अपने-अच्छे लोग 4. परोपकारी

5.4 (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) नहीं (च) हाँ 2. आत्मसम्मान के बिना जीवन 3. सम्मान के साथ विषय पाना 4. वर्षा ऋतु 5. अवधी भाषा

301hi06

6

गद्य कैसे पढ़ें!

दैनिक जीवन में हम बातचीत करने, पत्र लिखने, अपने विचार प्रकट करने और प्रार्थनापत्र आदि भेजने के लिए जिस प्रकार की भाषा का प्रयोग करते हैं, वह भाषा का गद्य रूप ही होता है। पिछले पाठों में कविता के संबंध में पढ़ते हुए आप संकेत रूप में यह समझ चुके हैं कि गद्य की भाषा सरल तथा बोधगम्य होती है, जबकि कविता (काव्य) की भाषा लयात्मक और विशिष्ट होती है। गद्य की भाषा सहज, सरल तथा बोधगम्य होने के कारण ही हम अपने विचार आसानी से अभिव्यक्त कर पाते हैं। काव्य में विचार नहीं बल्कि भावनाओं की प्रधानता होती है। यही कारण है कि काव्य की अपेक्षा गद्य का क्षेत्र अधिक विस्त त है। आज निबंध, कहानी, उपन्यास, यात्रा, संस्मरण, समाचार, संपादकीय आदि विधाएँ गद्य के माध्यम से ही पढ़ी-लिखी जाती हैं। इस प्रकार गद्य मानव जीवन के व्यापक पक्षों का स्पर्श करता है। आइए, इस पाठ में जानते हैं कि गद्य को किस तरह से पढ़ा जाना चाहिए, जिससे कि उसे अच्छी तरह समझा जा सके, उस पर पूछे गए प्रश्नों का ठीक-ठीक उत्तर दे सकें, विचार कर सकें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- गद्य के स्वरूप तथा विकास का उल्लेख कर सकेंगे;
- गद्य के महत्त्व पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- गद्य की विभिन्न विधाओं का परिचय दे सकेंगे;
- गद्य के प्रमुख अवयवों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- गद्य को कैसे पढ़ा जाना चाहिए, यह समझ कर उचित तरीके को अपना सकेंगे;
- पठित सामग्री के आधार पर लाभालाभ; उचित-अनुचित में भेद करने की क्षमता तथा तार्किक शक्ति का विकास कर सकेंगे;
- गद्य रूप में दी गई नवीन सामग्री को पढ़कर उस पर चिंतनमनन कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

टिप्पणी

आप रोज कुछ-न-कुछ पढ़ते हैं– अखबार, किताबें, विज्ञापन आदि। उनमें ज़्यादातर गद्य होता है। क्या आप बता सकते हैं कि गद्य के कितने रूप आमतौर पर देखने को मिलते हैं? गद्य में क्या-क्या लिखा जाता है। एक सूची बनाइए, जैसे–कहानी, उपन्यास आदि।

1 ....4..7..

2 ....5..8..

3 ....6..9..

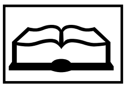

6.1 आइए समझें

गद्य का स्वरूप

आपको जानकर आश्चर्य होगा कि गद्य का लिखित रूप अपेक्षाकृत काव्य के बाद में प्रारंभ हुआ। असल में गद्य को पहले बोलचाल की भाषा माना जाता था, इसीलिए साहित्य अथवा लेखन के क्षेत्र में इसका प्रयोग नहीं होता था। पहले विविध ज्ञान-विज्ञान तथा इतिहास संबंधी विषयों की रचना भी काव्य में ही लिखी जाती थी। किंतु बाद में जैसे-जैसे समाज का विकास होता गया तथा अनुभव और विचारों का क्षेत्र विस्त त होता गया, तो धीरे-धीरे गद्य के महत्त्व को समझा जाने लगा।

गद्य का स्वरूप निर्धारित करते हुए संस्कृत साहित्यशास्त्र में विद्वानों ने इसे कथा, आख्यान आदि नामों से पुकारा। किंतु इसमें कथा साहित्य के अतिरिक्त इतिहास, विज्ञान अथवा चिंतनपरक लेखों पर कोई विचार नहीं किया गया।

हिंदी के आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने गद्य के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'दुनिया के सारे व्यवहार गद्य द्वारा चलते हैं, तो दूसरी ओर गूढ़ और जटिल विचारों को व्यक्त करने का उपयुक्त साधन भी गद्य ही है। बातों का बोध कराने के अतिरिक्त हृदय में हर्ष, विषाद, प्रेम, करुणा इत्यादि भावों की व्यंजना के लिए भी गद्य का प्रयोग कम नहीं होता, गद्य की सबसे सरल, व्यापक और सर्वमान्य परिभाषा यही हो सकती है कि जिस भाषा का हम साधारण बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य है। गद्य का लक्ष्य सहज तथा सरल ढंग से अपने प्रयोजन की अभिव्यक्ति करना होता है।'

जिस भाषा का हम सामान्य बातचीत में प्रयोग करते हैं, वही गद्य कहलाता है।

6.1.1 हिंदी गद्य का विकास

आप तो जानते ही हैं कि हिंदी साहित्य को उसके विकास के क्रमानुसार चार कालों में विभाजित किया गया है–आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल। आधुनिककाल के भी विभिन्न चरण हैं जैसे भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि। इनमें से हिंदी गद्य का पहली बार साहित्यिक रूप में

भारतेंदु युग में हिंदी गद्य साहित्य का प्रारंभ माना जाता है।

टिप्पणी

विकास भारतेंदु युग में हुआ। भारतेंदु युग से पूर्व काव्य की भाषा 'ब्रज' भाषा थी। भारतेंदु ने ही खड़ी बोली हिंदी को साहित्यिक रूप में विकसित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इसके लिए उन्होंने ब्रज को काव्य तक सीमित रखा और खड़ी बोली को गद्य में अभिव्यक्ति का माध्यम सुनिश्चित किया। साथ ही उन्होंने अनेक विधाओं को अपनाया। उन्होंने भाषणों तथा लेखों के माध्यम से हिंदी खड़ी बोली गद्य का प्रचार किया।

हिंदी गद्य लेखन का प्रारंभ

पहली बार सरकारी स्तर पर हिंदी गद्य के विकास तथा प्रयोग का प्रयास फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद अंग्रेज़ शासकों द्वारा किया गया। आप तो जानते ही हैं कि भारतेंदु युग से पूर्व हिंदी के कई रूप प्रचलित थे। एक तो सामान्य बोलचाल की खड़ी बोली हिंदी से मिलती-जुलती भाषा थी और दूसरी उर्दू मिश्रित, जो मुगल दरबारों की परंपरागत भाषा थी। ऐसी स्थिति में अंग्रेज़ी प्रशासकों को बहुत कठिनाई होती थी। कोई एक ऐसी भाषा नहीं थी, जिसको सीखकर सामान्य जनता के बीच बातचीत का क्रम बनाया जा सके। अतः अंग्रेज़ अफ़सरों ने इस देश की भाषा सीखने-सिखाने की व्यवस्था फोर्ट विलियम कॉलेज में की। इसमें उर्दू तथा खड़ी बोली हिंदी दोनों भाषाओं की पुस्तकें तैयार करने की योजना बनाई गई। फोर्ट विलियम कॉलेज के गिलक्राइस्ट महोदय ने खड़ी बोली में हिंदी गद्य को स्वतंत्र रूप से भाषा के रूप में स्वीकार किया तथा हिंदी गद्य में पुस्तकें तैयार करने के लिए लल्लूजी लाल तथा सदल मिश्र नाम के दो व्यक्तियों की नियुक्ति की।

फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 में कलकत्ता में हुई।

हिंदी गद्य साहित्य के इतिहास में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना सन् 1800 की महत्त्वपूर्ण घटना है। इस कॉलेज के प्राध्यापक सर जॉन गिलक्राइस्ट के निरीक्षण में खड़ी बोली गद्य में पुस्तकें लिखवाने की योजना बनी। इस योजना के अंतर्गत लल्लूजी लाल और सदल मिश्र को हिंदी गद्य में पुस्तकें लिखने का कार्य सौंपा गया। फोर्ट विलियम कॉलेज का कार्य आरंभ करने से पहले मुंशी सदासुखलाल 'ज्ञानोपदेश' और सैय्यद इंशाअल्ला खाँ 'रानी केतकी की कहानी' लिख चुके थे। उस समय सैय्यद इंशा अल्ला खाँ का विचार था– *'एक दिन बैठे-बैठे यह बात अपने ध्यान में चढ़ी कि कोई कहानी ऐसी कहिए कि जिसमें हिंदवी छुट और किसी बोली का पुट न मिले। बस जैसे भले लोग अच्छों से अच्छे आपस में बोलते-चालते हैं।'*

सैय्यद इंशाअल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' नाम की पहली कहानी लिखी।

फोर्ट विलियम कॉलेज के तत्वावधान में लल्लूजी लाल ने 'प्रेमसागर' और सदल मिश्र ने 'नासिकेतोपाख्यान' की रचना की। इन चारों लेखकों में सदासुखलाल ने 'सुखसागर' और इंशाअल्ला खाँ ने 'रानी केतकी की कहानी' में हिंदी गद्य के भावी साहित्यिक रूप का आभास दिया है। इस संबंध में लल्लूजी लाल का वक्तव्य है, *'संवत् 1860 (सन् 1803) में लल्लूजी लाल कवि ब्राह्मण गुजराती सहस्र–अवदीच आगरेवाले ने विसकासार ले यामनी भाषा छोड़ दिल्ली आगरे की खड़ी बोली में कह, नाम 'प्रेमसागर' धरा।'*

संस्थाओं का योगदान

हिंदी खड़ी बोली गद्य के जन्मदाता मुंशी सदासुखलाल, इंशाअल्ला खाँ, लल्लूजी लाल और सदल मिश्र के बाद लगभग पचास वर्ष तक ऐसा समय रहा, जिसमें कोई

उल्लेखनीय ग्रंथ नहीं रचा गया। पर इस बीच ईसाई धर्म प्रचारकों और कुछ अंग्रेज़ शासकों ने लोगों को हिंदी सिखाने का प्रयास किया, क्योंकि यह सामान्य लोगों के व्यवहार की भाषा थी। भारतीय लोगों में अपने धर्म का प्रचार करने के लिए ईसाई पादरियों ने खड़ी बोली को अपनाकर इसमें बाइबिल आदि पुस्तकों का अनुवाद करवाया। यही कारण है कि खड़ी बोली के विकास में ईसाई पादरियों का भी योगदान महत्त्वपूर्ण माना जाता है।

लगभग इसी समय ईसाई धर्म प्रचार के विरुद्ध हिंदू शिक्षित वर्ग में अपने धर्म की रक्षा करने की तीव्र भावना जाग उठी, जिससे ब्रह्मसमाज और आर्यसमाज जैसी संस्थाएँ खड़ी बोली के माध्यम से धार्मिक सिद्धांतों का प्रचार करने लगीं। ब्रह्मसमाज के संस्थापक राजा राममोहन राय ने वेदांत के सूत्रों का खड़ी बोली में अनुवाद किया। स्वामी दयानंद सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचार के लिए अनेक ग्रंथ लिखे, जिनमें 'सत्यार्थ प्रकाश', 'संस्कार विधि', 'वेदों का भाष्य' आदि प्रमुख हैं। स्वामी जी की संस्कृतनिष्ठ भाषा में ओज, हास्य और व्यंग्य काफ़ी मात्रा में विद्यमान है। उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करके सबके लिए हिंदी का पढ़ना और पढ़ाना आवश्यक कर दिया। वे हिंदी को आर्यभाषा के नाम से भी पुकारते थे। पंजाब, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और मुंबई में आर्यसमाज के प्रभाव से हिंदी गद्य का प्रसार और प्रयोग सर्वाधिक रूप से होता रहा। इसी समय पंडित श्रद्धाराम फुल्लौरी ने सनातन धर्म के प्रचार के लिए 'सत्याम त प्रवाह' नामक गद्य ग्रंथ की रचना की। वे बड़े प्रभावशाली वक्ता थे। उनके व्याख्यानों और कथावचनों से पंजाब में हिंदी का बहुत अधिक प्रचार हुआ। उनका 'भाग्यवती' नामक सामाजिक उपन्यास बहुत प्रसिद्ध हुआ था। इसके अतिरिक्त 'धर्म रक्षा', 'उपदेश संग्रह', 'शतोपदेश' आदि उनकी उल्लेखनीय गद्य रचनाएँ हैं।

पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका

इस प्रकार हिंदी खड़ी बोली गद्य की धारा दिन-प्रतिदिन पुष्ट होती गई। पचास वर्षों में हिंदी गद्य को आगे बढ़ाने में तत्कालीन पत्र-पत्रिकाओं ने भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। कलकत्ता से 'उदंत मार्तंड' नामक पत्र निकलना प्रारंभ हुआ। 'बंगदूत', 'बनारस अखबार' और 'सुधाकर' निकला। इसी समय राजा लक्ष्मण सिंह हिंदी का लोकसम्मत रूप लेकर सामने आए। उन्होंने आगरा से सन् 1961 में 'अभिज्ञान शाकुंतलम' का बड़ा ही सरल और सरस हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। राजा लक्ष्मण सिंह की भाषा लगभग काव्यमय है, जिसमें संस्कृत तथा तद्भव शब्दों का अच्छा प्रयोग हुआ है। राजा शिवप्रसाद 'सितारे हिंद' ने मिश्रित (अरबी-फ़ारसी युक्त) हिंदी को प्रश्रय दिया, जबकि लक्ष्मण सिंह ने हिंदी अपनाई। उन सभी के प्रयत्नों से खड़ी बोली में जीवन का संचार हुआ और भविष्य के लिए गद्य का रूप भी स्पष्ट हो गया।

6.1.2 आधुनिक युग में हिंदी गद्य

भारतेंदु युग

आधुनिक युग का प्रारंभ भारतेंदु के समय से माना जाता है।

भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकारों में भारतेंदु हरिश्चंद्र, बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण

मिश्र, बदरीनारायण प्रेमघन, लाला श्रीनिवास दास, गोपालराम गहमरी, अंबिकादत्त व्यास, देवकीनंदन खत्री आदि थे, जिन्होंने नाटक, निबंध, कहानी, उपन्यास आदि गद्य साहित्य की रचना की। भारतेंदु युग में गद्य का विकास तो हो गया था किंतु उस समय के भाषा-रूपों में अनेकता विद्यमान थी।

भारतेंदु युग के प्रमुख साहित्यकार हैं, भारतेन्दु, बालकृष्ण भट्ट प्रतापनारायण मिश्र, प्रेमघन, देवकीनंदन खत्री।

द्विवेदी युग

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का ध्यान खड़ी बोली गद्य में प्रचलित भाषापरक विविधताओं की ओर गया। हिंदी गद्य को देशज तथा सरल शब्दों में लिखी व्याकरणनिष्ठ हिंदी भाषा माना और उसी के प्रयोग पर बल दिया।

आज हम जिस व्याकरण-सम्मत हिंदी गद्य का प्रयोग करते हैं, उसे बनाने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को जाता है। इसीलिए इस काल को **द्विवेदी काल** कहा जाता है। द्विवेदी जी के प्रयास से हिंदी व्याकरण संबंधी पुस्तकों का लेखन भी हुआ, जिससे भाषा को शुद्ध तथा सरल ढंग से लिखने में सहायता मिलने लगी।

द्विवेदी युग के प्रमुख रचनाकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी, बालमुकुंद गुप्त, माधवप्रसाद मिश्र, बाबू श्यामसुंदर दास, चंद्रधर शर्मा गुलेरी, बाबू गुलाबराय तथा अध्यापक पूर्ण सिंह का नाम अग्रणी है। इन रचनाकारों ने कहानी, उपन्यास तथा निबंध के साथ-साथ विदेशी तथा भारतीय भाषाओं की पुस्तकों का हिंदी में अनुवाद भी किया, जिससे हिंदी के पाठक अन्य भाषाओं के साहित्य से भी परिचित हो सकें।

द्विवेदी युग के बाद क्रमशः छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा समकालीन साहित्य में हिंदी गद्य का विकास क्रमशः सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों के साथ-साथ वैचारिक बदलावों के अनुसार भी होता रहा। प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुभद्रा, कुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, पद्म सिंह शर्मा, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, रामचंद्र शुक्ल, हजारीप्रसाद द्विवेदी, अज्ञेय, रामकुमार वर्मा, रामविलास शर्मा, नामवर सिंह आदि के साहित्य में गद्य के विकास का परिचय प्राप्त किया जा सकता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा को परिनिष्ठित रूप दिया।

पाठगत प्रश्न 6.1

उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. गद्य क्या है?
   (क) साधारण बातचीत की भाषा
   (ख) तुकबंदी युक्त भाषा
   (ग) लय और नाद की भाषा
   (घ) कठिन और न समझ में आने वाली भाषा

2. सर्वप्रथम हिंदी गद्य का साहित्यिक रूप में विकास हुआ–
   (क) द्विवेदी युग में   (ग) भारतेंदु युग में
   (ख) छायावाद युग में   (घ) रीतिकाल में

3. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना हुई–

(क) सन् 1856 में बंगलौर में
(ख) सन् 1857 में कलकत्ता में
(ग) सन् 1902 में दिल्ली में
(घ) सन् 1800 में कलकत्ता में

4. देवकीनंदन खत्री किस युग के साहित्यकार थे?

(क) द्विवेदी युग के
(ख) भारतेंदु युग के
(ग) रीतिकाल युग के
(घ) प्रयोगवादी युग के

5. महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी गद्य के विकास में क्या महत्त्वपूर्ण योगदान दिया था?

(क) फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की थी
(ख) भारतेंदु हरिश्चंद को हिंदी पढ़ाई थी
(ग) हिंदी गद्य की व्याकरण संबंधी कमियों को दूर किया था
(घ) मिश्रित हिंदी को प्रश्रय दिया था

6.2 गद्य साहित्य की प्रमुख विधाएँ

आज मानव जीवन का कोई भी ऐसा पक्ष नहीं है जो गद्य के विकास से अछूता रह गया है। साहित्यिक अभिव्यक्तियों के साथ-साथ कला, विज्ञान, इतिहास, राजनीति, संस्कृति आदि विषयक रचनाएँ भी आज गद्य के माध्यम से होने लगी है। पढ़ाई-लिखाई तथा छपाई के विकास के साथ ही गद्य का भी निरंतर विकास होता चला गया है। चाहे वह पक्ष-विपक्ष की घटनाओं पर आधारित समाचार समीक्षाएँ हों अथवा व्यक्तिगत अनुभवों को डायरी में लिखने संबंधी क्रिया, सभी कुछ गद्य के माध्यम से सुरक्षित रखा जा सकता है। गद्य द्वारा इतने व्यापक स्तर पर जीवन के क्रिया-व्यापारों को घेरते चले जाने के साथ ही साहित्य विभिन्न प्रकार की विधाओं का भी जन्म हुआ।

इस प्रकार हिंदी गद्य को चार बड़े भागों में विभाजित किया जा सकता है:

1. कथा-साहित्य
2. नाटक
3. निबंध
4. नवीन विधाएँ

1. कथा-साहित्य

कथा-साहित्य में हम उपन्यास, कहानी और लघुकथा का पठन करते हैं। यह अधिकतर द्रुतपठन के लिए प्रयुक्त होता है। यदि आपको पठन में गति बढ़ानी है तो गद्य पठन

टिप्पणी

में अधिक से अधिक कहानी और उपन्यास पढ़ना अति आवश्यक है। आप कहानी और उपन्यास पढ़ना अपनी आदत बना सकते हैं। इस पठन से मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानव दृधि भी होती है।

कहानी

जीवन अथवा समाज की किसी भी घटना का सुंदर ढंग से चित्रण ही कहानी है। कहानी में कथा का होना आवश्यक है। इसमें विचार निबंध की तरह सीधे-सीधे न प्रकट करके घटना अथवा पात्रों के माध्यम से प्रकट किए जाते हैं। कहानी हमेशा किसी घट चुकी घटना का वर्णन प्रस्तुत करती है।

प्रेमचंद, जयशंकर प्रसाद, जैनेंद्र, इलाचंद्र जोशी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', भगवतीचरण वर्मा, राहुल सांकृत्यायन, भैरव प्रसाद गुप्त, राजेंद्र यादव, शिवप्रसाद सिंह, शेखर जोशी, नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, मोहन राकेश, मन्नू भंडारी, कमलेश्वर आदि हिंदी के कई प्रमुख कहानीकार हैं। आप अपनी पाठ्य पुस्तक में मन्नू भंडारी की कहानी 'दो कलाकार' पाठ संख्या–8 में पढ़ेंगे।

उपन्यास

उपन्यास में भी जीवन अथवा समाज में घटित घटनाओं का वर्णन होता है। किंतु उपन्यास में कहानी की अपेक्षा अधिक विस्तार से कथा का वर्णन किया जाता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ होती हैं। इसमें कई उप-कहानियाँ भी एक साथ चलती हैं। उपन्यास जीवन के लंबे समय की घटना को चित्रित करता है, जबकि कहानी में किसी छोटे क्षण की घटना का चित्रण होता है। प्रेमचंद, इलाचंद्र जोशी, आचार्य चतुरसेन शास्त्री, राहुल सांकृत्यायन, व ंदावनलाल वर्मा, भगवती चरण वर्मा, फणीश्वरनाथ रेणु, यशपाल, अज्ञेय, भैरवप्रसाद गुप्त, शिवप्रसाद सिंह, भीष्म साहनी, कृष्णा सोबती, विवेकी राय कमलेश्वर आदि हिंदी के प्रमुख उपन्यासकार हैं। आप तीसरी पुस्तक के प्रारंभ में व ंदावनलाल वर्मा द्वारा लिखित 'विराटा की पद्मिनी' नामक उपन्यास पढ़ेंगे।

2. नाटक

नाटक में भी कहानी ही प्रमुख होती है किंतु इसमें कहानी अथवा उपन्यास की तरह घटना का वर्णन नहीं होता बल्कि उस कहानी के पात्रों द्वारा संवाद बुलवाकर और अभिनय के माध्यम से स्थिति का वास्तविक चित्रण करने का प्रयास किया जाता है। नाटक की भाषा बोलचाल के बहुत करीब होती है इसलिए यह साधारण से साधारण मनुष्य को भी समझ में आ जाती है और यदि न भी आए तो नाटक के पात्रों के अभिनय (पात्रानुकूल भाषा) से वह स्पष्ट हो जाती है। नाटक में लेखक जो भी बात कहना चाहता है वह पात्रों के माध्यम से कहलवाता है। अब तो जगह-जगह चौराहों पर नुक्कड़ नाटक भी खेले जाते हैं। सफ़दर हाशमी ने नुक्कड़ नाटकों को पर्याप्त प्रश्रय दिया था। दिल्ली स्थित नेशनल स्कूल ऑफ़ ड्रामा द्वारा नाटक के लिए पात्रों को शिक्षित किया जाता है।

3. निबंध

निबंध को गद्य-लेखन की कसौटी माना जाता है। सामान्यत: निबंध में किसी विषय पर विचारपूर्ण लेख लिखे जाते हैं। निबंध का अर्थ है– 'बिना बंधन का' अर्थात् **किसी विषय**

पर लिखते समय विचारों के ऊपर कोई बंधन अथवा प्रतिबंध न हो, वह रचना निबंध कहलाती है। निबंध किसी भी विषय पर लिखे जा सकते हैं। इसके लिए आवश्यक नहीं कि केवल साहित्यिक विषयों का ही चुनाव किया जाए। निबंध और लेख में अंतर होता है। लेख केवल अपने विषय पर ही केंद्रित होता है किंतु निबंध में विषय केवल एक माध्यम भर होता है। निबंध में विचारों की श ंखला कहीं से भटककर कहीं भी जा सकती है। विभिन्न शैलियों के आधार पर निबंधों में भेद किए जा सकते हैं; जैसेः ललित निबंध, विचारात्मक निबंध, वर्णनात्मक निबंध आदि। प्रतापनारायण मिश्र, बालमुकुंद गुप्त, आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी, श्यामसुंदर दास, बाबू गुलाबराय, अध्यापक पूर्ण सिंह, कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर', हजारीप्रसाद द्विवेदी, विद्यानिवास मिश्र, कुबेरनाथ राय, विवेकीराय आदि हिंदी के प्रमुख निबंधकार हैं। अपने पाठ्यक्रम में आप कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ', हजारीप्रसाद द्विवेदी का 'कुटज', रामचंद्र शुक्ल का 'क्रोध' आदि निबंध पढ़ेंगे।

4. नवीन विधाएँ

यात्रा-व त्तांत

यात्रा-व त्तांत में लेखक किसी देश, पहाड़ अथवा किसी अन्य स्थान की अपनी यात्रा के अनुभवों को लिखता है। यात्रा के दौरान तरह-तरह की कठिनाइयाँ भी आती हैं, कई रोमांचक अनुभव भी होते हैं तथा आनंद भी प्राप्त होता है। यात्राओं में प्राप्त अनुभवों का वर्णन ही **यात्रा-व त्तांत** कहलाता है। राहुल सांकृत्यायन का 'घुमक्कड़, शास्त्र' ग्रंथ प्रसिद्ध यात्रा-ग्रंथ है। यात्रा संस्मरण के लेखन की परंपरा भारतेंदु हरिश्चंद्र के समय से ही प्रारंभ हो गई थी। देवकी नंदन खत्री की 'बद्रिकाश्रम यात्रा', गोपालराम गहमरी की 'लंका-यात्रा' का विवरण, अज्ञेय की 'अरे यायावर रहेगा याद' आदि यात्रा-व त्तांत संबंधित चर्चित पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त यशपाल, विष्णु प्रभाकर, राजेंद्र यादव, मनोहर श्याम जोशी, हिमांशु जोशी आदि ने भी कई सुप्रसिद्ध यात्रा-साहित्य लिखे हैं। आपको दूसरी पुस्तक के पाठ संख्या-26 में मोहन राकेश का लिखा 'आखिरी चट्टान' नामक यात्रा-व त्तांत पढ़ने को मिलेगा।

संस्मरण

उचित प्रकार से किसी व्यक्ति अथवा स्थान का स्मरण करना ही **संस्मरण** कहलाता है। संस्मरण में आत्मीयता का होना एक विशिष्ट गुण है। इसमें किसी व्यक्ति से अत्यधिक भावनात्मक जुड़ाव होने के कारण अनुभूत स्म तियाँ और घटनाओं के प्रति निजी द ष्टिकोण का होना स्वाभाविक होता है। संस्मरण विधा अतीत से जुड़ी विधा है। इसमें किसी भी छोटे अथवा बड़े व्यक्ति को तटस्थता से याद कर लिपिबद्ध किया जाता है।

संस्मरण साहित्य के विकास में पं० बनारसीदास चतुर्वेदी कृत संस्मरण तथा कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' के 'दीप जले शंख बजे' ने विशिष्ट योगदान दिया। अन्य संस्मरण लेखन कार्य में संलग्न साहित्यकारों ने 'संस्मरण-माला' लिखीं। विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक का 'मेरा वह बाल्यकाल,' जैनेंद्र द्वारा 'ये तथा वे' और 'गांधी': कुछ स्म तियाँ, आचार्य

चतुरसेन के 'सुगंधित संस्मरण' बच्चन के 'नए पुराने झरोखे', अज्ञेय कृत 'स्म ति लेखा', 'आत्मेनपद', 'मन से परे' आदि महत्त्वपूर्ण हैं।

इस पुस्तक में आप डॉ० रघुवंश पर लिखित डॉ. कैलाशचंद्र भाटिया का संस्मरण पढ़ेंगे। आशा है यह विधा आपको पसंद आएगी।

व्यंग्य

समाज में फैली बुराई, किसी विचार, परंपरा अथवा घटना का वर्णन करते हुए यदि उसकी खिल्ली उड़ाई जाए, व्यवस्था पर चोट की जाए अथवा हँसती-गुदगुदाती भाषा में उसका चित्रण किया जाए तो वह रचना व्यंग्य कही जाएगी। व्यंग्य में कहानी भी हो सकती है और निबंध की तरह स्वतंत्र विचार भी हो सकते हैं। कुल मिलाकर कहें तो व्यंग्य एक प्रकार का निबंध होता है, जिसमें व्यंग्यात्मक ढंग से किसी विषय का चित्रण होता है।

बालमुकुंद गुप्त की 'शिवशंभु के चिट्ठे', महावीर प्रसाद द्विवेदी का 'म्युनिसिपैलिटि के कारनामे' श्रेष्ठ व्यंग्य के उदाहरण हैं। आज तो व्यंग्य एक स्वतंत्र विधा के रूप में विकसित हो चुका है। आजकल पत्र-पत्रिकाओं में साहित्य, कला, इतिहास, राजनीति, संस्कृति, विज्ञान आदि किसी भी विषय से संबंधित व्यंग्य अनिवार्य रूप से मौजूद रहते हैं। व्यंग्य के माध्यम से जहाँ किसी विषय की खिल्ली उड़ाई जाती है वहीं उसके पीछे किसी गूढ़ समस्या का समाधान भी ढूँढ़ने का प्रयास किया जाता है। व्यंग्य पढ़ने वाला ऊपर-ऊपर तो हँसता रहता है किंतु उसके हृदय में वह गूढ़ समस्या भीतर तक कचोटती रहती है। प्रमुख व्यंग्यकारों में हरिशंकर परसाई, शरद जोशी, गोपाल चतुर्वेदी आदि के नाम आते हैं। इस पाठ्यक्रम में आप हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'', नामक व्यंग्य रचना इसी पुस्तक के पाठ संख्या 10 में पढ़ेंगे।

संपादकीय

हर पत्र-पत्रिका में एक संपादकीय अवश्य होता है। संपादकीय उसे कहते हैं जो पत्र अथवा पत्रिका के संपादक द्वारा लिखा जाता है। संपादकीय को भी अब स्वतंत्र विधा के रूप में स्वीकार कर लिया गया है। अब तक इसे निबंध की श्रेणी में ही रखा जाता था। संपादकीय में संपादक तत्कालीन समस्याओं, घटनाओं पर अपने विचार प्रकट करता है अथवा उस पत्र-पत्रिका से संबंधित समस्याओं पर लेख लिखता है। अखबार तथा पत्रिका के संपादकीय में अंतर होता है। चूँकि अखबार रोज़ निकलता है इसलिए उसका संपादकीय प्रायः समाचारों पर आधारित होता है जबकि पत्रिकाओं की एक निश्चित अवधि होती है इसलिए उनके संपादकीय में किसी सामाजिक मुद्दे अथवा समस्या पर समीक्षात्मक टिप्पणी की जाती है। ये संपादकीय अब पुस्तकाकार रूप में भी उपलब्ध होने लगे हैं।

धर्मवीर भारती, अक्षय कुमार जैन संपादकीय लेखन में प्रमुख हैं। राजेंद्र यादव की 'काँटे की बात' नामक पुस्तकें उनकी संपादकीय टिप्पणियों का ही संकलन है। उनका एक संपादकीय आप इसी पुस्तक के पाठ संख्या–9 में पढ़ेंगे। विद्यानिवास मिश्र, म णाल पांडे,

प्रभाष जोशी, विष्णु खरे, अरुण शौरी, खुशवंत सिंह, कुलदीप नायर आदि कुछ अन्य चर्चित संपादकीय लेखक हैं।

कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध, यात्रा, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, जीवनी, आत्मकथा, फीचर, पत्र, लघु-कथा, नुक्कड़ नाटक, रेडियो रूपक, परिचर्चा आदि अनेक विधाओं में पर्याप्त साहित्य लिखा जा रहा है। इन नई विधाओं को पत्र-पत्रिकाओं में पर्याप्त स्थान दिया जाता है।

पाठगत प्रश्न 6.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. निबंध लिखते समय लेखक के विचारों पर.................होता है।

   (क) प्रतिबंध (ग) कोई न कोई प्रभाव

   (ख) कोई प्रतिबंध नहीं (घ) दबाव

2. कहानी में ....का होना अनिवार्य है।

   (क) कथा (ग) कविता

   (ख) विचार (घ) लेखक

3. नाटक में विचार.......................के माध्यम से अभिव्यक्त किए जाते हैं।

   (क) लेखक (ग) पात्रों

   (ख) कहानी (घ) घटना

4. हिंदी साहित्य की नवीन विधाओं में कौन–सी विधा सम्मिलित नहीं है–

   (क) संस्मरण (ग) यात्रा व त्तांत

   (ख) नाटक (घ) लघु कथा

6.3 गद्य का महत्त्व

संस्कृत की सुप्रसिद्ध सूक्ति के अनुसार 'गद्य कवीनां निकषम् वदन्ति' गद्य का लेखन मूर्धन्य कवियों की कसौटी है। इस कारण ही संस्कृत में भी बहुत से महाकवि गद्य लेखन करते रहे हैं। हिंदी साहित्य के आधुनिककाल के मूर्धन्य कविगण–जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', महादेवी वर्मा, रामधारी सिंह दिनकर, रामकुमार वर्मा, शिवमंगल सिंह 'सुमन', धर्मवीर भारती आदि कवियों का गद्य भी उतना ही सुललित और श्रेष्ठ है, जितना कि किसी सुप्रसिद्ध गद्य लेखक का।

ऊपर आपको बताया जा चुका है कि जीवन के समस्त क्रिया-व्यापार गद्य द्वारा ही संचालित होते हैं। अब आप सोचते होंगे कि कैसे? जब गद्य बातचीत द्वारा आसानी से अभिव्यक्त हो ही जाता है तो उसे पढ़ने की क्या ज़रूरत है? लेकिन ज़रा गहराई से सोचिए तो आपको इसके महत्त्व का पता चलेगा।

यदि आप अपने घर से दूर गए हैं और आपका घर के सदस्यों से बातचीत करने का मन हो रहा हो, अपने बारे में बताना चाहते हों, तब आप क्या करेंगे? चिट्ठी में आप किस ढंग से अपनी बात कहते हैं, वह कितनी प्रभावकारी बन पड़ी है, अथवा उसमें आप अपनी पूरी बात ठीक ढंग से कह पाए हैं कि नहीं, यह सब आपकी शैली पर निर्भर करता है। आपके कई मित्र आपको चिट्ठी लिखते होंगे उनमें से ज़रूरी नहीं कि सबकी चिट्ठियाँ आपको प्रभावित करती ही हों। कोई एकाध चिट्ठी ही ऐसी होती होगी जिसे पढ़कर आप प्रभावित होते होंगे और उसी तरह की चिट्ठी लिखने की कोशिश आप भी करते होंगे। यह प्रभावित करने का गुण उसकी लेखन शैली पर निर्भर करता है, और यह शैली गद्य का अध्ययन करके ही प्राप्त की जा सकती है। जब तक अधिक से अधिक और ठीक ढंग से गद्य का अध्ययन नहीं किया जाएगा तब तक प्रभावशाली लेखन शैली का विकास नहीं किया जा सकता।

गद्य के पढ़ने की आवश्यकता केवल साहित्य पढ़ने के लिए ही नहीं होती बल्कि इतिहास, विज्ञान, गणित आदि ज्ञान-विज्ञान की अनेक पुस्तकें हैं, जो गद्य में ही लिखी जाती हैं। जब तक गद्य का अध्ययन नहीं करेंगे तब तक दुनिया के बारे में जानकारी नहीं मिलेगी। आपको यदि कहीं आवेदन भेजना हो तो भी गद्य का ही तो सहारा लेंगे न!

इस प्रकार गद्य को ठीक से पढ़ने का तरीका सीखना चाहिए। उसके प्रभावशाली गुणों को जानना चाहिए।

6.4 गद्य के अवयव

अब आपके मन में प्रश्न उठता होगा कि गद्य को कैसे पढ़ा जाए। गद्य को ठीक ढंग से पढ़ने के लिए सबसे पहले उसके प्रमुख अवयवों की जानकारी प्राप्त करनी चाहिए। क्योंकि हर चीज़ कुछ तत्त्वों के सहयोग से बनी होती है। वे ही तत्त्व उस वस्तु के अवयव कहलाते हैं। गद्य के अवयवों की जानकारी आपके लिए अत्यंत आवश्यक है क्योंकि जब परीक्षा में गद्य की व्याख्या पूछी जाती है तब आप असमंजस में पड़ जाते हैं कि यह तो स्पष्ट रूप से समझ में आ रही है, इसका अर्थ कैसे लिखा जाएगा, व्याख्या कैसे की जाएगी। किंतु गद्य की व्याख्या करने का मतलब अर्थ लिखना नहीं होता बल्कि उसके अवयवों की व्याख्या करना होता है। जब तक अवयवों से परिचित नहीं होंगे तब तक गद्य को समझना कठिन होगा। गद्य में तीन प्रमुख तत्त्व होते हैं—विचार तत्त्व, भाषा तथा शैली।

6.4.1 विचार तत्त्व

किसी भी गद्य रचना में विचार तत्त्व प्रधान होता है। चाहे वह निबंध हो, कहानी हो अथवा उपन्यास या संपादकीय। इस विचार तत्त्व का अध्ययन करने के लिए आवश्यक है कि रचना के रचनाकार के बारे में परिचय प्राप्त किया जाए तथा वह किस काल का रचनाकार है उस काल की विशेषताओं के बारे में जानकारी प्राप्त की जाए क्योंकि समय तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार ही विचार बनते हैं। फिर उस रचना के पीछे रचनाकार का क्या उद्देश्य है, उसे जान लिया जाए। जैसे उदाहरण के लिए यदि हमें

'कुटज' नामक निबंध पढ़ना है तो पहले हम जान लें कि हजारीप्रसाद द्विवेदी किस काल के रचनाकार हैं, उस काल में किस प्रकार की रचनाएँ की जाती थीं तथा द्विवेदी जी ने उसमें क्या योगदान दिया था। फिर 'कुटज' लिखने के पीछे उनका क्या मन्तव्य था? इस तरह कुटज में जो विचार आए हैं वे स्पष्ट होते चले जाएँगे, नहीं तो आप विचारों को ढूँढ़ने में अंदाज़ लगाते चले जाएँगे, जो व्यर्थ होगा।

रचना में विचार तत्त्वों की व्याख्या के लिए गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है क्योंकि इसमें कविता की तरह भावनाओं की प्रधानता नहीं होती। इसमें आए एक-एक विचार की गहराई तक जाना होता है। उन तर्कों की जानकारी आपको तभी हो सकती है जब आप उससे संबंधित ग्रंथों का अध्ययन करें। जब आप अध्ययन करेंगे तो पाएँगे कि जो विचार आपके सामने अभी हैं किसी न किसी रूप में और दूसरे रचनाकारों में भी वे पहले से ही मौजूद हैं। आपको इन रचनाओं के समान विचारों की आपस में तुलना भी करनी चाहिए।

6.4.2 भाषा

भाषा विचारों की संवाहिका होती है। जैसे विचार होंगे वैसी भाषा भी हो जाएगी। इसके अलावा भाषा विषय-वस्तु के चुनाव पर भी निर्भर करती है। विषय और वस्तु जिस काल, परिवेश और स्थितियों पर आधारित होते हैं भाषा भी उसी के अनुरूप ढलती चली जाती है। यदि कोई रचनाकार मुगलकालीन समस्या को लेकर रचना करना चाहता है तो उसकी भाषा भी आज की प्रचलित भाषा से भिन्न हो जाएगी क्योंकि जब तक भाषा में यह परिवर्तन नहीं आएगा, तब तक उस रचना में वास्तविकता नहीं आएगी।

हर रचनाकार की अपनी भाषा होती है। यह भाषा संबंधी भेद विभिन्न रचनाकारों के गद्यों का अध्ययन करके ही समझा जा सकता है। भाषा-संबंधी अध्ययन के लिए पर्यायवाची शब्दों का अध्ययन, लोकोक्तियों तथा मुहावरों का ज्ञान तथा तत्सम और तद्भव शब्दों का भी अध्ययन ज़रूरी है। क्योंकि रचनाकार भाषा को सरल, प्रभावशाली तथा सुबोध बनाने के लिए कई बार मुहावरों का प्रयोग भी करता है, कई देशज अथवा तद्भव शब्दों का भी प्रयोग करता है या किसी प्रचलित शब्द के बदले कोई दूसरा शब्द प्रयोग करता है ऐसी स्थिति में व्याकरण का ज्ञान भी बहुत ज़रूरी होता है। नहीं तो आप लिखते समय विराम चिह्नों, विभक्तियों तथा कारक चिह्नों का गलत प्रयोग कर बैठते हैं।

6.4.3 शैली

गद्य रचना में शैली का बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है। एक ही विषय पर अलग-अलग रचनाकारों द्वारा लिखी गई बातें, शैली अलग होने के कारण अलग-अलग रूप में प्रभावित करती हैं। एक पुरानी कहानी है कि एक कवि जब मरने लगा तो उसने अपने दोनों बेटों को बुलाया और कहा कि यह मेरी अधूरी किताब है लेकिन मैं इसे उसे ही पूरा करने के लिए देना चाहता हूँ जो मेरी परीक्षा में पास होगा। उसने खिड़की से बाहर

की तरफ़ एक सूखे पेड़ की ओर इशारा करते हुए दोनों बेटों से उसका वर्णन करने के लिए कहा। उत्तर में बड़े बेटे ने कहा, 'सूखा पेड़ खड़ा है।' छोटे बेटे ने कहा, 'रसहीन व क्ष द ष्टिगोचर हो रहा है।' तुरंत ही कवि ने छोटे बेटे को अपनी पुस्तक सौंप दी।

आपने देखा कि एक ही बात को कहने की शैली अलग होने से प्रभाव में भी अंतर आ जाता है। इसलिए गद्य साहित्य में शैली का अध्ययन बहुत आवश्यक होता है। शैली के अनुसार भाषा का स्वरूप भी बदल जाता है। हर रचनाकार की अपनी शैली होती है किंतु हिंदी गद्य में कुछ प्रचलित शैलियों का परिचय यहाँ दिया जा रहा है।

(क) वर्णनात्मक शैली

वर्णनात्मक शैली का लक्ष्य होता है किसी वस्तु या व्यापार का वर्णन करना। इस शैली के द्वारा विषय की संपूर्ण जानकारी वर्णन द्वारा प्रस्तुत की जाती है। इससे पाठक की कल्पना जाग्रत होकर विषय का आनंद जगाती है। वर्णनात्मक शैली के द्वारा रचनाकार एक प्रकार से शब्द-चित्र खींचने का प्रयास करता है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में आप वर्णनात्मक ही पढ़ेंगे।

(ख) विचारात्मक शैली

इस शैली के द्वारा रचनाकार अपने विचारों को विभिन्न तर्कों द्वारा पाठक के मन में बिठा देने का प्रयास करता है। इस शैली के लिए बातें स्पष्ट रूप में रखी जानी आवश्यक होती हैं इसलिए भाषा साफ और स्पष्ट होती है। किसी भी प्रकार का भाषा संबंधी खिलवाड़ विचारों की श्ृंखला को भंग कर देता है। कई बार विचारात्मक शैली में लिखी जाने वाली रचना की भाषा विचार और चिंतन के विषय के अनुरूप दुरूह तथा बोझिल भी हो जाती है। 'कुटज' और 'क्रोध' निबंधों में आप विचारात्मक शैली का आनंद लेंगे।

(ग) कथात्मक शैली

इस शैली का लक्ष्य होता है अपने विचारों को कहानी अथवा घटना के माध्यम से पुष्ट करते हुए कहना। इसलिए इसकी भाषा प्रवाहमयी और सरल होती है। पाठक को लगता है कि वह रचनाकार के विचारों को जबरदस्ती ग्रहण करने पर मज़बूर नहीं है, बल्कि पाठक कहानी के माध्यम से विचारों को ग्रहण करता है और उन पर चिंतनमनन कर उन्हें अपनाने अथवा न अपनाने का निर्णय वह स्वयं लेता है। 'दो कलाकार' और 'अनुराधा' कहानी कथात्मक शैली के ही उदाहरण हैं।

(घ) भावात्मक शैली

इस शैली के द्वारा हर्ष, आह्लाद, करुणा, क्रोध, विस्मय आदि किसी भाव की कामना करने का प्रयास किया जाता है। उपर्युक्त शैलियों के अलावा और भी बहुतसी शैलियाँ अब प्रचलन में आ गई हैं। किंतु इन्हीं चार को मुख्य रूप से आधार बनाया जाता है।

गद्य का अध्ययन करते समय कभी-कभी अलंकारों का भी ज्ञान होना चाहिए क्योंकि कविता की तरह ही गद्य में भी रूपक, उपमा, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का प्रयोग सहज ही अथवा सप्रयास किया जाता है।

पढ़ें कैसे?

गद्य साहित्य का वाचन करते समय कुछ अन्य बातों का ध्यान रखना चाहिए जैसे–

- पढ़ने से पूर्व पुस्तक की भूमिका तथा परिचय अवश्य पढ़ लें, यदि सारांश दिया गया हो तो उसे भी पढ़ें इससे वांछित विषय को पढ़ने में सहायता मिलती है।
- पहले और अंतिम अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़ें, क्योंकि इसमें मुख्य बातों का निचोड़ दिया जाता है।
- पढ़ते समय विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए रुक-रुक कर पढ़ें। उच्चारण शुद्ध और स्पष्ट होना चाहिए, नहीं तो कई बार अर्थ बदल जाते हैं। संवादों को ठीक ढंग से बोलने का प्रयास करें, नहीं तो अर्थ बदल जाता है।
- पढ़ते समय बीच-बीच में रुक-रुक कर सोचें नहीं, नहीं तो क्रम बिगड़ जाता है और विषय समझ में नहीं आता, इसलिए तेज़-तेज़ पढ़ने की आदत डालें।

पाठगत प्रश्न 6.3

उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित वाक्यों की पूर्ति कीजिए।

1. जिसमें विषय का वर्णन किया जाता है उसे ....शैली कहते हैं।

   (क) कथात्मक (ग) विचारात्मक

   (ख) वर्णनात्मक (घ) भावात्मक

2. भावात्मक निबंधों में .... किया जाता है।

   (क) भावनाओं को जगाने का प्रयास ....

   (ख) पाठक को भुलाने का प्रयास ....

   (ग) कहानी सुनाने का प्रयास ....

   (घ) विचारों को तर्कों द्वारा स्थापित करने का प्रयास ....

3. गद्य का अध्ययन करते समय अलंकारों का ज्ञान........

   (क) नहीं होना चाहिए। (ग) होना चाहिए।

   (ख) कोई आवश्यक नहीं। (घ) विषय पर निर्भर करता है।

4. निम्नलिखित कथनों में सही कथन पर सही (√) और गलत कथन पर गलत (X) का निशान लगाइए:

   (क) पढ़ते समय रुक-रुक कर सोच-विचार कर पढ़ना ठीक रहता है। ☐

   (ख) उचित विराम चिह्नों के अनुसार ही पढ़ने में सामग्री समझ में आती है। ☐

(ग) किसी पुस्तक को ठीक से समझकर पढ़ने से पहले उसकी भूमिका पढ़नी आवश्यक है। ☐

(घ) विचारात्मक गद्य को तेज़ी से पढ़ने की आदत डालना ठीक नहीं है। इससे कुछ विचार छूट जाते हैं, सामग्री समझ में नहीं आती। ☐

6.5.1 अपठित गद्य कैसे पढ़ें?

अभी आपने गद्य के विविध रूपों, उसके महत्त्व और विविध शैलियों के बारे में पढ़ा। परीक्षा में आपसे अपठित गद्य पर भी सवाल पूछे जाते हैं। अपठित के नाम से ही आप में से कई लोगों की परेशानी बढ़ जाती होगी। ऐसा नहीं होना चाहिए। जब भी आप कुछ नया पढ़ना शुरू करते हैं तो वह आपके लिए अपठित ही होता है। पठित और अपठित में अंतर बस इतना है कि पठित की व्याख्या और टिप्पणियाँ आप पहले से पढ़ चुके होते हैं इसलिए वह आपको थोड़ा आसान लगता है। अपठित इसलिए थोड़ा कठिन जान पड़ता है क्योंकि उसके बारे में आपने पहले से पढ़ा नहीं होता। लेकिन अगर अपठित को भी पढ़ने का तरीका सीख लें तो उस पर भी पूछे जाने वाले सवालों को लेकर आपके मन में कोई उलझन नहीं होगी।

आइए, इसे पढ़ना सीखने की शुरूआत एक गद्य खंड के उदाहरण से करते हैं। निम्नलिखित गद्य खंड को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के प्रयास कीजिए। अपनी उत्तर पुस्तिका में इन प्रश्नों के जवाब तलाशने में आने वाली कठिनाइयों को लिखते भी जाइए।

*हमारी धरती ने बापू को जन्म दिया। किंतु इस धरती का यह **सौभाग्य** न हुआ कि जो महापुरुष देश की पराधीनता की बेड़ियाँ काटे और देश की **प्रतिष्ठा** को संसार में ऊँचा ले जाए, वह अपने द्वारा प्रतिष्ठापित स्वतंत्र राष्ट्र में जीवित रहकर विश्वशांति और **विश्वबंधुत्व** का अपना स्वप्न पूरा कर सके। महात्माजी को तो इससे अच्छी म त्यु और क्या मिल सकती थी कि **मानवता** की रक्षा करते हुए उन्होंने अपने प्राण त्याग दिए।*

उपरोक्त गद्यांश को ध्यान से पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) महात्माजी ने हमारे लिए क्या किया?

(ख) उनकी म त्यु कैसे हुई?

(ग) महात्माजी का सपना क्या था?

(घ) उभरे हुए शब्दों के अर्थ लिखिए

- पहला प्रश्न है कि महात्मा जी ने हमारे लिए क्या किया? गद्यांश को पढ़ते हुए आप पहली पंक्ति पर ध्यान दीजिए। उत्तर उसमें छिपा है। इसमें दो बातों पर बल दिया गया है–**पराधीनता की बेड़ियाँ काटने और देश की प्रतिष्ठा को संसार में ऊँचा ले जाने पर।** यही सही उत्तर है। आप इसका उत्तर इस प्रकार लिख सकते हैं–महात्मा जी ने हमारे पराधीन देश की बेड़ियाँ काटीं अर्थात देश को

आज़ादी दिलाई और देश की खोई हुई प्रतिष्ठा को स्थान दिलाया यानी पूरी दुनिया में देश का मान-सम्मान बढ़ाया। देश को इस लायक बनाया कि वह भी दुनिया के आज़ाद देशों की कतार में गर्व से खड़ा हो सके।

- आइए इसी प्रकार दूसरे प्रश्न का उत्तर तलाशते हैं। प्रश्न है कि महात्मा जी की म त्यु कैसे हुई? आप सभी जानते हैं कि गांधी जी की गोली मार कर हत्या की गई थी। लेकिन इस गद्यांश में उसका कोई उल्लेख नहीं है। इसमें दूसरी बात कही गई है। गद्यांश की आखिरी पंक्ति को पढ़िए तो उत्तर स्पष्ट हो जाएगा। इसमें **मानवता की रक्षा करते हुए प्राण त्यागने** की बात कही गई है। तो इसका उत्तर आप लिख सकते हैं कि मानवता की रक्षा करते हुए महात्मा जी की म त्यु हुई थी।
- आइए, अब तीसरे प्रश्न पर ध्यान देते हैं, इसमें महात्मा जी के सपने के बारे में पूछा गया है। दो प्रश्नों के उत्तर तलाश लेने के बाद अब आपको इसका उत्तर तलाशना आसान लगने लगा होगा। इसमें भी दो बातों पर बल दिया गया है। **विश्वशांति** और **विश्वबंधुत्व।** अब आप आसानी से समझ सकते हैं कि गांधी जी के यही दो सपने थे तो इसका उत्तर इस प्रकार लिखा जा सकता है—महात्मा गांधी का सपना था कि विश्वशांति कायम हो, यानी दुनिया में शांति हो, लड़ाई-झगड़े का माहौल न हो और विश्वबंधुत्व अर्थात् पूरी दुनिया के लोग एक दूसरे के साथ भाई-भाई की तरह मिलजुल कर रहें। आपस में प्यार करें।
- चौथा प्रश्न आपकी शब्द शक्ति की पहचान करने के लिए है। शब्दों के अर्थ आप तभी जान सकते हैं जब नियमित शब्द कोश देखें। शब्दों के अर्थ जानें और उनका प्रयोग भी करें—चाहे बोलने के स्तर पर हो या लिखने के। आप तो जानते ही हैं कि शब्द-भंडार तभी बढ़ता है जब उनका प्रयोग करना सीखते हैं। इसलिए नए-नए शब्दों के अर्थ जानने और उनका इस्तेमाल करने की कोशिश करनी चाहिए। आपमें से कई लोग काले छपे शब्दों के अर्थ जानते ही होंगे। लेकिन आइए आपको एक बार फिर से बता देते हैं। ये हाशिए पर दिए जा रह हैं।

आशा है आप अपठित पर आधारित प्रश्नों के उत्तर तलाशने का तरीका जान गए होंगे। यदि फिर भी मुश्किल है तो आइए आपको विस्तार से बताते हैं कि अपठित को पढ़ा कैसे जाना चाहिए। किसी भी गद्य को चाहे वह पठित हो या अपठित पढ़ने का तरीका समान होता है। इसके लिए निम्नलिखित चरणों पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

- पढ़ने की गति
- चिंतन-मनन
- विचारों का बोध
- अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना
- शब्दकोश देखने की आदत डालना

शब्दार्थ
सौभाग्य – किस्मत,
प्रतिष्ठा – मान, सम्मान, इज़्ज़त
विश्व बंधुत्व – दुनिया भर में भाई चारा, किसी प्रकार का भेदभाव या झगड़ा न होना
मानवता – ऐसा व्यवहार जो मनुष्य के हित में हो।

1. पढ़ने की गति

कोई भी पुस्तक पढ़ते समय आप किन बातों का ध्यान रखते हैं? क्या पढ़ते समय बीच-बीच में दूसरे काम भी करते रहते हैं? कुछ सोचते या लोगों से बातें भी करते रहते हैं? अगर पढ़ते समय ऐसा करते हैं तो क्या पढ़ी हुई बातें आप को पूरी तरह याद रह जाती हैं? नहीं न? जी, पढ़ते समय एकाग्रता बहुत ज़रूरी है। अगर आपका ध्यान दूसरी तरफ़ होगा तो पढ़ी हुई चीज़ें ठीक से याद नहीं रह पाएँगी। इसी तरह अगर पढ़ने की आपकी गति ठीक नहीं होगी तो एक ही पाठ को पढ़ने में आपको काफ़ी समय लग जाएगा। इसलिए पढ़ने के लिए ज़रूरी है कि आप तेज़ गति से और पाठ को पूरी तरह समझते हुए पढ़ें। पढ़ते समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना बहुत ज़रूरी है–

- पढ़ते समय पूरा ध्यान पाठ पर केंद्रित हो।
- जल्दी-जल्दी पढ़ें और मन में पढ़ें, बोलकर या देर तक रुक कर नहीं पढ़ें।
- जहाँ भी कोई बात समझ में नहीं आए या लगे कि पीछे पढ़ी हुई कोई बात छूट गई है तो वहीं रुक कर उसे पूरी तरह समझने ही कोशिश करें। उस अंश को बार-बार पढ़ें। पूरी तरह समझ में आने के बाद ही आगे बढ़ें।
- जहाँ आवश्यक हो, और सुविधा उपलब्ध हो, पाठ से संबंधित संदर्भ को भी समझने या दूसरी पुस्तकों, माध्यमों से जानने का प्रयास करें।

2. चिंतन-मनन

कोई भी पाठ आप तभी अच्छी तरह समझ पाते हैं जब उसमें लिखी बातों को समझने के साथ-साथ उस पर चिंतन-मनन करें। आप कुछ पढ़ते होंगे तो उसमें ज़रूर कोई-न-कोई ऐसी बात मिल जाती होगी जो आपके मन में देर तक टिकी रह जाती होगी। उसके बारे में चलते-फिरते सोचते रहते होंगे। उसे अलग-अलग संदर्भों से जोड़ने का प्रयास करते होंगे। उस पर आपके मन में तरह-तरह के सवाल भी उठते होंगे। यही चिंतन-मनन है। अपने भीतर चिंतन-मनन की आदत विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि आप पढ़ी हुई बातों पर तर्क करना सीखें। उस पर जितने भी तरह के सवाल आपके भीतर पैदा हो सकते हैं उनके जवाब तलाशने की कोशिश करें। जैसे जब भी कुछ पढ़ें, आप सोचें कि ऐसा क्यों लिखा गया है? इसका अर्थ क्या है? उस बात की आप के संदर्भ में प्रासंगिकता क्या है? किन परिस्थितियों या स्थितियों में ऐसा लिखा गया है? अगर ऐसा नहीं लिखा जाता तो क्या फ़र्क पड़ता? और अगर ऐसा नहीं लिखा जाना चाहिए तो कैसे और क्या लिखना ज़्यादा उचित होता आदि।

इसके अलावा छपी हुई सामग्री का अर्थ यह नहीं लगा लेना चाहिए कि जो कुछ लिखा है वह सही ही है। बिना अपने तर्कों पर उसे परखे पूरी तरह सही न मान लें। उस पर तरह-तरह से तर्क करें फिर निष्कर्ष निकालें।

इस तरह तर्क करने से आप पाठ को न सिर्फ़ चीज़ों को अच्छी तरह समझ सकेंगे बल्कि वह पाठ आपके मन में काफ़ी समय तक बना रहेगा। उस में कही गई बातों का बोध अच्छी तरह हो सकेगा।

क्रियाकलाप 6.2

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए:

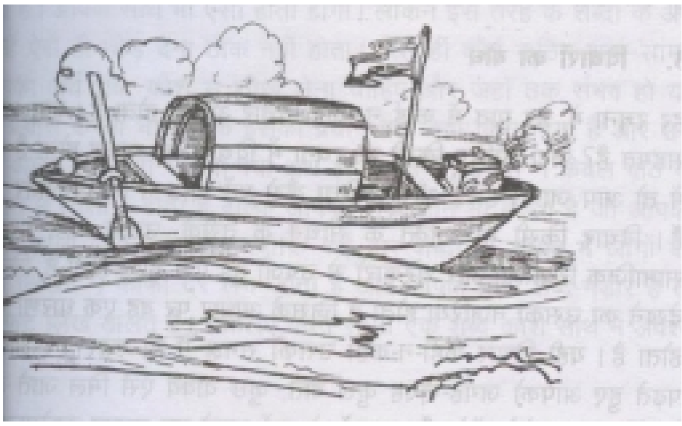

चित्र 6.1

अब इसे किसी कागज़ से ढक दीजिए और फिर निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर दीजिए:

1. क्या चित्र में झंडा था? यदि था, तो वह किस दिशा में फहरा रहा था?

   ....

2. क्या पतवार में हैंडल लगा हुआ था?

   ....

3. क्या वहाँ कोई झरोखा था? यदि हाँ तो वह नाव के किस ओर था?

   ....

आशा है आपने इन सभी सवालों का जवाब दे दिया होगा, लेकिन महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आपने ये जवाब किस आधार पर दिए? क्या आप बता सकते हैं? यहाँ लिखिए:

....

....

अब अपना उत्तर इस व्याख्या से मिलाइए

आमतौर से लोग चित्र की आकृति अपने मन में बना लेते हैं। इसके बाद उसके बारे में प्रश्न पूछे जाने पर उसके संबंधित हिस्से पर ध्यान केंद्रित करते हैं। जैसे कि उपर्युक्त चित्र में झंडे के बारे में पूछे जाने पर आपने नाव के अगले हिस्से पर ध्यान दिया होगा। इसके बाद आपसे नाव के पिछले हिस्से में लगी पतवार के बारे में पूछा गया। अनुसंधान से यह साबित होता है कि ऐसी स्थिति में व्यक्ति समूची नाव की आकृति से

गुजरता हुआ पतवार तक पहुँचता है। यही कारण है कि नाव के पीछे के हिस्से की तुलना में बीच के हिस्से के बारे में प्रश्न का उत्तर देते समय लोग कम समय लगाते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि एक बार जब हम मानसिक आकृति बना लेते हैं, तो हम उस पर उसी तरह नज़रें दौड़ाते हैं, जैसे कि वास्तविक आकृति पर।

3. विचारों का बोध

हर रचना में, हर पाठ में कोई न कोई विचार अवश्य होता है। क्या आप इस बात से सहमत हैं? जरा सोचिए किसी भी रचना में विचारों का महत्त्व होता है। विचार के बारे में तो आप जानते ही हैं और 'कविता कैसे पढ़ें' पाठ में आप विस्तार से पढ़ भी चुके हैं। विचार किसी भी व्यक्ति के सोचने के तरीके, उसके आस-पास के वातावरण, सामाजिक स्थितियों और संस्कारों से उपजी हुई एक द ष्टि होती है, किसी भी चीज को देखने का उसका नज़रिया होता है जिसके आधार पर वह एक धारणा बनाने पर विवश होता है। यही विचार कहीं-न-कहीं उसकी समझ में भी उतर कर आता है। कई बार पढ़ते हुए आपको जगह-जगह कुछ बातें, कुछ वाक्य ऐसे मिल जाते होंगे जिन्हें आप रेखांकित कर लेते होंगे और दूसरों से बातें करते हुए उनका इस्तेमाल करते हैं। जैसे रहीम, कबीर, दादू, रैदास, तुलसी, सूर आदि के दोहों/पदों को ही ले लीजिए। लोग उनका प्रायः बातचीत में इस्तेमाल करते हैं। यानी उनमें कोई-न-कोई विचार ऐसा होता है जो आपके मन को छू जाता है।

पुस्तक पढ़ते समय लेखक या कवि के इन विचारों का बोध भी आवश्यक होता है। विचारों का बोध आपको सिर्फ़ पढ़ लेने से ही नहीं हो पाता। जब आप उन्हें अपने परिवेश, वातावरण और स्थितियों से जोड़ कर देखते हैं, उनसे उनकी तुलना करते हैं, तभी वे ठीक ढंग से समझ में आती हैं। इसके अलावा आपने जीवन में जो कुछ पढ़ा, समझा या सीखा है वे सब भी इन विचारों के बोध में सहायक होते हैं। इसलिए विचारों के बोध के लिए आपको पाठ्य पुस्तकों के अलावा भी बहुत-सी और अलग-अलग विषयों की पुस्तकें पढ़ने की आदत डालना जरूरी है। अपने आस-पास की चीज़ों को देखना, उनके बारे में चिंतन करना, लोगों से विचार-विमर्श करना भी इसके लिए ज़रूरी है। विचारों के बोध के लिए आप में चिंतन-मनन की आदत विकसित होना एक अनिवार्य शर्त है।

4. अंतर्निहित उद्देश्यों को समझना

जिस तरह हर रचना में विचार छिपे होते हैं, उसी तरह हर रचना का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है। लेखक या कवि अपनी रचना के माध्यम से कोई-न-कोई संदेश देना चाहता है, किसी समस्या को उठाने की कोशिश करता है और उस पर पाठक को विचार करने-सोचने को उकसाना चाहता है। क्या आपने ऐसा महसूस किया है? ज़रूर किया होगा। कहने का अर्थ यह है कि किसी भी रचना को पढ़ने का अर्थ यह भी है कि उसके उद्देश्यों को पूरी तरह समझा जाए और ऐसा तभी हो सकता है जब आप पाठ को ठीक से पढ़ेंगे, समझेंगे, उस पर चिंतन-मनन करेंगे और अपनी कल्पना शक्ति के बल पर उसके विविध पक्षों को मन में उतारने की कोशिश करेंगे।

5. शब्दकोश देखने की आदत

कोई भी पुस्तक या पाठ को पढ़ते समय प्रायः ऐसा होता है कि कुछ ऐसे शब्द सामने आते हैं जिसका अर्थ हमें ठीक-ठीक मालूम नहीं होता। प्रायः हम उनके निहितार्थों से काम चला लेते हैं। आपके साथ भी ऐसा होता होगा। लेकिन इस तरह के शब्दों के अर्थ जाने बिना उन्हें ऐसे ही छोड़ देना ठीक नहीं होता। जैसे ही कोई कठिन शब्द सामने आए तुरंत उसका अर्थ शब्द कोश से सीख लेना चाहिए और जहाँ तक संभव हो यह भी जानने का प्रयास करना चाहिए कि इसका प्रयोग वहाँ क्यों किया गया है और उस शब्द के अलग-अलग स्थितियों में क्या-क्या अर्थ हो सकते हैं। इससे न केवल पाठ या चित्र को समझने में आसानी होती है बल्कि आपका शब्द-ज्ञान भी बढ़ता है जो आपको कुछ भी लिखते समय काम आता है। क्योंकि कई बार शब्दों के अभाव में लोगों को किसी बात को लिखने में काफ़ी देर लग जाती है और आपके पास शब्द-भंडार है तो आप उसे फटाफट लिख डालते हैं। इसलिए पढ़ते समय एक शब्द कोश साथ में अवश्य रखना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 6.4

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

घर में पिताजी पाँचों समय नमाज़ पढ़ते, हमें उनके साथ नमाज़ पढ़ना अच्छा लगता। बाद में यह आदत ही बन गई। कभी-कभी मानस भटकता, कभी हमारा ध्यान न टिकता लेकिन पिताजी उस पर ज़ोर देते। मैं सदा से आस्तिक रहा हूँ और मुझे ऐसा लगता है कि आस्था आप में या तो होती है या नहीं होती। और जब यह आप में गहन रूप से होती है तो लगभग जीवन-भर ही सुख और दुख में यह आपका सम्बल होती है। मैं तो यहाँ तक कहूँगा कि भले मैं पाँच समय न करता होऊँ, लेकिन प्रार्थना मेरे रोज़मर्रा के जीवन में लगातार घटित होती है। स्टूडियो में मेरा काम प्रार्थना से शुरू होता है। यह कुछ माँगना नहीं है। कुछ ही क्षण होते हैं, एकाग्रता के कुछ मिनट। कभी कोई पद, कभी कुछ भी नहीं। इससे आशीर्वाद या ग्रेस की प्राप्ति होती है।

मैं किसी भी रचना के पीछे की विचार-प्रक्रिया के महत्त्व को नहीं नकारता। बहुत विचार करना पड़ता है, लेकिन सिर्फ़ विचार से काम नहीं बनता। टेकनीक और माध्यम पर पकड़ काम नहीं आते। मेरा द ढ़ विश्वास है कि साधना और एकाग्रता अपरिहार्य है। चित्रकारी सिर्फ़ विचार-प्रक्रिया के ही द्वारा नहीं होती। चित्रकारी के लिए एकाग्रता बहुत ज़रूरी है। रचना से तादात्म्य बहुत ज़रूरी है। लेकिन तनाव का एक मुकाम ऐसा आता है जब विचार-प्रक्रिया धीमी हो जाती है और सहज-बुद्धि हावी हो जाती है। यह हावी होती ही जाती है और मैं खुद से यह पूछना तक छोड़ देता हूँ कि मैं क्या कर रहा हूँ? बस विचार है और उसे कैनवास पर उतारता मैं। विचार-प्रक्रिया उसका एक हिस्सा भर है। और आप उस मुकाम पर पहुँच जाएँ जिसे मूड, वातावरण

टिप्पणी

कहते हैं (फ्रेंच लोग उसे ग्रेस की स्थिति कहते हैं), जहाँ तो चीज़ें हो ही जाती हैं। मानस प्रत्यक्ष ही सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। मेरा अपना अनुभव इसका प्रमाण है। कभी-कभी ऐसा होता है कि आपके सामने एक खाली जगह भर होती है, और ऐसा लगातार कई दिन तक चलता है। आपको बोध नहीं हो रहा। आप उसे देख ही नहीं पा रहे। आंतरिक द ष्टि विकसित नहीं हो रही, वह मौजूद तक नहीं है। मेरा पूरा विश्वास है कि दैवी शक्तियों का सहयोग न हो तो आप कला का स जन नहीं कर सकते। दरअसल, चित्रकारी मैं नहीं करता। एक कलाकार के लिए दैवी शक्तियों का सहयोग बहुत ज़रूरी है।

अब आप उपरोक्त गद्‌यांश पर आधारित निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. आप जानते हैं बचपन से किसी बात को करते-करते वह आदत में परिवर्तित हो जाती है और फिर यही आदत संस्कार बन जाती है। इस बात के द्वारा लेखक ने अपने किन संस्कारों की चर्चा की है?
2. चित्रकारी के लिए ही नहीं, किसी भी कार्य के लिए एकाग्रता बहुत ज़रूरी है, कैसे?
3. ''जब कोई भी काम मन से और उसमें पूरी तरह डूबकर किया जाए तो वही सच्ची प्रार्थना या पूजा है।'' यह भाव गद्‌यांश की किन पंक्तियों में अभिव्यक्त हुआ है, उन्हें उद्‌ध त कीजिए।
4. लेखक ने दैवी शक्ति के सहयोग की बात कही है, इसका क्या तात्पर्य है?

आइए, अब इन प्रश्नों के उत्तर उत्तरमाला में दिए उत्तरों से मिलान करके देखें।

....

....

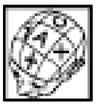

6.6 आपने क्या सीखा

1. सामान्य बोलचाल की भाषा को गद्‌य कहते हैं।
2. फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना के बाद से गद्‌य को और अधिक प्रश्रय मिला। साहित्य के स्तर पर गद्‌य का पहली बार भारतेंदु हरिश्चंद्र के काल में विकास हुआ।
3. गद्‌य में निबंध, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा, संस्मरण, व्यंग्य, संपादकीय आदि विधाओं की रचना होती है। विषय, समय और परिस्थिति के अनुसार इनकी भाषा बदल जाती है।
4. गद्‌य को पढ़ते समय उसके विचार तत्त्व, भाषा तथा शैली पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए।
5. गद्‌य के साहित्यिक रूप को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है।

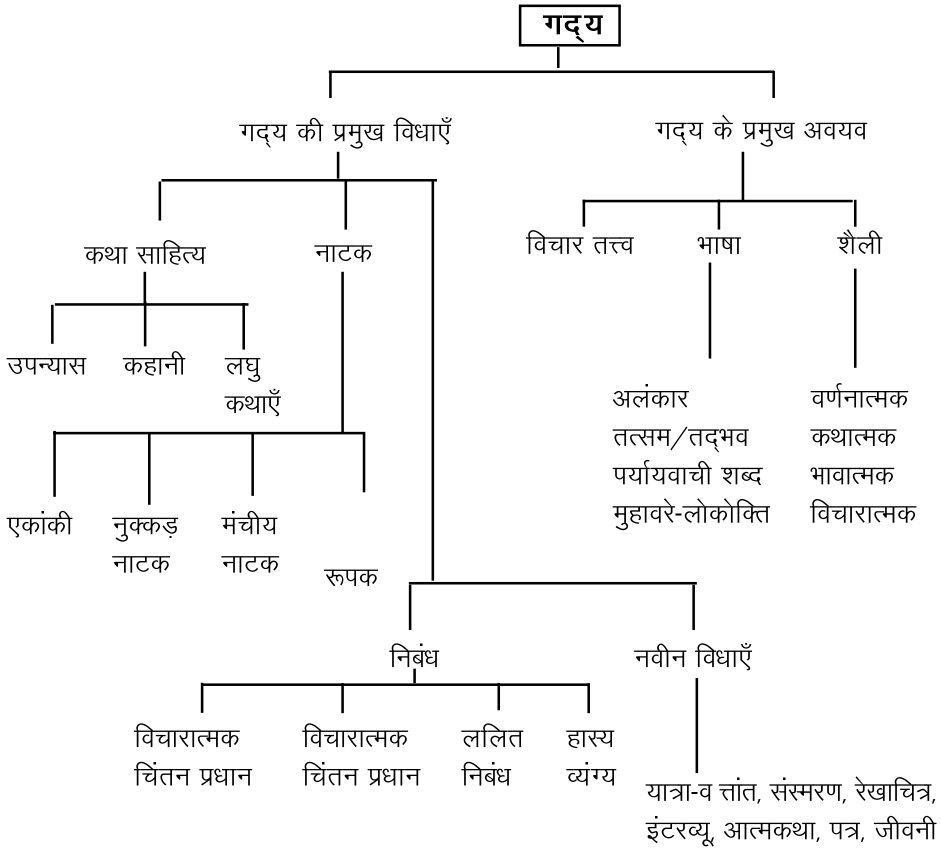

6.7 योग्यता विस्तार

किसी साहित्यिक पत्रिका से कोई एक नवीन विधा में लिखी सामग्री पर संक्षेप में अपने विचार लिखिए।

6.8 पाठांत प्रश्न

1. गद्य की परिभाषा लिखते हुए उसके महत्त्व पर प्रकाश डालिए।
2. गद्य की प्रमुख विधाओं का संक्षिप्त परिचय लिखिए।
3. गद्य की किन्हीं तीन शैलियों का वर्णन कीजिए।
4. गद्य के विकास पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
5. कल्पना कीजिए आपका प्रिय मित्र पहली बार आपसे सिगरेट पीने के लिए कहता है और तर्क देता है कि एक बार पीने में कोई हर्ज़ नहीं है। देखना तो चाहिए कैसा लगता है। अब आप अंतर्द्वंद्व की स्थिति में हैं। क्या करें और क्या न करें। आपके मन में अलग-अलग विचार उठते हैं–

   (क) प्रिय मित्र की बात माननी चाहिए। एक बार सिगरेट पीने से आदत थोड़े ही बन जाएगी। 'ट्राई' करने में हर्ज़ ही क्या है।....

टिप्पणी

6. किसी नई सामग्री को पढ़कर समझने के लिए पढ़ने की गति, चिंतन-मनन, विचारों का बोध, सामग्री में अंतर्निहित उद्देश्य को समझना तथा किसी नए शब्द के अर्थ को जानने के लिए शब्दकोश देखना बहुत ही आवश्यक है।

(ख) किसी ने देख लिया तो ...? घर पर किसी को पता लग गया...?

(ग) यदि इसकी आदत पड़ गई तो कोई बीमारी भी हो सकती है...।

(घ) प्रिय मित्र का कहना नहीं माना तो दोस्ती टूट जाएगी। वह क्या सोचेगा? डरता है?

(ङ) कुछ भी हो मैं तो सिगरेट नहीं पीऊँगा। उसे भी समझा दूँगा। जो काम छिपकर करना पड़े वह गलत है, अतः मैं नहीं करूँगा।

- उपर्युक्त स्थितियों में से आप किसका चयन करेंगे और क्यों?
- किनका चयन नहीं करेंगे और क्यों?

तर्क देकर अपने विचार प्रस्तुत कीजिए।

6. (क) निम्नलिखित शब्दों को कोश-क्रम से लगाइए–

• विश्वबंधुत्व	• अंबु	• मानवता	• अंबुज
• प्रतिष्ठा	• अंबर	• पराधीन	• आभार
• सौभाग्य	• म त्यु	• संक्षिप्त	• मनका
• शैली	• मानसिक	• परिभाषा	• मौलिक
• पंकज	• व्यवहार	• विधाओं	• नागफनी
• बेल	• पीपल	• विकास	• गुलमोहर
• विकल	• उज्ज्वल	• अंजु	• निजात
• अनार	• न्योछावर	• त्योहार	• दीवाली

(ख) किसी अच्छे हिंदी के शब्दकोश में उपर्युक्तऽशब्दों को ढूँढ़िए तथा उनके बारे में अतिरिक्त जानकारी हासिल कीजिए। बताइए अर्थ के अतिरिक्त आपने और क्या-क्या पाया?

7. निम्नलिखित लेख पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

आत्महत्या कोई भी लड़की अकारण नहीं करती। आत्महत्या के पीछे ठोस कारण होता है। सबसे बड़ा कारण होता है व्यक्ति का अपने आपको असहाय, लाचार, घिरा हुआ, सामर्थ्यविहीन और अकेला पाना। इन तत्त्वों की उपस्थिति कहीं-न-कहीं हर व्यक्ति के इर्द-गिर्द होती है मगर हर व्यक्ति आत्महत्या नहीं करता। कोई इस घिराव से स्वयंमेव निकल जाता है कोई सायास निकलता है, किसी को समय निकाल देता है। वस्तुतः यह असहायता एक मानसिक स्थिति होती है, जो व्यक्ति-व्यक्ति में भिन्न होती है। फिर भी यह पूरी तरह वैयक्तिक नहीं होती। इसकी जड़ें समाज में होती हैं। समाज के रीति-रिवाज़ों, नियमों-व्यवस्थाओं और उसकी प्रतिक्रियाओं में होती हैं।

कुछ लड़कों ने प्रेम में असफल होकर आत्महत्या की। 'प्रेम में असफल होकर आत्महत्या करना' अब एक निहायत ही चालू मुहावरा है। इसे अब एक स्वयंसिद्ध सूत्र के रूप में स्वीकार कर लिया गया है, इसमें से अब कोई बड़ी सनसनी जन्म नहीं लेती। प्रेमिका को प्रेमी ने ठुकरा दिया तो प्रेमिका आत्महत्या कर लेती है। प्रेमी और प्रेमिका दोनों एक-दूसरे को नहीं ठुकराते, मगर उनके परिवार वाले उनके प्रेम को स्वीकार नहीं करते इसलिए उनमें से कोई भी आत्महत्या कर लेता है अथवा दोनों ही आत्महत्या कर सकते हैं, कोई भी कारण आत्महत्या में घटित हो सकता है। और ये कारण स्थूल रूप में इतने अधिक सामान्यीकृत हैं कि प्रायः इनके भीतर झाँकने की कोशिश तक नहीं होती।

आखिर एक लड़का प्रेम करने वाली लड़की को धोखा क्यों देता है? एक लड़की क्यों अपने प्रेमी को छोड़ देती है? अपने लड़के या लड़की के प्रेम के विरोध में परिवार क्यों खड़ा हो जाता है? जब प्रेमी की आत्महत्या तक ले जाने वाली किसी घटना के सापेक्ष इन सवालों को खड़ा करते हैं तो बहुत-सी प्रचलित सामाजिक प्रव त्तियों से मुठभेड़ होने लगती है। जिस लड़की ने बहुमंजली इमारत से कूदकर आत्महत्या की वह आखिरी समय तक मोबाइल फोन के माध्यम से अपने प्रेमी के संपर्क में थी। लेकिन यह प्रेमी उसको यह अतिवादी कदम उठाने से रोक नहीं सका। अपने आखिरी समय तक वह अपने परिवार के संपर्क में थी। लेकिन परिवार उसकी मनःस्थिति को नहीं भाँप सका। परिवार के सदस्य यह अनुमान नहीं लगा सके कि लड़की आत्महत्या कर सकती है। क्यों हुआ ऐसा?

इसमें संदेह नहीं कि प्रेम एक तीव्र आवेग वाला भाव है। इसका आवेग व्यक्ति को सिर्फ एक प्रवाह में बहने को बाध्य कर देता है। इसकी दिशा इतनी आग्रहपूर्ण होती है कि या तो हमें वह कर लेने दो या हमें वह दे दो जो हम चाहते हैं अन्यथा हम अपने जीवन को पूरी तरह निरर्थक समझेंगे और इसे समाप्त करने से भी नहीं चूकेंगे। हमारे प्रेमी या प्रेमिका को हक नहीं कि वह हमें ठुकराए या हमें छोड़कर किसी और के पास जाएँ। हमारे माँ-बाप को कोई अधिकार नहीं कि वे हमारे प्रेम को परवान चढ़ने से रोकें। लेकिन प्रेम के मामले में प्रायः ऐसा ही होता है। और उसकी प्रजातियाँ भी ऐसी होती हैं।

दरअसल, आज युवाओं की प्रेम संस्कृति बदल गई है। एकनिष्ठता का मूल्य सूचकांक इस दौर में बहुत नीचे आ गया है। एक संबंध के दौरान अगर दूसरा कोई आकर्षक अवसर सामने आ जाता है तो लड़के-लड़कियों को अपने प्रेम को व्यक्तियांतरित करने में कोई अपराध बोध नहीं सालता। और ऐसे में जो लड़का या लड़की अधिक ईमानदारी या अधिक एकनिष्ठता के आग्रह से ग्रसित होते हैं वे अपने आपको अकेला, असहाय या नकारा मानने लगते हैं और कभी-कभी अतिवादी कदम उठा जाते हैं। वे यह स्वीकार नहीं कर पाते कि उनके साथ जो हो रहा है वह एक संभव स्थिति है, और उनके लिए अवसर समाप्त नहीं हुए हैं। वे तात्कालिक स्थिति को ही अंतिम और निर्णायक मान लेते हैं, और उसी के प्रभाव में कदम उठा लेते हैं। और दूसरी बात यह कि उस समय उनमें यह समझने की क्षमता नहीं होती कि उनका प्रेम संबंध भी एक सामाजिक-सांस्कृतिक-आर्थिक-धार्मिक तत्त्वों के पारस्परिक संबंधों की उपज है, जिसकी परिपाटी इनकी विकृतियों और विशिष्टताओं के अनुरूप कुछ भी हो सकती है।

इसी तरह माँ-बाप भी सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्यों के बदलाव को महसूस करते हुए भी अपने आपको पारंपरिक सोच से अलग नहीं कर पाते। विशेषकर परिवार की लड़की का प्रेम प्रसंग उन्हें आज भी पारिवारिक मर्यादा का उल्लंघन और अवैध प्रतीत होता है। परिणामतः जब कोई ऐसा प्रेम-प्रसंग उनके सामने उजागर होता है तो लड़की उनके लिए खलनायिका बन जाती है और वे उससे उसी तरह से व्यवहार करने लगते हैं। कुल मिलाकर वर्तमान स्थितियों के प्रति समझदारी के प्रसार की अधिक ज़रूरत है ताकि दुर्घटनाओं से बचा जा सके।

(i) भावावेश में उठाए गए कदम मनुष्य की कमज़ोरी के परिचायक हैं, उनसे कैसे बचा जा सकता है?

(ii) आत्महत्या करने का सबसे बड़ा कारण लेखक क्या मानता है और क्यों?

(iii) लेखक असहायता की जड़ें समाज में, समाज के रीतिरिवाज़ों, नियमों, व्यवस्थाओं और उसकी प्रतिक्रियाओं में मानता है क्यों? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(iv) 'प्रेम एक तीव्र आवेग वाला भाव है।' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

(v) यदि आप उस प्रेमी के स्थान पर होते तो क्या आप आत्महत्या जैसा अतिवादी कदम उठाने की कोशिश करते? तर्क सहित उत्तर दीजिए।

(vi) आत्महत्या जैसा अतिवादी कदम उठाने का प्रमुख कारण लेखक क्या मानता है?

(vii) यदि आपके घर में आपकी बहन या बेटी प्रेम के दौर से गुजर रही हो तो आप उसका ध्यान किस प्रकार रखेंगे?

(viii) लेखक प्रेम संबंध को एक सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और धार्मिक तत्त्वों के पारस्परिक संबंधों की उपज क्यों मानता है? अपने विचार अभिव्यक्त कीजिए।

6.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्न के उत्तर

6.1	1. (क)	2. (ग)	3. (घ)	4. (ख)	5. (ग)
6.2	2. (ख)	2. (क)	3. (ग)	4. (ख)	
6.3	1. (ख)	2. (क)	3. (ख)	4. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) √	

6.4 1. लेखक को बचपन में नमाज़ पढ़ने की प्रेरणा अपने पिता से मिली। धीरे-धीरे उसकी आदत बन गई और बड़े होकर यही आदत संस्कार बन गई। वह अपने प्रत्येक कार्य को प्रार्थना के रूप में करने लगा।

2. किसी भी कार्य को करने के लिए उस पर विचार करना टेकनीक या माध्यम महत्त्व तो रखते हैं परंतु एकाग्रता इन सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। एकाग्र होकर किए गए कार्य में अन्य बातें, नगण्य हो जाती हैं। एकाग्रता से तो कार्य जैसे अपने आप होता जाता है।

3. ''मैं तो यहाँ तक कहूँगा............. प्रार्थना से शुरू होता है।

4. जब हम किसी भी कार्य को तल्लीनता और एकनिष्ठता से करते हैं और पूरी तरह से उसमें भीग जाते हैं, तब ऐसा एहसास होता है कि दैवी शक्ति का सहयोग भी मिल रहा है। उस समय हमारे लिए कर्म ही प्रधान होता है। निःस्वार्थ रूप से किया गया कार्य एक प्रकार की आत्मतुष्टि देता है, हम पर ईश्वर की कृपा है।

301hi07

7

पेड़ और एक था ठूँठ!

मान लीजिए आपके चार दोस्तों ने आपके साथ सिनेमा देखने जाने का प्रोग्राम बना लिया। सभी लोग सिनेमा देखना चाहते हैं पर आपका मन नाटक देखने का कर रहा हो, तो ऐसी स्थिति में आप क्या करेंगे?

(क) अपने मन की मानेंगे और मित्रों के साथ सिनेमा देखने नहीं जाएँगे।

(ख) अपने मित्रों को यह तर्क देकर नाटक देखने जाने के लिए राज़ी कर लेंगे कि सिनेमा के कई शो और होंगे, किंतु नाटक का शो तो आज ही होगा।

(ग) मित्रों के प्रस्ताव का सम्मान करते हुए सिनेमा जाने के लिए राज़ी हो जाएँगे।

(घ) सभी से लड़ेंगे, खुद कहीं नहीं जाएँगे और न किसी को जाने देंगे।

(ङ) कोई अन्य उत्तर

अपना सही उत्तर यहाँ लिखिए—

....

....

आइए, प्रस्तुत पाठ के माध्यम से हम व्यक्ति के विचारों की द ढ़ता और लचीलेपन के बारे में बातचीत करते हैं और देखते हैं कि लेखक ने जीवन-व्यवहार के सत्य को किस प्रकार स्पष्ट किया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- जीवन में समझौता करने की स्थितियों के गुण-दोष बता सकेंगे;
- जीवन जीने की उपयुक्त शैली का उल्लेख कर सकेंगे;
- पाठ में आए सूत्र-वाक्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- सरल बोलचाल की भाषा में गंभीर विषय प्रस्तुत करने की शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;

- उदाहरण शैली का प्रयोग कर सकेंगे;
- जीवन की गुरु गंभीर और दार्शनिक स्थितियों को सरल भाषा में उदाहरण शैली का प्रयोग करते हुए बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

चित्र 7.1

1. आपको चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है?

   ....

2. नदी की क्या विशेषता है?

   ....

3. पहाड़ की क्या विशेषता है?

   ....

4. दोनों (नदी और पहाड़) की प्रकृति में क्या अंतर है?

   ....

7.1 मूलपाठ

आइए, एक बार पाठ को पढ़ लेते हैं।

एक था पेड़ और एक था ठूँठ !

जिस मकान में मैं ठहरा, उसकी खिड़की के सामने ही खड़ा था एक पूरा, पनपा बाँझ का पहाड़ी पेड़। पलंग पर लेटे-लेटे वह यों दीखता कि जैसे कुशल-समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।

टिप्पणी

एक दिन उसे देखते-देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा-का-पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा, हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के हलका पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज़ में थी, अपने झोकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यह क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक-झूम में रस लेता रहा। पड़े-पड़े वह पेड़ पूरा न दीखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर था कि हवा कितनी भी तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है – हिलती नहीं है।

यहीं बैठे, मेरा ध्यान एक दूसरे पेड़ पर गया, जो इस पेड़ से काफ़ी निचाई में था। पेड़ का ठूँठ, सूखा व क्ष और सूखा व क्ष माने निर्जीव-मुरदा व क्ष। सोचा, वह व क्ष का कंकाल है; जैसा एक दिन सभी को होना है! अब मैं कभी इस हरे-भरे पेड़ की ओर देखता, कभी उस सूखे ठूँठ की तरफ़, यों ही देखते-भालते मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि वह धीमे चले या वेग से, यह ठूँठ न हिलता है, न झुकता है।

न हिलना, न झुकना; मन में यह दो शब्द आए और मैंने आप-ही आप इन्हें अपने में दोहराया—न हिलना, न झुकना।

दूर अंतर में कुछ स्पर्श हुआ, पर वह स्पर्श सूक्ष्म था यों ही संकेत-सा। शब्द चक्कर काटते रहे न हिलना, न झुकना और तब आया वह वाक्य—न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का, द ढ़ता का चिह्न है और वह वीर पुरुष है, जो न हिलता है, न झुकता है।

तभी मैंने फिर देखा उस ठूँठ की ओर। वह न हिल रहा था, न झुक रहा था! मन में अचानक प्रश्न आया—न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है, पर उस ठूँठ में जीवन कहाँ है? यह तो मुरदा पेड़ है!

अब मेरे सामने एक विचित्र द श्य था कि जो जीवित था, वह हिल रहा था, और जो म तक था वह न हिल रहा था, न झुक रहा था। तो न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न हुआ या म त्यु की जड़ता का?

अजीब उलझन थी, पर समाधान क्या था? मैं दोनों को देख रहा था, देखता रहा और तब मेरे मन में आया कि जो परिस्थितियों के अनुसार हिलता, झुकता नहीं, वह वीर नहीं, जड़ है; क्योंकि हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है।

हिलना और झुकना; अर्थात् परिस्थितियों से समझौता। जिस जीवन में समझौता नहीं, समन्वय नहीं, सामंजस्य नहीं, वह जीवन कहाँ है? वह तो जीवन की जड़ता है; जैसे यह ठूँठ और जैसे यह पहाड़ का शिखर।

शब्दार्थ

पनपा – कोंपल फूटना, नए पत्ते निकलना

फुंगल – फुनगी

ठूँठ – सूखा पेड़

मुझे ध्यान आया कि जीते-जागते जीवन में भी एक ऐसी मनोदशा आती है, जब मनुष्य हिलने और झुकने से इनकार कर देता है। अतीत में रावण और हिरण्यकश्यप इस दशा के प्रतीक थे तो इस युग में हिटलर और स्टॉलिन, जो केवल एक ही मत को सही मानते रहे और वह स्वयं उनका मत था। आज की भाषा में इसी का नाम है डिक्टेटरी-अधिनायकता।

विश्व की भाषा है – दे, ले।
विश्व की जीवन-प्रणाली है – कह, सुन।
विश्व की यात्रा का पथ है – मान, मना।
इन तीनों का समन्वय है – हिलना-झुकना और समझौता-समन्वय।

जिसमें यह नहीं है, वह जड़ है, भले ही वह उस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह ज़िद्दी।

मेरी खिड़की के सामने खड़ा हिल रहा था बाँझ का विशाल पेड़ और दूर दिख रहा था वह ठूँठ। समय की बात; तभी पास के घर से निकला एक मनुष्य और वह अपनी छोटी कुल्हाड़ी से उस ठूँठ की एक छोटी टहनी काटने लगा। सामने ही दिख रही थी–सड़क, जिस पर अपनी कुदाल से काम कर रहे थे कुछ मज़दूर।

कुल्हाड़ी और कुदाल; कुदाल और कुल्हाड़ी – मैंने बार-बार इन शब्दों को दोहराया और तब आया मेरे मन में यह वाक्य–विश्व की भाषा है–दे, ले; विश्व की जीवन-प्रणाली है–कह, सुन; विश्व की यात्रा का पथ है–मान, मना; अर्थात् हिल भी और झुक भी, पर जो इन्हें भूलकर जड़ हो जाता है, वह ठूँठ हो, पर्वत का शिखर हो, अहंकारी मानव हो, विश्व उससे जिस भाषा में बात करता है उसी के प्रतिनिधि हैं ये कुल्हाड़ी-कुदाल।

साफ़-साफ़ यों कि जीवन में दो भी, लो भी, कहो भी, सुनो भी, मानो भी, मनाओ भी; और यह सब नहीं, तो तैयार रहो कि तुम काट डाले जाओ, खोद डाले जाओ, पीस डाले जाओ!

मैं खिड़की से उठकर अपने पलंग पर आ पड़ा। बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था, झूम रहा था, पर तभी मेरे मन में उठा एक प्रश्न – तो क्या जीवन की चरितार्थता बस यही है कि जीवन में हवा का झोंका आया और हम हिल गए? जीवन में संघर्ष का झटका आया और हम झुक गए? साफ़-साफ़ यों कि यहाँ-वहाँ हिलते-झुकते रहना ही महत्त्वपूर्ण है और जीवन की स्थिरता-द ढ़ता, जीवन के नकली सत्य ही हैं?

प्रश्न क्या है, कम्बख्त बिजली की तेज़ शॉक है यह, जो यों धकियाता है कि एक बार तो जड़ से ऊपर तक सब पाया-संजोया अस्त-व्यस्त हो उठे। सोचा – नहीं जी, यह हिलना और झुकना जीवन की कृतार्थता नहीं, अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि विवशता है। जीवन की वास्तविक कृतार्थता तो न हिलना, न झुकना ही है, यानी द ढ़ रहना ही है– ''मरियम सो मरियम, पै टरियम नहीं।''

मैं अपने पलंग पर पड़ा देखता रहा कि बाँझ का पेड़ झुक रहा है, झूम रहा है, हिल रहा है और दूर पर खड़ा ठूँठ न हिलता है, न झुकता है। जीवन है व क्ष में, जो जीवन की

शब्दार्थ

जड़ता – स्थिरता, जिसमें कोई हरकत न हो
समाधान – हल
समन्वय – विरोधी चीजों को मिलाना दोनों में तालमेल बिठाना।
सामंजस्य – तालमेल बिठाना

टिप्पणी

कृतार्थता-द ढ़ता से हीन है और वह द ढ़ता है ठूँठ में, जो जीवन से हीन है; अजीब उलझन है यह!

तभी हवा का एक तेज़ झोंका आया और बाँझ हिल उठा। मेरी द ष्टि उसकी झूमती देह-यष्टि के साथ रपटी-रपटती उसकी जड़ तक चली गई और तब मैंने फिर देखा कि हवा का झोंका आता है तो टहनियाँ हिलती हैं, तना भी झूमता है, पर अपनी जगह जमी रहती है उसकी जड़। हवा का झोंक हलका हो या तेज़, वह न झुकती है, न झूमती है।

अब स्थिति यह कि कभी मैं देख रहा हूँ स्थिर जड़ को और कभी हिलते-झूमते ऊपरी भाग को। लग रहा है कि कोई बात मन में उठ रही है और वह उलझन को सुलझाने वाली है, पर वह बात क्या है? बात मन की तह से ऊपर आ रही है – ऊपर आ गयी है।

बात यह है कि हमारा जीवन भी इस व क्ष की तरह होना चाहिए कि उसका कुछ भाग हिलने-झुकने वाला हो और कुछ भाग स्थिर रहने वाला, यह जीवन की पूर्ण कृतार्थता है।

शब्दार्थ

चरितार्थ – घटित होना
कृतार्थ – किसी पर उपकार करना
देह-यष्टि – शारीरिक सौष्ठव
रपटी-रपटती – फिसलती हुई
अड़ियल – ज़िद्दी
औचित्य – जो उचित हो, ठीक हो
जीवंत – जीवन युक्त

बात अपने में पूर्ण है, पर ज़रा स्पष्टता चाहती है और वह स्पष्टता यह है कि हम जीवन के विस्त त व्यवहार में हिलते-झुकते रहें, समन्वयवादी रहें, पर सत्य के सिद्धांत के प्रश्न पर हम स्थिर रहें, द ढ़ रहें और टूट भले ही जाएँ, पर हिलें नहीं, समझौता करें नहीं।

जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत, तो आत्मा को हिलना-झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना-झुकना ही है; नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह, जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है—न हिलता है, न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों। हमारे पैरों में जीवन के मोर्चे पर डटे रहने की भी शक्ति हो और स्वयं मुड़कर हमें उठने-बैठने-लेटने में मदद देने की भी।

संक्षेप में जीवन की कृतार्थता यह है कि वह द ढ़ हो, पर अड़ियल न हो।

द ढ़, जो औचित्य के लिए, सत्य के लिए टूट जाता है, वह हिलता और झुकता नहीं।

अड़ियल, जो औचित्य और अनौचित्य, समय-असमय का विचार किए बिना ही अड़ जाता है और टूट तो जाता है, पर हिलता-झुकता नहीं।

दो टूक बात यों कि जीवन वह है, जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी, पर ठूँठ वह है, जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता।

हम द ढ़ हों, जड़ नहीं।

मैंने देखा, बाँझ का पेड़ अब भी हिल रहा था, झुक रहा था और ठूँठ अनझुका, अनहिला, ज्यों का त्यों खड़ा था।

–कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर

टिप्पणी

7.2 बोध प्रश्न

1. लेखक कहाँ ठहरा ?

    (क) होटल में | (ग) महल में
    (ख) मकान में | (घ) झोंपड़ी में

2. खिड़की से लेखक को सबसे पहले क्या दिखाई दिया?

    (क) सरसों के झाड़ | (ग) सुंदर जानी पहचानी लड़की
    (ख) बाँझ का पेड़ | (घ) बर्फीली पहाड़ी

3. बाँझ का झूमता हुआ पेड़ प्रतीक है–

    (क) हमेशा खुश रहने का। | (ख) हमेशा परेशान रहने का।
    (ग) आदर्शों पर डटे रहने का। | (घ) स्थितियों से समझौता करने का।

4. विचारों के क्रम में अचानक लेखक का ध्यान गया–

    (क) गहरी घाटी की ओर। | (ग) ठूँठ की ओर।
    (ख) पहाड़ की चोटी की ओर। | (घ) सुंदर भवन की ओर।

5. सूखा व क्ष देखकर लेखक को लगा जैसे कोई–

    (क) गरीब आदमी खड़ा हो। | (ग) सुंदर कलाकृति हो।
    (ख) कोई बहुत दिनों का प्यासा हो। | (घ) पेड़ का कंकाल हो।

6. विश्व की भाषा है –

    (क) न दे, न ले | (ग) दे, न ले
    (ख) दे, ले | (घ) न दे, ले

7. विश्व की यात्रा का पथ है।

    (क) मान, मना | (ग) मान, न मना
    (ख) न मान, न मना | (घ) मना, न मान

8. ठूँठ का पेड़ प्रतीक है–

    (क) जड़ता का | (ग) निर्जीवता का
    (ख) द ढ़ता का | (घ) स्थिरता का

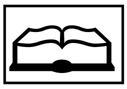

7.3 आइए समझें

आपको निबंध कैसा लगा? उस पर आधारित प्रश्नों के उत्तर भी आपने ढूँढ़ लिए हैं न! यदि आप उन्हें पूरा-पूरा हल कर लेते हैं, तो हम आगे बढ़ते हैं। अन्यथा एक बार और ध्यान से पूरा पाठ पढ़कर बोध प्रश्न हल कीजिए।

आइए, अब हम पाठ को विस्तार से समझते हैं। आप जानते ही हैं कि आमतौर से निबंध को तीन हिस्सों में लिखा जाता है। पहला होता है–प्रस्तावना, दूसरा विषय-वस्तु और तीसरा होता है–उपसंहार। आइए, हम देखें कि ''एक था.......'' में ये तीन अंग किस तरह प्रस्तुत किए गए हैं।

7.3.1 प्रस्तावना

इस निबंध में लेखक ने एक रमणीक पहाड़ी स्थल का ज़िक्र किया है। लेखक वहाँ एक मकान में ठहरता है और खिड़की से वह एक बाँझ के पेड़ को बड़े ध्यान से देखता है, फिर शुरू होता है उसके विचारों का सिलसिला। ये विचार एक-एक कर प्रश्नों के रूप में उसके सामने आते-जाते हैं और वह उनका उत्तर ढूँढ़ता चलता है।

बाँझ के पेड़ को देखकर सबसे पहले लेखक को महसूस होता है जैसे उसका कोई दोस्त सामने आकर खड़ा हो गया है और उसके हाल-चाल पूछ रहा है। जैसे ही हवा का तेज़ झोंका आता है, पेड़ झूमने लगता है। अब लेखक को पेड़ में और रस आने लगता है। तभी अचानक लेखक का ध्यान दूर निचाई पर दूसरे पेड़ की ओर जाता है, जो बिल्कुल सूख चुका है, मर चुका है, ठूँठ बन चुका है। उसमें अब जीवन शेष नहीं है।

ठूँठ मानो पेड़ का कंकाल है, जैसा कि एक न एक दिन हम सबको होना है। लेखक दोनों पेड़ों की तुलना करता है और पाता है कि तेज़ हवा के झोंके से हरा-भरा पेड़ तो खूब झूमता है, पर ठूँठ वैसे-का-वैसा ही खड़ा रहता है। उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। लेखक सोचता है कि 'न हिलना न झुकना' तो वीरों की द ढ़ता की निशानी है। पर यह ठूँठ तो निर्जीव है जिसमें जीवन ही नहीं, वह वीर और द ढ़ कैसा! इसी प्रकार के तर्क-जाल में फँसते हुए लेखक सोचने लगता है कि हरे-भरे पेड़ की तरह, जिसमें जीवन है उसे कठिन परिस्थितियाँ आने पर उनका सामना करना चाहिए। उनसे समझौता करते रहना चाहिए। पर यह तो कोई बात नहीं हुई कि कोई भी समस्या आई और तुरंत समझौता कर लिया। यहाँ लेखक रावण और हिरण्यकश्यप जैसे पौराणिक पात्रों का स्मरण करता है। साथ ही वर्तमान काल के हिटलर और स्टॉलिन का भी। क्या आप बता सकते हैं कि रावण और हिरण्यकश्यप, हिटलर और स्टॉलिन के नाम लेखक ने यहाँ क्यों लिए हैं, जी हाँ! उनके ज़िद्दीपन के कारण, वे अड़ियल थे। उन्होंने सही बात मानने से, सही राह पर चलने से इनकार कर दिया था और इसका परिणाम उन्हें क्या भुगतान पड़ा? क्या आप बता सकते हैं? जी हाँ! उन्हें जीवन में हार माननी पड़ी।

पाठगत प्रश्न 7.1

1. लेखक को पेड़ और ठूँठ में क्या अंतर दिखाई दिया
   (क) एक व क्ष झूमता है, दूसरा स्थिर है।
   (ख) एक खुश है, दूसरा दुःखी।
   (ग) एक सुंदर है, दूसरा कुरूप।
   (घ) दोनों में कोई अंतर नहीं।

2. जीवन का अर्थ है।
   (क) न हिलना, न झुकना।
   (ख) हिलना-झुकना।
   (ग) समस्याओं से लड़ते रहना।
   (घ) सदैव प्रसन्न रहना।
3. मनुष्य हिलने और झुकने से कब इनकार करता है–
   (क) ज़िद्दीपन के कारण
   (ख) असहयोग के कारण
   (ग) बेवकूफ़ी के कारण
   (घ) बुद्धिमत्ता के कारण
4. लेखक ने इस निबंध में हिटलर और स्टॉलिन का उदाहरण किस रूप में दिया है?
5. बाँझ के पेड़ को देखकर लेखक सबसे पहले क्या महसूस करता है?

7.3.2 विषय-वस्तु

इस चरण में लेखक ने व्यावहारिक अथवा दुनियादारी के चलन की चर्चा की है। विश्व की भाषा के बारे में उन्होंने बताया है कि आप दूसरों को कुछ न कुछ दें और उनसे अपने काम की चीज़ें लें। लेखक ने जीवन जीने की पद्धति को कहा–कह, सुन। यानी यदि सलीके से जीवन व्यतीत करना है तो अपनी बात को दूसरों तक पहुँचाना होगा और दूसरों की बातों को ध्यानपूर्वक सुनना होगा। यदि विश्व की यात्रा पूर्ण करनी है, तो मान–मना के रास्ते पर चलना होगा। अर्थात् दूसरों की बात मान जाओ या फिर दूसरों को अपनी बात के लिए मना लो, सहमत कर लो। यदि इन तीनों का मिला-जुला रूप आपके व्यवहार में उपस्थित है, तो आप एक हिलते-डुलते, हरे-भरे व क्ष के समान जीवन में परिस्थितियों से, समस्याओं से समझौता कर सकते हैं अन्यथा आपमें और उस मरे हुए सूखे व क्ष के ठूँठ में कोई अंतर नहीं है। ऐसे व्यक्ति जो निर्जीव, दूसरे व क्ष के समान कंकाल और रावण के समान ज़िद्दी होते हैं, न किसी को कुछ देते हैं न किसी से कुछ लेते हैं, न किसी से कुछ कहते हैं न किसी की सुनते हैं, न किसी की मानते हैं न किसी को मनाते हैं। सिर्फ़ अपने निर्णय को स्वीकार करते हैं, अपनी चलाते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन जीते हुए भी सूखे ठूँठ के समान होते हैं। ऐसे व्यक्तियों का सिर्फ़ एक ही इलाज होता है – कुल्हाड़ी और कुदाल। कुल्हाड़ी का कार्य है– किसी भी अंश को काटकर फेंक देना। कुदाल का कार्य है–उलट-पलट देना अर्थात् जो सामने है उसे नकार देना। ऐसे व्यक्तियों को नकार दिया जाता है या फिर काट कर अलग कर दिया जाता है, अस्वीकार कर दिया जाता है। जो हिल नहीं सकते, झुक नहीं सकते, सामंजस्य नहीं कर सकते, परिस्थितियों से समझौता नहीं कर सकते, ऐसे अहंकारी का प थ्वी पर क्या काम!

पाठगत प्रश्न 7.2

1. 'जड़' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
   (क) जीवन की सार्थकता
   (ख) घ णा और द्वेषभाव
   (ग) कुल्हाड़ी और कुदाल
   (घ) पर्वत का शिखर

टिप्पणी

2. 'डिक्टेटरी' – 'अधिनायकता' का तात्पर्य है–
   (क) दूसरों पर शासन करना (ग) अपने को ही सही मानना
   (ख) अपना प्रभुत्व बनाए रखना (घ) अपना अधिकार न छोड़ना

3. अहंकारी मानव से दुनिया किस भाषा में बात करती है।
   (क) ले, दे (ग) कुल्हाड़ी और कुदाल
   (ख) मान, मना (घ) न कह, न सुन

4. इस निबंध में 'व क्ष का ठूँठ' किसका प्रतीक है?

5. कुल्हाड़ी का काम क्या है?

7.3.3 उपसंहार

अंतिम चरण में लेखक के विचारों का क्रम कुछ इस प्रकार आगे बढ़ता है कि किसी एक निष्कर्ष पर पहुँचे। अब उसका सोचना यह है कि क्या हरे-भरे पेड़ की तरह कोई भी हवा का झोंका आए यानी छोटे या बड़े कष्ट आएँ और व्यक्ति हार मान ले? यह तो ठीक नहीं! इस विचार के आते ही लेखक को एक धक्का-सा लगता है। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि परेशानियों से समझौता करो, वह भी एक सीमा तक अर्थात् जहाँ तक झुक सकते हो झुको पर इतना भी नहीं कि टूट जाओ। परंतु उसके साथ अपने आदर्शों पर द ढ़ रहो, अपने सिद्धांतों से मत हिलो, जैसे व्यक्ति का शरीर बदलता रहता है पर आत्मा अमर होती है। ठीक उसी प्रकार जीवित व्यक्ति वही है जो परिस्थितियों को समझे और उसके अनुसार अपने को ढाले। कहा भी गया है ''जैसी चले बयार पीठि तब तैसी दीजे''। जहाँ जितना झुकना चाहिए वहाँ उतना झुको जहाँ अपने आदर्शों पर द ढ़ रहना चाहिए वहाँ द ढ़ रहो। सदैव समय का ध्यान रखते हुए समुचित स्थान पर विवेकपूर्ण निर्णय लो। इन बातों का जो ध्यान नहीं रखता वह अड़ियल कहलाता है, पेड़ का ठूँठ कहलाता है, निर्जीव जड़ कहलाता है। उसमें जीवन की द ढ़ता नहीं होती है।

हमारी यह जीवन-द ढ़ता ही हमारी पहचान बनाती है जो अपनी संस्कृति, अपनी परंपरा, अपनी विशेषता और सिद्धांतों पर द ढ़ बने रहकर स्थापित होती है। सत्य और आदर्शों पर चलना सिखाती है। जीवन में अपने सिद्धांतों पर डटे रहना और उचित समय पर झुकना ही जीवन है। आइए इसे ऐसे समझते हैं–

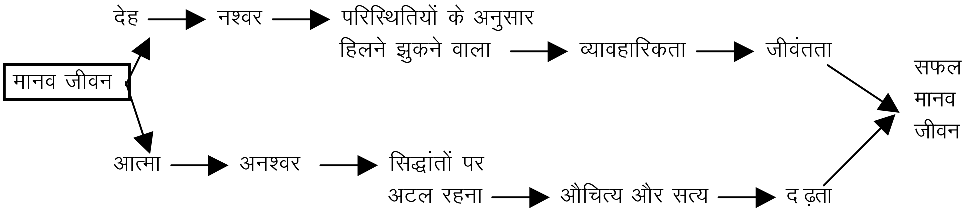

पाठगत प्रश्न 7.3

1. निर्जीव जड़ता का जीवन में अर्थ है।

   (क) आदर्शों पर द ढ़ रहना
   (ख) बेजान सूखा पेड़
   (ग) सूखे पेड़ की जड़
   (घ) अड़ियल

2. रावण और हिरण्यकश्यप की हार हुई, क्योंकि वे

   (क) शक्तिहीन थे।
   (ख) कुछ अधिक ही बुद्धिमान थे।
   (ग) जिद्दी और अत्यधिक आत्मविश्वासी थे।
   (घ) परिस्थितियों से लड़ नहीं पाए।

3. जीवन में कष्ट और परेशानी आने पर मनुष्य को क्या करना चाहिए?
4. इस निबंध में लेखक हमें किस द ष्टि से द ढ़ रहने की शिक्षा देता है?

7.3.4 भाषा-शैली

इस पाठ के लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' विशिष्ट श्रेणी के साहित्यकार हैं। उनकी रचनाएँ सहज और सरल भाषा में मिलती हैं। व्यक्ति एक बार पढ़ना शुरू करे तो पढ़ता ही चला जाए। हमें विश्वास है कि आपने यह पाठ पढ़ते समय ऐसा ही अनुभव किया होगा।

आपने एक बात पर और ध्यान दिया होगा कि लेखक ने कितनी कुशलता के साथ जीवन के समन्वयवादी द ष्टिकोण जैसे गंभीर विषय को अपनी सीधी-सादी भाषा में समझाया है। कठिन और बोझिल शब्दों का प्रयोग किए बिना ही वे सारी बातें कह गए हैं और हाँ, लेखक विषय को बहुत ही सामान्य ढंग से शुरू करता है और एक-एक द श्य को देखकर प्रश्न उठाता है उसका उत्तर खोजता है, फिर प्रश्न उठाता है और फिर उत्तर खोजता है। परंतु कहीं-कहीं पर उसे उचित उत्तर नहीं मिलता तो वह प्रश्न पर प्रति-प्रश्न करता है इस प्रकार लगातार कई प्रश्नों पर एक साथ चिंतन करते हुए ठोस परिणाम पर पहुँचता है। उदाहरण के तौर पर आपने पाठ में पढ़ा होगा कि एक जगह लेखक कहता है *''जो न हिलता है न झुकता है वह ही वीर पुरुष है। उसी समय उसका ध्यान उस ठूँठ की ओर जाता है जो न हिलता है न झुकता है परंतु वह तो वीर नहीं है उसमें जान ही नहीं फिर वीर कैसा!''* इसी को **प्रश्नोत्तरी शैली** कहते हैं। आप यह तो समझ ही गए होंगे कि लेखक प्रश्न करता है और स्वयं ही उस प्रश्न का उत्तर देता है।

यह पाठ प्रश्नोत्तरी शैली के रूप में लिखा गया है। इसमें विचारों का सिलसिला चलता चला गया है जो कि चिंतन से युक्त है, अतः चिंतन प्रधान शैली में लिखा गया यह एक

ललित निबंध है। यह निबंध आम बोलचाल की सरल भाषा में लिखा गया है परंतु इसका विषय जटिल है।

इस ललित निबंध में लेखक ने सरल काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है जैसे–*''पलंग पर लेटे-लेटे वह यों दीखता कि जैसे कुशल समाचार पूछने को आया कोई मेरा ही मित्र हो।'' (उपमा) ''यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा है।'' ''मान-मना'' (अनुप्रास), ''समझौता-समन्वय'', ''कुल्हाड़ी-कुदाल'', ''जीते-जागते जीवन में'', ''रपटी रपटती'' (अनुप्रास), ''भले ही वह इस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह ज़िद्दी।''* (उपमा)

इस प्रकार प्रभाकरजी की भाषा में नई छटा देखने को मिलती है लेखक ने नवीन शब्दावली का प्रयोग कर भाषा को अत्यधिक लालित्यपूर्ण और प्रभावी बना दिया है। नए शब्दों पर ध्यान दीजिए–डिक्टेटरी–अधिनायकता। आप जानते ही हैं रचनाकार ने यहाँ मुहावरे, लोकोक्तियों, सूक्तियों का प्रयोग करके अपनी भाषा को धारदार बनाया है। इससे भाषा में निखार आता है और वह कम शब्दों का प्रयोग कर अपनी बात को प्रभावी ढंग से दूसरों तक पहुँचाता है। लोकोक्तियों में प्रचलित भाषा का प्रयोग होने से निबंध में सहजता और मर्मस्पर्शता बढ़ गई है। लोकोक्तियों का रचनाकार ने स्थान-स्थान पर सटीक प्रयोग किया है। 'विश्व की जीवन प्रणाली है–कह, सुन। विश्व की यात्रा का पथ है–मान, मना, 'न हिलना न झुकना जीवन की स्थिरतां का, द ढ़ता का चिह्न है', 'हिलना और झुकना ही जीवन का चिह्न है', 'जीवन की स्थिरता द ढ़ता जीवन के नकली सत्य हैं', 'हम द ढ़ हों, जड़ नहीं', 'एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता', 'जीवन वह है, जो समय पर अड़ भी सकता है और समय पर झुक भी', 'देह है नाशशील और आत्मा है शाश्वत।'

इस पाठ में लेखक ने अपनी भाषा में प्रवाह लाने के लिए एक और शैली भी अपनाई है–वह है, उदाहरण शैली। अपनी बात को कहते-कहते वह प्राचीन भारतीय और विदेशी परंपरा, संस्कृति और इतिहास से जुड़े व्यक्तियों को उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत करते चलते हैं, जैसे–रावण, स्टॉलिन, हिटलर आदि। आप राम कथा से जुड़े रावण के चरित्र से भली-भाँति परिचित हैं और यह भी जानते हैं कि अपने अड़ियल और ज़िद्दी व्यवहार के कारण ही राम-रावण युद्ध हुआ जिससे अहंकारी रावण का अंत हो गया।

पाठगत प्रश्न 7.4

1. इस पाठ में लेखक ने कुछ अरबी-फ़ारसी-उर्दू शब्दों का भी प्रयोग किया है। क्या आप उन्हें ढूँढ़कर यहाँ कोई पाँच शब्द लिख सकते हैं? जी! हाँ, तो फिर देर किस बात की? जल्दी से ढूँढ़िए और लिख दीजिए–

   1.................... 2..................... 3.....................4..................... 5.....................

2. इस पाठ में किस प्रकार की शैली है?

   (क) विवरणात्मक (ग) चिंतन प्रधान

   (ख) व्यंग्यात्मक (घ) हास्य प्रधान

3. इस पाठ के वाक्यों का गठन कैसा है?

   (क) सरल/सामान्य (ग) लंबा

   (ख) कठिन (घ) गंभीर

4. ''भले ही वह उस ठूँठ की तरह निर्जीव हो या रावण की तरह जिद्दी।'' वाक्य में अलंकार है–

   (क) रूपक (ग) उत्प्रेक्षा

   (ख) उपमा (घ) यमक

5. यह निबंध किस श्रेणी के निबंध में आता है?

6. कुल्हाड़ी–कुदाल में कौन–सा अलंकार है?

7.4 भाषा कार्य

कुछ अलग शब्द वाक्य में प्रयुक्त होकर अर्थ को विशेष बल देते हैं। उन्हें निपात कहा जाता है, नीचे लिखे निपातों का प्रयोग पढ़िए:–

'ही' –

सामने **ही** दिख रही थी सड़क।

सामने सड़क **ही** दिख रही थी।

सामने सड़क दिख **ही** रही थी।

'भी' – वह समय पर अड़ **भी** सकता हैं

वह **भी** समय पर अड़ सकता है।

वह समय पर **भी** अड़ सकता है।

'न'/'नहीं' – (i) तुम **न** आओगे।

तुम **नहीं** आओगे?

तुम आओगे **न**?

'तो' – 'तो' न हिलना, न झुकना जीवन की स्थिरता का प्रतीक है।

न हिलना **न** झुकना **तो** जीवन की स्थिरता है।

न हिलना, **न** झुकना जीवन की **तो** स्थिरता है।

– तुम आओगे, **तो** मैं जाऊँगा

तो तुम आओगे और मैं जाऊँगा?

अतीत में रावण, **तो** इस युग में हिटलर।

'तक' – राधा ने **तक** मुझे नहीं बताया।

राधा ने मुझे **तक** नहीं बताया।

राधा ने मुझे बताया **तक** नहीं।

राधा **तक** ने मुझे नहीं बताया।

कुछ निपातों का प्रयोगकर वाक्य के अर्थ में आने वाली विशेषताएँ बताइए।

7.5 आपने क्या सीखा

1. जीवन में परिस्थितियों से समझौता करना एक सीमा तक ज़रूरी है।
2. एक पेड़ की जड़ के समान हमें अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर द ढ़ रहना चाहिए और हवा में झूमते पेड़ के समान समन्वयवादी होना चाहिए।
3. विपरीत परिस्थितियों में विवेक से काम लेना चाहिए तथा परिस्थितियों से समझौता सोच-समझ कर करना चाहिए।
4. यह निबंध प्रश्नोत्तर शैली में लिखा गया है। यह एक विचारात्मक और चिंतन प्रधान ललित निबंध है।
5. सूत्र वाक्यों का प्रयोग करते हुए यह ललित निबंध सरस और प्रभावपूर्ण ढंग से लिखा गया है।
6. पाठ की भाषा साधारण आम बोलचाल की भाषा है पर पाठ का विषय चिंतन प्रधान है।

7.6 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई, 1909 में सहारनपुर जिले के देवबंद नामक ग्राम में हुआ था। आप बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के थे। आपकी राजनीतिक और सामाजिक कार्यों में गहरी दिलचस्पी थी जिसके कारण कई बार आपको जेल यात्रा भी करनी पड़ी। सन् 1935 में आप गांधी जी के सानिध्य में आए और स्वेच्छा से निर्धनता का व्रत लिया। उसके दूसरे ही दिन अपने दोनों पैत क मकान दान कर दिए। प्रभाकर जी की प्रमुख रचनाएँ हैं–'नयी पीढ़ी नये विचार' (1950), 'ज़िंदगी मुस्काई' (1954), 'माटी हो गई सोना' (1957), 'आकाश के तारे धरती के फूल' (1952), 'दीप जले, शंख बजे' (1958), 'बाजे पायलिया के घुँघरू' (1957) आदि।

आपने हिंदी के श्रेष्ठ रेखाचित्र, संस्मरण तथा ललित निबंध लिखे। यह द्रष्टव्य है कि उनकी इन रचनाओं में कलागत आत्मपरकता होते हुए भी एक ऐसी तटस्थता रहती

है कि उनकी चित्रात्मकता सदैव जीवित बनी रहती है। आपकी शैली की आत्मीयता और सहजता पाठक के लिए प्रीतिकर और हृदयग्राही होती है।

प्रभाकर जी उन थोड़े से साधकों में हैं जिन्हें साहित्य और पत्रकारिता में एक साथ उच्च-श्रेणी की सफलता मिली। इन्होंने लघुकथा, ललित निबंध, संस्मरण और रिपोर्ताज को नए आयाम दिए हैं तथा अन्य अनेक विधाओं में साहित्य रचा है।

(ख) कुल्हाड़ी और कुदाल में अंतर

कुल्हाड़ी लकड़ी काटने के काम में आती है और कुदाल से पत्थर तोड़ा जाता है। इसके आकार-प्रकार में अंतर होता है। नीचे दिए गए चित्र देखिए।

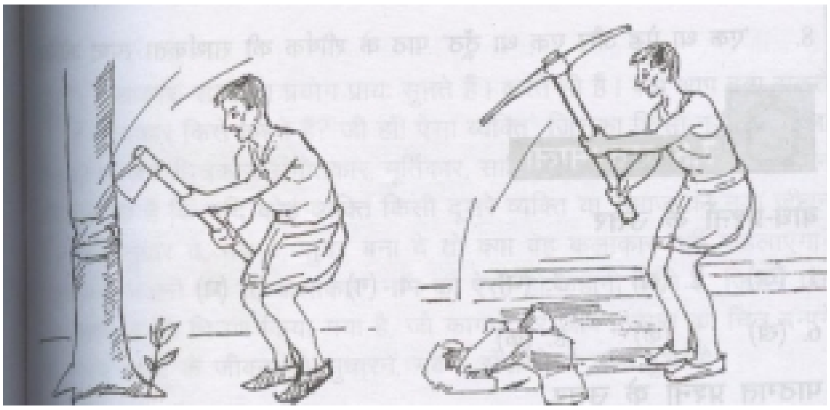

7.7 पाठांत प्रश्न

1. बाँझ के हरे-भरे पेड़ और ठूँठ के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?
2. लेखक ने क्यों कहा कि 'हमारे विचार लचीले' हों' स्पष्ट कीजिए।
3. आपके विचार से आदर्श मानव की जीवन-शैली कैसी होनी चाहिए?
4. निम्नलिखित शब्दयुग्म की व्याख्या कीजिए–

   दे-ले, कह-सुन, मान-मना,
5. निम्नलिखित गद्यांश की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।

   (क) जीवन में देह है, जीवन में आत्मा है। देह है नाशशील और आत्मा शाश्वत। तो आत्मा को हिलना झुकना नहीं है और देह को निरंतर हिलना झुकना ही है। नहीं तो हम हो जाएँगे रामलीला के रावण की तरह जो बाँस की खपच्चियों पर खड़ा रहता है–न हिलता है न झुकता है। हमारे विचार लचीले हों, परिस्थितियों के साथ वे समन्वय साधते चलें, पर हमारे आदर्श स्थिर हों।

(ख) दो टूक बात यों कि जीवन वह है, जो समय पर हिल भी सकता है और समय पर झुक भी, पर ठूँठ वह है जो अड़ ही सकता है, झुक नहीं सकता।

(ग) एक है जीवंत द ढ़ता और दूसरा निर्जीव जड़ता। हम द ढ़ हों, जड़ नहीं।

6. निम्नलिखित सूक्तियों का भाव-पल्लवन कीजिए।

(क) 'मरियम सो मरियम', पै टरियम नहीं।'

(ख) 'न हिलना न झुकना जीवन की स्थिरता का चिह्न है।'

7. तानाशाही क्या होती है पाठ में आए उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।

8. 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ' पाठ के शीर्षक की सार्थकता स्पष्ट कीजिए।

7.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग) 5. (घ)

6. (ख) 7. (क) 8. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

7.1 1. (क) 2. (ख) 3. (क)

4. उसके ज़िद्दीपन और अड़ियल स्वभाव के कारण

5. उसे महसूस होता है कि उसका दोस्त सामने खड़ा उससे हाल-चाल पूछ रहा है।

7.2 1. (घ) 2. (क) 3. (घ)

4. अहंकारी और जड़ व्यक्ति का 5. काट-छाँट करना

7.3 1. (घ) 2. (ग) 3. एक सीमा तक समझौता

4. अपने आदर्शों और सिद्धांतों पर

7.4 1. इनकार, मुरदा, कम्बख़्त, मोर्चा, ज़िद्दी

2. (ग) 3. (क) 4. (ख) 4. (ख)

5. विचारात्मक/चिंतनप्रधान ललित निबंध 6. अनुप्रास

टिप्पणी

8

301hi08

दो कलाकार

आप 'कलाकार' शब्द का प्रयोग प्रायः सुनते हैं। करते भी हैं। क्या आप बता सकते हैं कलाकार किसे कहते हैं? जी हाँ! ऐसा व्यक्ति जिसका किसी-न-किसी कला से संबंध हो जैसे चित्रकार, संगीतकार, मूर्तिकार, साहित्यकार, अभिनेता आदि। लेकिन सवाल उठता है कि यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति या समाज को नया जीवन दे दे, उसे सुधार दे, गढ़ दे, सुंदर बना दे तो क्या वह कलाकार नहीं कहलाएगा? आइए मन्नू भंडारी की 'दो कलाकार' नाम की ऐसी ही कहानी पढ़ते हैं, जिसमें एक ऐसे कलाकार का चित्रण किया गया है, जो कागज पर जीवन-जगत का चित्र बनाने की बजाय लोगों के जीवन को सुधारने, गढ़ने, सँवारने में लगा हुआ है।

उद्देश्य

'दो कलाकार' कहानी पढ़ने के बाद आप

- चित्रा के साथ-साथ अरुणा को भी कलाकार सिद्ध कर सकेंगे;
- दोनों प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बता सकेंगे;
- कहानी के घटनाक्रम का उल्लेख कर सकेंगे;
- कहानी के तत्त्वों के आधार पर 'दो कलाकार' नामक कहानी की विवेचना कर सकेंगे;
- कहानी की भाषा-शैली पर टिप्पणी लिख सकेंगे;
- कहानी में आए विविध मुहावरों का उचित प्रयोग सीख सकेंगे;
- कार्य की द ष्टि से वाक्य भेद की पहचान कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

कहानी में एक पात्र अरुणा ने एक ओर निरक्षर बच्चों को पढ़ाया और दूसरी ओर बीमार बच्चे को बचाने की कोशिश की। दोनों ही कार्य श्रेष्ठ हैं। यदि आपको इन दोनों में से कोई एक चुनना हो तो किसे चुनेंगे और क्यों? तीन तर्क दीजिए।

8.1 मूलपाठ

आइए, मूल कहानी को एक बार पढ़ लेते हैं:

दो कलाकार

'ऐ रूनी उठ,' और चादर खींचकर, चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उठा दिया।

'अरे, क्या है?' आँख मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नए बनाए हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली– देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।

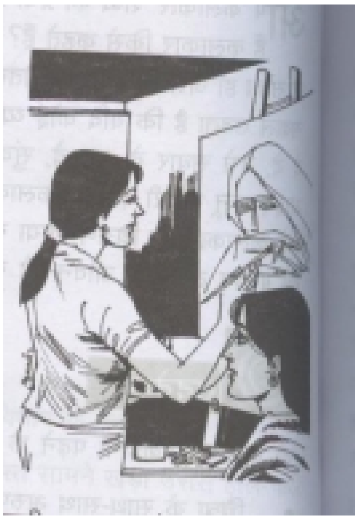

'ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी। बदतमीज़ कहीं की!'

'अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गई पहला इनाम तो नाम बदल देना।' चित्र को चारों ओर से घुमाते हुए अरुणा बोली, 'किधर से देखूँ यह तो बता दे, हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाए उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू' फिर तस्वीर पर आँख गड़ाते हुए बोली, 'किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है?'

'तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? अरे, ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।'

'अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान– सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं, मानों सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?' और उसने वह चित्र रख दिया।

'जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?'

'तेरी बेवकूफी का। आई है बड़ी, प्रतीकवाली।'

'अरे, जनाब, यह चित्र आज की दुनिया के कंफ्यूजन का प्रतीक है। समझी, मुझे तो तेरे दिमाग के कंफ्यूजन का प्रतीक नज़र आ रहा है। बिना मतलब ज़िंदगी खराब कर रही

शब्दार्थ

आँख गड़ाना – ध्यान से देखना

खिचड़ी पकाना – इधर-उधर की चीजों को जोड़कर एक चीज़ तैयार करना

घनचक्कर – गोलमाल, ठीक से समझ में न आने वाला

है।' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गई। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाज़े पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोले, 'दीदी! सब बच्चे आकर बैठ गए, चलिए।'

'आ गए सब बच्चे? अच्छा चलो, मैं अभी आई। 'बच्चे दौड़ पड़े'।

'क्या ये बंदर पाल रखे हैं तूने भी?' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, 'एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। ज़रा लोगों को दिखाया ही करेंगे कि हमारी एक ऐसी मित्र साहिबा थीं जो सारे जमादार, दाइयों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिता और समाज-सेविका समझती थीं।'

'जा-जा, समझते हैं तो समझते हैं! तू जाकर सारी दुनिया में ढिंढोरा पीटना, हमें कोई शरम है क्या? तेरी तरह लकीरें खींचकर तो समय बर्बाद नहीं करते।' और पैर में चप्पल डालकर वह बाहर मैदान में चली गई, जहाँ बिना किसी आयोजन के ही एक छोटी-सी पाठशाला बनी हुई थी।

शब्दार्थ

रौब खाना – प्रभाव में आना
हाड़ तोड़ना – मेहनत करना
ढिंढोरा पीटना – सभी को बता देना

रात के दस बजे थे। सारे हॉस्टल की बत्तियाँ नियमानुसार बुझ चुकी थीं। ऊपर के एक तल्ले पर अँधेरे में ही खुसुर-फुसुर चल रही थी। रविवार के दिन तो यों ही छुट्टी का मूड रहता है। दूसरे, दिन में काफी नींद ली जाती थी, सो दस बजे लड़कियों को किसी तरह भी नींद नहीं आती थी। तभी हॉस्टल के फाटक में जलती हुई टार्च लिए कोई घुसा। अपने कमरे की खिड़की में से झाँकते हुए सविता ने कहा, 'ठाठ तो हास्टल में बस अरुणा ही के हैं, रात नौ बजे लौटो, दस बजे लौटो, कोई बंधन नहीं। हम लोग तो दस के बाद बत्ती भी नहीं जला सकते।'

'लौट आई अरुणा दी? आज सवेरे से ही वे बड़ी परेशान थीं। फुलिया दाई का बच्चा बड़ा बीमार था, दोपहर से वे उसी के यहाँ बैठी थीं। पता नहीं, क्या हुआ बेचारे का?' शीला ने ठंडी साँस भरते हुए कहा।

'तू बड़ी भक्त है अरुणा दी की।'

'उनके जैसे गुण अपना ले तो तेरी भी भक्त हो जाऊँगी।'

'मैं कहती हूँ, उन्हें यही सब करना है तो कहीं और रहें, हॉस्टल में रहकर यह जो नवाबी चलाती हैं, सो तो हमसे बर्दाश्त नहीं होती। सारी लड़कियाँ डरती हैं तो कुछ कहती नहीं, पर प्रिंसिपल और वार्डन तक रौब खाती है इनका, तभी तो सब प्रकार की छूट दे रखी है।'

'तू भी जिस दिन हाड़ तोड़कर दूसरों के लिए यों परिश्रम करने लग जाएगी न, उस दिन तेरा भी सब लोग रौब खाने लगेंगे। पर तुम्हें तो सजने-सँवरने से ही फुर्सत नहीं मिलती, दूसरों के लिए क्या खाक काम करोगी।'

'अच्छा-अच्छा चल, अपना लेक्चर अपने पास रख।'

अरुणा अपने कमरे में घुसी तो बहुत ही धीरे से, जिससे चित्रा की नींद न खराब हो। पर चित्रा जग रही थी। दोपहर से अरुणा बिना खाए-पिए बाहर थी, उसे नींद कैसे आती भला? मेस से उसका खाना लाकर मेज़ पर ढककर रख दिया था। अरुणा के आते ही वह उठ बैठी और पूछा, 'बड़ी देर लग गई, क्या हुआ रूनी?'

'वह बच्चा नहीं बचा, चित्रा। किसी तरह उसे नहीं बचा सके।' और उसका स्वर किसी गहरे दुख में डूब गया।

चित्रा ने माचिस लेकर लैंप जलाया और स्टोव जलाने लगी, खाना गरम करने के लिए। तभी अरुणा ने कहा, 'रहने दे चित्रा, मैं खाऊँगी नहीं, मुझे ज़रा भी भूख नहीं है।' और उसकी आँखें फिर छलछला आईं।

बहुत ही स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए चित्रा ने कहा, 'जो होना था सो हो गया, अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-थोड़ा खा ले।'

'नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दे।'

उसके बाद दो-तीन दिन तक अरुणा बहुत ही उदास रही, लेकिन समय के साथ-साथ यह गम भी जाता रहा, और सब काम ज्यों-का-त्यों चलने लगा।

चार बजते ही कॉलेज से लड़कियाँ लौट आईं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। 'पता नहीं कहाँ-कहाँ अटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहा करो।'

'अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय।'

'तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।'

'कहाँ, तूने तो पढ़ ही ली होगी फाड़कर।'

'चल हट, ऐसी बोर चिट्ठियाँ पढ़ने का फालतू समय किसके पास है? तुम्हारी चिट्ठियों में रहता ही क्या है जो कोई पढ़े। बड़े-बड़े आदर्श की बातें, मानो खत न हुआ लेक्चर हुआ।'

'अच्छा-अच्छा', तू लिखा करना रसभरी चिट्ठियाँ, हमें तो वह सब आता नहीं।' वह लिफ़ाफ़ा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चित्रा बोली, 'आज पिताजी का भी पत्र आया है, लिखा है जैसे ही यहाँ का कोर्स समाप्त हो जाए, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।'

'हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी! तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है! पर सच कहती हूँ, मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती । किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'

'तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?'

शब्दार्थ

प्रतीक्षा – इंतजार
निरर्थक – बेकार
आइडिया – विचार
सामर्थ्य – शक्ति

'तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीस घंटे अपने रंग और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में बड़ी से बड़ी घटना घट जाए, पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्त्व नहीं रखती। बस, हर घड़ी, हर जगह और हर चीज में से तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है।'

'अरे, इस लगन को देखकर ही तो गुरु जी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं, जब हिंदुस्तान के कोने-कोने में मेरी शोहरत गूँज उठेगी। अम ता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे, बस यही तमन्ना है।'

'कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती, तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।'

'वह काम तो तेरे और मनोज के लिए छोड़ दिया है। तुम दोनों ब्याह कर लो और फिर जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।' और चित्रा हँस पड़ी। फिर बोली– 'अच्छा, यह बता कि तेरे यह सब करने से क्या हो जाएगा? तूने अपनी अनोखी पाठशाला में दस-बीस बच्चे पढ़ा दिए, तो क्या निरक्षरता मिट जाएगी? अरे, यह सब काम एक के किए नहीं होते। जब तक समाज का सारा ढाँचा नहीं बदलता तब तक कुछ होने का नहीं, और ढाँचा ही बदल गया तो तेरे-मेरे कुछ करने की ज़रूरत नहीं, सब अपने आप ही हो जाएगा।'

फिर दोनों में कला और जीवन को लेकर लंबी-लंबी बहसें होतीं और चित्रा अंत में कान पर हाथ धरकर उठ जाती, 'अच्छा-अच्छा, बंद कर यह लेक्चरबाजी, बोर कहीं की।' यह पिछले पाँच वर्षों से इसी प्रकार चल रहा था। हर दस-बीस दिन बाद दोनों में अपने-अपने उद्देश्य को लेकर, अपनी-अपनी दिनचर्या को लेकर एक गरमागरम बहस हो ही जाती, पर न वह उसकी बात का लोहा मानती थी, न वह उसकी बात की कायल होती थी।

तीन दिन से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़-पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी, और वर्षा थी कि थमने का नाम ही नहीं लेती थी। अरुणा सारे दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह ही दिया, 'तेरे इम्तिहान सर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है। फेल हो गई तो तेरे ससुर साहब क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।'

'आज शाम को एक स्वयंसेवकों का दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली, मैं भी उनके साथ जा रही हूँ।' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गई। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी खस्ता हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आई थी मानो छह महीने से बीमार हो। चित्रा उस समय अपने गुरुदेव के पास गई हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी, तभी उसकी नजर चित्रा के नए चित्रों की ओर गई। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे। जो द श्य वह अपनी आँखों से देखकर आ रही थी, वैसे ही द श्य यहाँ भी अंकित थे। उसका मन जाने कैसा-कैसा हो आया। वहाँ लोगों के जीने के लाले पड़ रहे हैं और उसमें भी इसे चित्रकारी ही सूझती है। और न जाने कितनी बात सोचते-सोचते वह सो गई।

शब्दार्थ

लोहा मानना – मन से बात को स्वीकार करना, सम्मान करना

कायल होना – किसी की बात स्वीकार करना, लाजवाब होना

टिप्पणी

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। 'गनीमत है, तू लौट आई। मैं सोच रही थी कि कहीं तू बाढ़-पीड़ितों की सेवा करती ही रह जाए और मैं जाने से पहले तुझसे मिल भी न पाऊँ।'

'क्यों, तेरा जाने का तय हो गया?'

'हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।' उल्लास उसके स्वर से छलक पड़ रहा था।

'सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा! छह साल से तेरे साथ रहते-रहते मैं तो यह बात भूल ही गई कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'

'अरे, दो महीने बाद शादी कर लेगी, फिर याद भी न रहेगा कि कौन कंबख्त थी चित्रा! बड़ी लालसा थी तेरी शादी में आने की , पर अब तो आ नहीं सकूँगी। अच्छी तरह शादी करना, दोनों मिलकर सारे समाज का और सारे संसार का कल्याण करना।'

पर अरुणा के कानों में उसकी कोई भी बात नहीं पड़ रही थी। चित्रा के साथ बिताए हुए पिछले छह सालों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूम रहे थे और वह उन्हीं में खोई बैठी रही।

शब्दार्थ

विराट	–	बड़ा
सपने साकार होना	–	सोची हुई बात सच होना
अवाक्	–	आश्चर्य, चुप

'क्या सोचने लगी रूनी ! मनोज की याद आ गई क्या?'

'चल हट! हर समय का मज़ाक अच्छा नहीं लगता।'

उस दिन रात में भी अरुणा अपने और चित्रा के बारे में ही सोचती रही। दोनों के आचार-विचार, रहन-सहन, रुचि आदि में ज़मीन-आसमान का अंतर था, फिर भी कितना स्नेह था दोनों में। सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की नज़र से देखता था। जब उसके बी.ए. के इम्तिहान थे तो चित्रा कितना खयाल रखती थी उसका। वह अक्सर चित्रा को डाँट दिया करती थी, पर कभी उसने बुरा नहीं माना। यही चित्रा जब चली जाएगी– बहुत-बहुत दूर। ये दो महीने भी कैसे निकालेगी? और यही सब सोचते-सोचते उसे नींद आ गई।

आज चित्रा को जाना था। हॉस्टल में उसे बड़ी शानदार विदाई मिली थी। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आई। फिर गुरु जी के घर की तरफ़ चल पड़ी। तीन बज गए, पर वह लौटी नहीं। अरुणा उसका सारा काम समाप्त करके उसकी राह देख रही थी। और भी कई लड़कियाँ वहाँ जमा थीं, कुछ बार-बार आकर पूछ जाती थीं, चित्रा लौटी या नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली है। अरुणा ने सोचा, वह खुद जाकर देख आए कि आखिर बात क्या हो गई। तभी हड़बड़ाती-सी चित्रा ने प्रवेश किया, 'बड़ी देर हो गई ना। अरे, क्या करूँ, बस, कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।'

'आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।' दो-तीन कंठ एक साथ बोले।'

'गर्ग-स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी ना, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे द श्य में, कि मैं अपने को रोक नहीं सकी – एक रफ-सा स्केच बना ही डाला। बस, इसी में इतनी देर हो गई।' चर्चा इसी पर चल पड़ी, कैसे मर गई, कल तो उसे देखा था।' किसी ने दार्शनिक की मुद्रा में कहा, 'अरे,

जिंदगी का क्या भरोसा, मौत कहकर थोड़े आती है।' आदि-आदि। पर इस सारी चर्चा से अरुणा कब खिसक गई, कोई जान ही नहीं पाया।

साढ़े चार बजे और चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गई, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन आईं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। उसे द ढ़ विश्वास था कि वह इस विदाई की बेला में उससे मिलने ज़रूर आएगी। पाँच भी बज गए, रेल चल पड़ी, अनेक रूमालों ने हिल-हिलकर चित्रा को विदाई दी, पर उसकी आँखें किसी और को ही ढूँढ़ रही थी– पर अरुणा न आई सो न आई।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गई, उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेशों में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखमंगी और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम भर गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गई। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र-व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला, फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी नहीं मालूम कि वह कहाँ है। नई कल्पनाएँ और नए-नए विचार उसे नवीन स जन की प्रेरणा देते और वह उन्हीं में खोई रहती। उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होतीं। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षकवाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता, वही चकित रह जाता। दुख-दारिद्रय और करुणा जैसे साकार हो उठे थे। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस कामयाबी पर गद्गद थे – समझ नहीं पा रहे थे कि उसे कहाँ-कहाँ उठाएँ, बिठाएँ। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया था। उस प्रदर्शनी को देखने के लिए जनता उमड़ पड़ी थी, भूरि-भूरि प्रशंसा हो रही थी और चित्रा को लग रहा था, जैसे उसके सपने साकार हो गए। उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई ! 'रूनी' ! कहकर वह भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गई– 'तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी!' 'चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तू तो एकदम भूल ही गई।'

'अरे, ये बच्चे किसके हैं? दो प्यारे-से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी तो लड़की की कोई आठ।

'मेरे बच्चे हैं, और किसके ! ये तुम्हारी चित्रा मासी है, नमस्ते करो अपनी मासी को।' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़ी अदा से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी उनका और कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। वह सारी बात की तुक नहीं मिला पा रही थी। तभी अरुणा ने टोका, 'कैसी मासी है, प्यार तो कर।' और चित्रा ने दोनों के सिर पर हाथ फेरा। प्यार का ज़रा-सा साहस पाकर लड़की चित्रा की गोदी में जा चढ़ी। अरुणा ने कहा, 'तुम्हारी ये मासी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती है, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनाई हुई हैं।'

'सच ?' आश्चर्य से बच्ची बोल पड़ी। 'तब तो मासी, तुम जरूर ड्रांइग में फर्स्ट आती होगी। मैं भी अपनी क्लास में फर्स्ट आती हूँ – तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाऊँगी।' बच्ची के स्वर में मुकाबले की भावना थी। चित्रा और अरुणा इस बात पर हँस पड़ीं।

'आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मासी, समझा-समझाकर।' बच्चे ने फरमाइश की। चित्रा समझाती हुई तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, 'यही वह तस्वीर है रूनी, जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।'

'ये बच्चे रो क्यों रहें हैं, मासी?' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने कहा!

'इनकी माँ मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।' बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन की छाप लगाई।

'ये सचमुच के बच्चे थे, मासी? बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

'अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर!'

चित्र 8.3

'हाय राम! इनकी माँ मर गई तो फिर इन बच्चों का क्या हुआ?' बालक ने पूछा।

'मासी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी, तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की. .... उस तस्वीर को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। परिचय हुआ। साधारण बातचीत के पश्चात् अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, 'आप जरा बच्चों को प्रदर्शनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें एकटक देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, 'सच-सच बता, रूनी! ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?

'कहा तो, मेरे।' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

'अरे, बताओ ना! मुझे बेवकूफ़ बनाने चली है।'

'एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, 'बता दूँ?' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, 'ये ही वे दोनों बच्चे हैं।'

'क्या.... !' विस्मय से चित्रा की आँखें फैली की फैली रह गईं।

'क्या सोच रही है, चित्रा?'

'कुछ नहीं – मैं सोच रही थी कि .... ' पर शब्द शायद उसके विचारों में ही खो गए।

– मन्नू भंडारी

8.2 बोध प्रश्न

आशा है आपको कहानी पसंद आई होगी। अब दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर इस कहानी पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'तो इसे दिखाने के लिए मेरी नींद खराब कर दी, बदतमीज़ कहीं की' अरुणा के इस कथन से कौन-सा भाव प्रकट होता है।

   (क) क्रोध (ग) प्रेम

   (ख) खीझ (घ) ईर्ष्या

2. 'इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक दूसरे पर चढ़े नज़र आते हैं' इस बात से किस ओर संकेत है?

   (क) यातायात समस्या (ग) जनसंख्या की बढ़ोत्तरी

   (ख) दुनिया के कंफ्युजन (घ) सड़क दुर्घटना

3. 'ठाठ तो हॉस्टल में अरुणा के ही हैं रात नौ बजे लौटो या दस, कोई बंधन नहीं,' इससे प्रकट होता है:

   (क) सविता की ईर्ष्या (ग) वार्डन का विवेक

   (ख) अरुणा की परोपकार भावना (घ) अरुणा की लोकप्रियता

4. अरुणा रात दस बजे कहाँ से लौटी?

   (क) सिनेमा हॉल से (ग) बच्चों की पाठशाला से

   (ख) लाइब्रेरी से (घ) फुलिया दाई के घर से

5. दोपहर से ही भूखी अरुणा ने रात को भी भोजन नहीं किया, क्योंकि

   (क) फुलिया दाई के बच्चे के दुख के कारण भूख मर गई थी।

   (ख) भोजन समाप्त हो चुका था।

   (ग) चित्रा को कष्ट नहीं देना चाहती थी।

   (घ) भोजन ठंडा था।

6. जब अरुणा रात देर से लौटी तो चित्रा
   (क) सो रही थी।
   (ख) पढ़ रही थी।
   (ग) बातें कर रही थी।
   (घ) चिंता में थी कि अभी तक अरुणा लौटी क्यों नहीं।
7. अरुणा और चित्रा के बीच क्या संबंध था?
8. अरुणा किसके बच्चे को बचा नहीं पाई?
9. चित्रा हॉस्टल छोड़ने के बाद कहाँ गई?

8.3 आइए समझें

8.3.1 'दो कलाकार' कथा के प्रमुख चरण

यह तो आप जान ही गए हैं चित्रा और अरुणा दो सखियाँ हॉस्टल में एक साथ रहती थीं। उनके व्यवहार और आदतों में अंतर होते हुए भी दोनों घनिष्ठ मित्र थीं। एक-दूसरे के सुख-दुख का ध्यान रखती थीं। आगे कहानी कुछ इस प्रकार आगे बढ़ती है।

- अरुणा का विवाह मनोज से निश्चित हो चुका है।
- चित्रा धनी पिता की इकलौती पुत्री है।
- अरुणा एक समाज सेविका है।
- चित्रा एक चित्रकार, प्रसिद्धि पाने की उत्सुक, जिसे गुरुजी का प्रोत्साहन प्राप्त है।
- अखबारों से पता चलता है कि लगातार मूसलाधार बारिश से बाढ़ आ गई है। बाढ़ पीढ़ितों की हालत बिगड़ चुकी है।
- अरुणा शिविर में जाती है और बाढ़ पीड़ितों की सेवा करती है।
- चित्रा उन पर आधारित चित्र बनाती है।
- 'गर्ग स्टोर' पर भिखारिन की म त्यु हो जाती है। चित्रा उस मरी हुई भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाती है और फिर चली जाती है। भिखारिन वाले चित्र पर चित्रा को विशिष्ट पुरस्कार मिलता है।
- चित्रा विदेश से वापस आती है और भव्य प्रदर्शनी का आयोजन करती है, जिसमें उसे अपूर्व प्रसिद्धि मिलती है।
- प्रदर्शनी में अरुणा का चित्रा से मिलन होता है।
- अरुणा के साथ दो बच्चों को देख कर चित्रा अवाक् रह जाती है।
- चित्रा को पता चलता है कि अरुणा के साथ आए दोनों बच्चे उसी भिखारिन के हैं –जिसका चित्र उसने बनाया था।
- वह खुद को अरुणा के सामने बहुत छोटा महसूस करती है।

मन्नू भंडारी ने कहानी में एक ही पद्धति को अपनाया है, पहले कुछ स्थितियों को बताया है और बाद में एक घटना प्रस्तुत की है।

8.3.2 कहानी कैसे पढ़ें

आपने कई कहानियाँ पढ़ी होंगी। दरअसल, जहाँ एक ओर कहानी मनोरंजन का साधन है वहाँ दूसरी ओर किसी जीवन मूल्य की तरफ़ संकेत भी करती है। तभी तो दादा-दादी अथवा माँ आपको बचपन से ही कहानी सुनाते हैं। कहानी, राजा-रानी की और काल्पनिक परियों से लेकर पौराणिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, सामाजिक आदि किसी भी विषय से जुड़ी हो सकती है। यह जीवन की कई घटनाओं पर आधारित होती है। तभी तो सुप्रसिद्ध कहानीकार प्रेमचंद ने कहा है कि कहानी 'एक गमला है तो उपन्यास पूरा उद्यान।'

किसी भी कहानी को अच्छी तरह से समझने के लिए हम उसके छह तत्त्वों का अध्ययन करते हैं:

1. कथावस्तु
2. देशकाल तथा वातावरण
3. चरित्र-चित्रण
4. कथोपकथन अथवा संवाद
5. उद्‌देश्य
6. भाषा-शैली

लेकिन कभी-कभी इनमें से कोई एक तत्त्व नहीं भी होता।

आइए, पढ़कर देखते हैं कि 'दो कलाकार' कहानी में ये सभी तत्त्व किस प्रकार मौजूद हैं।

1. कथावस्तु

कथावस्तु का निर्माण घटनाओं और पात्रों के संयोग से होता है। वास्तव में लेखक अपने कथ्य के अनुसार ही कथावस्तु का स्वरूप तैयार करता है। उसी के अनुसार कभी घटनाओं की प्रधानता हो जाती है, कभी चरित्र और कभी वातावरण की। इस कहानी में वातावरण की कोई विशेष भूमिका नहीं है। केवल छात्राओं के हॉस्टल का परिवेश दिखाया गया है और उसी के इर्द-गिर्द रहने वाले लोगों की सेवा में जुटी अरुणा को कलाकार कहा गया है।

कहानी के शुरू में छात्रावास में रहने वाली चित्रा और अरुणा की रुचियों, उपहास-व त्ति और प्रगाढ़ मैत्री को संवादों, हरकतों और कार्यों से रेखांकित किया गया है। इस घटना से न केवल अरुणा की सेवाभावना का पता चलता है बल्कि छात्रावास की छात्रा सविता की ईर्ष्या और आरामपरस्ती की व त्ति का भी पता चलता है। इस प्रकार कहानी के पहले अंश में संवादों और घटनाओं के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाया गया है। कहानीकार

टिप्पणी

ने अपने कथ्य को संवादों के जरिए स्पष्ट किया है। अरुणा कागज़ पर चित्र बनाने की बजाए लोगों की ज़िंदगी बनाना ज़्यादा श्रेयस्कर समझती है। अरुणा का यह संवाद कि *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे'* ही कहानी का मूल संदेश है। इसी को स्पष्ट करने के लिए दोनों सखियों की भिन्न-भिन्न रुचियों और मनोव त्तियों को संवादों के माध्यम से विस्तार दिया गया है। बाढ़-पीड़ितों की सेवा वाली घटना और भिखारिन के रोते हुए दोनों बच्चों वाली घटना से दोनों सखियाँ जुड़ी हुई हैं। चित्रा इन घटनाओं के चित्र बनाती है। किंतु अरुणा उनकी सेवा करके उन्हें जीवनदान देती है। पूरा कथानक रंगों और लकीरों की बजाए मानवसेवा को महत्त्व देने के लिए गढ़ा गया है।

कहानी का अंतिम भाग भी संवादों और घटना से ही विस्तार पाता है। यह खंड दोनों सखियों में चली आ रही उस बहस का भी अंत कर देता है जो अपने-अपने कामों को उत्तम सिद्ध करना चाहती थीं। अपनी चित्र प्रदर्शनी में अरुणा के साथ आए दोनों बच्चों को देखकर चित्रा चकित होती है। और जब उसे यह पता चलता है कि वे दोनों म त भिखारिन के बच्चे हैं, जिसका उसने स्केच बनाकर प्रसिद्धि पाई है, तो उसके आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता। वह स्वयं को छोटा महसूस करती है और अरुणा को महान कलाकार समझती है। इस प्रकार पूरी कहानी घटना और संवादों के माध्यम से सहज रूप से आगे बढ़ती है। कहीं से भी कथानक न तो अनगढ़ लगता है और न ही कृत्रिम। ऐसा लगता है कि जीवन का एक टुकड़ा पूरी सच्चाई, ईमानदारी और जीवंतता के साथ मूर्त कर दिया गया है।

पाठगत प्रश्न 8.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कथानक के विस्तार में मुख्यत: सहायक होती है:
   (क) संवाद-घटनाएँ (ग) हास्य-वर्णन
   (ख) भाषा-शैली (घ) चरित्र-चित्रण
2. 'दो कलाकार' की कथावस्तु का मूल संदेश है:
   (क) कला का महत्त्व बताना
   (ख) समाजसेवा को भी कला सिद्ध करना
   (ग) कला साधना की अपेक्षा समाज-सेवा को महत्त्व देना
   (घ) कला और समाज-सेवा में प्रतिस्पर्धा दिखाना
3. अच्छी कथावस्तु में आवश्यक होती है:
   (क) सहजता (ग) अनगढ़ता
   (ख) क त्रिमता (घ) बनावट
4. यदि म त भिखारिन के बच्चे वाली घटना नहीं होती तो कथावस्तु
   (क) अधूरी रह जाती

(ख) उद्‌देश्य पूरा नहीं हो पाता

(ग) कला और सेवा में जुटी सखियों के विवाद का फैसला नहीं हो पाता

(घ) इनमें से कोई भी नहीं

5. कहानी का अंतिम भाग क्यों महत्त्वपूर्ण है?

2. देशकाल तथा वातावरण

आपने कई कहानियाँ पढ़ी या सुनी होंगी। उन्हें पढ़ने-सुनने के बाद क्या आप अंदाजा लगा पाते हैं कि वे किन स्थितियों में लिखी गई हैं या उनमें किस प्रकार की स्थितियों का वर्णन किया गया है। दरअसल कहानी लिखते समय और उसमें निहित स्थितियाँ ही देशकाल या वातावरण कहलाता है।

कहानी में देशकाल से आशय उन सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक स्थितियों से है जिनमें कहानी लिखी गई होती है या जिन्हें कहानी में उभारने की कोशिश की गई होती है। देश का अर्थ तो आप जानते ही हैं और काल का अर्थ होता है– समय यानी कहानी में देश की जिस सामाजिक और सांस्कृतिक स्थितियों तथा काल खंड का वर्णन मिलता है या परोक्ष रूप से ये दिखाई देते हैं उसे देशकाल कहा जाता है। वातावरण का आशय किसी भी काल खंड की स्थितियों से होता है। उदाहरण के लिए जब आप राजा-रानी की कोई कहानी पढ़ते हैं तो आपको स्पष्ट हो जाता है कि कहानी प्राचीन समय के वातावरण को उजागर कर रही है।

प्रस्तुत कहानी आधुनिक काल खंड में भारतीय समाज के वातावरण को दर्शाती है। चित्रा और अरुणा दो सहेलियाँ हैं जो हॉस्टल में रहती हैं। लेखिका ने उन्हें हॉस्टल में रहते हुए दिखा कर आधुनिक भारतीय समाज के वातावरण को दर्शा दिया है। क्योंकि आधुनिक काल से पहले लड़कियों का इस तरह से कहीं बाहर रहना और अपनी मर्ज़ी से काम करना प्रचलन में नहीं था। इसऽकहानी में दोनों सहेलियाँ स्वतंत्र हैं, खुले विचारों की हैं। दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं और इसे बुरा नहीं मानतीं। आधुनिक शिक्षा और सोच के कारण किस तरह हमारे समाज में बदलाव आया है उससे समाज में महिलाओं की आज़ादी, उन्हें भी पुरुषों की तरह अपने जीवन का निर्णय लेने और समय से काम करने की परंपरा विकसित हुई है। इस कहानी में इस काल खंड़ की प्रव त्तियों को साफ़ देखा जा सकता है। दोनों में भरपूर आत्मविश्वास और निर्णय लेने की क्षमता है।

पाठगत प्रश्न 8.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प छाँट कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'दो कलाकार' कहानी में किस काल खंड का वातावरण दिखाई देता है–

(क) प्राचीन (ग) आधुनिक

(ख) मध्यकालीन (घ) मिलाजुला

2. 'दो कलाकार' कहानी में दोनों सहेलियों पर कौन-सा कथन लागू नहीं होता?

(क) दोनों स्वतंत्र विचारों की हैं।

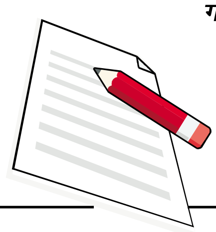

टिप्पणी

(ख) दोनों अपने पुरुष मित्रों के बारे में खुलकर बातें करती हैं।

(ग) दोनों अपने माता-पिता की डाँट पर सहमी-सहमी रहती हैं।

(घ) दोनों ही अपने-अपने कार्य-क्षेत्र में आत्मविश्वासी हैं।

3. राजा-रानी की कथा किस काल से संबंधित हो सकती है?

---

3. चरित्र-चित्रण

कहानी को पढ़ते हुए आपने जान लिया होगा कि इसमें मुख्यत: दो ही पात्र हैं अरुणा और चित्रा। इस कहानी में छात्रावास और शहरी जीवन का परिवेश है। छात्रावास की अन्य छात्राओं की उपस्थिति कहानी में है, किंतु पूरी कहानी में यही दोनों पात्र छाए हुए हैं। हाँ, कुछ समय के लिए 'सविता' और 'शीला' भी दिखाई पड़ती हैं, जिनमें सविता की अरुणा के प्रति ईर्ष्या और शीला की सम्मान-भावना दिखाई देती है। कहानी में अरुणा की करुणा और कर्मनिष्ठा को स्पष्ट किया गया है। उसकी सत्कर्म प्रव त्ति ने सभी को प्रभावित किया है, चाहे हॉस्टल की वार्डन हो या फिर कॉलेज की प्रिंसिपल।

आइए अब इन दोनों प्रमुख पात्रों की चरित्रगत विशेषताओं के बारे में विस्तार से जानें।

अरुणा

अरुणा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है जो संस्कारों से परोपकारी तथा कर्म के प्रति समर्पित है। वह समाज सेवा के लिए हमेशा तैयार रहती है। कभी वह आस-पास के बच्चों को पढ़ाती है तो कभी बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती है। इन कार्यों की वजह से वह अपनी पढ़ाई की भी उपेक्षा कर देती है इसलिए उसकी सखी चित्रा उसे पढ़ाई के प्रति सचेत करते हुए कहती है *'तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं कुछ पढ़ती-लिखती तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है।'* अरुणा के हृदय में समाज-सेवा के लिए इतना उत्साह है कि वह प्रधानाचार्य से स्वयंसेवकों के दल के साथ जाने के लिए अनुमति पा लेती है। संवेदनशील अरुणा बाढ़ पीड़ितों की सेवा में दिन-रात एक कर देती है और भूख-प्यास की परवाह किए बिना समाज सेवा में लगी रहती है। परिणाम यह होता है कि मात्र पंद्रह दिन में ही वह ऐसी लगती है मानो छह महीने से बीमार हो।

दरअसल अरुणा के स्वभाव में रोगियों, दुखियों के लिए अपार प्रेम है। जब वह फुलिया दाई के बच्चे की बीमारी के बारे में सुनती है तो फ़ौरन उसकी सेवा में तत्पर हो जाती है। सेवा करने के बावजूद वह बच्चे को नहीं बचा पाती। इस घटना से वह इतनी दुखी होती है कि दिन-भर भूखे रहने के बाद भी वापस हॉस्टल लौटने पर भोजन नहीं करती। वह इतनी करुणाशील है कि चित्रा जब इस संबंध में उससे कुछ पूछती है तो वह उत्तर तक नहीं दे पाती और उसकी आँखें छलछला जाती हैं। बच्चे की म त्यु के दु:ख से अरुणा इतनी व्यथित हो उठती है कि वह कई दिनों तक उदास रहती है और आखिर चित्रा को कहना ही पड़ता है *'जो होना था हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा, थोड़ा-बहुत खा ले।'*

यद्यपि कहानी के आरंभ में अरुणा की उपहास व त्ति का पता चलता है किंतु वास्तविकता यह है कि स्वभाव से वह गंभीर है इसलिए चित्रा के यह कहने पर कि *'क्या सोचने लगी रुनी, मनोज की याद आ गई क्या'* वह उसे झिड़कते हुए कहती है कि *'हर समय का मजाक अच्छा नहीं लगता'*। जीवन के उपयोगी और रंजक पक्षों में से अरुणा को उपयोगी पक्ष ही बेहतर लगता हैं। वह लोगों के दुख-दर्द को हर लेने में ही जीवन की

सार्थकता समझती है। वह चित्रा से कहती है, *'कागज़ पर निर्जीव चित्रों को बनाने की बजाय दो चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य भी है और साधन भी किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे।'* वह कला और जीवन को लेकर कई बार चित्रा से बहस करती दिखाई देती है।

अरुणा न केवल समाज सेविका है बल्कि अपने संबधों के प्रति भी पूर्णतः जागरूक है। वह अपनी सखी चित्रा का बराबर ध्यान रखती है। जब वह चित्रा के विदेश जाने की बात सुनती है तो उसके साथ बिताए छह वर्षों के चित्र उसकी आँखों के सामने घूमने लगते हैं। वह उन्हीं में खो जाती है और कहती है, *'छह साल तेरे साथ रहते-रहते मैं तो ये भूल गई कि एक दिन हमको अलग होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी।'* विदेश गमन के समय चित्रा तो अन्य छात्राओं से मिलने चली जाती है किंतु अरुणा उसका सारा सामान तैयार करती है। जब चित्रा गुरु जी के पास से वापिस नहीं लौटती तो उसे बेचैनी होती है और उसे देखने जाने के लिए तत्पर हो उठती है।

अरुणा के हृदय में दूसरों के लिए इतना दर्द है कि वह हर परिस्थिति में उसकी सहायता करना चाहती है। 'गर्ग स्टोर' के सामने वाले पेड़ के नीचे बैठने वाली भिखारिन की घटना सुनते ही वह अपनी सखियों को छोड़ उसे देखने चली जाती है। वहाँ भिखारिन के बच्चों को सँभालने में वह इतनी तल्लीन हो जाती है कि अपनी प्रिय सखी को विदा करने के लिए स्टेशन पर भी नहीं जा पाती। वह भिखारिन के रोते-चीखते दोनों बच्चों को सँभालती है और उन्हें अपने पास रख कर भरण-पोषण करके नया जीवन देती है।

अरुणा के इस प्रेम भाव से चित्रा भी चकित रह जाती है। जब अरुणा चित्रा की चित्र प्रदर्शिनी में अपने साथ म त भिखारिन के दोनों बच्चों को लाती है और चित्रा को पता चलता है कि ये दोनों बच्चे वे ही हैं जिनकी वजह से उसे इतनी प्रसिद्धि मिली है तो विस्मय से उसकी आँखें फैली की फैली रह जाती हैं। वस्तुतः उसी दिन उसे इस बात का अहसास होता है कि वास्तविक कला तो दूसरों को जीवन देना है जिसे उसकी सखी अरुणा ने इन दो बच्चों को दिया है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अरुणा के हृदय में सच्ची संवेदना है। दया, करुणा, मैत्री, परोपकार तथा सहानुभूति से भरा उसका हृदय कर्म के प्रति अनुप्रेरित करता रहता है।

चित्रा

चित्रा धनी पिता की इकलौती संतान है। वह चित्रकला की छात्रा है और महत्त्वाकांक्षी है। कोई भी चित्र जब पूरा हो जाता है उसे दिखाने का उसे शौक है इसीलिए तो वह सोती हुई अरुणा को उठा कर अपना नया चित्र दिखाती है।

चित्रकला की लगन उसे इतनी है कि वह हर समय रंगों में डूबी रहती है, ऐसे में उसे दीन-दुनिया तक की खबर नहीं रहती। इसीलिए अरुणा उससे कहती है, 'तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीसों घंटे अपने रंग और तूलियों में डूबी रहती है। चित्रकला को वह इतना महत्त्व देती है कि हरेक घटना में अपनी कला के लिए आइडिया की तलाश में रहती है। अरुणा उससे कहती है कि, *'दुनिया में बड़ी*

से बड़ी घटना घट जाए पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए कोई आइडिया नहीं तो तेरे लिए उस घटना का कोई महत्त्व नहीं। बस हर घड़ी हर जगह तू मॉडल खोजा करती है। उसकी इस लगन को देखकर गुरुजी कहते हैं कि वह समय दूर नहीं जब हिन्दुस्तान के कोने-कोने में तेरी शोहरत गूँजेगी'। इस कला के लिए वह अपनी सखी अरुणा से बहस भी करती है और 'समाज-सेवा' से 'कला' को बेहतर मानती है। कला की साधना से ही वह देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करती है। अखबार की सुर्खियों में होती है। उसके चित्रों की प्रदर्शनी चर्चा का विषय बनती है। वह प्रथम पुरस्कार जीतती है और सम्मान पाती है।

चित्र 8.4

कला में लगन के साथ-साथ चित्रा विनोदी स्वभाव की छात्रा है इसीलिए अपने हॉस्टल में वह इतनी लोकप्रिय है कि रेलवे स्टेशन पर अनेक छात्राएँ उसे विदा करने आती हैं। हॉस्टल में उसकी विदाई समारोह का आयोजन किया जाता है और गुरुजी के पास से लौटने में देरी होने पर सभी छात्राओं को उसकी चिंता रहती है।

चित्रा अपने मैत्री संबंधों का सदा ही ध्यान रखती है। वह अरुणा के फुलिया दाई के घर से लौटने पर खाना गर्म करने के लिए उठती है और अरुणा को खाना खिलाने का प्रयास करती है। वह बहुत स्नेह से अरुणा की पीठ थपथपाते हुए कहती है, *'जो होना था सो हो गया अब भूखे रहने से क्या होगा थोड़ा बहुत खा ले।'* कॉलेज से लौटते ही वह अरुणा के लिए चाय बनाती है। उसकी चिट्ठियों का ध्यान रखती है और यहाँ तक कि जब अरुणा बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा इकट्ठा करने का काम करती है तो वह चिन्तित हो कहती है कि *'तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं कुछ पढ़ती-लिखती तो तू है नहीं, सारे दिन बस भटकती रहती है। फेल हो गई तो तेरे ससुर साहब क्या सोचेंगे।'*

इस प्रकार हम देखते हैं कि चित्रा जहाँ एक ओर कला के प्रति समर्पित है वहीं अपनी अनन्य मैत्री के प्रति निष्ठा से सब का दिल भी जीतती है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 8.3

1. अरुणा की कर्मनिष्ठा से कौन ईर्ष्या करता है?

   (क) चित्रा (ग) सविता

   (ख) शीला (घ) मनोज

2. किस घटना से अरुणा कई दिनों तक उदास रहती है?

   (क) भिखारिन की म त्यु से

   (ख) फुलिया दाई के बच्चे को नहीं बचा पाने से

   (ग) बाढ़ के दिनों में भी चित्रा के चित्र बनाने से

   (घ) चित्रा के हॉस्टल छोड़ने की घटना से

3. अरुणा चपरासी, दाई आदि के बच्चों को पढ़ाती है, क्योंकि

   (क) वह यश चाहती है (ग) समाज-सेवा करना चाहती है

   (ख) पैसा चाहती है (घ) हॉस्टल से बाहर रहना चाहती है

4. 'तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी' इस वाक्य से अरुणा का कौन-सा गुण स्पष्ट होता है।

   (क) दया (ग) मैत्री

   (ख) करुणा ऽ (घ) _क्रोध

5. भिखारिन के दो बच्चों के साथ अरुणा ने कैसा व्यवहार किया?

---

4. कथोपथकन अथवा संवाद-योजना

हम बात कर चुके हैं, कहानी में संवाद योजना भी एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। क्या आप बता सकते हैं कि संवाद किसे कहते हैं? फिल्में तो आप सभी देखते हैं, नाटक भी खेलते व देखते होंगे। उसमें पात्र आपस में बातचीत करते हैं उसे क्या कहते हैं? संवाद या डायलाग। कहानी में भी जब पात्र आपस में बातचीत करते हैं तो उसे संवाद कहा जाता है। प्रस्तुत कहानी 'दो कलाकार' संवादात्मक शैली में लिखी गई है। छोटे-छोटे संवादों के माध्यम से कहानी को विकसित किया गया है। कहानी जहाँ हास-उपहास से आरंभ होती है वहीं इसका अंत अत्यंत कारुणिक है। अंतिम घटना दो कलाकारों में से एक को कहीं अधिक उदास बना देती है। पूरी कहानी में आम बोल-चाल के छोटे-छोटे संवाद हैं।

मन्नू भंडारी की इस कहानी की दूसरी विशेषता है – आत्मीयता। अरुणा और चित्रा के इन संवादों से उनके आत्मीय व्यवहार को देखिए–

1. *'ऐ रूनी उठ'*

   'अरे क्या है?'

   'देख मेरा चित्र पूरा हो गया।'

   'ओह! तो दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी बदतमीज़ कहीं की!'

2. *चित्र को घुमाते हुए अरुणा बोली 'किधर से देखूँ यह तो बता दे। हज़ार बार कहा है जिसका चित्र बनाए उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफ़हमी न हुआ करे, वरना तू बनाए हाथी और हम समझें उल्लू।'*

3. *'ज़रा सोचकर बता यह किसका प्रतीक है।'*

   'तेरी बेवकूफ़ी का'

उक्त अंश में ऐसा आत्मिक व्यवहार है कि कहानी-कहानी न लगकर जीवन का सच्चा प्रतिबिंब लगती है। दोनों सहेलियों के संवादों में उपहास, छेड़छाड़ और एक-दूसरे के लिए बेचैनी साफ़ दिखाई देती है।

5. कहानी का उद्देश्य

आप जानते हैं हर रचना का कोई-न-कोई उद्देश्य होता है। लेखक इस रचना के माध्यम से कोई-न-कोई संदेश देना चाहता है। कहानीकार मन्नू भंडारी द्वारा लिखित इस कहानी का उद्देश्य समाज-सेवा को कला का दर्जा देना है। चित्रों की अपेक्षा समाज-सेवा में कला की सच्ची संवेदना है। दूसरों की पीड़ा से अनुप्रेरित होने के कारण समाज-सेवा, चित्रकला से अधिक उपयोगी है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए कहानीकार ने ऐसी स्थितियों और घटनाओं का चयन किया है, जिसमें दोनों ही पक्ष हिस्सा लेते हैं, और अपने-अपने कार्यों की उत्तमता का दावा करते हैं।

कहानी के आरंभ में चित्रा कुछ लकीरें खींचकर दुनिया के श्रम को उजागर करती है, तो अरुणा हॉस्टल के इर्द-गिर्द रहने वाले बच्चों को पढ़ाकर और फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करके सामाजिक-कार्यों में संलग्न रहती है। इसी तरह एक बाढ़-पीड़ितों के काल्पनिक चित्र तैयार करती है तो दूसरी उनके लिए चंदा इकट्ठा कर शिविर में जाती है और लोगों को जीवनदान देने के पुण्य कार्यों में जुटी हुई है।

तीसरे खंड में चित्रा एक भिखारिन के बच्चों का स्केच बनाती हैं और अरुणा भिखारिन की म त्यु के बाद उसके दोनों बच्चों को पालती-पोसती है।

कहानीकार ने इन सभी घटनाओं के माध्यम से समाज-सेवा को सहज रूप से उत्तम सिद्ध करना चाहा, और बताया कि मानवीय संवेदनाओं से भरा व्यक्ति ही सच्चा कलाकार हो सकता है। *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे'*, *'दुनिया की बड़ी से बड़ी घटना भी इसे आंदोलित नहीं करती, जब तक उसमें कला के लिए कोई स्थान न हो'* जैसे संवादों से कहानीकार ने अपने उद्देश्य को स्पष्ट किया है और सहज रूप से आई घटनाओं, चरित्रों तथा संवादों के माध्यम से अपने उद्देश्य प्राप्त करने में सफलता पाई है। घटनाओं के अतिरिक्त संवादों के माध्यम से भी उद्देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। चित्रा और अरुणा जहाँ अपने-अपने कार्य को

श्रेष्ठ बताती हैं वहीं उनके संवाद कहानी के उद्‌देश्य को रेखांकित करते हैं। चित्रा जहाँ बच्चों को पढ़ाने और फुलिया दाई के बीमार बच्चे की सेवा करने वाली घटना का मजाक उड़ाती है वहीं कहानी के अंत में अरुणा भी चित्रा द्वारा तैयार किए गए चित्र को चित्रा का कंफ्यूजन यानी भ्रम कहती है। अरुणा का यह संवाद कि *'किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे'* कहानी के उद्‌देश्य को स्पष्ट करता है। *'इन निर्जीव चित्रों की बजाए दो-चार की ज़िंदगी क्यों नहीं बना देती'* जैसे संवाद भी उद्‌देश्य को स्पष्ट करने में सहायक हैं। इस प्रकार संवादों के माध्यम से भी लेखिका ने कहानी के उद्‌देश्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

पाठगत प्रश्न 8.4

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कहानी के उद्‌देश्य को स्पष्ट करने में सर्वाधिक योगदान रहा है:

   (क) संवादों और चरित्रों का　　(ग) घटनाओं और संवादों का

   (ख) चरित्रों और घटनाओं का　　(घ) वातावरण और चरित्रों का

2. कहानी का मूल उद्‌देश्य है–

   (क) चित्रकला को श्रेष्ठ बताना　　(ग) मानव मूल्यों को श्रेष्ठ बताना

   (ख) समाज-सेवा को श्रेष्ठ बताना　　(घ) हर कला को श्रेष्ठ बताना

---

6. भाषा-शैली

मन्नू भंडारी नई कहानी के दौर की कथाकार हैं। इस दौर में कहानी की भाषा में एक गुणात्मक परिवर्तन आया है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता है– बोलचाल की भाषा। मन्नू भंडारी की इस कहानी में भाषा के उक्त सभी गुण दिखाई देते हैं। हाँ, परिवेश और पात्र के अनुसार भाषा बदलती रहती है। बोल-चाल की भाषा का नमूना देखिए–

1. *'क्यों बड़–बड़ कर रही है। ले मैं आ गई। चल, बना चाय'*
2. *'तेरे मनोज की चिट्‌ठी आई है।'*

   'तूने तो पढ़ ली होगी, फाड़कर।'

   'चल हट।'
3. *'नहीं चित्रा, अब रहने दे, बस तू लैंप बुझा दे।'*

कहानी की भाषा में कहीं भी ऐसा नहीं लगता कि वह जबरदस्ती ठूँसी गई है। भाषा सब जगह सरलता, सहजता, और बोलचाल का गुण लिए हुए है। इसके लिए आपने देखा होगा कि वाक्य छोटे हैं तथा तद्‌भव और देशज शब्दावली के साथ-साथ बोलचाल की अंग्रेज़ी और उर्दू के शब्दों का भी प्रयोग हुआ है।

अंग्रेज़ी शब्दों में लैक्चर, बोर, आइडिया, कंफ्यूजन, प्रिंसिपल, वार्डन जैसे अनेक शब्द हैं तो उर्दू के इम्तिहान, हुनर, बहस, अखबार, खस्ता, हालत आदि जैसे बोल-चाल के साधारण शब्दों का प्रयोग है।

पूरी कहानी में ऐसा कहीं नहीं है कि वाक्य भारी और बोझिल हों या संवाद लंबे-चौड़े दार्शनिकता से भरे हों। संवाद छोटे, चुस्त और प्रिय है। देखिए–

1. *'मासी तुम जरूर ड्राइंग में फर्स्ट आती होगी।'*
   'तुम भी अपनी क्लास में फर्स्ट आती हो।'
   'तुम हमारे घर आओगी तो अपनी कॉपी दिखाउँगी।'
2. *'ये बच्चे क्यों रो रहे हैं मासी!'*
   'उनकी माँ मर गई, देखती नहीं मरी पड़ी है।'
   'ये सचमुच के बच्चे थे मासी।'
   'अरे सचमुच के बच्चे को देखकर ही तो बनाई थी यह तस्वीर।'

मन्नू जी की अपनी विशेषता है कि वे कहानी की स्थिति के अनुसार भाषा-व्यवहार का पूरा ध्यान रखती है।

पाठगत प्रश्न 8.5

1. अरुणा के इस कथन में भाषा की कौन-सी विशेषता है, 'क्यों बड़-बड़ करती है, ले मैं आ गई। चल, बना चाय'
   (क) संस्क त–निष्ठता (ग) आत्मीयता
   (ख) औपचारिकता (घ) क त्रिमता
2. नयी कहानी की भाषा बोल-चाल की है। इस कथन के आधार पर 'दो कलाकार' कहानी में बोल-चाल की भाषा के दो उदाहरण दीजिए:
   (क) ....
   (ख) ....

8.4 भाषा कार्य

- रचना की द ष्टि से वाक्य-भेद आप जान चुके हैं–सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य। आइए, अब कार्य की द ष्टि से वाक्य-भेद समझ लें, नीचे दिए हुए वाक्यों को पढ़िए:
  1. *चित्रा ने सोती हुई अरुणा को उठाया।*
  2. *'ऐ रूनी, उठ।'*
  3. *'अरे यह क्या?'*
  4. *'आ गए सब बच्चे?'*
  5. *'तेरी तरह लकीरें खींचकर समय बर्बाद नहीं करते।'*
  6. *'अम ता शेरगिल की तरह मेरा भी नाम गूँज उठे।'*
  7. *'ओह! तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।'*
- ऊपर पहला वाक्य सामान्य सूचना दे रहा है। इसे **साधारण वाक्य** या **कथनात्मक वाक्य** कहते हैं। वाक्य 2 में आदेश/आज्ञा है। ऐसे वाक्य **आज्ञार्थक** कहे जाते हैं। वाक्य 3 और 4 में प्रश्न पूछे गए हैं इन्हें क्या कहेंगे? **प्रश्नार्थक।** वाक्य 5 में निषेध है क्योंकि यह नहीं या मना करने का अर्थ दे रहा है। इसे कहेंगे

निषेधार्थक। वाक्य 6 पढ़िए। इस वाक्य में चित्रा की मनोकामना है, इच्छा है, इसलिए ऐसे वाक्यों को **इच्छार्थक** कहते हैं। अंतिम वाक्य 'ओह' से प्रारंभ हो रहा है और मनोवेग को सूचित कर रहा है। ऐसे वाक्य मनोवेगात्मक वाक्य कहे जाते हैं। इस पाठ से ऐसे वाक्यों के और भी उदाहरण आप ढूँढ़ सकते हैं।

- अर्थ की द ष्टि से एक प्रकार की वाक्य रचना को आप दूसरी प्रकार की वाक्य रचना में बदल भी सकते हैं, जैसे–

⟹ **चित्रा ने सोई हुई अरुणा को उठाया**	– **कथनात्मक**
⟹ चित्रा ने सोई हुई अरुणा को नहीं उठाया	– **निषेधार्थक**
⟹ क्या चित्रा ने सोई हुई अरुणा को उठाया?	– **प्रश्नार्थक**
⟹ चित्रा! सोई हुई अरुणा को उठाओ।	– **आज्ञार्थक**
⟹ सोई हुई अरुणा उठे।	– **इच्छार्थक**
⟹ काश, अरुणा उठती।	– **मनोवेगात्मक**

- आम तौर पर निषेधार्थक वाक्यों में न, नहीं, मत, ना निपातों का प्रयोग होता है। किंतु हिंदी में इनके बिना भी निषेधार्थक वाक्य बनाए जाते हैं। ऐसे वाक्य बाहर से देखने पर कथनात्मक, प्रश्नात्मक या मनोवेगात्मक से प्रतीतऽहोते हैं। पर अर्थ की द ष्टि से ये निषेधार्थक होते हैं, जैसे–

• हमें कोई शरम है क्या?	⟹	हमें शरम नहीं है।
• क्या खाक काम करोगी।	⟹	काम नहीं करोगी।
• तेरी इच्छा भी कभी टाली जा सकती है।	⟹	तेरी इच्छा नहीं टाली जा सकती।
• मौत कह कर थोड़े ही आती है।	⟹	मौत कह कर नहीं आती।
• अरे! ज़िंदगी का क्या भरोसा।	⟹	ज़िंदगी का भरोसा नहीं है।

पाठगत प्रश्न 8.6

1. निम्नलिखित वाक्यों का निर्देशानुसार रूपांतरण कीजिए:
   - कल तो उसे देखा था। (निषेधार्थक)
   - उसके चित्रों की प्रदर्शनियाँ होती थीं। (प्रश्नार्थक)
   - मैं अपने को रोक नहीं सकी। (मनोवेगात्मक)
   - क्या ये सचमुच के बच्चे थे, मासी? (कथनात्मक)
   - अरुणा सवेरे से ही उसका सामान ठीक कर रही थी। (इच्छार्थक)
2. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्य प्रयोग इस प्रकार कीजिए कि अर्थ स्पष्ट हो जाए–
   - ढिंढोरा पीटना
   - छूट देना
   - बड़बड़ करना
   - सूरत निकल आना
   - आँखें फैली की फैली रहना
   - कायल होना

8.5 आपने क्या सीखा

1. कहानी पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, वैज्ञानिक आदि किसी भी पक्ष से जुड़ी हुई हो सकती है।
2. कहानी और उपन्यास में अंतर होता है। कहानी किसी एक घटना पर आधारित होती है, जबकि उपन्यास में कई घटनाएँ सम्मिलित होती हैं।
3. मुख्यतः किसी भी कहानी के छह तत्त्व होते हैं:

   1. कथावस्तु अथवा कथानक
   2. चरित्र-चित्रण
   3. देशकाल और वातावरण
   4. कथोपकथन या संवाद
   5. भाषा-शैली,
   6. उद्देश्य।

   परंतु कभी-कभी विषयानुसार कोई तत्त्व नहीं भी होता।
4. 'दो कलाकार' कहानी का क्रम इस प्रकार है–
   - चित्रा और अरुणा दो अच्छी दोस्त। हॉस्टल में एक साथ रहना।
   - चित्रा का अपना नया चित्र अरुणा को दिखाना।
   - चित्रा का एक प्रतिभाशाली कलाकार होना।
   - अरुणा का गरीबों के बच्चों को पढ़ाना और फुलिया दाई के बच्चे को बचाने का प्रयास करना।
   - चित्रा का म त भिखारिन और उसके बच्चों का चित्र बनाना और विदेश गमन।
   - चित्रा का देश-विदेश में ख्याति प्राप्त करना।
   - अरुणा का म त भिखारिन के बच्चों का गोद लेना।
   - दोनों सखियों का मिलन और एक की श्रेष्ठता।
5. कहानी के संवादों से दोनों सखियों की उपहास व त्ति की झलक मिलती है।
6. संवाद छोटे, मुहावरेदार, असरदार और सरल हैं।
7. भाषा आत्मीयता और सहजता के गुणों से युक्त है।

8.6 योग्यता विस्तार

1. **लेखक परिचय**

   मन्नू भंडारी नए दौर के कहानीकारों में अग्रणी स्थान रखती हैं। इनका जन्म 3 अप्रैल 1931 ई० को भानपुरा, राजस्थान में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अजमेर में हुई। काशी हिंदू विश्वविद्यालय से हिंदी में एम. ए. करने के बाद कलकत्ता में अध्यापन-कार्य करने लगीं। कुछ समय बाद इनकी नियुक्ति दिल्ली विश्वविद्यालय में प्राध्यापिका के पद पर हो गई। आपने अधिकतर सामाजिक और मनोवैज्ञानिक लेखन किया है। आपके प्रमुख कहानी संग्रह हैं– *'मैं हार गई', 'एक प्लेट सैलाब', 'तीन निगाहों की एक तस्वीर', 'यही सच है'* आदि। इनके *'महाभोज'* और *'आपका बंटी'* प्रसिद्ध उपन्यास हैं।' 2006 में सलाका सम्मान से अलंकृत।
2. सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार प्रेमचंद की सुप्रसिद्ध कहानियाँ–'पंच परमेश्वर', 'दो भाई', 'सुजान भगत', 'घर जमाई', 'बड़े भाई साहब' आदि में से कुछ कहानियाँ ढूँढ़ कर पढ़िए।

3. हिंदी पत्र-पत्रिकाओं से किसी एक कहानी को पढ़कर तत्त्वों के आधार पर उसकी विवेचना कीजिए।

8.7 पाठांत प्रश्न

1. चित्रा चित्रकला से जुड़ी है और अरुणा समाज-सेवा से। क्या इस द ष्टि से अरुणा को भी कलाकार माना जा सकता है? यदि नहीं, तो शीर्षक की सार्थकता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. इस कहानी के प्रारंभ, विकास और अंत के संबंध में अपने विचार प्रकट कीजिए।
3. क्या अरुणा को भी 'कलाकार' कहा जाना चाहिए अपने उत्तर का तर्क सहित विवेचन कीजिए।
4. अरुणा को बच्चे क्यों बुलाने आए?
5. अरुणा देर रात हॉस्टल में कहाँ से लौटी थी और क्यों?
6. देर रात आने पर अरुणा ने भोजन क्यों नहीं किया?
7. कहानी में से उन पक्तियों को छाँटिए जो कहानी के उद्देश्य को स्पष्ट करती हैं।
8. म त भिखारिन और उसके सूखे शरीर से चिपके हुए दो बच्चों वाली घटना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्यों है? विवेचन कीजिए।
9. अरुणा और चित्रा में से यथार्थवादी कौन हैं और आदर्शवादी कौन? उदाहरणों से अपने मत की पुष्टि कीजिए।
10. अरुणा में कौन से गुण थे जिनसे प्रिंसिपल तथा वार्डन भी उसका रौब मानती थीं।
11. कहानी में आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया गया है, सिद्ध कीजिए।
12. आज मानव ने पर्यावरण के साथ छेड़-छाड़ की है, जिस कारण से प्रकृति को अनेक विद्रूप स्थितियों का सामना करना पड़ता है। जगह-जगह बाढ़ आने के अन्य कारणों के बारे में पता लगाकर लिखिए।
13. बाढ़ की सूचना पाने पर एक सभ्य नागरिक के रूप में आपकी क्या भूमिका रहेगी?
14. आपको पुस्तक मेले में एक रोता हुआ बच्चा मिलता है तब आप क्या करें, विस्तार से लिखिए।
15. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–
...1947... मनिहारी (तब पूर्णियाँ अब कटिहार जिला!) के इलाके के गुरुजी के साथ गंगा मैया की बाढ़ से पीड़ित क्षेत्र में हम नाव पर जा रहे हैं। चारों ओर पानी ही पानी। दूर, एक 'द्वीप' जैसा बालूचर दिखायी पड़ा। हमने कहा, वहाँ चलकर जरा चहलकदमी करके टाँगें सीधी कर लें। भादुड़ीजी कहते हैं–"किन्तु, सावधान!... ऐसी जगहों पर कदम रखने के पहले यह मत भूलना कि तुमसे पहले ही वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे" और सचमुच–चींटी-चींटे से लेकर साँप-बिच्छू और लोमड़ी–सियार तक यहाँ पनाह ले रहे थे... भादुड़ीजी की हिदायत थी–हर नाव पर 'पकाही घाव' (पानी में पैर की उँगलियाँ सड़ जाती हैं। तलवों में भी घाव हो जाता है।) की दवा, दियासलाई की डिबिया और किरासन तेल रहना चाहिए और, सचमुच हम जहाँ जाते, खाने-पीने की चीज़ से पहले 'पकाही घाव' की दवा और दियासलाई की माँग होती...1949... उस बार महा-नन्दा की बाढ़ के घिरे वापसी थाना के एक गाँव में हम पहुँचे। हमारी नाव

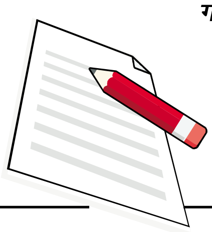

टिप्पणी

पर रिलीफ़ के डॉक्टर साहब थे। गाँव के कई बीमारों को नाव पर चढ़ाकर कैंप में ले जा। एक बीमार नौजवान के साथ उसका कुत्ता भी 'कुँई-कुँई' करता हुआ नाव पर चढ़ आया। डॉक्टर साहब कुत्ते को देखकर 'भीषण भयभीत' हो गए और चिल्लाने लगे–''आ रे! कुकुर नहीं, कुकुर नहीं...कुकुर को भगाओ!'' बीमार नौजवान छ्प-से पानी में उतर गया–''हमारा कुकुर नहीं जायेगा तो हमहुँ नहीं जाएगा।'' फिर कुत्ता भी छपाक् पानी में गिरा–''हमारा आदमी नहीं जाएगा तो हम हूँ नहीं जाएगा''...परमान नदी की बाढ़ में डूबे हुए एक 'मुहसरी' (मुहसरों की बस्ती) में हम राहत बाँटने गए। खबर मिली थी वे कई दिनों से मछली और चूहों को झुलसाकर खा रहे हैं। किसी तरह जी रहे हैं।

(क) लेखक नाव पर सवार होकर कहाँ और क्यों जा रहा था?

(ख) 'वहाँ हर तरह के प्राणी शरणार्थी के रूप में मौजूद मिलेंगे'–इससे आपने क्या समझा?

(ग) बीमार नौजवान और कुत्ता दोनों पानी में कूद गए, इसके पीछे एक–दूसरे के प्रति जो भावनाएँ हैं, उन्हें शब्दबद्ध कीजिए।

(घ) निम्नलिखित संवाद को मानक भाषा में लिखिए–

''हमारा कुकुर नहीं जाएगा तो हमहुं नाहीं जाएगा।''

8.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (घ) 5. (क) 6. (घ) 7. मित्रता का
8. फुलिया दाई के 9. विदेश

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

8.1 1. (क) 2. (ग) 3. (क) 4. (ग)

5. क्योंकि यह दोनों सखियों में अपने-अपने कामों को उत्तम सिद्ध करने के लिए चली आ रही लंबी बहस का निष्कर्ष सामने रखता है।

8.2 1. (ग) 2. (ग) 3. प्राचीनकाल

8.3 1. (ग) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग)

5. उन्हें अपने साथ रखा और सभ्य बनाया।

8.4 1. (ग) 2. (ख)

8.5 1. (क) 2. (क) क्यों बड़-बड़ करती है (ख) ऐ ! रूनी उठ।

8.6 भाषा कार्य स्वयं कीजिए।

301hi09

9
अच्छा कैसे लिखें

आप अब तक भाषा के लिखित रूप का प्रायः प्रयोग करने लगे हैं। फिर भी जब भी कभी नया लिखना होता है तो हम दस बार सोचते हैं क्या लिखें, कैसे लिखें, शुरू कैसे करें– जैसे–किसी को पत्र लिखने में, प्रश्नों के उत्तर लिखने में, अनुच्छेद या छोटा निबंध लिखने में, या ऐसी ही कुछ अन्य परिस्थितियों में। कभी-कभी आप किसी घटना से इतना प्रभावित होते होंगे कि आपका मन उसके बारे में लिखने को करता होगा। शायद आप डायरी में नियमित रूप से अपने विचारों को लिखते हों। या कभी-कभी अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हों। इस प्रकार 'लिखना' कौशल के अनेक रूप हैं।

आप सहमत होंगे कि 'बोलना' जितना आसान है, 'लिखना' उतना नहीं, किंतु लिखने का प्रभाव बोलने से अधिक स्थायी और प्रभावी होता है। परंतु शर्त यह है कि हमें प्रभावी ढंग से लिखना आए। इस पाठ में हम यही सीखेंगे कि प्रभावी ढंग से कैसे लिखा जा सकता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- सही शब्द-चयन, वाक्य-विन्यास और वाक्य-गठन करना सीख सकेंगे;
- शुद्ध हिंदी-लेखन के गुर पहचान सकेंगे;
- लिखित अभिव्यक्ति को मुहावरे, लोकोक्ति आदि के प्रयोग से अधिक प्रभावी बना सकेंगे;
- विरामचिह्न आदि का सही प्रयोग सीख सकेंगे;
- अपने विचार को सही क्रम देते हुए उन्हें अपनी भाषा में ढाल सकेंगे;
- अनुच्छेद, कहानी, आलेख आदि को पढ़कर अपने शब्दों में लिख सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप 9.1

कंप्यूटर प्रयोग संबंधी दस वाक्य का एक अनुच्छेद लिखिए –

....

....

....

9.1 भावों की अभिव्यक्ति और भाषा

कहते हैं कि खुशी बाँटने से बढ़ती है और दुख कहने से कम हो जाता है। दैनंदिनी कार्यकलापों में सुख या दुख की जो अनुभूति होती है, वह अनायास ही व्यक्त हो जाती है। बीमारी के समय हमारे मुँह से 'हे राम!' ध्वनि या दुख की अवस्था में कई बार 'ओ!माँ' निकल पड़ता है। इसी तरह के अनेक ध्वनि-संकेतों की सहायता से हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए भाषा का सहारा लेते हैं। यह तो हुई मौखिक अभिव्यक्ति की बात। अब लिखित अभिव्यक्ति के लिए हमें चाहिए कि विचारों को क्रमबद्धता देकर अपने भावों के अनुकूल भाषा का प्रयोग करें। शुद्ध, स्वाभाविक और स्पष्ट लिखने का प्रयास करें। कई बार ऐसा होता है कि हम सोचते तो बहुत हैं मगर ठीक से लिख नहीं पाते। इसके लिए सबसे पहले किसी भी विषय पर हमें एकाग्रभाव से चिंतन-मनन की ज़रूरत होती है। फिर वही चिंतन जब हमारे दिमाग में परिपक्व हो जाता है, तब विचारों के अनुकूल शब्दों का चुनाव किया जाता है और भाषा के सहारे लिखा जाता है। उदाहरण के रूप में आप प्रसन्नता और आश्चर्य की लिखित भाषा में अभिव्यक्ति देखें –

प्रसन्नता अरे ! मैं परीक्षा में उत्तीर्ण हो गया।
देखो, यह तस्वीर क्या कमाल की है !

आश्चर्य अरे! यहाँ आकर मसूद ने मुझे अचरज में डाल दिया !

ये तो हुई भाव या विचार प्रकट करने की बात, मगर इन भावों की वाहिनी-भाषा के लेखन में मोटे तौर पर देखें तो मुख्यतः दो पक्ष हैं। एक तो उसका बाहरी अर्थात् स्वरूप पक्ष है, जिसमें शब्द-चयन, वाक्य-गठन, मुहावरा-प्रयोग, अभिव्यक्ति, शैली आदि आते हैं और दूसरा है भीतरी पक्ष जिसे भाव या विचार पक्ष कह सकते हैं। इसमें विचारों या भावों की गंभीरता, स्पष्टता, सरलता आदि समाहित हैं।

स्वच्छता, सुंदरता और सुडौल अक्षर-निर्माण, हाशिया छोड़कर लिखना, अक्षर, शब्द और वाक्य से वाक्य के बीच दूरी को ध्यान में रखना अत्यन्त आवश्यक है–

अच्छे लेखन की तीन शर्तें हैं–

1. लेखन प्रभावी हो।

2. जो लिखा जाए, वह सटीक हो।

3. जो लिखा जाए, वह व्याकरणिक द ष्टि से शुद्ध हो।

शुद्ध लेखन का मतलब है कि लेखन सुंदर हो, और शब्दों की वर्तनी शुद्ध हो। वाक्य की बनावट ठीक हो। उसमें व्याकरण संबंधी कोई गलती न हो। सटीक लेखन का मतलब है कि आपकी बात बिल्कुल साफ़ और स्पष्ट हो। जो आप कहना चाहते हैं, वही अर्थ निकले और वही दूसरों तक पहुँचे। इसके लिए आप सही शब्द चुनें और सही वाक्य बनाएँ। ऐसे में पढ़ने वाले को कोई उलझन नहीं होनी चाहिए। आप समझ सकते हैं कि ऐसा करने के लिए तीनों सीढ़ियाँ चढ़ना ज़रूरी है। यानी बिना शुद्ध लिखे सटीक लेखन नहीं किया जा सकता। सबसे पहले आपको शुद्ध लिखना सीखना होगा। इसके बाद ही आप सटीक लेखन का कौशल सीख पाएँगे। इसी से आपकी अभिव्यक्ति प्रभावी होगी।

9.2 शब्द से वाक्य तक

हमारी कल्पना पंख पसारती है और हमारे मन में जिन नए-नए भावों का संचार होता है उन्हें हम लिपिबद्ध करना चाहते हैं। अगर हमें शुद्ध लिखना आता ही नहीं तो हम अपने आपको अभिव्यक्त कैसे कर पाएँगे। इसके लिए हमें भाषा की सबसे छोटी इकाई वर्ण और उसके बाद शब्द से परिचित होना होगा। अगर हम सही शब्दों का चयन नहीं कर पाते तो लिखते समय वर्तनी के गलत होने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। जैसे आपने कई लोगों को यह कहते सुना होगा कि 'आपने **अस्नान किए** कि नहीं'। यही बात वह लेखन में कर जाते हैं जो कि गलत है। क्योंकि 'अस्नान' की जगह उन्हें **'स्नान'** शब्द लिखना चाहिए था। कई ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ 'स्थायी' को 'अस्थायी' की तरह उच्चारित किया जाता है, जबकि ऐसा लिखते समय अशुद्धि हो जाती है। इसी प्रकार एक उदाहरण देखें – 'माँ का दूध बच्चे के लिए पूर्ण अहार होता है'। इस वाक्य में 'अहार' के स्थान पर **'आहार'** लिखा जाएगा। कुछ लोगों की 'व' और 'ब' संबंधी अशुद्धियाँ भी लेखन में हो जाती हैं। **'वर्षा'** को 'बर्षा' और **'वनस्पति'** को 'बनस्पति' लिख जाते हैं। इसके अलावा 'श', 'ष', 'स', की अशुद्धि तो अधिकतर लोगों से हो ही जाती है। वे **'शासन'** को 'सासन', **'नमस्कार'** को 'नमश्कार' और **'कष्ट'** को 'कस्ट' लिख जाते हैं। 'ट' और 'ठ' के लेखन में भी खूब अशुद्धियाँ होती हैं। **'विशिष्ट'** के स्थान पर 'विशिष्ठ' और 'संतुष्ट' की जगह 'संतुष्ठ' लिखते हुए आपने कई लोगों को देखा होगा, जो कि गलत है। इसी तरह हमें 'क्ष' और 'छ' लिखते समय भी अशुद्धियों से बचना होगा। लोग **'क्षमा'** के स्थान पर 'छमा' या 'छिमा' लिख देते हैं। और **'कक्षा'** की जगह 'कच्छा' जबकि 'कच्छा' भिन्न अर्थ रखता है। इस तरह की अशुद्धियाँ बड़ी अशुद्धियों की श्रेणी में गिनी जाती हैं।

अक्सर आप देखते होंगे लोग बात करते समय हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी के शब्दों का बेमेल प्रयोग करते हैं। हालाँकि आजकल इस तरह की भाषा का प्रचलन बोलचाल में बढ़ता चला जा रहा है, जो कि गलत है। कुछ उदाहरण हैं, जैसे–

बिफोर कि वह कुछ बोले मैंने ऐसा कर दिया।
स्कूल जाते समय मुझे राम एंड शामू वॉक करते हुए मिल गए।

इस प्रकार दो या तीन भाषाओं के मिले-जुले शब्दों के प्रयोग को 'कोड मिश्रण' कहते हैं।

इसी तरह हमने कई लोगों को कहते सुना है कि 'मैं अपने आत्मसम्मान को ठेस नहीं पहुँचने दूँगा।' पत्र के अंत में कई लोग लिख देते हैं 'आपका भवदीय अशोक' मगर ये व्याकरण की मर्यादा की सीमा पार करने जैसा है। एक ही अर्थ देने वाले दो-दो शब्दों का प्रयोग एक ही वाक्य में नहीं होना चाहिए। यह पुनरुक्ति अथवा दुहराव दोष होता है। इसके कुछ और उदाहरण देखें–

*मुझे इसी **खतरे** का **भय** था।*
***गुनगुने गरम** पानी से नहाने में बड़ा मज़ा आता है।*
*काल**चक्र** के **पहिए** के नीचे दबकर सब समाप्त हो जाता है।*
*यह **वजह** है कि जिसके **कारण** आज तक मैं तुमसे नहीं मिला।*

अशुद्ध-भाषा, उच्चारण-दोष, वर्तनी-दोष, शब्द-प्रयोग तथा वाक्य-रचना संबंधी दोष हमारी मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में बाधक बनते हैं। शुद्ध बोलना या लिखना एक कौशल है, हुनर है। इस दौरान हम उपयुक्त शब्दों के चयन पर भी थोड़ा-सा विचार करते चलें।

उपयुक्त शब्दों का चयन

उपयुक्त शब्दों के अभाव में हम अपने विचारों या अनुभवों को व्यक्त करने में अक्षम होते हैं। हमारे मन में कोई विचार उठा और हमने उसे भाषा में अभिव्यक्त करने के लिए शब्द खोज लिए, मगर यह काम यहीं समाप्त नहीं होता। शब्दों के चयन के बाद हमें यह भी देखना होता है कि उनका मेल बैठता है कि नहीं। मान लीजिए आपको लिखना है कि 'मेरे माँ-बाप बूढ़े हो गए हैं।' इसकी जगह यदि आप लिखें कि 'मेरे मम्मी-बाप बूढ़े हो गए हैं', तो अच्छा नहीं लगेगा। मम्मी के साथ बाप का मेल नहीं बैठता। या तो 'मम्मी-पापा' लिखा जाएगा या 'माँ-बाप' या 'अम्मी-अब्बा'। यदि आप लिखें कि 'केरल में लिट्रेसी दर सबसे अधिक है।' तो यह ठीक नहीं होगा। क्योंकि यहाँ शब्दों का प्रयोग बेमेल है। 'लिट्रेसी' अंग्रेज़ी का शब्द है और 'दर' हिंदी का। यहाँ हिंदी में 'साक्षरता-दर' लिखिए या फिर 'लिट्रेसी-रेट'। एक अलग उदाहरण के तौर पर यदि हम लिखें कि 'रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों से घनघोर युद्ध किया था।' तो यहाँ 'घनघोर' शब्द का चयन अनुपयुक्त माना जाएगा। 'घनघोर' की जगह अगर हम 'घमासान' शब्द का प्रयोग करते हैं, तो यह शब्द-चयन उपयुक्त है।

एक और उदाहरण से ये बात स्पष्ट रूप से समझी जा सकती है। मान लीजिए कि आप अपने किसी मित्र से मिलने उसके छात्रावास गए और वह कमरे पर नहीं मिला। आपको उससे बहुत ज़रूरी काम था तो आप क्या करेंगे? जाहिर है आप उसके नाम एक चिट लिखकर ताले में लगा आएँगे या कमरे में डाल देंगे। मगर उस चिट पर लिखेंगे क्या?

''विनोद, विगत टू डेज से मैं तुमसे मिलना चाहता था, मगर तुम नहीं मिले। तुम्हें ज्ञातव्य हो कि आसन्न परीक्षा के मद्देनज़र मुझे तुमसे बहुत ज़रूरी काम है''। इस तरह से लिखना क्या ठीक है? नहीं—बिल्कुल नहीं। क्योंकि आप इसमें जो कहना चाहते हैं वह ठीक-ठीक व्यक्त नहीं हो पा रहा है। उपयुक्त शब्द चयन और व्यवस्थित तथा सटीक ढंग से कही बात ज़्यादा प्रभावशाली होती है। यहाँ आपकी भाषा अटपटी है, साथ ही साथ 'विगत टू डेज़' जैसे शब्दों का प्रयोग भी ठीक नहीं है। हमेशा अपनी बात सीधे और सही तरीके से कहनी और लिखनी चाहिए। चिट पर लिखना चाहिए था कि ''मित्र विनोद! पिछले दो दिनों से मैं तुमसे मिलना चाहता था। आने वाली परीक्षा के संबंध में तुमसे मिलना बहुत ज़रूरी है।''

प्रभावी लिखने के लिए हमारे पास अधिक-से-अधिक शब्दों की जानकारी हो और उनका हम ठीक-ठीक प्रयोग भी कर सकें। आवश्यकता हो तो हम उपसर्गों-प्रत्ययों की सहायता से नया शब्द भी बना सकें। पर्याय, विलोम, द्विरुक्ति, अनेक के लिए एक शब्द आदि जो हमने पढ़े हैं, वे यहीं काम आएँगे। शब्द-चयन की शिथिलता और चुस्ती को आप नीचे दिए गए उदाहरणों से समझ सकते हैं।

'क'

- शिमला पहाड़ पर बसा देखने योग्य स्थान है।
- आपके माँ-बाप क्या करते हैं?
- वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ पगला गई।
- जीवन और मरना तो लगा ही रहता है।
- चुटकुला सुनकर मैं लोटपोट हो गया।
- माँ प्रातःकाल शिवलिंग पर गंगा का पानी चढ़ाती हैं।

'ख'

- शिमला दर्शनीय पर्वतीय स्थल है।
- आपके माता-पिता क्या करते हैं?
- वर्षों बाद बेटे को देखकर माँ विभोर हो गई।
- जीवन-मरण (जीना-मरना) तो लगा ही रहता है।
- चुटकुला सुनकर मैं हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया।
- माँ प्रातःकाल शिवलिंग पर गंगाजल चढ़ाती हैं।

उपर्युक्त वाक्यों को पढ़ते हुए आप स्वयं समझ गए होंगे कि **स्तंभ 'क'** की अपेक्षा **स्तंभ 'ख'** के वाक्य अधिक चुस्त और प्रभावी हैं। आप कारण भी ढूँढ़ सकते हैं। पहले वाक्य में 'पहाड़ पर बसा' के लिए पर्वतीय और **'देखने योग्य'** के लिए दर्शनीय कर दिया है। 'बाप' शब्द का प्रयोग अब सभ्य संदर्भों में नहीं होता, इसलिए माता-पिता ठीक है। इसी प्रकार **'माँ पगला गई'** की अपेक्षा **विभोर हो गई** या **गद्‌गद हो गई** या **प्रसन्न हो गई** ठीक है।

चौथे वाक्य में शब्द का युग्म अटपटा है—या तो दोनों तत्सम हों (जीवन-मरण) या दोनों तद्भव (जीना-मरना)। इसी प्रकार अगले वाक्यों में भी आप स्वयं कारण तलाश सकते हैं।

क्रियाकलाप 9.2

विशेषण का प्रयोग

विशेषण हमारी भाषा और अभिव्यक्ति को जानदार और प्रभावी बनाते हैं। विशेषण के बिना भाषा नीरस लगती है। उदाहरण देखिए:

(क) मेरी भाभी अच्छी है। उनकी आँखें अच्छी हैं। उनका माथा अच्छा है। माथे पर बिंदी अच्छी लगती है। वह कानों में झुमके पहनती हैं और नाक में लौंग। भाभी के गाल भी बड़े अच्छे हैं...

(ख) मेरी भाभी बहुत सुंदर हैं। वे चौड़े माथे पर बड़ी-सी बिंदी लगाती हैं। उनके बाल काले, लंबे और रेशम से मुलायम हैं। बड़ी-बड़ी चमकीली गोल आँखें तो गज़ब की हैं। तीखी नाक में छोटी-सी जगमगाती लौंग और बड़े कानों में लंबे-से झूलते झुमके बड़े प्यारे लगते हैं। उनके पके सेब जैसे गुलाबी और कोमल गालों के क्या कहने!

चित्र 12.1

स्वयं अनुभव कीजिए कि उपर्युक्त दो वर्णनों में से कौन-सा प्रभावी है और क्यों ? उत्तर है— केवल विशेषणों के कारण। आप उपयुक्त विशेषणों का जितना अच्छा प्रयोग करेंगे, आप की रचना उतनी ही प्रभावी बनेगी।

बायीं ओर दिए हुए विशेषणों की सहायता से किसी पर्वतीय स्थल के सौंदर्य पर कुछ वाक्य लिखकर देखिए:

शीतल, मंद, सुगंधित, हरा, बड़े-बड़े, स्वर्णिम चाँदी-से, ठिठुरता, सरल, कलकल करती, रंगीन, नीला, शुभ्र, उज्ज्वल, गहरी, ऊँची

....

....

....

....

- भावों को व्यक्त करने में कुछ **तुलनाएँ/उपमाएँ** भी लेखन को सुंदर और प्रभावी बनाती हैं, जैसे:
  - आँखें — झील-सी, कमल-सी, हिरनी-सी, मछली-सी, गिद्ध-सी
  - नाक — तोते-सी, चोंच-सी, गिद्ध-सी

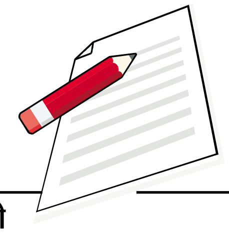

- दाँत – मोती-से, सीप-से
- हवा – तीर-सी, आग-सी
- क्रोध – आग-सा, उबाल-सा
- कंठ अथवा स्वर – कोयल-सा, गधे-सा
- रंगरूप (गोरा) – चाँद-सा, चंपे-सा, सोने-सा, गुलाब-सा, मक्खन-सा
- रंगरूप (काला) – आबनूस-सा, साँझ-सा, तवे-सा
- बुद्धिमान – चाणक्य-सा, कलिदास-सा, ब हस्पति-सा
- बलवान – भीम-सा, अर्जुन-सा, हनुमान-सा, गामा-सा
- धनी – कुबेर-सा

क्रियाकलाप 9.3

निम्नलिखित के लिए तीन-तीन उपयुक्त विशेषण लिखिए

मज़दूर	....	....	....
कविता	....	....	....
चाँद	....	....	....
कंप्यूटर	....	....	....
पर्वतशिखर	....	....	....
कहानी	....	....	....

मुहावरों का प्रयोग

शब्दों का मेल बिठाकर व्याकरणिक शुद्धि को जान भर लेने से काम खत्म नहीं होता। क्योंकि हम अपनी लेखन शैली को प्रभावशाली और चुस्त बनाना चाहते हैं। इसलिए हमें सरल मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करना होगा। प्रसंगानुसार शब्दों, मुहावरों तथा सूक्तियों के बल पर आपकी भाषा सुंदर हो जाती है। अक्सर आपने लोगों को यह कहते सुना होगा कि 'यह तो मेरे बाएँ हाथ का खेल है।' तो इसका मतलब है कि यह काम बहुत सरल है। यहाँ कहने वाले ने अपनी बात मुहावरे के सहारे आसानी से व्यक्त कर दी है और यह कथन असरदार भी है। मगर मुहावरे के सटीक प्रयोग का भी हमें ध्यान रखना है। मान लीजिए कि किसी बात पर आप अपने मित्र रफ़ीक से सहमत नहीं है और आपने लिख दिया कि ''रफ़ीक की बात मेरे दिमाग में नहीं पचती'' तो यह गड़बड़ प्रयोग होगा। आप बता सकते हैं क्यों? एक तो यहाँ मुहावरे का प्रयोग सटीक नहीं है, दूसरा यहाँ मात्र 'असहमत' शब्द लिखने से बात स्पष्ट हो जाती है। दिमाग में तो कुछ भी नहीं पचता, हाँ पेट में खाना ज़रूर पचता है। लेकिन आप यह तो नहीं लिखना चाहते कि 'रफ़ीक की बात मेरे पेट में नहीं पची' इसका अर्थ बदल जाएगा। दिमाग में बात नहीं घुसती है, ऐसा आपने लिखा नहीं है। इसलिए यह प्रयोग

सटीक नहीं हुआ। मान लीजिए कि आपके बड़े भाई आपसे बहुत नाराज हैं। आपने लिखा कि क्रोध में उनका चेहरा कमल के समान लाल हो गया यह उपमा सटीक नहीं है। कमल के फूल से कोमलता का भाव आता है। यह उपमा सुंदरता बताने के लिए दी जा सकती है। इस तरह मुहावरों का सटीक प्रयोग किया जाना चाहिए।

विशेषणों की ही भाँति मुहावरे भी भाषा को जीवंत और प्रभावी बनाते हैं। मुहावरों में कम शब्दों में अधिक अभिव्यक्ति देने की क्षमता होती है और मुहावरा-प्रयोग से जो प्रभाव पड़ता है, वह केवल सीधे-सादे शब्दों से नहीं पड़ता। नीचे दिए गए वाक्यों को देखिए:

'क'

- इस बच्चे की शैतानियों से **मैं बड़ी परेशान हूँ।**
- दादाजी इतने **बूढ़े और कमज़ोर हो चुके हैं कि कभी भी म त्यु हो सकती है।**
- भारतीय सैनिक **लड़ने में जीवन की चिंता नहीं करते।**
- जॉर्ज **अविश्वसनीय लगने वाली गप मारता है।**
- माँ ने **मुझे डाँटा तो मैं बहुत लज्जित हुई।**

'ख'

अब उचित मुहावरों के प्रयोग से भाषा में उत्पन्न चमत्कार को देखिए:

- इस बच्चे ने **मेरी नाक में दम** कर रखा है।
- दादाजी तो **कब्र में पैर लटकाए बैठे हैं।**
- भारतीय सैनिक **सिर हथेली पर रख कर लड़ते हैं।**
- जॉर्ज **बेसिरपैर की हाँकता है।**
- माँ ने **आँख दिखाई तो मैं शर्म से गड़ गई।**

क्रियाकलाप 9.4

एक अनुच्छेद लिखिए जिसमें दिए गए विशेषणों और मुहावरों में से कम से कम पाँच का ठीक प्रयोग हुआ हो।

विशेषण – झगड़ालू, नासमझ, असहिष्णु, दूरदर्शी, भारी-भरकम, उदार, समझदार

मुहावरे – सिर झुकाना, आँख दिखाना, नौ-दो ग्यारह होना, आँखें खुलना, गड़े-मुर्दे उखाड़ना, सिर चढ़ाना, तीन-पाँच करना।

....

....

....

....

....

वाक्य-रचना

अब वाक्य-गठन के नियमों की कुछ बात कर लें। यों नियम जाने बिना भी हम वाक्य रचना करते हैं और खूब करते हैं। बच्चा या अनपढ़ व्यक्ति जब बोलता है तो व्याकरण के नियम जाने बिना बोलता है और प्रायः ठीक ही बोलता है।

पर बोलने और लिखने में थोड़ा अंतर है। बोलने में तो वक्ता प्रत्यक्ष दिखाई देता है और आवाज के उतार-चढ़ाव, पदबंधों की पुनरुक्ति, शरीर भाषा आदि के द्वारा वह अपनी बात को सफलता से समझा देता है, पर लिखने में हमारे वाक्य ही मूक प्रेषक होते हैं अतः उनमें स्पष्टता और शुद्धता आवश्यक है, वाक्यों की शुद्धता की बात करते हुए हमारा ध्यान सबसे पहले अन्विति की ओर जाता है।

अन्विति का अर्थ है ''वाक्य के भीतर पदों के परस्पर संबंध के अनुसार वाक्य में उनका स्थान।'' इसे आप यों समझ सकते हैं, निम्नलिखित वाक्य को पढ़िए–

''महात्मा गांधी का देश सदा आभारी रहेगा।'' एक तरह से देखने में वाक्य ठीक लगता है, क्रिया है–आभारी रहेगा। कौन आभारी रहेगा? देश (कर्ता); किसका आभारी रहेगा? महात्मा गांधी का; पर 'महात्मा गांधी का' पद का निकटतम संबंध है–'देश' से। इसलिए इस वाक्य का अर्थ हुआ महात्मा गांधी का देश सदा (किसी का) आभारी रहेगा। स्पष्ट है कि वक्ता/लेखक का ये मंतव्य नहीं हो सकता। यह पदों की परस्पर अन्विति ठीक न होने से हुआ है। ठीक अन्विति होगी–

देश महात्मा गांधी का सदा आभारी रहेगा।

अन्विति के प्रमुख नियमों के बारे में जानना आवश्यक है।

9.3 अन्विति संबंधी कुछ बातें

वाक्य रचना करते समय यह ज्ञान होना आवश्यक है कि कौन-सा शब्द कहाँ आएगा? उन शब्दों के ठीक-ठाक संबंध को जानने के लिए उनका एक-दूसरे से सामंजस्य ही अन्विति कहलाता है। जो लिखा जा रहा है, वह व्याकरण-सम्मत होना चाहिए इसलिए पूरे वाक्य में तालमेल बैठाना बहुत ज़रूरी है। दो शब्दों के लिंग, वचन अर्थात् पुरुष, कारक और काल की जो समानता होती है, उसे अन्विति कहते हैं, जैसे – *'छोटी लड़की रोती है।'* उदाहरण में **'छोटी'** शब्द का **'लड़की'** से लिंग और वचन का तालमेल है और **'रोती है'** शब्द लड़की से लिंग, वचन और क्रिया में अन्विति है।

9.3.1 कर्त्ता-कर्म-क्रिया की अन्विति

कई लोग 'गीता ने फल खाई' या 'राकेश ने एक कहानी सुनाया' जैसे वाक्यों का प्रयोग करते पाए जाते हैं। मगर इससे यह पता चलता है कि प्रयोग करने वाले को क्रिया, लिंग और वचन का सही ज्ञान नहीं है। इसके कुछ नियम हैं, आइए उसके बारे में कुछ जानें–

नियम के अनुसारः

कर्त्ता + कर्म + क्रिया

गीता + फल + खाना

यहाँ कर्त्ता 'गीता' स्त्रीलिंग हैं कर्म **'फल'** पुलिंग है, इसलिए क्रिया पुलिंग **'खाया'** होगी और वाक्य बनेगा – 'गीता ने **फल खाया**'।

ठीक ऐसे ही राकेश वाले दूसरे उदाहरण में कर्म स्त्रीलिंग है इसलिए क्रिया भी स्त्रीलिंग **'सुनाई'** होगी।

9.3.2 विशेष्य-विशेषण प्रयोग में अन्विति

शुद्ध लेखन के लिए वाक्यों में प्रयुक्त विशेष्य और विशेषण का ज्ञान होना हमारे लिए आवश्यक है। आपने कई प्रयोग देखे होंगे, जैसे–लाल गाय, काली बिल्ली, सफ़ेद हाथी, ऊँची दुकान, फीका पकवान, मोटा लड़का, पतली लड़की आदि। इन रचनाओं में पहला विशेषण और दूसरा विशेष्य है। किसी व्यक्ति या वस्तु के गुण दोष, रूप-रंग, आकार-प्रकार आदि की विशेषताओं का बोध कराने वाले शब्द 'विशेषण' कहलाते हैं। मतलब 'विशेषण' वह शब्द भेद है, जो संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता हो और जिसकी विशेषता बताई जा रही है उसे 'विशेष्य' कहते हैं। पहले उदाहरण में **'लाल'** विशेषण है और **'गाय'** विशेष्य।

आकारांत ('आ' ध्वनि से अंत होने वाले शब्द) विशेषण, जैसे 'गोरा', 'काला', 'पीला' आदि में सावधान रहना है।

9.3.3 संज्ञा-सर्वनाम की अन्विति

लेखन में (वाक्य बनाते समय) संज्ञा प्रयोग में भी अशुद्धि देखने को मिल जाती है, जैसे–

डाकुओं का एक गिरोह पकड़े गए।
फूलों का गुच्छा बहुत अच्छे लगते हैं।

यह वाक्य बनाने वाले की बहुत भारी भूल है। पहले वाक्य में 'पकड़ा गया' और दूसरे में 'अच्छा लगता है' का प्रयोग होना चाहिए था। क्योंकि यहाँ कर्त्ता समूह वाचक संज्ञाएँ (गिरोह, गुच्छा) हैं अर्थात् ऐसे वाक्यों में का, की के बाद में आने वाली संज्ञा कर्त्ता होती है और कर्त्ता के हिसाब से क्रिया एकवचन होगी।

9.3.4 सर्वनाम का प्रयोग

'सुमित कल सुबह आया था। सुमित हिंदी की किताब दे गया था।' इस वाक्य में दो बार सुमित आया है। यह वाक्य ठीक नहीं लग रहा है। इसमें सर्वनाम का प्रयोग करने के बाद वाक्य सही बनेगा, जैसे – *'सुमित कल सुबह आया था। वह हिंदी की किताब दे गया था।'* यहाँ सर्वनाम के प्रयोग से वाक्य सुधर जाता है। ऐसे शब्दों को 'सर्वनाम' कहते हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं।

9.3.5 कर्त्ता, कर्म क्रिया अन्विति – वाक्य में क्रिया का लिंग, वचन, पुरुष उसके कर्त्ता के अनुसार होता है, जैसे–

अशुद्ध	**शुद्ध**
• लड़का लोग गए।	• लड़का गया। लड़के गए।
• राम, लक्ष्मण और सीता गई।	• राम, लक्ष्मण और सीता गए।
• आप हमारे घर आ जाओ।	• आप हमारे घर आ जाइए। तुम हमारे घर आ जाओ।

9.3.6 'ने' और 'को' वाले वाक्यों में यह नियम कुछ बदल जाता है। आप जानते हैं कि कर्त्ता के साथ 'ने' लगाकर केवल भूतकाल का वाक्य बन सकता है, जैसे राम ने पाठ पढ़ा। इसमें क्रिया कर्त्ता के अनुसार नहीं, कर्म के अनुसार (लिंग, वचन) होती है, जैसे :

राम ने **पाठ पढ़ा**।

राम ने **पुस्तक पढ़ी**।

राम ने **पुस्तकें पढ़ीं**।

'ने' वाक्य में कर्म के साथ **'को'** लगा हो तो **क्रिया** सदा **अन्य पुरुष एकवचन** ही रहेगी; जैसे–

राम ने पाठ को पढ़ा।

राम ने पुस्तक को पढ़ा।

राम ने पुस्तकों को पढ़ा।

क्रियाकलाप 9.5

1. निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध कीजिए–

(क) हम हमारे घर जा रहे हैं। ....

(ख) वह जाएगा आज सिनेमा देखने। ....

(ग) दिल्ली राजधानी है भारतवर्ष की। ....

(घ) मोहन ने यह काम करके देना है। ....

(ङ) अजय यह पुस्तकें पढ़ीं। ....

2. निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखिए –

चहिए, मुनी, कवी, अतिथी, हानी, बिमारी, प्रभू, गनेश, शरन, रामायन, बन, साखा, शंकट, भविस्य, निष्टा, छुद्र, नछत्र, इक्षा।

9.3.7 विरामचिह्नों का ठीक प्रयोग

वाक्य का अर्थ ठीक-ठीक समझने में विराम चिह्न भी सहायक होते हैं, इसलिए अच्छी हिंदी लिखने के लिए हमें उचित स्थान पर उपयुक्त विराम चिह्न लगाना चाहिए। विराम चिह्न न लगाने से अर्थ अस्पष्ट होता है और कभी-कभी अर्थ का अनर्थ होने की संभावना भी होती है, जैसे;

- तुम उठो मत बैठे रहो। (अस्पष्ट)
- तुम उठो, मत बैठे रहो। (उठने का आदेश)
- तुम उठो मत, बैठे रहो। (न उठने का आदेश)
- राधा मोहन और कृष्णकांत पधार रहे हैं (दो लोग आ रहे हैं)
- राधा, मोहन और कृष्णकांत पधार रहे हैं (तीन लोग आ रहे हैं)

लंबे और जटिल वाक्यों में विराम चिह्नों की उपयोगिता और बढ़ जाती है, क्योंकि उन्हीं से मालूम होता है कि वाक्य का कौन-सा हिस्सा किस अंश से जुड़ा है और कहाँ किस पर कितना बल हैं।

इस तरह अच्छे लेखन के लिए ज़रूरी है कि पहले हम सही लिखें। हम पहले भी बता चुके हैं सही और शुद्ध लिखने का अर्थ है:

- **शब्दों की वर्तनी शुद्ध हो।**
- **वाक्य की रचना व्याकरण की द ष्टि से ठीक हो।**
- **विराम चिह्नों का उचित प्रयोग किया गया हो।**

9.3.8 वाक्यों के बारे में कुछ और

अच्छी हिंदी लिखने में निपुणता पाने के लिए अच्छे वाक्यों का गठन होना चाहिए। अच्छे वाक्य से तात्पर्य है—सरल, स्पष्ट, चुस्त और आकर्षक वाक्य। हमें यथासंभव जटिल वाक्य बनाने से बचना चाहिए, क्योंकि प्रायः बड़े वाक्यों में गलतियाँ होने की संभावना रहती है। बड़े वाक्य में जो कहना हो उसे दो-तीन-चार छोटे सरल वाक्यों में कह सकें तो अच्छा है। स्पष्टता के बारे में हम अनेक बार बता चुके हैं, क्योंकि अर्थ स्पष्ट होने पर ही लेखन की सार्थकता है। वाक्यों में अनावश्यक शब्द नहीं होने चाहिए और न ही अप्रचलित, कठिन या भारी भरकम शब्दों का प्रयोग। कुछ लोग समझते हैं कि जटिल, तत्सम (संस्कृत) शब्दों के प्रयोग से रोब पड़ता है, यह सच नहीं। सरलता में अनूठी सुंदरता है, स्वयं देखिए:

- वाम प ष्ठ पर लिखित तर्कों का अवलोकन करें।
  - बाईं ओर लिखे तर्क देखें।
- भारत लक्ष्यप्राप्ति के सन्निकट प्रतीत होता है।
  - भारत लक्ष्य के पास लगता है।

- महिला लेखिकाओं का सम्मेलन हुआ।
  - लेखिकाओं का सम्मेलन हुआ।
- नेताजी स्वयं अपना आत्मप्रचार करते हैं।
  - नेताजी अपना प्रचार स्वयं करते हैं।
  - नेता जी आत्मप्रचार करते हैं।

क्रियाकलाप 9.6

1. उपयुक्त स्थान पर सही विराम चिह्न लगाकर लिखिए

   एक तो यह कि आप सोच विचार कर निश्चय कर लें कि कहाँ जाना है कब जाना है और कहाँ-कहाँ घूमना है यह भी हिसाब लगाएँ कि कितना खर्च होगा फिर उसी के अनुसार छुट्टी लीजिए आरक्षण कराइए होटल बुक कीजिए या संबंधियों को बताइए जिनके साथ आप टिकना चाहते हैं

   ....

   ....

   ....

   ....

   ....

2. निम्नलिखित वाक्यों को चुस्त-दुरुस्त बनाकर लिखिए:

   (क) बीमार रोगी को काटकर रोज एक सेब खिलाइए।

   (ख) हिंदुस्तान रोज प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र है।

   (ग) पटना बिहार की राजधानी में से होकर अपनी गाड़ी जाएगी।

9.4 प्रभावी स जनात्मक लेखन

प्रश्न-पत्र के सभी प्रश्नों के उत्तर आपको लिखकर ही देने होते हैं। जो प्रश्न पाठ्यसामग्री पर आधारित हैं; उनके उत्तरों की आपने तैयारी की होती है और अभ्यास भी। इसलिए वहाँ आप प्रश्न के अनुसार तथ्य या विचार को स्मरण कर उसे क्रमिक रूप में, शुद्ध भाषा में लिख देते हैं। किंतु पत्र, भाव-पल्लवन और निबंध लिखने में आपकी मौलिकता की भी परख होती है। आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप विषय के अनुसार अपने विचारों को क्रम से प्रस्तुत करें। अर्थात् आपके विचारों में भी सरलता हो और वाक्यों में भी। मान लीजिए आप कोई यात्रा-विवरण लिख रहे हैं तो उसमें क्रम होगा–यात्रा की प्रेरणा, स्थान, कैसे गए, विशेष घटना आदि। इन्हें आप क्रम से अलग-अलग अनुच्छेदों में व्यक्त करेंगे और एक अनुच्छेद में जिस विचार पर लिख रहे हैं, उसके वाक्य भी परस्पर जुड़े होंगे। ऐसा नहीं है कि आप 'यात्रा का प्रारंभ' लिख रहे थे और अचानक गंतव्य स्थान में खरीदी किसी चीज़ के बारे में बताने लगे और फिर सह यात्रियों के बारे में।

भाव पल्लवन में भी आप चुने हुए विषय में अपने भावों का विस्तार करते हुए क्रमिकता और तारतम्यता का ध्यान रखेंगे। पल्लवन का अर्थ अनावश्यक विस्तार नहीं है। न आप अप्रासंगिक बात लिखने के लिए स्वतंत्र हैं। ऐसा करेंगे तो लेखन प्रभावी नहीं बनेगा।

पत्र में विशेषकर घरेलू पत्रों में, निजता एक प्रधान गुण होता है, इसलिए व्यक्तिगत स्नेह, लगाव का वाक्य प्रसंगानुसार ठीक बैठता हो तो देना चाहिए। जैसे *'माँ, जब से तुम गई हो पढ़ाई में मन नहीं लगता। तुम्हारी याद आती है।' 'पिताजी, आप मुंबई से मेरे लिए क्या लेकर आएँगे'* आदि।

प्रभावी लेखन वह है जिसमें

- **शब्दों का प्रयोग सटीक और वाक्यों की बनावट सुगठित होती है।**
- **आपको लिखने में आसान हो और पढ़ने वाले को समझना आसान।**
- **विचार क्रम से रखें, जिससे उसे पढ़ने में आपका मन लगे।**

क्रियाकलाप 9.7

आपने इसी पुस्तक में 'एक था पेड़ और एक था ठूँठ!' नामक पाठ अब तक पढ़ लिया होगा, उसी पाठ का एक नमूना देखिए–

अंश-1

एक दिन उसे देखते-देखते इस बात पर मेरा ध्यान गया कि यह इतना बड़ा पेड़ हवा का तेज़ झोंका आते ही पूरा-का-पूरा इस तरह हिल जाता है, जैसे बीन की तान पर कोई साँप झूम रहा हो और उसका ऊपर का हिस्सा हवा जब और तेज़ हो जाती है तो काफ़ी झुक जाता है, पर हवा के हल्का पड़ते ही वह फिर सीधा हो जाता है।

हवा मौज में थी, अपने झोंकों में झूम रही थी, इसलिए बराबर यही क्रिया होती रही और मैं उसे देखता रहा। देखता क्या रहा, उसकी झुक-झूम में रस लेता रहा। पड़े-पड़े वह पेड़ पूरा न दिखता था, इसलिए मैं पलंग से खिड़की पर आ बैठा। अब मुझे वह पेड़ जड़ से फुंगल तक दिखाई देने लगा और मेरा ध्यान इस बात की ओर गया कि हवा कितनी ही तेज़ हो, पेड़ की जड़ स्थिर रहती है–हिलती नहीं है।

अब निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़िए और दोनों में अंतर पहचान कर लिखिए–

अंश-2

स जनात्मक मस्तिष्क के कारण

स जनात्मक मस्तिष्क आत्मविमोही होता है। आत्मविमोही चिंतन में फैंटेसी जैसी प्रक्रिया का प्रभुत्व होता है। यह अपेक्षाकृत यथार्थता बहिर्भूत होता है और अंतर्मुखी रुझानों से भौतिक वस्तुओं का रूपायन-प्रत्यक्षीकरण करता है। इसमें नियंत्रण की उन प्रक्रियाओं से विराम होता है जो यर्थाथता चिंतन को संचालित करती है। अतः यह यथार्थता चिंतन से अधिक सरल तथा तार्किक सूत्रों से अनावरुद्ध है। यह अमूर्त रूपों की बजाए मूर्त रूपों की ओर उन्मुक्त होता है। मूर्तिकरण की रूपाकृतियाँ प्रत्यक्ष बिंब, रूपक साद श्य

इत्यादि हैं। इस चिंतन की चरम परिणति मायावरण तथा तंद्रामूलक बिंबावली है। इस तरह यथार्थता चिंतन के विवेकशील सत्य के विपरीत आत्मविमोही चिंतन का कलात्मक सत्य कल्पनाश्रित तथा मूर्त होता है।

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

9.5 सरल लेखन प्रभावी लेखन

निश्चित रूप से आपने पाया होगा कि पहला अनुच्छेद पढ़ने में अधिक आसान और शीघ्र ही समझ में आने वाला है, वहीं दूसरी ओर दूसरा अनुच्छेद अधिक क्लिष्ट है। वह सरलता से समझ में भी नहीं आता परंतु व्याकरणिक द ष्टि से पूर्णतः शुद्ध है। लेखन करते समय हमें इस बात का ध्यान रखना होता है कि हमारे मन में जो भाव या विचार हों, वे बिल्कुल स्पष्ट हों, उन्हें व्यक्त करने के लिए हमें प्रतीकों, मुहावरों और कहावतों का प्रयोग करना होता है। लेकिन हमारी बात दूसरों को तभी समझ में आएगी जब पढ़ने वाला भी उन प्रतीकों या मुहावरों को समझता हो। और हम भी उसका ठीक-ठीक प्रयोग करें। जैसे यदि आप लिखें कि *'राम दौड़ता हुआ डॉक्टर के पास गया'* तो इसे सभी पाठक समझ लेंगे। वे दौड़ने की क्रिया आँखों से देखते हैं इसलिए अनुमान लगा सकते हैं कि राम किस तरह से या किस तेज़ी से गया होगा। इस तरह आप पाठक को एक जानकारी देते हैं। लेकिन इसकी जगह यदि आप लिखते हैं कि *'राम तीर की तरह डॉक्टर के पास गया'* ''तो आप राम के तेज़ दौड़ने के बारे में अपनी राय बता रहे हैं। मान लीजिए आपने दूसरे मुहावरे का प्रयोग किया *''राम आँधी की तरह डॉक्टर के पास गया।''* यह मुहावरा सटीक नहीं है, क्योंकि पाठक को भ्रम हो सकता है कि राम ने डॉक्टर के यहाँ जाकर अव्यवस्था फैला दी। जैसे आँधी आती है और चीज़ों को अव्यवस्थित या अस्त-व्यस्त कर देती है। इन सभी बातों का तात्पर्य है कि भावों और विचारों को व्यक्त करते समय अधिक सावधानी बरतनी ज़रूरी होती है।

अब तक आप जान चुके हैं कि कुछ भी लिखने से पहले आपके मन में कोई बात या विचार आता है। उसे व्यक्त करने के लिए आप शब्द चुनते हैं। जब एक या दो शब्दों से वह बात व्यक्त नहीं हो पाती, तब आप उन शब्दों के सहारे ऐसा वाक्य बनाते हैं जिससे पाठक आपकी बात ठीक-ठाक समझ लें, जैसे–आपको अपना नाम बताना है तो आप लिखते हैं कि 'मेरा नाम रामचंद्र है।' लेकिन एक वाक्य में बात पूरी नहीं हो तो आपको कई वाक्य बनाने होंगे। सारे वाक्य आपसे संबंधित होंगे। यदि ये वाक्य सिलसिलेवार बनाए जाएँ तो कई वाक्यों को मिलाकर एक अनुच्छेद या पैरा बन जाता है। अच्छे लेखन का तकाजा है कि आपके वाक्य क्रमवार और छोटे-छोटे हों। जैसे– आप लिखें कि *''मैं राधोपुर में रहता हूँ। मेरे पिता का नाम श्री शंकरदास है। मैंने दसवीं तक पढ़ाई की है। मेरी माता जी प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका हैं। मेरा नाम रामचंद्र है।''*

यहाँ सभी वाक्य ठीक हैं, लेकिन उन्हें सिलसिलेवार ढंग से नहीं रखा गया है। इसलिए सुगठित और सरल वाक्यों के बावजूद पूरा अनुच्छेद प्रभावशाली नहीं लगता है। वह अनगढ़ और अटपटा लगता है। इसे यों लिखना बेहतर होगा–

'मेरा नाम रामचंद्र दास है। मेरे पिता का नाम श्री शंकर दास है। मैं राधोपुर का रहने वाला हूँ। मैंने दसवीं तक पढ़ाई की है। मेरी माँ प्राइमरी स्कूल में शिक्षिका हैं।

यह अनुच्छेद का स्वाभाविक विकास है। इसलिए बेहतर और प्रभावशाली लगता है।

जब एक अनुच्छेद में आपकी बात पूरी नहीं होती है तो आप दूसरे और फिर तीसरे अनुच्छेद की रचना करते हैं। जैसे परिचय के बाद आप को अपने शौक या हॉबी के बारे में भी बताना हो। इसके बाद आपको अपनी इच्छा या कार्यक्षेत्र के बारे में बताना हो। इस तरह कई अनुच्छेद मिलकर एक निबंध बन जाता है। लेकिन हर अनुच्छेद अलग-अलग किसी एक पक्ष या विषय पर केंद्रित होता है। ये विषय मूल विषय के ही अलग-अलग हिस्से होते हैं जैसे, अपने बारे में ही लिखना हो तो पहले परिचय, फिर हॉबी या कैरियर की जानकारी देनी आवश्यक होगी। यदि शिक्षा वाले अनुच्छेद में परिवार की बात और कैरियर वाले अनुच्छेद में गाँव की चर्चा करेंगे तो आपका आलेख अरुचिकर और अटपटा हो जाएगा।

9.6 आपने क्या सीखा

1. सबसे पहले अपनी बात व्यक्त करने के लिए हम सही शब्द की तलाश करते हैं।
2. जब सिर्फ़ शब्दों से काम नहीं चलता तो अपनी बात दूसरों को समझाने के लिए हम वाक्य गढ़ते हैं।
3. जब हमारी बात एक वाक्य में पूरी नहीं होती तो हम अनुच्छेद या पैरा बनाते हैं।
4. जब एक अनुच्छेद में भी हमारी बात पूरी नहीं समाती तो हम कई अनुच्छेद वाला निबंध या आलेख तैयार करते हैं।
5. लेखन के समय हम विषय का ध्यान रखते हैं।
6. प्रयोजन और पाठक का भी ध्यान रखते हैं। अर्थात् क्यों लिख रहे हैं और पढ़ने वाला कौन है, इस बात का ध्यान अवश्य रखना आवश्यक है।
7. हम यह भी ध्यान रखते हैं कि बातें उपयुक्त क्रम से रखी जाएँ और एक अनुच्छेद की बात दूसरे अनुच्छेद में गडमड न हों या उनका दुहराव न हो।

अच्छे लेखन के लिए हमेशा ध्यान रखें कि–

- आप क्या किसके लिए लिख रहे हैं।
- लिखते समय ध्यान में रहे कि आप क्यों लिख रहे हैं।
- लेखन विषय के अनुरूप है अथवा नहीं।
- तथ्यों का क्रम ठीक है अथवा नहीं।
- आपके शब्दों का चुनाव और प्रयोग सटीक है अथवा नहीं।
- आपकी भाषा शुद्ध है अथवा नहीं।
- विराम चिह्नों का प्रयोग ठीक ढंग से हुआ है अथवा नहीं।

9.7 योग्यता विस्तार

1. दैनिक जीवन के अनुभवों को आधार बनाकर अपनी एक डायरी लिखना प्रारंभ कीजिए।
2. देश में आज़ादी के बाद से आज तक हुई प्रगति का विवरण अपने शब्दों में लिखिए।

9.8 पाठांत प्रश्न

1. अपने किसी किशोर मित्र के बारे में पाँच अनुच्छेद वाला एक निबंध लिखिए।
2. अपने गाँव की विशेषताओं के बारे में चार अनुच्छेद वाला एक आलेख तैयार कीजिए जो स्थानीय विधायक को भेजा जाना है।
3. नीचे दिए गए चित्र को देखकर शहर में विविध प्रकार के प्रदूषण – वायु, ध्वनि आदि की समस्या पर अपने विचार लिखिए।

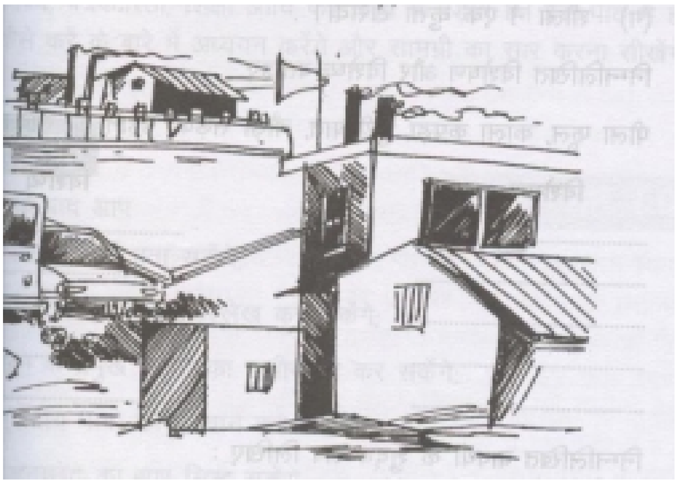

9.2

4. निम्नलिखित अनुच्छेद को पढ़कर विराम–चिह्न लगाइए–

   सुनील मेरी बात सुनो जो मनुष्य बैठा रहता है उसका भाग्य उसके साथ बैठा रहता है वह जब उठता है उसका भाग्य उसके साथ उठता है जब वह सोता है उसका भाग्य उसके साथ सोता है जब वह चलता है उसका भाग्य उसके साथ चलता है इसलिए भ्रमण करो

5. निम्नलिखित बिंदुओं पर आधारित एक कहानी लिखिए –

   (क) शोभना नाम की एक गाँव की चहेती, प्यारी, महत्त्वाकांक्षी लड़की

   (ख) शोभना की शादी बड़ी धूमधाम से होना

   (ग) उसका शहर जाना

(घ) सावन, तीज, त्योहार के अवसर पर गाँव में सभी सखी-सहेलियों को उसकी कमी का एहसास होना।

(ङ) कुछ महीनों बाद शहर से शोभना के जल-मरने की खबर

(च) कारण – ससुराल, दहेज का लालच

6. निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ बताते हुए उनका वाक्यों में उचित प्रयोग कीजिए–

(क) अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना

(ख) आसमान से बातें करना

(ग) गागर में सागर भरना

(घ) सिर आँखों पर बिठाना

7. निम्नलिखित वाक्यों की अन्विति शुद्ध कीजिए।

(क) राम ने बाँसुरी बजाया, लड़की ने केला खाई।

(ख) रमेश ने जलेबी खाया, रानी ने धन्यवाद दी।

(ग) शीला ने एक कुत्ता खरीदी।

8. निम्नलिखित विशेषण और विशेष्य बताइए

पीला फूल, काला कपड़ा, बुरी बात, चौड़ी सड़क, नहाने का साबुन।

विशेषण	**विशेष्य**
....	....
....	....
....	....
....	....
....	....

9. निम्नलिखित वाक्यों के शुद्ध रूप लिखिए :

(क) लड़कों की सभा हो रहा था।

(ख) लड़कियों की दल जा रहा है।

10. सर्वनाम का प्रयोग कर निम्नलिखित वाक्यों को सुधारिए:

(क) राम से कहना कि राम शाम को अवश्य आ जाए।

(ख) आज विद्यार्थियों ने घोषणा कर दी है कि विद्यार्थी कल से विद्यालय नहीं आएँगे।

9.9 उत्तरमाला

क्रियाकलापों के उत्तर स्वयं लिखिए।

10

301hi10

सार कैसे करें

किसी सामग्री का सार लिखना एक उपयोगी कला है, जिसका हमारे जीवन में बहुत महत्त्व है। सार लेखन में किसी विस्त त विषय-वस्तु या अंश के मूल भावों को कम-से-कम शब्दों और वाक्यों में लिखा जाता है। सार लेखन की आवश्यकता कार्यालय, वाणिज्य, पत्रकारिता, शिक्षा आदि कई क्षेत्रों में पड़ती है। इस पाठ में हम सार-संक्षेपण कैसे करें के बारे में अध्ययन करेंगे और सामग्री का सार करना सीखेंगे।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप

- सार-संक्षेपण का अर्थ बता सकेंगे;
- सार लेखन के उपयोग का उल्लेख कर सकेंगे;
- सार लिखने के प्रमुख चरणों का सूचीकरण कर सकेंगे;
- मूलभाव (केंद्रीय भाव) की पहचान कर सकेंगे;
- दिए गए अनुच्छेद का सार लिख सकेंगे;
- मूलभाव के आधार पर सार के शीर्षक की पहचान कर सकेंगे;
- कार्यालयी कामकाज में सार लेखन का आवश्यकतानुसार उपयोग कर सकेंगे;
- कार्यालयी पत्रों, टिप्पणियों और रिपोर्टों का सार लेखन कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

हमारी मुक्त शिक्षा पत्रिका के इस प ष्ठ का चित्र ध्यान से देखिए और मोटे अक्षरों में दी गई सामग्री को पढ़ने का प्रयास कीजिए–

आलोचनात्मक चिंतन क्षमता

10.1 सार क्या है?

आपने ताज़ा-ताज़ा मक्खन खाया होगा। आप यह भी जानते होंगे कि मक्खन कैसे निकाला जाता है? दही को राई से बिलोने पर उसका तत्त्व भाग ऊपर आ जाता है। यही प थक् करने पर मक्खन कहलाता है। यह मक्खन दही का सार कहलाता है। जिस प्रकार जमी हुई दही को मथकर मक्खन निकाला जाता है, उसी प्रकार चिंतन की प्रक्रिया से मथ कर किसी भी सामग्री में से सार निकाला जाता है।

भाषा के संदर्भ में भी सार यही है। अपनी बात (या कथ्य) को प्रभावी और रोचक बनाने और उसे पाठकों की समझ में आ सकने योग्य बनाने के लिए लेखक अपनी बात को दोहराता है, मुहावरे-लोकोक्तियों का प्रयोग करता है, किसी कथा-प्रसंग से उसे प्रमाणित करता है। विद्वानों की उक्तियों को उद्ध त करके उसे ठोस बनाता है, अलंकार-युक्त शब्दावली का प्रयोग करता है और कथ्य को विस्तार देता है।

यह स्थिति वैसी ही है जैसे कि हमारे पास दही है। दही को हम उसके मूल रूप में खाते हैं। हमारा शरीर विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा उसके सार को अपना लेता है और शेष सामग्री का त्याग कर देता है। ठीक इसी प्रकार किसी पाठ की सामग्री में भी सार और निस्सार बात में अंतर किया जा सकता है। जो बातें महत्त्व की होती हैं, उन्हें हम स्वीकार कर लेते हैं और शेष को छोड़ देते हैं। जैसा कि आप जानते हैं, साधु और सूप भी यही काम करते हैं: *'साधु ऐसा चाहिए, जैसा सूप सुभाय।*
सार-सार को गहि रहै, थोथा देत उड़ाय'

जैसे दही से मक्खन निकलता है, उसी प्रकार हमारा मस्तिष्क पूरी सामग्री या बातचीत में से उसका सार निकाल लेता है।

पाठगत प्रश्न 10.1

निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए और सही के सामने सही और गलत के सामने गलत लिखिए:

1. किसी विवरण की मुख्य बात सार कहलाती है। ( )
2. हमारा मस्तिष्क सभी सुनी या पढ़ी बातों का सार ग्रहण करता है। ( )
3. अपने मतलब की बातों को ग्रहण करना सार नहीं है। ( )

10.2 सार-लेखन का उपयोग

आज का जीवन बहुत भाग-दौड़ वाला है। लोगों के पास समय की कमी है। ज़माना इतनी तेज़ी से आगे बढ़ रहा है कि यदि व्यक्ति उसके साथ कदम-से-कदम मिलाकर न चले, तो वह पिछड़ जाएगा। यही कारण है कि व्यक्ति कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक बातें जान लेना चाहता है। कार्यालय में अधिकारियों के पास इतना समय नहीं होता कि वे फ़ाइलों और पत्रों को पूरी तौर से पढ़ें। वे कम-से-कम समय में अधिक-से-अधिक फाइलों और पत्रों को निपटा देना चाहते हैं। विशेष रूप से वह अधिकारी जिसने हाल ही में कार्यभार सँभाला है। उस व्यक्ति के पास इतना समय नहीं होता कि वह सभी फाइलें विस्तार से पढ़े, अतः वह संबंधित फाइल की सामग्री का सार प्रस्तुत करने का आदेश दे देता है। इस तरह की स्थितियों में सार बहुत मददगार सिद्ध होता है। सार को पढ़कर अधिकारी तुरत-फुरत ढेर सारी फाइलें निपटा देता है। सार को पढ़कर व्यक्ति अपनी रुचि का समाचार, लेख या कहानी चुन लेता है।

कुल मिलाकर 'सार' पूरी सामग्री के आधार पर तैयार किया गया वह मसौदा है, जो संक्षिप्त होते हुए भी सामग्री की सभी मुख्य बातों को अपने में समेटे होता है, जिसके आधार पर पूरी सामग्री को समझा जा सकता है।

यहाँ आपके मन में प्रश्न उठ सकता है कि जब सार-संक्षेपण का इतना महत्त्व है और सारे काम सार के आधार पर ही चल सकते हैं, तो फिर मूल सामग्री की क्या आवश्यकता और महत्ता रहती है अर्थात् फिर मूल विस्त त सामग्री क्यों पढ़ी जाती है? इससे भी और आगे बढ़कर सब लोग सार ही क्यों नहीं लिखते अपनी बातें विस्तार से क्यों लिखते हैं? आपका ऐसा सोचना सही है, परंतु मूल सामग्री का अपना अलग महत्त्व होता है जिसे किसी भी प्रकार से छोड़ा नहीं जा सकता। आइए आगे पढ़ते हैं ऐसा क्यों है।

10.3 मूल सामग्री का महत्त्व

वस्तुतः कथ्य की संवेदनशीलता, भाषा का चमत्कार, अनुभव की ऊष्मा, सार में नहीं आ

टिप्पणी

पाती। सार से काम तो चल जाता है, किंतु रचनात्मकता का उसमें अभाव रहता है। अतः कथ्य को पूरी तरह जानने और समझने के लिए, भाषा के चमत्कार का आनंद लेने के लिए और सामग्री की रचनात्मकता से विभोर होने के लिए मूल सामग्री का अध्ययन किया जाता है।

वैसे तो हमें अपनी बात कम-से-कम शब्दों में और संक्षेप में कहनी चाहिए तथा अनर्गल बातों से बचना चाहिए, किंतु भावों को पूरी तरह से प्रकट करने और उसे प्रभावपूर्ण शैली में व्यक्त करने के लिए सार उपयोगी नहीं होता। अतः सार मूल सामग्री का स्थान नहीं ले सकता। कभी–कभी किसी तथ्य की जानकारी के लिए मूल सामग्री पढ़ी जाती है।

आप जानते हैं कार्यालयों के हर अनुभाग में काम की मात्रा के अनुसार सहायक और लिपिक होते हैं, लेकिन काम को निपटाने की ज़िम्मेदारी प्रभारी अधिकारी की होती है। उसके पास इतना समय नहीं होता कि वह हर मामले से संबंधित पूर्व पत्रों और टिप्पणियों को पढ़ सके। इसलिए उनके सामने इनका सारांश ऐसे प्रस्तुत किया जाता है कि वह आसानी से सारे मामले को समझ सके। कभी-कभी मामला उच्च अधिकारियों के सामने रखना पड़ता है। उनके सामने केवल मामले का सार प्रस्तुत किया जाता है, क्योंकि उन्हें प्रतिदिन बहुत सारे मामले निपटाने पड़ते हैं। उनके लिए हर मामले को ज़बानी याद रखना मुमकिन नहीं होता।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिंदी भाषा को परिनिष्ठित रूप दिया।

कार्यालयों में कई मामले बहुत समय तक चलते रहते हैं। इस दौरान यदि संबंधित सहायक छुट्टी पर चला जाए तो फाइलें दूसरे सहायक को देखनी पड़ती हैं। उसे संबंधित पत्रों और टिप्पणियों के सार से मामले को समझने में सहायता मिलती है। सहायकों का एक अनुभाग से दूसरे अनुभाग में स्थानांतरण भी होता रहता है। नए आए सहायक को सार के द्वारा मामलों को समझने में सुविधा रहती है। उम्मीद है आप समझ गए होंगे कि कार्यालयों के काम में सार-लेखन कितना आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है।

पाठगत प्रश्न 10.2

1. निम्नलिखित कथनों में रिक्त स्थानों की पूर्ति 'उपयोग' शब्द के विभिन्न रूपों में कीजिए:

   (क) आज के गतिपूर्ण जीवन में सार की बहुत ....है।

   (ख) कार्यालयों में सार का व्यावहारिक ....होता है।

(ग) मूल सामग्री ....नहीं होती।

(घ) सार में ....बातें शामिल होती हैं।

2. सार का सर्वाधिक महत्त्व कहाँ होता है?

10.4 सामग्री में मूल विचार क्या है?

अक्सर हम दही को मथकर मक्खन निकाल लेते हैं और मट्ठे का किसी और कार्य में उपयोग करते हैं। ठीक उसी प्रकार जब हम किसी सामग्री का सार प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमारा मस्तिष्क एक मथानी का काम करता है। हम पढ़कर या सुनकर किसी सामग्री को मस्तिष्क में पहुँचाते हैं और हमारा मस्तिष्क उस मूल सामग्री के विस्तार को अलग करके सार प्रस्तुत कर देता है।

आइए देखें कि यह मूल सामग्री का विस्तार क्या है, जिन्हें मस्तिष्क अलग कर देता है। मूलभाव को स्पष्ट करने और उसे प्रभावी बनाने के लिए लेखक या व्यक्ति अनेक उपाय करता है जैसे–भाव को स्पष्ट करने के लिए वहः

- व्याख्या करता है।
- उपयुक्त उदाहरण देता है।
- भाव को दोहराता है।

और भाव को प्रभावी बनाने के लिए वहः

- कथाओं का प्रयोग करता है।
- अलंकारों का प्रयोग करता है।
- प्रसिद्ध कथनों का प्रयोग करता है।
- व्यास शैली (मूल बात को विस्तार से कहना) का प्रयोग करता है।

अपने भाव को स्पष्ट करने के लिए व्यक्ति उसकी अनेक तरह से व्याख्या करता है। ऐसे उदाहरण देता है, जिससे भाव स्पष्ट हो सके। आवश्यकता पड़ने पर वह भाव को एक या अधिक बार दोहराता भी है।

अपने भाव को प्रभावपूर्ण बनाने के लिए व्यक्ति मुहावरे, लोकोक्तियों का प्रयोग करता है, अलंकारपूर्ण भाषा का व्यवहार करता है। लोक-प्रसिद्ध या संबंधित कथाओं और चुटकुलों आदि का प्रयोग करता है, प्रसिद्ध साहित्यकारों, राजनीतिज्ञों आदि की उक्तियों का उल्लेख करता है और संवाद आदि का व्यवहार करके शैली को रचनात्मक बनाता है।

पाठगत प्रश्न 10.3

निम्नलिखित अनुच्छेद के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

व्यक्ति अपने (1) ....को स्पष्ट करने के लिए उसकी व्याख्या करता है, (2) ....

.देता है और भाव को दोहराता है। भाव को (3)................बनाने के लिए वह मुहावरे, लोकोक्तियों, (4) ...., कथाओं, प्रसिद्ध कथनों और (5)..............शैली का प्रयोग करता है।

10.5 सार-लेखन की प्रक्रिया

आइए, अब हम देखें कि अच्छा सार लिखने की प्रक्रिया क्या है और इसके लिए हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना है। सार लेखन की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं:

1. मूल सामग्री का बोध
2. मूलभाव की पहचान
3. संबंधित भावों की पहचान
4. मूलभाव को स्पष्ट करने वाली व्याख्या, उदाहरण और दोहराव की पहचान
5. मूलभाव को प्रभावी बनाने वाले तत्त्वों अर्थात् कथाओं, अलंकारों, प्रसिद्ध कथनों और रचनात्मक तथा व्यास शैली की पहचान।
6. मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए विस्तार देने वाले वाक्यों को हटाते हुए सार लेखन।

सबसे पहले हम मूल सामग्री को एक बार, दो बार या ज़्यादा बार पढ़कर उसे समझते हैं और पता लगाते हैं कि उसमें क्या कहा गया है। इसे पढ़ने और समझने के दौरान हम जान लेते हैं कि सामग्री का मूलभाव क्या है और उससे संबंधित अन्य भाव कौन से हैं।

10.6 सार-संक्षेपण की विधि

सर्वप्रथम यह जान लेना अति आवश्यक है कि किसी गद्यांश के संक्षेपण और सार में अंतर होता है। संक्षेपण किसी दी हुई सामग्री का संक्षिप्त अथवा छोटा रूप होता है परंतु सार, संक्षेपण से और भी अधिक छोटा होता है। सार और सारांश दोनों ही शब्द एक रूप में प्रयुक्त होते हैं। प्रायः मूल अवतरण से संक्षेपण एक-तिहाई होता है। इसके लिए आप सभी शब्दों को गिन कर उनमें तीन का भाग दे दें और जितनी संख्या आए उतने ही शब्दों में अवतरण का केंद्रीय भाव अपनी भाषा में लिख देना चाहिए।

कुछ विद्यार्थी अवतरण की कुछ पंक्तियाँ लिखकर समझ लेते हैं कि उनका संक्षेपण या सार तैयार हो गया, परंतु अवतरण के मूल भाव को जीवित रखते हुए शब्दों को कम करना भी एक कला है। इसकी दो विधियाँ हैं :

1. त्याग विधि
2. परिवर्तन विधि

1. त्याग विधि

इसके अंतर्गत शब्दों को छोड़ना होता है अर्थात् जो शब्द काम के नहीं हैं, जिन्हें हटा देने पर भी अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं आता, उसे त्याग विधि कहते हैं। इसमें लेखक का परिचय, पता आदि नहीं लिखा जाता। किसी बात को यदि उदाहरण आदि देकर

समझाया गया है तो उन्हें छोड़ दिया जाता है। केवल मूल संदेश ही लिया जाता है। लोकोक्ति, अलंकार आदि का प्रयोग भी त्याग दिया जाता है। वाक्यों को संकुचित करके लिखा जाता है। अनेक शब्दों के लिए एक शब्द से काम चलाया जाता है। भाषा में चुस्ती और कसाव अपेक्षित है, जिससे संक्षेपण सरल, स्वाभाविक, सुंदर और प्रभावी लगे। इन बातों का कार्यालय में पत्रों, टिप्पणियों, रिपोर्टों आदि को संक्षेप में लिखते समय भी ध्यान रखना आवश्यक होता है।

2. परिवर्तन विधि

इस विधि में मूल अवतरण की भाषा को ज्यों–का–त्यों न उतार कर कुछ परिवर्तन करना अपेक्षित है, जैसे–संधि और समास का प्रयोग करके शब्दों को कम किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'पीला वस्त्र पहनने वाले कृष्ण भगवान' के लिए हम केवल 'पीताम्बर' शब्द का प्रयोग कर सकते हैं या फिर 'राजा का पुत्र' के लिए मात्र 'राजपुत्र' कह सकते हैं। इसी प्रकार कई शब्दों के लिए एक शब्द का प्रयोग कर वाक्यों को छोटा किया जा सकता है। जैसे 'जो ईश्वर को न मानता हो' उसे 'नास्तिक' शब्द कहकर काम चलाया जा सकता है या फिर जिस पर मुकदमा चल रहा हो वह 'अभियुक्त' कहलाता है। 'अच्छे आचरण वाला' 'सदाचारी' और 'जो पढ़ा जा सके' वह 'पठनीय' आदि।

उदाहरण के लिए निम्नलिखित अवतरण में आप रेखांकित शब्दों को छोड़ सकते हैं और कुछ वाक्यों का परिवर्तन करके संक्षेपण तैयार कर सकते हैं–आइए देखें, इसे कैसे करते हैं।

सार-संक्षेपण लिखते समय प्रायः हम प्रमुख बिंदुओं अथवा शब्दों को रेखांकित कर लेते हैं और प्रमुख बिंदुओं को समेटते हुए संपूर्ण सामग्री को अपनी भाषा में एक-तिहाई शब्दों में लिखते हैं। परंतु सार लिखने की एक और विधि भी है। कभी-कभी हम मूल सामग्री को पढ़ते समय विस्तार देने वाले शब्दों को हटा देते हैं और निरर्थक शब्दों को छोड़ देते हैं। आइए, इस नियमानुसार उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद को पढ़ते हैं :

भारत का काव्यरूपी आकाशमंडल अगणित प्रभावपूर्ण जुगनुओं से देदीप्यमान है, पर तुलसीदास का तेज, उज्ज्वलता और चमत्कार से परिपूर्ण, उनकी प्रदीप्त कांति और कीर्ति बढ़-चढ़कर है। वे इस आकाशमंडल के असंख्य तारों के बीच मध्याह्नकालीन प्रचंड मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं। किसी ने कहा भी है कि तुलसीदास हमारे लिए ही नहीं, हमारी आगामी संतानों के लिए भी एक अनुकरणीय और अनुपम आदर्श हैं। जो स्थान अंग्रेज़ी साहित्य में शेक्सपीयर का है, उससे कहीं ऊँचा स्थान हम हिंदी साहित्य में तुलसीदास को देते हैं। क्यों न दें, ये कोरे कवि नहीं थे, वरन् ये थे एक अद्वितीय चरित्र वाले कवि-सम्राट, परमोच्च श्रेणी के महात्मा, राम के अनन्य भक्त, धर्म और नीति के पथ-प्रदर्शक, दार्शनिक गंभीर तत्त्वों को सरल, सरस, शब्दावली में समझाने वाले उपदेशक एवं भविष्य के गर्भ में निहित घटनाओं को बतलाने वाले महात्मा।

कुल शब्द : 134

ऊपर के अनुच्छेद में लेखक ने कवि तुलसीदास के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला है। इस भाव के स्पष्टीकरण के लिए लेखक ने कहा है कि:

1. 'वे इस आकाशमंडल के असंख्य चमकीले तारों के बीच मध्याह्नकालीन प्रचंड मार्तंड के समान प्रकाशमान हैं।' कहकर पहले वाक्य में उसने अपनी बात की व्याख्या की है।
2. एक वाक्य में लेखक ने शेक्सपीयर का उदाहरण लेकर अपनी बात को साफ किया है।
3. सातवीं पंक्ति में उच्च-प्रदर्शक कहकर तीसरी पंक्ति के भाव को दोहराया है और भाव को प्रभावी बनाने के लिए लेखक ने दूसरी पंक्ति में 'बढ़-चढ़कर होना' मुहावरे का प्रयोग किया है।
4. इसमें कथा नहीं है।
5. 'काव्यरूपी आकाशमंडल में जो स्थान अंग्रेज़ी साहित्य में महाकवि शेक्सपीयर का है, उससे कहीं ऊँचा स्थान हम हिंदी साहित्य में तुलसीदास को देते हैं' का प्रयोग हुआ है।
6. चौथे वाक्य में लेखक ने प्रसिद्ध कथन का उल्लेख किया है।
7. बहुत अधिक विशेषणों का प्रयोग और 'क्यों न दें', वाक्य लेखक की रचनात्मक शैली दर्शाते हैं।

इस तरह हमने देखा कि किस तरह किसी कथ्य में बहुत-सी बातें मूलभाव से जुड़ी रहती हैं, जिनका उपयोग भाव को स्पष्ट करने के लिए या उसे प्रभावपूर्ण बनाने के लिए किया जाता है।

आइए, अब हम उदाहरण के लिए पुनः उपर्युक्त अनुच्छेद को पढ़ते हैं। इसका मूल भाव है—**कवि तुलसीदास का प्रभावशाली व्यक्तित्व।**

इसे तीन बार पढ़ने के बाद हम कह सकते हैं कि इसका संबंधित भाव है : कवि तुलसीदास के व्यक्तित्व की विशेषताएँ, जैसे – पथ-प्रदर्शक, दार्शनिक, राम के अनन्य भक्त आदि। पिछले चरण में हम देख आए हैं कि मूल भाव को स्पष्ट करने के लिए लेखक ने कहाँ व्याख्या की है, कहाँ उदाहरण दिया है और कहाँ भाव को दोहराया है। हमने यह भी देखा था कि अपनी बात को प्रभावशाली बनाने के लिए लेखक ने कौन-कौन से मुहावरे, अलंकार, प्रसिद्‌ध कथन आदि का प्रयोग किया है और किस शैली का व्यवहार किया है।

इसके बाद मूल भाव पर ध्यान केंद्रित कर हम भाव को स्पष्ट करने और प्रभावी बनाने के लिए प्रयुक्त तत्त्वों को हटाकर **विवरणात्मक अन्य पुरुष** शैली में सार लिखते हैं। विवरणात्मक का अर्थ है कि हमें सार में केवल विवरण देना चाहिए। हमें संवाद या संबोधन आदि शैलियों के स्थान पर अन्य पुरुष शैली में सार लिखना चाहिए।

ऊपर के चरणों से गुजरते हुए हम ऊपर आए **अनुच्छेद का सार-लेखन** इस प्रकार लिख सकते हैं:

विश्व साहित्य में शेक्सपीयर के समान तुलसीदास का महत्त्वपूर्ण स्थान है। महाकवि तुलसीदास ने हिंदी काव्य में अनुपम रचनाएँ दीं। वे कवि होने के साथ-साथ चरित्रवान,

अनन्य रामभक्त, महात्मा, दार्शनिक, धर्म और नीति के पथप्रदर्शक, गंभीर बातों को सरल भाषा में समझाने वाले उपदेशक और भविष्यद्रष्टा थे।

कुल शब्द : 48

सार-संक्षेपण का आकार मूल सामग्री से लगभग एक-तिहाई होना चाहिए। आपने देखा कि मूल अनुच्छेद में 134 शब्द थे और सार हमने 48 शब्दों में लिखा। सार–संक्षेपण लिख लेने के बाद हमें एक बार उसे पढ़कर भी देख लेना चाहिए कि उसमें कोई मुख्य बात आने से तो नहीं रह गई और अनावश्यक बात तो नहीं आ गई। भाषा-शैली भी दुरुस्त कर लेनी चाहिए।

10.7 पत्रों और टिप्पणियों का सार लिखने में सावधानियाँ

पत्रों, टिप्पणियों और रिपोर्टों का सार तैयार करने में अत्यधिक सावधानी की आवश्यकता होती है। पहले पत्र या टिप्पण को ध्यान से पढ़ना चाहिए। यदि एक बार पढ़ने से बात स्पष्ट न हो तो उसे दो बार-तीन बार पढ़ना चाहिए, क्योंकि यदि पत्र में दी गई बातें ठीक से समझ न आएँ तो सार में ग़लती हो सकती है। पत्रों में सरकारी नियमों, आदेशों या पूर्व-पत्रों का उल्लेख रहता है, इसलिए यह ज़रूरी है कि उनका सार बनाने से पहले उस सामग्री को ठीक से देख लिया जाए, तभी सार ठीक और उपयोगी बन सकता है।

यह तो आप जानते ही हैं कि फाइल के दो भाग होते हैं–पत्राचार भाग और टिप्पणी भाग। पत्राचार भाग में मामले से संबंधित पत्र रखे जाते हैं और टिप्पण भाग में मामले से संबंधित टिप्पणियाँ होती हैं। ये टिप्पणियाँ ऐसे लिखी जाती हैं कि इनमें पूर्व-टिप्पणियों का सार हो जिन्हें पढ़े बिना ही आगे टिप्पण लिखा जा सके। यह भी आप जानते हैं कि कार्यालय का हर मामला टिप्पणियों की मदद से निपटाया जाता है इसलिए टिप्पण-लेखन में बहुत सावधानी अपेक्षित होती है। अगर टिप्पण लेखन में छोटी-सी चूक हो जाए तो कार्रवाई की पूरी दिशा ही बदल सकती है।

सार-लेखन के समय ध्यान रखने योग्य बातें:

1. एक, दो या अधिक बार पढ़कर मूल सामग्री को समझना।
2. सामग्री में आई व्याख्याओं, उदाहरणों और भावों के दोहराव को रेखांकित करना।
3. मूलभाव को अलग कागज़ पर लिखना।
4. मूलभाव और उससे संबंधित भावों के आधार पर विवरणात्मक अन्य पुरुष शैली में मूल सामग्री से लगभग एक-तिहाई आकार में सार-संक्षेपण लिखना।
5. आवश्यक होने पर मूल भाव के आधार पर सार संक्षेपण का शीर्षक लिखना।
6. लिखित सार को पढ़ना और देखना कि कहीं उसमें कोई मुख्य बात आने से रह तो नहीं गई है।
7. आवश्यक होने पर सार का संपादन करना। संपादन का अर्थ है कि सार में कोई मुख्य बात आने से रह गई हो तो उसे जोड़ना। यदि उसमें कोई दोहराव है तो उसे हटाना और भाषा-शैली को उपयुक्त व चुस्त बनाना।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 10.4

निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए और सही के सामने (√) और गलत के सामने (X) का निशान लगाइए।

1. सार-संक्षेपण के लिए मूल सामग्री को केवल एक बार ही पढ़ना चाहिए। ( )
2. सार में व्याख्या, अलंकार, कथाएँ आदि नहीं होनी चाहिए। ( )
3. लिखने के बाद सार को दोहराना नहीं चाहिए। ( )
4. सार अन्य पुरुष शैली में होना चाहिए। ( )

10.8 शीर्षक का चयन

निश्चित अनुच्छेद का शीर्षक छाँटना भी एक कला है। शीर्षक सदैव सामग्री पर आधारित और उसके केंद्रीय भाव से जुड़ा हुआ होना चाहिए। सार-संक्षेपण लिखने से पहले ही यदि शीर्षक स्पष्ट हो जाए तो विचारों को सार रूप में कागज़ पर उतारने में बहुत सुविधा रहती है।

शीर्षक का चुनाव करना किसी चीज़ को जैसे का तैसा रट लेने वाला कार्य नहीं है बल्कि इसका प्रयोग चतुराई के साथ करना चाहिए। यह एक प्रकार का कौशल है जिसे निरंतर अभ्यास करके विकसित किया जा सकता है। कहावत है कि *"करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान"* इसी से कला में निखार आता है।

शीर्षक चुनने के लिए आप अवतरण को दो-तीन बार पढ़ जाइए और इसके केंद्रीय भाव पर विचार कीजिए। कभी-कभी यह केंद्रीय भाव अवतरण के शुरू में ही मिल जाता है। परंतु इसका कोई कड़ा नियम नहीं है। कभी-कभी यह अवतरण के मध्य में अथवा अंत में भी हो सकता है।

शीर्षक सदैव आकर्षक और रुचिकर होना चाहिए साथ ही उपयुक्त भी हो जिसमें संपूर्ण सामग्री का तथ्य अथवा आशय स्पष्ट होता हो। एक बार शीर्षक पढ़कर पाठक यह अंदाज़ लगा ले कि अनुच्छेद में क्या होगा साथ ही शीर्षक में इतना अधिक आकर्षण हो कि वह पाठक को सामग्री पढ़ने पर मज़बूर कर दे।

एक ही अनुच्छेद के एक अथवा कई शीर्षक भी हो सकते हैं। प्रायः शीर्षक एक शब्द अथवा एक पदबंध का ही होता है। शीर्षक देने के लिए अधिकतर समास-पद्धति का प्रयोग किया जाता है। कभी कोई सूक्ति या वाक्य भी उपयुक्त शीर्षक हो सकता है। अनुच्छेद समझ कर कई बार पढ़ लेने के बाद जो ज़्यादा आपके मन को जँचे वही उपयुक्त शीर्षक होता है। उसी को स्वीकार कर लेना चाहिए। किसी सार का शीर्षक उपयुक्त पाकर ही परीक्षक सार पढ़ने की आवश्यकता का अनुभव करता है।

अतः शीर्षक बहुत सोच-विचार कर ही चुनना चाहिए। इसी से आपकी बुद्धि की परख होती है।

उदाहरण के लिए पीछे दिए गए अनुच्छेद का केंद्रीय अथवा मूल भाव है ''कवि तुलसीदास का प्रभावशाली व्यक्तित्व''। अतः शीर्षक घूम-फिर कर इसी से संबंधित होगा। यह 'कवि तुलसीदास', 'प्रभावी कवि तुलसी', 'तुलसी का हिंदी साहित्य में स्थान', 'हिंदी साहित्य का सितारा तुलसी', 'रचनाकार तुलसी' आदि हो सकते हैं। जो भी आपको उपयुक्त लगे शीर्षक दिया जा सकता है। सार-संक्षेपण तथा सारांश दोनों प्रकार के लेखन में शीर्षक का बहुत महत्त्व होता है।

पाठगत प्रश्न 10.5

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प का चुनाव करते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. किसी अवतरण का सारांश–
   (क) सामग्री का एक-तिहाई होता है। (ग) मात्र एक पंक्ति का होता है।
   (ख) सार-संक्षेपण से छोटा होता है। (घ) मूल सामग्री का आधा को होता है।
2. अनुच्छेद का शीर्षक–
   (क) अनुच्छेद के मध्य में होता है। (ग) अंत में होता है।
   (ख) प्रारंभ में होता है। (घ) कहीं भी हो सकता है।
3. शीर्षक छाँटने के लिए–
   (क) अंदाज़ा लगा लेना चाहिए।
   (ख) कड़े नियमों का पालन करना चाहिए।
   (ग) अवतरण को कई बार पढ़ना चाहिए।
   (घ) बिना सोचे-विचारे निश्चित कर देना चाहिए।
4. उपयुक्त शीर्षक की कोई चार विशेषताएँ लिखिए।

10.9 सार लेखन के नमूने

अब हम सार लेखन के **दो नमूने** दे रहे हैं। इनमें सार-संक्षेपण लेखन के नियमों को समझते हुए आप देखेंगे कि सार-संक्षेपण किस प्रकार लिखा जाता है।

क. मूल सामग्री

पुस्तक ज्ञान का भंडार होती है। इससे हमें जो लाभ मिलते हैं, वे अन्य किसी वस्तु से नहीं मिलते। इसमें समाज पर प्रभाव डालने की अद्‌भुत क्षमता होती है। वास्तव में यह एकमात्र सहज और सुलभ आधार है जिससे कोई भी व्यक्ति अत्यधिक ज्ञान प्राप्त कर सकता है। पुस्तक में एक ऐसी शक्ति है कि वह सारे देश की जनता में जाग ति का मंत्र फूँक दे, संत्रस्त मानवता में अपूर्व साहस और बल का संचार कर दे। हमारे सामने कई उदाहरण हैं। रूसो की पुस्तक फ्रांस की राज्यक्रांति का कारण बनी। महात्मा गांधी की वाणी और पुस्तकों ने समस्त भारत में अंग्रेज़ों के विरुद्ध डटकर खड़ा होने का संदेश दिया। लेनिन की पुस्तक क्रांतिकाल में रूस का मार्गदर्शक बनी। इस तरह हम देखते

हैं कि वह पलभर में राज सिंहासन को पलट देती है। मनुष्य का शरीर नाशवान है, पर उसने जो भी पुस्तक लिखी हो, उसके कारण वह उसके नाम को अमर बना देती है। हम आज भी वाल्मीकि, तुलसी और सूर आदि का नाम बड़ी श्रद्धा के साथ लेते हैं। पुस्तक अकेलेपन का साथी भी है। यह अकेले में फालतू बातों को भुलाए रखती है। हम इसकी दुनिया में खो जाते हैं। इसके अतिरिक्त यह मनोरंजन का भी श्रेष्ठ साधन है।

कुल शब्द : 205

सार-संक्षेपण का व्यावहारिक पक्ष

1. आपने उपर्युक्त मूल सामग्री (क) (13 पंक्तियों) को पढ़ा। इसमें पंक्ति 5 से 8 तक (हमारे सामने कई उदाहरण.........मार्गदर्शक बनीं) मूल-भाव को स्पष्ट करने वाले उदाहरण हैं। अतः इनका सार लेखन में कोई स्थान नहीं है।
2. पंक्ति 10-11 में 'हम आज भी ....के साथ लेते हैं' नामों को छोड़कर शेष का भाव संक्षिप्त रूप में दिया जाएगा।
3. पंक्ति 8-9 में 'इस तरह हम देखते है' और पंक्ति 13 में 'इसके अतिरिक्त' अनावश्यक है, अतः ये सार-लेखन में नहीं आएँगे।
6. मूल सामग्री में 'हम' सर्वनाम का कई बार प्रयोग हुआ है, इसे सार-लेखन में नहीं दिया जाएगा। यदि आवश्यकता पड़ी, तो इसे अन्य पुरुष सर्वनाम के रूप में बदला जाएगा।
7. शेष अंश को अपने शब्दों में संक्षेप रूप में लिखा जाएगा। इसके बाद शीर्षक दिया जाएगा।

उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखकर मूल सामग्री के मुख्य बिंदु इस प्रकार हो सकते हैं:

1. मानव समाज में पुस्तक की उपयोगिता
2. पराधीन व्यक्ति के लिए यह शक्ति, साहस और प्रेरणा का स्रोत
3. समाज-परिवर्तन और राज्यक्रांति लाने के गुणों से परिपूर्ण
4. लेखक को अमर और श्रद्धापात्र बनाना
5. अकेलेपन का साथी और मनोरंजन का साधन

इन बिंदुओं के आधार पर हम मूल सामग्री का सार-संक्षेपण इस प्रकार लिख सकते हैं:

सार-संक्षेपण

मानव समाज में पुस्तक से सर्वाधिक लाभ है। यह ज्ञान-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन है। यह पराधीन व्यक्ति के लिए अपार शक्ति, साहस और प्रेरणा का स्रोत है। इसके भीतर समाज में परिवर्तन और देश में राज्यक्रांति लाने का अलौकिक गुण भी है। पुस्तक लेखक को अमरत्व प्रदान करती है और समाज में उसे श्रद्धा का पात्र भी बनाती है। यह एकांत में मित्र होने के साथ-साथ मनोरंजन का साधन भी है।

कुल शब्द : 72

शीर्षक : पुस्तक की महत्ता

पाठगत प्रश्न 10.6

नीचे एक मूल सामग्री और उसका सार दिया गया है। इन दोनों को देखकर मुख्य बिंदु लिखिए:

मूल सामग्री

लेखक का काम काफ़ी हद तक मधु-मक्खियों के काम से मिलता-जुलता है। मधु मक्खियाँ मकरंद संग्रह करने के लिए कोसों दूर तक चक्कर लगाती हैं। वे सुंदर और अच्छे फूलों का रसपान करती हैं। तभी तो उसके मधु में संसार का सर्वश्रेष्ठ माधुर्य रहता है। यदि आप अच्छा लेखक बनना चाहते हैं, तो आपको भी यह व ति अपनानी होगी। अच्छे-अच्छे ग्रंथों का खूब अध्ययन करना होगा और उनके विचारों का मनन करना होगा। फिर आपकी रचनाओं में मधु का-सा माधुर्य आने लगेगा। कोई अच्छी उक्ति, कोई अच्छा विचार भले ही दूसरों से ग्रहण किया गया हो, लेकिन उस पर यथेष्ट मनन कर आप उसे अपनी रचना में स्थान देंगे, तो वह आपका ही हो जाएगा। मननपूर्वक लिखी हुई वस्तु के संबंध में किसी को यह कहने का साहस नहीं होगा कि यह अमुक स्थान से ली गई है या उच्छिष्ट है। जो बात आप अच्छी तरह आत्मसात कर लेंगे, वह आपकी मौलिक हो जाएगी।

कुल शब्द : 157

मुख्य बिंदु

1

2

3

4

5

सार

अच्छा लेखक मधुमक्खियों की भाँति ज्ञान का संग्राहक होता है। संसार के श्रेष्ठ ग्रंथों का विचार-मधु उसके ग्रंथों में मिलता है। अच्छा लेखक बनने के लिए श्रेष्ठ ग्रंथों का अध्ययन करना पड़ता है और उत्तम विचारों का संग्रह करना पड़ता है। इन विचारों पर यदि लेखक लिखने से पहले गंभीरतापूर्वक चिंतन और मनन करता है, तो वे उसके अपने हो जाते हैं।

कुल शब्द : 63

10.10 सार-संक्षेपण के कुछ और नमूने

अब हम सार लेखन के चार नमूने और दे रहे हैं। इनके शीर्षक भी दिए जा रहे हैं। ये कार्यालयी संदर्भ के हैं।

कार्यालय ज्ञापन

विषय : सभी सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण अनिवार्य किया जाना–केंद्रीय हिंदी समिति का निर्णय।

26 मई, 1976 को, प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय समिति की जो बैठक हुई उसमें यह निर्णय किया गया कि सभी सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण अनिवार्य कर दिया जाए। यह निर्णय भी किया गया कि हिंदी-शिक्षण-योजना के अंतर्गत इन कर्मचारियों को प्रशिक्षण देने का प्रबंध किया जाए, लेकिन इस संबंध में होने वाला पूरा खर्च संबंधित उद्यमों से वसूल किया जाए।

2. स्वायत्त संगठनों, सांविधिक निकायों और उपक्रमों के कर्मचारियों को हिंदी में प्रशिक्षण देने की यह योजना ग ह मंत्रालय के 17 सितम्बर, 1979 के कार्यालय ज्ञापन (सं. ई. 12097/49-73 हिंदी-1) के अंतर्गत सभी मंत्रालयों/विभागों आदि को भेजी गई थी। इस योजना को हाल में फिर से राजभाषा विभाग के 24 अगस्त, 1986 के कार्यालय-ज्ञापन सं. 11017/2/76 रा.भा.(डी) के अंतर्गत प्रचारित किया गया। अन्य बातों के अलावा, इस कार्यालय ज्ञापन में, उस लेख के शीर्ष का हवाला दिया गया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न स्वायत्त संगठनों आदि द्वारा प्रशिक्षण से संबंधित खर्च सरकारी खाते में जमा कराया जाना है।

3. राजभाषा-अधिनियम 1963 के अंतर्गत जो नियम बनाए गए हैं, उनके अनुसार जहाँ तक सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग का संबंध है, केंद्रीय कार्यालयों और स्वायत्त संगठनों के कार्यालयों में कोई भेद नहीं रखा गया है। सरकारी उद्यमों को भी केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की तरह ही इन नियमों के अनुसार कार्रवाई करनी होगी, इसके लिए बहुत ज़रूरी है कि सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण जल्दी-से-जल्दी दिया जाए, ताकि केंद्रीय सरकार की राजभाषा-नीति का भली-भाँति अनुपालन हो सके।

4. जैसा कि ऊपर बताया गया है कि केंद्रीय कर्मचारियों की हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत इन स्वायत्त संगठनों आदि के कर्मचारियों के प्रशिक्षण की व्यवस्था भी की जाएगी और इसके खर्च की प्रतिपूर्ति संबंधित स्वायत्त संगठनों द्वारा की जाएगी। स्वायत्त संगठनों आदि के कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण देने की योजना लगभग वही होगी, जो ग ह मंत्रालय के 17 सितम्बर, 1974 के कार्यालय ज्ञापन के अंतर्गत प्रचारित की गई है। जो संगठन स्वयं प्रबंध नहीं कर सकते, उनके लिए इस विभाग की हिंदी-शिक्षण-योजना के अंतर्गत प्रबंध किया जाएगा।

5. सभी मंत्रालयों और विभागों से अनुरोध है कि वे केंद्रीय हिंदी समिति के उपर्युक्त निर्णय को अपने नियंत्रणाधीन सभी स्वायत्त संगठनों आदि पर लागू करें और उनसे कहें कि वे अपने कर्मचारियों को हिंदी का प्रशिक्षण देने की योजना शीघ्र बना लें, जिससे हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत इन कर्मचारियों को प्रशिक्षण दिया जा सके। इसके लिए उसी प्रकार विवरण और आँकड़े तैयार किए जाएँ, जिस प्रकार केंद्रीय सरकार के कार्यालयों के लिए तैयार किए जाते हैं। सभी मंत्रालय अपने नियंत्रणाधीन स्वायत्त संगठनों के बारे में आवश्यक जानकारी एकत्रित कर इस विभाग को भी

भिजवाएँ, जिससे इन संगठनों के कर्मचारियों के लिए हिंदी, हिंदी टंकण (टाइपिंग) और हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था की जा सके।

क ख ग
सचिव (राजभाषा)
ग ह मंत्रालय, भारत सरकार

सेवा में

भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग

सार लेखन के लिए मुख्य बिंदुओं की क्रमबद्धता

ऊपर लिखे कार्यालय-ज्ञापन का सार बनाने के लिए इसे दो बार ध्यान से पढ़िए और इसकी मुख्य-मुख्य बातों को इस प्रकार लिखिए :

(क) सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों की तरह सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए हिंदी का प्रशिक्षण अनिवार्य हो।

(ख) प्रशिक्षण व्यवस्था हि. शि. यो. करेगी और उसका व्यय उद्यमों को देना होगा। बड़े उद्यमों को अपनी व्यवस्था करने की छूट रहेगी।

हि. शि. यो. 'हिंदी शिक्षण योजना' का संक्षिप्त रूप

(ग) सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के बारे में सरकारी कार्यालयों और उद्यमों में कोई भेद न रहेगा और दोनों में प्रशिक्षण की एक-सी व्यवस्था होगी।

(घ) सभी उद्यम हिंदी, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए सूचियाँ बनाकर अपने-अपने मंत्रालयों को भेज दें।

सार लेख

राजभाषा विभाग के ता. 9-11-76 के का. ज्ञा.
सं. 11017/4/76 रा. भा. वि.।

विषय : सभी सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण अनिवार्य।

26 मई, 1976 को प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में कें. हि. स. की बैठक में यह निर्णय हुआ कि सरकारी कार्यालयों के कर्मचारियों की तरह सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए भी हिंदी का प्रशिक्षण अनिवार्य हो। इस संदर्भ में ग ह मंत्रालय का ता. 17-9-74 का का. ज्ञा. और राजभाषा विभाग का 24-8-76 का का. ज्ञा. देखें।

कें. हि. स. – केंद्रीय हिंदी समिति

प्रशिक्षण की व्यवस्था हि. शि. यो. के अंतर्गत होगी और उसका पूरा व्यय संबंधित उद्यमों को इस नए ज्ञापन में दिए लेखा शीर्ष में जमा कराना होगा। बड़े उद्यमों को यह छूट रहेगी कि यदि वे चाहें तो प्रशिक्षण की व्यवस्था स्वयं कर लें।

रा.भा. अधिनियम 1963 के अंतर्गत हाल में बनाए गए नियमों के अनुसार सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग के बारे में सरकारी कार्यालयों में कोई भेद

टिप्पणी

नहीं रहेगा। ऐसी स्थिति में दोनों में हिंदी के प्रशिक्षण की समान व्यवस्था होना ज़रूरी है।

सभी मंत्रालय/विभाग अपने अधीन उद्यमों को आदेश दें कि वे अपने कर्मचारियों के हिंदी, हिंदी टंकण, हिंदी आशुलिपि के प्रशिक्षण के लिए सूचियाँ बनाकर उन्हें भेजें। विभिन्न उद्यमों से प्राप्त विवरण और आँकड़ों की एक-एक प्रति सभी मंत्रालय और रा. भा. विभाग को भिजवाएँ ताकि उनके प्रशिक्षण की उचित व्यवस्था शीघ्र ही की जा सके।

सचिव (रा. भा.)

आप देखेंगे कि ऊपर दिया हुआ सार मूल कार्यालय ज्ञापन का एक-तिहाई है। परंतु इसमें कार्यालय ज्ञापन की सभी बातें आ गई हैं। ये बातें क्रमबद्ध रूप से स्पष्ट भाषा में दी गई हैं। इस सार-संक्षेपण में अच्छे सार के सभी गुण समाहित हैं। इसमें पूर्णता, संक्षिप्तता, क्रमबद्धता, संबद्धाता और प्रभावोत्पादकता सभी बातें हैं।

10.11 रिपोर्ट का सार-लेखन

आइए, अब हम रिपोर्ट के सार-लेखन के बारे में विचार करें। किसी घटना, स्थिति या अवसर विशेष के विवरण को रिपोर्ट कहते हैं। रिपोर्ट में हर बात विस्तार से लिखी जाती है, इसलिए उसका सार अलग ढंग से बनाया जाता है। आइए इस बात पर विचार करें।

आप यह तो जानते हैं कि हर संस्था अपने कार्य का विवरण देने के लिए साप्ताहिक, मासिक, अर्धवार्षिक या छमाही और वार्षिक रिपोर्ट प्रकाशित करती है। इनमें संस्था के उत्पादन, लागत, आय-व्यय आदि से संबंधित आँकड़े होते हैं। इन रिपोर्टों में संस्था द्वारा किए गए कार्य के विवरण के साथ उसके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा भी होती है। इन नेमी रिपोर्टों के साथ विशिष्ट अवसरों की विशेष रिपोर्टें भी प्रकाशित की जाती हैं, जैसे– शताब्दी रिपोर्ट, रजत जयंती रिपोर्ट आदि। इसके अलावा संस्थाओं की प्रगति का जायज़ा लेने के लिए कभी-कभी विशेष समितियों या आयोगों का गठन किया जाता है। ये समितियाँ या आयोग अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत करते हैं, जिनमें संस्था के कार्यों और उसकी प्रगति का विवरण रहता है, इसलिए उनका सार तैयार करना आवश्यक होता है।

10.12 रिपोर्ट का सार-संक्षेपण बनाने में सावधानियाँ

यह तो आपको बताया ही जा चुका है कि सार का आकार मूल का लगभग एक-तिहाई होता है। यही बात रिपोर्ट के बारे में भी लागू होती है। रिपोर्ट की विषय-वस्तु और समय की अवधि लंबी होने के कारण उसका आकार बड़ा हो जाता है। ऐसी स्थिति में रिपोर्ट का सार बनाने में और भी सावधानी अपेक्षित होती है।

रिपोर्ट के सार में मुख्य बातों का ठीक ढंग से समावेश होना चाहिए। रिपोर्ट में अनेक विषयों से संबंधित आँकड़े विस्तार से दिए जाते हैं। सार में उनका उल्लेख संक्षेप में होना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि हम आय-व्यय के कुल आँकड़ों को लें तो रिपोर्ट में विभिन्न मदों के आय-व्यय के ब्योरे के स्थान पर आय-व्यय के कुल आँकड़े दिए जा

सकते हैं। रिपोर्ट के सार-संक्षेपण में अच्छे सार के सभी गुण होने चाहिए। संक्षिप्तता तो सार का प्राण है।

पाठगत प्रश्न 10.7

निम्नलिखित शब्दों की मदद से खाली स्थान भरिए :

(रजत, प्राण, रिपोर्ट, संक्षेप में, आकार)

1. प्रत्येक संस्था अपनी आवधिक ....प्रकाशित करती है।
2. सार में रिपोर्ट की मुख्य बातें ....रहती हैं।
3. पच्चीस वर्ष का कार्यकाल पूरा होने पर.............जयंती रिपोर्ट प्रकाशित होती है।
4. रिपोर्ट का ....बड़ा होता है।
5. संक्षिप्तता सार का ....है।

10.13 रिपोर्ट के सार-लेखन का नमूना

आइए, अब हम वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली-आयोग के रजत जयंती समारोह के अवसर पर प्रकाशित रिपोर्ट के स्थापना, उद्देश्य और कार्य से संबंधित अंश का सार तैयार करें। रिपोर्ट का आकार बड़ा होता है, अतः इसका सार हम तीन भागों में तैयार करेंगे।

रिपोर्ट : पहला भाग

हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के लिए समान पारिभाषिक शब्दावली का विकास करने के उद्देश्य से शिक्षा-मंत्रालय ने 1950 में भाषाशास्त्रियों और वैज्ञानिकों की एक पारिभाषिक शब्दावली बोर्ड की नियुक्ति की थी, जिसके मार्गदर्शन में 1952 से शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग में शब्दावली-निर्माण का कार्य आरंभ हुआ। हिंदी अनुभाग ने 1953 में पाँच विषयों की अंतिम शब्द-सूचियाँ प्रकाशित कीं। काम की बढ़ती हुई मात्रा और विविधता को देखते हुए कुछ समय बाद हिंदी अनुभाग का विस्तार करके हिंदी प्रभाग की स्थापना की गई। हिंदी प्रभाग ने 1959 तक शिक्षा के क्षेत्र के सभी प्रमुख विषयों में उच्चतर माध्यमिक और कहीं-कहीं स्नातक स्तर की शब्दावलियाँ तैयार कर लीं। इन शब्दावलियों को अंतिम सूचियों के रूप में प्रकाशित किया गया और उन पर संबद्ध विषयों के विद्वान तथा संस्थाओं के सुझाव आमंत्रित किए गए। बाद में, प्राप्त सुझावों पर विचार करके संशोधित सूचियाँ प्रकाशित की गईं।

राजभाषा आयोग की सिफ़ारिश के अनुसरण में राष्ट्रपति द्वारा अप्रैल, 1960 में जारी किए गए आदेश से हिंदी के काम में तेज़ी लाने के लिए ''केंद्रीय हिंदी निदेशालय'' की स्थापना की गई और शब्दावली-निर्माण का कार्य हिंदी प्रभाग के बजाय ''केंद्रीय हिंदी निदेशालय'' में होने लगा। निदेशालय ने तब तक प्रकाशित विभिन्न विषयों की शब्द-सूचियों को समेकित करके एक लाख शब्दों का पारिभाषिक शब्द-संग्रह सन् 1962 में प्रकाशित किया। यह शब्द-संग्रह शिक्षा मंत्रालय द्वारा नियुक्त विविध विषयों की

विशेषज्ञ समितियों द्वारा अपने-अपने विषय के संदर्भ में स्थिर किए गए पर्यायों को ब हत् संग्रह अवश्य था, पर इसमें संकलित शब्दावली में व्यापक समन्वय शेष रह गया था। फिर भी, उस समय शिक्षा के क्षेत्र में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने पर बल दिया जा रहा था, अतः इस शब्द-संग्रह ने एक सामयिक आवश्यकता की पूर्ति की और सभी विद्वानों, हिंदी-प्रेमियों और प्रशासनिक क्षेत्रों आदि ने इसका हार्दिक स्वागत किया।

रिपोर्ट के उपर्युक्त अंश को दो बार ध्यानपूर्वक पढ़कर हम इसकी प्रमुख बातों को इस प्रकार लिख सकते हैं:

(क) 1950 में शिक्षा मंत्रालय ने एक पारिभाषिक शब्दावली-बोर्ड बनाया।

(ख) 1952 में शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग में शब्दावली-निर्माण का कार्य प्रारंभ हुआ।

(ग) 1953 में पाँच विषयों की अंतिम सूचियाँ प्रकाशित हुईं।

(घ) 1959 तक सभी विषयों की उच्चतर माध्यमिक स्तर की और कुछ विषयों की स्नातक स्तर की शब्दावलियाँ बन गईं।

(ङ) राजभाषा-आयोग की सिफारिश पर अप्रैल 1960 में केंद्रीय हिंदी निदेशालय की स्थापना।

(च) 1962 में कें. हि. नि. द्वारा पारिभाषिक शब्द-संग्रह का प्रकाशन।

इसके पश्चात् ऊपर लिखी मुख्य-मुख्य बातों को सरल, सुबोध तथा स्पष्ट भाषा में क्रमबद्ध रूप से लिखकर नीचे लिखा सार तैयार किया जा सकता है:

सार-लेख

हिंदी तथा दूसरी भारतीय भाषाओं के लिए एक-सी पारिभाषिक शब्दावली बनाने के लिए शिक्षा मंत्रालय ने 1950 में विद्वानों का एक पारिभाषिक शब्दावली बोर्ड बनाया। बोर्ड की देख-रेख में 1952 से शिक्षा मंत्रालय के हिंदी अनुभाग ने शब्दावली बनाने का काम शुरू किया और 1953 में पाँच विषयों की अंतिम शब्दसूचियाँ प्रकाशित की गईं। काम बढ़ जाने से हिंदी अनुभाग को प्रभाग बना दिया गया। इसने 1959 तक सभी विषयों की उच्चतर माध्यमिक स्तर की और कुछ विषयों के स्नातक स्तर की शब्दावलियाँ बना लीं। राजभाषा आयोग की सिफ़ारिश पर राष्ट्रपति के आदेश से अप्रैल, 1960 में ''केंद्रीय हिंदी निदेशालय'' की स्थापना की गई। निदेशालय ने विभिन्न विषयों की शब्दसूचियों को समेकित करके 1962 में लगभग एक लाख शब्दों का एक पारिभाषिक शब्द-संग्रह प्रकाशित किया।

पाठगत प्रश्न 10.8

ऊपर दी हुई रिपोर्ट के आधार पर नीचे दिए वाक्यों को, उनके सामने दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर पूरा कीजिए :

1. शिक्षा मंत्रालय ने..............में एक पारिभाषिक शब्दावली बोर्ड का गठन किया था। (1947/1950)

2. हिंदी अनुभाग ने 1953 में पाँच विषयों की ....शब्द सूचियाँ प्रकाशित कीं। (अनंतिम/अंतिम)
3. हिंदी प्रभाग ने 1959 तक सभी विषयों की............स्तर की शब्दावलियाँ तैयार कर लीं। (उच्चतर माध्यमिक/स्नातक)
4. अप्रैल, 1960 में ....के आदेश से ''केंद्रीय हिंदी निदेशालय'' की स्थापना की गई। (प्रधानमंत्री/राष्ट्रपति)
5. निदेशालय ने 1962 में लगभग ....लाख शब्दों का एक पारिभाषिक शब्द-संग्रह प्रकाशित किया। (तीन/एक)
6. 1950 में पारिभाषिक शब्दावली बोर्ड .... मंत्रालय ने बनाया। (शिक्षा/ग ह)
7. राजभाषा आयोग की सिफ़ारिश पर अप्रैल, 1960 में राष्ट्रपति के आदेश से .... की स्थापना की गई। (शब्दावली आयोग/केंद्रीय हिंदी निदेशालय)

हमने रिपोर्ट के पहले अंश का सार तैयार कर लिया है। आइए, अब हम रिपोर्ट में आगे का अंश देखें।

रिपोर्ट : दूसरा भाग

इस बीच, राष्ट्रपति के आदेश से 1961 में ''वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग'' की स्थापना हुई। आयोग ने अब तक तैयार की गई समस्त शब्दावली के पुनर्निरीक्षण तथा विविध विषयों में स्नातकोत्तर स्तर की शब्दावली के निर्माण का काम अपने हाथ में ले लिया। आयोग ने सर्वप्रथम शब्दावली-निर्माण के मार्गदर्शक सिद्धांत तय किए और उस समय तक तैयार की गई शब्दावली का पुनरीक्षण करने के लिए विविध विषयों की विशेषज्ञ समितियाँ गठित कीं, जिनमें भारत के सभी भाषायी क्षेत्रों के उपलब्ध प्रतिष्ठित विद्वान तथा भाषाविद् सम्मिलित किए गए। देश के प्रबुद्ध वर्ग में शब्दावली-निर्माण के प्रति चेतना जाग्रत करने के उद्देश्य से उक्त विशेषज्ञ सलाहकार-समितियों की बैठकें और संगोष्ठियाँ देश के विभिन्न भागों में आयोजित की गईं। आयोग ने पारिभाषिक शब्दावली के भाषा वैज्ञानिक पक्ष पर विचार करने के लिए अलग से एक संगोष्ठी आयोजित की, जिनमें देश के सभी भाषायी क्षेत्रों के प्रमुख भाषाविदों ने भाग लिया। उन्होंने सभी भारतीय भाषाओं के लिए यथासंभव समान शब्दावली का निर्माण करने में उपस्थित होने वाली रूपात्मक, ध्वन्यात्मक और अर्थ संबंधी समस्याओं पर विचार करके अपनी सिफ़ारिशें प्रस्तुत कीं।

अतः आयोग का प्रमुख कार्य ऐसी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का विकास करना था, जो थोड़े-बहुत संशोधन के साथ सभी भारतीय भाषाओं द्वारा प्रयोग में लाई जा सके। इसे पूरा करने के लिए आयोग को देश में उपलब्ध शब्दावलियों का संग्रह करने, उनमें समन्वय स्थापित करने, शब्दावली-निर्माण के सिद्धांत निश्चित करने और अनुमोदित शब्द-सूचियाँ प्रकाशित करने का दायित्व सौंपा गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय स्तर के संदर्भ-ग्रंथों और पुस्तकों की रचना एवं प्रकाशन का महत्त्वपूर्ण काम भी शब्दावली-आयोग के कार्यक्षेत्र में रखा गया। इस प्रकार, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं के माध्यम से विज्ञान एवं तकनीकी विषयों के वैचारिक आदान-प्रदान और अध्ययन-अध्यापन को सुगम बनाने के लिए सभी संभव साधन जुटाना शब्दावली-आयोग का दायित्व है।

रिपोर्ट के ऊपर लिखे अंश का सार तैयार करने के लिए अंश को ध्यानपूर्वक दो बार पढ़कर इसकी प्रमुख बातों को इस प्रकार लिखा जा सकता है:

(क) 1961 में राष्ट्रपति के आदेश से 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की स्थापना।

(ख) आयोग द्वारा पुनरीक्षण समितियों का गठन।

(ग) इन समितियों की बैठकों का देश के हर कोने में आयोजन।

(घ) भाषा वैज्ञानिक पक्ष पर विचार करने के लिए भाषाविदों की अलग संगोष्ठी।

(ङ) आयोग को विश्वविद्यालय-स्तर के संदर्भ-ग्रंथों तथा पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य सौंपा गया।

अब ऊपर लिखी मुख्य-मुख्य बातों को सरल, सुबोध और स्पष्ट भाषा में क्रमबद्ध रूप से लिखकर नीचे लिखा सार तैयार किया जा सकता है:

सार लेख

राष्ट्रपति के आदेश से 1961 में 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' बनाया गया। आयोग ने शब्दावली के पुनरीक्षण के लिए कई समितियाँ बनाईं, जिनमें सभी भाषायी क्षेत्रों के विद्वानों को शामिल किया गया। देश भर में इस कार्य के प्रति रुचि पैदा करने के लिए इन समितियों की बैठकें देश के भिन्न-भिन्न भागों में आयोजित की गईं। शब्दावली के भाषा वैज्ञानिक पक्ष पर विचार के लिए भाषाविदों की एक अलग संगोष्ठी आयोजित की गई। आयोग का कार्य ऐसी वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली बनाना था जिसका थोड़े-बहुत संशोधन के बाद सभी भारतीय भाषाओं में प्रयोग हो सके। इसके साथ ही आयोग को विश्वविद्यालय-स्तर के संदर्भ ग्रंथों और पुस्तकों के प्रकाशन का कार्य भी सौंपा गया, ताकि भारतीय भाषाओं के माध्यम से उच्च शिक्षा का अध्ययन-अध्यापन हो सके।

पाठगत प्रश्न 10.9

नीचे लिखे वाक्यों में जो सही हों, उनके सामने (√) और जो गलत हों, उनके सामने (X) का निशान लगाइए:

1. राष्ट्रपति के आदेश से 1961 में 'वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग' का गठन किया गया। (   )
2. आयोग ने शब्दावली के पुनरीक्षण के लिए केवल हिंदी भाषी क्षेत्रों के विद्वानों की विशेषज्ञ समितियाँ बनाईं। (   )
3. आयोग का प्रमुख कार्य ऐसी शब्दावली बनाना था, जो थोड़े-बहुत संशोधन के बाद सभी भारतीय भाषाओं में प्रयोग में लाई जा सके। (   )
4. विश्वविद्यालय स्तर के संदर्भ ग्रंथों और पुस्तकों की रचना का काम आयोग के कार्यक्षेत्र से अलग रखा गया। (   )

10.14 आपने क्या सीखा

1. मूल सामग्री में से विस्तार देने वाली बातों, जैसे—उदाहरण, उद्धरण, अलंकार आदि को हटाकर मूल सामग्री का सार लिखा जा सकता है।
2. कार्यालयी कामकाज को जल्दी और ठीक ढंग से निपटाने के लिए पत्रों तथा टिप्पणियों का सार बनाया जाता है। सार की सहायता से एक अधिकारी कई सहायकों का काम सीमित समय में देख लेता है।
3. संक्षेपण या सार लेखन के लिए मूल सामग्री के मूलभाव को समझना आवश्यक होता है।
4. सार-संक्षेपण की उपयोगिता इस बात पर निर्भर होती है कि वह कितनी सावधानी से बनाया गया है। अतः कार्यालयी सार बनाने में पर्याप्त सावधानियाँ अपेक्षित होती हैं। मूल पत्र या टिप्पणी को गहराई से पढ़ने के बाद ही सार तैयार किया जाना चाहिए। सार बनाते समय इस बात पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए कि मूल पत्र की कोई बात संक्षिप्तता के फेर में छूट न जाए।
5. सार मूल सामग्री का लगभग एक तिहाई होता है।
6. अच्छा सार वही होता है जिसमें पूर्णता, संक्षिप्तता, स्पष्टता, संबद्धता, प्रभावोत्पादकता के गुण विद्यमान हों। अतः कार्यालयी पत्रों का सार बनाते समय हमें इस बात के प्रति सजग रहना चाहिए कि हमारा सार पूर्ण, संक्षिप्त, स्पष्ट, क्रमबद्ध और प्रभावपूर्ण हो।
7. सार-लेखन से कार्यालयी कार्यों को निपटाने में सुगमता होती है और साथ ही समय और शक्ति की भी बचत होती है। सार-लेखन से कार्यालय की लेखन-सामग्री के ख़र्च में भी किफ़ायत होती है। सहायकों के बीच कार्य के हस्तांतरण में भी सार-लेखन से मदद मिलती है। सार-लेखन से उच्च अधिकारियों का समय बचता है और वे अधिक काम निपटा लेते हैं।
8. रिपोर्ट आकार में प्रायः बड़ी होती है, इसलिए रिपोर्ट का सारांश देना आवश्यक होता है।
9. रिपोर्ट का सार बनाते समय सार के अन्य गुणों के साथ-साथ संक्षिप्तता की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए।
10. रिपोर्ट की मुख्य बातों के प्रति सजग रहना चाहिए। साथ ही हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक बातें सार में न आएँ और सभी मुख्य बातों का इसमें समावेश भी हो।
11. रिपोर्ट के सार की सहायता से रिपोर्ट की मुख्य-मुख्य बातों का ध्यान रखना सरल होता है।

10.15 योग्यता विस्तार

समाचार पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख तथा रिपोर्ट पढ़िए और उनका सार लिखने का अभ्यास कीजिए।

टिप्पणी

10.16 पाठांत प्रश्न

1. सार लेखन का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
2. कार्यालय में सार लेखन की आवश्यकता क्यों होती है?
3. सार-संक्षेपण की प्रक्रिया समझाइए।
4. कार्यालयी पत्रों का सार बनाते समय क्या-क्या सावधानियाँ अपेक्षित होती हैं?
5. एक अच्छे सार-संक्षेपण में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
6. सार-लेखन से कार्यालयी कार्य निपटाने में क्या सुविधाएँ होती हैं?
7. रिपोर्ट का सार लिखते समय किन-किन बातों का विशेष ध्यान रखना चाहिए?
8. नीचे लिखे कार्यालय ज्ञापन का सार तैयार कीजिए:

सं. 21034/17/82
भारत सरकार
ग ह मंत्रालय

राजभाषा विभाग (ख) नई दिल्ली, ता. 5.1.84

कार्यालय ज्ञापन

विषय : स्वायत्त संगठनों, सांविधिक नियमों एवं सरकारी उद्यमों के कर्मचारियों के लिए हिंदी प्रशिक्षण की व्यवस्था–पाठ्य–पुस्तकों की उपलब्धि के बारे में।

मुझे इस विभाग के कार्यालय ज्ञापन सं. ई-12047 /49/73-हिंदी दिनांक 17. 9.84 की ओर सभी मंत्रालयों/विभागों का ध्यान आकर्षित करने का निदेश हुआ है। इस कार्यालय ज्ञापन में बताया गया है कि सभी स्वायत्त संगठनों, सांविधिक निकायों एवं सरकारी उद्यमों के अहिंदी भाषी कर्मचारियों को हिंदी में काम करने के लिए हिंदी प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहिए। उनके लिए हिंदी प्रशिक्षण कार्यक्रम सरकारी कर्मचारियों की तरह चलाए जाने की अथवा हिंदी शिक्षण योजना के अधीन प्रशिक्षण-केंद्र खोलने की व्यवस्था की गई है। समय-समय पर इस विभाग के ध्यान में यह लाया गया है कि संगठनों के कर्मचारियों को प्रशिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तकें उपलब्ध नहीं हो पातीं, जिसके कारण उन्हें प्रशिक्षण प्राप्त करने में कठिनाई होती है। इस समस्या पर इस विभाग में विचार किया गया है। यह निर्णय लिया गया है कि प्रयोग के तौर पर सरकारी उद्यमों/स्वायत्त संगठनों तथा सांविधिक निकायों को फिलहाल तीन वर्ष के लिए अपने कर्मचारियों के प्रशिक्षण के लिए पाठ्य-पुस्तकें स्वयं मुद्रित कराने की अनुमति दे दी जाए, ताकि उन्हें पुस्तकें प्राप्त करने में कोई कठिनाई न हो। वे कृपया मुद्रण के पश्चात् निम्नलिखित जानकारी इस विभाग को उपलब्ध कराएँ:

(1) हर पाठ्यक्रम की कितनी पुस्तकें मुद्रित हुई हैं?

(2) मुद्रित पुस्तकें कितनी-कितनी और किन-किन कार्यालयों में वितरित की गई हैं।

(3) पुस्तक के भीतरी प ष्ठ पर 'प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, फरीदाबाद द्वारा मुद्रित, तथा नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली द्वारा प्रकाशित' के स्थान पर 'चेयरमैन/मैनेजिंग डाइरेक्टर (उपक्रम/संस्थान का नाम) द्वारा अपने कर्मचारियों के हिंदी प्रशिक्षण के लिए मुद्रित' लिखा जाए।

क ख ग
संयुक्त सचिव (राजभाषा)
ग ह मंत्रालय, भारत सरकार

सेवा में
भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग

9. निम्नलिखित अनुच्छेद का मूल भाव और संबंधित भाव लिखिए :

मेरी समझ में केवल मनोरंजन काव्य का साध्य नहीं है। कविता पढ़ते समय मनोरंजन अवश्य होता है, पर उसके उपरांत कुछ और होता है। मनोरंजन करना कविता का प्रधान गुण है, जिससे वह मनुष्य के चित्त पर अपना प्रभाव जमाकर उसे अपने वश में किए रहती है, उसे इधर-उधर जाने नहीं देती। यही कारण है कि नीति और धर्म-संबंधी उपदेश चित्त पर वैसा असर नहीं करते, जैसा कि काव्य या उपन्यास से निकली हुई शिक्षा असर करती है। कविता अपनी मनोरंजन-शक्ति के द्वारा पढ़ने या सुनने वाले का चित्त उचटने नहीं देती, जिनके हृदय में मर्मस्थानों का स्पर्श है। स ष्टि में मानवीय गुणों का प्रसार करती है।

10. निम्नलिखित अनुच्छेद में आई व्याख्या, उदाहरण और दोहराव को रेखांकित कीजिए और भावों को प्रभावी बनाने वाले तत्त्वों को लिखिए।

यह कुतूहल देखकर मैं दंग रह गया। यही वह गरीब है, जो कई महीने पहले सरलता और दीनता की मूर्ति था, जिसे चपरासियों से अपने हिस्से की रकम माँगने का साहस न होता था, जो दूसरों को खिलाना भी न जानता था, खाने का तो जिक्र ही क्या। यह स्वाभावांतर देखकर अत्यंत खेद हुआ। इसका उत्तरदायित्व किसके सिर पर था। मेरे सिर जिसने उसे चग्घड़पन और धूर्तता का पहला पाठ पढ़ाया था। मेरे चित्त में प्रश्न उठा—इस काईयाँपन से, जो दूसरों का गला दबाता है, वह भोलापन क्या बुरा था, जो दूसरों का अन्याय सह लेता था। वह अशुभ मुहूर्त था, जब मैंने इसे प्रतिष्ठा-प्राप्ति का मार्ग दिखाया, क्योंकि वास्तव में वह उसके पतन का भयंकर मार्ग था। मैंने बाह्य प्रतिष्ठा पर उसकी आत्मप्रतिष्ठा का बलिदान कर दिया।

11. नीचे दी हुई 'वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग' की रिपोर्ट के अंश का सार तैयार कीजिए।

भारतीय भाषाएँ और शिक्षा-माध्यम विषय पर सम्मेलन

पारिभाषिक शब्दावली और विश्वविद्यालय-स्तर के इतने ग्रंथों के निर्माण के बाद यह उपयुक्त समझा गया कि भाषाशास्त्रियों, शिक्षाविदों और ग्रंथ-अकादमियों के निदेशकों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन बुलाया जाए, जिसमें इस बात का जायज़ा लिया जाए कि हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाएँ उच्च स्तर तक की शिक्षा का माध्यम बनने के लिए कितनी समर्थ हो चुकी हैं और उनके रास्ते में यदि कोई बाधाएँ हैं, तो वे क्या हैं और उनके निराकरण के क्या उपाय हैं। यह सम्मेलन नवंबर,1983 में नई दिल्ली में आयोजित हुआ और इसका उद्घाटन महामहिम राष्ट्रपति ज्ञानी जैल सिंह ने किया। इस सम्मेलन में जो विचार-विमर्श हुआ तथा निबंध प्रस्तुत किए गए, उन्हें पुस्तकाकार मुद्रित करा दिया गया है। सम्मेलन की सिफ़ारिशों का अनुसरण करते हुए शब्दावली-आयोग ने अपनी भावी योजनाएँ निश्चित की हैं, जिनका संक्षिप्त उल्लेख किया जा रहा है।

भावी योजनाएँ

प्राध्यापकों के लिए शब्दावली-कार्यशाला

प्रायः यह कहा जाता है कि विद्यार्थी हिंदी माध्यम से पढ़ने में इसलिए प्रव त्त नहीं होते कि उनके अध्यापक कक्षाओं में उस स्तर के लेक्चर नहीं दे पाते, जिस स्तर से अंग्रेज़ी माध्यम के प्राध्यापक देते हैं। हिंदी माध्यम के प्राध्यापकों की मुख्य कठिनाई यह है कि उन्हें अपने विषय की हिंदी शब्दावली के ठीक-ठीक प्रयोग का समुचित ज्ञान तथा अभ्यास नहीं हो पाता। साथ ही, उनकी भाषागत सामर्थ्य भी सीमित होती है। अतः शब्दावली आयोग ने सातवीं पंचवर्षीय योजना में प्राध्यापकों के लिए ऐसी कार्यशालाएँ आयोजित करने का प्रस्ताव किया है, जिनसे शब्दावली के उचित प्रयोग के विषय में उनकी दक्षता में व द्धि हो और अपने विषय को पढ़ाने की भाषा-सामर्थ्य भी बढ़े। ये कार्यशालाएँ विश्वविद्यालय और प्रमुख महाविद्यालयों में आयोजित की जाएँगी, जिनमें विशिष्ट भाषण देने के लिए ऐसे वरिष्ठ प्राध्यापक आमंत्रित किए जाएँगे, जो सफलतापूर्वक हिंदी माध्यम से कक्षाएँ ले रहे हैं।

त्रैमासिक पत्रिकाओं का प्रकाशन

विद्यार्थियों को अपने-अपने विषय की अधुनातन जानकारी देने के लिए और आयोग द्वारा निर्मित शब्दावली से परिचित कराने के लिए आयोग ज़ल्दी ही दो त्रैमासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित करेगा। एक पत्रिका विज्ञान विषयों से संबंधित होगी, जिसका प्रकाशन 'विज्ञान' शीर्षक से किया जा रहा है और दूसरी सामाजिक विज्ञानों एवं मानविकी के विषयों से। इन पत्रिकाओं के माध्यम से उच्चस्तरीय ज्ञान की अभिव्यक्ति की एक सुस्थिर शैली के विकास में सहायता मिलेगी।

भारतीय शब्दावली बैंक

भारतीय भाषाओं में अनेक आर्थिक कार्यकलाप में शिल्पियों की अपनी-अपनी शब्दावली है। इसी प्रकार मारवाड़ियों ने एक महाजनी की शब्दावली विकसित की है, जो अखिल भारतीय स्तर की कही जा सकती है। ऐसी समस्त शब्दावली के

सर्वेक्षण और संग्रह का काम शब्दावली-आयोग को सौंपा गया है। यह कार्य शीघ्र ही किया जाएगा। हमारा विचार है कि इस आयोग में भारतीय भाषाओं में उपलब्ध समस्त वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली का संग्रह हो, जो इंटरनेट से जोड़ा जाए जिससे अनुसंधान में सहायता मिले और अनेकता में एकता की पहचान हो सके।

12. निम्नलिखित लेख का सार अपने शब्दों में लिखिए तथा उपयुक्त शीर्षक भी दीजिए।

हम पहनने-ओढ़ने और सुख-सुविधाओं में कितने भी आधुनिक हो जाएँ पर स्त्रियों के प्रति सोच न जाने कब आधुनिक होगी। आज भी स्त्री भले ही कितनी विदुषी और कुशल हो जाए पर उसका परिचय ऐसा लगता है कि देह के आगे सारी खूबियाँ बौनी हो जाती हैं। शरीर आकर्षक न हो तो अंदर की खूबियों का महत्त्व न के बराबर होता है। यदि कोई हुनर प्रकाश में आ भी जाता है तो काफ़ी मशक्कत के बाद।

मैं लखनऊ शहर के गांधी भवन में एक पुस्तक के लोकार्पण के सिलसिले में गई हुई थी। वहाँ पर मुख्य अतिथि विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष और मुख्य वक्ता के रूप में अनेक विद्वान मंच पर आसीन थे तथा दर्शक दीर्घा में अनेक साहित्यकार और साहित्य प्रेमियों का जमावड़ा था। समय था मंच पर बैठे हुए लोगों का परिचय करवाने का। एक विद्वान टाइप के शख़्स दर्शक दीर्घा की आरक्षित पंक्ति से उठे और माइक पर सबका परिचय देने लगे। उन्होंने एक शायरी सुनाकर और करतल ध्वनि प्राप्त करके अपना काम (परिचय करवाने का) शुरू कर दिया। 'ये हैं हिंदी संस्थान के कार्यकारी उपाध्यक्ष और अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कवि, ये हैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी के विभागाध्यक्ष, ये हैं साहित्य प्रेमी तथा अनेक पुस्तकों के रचयिता जो कि इस समय प्रशासनिक सेवा में...।'

अब बारी थी एक महिला के परिचय करवाने की, जो वर्धा से लखनऊ पधारी थीं। इनके परिचय में माइक सँभाले माननीय ने एक शायरी पढ़ी जो कि मुझे जस की तस याद तो नहीं पर उसका अर्थ कुछ यूँ था, 'पूरे शहर में कई चेहरों को देखा पर आपके गुलाब जैसा चेहरा कहीं नहीं पाया।' मैंने सोचा ये शख़्स आगे भी कुछ परिचय देंगे पर ऐसा कुछ हुआ नहीं। उनकी इस शायरी पर खूब तालियाँ मिलीं। इसके बाद वे आगे बैठे किसी पुरुष विद्वान का विद्वता से भरा परिचय देने में लग गए। मैं यह जानने को उत्सुक थी कि मंच पर आसीन इस महिला का देह की सुंदरता के अलावा भी 'कुछ' परिचय होगा पर कोई जानकारी नहीं मिल पाई।

समझ में नहीं आता कि दिन-रात एक करके जो स्त्रियाँ पढ़ने-लिखने और उच्च पद प्राप्त करने के लिए मशक्कत करती हैं, उनकी विद्वता सौंदर्य के आगे क्यों नहीं बढ़ पाती? कोई भी ऐसा क्षेत्र बचा नहीं है, जहाँ महिलाओं को अपनी कार्य-कुशलता और विद्वता को पहचान दिलाने के लिए समझौता न करना पड़ा हो।

10.17 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

10.1 1. सही 2. सही 3. गलत

13.2 1. (क) उपयोगिता (ख) उपयोग (ग) अनुपयोगी (घ) उपयोगी
2. कार्यालयों में

13.3 1. भाव 2. उदाहरण 3. प्रभावपूर्ण या प्रभावी 4. अलंकारों 5. रचनात्मक

13.4 1. गलत 2. सही 3. गलत 4. सही

13.5 1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. आकर्षक, रोचक, केंद्रीयभाव पर आधारित उपयुक्त, तथ्यात्मक

13.6 स्वयं कीजिए

13.7 1. रिपोर्ट 2. संक्षेप में 3. रजत 4. आकार 5. प्राण

13.8 1. 1950 2. अंतिम 3. उच्चतर माध्यमिकऽ4. राष्ट्रपति 5. एक 6. शिक्षा 7. केंद्रीय हिंदी निदेशालय

11

बिहारी

301hi11

हिंदी साहित्य में भक्तिकाल के बाद रीतिकाल आता है। रीतिकाल में भक्ति और नीति की धारा तो बनी ही रही, किंतु उसकी कुछ और भी विशेषताएँ थीं– श्रृंगार-वर्णन, प्रकृति-चित्रण और भाव तथा भाषा का विलक्षण प्रस्तुतिकरण। रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी माने जाते हैं। उनकी कविता में इन सभी प्रवृत्तियों की अनोखी छटा मिलती है। अपने अद्‌भुत भाषा-सामर्थ्य से उन्होंने दोहे जैसे छोटे छंद में असीम अर्थ-संभावनाएँ भर दी हैं। इसी गुण के कारण कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।

आइए, इस पाठ में हम कविवर बिहारी की कविता के उक्त गुणों की बानगी देने वाले कुछ दोहों का आनंद लेते हैं।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप

- भक्ति में अंतरंगता के भाव का उल्लेख कर सकेंगे;
- धन के नशे के विकार पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- प्रकृति-चित्रण के सौंदर्य को उदाहरण देते हुए स्पष्ट कर सकेंगे;
- मुहावरों के काव्यात्मक प्रयोग की सराहना कर सकेंगे;
- कविता में भाषा और अलंकारों के सौंदर्य का उल्लेख कर सकेंगे;
- बिहारी के भाव-सौंदर्य और शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- समान विषय-वस्तु की अन्य कविताओं का अर्थ तथा व्याख्या कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 11.1

आप अनेक दोहे पढ़े चुके हैं। आप जानते हैं कि दोहे में 13-11, 13-11 मात्राओं की

यति से चार चरण और दो पंक्तियाँ होती हैं। मात्रा गिनने का तरीका भी आपको पता है, फिर से देखिए—

कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
।।   ।।   । ।।,   । ।   ।   ।   ।

(कुल तेरह मात्राएँ)   (कुल ग्यारह मात्राएँ)

इसी तरह निम्नलिखित दोहों की मात्राएँ गिनिए

(क) कनक-कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

(ख) सघन कुँज-छाया सुखद, सीतल सुरभि-समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।

11.1 मूलपाठ

आइए, एक बार बिहारी के दोहों को शब्दार्थ सहित पढ़ लेते हैं

1. कब को टेरत दीन रट, होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु, जगन्नाथ - जगवाय।।

2. मकराकृत गोपाल कैं, कुँडल सोहत कान।
धँस्यौं मनौ हिय-घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

शब्दार्थ

टेरत – आवाज़ देता हूँ, पुकारता हूँ
रट – स्वर, बार-बार दुहराना, विनती करना (गिड़गिड़ाना)
स्याम – श्रीकृष्ण
सहाय – सहायता करने वाले, उबारने वाले
तुमहूँ – तुमको भी
जगन्नाथ – जगत के नाथ (स्वामी), भगवान
जगवाय – जग की बाय (हवा), दुनिया की हवा

मकराकृत – मकर (मगरमच्छ) जैसी आकृति वाले
गोपाल – श्रीकृष्ण
कुँडल – कानों में पहनने वाला आभूषण
धँस्यौं – धँस गया (जीत कर कब्ज़ा कर लिया)
मनो – मानो (जैसे कि)
हिय – हृदय (दिल)
समर>स्मर – कामदेव
ड्योढ़ी – दहलीज़ (प्रवेशद्वार)
लसत – दिखाई देना, नाचना (यहाँ फहराना)
निसान – झंडा, पताका

3. जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिन आँखि लगी रहैं, आँखें लागति नाँहि।।

4. कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

5. सघन कुंज-छाया सुखद, सीतल सुरभि-समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै, वा जमुना के तीर।।

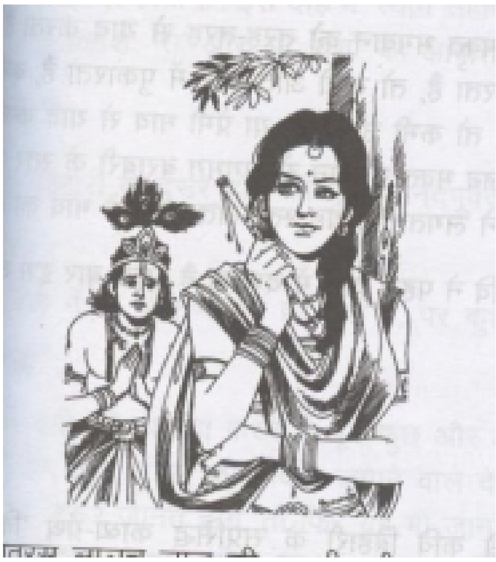

6. बतरस लालच लाल की, मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै, दैन कहै नटि जाय।।

7. कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।

टिप्पणी

शब्दार्थ

वै – उस
सुधि – 1. याद (स्मरण)
2. चेतना (होश)
जाँहि – चली जाती हैं।
आँखिन – आँखों से
आँखि – आँख
आँखें लागति
नाँहि – आँख नहीं लगती (नींद नहीं आती)
कनक – 1. सोना (धन) 2. धतूरा (एक मादक फल)
मादकता – नशा
बौरात है – बौराता है।(मदहोश हो जाता है)
बौराय – बौराता है, पागल हो जाता है।

सघन – घना
कुंज – बेल-व क्षों से घिरा स्थान
सुखद – सुख देने वाली
सीतल – शीतल – ठंडी
सुरभि – सुगंधि (त), खुशबू (दार)
समीर – हवा, वायु
मनु – मन
ह्वै जात – हो जाता है
अजौं – आज भी
वहै – वही
वा – उस
तीर – किनारा (तट)

बतरस – बात सुनने (करने) का आनंद
लाल – ललन, नायक (यहाँ श्रीकृष्ण)
मुरली – बाँसुरी
धरी – रख दी
लुकाय – छिपाकर
सौंह करैं – सौगंध लेती है।
(कसम खाती है)
भौंहनु – भौंहों में
दैन कहै – देने के लिए कहती है।
नटि जाय – नट जाती है। (मुकर जाती है)
कहलाने – (ताप से) व्याकुल होकर, (गर्मी से) बैचेन होकर
एकत – एक साथ (एक जगह)
बसत – बसते हैं, रहते हैं
अहि – साँप
मयूर – मोर
मग – हिरन
बाघ – शेर
जगत – संसार (दुनिया)
तपोवन – तपस्या करने योग्य स्थान (ऋषियों का आश्रम)
सौ – सो, जैसा
कियौ – कर दिया (बना दिया)
दीरघ – दीर्घ, लंबा, गहरा, भारी
दाघ – ताप
निदाघ – गरमी, ग्रीष्म ऋतु

11.2 बोध प्रश्न

1. कवि श्रीकृष्ण को उलाहना क्यों देता है?
2. कृष्ण के कुंडलों की आकृति कैसी है?
3. 'आँख नहीं लगना' का क्या अर्थ है?
4. कवि ने सोने और धतूरे में किसे अधिक मादक बताया है?
5. 'मन यमुना के तट पर आज भी वैसा हो जाता है' कथन से क्या आशय है?
6. राधा (या गोपी) कृष्ण की बाँसुरी को क्यों छिपा देती है?
7. कौन-सी ऋतु संसार को तपोवन-सा बना देती है?

11.3 आइए समझें

आपने भक्तिकालीन कविता पढ़ी है। भक्त भगवान को तरह-तरह से याद करता है। कभी वह उसकी लीलाओं का गान करता है, तो कभी आर्त स्वर में पुकारता है, कभी वह उसका सहचर (मित्र) हो जाता है, तो कभी उसे पति या प्रेमी भाव से याद करता है। भक्ति का एक सोपान वह भी है, जब भक्त भगवान से लगभग बराबरी के स्तर पर बात करने लगता है, उसे उलाहना देने लगता है। यह स्तर अंतरंगता के भाव का है।

ऐसी ही अंतरंग भाव की भक्ति को कवि ने पहले दोहे में दर्शाया है। एक बार इस दोहे को फिर से पढ़िए।

दोहा-1

कब को टेरत दीन रट,
होत न स्याम सहाय।
तुमहूँ लागी जगत-गुरु,
जगन्नाथ–जगवाय।।

संदर्भ

प्रस्तुत दोहा रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि बिहारी के सुप्रसिद्ध काव्य-ग्रंथ 'बिहारी सतसई' से लिया गया है।

व्याख्या-1

कवि कहता है कि मैं कब से तुम्हें दीन स्वर में पुकार रहा हूँ अर्थात् कितने लंबे समय से अपने दुखों का निवारण करने के लिए तुम्हारा स्मरण कर रहा हूँ, पर हे श्रीकृष्ण! तुम मेरी सहायता नहीं करते, मेरे दुखों को दूर नहीं करते। हे ! सारी दुनिया के गुरु, हे! जगत के स्वामी, लगता है कि तुम्हें भी इस संसार की हवा लग गई है। जैसे इस दुनिया में सब लोग अपने आप में मस्त रहते हैं, कोई किसी के दुख में हाथ नहीं बँटाता और अपनी प्रशंसा और प्रभुता का आनंद लेता रहता है, ऐसा ही तुम भी कर रहे हो।

टिप्पणी

1. इस दोहे में 'तुम' और 'जगत-गुरु' संबोधनों तथा 'सांसारिक हवा लगने' के उलाहने से भक्ति के अंतरंग भाव की पुष्टि होती है।

2. आपने, संभवतः 'बाय आना' या 'हवा लगना' जैसे प्रयोग सुने होंगे। किसी के व्यवहार में अचानक असामान्य परिवर्तन आने पर यह कहा जाता है। 'नए ज़माने की हवा लगना' भी इसी अर्थ में प्रयोग होता है यानी जब किसी व्यक्ति के आचरण में किसी प्रकार का आकस्मिक परिवर्तन होता है, तब इस मुहावरे का प्रयोग होता है। प्रस्तुत दोहे में इस मुहावरे का सुंदर काव्यात्मक प्रयोग हुआ है।

चित्र 11.2

3. आप जानते हैं कि जहाँ एक वर्ण की निरंतर आवृत्ति होती है, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है। इस दोहे में 'स्याम सहाय' और 'जगत-गुरु, जगन्नाथ-जगवाय' में क्रमशः 'स' और 'ज' वर्णों की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार है।

दोहा-2

आइए बिहारी के दूसरे दोहे को पुनः आनंदपूर्वक पढ़ते हैं।

मकराकृत गोपाल कैं,
कुँडल सोहत कान।
धँस्यौ मनौ हिय–घर समर,
ड्यौढ़ी लसत निसान।।

प्रसंग

इस दोहे में भी श्रीकृष्ण की ही चर्चा है, पर कुछ भिन्न रूप में।

व्याख्या

आइए, दोहे की व्याख्या करने से पूर्व कुछ और बातों पर ध्यान दें। क्या आप जानते हैं कि प्रेम और शृंगार की भावना जगाने वाले देवता का नाम 'कामदेव' है। हाँ, यह तो आप ज़रूर जानते होंगे, तो फिर यह भी जान लीजिए कि कामदेव के अनेक नाम हैं, जैसे, मदन, मन्मथ, रतिनाथ, अनंग, स्मर आदि। इस दोहे में 'स्मर' नाम का प्रयोग 'समर' कह कर किया गया है। कामदेव को सबसे बड़ा धनुर्धर माना जाता है, वह ऐसा योद्धा है जो प्रत्येक मनुष्य और देवताओं तक को अपने बाणों से जीतने का सामर्थ्य रखता है। कैसे होंगे भला उसके बाण? उसके बाण अत्यंत कोमल, सुंदर और सुगंधित फूल के समान हैं और उसके ध्वज पर मकर का चिह्न अंकित है। इसीलिए, उसका एक नाम 'मकरध्वज' भी है।

तो, आइए अब इस दोहे को ठीक से समझते हैं।

श्रीकृष्ण के कानों में मकर (मगरमच्छ) की आकृति के कुंडल शोभायमान हो रहे हैं। उन्हें देखकर ऐसा लगता है मानो कामदेव ने उनके हृदय रूपी घर में प्रवेश करके उसे जीत लिया है। यानी उसने कृष्ण के हृदय पर अपना कब्जा जमा लिया है और उनके कानरूपी द्वार पर विजय का प्रतीक यह ध्वज लहरा रहा है। अर्थात् नायिका के रूप-सौंदर्य के विषय में सुनकर नायक के हृदय में उसके प्रति प्रेम का अंकुरण हो गया है।

टिप्पणी

1. यहाँ कृष्ण अवतार के रूप में न होकर श्रृंगार के नायक के रूप में उपस्थित हैं। रीतिकाल की कविता में श्रृंगार-वर्णन के लिए नायक और नायिका के रूप में कृष्ण और राधा को चुना गया है, जो जयदेव की रचना 'गीत गोविंदम्' से चली आ रही परंपरा का ही निर्वाह है। बिहारी ने भी अपने अनेक दोहों में कृष्ण और राधा का इसी रूप में वर्णन किया है।
2. प्रायः कविता में आँखों को शरीर रूपी घर की ड्योढ़ी या दहलीज़ के रूप में वर्णित किया गया है, किंतु यहाँ कान ड्योढ़ी हैं। मन में प्रेम की भावना का उदय होने पर कान की लवें गरम व लाल होने लगती हैं यानी प्रेमोदय का असर व्यक्ति के कान पर लक्षित होता है।
3. यह तो आप जानते ही हैं कि जहाँ उपमेय और उपमान की तुलना के लिए 'मानो', 'मनो', 'मनु' का प्रयोग होता है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है। इस दोहे में उत्प्रेक्षा अलंकार का सौंदर्य सराहनीय है।
4. आपने यह भी पढ़ा होगा कि जब उपमेय और उपमान में अभेद की स्थिति हो तो उसे 'रूपक' अलंकार के नाम से जाना जाता है। प्रस्तुत दोहे में 'हिय-घर' (हृदय रूपी घर) में रूपक अलंकार है।

पाठगत प्रश्न 11.1

1. 'कब को टेरत...' दोहे में भक्ति का कौन-सा भाव मिलता है।

   (क) दास्य (ख) दैन्य

   (ग) साहचर्य (घ) अंतरंगता
2. 'जगत-गुरु, जगन्नाथ जगवाय' में कौन-सा अलंकार है?
3. कवि ने कृष्ण के कुंडलों की आकृति को मकर जैस क्यों कहा है?
4. 'धँस्यौ मनौ हिय-घर समर' में कौन-सा अलंकार है–

   (क) संदेह (ख) भ्रांतिमान

   (ग) उपमा (घ) उत्प्रेक्षा

क्रियाकलाप 11.2

सामान्यतः सभी के जीवन में ऐसे क्षण आते हैं जब व्यक्ति को किसी की याद सताती है, वह उसकी याद में डूबा रहता है। आपके जीवन में भी ऐसी स्थितियाँ आई होंगी। ऐसे में मन में क्या-क्या भाव उठते हैं और इस स्थिति का दिनचर्या पर क्या प्रभाव पड़ता है, कुछ पंक्तियों में लिखिए।

....

....

....

....

दोहा-3

आइए, अब देखें कि बिहारी अपने प्रिय की याद आने के प्रभाव का किस तरह वर्णन करते हैं। तीसरे दोहे को पुनः पढ़ लीजिए।

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में बिहारी ने नायिका/नायक की याद में डूबे हुए नायक/नायिका का वर्णन किया है।

व्याख्या

ज़रा ध्यान दीजिए, इस दोहे की दोनों पंक्तियों के दूसरे चरण में पहले चरण की बात का निषेध दिखाई पड़ता है– *'सुधि कीजिए'* – *'सुधि जाँहि'* और *'आँखि लगी रहै'* – *'आँखें लागति नाँहि'* कवि ने 'सुधि' और 'आँख लगना' की भिन्न अर्थ–छवियों का बहुत सुंदर प्रयोग करते हुए इस दोहे में अर्थ-चारुत्व उत्पन्न किया है। 'सुधि' शब्द का अर्थ है – स्मरण, याद और दूसरा व्यापक अर्थ है – चेतना, होश। इसी तरह आप 'आँख लगना' मुहावरे का अर्थ जानते ही हैं – किसी भी वस्तु या उद्देश्य पर ध्यान केंद्रित करना या किसी से प्रेम होना और दूसरे अर्थ में भी प्रयोग सुना या पढ़ा ही होगा – 'आँख लग गई', जिसका अर्थ है सोना। इस प्रकार 'आँखें लागति नाहिं' का अर्थ हुआ – नींद नहीं आती।

जब-जब वै सुधि कीजियै,
तब-तब सब सुधि जाँहि।
आँखिन आँखि लगी रहै,
आँखें लागति नाँहि।।

आइए, अब इस दोहे की व्याख्या करते हैं।

विरहग्रस्त नायक या नायिका अपने सखी या सखा से अपनी मनोदशा का वर्णन करता/करती है– जब-जब मुझे अपने प्रिय की याद आती है तो मैं अपनी सुधबुध भूल जाती हूँ। यानी उनका स्मरण करते ही मैं अपनी सारी चेतना, सारी सुधबुध गँवा बैठती हूँ। मेरी आँखें उसकी आँखों में ही उलझी रहती हैं। अर्थात् मेरा ध्यान उसकी आँखों में ही लगा रहता है, फलस्वरूप मुझे नींद भी नहीं आती। यह अर्थ नायिका के पक्ष में है। इसी तरह, इसके विपरीत नायक के पक्ष में भी यही अर्थ किया जा सकता है।

टिप्पणी

1. 'आँख लगना' मुहावरे की दोनों अर्थ-छवियों का एक ही पंक्ति में प्रयोग सराहनीय है।

2. 'सुधि' शब्द तथा 'आँख लगना' मुहावरे का दो-दो बार लेकिन भिन्न अर्थों में प्रयोग होने के कारण यहाँ 'यमक' अलंकार है।

3. 'जब-जब', 'तब-तब-सब' और 'आँखिन आँखि' में क्रमशः 'ज', 'ब' और 'आँ' की आवृत्ति होने से 'अनुप्रास' अलंकार है।

4. दोहे की दोनों पंक्तियों के पहले चरण और दूसरे चरण की बातें परस्पर

विरोधी लगती हैं, पर हैं नहीं। आप जानते होंगे कि जहाँ विरोध न होने पर भी विरोध का आभास होता है, वहाँ विरोधाभास अलंकार होता है।

5. प्रस्तुत दोहे की तुलना कबीर की इस पंक्ति से की जा सकती–

   सिर राखे सिर जात है सिर काटे सिर होय।

   (अहंकार होने पर सम्मान और प्रसिद्धि जाती रहती है और अहंकार को त्याग देने पर ख्याति और सम्मान प्राप्त होता है)

पाठगत प्रश्न 11.2

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का सही उत्तर दीजिए:

1. 'तब तब सब सुधि जाँहि' का अर्थ है–

   (क) प्रिय व्यक्ति की सारी यादें चली जाती हैं।

   (ख) प्रिय के अतिरिक्त सभी की याद आती है।

   (ग) किसी भी बात का होश नहीं रहता।

   (घ) प्रिय की याद में सुध-बुध खो जाती है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

2. 'आँख लगना' मुहावरे के कौन-कौन से दो अर्थ हैं?
3. इस दोहे में किस कारण से यमक अलंकार है?

क्रियाकलाप 11.3

आप जानते हैं कि नशा बुरा होता है। शराब, अफ़ीम, चरस, गाँजा आदि मादक द्रव्यों के सेवन से तो आदमी को नशा होता ही है, पर धन, शक्ति और सत्ता भी व्यक्ति को मदमस्त कर देते हैं। आपने अपने आस-पास ऐसे लोग अवश्य देखे होंगे। धन के नशे में चूर किसी व्यक्ति के आचरण पर कुछ पंक्तियाँ यहाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

दोहा-4

आइए, अब बिहारी का अगला दोहा पढ़ते हैं–

प्रसंग : प्रस्तुत दोहे में कवि ने अचानक धन प्राप्त होने वाले व्यक्ति के नशे का वर्णन

किया है। कवि का कहना है कि यह नशा मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले नशे से सौ गुना अधिक खतरनाक होता है।

व्याख्या

इस दोहे में 'कनक' शब्द पर ध्यान दें, जिसका प्रयोग दो बार किया गया है। आप जानते हैं कि कनक का अर्थ होता है– सोना। पहले 'सोना' शब्द का प्रयोग मात्र एक धातु के लिए ही नहीं किया जाता था, बल्कि वह धन-दौलत के पर्याय के रूप में भी होता था। आप जानते ही होंगे कि पुराने समय में मुद्रा के रूप में सोने का चलन होता था। अन्य प्रकार की (कागज़ आदि) मुद्रा के चलन के बाद भी सोने का महत्त्व धन-संपत्ति के रूप में बना रहा है। सोने के अतिरिक्त 'कनक' शब्द का एक और अर्थ है, और वह है–धतूरा। धतूरा एक प्रकार का फल होता है, जिसे खाने से नशा हो जाता है।

एक और शब्द 'बौरात' या 'बौराय' पर ध्यान दीजिए। 'बौराना' का अर्थ होता है–मस्तिष्क की वह अवस्था जिसमें आदमी बहकी-बहकी बातें करता है यानी उसका व्यवहार सामान्य नहीं रहता। नशे की तरंग में उसकी सहजता नष्ट हो जाती है और सोचने-विचारने की शक्ति समाप्त हो जाती है। इसी को मदहोश या मदमस्त होना भी कहते हैं। सामान्य व्यवहार में 'बौराना' शब्द का प्रयोग 'पगलाना' या 'पागल होना' के अर्थ में भी किया जाता है।

कनक कनक तैं सौगुनी,
मादकता अधिकाय।
वा खाएँ बौरात है,
या पाएँ बौराय।।

आइए, अब दोहे को पुनः दोहरा लेते हैं और व्याख्या पढ़ते हैं:

प्रस्तुत दोहे में कवि कहता है कि सोने में धतूरे से सौगुना अधिक नशा होता है, क्योंकि धतूरे के तो खाने से आदमी मदहोश होता है जबकि सोने के मिलने पर उसकी स्थिति इससे भी बुरी हो जाती है, अर्थात् धन की मादकता इसलिए अधिक है क्योंकि उसका प्राप्त होना ही सिर चढ़कर बोलने लगता है, जबकि मादक द्रव्य तो सेवन करने पर ही (और वह भी थोड़े समय के लिए) आदमी का सिर घुमाते हैं। अतः धन का नशा अन्य सभी नशों से अधिक और ख़तरनाक होता है। मादक पदार्थों का नशा उन्हें सेवन करने के कुछ समय बाद उतर जाता है किंतु सोने (धन) का नशा बना ही रहता है और जीवन की अन्य गतिविधियों पर उसका चढ़ा हुआ रंग तरह-तरह से दिखाई देता है।

टिप्पणी

1. प्रस्तुत दोहे में मनुष्य के व्यवहार पर धन के कुप्रभाव को बहुत अच्छे ढंग से व्यक्त किया गया है। साथ ही, यह नीतिगत संकेत भी है कि धन-दौलत, सुख-संपत्ति पाने पर मनुष्य को अपने व्यवहार को नियंत्रित रखने की अधिक आवश्यकता होती है।
2. कवि ने 'कनक' शब्द का प्रयोग दोनों बार भिन्न अर्थों ('सोना' और 'धतूरा') में किया है। आप समझ ही गए होंगे कि यहाँ 'यमक' अलंकार का सौंदर्य है।

दोहा-5

आप जानते हैं कि कृष्ण गोकुल में सभी गापियों को बहुत प्रसन्न रखते थे। बाद में जब वे गोकुल छोड़कर मथुरा चले गए तब सभी गोपियाँ उनकी याद में बहुत दुखी रहती थीं। परंतु जब भी वे कृष्ण को, उनकी पुरानी बातों को याद करतीं, तब कुछ समय के लिए खुश हो जाती थीं।

सघन कुंज-छाया सुखद,
सीतल सुरभि समीर।
मनु ह्वै जात अजौं वहै,
वा जमुना के तीर।।

प्रसंग

प्रस्तुत दोहे में कोई गोपी अपनी सखी से कहती है कि उस यमुना के तट पर पहुँचकर मेरा मन आज भी वही, वैसा ही हो जाता है। वहाँ घने कुंजों की छाया अत्यंत सुखदायी लगने लगती है तथा सुगंधित वायु बहुत शीतलता प्रदान करने लगती है।

व्याख्या

इस दोहे की व्याख्या के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण शब्द 'वहै' (वही) है। कवि यह न बताकर कि मन ऐसा हो जाता है, पाठक के सामने अर्थ-विस्तार की अनंत संभावनाएँ छोड़ देता है। 'वही' का प्रसंग है– वैसा, जैसा कि प्रसंग है उस समय जब कृष्ण ब्रज में ही थे। कुल मिलाकर अर्थ हुआ कि मन जैसा कृष्ण के यहाँ होते, उनके साथ रहते हुए होता था, आज भी वैसा ही हो जाता है। अब देखिए, 'वैसा' अर्थात् 'कृष्ण के साथ रहते जैसा' में जो अर्थ संभावनाएँ मौजूद हैं वे किसी एक, दो या कुछ बातों के बताने पर सीमित नहीं हो जातीं? आप अनुमान लगाएँ कैसा लगता होगा गोपी को? वह कृष्ण के साथ है उनसे बात कर रही है, उनके साथ खेल रही है, कृष्ण बाँसुरी बजा रहे हैं, गोपियाँ उमंग और उल्लास से भरी हैं, गोपियों के साथ कृष्ण रास–नृत्य कर रहे हैं,....... वगैरह–वगैरह। यानी गोपी कहना चाहती है कि वे तमाम सुखद क्षण उसे अपने में फिर से डुबो लेते हैं, जो उसने कभी कृष्ण के साथ बिताए थे। कृष्ण के विरह में गोपी को कलेजे में टीस का अनुभव होता है। हवा भी अच्छी नहीं लगती, परंतु जब वह कुंजों की छाया में कृष्ण के साथ बिताए अपने पुराने दिन याद करती है, तब सभी कुछ भूलकर कृष्ण में पुनः डूब जाती है।

चित्र 11.3

उसे यमुना के तट पर पहुँचकर कृष्ण की केवल याद भर नहीं आती, जो कलेजे को टीस पहुँचाए और छाया भी जलाने वाली नहीं लगती, सुगंधित हवा भी तन-मन को विरह ताप से झुलसाने वाली नहीं लगती; बल्कि यमुना-तट की ये स्मृतियाँ इतनी सघन, सुखद और मधुर हैं कि वे उसे 'आज' से मुक्त करती हैं और उसके दिल–दिमाग को उसी काल खंड में ले जाती हैं जब वह उमंग और उल्लास से भरी कृष्ण के साथ होती थी। इस तरह वह आज भी विरहग्रस्त न होकर कृष्ण के सानिध्य को प्राप्त करने वाली हो जाती

है। इस कारण, विरह में जो सघन कुंज-छाया पीड़ा देती थी, वह सुखद लगने लगती है और जो सुगंधित वायु शरीर को झुलसाती-सी लगती थी, अब शीतल लगने लगती है।

टिप्पणी

1. 'मन है जात अजौं वहै' में 'वहै' का वक्रोक्ति-सौंदर्य सराहनीय है। बात को सीधे-सीधे न बताकर उसमें असीम संभावनाओं को पिरो दिया गया है। बिहारी के एक और दोहे की यह पंक्ति देखिए, जिसमें 'और कुछ' के द्वारा यही काम किया गया है–

    वह चितवन औरै कछु, जिहि बस होत सुजान

2. 'सीतल-सुरभि समीर' में तो आपको बताने की आवश्यकता ही नहीं है कि कौन-सा अलंकार है, आप स्वतः ही समझ गए होंगे न। जी हाँ, 'स' की आवृत्ति होने से अनुप्रास अलंकार ही है।
3. कवि ने 'जमुना के तीर' न कहकर 'वा जमुना के तीर' कहा है। यह 'वा' यानी यमुना किनारे का वह (निश्चित) स्थान, जहाँ कृष्ण गोपी मिलते थे। इसी संकेत के कारण वह सुनने-पढ़ने वाले 'वहै' की अर्थ-संभावनाएँ समझ पाते हैं।

पाठगत प्रश्न 11.3

1. निम्नलिखित में से सही और गलत कथनों का चुनाव कीजिए:

    (क) धन का नशा मादक द्रव्यों से भी बढ़कर होता है।

    (ख) सोना पाने की बजाय धतूरा खाना ज़्यादा फ़ायदेमंद है।

    (ग) सोना और धतूरा दोनों ही मदहोश कर देने वाले होते हैं।

    (घ) धतूरे की मादकता सोने से सौगुनी ज़्यादा होती है।

2. 'कनक-कनक तैं.....' में कौन-सा अलंकार है?

3. 'मनु ह्वै जात अजौं वहै'; से अभिव्यक्त होता है कि 'मन का भाव कैसा है कवि–

    (क) यह बता नहीं पा रहा है।

    (ख) यह बताना नहीं चाहता।

    (ग) किसी परिचित को ही बताता है।

    (घ) यादों में डूबने की स्थिति का संकेत करता है।

4. 'सघन कुंज-छाया सुखद सीतल सुरभि समीर' दोहे में अनुप्रास कहाँ और क्यों है, उल्लेख कीजिए।

दोहा-6

मूल पाठ में दिए गए दोहे को ध्यान से पढ़िए, साथ में कुछ कठिन शब्दों के अर्थ फिर से पढ़ लीजिए। अब दिए गए स्थान पर इसका प्रसंग स्वयं लिखिए।

प्रसंग

....

....

....

इसकी व्याख्या करने का प्रयास कीजिए। आपकी सहायता के लिए कुछ संकेत प्रस्तुत हैं–

गोपियों को कृष्ण से बात करना अच्छा लगता है, कोई एक उनकी बाँसुरी को छिपा देती है, कृष्ण उसे कसम देते हैं तो वह भौंहों में मुस्कराती है, वापस देने की बात कहकर फिर मुकर जाती है।

आप बिहारी के कई दोहों की व्याख्या पढ़ चुके हैं। यह दोहा सरल भाषा में सरल भाव वाला है। संकेत आपको मिल ही गए, तो फिर क्या देर... उठाइए कागज़-कलम और लिख डालिए इसकी सुंदर-सी भावपूर्ण व्याख्या।

बतरस लालच लाल की,
    मुरली धरी लुकाय।
सौंह करैं, भौंहनु हँसै,
    दैन कहै, नटि जाय।।

क्रियाकलाप 11.4

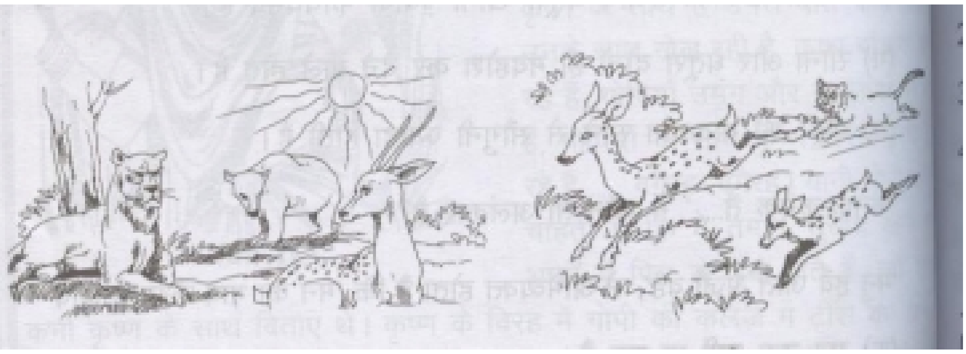

चित्र 11.4   चित्र 11.5

ऊपर दिए गए दोनों चित्रों को ध्यानपूर्वक देखिए और लिखिए कि दोनों में क्या अंतर है और क्यों?

....

....

....

....

....

दोहा-7

अब ज़रा बिहारी के प्रकृति-चित्रण वाले दोहे को शब्दार्थ सहित पढ़िए। हाँ, क्या गौर किया 'कहलाने' शब्द पर। 'कहलाने' शब्द का अर्थ 'कहलाने भर के लिए' नहीं है। यहाँ 'कहलाने' का अर्थ है—व्याकुल होकर कहना। 'कहलाना' क्रिया-शब्द का ब्रजभाषा में इसी अर्थ में प्रयोग होता है।

तपोवन की विशेषता क्या होती है, जानते हैं न। पढ़ा ही होगा ऋषियों-मुनियों के संदर्भ में इस शब्द को। जी हाँ, वही होता था तपोवन, जहाँ ये लोग तपस्या करते थे और जहाँ किसी भी किस्म की हिंसा वर्जित होती थी।

आपने पढ़ ही लिया होगा कि दाघ का अर्थ होता है ताप और निदाघ का गरमी। अब 'दीरघ' यानी 'दीर्घ' पर विचार कीजिए। 'दीर्घ' का अर्थ है – लंबा, विस्तृत, गहरा, भारी ......। अब आप इन शब्दों में से उपयुक्त शब्द का चुनाव कीजिए या मिलते-जुलते अर्थ वाले किसी और ऐसे शब्द को चुनिए जो ताप के विशेषण के तौर पर प्रयोग किया जा सके।

कहलाने एकत बसत
अहि, मयूर, म ग, बाघ।
जगत तपोवन सौ कियौ,
दीरघ–दाघ, निदाघ।।

अगर आप मूलपाठ से शब्दार्थ जान चुके हैं और इन संकेतों को भी पढ़ चुके हैं, तो इस दोहे की व्याख्या करने में कोई मुश्किल नहीं आएगी। पकड़िए कागज़-कलम और शुरू हो जाइए। पहले प्रसंग लिखिए और फिर उसकी व्याख्या लिख दीजिए।

पाठगत प्रश्न 11.4

1. गोपी कृष्ण से बाँसुरी देने की बात कहकर भी क्यों मुकर जाती है?
2. कसम खाते समय भौंहों में हँसने का क्या अभिप्राय है?
3. कवि ने जगत को तपोवन-सा क्यों कहा है?
4. 'दीरघ-दाघ निदाघ' में अलंकार है—

   (क) श्लेष (ख) उपमा

   (ग) यमक (घ) अनुप्रास

11.4 भाव और शिल्प सौंदर्य

आपने बिहारी के कुछ दोहों का अध्ययन किया। आपने अनुभव किया होगा कि कविवर बिहारी ने भक्तिकालीन कविता से थोड़ा अलग हटकर, नितांत अनौपचारिक ढंग से, लगभग मित्रता के भाव से कृष्ण का स्मरण किया है। इसके अतिरिक्त उनकी कविता में कृष्ण शृंगार रस के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं। रीतिकाव्य में प्रायः कृष्ण इसी रूप में मिलते हैं। रीतिसिद्ध बिहारी रीतिकाल के प्रतिनिधि कवि माने जाते हैं। रीतिकाव्य की प्रमुख प्रवृत्ति शृंगार-वर्णन है। उसके विविध रूपों की अत्यंत सुंदर अभिव्यक्ति उनके काव्य में हुई है। शृंगार के संयोग और वियोग, दोनों पक्षों की प्रस्तुतियाँ मन को छू लेने वाली हैं। उनके काव्य की यही प्रमुख विशेषता है। इसके

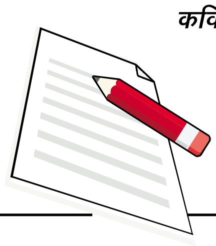

टिप्पणी

लिए बिहारी ने नायक-नायिका की विभिन्न दैनिक गतिविधियों को ही आधार बनाया है। प्रायः घर भर की उपस्थिति में अपने अनुराग को व्यक्त करने अथवा उसकी अनुभूति के चित्र उनकी कविता में मिलते हैं। आप, संभवतः उनके इस प्रसिद्ध दोहे से परिचित होंगे, जिसमें समस्त गुरुजन की उपस्थिति में नायक-नायिका नेत्रों से ही सारा वार्तालाप कर लेते हैं–

कहत, नटत, रीझत, खिजत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौंन में करत हैं, नैननु ही सौं बात।।

आपने देखा कि किस दक्षता के साथ बिहारी ने एक ही पंक्ति में सात क्रियाओं का वर्णन किया हैं। उनका यह दोहा शिल्प की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। भाषा के प्रयोग का भी अद्‌भुत उदाहरण है। ऐसे ही प्रयोग के कारण कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।

भक्ति और श्रृंगार के अतिरिक्त बिहारी ने नीति-काव्य भी लिखा है, पर प्रकृति-चित्रण के जितने सुंदर दोहे उन्होंने लिखे हैं, अन्यत्र दुर्लभ हैं। यद्यपि रीतिकाव्य में प्रकृति के बहुत सुंदर चित्र मिलते हैं, पर वे प्रायः कवित्त, सवैया जैसे छंदों में हैं, जहाँ वर्णन के लिए दोहे की तुलना में अधिक शब्द और पंक्तियाँ होती हैं। प्रकृति के कोमल, रुचिकर रूपों के साथ-साथ उन्होंने प्रचंड रूप का भी वर्णन किया है। ऐसा एक दोहा तो आपने पढ़ा ही है, यहाँ एक और देखिए–

जा बैठी अति सघन वन, पैठि सदन तन माँह।
देखि दुपहरी जेठ की, छाँहों चाहति छाँह।।

कितनी सुंदर कल्पना है कि जेठ की धूप की तीव्रता से घबराकर छाया तक घने जंगल में जाकर छिप गई है, अब वह हर पेड़ के नीचे नहीं रहती।

कवि बिहारी जीवन के विविध अनुभवों से तो संपन्न थे ही, वे आयुर्वेद, ज्योतिष, राजनीति आदि अनेक शास्त्रों के भी ज्ञाता थे। उनके अनेक दोहों में उनके इस ज्ञान की छाप मिलती है। विशेषतः ज्योतिष आधारित दोहे तो अत्यंत सराहनीय हैं।

भाषा

बिहारी ने अपनी समस्त रचनाएँ दोहा छंद में की हैं और उनकी भाषा ब्रजभाषा है। प्रायः समस्त रीतिकाव्य ब्रजभाषा में ही रचा गया है। अपने माधुर्य के कारण ब्रजभाषा श्रृंगार और प्रकृति-चित्रण के लिए उपयुक्त भी है। बिहारी के भाषा-प्रयोग में बहुत व्यापकता है। संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों से लेकर आम बोलचाल के शब्दों तक का प्रयोग उन्होंने किया है। लोक में प्रचलित मुहावरों का अत्यंत सटीक प्रयोग उनकी काव्य-भाषा की विशेषता है। लेकिन सबसे अधिक सराहनीय है, उनकी भाषा की लाक्षणिकता यानी सामान्य से लगने वाले वर्णन में निहित अर्थ-चारुत्व और अनेक अर्थों की संभावना। इसी कारण, विद्वानों ने एक-एक दोहे के अनेक अर्थ अथवा अनेक अर्थ-छवियाँ प्रस्तुत की हैं, उदाहरण के लिए उनका यह दोहा देखिए

मेरी भव बाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाईं परै, स्याम हरित दुति होइ।।

इस दोहे की दूसरी पंक्ति के अनेक अर्थ हो सकते हैं–जिस तन (राधा के) की झलक-मात्र से कृष्ण प्रसन्न हो जाते हैं; राधा के सोने जैसे रंग की परछाई से नील-वर्ण कृष्ण हरे दिखाई पड़ते हैं आदि।

यह तो आप इस पाठ में पढ़े दोहों से जान चुके होंगे कि कवि बिहारी ने अनुप्रास, यमक, श्लेष, उत्प्रेक्षा, रूपक, वक्रोक्ति, पुनरुक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। इनके अतिरिक्त उन्होंने संदेह, भ्रांतिमान, वीप्सा, व्याज-स्तुति, दृष्टांत, विभावना आदि बहुत से अलंकारों का अद्भुत प्रयोग किया है। भाषा की आलंकारिकता उनके काव्य की प्रमुख विशेषताओं में शामिल है।

11.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आप बिहारी के दोहों का भली-भाँति अध्ययन कर चुके हैं। आइए, अब रीतिकाल के ही एक और कवि रसलीन के दो दोहों का आनंद लेते हैं–

दोहे

1. गवन समय पिय के कहति, यौं नैनन सौं तीय।
   रोवन के दिन बहुत हैं, निरखि लेहु खिन पीय।।

2. अमी हलाहल मद भरे, सेत, स्याम, रतनार।
   जियत, मरत, झुकि-झुकि परत, जेहि चितवत इक बार।।

शब्दार्थ

गवन समय – जाते समय
यौं – इस प्रकार, यह
तीय – स्त्री, पत्नी (नायिका)
निरखि लेहु – देख लो
खिन – क्षण भर, ज़रा, थोड़ा-सा
अमी – अमृत
हलाहल – विष
मद – नशा, मस्ती, शराब
सेत>श्वेत – सफ़ेद
स्याम(श्याम) – काले
रतनार – लाल
जेहि – जिसे भी
चितवन – देखते हैं

आपने दोहे पढ़े। यह तो आप समझ ही गए होंगे कि पहले दोहे में विदाई का दृश्य है, तो फिर यह तो समझना बहुत ही आसान है कि यह दृश्य क्या है? कौन विदा हो रहा है? किससे विदा हो रहा है? रो कौन रहा है? नायिका नेत्रों से क्या कह रही है? इन संकेतों के सहारे आप दोहे के अर्थ को भली-भाँति समझ सकते हैं। एक बार फिर से इस दोहे को पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. नायिका पति से किस प्रकार संवाद करती है?
2. नायिका अपने पति से क्या कहती है?
3. दोहे के भावगत सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।
4. 'रोवन के दिन बहुत हैं' कथन का आशय स्पष्ट कीजिए।

दूसरे दोहे में यद्यपि उल्लेख नहीं किया गया है, पर आप समझ सकते हैं कि बात आँखों के सौंदर्य की हो रही है। कैसी हैं ये आँखें – सफ़ेद, काली और लाल। कवि ने इन रंगों से साम्य रखने वाले तीन पदार्थों की कल्पना की है - अमृत, विष और मदिरा। इनके प्रभावों से युक्त मानी हैं नायिका की आँखें। रसलीन का यह दोहा हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि माना जाता है। उपर्युक्त संकेतों के साथ दोहे को फिर से

पढ़िए और दोहे में निहित अर्थ-सौंदर्य का आनंद लेते हुए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने नायिका के नेत्रों के रंग में किन-किन चीज़ों की कल्पना की है?
2. 'रतनार' शब्द के प्रयोग से कवि नायिका के नेत्रों की किस विशेषता को प्रकट करना चाहता है?
3. नायिका जिस किसी की ओर एक नज़र देखती है, उस पर क्या प्रभाव पड़ता है?
4. 'झुकि-झुकि परत' से क्या आशय है?
5. दोहे के भावगत सौंदर्य का उल्लेख कीजिए।

11.6 आपने क्या सीखा

1. बिहारी रीतिकाल के सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रतिनिधि कवि हैं।
2. उन्होंने श्रृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति-चित्रण से संबंधित अत्यंत सुंदर दोहों की रचना की है।
3. श्रृंगार के दोनों पक्षों संयोग और वियोग का चित्रण करते समय बिहारी ने नायक-नायिका की दैनिक गतिविधियों को चुना है।
4. घर के भीतर अपने प्रेम को व्यक्त करने तथा दूसरे को देखते ही प्रेम की अनुभूति होने के चित्र बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
5. बिहारी के भक्ति परक दोहे भक्तिकालीन काव्य से अलग हटकर हैं। उन्होंने सख्य भाव से अत्यंत अंतरंगता के साथ कृष्ण का स्मरण किया है।
6. कृष्ण उनके काव्य में श्रृंगार के नायक के रूप में भी उपस्थित हैं।
7. बिहारी ने प्रकृति के कोमल और रुचिकर रूपों के साथ-साथ उसके प्रचंड रूपों का भी सुंदर वर्णन किया है।
8. बिहारी के काव्य में तत्सम शब्दों से लेकर ठेठ ग्रामीण शब्दों तक का प्रयोग हुआ है।
9. लोक में प्रचलित मुहावरों का काव्यात्मक प्रयोग करने में बिहारी दक्ष हैं।
10. बिहारी के दोहों में अनेक अर्थों तथा अर्थ-छवियों की संभावना रहती है, जिसके कारण उनके विषय में कहा जाता है कि बिहारी ने 'गागर में सागर' भर दिया है।
11. आलंकारिकता बिहारी की भाषा की प्रमुख विशेषता है। उन्होंने अपने काव्य में अनेक अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है।
12. बिहारी ने अपनी रचनाओं में लाक्षणिक भाषा का प्रयोग किया है अर्थात् उनके सामान्य से दीखने वाले शब्द-प्रयोग और उक्तियाँ अपने में विशिष्ट अर्थ-संकेतों को व्यक्त करने की सामर्थ्य रखती हैं।

11.7 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

कविवर बिहारी लाल रीतिकाल के सुप्रसिद्ध और चर्चित कवि हैं। उनकी विशेषता रही

है कि वे शृंगार, भक्ति, नीति और प्रकृति संबंधी गहरी बातों से लेकर लोक-व्यवहार संबंधी ज्ञान रखते हैं। कवि बिहारी ने 'बिहारी सतसई' की रचना की है जिसमें लगभग सात सौ दोहे हैं। इसका प्रथम दोहा है : *'मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोई'। यह* दोहा उन्होंने मंगलाचरण के रूप में लिखा है। बिहारी राधावल्लभ संप्रदाय के अनुयायी थे, अतः उन्होंने इसमें राधा को अधिक महत्त्व दिया है और उनसे सांसारिक बाधाओं के निवारण की प्रार्थना करते हुए अपनी काव्य–रचना को निर्विघ्न समाप्त कर पाने के वरदान का निवेदन किया है।

- बिहारी सतसई एक शृंगार-प्रधान रचना है, जिसके नायक प्रायः कृष्ण तथा नायिका प्रायः राधा को माना है।
- 'बिहारी सतसई' पुस्तकालय से प्राप्त कीजिए और उसके अन्य दोहे पढ़ने का प्रयास कीजिए।
- रीतिकाल के अन्य कवियों में देव, मतिराम, चिंतामणि आदि की रचनाएँ पढ़िए।

11.8 पाठांत प्रश्न

1. कवि ने क्यों कहा है कि ईश्वर को दुनिया के आम आदमी की हवा लग गई है?
2. कवि ने कान रूपी ड्योढ़ी की कल्पना क्यों की है?
3. 'मादक पदार्थों से सौगुना नशा धन का होता है,' उदाहरण देकर कथन की पुष्टि कीजिए।
4. पाँचवे दोहे में 'वा जमुना के तीर' से कवि का क्या आशय है, स्पष्ट कीजिए।
5. निम्नलिखित दोहों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

   (क) कनक कनक तैं सौगुनी, मादकता अधिकाय।
   वा खाएँ बौरात है, या पाएँ बौराय।।

   (ख) मकराकृत गोपाल कैं, कुँडल सोहत कान।
   धँस्यौ मनौ हिय-घर समर, ड्यौढ़ी लसत निसान।।

   (ग) कहलाने एकत बसत, अहि, मयूर, मृग, बाघ।
   जगत तपोवन सौ कियौ, दीरघ-दाघ, निदाघ।।
6. कामदेव के कोई चार नाम लिखिए।
7. निम्नलिखित पंक्तियों में विरोधाभास अलंकार किस प्रकार है, सिद्ध कीजिए:

   जब-जब वै सुधि कीजियै, तब-तब सब सुधि जाँहि।
   आँखिन आँखि लगी रहे, आँखें लागति नाँहि।।
8. कविवर बिहारी ने अपने काव्य में लोकोक्तियों और मुहावरों का सटीक प्रयोग किया है, सिद्ध कीजिए।
9. निम्नलिखित दोहों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

   1. प्रीतम छवि नैनन बसी, पर छवि कहाँ समाय।
   भरी सराय रहीम लखि, आपु पथिक फिरि जाय।।

2. जैसी परै सो सहि रहै, कहि रहीम यह देह
   धरती ही पर परत है, सीत, घाम और मेह।

(क) कवि ने 'प्रीतम' शब्द किसके लिए प्रयोग किया है?

(ख) 'पर छवि कहाँ समाय' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) दूसरे दोहे में कवि ने किसकी महिमा बताई है?

(घ) कवि ने 'देह' की तुलना 'धरती' से क्यों की है?

11.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. ईश्वर की बहुत दिनों से प्रार्थना करने पर भी कवि के दुख दूर नहीं हो रहे हैं।
2. मगरमच्छ जैसी
3. नींद न आना
4. सोने को
5. जैसा कि कृष्ण की उपस्थिति में हुआ करता था
6. उनसे बातें करने का आनंद प्राप्त करने के लिए
7. ग्रीष्म ऋतु

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1 1. (घ) 2. अनुप्रास

3. कामदेव का एक नाम 'मकरध्वज' होने के कारण

4. (घ)

11.2 1. (घ) 2. एक–प्रेम हो जाना, दूसरा – नींद आ जाना

3. 'आँख लगना' मुहावरे का दो अर्थों में प्रयोग होने के कारण

11.3 1. (क) सही (ख) गलत (ग) सही (घ) गलत

2. यमक

3. (घ)

4. सुखद सीतल सुरभि समीर में 'स' वर्ण की आवृत्ति होने के कारण

11.4 1. बातें करने से मन न भरने के कारण

2. बाँसुरी उसी के पास है और हँसते हुए मना कर रही है।

3. ग्रीष्म ऋतु होने के कारण सभी त्रस्त हैं और कुछ भी करने का मन न होने के कारण वे अपने शिकार तक में दिलचस्पी नहीं ले रहे।

4. (घ)

12

पद्माकर

301hi12

मध्ययुगीन कवियों, विशेषकर रीतिकालीन कवियों का मन श्रीकृष्ण और उनकी लीलाओं के चित्रण में खूब रमा है। उनका दूसरा प्रिय विषय रहा है–वस्तुओं के सौंदर्य का वर्णन। वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत और शिशिर के अनेक लुभावने चित्र इन कवियों ने उकेरे हैं। ऋतुवर्णन प्रायः शृंगार रस के आलंबन के रूप में अपनाया गया है। ऋतुओं में भी वसंत का रूप-सौंदर्य अद्भुत है। वसंत के आते ही प्रकृति में ही नहीं मनुष्य के मन में भी हलचल होने लगती है। होली का त्योहार इसी ऋतु में आता है जो हमारे तन-मन को रंग जाता है। यही कारण है कि वसंत को ऋतुराज कहा गया है। रीतिकालीन सुप्रसिद्ध कवि पद्माकर के कुछ कवित्तों में हम वसंत की कुछ छवियों का अवलोकन करेंगे।

शृंगारिकता रीतिकालीन काव्य की मुख्य प्रवृत्ति है। इस युग का कवि चाहे भक्ति और नैतिकता की चर्चा कर रहा हो अथवा प्रकृति-चित्रण में तल्लीन हो, शृंगारिकता से वह कहीं भी नहीं बच सका है। उसका मन वहीं रमता है। जीवन के उतार-चढ़ाव और आशा-आकांक्षाओं की अन्य छवियों की ओर उसने ध्यान नहीं दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कवि पद्माकर के मुख्य काव्यात्मक स्थलों और दृश्य चित्रों का चयन कर सकेंगे;
- पद्माकर के सवैयों के भाव-सौंदर्य की समीक्षा कर सकेंगे;
- सवैयों के शिल्प-सौंदर्य और भाषा-सौंदर्य का विवेचन कर सकेंगे;
- वसंत वर्णन, रूप सौंदर्य-चित्रण और फाग के दृश्य चित्रों के सौंदर्य-पक्षों की विशेषताएँ तुलनात्मक रूप में बता सकेंगे;
- कवि की कल्पना, संवेदनशीलता, सहृदयता, चित्रविधायिनी प्रतिभा और भाषा-सौंदर्य की सराहना कर सकेंगे।

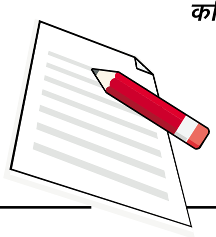

टिप्पणी

क्रियाकलाप

निम्नलिखित काव्य-पंक्तियाँ पढ़िए:

भर जाए उन्माद धरा के तन-मन में
आ जाए ऋतुराज अगर तू मधुबन में।
ये तरु-तरु के पात गुलाबी हाथ हिलाकर झूमेंगे,
ये तेरा संकेत मलय के होंठ बसंती चूमेंगे।
महके अमराई, चहके उल्लास घना कोकिल मन में।
आ जाए ऋतुराज अगर तू मधुबन में।

1. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में किसका आह्वान किया गया है?

   ....

2. वसंत के आने पर प्रकृति में क्या परिवर्तन आ जाएगा?

   ....

निश्चय ही आपके उत्तर होंगे

1. इन काव्य पंक्तियों में वसंत का आह्वान किया गया है।
2. वसंत के आने पर धरती के मन प्राणों में उन्माद भर जाएगा। उसके स्वागत और अभिनंदन में वृक्षों के पत्ते अपने कोमल-कोमल हाथ हिलाकर खुशी से झूम उठेंगे और मलयपवन के मादक होंठों को चूम लेंगे। अमराइयाँ महक जाएँगी व कोकिलें उल्लास से झूम उठेंगी। वसंत के आ जाने पर सारी प्रकृति में नव नवीन ताज़गी, मस्ती और उत्फुल्लता आ जाती है। इस मस्ती और ताज़गी का वर्णन करते हुए कवि ने उक्त पंक्तियाँ लिखी हैं।

निम्नलिखित कविता को लय के साथ दो तीन बार पढिए:

दक्षिणी बयार चली, दक्षिणी बयार हैं।
मत मुझे पुकार सखे मत मुझे पुकार।।
खोलते रहस्यबंध मुक्त प्राण भूल-भूल
भीड़ हो रही अधीर, खोल-खोल द्वार रे
मत मुझे पुकार सखे, मत मुझे पुकार रे।

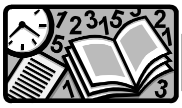

12.1 मूलपाठ

आइए, अब देखें कि रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि पद्माकर ने वसंत के सौंदर्य चित्र को किस प्रकार प्रस्तुत किया है:

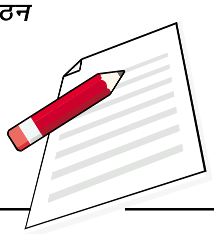

1. वसंत

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।
कहे पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।
औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।
औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन ह्वै गये।

2. फाग

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।
कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

टिप्पणी

शब्दार्थ

औरै भाँति	– और ही तरह से, ऐसी स्थिति जिसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन हो
भीर	– भीड़, समूह
झौरन	– झाड़, झुरमुट
बौरन	– बौर, फूल
छबीले छैल	– बने-ठने युवक
द्वै	– दो
ह्वै गये	– हो गए
धाए	– दौड़े
दोऊ	– दोनों
दगनि	– आँखों में
जु	– जो
मढ़ै नहीं	– अपनी जगह से हटता नहीं,
तिहारी	– तुम्हारी,
सौंह	– कसम
कासे	– किससे
निकासो	– निकालो
कोऊ	– कोई
जासै	– जिससे
एरी	– अरी
बीर	– बहन जैसी सखी
कढ़िगो	– निकल गया
पै	– परंतु
कढ़ै नहीं	– निकलता नहीं

12.2 बोध प्रश्न

1. अचानक पेड़ों पर किसकी गुंजार अधिक सुनाई दे रही है और क्यों?
2. "बसंत ऋतु के आने पर तन, मन और बन और ही प्रकार के हो गए हैं", कथन से कवि का क्या अभिप्राय है?
3. गोपी बार-बार किसे और क्यों धो-धो कर हार गई है?

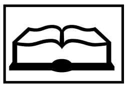

12.3 आइए, समझें

1. वसंत

प्रसंग

प्रस्तुत कवित्त में कवि ने वसंत के कारण प्रकृति के रूप-सौंदर्य में आए अवर्णनीय परिवर्तन का बड़ा अनूठा और उल्लासमय चित्रण किया है।

व्याख्या

ऋतुराज वसंत का आगमन प्रकृति में और मानव समाज में बाहर-भीतर अत्यधिक मादकता भर देता है। इस कवित्त में कवि ने शब्द ध्वनियों के माध्यम से वसंत का मनमोहक वर्णन किया है। कवि कहता है कि वसंत को आए अभी दो दिन ही हुए हैं कि कुंजों में भौंरों की भीड़ कुछ और ही तरह से गूँजने लगी है। यहाँ कवि यह कहना चाहता है कि भौरों का समूह प्रसन्नता और हर्षोल्लास के साथ मानो वसंत का उत्सव मनाने के लिए एकत्रित होकर समवेत स्वर में (एक साथ) गुंजार कर रहा हो अर्थात् पुष्प-समूह ने भौरों में एक अलग ही तरह की प्रसन्नता और उत्साह भर दिया है। डाल-डाल पर बौरों के जो गुच्छे दिखाई देने लगे हैं उनका रूप-स्वरूप कुछ ऐसा हो गया है कि उसे शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। गली-गलियारों में बने-ठने युवक-युवतियाँ भी वसंत के सौंदर्य से उत्पन्न काम भाव से पीड़ित, परंतु हर्षित दिखाई देते हैं।

ऐसे मोहक ऋतुराज बसंत को आए अभी कुछ ही समय बीता है। पक्षी भी सामूहिक रूप से प्रसन्नतापूर्वक चहकने लगे हैं। कवि कहता है कि यह परिवर्तन सब ओर दिखाई दे रहा है। सारा वातावरण रस से, रंग से, रीति से, गीत और प्रेम से बदल गया है। तन, मन और वन-उपवन सभी में बदलाव आ गया है। इस बदलाव को अनुभव ही किया जा सकता है, समझाया नहीं जा सकता।

औरै भाँति कुंजन में गुंजरत भौंर भीर,
औरै डौर झौरन पै बौरन के ह्वै गये।

कहै पद्माकर सु औरै भाँति गलियान,
छलिया छबीले छैल औरै छबि छ्वै गये।

औरै भाँति बिहग-समाज में अवाज होति,
ऐसे ऋतुराज के न आज दिन द्वै गये।

औरै रस, औरै रीति, औरै राग, औरै रंग,
औरै तन, औरै मन, औरै बन है गये।

टिप्पणी

(क) कवि ने वसंत का एक ऐसा उल्लासमय सौंदर्य चित्र उपस्थित किया है, जिसमें रूप, रस, गंध, मादकता का सम्मिश्रण दिखाई देता है।

(ख) निरपेक्ष और शुद्ध प्रकृति-चित्रण का यह एक बड़ा मनोरम और आकर्षक उदाहरण है।

(ग) वातावरण-निर्माण के लिए कवित्त में ध्वन्यात्मक शब्दों का बड़ा कलात्मक प्रयोग किया गया है। इससे जो चित्र तैयार होता है, वह अपेक्षित वातावरण को प्रत्यक्ष करने में बड़ा प्रभावशाली बन पड़ा है। ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा ऐसी प्रतिध्वनियाँ पैदा की गई हैं, जिसका प्रभाव पाठक के मन पर देर तक बना रहता है।

(घ) आप जानते है जब एक ही ध्वनि अथवा वर्ण की पुनरावृत्ति होती है तो उसे अनुप्रास अलंकार कहते हैं। यहाँ 'भीर-भौंर', 'छलिया-छबीले-छैल', 'छबि छ्वै गए', तथा 'तन-मन' में अनुप्रास का चमत्कार देखने योग्य है। इस कवित्त में लगभग प्रत्येक पंक्ति में अनुकरणात्मक शब्द ध्वनियों का अनुप्रास-झंकृत प्रयोग बड़ा सुंदर बन पड़ा है।

(ङ) 'औरे भाँति', की बार-बार आवृत्ति ने भावाभिव्यंजना को और अधिक व्यापक और प्रभावशाली बना दिया है।

(च) आपने पहले पढ़ा होगा कि 'और' शब्द व्याकरणिक दृष्टि से किन्हीं दो शब्दों अथवा वाक्यों को जोड़ने के लिए प्रयुक्त होता है परंतु यहाँ पर यह 'और' शब्द इस रूप में नहीं आया है। यहाँ 'और' का अर्थ विशिष्ट के अर्थ में है अर्थात् जो अकथनीय है, जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता।

पाठगत प्रश्न 12.1

निम्नलिखित प्रश्नों के एक-दो शब्दों या वाक्यों में उत्तर दीजिए:

1. भौंरों की गूँज और ही तरह की क्यों हो गई है?
2. छलिया-छबीले-छैल में कौन-सा अंलकार है?
3. पक्षियों की आवाज़ भी कुछ और ही तरह की क्यों हो गई है?
4. वसंत के चित्रण में किन-किन विशेषताओं की अधिकता है।

12.4 आइए, स्वयं पढ़ें

2. फाग

प्रसंग

प्रस्तुत कवित्त में पद्‌माकर ने फाग (होली) का बड़ा हृदय स्पर्शी चित्र अंकित किया है। एक गोपिका कृष्ण के साथ गुलाल से फाग खेलने का बड़ा सजीव वर्णन अपनी प्रिय सखी से करती है।

व्याख्या

आपने वसंत का चित्रण पढ़ा और जाना कि पद्‌माकर की कविता किस प्रकार मन को छू जाती है। वसंत ऋतु की सुंदरता का वर्णन करते हुए भी व्यक्ति को बार-बार यही लगता है कि ऐसा कुछ है जिसका वर्णन करना संभव नहीं, वह तो बस 'और ही कुछ' है।

वसंत से जुड़ा है एक उत्साह उमंग का त्योहार जिसे आप भी खूब जानते हैं। उसे कहते हैं होली। इसी का दूसरा नाम है–फाग। वैसे फाग उन लोकगीतों को भी कहते हैं, जो होली में गाए जाते हैं। आइए देखें पद्‌माकर फाग का चित्रण किस प्रकार कर रहे हैं। पहले संपूर्ण कवित्त को एक-दो बार पढ़कर स्वयं समझने का प्रयास कीजिए।

आइए, कवि की कल्पना को कुछ गहराई से समझें। पूरा कवित्त एक गोपिका का कथन है। उसकी परेशानी क्या है? इसे समझने के लिए होली के एक रिवाज़ को याद कीजिए। अबीर-गुलाल हवा में उड़ाना-उछालना। यह उड़ता गुलाल तो गोपिका की आँख में चला ही गया है। उसके साथ नंदलाल भी आँख में बस गए हैं। सोचिए समस्या क्या है? केवल गुलाल आँखों में पड़ जाए तो उसे निकालने का क्या उपाय हो सकता था? गोपी आँखें धो-धोकर हार गई है, उसे सफलता नहीं मिल पा रही–ऐसा क्यों? उसे क्या छटपटाहट है? कासे-कहूँ? कौन सुने? में क्या कथा छिपी है? क्या गोपी की बात विश्वसनीय लगती है?

नंदलाल के आँखों में बस जाने का दर्द दूर करने के लिए वह क्या नहीं समझा पा रही है? अबीर तो जैसे-तैसे निकल गया, पर अहीर नहीं। पर अहीर कौन है? कल्पना

टिप्पणी

कीजिए। क्या गोपी सचमुच श्रीकृष्ण को आँखों से दूर करना चाहती है?

पूरी कविता में कवि की व्यंजना पर ध्यान दीजिए। यहाँ कृष्ण के प्रति उमड़े प्रेम को आँखों में अबीर पड़ने की स्थिति से वर्णित किया है, पर जितनी सरलता से अबीर धुल जाता है उतनी सरलता से कृष्ण प्रेम नहीं धुल सकता। न गोपी ऐसा चाहती ही है, वह तो अपनी सहेली की सौगंध खाकर उसे आश्वासन दिलाना चाहती है कि वह कृष्ण को निकाल नहीं पा रही है और न उसे इसका कोई उपाय सूझ रहा है!

चित्र

आप स्वयं इसकी विस्तार से व्याख्या अलग कागज़ पर लिखिए।

कवित्त से अनुप्रास, यमक के उदाहरण छाँटिए। उन पंक्तियों को चुनिए जिसमें गोपिका की अधीरता, अकुलाहट और विवशता चित्रित हुई है। इस बात पर भी ध्यान दीजिए कि इसमें किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया गया है।

एकै संग धाए नँदलाल औ गुलाल दोऊ,
द गनि गए जु भरि आनंद मढ़े नहीं।

धोय–धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।

कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै, कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।

एरी मेरी बीर! जैसे तैसे इन आँखिन तैं।
कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।

पाठगत प्रश्न 12.2

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. गोपिका की ओर एक-साथ कौन-कौन दौड़े—

   (क) ग्वाल-बाल और गुलाल (ग) गुलाल और नंदलाल

   (ख) नंदलाल और ग्वाल-बाल (घ) अहीर युवक और अबीर

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो शब्दों या वाक्यों में दीजिए:

2. प्रिय सखी से 'तिहारी सौंह' कहकर गोपिका अपना कौन-सा भाव प्रकट करना चाहती है?
3. गोपिका की विवशता और दयनीयता किस पंक्ति में व्यक्त हुई है?
4. गोपिका की आँखों से क्या बाहर निकल गया और क्या उसके अंदर ही रह गया?

12.5 भाव तथा शिल्प सौंदर्य

कवि पद्माकर के काव्य में रीतिकालीन कविता की सभी प्रमुख विशेषताएँ विद्यमान हैं। वे रीतिबद्ध काव्यधारा के प्रतिभा-संपन्न कवि थे। उनमें श्रृंगार रस की भावाभिव्यक्ति की

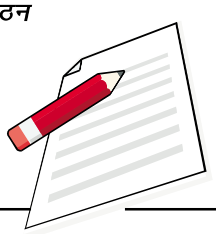

विलक्षण प्रतिभा रही है। इसी कारण कवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि कहे जाते हैं।

या अनुराग की फागु लखौं, जहाँ रागती राग किसोर किसोरी,
त्यों 'पद्माकर' घालि घली, फिर लाल ही लाल गुलाल की झोरी।
जैसी की तैसी रही पिचकी, कर काहू न केसर रंग की बोरी,
गोरी के रंग में भीजियो साँवरो, साँवरे के रंग भीजिगी गोरी।

उत्कृष्ट कल्पना की उड़ान और विषय-विवेचन की विशुद्धता भी पद्माकर की विशेषता है, जिससे काव्य में लाक्षणिकता और मधुरता आ जाती है। वे अनुप्रासों की तो झड़ी ही लगा देते हैं, जिससे अद्‌भुत चमत्कार पैदा हो जाता है।

कूलन में केलि में कछारन में कुंजन में
क्यारिन में कलिन कलीन किलकत हैं।

ब्रज भाषा का सुंदर साहित्यिक रूप आपकी रचनाओं को अलग ही पहचान दिलाता है।

पद्माकर रीतिकाल के अंतिम श्रेष्ठ कवि हैं। रस निरूपक आचार्य कवि के रूप में उन्हें बहुत ख्याति मिली। सजीव मूर्तविधान करने वाली कल्पना द्वारा उन्होंने प्रेम और सौंदर्य के मार्मिक चित्र प्रस्तुत किए हैं। वे उत्कृष्ट प्रतिभा-संपन्न कवि हैं। उनके काव्य की दो विशेषताएँ सर्वोपरि हैं—दृश्य और शब्द-योजना के द्वारा प्रकृति के माध्यम से ऋतु-वर्णन और कल्पना की उल्लासमयी उड़ान। आनंद और उल्लास से जगमगाते चित्र प्रस्तुत करने में उनकी शब्द-संयोजना अनुपम है।

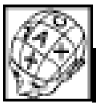

12.6 आपने क्या सीखा

1. पद्माकर रीतिकाल के अंतिम समर्थ कवि हैं। उनका काव्य भी उनके जीवन की तरह ही उल्लास और ऐश्वर्य से युक्त है।
2. पद्माकर की भाषा में रीतिकालीन काव्य-भाषा और शिल्प की समस्त सरसता, सुघड़ता, कोमलता और आलंकारिकता मिलती है। ब्रजभाषा का प्रौढ़ साहित्यिक रूप पद्माकर के काव्य में बड़े स्वाभाविक रूप में विद्यमान है।
3. उनके रूप चित्र भी रंगीन और आकर्षण हैं। फाग के जो नयनाभिराम सहृदयता भरे दृश्य चित्र कवि ने अंकित किए हैं, उनमें भाव-प्रवणता और दृश्यविधायिनी क्षमता का पूरा परिचय मिलता है।

12.7 योग्यता-विस्तार

(क) कवि परिचय

महाकवि पद्माकर रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि माने जाते हैं। उनका जन्म संवत् 1810 में जिला बाँदा में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रतिभा के कारण अनेक

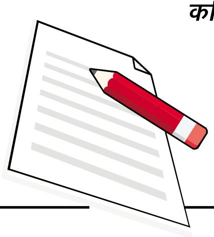

टिप्पणी

राजदरबारों में प्रतिष्ठा प्राप्त की। पद्‌माकर ने बाँदा के हिम्मत बहादुर सिंह के दरबार में रहकर 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि' की रचना की। सितारा नरेश रघुनाथ राव, जयपुर नरेश सवाई जगतसिंह और राज प्रताप सिंह तथा ग्वालियर नरेश दौलतराव सिंधिया के यहाँ आपने सम्मानपूर्वक आश्रय प्राप्त किया।

पद्‌माकर की प्रमुख रचनाएँ हैं– 'हिम्मत बहादुर विरुदावलि', 'जगत विनोद', 'पद्‌माभरण', 'राम रसायन' 'गंगा लहरी' आदि।

माना जाता है कि कवि पद्‌माकर जीवन के अंतिम समय में कुष्ठ रोग से पीड़ित हो गए थे और गंगातट पर गंगाजल का निरंतर सेवन करने के उपरांत वे स्वस्थ होते चले गए। अतः उन्होंने गंगा की स्तुति में 'गंगालहरी' नामक ग्रंथ की रचना की। अंततः उन्होंने कानपुर में गंगातट पर ही निवास स्थान बना लिया और 80 वर्ष की आयु में उनका देहांत हो गया।

(ख) कवि पद्‌माकर की निम्नलिखित रचनाएँ पढ़िए और आनंद लीजिए:

1. फाग के भीर अभीरन में गहि गोविंद लै गई भीतर गोरी।
   माई करी मन की 'पद्‌माकर,' ऊपर नाइ अबीर की झोरी।।
   छीन पितम्बर कम्मर तैं सु, बिदा दई मीड़ि कपोलन रोरी।
   नैंन नचाइ कह्यौ मुसक्याइ, लला फिरि आइयो खेलन होरी।।

2. कूलन में, केलि में, कछारन में, कुंजन में,
   क्यारिन में कलिन–कलीन किलकत है।
   कहैं 'पद्‌माकर' परागनहूँ में, देस देसन में,
   पानन में पिकन पलासन पंगत है।
   द्वार में, दिसान में, दुनी में, देस देसन में,
   देखो द्वीप-द्वीपन में दीपत दिगंत है।
   बीथिन में, ब्रज में, नबेलिन में, बेलिन में,
   बनन में, बागन में, बगर्‌यौ वसंत है।

(ग) प्रकृति सौंदर्य चित्रण या ऋतु दर्शन पर बिहारी, देव आदि कवियों के कवित्त और सवैये पढ़िए और उनका संकलन कीजिए।

12.8 पाठांत प्रश्न

1. 'औरे रस औरे रीति, औरे राग, औरे रंग, औरे तन, औरे मन, औरे बन ह्वै गए', इस काव्य-पंक्ति में 'औरे' पद की बार-बार आवृत्ति क्यों हुई है?

2. 'फाग' कवित्त में गोपिका अपनी किस विवशता का वर्णन कर रही है?
3. निम्नलिखित पक्तियों की सप्रंसग व्याख्या अपने शब्दों में कीजिए:

   एकै संग धाए नँदलाल और गुलाल दोऊ,
   दृगनि गए जु भरि आनंद मढ़ै नहीं।
   धोय-धोय हारी, 'पद्माकर' तिहारी सौंह,
   अब तौ उपाय एक चित्त में चढ़ै नहीं।
   कैसी करौं, कहाँ जाऊँ, कासे कहूँ, कौन सुनै,
   कोऊ तो निकासो, जासै दरद बढ़ै नहीं।
   एरी मेरी बीर! जैसे-तैसे इन आँखिन तैं।
   कढ़िगो अबीर, पै अहीर तो कढ़ै नहीं।।

4. पद्माकर की काव्य भाषा पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।
5. निम्नलिखित पद को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

   फूले आसपास काल विमल अकास भयो,
   रही ना निसानी कहूँ महि में गरद की।
   गुंजत कमल दल ऊपर मधुप मैन,
   छाप सी दिखाई आनि विरह फरद की।

   (क) 'गरद' और 'मधुप' शब्दों के अर्थ बताइए।
   (ख) कविता में किस ऋतु का वर्णन किया गया है?
   (ग) कमल पर भौंरों के गूँजने की चर्चा कवि ने किस संदर्भ में की है?
   (घ) कविता में कवि ने विरह की बात क्यों की है?

12.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. भौरों की, ऋतुराज वसंत के आगमन से
2. वसंत आगमन पर सभी खुश होकर नाच उठे हैं। वनों में भी पक्षी तथा जानवर भी चहकते हुए प्रसन्नता व्यक्त कर रहे हैं।
3. नेत्रों से अबीर निकल गया पर कृष्ण की छवि नहीं हट रही।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

12.1 1. वसंत की मादकता और मस्ती के प्रभाव के कारण

2. अनुप्रास

3. वसंत की मादकता के प्रभाव के कारण

4. रोचकता, चंचलता, भाव प्रवणता

12.2 1. (ग)

2. विश्वास का

3. 'कैसी करौं कौन सुनै'।

4. गुलाल निकल गया, कृष्ण।

301hi13

13

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

हिंदी साहित्य जगत में सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का महत्त्वपूर्ण स्थान है। निराला जिस युग में कविता लिख रहे थे, उस युग में भारतीय समाज अनेक प्रकार के सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों से गुज़र रहा था। पूँजीवादी व्यवस्था द्वारा किए जा रहे शोषण को देखकर निराला बहुत बेचैन होते थे। उनकी अनेक रचनाओं में यह बेचैनी और पीड़ा झलकती है। 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में भी श्रमिक नारी के जीवन और उसके प्रति समाज की हृदयहीनता का अंकन किया गया है।

निराला का अपना जीवन भी कष्ट भोगते हुए बीता। उसमें सुख-आनंद की लहरें कुछ ही दिनों के लिए आईं, जिनकी स्मृति के सहारे ही उन्होंने शेष जीवन बिताया। 'मौन' कविता में कवि अपने प्रिय के साथ कुछ समय चुपचाप बिताना चाहता है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर श्रमिक के कठोर जीवन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- शोषक और शोषित के जीवन की विषमताओं का विवेचन कर सकेंगे;
- 'मौन' कविता के आधार पर अपने प्रिय पात्र के साथ कुछ घड़ी मौन बिताने के आनंद का उल्लेख कर सकेंगे;
- कविताओं की भाषा-शैली और शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप 1

क्या आप कभी प्रचंड गरमी में बाहर निकले हैं ? शहरों में मध्यवर्ग के लोग गरमी में पंखा, कूलर जैसे उपकरणों के साथ घरों के भीतर बंद रहना पसंद करते हैं। कार्यालयों में भी ऐसी ही सुविधाएँ चाहते हैं, जिनके लिए ऐसी सुविधाएँ संभव नहीं होती, वे भी कम-से-कम नीम, पीपल, जामुन जैसे किसी छायादार पेड़ के नीचे बैठकर गरमी के दिन बिताना चाहते हैं।

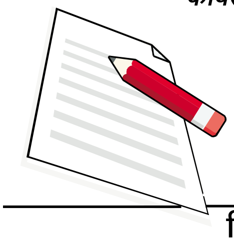

टिप्पणी

ऐसी आग बरसाती गरमी में खुली सड़क पर काम कर रहे किसी श्रमिक को देखिए। सोचिए, वह ऐसी प्रचंड गरमी में भी क्यों काम करता है ? विश्राम क्यों नहीं करता ? यदि वह काम न करे तो क्या होगा ? अपने विचार यहाँ लिखिए:

....

....

....

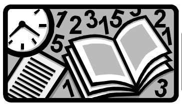

13.1 मूलपाठ

आइए, निराला की दो कविताओं का आनंद लें

1. वह तोड़ती पत्थर

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर –
वह तोड़ती पत्थर।

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,

रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर –
वह तोड़ती पत्थर।

देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,

शब्दार्थ

नत-नयन	–	झुकी आँखें
गुरु	–	भारी
तरुमालिका	–	पेड़ों की पक्तियाँ
अट्टालिका	–	ऊँचे भवन
प्राकार	–	परकोटा
दिवा	–	दिन
लू	–	तेज गर्म हवा
भू	–	प थ्वी, ज़मीन
गर्द-चिनगीं	–	चिंगारी जैसे धूल के कण
छिन्नतार	–	तारों की झनकार

टिप्पणी

देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर,
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा –
'मैं तोड़ती पत्थर।'

2. मौन

बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक से
प्रिय, अन्त और अनन्त के,
तम-गहन-जीवन घेर।
मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु-सा बह जाय।
सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

शब्दार्थ

सुघर – सुडौल देहवाली
सीकर – पसीने की बूँदें
तम – अंधकार
गहन – गहरा
मधु – आनंद
मूकता – चुप्पी
स्वच्छंद – मुक्त, स्वतंत्र
पतनाघात (पतन+आघात) – गिरना और चोट लगना
निर्द्वन्द्व (निः + द्वन्द्व) – द्वन्द्वरहित, तनाव मुक्त, स्थिर

13.2 बोध प्रश्न

उपर्युक्त दोनों कविताओं को पढ़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. पहली कविता में 'श्याम तन, भर बँधा यौवन' पंक्ति में किसकी बात कही जा रही है?
2. पहली कविता में किस प्रकार के मौसम का वर्णन है?
3. पत्थर तोड़ने वाली जहाँ बैठी थी, उसके सामने क्या दृश्य था?
4. कवि कुछ देर साथ बैठने का आग्रह किससे कर रहा है ?

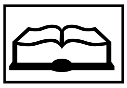

13.3 आइए समझें

कविता - 1 'वह तोड़ती पत्थर'

संदर्भ

'वह तोड़ती पत्थर' कविता छायावाद के प्रमुख कवि निराला द्वारा रचित है। यह उनके

टिप्पणी

वह तोड़ती पत्थर,
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के
पथ पर –
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई
स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार –
सामने तरु-मालिका
अट्टालिका, प्राकार।

कविता-संग्रह 'अनामिका' में संकलित है। सर्वप्रथम यह कविता 'सुधा' मासिक पत्रिका में मई 1937 में प्रकाशित हुई थी।

प्रसंग

कविता पढ़कर आप पहले जान चुके हैं कि यह एक श्रमिक नारी पर लिखी गई है, जो सड़क के किनारे पत्थर तोड़ रही है। कवि ने उसे इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम करते देखा है। उसी का चित्र उन्होंने यहाँ खींचा है।

व्याख्या

काव्यांश - 1

इलाहाबाद की किसी सड़क पर काम में लगी एक श्रमिक महिला को देखकर निराला जी ने लिखा है कि वह जहाँ बैठी काम में लगी है, वहाँ कोई छायादार पेड़ भी नहीं है, जो उसे गरमी की प्रखरता से, उसकी तेज़ी से बचा सके। पर उसे इस स्थिति से कोई शिकायत नहीं है, वह तो इस स्थिति को स्वीकार कर रही है। सोचिए क्यों ? क्योंकि वह जानती है कि जब कठिन श्रम करना है तो अनुकूल परिस्थितियों की कल्पना ही व्यर्थ है।

कवि की दृष्टि पहले श्रमिक महिला के शारीरिक रूप-सौंदर्य की ओर जाती है। उसका शरीर साँवला है। वस्तुतः, धूप में काम करने वाले सभी श्रमिकों का रंग धूप में साँवला पड़ ही जाता है। वह युवती है और निरंतर श्रम करने के कारण उसका शरीर सुगठित है यानी देह-रचना सुडौल और सुघड़ है। उसकी झुकी आँखें बड़ी प्यारी लग रही हैं। उसका मन भी काम पर पूर्ण तन्मयता से लगा है। हाथ में भारी हथौड़ा लेकर वह बार-बार पत्थरों पर चोट कर रही है। उन्हें तोड़ रही है।

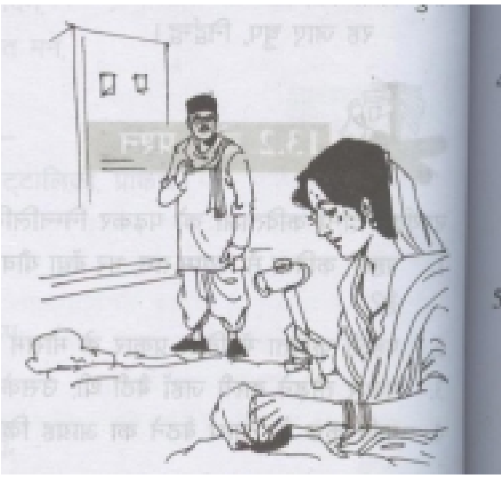

चित्र 13.1

इसके बाद कवि परिवेश की परस्पर विरोधी स्थिति का चित्रण कर रहा है। वह कहता है जहाँ एक ओर वह मज़दूरनी गरमी में छायाहीन वृक्ष के नीचे काम कर रही है – वहीं उसके एकदम सामने के परिवेश से संपन्नता और सुख-सुविधा झलक रही है। वहाँ सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियाँ हैं, विशाल ऊँचे भवन हैं और उनके चारों ओर सुंदर दीवारें हैं। कविता की इन पंक्तियों में यह संकेत स्पष्ट है कि वह संभ्रांत नागरिकों की बस्ती है। वे लोग सुख-सुविधाओं के बीच अट्टालिकाओं में परकोटों से घिरे बैठे हैं और आस-पास की परिस्थितियों से बेखबर अपने आप में सिमटे हुए हैं, जबकि उन भवनों का निर्माण करने वालों को मौसम की मार से बचने की सुविधा तक नहीं है।

टिप्पणी

1. उपर्युक्त पंक्तियों में कविता का सामान्य अर्थ बताया गया है। आप जानते हैं कि 'निराला' सिद्ध कवि हैं। वे शब्दों और वर्ण्यवस्तु का चयन विशेष आशय से करते हैं। जैसे इन्हीं पंक्तियों में देखिए : *''कोई न छायादार/पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार श्याम तन, भर बँधा यौवन/नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन''*।

2. आप जानते हैं कि हम सर्वनाम का प्रयोग तब करते हैं जब पहले संज्ञा का प्रयोग कर चुके होते हैं। यहाँ कवि ने कविता का प्रारंभ 'वह' सर्वनाम से किया है, पूरी कविता में 'वह' के लिए कोई नाम भी नहीं है। बता सकते हैं ऐसा क्यों है ? कवि यदि चाहता तो मजदूरनी के लिए कोई नाम भी दे सकता था। पर नाम न देकर वह व्यक्त करना चाहता है कि यह बात किसी एक श्रमिक विशेष पर नहीं, श्रमिक सामान्य पर अर्थात् सभी श्रमिकों पर लागू होती है। किसी भी सड़क के किनारे पत्थर तोड़ने वाली मजदूरनी की कठिनाई और कार्य परिस्थितियाँ एक-सी हैं। इस प्रकार नाम महत्त्वपूर्ण नहीं, महत्त्वपूर्ण है उसका काम– अर्थात् 'पत्थर तोड़ना'। कवि प्रारंभ के वाक्य में ही कहता है – 'वह तोड़ती पत्थर।'

3. यहाँ व्यक्ति का नाम न देने वाला कवि सड़क की पहचान के लिए नाम देता है – *'देखा मैंने उसे इलाहाबाद के पथ पर'*। यहाँ आप पूछ सकते हैं कि नाम न देने से क्या अर्थ अधिक व्यापक नहीं होता ? यहाँ 'पथ पर' के साथ इलाहाबाद नाम देकर उसने इस घटना को सच्चा और प्रामाणिक बताना चाहा है। जैसे कहना चाहता हो 'यह एक सच्ची घटना' है और वह इस घटना का साक्षी है। सभी कुछ उसके सामने हुआ है। यह इलाहाबाद की देखी हुई घटना है।

4. अगले कथन में 'स्वीकार' के प्रयोग पर ध्यान दीजिए। जहाँ बैठकर वह काम कर रही है, वह जगह छायादार नहीं है। पर उसे यह स्थिति स्वीकार है। यहाँ कवि का आशय है कि मज़दूर जिन परिस्थितियों में काम कर रहे हैं, वे उनके अनुकूल नहीं हैं, प्रतिकूल हैं। पर वे इन प्रतिकूल परिस्थितियों के होते हुए भी कोई बखेड़ा खड़ा नहीं कर रहे हैं, बल्कि उन्हें स्वीकार कर काम करते रहते हैं।

5. अगली दो पंक्तियाँ देखिए :

   श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,

   'साँवले रंग का शरीर, बँधे परिपुष्ट अंगों से झलकता यौवन' कथन से स्पष्ट है कि वह श्रमिक महिला सुंदरी है। पर उसकी आँखों में कोई श्रृंगार या उच्छृंखलता का भाव नहीं है। आँखें झुकी हैं, जो उसके शील स्वभाव को व्यंजित कर रही हैं। युवती के प्रसंग में कवि प्रायः उसके प्रिय का उल्लेख करते हैं, जिस पर उसका मन हो। यहाँ भी कवि उसके प्रिय का उल्लेख करता है, पर यह प्रिय कोई व्यक्ति नहीं, वह है कर्म– पत्थर तोड़ने का काम, उसी पर उसका मन है, उसी पर उसकी आँखें। इसलिए कहा है – *'नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन।'*

6. अब इन तीन पंक्तियों को पढ़िए :

'गुरु हथौड़ा हाथ
करती बार-बार प्रहार
सामने तरु-मालिका अट्टालिका, प्राकार।

इसका अर्थ आप पीछे पढ़ चुके हैं। देखना यह है कि इस प्रसंग में कवि उसके सामने तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकार का उल्लेख क्यों कर रहा है? निराला ने इस पंक्ति के द्वारा परिवेश की विडंबना को साकार किया है। एक ओर भीषण गरमी में सड़क पर पत्थर तोड़ती औरत और दूसरी ओर सुंदर सजावटी वृक्षों की पंक्तियों से सजे परकोटों से घिरे बड़े-बड़े महल। कवि का उद्देश्य परिवेश के विरोध और विडंबना को साकार करना ही नहीं है, वह कहता है *'गुरु हथौड़ा हाथ, करती बार-बार प्रहार'*, वह हाथ में भारी हथौड़ा लेकर बार-बार प्रहार कर रही है, पत्थरों पर ही नहीं, बल्कि सामने उन तरुमालिका, अट्टालिका और प्राकारों की सुविधाओं का भोग करने वाले, वहाँ रहने वाले उन सभी लोगों पर और साथ ही साथ उस व्यवस्था पर भी जहाँ शोषित मज़दूर प्रतिकूल परिस्थितियों में काम करते हैं और शोषक उनसे बेखबर होकर सुख-सुविधाओं में जीते हैं।

पाठगत प्रश्न 13.1

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कवि ने मज़दूरनी के लिए 'वह' सर्वनाम का प्रयोग किया है, क्योंकि
   (क) उसका कोई नाम नहीं है।
   (ख) कवि उसका नाम नहीं जानता।
   (ग) वह किसी भी श्रमिक की बात हो सकती है।
   (घ) महिला के लिए 'वह' कहना ही उचित है।
2. पठित पंक्तियों में चित्रण नहीं किया गया है –
   (क) श्रमिक के कठोर श्रम का।
   (ख) काम करने की प्रतिकूल परिस्थितियों का।
   (ग) शोषक और शोषित की जीवन-शैली के अंतर का।
   (घ) युवक-युवती के शारीरिक सौंदर्य के अंतर का।

अंश - 2

आइए, अगली आठ पंक्तियाँ पढ़ कर देखें –

आप जान गए हैं कि इलाहाबाद की किसी सड़क पर तपती दोपहरी में पत्थर तोड़ती महिला के श्रम का चित्रण कवि इस कविता में कर रहा है। इन पंक्तियों में कवि कार्य

की कठिनतर परिस्थितियों का चित्रण कर रहा है। दोपहर में धूप बढ़ने लगी है। गर्मियों के दिन हैं और तमतमाता सूर्य अपनी प्रचंड गरमी से सबको व्याकुल कर रहा है। यहाँ तमतमाता रूप प्रत्यक्ष में तो दिन का है पर इसे मजदूरनी के तमतमाए चेहरे से भी जोड़ा गया है। ज़रा सोचिए, गरमी के दिनों में क्या हाल होता है। गरम लू के थपेड़े तो मानो मनुष्य को झुलसा देते हैं। कवि कहता है कि इस समय धरती ऐसे तप रही है जैसे रूई अंदर ही अंदर धीरे-धीरे सुलगती जाती है। चारों ओर धूल का गुबार-सा छा गया है। गर्द का एक-एक कण चिंगारी सा जलने लगा है। अब तो दोपहर हो आई है। दोपहर में गरमी अपने चरम पर होती है। ऐसे में भी वह मज़दूरनी सिर नीचा करके पत्थर तोड़ने के कार्य में लगी हुई है।

चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रूई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गयीं,
प्रायः हुई दुपहर–
वह तोड़ती पत्थर।

टिप्पणी

1. इन पंक्तियों में 'निराला' के शब्दचयन पर ध्यान दीजिए। इस प्रसंग को वह *'चढ़ रही थी धूप'* कथन से प्रारंभ करते हैं। धूप का धीरे-धीरे चढ़ना, अंततः उसका दोपहर तक पहुँचना है – *'प्रायः हुई दुपहर'*। यहाँ 'प्रायः' का प्रयोग देखिए, दीन-श्रमिकों के पास समय मापने के कोई निश्चित उपकरण नहीं होते। धीरे-धीरे चढ़ती-बढ़ती धूप जब इतनी बढ़ जाए कि धरती जलने लगे, धूप के थपेड़े असह्य हो जाएँ। गर्द-गुबार उड़ने लगे तो उन्हें लगता है कि लगभग मध्याह्न हो गया।
2. *'रूई ज्यों जलती हुई भू'* में उपमा बड़ी बेजोड़ है। रूई में लगी आग की लपटें दिखती नहीं हैं। वह धीरे-धीरे भीतर-ही-भीतर सुलगती है। धरती का भी यही हाल है। शुरू में ऐसा लगता है कि रूई में कोई आग नहीं है और न ही लपटें उठती दिखती हैं, पर गरमी की अधिकता से पता चलता है कि आग लगी हुई है।
3. ऐसा ही प्रयोग है – *'गर्द चिनगीं'*। दोपहर इतनी गरम हो जाती है कि धूल का एक-एक कण आग की चिंगारी-सा जान पड़ता है। ऐसी चिंगारियों की गर्द पूरे आसमान में छा गई है। इस प्रकार पूरे अवतरण में गरमी की प्रचंडता को अनेक प्रकार से साकार किया गया है।

पाठगत प्रश्न 13.2

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'दिवा का तमतमाता रूप' कथन से आशय है :
   (क) दिया जगमगा रहा था।
   (ख) मजदूर क्रोध से तमतमा रहे थे।
   (ग) जगमगाता दिन बहुत सुंदर लग रहा था।
   (घ) सूर्य मानो आग बरसा रहा था।
2. 'रूई ज्यों जलती हुई भू' का आशय है :
   (क) धरती पर आग लगी थी।
   (ख) रूई धीरे-धीरे जल रही थी।
   (ग) असहनीय गरमी पड़ रही थी।
   (घ) धरती मानो सुलग रही थी।

टिप्पणी

देखते देखा मुझे तो एक बार उस भवन
की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस द ष्टि से
जो मार खा रोयी नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुघर
ढुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा–
'मैं तोड़ती पत्थर'।

अंश - 3

अब कविता की शेष पंक्तियाँ पुनः पढ़ लीजिए।

व्याख्या

कवि मजदूरनी को दोपहर की भीषण गरमी में काम करते हुए देख रहा था। अब मज़दूरनी ने भी देखा कि कोई उसे देख रहा है। उसे देखते हुए देखकर, उसने सामने की अट्टालिका को देखा और देखने में उसका काम करने का क्रम थोड़ा-सा विचलित हुआ। पर उसके मन में दीनता या ईर्ष्या जैसी कोई भावना नहीं उपजी। उसने कवि को ऐसी दृष्टि से देखा जिसने आतंक को सहा है, पर रोकर अपनी दीनता कभी प्रकट नहीं की। कवि को लगता है कि सितार को बजाने पर भी जो झंकार मैंने कभी नहीं सुनी थी, ऐसी झंकार मुझे उस मज़दूरनी के श्रम और उसकी स्वाभिमानी दृष्टि से सुनाई पड़ी। पलभर उसका हाथ रुक जाने पर वह सुडौल युवती काँपी, उसके माथे से पसीने की कुछ बूँदें टपक पड़ीं। इसके बाद वह पुनः काम में लग गई। उसके पुनः काम प्रारंभ करने के अंदाज़ से कवि को लगा मानो वह कह रही हो कि वह पत्थर तोड़ती है यहाँ 'मैं तोड़ती पत्थर' का व्यंग्यार्थ यह भी है कि मैं पत्थर जैसी हृदयहीन सामाजिक व्यवस्था को तोड़ना चाहती हूँ।

टिप्पणी

1. इस पूरे प्रसंग की विशेषताओं पर आपने गौर किया होगा। इसमें बिना संवादों के भी संवादात्मकता है। केवल आँखों से ही भावों और विचारों को अभिव्यक्त किया जा रहा है। पहले कवि मज़दूरनी को देखता है, मज़दूरनी कवि को देखती है और उसके बाद उस भवन की ओर देखती है। पुनः वह कवि की ओर स्वाभिमान और अपराजेयता के भाव से देखती है। इस प्रकार, देखने का मौन ही मुखरित हुआ है। वीणा की झंकार की कल्पना भी कवि ही कर रहा है। मज़दूरनी का टूटा हृदय ही 'छिन्नतार' है। अंत में मज़दूरनी का मौन संवाद ही मुखरित हुआ है, कवि को लगता है, जैसे वह कह रही हो – *'मैं तोड़ती पत्थर'*।
2. कविता के प्रारंभ में कथन था – 'वह तोड़ती पत्थर', समाप्ति में है – 'मैं तोड़ती पत्थर' क्या इन दोनों प्रयोगों का कोई रहस्य है? हाँ, है। प्रारंभ में 'वह' सर्वनाम सामान्य मज़दूर वर्ग के लिए है और कथन कवि का है। पर अंत में 'वह' 'मैं' में बदल गया है। जो मज़दूर सामान्य का नहीं 'विशेष' का द्योतक है, ऐसे मज़दूर का जिसे सामाजिक विषमताओं का बोध है और अपने कर्तव्य तथा लक्ष्य का ज्ञान है। पत्थर पर हथौड़ा चलाते हुए मजदूरनी कहती है – *'मैं तोड़ती पत्थर'* अर्थात् "मैं प्रत्यक्ष में तो सड़क के किनारे पड़े पत्थर तोड़ रही हूँ। पर 'मैं' परोक्ष रूप से संवेदनशील समाज की विषमताओं को सह रहे अपने हृदय रूपी पत्थर को भी तोड़ रही हूँ और इस हृदयहीन पत्थर-दिल सामाजिक व्यवस्था को भी तोड़ सकती हूँ।

पाठगत प्रश्न 13.3

उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. 'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं' कथन से मजदूरनी के स्वभाव

की कौन-सी विशेषता अभिव्यक्त हो रही है –

(क) दीनता (ख) सहिष्णुता (ग) स्वाभिमान (घ) पराधीनता।

2. कवि और मज़दूरनी आपस में बातें करते से क्यों प्रतीत हो रहे हैं?

क्रियाकलाप 13.2

यह सच है कि हम अपने विचारों और भावनाओं को भाषा द्वारा अभिव्यक्त करते हैं, पर मौन का बड़ा महत्त्व माना गया है। हमें जब गहन समस्याओं पर चिंतन करना होता है, तब वाणी को विराम देकर मौन का सहारा लेते हैं। कहा भी गया है कि speech is silver, silence is gold वाणी भाषण चाँदी-सी मूल्यवान है, तो मौन सोने-सा है। क्या आप बता सकते हैं कि आत्मान्वेषण के लिए कौन-सी स्थिति उपयुक्त है और क्यों?

....

....

....

....

2. 'मौन' कविता

आइए, अब दूसरी कविता 'मौन' पर विचार करें। पहले आप इस कविता का एक बार फिर से पाठ कर लीजिए।

बैठ लें कुछ देर,
आओ, एक पथ के पथिक से
प्रिय, अन्त और अनन्त के,
तम-गहन-जीवन घेर।
मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु-सा बह जाय।
सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

संदर्भ

'मौन' शीर्षक कविता के रचयिता छायावाद के प्रमुख कवि निराला हैं। यह निराला ग्रंथावली भाग–2 में संकलित कविता है।

प्रसंग

प्रस्तुत कविता में एक व्यक्ति अपने प्रियतम से कुछ क्षण शांति से मौन रहकर व्यतीत करने का आग्रह कर रहा है।

व्याख्या

कविता को ठीक से समझने के लिए आइए सबसे पहले विचार करते हैं कि कविता किसे संबोधित है। इसमें कवि ने संबोधन किया है – 'प्रिय'। यह प्रिय कौन हो सकता है ? पूरा कथन है – 'एक पथ के पथिक से, प्रिय' अर्थात् प्रिय और संबोधित करने वाला मानो एक राह के राही हैं, सहयात्री हैं। ये दोनों मित्र भी हो सकते हैं और दो प्रेमी भी। महत्त्वपूर्ण यह है कि दोनों समान परिस्थितियों में जीवनयात्रा कर रहे हैं। प्रस्तुत कविता में अपने प्रियपात्र से कहा गया है – 'हे प्रिय, आओ दोनों कुछ देर के लिए बैठ लें। जीवन तो निरंतर गतिशील है। उस गतिशीलता में कुछ पल बैठकर स्वयं को विराम दें। हम दोनों एक ही जीवन मार्ग के पथिक हैं, अतः इस जीवन के क्षणिक और स्थायी कष्टों और अंधकारों को घेरकर कुछ देर बैठ लें। यहाँ कवि ने 'तम-गहन-जीवन घेर' क्यों कहा ? उसे घेरकर बैठने की चाह में जीवन यात्रा को याद करने की चाह छिपी है। कवि चाहता है कि दोनों चुपचाप बैठे रहें। घेर में यह व्यंजना

है – आओ, जीवन के गहरे अँधेरे को, असफलताओं को घेर कर बैठें। उन पर चुपचाप मनन करें। आप जानते हैं कि भाषा की एक सीमा होती है। परंतु मौन की शक्ति असीम होती है। क्या प्रत्येक बात बोलकर समझाई जा सकती है ? नहीं, कुछ बातें अनकही अधिक स्पष्ट होती हैं। बिहारी ने भी तो कहा है – *'कहिहै अब तेरो हियो, मेरे हिय की बात'*। इसलिए मौन रहकर वह सब भी समझा जा सकता है, जिसे भाषा नहीं समझा पाती। मौन मधु-सा मीठा कब हो सकता है ? एक दूसरे के भावों को कैसे समझा जा सकता है? मन की उपमा किससे दी गई है ? जैसे बूँदें नदी में चुपचाप बह जाती हैं, वैसे ही हमारा मन जीवन के विशाल प्रवाह में बूँदों-सा चुपचाप बह जाए। हमारा जीवन कैसा हो ? सरल और बंधनों से मुक्त हो, अपने वश में हो। वह उत्थान और पतन की चोटों को ऐसी सरलता से सह जाए जैसे प्रातःकाल की वायु से छोटे-छोटे पत्ते कभी ऊपर कभी नीचे होते रहते हैं और झोंकों को चुपचाप सहते रहते हैं अर्थात् हिलते-डोलते दिखाई देते हैं। ऐसे ही हम जीवन के उतार–चढ़ावों को झेलते हुए भी निर्द्वन्द्व यानी तनाव मुक्त बने रहें। निर्द्वन्द्व होना किसे कहते हैं? न सुख में इतराए, न दुख में घबराए। दोनों स्थितियों में अंतर न रहना ही निर्द्वन्द्व होना है। कवि ऐसे ही निर्द्वन्द्व जीवन की कामना कर रहा है। क्यों ? क्योंकि तभी जीवन बंधनों से मुक्त होकर स्वच्छंद हो सकेगा।

टिप्पणी

1. कवि के इन भाषा प्रयोगों पर ध्यान दीजिए। *'बैठ लें कुछ देर'* में कवि ने 'कुछ देर' पर अधिक बल दिया है। जीवन की भाग-दौड़ और आपाधापी में कुछ देर मौन बैठकर चिंतन करना, जीवन यात्रा के लिए स्फूर्ति दे सकता है।
2. 'आओ' में बड़ा ही स्पष्ट और अनौपचारिक आग्रह है। अंतरंगता और निकटता में ही इस क्रियापद का प्रयोग होता है। यहाँ भी 'आओ' के बाद *'एक पथ के पथिक से'* कहकर वह अंतरंगता उजागर कर दी गई है।
3. 'मौन' के 'मधु' हो जाने की कल्पना भी बेजोड़ है। मधु की मिठास वाणी से बताई जाती है। कवि उस मधु का अनुभव करने को तो कहता है, पर भाषा को चुप्पी की आड़ में कर देना चाहता है। ऐसी ही स्थिति को सूरदास ने कहा था – *'ज्यों गूँगेहि मीठे फल कौ रस अंतरगत ही भावै'*।
4. 'सरलता की बाढ़' प्रयोग भी दर्शनीय है। मन में असरलता, कटुता हो तो जीवन दूभर हो जाता है। सरलता की अधिकता के लिए उसने 'सरलता की बाढ़' कहा है। 'सरलता की बाढ़' आएगी तो मन उसमें बूँदों-सा बह जाएगा।
5. अगले वाक्य में कवि पुनः सरल शब्दों का प्रयोग करता है। यहाँ ये पंक्तियाँ जीवन का विशेषण बनकर सामने आई हैं। ऐसा सरल जीवन उत्थान और पतन को भी सरलता से झेल सकेगा। झेलेगा ही नहीं, ऐसी स्थितियों में वह शांत और स्थिर भी बना रहेगा।

पाठगत प्रश्न 13.4

उपयुक्त विकल्प चुनकर नीचे दिए प्रश्न का उत्तर दीजिए:

1. 'मौन मधु हो जाए' कथन का आशय है–

(क) मौन होकर मधु पिया जाए।

(ख) मौन और मधु दोनों मीठे होते हैं।

(ग) मौन बैठे रहने में बड़ा लाभ है।

(घ) मौन मधु-सा आनंद दे सके।

2. 'मन सरलता की बाढ़ में' पंक्ति का आशय स्पष्ट कीजिए।

13.4 भाव सौंदर्य

1. वह तोड़ती पत्थर

'वह तोड़ती पत्थर' कविता भाव सौंदर्य की दृष्टि से बहुत संपन्न है। सड़क पर गिट्टी तोड़ती मज़दूरनी का वर्णन करते हुए कवि सरल शब्दों से परिवेश का निर्माण करता है। वह छायाहीन पेड़ तले बैठी है। उसकी पृष्ठभूमि साधारण श्रमिक परिवार की है, किंतु शील और सच्चरित्रता जैसे चारित्रिक गुणों को दिखाना भी कवि नहीं भूला है। मज़दूर और संपन्न दोनों प्रकार के लोगों का चित्रण करते हुए कवि ने परस्पर विरोध ी चित्र खींचे हैं। एक ओर कठिनतम परिस्थितियों में काम करते श्रमिक वर्ग का चित्र है तो दूसरी ओर सुख-सुविधा संपन्न भवनों में रहने वाले लोगों का। कवि की सहज सहानुभूति श्रमिक वर्ग के साथ है। वह श्रमिक-वर्ग के हाथों हृदयहीन व्यवस्था को ध वस्त होते देखने की कामना रखता है।

2. मौन

'मौन' शीर्षक कविता में बहुत थोड़े शब्दों में जीवन में मौन के महत्त्व को प्रतिपादित किया गया है। जीवन की आपाधापी से कुछ क्षण निकाल कर वाणी को विराम देने और मौन की मिठास का अनुभव करने का आग्रह कवि अपने साथी से कर रहा है। कवि का विश्वास है कि जीवन में सरलता होनी चाहिए। जीवन सरल हो तो उत्थान और पतन दोनों के आवेगों को सरलता से झेला जा सकता है।

13.5 शिल्प सौंदर्य

शैली और शिल्प-सौंदर्य की दृष्टि से निराला की प्रस्तुत दोनों रचनाएँ बेजोड़ हैं।

'मैं तोड़ती पत्थर' प्रगतिवादी रचना है। शिल्प सौंदर्य की दृष्टि से यह रचना अद्भुत है। सर्वप्रथम तो कविता के छंद पर ध्यान दीजिए। परंपरागत छंदों में मात्रा और वर्ण का निश्चित विधान होता है, पर निराला की अनेक कविताओं में ऐसा बंधन नहीं है। इसे 'मुक्त छंद' कहते हैं। कविता को छंद के बंधन से मुक्त करने में निराला का बड़ा योगदान है। 'वह तोड़ती पत्थर' में तुकांतता है। तुक पंक्तियों के अंत में ही नहीं भीतर भी है, पर उसका बंधन नहीं है, पंक्तियाँ छोटी-बड़ी हैं, पर उनमें प्रवाह है, जैसे –

1. *श्याम तन, भर बँधा यौवन*
   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन
   गुरु हथौड़ा हाथ
   करती बार-बार प्रहार

2. *चढ़ रही है धूप*
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप।

कवि शब्दों के द्वारा पाठक के सामने एक-चित्र-सा खींच देता है, जैसे –

कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार,
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय कर्म-रत मन,

गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार
सामने तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

शब्द प्रयोग में भी कवि ने बड़ी कुशलता का परिचय दिया है। कम शब्दों से अधिक गूढ़ अर्थ का संकेत करना निराला की विशेषता है। जैसे, *'देखा मुझे उस दृष्टि से जो मार खा रोई नहीं', 'मैं तोड़ती पत्थर', 'मौन मधु हो जाए'* आदि ऐसे ही प्रयोग हैं। निराला जिस युग में कविता कर रहे थे, उसमें प्रायः संस्कृतनिष्ठ शब्दावली के प्रयोग का चलन-सा हो गया था। प्रसाद, पंत, महादेवी आदि की भाषा तत्सम प्रधान है, पर निराला का भाषा पर ऐसा अधिकार है कि वे संस्कृतनिष्ठ और सरल हिंदी के शब्दों का प्रयोग आवश्यकतानुसार कर लेते हैं। 'मौन' कविता में तत्सम शब्दों की प्रधानता है पर 'वह तोड़ती पत्थर' कविता की भाषा बड़ी ही सरल और बोलचाल की है। परंतु इसमें भी कवि जहाँ उन लोगों की बात करता है, जो समाज की सुख-सुविधाएँ भोग रहे हैं, तब वह तत्सम शब्दावली का प्रयोग करता है – तरुमालिका, अट्टालिका, प्राकार।

'मौन' कविता एक गीत है। इसमें छायावादी शिल्पविधान है और कवि की मौलिक कल्पना बड़ी अनूठी है। आगे दी गई पंक्तियाँ पढ़िए :

मौन मधु हो जाय
भाषा मूकता की आड़ में,
मन सरलता की बाढ़ में
जल-बिंदु—सा बह जाय।

इन पंक्तियों में छोटे-छोटे पदों और वाक्यांशों का प्रयोग हुआ है। छंद छोटा है और उसमें गीतात्मकता भी है। इसमें कवि ने मानो मौन का वातावरण अधिक सघन बनाने का प्रयास किया है।

पाठगत प्रश्न 13.5

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में शोषित और शोषक वर्ग में से कवि की सहानुभूति किसके साथ है?
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता छंद की दृष्टि से किस तरह की है?
3. 'मौन' कविता के शिल्प की विशेषता है –

   (क) स्वच्छंदता (ग) गीतात्मकता
   (ख) मुक्तछंदता (घ) संवादात्मकता

13.6 आइए, स्वयं पढ़ें

अभी आपने निराला की कविताएँ पढ़ीं। उन्हें समझा। अब इससे मिलती-जुलती एक और कविता पढ़िए –

मेरे आँगन में, (टीले पर है मेरा घर)
दो छोटे – से लड़के आ जाते हैं अकसर!

नंगे तन, गदबदे, साँवले, सहज छबीले,
मिट्टी के मटमैले पुतले, – पर फुर्तीले !

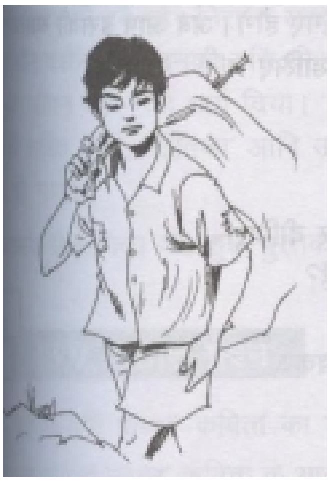

चित्र 13.3

जल्दी से, टीले के नीचे, उधर, उतरकर
वे चुन ले जाते कूड़े से निधियाँ सुंदर, –
सिगरेट के खाली डिब्बे, पन्नी चमकीली,
फीतों के टुकड़े, तस्वीरें नीली पीली

मासिक पत्रों के कवरों की; औ' बंदर से
किलकारी भरते हैं, खुश हो – हो अंदर से !
दौड़ पार आँगन के फिर हो जाते ओझल
वे नोट छह सात साल के लड़के मांसल !

सुंदर लगती नग्न देह, मोहती नयन-मन
मानव के नाते उर में भरता अपनापन !
मानव के बालक हैं ये पासी के बच्चे,
रोम रोम मानव, साँचे में ढाले सच्चे !

अस्थि माँस के इन जीवों का ही यह जग घर,
आत्मा का अधिवासन न यह, – वह सूक्ष्म, अनश्वर !
न्योछावर है आत्मा नश्वर रक्त मांस पर,
जग का अधिकारी है वह, जो है दुर्बलतर !

वह्नि, बाढ़, उल्का, झंझा की भीषण भू पर
कैसे रह सकता है कोमल मनुज कलेवर ?
निष्ठुर है जड़ प्रकृति, सहज भंगुर जीवित जन,
मानव को चाहिए यहाँ मनुजोचित साधन !

क्यों न एक हो मानव मानव सभी परस्पर
मानवता निर्माण करें जग में लोकोत्तर ?
जीवन का प्रासाद उठे भूपर गौरवमय,
मानव का साम्राज्य बने, – मानव हित निश्चय !

कविता पढ़ने के बाद आपको कैसा लगा? मन में किस तरह की भावनाएँ जागीं? क्या आप इसकी व्याख्या कर सकते हैं? ज़रूर कर सकते हैं। आइए आपकी सहजता के लिए कविता के मुख्य बिंदु बता देते हैं।

कविता में कूड़ा बीनने वाले बच्चों को माध्यम बनाया गया है। आपने भी अपने आसपास ऐसे बच्चों को देखा होगा। ज़रा याद कीजिए वे किस तरह काम करते हैं?

कूड़ा बीनते समय वे सिगरेट के खाली डिब्बे, पन्नियाँ, तस्वीरें आदि चुनते रहते हैं। कभी-कभार अगर किसी पत्रिका के कवर पर छपी कोई फोटो दिख जाती है तो उसे देखकर हँसने लगते हैं, खुश हो जाते हैं। मानवता के नाते कवि के मन में उनके शरीर और काम करने के तरीके से तनाव पैदा हो जाता है। क्या आपको ऐसा नहीं लगता?

कवि इन बच्चों के माध्यम से संदेश देता है कि विश्व के सभी मानव एक समान ही हाड़-माँस से बने हैं। उनमें कोई अंतर नहीं है, लेकिन साधन और सुविधाओं के आधार पर उनमें भेद पैदा हो जाता है। कवि के अनुसार यह अनुचित है। वह सभी मनुष्यों में आपसी एकता की बात करता है कहता है कि इस दुनिया में मानव कल्याण का साम्राज्य होना चाहिए।

उम्मीद है आप कविता के निहितार्थों को समझ गए होंगे। अब आप इसकी व्याख्या स्वयं कर सकते हैं। तो देर किस बात की है कर डालिए न!

पाठगत प्रश्न 13.6

उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कूड़ा बीनने वाले बच्चे खुश कब होते हैं?
   (क) कभी भी
   (ख) पत्रिका के कवर की तस्वीर देखकर
   (ग) पन्नियाँ बीनने के बाद
   (घ) टीले से नीचे उतरने के बाद
2. कवि दुनिया में कैसी व्यवस्था की बात करता है?
   (क) जनतांत्रिक (ग) मानवतावादी
   (ख) गणतांत्रिक (घ) सर्वसत्तावादी

13.7 आपने क्या सीखा

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने मज़दूरनी के माध्यम से शोषक और शोषितों के जीवन की विषमता का चित्रण किया है, तो 'मौन' कविता प्रेमी युगल के संदर्भ से मौन का महत्त्व समझाती है।
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता में कवि ने बताया है कि मजदूर प्रतिकूल परिस्थितियों में भी मन लगाकर काम करते हैं, पर उन्हें शोषकों के अत्याचारों और विषमताओं का बोध है। वे स्वाभिमान से जीना चाहते हैं और यह क्षमता भी रखते हैं कि वे अपने हथौड़े से इस पत्थर-दिल व्यवस्था को भी छिन्न-भिन्न कर सकें।
3. 'मौन' कविता में कवि कुछ क्षणों के लिए अपने प्रिय के साथ एकांत में चुपचाप बैठना चाहता है। ऐसे में मौन ही मधु-सा मीठा लगने लगता है। वाणी मूक हो जाती है और मन प्रवाह के साथ पानी की बूँद-सा बहने लगता है।
4. भाव और भाषा की दृष्टि से दोनों रचनाएँ बेजोड़ हैं। 'मौन' कविता में छायावादी विशेषताएँ दिखाई पड़ती हैं और 'वह तोड़ती पत्थर' में प्रगतिवादी। दोनों कविताओं में शब्दों का बड़ा ही प्रासंगिक प्रयोग दिखाई पड़ता है।

13.8 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

श्री सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' का जन्म सन् 1397 में तत्कालीन बंगाल के मेदिनीपुर जिले के एक छोटे राज्य में हुआ था, जिसका नाम था – महिषादल। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही हुई। कुछ ही वर्षों के वैवाहिक जीवन के बाद उनकी पत्नी का निधन हो गया। परिवार में और भी अनेक संकट आए। कविता लिखने की उनकी शैली नई थी और संपादक प्रारंभ में उनकी कविता छापते नहीं थे। अतः उनके जीवन में आर्थिक अभाव भी बने रहे। निराला संस्कृत, बंगला और अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञाता थे तथा संगीत और दर्शन में भी उनकी रुचि थी। वे रूढ़ियों के विरोधी थे। उन्होंने हिंदी कविता को नया जीवन और नया मार्ग दिया। 'परिमल', 'अनामिका', 'तुलसीदास', 'नये पत्ते, 'राम की शक्ति पूजा', 'गीतिका' आदि उनकी प्रसिद्ध रचनाएँ हैं। सन् 1961 में उनका निधन हो गया।

पुस्तकालय से निराला की कुछ पुस्तकें प्राप्त कर पढ़िए।

13.9 पाठांत प्रश्न

1. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता का मुख्य प्रतिपाद्य क्या है ?
2. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर शोषक और शोषित के जीवन का अंतर बताइए।
3. 'वह तोड़ती पत्थर' कविता के आधार पर ग्रीष्म ऋतु की भीषणता का वर्णन कीजिए।
4. 'मौन' कविता का केंद्रीय भाव बताइए।
5. 'मौन' कविता के आधार पर बताइए कि निर्द्वन्द्व जीवन के लिए कवि किस स्थिति की कामना कर रहा है?
6. भाव स्पष्ट कीजिए :

   (क) श्याम तन, भर बँधा यौवन,
   नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
   गुरु हथौड़ा हाथ,
   करती बार-बार प्रहार,
   सामने तरु-मालिका, अट्टालिका, प्राकार।

   (ख) देखकर कोई नहीं,
   देखा मुझे उस दृष्टि से
   जो मार खा रोई नहीं।

   (ग) मौन मधु हो जाय
   भाषा मूकता की आड़ में,
   मन सरलता की बाढ़ में
   जल-बिंदु-सा बह जाय।

(घ) सरल, अति स्वच्छन्द
जीवन, प्रात के लघु-पात से
उत्थान-पतनाघात से
रह जाए चुप, निर्द्वन्द्व।

7. पठित कविताओं के आधार पर निराला की शैली और शिल्प सौंदर्य पर प्रकाश डालिए।

8. निम्न काव्य पंक्तियों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

न बोलने पर भी
मैं सुनता हूँ तुम्हारे बोल
तुम्हारी बोलती आँखों से
सो मुझे
प्यार से पुकारतीं –
और मौन ही निहारती हैं।

(क) कविता का मूल आशय क्या है?

(ख) कवि ने कविता में किसके महत्त्व पर प्रकाश डाला है?

(ग) आँखों के बोलने से कवि का क्या आशय है?

(घ) इस काव्यांश का उचित शीर्षक बताइए।

13.8 उत्तरमाला

13.2 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. पत्थर तोड़ती हुई मज़दूरनी की
2. तमतमाती गरमी का
3. सुंदर अट्टालिकाएँ, भवन आदि।
4. अपने प्रिय साथी से।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

13.1 1. (ग) 1. (घ)
13.2 1. (घ) 2. (ग)
13.3 1. (ग) 2. स्वयं लिखिए
13.4 1 (घ) 2. व्यवहार में बहुत अधिक सरल बनाना
13.5 1. शोषित वर्ग के साथ
2. मुक्त छंद कविता
3. (ग)
13.6 स्वयं कीजिए

टिप्पणी

14

301hi14

महादेवी वर्मा

प्रेम और वियोग मानव-मन की कोमल भावनाएँ हैं। कुछ लोग इन्हें अभिव्यक्त कर लेते हैं किंतु जो नहीं कर पाते वे घुटते रहते हैं। कुछ इन भावनाओं को सर्वव्याप्त मान लेते हैं। उन्हें लगता है कि प्रकृति में भी वही सब कुछ घट रहा है, जो उनके मन में है। बादलों का उमड़ना और बरसना उन्हें अपनी ही विरह वेदना का उमड़ना-बरसना प्रतीत होता है और वे अपनी वेदना को बाँटकर नवजीवन के अंकुरित होने की प्रतीक्षा करते हैं। ऐसे ही भावों का चित्रण हमें महादेवी जी की कविताओं में प्राप्त होता है। आपने पंत, प्रसाद और निराला की कविताएँ पढ़ते हुए छायावादी काव्य के कुछ लक्षणों की जानकारी भी प्राप्त की होगी। महादेवी के गीतों में भी छायावाद की स्पष्ट झलक मिलती है। वह ऐसी समर्थ कवयित्री हैं, जो अपनी भावनाओं को प्रकृति के माध्यम से सशक्त रूप में प्रस्तुत करती हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता का केंद्रीय भाव बता सकेंगे;
- कविता के आधार पर नारी के जीवन की एक जल भरी बदली से तुलना कर सकेंगे;
- कवयित्री की संवेदना का कारण स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रस्तुत कविता में छायावाद की विशेषताओं को पहचान सकेंगे;
- प्रस्तुत कविता के शिल्प-सौंदर्य को बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

अगले पृष्ठ पर चित्र को देखिए। कल्पना कीजिए कि आप ही बादल हैं। बादल के रूप में अपने अनुभव लगभग पाँच पक्तियों में लिखिए।

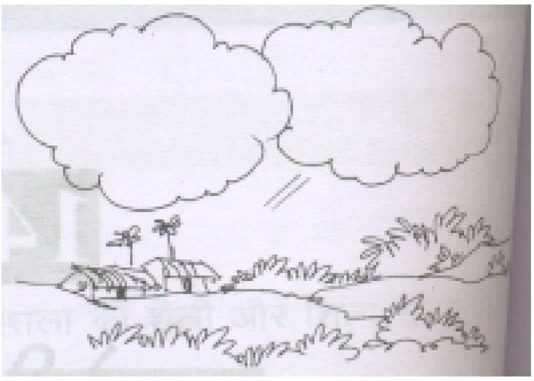

14.1 मूलपाठ

आइए, महादेवी वर्मा के निम्नलिखित गीत को एक बार लय के साथ पढ़ लें–

मैं नीर भरी दुख की बदली!

मैं नीर भरी दुख की बदली!

स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,

नयनों में दीपक-से जलते,
पलकों में निर्झरिणी मचली !

मेरा पग-पग संगीतभरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,

नभ के नव रंग, बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!

मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,

रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नवजीवन-अंकुर बन निकली !

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,

सुधि मेरे आगम की जग में,
सुख की सिहरन हो अंत खिली!

विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,

परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

शब्दार्थ

नीर भरी – जल से पूर्ण, आँसुओं से भरी
स्पंदन – हलचल, धड़कन
निस्पंद – स्थिर
क्रंदन – चीख-पुकार, बादल का शोर
आहत – पीड़ित, चोट खाया हुआ
निर्झरिणी – झरना, नदी
पराग – फूलों के रजकण, केसर
दुकूल – वस्त्र, दुपट्टा, उत्तरीय
मलय-बयार – मलय पर्वत से आने वाली शीतल सुगंधित वायु
क्षितिज-भृकुटि – क्षितिज-सी भौंहें
क्षितिज – धरती और आकाश जहाँ मिले हुए दिखाई पड़ते हैं।
धूमिल – धुँए के रंग के, काले
अविरल – निरंतर, लगातार
रज-कण – मिट्टी
मलिन – गंदा
आगम – आना, आगमन
सिहरन – पुलक, कँपकपी
नभ – आकाश

टिप्पणी

14.2 बोध प्रश्न

1. कवयित्री अपने आप को क्या मान रही है?

   ....

2. वर्षा कबऽनवजीवन अंकुर बनती है?

   ....

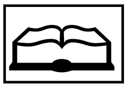

14.3 आइए समझें

आइए,ऽ'मैं नीर भरी दुख की बदली' गीत को एक बार फिर पढ़ लें।

प्रसंग

आप देख रहे हैं कि यह गीत एक बदली पर आधारित है। पहली ही पंक्ति में बदली अपना सीधा परिचय दे देती है–'मैं नीर भरी दुख की बदली', इसमें यह 'मैं' कौन है? 'मैं' को समझ लेने के बाद कविता समझना सरल हो जाएगा। प्रथम तो स्पष्ट है कि 'बदली' अपना परिचय दे रही है तो 'बदली' ही 'मैं' है। वह 'नीर भरी' है क्योंकि वही जल बरसाती है। वाक्य का स्त्रीलिंग में होना और बदली के साथ 'दुख की' पद यह संकेत भी देता है कि 'मैं' स्वयं कवयित्री के लिए या किसी वेदना-ग्रस्त नारी के लिए भी हो सकता है। इस प्रकार पूरी कविता को अर्थ दो समानांतर स्तरों पर लगाया जा सकता है। पहला – जलपूर्ण उमड़ते-घुमड़ते बादल; और दूसरा–दुखी और वेदनाग्रस्त नारी, जो स्वयं कवयित्री भी हो सकती है।

अब पहली पाँच पंक्तियाँ पुनः पढ़ जाइए।

मैं नीर भरी दुख की बदली!
स्पंदन में चिर निस्पंद बसा,
क्रंदन में आहत विश्व हँसा,
नयनों में दीपक-से जलते
पलकों में निर्झरिणी मचली!

'मैं', का आशय आप समझ चुके हैं। अतः कविता का प्रसंग भी समझ गए होंगे। इसमें एक ओर तो वर्षाजल से भरी बदली अपना परिचय दे रही है, दूसरी ओर स्वयं कवयित्री अपने वेदनापूर्ण जीवन का संकेत कर रही है।

व्याख्या

पहले 'बदली' के पक्ष में देखें। उसकी हर गर्जना के पीछे, हलचल के पीछे भी स्थिरता बसी है। मानो कोई है जिस पर इस क्रंदन का कोई प्रभाव नहीं होता, वह निस्पंद रहता है। जबकि उस गर्जना पर विश्व प्रसन्न होता है क्योंकि वह भीषण गरमी से आहत है, दुखी है, इसलिए बादलों की हलचल और गर्जन उसे प्रसन्न कर जाती है। बादलों में बसी विद्युत की कौंध दीपकों-सी प्रतीत होती है और उनमें स्थित जल नदी की भाँति प्रवाहित होने को आतुर है।

दूसरी ओर विरहिणी के पक्ष में भाव होगाः उसके स्पंदन में वह चिर निस्पंदन बसा है, जो सदा से स्पंदन रहित है, स्थिर है, बादलों की गर्जना में पीड़ित और चोट खाए हुए

टिप्पणी

संसार के लोगों की पीड़ा ही अभिव्यक्त हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है कि यह गर्जन किसी की पीड़ा के स्वर नहीं, बल्कि कोई ज़ोर-ज़ोर से हँस रहा हो परंतु यह किसी एक प्रेमी का क्रंदन है।

विरहिणी की आँखों में दीपक से जलते रहते हैं। ये दीपक विरहाग्नि के भी हो सकते हैं और आशा के भी। आँसू उसकी पलकों से नदी के समान बहने को आतुर हैं वह अपनी विरह-वेदना को आँसुओं के रूप में प्रवाहित करना चाहती है; ठीक वैसे ही, जैसे बदली जलबूँदों को। भाव स्पष्ट है कि कवयित्री कहना चाहती है कि जिस प्रकार बदली पानी से भरी रहती है, उसी प्रकार मेरी आँखें भी अश्रुपूर्ण रहती हैं।

अंश - 2

कविता की अगली आठ पंक्तियाँ पुनः ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए।

मेरा पग-पग संगीतभरा,
श्वासों से स्वप्न-पराग झरा,
नभ के नवरंग, बुनते दुकूल,
छाया में मलय-बयार पली!
मैं क्षितिज-भ कुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी
नव जीवन-अंकुर बन निकली!

नीर भरी बदली अपनी स्थिति का आगे वर्णन कर रही है: मेरे तो कदम-कदम पर संगीत है– बिजली की कड़क, बादलों का गर्जन उसके आने की प्रसन्नता में मानव-जगत या पशु-जगत की हलचल ही मानो उसके पग-पग का संगीत है। बादलों के उमड़ने के साथ चलने वाली हवा उसकी साँसें हैं, जिनसे पराग झरता है। उसे कवयित्री ने 'स्वप्न-पराग' कहा है। बादलों के साथ लोगों के स्वप्न जुड़े हैं। उनके घुमड़ने पर मानो वही स्वप्नों से पराग झरता है। नवरंगों से युक्त इंद्रधनुषी आभा ही मानो बादलों के रंग भरे वस्त्र हैं। बादलों की छाया में मलय-बयार, शीतल सुगंधित पवन आश्रय ग्रहण करती है। जब बादल घुमड़ते हैं तो शीतल हवा बहने लगती है। वही कवयित्री के शब्दों में 'मलय-बयार' है। वह कहती हैं कि प्रियतम की स्मृति मुझे मलय पर्वत से आने वाली शीतल-मंद सुगंधित वायु के समान प्रतीत होती है।

धुएँ जैसे बादल जब क्षितिज पर छाते हैं तो कवयित्री को लगता है मानो क्षितिज की भौंहों पर चिंता का भार बढ़ गया हो। मूर्त की तुलना अमूर्त से करना छायावादी कविता की एक विशेषता है। यहाँ भी मूर्त बादलों की तुलना अमूर्त 'चिंता का भार' से की गई है, ऐसी कल्पनाएँ आपको अन्यत्र भी मिलेंगी।

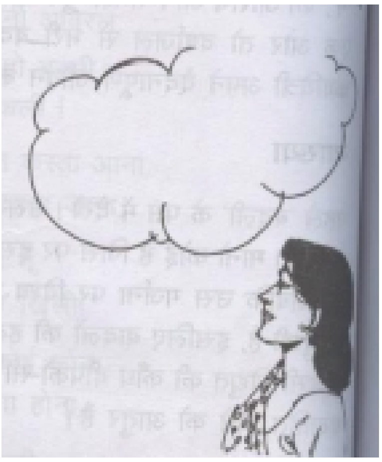

ऐसी बदली जब 'रज-कण' अर्थात् मिट्टी पर बरसती है तो परिणाम क्या होता है? चारों ओर नवजीवन के अंकुर फूट आते हैं। जो बीज मिट्टी के नीचे दबे पड़े थे, वे वर्षा की बूँदों के स्पर्श से अंकुरित होने लगते हैं। यह अंकुरण ही नवजीवन का प्रस्फुटन है और बदली का यह कहना उचित है कि वही रजकण से नव-जीवन-अंकुर बन कर निकल पड़ती है।

ये पंक्तियाँ स्पष्टतः बादलों के घुमड़ने, बरसने और अंकुरण का कारण बनने की प्रक्रिया और उससे जुड़े प्राकृतिक क्रिया-कलापों के सौंदर्य का चित्रण कर रही हैं, पर विरहिणी पक्ष में भी इनका भावार्थ ग्रहण किया जा

सकता है। विरहिणी के पदचापों में संगीत है (यौवन का, रूप का) और उसकी सुगंधित साँसें उसकी कामनाओं की सूचक हैं। उसके रंगीन वस्त्रों में इंद्रधनुषी आभा है और वह जहाँ निकल जाती है वहीं सुगंध ऐसे बिखरती है मानो सुगंधित मलय-बयार चल पड़ी हो। उसकी भौंहों पर इस चिंता का भार है कि प्रिय से मिलन हो पाएगा या नहीं। अंततः जब उससे व्यथा-भार सहन नहीं होता तो उसकी आँखों से आँसू बरस पड़ते हैं। आवेग की अभिव्यक्ति से उसे क्षण भर को शांति मिलती है। उसे लगता है कि नए जीवन के अंकुर फूट पड़े हैं। आँसू बरसाकर विरहिणी मानो संसार को अपनी वेदना का वितरण करती है और उसे नया जीवन प्रदान करती है। कवयित्री अपनी विरह-वेदना को लाक्षणिक शब्दावली द्वारा व्यक्त करती है।

अंश - 3

गीत के शेष अंश को एक बार फिर से पढ़ जाइए।

पूर्व पंक्तियों में बदली ने अपने घुमड़ने और बरसने की चर्चा की है। अब वह बरसने के बाद के प्रभाव की कल्पना करती है।

पथ को न मलिन करता आना,
पद-चिह्न न दे जाता जाना,
सुधि मेरे आगम की जग में
सुख की सिहरन हो अंत खिली!
विस्त त नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यही
उमड़ी कल थी मिट आज चली!

बदली कहती है, न तो मेरे आगमन से मार्ग गंदा होता है, न चले जाने के बाद कोई पद-चिह्न शेष रह जाते हैं। यहाँ बदली के मार्ग की बात है और उसका मार्ग धरती नहीं आकाश मार्ग है। उस पर न तो बादलों के बरसने से कोई गंदगी दिखाई पड़ती है न उनके चले जाने के बाद कोई चिह्न शेष रह जाते हैं। आकाश मार्ग में वे कोई चिह्न नहीं छोड़ जाते। वे जैसे आते हैं बरसकर वैसे ही चले भी जाते हैं, जो कुछ शेष रह जाती है, वे हैं—उनके आगमन की स्मृतियाँ। ये स्मृतियाँ अथवा यादें कैसी हैं क्या आप बता सकते हैं? जी हाँ। वे सुख भरी हैं और उन विचारों से तन-मन सिहर उठता है। उनके साथ नवजीवन के प्रस्फुटन और विस्तार की सुधियाँ हैं जो सुख की सिहरन दे जाती हैं। यही नवजीवन खेतों, मैदानों, वनों में हरियाली के रूप में दिखाई पड़ रहा है, जो वर्षा के आगमन की, उसके उपकार की याद दिलाता है—सुखकर याद। अन्यथा बादलों का क्या? वे तो आते हैं, और चले जाते हैं। इतने विस्तृत विशाल नभ के किसी कोने में वे घर नहीं बना सकते। सच तो यह है कि सारे नभ में छाने के बाद भी कोई एक कोना तक उनका अपना नहीं है। 'मेरा न कभी अपना होना' पंक्ति में 'अपना होना' क्रिया पर ध्यान दीजिए। स्पष्ट ध्वनि है कि मेरे भाग्य में यह बदा ही नहीं है। यह पूर्व निश्चित है कि कोई कोना मेरा अपना नहीं होगा। यह जानते हुए भी बदली घिरती है, घुमड़ती है, बरसती है, और नवजीवन प्रदान कर चली जाती है। यही उसका इतिहास है कि वह कल उमड़ी थी तो आज अपना जल बरसाकर मिट गई। उसकी स्मृतियाँ भर रह गईं। उन्हीं स्मृतियों के सहारे संसार में उल्लास की सिहरन का अनुभव किया जा सकेगा।

प्रस्तुत गीत के भाव ग्रहण में चूंकि हम दूसरे स्तर पर विरहणी के पक्ष में भी अर्थ ढूँढ़ते आए हैं, तो इस दृष्टि से भी इन पंक्तियों में लक्ष्यार्थ ढूँढ़ा जा सकता है। कवयित्री मानो कह रही है कि संसार में उसके आने या चले जाने से कोई विशेष अंतर नहीं पड़ता। उसका कोई पद-चिह्न तक शेष नहीं रहता। हाँ, केवल स्मृतियाँ ही रह जाती

है। लोग उसकी वेदना को याद करते हैं और पुलकित होते हैं। इतने विस्तृत संसार के किसी कोने को वह अपना नहीं कह सकी। ऐसी नियति ही नहीं थी कि कोई कोना उसका अपना होता। उमड़ना और मिट जाना ही मानो उसका परिचय और इतिहास था।

टिप्पणी

1. उपर्युक्त गीत में महादेवी वर्मा ने अपने जीवन की तुलना बदली से करते हुए अपनी विरह-वेदना को अभिव्यक्त किया है।
2. महादेवी की करुणा और उसकी अभिव्यक्ति यहाँ अपने चरमोत्कर्ष पर है।
3. कवयित्री ने 'सुख की सिहरन हो अंत खिली' काव्य पंक्ति के द्वारा स्वयं की अमरता की ओर संकेत किया है।
4. निराशावादी दृष्टिकोण और जीवन के प्रति अनास्था का स्वर गीत के अंतिम अंश में मुखरित हो उठा है।
5. इन पंक्तियों में महादेवी जी ने मानव जीवन की वस्तुस्थिति का चित्रण किया है। वस्तुतः मानव जीवन क्षणिक है, वह चिरस्थायी नहीं है। जो आज है, वह कल नहीं होगा, अतः मानव जीवन का यही परिचय और इतिहास है कि वह आज है; किंतु कल नहीं होगा।
6. शुद्ध खड़ी बोली हिंदी संपूर्ण गीत में सरल रूप से प्रयुक्त हुई है।
7. गीत में रूपक, उपमा, पुनरुक्ति प्रकाश, अनुप्रास आदि अलंकारों की छटा जहाँ-तहाँ दिखाई पड़ती है। संपूर्ण गीत में मानवीकरण का बहुत सुंदर प्रयोग हुआ है।
8. वियोग श्रृंगार और लक्षणा शब्द-शक्ति का प्रयोग किया गया है।

पाठगत प्रश्न 14.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों उत्तर दीजिए:

1. 'क्रंदन में आहत विश्व हँसा' कथन का भाव है कि बादलों के गरजने पर–
   (क) लोग हँसने लगे।
   (ख) चारों ओर चीख-पुकार मच गई।
   (ग) विरहिणी आहत हुई।
   (घ) ग्रीष्म की प्रखरता से पीड़ित लोग प्रसन्न हुए।

2. 'नभ के नवरंग बुनते दुकूल' का आशय है कि इंद्रधनुष–
   (क) बादलों के लिए कपड़े बुनते हैं।
   (ख) बादलों के साथ उड़ते रहते हैं।
   (ग) बादलों को रंगीन आभा देते हैं।
   (घ) प्रिय के दुपट्टेऽजैसा लगता है।

टिप्पणी

14.4 शिल्प सौंदर्य

आप महादेवी के काव्य व शिल्प से कुछ-कुछ परिचित हो चुके हैं। आइए, अब उनके शिल्प सौंदर्य की विशेषताओं पर ध्यान देते हैं।

आपने देखा कि महादेवी जी ने इस छोटे से गीत में गहन भाव पिरोए हैं। अर्थगांभीर्य का यह एक सुंदर उदाहरण है। काव्यार्थ दो स्तरों पर साथ-साथ खुलता है, अतः लक्षणा और व्यंजना शब्द-शक्तियों का सुंदर प्रयोग है। आप जानते हैं कि जब शब्दों के अर्थ सामान्य ढंग से न खुलकर लक्षणाऽके आधार पर खुलते हैं तो उसे 'लक्ष्यार्थ' कहा जाता है, जैसे—इन पंक्तियों की लाक्षणिकता पर ध्यान दीजिए:

*'पलकों में **निर्झरिणी** मचली,*
'क्षितिज भृकुटि पर घिर धूमिल'
***नवजीवन-अंकुर** बन निकली।*

पूरी कविता में रूपक अलंकार है।

कुछ कल्पनाएँ तो सचमुच बड़ी आकर्षक हैं—

'श्वासों से स्वप्न-पराग झरा', 'क्षितिज-भृकुटि', 'नवजीवन-अंकुर बन निकली'

कुछ छायावादी विशेषताओं की चर्चा हम पीछे भी कर आए हैं। कुछ और इस गीत के संदर्भ में देखिए:

1. मूर्त की अमूर्त से तुलना-

*मैं **क्षितिज-भृकुटि** पर घिर धूमिल,*
***चिंता का भार** बनी अविरल।*

2. अमूर्त की मूर्त से तुलना-

'मैं नीर** भरी **दुख की बदली'

3. अमूर्त की अमूर्त से तुलना-

***'सुधि मेरे आगम** की जग में*
***सुख की सिहरन** हो अंत खिली।'*

4. मानवीकरण

संपूर्ण कविता में मानवीकरण अलंकार है। मार्मिक स्थल देखिए:

'श्वासों से स्वप्न-पराग झरा'
'नभ के नवरंग बुनते दुकूल'
'क्रंदन में आहत विश्व हँसा'

5. वैयक्तिक व्यथा और भावनाओं का प्रकृति पर आरोप संपूर्ण कविता में है।

6. विशेषण विपर्यय - *'क्रंदन में आहत विश्व हँसा'*

टिप्पणी

इसके अतिरिक्त शब्द चयन, नादात्मकता, लघु छंद, गेयता, मधुरता आदि भी इस कविता की प्रमुख विशेषताएँ हैं। जैसा कि ऊपर बताया गया छायावादी काव्य की सभी विशेषताएँ उनकी रचनाओं में प्राप्त होती हैं। उनका मूल गुण है संवेदनशीलता। जो कुछ उन्होंने लिखा है, वह हृदय की अतल गहराइयों से उपजा प्रतीत होता है। करुणा, उदारता, रागात्मकता, विरह-पीड़ा, रहस्यात्मकता आदि काव्य की अन्य विशेषताएँ हैं। उन्होंने गीत ही अधिक लिखे हैं, जो मधुर भावों से ओत-प्रोत हैं।

महादेवी की भाषा बड़ी प्रांजल, संस्कृत-गर्भित और भावानुकूल होती है। वे शब्द चयन में बहुत कुशल हैं और प्रतीकों व रूपकों के माध्यम से बिंब निर्माण करती हैं। लाक्षणिकता उनकी भाषा का अन्य प्रमुख गुण है।

पाठगत प्रश्न 14.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए:

1. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' में अलंकार है–

   (क) अनुप्रास (ग) उपमा

   (ख) रूपक (घ) उत्प्रेक्षा,

2. 'मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
   चिंता का भार बनी अविरल'

   उपर्युक्त पंक्तियों में छायावादी विशेषताएँ हैं:

   (क) रूपक, मानवीकरण

   (ख) मानवीकरण, उत्प्रेक्षा

   (ग) मानवीकरण, मूर्त की तुलना अमूर्त से

   (घ) मानवीकरण, विशेषण विपर्यय

14.5 आइए, स्वयं पढ़ें

आप महादेवी और निराला के बारे में पढ़ चुके हैं। जान चुके हैं कि छायावाद क्या है? और उसकी कुछ विशेषताएँ छायावादी कवियों के संदर्भ में पढ़-समझ भी चुके हैं। छायावाद के एक और प्रसिद्ध कवि हुए हैं–जयशंकर प्रसाद। उनकी कविता की एक छोटी-सी झलक प्रस्तुत है:

आँसू

इस करुणा कलित हृदय में
अब विकल रागिनी बजती
क्यों हाहाकार स्वरों में
वेदना असीम गरजती?

शब्दार्थ

करुणा कलित – करुणा से पूर्ण
वेदना – पीड़ा

मानस सागर के तट पर
क्यों लोल लहर की घातें
कल कल ध्वनि से हैं कहती
कुछ विस्मृत बीती बातें?

आती है शून्य क्षितिज से
क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
टकराती बिलखाती-सी
पगली-सी देती फेरी?

क्यों व्यथित व्योमगंगा-सी
छिटका कर दोनों छोरें
चेतना तरंगिनि मेरी
लेती है मृदुल हिलोरें?

बस गयी एक बस्ती है
स्मृतियों की इसी हृदय में
नक्षत्र लोक फैला है
जैसे इस नील निलय में।

चित्र 14.3

टिप्पणी

शब्दार्थ

मानस – मन
विस्मृत – भूली हुई
शून्य – सुनसान, खाली
प्रतिध्वनि – गूँज
बिलखाती – बिलखती हुई
व्योमगंगा – आकाश गंगा
तरंगिनि – नदी
मृदुल – मीठी, प्यारी
निलय – घर

कविता का शीर्षक है 'आँसू', पर इन पंक्तियों में आँसू के प्रत्यक्ष वर्णन की अपेक्षा उन स्थितियों की तलाश अधिक है जो आँसुओं का कारण हो सकती हैं। लेखक प्रश्न पूछ कर कहना चाहता है कि ऐसा क्यों हो रहा है और ये प्रश्न प्रकृति के रहस्यमय क्रिया–कलापों के कारण पहले वह जानना चाहता है कि हाहाकार भरे स्वरों में असीम पीड़ा क्यों है?

दूसरे पद में क्या प्रश्न है? मानस सागर के तट पर कौन बातें कर रहा है? अपनी ही प्रतिध्वनि के लौटने का कारण भी कवि की समझ में नहीं आ रहा है। वह अपनी चेतना की हिलोरों के बारे में भी प्रश्न पूछ रहा है। कवि के प्रश्नों को समझिए और नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. 'आँसू' कविता किसने लिखी है?
2. किन पंक्तियों में कवि अपनी वेदना का प्रकृति में आरोप कर रहा है?
3. 'चेतना तरंगिनि' का दुखी होकर छिटकना क्या व्यंजित करता है?
4. कवि को भूली-बिसरी बातों की याद कौन दिला रहा है?
5. मानवीकरण के दो उदाहरण छाँटिए।
6. 'स्मृतियों की बस्ती बसने' का क्या आशय है?
7. सुधियों के आगमन के बारे में महादेवी और प्रसाद के कथन उद्धृत कीजिए।

14.6 आपने क्या सीखा

1. महादेवी वर्मा की रचनाओं में वैयक्तिक भावनाओं–प्रेम, विरह, पीड़ा आदि की अभिव्यक्ति हुई है।
2. बदली के उमड़ने, घिरने, बरसने के माध्यम से कवयित्री अपने मन में वेदना के उमड़ने और बरसने को संकेतित करती है।
3. कवयित्री अपनी वैयक्तिक भावनाओं का आरोप प्रकृति के क्रिया व्यापारों में करती है।
4. महादेवी की कविता में छायावादी काव्य की प्रायः सभी विशेषताएँ लक्षित होती हैं।

14.7 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

महादेवी वर्मा मूलतः कवयित्री हैं, परंतु वे हिंदी के उन प्रतिष्ठित रचनाकारों में हैं, जिन्होंने कविता और गद्य-साहित्य दोनों क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा से यश अर्जित किया है। उनका जन्म 1407 ई. में उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद नगर में एक संपन्न और कला प्रेमी परिवार में हुआ। यद्यपि नौ वर्ष की अवस्था में ही उनका विवाह हो गया था, पर उन्होंने अपना अध्ययन जारी रखा। उनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर में और उच्च शिक्षा इलाहाबाद में हुई।

प्रयाग (इलाहाबाद) ही महादेवी जी कर्मभूमि रही। वे आजीवन प्रयाग महिला विद्यापीठ की कुलपति रहीं। उनके कार्यकाल में यह संस्था प्रसिद्धि के शिखर तक पहुँची।

काव्य सृजन की ओर महादेवी की रुचि बचपन से ही थी। इसमें निरंतर विकास हुआ और वे छायावाद के प्रसिद्ध कवियों में गिनी जाने लगीं। उनकी प्रसिद्ध काव्य कृतियाँ हैं–'नीहार', 'नीरजा', 'यामा', 'रश्मि', 'सांध्यगीत' और 'दीपशिखा'।

इनके अतिरिक्त इन्होंने 'अतीत के चलचित्र', 'स्मृति की रेखाएँ', 'शृंखला की कड़ियाँ', 'पथ के साथी' आदि गद्य रचनाएँ भी हिंदी साहित्य को प्रदान की हैं।

साहित्यिक सेवा के लिए उन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार, भारत-भारती पुरस्कार से सम्मानित किया गया और भारत सरकार की ओर से पद्मभूषण से अलंकृत किया गया।

14.8 पाठांत प्रश्न

1. 'मैं नीर भरी दुख की बदली' कविता का मूल कथ्य स्पष्ट कीजिए।
2. 'परिचय इतना, इतिहास यही' से कवयित्री का क्या तात्पर्य है? स्पष्ट समझाइए।
3. 'महादेवी जी के काव्य में छायावादी काव्य के लक्षण पर्याप्त दिखाई पड़ते हैं'-सोदाहरण सिद्ध कीजिए।

4. निम्नलिखित काव्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

(क) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल,
चिंता का भार बनी अविरल,
रज-कण पर जल-कण हो बरसी,
नवजीवन-अंकुर बन निकली !

(ख) विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा न कभी अपना होना,
परिचय इतना, इतिहास यही,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।

5. निम्नलिखित पंक्तियों के काव्य-सौंदर्य पर टिप्पणी लिखिए:

(क) स्पंदन में चिर निस्पंद बसा।

(ख) मैं नीर भरी दुख की बदली !

(ग) मैं क्षितिज-भृकुटि पर घिर धूमिल।

(घ) श्वासों से स्वप्न पराग झरा।

6. पठित कविता का केंद्रीय भाव लगभग 30–40 शब्दों में लिखिए।

7. पठित कविता के आधार पर महादेवी वर्मा के काव्य की विशेषताएँ बताइए।

8. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

प्राणों में चिर कथा बाँध दी!
क्यों चिर दग्ध हृदय को तुमने
वृथा प्रणय की अमर साथ दी!
हृदय दहन रे हृदय दहन
प्राणों की व्याकुल व्यथा गहन!
यह सुलझेगी होगी न सहन,
चिर स्मृति की श्वास-समीर साथ का।

(क) कविता में प्रणय का शाब्दिक अर्थ क्या है?

(ख) कविता का मूल आशय क्या है?

(ग) कवि ने प्राणों की व्यथा के सुलगने को असह्य क्यों कहा है?

(घ) 'चिरस्मृति की श्वास-समीर' से कवि का क्या आशय है?

टिप्पणी

14.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. नीर भरी दुख की बदली
2. मिट्टी पर जल की बूँदें पड़ने पर बीज का अंकुरण होना

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

14.1 1. (घ) 2. (ग)

14.2 1. (ख) 2. (ग)

आइए स्वयं पढ़ें के उत्तर संकेत

1. जयशंकर प्रसाद
2. इस करुणा कलित हृदय में.........वेदना असीम गरजती।
3. मीठी-मीठी यादों के रूप में चारों ओर फैल गई है।
4. मानस सागर के तट पर लहरों का टकराना
5. एकः चेतना तरंगिनि मेरी
   लेती है मृदुल हिलोरें

   दोः क्यों लौट प्रतिध्वनि मेरी
   टकराती, बलखाती-सी
   पगली-सी देती फेरी
6. पुरानी स्मृतियों का बार-बार याद आना
7. महादेवी– सुधि मेरे आगम की जग में
   सुख की सिहरन हो अंत खिली।

   प्रसाद– बस गई एक बस्ती है
   स्मृतियों की इसी हृदय में
   नक्षत्र लोक फैला है
   जैसे इस नील निलय में।

टिप्पणी

15

अनुराधा

301hi15

भारतीय समाज निरंतर विकास के पथ पर अग्रसर है, परंतु जिस गति से मानव ने भौतिक विकास किया है, उस गति से उसमें जागरूकता विकसित नहीं हुई है। यही कारण है कि हम आज भी अनेकानेक समस्याओं से जूझ रहे हैं। हमारा युवा तथा किशोर वर्ग आज विशेष रूप से दिशाविहीन है। पुराने जीवन-मूल्यों का विघटन हो रहा है तथा नए जीवन-मूल्यों का विकास हो नहीं पाया है, इसी कारण यह वर्ग बीच में पिसता हुआ अनिर्णय की स्थिति में पहुँच जाता है। कभी-कभी विरोधी स्थितियों में जीते-जीते ऐसे ही उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जाती है। परंतु क्या यह जीवन-शैली उचित है?

आइए, प्रस्तुत पाठ में एक कहानी पढ़ते हैं जिसकी मुख्य नायिका 'अनु' अपने जीवन की विषम परिस्थितियों में किस प्रकार का जीवन बिताने का निर्णय लेती है।

उद्देश्य

प्रस्तुत कहानी को पढ़ने के बाद आप

- मिथकों और भ्रांतियों को दूर करके वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास कर सकेंगे;
- प्रजनन व यौन स्वास्थ्य से संबंधित विषयों के बारे में जागरूक हो सकेंगे;
- दैनिक जीवन में आनेवाली संभावित समस्याओं के प्रति सावधान हो सकेंगे;
- सही समय पर निर्णय न लेने के परिणाम बता सकेंगे;
- एड्सग्रस्त परिवार और समाज के बीच के संबंधों पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- भारतीय परिवार में नारी की स्थिति और उसके संघर्ष की विवेचना कर सकेंगे;
- यौन स्वास्थ्य-शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर सकेंगे;
- 'अनुराधा' कहानी का सार बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

समस्याओं से जूझते वर्तमान समाज में हम किसी से भी यह उम्मीद नहीं कर सकते कि

टिप्पणी

वह सदा ही हमारी समस्याओं को सुलझाने आगे आएगा अथवा हमारा सहारा बनेगा। पुरुष हो या नारी, उसे स्वयं अपना निर्णय लेने में सक्षम होना है। उसे इतना जागरूक बनना है कि अपने भविष्य में संभावित कष्टपूर्ण स्थितियों से स्वयं के बचाव के रास्ते निकाल सके।

क्या आपने अपने सुखद भविष्य के लिए कुछ इस प्रकार की तैयारी की है? किन्हीं तीन का उल्लेख कीजिए–

1. ....

2. ....

3. ....

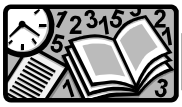

15.1 मूलपाठ

अनुराधा

आइए, सबसे पहले मूल कहानी को पढ़ लेते हैं–

यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से में आता है। निर्बल के लिए तो कर्त्तव्य और सिर्फ दायित्व ही आते हैं। इसीलिए मैंने आज अपना सारा बल समेट लिया है। शेष जो बच गया है, उसे भी बटोर लेना चाहती हूँ; क्योंकि मैं अपना वजूद सुरक्षित चाहती हूँ। मैं जीना चाहती हूँ क्योंकि सृष्टि के इस अजस्र प्रवाह में मेरा भी कहीं कोई अंश है, मेरी भी अपनी कोई भागीदारी है। मैं आज इस सृष्टि से अपना हिस्सा, अपना जीने का अधिकार चाहती हूँ– इसमें अस्वाभाविक क्या है? क्या जीवन एक सहज-सामान्य प्राणी का सहज अधिकार नहीं?... यदि 'योग्यतम' को ही यहाँ जीवन-रक्षा का अधिकार है, तो मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अपने आपको 'योग्यतम' सिद्ध करूँगी।

शब्दार्थ

स ष्टि	–	संसार
अजस्र	–	सदा, हमेशा
घ णास्पद	–	घ णा योग्य
एड्स (एक रोग)	–	एक्वायर्ड इम्यूनो डेफिशिएसी सिन्ड्रोम
दासत्व	–	गुलामी
प्राप्य	–	प्राप्त करने योग्य
संक्रमण	–	फैलने वाला रोग
निकटवर्ती	–	निकट के, पास के

विजय मेरे पति, अब नहीं रहे। बड़ी घृणास्पद और भयावह बीमारी से मौत हुई थी उनकी–एड्स से। वे ही जानें कि कहाँ से ढोकर लाए थे यह बीमारी–किसी सैलून में हजामत बनवाते वक्त या फिर...? किसी डॉक्टर से सुई लगवाते समय या...? मैं तो सिर्फ़ इतना जानती हूँ कि उनकी बीमारी के लिए मैं कहीं से दोषी नहीं थी, किंतु उसके सारे दुष्परिणाम, भय, घृणा–यहाँ तक कि संक्रमण भी मुझे ही झेलने पड़े थे। विजय पुरुष थे, मेरे स्वामी थे और मैं उनके जन्म-जन्मांतर की 'दासी'।

सोचती हूँ, देह का प्रश्न यदि स्त्री की मान-मर्यादा से जुड़ता है तो क्या विवाह-वेदी पर बैठकर औरत अपनी मान-मर्यादा अपने पति के हाथों गिरवी रख देती है? यदि 'पति' होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है? क्यों करे कोई स्त्री अपने पति का 'स्वामित्व स्वीकार? इस 'दासत्व' का प्राप्य?

शहर की बी.ए. (ललित कला) पास लड़की मैं पिता की इच्छा और हैसियत के मुताबिक बीस-इक्कीस बरस की उम्र में ब्याहकर इस घर में आई थी। विजय शहर में नौकरी करते थे और शहर के करीब आठ-दस कि.मी. के निकटवर्ती गाँव बेगमपुर के अपने पुश्तैनी मकान से शहर आया-जाया करते थे। मैं चाहती थी कि मैं ललित कला को अपना कैरियर बनाऊँ और प्रसिद्धि पाऊँ, लेकिन माँ की ज़िद थी कि ब्याह के बाद

लड़की को घर सँभालना चाहिए और फिर जब मर्द कमा रहा हो तो औरत को काम करने की क्या ज़रूरत?

ब्याहकर मैं विजय के पुश्तैनी आवास में ही गई थी। गाँव-गँवई का पक्का मकान! बीच में आँगन, चौतरफ़ा बने कमरे तथा आँगन के चौतरफ़ा बड़े-बड़े गोल खंभोंवाले दोहरे बरामदे। मकान तो पुराना नहीं था, लेकिन उसकी बनावट पुराने ढंग की थी। आँगन के पूरब की ओर के एक कमरे में अम्माजी अर्थात् विजय की माँ रहती थीं। अम्मा के कमरे के ठीक सामने दोहरे बरामदे और आँगन को पार कर एक दोहरा बरामदा पड़ता था, जिसके पार एक कतार में बने कमरों में से एक कमरा विजय और मुझे रहने के लिए दिया गया था।

दिन अच्छे ही बीत रहे थे। विजय घर के बड़े लड़के थे, मैं बड़ी बहू। विजय का ब्याह बड़े अरमानों के साथ किया गया था और मैं बहुत चुन-छाँटकर, बड़े स्नेह के साथ बहू बनकर इस घर में आई थी। विजय सहृदय और प्रणयी पुरुष थे, कम-से-कम मुझे तो उन दिनों ऐसा ही लगता था। मैंने भी यथासंभव इस घर और विजय के प्रति अपने समर्पण में कोई कमी न आने दी। लोग कहते थे—विजय और अनुराधा की जोड़ी चाँद-सूरज की जोड़ी है।

मगर इस जोड़ी को जल्द ही ग्रहण लग गया। घर में दो साल बीतते-न-बीतते मैंने अनुभव किया, अम्मा थोड़ी चिंतित हो रही थीं और मेरे प्रति उनका मान भी थोड़ा घट रहा था, किंतु अम्मा को कैसे बतलाती कि इसमें मेरा कोई दोष नहीं था। अव्वल तो मैं अभी माँ बनने से डरती थी और दूसरे विजय भी इतनी जल्दी बच्चा नहीं चाहते थे। फिर भी मैंने विजय से इशारा किया, जिसे वे हँसकर टाल गए।

लेकिन हमारी असली परेशानी तो विजय की बीमारी को लेकर शुरू हुई। पहले गाँव के हेल्थ सेंटर, फिर शहर के डॉक्टर और राजधानी तक का इलाज। अंततः डॉक्टर ने घोषित कर दिया—विजय का एच.आई.वी. पॉजिटिव है। डॉक्टर ने हमें ढेर सारी हिदायतें दीं और खासकर मुझे विजय से बचे रहने की सलाह दी। विजय की केस हिस्ट्री तैयार करके डॉक्टर ने हमें एक लंबा प्रिसक्रिप्शन थमाते हुए कहा—'इन्हें दूसरे अस्पताल में ले जाइए। मैंने लिख दिया है।'

हमारे चेहरे विवर्ण हो उठे थे। हम घर लौट आए। घर से बाहर दूसरे शहर के अस्पताल जाने की न तो हमारी तत्काल मानसिकता थी और न वह इतना तुरत-फुरत संभव था।

विजय को तो जैसे साँप सूँघ गया था। वे अपने कमरे में बिछे पलंग पर एकाकी पड़े थे। मैं कमरे के कोने में बैठी थी और घर के बाकी व्यक्ति उस लंबे आँगन, उस चौड़े-दोहरे बरामदे के काले-कोसों में बने अज्ञात गुफानुमा कमरों में निःशब्द सिमटे हुए थे।

विजय ने किसी भी दूर-दराज़ के अस्पताल में जाने से साफ़ इनकार कर दिया था। कहा था, 'मैं जानता हूँ, मेरा रोग लाइलाज है। मैं किसी खैराती अस्पताल की प्रयोगशाला में मेंढक की भाँति प्रयोग झेलते हुए एक खैराती मौत क्यों मरूँ? मैं यहीं रहूँगा, यहीं मरूँगा– अपने घर में, अपने लोगों के बीच।'

दूसरी ओर अजय थे, विजय के छोटे भाई। उनका कहना था– 'संक्रामक रोग है, जान लेवा है। एक आदमी की इच्छा के आगे पूरा घर तबाह क्यों हो? क्यों झेलें दूसरे लोग

शब्दार्थ

प्रणयी	– प्रेम करने वाला, अनुरागी
विवर्ण	– उदास
हिस्ट्री	– इतिहास, अतीत
प्रिसक्रिप्शन	– चिकित्सक द्वारा किसी रोग के निदान संबंधी लिखा गया दवाइयों का ब्योरा
एकाकी	– अकेलापन
निः शब्द	– शांत, बिना शब्द के, आवाज रहित

टिप्पणी

संक्रमण का यह भय, मृत्यु का यह अभिशाप?

अंततः अजय घर छोड़ गए। उन्हें अपनी चिंता थी, अपने भविष्य की चिंता थी, अपने सामाजिक सरोकारों की चिंता थी... असंख्य चिंताएँ थीं, जिनसे जुड़कर अजय ने निकटवर्ती शहर के यथासंभव दूर के छोर पर किराए के एक घर में रहना शुरू कर दिया और जल्द ही गृहस्थी बसा ली।

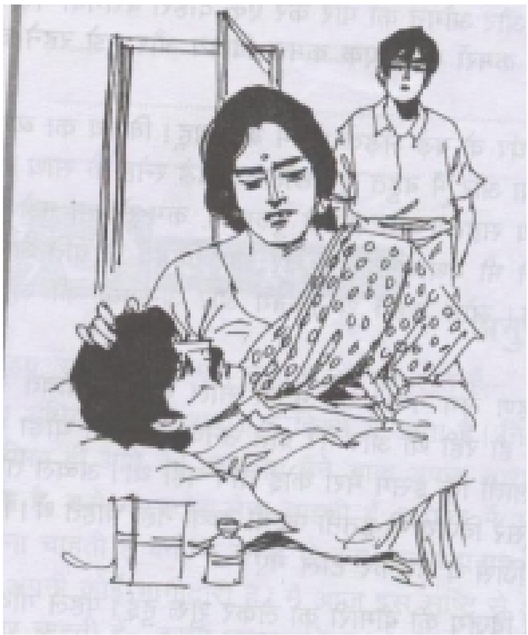

चित्र 15.1

रह गए अम्मा-बाबूजी। वे कहाँ जाते? बड़ा-सा घर, जैसे हमारे लिए प्रेतों का वास बन चुका था। पूरी दुनिया, भाई-बिरादरी के लिए हमारा घर घृणा का पात्र बन चुका था। विजय के रोग की बात दावानल की तरह फैली थी। कोई हमारे नज़दीक न फटकता था, मानो घर से गुज़रनेवाली हवा भी दूसरों को संक्रमित करती हो। लिहाज़ा, बाबूजी अपने कमरे में यथासंभव तटस्थ पड़े रहते और अम्मा लंबे-चौड़े आँगन के दोहरे बरामदों को पार कर अपने कमरे में कैद हो गई थीं।

...और मैं विजय के कमरे में छोड़ दी गई। आखिर मेरे सिवा उनकी सेवा करता कौन? अग्नि और विश्वकर्मा को साक्षी मानकर जीवन-मरण के प्रति साथ प्रतिबद्ध हुए थे। सभी विजय को छोड़ गए, मगर मैं कैसे छोड़ देती?...झूठ नहीं कहूँगी, मृत्यु का भय और उससे बढ़कर इस बीमारी का भय तो मुझे भी आक्रांत करते थे; किंतु मेरे संस्कारों और सामाजिक मर्यादाओं के भय मेरे उस मृत्यु-भय पर भारी पड़ते थे। मैं सोचती-पढ़—लिखकर भी मैं संस्कार-भ्रष्ट नहीं हुई। त्याग, सेवा, पति-प्रेम जैसे भारतीय नारी-सुलभ मूल्य आज भी मुझ जैसी सुशिक्षिता, आत्मचैतन्य स्त्री को थामे हुए हैं। सच कहूँ, कभी-कभी तो मैं अहंकार भाव से भी भर उठती थी।

लेकिन जल्द ही मेरे अहंकार, मेरी इन आत्ममुग्धताओं से मेरी निष्कृतियों का दौर भी प्रारंभ हुआ। डॉक्टर की चेतावनी के बावजूद मैं विजय के कमरे में ही सोती थी—इसी आठ बाई नौ के डबल बेड पर, ताकि विजय एकाकी न महसूस करें। रात ढल रही थी, खाना जैसा भी हम खा सकते थे, खा लिया था। विजय पलंग के एक ओर पड़े हुए करवटें बदल रहे थे और दूसरे छोर पर मैं असाध्य व्यथा से भरी हुई जाग रही थी।

अनायास ही विजय के हाथ मेरे बालों को सहलाने लगे थे। मैंने अपनेपन से भरकर सांत्वना के भाव से उन हाथों को थाम लिया। हाथ गरम थे; जाहिर था, उन्हें बुखार था। मैंने चरम व्यथा और करुणा से भरकर विजय की गरम हथेलियों को अपने चेहरे और तकिए के बीच में रखकर दबा लिया। मन में आया, चीख-चीखकर रोऊँ।

शब्दार्थ

प्रतिबद्ध	– बँधा हुआ, वचन बद्धता
आक्रांत	– जिस पर हमला किया गया हो, अभिभूत
संस्कार भ्रष्ट	– संस्कारों से हटकर चलना
आत्मचैतन्य	– स्वयं का बोध
आत्ममुग्धता	– अपने गुणों पर स्वयं खुश होना
निष्कृति	– छुटकारा, मुक्ति
असाध्य	– जो साधन योग्य न हो, लाइलाज
व्यथा	– दुख
अनायास	– अचानक

टिप्पणी

न जाने कब मेरी आँखों से अश्रुधार बह निकली। उससे विजय की हथेलियाँ गीली हो उठी थीं। विजय अपने स्थान से खिसककर और भी निकट आ गए थे। उन्होंने अपनी रुग्ण हथेलियों से मेरे चेहरे को स्पर्श करते हुए गौर से देखा, फिर मेरे आँसू पोंछकर कहा, 'तुम इस तरह रोती हो तो मुझ पर क्या बीतती है उसे तुम समझ पाती हो? मैं जानता हूँ कि मेरी मृत्यु निश्चित है; किंतु मुझे इतनी शक्ति दो कि मैं जितने दिन भी जी सकूँ, मृत्यु-भय से मुक्त होकर जी सकूँ...। मैं अपनी मौत के दिन गिनना नहीं चाहता, अनु। मैं जीना चाहता हूँ' और आँसू थमने की बजाय और भी प्रवाहमान हो उठे। विजय की व्यथा भी जैसे घटने की बजाय मेरे आँसुओं से और अधिक तीव्र हो उठी। कैसी विचित्र परिभाषा थी प्यार की। विजय कहते–''मेरी जो थोड़ी-बहुत ज़िंदगी बची है, मैं उसमें तुम्हें अधिक-से-अधिक प्यार देना चाहता हूँ। एक बच्चा तुम्हें दे जाऊँ, जो मेरे बाद तुम्हारा संबल हो सके।''

...किंतु मैं तो जैसे अपने आँसुओं के सैलाब में स्वयं ही डूबती जा रही थी, बेसुध। विजय ने अपने उत्तप्त आलिंगन में मुझे बाँध लिया था।

दूसरे दिन घर के पिछवाड़े से लगे छोटे बगीचानुमा खंड में अम्माजी ने मुझे घेरकर कहा, 'विजय से भागा न करो, दुलहिन। यही तो औरत का धरम है। पति जैसा चाहे वैसा करना पड़ता है। इसी में औरत का इहलोक और परलोक दोनों है।'

अम्मा की बातों से मुझे किसी साहित्यिक पत्रिका की वह पंक्ति स्मरण हो चली–जिस्म के मकान को हमेशा सजा-धजाकर रखना चाहिए, चाहे उसका मालिक कैसा भी हो। मैं कैसे समझाती अम्माजी को कि 'औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी है।'

दिन बीत रहे थे, ऐसे ही घृणा-प्रेम, दया-क्रोध, जीवन-मृत्यु, रोग-शुश्रूषा के द्वंद्व में। विजय प्रतिदिन छीजते जा रहे थे। अब न तो उनके पास उनकी वे आक्रामक मुद्राएँ बची थीं, न वैसी उद्दाम दैहिक वासना। धीरे-धीरे उनका बिस्तर से उठ पाना भी मुश्किल हो रहा था।

और विदाई की वह घड़ी भी सामने आ गई। घोर काली रात्रि थी। बिजली गुल थी। विजय के पास अकेली मैं बैठी थी। आज सुबह से ही अचेत विजय के गले से घर्र-घर्र की आवाज़ आनी शुरू हो गई थी। बाबूजी विजय की हालत देखकर शाम को ही अजय को लिवा लेने शहर चले गए थे।

क्रमशः विजय के कंठ से घर्र-घर्र को ध्वनि क्षीण होते-होते बंद हो गई। मैंने उनके मुँह के पास कान सटाकर सुना, उनकी छाती पर सिर रखकर सुना, उनकी पतली कलाइयों को थामकर सुना–सभी मौन थे।

तब मैं रोना चाह रही थी, चीख-चीखकर रोना चाह रही थी। विजय के जाते ही मैं जैसे भार-मुक्त हो उठी थी, भय-मुक्त थी। मेरे कंठ में बहुत दिनों से जो रुलाई अटकी पड़ी थी, आज वह भी मुक्त हो जाना चाह रही थी।

मैं विजय की लाश को वहीं छोड़ लंबा आँगन, चौड़ा बरामदा पार कर अम्मा के कमरे तक गई और बाहर से आवाज़ दी, 'अम्माजी। देखिए!...ज़रा चलकर देखिए।'

शब्दार्थ

अश्रुधारा	– आँसुओं की झड़ी
म त्यु–भय	– मरने का डर
प्रवाहमान	– न रुकना, बहते जाना
उत्तप्त	– तपित, बड़ा हुआ ताप
उद्दाम	– बंधन हीन स्वतंत्र
दैहिक वासना	– देह की वासना
आक्रामक	– घायल करने वाली
भार मुक्त	– बोझ से मुक्ति
भय मुक्त	– डर से मुक्ति

अम्माजी शायद जगी हुई ही बैठी थीं– 'क्या हुआ?...चला गया विजय?'

अम्मा जी आवाज़ बिलकुल ठंडी थी, प्रेत-ध्वनि की भाँति सन्नाटे भरी। पर जब समय को लकवा मार जाता है तब सन्नाटा स्वयं चीखने-चिल्लाने लगता है। अम्मा भी भीतर से ज़रूर चीख रही होंगी।

आगे-आगे मैं चली, पीछे-पीछे अम्मा। अम्मा ने पास जाकर विजय की नब्ज टटोली, धड़कनें आँकीं, देह को छुआ और लंबी श्वास लेकर कहा, 'चला गया।' मानो प्रेत बोले।

अम्मा ने स्थिर स्वर में मुझे आदेश दिया, 'उसकी छाती पर गिरकर नहीं रोना दुलहिन, बच्चे को मिरगी के दौरे आएँगे। जो चला गया, सो चला गया, उसे तो सहेजना होगा ना, जो बच गया है।' अम्मा शायद होने वाले बच्चे के लिए चिंतित थीं।

पर मैं क्या बची हुई न थी? मुझे सहेजने की चिंता किसी को नहीं थी।

सवेरे अजय आए—अपनी पत्नी करुणा और बाबूजी के साथ। अन्य कोई नहीं था हमारे इर्द-गिर्द। पड़ोसी तो दूर की बात, सगे-संबंधी भी विजय की बीमारी की असलियत जानकर साथ छोड़ गए थे।

अंतिम संस्कार व अन्य क्रिया-कर्म जैसे-तैसे पूरे हुए, मगर इस सारे प्रकरण में मैं तटस्थ रही। मानो मैं तमाशबीन हो उठी थी। भोक्ता तो भोक्ता, कर्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था। मगर हाँ, जहाँ ज़रूरत पड़ी, मैंने हाथ लगाया।

अंततः यह अभियान पूरा हुआ...लेकिन नहीं। अभी मैं बाकी थी। मैंने स्पष्ट सुना कि मुझे स्नान-गृह का एकांत छोड़कर नहर पर जाकर खुले में स्नान करना होगा।

...हमारे घर के पिछवाड़े, गाँव के बाहर लगभग आधा किलोमीटर दूर नहर बहती थी। अम्माजी और मैं उधर ही चल दिए। अम्माजी के हाथ में सफ़ेद-सी धोती थी—विजय को ओढ़ाए जाने वाले कफ़न से ज़रा-सी अलग—जो मुझे पहननी थी। नहर का रास्ता मुझे ठीक-ठीक मालूम नहीं था। इससे पहले मैं सिर्फ़ एक बार नहर पर आई थी, आज से लगभग चार वर्ष पूर्व। तब नई-नई ब्याही इस गाँव में आई थी। ब्याह के चौथे दिन चौथारी नहाने की वह परंपरागत रस्म थी। रंगीन कपड़ों और दमकते गहनों में लिपटी थी, सजे-सँवरे विजय खुश थे, रंग-बिरंगी पोशाकों में सजी-धजी गाँव-रिश्ते की तमाम औरतें थीं, आगे-आगे ढोल बजाता ढोलकिया था, चुहल करते गाँव के छोटे-छोटे बच्चे थे, पीछे-पीछे झूमर गाती औरतें थीं और उस झुंड में भीतर-भीतर हुलसती, लजाई चाल से चलती थी मैं। अथाह गर्व और आनंद से दीप्त चेहरेवाले विजय थे।

मुझसे दस कदम की दूरी पर अम्मा चली आ रही थीं—मौन। आज की इस शाम में धरती पर से किरणों का सुनहला मजमा उठ चुका था। एक उदास कालिमा से वसुंधरा **आवेष्टित** थी। आकाश में उड़ते पंछियों का क्रमशः मौन होता कलरव विदा के शोक-गीत गा रहा था।

स्नान के बाद अब इधर सफ़ेद धोती लपेट, शृंगारविहीन एकवस्त्रा मैं घर लौटी तो जैसे एक दूसरी 'अनुराधा' हो चुकी थी। फिर भी मेरे भीतर की 'अनु' विजय और उनके साथ

शब्दार्थ

प्रकरण – प्रसंग
अभियान – दल सहित किसी कार्य के लिए चल पड़ना, चढ़ाई कर देना
आवेषित – जोश में
एकवस्त्रा – एक वस्त्र में
आवेष्टित – ढकी हुई

बिताए गए अतीत के क्षणों को पल-पल अपने तृप्त निःश्वास के रूप में मेरे सामने उछाल देती। घर लौटते-लौटते राह की हवाओं में मेरे बाल लगभग सूख चुके थे और अब धीरे-धीरे हवा में उड़ रहे थे मेरे 'रेशमी' बाल।

मेरे गर्भ में पल रहे बच्चे के अस्तित्व में आ जाने की घोषणा के साथ अजय ने इस बात पर बल दिया था कि जिस लेडी डॉक्टर की देख-रेख में मैं हूँ, उसे विजय की बीमारी के बारे में बतलाकर अनुराधा भाभी और उनके होनेवाले बच्चे को तो खतरे से बचा लिया जाए। किंतु न तो अम्मा उस पक्ष में थीं, न ही बाबूजी। मैंने साहस जुटाकर दबी ज़बान अम्माजी से कहा था, 'डॉक्टर को सब कुछ बताकर मेरी एच.आई.वी. जाँच भी करवा लेनी चाहिए।

अम्मा ने कड़ी नज़रों से देखते हुए कहा, 'फायदा? मान लो कि यदि मेरे बेटे का रोग तुम्हें लग ही चुका है, तो भी क्या उसका इलाज संभव हो सकेगा?'

क्रोध के बावजूद मैंने पाया कि अम्माजी के तर्क में दम था। मैं ठीक-ठाक तो आज भी नहीं जानती कि यदि एक बार किसी का एच.आई.वी. पॉजिटिव निकल आए तो उसका इलाज हो पाता है या नहीं, किंतु यह बात मुझे भली-भाँति मालूम थी कि जिस व्यक्ति का एच.आई.वी. पॉजिटिव हो, वह सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में घृणा का पात्र बन जाता है। उस बात को मैंने विजय की बीमारी में अच्छी तरह अनुभव कर लिया था। मेरे लिए तो इतनी घृणा झेलते हुए जी पाने की कल्पना भी दुस्सह थी। फिर एक भारी अंतर यह था कि विजय पुरुष थे और मैं स्त्री। पुरुष होने के बावजूद उन्हें उपेक्षा और घृणा का दंश झेलना पड़ा।... लेकिन मेरा क्या होता? मेरा आश्रय तो मेरा पितृगृह भी नहीं बनता, क्योंकि कन्यादान के बाद मेरे पिता मेरे भार से मुक्त हो गए थे...माँ की छाती पर बोझ और पिता की पीठ पर सवार मैं भी ब्याह के बाद इन तमगों से मुक्त हो गई थी। विजय के पैतृक आवास पर भी मैं कोई दावा नहीं कर सकती थी, क्योंकि उनके लिए तो मैं 'पराए घर की बेटी' थी।...फिर मेरी सेवा कौन करता? मैंने तो सामाजिक दायित्व और बंधनों के चलते विजय की, देखभाल की; लेकिन मेरी देखभाल कौन?

विजय की बीमारी के दौरान हम आर्थिक रूप से टूट चुके थे, अतः सुरक्षित प्रसव के लिए भी मुझे शहर में रखने का भारी खर्च उठा सकने में बाबूजी असमर्थ थे। यद्यपि विजय की मृत्यु के पश्चात् हमारी हैसियत लखपति की थी, क्योंकि अब बीमा कंपनी, दफ्तर आदि के द्वारा मृत विजय के आश्रितों के नाम लाखों रुपए देय थे। दीनता की प्रतिमा बने बाबूजी प्रतिदिन दस बजते-न-बजते खा-पीकर घर से विजय के दफ्तर को निकलते और शाम ढले लौट आते—कभी निराश तो कभी दफ्तरों से मिले कल-परसों के आश्वासनों के साथ।

आज बाबूजी कुछ जल्दी लौट आए। वे कुछ प्रसन्न दिख रहे थे। पता चला कि पी.एफ. का चेक मिल गया है। हालाँकि राशि कम थी, लेकिन बाबूजी को आश्वस्त करने के लिए काफी थी कि अब धीरे-धीरे सब मिल जाएगा। बाबूजी ने बतलाया कि चेक मेरे नाम था और यह राशि मेरे बैंक खाते में ही जा सकेगी।

सुनकर अम्मा को अच्छा नहीं लगा था। शायद इसीलिए बात घुमाकर बोलीं, 'अब कहो

टिप्पणी

शब्दार्थ

तप्त – संतुष्ट
अस्तित्व – पहचान
एच.आई.वी. पॉजिटिव – ह्यूमन इम्यूनो वाइरस का सकारात्मक परीक्षण
दुस्सह – जिसे सहन करना कठिन हो,
पितगह – पिता का घर
आश्वासन – दिलासा, आशा दिलाना

तो भला। कैसे जाएगी यह बेचारी शहर? हद करती है सरकार भी, नए-नए कानून पास कर देती है।'

दो-तीन दिनों बाद मैं और बाबूजी टैक्सी में बैठकर शहर गए थे। बैंक के दरवाजे पर अजय खड़े थे। सभी औपचारिकताएँ पूरी करके बैंक में खाता खुल गया था—संयुक्त खाता। मेरे और अजय के नाम। सच कहूँ तो मुझे बुरा लगा था, इसलिए नहीं कि पैसे मेरे अधिकार-क्षेत्र से बाहर जा रहे थे, बल्कि इसलिए कि मेरे सहज अधिकार को नकारा जा रहा था।

मुँह खोलकर तो मैंने कुछ नहीं कहा, पर बाबूजी मेरी आँखों में उभर आए सवाल को पढ़ पाए थे। उत्तर मिला था, 'तुम्हें बार-बार शहर आने में परेशानी होगी, इसलिए खाते में अजय का नाम भी डलवा दिया है, ताकि पैसे आसानी से निकाले जा सकें।

परेशानियाँ दूसरी भी थीं। पेट में बच्चा था और दिन-प्रतिदिन संक्रमण का भय मुझे सता रहा था। मेरी देह का सत्त्व तो जैसे निचुड़ता जा रहा था। आलस्य, पीड़ा, बेचैनी और चिड़चिड़ेपन के भाव मेरे अंतस में स्थायी होते जा रहे थे।...नहीं! मैं मरना नहीं चाहती थी। एक मानसिक आरोग्यशाला में किसी मनोरोगी की भयावह मौत तो मैं बिलकुल नहीं मरना चाहती।...मुझे मुक्त होना ही होगा—अतीत से, अपने रोग से और अपने भय से।

जीवन का मोह मेरे भीतर बहुगुणित होकर अँगड़ाइयाँ लेने लगा था। मैं निर्णय कर चुकी थी। सवेरे मैं बाबूजी के सामने थी। कुरसी पर बैठकर बाबूजी कल का पुराना अखबार पढ़ रहे थे।

मैं साहस बटोरकर बोली, 'बाबूजी, मुझे अपना चेकअप कराना है।'

बाबूजी ने चश्मे के ऊपर से गौर से मुझे देखा और कहा,' हूँ।

उनका संक्षिप्त 'हूँ' और भेदक आँखें मुझे डरा नहीं सके। मैंने ढीठ होकर कहा, 'नहीं बाबूजी, 'हूँ' से काम नहीं चलेगा। मैं डॉक्टर को ठीक-ठीक दिखाकर अपना ढंग से इलाज कराना चाहती हूँ, अपने बच्चे की सुरक्षा चाहती हूँ। विजय का रोग मुझ तक उतर आया है। मैं या तो इसकी पुष्टि या उससे निष्कृति चाहती हूँ।'

मेरा स्वर संभवतः कुछ तेज़ हो आया था, जिसे सुनकर अम्माजी दौड़ी चली आईं। मेरा हाथ खींचकर बोलीं, 'बौरा गई है क्या? कहीं सास-ससुर से इस तरह की बातें की जाती हैं?'

जाने कैसा विद्रोह मेरे भीतर पनप आया था कि मैंने झटके से अम्माजी से बाँहें छुड़ाईं, 'मुझे इलाज चाहिए। मुझे मेरा पैसा चाहिए, मेरी चेकबुक, पासबुक चाहिए। मैं खुद तसल्ली से अपना इलाज कराऊँगी।'

झटका खाकर अम्माजी ठगी-सी रह गई थीं। अब वे दोबारा सचेत हुईं, 'अच्छा, तो पैसों के लिए इतना पचड़ा है।' अम्माजी का स्वर खास तीखा और अपमानजनक था।

'नहीं, पचड़ा हक का है। सवाल अपने होने या 'ना' होने का है, मेरे अपने वजूद का है।' दृढ़ स्वर में मैंने जवाब दिया था।

शब्दार्थ

संयुक्त खाता – दो का मिल कर खोला गया बैंक में खाता
देह का सत्त्व – शरीर का मूल तत्त्व
मानसिक – मन संबंधी
आरोग्यशाला – रोग से मुक्त करने का स्थान
मनोरोगी – मन का रोगी
बहुगुणित – अनेक गुना
भेदक – भेद देने वाला

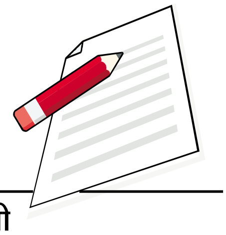

बाबूजी ने मुझे बीच में ही टोका, 'इस सिनेमाई भाषा को अपने कॉलेज के भाषण-बैठकों तक ही रखो, यहाँ मत बोलो। मैं जानता था, यह पचड़ा एक-न-एक दिन ज़रूर उठेगा, इसलिए मैंने पासबुक, चेकबुक सब कुछ अजय के हवाले कर दिया है।...उफ, ये शहर की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ।'

उनके आरोपों का प्रत्युत्तर देने की बजाय मैंने अपना निर्णय सुना दिया, 'तो आज मैं शहर जा रही हूँ अजय के पास।'

मैंने भीतर जाकर साड़ी बदली, कंधे से बाल सँवारे, ललाट पर बिंदिया लगाई। अब मेरे लिए यह मेरा सुहाग-चिह्न नहीं, मेरा शृंगार थी–अच्छी, सुरुचिपूर्ण और व्यवस्थित दिखने का साधन। मेरे शरीर की बाह्य प्रतीति, मेरी वेशभूषा तो मेरे व्यक्तित्व का ही एक अंग है। मेरी प्रभावपूर्ण व्यवस्थित साज-सज्जा मुझे आत्मविश्वास से भरती है। मैं क्यों नकारूँ? मैं क्यों त्यागूँ अपना सहज जीवन?

पता मेरे पास था। थोड़ी परेशानी ज़रूर हुई, किंतु आखिरकार मैंने अजय का घर खोज ही लिया था। दरवाज़ा खुला था। मैंने आवाज़ दी, 'करुणा।'

वे दोनों भीतर से बाहर आए। एक बार चकित हुए थे मुझे आँगन में खड़े देखकर। फिर अजय लपककर मेरे पास आए, मेरे चरण छुए। बाद में करुणा ने भी।

उनका यह व्यवहार मेरे लिए अप्रत्याशित था। मैंने सहज ही अनुमान लगा रखा था कि कहीं-न-कहीं उनके क्रोध, हिकारत और भय के केंद्र में मैं भी हूँ– विजय की पत्नी होने के नाते ही सही। विजय की पत्नी होने की मुझे क्या-क्या कीमत नहीं चुकानी पड़ी। उनकी इस खतरनाक बीमारी के साथ सामाजिक... पारिवारिक सरोकारों के टूटने का जो सिलसिला शुरू हुआ था, 'वह विजय के मरणोपरांत भी कहाँ थमा था? यहाँ तक कि उनकी मौत पर संवेदना प्रकट करने आए मेरे पिताजी भी मुझसे न जुड़ सके थे। एक अस्पृश्य-सा भाव बरतते हुए वे जो वापस लौटे थे तो फिर दोबारा उन्होंने या मेरे मायके वालों ने मेरी कोई खोज-खबर लेने की चेष्टा नहीं की!... पर इसके लिए मैं अकेले इन्हें ही दोषी क्यों मानूँ? सबके भीतर तो विजय के संसर्ग में मेरे रोगी बनने की धारणा घर कर गई थी। इस रूप में मैं सबके लिए मृत्यु का पर्याय थी। सभी तो मुझसे, मेरे रोग से डरते थे। कौन न डरे मृत्यु से! क्या मैं नहीं डरी थी? क्या आज उस रोग के भय से मैं मुक्त हूँ?

अजय मुझे कमरे में ले आए। करुणा ने मेरी बाँह पकड़ कर बिस्तर पर बैठा दिया। 'अच्छा किया, दीदी, जो घर से बाहर निकल आई। बाहर घूमने-फिरने से मन बदलेगा।' करुणा नम्र स्वर में बोली।

मैं पूर्णतः अव्यवस्थित हो चुकी थी। यथासंभव व्यवस्थित होने की चेष्टा करते हुए मैंने कहा, 'मैं अम्मा-बाबूजी की मरज़ी के खिलाफ यहाँ आई हूँ।'

वे चुप रहे।

मैंने बात आगे बढ़ाई, 'मैं पूर्णतया स्वस्थ नहीं हूँ, अजय। मैं ढंग से इलाज कराना चाहती हूँ।

अजय मौन थे।

मैंने कहा, 'तुम मेरे यहाँ होने से डर तो नहीं रहे हो, अजय?

शब्दार्थ

प्रत्युत्तर	– उत्तर का उत्तर
अप्रत्याशित	– जिसकी आशा न हो, आकस्मिक
अस्प श्य	– छूआछूत, अछूता
संसर्ग	– संयोग, प्रेम, संबंध

टिप्पणी

अजय सूखी हँसी हँस पड़े थे, 'क्या कर लूँगा मैं डरकर? वैसे भी बहुत डर लिया। डरकर आदमी कहाँ तक भागे? ज़िम्मेदारियाँ तो हैं ना–घर की, परिवार की, समाज की। सावधानी तो ठीक है, लेकिन डर? वह निरर्थक है। उन दिनों रोग के प्रविष्ट होने के भय ने मुझे भागने पर उकसाया, पर मैंने पाया, भागना असंभव है। कहाँ तक, किस-किस से भागूँगा? दुनिया से भाग सकूँगा क्या?'

अजय के स्वर में आत्मविश्वास था। उन्होंने मेरी ओर देखा और बच्चों की भाँति निश्छल हँस पड़े 'लगता है, आप डर गई हैं।'

'हाँ, मैं डर गई हूँ। हाँ, अनुराधा जीना चाहती है, इसीलिए डर गई है।' और डरकर ही आज मैं अपने समस्त भयों से मुक्त हो चुकी हूँ।

अजय की सद्भावना पर अविश्वास का कोई कारण नहीं दिखता, फिर भी सोचती हूँ, यदि डॉक्टरी जाँच के दौरान मेरे भीतर रोग के लक्षणों की पुष्टि हो जाती है, क्या तब अजय अपने उसी पुराने व्यवहार में न लौट जाएँगे? मेरा बच्चा...। सब जान बूझकर.. .मुझे या विजय को क्या अधिकार था?... परंतु आज इन प्रश्नों का प्राप्य?...किसी भी प्रश्न का आज क्या औचित्य है?

आज अनुराधा समस्त प्रश्नों से मुक्त है। यह युद्धभूमि है और 'अनु' संघर्ष के लिए सन्नद्ध है। मेरे इस स्वाभाविक युद्ध में अब मेरे आड़े कुछ नहीं आएगा–न संस्कार, न मोह, न संबंध, न...! यदि शालीन रहकर अनुराधा यह संघर्ष कर सकी तो अत्युत्तम, अन्यथा वह भी त्याग देगी। यह युद्ध तो अब हर हाल में अनवरत चलेगा, यह संघर्ष होकर ही रहेगा, पीछे नहीं हटेगी अनुराधा इस संघर्ष से–जीने के लिए संघर्ष, अधिकारों के लिए संघर्ष, स्वाभिमान के लिए संघर्ष...अनुराधा का एक निरंतर संघर्ष।

–पंकज कुमार

शब्दार्थ

निरर्थक – बेकार का
प्रविष्ट – प्रवेश करना
सन्नद्ध – कस कर बँधा हुआ
अनवरत – लगातार

15.2 बोध प्रश्न

तो कैसी लगी आपको कहानी ? अपनी समझ के आधार पर इन प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी हैं।' वाक्य अनुराधा ने किससे कहा–
   (क) देवर से (ख) अम्माजी से (ग) स्वयं से (घ) देवरानी से
2. विजय के छोटे भाई अजय ने घर क्यों छोड़ा?
   (क) उसे दूसरी जगह नौकरी मिल गई थी।
   (ख) उसकी पत्नी करुणा अनुराधा के साथ रहना नहीं चाहती थी।
   (ग) उसका अपने माता-पिता से झगड़ा हो गया था।
   (घ) वह बड़े भाई विजय के रोग से भयभीत था।

3. ''सभी विजय को छोड़ गए, मगर मैं कैसे छोड़ देती?'' अनुराधा ने क्यों कहा?

   (क) क्योंकि वह अपने संस्कारों, सामाजिक मर्यादाओं से बँधी थी।

   (ख) वह विजय से बहुत प्रेम करती थी।

   (ग) उसे पता था कि पति की बीमारी से वह अप्रभावित रहेगी।

   (घ) उसे पति की मृत्यु के बाद आर्थिक लाभ मिलने वाले थे।

4. अनुराधा ने शहर जाकर नौकरी करने के बारे में क्यों सोचा?

5. ''दिन बीत रहे थे, ऐसे ही घृणा-प्रेम, दया-क्रोध, जीवन-मृत्यु, रोग, उपचार के द्वन्द्व में'' वाक्य में किस प्रकार के शब्दों की प्रधानता है?

   (क) तत्सम (ख) देशज (ग) तद्भव (घ) विदेशी

6. आइए, देखें, आपको कथा का घटनाक्रम कितना याद है? नीचे कथा को कुछ उलटे-सीधे क्रम में दिया गया है। आप इन्हें क्रमानुसार व्यवस्थित कीजिए।

   1. अनुराधा का विवाह विजय से होता है।
   2. डॉक्टर उसे अपने पति से दूर रहने की सलाह देता है।
   3. अनुराधा ललित कला में बी.ए. करने के बाद उसमें अपना कैरियर बनाना चाहती है।
   4. माँ की जिद के आगे सब इच्छाएँ त्यागकर वह विवाह के लिए विवश हो जाती है।
   5. देवर अजय संक्रमण के भय से घर छोड़ कर चला जाता है।
   6. दो वर्ष तक वह माँ नहीं बन पाती।।
   7. विजय की मृत्यु के बाद बीमा कंपनी और दफ़्तर से काफ़ी धनराशि मिलती है।
   8. जाँच से पता चलता है कि विजय एच.आई.वी. पॉजिटिव है।
   9. अनुराधा अजय के घर पहुँच जाती है।
   10. संस्कारों से विवश होकर वह न चाहते हुए भी पति के अंधे प्रेम का दुष्प्रभाव अपने शरीर पर झेलती है।
   11. उचित इलाज के अभाव में रोग बढ़ता जाता है तथा अंततः विजय काल का ग्रास बन जाता है।
   12. अनुराधा सजग हो उठती है, उसे अपनी तथा होने वाले बच्चे के भविष्य की चिंता होने लगती है।
   13. वह संयुक्त खाते से अपना पैसा चाहती है।
   14. अनुराधा को समझ में आ जाता है कि सबका मोह त्यागकर उसे अब अपने लिए संघर्ष करना है।
   15. वह अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए ससुराल में विरोध के लिए बाध्य हो जाती है।

15.3 आइए समझें

घटना-क्रम तो आपको याद है पर क्या संपूर्ण कहानी आप समझ पाए? आइए, इसका विश्लेषण करते हैं।

अंश - 1

यह अधिकार .... इस दासत्व का प्राप्य?

कहानी का प्रारंभ होता है, उसकी नायिका के चिंतन-मनन से, जहाँ जीवन के वास्तविक संदर्भों में **'अधिकार'** का अर्थ खोजने का प्रयास करती है। उसे लगता है कि अधिकार बनते तो हैं सबके लिए समान रूप से परंतु उनका लाभ केवल सबल ही उठा पाते हैं। निर्बल तो इनसे वंचित रहकर, केवल कर्त्तव्य-पालन में ही जीवन व्यतीत कर देते हैं। तात्पर्य यह है कि सबल को ही जीने का वास्तविक अधिकार प्राप्त है।

अनुराधा अपना वजूद सुरक्षित कर लेना चाहती है। उसे आत्मज्ञान हो गया है कि वह भी इस सृष्टि की एक अनमोल कृति है। सृष्टि के विकास में उसका भी योगदान है, तो फिर वह सिर्फ़ दायित्व-वहन के लिए ही क्यों विवश रहे? क्या जीवन जीने का सामान्य, सहज-सा अधिकार माँगना भी अनुचित है? यह सब प्रश्न उसके मन-मस्तिष्क को मथने लगते हैं।

आपको क्या लगता है? अनुराधा के विचारों के निष्कर्ष से क्या आप सहमत हैं? सोचिए और स्वयं के विश्लेषण से इसकी तुलना कीजिए।

कथा के प्रारंभिक अंशों से सहज ही जिज्ञासा उभरती है कि अनुराधा के साथ ऐसा क्या घटित हुआ जो वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत हो गई और उसने निश्चय किया कि वह स्वयं को योग्यतम सिद्ध करेगी? कथा की परतें खुलने लगती हैं। आगे की पंक्तियों में ही वह बताती है कि उसके पति 'विजय' अब नहीं रहे। उनकी मृत्यु 'एड्स' से हो चुकी है। तुरंत ही कथा के प्रारंभ से इसके सूत्र जुड़ जाते हैं।

क्या प्रारंभ से ही नारी को कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेने की छूट नहीं देनी चाहिए? आपकी क्या राय है?

....

....

अब, जब परिस्थितियों ने उसे कठिनाई की अगन-भट्टी में डाल दिया तो उसका मस्तिष्क सक्रिय हो उठा। वह कहती है कि देह का प्रश्न यदि स्त्री की मान-मर्यादा से जुड़ता है तो क्या विवाह-वेदी पर बैठकर औरत अपनी मान-मर्यादा अपने पति के हाथों गिरवीं रख देती है? यदि 'पति' होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है।

क्या उत्तर देंगे आप अनुराधा के इन प्रश्नों का? आपको नहीं लगता उसके प्रश्नों में एक ऐसी सच्चाई है, जो आपको सोचने पर मजबूर करती है...! आप तुरंत या सहजता से उसका उत्तर नहीं दे पाते। वास्तव में मान-मर्यादा का, स्त्री की इच्छा-अनिच्छा का प्रश्न, जितना विवाह से पूर्व महत्त्वपूर्ण है उतना ही विवाह के बाद भी। वैवाहिक जीवन की

सफलता तो पति-पत्नी दोनों पर निर्भर है तो फिर इस जीवन में एक अति महत्त्वपूर्ण और दूसरा पूर्णतया नगण्य कैसे हो सकता है? पति को स्वामी कहा जाए तो फिर गृह-स्वामिनी को 'दासी' ही क्यों माना जाए? क्या यह उचित है? दोनों को ही समान अधिकार, समान महत्त्व दिया जाए तभी स्वस्थ समाज का निर्माण हो सकता है क्योंकि समाज, नारी-पुरुष के इसी सामंजस्य पर टिका है। अगर इनमें टकराव होगा तो भावी पीढ़ी का भविष्य अंधकार पूर्ण होने से कोई नहीं बचा सकता।

पाठगत प्रश्न 15.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अनुराधा के विचार से अधिकार किसके लिए बने हैं?

   (क) निर्बल के लिए
   (ख) सबल के लिए
   (ग) निर्बल-सबल दोनों के लिए
   (घ) किसी के लिए भी नहीं

2. कथा के प्रारंभ में अनुराधा–

   (क) अपने पति को स्वस्थ देखना चाहती है।
   (ख) अपने अधिकारों की माँग करती है।
   (ग) अपना इलाज कराना चाहती है।
   (घ) अपने पिता के घर जाना चाहती है।

3. 'एड्स' का रोग संक्रमित होता है–

   (क) एड्स ग्रस्त रोगी को छूने से
   (ख) रोगी को देखने से
   (ग) एच.आई.वी. संक्रमित खून चढ़ने से
   (घ) रोगी के साथ बैठकर खाने से

4. निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही (√) कथन पर सही अथवा गलत कथन पर गलत (X) का निशान लगाइए:

   (क) अनुराधा को अपने पति के रोग का कारण ज्ञात था। ☐
   (ख) पति की बीमारी में अनुराधा की मुख्य भूमिका थी। ☐
   (ग) विवाह के पश्चात भी स्त्री की मान-मर्यादा को महत्त्व दिया जाना चाहिए। ☐
   (घ) पति की बीमारी को अपना मान कर स्त्री को संक्रमण से बचाव के प्रयास नहीं करने चाहिए। ☐
   (ङ) अनुराधा का चिंतन-मनन निर्मूल था। ☐

टिप्पणी

अंश - 2

शहर की बी.ए... मेरे रेशमी बाल।

आइए, अब आगे के पाठ को समझें जहाँ से अनुराधा की जीवन कड़ियों का प्रारंभ होता है।

अनुराधा शहर में पली-बड़ी एक सामान्य मध्यमवर्गीय नारी थी जिसने ललित-कला में बी.ए. किया था। वह उसी विषय में अपना कैरियर बनाना तथा प्रसिद्धि पाना चाहती थी परंतु माता-पिता की इच्छानुसार शीघ्र ही उसे विवाह के बंधन में बँधना पड़ा। उसके पति नौकरी तो शहर में करते थे परंतु रहते गाँव में थे, इसी कारण वह भी विवाह के पश्चात गाँव में रहने लगी। सामाजिक सोच के अनुसार उसका पति कमा रहा था तो काम करने की उसे क्या आवश्यकता थी?

क्या आप भी ऐसी ही सोच रखते हैं? परिस्थितियों में परिवर्तन आया है पर कितना? विश्लेषण कीजिए।

....

....

विवाह के प्रारंभिक दिनों में अनुराधा को कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई परंतु दो वर्ष तक जब वह माँ नहीं बन पाई तो उसकी सास के व्यवहार में परिवर्तन आने लगा।

बाद में जब अनुराधा की माँ बनने की चाहत को विजय ने हँसकर टाला और वह बीमार भी रहने लगा तो जाँच हुई और ज्ञात हुआ कि विजय एच.आई.वी. पॉजिटिव है। डॉक्टर की अन्य हिदायतों के साथ अनुराधा को पति से दूर रहने की विशेष सावधानी भी शामिल थी।

विजय के रोग के संक्रमण के भय से उसका छोटा भाई 'अजय' भयभीत होकर घर छोड़ गया तथा अन्य रिश्तेदार यहाँ तक कि विजय के माता-पिता भी उचित जानकारी के अभाव में डरकर यथासंभव उससे दूर रहने लगे। उनका घर घृणा का पात्र बन गया तथा जिस समय उन्हें अधिक प्रेम, सहानुभूति, निर्देशन तथा देखरेख की आवश्यकता थी, उसी समय सब लोगों ने उनका साथ छोड़ दिया।

आइए, इस स्थिति पर विश्लेषण करें। परिवार में एक सदस्य को एच.आई.वी. पॉजिटिव है। ऐसे में क्या अजय की भाँति पलायन कर जाना ठीक है? क्या अनुराधा और विजय की भाँति चुपचाप स्वीकार कर लेना और कुछ न करना ठीक है। आप मानेंगे कि दोनों बातें ठीक नहीं हैं। ऐसी स्थिति में सबसे पहले परिवार के सदस्यों में खुलकर चर्चा होनी चाहिए। एड्स दबाने-छिपाने से लाभ नहीं, हानि ही होती है। तो क्यों न एक युक्ति और रणनीति ऐसी बनाई जाए जो रोगी और उसके परिवार के लिए ठीक हो।

आपने ऐसी अनेक घटनाएँ सुनी और समाचार पत्रों में पढ़ी होंगी जहाँ एड्स रोगी को उसके हालात पर छोड़ दिया गया। लोग उससे दूर भागते हैं। ऐसे में यह समझना आवश्यक है कि रोगी के साथ सामान्य व्यवहार और संपर्क से एड्स नहीं फैलता। यह तो केवल रोगी के रक्त के आदान-प्रदान से या उससे यौन संबंधों से फैलता है।

कहानी में अनुराधा को भय से आक्रांत दिखाया गया है। परंतु संस्कारों और सामाजिक मर्यादाओं से बँधी वह वहीं रहने तथा वही करने को मजबूर हो गई थी जैसा पति का

अंधप्रेम चाहता था। वह जानती थी कि अग्नि को साक्षी मानकर दोनों ने जीवन-मरण में साथ रहने की प्रतिज्ञा की थी तो त्याग, पति-प्रेम, सेवा जैसे भारतीय नारी-सुलभ गुणों को वह कैसे भूल सकती थी! यही कारण था कि वह डॉक्टर की चेतावनी की अवहेलना कर विजय के कमरे में ही सोती रही, ताकि विजय एकाकी महसूस न करें, मृत्यु से पहले और अधिक कष्ट का अनुभव न करें।

परंतु अनुराधा का यह अपनापन, त्याग भावना और निःस्वार्थ सेवा उसके पति की इस चेतना और समझ को विकसित नहीं कर पाए कि डॉक्टर की बात मानते हुए अब उसे अनुराधा के अति सामीप्य से बचना चाहिए। उसे भी अपने जीवन-साथी को यथासंभव इस रोग की चपेट में आने से बचाना चाहिए। वह पूर्ववत् अपने शारीरिक अधिकारों की पूर्ति करता रहा और इस पर उल्लेखनीय बात यह है कि उसे यह भी अनुभव नहीं हुआ कि वह कोई गलती कर रहा है। उल्टे वह अपने कृत्य को 'भाग्य' के लेख तले ढकता रहा।

दूसरी ओर, अनुराधा की सास भी अपने बेटे को कुछ समझाने की अपेक्षा बहू को ही औरत का 'धर्म' समझाती रही। यद्यपि वह स्वयं अपने पुत्र के निकट आने में कतराती थी तथापि बहू को पति की इच्छापूर्ति करते हुए अपने सब लोक सुधारने की शिक्षा देना नहीं भूलती थी। बेटे-बहू के बीच के इस भेदभाव को देखकर अनुराधा चिल्ला-चिल्लाकर विद्रोह करना चाहती थी तथा अपनी सास को समझाना चाहती थी कि स्त्री के पास शरीर ही नहीं दिल और दिमाग भी होता है पर 'आदर्श बहू' के संस्कार उसे मौन कर देते थे। आप सोचिए क्या इस सीमा तक उसका झुकना, चुप रहना ठीक था?

क्रियाकलाप

उपर्युक्त वर्णन पढ़कर आपको कैसा लगता है? क्या आपके आस-पास भी ऐसी घटनाएँ नहीं होतीं या स्वयं आपके साथ ही कभी कोई स्थिति आई हो जब घर में खुलकर अपनी बात न कह पाने का आपको दुष्परिणाम झेलना पड़ा हो? सोचकर लिखिए।

....

....

आइए कहानी के विश्लेषण को आगे बढ़ाते हैं—

इसी प्रकार स्वयं से संघर्ष करते अनुराधा के दिन बीतते रहे और उसके पति की बीमारी बढ़ती गई। अंततः वह घड़ी भी आ पहुँची, जिसका पता सबको था। परंतु फिर भी कोई भावी-योजना नहीं बनाई गई थी। रात्रि का समय था जब विजय के पास अकेली अनुराधा ही बैठी थी कि उसने प्राण त्याग दिए।

अगले दिन उसके पति का अंतिम संस्कार कर दिया गया। विजय के रोग से भयभीत रिश्तेदार तथा पड़ोसी मृत्यु के पश्चात भी घर नहीं आए। अब तक सब कुछ सहने, भोगने वाली अनुराधा के ऊपर अब भी किसी की करुण-दृष्टि नहीं पड़ी। उससे मात्र औपचारिकताएँ पूर्ण करवाई गईं।

कैसा अनुभव कर रहे हैं आप 'अनुराधा' की व्यथा-कथा को पढ़ते हुए? अनेक प्रश्न आपके मन-मस्तिष्क को भी झकझोर रहे होंगे? देखिए, कहीं ये प्रश्न वही तो नहीं? इनका उत्तर खोजने का प्रयास कीजिए।

पाठगत प्रश्न 15.2

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. डॉक्टर ने अनुराधा को पति से बचे रहने के लिए निर्देश दिया था। आपके अनुसार–
   (क) अनुराधा को पति को छोड़कर दूर चले जाना चाहिए था।
   (ख) उसी घर में रहना चाहिए था परंतु उसके कमरे में नहीं जाना चाहिए था।
   (ग) उसकी देखभाल के लिए किसी नौकर, नर्स आदि को रखना चाहिए था।
   (घ) स्वयं उसकी देखभाल करते हुए अपना बचाव भी करना चाहिए था।
2. अनुराधा की स्थिति में किसी भी नारी को सामाजिक मर्यादाओं और संस्कारों का–
   (क) आँख मूँद कर पालन करना चाहिए।
   (ख) सोच–समझ कर विवेकपूर्ण निर्णय लेने चाहिए।
   (ग) पूर्णतया बहिष्कार कर देना चाहिए।
   (घ) इच्छानुसार पालन करना चाहिए।
3. डॉक्टर ने विजय को दूसरे अस्पताल ले जाने के लिए कहा था। आपके अनुसार–
   (क) विजय का निर्णय ठीक था। उसे अस्पताल जाने की बजाय घर में ही अपनों के बीच ज़िंदगी के अंतिम दिन गुज़ारने चाहिए थे।
   (ख) उसका रोग लाइलाज था अतः अन्य किसी अस्पताल में जाकर कोई लाभ नहीं होता। अतः घर पर ही रहना ठीक था।
   (ग) उसे डॉक्टर की राय माननी चाहिए थी और अपनी पत्नी अनुराधा से दूर रहना चाहिए था।
   (घ) उसे इलाज पर व्यर्थ का खर्चा नहीं करना चाहिए था। यही सोचकर वह कहीं और नहीं गया।
4. विजय की बीमारी का पता चलते ही उसका छोटा भाई अजय घर छोड़कर चला गया तथा माता-पिता उससे कटे-कटे रहने लगे। आपके अनुसार –
   (क) यह अनुचित था क्योंकि एड्स-ग्रस्त रोगी के साथ रहने मात्र से यह रोग नहीं होता। यह छूत का रोग नहीं है।
   (ख) यह उचित था क्योंकि एड्सग्रस्त रोगी की श्वास-प्रक्रिया से इस रोग के कीटाणु घर में फैल रहे थे।
   (ग) यदि वह भी साथ रहने से बीमार हो जाते तो रोगी की सेवा कौन करता?
   (घ) अजय को एच.आई.वी. एड्स के बारे में अधिक पता नहीं था।

5. कहानी पढ़ने के बाद आपको विजय के चरित्र के विषय में क्या प्रबल धारणा बनती है–
   (क) विजय स्नेही पति था इसलिए सदैव अनुराधा से संबंध बनाए रखना चाहता था।
   (ख) विजय को प्यार की सही परिभाषा नहीं पता थी अन्यथा वह अनुराधा को अपने रोग से बचा कर रखने का प्रयास करता।
   (ग) विजय जाने से पहले अनुराधा को बच्चे के रूप में जीने का सहारा देकर जाना चाहता था। अतः उसका व्यवहार उचित था।
   (घ) विजय को यह ज्ञात नहीं था कि यह रोग कैसे दूसरे व्यक्ति को संक्रमित करता है।

अंश - 3

मेरे गर्भ में ....निरंतर संघर्ष।

पति की मृत्यु के पश्चात विधवा रूप में आते ही 'अनुराधा' के जीवन में एक नया अध्याय प्रारंभ होता है। उसमें क्या परिवर्तन होते हैं? आइए, इस अंश में पढ़ते हैं।

अनुराधा गर्भवती है, यह जानकर भी उसके सास-ससुर अनुराधा के स्वास्थ्य की जाँच करवाने को तैयार नहीं होते। देवर अजय ही उस समय आगे आकर इस बात पर बल देता है कि भाभी तथा होने वाले बच्चे के स्वास्थ्य की जाँच करवा लेनी चाहिए तथा यथासंभव उन्हें भाई के रोग से बचाने का प्रयास किया जाना चाहिए। अनुराधा भी उस समय देवर की बात का संबल पाकर, उसका समर्थन करती है परंतु सास की कड़ी नज़रों तथा वचनों के आगे उसका विरोध दबकर रह जाता है। सास की धारणा थी कि यदि रोग हो ही गया है तो जाँच कराने से क्या लाभ! उसका निदान तो है नहीं।

विजय की बीमारी के दौरान घर की आर्थिक व्यवस्था भी प्रभावित हुई थी परंतु बाद में बीमा कंपनी तथा दफ़्तर आदि से कठिनाई से प्राप्त राशि से हालात में सुधार आने की संभावना बन गई थी। यह राशि सिर्फ़ अनुराधा के हस्ताक्षर के बाद ही प्राप्त हो सकती थी, यह जानकर उसकी सास को अच्छा नहीं लगा था।

बाद में ससुर के साथ शहर जाने के बाद उसका बैंक में खाता खुलवाया गया था पर यह खाता संयुक्त रखा गया था, उसके और अजय के नाम पर। यह देखकर अनुराधा विचलित हो गई थी क्योंकि उसे लगता था पति की धनराशि पर, जो सिर्फ़ उसके नाम थी, उसके सहज अधिकार को नकारा जा रहा था। पर हर बार की तरह अब भी वह अपनी भावनाओं को दबाकर रह गई थी, खुलकर विरोध नहीं कर पाई। ससुर ने ही उसकी आँखों में उभरते प्रश्न को पढ़कर कारण स्पष्ट कर दिया कि यह व्यवस्था उसे बार-बार शहर जाने से बचाने के लिए की गई है।

अनुराधा मनोवेगों पर नियंत्रण रखते-रखते स्वयं ही जूझ रही थी। वह जानने को बेचैन थी कि कहीं वह रोगग्रस्त तो नहीं! यदि वह रोगग्रस्त है तो क्या आनेवाला बच्चा भी संक्रमित होगा या नहीं? वह किसी के साथ इन समस्याओं को बाँट नहीं पा रही थी, परिणामस्वरूप उसके व्यवहार में भी चिड़चिड़ापन आ गया था।

आपको अनुराधा का यह व्यवहार तथा अंतर्द्वन्द्व क्या सोचने पर मजबूर करता है? क्या आपको लगता है यदि वह किसी से खुलकर बात कर पाती तो उसे अपनी समस्याओं का कुछ हल मिलता?

स्वयं से संघर्ष करते-करते अनुराधा को एक बात तो स्पष्ट रूप से समझ में आ गई थी और वह यह कि वह मरना नहीं चाहती, न तो बीमारी की अवस्था में बिना जाँच और इलाज कराए, न ही मन-ही-मन घुटते-घुटते मानसिक आरोग्यशाला में मनोरोगी बनकर। उसने दृढ़ निश्चय किया कि उसे अब अपने अतीत, रोग, भय आदि से मुक्त होना ही होगा। सारी शक्ति बटोरकर, ठोस निर्णय लेकर अगले दिन वह ससुर के सम्मुख जा खड़ी हुई और साहस के साथ अपने चेकअप कराने की मंशा जाहिर की। उसने विद्रोहात्मक स्वर में अपने इलाज, पैसे, चेकबुक, पासबुक की माँग की तथा यह भी स्पष्ट कर दिया कि वह उन पर निर्भर न रहकर स्वयं तसल्ली से अपना इलाज कराएगी।

उसके इस आवेश से अम्मा आश्चर्य चकित रह गईं क्योंकि अनुराधा का यह रूप उनके लिए अप्रत्याशित था। उन्हें लगा था कि वह पैसों को पाने के लिए यह सब कर रही है।

अनुराधा ने तुरंत ही शहर जाने का निर्णय कर लिया। आंतरिक संतुष्टि के साथ-साथ आज उसे बाहरी व्यवस्थित साज-सज्जा पर भी विद्रोह की आवश्यकता अनुभव होने लगी। उसने साड़ी बदली, बाल सँवारे तथा विधवाओं के लिए त्याज्य समझी जाने वाली बिंदी भी लगाई क्योंकि वह अनुभव कर रही थी कि वेशभूषा भी व्यक्तित्व का एक अनिवार्य हिस्सा है। उसे जीवन को सुरुचिपूर्ण और व्यवस्थित बनाना है तो दिखना भी वैसा ही होगा। स्वयं में आत्मविश्वास भरने के लिए उसे जीवन में सहजता अपनानी होगी। असहज और अलग दिखकर वह सामान्य जीवन कैसे जी पाएगी। और आखिर क्यों दिखे वह अव्यवस्थित?

अनुराधा की जगह स्वयं को रखकर ज़रा सोचिए कि क्या उसके प्रश्न तर्कसंगत नहीं? क्या विधवा का रूप धारणकर सारी उम्र पति की याद में रो-रोकर बिता देनेवाली नारी अधिक पतिव्रता होती है? बाहरी वेशभूषा क्यों इतनी महत्त्वपूर्ण होती है? सोचकर अपने विचार लिखिए।

....

....

अनुराधा के एक ठोस निर्णय ने अब उसके समक्ष आनेवाली सारी बाधाओं को छोटा कर दिया था, इसीलिए वह अकेली ही अजय का घर ढूँढ़कर उसके पास पहुँच गई। देवर-देवरानी पहले तो उसका साहस देखकर हैरान हुए पर शीघ्र ही उनके मन में श्रद्धा भाव जाग्रत हो उठा। उन दोनों के पैर छूने पर अनुराधा सोच में पड़ गई क्योंकि उनसे इस प्रकार के व्यवहार की उसे उम्मीद नहीं थी। वास्तव में पति की बीमारी के समय उसने सब रिश्तों को जिस प्रकार टूटते देखा था, अपनों को जैसे बदलते देखा था उसके बाद बीमारी से भय, घृणा तथा क्रोध के भाव ही, उसे सबकी आँखों में तैरते दिखते थे। उपेक्षाओं के बीच जीते हुए वह अजय के आदरपूर्ण व्यवहार से चौंक गई।

देवरानी करुणा ने भी उसे संबल दिया तथा उसका बाहर निकलना उचित माना। यह जानकर कि वह सास-ससुर की इच्छा के विरुद्ध अपना इलाज करवाने चली आई है; दोनों पति-पत्नी मौन हो गए। अनुराधा के पूछने पर अजय ने स्पष्ट किया कि वह समझ गया है कि जीवन में आए संकटों तथा ज़िम्मेदारियों से भागना संभव नहीं है तथा न ही यह उनसे बचने का स्थायी उपाय है। सावधानियाँ बरतना उचित है किंतु भय से भागना अनुचित। मनुष्य को इसी संसार में, इसी समाज में रहना है तो इसकी बुराइयों, कमियों, कष्टों से बचकर वह कहाँ भागेगा!

अजय का यह निष्कर्ष सर्वथा उचित है। सच है कि एड्स हो या कोई अन्य बीमारी, संसार का कौन-सा ऐसा भाग है जो इन सबसे रहित है? सावधान रहें तो हम इन खतरनाक बीमारियों से बचाव के उपाय ढूँढ़ कर, उसे पराजित कर सकते हैं, उसका निदान खोज सकते हैं। पर अगर ऐसे में यदि हम रोगग्रस्त व्यक्ति को छोड़कर ही चले जाएँ, उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगें, उसकी जाँच करवाए बिना उसे रोगी मान लें, बीमारियों के निदान के लिए प्रयास ही न करें तो? इस प्रकार तो इस जैसे रोगों के संकट समाज को घेरे ही रखेंगे।

अजय का आत्मविश्वास से पूर्ण यह निष्कर्ष हमें भी संघर्षों से जूझने तथा उन पर विजय पाने की प्रेरणा देता है। अनुराधा भी संघर्षरत थी। विचारों में अंतर्द्वंद्व चल रहा था। उसे लग रहा था कहीं वह जाँच करवाने के बाद रोगग्रस्त पाई गई तो क्या होगा? उसका बच्चा क्या इस प्रभाव से बच पाएगा? इन प्रश्नों के बीच घिरी होने पर भी, अजय के आत्मविश्वास ने कहीं उसे भी इस निष्कर्ष पर ला खड़ा किया था कि इन सब प्रश्नों से डरना, परिस्थितियों से भागना अथवा कर्महीन रहना उसके जीवन का अंतिम लक्ष्य नहीं हो सकता।

जीवन युद्धभूमि, कर्मभूमि है तथा अनुराधा उसमें संघर्ष के लिए तत्पर। वह जीने के लिए, अधिकारों के लिए, स्वाभिमान के लिए संघर्ष करने को कटिबद्ध है। इस मार्ग में अब कोई बाधा उसे रोक नहीं पाएगी। संस्कार, मोह तथा संबंध आदि से ऊपर उठकर, यहाँ तक कि आवश्यक हुआ तो शालीनता को भी त्यागकर वह अनवरत इस जीवन-संघर्ष में जुटी रहेगी।

इस कहानी का अंत वास्तव में नारी के अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष की शुरूआत है। यहाँ अनुराधा के जीवन में एक नया मोड़ आता है, जहाँ से वह स्वयं के लिए जीवन जीने का संकल्प लेती है।

पाठगत प्रश्न 15.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. अजय के साथ अनुराधा का संयुक्त खाता खुलने पर अनुराधा को अच्छा नहीं लगा था क्योंकि –

   (क) अजय सारी धनराशि का स्वामी बन गया था।

   (ख) अजय विश्वास पात्र नहीं था।

(ग) अनुराधा के सास-ससुर देवर को कहकर पैसे निकलवा सकते थे।

(घ) पति की संपत्ति पर उसके सहज अधिकार को नकारा जा रहा था।

2. शहर जाने से पूर्व अनुराधा ने बिंदी भी लगाई क्योंकि–

(क) वह नहीं जानती थी कि यह सुहाग–ऽचिह्न सिर्फ़ सुहागनों के लिए है।

(ख) वह अपनी सास को पीड़ा पहुँचाना चाहती थी।

(ग) व्यवस्थित साज-सज्जा से वह स्वयं में आत्मविश्वास भरना चाहती थी।

(घ) वह आकर्षक और सुंदर दिखना चाहती थी।

3. जब अनुराधा अजय के घर पहुँची तो –

(क) देवर-देवरानी ने उसका आदर-सत्कार नहीं किया।

(ख) दोनों ने तुरंत आगे बढ़कर उसके चरण छुए।

(ग) उसे संक्रामक रोगी समझ कर दोनों दूर चले गए।

(घ) सास-ससुर की बात न मानने के कारण उसे बुरा-भला कहा।

अंश - 5

आइए अब कथा के शीर्षक पर विचार करें। किसी भी रचना का उपयुक्त शीर्षक वह होता है, जो उसके मूल कथ्य से पूरी तरह जुड़ा होता है। इस दृष्टि से 'अनुराधा' शीर्षक सर्वथा उपयुक्त है क्योंकि कथा का ताना-बाना उसकी प्रमुख नायिका 'अनुराधा' पर ही बुना गया है। पूरी कथा उसके इर्द-गिर्द घूमती है। दूसरे पात्र इसमें यदि आए भी हैं तो भी वह 'अनुराधा' की ही चारित्रिक विशेषताओं को उभारने में सहायक सिद्ध होते हैं।

अनुराधा एक ऐसी भारतीय नारी का प्रतीक है, जो संस्कारों और शालीनता से बँधी अपने पितृ तथा पति-गृह के सारे दायित्वों को पूर्ण करती है। जो चाहकर भी विरोध नहीं कर पाती तथा मर्यादाओं में रहकर अनेक विडंबनाओं का शिकार बनती है। परंतु अंततः वह सीख जाती है यदि अपना अस्तित्व कायम रखना है तो अपना आत्मबल एकत्रित कर संघर्षशील बनना ही होगा। जीवन की इस रणभूमि में बहुत कुछ त्याग कर ही युद्ध के लिए उतरना होगा, तभी वह उसमें विजयी होने की आशा रख सकती है। वह स्वयं इस क्षेत्र में कदम उठा कर सिद्ध करती है कि आज की नारी को अपनी कमज़ोरियों को पहचान कर उन्हें दूर करना होगा तथा संघर्षशील बनना होगा। कहानी का यह संदेश 'अनुराधा' के माध्यम से ही उभरकर सामने आता है। इस दृष्टिकोण से यह शीर्षक पूर्णतया उचित है।

15.4 भाषा-शैली

पंकज कुमार की प्रस्तुत कहानी समस्या प्रधान है। कथा का उद्देश्य प्रमुख रूप से वर्तमान समाज में नारी की समस्याओं को उभारना तथा उसे जागरूक बनाना है। इसीलिए इसमें **चिंतन प्रधान शैली** प्रमुख है। नारी-मन की अंतर्व्यथा का वर्णन करते हुए **मनोविश्लेषणात्मक शैली** का भी प्रयोग हुआ है। उदाहरणतः अनुराधा का यह स्वतः

कथन पढ़िए–*''.....नहीं! मैं मरना नहीं चाहती थी। एक मानसिक आरोग्यशाला में किसी मनोरोगी की भयावह मौत तो मैं बिलकुल नहीं मरना चाहती। मुझे मुक्त होना ही होगा – अतीत से, अपने रोग से और अपने भय से।''* इसी प्रकार *''मेरी प्रभावपूर्ण व्यवस्थित साज-सज्जा मुझे आत्मविश्वास से भरती है। मैं क्यों नकारूँ? मैं क्यों त्यागूँ अपना सहज जीवन?''*

उपर्युक्त वाक्य जहाँ अनुराधा का आत्म-मंथन दर्शाते हैं, वहीं **प्रश्नात्मक** शैली के माध्यम से समाज के सामने प्रश्नों की झड़ी-सी लगा देते हैं – पाठक मजबूर होकर इनके हल तलाशने लगता है। वह सोचने लगता है कि उसने अब तक समस्याओं से बचकर भागने से क्या पा लिया? अजय के संवाद के माध्यम से लेखक कहता है – *''डरकर आदमी कहाँ तक भागे? जिम्मेदारियाँ तो हैं न– घर की, परिवार की, समाज की। सावधानी तो ठीक है, लेकिन डर? किस-किस से भागूँगा? दुनिया से भाग सकूँगा क्या?''*

विजय की मृत्यु के बाद की परिस्थितियों का वर्णन करते हुए वृत्तात्मक शैली का भी प्रयोग है जहाँ विस्तारपूर्वक अनुराधा के माध्यम से एक भारतीय विधवा की सामाजिक स्थिति का वर्णन किया गया है। गाँव के घर का वर्णन करते हुए **वर्णनात्मक शैली** का प्रयोग किया गया है।

कहीं-कहीं समस्याओं को उभारने के लिए **व्यंग्यात्मक शैली** का भी प्रयोग है, जैसे अनुराधा अपने विवाह-पूर्व जीवन का वर्णन करते हुए कहती है कि *''मैं ललित कला को अपना कैरियर बनाना चाहती थी लेकिन माँ की ज़िद थी कि ब्याह के बाद लड़की को घर सँभालना चाहिए और फिर जब मर्द कमा रहा हो तो औरत को काम करने की क्या ज़रूरत?''* स्पष्ट है कि नारी ही नारी के अस्तित्व को कुछ नहीं समझती, न ही उसे सही राह सुझाती है। उसे आत्मनिर्भर बनने से वे रोकती भी हैं।

जब विजय की बीमारी का सबको पता चलता है, तब सब उससे दूर हो जाते हैं पर जिस पर संक्रमण का सबसे अधिक प्रभाव हो सकता था, वही अनु सिर्फ़ विजय के पास छोड़ दी जाती है। उस समय वह व्यंग्यपूर्वक सोचती है – *''आखिर मेरे सिवा उनकी सेवा करता कौन? मैं सोचती–पढ़-लिखकर भी मैं संस्कार भ्रष्ट नहीं हुई। त्याग, सेवा, पतिप्रेम जैसे भारतीय नारी-सुलभ मूल्य आज भी मुझ जैसी सुशिक्षिता आत्मचैतन्य स्त्री को थामे हुए हैं।''* सिर्फ़ डिग्रियाँ पाने वाले शिक्षित किस प्रकार मानवीय भावनाओं, संस्कारों से शून्य होते जा रहे हैं, सिर्फ़ पत्नी के कर्त्तव्य समाज को याद रहते हैं आदि समस्याओं पर यहाँ व्यंग्यपूर्वक चोट की गई है।

कहानी में कहीं-कहीं **चित्रात्मक शैली** का भी प्रयोग है। अनुराधा जब अपनी जाँच करवाने के लिए आतुर होकर अपने ससुर के पास जाती है तथा अपने पैसों की माँग करती है। उस समय किस प्रकार वह कुर्सी पर बैठे पुराना अखबार पढ़ते हैं तथा चश्मे के ऊपर से देखकर अनु के साथ संक्षिप्त बातचीत करते हैं और अनुराधा की तेज़ आवाज़ सुनकर उसकी सास आकर प्रतिक्रिया व्यक्त करती है। उसका सजीव चित्रण है। दोनों के संक्षिप्त संवाद उनके चरित्र का विश्लेषण करने में भी काफ़ी सहायक सिद्ध होते हैं।

टिप्पणी

कथा में बहुत सीमित पात्र हैं और सभी अपनी-अपनी समस्याओं में इतने उलझे हैं कि उन्हें अधिक बातचीत करने का अवकाश ही नहीं है। प्रमुख पात्र 'अनुराधा' अक्सर आत्मचिंतन में लीन रहती है। शादी से पहले वह माता-पिता की इच्छानुसार चुपचाप शादी कर अपनी इच्छाओं का दमन कर लेती है तथा विवाहोपरांत पति के रोगग्रस्त होने के बाद उसे दुख न पहुँचे इसलिए वह उससे अपनी पीड़ा नहीं बाँटती।

वह सास की भी अनुचित माँगों को सुनती है पर कथा के उत्तरार्द्ध में वह घुटती-घुटती विद्रोह कर बैठती है। सास के रोकने पर भी वह ससुर से कहती है – *''मुझे इलाज चाहिए। मुझे मेरा पैसा चाहिए, मेरी चैकबुक, पासबुक चाहिए।''* सास की व्यंग्यपूर्ण टिप्पणी पर कि *''अच्छा, तो पैसों के लिए इतना पचड़ा है।''* वह उन्हें स्पष्ट करती है – *''नहीं', पचड़ा हक का है। सवाल अपने होने या न होने का है, मेरे अपने वजूद का है।''* संवाद अनुराधा के अंतर्द्वन्द्व को भली-भाँति उजागर करते हैं।

करुणा का सिर्फ़ एक वाक्य है तथा उसके सास-ससुर और देवर के भी बहुत सीमित वाक्य हैं। पर यह सीमित वाक्य भी इन तीनों की चारित्रिक विशेषताएँ स्पष्ट कर देते हैं। पति के साथ अनुराधा का कोई वार्तालाप ही नहीं है। जब भी उसके संवाद हैं, एकतरफ़ा हैं।

इस कहानी में वाक्य-संरचना सरल तथा आम बोलचाल की है जिसमें भावानुरूप तद्भव देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द आए हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

तत्सम – कर्त्तव्य, दायित्व, अजस्र प्रवाह, दुष्परिणाम, संक्रमण, दासत्व, प्राप्य, निकटवर्ती, विवर्ण, अज्ञात, अभिशाप, दावानल, साक्षी, शुश्रुषा, द्वंद्व, प्रकरण, पैतृक आवास, आरोग्यशाला।

तद्भव – आज, मेरा, आँसू, पिता, पूरब, पलंग आदि।

देशज – छीजते, घर्र-घर्र, सटाकर, तुरत-फुरत, रुलाई, अटकी, पचड़ा, उकसाया, लिवा लाना।

विदेशी – वजूद, हजामत, हैसियत, मुताबिक, पुश्तैनी, खैराती, बिरादरी, हक, हिकारत, तमाशबीन, अव्वल

(उर्दू, अरबी-फारसी)

अंग्रेज़ी – पास बुक, पी.एफ., चेक बुक, एच.आई.वी. पॉजिटिव, केस हिस्ट्री, प्रिसक्रिप्शन, लेडी डॉक्टर, आदि।

कहानी में सूक्ति वाक्य भी हैं, जैसे –

1. *''यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से ही आता है।''*
2. *''औरत देह ही नहीं, दिल और दिमाग भी है।''*

अभिधा ही नहीं, लक्षणा और व्यंजना द्वारा भी लेखक ने अव्यक्त को स्पष्ट कर दिया है, जैसे – *''विजय पुरुष थे, मेरे स्वामी थे और मैं उनके जन्म-जन्मांतर की 'दासी'।''* *''फिर एक भारी अंतर यह था कि विजय पुरुष थे और मैं स्त्री। पुरुष होने के बावजूद*

उन्हें उपेक्षा और घृणा का दंश झेलना पड़ा लेकिन मेरा क्या होता?'' आदि अन्य भी कुछ अधूरे वाक्यों को पाठकों को समझने के लिए छोड़ दिया गया है।

कुछ वाक्य अत्यंत गहराई लिए हैं, जैसे, *'जब समय को लकवा मार जाता है, तब सन्नाटा स्वयं चीखने-चिल्लाने लगता है।'*

'भोक्ता तो भोक्ता, कर्त्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था।'

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि लेखक की लेखनी में काफी क्षमता है तथा उन्होंने मात्र, भाव, संदेश, कथानक, वातावरण आदि सबका ध्यान रखते हुए अनेक प्रकार की शैलियों का यथास्थान प्रयोग किया है। मूल कथ्य और सहजता को बरकरार रखते हुए शब्द-भंडार में कहीं से भी कोई शब्द लेने में उन्होंने संकोच नहीं किया है।

15.5 कहानी का उद्देश्य

श्री पंकज कुमार द्वारा नारी के जीवन की समस्याओं को उभारने वाली यह कथा इस बात का प्रमाण है कि नारी-समाज हो अथवा पुरुष वर्ग, दोनों ही बढ़ती सामाजिक विसंगतियों के शिकार हैं, दोनों ही भ्रमित हैं तथा अपने अस्तित्व को बचाए रखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। अब उनका पहले से व्यापक दृष्टिकोण है इसलिए स्वयं पुरुष होते हुए पंकज कुमार अनु के माध्यम से स्पष्ट लिखते हैं *''यदि पति होने का अर्थ स्वामी होना है तो क्या पति औरत का जीवन-हरण कर सकता है? क्यों करे कोई स्त्री अपने पति का 'स्वामित्व' स्वीकार? इस दासत्व का प्राप्य?''*

दूसरी ओर अनुराधा की सास के रूप में पुरानी परंपराओं का अनुरोध है कि ''...पति जैसा चाहे वैसा करना पड़ता है। इसी में औरत का इहलोक और परलोक दोनों हैं।'' विजय भी अपनी माँ के समान ही सोचता है। उसे भी लगता है कि नारी स्वयं अपना संबल नहीं हो सकती इसीलिए एड्सरोगी होते हुए भी वह अनुराधा की सुरक्षा के लिए कुछ इस तरह सोचता है: *''एक बच्चा तुम्हें दे जाऊँ, जो मेरे बाद तुम्हारा संबल हो सके।''* उसका अपनी भावनाओं पर कोई नियंत्रण नहीं है तथा वह अपने अनैतिक व्यवहार को इस खूबसूरती के साथ व्यक्त करता है कि उसके पीछे छिपी कमजोरी को सिर्फ अनु ही समझ पाती है। तभी वह कहती है *''कैसी विचित्र परिभाषा थी प्यार की।''* वह जानता था एड्स में लापरवाही जीवन के लिए घातक हो सकती थी।

एक स्थान पर अनुराधा कहती है *''यदि 'योग्यतम' को ही यहाँ जीवन-रक्षा का अधिकार है तो मैंने निश्चय कर लिया है कि मैं अपने आपको योग्यतम सिद्ध करूँगी।''* प्रारंभ में डरी, सहमी, दबी रहने वाली अनु बाद में आक्रामक हो उठती है। नारी शक्ति की प्रतीक यह नारी अनेकानेक प्रश्नों से समाज को झकझोर डालती है।

लेखक चाहता है कि समाज एड्स जैसे रोगों के कारण और निवारण के उपाय के प्रति सचेत हो। व्यक्ति अपने मन से भ्रमों को निकालकर खुल कर इन विषयों पर चर्चा कर सके। इस प्रकार अनेक भयावह परिणामों से वह स्वयं को बचाने में सक्षम हो पाए। इसके दुष्परिणामों से रोगी अपने परिवार को, समाज को बचा सकता है पर इसके लिए स्वस्थ दृष्टिकोण तथा सामाजिक और पारिवारिक दायित्वों की समझ आवश्यक है। विजय की नासमझी दिखाकर लेखक ने इसी ओर ध्यान आकर्षित

किया है। अंत में अजय ने सावधानी के साथ जीने परंतु ज़िम्मेदारियों से न भागने का जो निष्कर्ष निकाला है, वही वास्तव में उचित जीवन-शैली है।

अनु भी अंत में जिस प्रकार स्वयं तथा होने वाले बच्चे के भविष्य को सँवारने का निश्चय कर, संघर्ष के लिए तत्पर हो उठती है, वह पाठकों को भी अस्तित्व-रक्षा की प्रेरणा देती है।

अनुराधा की सास के माध्यम से खोखली रूढ़िवादिता की सच्चाई को सामने लाया गया है तो उसके ससुर भी सच्चाई से भागते, पलायनवादी, पुरातन परंपरा के पुजारी नज़र आते हैं। दोनों ही अनुराधा की समस्याओं से अनभिज्ञ बने रहना चाहते हैं तथा उचित-अनुचित का निर्णय लेने में असमर्थ हैं।

इस प्रकार सभी पात्रों के माध्यम से किसी न किसी समस्या को उठाकर लेखक यह स्पष्ट कर देते हैं कि समस्याएँ हैं, कठिनाइयाँ हैं, सामाजिक अवरोध हैं किंतु इन सबके बीच में जो संघर्ष करते हुए जीना सीख गया है, वही सफल होने की उम्मीद भी कर सकता है तथा सफल भी हो सकता है अन्यथा आत्मदमन करके वह इस समाज में भली-भाँति नहीं जी सकता।

पाठगत प्रश्न 15.4

1. प्रस्तुत पाठ की वाक्य योजना प्रमुख रूप से किस प्रकार की नहीं है–

   (क) सरल (ख) कठिन (ग) लंबी (घ) जटिल

2. पाठ में किस प्रकार की शैली का प्रयोग न्यूनतम हुआ है–

   (क) प्रश्नात्मक (ख) संवादात्मक (ग) प्रतीकात्मक (घ) वृत्तात्मक

15.6 आपने क्या सीखा

1. 'अनुराधा' कहानी में नारी-मन की अंतर्व्यथा का चित्रण है।
2. परिवार में एक एड्स रोगी के होने से संबंधियों, माता-पिता, भाई-पत्नी आदि पर भी प्रभाव पड़ता है।
3. एड्स रोगियों की समयपूर्वक जाँच तथा सावधानी, समाज को इसके भयावह रूप से बचा सकती है।
4. किसी भी समस्या पर खुलकर चर्चा करने से हम अनेक विकट परिस्थितियों से बाहर आ सकते हैं।
5. नारी को अपनी शक्ति और अपने अस्तित्व का ज्ञान प्रारंभ से ही होना चाहिए ताकि वह विवेकपूर्ण निर्णय खुद ले सकें। समाज को भी इसमें पूर्ण समर्थन देना चाहिए।
6. कठिन परिस्थितियों, मुसीबतों से भागना उनसे बचने का उपाय नहीं है। संघर्ष कर उन्हें पराजित करना ही जीवन का लक्ष्य है।

7. समस्या प्रधान इस कहानी में अनेक शैलियों का सहारा लेकर पाठकों का ध्यान ऐसे एड्स रोगियों की ओर खींचा गया है जो सामाजिक उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं।
8. कहानी में हिंदी शब्द भंडार के तत्सम, तद्भव, देशज, विदेशी सभी प्रकार के शब्द लिए गए हैं।
9. कहानी की भाषा सरल तथा पात्रानुकूल है।
10. भाव-बोध की दृष्टि से कहानी में गहराई है। एड्स रोग द्वारा उत्पन्न सामाजिक, मानसिक जैसी अनेक प्रकार की समस्याओं को उभारा गया है।

15.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

कहानी के लेखक श्री पंकज कुमार का जन्म 1 जून 1983 को हुआ। दर्शनशास्त्र में बी.ए. करने के उपरांत वह इसी विषय में एम.ए. कर रहे हैं। अपनी छोटी आयु में ही आपने उत्तराखंड सम्मान 2006 प्राप्त किया है। प्रस्तुत कहानी को युवा हिंदी कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार से सम्मानित तथा साहित्य-अमृत पत्रिका के फरवरी 2006 के अंक में प्रकाशित किया गया है।

(ख) सरकार ने प्रत्येक ज़िले के सरकारी अस्पताल में एच.आई.वी. परीक्षण बी मुक्त जाँच की सुविधा उपलब्ध की है। अब तो एड्स रोगी सुखमय वैवाहिक जीवन व्यतीत कर रहे हैं और एड्स रहित संतान सुख भोग रहे हैं।

(ग) अधिक जानकारी के लिए नेको की वेब साइट देखें जिसका पता है –

www.naco india.org.

रा.मु.वि.शि. संस्थान द्वारा निर्मित श्रवण कार्यक्रम 'स्वास्थ्य चिंतन' अध्ययन केंद्र पर जाकर सुनें तथा संस्थान की वेबसाइट अवश्य देखें – www.nios.org.

15.8 पाठांत प्रश्न

1. "मैं जानता हूँ, मेरा रोग लाइलाज है।" विजय का यह कथन क्या पूर्णतया सही है? वर्तमान खोजों के आधार पर समीक्षा कीजिए।
2. अनुराधा की सास के चरित्र की कोई दो विशेषताएँ, उदाहरण सहित लिखिए।
3. "इस सिनेमाई भाषा को अपने कॉलेज के भाषणों-बैठकों तक ही रखो, यहाँ मत बोलो।" वाक्य किसने, किससे, कब और क्यों कहा?
4. आपको कथा में अनुराधा के अतिरिक्त कौन-सा पात्र सर्वाधिक प्रभावित करता है और क्यों?

5. "डरकर ही आज मैं अपने समस्त भयों से मुक्त हो चुकी हूँ।" अनुराधा ने ऐसा क्यों कहा?
6. अनुराधा के चरित्र की कोई चार विशेषताएँ उदाहरण सहित सिद्ध करते हुए लिखिए।
7. विजय को अधिक समय तक जीवित रखने के लिए परिवार को क्या-क्या सावधानियाँ रखनी चाहिए थीं।
8. कहानी की भाषा-शैली पर सोदाहरण टिप्पणी लिखिए।
9. अनुराधा कहानी का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
10. 'अनुराधा' शीर्षक की उपयुक्तता पर विचार करते हुए कोई अन्य शीर्षक सुझाइए।
11. निम्नलिखित वाक्यों का आशय स्पष्ट कीजिए–
    (क) यह अधिकार सिर्फ़ सबल के हिस्से ही आती है। निर्बल के लिए तो कर्त्तव्य और सिर्फ़ दायित्व ही आते हैं।
    (ख) भोक्ता तो भोक्ता, कर्त्ता-भाव भी मुझसे कोसों दूर था।
12. निम्नलिखित पंक्तियों में किस शैली का प्रयोग हुआ है। नाम लिखिए।
    (क) पर इसके लिए मैं अकेले इन्हें ही दोषी क्यों मानूँ?
    (ख) बाबूजी, मुझे अपना चेकअप कराना है।
    (ग) .....उफ, ये शहर की पढ़ी-लिखी लड़कियाँ।
    (घ) गाँव-गँवई का पक्का मकान। बीच में आँगन, चौतरफ़ा बने कमरे तथा आँगन के चौतरफ़ा बड़े-बड़े गोल खंभोंवाले दोहरे बरामदे।
13. निम्नलिखित वाक्यों को अधूरा छोड़ दिया गया है। आप बताइए वक्ता कौन हैं तथा वे क्या कहना चाहती होंगी–
    (क) वे ही जानें कि कहाँ से ढोकर लाए थे यह बीमारी.....
    किसी सैलून में हजामत बनवाते वक्त या फिर.....?
    किसी डॉक्टर से सुई लगवाते समय या .....?
    (ख) अम्माजी शायद जगी हुई ही बैठी थीं.....
    'क्या हुआ?..... चला गया विजय?'
    (ग) मेरा बच्चा...! सब जान-बूझकर ..... मुझे या विजय को क्या अधिकार था?

15.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (घ) 3. (क) 4. भयमुक्त होकर स्वस्थ जीवन जीने के लिए 5. (क)
   6. 3-4-1-6-8-2-5-10-11-7-14-15-13-9-12

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

15.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) X (ख) X (ग) √ (घ) X (ङ) X

15.2 1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)

15.3 1. (घ) 2. (ग) 3. (ख)

15.4 1. (घ) 2. (ग)

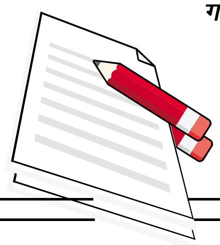

टिप्पणी

301hi16

16

अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश

आप रोज़मर्रा की घटनाएँ जानने, सामान्य ज्ञान बढ़ाने तथा मन बहलाने के लिए पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ते होंगे। इनमें हमें लेखों, कहानियों, खबरों, कार्टूनों आदि को पढ़ने और देखने से कई नई जानकारियाँ मिलती हैं और आनंद प्राप्त होता है। पत्र-पत्रिकाओं में कई स्तंभ होते हैं– कुछ स्थायी और कुछ अस्थायी। स्थायी रूप से प्रकाशित होने वाला एक स्तंभ है– संपादकीय, जिसमें किसी समसामयिक विषय या घटना पर गंभीर टिप्पणी की जाती है। जीवन के विभिन्न पहलुओं पर अपनी राय बनाने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन आवश्यक है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संपादकीय का तात्पर्य स्पष्ट कर सकेंगे;
- साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर स्पष्ट कर सकेंगे;
- संपादकीय के तत्त्वों–विषयवस्तु, समसामयिकता, विवेचनात्मकता, दृष्टिकोण, भाषा-शैली तथा उद्देश्य के आधार पर 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' संपादकीय की विवेचना कर सकेंगे;
- पाठ के आधार पर यह स्पष्ट कर सकेंगे कि किस तरह आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने का षड्यंत्र चलाया जा रहा है;
- मानवऽके विकास में शिक्षा के योगदान को स्पष्ट कर सकेंगे;
- संपादकीय और समाचार में अंतर बता सकेंगे।

हिंदी

क्रियाकलाप

चित्र 16.1

1. ऊपर के चित्रों को ध्यान से देखिए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
   - (क) यह महिला क्या पुस्तक को इसलिए वापस रख रही है क्योंकि 100 रुपए की कीमत बहुत ज्यादा है।
   - (ख) क्या पुस्तकों की कीमत इसलिए ऊँची है क्योंकि कागजों के दाम आए दिन बढ़ रहे हैं?
   - (ग) कागज के दाम कम रहने से क्या पुस्तकें सस्ती मिलेंगी?
   - (घ) क्या आप समझते हैं कि पुस्तक का मूल्य कम होता तो यह महिला पुस्तक को वापस शेल्फ में रखने की बजाए उसे खरीद लेती?
2. (क) आज के किसी हिंदी के अखबार में छपाऽसंपादकीय पढ़िए।
   - (ख) पढ़े हुए संपादकीय पर आधारित पाँच वाक्य यहाँ लिखिए।

   ....

   ....

   ....

   ....

16.1 मूलपाठ

अनपढ़ बनाए रखने की साजिश

रोटी-कपड़ा और मकान के बाद जिस देश में पहली, या कहें एकमात्र आवश्यकता साक्षरता और शिक्षा है, वहाँ ऐसी दृष्टिहीनता या तो मूर्खता के कारण है या फिर धूर्तता के कारण। हो सकता है कि जिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आतंक और वर्चस्व को रोकने की आवाजें उठायी जा रही हैं, उन्हीं की गहरी पकड़ हमारी सारी आर्थिक और राष्ट्रीय नीतियों को तय कर रही है। क्योंकि जिन चीजों पर छूट दी गयी है वे सभी तो बाहर से आती हैं। कहीं ऐसा तो नहीं है कि अंतर्राष्ट्रीय इलैक्ट्रोनिक कंपनियाँ

जिन रियायतों और दरियादिली के साथ भीतर तक घुस कर 'कंप्यूटर युग' ला रही हैं, उन्होंने हमारे कर्णधारों को ही सबसे पहले रोबोट या मशीन-मानवों में बदल डाला है। खैर, यह तो साफ़ ही है कि इलैक्ट्रोनिक और कंप्यूटरों के क्षेत्र में पुर्ज़े सब बाहर से आयात होंगे और भारतीय उद्योगपति सिर्फ़ उन्हें जोड़ेगा—पेंच कसो, अपना ठप्पा लगाओ और बेच दो। न किसी अनुसंधान की जरूरत है, न विकास की। उगते हुए उद्योग के लिए यह शॉर्टकट कितना आत्मघाती हैं, यह बताने की ज़रूरत नहीं है। अगले दसियों साल उसे परोपजीवी ही बनकर रहना है। यानी वे मूलतः उद्योगपति नहीं, व्यापारी के स्तर पर पटक दिये गये हैं, और बाहरी माल के लिए सिर्फ़ क्लियरिंग एजेंटों के रूप में काम करेंगे।

सारे राष्ट्र को टी. वी., वीडियो और कंप्यूटरी चमत्कारों का दर्शक बनाये रखने और दूसरी तरफ़ पढ़ने-लिखने की चीज़ों को महँगा या अनुपलब्ध करते चले जाने के पीछे एक बाकायदा सुचिंतित योजना है। जनता का ध्यान शोषण से हटाये रखने या शोषण को जायज़ सिद्ध करने के लिए सामंतवाद धार्मिक अनुष्ठानों, कीर्तनों और देवी जागरणों का सहारा लेता है। आज के ये आधुनिक सामंत सारे देश को दूरदर्शन केंद्रों के बढ़ते हुए जाल में बाँधकर अपने चेहरे, वचन या घटिया मनोरंजन पिला रहे हैं। वे आदमी को सोचने-समझने का कोई मौका नहीं देना चाहते। चूँकि ये सिर्फ़ सरकारी माध्यम हैं, इसलिए हर समय या तो नेताओं, मंत्रियों के ज़िंदा-तिलिस्माती भाषण देखिए या फिर कूल्हे और कमर लचकाते चित्रहार निगलिए—उच्च मध्यवर्गीय लोग कैसे शाही खेल खेलते हैं, किन कपड़ों के लश्कारे लेते सूट-टाई पहनते हैं। कौन-कौन से पेय किन कप-गिलासों में और किस अदा से पीते हैं, किन जन्नाटे लेती गाड़ियों और हवाई जहाज़ों में यात्राएँ करते हैं, किन होटलों या पर्वतीय रमणस्थलियों में किलोलें करते हैं—हीनता का मारा मध्यवर्ग और आम आदमी सब देख-देखकर विस्मय-विमुग्ध होता रहेगा और देवलोक के ये प्राणी उसमें हमेशा एक दूरी और हसरत का भाव जगाते रहेंगे, काश, यह जीवन हमारा भी हो सकता। विज्ञापनों के सहारे एक विशेष जीवन-पद्धति हमारे सोच और सपनों को नियंत्रित करने लगी है। कहने की जरूरत नहीं कि यह हसरत ही भ्रष्टाचार की पहली कोंपल है, क्योंकि सही तरीकों से तो वह इनमें से एक ब्रीफ़केस तक नहीं खरीद सकता।

अफ़ीम खिलाने के षड्यंत्र का यह सिर्फ़ एक पहलू है। दूसरी मार ज्यादा गहरी है—आदमी को अपने दिये सपनों और अंधविश्वासों में डाले रखना, सोच-विचार, संस्कृति-साहित्य, वैज्ञानिक और क्रांतिकारी विचारों से काटे रहना—क्योंकि वहाँ से उखाड़कर ही तो उसे आप अपने बनाये गड्डे में घेर कर पहुँचायेंगे। पर्दे के पीछे घिनौनी चालों या दीखती सच्चाई को गहराई से जाँचने की दिशा में लौटाने के सारे रास्ते पहले बंद करने होंगे। सोचने-समझने, अपनी स्थिति का विश्लेषण करने या शतरंज के ऊँचे खिलाड़ियों की चालबाज़ियों को पकड़ने की कामना करना खतरनाक है। हर हालत में जनता को इस खतरे से बचाकर रखना होगा—खतरा यानी स्वतंत्र-निर्भीक सोच।

सारी मानव-सभ्यता को जिन दो आविष्कारों ने आमूल-चूल बदल डाला था, उसमें एक था बारूदी हथियार और दूसरा कागज़—यानी ज्ञानविज्ञान का लिखित दस्तावेज़।

शब्दार्थ

साक्षरता – पढ़ने लिखने का ज्ञान

बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ – ऐसी कंपनियाँ जिनमें एक से अधिक देशों के लोगों की हिस्सेदारी होती है।

वर्चस्व – दबदबा

कर्णधार – नेता, आगे रहने वाले लोग

परोपजीवी – दूसरों के सहारे जीने वाला

अनुपलब्ध – जो सुलभ न हो

रमणस्थली – मन बहलाव के स्थान (रिसोर्ट)

विस्मय – विमुग्ध, भौंचक्का, हक्काबक्का

हसरत – इच्छा, लालसा

पत्र-पत्रिकाएँ बड़े उद्योगपतियों के हाथों में हैं, उन्हें प्रायः बधिया बना दिया गया है। वे वही सब कर रही हैं, जो सरकार अपने माध्यमों से चाहती है। दूरदर्शन का वे कागज़ी संस्करण हैं। स्वतंत्र हैं, सिर्फ़ किताबें, इसलिए सारे सरकारी माध्यम और व्यावसायिक पत्रकारिता किताबों को फालतू, अप्रासंगिक, अनुपलब्ध कराने में जी-जान से जुटे हैं। संचार-माध्यमों के किसी भी कोने में किताबें नहीं हैं। सरकार हर गैर-ज़रूरी चीज़ को सब्सीडाइज कर सकती है, चाहे तो उसे रियायती मूल्य पर सुलभ करा सकती है–न कागज़ के मूल्य में कोई कटौती करेगी, न डाकखर्च में कोई छूट देगी–डेढ़ सौ पन्ने की पुस्तक, मूल्य तीस या पैंतीस रुपया, डाकखर्च पाँच या सात रुपया। कैसा मज़ाक है कि लेखकों को सम्मान-पुरस्कार सब हैं, मगर जिस चीज़ ने उन्हें लेखक बनाया है, उन किताबों के लिए कहीं कोई सुविधा नहीं है। शिक्षा और संस्कृति का बजट किस तेज़ी से घटाया गया है–यह देखकर धक्का लगता है।

इसके पीछे सिर्फ़ तीन ही कारण हो सकते हैं : या तो सरकार और सरकारपरस्त पत्रकारिता किताब को निहायत ही फालतू चीज़ समझती है, जिसकी किसी को कोई ज़रूरत नहीं है या फिर उनका ख्याल है कि यह शराब और होटलों जैसा कोई नशा है कि आदमी झख मारकर, बीवी-बच्चों का पेट काटकर, अथवा ब्लैकमनी को ठिकाने लगाने के लिए उन्हें खरीदेगा ही। या फिर हथियारों की तरह ही यह कोई घातक और विस्फोटक चीज़ है, जिसे जनता से दूर रखना है–उन्हें बनाने वाले उपकरणों की कीमतें अंधाधुंध बढ़ाकर या अन्य सुविधाएँ समाप्त करके। सीधे-सीधे हमला करना तो अनपढ़ होना माना जायेगा। और मुझे असली कारण यही लगता है। अभी दो-तीन दशक पहले ही हमारे नेताओं में दुनिया के महत्त्वपूर्ण बुद्धिजीवी रहे हैं, पढ़ने और लिखने वाले लोग। राधाकृष्ण, राजगोपालाचारी, आचार्य नरेन्द्रदेव, के. एम. मुंशी, जवाहरलाल नेहरू, राममनोहर लोहिया, जिन्होंने दुनिया के ज्ञान-विज्ञान, साहित्य-संस्कृति के साथ अपना मानसिक विकास किया था और जिनके पास देश और आदमी को लेकर अपना सपना (विज़न) था। आज न तो व्यक्तित्व की वह ऊँचाई रह गई है, न वैसा नैतिक संकल्प। आम आदमी को विचार, साहित्य, संस्कृति अर्थात् पुस्तक नाम की इस फालतू-सी चीज़ की ज़रूरत क्या है? कुछ वाक्य हैं, जो अपने पहलेवालों से सुनते रहे हैं, इसलिए रट्टू तोते की तरह उन्हें ही दुहरा देते हैं। भीतरी लगाव और सरोकार जब संस्कारों में ही नहीं है तो फिर व्यवहार में कहाँ से आयेगा?

आज जैसा माहौल हो गया है उसमें किताब की बात करना सचमुच बहुत फालतु अप्रासंगिक और हास्यास्पद-सा लगने लगा है– लगता है जैसे आप भैंस के आगे बीन बजा रहे हों। मगर इस सच्चाई को हम कैसे नज़रंदाज़ कर दें कि दुनिया के सशक्ततम राष्ट्र वे ही हैं, जिनके लिए किताबों से जुड़े लोग सबसे महत्त्वपूर्ण रहे हैं। फ्रांस, इंग्लैंड, अमेरिका और रूस–वर्ना समृद्धि तो अरब के शेखों से ज़्यादा किसके पास है? वहाँ क्यों हम सांस्कृतिक दरिद्रता की बात करते हैं? लगता है हम भी अब उसी विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता की ओर बढ़ रहे हैं–नंगे, भूखे, अशिक्षित और जड़– लेकिन दूरदर्शनों, कारों और कंप्यूटरों के सामने लाइनें लगाये। दुनिया भर में नोबेल पुरस्कार का इतना शोर शराबा न होता तो हमें इस कंप्यूटरी होड़ में डाल देने वालों को तो शायद यह अंतर करना भी मुश्किल था कि गार्सिया मारखेज और दियेगो गार्सिया में कौन-सा द्वीप है और कौन-सा आदमी? राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डों पर जो किताबें दिखाई देती हैं उन

शब्दार्थ

निर्भीक	– निडर
अप्रासंगिक	– बेकार, बेमतलब का
सरकार परस्त	– सरकार की हाँ में हाँ मिलाने वाला
निहायत	– बिल्कुल, पूरी तरह
हास्यापद	– हँसी उड़ाने लायक
सबसिडाइज	– किसी चीज़ की कीमत कम रखने के लिए उसकी लागत का कुछ भाग सरकार की ओर से दिया जाना

पर लेखकों की जगह आर्थर हैली, मैकलीश, लुडलुम, फुलेमिंग, वैलेस, रॉबिन्स जैसे कुछ नाम छपे होते हैं। बट्रेण्ड रसैल, सार्त्र, ताल्स्तोय–? हाँ, अम्मा और नाना कभी-कभी ऐसे कुछ नाम लिया तो करते थे। गांधी–? कुछ लिखता भी था क्या? ऑटनबरो ने अपनी फिल्म में उसे लिखते हुए तो नहीं दिखाया।

बहरहाल, पढ़ना बहुत खतरनाक चीज़ है। इससे आदमी को सोचने, समझने और कुछ करने की बीमारी लगती है। ये पुराने बुड्ढे, शिक्षा, साक्षरता, जागरूकता- अनुसंधान या पता नहीं, क्या अलाय-बलाय वाली योजनाएँ छोड़ गये हैं। अब न तो उन्हें बंद किया जा सकता है, न ही चलाये रखा जा सकता है। रास्ता सिर्फ़ यही बचा है कि उनका सत्यानाश कर दिया जाये। कैसा खूबसूरत मज़ाक है कि एक तरफ़ नारा है साक्षरता और शिक्षा बढ़ाओ, शिक्षा को नौकरी के साथ नहीं, ज्ञान के साथ जोड़ो–दूसरी तरफ़, साक्षरता, शिक्षा और ज्ञान के सारे साधन-सुविधाएँ समाप्त कर दो, कागज़ और स्याही- छपाई के दामों को आसमान में पहुँचा दो। इसमें आसानी यह है कि उनको सामग्री वही दी जा सकेगी, जो सरकार चाहेगी, खुद पढ़ना-गुनना चाहो तो स्लेट- पट्टी और भोज पत्र। दुनिया के सारे अनपढ़ तानाशाहों ने सबसे पहले या तो पुस्तकालय जलाये हैं या किताबों को कुचला है। देखा, कैसी एहतियात से हमें इक्कीसवीं सदी में ले जाया जा रहा है?

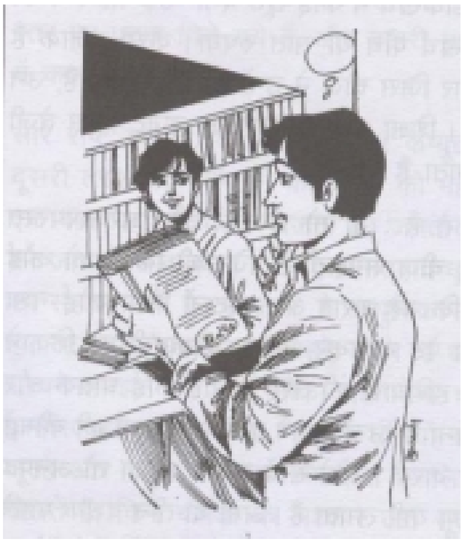

जिन्हें हमने साक्षर और शिक्षित किया है उनकी पहुँच में पढ़ने की सामग्री क्या है, क्या कभी किसी ने देखने की कोशिश की है? उनके सामने बिछी है चिकनी, चमकदार, रंगीन पत्रिकाएँ, पॉकेट-बुक्स, और उन सब में लगातार परोसा जा रहा है हत्या, बलात्कार, आगजनी, लूटमार, सांप्रदायिकता, हिंसा का रक्तबीजी ज़हर, भ्रष्टाचार और घूस-फरेब के खोजपूर्ण भंडाफोड़, ब्लू-फिल्मों के मुद्रित संस्करण। लगता है जैसे हम चारों तरफ़ चल रही एक स्टण्ट फिल्म के बीचों-बीच बैठे हैं। यानी हर समय या तो यही सब निगलते हैं या फिर देखते हैं सरकारी प्रचार के दूरदर्शनी सपने, प्रायोजित इंद्रलोक, अश्लील और पलायनी फिल्में, देवी-जागरण, लाटरियाँ, जो थोड़ा–बहुत समय मिलता है, उसमें इन्हीं सबके वीडियो चालू कर लेते हैं। इसी निष्कलुष वातावरण में हम और हमारी नयी पीढ़ी तैयार हो रही है। चिन्तन, पुस्तक या ज़िंदगी के किसी भी रचनात्मक और पौज़िटिव पक्ष या मूल्य को देखने–परखने का अवसर कहाँ है? जो बचे भी हैं, वे आपा-धापी में धकेलकर निरंतर पीछे कर दिये जा रहे हैं। हमारे नायक हैं समाज सेवक, स्मगलर, गिरोहबाज, गुंडा, चमत्कारी बाबा, और सर्व-व्यापक भगवान की तरह हर जगह पहुँच जाने और हर असंभव कर डालने वाले सुपरमैन। अंधविश्वास, रूढ़िवादिता, सतियों और तांत्रिकों की सर्व-शक्तिमत्ता, नरबलि और बहू-दहन हमारे विकृत और सैडिस्टपन को हल्की सनसनाहट ही देते हैं। हमें

टिप्पणी

शब्दार्थ

सांस्कृतिक दरिद्रता – अच्छे संस्कारों की कमी, संस्कृति की समझ न होना

विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता – ऊपरी चकाचौंध के पीछे भागते हुए बुनियादी मूल्यों और आचरण की अनदेखी करना।

अलाय-बलाय वाली – ऊल-जलूल, बेतुकी, फ़िज़ूल

दाम आसमान में पहुँचाना – दाम बहुत बढ़ाना, महँगाई

रक्तबीजीज़हर – जानलेवा ज़हर (रक्तबीज़ एक राक्षस था जो शुम्भ तथा निशुम्भ का सेनापति था)

निष्कलुष – साफ़, पवित्र

फुरसत भी कहाँ दी जा रही है कि सारे आर्थिक ढाँचे और मानसिक माहौल को खरीद लेने वालों के चेहरे देख सकें। हर आदमी एक-दूसरे से अलग कर दिया गया है, बीच के संवाद को तोड़कर व्यक्ति को माध्यम (मीडिया) से कील दिया गया है और हमने मान लिया है, जिन्हें इस सबको लेकर कुछ करना है वे कोई दूसरे ही लोग हैं, कम-से-कम हम नहीं हैं।

अपने ऋषि-मुनि मूर्ख नहीं थे जिन्होंने कुछ विशेष लोगों की जिंदगी से शिक्षा यानी किताब को एकदम बाहर निकाल कर उन्हें सेवा धर्म सिखाया था। किताब आदमी को ज्ञान देती है, किताब विचार देकर उसका दिमाग खराब करती है, किताब उसे अपने भीतर उतार कर अपनी स्थिति और नियति से साक्षात्कार कराती है, किताब उसे सपने और भविष्य देती है, किताब ही है, जो स्वतंत्र है।

नहीं, जिसे जाहिल, मूर्ख, परतंत्र और निर्भर बनाकर रखना है उसके हाथ में किताब नहीं दी जायेगी। उसे इतनी फुरसत नहीं दी जायेगी कि कुछ पढ़े या आपस में संवाद स्थापित करे। किताब या तो उसकी ज़िंदगी से बिल्कुल ही निकाल दी जायेगी या फिर इतनी दुर्लभ और पिलपिली कर दी जायेगी कि उसके होने न होने से फ़र्क न पड़े—कागज़, छपाई, डाकखर्च के हथियारों से उसका एक-एक पंख काट डाला जायेगा ताकि सीताहरण के पवित्र अभियान में यह जटायु, बाधा बनकर न खड़ा हो– हिटलर ने जब फ्रांस पर अधिकार किया तो उसने अपनी फ़ौजों को दो ही आदेश दिये थे, ''बैंक डी फ्रांस गालीमार प्रकाशन-गृह को अपने कब्जे में ले लो........''

या खुदा, ये प्रायोजित नाखुदा हमें कहाँ ले जा रहे हैं...?

–राजेंद्र यादव

(''काँटे की बात', हंस, अक्तूबर, 1986)

शब्दार्थ

सैंडिस्टपन – दूसरों को दुख पहुँचाकर प्रसन्न होने की प्रव त्ति होना

नियति – भाग्य

साक्षात्कार – आमने-सामने होना

पिलपिली – कमज़ोर

नाखुदा – नाव खेने वाला, नेत त्व करने वाला

16.2 बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए:

1. रोटी, कपड़ा और मकान के बाद देश की प्राथमिक आवश्यकताएँ क्या हैं?
2. आज के इस आधुनिक सामंत देश को दूरदर्शन और अनेक बढ़ते हुए चैनल क्या संदेश दे रहे हैं?
3. दुनिया के सारे अनपढ़ तानाशाहों ने सबसे पहले पुस्तकालय जलाए हैं या किताबों को कुचला है। क्यों?

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

4. आज के माहौल में किसकी बात करना फालतू लगने लगा है:

(क) टेलीविजन (ग) किताब

(ख) कंप्यूटर (घ) फिल्म

5. पाठ में किस नेता के नाम का उल्लेख नहीं है:

(क) गांधी (ग) राम मनोहर लोहिया

(ख) सुभाषचन्द्र बोस (घ) राजगोपालाचारी

6. वर्तमान पत्रकारिता किनके हाथों में है:

   (क) सरकार (ग) बड़े उद्योगपति

   (ख) पत्रकार (घ) नेता

7. जिनके आतंक और वर्चस्व को रोकने की आवाज़ें उठाई जा रही हैं, वे हैं–

   (क) बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ (ग) विदेशी टी. वी. चैनल

   (ख) सरकारी प्रतिष्ठान (घ) प्रकाशन गृह

16.3 आइए समझें

विद्यार्थियो! 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' पाठ पढ़ने से पहले यह समझ लेना आवश्यक है कि प्रयोजनमूलक हिंदी क्या है। और दोस्तो! आपने 'एक था पेड़', एक था ठूँठ', 'दो कलाकार' 'कुटज', 'क्रोध' आदि पाठ पढ़े, जो साहित्यिक हिंदी में लिखे गए हैं। साहित्यिक हिंदी से तात्पर्य है वह हिंदी जो साहित्य की विविध विधाओं के लेखन में प्रयोग की जाती है। आप जानते ही हैं 'साहित्य' के अंतर्गत गद्य तथा पद्य समाहित होता है और गद्य में कथा-साहित्य–उपन्यास, कहानी तथा अन्य विविध विधाएँ–निबंध, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, रिपोर्ताज, यात्रावृत्तांत, साक्षात्कार आदि आती हैं। आपने अपनी अन्य पुस्तकों में श्रेष्ठ निबंध पढ़े हैं। जिनमें क्रोध और 'कुटज' चिंतनपरक निबंध या 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य निबंध हैं। साहित्यकार मोहन राकेश का 'आखिरी चट्टान' एक यात्रावृत्तांत है और मन्नू भंडारी की रचना 'दो कलाकार' कहानी है। साहित्यिक हिंदी में शैलीगत विशेषताएँ होती हैं, मुहावरेदार भाषा होती है और सूक्ति, लोकोक्ति, पद्य आदि का प्रयोग किया जा सकता है। जिससे उसमें लालित्य भी होता है, जिसे पढ़कर मानव कुछ सीखने को बाध्य होता है। यह न समझ लें कि साहित्यिक हिंदी से बिल्कुल भिन्न हिंदी-प्रयोजन मूलक हिंदी होती है। बल्कि यह वह हिंदी है जिसका उपयोग हम सरकारी पत्राचार, संक्षेपण, संपादकीय, बैंक की गतिविधियों के निपटान के लिए कामकाजी हिंदी के रूप में करते हैं।

प्रयोजनमूलक हिंदी के मुख्य रूप से छह क्षेत्र देखे जा सकते हैं–

- **तकनीकी भाषा**–यह इंजीनियरी, विज्ञान शास्त्र या चिकित्सा आदि के क्षेत्र में प्रयुक्त भाषा और विशेष शब्दावली का रूप है।
- **कार्यालयी भाषा**–सरकारी कामकाज या प्रशासन में प्रयुक्त होने वाला भाषा रूप।
- **वाणिज्यिक भाषा**–यह वाणिज्य, बैंक या मंडियों में प्रयुक्त भाषा का रूप है।
- **जनसंचारी भाषा**–पत्रकारिता, आकाशवाणी, दूरदर्शन और विज्ञापनों में प्रयुक्त भाषा।
- **सामाजिक भाषा**–इसका प्रयोग सामाजिक कार्यकर्ता करते हैं।
- **साहित्यिक भाषा**–इसका प्रयोग काव्य, नाटक, साहित्य शास्त्र आदि की भाषा में होता है। यह आप ऊपर पढ़ आए हैं।

इस प्रकार की भाषा का प्रयोग सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने में विशेष रूप से किया जाता है। प्रत्येक क्षेत्र में अनेक उपक्षेत्र होते हैं जिनकी भाषा कुछ भिन्न होती है, जैसे कार्यालय में लेखा विभाग की भाषा में लेखा संबंधी शब्द अधिक होते हैं। इसी प्रकार पत्रकारिता में समाचार, विज्ञापन, फीचर, संपादकीय आदि अनेक उपक्षेत्र होते हैं, जिनमें प्रयुक्त भाषा के स्वरूप में अंतर होता है। यहाँ सुप्रसिद्ध संपादक राजेंद्र यादव का एक संपादकीय 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' उदाहरण के रूप में दिया जा रहा है जिसमें देश की विविध समस्याओं को उभारा गया है। इसी प्रकार 26 वें पाठ में 'आखिरी चट्टान' शीर्षक से आप गद्य की नवीन विधा—यात्रावृत्तांत पढ़ेंगे।

इस पाठ का विश्लेषण पढ़ने से पहले हम यह जान लें कि संपादकीय किसे कहते हैं।

16.4 संपादकीय से तात्पर्य

आप जब अखबार उठाते हैं तो सबसे पहले आपकी नज़र उसके पहले पृष्ठ यानी मुख पृष्ठ पर जाती है, जिस पर उस दिन के महत्त्वपूर्ण ताज़ा समाचार छपे होते हैं। मुख पृष्ठ पढ़ने के बाद आपको पता चलता है कि उस दिन की बड़ी खबरें क्या-क्या हैं। इसके बाद आप अपनी रुचि के अनुसार खेलों, व्यापार, स्थानीय घटनाओं आदि की खबरों के लिए पृष्ठ पलटते हैं। अखबार के बीच के हिस्से में आपने एक पृष्ठ ऐसा देखा होगा जिस पर खबरें नहीं बल्कि लेख, संपादकीय टिप्पणियाँ, संपादक के नाम पत्र आदि छपे होते हैं। उसी संपादकीय पृष्ठ के एक हिस्से में उस दिन की मुख्य खबरों या कुछ दिन पहले घटी या निकट भविष्य में घटने वाली घटना पर टिप्पणियाँ छपी होती हैं। इसे संपादकीय कहा जाता है। साप्ताहिक, मासिक, वार्षिक पत्रिकाओं में भी संपादकीय लिखने की परंपरा है। संपादकीय पृष्ठ वास्तव में अखबार का सबसे गंभीर और चिंतन प्रधान भाग होता है।

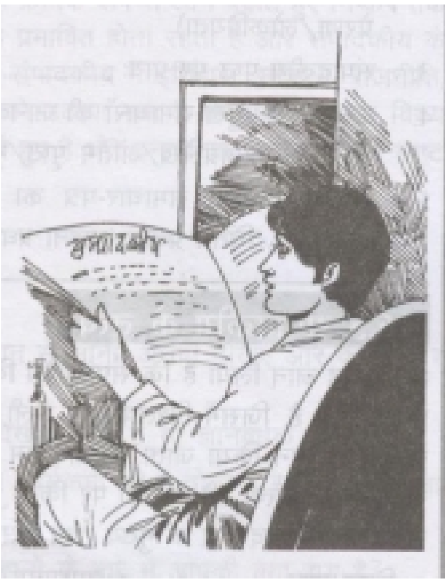

संपादकीय को किसी पत्र या पत्रिका का दर्पण कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। इसे पढ़कर पत्र की नीति तथा विभिन्न समस्याओं, विषयों और घटनाओं पर उसके दृष्टिकोण का पता चल जाता है। संपादकीय अधिकतर पत्र-पत्रिका के संपादक द्वारा ही लिखा जाता है। परंतु अब यह प्रथा खत्म होती जा रही है। संपादक के पास अन्य अनेक ज़िम्मेदारियाँ होने तथा विषयों की बढ़ती हुई विविधता के कारण हमेशा ऐसा संभव नहीं रहता। इसलिए अखबार के वरिष्ठ संपादकों से उनकी विशेषताओं के अनुरूप संपादकीय लेख या टिप्पणियाँ लिखाई जाती हैं। परंतु मासिक पत्रिकाओं, विशेषकर साहित्यिक पत्रिकाओं के संपादकीय लेख या टिप्पणियाँ स्वयं संपादक द्वारा लिखी जाती हैं। ये टिप्पणियाँ प्रायः सामयिक विषय से संबंधित घटनाक्रम पर प्रतिक्रिया के रूप में होती हैं। उदाहरण के लिए फिल्मी पत्रिका में फिल्मी विषयों पर संपादकीय लिखा जाता है तो

टिप्पणी

विज्ञान संबंधी पत्रिका में वैज्ञानिक विषयों पर संपादकीय लिखा जाएगा। परंतु कई बार ऐसी घटना भी हो जाती है जिस पर सब प्रकार की पत्र-पत्रिकाएँ अपनी राय प्रकट करना चाहती हैं। चंद्रमा तक मनुष्य का पहुँचना, सुनामी का आना या अकाल, महामारी अथवा तूफ़ान आदि से लाखों के मरने जैसी मानवीय घटना सब तरह के पत्रों के संपादकीय का विषय बन सकती है।

'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' शीर्षक से प्रकाशित यह संपादकीय दिल्ली से छपने वाली मासिक साहित्यिक पत्रिका 'हंस' से लिया गया है, जिसे पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव ने लिखा है। 'हंस' साहित्यिक पत्रिका है और इसके संपादक स्वयं हिंदी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार हैं। अतः उनका शिक्षा तथा साक्षरता जैसे विषय पर टिप्पणी करना स्वाभाविक है। इसमें राजेंद्र यादव ने अपनी चुटीली और व्यंग्यात्मक शैली में यह बताने की कोशिश की है कि हमारे देश में मनोरंजन, ऐशो-आराम तथा कंप्यूटर जैसे बड़े-बड़े आधुनिक उपकरणों पर तो बेतहाशा खर्च किया जा रहा है परंतु ज्ञान प्रसार की बुनियादी चीज़—किताब पर कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा। उन्होंने इसे सामंतों, पूँजीपतियों, नेताओं और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की साज़िश बताया है।

पाठगत प्रश्न 16.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर खाली स्थान में सही शब्द लिखकर दीजिए:

1. संपादकीय किसी पत्र या पत्रिका का ....होता है। (सार/उद्देश्य/दर्पण/संदेश)
2. संपादकीय से अखबार की .... झलकती है। (नीति/भावना/प्रेरणा/लोकप्रियता)
3. संपादकीय पृष्ठ पर प्रायः ....नहीं छपती। (लेख/टिप्पणियाँ/पत्र/खबरें)
4. अखबार में प्रमुख समाचारों की जानकारी ....को देखकर मिल जाती है। (संपादकीय/अग्रलेख/अंतिम पृष्ठ/मुख पृष्ठ)
5. संपादकीय पृष्ठ समाचार-पत्र का सबसे गंभीर और ....पृष्ठ होता है। (लोकप्रिय/चिंतन प्रधान/भावना प्रधान/सूचना प्रधान)

16.5 संपादकीय के तत्त्व

आपने यह जान लिया है कि संपादकीय किसी पत्र-पत्रिका की ऐसी गंभीर और चिंतन प्रधान विधा है, जिसमें विश्लेषणपूर्ण शैली में किसी समसामयिक विषय या घटना का संक्षिप्त विवेचन किया जाता है। अब हम संपादकीय विधा के मुख्य तत्त्वों पर विचार करेंगे। इन्हीं तत्त्वों की कसौटी पर किसी संपादकीय के गुण-दोषों की पहचान की जा सकती है। संपादकीय के मुख्य तत्त्व इस प्रकार हैं:

- विषय-वस्तु
- समसामयिकता
- विवेचनात्मकता
- दृष्टिकोण की स्पष्टता
- भाषा-शैली
- उद्देश्य

अब हम इन सभी तत्त्वों की विस्तार से व्याख्या करेंगे और इनके संदर्भ में 'अनपढ़ बनाए रखने की साजिश' पर विचार करेंगे।

टिप्पणी

विषय-वस्तु

यह संपादकीय का मूल तत्त्व है। किसी कहानी, उपन्यास, नाटक आदि में जो स्थान कथानक का रहता है, वही इस विधा में विषय-वस्तु का है। संपादकीय क्योंकि अत्यंत संक्षिप्त विधा है अतः इसकी विषय-वस्तु में अधिक विस्तार और व्यापकता की गुंजाइश नहीं होती। इसमें प्रायः एक ही विषय को उठाया जाता है तथा तर्क-वितर्क और उदाहरणों की सहायता से विषय का विवेचन करने के उपरांत निष्कर्ष निकाला जाता है, जिससे पाठकों को उस विषय पर अपनी राय बनाने में मदद मिलती है। 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' में मुख्य रूप से भारत के आम लोगों को साक्षर बनाने में आ रही बाधाओं का विवेचन किया गया है। यह संपादकीय 1976 में आम बजट के कुछ प्रावधानों को आधार बनाकर लिखा गया था, जिसमें कागज़ के दाम बढ़ाए गए थे लेकिन पूँजीपतियों और अमीर लोगों द्वारा इस्तेमाल की जाने वाली ऐशो-आराम की चीज़ों के आयात की छूट दी गई। इस दृष्टि से यह संपादकीय आज की स्थिति में भी प्रासंगिक है।

लेखक ने इस सच्चाई को भूमिका के रूप में प्रस्तुत किया कि एक ओर तो आम जनता को पढ़ाने-लिखाने के लिए सरकार को आवश्यक धन जुटाने में कठिनाई हो रही है तो दूसरी ओर विदेशों से महँगे उपकरणों, जैसे–कंप्यूटरों के आयात की अनुमति दी जा रही है। इस संपादकीय में विरोधाभास की इसी स्थिति को उभारा गया है और टेलीविजन, विज्ञापन, घटिया किताबें, महँगी पत्रिकाएँ, विलासिता की सामग्री, अंधविश्वास जैसे अनेक पहलुओं की चर्चा करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि सभा में बैठे लोगों और पूँजीपतियों-उद्योगपतियों की मिली भगत से ऐसी साज़िश चल रही है, जिससे आम जनता शिक्षित न हो सके। यदि शिक्षित हो भी जाए तो वह उपभोक्तावाद और हल्के मनोरंजन के जाल में फँसी रहे और उनमें जागृति तथा चेतना न आने पाए। इस विषय को संपादक क्रमिक रूप से आगे बढ़ाते हुए निष्कर्ष तक ले जाता है, जिससे पाठक उसके तर्कों से प्रभावित होता रहता है और संपादकीय के मूल संदेश को ग्रहण कर लेता है। यद्यपि संपादकीय में इतिहास, साहित्य, राजनीति, अर्थव्यवस्था, मनोविज्ञान जैसे कई विषयों को उठाया गया है किंतु ये सभी मूल विषय 'शिक्षा और साक्षरता' पर कहीं भी हावी नहीं हुए हैं और इनका उल्लेख विषय को स्पष्ट करने में सहायक सिद्ध हुआ है।

क्रियाकलाप

किसी एक दिन आकाशवाणी/दूरदर्शन ध्यान से सुनिए अथवा देखिए और कागज़ पर नोट कीजिए कि–

- मनोरंजक कार्यक्रम अधिक सुनाए/दिखाए जाते हैं या ज्ञानवर्धक कार्यक्रम?
- यदि ज़्यादा संख्या दिल बहलाने वाले कार्यक्रमों की है तो उन्हें सुनना या देखना क्या आपको लाभकारी लगता है?
- दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों के बारे में आपकी क्या राय है?
- विज्ञापनों में प्रायः किस तरह की चीज़ों का प्रचार किया जाता है?
- विज्ञापन देखकरऽक्या आपको ऐसा नहीं लगता कि हमें भी वह चीज़ अपने घर में लानी चाहिए?

समसामयिकता

संपादकीय की परिभाषा में आपने पढ़ा कि यह किसी समसामयिक विषय या घटना पर लिखा जाता है। इसका मतलब है कि संपादकीय का विषय कोई ऐसी घटना होती है जो हाल में घटी हो या घटने वाली हो। आमतौर पर उसी घटना को विषय बनाया जाता है जिसका संबंध अधिक-से-अधिक लोगों से हो, जो विषय जितने अधिक लोगों को प्रभावित करता है वह उतना ज़्यादा महत्त्वपूर्ण होता है। परंतु कभी-कभी पत्र या पत्रिका के अपने स्वरूप के कारण आम लोगों के लिए कम महत्त्वपूर्ण विषय पर भी संपादकीय टिप्पणियाँ लिखी जाती हैं। गणित के क्षेत्र में हुई कोई नई खोज विज्ञान पत्रिकाओं के लिए संपादकीय का विषय हो सकती है। किंतु अधिकतर सामान्य पत्र-पत्रिकाएँ शायद इस विषय पर संपादकीय नहीं लिखना चाहेंगी। आपने देखा होगा कि हाल में पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में की गई वृद्धि पर लगभग सभी अखबारों ने संपादकीय लिखे। यह विषय एकदम समसामयिक भी था और महत्त्वपूर्ण भी, क्योंकि सरकार के इस कदम से पूरे देश की जनता प्रभावित हुई थी।

इस आधार पर 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' संपादकीय खरा उतरता है। यह 1986 के केंद्रीय बजट में अमीरों के इस्तेमाल की ऐशो-आराम की बहुत-सी चीज़ों के आयात की छूट देने तथा कागज़ के दाम बढ़ाने के कदम को आधार बनाकर देश की संस्कृति पर हो रहे प्रहारों तथा सही शिक्षा की अनदेखी होने की दुखद स्थिति का बड़ी कुशलता से चित्रण किया है। शिक्षा की कमी तथा टी.वी., वीडियो, कंप्यूटर जैसी आयातित चीज़ों के लिए बढ़ती हुई ललक उस समय के हिसाब से और आज के हिसाब से भी समसामयिक होने के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण समस्या है। संपादकीय के विषय का चयन संपादक की सूझबूझ और विवेक पर निर्भर करता है। भारत, विशेषकर हिंदी भाषी पाठकों के लिए यह विषय काफ़ी प्रासंगिक है, क्योंकि हमारे यहाँ साक्षरता का प्रतिशत बहुत कम है। जिस समय यह संपादकीय लिखा गया था उस समय तो साक्षरता दर और भी कम थी। साक्षरता के साथ-साथ संपादकीय के लेखक ने टेलीविजन, विज्ञापन, ऐशोआराम के सामान के आयात की अनुमति देने के जिन मुद्दों को उठाया है, वे भी उस समय बहुत थे क्योंकि उस समय देश में उस उपभोक्तावाद की शुरूआत हो रही थी, जो अब जड़ें जमा चुका है। इस प्रकार न केवल मूल विषय बल्कि गौण रूप से जिन विषयों की चर्चा हुई है, वे आज भी समसामयिकता की कसौटी पर खरे उतरते हैं।

विवेचनात्मकता

अभी आपने पढ़ा कि संपादकीय किसी समसामयिक विषय या घटना पर आधारित होना चाहिए। संपादकीय में विषय ही स्पष्टता और सुबोधता के लिए आवश्यक है कि आलेख में विषय से जुड़े अन्य सभी पहलुओं को भी शामिल किया जाए। घटना से पहले की स्थिति, उसके संभावित प्रभाव तथा अन्य स्थानों पर इस तरह की घटनाओं की प्रतिक्रिया आदि सभी संदर्भों की बारीक विवेचना करने से ही विषय पूरी तरह स्पष्ट हो सकता है। ऊपर हमने पेट्रोलियम पदार्थों में वृद्धि की घटना का उल्लेख किया है, जिस पर लगभग सभी अखबारों में संपादकीय टिप्पणियाँ छपीं। यदि उस समय का कोई संपादकीय पढ़ा हो तो आपने देखा होगा कि उसमें पेट्रोल, डीजल, रसोई गैस, मिट्टी

का तेल जैसे पदार्थों के मूल्य बढ़ाए जाने की चर्चा करते हुए यह भी बताया गया कि इस कदम से बाकी वस्तुओं के दामों पर भी असर पड़ेगा। जहाँ इस वृद्धि के लिए सरकार की मजबूरी जताई गई वहाँ यह भी बताया गया कि इससे आम लोगों की तकलीफ़ें किस तरह बढ़ जाएँगी। कुछ संपादकीयों ने मूल्यों में वृद्धि में कमी लाने का भी सुझाव दिया। एक समाचार पत्र विशेष ने अपनी राजनीतिक वचनबद्धता के कारण सरकार के पक्ष को प्रस्तुत किए बिना मूल्य वृद्धि की जमकर आलोचना की। यह उचित नहीं है, क्योंकि संपादकीय में अपनी राय व्यक्त करते हुए भी विषय या समस्या विशेष के सभी पहलुओं को पाठकों के सामने लाना आवश्यक है।

प्रस्तुत संपादकीय विवेचनात्मकता की दृष्टि से श्रेष्ठ संपादकीय लेखों की कोटि में रखा जा सकता है। इसमें विषय का बहुत ही गहराई और विस्तार के साथ विवेचन किया गया है। बजट में कागज़ की कीमत की वृद्धि सामान्य शब्दों में आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने के साथ-साथ संस्कृति को भ्रष्ट करने के षड्यंत्र को पहचानना तथा उसकी पृष्ठभूमि, परिणामों और विविध रूपों को साफ़-साफ़ बयान करना संपादक की पैनी दृष्टि तथा विवेचन क्षमता का प्रमाण है। संपादकीय में यद्यपि मुख्यतः पूँजीवाद के विरोध की ही दृष्टि सामने आई है, परंतु जिस संदर्भ में संपादक ने पूँजीवाद की आलोचना की है उसे देखते हुए यह विश्वसनीय और तर्कसंगत लगती है। तार्किक ढंग से विषय की प्रस्तुति ही उसे विश्वसनीय बनाती है। श्री राजेंद्र यादव ने अपने देश के साथ-साथ विदेशी घटनाओं और इतिहास के कई पन्नों को पलटते हुए यह साबित करने की कोशिश की है कि शिक्षा और साक्षरता विकास की पहली सीढ़ियाँ हैं और सत्ता तथा अधिकार के भूखे लोग आम जनता को इस शक्ति से वंचित रखने के प्रयास में लगे रहते हैं।

दृष्टिकोण की स्पष्टता

आप जान चुके हैं कि किसी पत्र या पत्रिका का संपादकीय उसमें छपे समाचारों, लेखों तथा टिप्पणियों से सर्वथा भिन्न होता है। संपादकीय में विषय के विवेचन, वर्णन तथा विविध पहलुओं के समावेश के साथ-साथ एक स्पष्ट राय व्यक्त की जाती है जो जनमत निर्माण में सहायक होती है। यह राय, आलोचना या सराहना जहाँ अधिक से अधिक पाठकों के हित को ध्यान में रखकर दी जाती है, वहीं उस पत्र विशेष की अपनी नीति को भी स्पष्ट करती है। इस प्रकार संपादकीय टिप्पणी पाठकों को किसी समस्या या विषय विशेष के संदर्भ में पाठकों को रास्ता दिखाने के साथ-साथ पत्र के दृष्टिकोण को भी स्पष्ट करती है। यही कारण है कि किसी घटना या समस्या का विवेचन एक समान होते हुए भी उसके बारे में अलग-अलग अखबारों का तेवर अलग-अलग होता है। आप यदि किसी एक दिन के चार-पाँच अखबारों से संपादकीय पढ़ेंगे तो आप पाएँगे कि एक ही विषय पर छपे संपादकीय में अलग-अलग दृष्टिकोण प्रकट किया गया है। केंद्र में सरकार बनाने से पहले जब संयुक्त मोर्चे ने न्यूनतम साझा कार्यक्रम तैयार किया तो लगभग सभी अखबारों ने उस पर संपादकीय लिखे, जिनका संक्षेप में ब्योरा भी दिया। परंतु एक अखबार ने उसे अच्छी शुरूआत बताया, दूसरे ने इसे अवसरवाद कहा तो तीसरे अखबार ने इसे सही घोषित करते हुए भी उसके सफलतापूर्वक लागू होने पर शक जाहिर किया।

संपादकीय के इस तत्त्व की दृष्टि से 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' आदर्श संपादकीय है। इसमें संपादक ने बिना किसी लाग-लपेट के एकदम स्पष्ट राय प्रकट की है कि किस तरह देश की जनता का शोषण करने वालों ने जनता को जागृति, सूझबूझ और चेतना ला सकने वाली पुस्तकों से वंचित करने का षड्यंत्र रच रखा है। 'हंस' प्रगतिवादी साहित्य और चिंतन का पोषण करने वाली पत्रिका है और उसके संपादक राजेंद्र यादव प्रमुख प्रगतिवादी लेखक हैं। संपादकीय में पूँजीपतियों की आलोचना तथा जनसाधारण के हितों का समर्थन उनकी तथा पत्रिका की विचारधारा और दृष्टिकोण के सर्वथा अनुकूल है। साहित्यिक पत्रिका होने के कारण ही साहित्य का पक्ष लेना पत्रिका तथा संपादक की ईमानदारी का द्योतक है।

पाठगत प्रश्न 16.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही के सामने सही (√) तथा गलत के सामने गलत (X) का चिह्न लगाकर दीजिए:

1. संपादकीय का विषय सामयिक होना आवश्यक नहीं है। ( )
2. संपादकीय में पत्र की विचारधारा झलकनी चाहिए। ( )
3. 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' का आधार कोई सामयिक घटना नहीं है। ( )
4. किसी विषय या समस्या का विवेचन अलग-अलग होते हुए भी सभी अखबारों की राय एक जैसी होती है। ( )
5. संपादकीय का आदर्श विषय वह होता है जिसका सरोकार अधिक-से-अधिक लोगों से हो। ( )

भाषा-शैली

संपादकीय के जिन तत्त्वों की हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं वह इस विधा का विषय पक्ष है। आइए, अब संपादकीय के कलापक्ष यानी स्वरूप और भाषा-शैली की समीक्षा करें।

आप जान चुके हैं कि संपादकीय में किसी समसामायिक विषय का चिंतनपूर्ण विवेचन होता है जिसमें पत्र-पत्रिका का दृष्टिकोण और समस्या विशेष पर राय भी व्यक्त की जाती है। इसे पत्र की नीति का आईना कहा जा सकता है। अतः संपादकीय एक मर्यादा में बँधा रहता है। वास्तव में यही पहलू संपादकीय को समाचार से अलग करता है। समाचार में वह सब होता है जो घटित हुआ है, किंतु संपादकीय उससे ऊपर उठकर समूचे घटनाक्रम को अतीत और भविष्य की तुला पर तौलकर चिंतनपूर्ण तथा तर्कपूर्ण शैली में लिखी गई टिप्पणी होती है। यदि समाचार स्वतंत्र रूप से बहने वाले नाले हैं तो संपादकीय उन पर निर्मित किया गया जलाशय है। यह विषय की गहराई, दृष्टिकोण की व्यापकता तथा शैली की मर्यादा का संगम है।

संपादकीय में अधिक विस्तार की गुंजाइश नहीं है। इसका आकार संक्षिप्त होना चाहिए। यदि आप इसे लेख बना देंगे तो यह संपादकीय के मापदंड से गिर जाएगा। हाँ,

टिप्पणी

कभी-कभी विषय अत्यंत महत्त्वपूर्ण होने पर संपादकीय कुछ अतिरिक्त रूप से विस्तृत हो सकता है। किसी देश पर विजय या दुख या सुख की कोई अभूतपूर्व मानवीय घटना घटने पर लंबे-लंबे संपादकीय लिखने की परंपरा रही है। कई बार तो संपादकीय बिल्कुल न लिखना भी अर्थपूर्ण हो जाता है। 1975 में एमरजेंसी लगने पर कई समाचार पत्रों ने अखबारों की आज़ादी खत्म करने पर विरोध प्रकट करने के लिए संपादकीय वाला स्थान एकदम खाली छोड़ने की नीति अपनाई। इसके विपरीत महात्मा गांधी, नेहरू, जयप्रकाश नारायण की मृत्यु तथा महाराष्ट्र में भूकंप, सुनामी की तबाही के बारे में लंबे-लंबे संपादकीय लिखे गए।

अखबारों के अति महत्त्वपूर्ण विषयों पर संपादकीय को उसके निर्धारित पृष्ठ की बजाय मुखपृष्ठ पर छाप दिया जाता है, जो इस बात का परिचायक है कि वह विषय असाधारण है। उदाहरण के लिए 1997-98 के बजट अर्थव्यवस्था को गति देने की दृष्टि से अभूतपूर्व मानते हुए कुछ आर्थिक समाचार पत्रों ने बजट पर अपने संपादकीय मुख पृष्ठ पर प्रकाशित करके बजट के असाधारण महत्त्व को स्वीकार किया।

शैली की भाँति संपादक की भाषा भी गंभीरता के गुण से संपन्न होनी चाहिए। हाँ, कभी-कभी हल्के विषय के लिए व्यंग्यपूर्ण, हास्यमयी और चुलबुली भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। अन्य विधाओं में भाषा के प्रवाह, ओज, सुबोधता और चुस्ती जैसी जो विशेषताएँ अपेक्षित हैं, वे संपादकीय विधा पर भी लागू होती हैं। मुहावरे तथा उक्तियाँ हमेशा भाषा में प्रवाह लाती हैं और ये दोनों गुण संपादकीय की भाषा का स्तर भी ऊँचा उठाते हैं। स्वरूप की तरह भाषा का रूप भी समाचार और संपादकीय को अलग करता है। व्यंग्य का पुट अन्य विधाओं की तरह संपादकीय विधा को भी रोचक, प्रभावशाली और पठनीय बनाता है।

'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' स्वरूप की दृष्टि से आदर्श संपादकीय से कुछ हटकर है। यह सच है कि अन्य पत्रिकाओं की तुलना में प्रस्तुत संपादकीय बहुत विस्तार से लिखा गया है। इससे आधे आकार में भी इसी विषय को इतनी ही प्रभावपूर्ण शैली में लिखा जा सकता है।

जहाँ तक भाषा का संबंध है वह सुबोध, ओजपूर्ण तथा चुटीली बन पड़ी है। यह विषय की गंभीरता को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है और पत्रिका के पाठकों के स्तर के अनुरूप ही खरी उतरती है। विषय के बहाव के अनुसार इसमें विविधता के भी दर्शन होते हैं।

इसमें व्यंग्य का बहुत जोरदार ढंग से प्रयोग किया गया है। इस संपादकीय के लेखक स्वयं एक प्रतिष्ठित साहित्यकार और पत्रकार हैं, अतः उन्होंने सही और अर्थपूर्ण शब्दों का प्रयोग करते हुए प्रवाहमयी भाषा का प्रयोग किया है। साहित्य और पत्रकारिता की भाषा में अंतर रहता है। साहित्य की भाषा आलंकारिक तथा क्लिष्ट हो सकती है, जबकि पत्रकारिता की भाषा में ऐसी गुंजाइश नहीं होती। प्रस्तुत संपादकीय में कहीं-कहीं चमत्कार लाने का भी प्रयास किया गया है। संपादकीय में आवश्यकता और अवसर के अनुकूल उर्दू तथा अंग्रेज़ी शब्दों का खुलकर प्रयोग हुआ है। संपादकीय का अंतिम वाक्य

टिप्पणी

चमत्कार और प्रभाव की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है–*''या खुदा ये प्रायोजित नाखुदा हमें कहाँ ले जा रहे हैं?''*

विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता जैसी नवसृजित शब्दावली संपादक के भाषा पर अधिकार की द्योतक है। परंतु एक शब्द है– 'सैडिस्टपन'। अंग्रेज़ी शब्द के 'सैडिस्ट' के साथ हिंदी प्रत्यय 'पन' के मेल से यह शब्द बना है। आगे यह शब्द चल पाएगा या नहीं, यह भविष्य बताएगा। इसी प्रकार रचनाकार नए-नए शब्दों का गठन करता है, जनता उनका उपयोग करती है। इसी प्रकार का एक शब्द दादागिरी, नेतागिरी के आधार पर बना, गांधीगिरी जो खूब चला। श्री यादव का व्यंग्य कहीं-कहीं बहुत तीखा भी हो जाता है। एक उदाहरण देखिए *''अपने ऋषि-मुनि मूर्ख नहीं थे जिन्होंने कुछ लोगों की ज़िंदगी से शिक्षा यानी किताब को एकदम बाहर निकाल कर उन्हें सेवा धर्म सिखाया था।''*

आपने पाठ पढ़ते हुए ध्यान दिया होगा कि लेखक बात को विस्तार से समझाता है और उसके बाद उसे एक छोटे से किंतु अधिक प्रभावी वाक्य से समाप्त करता है। उदाहरण के लिए पृष्ठ संख्या-85 पर पहले अनुच्छेद को पुनः ध्यान से पढ़ें तो पाएँगे कि यहाँ भारतीय अनुसंधान में हो रहे नुकसान की बात लेखक ने उठाई है कि जब बनी-बनाई वस्तुएँ और उनके छोटे-बड़े पुर्ज़े बाहर से आ रहे हैं और उन्हें जोड़-जाड़कर अपने देश की मोहर लगा कर ही नाम मिल रहा है तो स्वयं अनुसंधान और खोज करने की क्या आवश्यकता है। इस बात पर लेखक ने *''न अनुसंधान की ज़रूरत है न विकास की''* रोषपूर्ण वाक्य कह कर चोट की है। इसी प्रकार स्थान-स्थान पर लेखक ने पैने वाक्य रचे हैं, जो सोचने-विचारने पर मजबूर करते हैं, जैसे–*''शार्टकट कितना आत्मघाती है।''*, *''आदमी को सोचने-समझने के लिए कोई मौका नहीं देना चाहते''* आदि।

पाठगत प्रश्न 16.3

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुन कर निम्नलिखित कथनों को पूरा कीजिए–

1. संपादकीय की भाषा
   (क) अलंकारपूर्ण होनी चाहिए।
   (ख) सरल और सुबोध होनी चाहिए।
   (ग) जटिल और क्लिष्ट होनी चाहिए।
   (घ) उर्दू, अंग्रेज़ी आदि से रहित होनी चाहिए।
2. संपादकीय में
   (क) घटना या समस्या पूरे विस्तार से लिखी जाए।
   (ख) समस्या का उल्लेख किया जाए।
   (ग) घटना या समस्या का विवेचन किया जाए।
   (घ) समस्या का उल्लेख किए बिना उस पर टिप्पणी की जाए।

3. ''अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश''
   (क) स्वरूप की दृष्टि से आदर्श संपादकीय है।
   (ख) संपादकीय की भाषा में पैनेपन का अभाव है।
   (ग) विषय का विवेचन दोषपूर्ण है।
   (घ) विवेचन की दृष्टि से श्रेष्ठ संपादकीय में गिना जा सकता है।
4. प्रस्तुत संपादकीय में
   (क) पुस्तकों को आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया गया है।
   (ख) सरकार का समर्थन किया गया है।
   (ग) आधुनिकता का विरोध किया गया है।
   (घ) पूँजीवाद के इरादों का पर्दाफ़ाश किया गया है।
5. संपादकीय की शैली
   (क) मर्यादित होनी चाहिए।
   (ख) विस्तृत और स्वतंत्र होनी चाहिए।
   (ग) चमत्कारपूर्ण होनी चाहिए।
   (घ) व्यंग्यपूर्ण और चुटीली होनी चाहिए।
6. कभी-कभी संपादकीय का स्थान खाली क्यों छोड़ा जाता है? उदाहरण सहित कारण स्पष्ट कीजिए।
7. कभी-कभी संपादकीय अखबार के मुख पृष्ठ पर क्यों छापा जाता है? उदाहरण सहित उत्तर लिखिए।

उद्देश्य

संपादकीय में विषय के विवेचन के साथ-साथ एक स्पष्ट संदेश निहित रहता है जो संपादकीय लिखने के उद्देश्य की ओर संकेत करता है। यह मूल संदेश या उद्देश्य संपादकीय के आलेख से पूरी तरह उभरकर सामने आना चाहिए तथा आलेख में आया कोई अन्य विषय या तर्क इस मूल संदेश पर हावी नहीं होना चाहिए। इस दृष्टि से प्रस्तुत संपादकीय को सफल माना जा सकता है। संपादकीय में प्रारंभ से अंत तक भारतीय परिवेश में शिक्षा के महत्त्व को रेखांकित किया गया है और आधुनिक युग के नए-नए उपकरणों तथा परंपरागत रीति-रिवाजों की चर्चा करते हुए इसी तथ्य से पाठकों को अवगत कराने का प्रयास किया गया है कि शिक्षा जैसी अत्यंत आवश्यक चीज़ से आप लोगों को वंचित रखा जा रहा है और सरकार तथा पूँजीपति वर्ग व्यर्थ की ऐसी चीज़ों पर पैसा लगा रहे हैं जिनसे केवल मुट्ठी भर लोगों की स्वार्थपूर्ति और मनोरंजन होता है। रचनाकार इतिहास, समाज, राजनीति, अर्थनीति और मनोविज्ञान का सहारा लेता है। लेखक ने बताया है कि अच्छी किताबों ने जहाँ महापुरुषों और अच्छी संस्कृतियों के विकास में मदद दी है, वहीं तानाशाही ने हमेशा किताबें नष्ट करने पर ध्यान दिया है, क्योंकि घटिया किताबों, चमकदार पत्रिकाओं, टेलीविजन और विज्ञापनों

का जाल भी लोगों को सही ज्ञान के रास्ते से भटका कर मन बहलाव और भोग-विलास के रास्ते पर ले जाने का काम कर रहा है। कागज़ की कीमतें महँगी होने से दुखी होकर लिखा गया यह संपादकीय शिक्षा की उपेक्षा की ओर पाठकों का ध्यान ले जाने के अपने उद्देश्य में सफल रहा है।

शीर्षक की सार्थकता

आप संपादकीय के सभी मुख्य तत्त्वों से परिचित हो चुके हैं। किसी भी विधा का शीर्षक उसका मुख होता है, जिस पर रचना के शरीर और आत्मा की छवि अंकित होती है। संपादकीय चूँकि स्वयं किसी पत्र-पत्रिका और विषय या समस्या का दर्पण होता है, अतः इसमें शीर्षक का विषय सहज ही स्पष्ट होना चाहिए। शीर्षक में पांडित्य प्रदर्शन की गुंजाइश नहीं होती। शीर्षक थोड़े से शब्दों में व्यक्त हो जाना चाहिए तथा चुटीला व चुस्त होना चाहिए। ऐसा न हो कि शीर्षक को समझने के लिए पूरा संपादकीय पढ़ना पड़े।

'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' शीर्षक इस संपादकीय के मूल विषय और उद्देश्य को अत्यंत सार्थक ढंग से अभिव्यक्त करता है। केवल पाँच शब्दों के इस शीर्षक में तीखापन भी है, क्योंकि इसमें एक सामूहिक कार्रवाई को साज़िश कहा गया है। संपादकीय में यद्यपि अनेक विषयों का उल्लेख हुआ है परंतु उन सबका मूल स्वर इस तथ्य को उजागर करना है कि जाने-अनजाने जो उपाय किए जा रहे हैं वे आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने की साज़िश है। इससे बचकर जो व्यक्ति साक्षर हो भी जाते हैं उन्हें अच्छी किताबों से दूर रखने के सुनियोजित षड्यंत्र का आभास देते हैं। शीर्षक के सभी शब्द, सरल, सुबोध और सीधे हैं किंतु 'साज़िश' शब्द ने शीर्षक को इतना वजनदार, अर्थपूर्ण और नुकीला बना दिया है कि वह पाठक का ध्यान बरबस ही अपनी ओर खींच लेता है। यही गुण संपादकीय का सबसे महत्त्वपूर्ण पहलू है। इस दृष्टि से शीर्षक पूरी तरह सार्थक प्रतीत होता है।

16.5 भाषा प्रयोग

1. पाठ का पहला वाक्य है:

   रोटी, कपड़ा और मकान के बाद जिस देश में पहली कहें या एकमात्र **आवश्यकता साक्षरता** और शिक्षा है, वहाँ ऐसी **दृष्टिहीनता** या तो **मूर्खता** के कारण है या फिर **धूर्तता** के कारण।

   उपर्युक्त वाक्य में 'ता' प्रत्यय से निर्मित पाँच शब्द प्रमुख रूप से आए हैं। हिंदी में उपसर्गों और प्रत्ययों से अनेक शब्दों का निर्माण किया जा सकता है। 'ता' प्रत्यय सबसे अधिक प्रयुक्त होता है। निम्नलिखित प्रत्ययों का एक-एक उदाहरण पाठ से छाँटिए और दो-दो उदाहरण अपनी ओर से लिखिए–

   –ईय ________ ________ ________

   –ई ________ ________ ________

   –आई ________ ________ ________

–इक ________ ________ ________

–पन ________ ________ ________

2. शब्द निर्माण की दूसरी प्रक्रिया है समास के द्वारा कुछ शब्दों को मिलाकर एक पद बना देना। जैसे:

(क)	मशीन के समान मानव	⟹	मशीन-मानव
	सब में व्यापक है जो	⟹	सर्वव्यापक
	रक्तबीज के समान लहर	⟹	रक्तबीजी लहर
	ठीक से सोची गई है जो	⟹	सुचिंतित
(ख)	मानव की सभ्यता	⟹	मानव-सभ्यता
	जीवन की पद्धति	⟹	जीवन-पद्धति
	डाक के लिए खर्च	⟹	डाक-खर्च
	देवी का जागरण	⟹	देवी-जागरण
	प्रकाशन के लिए गृह	⟹	प्रकाशन-गृह
(ग)	ज्ञान और विज्ञान	⟹	ज्ञान-विज्ञान
	संस्कृति और साहित्य	⟹	संस्कृति-साहित्य
	सोच और विचार	⟹	सोच-विचार
	कप और गिलास	⟹	कप-गिलास
	पत्र और पत्रिकाएँ	⟹	पत्र-पत्रिकाएँ

उपर्युक्त तीनों प्रकार के तीन-तीन उदाहरण दीजिए–

....

....

....

16.6 आपने क्या सीखा

1. साहित्यिक हिंदी और प्रयोजनमूलक हिंदी में अंतर होता है। साहित्यिक हिंदी आलंकारिक, लालित्यपूर्ण और मुख्य रूप से कविता और गद्य साहित्य के लेखन में प्रयुक्त होती है। जबकि प्रयोजनमूलक हिंदी भाषा का व्यावहारिक पक्ष है, जो मुख्यतः तकनीकी भाषा, कार्यालयी भाषा, वाणिज्य की भाषा, जन संचार की भाषा और सामाजिक व्यवहार में प्रयुक्त भाषा होती है।

2. संपादकीय पत्र-पत्रिकाओं की वह विधा है, जिसमें किसी समसामयिक विषय या

समस्या पर चिंतनपूर्ण ढंग से टिप्पणी की जाती है और उसमें पत्र-पत्रिका का दृष्टिकोण व्यक्त होता है।

3. 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' विषयवस्तु, समसामयिकता, विवेचनात्मकता, दृष्टिकोण की स्पष्टता, भाषा आदि तत्त्वों की दृष्टि से प्रशंसनीय संपादकीय है, परंतु स्वरूप की दृष्टि से अपेक्षाकृत अधिक लंबा है।
4. आम लोगों को शिक्षा से वंचित रखने के उद्देश्य से सामंतवादी और पूंजीपति वर्गों द्वारा ऐसी परिस्थितियाँ पैदा की जा रही हैं, जिनसे जनता में चेतना और जागृति न आ सके।
5. संपादकीय स्वरूप और भाषा की दृष्टि से समाचार से काफ़ी भिन्न होता है।
6. संपादकीय का शीर्षक 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' विषय को प्रभावशाली और व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्यक्त करता है।

16.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

राजेंद्र यादव का जन्म 28 अगस्त 1929 को हुआ था। आपने आगरा से शिक्षा प्राप्त कर मथुरा, झाँसी और कोलकाता में रहने के बाद राजधानी दिल्ली में अपना स्थायी निवास निश्चित किया। आप की पहली रचना थी–'प्रतिहिंसा' (1947)। इन्होंने कई उपन्यास, कहानियाँ, समीक्षात्मक निबंध और नाटक लिखे। आपने 'आवाज़ तेरी है' नामक कविता संग्रह भी लिखा है। इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं:

उपन्यास - 'सारा आकाश', 'उखड़े हुए लोग', 'शह और मात', 'एक इंच मुस्कान', 'कुलटा', 'अनदेखे अनजान पुल'।

कहानी-संग्रह-'देवताओं की मूर्तियाँ', 'खेल-खिलौने', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है', 'छोटे-छोटे ताजमहल', 'वहाँ तक पहुँचने की दौड़', 'प्रतिनिधी कहानियाँ', 'श्रेष्ठ कहानियाँ' आदि।

समीक्षात्मक निबंध–'कहानी–स्वरूप और संवेदना', 'उपन्यास : स्वरूप और संवेदना', 'कहानी : अनुभव और अभिव्यक्ति', 'काँटे की बात' (चार खंड)।

संपादन–नये साहित्यकार पुस्तक माला में मोहन राकेश, कमलेश्वर, राजेंद्र यादव, फणीश्वरनाथ रेणु, मन्नू भंडारी की चुनी कहानियाँ। एक दुनिया समानांतर, कथा-यात्रा।

साक्षात्कार- 'मेरे साक्षात्कार'।

अनुवाद- आपने 'हमारे युग का एक नायक', 'प्रथम प्रेम', 'बसंत प्लावन' आदि उपन्यासों का हिंदी में अनुवाद किया है तथा चेखव द्वारा लिखित 'हंसनी', 'चेरी का बगीचा' और 'तीन बहनें' नाटक अनूदित किए हैं। आप हिंदी साहित्य की मासिक पत्रिका 'हंस' के संपादक हैं।

(ख) आप अखबारों तथा पत्रिकाओं के संपादकीय कभी-कभी पढ़ते होंगे, संपादकीय के तत्त्वों को ध्यान में रखते हुए अलग-अलग दिनों में छपे पाँच संपादकीय पढ़कर उनकी समीक्षा कीजिए।

(ग) राजेंद्र यादव द्वारा संपादित 'हंस' पत्रिका का ताज़ा अंक लेकर उसमें छपे संपादकीय की भाषा-शैली की विवेचना कीजिए।

(घ) निम्नलिखित विषयों पर संपादकीय लिखने का अभ्यास कीजिए:

1. साक्षरता के प्रसार में दूर शिक्षा का योगदान
2. आपके क्षेत्र में आई बाढ़
3. क्रिकेट में पाकिस्तान पर भारत की जीत
4. पेट्रोलियम पदार्थों के मूल्यों में वृद्धि
5. बिजली की बार-बार कटौती, जिसमें छात्रों की पढ़ाई पर प्रभाव पर अधिक बल दिया जाए।

(ङ) 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' संपादकीय 1986 में लिखा गया। तब से आज की स्थितियों में काफ़ी परिवर्तन हुआ है। इस संपादकीय के मूलभाव को बनाए रखते हुए नई परिस्थितियों के संदर्भ में इसी विषय पर संपादकीय लिखिए।

16.8 पाठांत प्रश्न

1. संपादकीय की परिभाषा बताते हुए समाचार लेख और निबंध से उसके अंतर को स्पष्ट कीजिए।

2. ''अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश'' की संपादकीय के तत्त्वों के आधार पर समीक्षा कीजिए।

3. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए:

   (क) संपादकीय का स्वरूप और भाषा

   (ख) 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' संपादकीय का उद्देश्य

   (ग) साक्षरता का महत्त्व

   (घ) मनुष्य के विकास में साहित्य की भूमिका

4. निम्नलिखित गद्यांशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

   (क) 'दुनिया के सारे तानाशाहों ने सबसे पहले या तो पुस्तकालय जलाए हैं या किताबों को कुचला है।'

   (ख) बहरहाल, पढ़ना बहुत खतरनाक चीज़ है। इससे आदमी को सोचने, समझने और कुछ करने की बीमारी लग जाती है।

   (ग) जिसे जाहिल, मूर्ख, परतंत्र और निर्भर बनाकर रखना है, उसके हाथ में किताब नहीं दी जाएगी।

(घ) लगता है हम भी अब विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता की ओर बढ़ रहे हैं—नंगे, भूखे, अशिक्षित और जड़ लेकिन दूरदर्शनों, कारों और कंप्यूटरों के सामने लाइन लगाए हुए।

(ङ) जिन बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आतंक और वर्चस्व को रोकने की आवाज़ें उठाई जा रही हैं उन्हीं की गहरी पकड़ हमारी सारी आर्थिक और राष्ट्रीय नीतियों को तय कर रही हैं।

5. शिक्षा और साक्षरता के प्रसार के लिए क्या उपाय किए जाने चाहिए?

6. क्या आप इस विचार से सहमत हैं कि पूँजीवाद और रूढ़िवाद आम आदमी को साक्षर बनाने में बाधक है, सोदाहरण विवेचना कीजिए।

7. निम्नलिखित वाक्यों को पाठ के आधार पर विस्तार से समझाइए:

(क) सिर्फ़ क्लीयरिंग एजेंट के रूप में काम करेंगे।

(ख) भीतरी लगाव और सरोकार जब संस्कारों में नहीं है तो फिर व्यवहार में कहाँ से आएगा।

(ग) आदमी को सोचने-समझने के लिए कोई मौका नहीं देना चाहते।

8. 'अनपढ़ बनाए रखने की साजिश' संपादकीय का सार लगभग 150 शब्दों में लिखिए।

9. दूर-शिक्षा में दूरदर्शन किस तरह उपयोगी सिद्ध हो सकता है?

10. पुस्तकों की उपेक्षा में लेखक द्वारा बताए गए तीन कारणों का उदाहरण सहित विवेचन कीजिए।

11. 'विसांस्कृतिक वैज्ञानिकता' से क्या अभिप्राय है? उदाहरण देते हुए स्पष्ट कीजिए।

16.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. साक्षरता 2. मनोरंजन करो, सुखी रहो। 3. कहीं ये लोग सत्ता हथियाने में बाधा न पहुँचाएँ

4. (ग) 5. (ख), 6. (ग), 7. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

16.1 1. दर्पण, 2. नीति, 3. खबरें, 4. मुख पृष्ठ, 5. चिंतन प्रधान

16.2 1. (X), 2. (√), 3. (X), 4. (X), 5. (√)

16.3 1. (ख), 2. (ग), 3. (घ), 4. (घ), 5. (क)
6. विरोध प्रकट करने के लिए, 7. बहुत महत्त्वपूर्ण होने के कारण

टिप्पणी

17

301hi17

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

आपने नवभारत टाइम्स, दैनिक हिंदुस्तान और राष्ट्रीय सहारा जैसे समाचार-पत्रों और कादंबिनी, सरिता, हंस जैसी पत्रिकाओं में अनेक गद्य रचनाएँ पढ़ी होंगी। पिछले पाठ में आपने संपादकीय के बारे में पढ़ा। इन पत्र-पत्रिकाओं को हाथ में लेते ही सबसे पहले आप उनकी विषय-सूची देखते होंगे। उस सूची में कहानी, व्यंग्य, चुटकुले, रेखाचित्र आदि लिखा हुआ भी अवश्य देखते होंगे और सोचते होंगे कि ये क्या हैं? वास्तव में ये गद्य की विविध विधाएँ या रूप हैं। इनमें से व्यंग्य का अपना अलग ही महत्त्व है। इस पाठ में आप 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' नामक व्यंग्य-रचना पढ़ने जा रहे हैं, जिसे प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई ने लिखा है। यह रचना एक ओर तो दो पीढ़ियों के बीच अंतर और संघर्ष दिखाती है तो दूसरी ओर कर्म किए बिना फल प्राप्ति की आकांक्षा रखने वालों पर कटाक्ष या चोट भी करती है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- व्यंग्य का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- व्यंग्य-विधा के तत्त्वों के आधार पर 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ का विवेचन कर सकेंगे;
- दो पीढ़ियों के बीच चल रहे संघर्ष को बता सकेंगे;
- व्यंग्य की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

अगले पृष्ठ पर दिया गया चित्र देखिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

अब आप निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) चित्र में क्या दिखाया गया है?

....

(ख) मंदिर में जिसे भोग लगाया जा रहा है, क्या वह देवता की मूर्ति है? यदि नहीं तो वह कौन है?

....

17.1 मूलपाठ

आइए, इस व्यंग्य को अच्छी तरह पढ़ लिया जाए।

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

साहित्य के वयोवृद्ध थकित हुए।

वे लाठी टेकते हुए सड़क पर चलते।
मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते।
निमोनिया की दवा जेब में रखकर बगीचे में घूमते।
कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाकर संगीत-सभा में बैठते।
भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।

एक दिन तरुणों ने उनसे कहा, ''प्रातः स्मरणीयो, सुनामधन्यो! आप अब वृद्ध हुए– वयोवृद्ध, ज्ञानवृद्ध और कलावृद्ध हुए। आप अब देवता हो गये। हम चाहते हैं कि आप लोगों को मंदिर में स्थापित कर दें। वहाँ आप आराम से रहें और हमें आशीर्वाद दें।''

वयोवृद्ध थोड़ी देर तक विचार करते रहे। फिर बोले, ''प्रस्ताव कोई बुरा नहीं है। पर हमारे यश का क्या होगा?''

''हम आपकी जय बोलेंगे।'' तरुणों ने कहा।
''और हमारे झण्डों का क्या होगा?''
''हम आपके झण्डों को मंदिर के सामने के पीपल पर टाँग देंगे। वे वहाँ ऊँचे फहरायेंगे।''
''और हमारे भोग का क्या होगा?''
''हम आपके भोग का प्रबंध करेंगे। रोज हम पकवानों के थाल लेकर आयेंगे।''
''हमें श्रद्धा भी तो चाहिए। उसका क्या प्रबंध होगा?''
''हम रोज़ आपकी आरती करेंगे, और आपके चरणों पर मस्तक रखेंगे।''
''हमारे अर्थ का क्या होगा?''

शब्दार्थ

वयोवृद्ध	–	बहुत बूढ़े
निमोनिया	–	एक रोग जो ठंड के कारण होता है। (पसलियों में जकड़न का अनुभव होता है)
तरुण	–	युवक, जवान
समाधान	–	उपाय करना
ज्ञानवृद्ध	–	अत्यंत ज्ञानी
कलावृद्ध	–	कला में अत्यंत निपुण

''आपकी रॉयल्टी हम मंदिर में ही पहुँचा दिया करेंगे। आपको हम हर पाठ्य-पुस्तक में रखवायेंगे और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा, उसे ठीक करेंगे।''

''पर हम कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे?'' वयोवृद्ध ने कहा।

तरुणों ने समाधान किया, ''जहाँ तक कर्म का संबंध है, आप लोगों की संस्मरण की अवस्था है। आप लोग आपस में संस्मरण सुनायेंगे ही। उनका रिकार्डिंग होता जायेगा और हम उनकी पुस्तकें छपवा देंगे।''

सयानों ने आपस में सलाह की और एकमत से कहा, ''हमें मंज़ूर है। बनाओ हमें देवता।''

युवकों ने एक दिन समारोहपूर्वक वयोवृद्धों को देवता बनाकर मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया। उनके झण्डे पीपल पर चढ़ा दिये। उनकी आरती की, उनके चरण छुए और भोग लगाकर काम पर चले गये।

देवता जब अकेले छूट गये, तब उनका ध्यान तरुणों पर गया।
एक ने बात उठायी, ''लड़के इस समय न जाने क्या कर रहे होंगे!''
''सड़कों पर घूम रहे होंगे,'' दूसरे ने कहा।
तीसरा बोला, ''कोई खा रहा होगा, पी रहा होगा।''
चौथे ने कहा, ''कोई खेल रहा होगा।''
पाँचवें ने कहा, ''कोई नाटक देख रहा होगा, कोई फिल्म देख रहा होगा।''
छठा बोला, ''कोई प्रेम कर रहा होगा।''
सातवें ने कहा, ''कोई बढ़िया कपड़े पहने लोगों को लुभाता घूम रहा होगा।''
आठवें ने कहा, ''कोई कविता सुना रहा होगा और 'वाह-वाह' लूट रहा होगा।''

वे उदास हो गये। कहने लगे, ''लड़के बाहर ऐसा आनंद कर रहे हैं; जीवन को इस तरह भोग रहे हैं! और देवता बने हम इस मंदिर की कारा में बैठे हैं।''

तभी एक देवता, जो अब तक चुप था, बोला ''खाने-खेलने दो लड़कों को। हम तो न चल सकते, न खेल सकते, न दौड़ सकते। ज़्यादा खा लेंगे, तो अजीर्ण हो जायेगा। ज्यादा बोलेंगे, तो साँस फूल उठेगी। प्रेम करने की भी अवस्था नहीं रही। भोगने दो जवानों को जीवन। वे हमारी जय तो बोलते हैं, हमारे झण्डे तो फहराते हैं! हमारी आरती तो करते हैं! और क्या चाहिए हमें!''

लेकिन बाकी देवताओं को उसकी बात अच्छी नहीं लगी। वे बोले, ''तुम बिल्कुल निःसत्व हो। तुम्हें इस बात का कोई बुरा नहीं लगता कि जहाँ-जहाँ हम थे, वहाँ-वहाँ वे जम गये

शब्दार्थ

रॉयल्टी	–	पुस्तक बिकने पर लेखक को मिलने वाला पैसा
आनाकानी करना	–	किसी काम को न करने की अस्पष्ट इच्छा दिखाना
संस्मरण	–	पुरानी यादें
वाह-वाह लूटना	–	प्रशंसा सुनना
कारा	–	जेल
अजीर्ण	–	हज़म न होना

टिप्पणी

हैं। जो हमारा था, वह सब उन्होंने ग्रहण कर लिया है और हमें प्रतिमा बनाकर यहाँ चिपका दिया है।''

वह उठकर मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया।

देवताओं में सलाह होती रही। फिर उनमें हलचल हुई।

शाम को युवक जब थालियों में मिष्ठान सजाकर देवताओं की जय बोलते हुए मंदिर के पास पहुँचे, तो देखा कि सब देवता चबूतरे पर खड़े हैं। उनके पास पत्थरों का ढेर है, और वे हाथों में भी पत्थर लिये हैं।

जवान आगे बढ़े, तो देवताओं ने उन पर पत्थर बरसाना शुरू कर दिया।

तरुण रुक गये। चिल्लाये, ''देवताओ, पत्थर क्यों मार रहे हो?''

देवता बोले, ''वहीं रुको और हमारी बात सुनो। तुमने हमें वंचित किया है।''

''किससे वंचित किया है''? तरुणों ने पूछा।

''उस सबसे, जो हमारा था।'' देवता उधर से चिल्लाए।

तरुणों ने जवाब दिया, ''हमने तुम्हें वंचित नहीं किया। तुमने अपने आप को वंचित किया है, तुम्हारी थकान ने, तुम्हारी उम्र ने, तुम्हारी चेतना-दुर्बलता ने, तुम्हारी शक्ति-हीनता ने तुम्हें वंचित किया है। हम तो तुम्हें पूज रहे हैं, और तुम देवता होकर पत्थर मारते हो!''

देवताओं ने कहा, ''हमें ऐसी पूजा नहीं चाहिए। हम भी तुम्हें वंचित करेंगे।''

एक देवता बोला, ''तुम उन सड़कों पर नहीं चलोगे, जिन पर हम चलें। वे मात्र हमारी हैं।''

दूसरा देवता चिल्लाया, ''जो हमने खाया, वह तुम नहीं खाओगे, क्योंकि वह मात्र हमारा भोज्य था।''

तीसरा बोला, ''जो हमने भोगा, वह तुम नहीं भोगोगे, वह मात्र हमारा भोग्य था।''

चौथा चिल्लाया, ''जो हमने किया, वह तुम नहीं करोगे, क्योंकि वह केवल हमारा कर्म था।''

पाँचवाँ बोला, ''तुम अपने झण्डे नहीं फहराओगे। झण्डे सिर्फ़ हमारे होंगे। हमारे बाद किसी का कोई झण्डा नहीं होगा।''

तरुणों ने कहा, ''आप लोग देवता हैं, दरोगा नहीं। देवोचित व्यवहार करिए।'' आप जिये, इसलिए क्या जीवन पर सिर्फ़ आपका अधिकार हो गया और कोई दूसरा जी भी नहीं सकता! हमें यह सब स्वीकार नहीं है।''

''नहीं है तो लो''-कहकर देवताओं ने पत्थर बरसाना शुरू कर दिया।

उन जवानों ने भी पास ही पड़े मिट्टी के ढेर से पत्थर उठाकर उन देवताओं पर फेंकने शुरू कर दिये।

एक युवक पीपल पर चढ़ गया और देवताओं के झण्डे फाड़कर फेंक दिये।

दोनों तरफ़ से पथराव हो रहा था, दोनों तरफ़ से गाली-गलौज हो रही थी।

एक राहगीर से दूसरे ने पूछा, ''यह क्या मामला है?''

राहगीर ने जवाब दिया, ''दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।''

–हरिशंकर परसाई

शब्दार्थ

निःसत्व – जिसका सार निकल गया हो
प्रतिमा – मूर्ति
मिष्ठान – मिठाइयाँ आदि
वंचित – जिसके पास कुछ न हो
चेतना-दुर्बलता – सोचने-समझने में कमज़ोर
भोज्य – खाने योग्य पदार्थ
भोग्य – भोगने योग्य
कलागत मूल्य – कला में छिपे मूल्य

17.2 बोध प्रश्न

आप 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' व्यंग्य पढ़ चुके हैं। अब इस पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर पर सही का निशान (√) लगाइए।

1. तरुणों ने वृद्धों से कहा,
   - (क) आप वृद्ध हैं, काम न किया करें।
   - (ख) आप देवता बनकर आराम से रहें।
   - (ग) आप लाठी टेकते सड़क पर चलें।
   - (घ) आप मोटा चश्मा लगाकर चाँद को देखें।
2. तरुण चाहते थे कि,
   - (क) वृद्धों की सेवा करें।
   - (ख) वृद्धों की बात न मानें।
   - (ग) वृद्धों का स्थान लें।
   - (घ) अपने झंडे फहरायें।
3. पाठ के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए:
   - (क) वृद्धों द्वारा तरुणों से बहुत-से प्रश्न पूछना।
   - (ख) तरुणों द्वारा वृद्धों को आराम से रहने की सलाह देना।
   - (ग) एक राहगीर का दूसरे राहगीर से प्रश्न पूछना।
   - (घ) तरुणों द्वारा थालियों में मिठाई सजाकर मंदिर पहुँचना।
   - (ङ) देवताओं द्वारा तरुणों पर पत्थर बरसाना

17.3 आइए समझें

आइए, 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' पाठ को ठीक से समझने से पहले जान लें कि व्यंग्य क्या है?

व्यंग्य क्या है?

जब कही गई बात का अर्थ कुछ और हो तथा जो किसी विसंगति (यानी जो होना चाहिए, वह न होकर कुछ और हो) पर चोट करता हो– व्यंग्य कहलाता है, जैसे– कहा जाए– ''था तो वह एक सरकारी अधिकारी परंतु काम कर रहा था, वह भी ईमानदारी के साथ।'' इसका अर्थ हुआ कि सामान्यतः लोग यह मानते हैं कि सरकारी अधिकारी कोई काम नहीं करते परंतु यह व्यक्ति इस धारणा को तोड़कर अपना काम ईमानदारी के साथ कर रहा है अर्थात् जैसा माना जाता है उसकी विपरीत दिशा में कार्यरत है।

व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो ऊपर से नीचे तक व्यक्ति को झकझोर कर

रख देती है। व्यंग्य में बात करने का अर्थ है विचारों को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका प्रभाव सीधा दिल और दिमाग पर हो, साथ में भिन्न प्रकार की हँसी भी आए और वह हँसी ऐसी करारी चोट पैदा करे कि अगला व्यक्ति तिलमिला कर रह जाए और उस बात पर गहराई से सोचने पर मज़बूर हो जाए। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री कन्हैयालाल नंदन का कहना है, कि ''व्यंग्य का लिखना एक साधना है और व्यंग्य का सहना उससे भी बड़ी साधना है।''

आप अक्सर अखबारों में कार्टून का कोना देखते होंगे। उसमें रोज़मर्रा की जिंदगी से जुड़ी किसी-न-किसी घटना को परोक्ष रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसे केवल चित्र न समझकर उस घटना पर टिप्पणी समझनी चाहिए। कार्टून में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र से संबंधित किसी विसंगति या घटना पर कार्टूनिस्ट की दृष्टि छिपी होती है। इसी प्रकार किसी व्यंग्य की विषय-वस्तु सत्य पर आधारित होती है। वह सत्य किसी भी क्षेत्र से संबंधित हो सकता है।

व्यंग्य को अंग्रेज़ी भाषा में 'सटायर' भी कहते हैं जो मूलतः लैटिन भाषा से आया है। इसका अर्थ होता है 'गड़बड़झाला'। गुजराती भाषा में इसे 'कटाक्ष' और उर्दू में 'तंज' कहा जाता है। डॉ0 विजय शुक्ल का कहना है कि ''व्यंग्य केवल परिहास या मनोरंजन मात्र नहीं है। कुछ और है, जिसे उसका लेखक अपने वैषम्य व बेतरतीब माहौल के बीच पकड़ता है। वह अमृत भी हो सकता है, जहर भी, और कुछ भी जिसे पीकर, अपने आप पर ढालकर, किसी एक संपूर्ण चिंतन का रूप देकर, तब उसे कलात्मक खुशनुमा लिफ़ाफ़े में रखकर पाठक के सामने पेश कर देता है। व्यंग्य मुख्यतः सत्य को सामने लाता है। पाखंड का पर्दाफ़ाश करता है। जीवन की सच्चाई प्रस्तुत करता है। सीधे-सीधे शब्दों का प्रयोग कर अर्थ में चमत्कार पैदा करता है।

17.4 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' का तात्त्विक विवेचन

पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ पाठ आप पढ़ चुके हैं। आशा है इसे पढ़ते समय आपको आनंद भी मिला होगा। आइए, अब हम व्यंग्य के तत्त्वों के आधार पर इस पाठ का विवेचन करते हैं।

अंश - 1

भूमिका

लेखक व्यंग्य का आरंभ इस सूचना से करता है कि वयोवृद्ध साहित्यकार थक चुके हैं। उनकी अवस्था में आई शारीरिक दुर्बलता का चित्रण करने के लिए लेखक बताता है कि उन्हें चलने के लिए सहारा चाहिए, ठीक से देख पाने के लिए चश्मा जरूरी है, प्रातःकाल बगीचे में घूमने पर उन्हें ठंड लगने से निमोनिया हो सकता है तथा अब वे भोजन को भी आसानी से पचा नहीं पाते।

आप सोचेंगे कि इस पाठ की आरंभिक पंक्तियों में व्यंग्य कहाँ है? ऐसे बूढ़े तो हम रोज़ ही देखते हैं जो लाठी टेककर चलते हैं, चश्मा लगाते हैं, निमोनिया की दवा रखते हैं, कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाते हैं और पाचन का चूरन खाते हैं। आपकी बात ठीक

है। लेकिन आप व्यंग्य से यह उम्मीद मत रखिए कि वह आपको इस लोक से उठाकर किसी दूसरे लोक में ले जाएगा। वह आपके ही जीवन-जगत की विसंगतियों, विषमताओं, बनावटीपन और पाखंड से उभरता है और व्यंग्यकार उन पर चोट करता है। इस व्यंग्य के आरंभ में लेखक ने शरीर से क्षीण होते, साहित्यिक क्षेत्र के ऐसे बूढ़ों का उल्लेख किया है, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर सुख और प्रसिद्धि को प्राप्त की है लेकिन इन सुखों और प्रतिष्ठा को वे छोड़ना नहीं चाहते। प्राकृतिक दृष्टि से तो वे क्षीण या कमज़ोर हो रहे हैं अथवा इस लायक नहीं रहते कि और सुख भोग सकें लेकिन मोह न छोड़ पाने के कारण कृत्रिम या बनावटी उपाय करते हैं। आपने कई बार एक दृश्य देखा होगा कि कोई बूढ़ा व्यक्ति बीड़ी पी रहा है और खाँस रहा है, लगातार बीड़ी पीता है और लगातार खाँसता है। इसका क्या अर्थ है? यही कि नशे ने उसे इस हालत में पहुँचा दिया है और अब वह इस लायक नहीं रह गया है कि और नशा कर सके। इस पाठ के बूढ़े कृत्रिम उपायों के बल पर सड़क पर चलना चाहते हैं, चाँद की तरफ़ देखते हैं, बगीचे में घूमते हैं, संगीत-सभा में बैठते हैं और आवश्यकता से अधिक भोजन करते हैं। होना तो यह चाहिए कि इन बूढ़ों को खुशी के साथ सारा मोह तथा लोभ त्यागकर सब कुछ अगली पीढ़ी को सौंप देना चाहिए, जिससे कि उसके विकास का मार्ग तैयार हो सकें। परंतु यहाँ ऐसा नहीं हैं। इस बात की सूचना इस व्यंग्य के आरंभिक अंश से मिलती है।

विषय-वस्तु

इस आरंभिक अंश के बाद हम पाठ की विषय-वस्तु की ओर आगे बढ़ते हैं। लेखक बताता है कि एक दिन युवाजन उन वृद्धों के पास आए और उनसे निवेदन किया कि वे बहुत वृद्ध तथा यशस्वी हो चुके हैं। अब उन्हें आराम करना चाहिए और आशीर्वाद देते रहना चाहिए, क्योंकि अब वे पूजनीय हो गए हैं। युवकों के अनुसार जिस प्रकार देवताओं को मंदिर में स्थापित कर उनकी पूजा की जाती है, वैसी ही पूजा अब उन वृद्धों की भी होनी चाहिए। वृद्धों को यह बात पसंद आ जाती है परंतु उन्हें शंकाएँ हैं कि उनके यश, उनके झंडों, भोग, आमदनी तथा उनके प्रति श्रद्धा का क्या होगा?

यहाँ आप ज़रा दिमाग पर ज़ोर डालकर सोचें तो पाएँगे कि यश, झंडे, भोग, श्रद्धा और आमदनी से भाव यह है कि अब तक वे वृद्ध अपने जीवन में जो करते रहे, जिस किसी मान्यता या खेमे को स्थापित कर पाए, यश पा सके उन सबकी निरंतर प्रतिष्ठा या प्राप्ति अब कैसे संभव होगी।

इसका समाधान युवकों ने बहुत आसानी से कर दिया। उन्होंने वृद्धों को आश्वासन दिया कि उन्हें रोज़ भोग यानि श्रेष्ठ भोजन आदि उपलब्ध होता रहेगा। मंदिर में उनकी आरती उतारकर श्रद्धा-भाव प्रकट किया जाता रहेगा। वृद्ध साहित्यकारों की जो आमदनी अपनी पुस्तकों की बिक्री से होती थी, जिसे रॉयल्टी कहा जाता है, उन तक नियमित रूप से पहुँचाने की व्यवस्था हो जाएगी।

आप ठीक ही समझ रहे हैं कि जिस प्रकार देवता मंदिर में स्थापित हो सब कुछ प्राप्त करते रहते हैं, वैसे ही ये वृद्ध साहित्यकार भी प्राप्त करते रहेंगे। लेकिन यह साधारण अर्थ है। व्यंग्य यह है कि ये बुजुर्ग केवल इसी लायक रह गए हैं कि बैठकर अगली पीढ़ी

को आशीर्वाद दें और समाज में मूर्ति के रूप में रहें। ये अब जीवन के उस पड़ाव पर पहुँच चुके हैं जिसके बाद सर्जनात्मकता या कुछ नया करने की संभावना समाप्त हो जाती है और जीवन निष्क्रिय हो जाता है। इनकी ज़रूरतें भी अब बहुत अधिक नहीं रह गई हैं। इसलिए सहजरूप में जितना मिल सके उतने में ही इन्हें संतोष करना चाहिए। बहुत अधिक प्राप्त करने के लालच को छोड़ देना चाहिए। देवता नाम में भी व्यंग्य है। जिस प्रकार देवता राग-द्वेष से दूर रहते हैं, उसी प्रकार इन बूढ़ों को भी रहना चाहिए। लेकिन ये देवता के पद को तो अपना लेते हैं पर आचरण देवताओं जैसा नहीं कर पाते।

लेखक के अनुसार एक वयोवृद्ध ने बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल किया कि *''पर हम कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे।''* वृद्धों की यह आशंका स्वाभाविक थी, क्योंकि आप जानते ही हैं कि जीवन में कुछ तो कार्य करना ही चाहिए। अच्छे कार्य को, अपने कर्त्तव्य को निभाना ही कर्म कहलाता है।

इस पर युवकों ने सुझाव दिया कि आप वृद्ध लोग एक-दूसरे को अपने विगत जीवन के संस्मरण सुनाएँ, जिसकी रिकॉर्डिंग करके उसकी पुस्तकें छपवा दी जाएँगी। आपने ऐसे अनेक वयोवृद्ध व्यक्तियों को देखा होगा जो अपने अतीत की प्रशंसा बहुत करते हैं और उसके संस्मरण सुनाते हैं। तो वे बूढ़े भी इसी लायक रह गए हैं कि आपस में बैठकर बीती बातें, किस्से और रोचक संस्मरण सुनाएँ। वृद्ध सहमत हो गए और उन्होंने देवता बनना मंजूर कर लिया।

उपर्युक्त प्रकरण में लेखक ने कई व्यंग्यात्मक प्रहार किए हैं, जो वृद्धों की हठधर्मिता और मोह को प्रकट करते हैं। चलते-चलते ऐसे प्रकाशकों पर भी व्यंग्य किया गया है जो रॉयल्टी देने में आनाकानी करते हैं।

व्यंग्य के अंतिम भाग में वयोवृद्ध साहित्यकारों को देवता बनाकर मंदिरों में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। देवता बनकर प्रतिष्ठित होने के बाद वृद्धों का ध्यान युवकों पर गया। वे उनके बारे में बात करने लगे कि वे बाहर की दुनिया का आनंद ले रहे होंगे और हम मंदिर रूपी कारागार में बंद हैं। बाहर युवकों में से कोई नाटक देख रहा होगा, कोई पकवान खा रहा होगा। सब खुश होंगे, मस्त होंगे। यहाँ पर लेखक कहना चाहता है कि वृद्धजन देवता तो बन गए लेकिन मोह को न छोड़ पाए। इसलिए युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईर्ष्या या जलन का भाव उत्पन्न होता है। लेकिन इनमें एक वृद्ध ऐसा है जो दूसरों की तरह नहीं बल्कि समझदार है। वह कहता है 'वे युवक हैं, तरुण हैं, खाने–खेलने लायक हैं। हम तो इस योग्य अब रहे नहीं, ज़्यादा खाएँगे तो हाजमा खराब होगा। कुछ काम करेंगे तो साँस फूल जाएगी। ये भोग का जीवन अब हमारे लिए नहीं रहा। इतना ही काफी है कि वे हमारी वंदना करते हैं। यही हमारे लिए ठीक भी है।' लेकिन दूसरे देवताओं को यह बात पसंद नहीं आई, उन्होंने प्रतिवाद में कहा कि जो हमारा था उस पर युवकों ने अधिकार जमा लिया। जहाँ कभी हम थे वहाँ वे हैं, हमें केवल मूर्ति बनाकर रख दिया गया है। प्रायः सभी देवताओं के मन में अपने अधिकार वापस लेने की लालसा थी। वह देवता इनमें शामिल न हुआ और उसने वही किया जो ऐसे मौके पर अकेला पड़ गया व्यक्ति करता है। वह चुपके से वहाँ से उठकर मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया। इस बूढ़े व्यक्ति के प्रति आपके मन में कैसा भाव जगता है? सभी देवताओं में यही आपको सही और अच्छा लगा होगा। वह इसलिए कि

लेखक भी चाहता है कि बुजुर्गों को ऐसा ही होना चाहिए। उन्हें अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए, खासतौर पर युवाओं के प्रति। इसका अर्थ यह हुआ कि लेखक सभी बुजुर्गों पर व्यंग्य नहीं करता। केवल ऐसे लोगों पर व्यंग्य करता है जो अपने निरर्थक स्वार्थ के कारण दूसरों का मार्ग रोककर खड़े हो जाते हैं।

पाठगत प्रश्न 17.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. देवता जब अकेले छूट गए, उनका ध्यान तरुणों पर गया क्योंकि

   (क) वे सड़कों पर घूम रहे थे।

   (ख) वे नाटक देख रहे थे।

   (ग) वे कविता सुना रहे थे।

   (घ) उन्होंने वृद्धों का स्थान ले लिया था।

2. वृद्ध बातें करते-करते एकदम उदास हो गए थे क्योंकि

   (क) उनके खाने-पीने का ध्यान नहीं रखा जा रहा था।

   (ख) उन्हें प्रकाशक रॉयल्टी नहीं दे रहा था।

   (ग) वे देवता बने मंदिर में सजे थे और युवा आनंद मना रहे थे।

   (घ) वे संगीत-सभा का आनंद नहीं ले पा रहे थे।

3. तरुणों ने वृद्धों को किस रूप में प्रतिष्ठित कर दिया?
4. युवकों ने वृद्धों को कर्मशील बने रहने के लिए क्या सलाह दी?
5. वृद्ध सबसे अधिक किस बात पर क्षुब्ध थे?

अंश - 2

उपसंहार

अंत में देवताओं ने सलाह करके जो निष्कर्ष निकाला वह शाम को युवकों के आने पर ज़ाहिर हुआ। जैसे ही युवक थाल में मिठाई सजाकर लाए तो देखा कि देवता लोग चबूतरे पर खड़े हैं और उन्होंने युवकों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए।

युवकों ने इस पथराव का कारण पूछा। देवताओं ने कहा तुमने हमें उन सबसे रहित कर दिया जो कल तक हमारा था। अब युवकों ने स्पष्ट किया कि उन सबसे वंचित रहने का मूल कारण उनकी बढ़ती उम्र, ढलती शक्ति आदि ने किया है–हमने नहीं। फिर भी हम तुम्हें सम्मान दे रहे हैं और तुम हो कि पत्थर से हमें चोट पहुँचा रहे हो, हमें अपमानित कर रहे हो।

इस पर देवताओं ने पहले से तैयार अपना फ़ैसला सुना दिया कि जिन राहों पर हम

चले थे, उन पर युवक न चलें, जो हमारा भोज्य था, वह युवक नहीं खाएँगे तथा झंडे भी हमारे ही फहराये जाएँगे, युवकों के नहीं।

आप समझ ही रहे होंगे कि झंडे से यहाँ तात्पर्य अपना सिद्धांत, अपना मत और अपना वर्चस्व है।

नए युग के युवकों ने देवताओं का फैसला मानने से इनकार कर दिया जिस पर कुपित हो देवताओं ने उन्हें पत्थर मारने शुरूकर दिए और जैसी कि उम्मीद थी, एक युवक ने आव देखा न ताव, पीपल के पेड़ पर फहरा रहे देवताओं के झंडों को ही फाड़ कर फेंक दिया। दोनों ओर से हमले होने लगे और जब एक राहगीर ने दूसरे से मामला पूछा, जवाब आया– यह लड़ाई नहीं है बल्कि दो पीढ़ियों के बीच कलागत मूल्यों पर बहस हो रही है। कलागत मूल्य एक व्यंग्योक्ति है। बरसों तक कला को लेकर प्रश्न उठते रहे हैं लेकिन उनके निश्चित उत्तर आज भी नहीं मिल पाए हैं। ऐसे ही पुरानी और नई पीढ़ी के बीच यह बहस सदा जारी है। इसके जरिए परसाई जी भी उन बहसों पर कटाक्ष कर रहे हैं जो व्यर्थ में केवल विरोध के लिए की जाती हैं, उनसे समाज को हासिल कुछ नहीं हो पाता।

यह था इस व्यंग्य रचना का कथ्य। यह पीढ़ियों के संघर्ष को उजागर करता है। नई पीढ़ी को दायित्वहीन कहने वाली पुरानी पीढ़ी दरअसल नए लोगों पर दायित्व सौंपना ही नहीं चाहती। उसे भय रहता है कि कहीं हमारे वर्चस्व को समाप्त करके नई पीढ़ी अपना वर्चस्व स्थापित न कर ले। हम समझ सकते हैं कि पुरानी पीढ़ी की यह लालसा और झूठा भय किस प्रकार समाज की युवा-पीढ़ी के विकास, उसकी स्वतंत्रता और सुख-समृद्धि को प्रभावित करती है। जिस समाज में ऐसी पुरानी पीढ़ी होगी उस समाज के युवक कुंठित, आत्म विश्वास विहीन तथा अकेलेपन से ग्रस्त होकर समाज विरोधी होंगे।

शीर्षक की सार्थकता

इस व्यंग्य का शीर्षक है ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'' पीढ़ियाँ वय (उम्र) और अनुभव के भेद को दर्शाती हैं। पुरानी पीढ़ी के अंतर्गत वृद्ध माता-पिता, गुरु आदि आते हैं तथा नई पीढ़ी के अंतर्गत युवा, शिष्य, पुत्र आदि आते हैं। हर पीढ़ी की अपनी अलग सोच होती है, जो पीढ़ी के बदलते ही नया रूप ग्रहण कर लेती है। प्रायः पीढ़ी का यह क्रम बारह से सोलह वर्षों में बदल जाता है, क्योंकि लगभग इतने समय में ही छोटे बच्चे युवक बन जाते हैं।

गिट्टियाँ होती हैं ढेले, छोटे-छोटे पत्थर या इसी प्रकार का कोई अन्य तत्त्व।

एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को गिट्टियाँ मारती है, पत्थर मारती है अर्थात् प्रताड़ित करती है। नई पुरानी पीढ़ियों में कोई भी अपने को दूसरे से नीचा नहीं देखना चाहता, इसीलिए दोनों में संघर्ष चलता रहता है। संघर्ष प्रायः विचार, सोच, मत के धरातल पर होता है। लेखक ने संकेत से इसे गिट्टियाँ कहा है।

अपने विचारों को दूसरों पर लादने के कारण इस रचना का यह शीर्षक ''पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ'' सार्थक लगता है।

क्रियाकलाप

हमारे परिवारों में अधिकतर वृद्ध नई पीढ़ी के विरोधी नहीं होते। वे किशोरों और युवकों के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करते हैं। उन्हें अपना फ़ैसला खुद करने के अधिकार देते हैं और उनके मानसिक विकास के रास्ते खोलते हैं। इस संबंध में आपका भी कोई-न-कोई अनुभव अवश्य रहा होगा। उसका उल्लेख कीजिए।

पाठगत प्रश्न 17.2

सही विकल्प चुनकर पूछे गए निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वृद्ध तरुणों को पत्थर मार रहे थे, क्योंकि–
   (क) तरुण उनकी पूजा करते थे।
   (ख) वे उन सड़कों पर चल रहे थे, जो वृद्धों की थी।
   (ग) वे मान रहे थे कि इन्हें सुविधाओं से वंचित किया गया है।
   (घ) उन्हें पूजा नहीं चाहिए थी।
2. जो वृद्ध मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया था–
   (क) उसी ने युवकों पर पत्थर फेंके।
   (ख) वह सबसे अधिक सुविधाएँ चाहता था।
   (ग) वह युवकों से सहानुभूति रखता था।
   (घ) फिर से आकर वृद्धों के साथ मिल गया।
3. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' शीर्षक व्यंग्य रचना के लेखक कौन हैं?
4. इस रचना में नई पीढ़ी के लोगों ने पुरानी पीढ़ी के लोगों को कहाँ स्थापित कर दिया।

17.5 भाषा-शैली

'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' हरिशंकर परसाई की एक व्यंग्य-रचना है। पहले आप पढ़ चुके हैं कि व्यंग्य किसे कहते हैं। जी, हाँ। किसी भी बात को सीधे-सीधे न कह कर उचित शब्दों और मुहावरों का उलट-पुलट और चमत्कृत प्रयोग ही बात में व्यंग्य पैदा करता है।

'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' नामक व्यंग्य एक ओर तो वृद्धों की बढ़ती उम्र परंतु मन में दबी इच्छाओं को उद्घाटित करता है, तो दूसरी ओर अगली पीढ़ी के तरुण और युवा जो वृद्धों द्वारा जीवन की सुविधाओं और साधनों पर रोक-टोक से परेशान थे, उनकी मनः स्थिति को बताता है। दोनों पीढ़ियों के बीच इस वर्चस्व को लेकरऽसंघर्ष होता है।

पूरा व्यंग्य आम बोलचाल की भाषा में लिखा गया है। इसमें वाक्य छोटे-छोटे हैं, जो संवाद के रूप में लिखे गए हैं। ये संवाद विषय के अनुरूप और सटीक हैं। कहीं-कहीं तो लेखक ने हाज़िरजवाबी का परिचय दिया है। उदाहरण के लिए:

''और हमारे भोग का क्या होगा?''

''हम आपके भोग का भी प्रबंध करेंगे। रोज़ हम पकवानों के थाल लेकर आएँगे।''

''हमें श्रद्धा भी तो चाहिए। उसका क्या प्रबंध होगा?''

''हम रोज़ आपकी आरती करेंगे और आपके चरणों पर मस्तक रखेंगे।''

व्यंग्य की भाषा की यह विशेषता होती है कि देखने में तो शब्द और वाक्य-संरचना बिल्कुल स्पष्ट और सीधी-सादी होती है परंतु अर्थ की दृष्टि से वह बहुत गहरी और गंभीर बात की ओर संकेत करती है। जैसे पाठ के शुरू में ही फिर से पढ़िए–

''साहित्य के वयोवृद्ध थकित हुए''

''वे लाठी टेकते हुए सड़क पर चलते। मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते, निमोनिया की दवा जेब में रखकर बगीचे में घूमते। कान में ऊँचा सुनने का यंत्र लगाकर संगीत-सभा में बैठते। भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।''

पहला वाक्य बताता है कि आगे लिखी सभी बातें साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत वयोवृद्ध और जीवन से थके व्यक्तियों के लिए लिखी गई हैं। और उसके बाद का एक-एक वाक्य व्यंग्य में लिखा गया है अर्थात् वाक्य तो सीधे हैं परंतु वे अर्थ कुछ और ही देते हैं। जैसे ''मोटा चश्मा लगाकर चाँद देखते।'' में कहने का तात्पर्य है कि उन वृद्धों को कुछ दिखाई नहीं देता है, फिर भी इच्छा चाँद को देखने की है।

इसी प्रकार बगीचे में घूमना उन्हें इतना पसंद है कि वे ठंड में भी घूमते हैं, परंतु कहीं निमोनिया न हो जाए इस डर से हमेशा दवाइयाँ भी खाते रहते हैं। संगीत-सभा में जाना उनके लिए अधिक महत्त्वपूर्ण है, चाहे वे उसे यंत्र लगाकर ही क्यों न सुनें। उनकी चूरन खाने की मात्रा भोजन से अधिक होती है यानी की भोजन पचाने के लिए भोजन से अधिक चूरन खाने पर मजबूर हैं। कहने का तात्पर्य हुआ कि जितना उन्हें भोगना था भोग चुके हैं पर अभी भी तमन्ना है– हर चीज को और अधिक भोगने की। संतुष्टि कहीं भी नहीं है। आगे भी इसी प्रकार के वाक्य हैं, ध्यान दीजिए–

''हमारे अर्थ का क्या होगा?''

''आपकी रॉयल्टी हम मंदिर में ही पहुँचा दिया करेंगे। आपको हम हर पाठ्य-पुस्तक में रखवाएँगे, और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा, उसे ठीक करेंगे।''

ये सभी बातें वृद्ध साहित्यकारों पर कटाक्ष करती हैं। साहित्यकार सदैव रॉयल्टी के लिए परेशान रहते हैं, पाठ्य-पुस्तकों में अपनी रचनाएँ रखवाने के लिए हा-हा खाते हैं, प्रकाशकों से हमेशा परेशान रहते हैं और विशेष रूप से आप ''ठीक करेंगे'' शब्द पर ध्यान दीजिए यह पूरी बात से स्पष्ट होता है कि यहाँ ठीक करेंगे का अर्थ है– डंडे के बल पर प्रकाशक से रॉयल्टी आपके लिए ले आया करेंगे यानी कि तरुण वृद्धों के लिए एक बहुत बड़ा काम करके देंगे जो उनके बस की बात नहीं है।

लेखक ने एक स्थान पर कहा है **'स्मरणीयो, सुनामधन्यो!'** यह संबोधन वाचक है। हिंदी भाषा में संबोधन का प्रयोग करते समय अक्सर लोग एक बिंदी और लगा देते हैं जैसे ''प्रिय मित्रों'' जो गलत है, सदैव 'प्रिय मित्रो!', 'प्रिय बहनो!' का ही प्रयोग करना उचित है जो भाषाई दृष्टि से शुद्ध है।

आगे वाक्य पर ध्यान दीजिए "**युवकों** ने एक दिन समारोहपूर्वक **वयोवृद्धों** को देवता बनाकर मंदिर में प्रतिष्ठित कर दिया–तब उनका ध्यान **तरुणों** पर गया।" "**सड़कों** पर घूम रहे **होंगे**" इन काले उभरे शब्दों में मात्रा के साथ बिंदी भी लगी है यहाँ इन सभी का **प्रयोग बहुवचन** के लिए किया गया है।

लेखक ने पूरे पाठ में व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। अब तक आप समझ चुके होंगे कि व्यंग्यात्मक शैली किसे कहते हैं? जी, हाँ **व्यंग्यपूर्ण अंदाज़ में किसी बात को कहना ही व्यंग्यात्मक शैली होती है।**

लेखक ने स्थान-स्थान पर मुहावरों का **सटीक** प्रयोग किया है, जैसे–आनाकानी करना–किसी बात को टालना, ठीक करना–बलपूर्वक काम करवाना, ऊँचा सुनना–कम सुनाई देना, खाने-खेलने देना–जीवन का आनंद लेने देना।

आइए, अब कुछ बातें शब्द-शक्ति के बारे में करते हैं। **शब्द-शक्तियाँ मुख्यतः तीन प्रकार की होती हैं–अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।** जब किसी बात को सीधे-सादे शब्दों में कहा जाता है और वे शब्द प्रचलित अर्थ बताते हैं, **अभिधा** कहलाती है। जैसे–आप कहें कि मैंने चाँद देखा इसका सीधा-साधा अर्थ हुआ कि रात को आकाश में चमकता हुआ चाँद देखा। परंतु यदि यह कहें कि मैंने सुबह-सुबह चाँद देखा तो इसका अर्थ होगा कि मैंने सुबह ही किसी अपने परम प्रिय व्यक्ति का चेहरा देखा क्योंकि आप जानते हैं कि सुबह चाँद दिख ही नहीं सकता। शब्दों की वह शक्ति जो मुख्य अर्थ से हटकर अर्थ दे और साथ-साथ अन्य अर्थ की कल्पना करनी पड़े तो वह **लक्षणा** कहलाती है। तीसरे प्रकार की शक्ति को **व्यंजना** कहते हैं। व्यंजना का अर्थ होता है–विशेष प्रकार का अर्थ। यह परिस्थिति के अनुसार अर्थ देता है। जैसे किसी सोते हुए बच्चे से कहें कि बाहर सवेरा हो गया चिड़िया बोलने लगी। इसका अर्थ यह हुआ कि अब तुम भी उठ जाओ और बिस्तर छोड़ दो। किसी भी व्यंग्य में 'व्यंजना' शब्द-शक्ति का अधिक से अधिक प्रयोग किया जाता है।

भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत "केंद्रीय हिंदी निदेशालय" ने 'मानक वर्तनी' की पुस्तिका प्रकाशित की है जिसका पालन इस पाठ्य पुस्तक में यथासंभव किया गया है, जैसे 'गिट्टियाँ' मुद्रित किया गया। संयुक्ताक्षरों को पृथक-पृथक आगे-पीछे लिखना चाहिए, जैसे 'गद्‌य' 'गद्य' नहीं। फिर भी प्रेस के कारण 'वृद्‌ध' के स्थान पर 'वृद्ध' भी चला गया है। कंप्यूटर के युग में जबकि 'स्पेलचेक' (वर्तनी जाँचक) ही सब कुछ भविष्य में ठीक करेगा, वर्तनी की एकरूपता वह भी लिखित शब्दों का मानक रूप अत्यावश्यक है।

पंचमवर्ण के शुरू पर पहले वर्ण के ऊपर बिंदी का प्रयोग ही मान्य है, जैसेः–

'कादम्बिनी' के स्थान पर 'कादंबिनी' 'अन्तर' के स्थान पर 'अंतर' 'मन्दिर' के स्थान पर 'मंदिर', 'प्रबन्ध' के स्थान पर 'प्रबंध' लेखक की मूल प्रति से छेड़छाड़ नहीं की गई है, ऐसी स्थिति में पुरानी वर्तनी का प्रयोग भी आपको इस पाठों में दिखाई देगा।

भाषा कार्य

निम्नलिखित कथनों को पढ़िए–

1. वे प्रातः स्मरणीय हैं, सुनामधन्य हैं। वृद्ध हो गए हैं।

2. प्रातः स्मरणीयो, सुनामधन्यो! आप अब वृद्ध हुए।
3. अब आप आराम से रहें।

क्या आप तीनों कथनों को एक ही स्वर में पढ़ते हैं? निश्चय ही नहीं। पहला कथन तीन साधारण वाक्यों से बना है और आप विरामचिह्नों पर रुकते हुए लगभग समान स्वर में वाक्य कह जाते हैं, किंतु दूसरे वाक्य में आप पहले वाक्य के ही शब्दों को संबोधन के रूप में बोलते हैं तो अंत में अपने सुर को खींचते हैं। तीसरे वाक्य में फिर सुर बदल जाता है।

भाषा में कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं, जिन्हें लिपि से नहीं समझाया जा सकता। वे हैं बलाघात और अनुतान। शब्द के एक अंश को बोलने में जो बल दिया जाता है, उसे ही बलाघात कहते हैं। जैसेः अब आप आराम से रहें–'इस वाक्य में *'अब'* और 'आप' में पहले अक्षर पर बलाघात है किंतु 'आराम' में 'रा' पर। इसी प्रकार ऊपर दिए अन्य वाक्यों में भी शब्दों में बलाघात का स्थान बोलकर पहचानिए। 'प्रातः स्मरणीयो' में 'तः' पर, 'सुनामधन्यो' में 'ना' पर बलाघात है।

अनुतान उच्चारण की सुरलहर है। प्रश्न पूछने में प्रायः वाक्य के अंत में सुर ऊँचा उठता है। संबोधन में संबोधन वाले शब्द के अंत में अनुतान होता है, जैसेः

- *देवताओ! पत्थर क्यों मार रहे हो?*
- *किससे वंचित किया है?*
- *और कोई जी भी नहीं सकता!*

'दो कलाकार' कहानी को भी उचित अनुतान और बलाघात के साथ पढ़िए।

पाठगत प्रश्न 17.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. "लड़के इस समय न जाने क्या कर रहे होंगे।"–वृद्ध के इस कथन में कौन-सा भाव निहित है?
   (क) लड़कों के प्रति सहानुभूति का।
   (ख) देवता बन जाने पर भी मोह न छोड़ पाने का।
   (ग) भोग नहीं लगाए जाने के कारण लड़कों के प्रति क्रोध का।
   (घ) लड़के उनकी रायल्टी नहीं लाए थे इसलिए नाराज़गी का।

2. "दो पीढ़ियों की कलागत मूल्यों पर बहस चल रही है।" इस कथन के द्वारा नागरिक–
   (क) देवताओं और तरुणों पर व्यंग्य कर रहा है।
   (ख) दो पीढ़ियों की बहस पर गंभीरता से विचार कर रहा है।
   (ग) समाज के लिए दो पीढ़ियों का महत्त्व बता रहा है।
   (घ) युवकों के पागलपन के बारे में बता रहा है।

3. निम्नलिखित मुहावरों का प्रयोग करते हुए एक-एक वाक्य बनाइए–
   (क) आनाकानी करना ....

(ख) वाह-वाह लूटना ....

(ग) खाने-खेलने देना ....

4. किसी भी व्यंग्य रचना में प्रायः कौन-सी शब्द-शक्ति सर्वाधिक उपयोग में लाई जाती है?

5. ''खाने-खेलने दो लड़कों को'' यह कथन किसका है?

17.6 आपने क्या सीखा

1. 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, जो साहित्यिक क्षेत्र के वृद्धों और युवकों की मानसिकता को स्पष्ट करती है।
2. व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो व्यक्ति को झकझोर देती है।
3. व्यंग्य में विचारों की गहराई होती है ज़ो व्यक्ति को सोचने पर मजबूर करती है। व्यंग्य को अंग्रेज़ी में 'सटायर', गुजराती में 'कटाक्ष' और उर्दू में 'तंज' कहते हैं।
4. व्यंग्य में मुहावरे और व्यंग्योक्तियों का बहुत महत्त्व होता है, जो भाषा को अधिक प्रभावशाली और पैना बनाता है।
5. पाठ में छोटे-छोटे वाक्य संवादात्मक और व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किए गए हैं।
6. भाषा सरल है। मुहावरों का सटीक प्रयोग किया गया है।
7. पाठ में दो पीढ़ियों का संघर्ष दर्शाया गया है।

17.7 योग्यता विस्तार

1. लेखक परिचय

विख्यात व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई का जन्म 22 अगस्त 1922 को मध्य प्रदेश में जिला होशंगाबाद के जामनी गाँव में हुआ। नागपुर विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. करने के बाद उन्होंने कुछ समय तक नौकरी की। उन्होंने सन् 1957 से लेखन को ही आजीविका का साधन बनाया। जबलपुर से 'वसुधा' नामक पत्रिका निकाली। 'नई दुनिया', 'नई कहानियाँ' तथा 'सारिका' में स्थायी स्तंभ लिखे। आप व्यंग्य-सम्राट कहे जाते हैं। आपकी रचनाओं में 'रानी नागफनी की कहानी', 'सदाचार का ताबीज', 'वैष्णव की फिसलन', 'ठिठुरता हुआ गणतंत्र', 'विकलांग श्रद्धा का दौर' प्रमुख हैं। आपकी समस्त रचनाएँ 'परसाई रचनावली' के रूप में छह खंडों में संकलित है। आपके व्यंग्य कथात्मकता और करुणा लिए होते हैं। दिनांक 18 अगस्त 1995 को जबलपुर में आपका देहावसान हुआ।

टिप्पणी

2. हरिशंकर परसाई समकालीन व्यंग्यकारों में सबसे बड़े रचनाकार माने जाते हैं। वे समाज में फैली विसंगतियों, असमानताओं तथा विडंबनाओं का बहुत विनोदपूर्ण वर्णन करते हैं। सामाजिक तथा राजनैतिक समस्याओं पर उनकी कलम खूब चलती है।

3. प्रत्येक विधा में तीन-चार पीढ़ियाँ एक साथ लिखती रहती हैं। व्यंग्य की चार पीढ़ियों का लेखन एक साथ चलता रहा है। परसाई जी की पीढ़ी में शरद जोशी, रवींद्रनाथ त्यागी। उनके बाद वाली दूसरी पीढ़ी में नरेंद्र कोहली, शंकर पुणताम्बेकर और अशोक शुक्ल, तीसरी पीढ़ी में ज्ञान चतुर्वेदी, प्रेम जनमेजय और हरीश नवल तथा चौथी पीढ़ी में डॉ. शरद राकेश, शिवानंद कामड़े आदि हैं।

4. प्रस्तुत रचना का नाट्य रूपांतर करके अपने घर, मोहल्ले या किसी संस्था में नाट्य प्रस्तुत कीजिए।

5. आस-पास के पुस्तकालयों में जाइए और व्यंग्य संकलन लेकर पढ़िए और जानने की कोशिश कीजिए कि किस प्रकार यह कहानी या निबंध से अलग है।

17.8 पाठांत प्रश्न

1. व्यंग्य किसे कहते हैं? 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, सिद्ध कीजिए।
2. नई पीढ़ी, पुरानी पीढ़ी से क्या चाहती है?
3. पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे क्यों नहीं आने देते?
4. लेखक ने सभी वृद्धों पर व्यंग्य किया है या खास प्रकार के वृद्धों पर? पाठ से उदाहरण देते हुए अपनी बात सिद्ध कीजिए।
5. तरुणों और वृद्धों के संवादों को अपने शब्दों में विवरण के रूप में लिखिए।
6. एक देवता जो मंदिर के दूसरे हिस्से में चला गया, उसके बारे में अपने विचार लिखिए।
7. स्नेहपूर्ण सामाजिक वातावरण, युवकों के मानसिक-भावनात्मक विकास और भौतिक उपलब्धियों के लिए पुरानी और नई पीढ़ी के बीच किस प्रकार का संबंध आवश्यक है?
8. निम्नलिखित उक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए:
   (क) वे भोजन से अधिक मात्रा में पाचन का चूरन खाते।
   (ख) आपको हम हर पाठ्य-पुस्तक में रखवायेंगे और जो प्रकाशक धन देने में आनाकानी करेगा उसे ठीक करेंगे।
   (ग) आप लोगों की संस्मरण की अवस्था है। आप लोग आपस में संस्मरण सुनायेंगे ही। उनका रिकार्डिंग होता जाएगा और हम पुस्तक छपवा देंगे।
   (घ) लड़के बाहर ऐसा आनंद कर रहे हैं और देवता बने हम मंदिर की कारा में बैठे हैं।

(ङ) तुम बिल्कुल निःसत्व हो। तुम्हें इस बात का बुरा नहीं लगता कि जहाँ-जहाँ हम थे, वहाँ-वहाँ वे जम गए हैं।

9. हरिशंकर परसाई की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

10. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

वृद्ध की चाह थी कि बेटा तर्क न कर, उसके इंगित किए पथ पर चले, पर बेटे का पथ अपने हृदय की आकांक्षाओं की ओर था। हर बात पर दोनों में मतभेद रहता। अपनी-अपनी राय में दोनों ही सही थे।

एक दिन अपनी जरा-विकंपित गरदन को प्रयत्नपूर्वक रोकते हुए बूढ़े ने कहा– ''मूर्ख, मुझे उपदेश देता है! जुमा-जुमा आठ दिन; कल ही तो तू पैदा हुआ था! तब मैं तुझे अपनी गोद में न लेता, तो माँस के एक लोथड़े की तरह गिद्ध तुझसे अपना त्योहार मना लेते!''

प्राचीनता के प्रति भीतर उमड़ी अवज्ञा की बाढ़ को प्रयत्नपूर्वक रोकते हुए युवा ने कहा– ''मैं नहीं चाहता कि तुम्हारी घिसी हुई अक्ल के भरोसे पर चलूँ। मुझमें उमंग है, साहस है, मैं अपना पथ स्वयं निर्माण करूँगा!''

आकाश दोनों की बातें सुन रहा था। उसने अठखेलियाँ करती अपनी तारिकाओं से कहा– ''एक के पास अनुभव है और दूसरे के पास उत्साह, पर दोनों ही भटक गए हैं। बूढ़े की आँखों में 'कल' की कला है, पर 'आज' की शक्ति का अनुभव उसे नहीं हो पाता और युवा देखता है, केवल 'आज' की ऊँची अट्टालिका, पर उसकी नींव रखने में 'कल' ने जो श्रम किया था, उधर उसकी नज़र नहीं जाती!''

बूढ़ा और युवक एक दूसरे को घूर रहे थे। आकाश की बातें क्या उन्होंने सुनीं?

(क) दो पीढ़ियों के किस मतभेद की ओर लेखक ने संकेत किया है?

(ख) वर्तमान पीढ़ी को किस बात पर अधिक विश्वास है?

(ग) आकाश क्या सुझाव देना चाहता है?

(घ) कल्पना कीजिए यदि आकाश की बातें बूढ़े और युवक ने सुनी होतीं तब उनकी क्या प्रतिक्रिया होती।

(ङ) यदि आप युवक के स्थान पर होते तब आपकी क्या प्रतिक्रिया होती?

11. इस पाठ में साहित्य की पुरानी और नई पीढ़ी का संघर्ष दिखाया गया है। ऐसा संघर्ष हम जीवन के दूसरे क्षेत्रों में भी देखते हैं। आप अपना कोई ऐसा अनुभव लिखिए जब आपको लगा हो कि बुजुर्गों का अनावश्यक हस्तक्षेप युवकों की स्वतंत्रता और उनके विकास को बाधित करता है।

17.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ग) 3. (ख), (क), (घ), (ङ), (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1 1. (घ), 2. (ग) 3. देवता रूप में,
4. आपस में संस्मरण सुनाएँ, बाद में किताबें प्रकाशित हो जाएँगी।
5. अपना अधिकार युवकों के हाथों में चले जाने पर

17.2 1. (ग), 2. (ग) 3. हरिशंकर परसाई, 4. मंदिर में

17.3 1. (ख) 2. (क) 3. स्वयं कीजिए, 4. व्यंजना शब्द-शक्ति
5. समझदार वृद्ध का

18

कुटज

301hi18

क्या आपके साथ कभी ऐसा हुआ कि आपको ज़रा-सा कष्ट हुआ और आप घबरा गए, अपने जीवन को, अपनी इस अमूल्य मानव देह को कोसने लगे और कल्पना करने लगे उस 'सुखी' ज़िंदगी की, जहाँ न रोज़-रोज़ का झंझट हो, न दैनिक जीवन के कार्य करने पड़ें, न किसी गलत कार्य करने पर बड़ों से डाँट पड़े न मार का डर हो, न ही किसी और प्रकार की चिंता। जहाँ बस सुख ही सुख हों। ऐसी कल्पना करते-करते कभी आपको पक्षियों से भी ईर्ष्या हुई होगी कि वाह! क्या! मजे हैं! जहाँ चाहे जब चाहे झट से उड़ कर पहुँच जाते हैं। ऐसा हुआ है न कभी-कभी?

अब ज़रा सोचिए कि इसका कारण क्या है? इसका कारण है–''सही प्रकार से जीने की कला न आना।'' जिस दिन आप यह कला सीख जाएँगे, उस दिन आपका जीवन सुखमय हो जाएगा। कितनी ही मुश्किलें क्यों न आएँ, आप हिम्मत नहीं हारेंगे, परेशान नहीं होंगे।

तो आइए, यह कला सीखें, किसी स्कूल से नहीं, किसी बड़े ज्ञानी, विद्वान महापुरुष से भी नहीं, महज एक छोटे से ठिगने से पेड़ 'कुटज' से।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- 'शिवालिक' के बारे में समझा सकेंगे;
- 'कुटज' शब्द की उत्पत्ति और अर्थ बता सकेंगे;
- 'कुटज' से प्रेरणा लेकर कठिन परिस्थितियों में भी प्रसन्नतापूर्वक और दृढ़ता से जीने की कला सीख सकेंगे;
- 'कुटज' के निःस्वार्थ गुणों का वर्णन करते हुए प्रकृति के संदेशों की व्याख्या कर सकेंगे;

- ललित निबंध की विशेषताएँ बताते हुए 'कुटज' का विश्लेषण कर सकेंगे;
- पाठ में प्रयुक्त सूक्तिपरक वाक्यों की व्याख्या कर सकेंगे;
- निबंध की आलंकारिक और वर्णनात्मक शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

(क) अपने आस-पास आपने ऐसे पेड़-पौधे लगे देखें होंगे जिन्हें, बहुत देखभाल की आवश्यकता होती है। माली खाद, पानी, गुड़ाई आदि समय-समय पर आवश्यकता के अनुसार करता है। ऐसे किन्हीं पाँच पेड़-पौधों के नाम यहाँ लिखिए:

....

....

(ख) आपने अपने आस-पास ऐसे पेड़-पौधे ज़रूर देखे होंगे जो साल भर सिर्फ़ बरसात के पानी पर जीवित रहते हैं। उन्हें कोई नहीं सींचता। ऐसे किन्हीं पाँच पेड़-पौधों के नाम यहाँ पर लिखिए:

....

....

18.1 मूलपाठ

आइए, 'कुटज' नामक निबंध को एक बार ध्यान से पढ़ लेते हैं। साथ ही सहायता के लिए दिए गए कठिन शब्दों के अर्थ भी समझते चलते हैं।

कुटज

कहते हैं, पर्वत शोभा-निकेतन होते हैं। फिर हिमालय का तो कहना ही क्या! पूर्व और अपर समुद्र–महोदधि और रत्नाकर–दोनों को दोनों भुजाओं से थामता हुआ हिमालय ''प थ्वी का मानदण्ड'' कहा जाय तो गलत क्या है? कालिदास ने ऐसा ही कहा था। इसी के पाद-देश में यह जो श्रंखला दूर तक लोटी हुई है, लोग इसे 'शिवालिक' श्रंखला कहते हैं। 'शिवालिक' का क्या अर्थ है? 'शिवालिक' या शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा तो नहीं है? लगता तो ऐसा ही है। 'सपादलक्ष' या सवा लाख की मालगुजारी वाला इलाका तो वह लगता नहीं! शिव की लटियाई जटा ही इतनी सूखी, नीरस और कठोर हो सकती है। वैसे, अलकनन्दा का स्रोत यहाँ से काफ़ी दूरी पर है, लेकिन शिव का अलक तो दूर-दूर तक छितराया ही रहता होगा। सम्पूर्ण हिमालय को देखकर ही किसी के मन में समाधिस्थ महादेव की मूर्ति स्पष्ट हुई होगी। उसी समाधिस्थ महादेव के अलक-जाल के निचले हिस्से का प्रतिनिधित्व यह गिरि-श्रंखला

शब्दार्थ

महोदधि – समुद्र

अपर – अन्य, दूरवर्ती

पाद-देश – हिमालय के दक्षिण में स्थित प्रदेश

लटियाई जटा – जटा, उलझे हुई बालों का समूह

टिप्पणी

कर रही होगी। कहीं-कहीं अज्ञात-नाम-गोत्र झाड़-झंखाड़ और बेहया-से पेड़ खड़े दिख अवश्य जाते हैं, पर कोई हरियाली नहीं। दूब तक सूख गई है। काली-काली चट्टानें और बीच-बीच में शुष्कता की अंतर्निरुद्ध सत्ता का इजहार करने वाली रक्ताभ रेती है! रस कहाँ है? ये जो ठिंगने-से लेकिन शानदार दरख्त गर्मी की भयंकर मार खा-खाकर और भूख-प्यास की निरन्तर चोट सह-सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहूँ? सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हँस भी रहे हैं। बेहया हैं क्या? या मस्तमौला हैं? कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफ़ी गहरे पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।

शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कराते हुए ये व क्ष द्वन्द्वातीत हैं, अलमस्त हैं। मैं किसी का नाम नहीं जानता, कुल नहीं जानता, शील नहीं जानता, पर लगता है, ये जैसे मुझे अनादि काल से जानते हैं। इन्हीं में एक छोटा-सा—बहुत ही ठिंगना—पेड़ है, पत्ते चौड़े भी हैं, बड़े भी हैं। फूलों से तो ऐसा लदा है कि कुछ पूछिए नहीं। अजीब-सी अदा है, मुस्कराता जान पड़ता है। लगता है, पूछ रहा है कि क्या तुम मुझे नहीं पहचानते? पहचानता तो हूँ, अवश्य पहचानता हूँ। लगता है, बहुत बार देख चुका हूँ, पहचानता हूँ उजाड़ के साथी,

तुम्हें अच्छी तरह पहचानता हूँ। नाम भूल रहा हूँ। प्रायः भूल जाता हूँ। रूप देखकर प्रायः पहचान जाता हूँ, नाम नहीं याद आता। पर नाम ऐसा है कि जब तक रूप के पहले ही हाज़िर न हो जाय, तब तक रूप की पहचान अधूरी रह जाती है। भारतीय पंडितों का सैकड़ों बार का कचारा-निचोड़ा प्रश्न सामने आ गया—रूप मुख्य है या नाम? नाम बड़ा है या रूप? पद पहले है या पदार्थ? पदार्थ सामने है, पद नहीं सूझ रहा है। मन व्याकुल हो गया, स्म तियों के पंख फैलाकर सुदूर अतीत के कोनों में झाँकता रहा। सोचता हूँ, इसमें व्याकुल होने की क्या बात है? नाम में क्या रखा है—हाट्स देअर इन ए नेम! नाम की जरूरत ही हो तो सौ दिए जा सकते हैं। सुस्मिता, गिरिकांता, वनप्रभा, शुभ्रकिरीटिनी, मदोद्धता, विजितातपा, अलकावतंसा, बहुत-से नाम हैं। या फिर पौरुष - व्यंजक नाम भी दिये जा सकते हैं — अकुतोभय, गिरिगौरव, कूटोल्लास, अपराजित, धरती धकेल, पहाड़फोड़, पातालभेद! पर मन नहीं मानता। नाम इसलिए बड़ा नहीं है कि वह नाम है। वह इसलिए बड़ा होता है कि उसे सामाजिक स्वीकृति मिली होती है। रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज-सत्य है। नाम उस पद को कहते हैं, जिस पर समाज की मुहर लगी होती है, आधुनिक शिक्षित लोग जिसे 'सोशल सैंक्शन' कहा करते हैं। मेरा मन नाम के लिए व्याकुल है, समाज द्वारा स्वीकृत, इतिहास द्वारा प्रमाणित, समष्टि-मानव की चित्त-गंगा में स्नात!

शब्दार्थ

अंतर्निरुद्ध	– भीतर रोका हुआ
इजहार	– प्रकट करना
रक्ताभ	– लाल, रक्तिम
द्वंद्वातीत	– किसी प्रकार के द्वंद्व से परे
कचारा-निचोड़ा	– जिस पर बार-बार तर्क और विचार किया जा चुका हो
पद	– नाम
वनप्रभा	– जंगल की शोभा
शुभ्रकिरीटनी	– श्वेत (उज्जवल) मुकुट धारण करने वाली
मदोद्धता	– अभिमानी
विजितातपा	– जिसने धूप को जीत लिया
अपराजित	– अजेय, जो जीता न गया हो
सोशल सैक्शन	– समाज द्वारा मान्यता प्राप्त
समष्टि	– सामूहिकता, समूह
स्नात	– स्नान किया हुआ, पवित्र

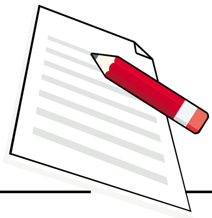

टिप्पणी

इस गिरिकूट-बिहारी का नाम क्या है? मन दूर-दूर तक उड़ रहा है—देश में और काल में—मनोरथानामगतिर्नविद्यते! अचानक याद आया—अरे, यह तो कुटज है! संस्कृत साहित्य का बहुत परिचित, किन्तु कवियों द्वारा अवमानित, यह छोटा-सा शानदार वृक्ष 'कुटज' है। 'कुटज' कहा गया होता तो कदाचित् ज़्यादा अच्छा होता। पर नाम इसका चाहे कुटज ही हो, विरुद तो निस्संदेह 'कुटज' होगा। गिरिकूट पर उत्पन्न होने वाले इस वृक्ष को 'कुटज' कहने में विशेष आनन्द मिलता है। बहरहाल, यह कूटज-कुटज है, मनोहर कुसुम-स्तबकों से झबराया, उल्लास-लोल चारुस्मित कुटज! जी भर आया। कालिदास ने 'आषाढ़स्य प्रथम-दिवसे' रामगिरि पर यक्ष को जब मेघ की अभ्यर्थना के लिए नियोजित किया तो कम्बख्त को ताज़े कुटज पुष्पों की अंजलि देकर ही संतोष करना पड़ा—चंपक नहीं, बकुल नहीं, नीलोत्पल नहीं, मल्लिका नहीं, अरविन्द नहीं—फकत कुटज के फूल! यह और बात है कि आज आषाढ़ का नहीं, जुलाई का पहला दिन है। मगर फर्क भी कितना है! बार-बार मन विश्वास करने को उतारू हो जाता है कि यक्ष बहाना मात्र है, कालिदास ही कभी शापेनास्तंगमितमहिमा' (शाप से जिनकी महिमा अंत हो गयी हो) होकर रामगिरि पहुँचे थे, अपने ही हाथों इस कुटज पुष्प का अर्घ्य देकर उन्होंने मेघ की अभ्यर्थना की थी। शिवालिक की इस अनत्युच्च पर्वत-शृंखला की भाँति रामगिरि पर भी उस समय और कोई फूल नहीं मिला होगा। कुटज ने उनके संतप्त चित्त को सहारा दिया था—बड़भागी फूल है यह! धन्य हो कुटज, तुम 'गाढ़े के साथी' हो। उत्तर की ओर सिर उठाकर देखता हूँ, सुदूर तक ऊँची काली पर्वत-शृंखला छाई हुई है और एकाध सफेद बादल के बच्चे उससे लिपटे खेल रहे हैं। मैं भी उन पुष्पों का अर्घ्य उन्हें चढ़ा दूँ? पर काहे वास्ते? लेकिन बुरा भी क्या है?

कुटज के ये सुन्दर फूल बहुत बुरे तो नहीं हैं। जो कालिदास के काम आया हो, उसे ज़्यादा इज़्जत मिलनी चाहिए। मिली कम है। पर इज़्जत तो नसीब की बात है। रहीम को मैं बड़े आदर के साथ स्मरण करता हूँ। दरियादिल आदमी थे, पाया सो लुटाया। लेकिन दुनिया है कि मतलब से मतलब है, रस चूस लेती है, छिलका और गुठली फेंक देती है। सुना है, रस चूस लेने के बाद रहीम को भी फेंक दिया गया था। एक बादशाह ने आदर के साथ बुलाया, दूसरे ने फेंक दिया! हुआ ही करता है। इससे रहीम का मोल घट नहीं जाता। उनकी फक्कड़ाना मस्ती कहीं गयी नहीं। अच्छे-भले कद्रदान थे। लेकिन बड़े लोगों पर भी कभी-कभी ऐसी वितृष्णा सवार होती है कि गलती कर बैठते हैं। मन खराब रहा होगा, लोगों की बेरुखी और बेकद्रदानी से मुरझा गये होंगे—ऐसी ही मनःस्थिति में उन्होंने बिचारे कुटज को भी एक चपत लगा दी। झुँझलाए थे, कह दिया—

वे रहीम अब बिरछ कहँ, जिनकर छाँह गँभीर।
बागन बिच-बिच देखियत, सेंहुड़, कुटज, करीर।।

गोया कुटज अदना-सा 'बिरछ' हो। 'छाँह' ही क्या बड़ी बात है, फूल क्या कुछ भी नहीं? छाया के लिए न सही, फूल के लिए तो कुछ सम्मान होना चाहिए। मगर कभी-कभी कवियों का भी 'मूड' खराब हो जाया करता है, वे भी गलत-बयानी के शिकार हो जाया करते हैं। फिर बागों से गिरिकूट-बिहारी कुटज का क्या तुक है।

कुटज अर्थात् जो कुट से पैदा हुआ हो। 'कुट' घड़े को भी कहते हैं, घर को भी कहते हैं। कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते

शब्दार्थ

विरुद	–	कीर्ति, गाथा, प्रशंसा सूचक पदवी
नीलोत्पल	–	नीलकमल
चंपक	–	चंपा
बकुल	–	मौलसिरी
अरविन्द	–	कमल
मल्लिका	–	मोतिया, बेला
अर्घ्य	–	पूजन के लिए चढ़ावा
संतप्त	–	दुखी, उदास, खिन्न
सुदूर	–	बहुत दूर
फक्कड़ाना	–	फकीरों जैसी
कद्रदान	–	सम्मान, आदर देने वाला
वितृष्णा	–	तृष्णा (अभिलाषा) का अभाव
अदना	–	तुच्छ
गलतबयानी	–	कोई बात गलत ढंग से बताना

टिप्पणी

हैं। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। कोई और बात होगी। संस्कृत में 'कुटहारिका' और 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। क्यों कहते हैं? 'कुटिया' या 'कुटीर' शब्द भी कदाचित इसी शब्द से सम्बद्ध हैं। क्या इस शब्द का अर्थ घर ही है? घर में काम-काज करने वाली दासी 'कुटकारिका' और 'कुटहारिका' कही ही जा सकती है। एक जरा गलत ढंग की दासी 'कुटनी' भी कही जा सकती है। संस्कृत में उसकी गलतियों को थोड़ा अधिक मुखर बनाने के लिए उसे कुट्टनी कह दिया गया है। अगस्त्य मुनि भी नारद जी की तरह दासी के पुत्र थे क्या? घड़े से पैदा होने की तो कोई तुक नहीं है, न मुनि कुटज के सिलसिले में, न फूल कुटज के। फूल गमले में होते अवश्य हैं, पर कुटज तो जंगल का सैलानी है। उसे घड़े या गमले से क्या लेना-देना। शब्द विचारोत्तेजक अवश्य है। कहाँ से आया? मुझे तो इसी में सन्देह है कि यह आर्य भाषाओं का शब्द है भी या नहीं। एक भाषाशास्त्री किसी संस्कृत शब्द को एक से अधिक रूप में प्रचलित पाते थे, तो तुरन्त उसकी कुलीनता पर शक कर बैठते थे। संस्कृत में 'कुटज' रूप भी मिलता है और 'कुटच' भी। मिलने को तो 'कूटज' भी मिल जाता है। तो यह शब्द किस जाति का है? आर्य जाति का तो नहीं जान पड़ता। सिलवाँ लेवी कह गये हैं कि संस्कृत भाषा में फूलों, व क्षों और खेती-बागवानी के अधिकांश शब्द आग्नेय भाषा परिवार के हैं। यह भी वहीं का तो नहीं है? एक जमाना था जब आस्ट्रेलिया और एशिया के महाद्वीप मिले हुए थे, फिर कोई भयंकर प्राकृतिक विस्फोट हुआ और ये दोनों अलग हो गये। उन्नीसवीं शताब्दी के भाषा-विज्ञानी पण्डितों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि आस्ट्रेलिया के सुदूर जंगलों में बसी जातियों की भाषा एशिया में बसी हुई कुछ जातियों की भाषा से सम्बद्ध है। भारत की अनेक जातियाँ वह भाषा बोलती हैं जिनमें संथाल, मुंडा आदि भी शामिल हैं। शुरू-शुरू में इस भाषा का नाम आस्ट्रो-एशियाटिक दिया गया था। दक्षिण-पूर्व या अग्निकोण की भाषा होने के कारण इसे आग्नेय-परिवार भी कहा जाने लगा है। अब हम लोग भारतीय जनता के वर्ग-विशेष को ध्यान में रखकर और पुराने साहित्य का स्मरण करके इसे कोल-परिवार की भाषा कहने लगे हैं। पंडितों ने बताया है कि संस्कृत भाषा के अनेक शब्द, जो अब भारतीय संस्कृति के अविच्छेद्य अंग बन गये हैं, इसी श्रेणी की भाषा के है। कमल, कुड्मल, कंबु, कंबल, ताम्बूल आदि शब्द ऐसे ही बताए जाते हैं। पेड़-पौधों, खेती के उपकरणों और औज़ारों के नाम भी ऐसे ही हैं। 'कुटज' भी हो तो क्या आश्चर्य? संस्कृत भाषा ने शब्दों के संग्रह में कभी छूत नहीं मानी। न जाने किस-किस नस्ल के कितने शब्द उसमें आकर अपने बन गये हैं। पंडित लोग उसकी छान-बीन करके हैरान होते हैं। संस्कृत सर्वग्रासी भाषा है।

यह जो मेरे सामने कुटज का लहराता पौधा खड़ा है, वह नाम और रूप दोनों में अपनी अपराजेय जीवनी शक्ति की घोषणा कर रहा है। इसीलिए यह इतना आकर्षक है। नाम है कि हज़ारों वर्ष से जीता चला जा रहा है। कितने नाम आये और गये। दुनिया उनको भूल गयी, वे दुनिया को भूल गये। मगर कुटज है कि संस्कृत की निरन्तर स्फीयमान शब्दराशि में जो जम के बैठा सो बैठा ही है। और रूप की तो बात ही क्या है! बलिहारी है इस मादक शोभा की। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में यह हरा भी है और भरा भी है, दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जलस्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है। और मूर्ख के मस्तिष्क से भी अधिक सूने गिरि-कांतार में भी ऐसा मस्त बना है कि ईर्ष्या होती है। कितनी कठिन जीवनी-शक्ति है! प्राण ही प्राण को पुलकित करता है, जीवनी-शक्ति ही जीवनी-शक्ति को प्रेरणा देती है। दूर पर्वतराज हिमालय

शब्दार्थ

विचारोत्तेजक	–	विचारों को उभारने वाला उत्तेजित करने वाला
कुलीनता	–	उच्च कुल वाला
नस्ल	–	वंश, संतति
अपराजेय	–	अजेय
पर्वतनंदिनी	–	पर्वत की पुत्री
कुपित	–	क्रुद्ध, रुष्ट
दारुण	–	कठोर, कष्टकारी
दुर्जन	–	अत्याचारी, पापी, दुष्कर्म करने वाला
पाषाण की कारा	–	पत्थरों की काल कोठरी
रुद्ध	–	रुका हुआ, दबा हुआ, अप्रकट
गिरि-कांतार	–	पहाड़ और घने जंगल
जीवनी शक्ति	–	जीने की इच्छा, संघर्ष करने की शक्ति
हिमाच्छादित	–	बर्फ से ढकी

टिप्पणी

की हिमाच्छादित चोटियाँ हैं, वहीं कहीं भगवान् महादेव समाधि लगा कर बैठे होंगे; नीचे सपाट पथरीली जमीन का मैदान है, कहीं-कहीं पर्वतनंदिनी सरिताएँ, आगे बढ़ने का रास्ता खोज रही होंगी– बीच में यह चट्टानों की ऊबड़-खाबड़ जटाभूमि है–सूखी, नीरस, कठोर! यहीं आसन मारकर बैठे हैं मेरे चिरपरिचित दोस्त कुटज। एक बार अपने झबरीले मूर्धा को हिलाकर समाधिनिष्ठ महादेव को पुष्पस्तबक का उपहार चढ़ा देते हैं और एक बार नीचे की ओर अपनी पाताल-भेदी जड़ों को दबाकर गिरिनन्दिनी सरिताओं को संकेत से बता देते हैं कि रस का स्रोत कहाँ है। जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पातल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर अवकाश की लहरी में झूमकर उल्लास खींच लो। कुटज का यही उपदेश है–

> भित्त्वा पाषाणपिठरं छित्त्वा प्राभंजनीं व्यथाम्
> पीत्वा पातालपानीयं कुटजश्चुम्बते नभः !

दुरन्त जीवन-शक्ति है! कठिन उपदेश है। जीना भी एक कला है। लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है। जियो तो प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में! ठीक है। लेकिन क्यों? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है। याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे। उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है। पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता, पत्नी के लिए पत्नी प्रिया नहीं होती–सब अपने मतलब के लिए प्रिय होते हैं–'आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति!' विचित्र नहीं है यह तर्क? संसार में जहाँ कहीं प्रेम है, सब मतलब के लिए। सुना है, पश्चिम के हॉब्स और हेल्वेशियस जैसे विचारकों ने भी ऐसी ही बात कही है। सुन के हैरानी होती है। दुनिया में त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, परार्थ नहीं है, परमार्थ नहीं है–है केवल प्रचंड स्वार्थ। भीतर की जिजीविषा–जीते रहने की प्रचंड इच्छा-ही अगर बड़ी बात हो तो फिर यह सारी बड़ी-बड़ी बोलियाँ, जिनके बल पर दल बनाए जाते हैं, शत्रुमर्दन का अभिनय किया जाता है, देशोद्धार का नारा लगाया जाता है, साहित्य और कला की महिमा गाई जाती है, झूठ हैं। इसके द्वारा कोई-न-कोई अपना बड़ा स्वार्थ सिद्ध करता है। लेकिन अंतरतर से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है। स्वार्थ से भी बड़ी कोई-न-कोई बात अवश्य है, जिजीविषा से भी प्रचंड कोई-न-कोई शक्ति अवश्य है। क्या है?

याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी, वह अंतिम नहीं थी। वे 'आत्मनः' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे। व्यक्ति का 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है। अपने में सब और सब में आप–इस प्रकार की एक समष्टि-बुद्धि जब तक नहीं आती, तब तक पूर्ण सुख का आनन्द भी नहीं मिलता। अपने-आपको दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता; तब तक 'स्वार्थ' खंड-सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है, त ष्णा को उत्पन्न करता है और मनुष्य को दयनीय–कृपण–बना देता है। कार्पण्य दोष से जिसका स्वभाव उपहत हो गया है, उसकी द ष्टि म्लान हो जाती है, वह स्पष्ट नहीं देख पाता। वह स्वार्थ भी नहीं समझ पाता, परमार्थ तो दूर की बात है।

कुटज क्या केवल जी रहा है? वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता, कोई निकट आ गया तो भय के मारे अधमरा नहीं हो जाता, नीति और धर्म का उपदेश नहीं देता फिरता, अपनी उन्नति के लिए अफ़सरों का जूता नहीं चाटता फिरता, दूसरों को अवमानित करने के लिए ग्रहों की खुशामद नहीं करता। आत्मोन्नति के हेतु नीलम नहीं

शब्दार्थ

मूर्धा – सिर, चोटी
समाधिनिष्ठ – समाधि लगाए, ध्यानमग्न
पुष्पस्तबक – फूलों का गुलदस्ता, गुच्छा
गिरिनंदिनी – गिरि (पर्वत) की बेटी
झंझा – तेज आँधी
अवकाश – शून्य स्थान, शून्य वायुमंडल
परार्थ – उपकार की द ष्टि से दूसरों के लिए किया गया कार्य
परमार्थ – उत्कृष्ट वस्तु, परोपकार, मोक्ष
जिजीविषा – जीने की तीव्र इच्छा
प्रचंड – तीव्र
शत्रुमर्दन – शत्रु पर विजय पाना
अंतरतर – अंतरात्मा, मन
आत्मनः – अपने लिए
समष्टि बुद्धि – सबका कल्याण करने वाला विवेक
दलित द्राक्षा – कुचले हुए अंगूर
त ष्णा – प्यास, पाने की इच्छा
दंडनीय – दंड दिए जाने योग्य
कृपण – कंजूस
म्लान – मैली, मलिन
उपहत – विकृत, बिगड़ा हुआ
आत्मोन्नति – अपनी भौतिक उन्नति

टिप्पणी

धारण करता, अंगूठियों की लड़ी नहीं पहनता, दाँत नहीं निपोरता, बगलें नहीं झाँकता। जीता है और शान से जीता है–काहे वास्ते, किस उद्देश्य से? कोई नहीं जानता। मगर कुछ बड़ी बात है। स्वार्थ के दायरे से बाहर की बात है। भीष्म पितामह की भाँति अवधूत की भाषा में कह रहा है–'चाहे सुख हो या दुख, प्रिय हो या अप्रिय, जो मिल जाय उसे शान के साथ, हृदय से बिलकुल अपराजित होकर, सोल्लास ग्रहण करो। हार मत मानो!'

सुखं वा यदि वा दुःखं प्रियं वा यदि वा प्रियम्।
प्राप्तं प्राप्तमुपासीतं हृदयेनपराजितः।
–शांतिपर्व, 25/26

हृदयेनपराजितः! कितना विशाल वह हृदय होगा, जो सुख से, दुःख से, प्रिय से, अप्रिय से विचलित न होता होगा! कुटज को देखकर रोमांच हो आता है। कहाँ से मिली है यह अकुतोभया व त्ति, अपराजित स्वभाव, अविचल जीवन द ष्टि!

जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह अबोध है, जो समझता है कि दूसरे का उपकार कर रहे हैं, वह बुद्धिहीन है कौन किसका उपकार करता है, कौन किसका अपकार कर रहा है? मनुष्य जी रहा है, केवल जी रहा है; अपनी इच्छा से नहीं, इतिहास-विधाता की योजना के अनुसार। किसी को उससे सुख मिल जाये, बहुत अच्छी बात है; नहीं मिल सका, कोई बात नहीं; परन्तु उसे अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान नहीं होना चाहिए। सुख पहुँचाने का अभिमान यदि गलत है तो दुःख पहुँचाने का अभिमान तो नितरांत गलत है।

दुःख और सुख तो मन के विकल्प हैं। सुखी वह है जिसका मन वश में है, दुःखी वह है जिसका मन परवश है। परवश होने का अर्थ है खुशामद करना, दाँत निपोरना, चाटुकारिता, हाँ-हजूरी। जिसका मन अपने वश में नहीं है, वही दूसरे के मन का छंदावर्त्तन करता है, अपने को छिपाने के लिए मिथ्या आडम्बर रचता है, दूसरों को फँसाने के लिए जाल बिछाता है। कुटज इन सब मिथ्याचारों से मुक्त है। वह वशी है। वह वैरागी है। राजा जनक की तरह संसार में रहकर, सम्पूर्ण भोगों को भोगकर भी उनसे मुक्त है। जनक की ही भाँति वह घोषणा करता 'मैं स्वार्थ के लिए अपने मन को सदा दूसरे के मन में घुसाता नहीं फिरता, इसलिए मैं मन को जीत सका हूँ, उसे वश में कर सका हूँ'–

नाहमात्मार्थमिच्छामि मनो नित्यं मनो न्तरे।
मनो मे निर्जितं तस्मात् वशे तिष्ठति सर्वदा।।

कुटज अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने पर सवार नहीं होने देता। मनस्वी मित्र, तुम धन्य हो!

–आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

शब्दार्थ

अवधूत	–	जिसे दीन-दुनिया से कोई मतलब नहीं
दाँत नहीं निपोरता	–	गिड़गिड़ाता नहीं
अबोध	–	अज्ञानी
अपकार	–	अहित, अत्याचार
उपकार	–	भलाई
नितरांत	–	अवश्य, लगातार
आडम्बर	–	दिखावा

18.2 बोध प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. लेखक को शिवालिक की पहाड़ियों में क्या दिखाई देता है?

(क) शिव की जटायें
(ख) महादेव की मूर्ति
(ग) ठिंगने शानदार वृक्ष
(घ) अलकनंदा का स्रोत

2. लेखक पेड़ को पहचान लेता है:

(क) एक ही बार में
(ख) दूसरी बार में
(ग) कई बार देखने के बाद
(घ) बार-बार देखने के बाद

3. निम्नलिखित में से लेखक के विचारानुसार सबसे सही वाक्य चुनिए:

(क) नाम में कुछ नहीं रखा, रूप ही सब कुछ है।
(ख) नाम रूप से अधिक महत्त्वपूर्ण है।
(ग) पदार्थ सामने हो तो उसका नाम याद रखना जरूरी नहीं।
(घ) रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज सत्य।

4. लेखक के अनुसार कुटज का कौन-सा नाम पौरुष व्यंजक नहीं है?

(क) गिरिगौरव
(ख) मदोद्धता
(ग) अकुतोभय
(घ) अपराजित

5. 'कुटज' शब्द का अर्थ बताते हुए लेखक किस शब्द को इससे जुड़ा हुआ नहीं मानता?

(क) कूटना
(ख) कुटिया
(ग) घड़ा
(घ) कुटकारिका

18.3 आइए समझें

आप जानते हैं कि निबंध मुख्य रूप से विचार-प्रधान होते हैं। किसी भी घटना, तत्त्व या विचार को लेकर लेखक विस्तार से उस पर अपने विचार रखता है। आप यह भी जानते हैं कि लेख में विषय से बँधकर लिखने की बाध्यता होती है, वह निबंध में नहीं होती। कुटज निबंध को पढ़ते हुए भी आपने इस बात को महसूस किया होगा। किसी भी निबंध के तीन तत्त्व होते हैं। इसे भी हम मुख्यतः तीन अंशों में ही पढ़ेंगे—प्रस्तावना, विषय-वस्तु और उपसंहार। आपने अनुभव किया होगा कि पूरे निबंध का एक-एक वाक्य बहुत महत्त्वपूर्ण है। आइए, इसके महत्त्वपूर्ण अंशों को समझने की कोशिश करते हैं।

अंश-1

प्रस्तावना

निबंध का पहला तत्त्व प्रस्तावना या भूमिका है। इसमें लेखक यह स्पष्ट करते हैं कि आगे पाठ में वह किस विषय पर चर्चा करेंगे। प्रस्तुत पाठ आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी प्रकृति

वंदना से प्रारंभ करते हैं। वे कहते हैं कि वैसे तो सभी पर्वतों की सुंदरता निराली होती है पर हिमालय का तो कहना ही क्या? ऐसा प्रतीत होता है मानो हिमालय ने अपनी दोनों भुजाएँ फैला रखी हों एक ओर पर्वत श्रंखलाओं से निकलता अरब सागर और दूसरी ओर बंगाल की खाड़ी का लहलहाता समुद्र। इसके एक ओर रत्नों की खान, और दूसरी ओर लंबी 'शिवालिक' श्रंखला है। शिवालिक अर्थात् शिव की अलकें या केशराशि। ऐसा माना जाता है कि हिमालय पर शंकर-पार्वती सदा निवास करते हैं और शिवशंकर सदैव समाधि लगाए तपस्या में लीन रहते हैं। उन्हें स्वयं की भी सुध नहीं इसीलिए उनकी जटायें बढ़ गई हैं, सूखी, नीरस और कठोर हो गई हैं। बिल्कुल इस शिवालिक श्रंखला की भाँति। हिमालय का पाद देश भी ऐसा ही है। कहीं कोई हरियाली नहीं। दूब तक सूख गई है। चारों ओर फैली हैं—काली-काली चट्टानें और शुष्क रक्ताभ रेती। बस कहीं-कहीं बहुत दूर-दूर दिख जाते हैं तो कुछ सूखे झाड़-झंझाड़। यहाँ की इन्हीं विशेषताओं के कारण इनको शिव के जटाजूट के निचले हिस्से का पर्याय नाम 'शिवालिक' दे दिया गया है। लगता है कि यहाँ बस शिव जैसे अद्वितीय, कठिन, विषम परिस्थितियों को सह सकने वाले देवता ही रह सकते हैं।

पर आश्चर्य की बात तो यह है कि एक ठिंगना-सा वृक्ष भी यहाँ इन्हीं जटिल परिस्थितियों में जी रहा है। सिर्फ जी ही नहीं रहा वरन् हँस-हँस कर, साहस से चट्टानों को भेद कर अपने लिए जीवन-जल तलाश रहा है तथा हरा-भरा बना रहकर दूसरों को किसी भी परिस्थिति में हार न मानने की प्रेरणा दे रहा है।

व्याख्या - 1

''इसी के पाद देश ... छितराया ही रहता होगा।''

संदर्भ

यह गद्यांश आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के निबंध 'कुटज' से लिया गया है।

प्रसंग

इस गद्यांश में आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिमालय पर्वत के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन कर रहे हैं और शिव से उसकी तुलना कर रहे हैं।

व्याख्या

इसमें लेखक हिमालय का वर्णन करते हुए कहता है कि हिमालय की दक्षिण दिशा में जो पहाड़ियाँ स्थित हैं, उनके एक भाग को 'शिवालिक' कहते हैं। फिर वह सोचता है कि आखिर 'शिवालिक' का अर्थ क्या है? लगता है कि शिवालिक का अभिप्राय शिव शंकर की अलकें अर्थात् जटायें या बाल हैं, क्योंकि यह वह इलाका तो है नहीं जहाँ मालगुजारी के सवा लाख मिलें।

हिमालय-पर्वत, शिव-शंकर का निवास स्थान है, जहाँ शिव सदैव समाधि लगाए बैठे रहते हैं। उनका अपनी ओर कोई ध्यान नहीं है। इसी कारण उनकी जटायें लंबी होती हुई चारों ओर छितरा गई हैं तथा सूखी, नीरस और कठोर हो गई हैं। अलकनंदा

नामक नदी, जिसे शिव की अलकों से निकलने के कारण ही अलकनंदा नाम मिला, शिवालिक पर्वत-माला से बहुत दूर बहती है। पर शिव तो महान तपस्वी हैं। उनकी सामान्य ऋषि-मुनियों जैसी जटायें तो हैं नहीं। उनकी तो बहुत लंबी और घनी जटायें हैं। यही कारण है कि वह दूर-दूर तक फैल गई हैं।

अभिप्राय यह है कि शिवालिक पर्वत-माला हिमालय का ही एक अंश है।

व्याख्या - 2

ये जो ठिगने से लेकिन ... भोग्य खींच लाते हैं।

शिवालिक की पहाड़ियों में कहीं छाया नहीं, मिट्टी नहीं, खाद नहीं, पानी तक नहीं। पर इस भयंकर गर्मी को सहकर, भूखे-प्यासे रहकर भी जो व क्ष शान से हरा-भरा बना हुआ जी रहा है। उसकी जिजीविषा (जीने की इच्छा) की प्रशंसा कैसे करें? क्या कहें? इतनी कठिन परिस्थितियों में भी वह रो-रोकर नहीं जी रहा, बल्कि हँसते-हँसते जी रहा है। लेखक सोचता है क्या ये इसकी बेशर्मी नहीं? यह मस्तमौला है क्या? जैसे फकीर होते हैं? तब वह विश्लेषण करता है कि अक्सर जिन लोगों के व्यवहार से बेहयाई झलकती है, वह काफी तत्त्वज्ञानी होते हैं। उन्हें कुछ भी कहिए वे हँसते रहते हैं। इन पर विरोधी बातों का, झूठे आरोपों का, अपशब्दों का कोई असर नहीं होता। इसलिए नहीं कि वे बेशर्म होते हैं वरन् इसलिए कि उन्होंने यह जान लिया है कि विरोधी परिस्थितियों में भी जीवन कैसे हँस-हँस कर जिया जाता है। मान-अपमान, ईर्ष्या-द्वेष से काफी ऊपर उठ चुके होते हैं। उनकी ज्ञान की जड़ें बहुत गहरी होती हैं। संभवतः कुटज भी ऐसा ही है। तभी तो वह चारों ओर फैली चट्टानों और रेती से भी, जहाँ जल का नामो-निशान नहीं होता, अपना भोजन कहीं गहरे से खींच लाता है और जीवित बना रहता है। यह तो आप जानते ही हैं कि पानी के बिना पौधों का हरा-भरा बने रहना तो बहुत ही कठिन है।

अंश-2

विषय-वस्तु

इस पाठ में वर्णित निबंध का दूसरा तत्त्व है – विषय-वस्तु। इसके अंतर्गत प्रस्तावना में कही गई बात को आगे बढ़ाया जाता है। लेखक यहाँ मूल विषय के तथ्यों की व्याख्या करता है।

प्रस्तुत पाठ की भूमिका को पढ़कर ही हमें यह आभास होने लगता है कि इसमें अपराजेय जीवनी शक्ति के परिचायक कुटज के माध्यम से लेखक हमें बहुत से संदेश देना चाहता है।

विषय-वस्तु में कुटज की इसी चर्चा को आगे बढ़ाते हुए लेखक कहता है कि शिवालिक की पहाड़ियों में उगे छोटे-छोटे व क्षों के नाम, कुल, वंश, प्रकृति, स्वभाव आदि के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता, पर लगता है कि वे मुझे बरसों से जानते हैं। उनमें से एक व क्ष ऐसा भी है जो बहुत ठिगना-सा, छोटा-सा है तथा जिसके पत्ते चौड़े और बड़े हैं। फूलों से खूब लदा यह पेड़ सदा मुस्कराता-सा जान पड़ता है। मानो पूछ रहा हो, ''क्या

तुम मुझे नहीं पहचानते?'' लेखक को लगता है कि वह उसे भली-भाँति जानता है। पर उसे उस व क्ष का नाम याद नहीं आता। तब वह सोच में पड़ जाता है कि क्या किसी का नाम याद रखना ज़रूरी है? किसी पदार्थ का रूप मुख्य है अथवा नाम? नाम तो कुछ भी रखा जा सकता है, नाम याद आए चाहे न आए, पर विश्लेषण करने के बाद लेखक को लगता है कि यह उचित नहीं, क्योंकि नाम समाज के एक व्यक्ति के मानने से नहीं वरन् सबके स्वीकार करने से निर्धारित होता है। वरना एक ही व्यक्ति के सैंकड़ों, हजारों नाम हो जाएँ तब तो एक और बड़ी समस्या खड़ी हो जाएगी। किसी का कोई निश्चित नाम ही नहीं रहेगा। तब लेखक व क्ष के उस नाम को याद करने का प्रयत्न करता है जिसे समाज ने अपनी स्वीकृति से दिया है। वह व्यक्ति के साथ-साथ तथा बाद में भी हज़ारों वर्षों तक उसे विशेष व्यक्ति का परिचय देता रहता है। इतिहास उसे प्रमाणित करता है। पर रूप पर समाज की मुहर नहीं लगी होती। वह तो किसी भी व्यक्ति का अपना ही होता है।

ऐसा चिंतन करते-करते अचानक उसे याद आता है कि अरे! इस व क्ष का नाम तो कुटज है। कुटज जिसकी संस्कृत साहित्य में बार-बार चर्चा होती रही है। निबंधकार मानता है कि इस व क्ष को कुटज नाम इसीलिए मिला क्योंकि यह गिरिकूट पर उत्पन्न होता है। कालिदास ने इस व क्ष की चर्चा अपनी काव्य-रचना 'मेघदूत' में भी की है जिसका मुख्य पात्र विरह-पीड़ित यक्ष, अपनी प्रेयसी को संदेश भेजने के लिए रामगिरि पर्वत पर मेघ को चुनता है और उन्हें यही कुटज के फूल भेंट स्वरूप देता है। हो सकता है जब कालिदास यक्ष के माध्यम से उसकी विरह-व्यथा वर्णित कर रहे थे तब उन्हें कुटज के व क्ष भी अपने समान व्यथित, पीड़ित नज़र आए हों। इसी कारण उन्होंने सुगंधित, सुंदर चंपा, चमेली, कमल आदि फूलों को छोड़कर 'कुटज' के फूलों को ही मेघ की अर्चना-वंदना के लिए चुना हो। सचमुच कुटज सौभाग्यशाली है। द्विवेदी जी की भी यही इच्छा है कि वह भी शिवालिक पर्वत-श्रं खला पर घिरे हुए मेघों की वंदना इन्हीं फूलों से करें।

व्याख्या - 3

नाम इसलिये बड़ा नहीं है ... चित्त गंगा में स्नात!

हजारीप्रसाद द्विवेदी को जब कुटज का व क्ष देखकर उसका नाम याद नहीं आता तो वह विचार करने लगते हैं कि किसी पदार्थ का नाम महत्त्वपूर्ण है अथवा स्वयं वह पदार्थ। एक बार उन्हें लगता है कि नाम का कोई महत्त्व नहीं है। याद आए या नहीं। पर थोड़ा चिंतन करने के बाद उन्हें लगता है कि नाम का इसलिए महत्त्व नहीं होता क्योंकि वह नाम है। उसका महत्त्व इसलिए होता है क्योंकि वह संपूर्ण समाज द्वारा, संबंधित वस्तु अथवा व्यक्ति विशेष के लिए स्वीकृत किया जा चुका होता है। वह उस पदार्थ की प्रकृति अथवा रूप से जुड़ा हुआ हो अथवा उसका परिचय देने वाला हो, यह आवश्यक नहीं। किसी झगड़ालू या बहुत क्रोधी युवती का नाम भी 'शांति' हो सकता है तथा किसी कुरूप व्यक्ति को भी 'सुदर्शन' नाम दिया जा सकता है। इन दोनों में नाम के विरुद्ध विशेषताएँ हैं, मात्र इसके आधार पर हम उनका नाम नहीं बदल सकते। यदि बदलना भी हो तो भी समाज की साझी स्वीकृति से ही यह संभव है।

यदि हम आज 'गिलास' को 'चम्मच' कहने लगें तो हम ही उपहास के पात्र होंगे। यदि आपको अपना नाम प्रयोग में ला सकते हैं।

वास्तव में समाज ही किसी वस्तु अथवा व्यक्ति के उस नाम को स्वीकृति देता है, जो सदियों तक संबंधित पदार्थ का परिचय देता रहता है। रूप तो ईश्वर की देन है तथा वह व्यक्ति का अपना होता है, पर नाम समाज की देन है। आजकल के अंग्रेजी पढ़े-लिखे लोग इसी सामाजिक स्वीकृति को 'सोशल-सैंक्शन' का नाम देते हैं; जिसका अभिप्राय है– समाज द्वारा प्राप्त स्वीकृति। लेखक भी इस ठिंगने से व क्ष का वह नाम याद करने का प्रयत्न करता है जिसे समाज ने उस व क्ष विशेष के लिए निर्धारित किया है, जिस नाम से वह सदियों से पुकारा जाता रहा है तथा आज भी जिस नाम से लोग उसे संबोधित करते हैं। अनेक पीढ़ियों से प्रयोग में आने वाले उस नाम को लेखक बार-बार याद करने का प्रयत्न करता है।

पाठगत प्रश्न 18.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनते हुए पाठ के आधार पर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. इस ....का नाम क्या है?

   (क) पेड़ (ग) व क्ष

   (ख) गिरिकूट बिहारी (घ) दरख्त

2. शिवालिक की सूखी नीरस पहाड़ियों पर मुस्कराते हुए ये व क्ष द्वन्द्वातीत हैं,.....हैं।

   (क) बेहया (ग) मस्तमौला

   (ख) अलमस्त (घ) अजीब

3. कालिदास ने मेघों को कौन-सा पुष्प भेंट में दिया?

   (क) कुटज (ग) अरविंद

   (ख) नीलकमल (घ) चंपक

अंश-3

अब आइए 'कुटज' के बारे में कुछ और जानें:

लेखक मानता है कि कालिदास के काम आने वाले कुटज का जितना सम्मान होना चाहिए था, उतना हुआ नहीं, इसलिए नहीं कि वह इज्जत के काबिल नहीं था, बल्कि इसलिए कि इज्जत मिलना, न मिलना अपने-अपने भाग्य की बात है। कविवर रहीम को याद करते हुए लेखक कहता है कि रहीम भी अपने समय में बहुत आदरणीय व्यक्ति थे। सम्राट अकबर ने उन्हें नौरत्नों में स्थान दिया था पर इस स्वार्थी दुनिया ने उनका मोल नहीं जाना। बाद में जहाँगीर ने उनसे अपना काम निकलवा कर उनकी इतनी उपेक्षा कर दी जैसे कोई आम का रस चूसकर उसकी गुठली और छिलका फेंक देता

है। पर सच्चाई यह है कि इससे उनका मूल्य कम नहीं हो जाता। यह गुठली ही कभी-कभी पेड़ का रूप धारण करके हमें हजारों वैसे ही रसदार फल लौटा देती है। पर दुनिया को उनके अथवा किसी के भी मूल्य की परख कहाँ? इसी कारण तो वह कुटज का मोल भी नहीं आँक सकी।

दुनिया से इस प्रकार का स्वार्थी और निर्मम व्यवहार पाकर रहीम की मनोस्थिति भी बिगड़ गई। तभी शायद उन्होंने कुटज की उपेक्षा करते हुए यह दोहा लिख डाला–

वे रहीम अब बिरछ कहँ, जिनकर छाँह गंभीर।
बागन बिच-बिच देखियत, सेंहुड़, कुटज, करीर।।

रहीम का यह कहना सत्य है कि कुटज छाँह नहीं दे सकता। पर क्या उसमें अन्य कोई गुण नहीं? उसके वे सुंदर मनोहारी फूल, क्या उनका मूल्य कुछ भी नहीं? लेखक तर्क करके यह निष्कर्ष निकालते हैं कि ऐसा नहीं है कि रहीम कुटज के गुण न जानते हों। वह जानते थे पर फिर भी उन्होंने कुटज के प्रति ऐसा उपेक्षित व्यवहार किया। उसका मुख्य कारण यही था कि वह स्वयं उपेक्षा के शिकार थे इसीलिए खराब 'मूड' में वह ऐसी गलतबयानी कर बैठे।

आगे कुटज शब्द की व्युत्पत्ति की चर्चा करते हुए द्विवेदी जी कहते हैं कि कुटज का अभिप्राय है–जो कुट से उपजा, उत्पन्न हुआ हो। कुट 'घर' को भी कहते हैं तथा घड़े को भी। पर कुटज न तो घर में उगता है, न ही घड़े अथवा गमले में। प्रतापी अगस्त्य मुनि को भी 'कुटज' कहा जाता है। सोचो तो भला, क्यों? क्या वह घड़े से उत्पन्न हुए थे? लेखक को लगता है कि हम 'कुटज' को बहुत ही सीमित अर्थों में देख रहे हैं। बात कुछ और है। संस्कृत में 'कुटहारिका' तथा 'कुटकारिका' दासी को कहा जाता है। अतः मुनि अगस्त्य, शायद दासी से उत्पन्न हुए होंगे, दासी पुत्र होंगे। वह बार-बार सोचते हैं कि आखिर यह शब्द आया कहाँ से? आर्य भाषा से या किसी और से। उन्हें संदेह होता है कि ये आर्य भाषा का शब्द है। तब पाश्चात्य फ्रांसीसी विद्वान सिलवाँ लेवी का कथन उन्हें याद आता है कि "संस्कृत भाषा में फूलों, व क्षों और खेती-बागवानी के अधिकांश शब्द आग्नेय भाषा-परिवार के हैं।" इसलिए संभवतः कुटज भी इसी भाषा-परिवार का है।

एक समय आस्ट्रेलिया तथा एशिया महाद्वीप मिले हुए थे, पर बाद में कोई भयंकर प्राकृतिक विस्फोट हुआ तथा दोनों महाद्वीप अलग-अलग हो गए। बहुत बाद में, लगभग उन्नीसवीं शताब्दी के आस-पास भाषा वैज्ञानिकों का ध्यान इस ओर गया कि एशिया में बसी कुछ जातियों की भाषा, आस्ट्रेलिया में बसी जातियों की भाषा से काफी मिलती-जुलती है। भारत की संथाल, मुंडा आदि जातियों की भाषा भी कुछ-कुछ वैसी ही है। इस कारण यह कहा जाता है कि यह आग्नेय भाषा-परिवार का ही एक शब्द है। अब हम इसे कोल-परिवार की भाषा भी कह सकते हैं। संस्कृत में अनेक शब्द यहीं से लिए गए हैं।

पाठगत प्रश्न 18.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर दीजिए:

1. रहीम कुटज की कद्र नहीं कर पाए, क्योंकि
   (क) उन्हें कुटज पसंद नहीं था।
   (ख) कुटज के फूल सुंदर नहीं थे।
   (ग) वह स्वयं समाज के उपेक्षित व्यवहार से दुखी थे।
   (घ) उनके विचार से कुटज तो मात्र एक बौना-सा पेड़ है।

2. ''लेकिन दुनिया है कि मतलब से मतलब है, रस चूस लेती है, छिलका और गुठली फेंक देती है'' वाक्य में जिस शब्द-शक्ति का प्रयोग हुआ है वह है–
   (क) अभिधा (ग) व्यंजना
   (ख) लक्षणा (घ) बिम्बात्मकता

3. प्रतापी अगस्त्य मुनि को क्या कहा जाता है और क्यों?

4. फ्रांस के किस विद्वान का उल्लेख इस पाठ में हुआ है?

अंश-4

आइए, आगे देखें कि लेखक को कुटज में आखिर ऐसा क्या विशेष दिखा, जो उन्होंने उसके ऊपर पूरा एक निबंध ही लिख डाला। ऐसा आखिर क्या अद्‌भुत है उसमें?

हाँ, आगे निबंधकार कहता है कि वह कुटज पर इसलिए बलिहारी हैं, क्योंकि वह नाम और रूप दोनों ही द ष्टियों से अपराजेय है, कभी हार नहीं मानने वाला है। यह गुण उसके सौंदर्य में चार चाँद लगा देता है। उसका नाम हज़ारों वर्षों से कुटज ही है, बदला नहीं। जबकि इस बीच अनेक पेड़-पौधों, वस्तुओं के नाम बदल गए। कितने नाम लुप्त हो गए। उनको दुनिया भूल भी गई। पर कुटज का नाम ज्यों का त्यों है। वह संस्कृत की विशाल शब्द राशि में आज भी अपना अधिकार जमा कर बैठा है। अन्य अनेक हिंदी शब्दों की तरह उसने हिंदी भाषा में आकर अपना मूल रूप नहीं बदला। उसका रूप-सौंदर्य भी अद्वितीय, आकर्षक और मनोहारी है। परंतु सर्वाधिक सराहनीय तो उसकी जिजीविषा (जीने की प्रचंड इच्छा) है। चारों ओर तीव्र झुलसाती धूप तथा धधकती लू के तेज़ झोंके; दूर-दूर तक फैला निःशब्द सन्नाटा और नीचे न प्राणदायी मिट्‌टी, न खाद, न पानी। बस गर्मी से जलती, तपती चट्‌टानें हैं, जहाँ प्राणों को पुलकित करने वाली, जीवन को रसमय बनाने वाली कोई परिस्थितियाँ नहीं है। पर कुटज है कि फिर भी जिए जा रहा है। मजबूरी में नहीं जी रहा है, और न ही जीवन को बोझ मानकर जी रहा है। वरन् वह तो प्रसन्नतापूर्वक, हँस-हँस कर जी रहा है। विषम परिस्थितियों से घबराकर वह निरुत्साहित नहीं हुआ, उदास, अकर्मण्य नहीं हुआ। वरन् उसने तो निरंतर संघर्ष किया तथा अंततः जीवन के कुरुक्षेत्र से विजयी होकर निकला। उसने सदैव यह संदेश दिया कि कैसी भी कठिन परिस्थितियाँ क्यों न आ जाएँ। कभी भी हार

मत मानिए। जीवन को सही प्रकार से जीना न छोड़िए। सहिष्णु, द ढ़ और साहसी बनिए तो सफलता और विजय आपके कदम चूमेगी।

कुटज सूखी, नीरस और कठोर धरती से, बहुत संघर्षों के बाद अपने लिए जीवन-रस तलाश कर पाता है। परंतु फिर भी वह कंजूस और स्वार्थी नहीं, सहिष्णु है। सब कुछ वह स्वयं ही नहीं ले लेना चाहता। वह तो औरों को भी संकेत देता है कि रस का स्रोत कहाँ है। वह महादेव को भी उनके समाधि स्थल में अपने जीने, पनपने के लिए स्थान देने पर फूलों की भेंट चढ़ा-चढ़ाकर अपनी कृतज्ञता प्रकट करता है। वह कहता है कि यदि आप जीना चाहते हैं तो चाहे आपके सामने विपदाओं के पहाड़ आ पड़ें या दुख के सागर लहराने लगें अथवा भयंकर आँधी-तूफ़ान आपको चारों ओर से घेर लें पर सबसे जूझकर भी आप अपना वह 'प्राप्य' प्राप्त कीजिए जो सिर्फ़ आपके लिए है, जिसे विधाता ने सिर्फ आपके भाग्य में लिखा है। आप कर्मशील और परिश्रमी बनकर उसे प्राप्त कीजिए तथा दुख की राहों से भी हर्षोल्लास का क्षण चुन लीजिए, संघर्ष का सामना कीजिए तथा देखिए कि विजय किस तरह आपकी हो जाती है।

कुटज का यही संदेश है कि जीना भी एक कला है। सिर्फ कला ही नहीं, तपस्या है जिसमें अनेक विघ्न-बाधाएँ आती ही रहती हैं, पर फिर भी हमें हार नहीं माननी है, अपना अस्तित्व बचाए रखना है। जीना है और आत्मनिर्भर बनकर जीना है और आत्मविश्वास के साथ जीना है। पर मन में एक प्रश्न उठता है कि इतने कष्ट सहकर, विपदाओं से लड़-लड़कर भी आखिर जीना है तो क्यों?

क्या मात्र जीने के लिए जीना चाहिए? मौत हमारे हाथ में नहीं है, क्या यही तथ्य सिर्फ़ हमारे जीने का कारण है? क्या महज अपने लिए स्वार्थी बनकर जीते रहना उचित है? हम सोचते हैं तो लगता है कि इस स्वार्थी दुनिया में सब अपने लिए ही जी रहे हैं। शायद इसीलिए ब्रह्मवादी महान तत्त्ववेता ऋषि याज्ञवल्क्य ने अपनी पत्नी को समझाने की कोशिश की थी कि दुनिया में जो भी होता है और हो रहा है, यह सब व्यक्ति के अपने स्वार्थ के लिए है। किसी को अपनी पत्नी, पुत्र, बहन, भाई, या अन्य संबंधी इसलिए प्रिय नहीं होते क्योंकि उनका उनसे एक रिश्ता जुड़ा हुआ होता है बल्कि वे सब तो उसे इसलिए प्रिय होते हैं क्योंकि वह कभी न कभी, किसी न किसी प्रकार से उसकी सहायता करते हैं, उसे लाभ पहुँचाते हैं।

क्या यह सोचकर दुख नहीं होता? यानी कि संसार में जो कुछ भी है सब महज अपने स्वार्थ के लिए है? यदि ऐसा ही है तो क्या करना है इस स्वार्थी दुनिया में जीकर? जीवन से भला ऐसा क्या मोह? पश्चिम के हॉब्स और हेल्वेशियस जैसे कुछ विचारक भी ऐसा ही मानते हैं। पर आश्चर्य होता है, ऐसे विचार जानकर! क्या दुनिया में त्याग, प्रेम, ममता, परार्थ, परमार्थ कुछ नहीं है? क्या संसार सिर्फ़ प्रचंड स्वार्थ के बल-बूते पर जी रहा है? यदि सिर्फ़ जीना उसके कर्म करने का कारण है तो फिर परहित, लोकमंगल, मानव-कल्याण आदि बड़ी-बड़ी बातें झूठ हैं। सब बकवास हैं।

यदि ऐसा होता तो प्रजाहित अथवा जनता के कल्याण की बातें कहकर कुछ व्यक्ति अलग-अलग राजनीतिक दल नहीं बना लेते। रावण और कंस पर राम तथा कृष्ण की विजय का प्रति वर्ष अभिनय नहीं किया जाता। देशोद्धार के नारे नहीं लगाए जाते तथा

साहित्य की अमर कृतियों, धर्मग्रंथों और विभिन्न कलाओं द्वारा परोपकार, आत्मोत्सर्ग, बलिदान, त्याग की महिमा नहीं गाई जाती। पाप पर पुण्य की, असत्य पर सत्य की, अनीति पर नीति की विजय बार-बार दिखाने का आखिर क्या कारण है?

याज्ञवल्क्य ऋषि की बात पूर्णतः असत्य तो नहीं है पर हाँ, वेद अर्धसत्य अवश्य है। उसे अंतिम सत्य मान लेना गलत है। वास्तव में उनके द्वारा प्रयुक्त 'आत्मनः' शब्द का अर्थ 'केवल अपने लिए' मान लेना, इस शब्द का अर्थ संकुचित करना है। 'आत्मनः' का अर्थ बहुत व्यापक है जिसमें संपूर्ण समाज का, पूरी मानव-जाति का हित समाया हुआ है क्योंकि आत्मा, परमात्मा का एक अंश है तथा वह सभी में विद्यमान है। अतः ब्रह्मवादी याज्ञवल्क्य के 'आत्मनः' शब्द का सही अर्थ जानकर, सबके हित और कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

अपने में सबको और सबमें अपने आपको देखकर व्यक्ति जब कोई कार्य करता है, तभी उसे पूर्ण सुख और संपूर्ण आनंद की प्राप्ति होती है, क्योंकि तब वह सबके हित में ही अपना हित देखने लगता है तथा स्वार्थ और संकीर्णताओं से ऊपर उठ कर परहित, परोपकार की ओर अग्रसर होता है। उस समय सबके कल्याण के लिए वह स्वयं का बलिदान करने से भी पीछे नहीं हटता। अपने को वह उसी प्रकार गलाकर, नष्ट कर दूसरों की प्रसन्नता का साधन बनाता है जिस प्रकार अंगूर स्वयं को मिटाकर आनंद कराते हैं जो कुछ क्षणों के लिए ही सही, मानव को सारे दुखों से दूर कर देता है।

पाठगत प्रश्न 18.3

दिए गए विकल्पों में से लेखक द्वारा प्रयुक्त शब्दों के आधार पर निम्नलिखित रिक्त स्थान भरिए:

1. सारा संसार अपने....................के लिए ही तो जी रहा है।
   (क) स्वार्थ (ग) हित
   (ख) मतलब (घ) प्राप्य
2. लेकिन ....से कोई कह रहा है, ऐसा सोचना गलत ढंग से सोचना है।
   (क) अंतरतर (ग) हृदय
   (ख) दिल (घ) मन
3. जो समझता है कि वह दूसरों का उपकार कर रहा है, वह....................है, जो समझता है कि दूसरा उसका अपकार कर रहा है, वहऽभी ....है।
   (क) बुद्धिहीन, अबोध (ग) अबोध, बुद्धिहीन
   (ख) अबोध, अज्ञानी (घ) अल्पबुद्धि, अविवेकी

   निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
4. 'कुटज' की सबसे सराहनीय बात क्या है?
5. 'आत्मनः' शब्द के लिए किस ऋषि की बात पूर्णतः असत्य नहीं है?

अंश-5

आइए, पिछले प ष्ठ पर कही गई बात को आगे बढ़ाते हैं–

क्या आपको कभी किसी ऐसे स्वार्थ ने घेरा है कि आपने दूसरे की भावनाओं की परवाह ही न की हो? क्या आप अपनी उस गलती के लिए बाद में पछताए नहीं? तब आपने क्या किया, पश्चात्ताप? उस गलती को दोबारा न दोहराने की प्रतिज्ञा? बहुत अच्छे। ऐसा ही होना चाहिए।

आगे देखें कुटज की और कौन-कौनसी विशेषता लेखक बता रहा है? क्या हमारे में इनमें से कोई विशेषता है या नहीं? अपने गुणों पर भी ध्यान दीजिए। अपने में कम से कम पाँच गुणों और पाँच अवगुणों की सूची बनाकर देखिए।

लेखक के मन में प्रश्न उठता है कि कुटज क्या केवल जी रहा है? उसे जीना है मात्र इसीलिए जी रहा है अथवा वह दूसरों को कुछ संदेश भी दे रहा है, परमार्थ भी सोच रहा है? लगता है कि कुटज का संपूर्ण जीवन सोद्देश्य है। वह पग-पग पर हमें जीवन का आदर्श सिखाता चलता है। वह अपने जीवन का उदाहरण हमारे सामने रखकर हमें सिखाता है कि आत्मनिर्भर बनिए, भीख मत माँगिए, किसी पर आश्रित मत रहिए। ईश्वर के अतिरिक्त किसी से मत डरिए। नीति और धर्म के उपदेश मात्र मत दीजिए उन्हें अपने व्यवहार से दर्शा इस उन्नति के लिए कर्म कीजिए, कर्मशील बनिए, किसी की चापलूसी मत कीजिए। दूसरों को अपमानित करने, दुख पहुँचाने के लिए ही सिर्फ ग्रहों की पूजा-अर्चना कर उनकी खुशामद मत कीजिए। अपना भाग्य बदलने के लिए विभिन्न रत्न धारण करने पर श्रद्धा मत रखिए, कर्मठ और धैर्यवान बनिए। लेखक का कहना है कि छल-कपट छोड़ दो, हीन भावना से ग्रसित न हो, चाटुकार मत बनो। संयमी, विवेकवान, उदात्त, संघर्षशील और स्वाभिमानी बनो।

यहाँ द्विवेदी जी ने कुटज की जीवन शैली के माध्यम से वर्तमान जीवन की कुत्सा, स्वार्थपरता, चाटुकारिता, भ्रष्टाचार, लोभ, लिप्सा, मोह, आसक्ति, प्रपंचों से भरी राजनीति, अंधविश्वासों, लोक-कल्याण के नाम पर हो रहे छल-कपट, असत्य, आडंबर आदि पर करारी चोट की है तथा व्यंग्यात्मक तरीके से मानव-मूल्यों के ह्रास पर चिंता व्यक्त की है। आपको भी ऐसा लगता है न!

लेखक का विचार है कि सच्चा जीवन-दर्शन यही है कि व्यक्ति कर्म करते रहें तथा यथासंभव अच्छे कर्म करने का प्रयास करें। यदि ऐसा करने से किसी अन्य व्यक्ति अथवा व्यक्तियों का भला होता है तो उसे स्वयं पर अहंकार नहीं होना चाहिए कि वह भाग्यविधाता, पुण्यात्मा है। इसके विपरीत यदि वह सत्कर्म नहीं कर पाता तथा दूसरों को कष्ट अथवा दुख पहुँचा कर सोचता है कि वह सर्वशक्तिशाली, सर्वशक्तिमान है तो वह भी उसकी अल्पबुद्धि का प्रमाण है क्योंकि संसार में कोई भी प्राणी किसी का अपकार अथवा उपकार तब तक नहीं कर सकता जब तक ईश्वर न चाहे। हमारे अच्छे-बुरे कर्मों का संचालक, भाग्यविधाता, कर्ता तो वस्तुतः वही एक ईश्वर है। हम तो मात्र उसकी इच्छानुसार कर्म कर रहे हैं। हमारे कर्मों से किसी का भला हो जाए तो बहुत अच्छी बात है पर यदि ऐसा न हो पाए तब भी कोई दुख नहीं। हमें कर्म तो करते ही रहना चाहिए। पर विचारणीय तथ्य है कि हमें कभी भी गर्व नहीं करना

टिप्पणी

चाहिए। सुख पहुँचाने का गर्व यदि गलत है तो दुख पहुँचाने का गर्व तो बिल्कुल ही हमारी विकृत भाव-व त्ति का बोधक है।

पाठगत प्रश्न 18.4

द्विवेदी जी के अनुसार निम्नलिखित में से **गलत विकल्प** का चुनाव कीजिए–

1. स्वार्थ

   (क) मोह को बढ़ावा देता है।

   (ख) त ष्णा को उत्पन्न करता है।

   (ग) मनुष्य को दयनीय कृपण-बना देता है।

   (घ) मानव को अविचलित जीवन द ष्टि देता है।

2. कुटज

   (क) मिथ्याचारों से मुक्त है।

   (ख) भोगों में लिप्त है।

   (ग) अपने मन पर नियंत्रण रखता है।

   (घ) बैरागी है।

3. याज्ञवल्क्य ऋषि ने कहा–

   (क) सब कुछ स्वार्थ के लिए है।

   (ख) आत्मानस्तु कामाय सर्वप्रियं भवति।

   (ग) सुखं वा यदि वा दुखं वा यदि वा प्रियम्।

   (घ) पुत्र के लिए पुत्र प्रिय नहीं होता।

4. ''कुटज क्या केवल जी रहा है... सोल्लास ग्रहण करो।'' अनुच्छेद द्वारा लेखक

   (क) व्यक्तियों को जीने की कला सिखा रहे हैं।

   (ख) चाटुकारिता, चापलूसी के गुणों पर प्रकाश डाल रहे हैं।

   (ग) वर्तमान जीवन की विडंबना दर्शा रहे हैं।

   (घ) मानव-मूल्यों के ह्रास पर व्यंग्य कर रहे हैं।

अंश-6

उपसंहार

निबंध का तीसरा मुख्य तत्त्व है–उपसंहार। इसमें लेखक निबंध की विषयवस्तु को उदाहरणों के साथ स्पष्ट करने के उपरांत वह तथ्य अथवा निष्कर्ष पाठकों के समक्ष रखते हैं, जो उनकी द ष्टि में सारे निबंध का निचोड़ है।

जरा देखें तो प्रस्तुत निबंध का उपसंहार लेखक ने किस प्रकार किया है।

द्विवेदी जी उपसंहार में हमें जीवन-दर्शन समझाते हुए बताते हैं कि वस्तुतः सुख और दुख

तो व्यक्ति के मन के अनुरूप होते हैं। कोई भी सुख सबके लिए सुख का कारण नहीं हो सकता तथा कोई भी दुख सबको दुखी नहीं कर सकता। जो एक व्यक्ति के लिए ''सुखदायक'' परिस्थिति है वही दूसरे के लिए ''दुख'' का कारण भी हो सकती है। यदि किसी का मन कमजोर, अस्थिर या चंचल है, अपने वश में नहीं है तो बाह्य जीवन की परिस्थितियों से वह बहुत जल्दी प्रभावित हो जाता है, सुखी अथवा दुखी हो जाता है। उसकी इंद्रियाँ उसके नियंत्रण में नहीं रहतीं और वह सदैव असंतुष्ट रहता है, निष्कर्ष रूप में वह अपनी क्षुद्र स्वार्थ भावना को लेकर कभी किसी की खुशामद करता है तो कभी दाँत निपोर कर किसी की जी हजूरी करता है। उसका आत्म-सम्मान, आत्म-गौरव, आत्म-विश्वास सब समाप्त हो जाता है तथा वह अपनी कमजोरियों को छिपाने के लिए झूठी शान दिखाता है, दूसरों को अपने समान स्तर पर लाने, हानि पहुँचाने के लिए कुटिल चालों के जाल बिछाता है तथा दूसरों के इशारों पर नाचता है। इस प्रकार वह निरंतर पतन के मार्ग की ओर अग्रसर होता चला जाता है।

कुटज ऐसा नहीं करता। वह छल-कपट, राग-द्वेष, मिथ्याचार, षड्यंत्र, असत्य सबसे दूर है, स्वाधीन है। उसका मन अपने वश में है इसलिए वह कामनाओं से मुक्त आनंदमयी वैरागी है—बिल्कुल राजा जनक की भाँति। राजा जनक भी संपूर्ण भोगों का भोग करते हुए सदैव उनसे दूर रहे, इस तथ्य से अवगत रहे कि ये सब मिथ्या मोह है। कुटज भी इसी तरह जीते हुए मानो घोषणा करता है कि वह अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए कभी पथ-भ्रष्ट नहीं होता, दूसरे के मन को टटोलता नहीं फिरता। अपनी इच्छाओं में भटक नहीं जाता। वह तो इनसे परे निरासक्त, निर्लिप्त है। उसने अपने मन को वश में कर लिया है, उसे जीत लिया है और अब कभी उसका मन, उस पर हावी हो उसे पराभूत नहीं कर सकेगा।

पाठगत प्रश्न 18.5

निम्नलिखित वाक्यों को उपयुक्त विकल्प चुनकर पूरा कीजिए—

1. जिसकी इंद्रियाँ अपने वश में नहीं रहतीं वह
   (क) दूसरों की जी हजूरी नहीं करता।
   (ख) दूसरों के दुख में दुखी और सुख में सुखी होता है।
   (ग) अपनी कमज़ोरियाँ छिपाने के लिए झूठी शान बघारता है।
   (घ) अपने आत्मसम्मान, आत्मगौरव और आत्मविश्वास को सुरक्षित रखता है।
2. 'कुटज अपने मन पर सवारी करता है, मन को अपने पर सवार नहीं होने देता' कथन का संदेश है—
   (क) आप भी अपने मन के अनुसार कार्य करें।
   (ख) स्वार्थ सिद्धि के लिए जीवन में किसी भी प्रकार की चुनौती स्वीकार करें।
   (ग) मन तो चंचल है पर उसका कहना कभी नहीं टालें।
   (घ) स्वयं पर नियंत्रण रखें, मन को वश में करके उस पर जीत हासिल करें।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें?

3. व्यक्ति के जीवन में सुख और दुख किसके अनुरूप होता है?

4. लेखक ने कुटज की तुलना राजा जनक से क्यों की है?

18.4 भाषा-शैली

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी आधुनिक युग के गद्यकार हैं अतः उनकी भाषा सहज स्वाभाविक रूप में प्रयुक्त होती है। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों की प्रधानता रही है और इसी के माध्यम से वे गंभीर तथ्यों का सरलता से प्रस्तुतीकरण करते चलते हैं। *'कुटज' में स्थान-स्थान पर इस प्रकार की भाषा मिलती है, जैसे–''कुटज क्या केवल जी रहा है? वह दूसरे के द्वार पर भीख माँगने नहीं जाता, कोई निकट आ गया तो भय के मारे अधमरा नहीं हो जाता, नीति और धर्म का उपदेश नहीं देता फिरता।''*

द्विवेदी जी स्वयं प्रचलित भाषा की शब्दावली का प्रयोग करने के पक्षधर थे परंतु संस्कृत के तत्सम् शब्दों को भी स्वीकार करते थे, उनका कहना था, *''प्रचलित शब्दों को विदेशी कह कर त्याग देना मूर्खता है पर किसी भाषा के शब्दों का प्रचलन देखकर अपनी हजारों वर्ष की परंपरा की उपेक्षा करना आत्मघात है। संस्कृत ने भिन्न-भिन्न भाषाओं के हजारों शब्द लिए हैं, पर उन्हें संस्कृत बनाकर।''*

उन्हें अंग्रेज़ी के प्रचलित शब्दों और वाक्यों का प्रयोग करने में भी कोई झिझक नहीं है। यदि प्रवाह बनता हो तो सरलता से किसी भी भाषा को अपना लेते हैं।

''नाम में क्या रखा है–ह्वाटस देयर इन ए नेम''; 'जिसे सोशल-सैक्शन कहा जाता है।'; 'मगर कभी-कभी कवियों का 'मूड' खराब हो जाया करता है।' उन्होंने 'कुटज' में भी कहा है *'संस्कृत भाषा ने शब्दों के संग्रह में कभी छूत नहीं मानी। न जाने किस-किस नस्ल के कितने शब्द उसमें आकर अपने बन गए।'*

द्विवेदी जी ने कई जगह संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है तो कहीं अरबी-फ़ारसी की शब्दावली भी अपनाई है, जैसेः उल्लास-लोल, चारुस्मित कुटज, नीलोत्पल, अर्घ्य, अनत्युच्च पर्वत श ृंखला (संस्कृत की तत्सम शब्दावली) तथा इज्जत, कद्रदान, गलतबयानी, अदना-सा, (अरबी-फारसी शब्दावली)।

द्विवेदी जी ने निबंध में सूक्तियों, मुहावरों, लोकोक्तियों और सूत्र वाक्यों का भी खुलकर प्रयोग किया है। इसके कारण उनकी अभिव्यक्ति में गहनता, लोकप्रियता, सरसता और मनोरंजकता आ जाती है और वे अपने विचारों को समर्थन देते हुए पुष्ट करते चलते हैं।

सूक्ति

'आत्मनस्तु कामाय सर्वप्रियं भवति', 'दुरंत जीवनी शक्ति है', 'कठिन उपदेश है।', 'जीना भी एक कला है।' 'दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं।' *'सुखी वह है जिसका मन वश में है। दुखी वह है जिसका मन परवश में है।', 'रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज-सत्य है।'* आदि।

मुहावरे

दाँत निपोरना, हाँ हजूरी, खुशामद करना, जाल बिछाना आदि का आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। आचार्य जी मुख्यतः तत्सम शब्द प्रधान, परिमार्जित भाषा का प्रयोग करते हैं और सूत्र वाक्यों का अभिव्यंजनात्मकता प्रयोग कर भाषा को सुंदर रूप प्रदान करते हैं। *''बलिहारी है और मादक... जीवनी शक्ति है। चारों ओर कुपित यमराज के दारुण निःश्वास के समान धधकती लू में वह हरा भी है भरा भी है।...''* (उपमा अलंकार)

लेखक ने विभिन्न विषयों पर निबंध रचना की है और आवश्यकतानुसार अनेक शैलियों में निबंध लिखे हैं।

'कुटज' नामक निबंध में आचार्य जी ने **गवेषणात्मक शैली** का प्रयोग किया है, जैसे – *'संस्कृत में 'कुटज' रूप भी मिलता है और कुटच भी। मिलने को तो कूटज भी मिल जाता है। तो यह शब्द किस जाति का है।'', ''संस्कृत में कुटिया या कुटीर शब्द भी कदाचित् इसी शब्द से संबंधित हैं। क्या इस शब्द का अर्थ घर ही है; ''घर में काम-काज करने वाली' दासी 'कुटकारिका' और 'कुटहारिका' कही ही जा सकती है।''*

परंतु इसके अतिरिक्त कुटज में अन्य शैलियों का भी प्रयोग किया गया है–

लालित्यमय विवेचनात्मक भाषा शैली

'नाम इसलिए बड़ा नहीं... चित्त गंगा में स्नात!' (प. 125 पर देखें)

विश्लेषणात्मक भावनापूर्ण शैली

''रूप मुख्य है या नाम? नाम बड़ा है या रूप? पद पहले है या पदार्थ? पदार्थ सामने है पद नहीं सूझ रहा है। मन व्याकुल हो गया।''

भावनात्मक और विवेचनात्मक

''दुरंत जीवनी शक्ति... विचित्र नहीं है यह तर्क?'' (प. 128 पर देखें)

इसी प्रकार कहीं प्रतीकात्मक तो कहीं आलंकारिक शैली के भी दर्शन होते हैं। द्विवेदी जी की कृतियों में चिंतन-मनन और अनुशीलन के बिंब स्पष्ट रूप से द ष्टिगोचर होते हैं।

पाठ में आए शब्दों के अर्थ समझ कर उसी आधार पर आप अन्य शब्दों का भी निर्माण कर सकते हैं आपको इससे कई लाभ होंगे। जहाँ उस शब्द का ठीक-ठीक अर्थ समझने में सहायता मिलेगी, वहीं उसी नमूने के आधार पर आप नए शब्दों को स्वयं बना सकते हैं; जैसेः

पहाड़फोड़ – पहाड़ (को) फोड़कर आने वाला

पातालभेद – पाताल (को) भेदकर

इसी नमूने पर आप अन्य शब्द बना सकते हैं, जैसे–

टिप्पणी

'आकाशभेद' – उससे ही बनेगा **'आकाशभेदी'**

'ध्वनि भेद – उससे ही विशेषण रूप प्रयोग 'ध्वनिभेदी बाण'

इसी प्रकार अन्य नमूनों के शब्द ले सकते हैं:

नमूना	अन्य शब्द निर्माण
समाधिस्थ – समाधि (में) लगे हुए	**समीपस्थ** – समीप में
	निकटस्थ – निकट में
	दूरस्थ – दूर में (दूर रहने वाला)
कद्रदान – कद्र देने वाला	**पानदान** – पान रखने का पात्र
	रायतेदान – रायता रखने का पात्र

टिप्पणी : **'दान'** का अर्थ कुछ बदल गया है। यह भी याद रखें कि यह 'दान' फ़ारसी से ले लिया गया है। जबकि संस्कृत का 'दान' शब्द बिल्कुल अलग है, जिससे कई शब्द बनते हैं:

दानी	– दान देने वाला	**दानवीर**	– वह व्यक्ति जिसने दान देने में प्रसिद्धि पायी है।
प्रतिनिधित्व	– किसी के स्थान पर अथवा किसी के लिए काम करने वाले व्यक्ति का भाव	**देवत्व**	– देवता का भाव
		स्वत्व	– स्व (अपनेपन) का भाव
शब्दराशि	– शब्दों का ढेर, अनेक प्रकार के शब्दों का ठीक-ठीक प्रयोग शब्दावली	**धनराशि**	– धन का ढेर, अधिक धन
		जमाराशि	– जमा किया हुआ धन

इसी प्रकार अन्य शब्द छाँटिए और उनका ठीक-ठीक अर्थ समझिए, साथ ही उसी नमूने के शब्द भी बनाइए। अगर अर्थ समझ में न आए तो कोश में देखकर समझिए। कोश कैसे देखें यह भी आपको बताया जा रहा है।

पाठगत प्रश्न 18.6

1. 'कुटज' के अंतिम गद्यांश ''दुख और सुख ....उनसे मुक्त है।'' में जिस शैली का प्रयोग हुआ है, वह है–

   (क) विश्लेषणात्मक (ग) भावात्मक

   (ख) विवेचनात्मक (घ) प्रतीकात्मक

2. ''रूप व्यक्ति-सत्य है, नाम समाज-सत्य है।'' सूक्ति को स्पष्ट कीजिए–

टिप्पणी

18.5 आपने क्या सीखा

1. ''कुटज'' शिवालिक की नीरस और कठोर चट्टानों में उगने वाले एक ठिगने से वृक्ष का नाम है।
2. 'शिवालिक' का अर्थ शिवा की अलकें अथवा शिव के जटाजूट का निचला हिस्सा है।
3. पद अथवा पदार्थ में पद का महत्त्व पदार्थ से कम नहीं होता, क्योंकि वह सामाजिक स्वीकृति से निर्धारित होता है।
4. कुटज को उसकी अनेकानेक विशेषताओं के आधार पर अनेक नाम दिए जा सकते हैं, जैसे–वनप्रभा, गिरिकांता, गिरिकूट बिहारी।
5. संस्कृत साहित्य में, विशेषकर कालिदास के साहित्य में कुटज को विशेष सम्मान दिया गया है।
6. कभी-कभी रहीम जैसे साहित्यकार भी गलत बयानी के शिकार होकर, कुटज जैसे सरीखे वृक्ष का मूल्य आँकने में असफल हो सकते हैं।
7. कुटज 'घर' अथवा 'घड़े' से उत्पन्न व्यक्ति को, 'कुटिया' में उत्पन्न 'कुटकारिका' या 'कुटहारिका' (दासी) से उत्पन्न किसी व्यक्ति को कहा जाता है। इसी प्रकार कुटज के अनेक अर्थ हैं।
8. कुटज 'आग्नेय' अथवा 'कोल' भाषा-परिवार का एक शब्द है।
9. अपराजेय जीवनी-शक्ति का स्वामी कुटज नाम और रूप दोनों में अद्वितीय है। सूखी, नीरस और कठोर चट्टानों के मध्य प्रतिकूल परिस्थितियों में जीते हुए भी वह पुष्पों से लदा रहता है तथा अपने मूल नाम की हजारों वर्षों से रक्षा करता हुआ हमें भी जीवन का उद्देश्य सिखाता रहता है।
10. कुटज के समान हमें अपने संकीर्ण स्वार्थ के लिए नहीं, वरन् परमार्थ के लिए स्वाभिमानी, आत्मनिर्भर, कर्मठ, त्यागी और दूसरों की भलाई के लिए भी कुछ सोचना चाहिए।
11. उपकार, अपकार की बातें छोड़कर हमें 'कर्म' में आस्था रखनी चाहिए तथा यथासंभव अच्छे कर्म करते रहने का प्रयत्न करना चाहिए।
12. सुख और दुख की भावना हमारी मानसिक भावना से ही उपजती है, अतः हमें मन को जीतने का प्रयत्न करना चाहिए।
13. निबंधकार की भाषा-शैली अद्भुत तथा शब्द-संपदा अद्वितीय है। लेखक ने प्रस्तुत निबंध में सभी–भावों, शैलियों, शब्दों, भाषा-रूपों का समुचित सामंजस्य किया है।

18.6 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी हिंदी जगत के श्रेष्ठ निबंधकार, उपन्यासकार, आलोचक के अतिरिक्त कुशल वक्ता और सफल अध्यापक रहे हैं। इनका जन्म सन् 1907 में बलिया जिले के एक गाँव में हुआ था। इनका नाम हजारीप्रसाद कैसे पड़ा यह भी एक रोचक घटना है। जिस दिन इनका जन्म हुआ, उस दिन रास्ते में इनके पिता को एक हजार रुपए की थैली पड़ी मिली और इनके पिता ने इन्हें हजार रुपए का प्रसाद समझकर ग्रहण कर लिया।

आप बहुत ही हँसमुख स्वभाव के व्यक्ति थे। उनके मुक्त भाव की हँसी के ठहाकों को लोग आज भी याद करते हैं।

द्विवेदी जी का अध्ययन क्षेत्र बहुत व्यापक था। संस्कृत, हिंदी, प्राकृत, अपभ्रंश बांग्ला आदि भाषाओं पर आपका पूर्ण अधिकार था, इसके अतिरिक्त इतिहास, दर्शन, धर्मशास्त्र, संस्कृत आदि विषयों का गहरा ज्ञान था। इसका अंदाज़ा आपने यह निबंध पढ़कर लगा ही लिया होगा।

द्विवेदी जी कई विश्वविद्यालयों के हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे। सन् 1957 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 19 मई 1979 में इनका देहांत हो गया।

(ख) परोपकार, कार्पण्य दोष की निंदा, जीना-मरना ईश्वर के हाथ में होना अथवा मन की चंचलता पर काबू पाने के प्रयास का उपदेश गीता में भी है। जैसे

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।

तुलसीदास ने भी कहा है — *परहित सरिस धर्म नहीं भाई।*
परपीड़ा सम नहि अधमाई।

तथा रहीम भी लिखते हैं कि —

गोधन, गजधन, बाजि धन और रतन धनि खान।
जब आवै संतोष धन, सब धन धूरि समान।

इन्हें पाठ में आए प्रसंगों से जोड़कर देखिए कि ये कहाँ, किस प्रसंग के भाव से जुड़ते हैं? आप सोचिए कि कबीरदास ने भी तो इन्हीं भावों को लेकर कहीं कुछ नहीं कहा था? यदि हाँ, तो लिखिए।

(ग) आचार्य द्विवेदी के 'अशोक के फूल', 'शिरीष के फूल', 'आम फिर बौरा गए', 'कल्पलता' आदि निबंध पढ़िए।

18.7 पाठांत प्रश्न

1. कुटज व क्ष की किन्हीं सात विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
2. प्रस्तुत निबंध द्वारा लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं? लिखिए।
3. निम्नलिखित गद्यांशों की अपने शब्दों में सप्रसंग व्याख्या कीजिए:

   (क) याज्ञवल्क्य ने जो बात ....कृपण बना देता है।

   (ख) जो समझता है कि वह ....अभिमान नहीं होना चाहिए।

   (ग) जीना चाहते हो ....उल्लास खींच लो।

   (घ) दुनिया में त्याग नहीं है............गलत ढंग से सोचना है।

   (ङ) दुख और सुख तो मन के विकल्प हैं...........जाल बिछाता है।
4. प्रस्तुत निबंध से पाँच अंग्रेजी के, दस संस्कृत के तथा दस अरबी-फारसी के शब्द छाँटकर लिखिए।
5. प्रस्तुत गद्यांश के वाक्यों का क्रम कुछ उलट-पुलट हो गया है, पाठ के अनुसार नहीं रहा है। क्या आप इन्हें क्रम में लिखने में हमारी मदद करेंगे।

   'कुटज' अर्थात् जो कुट में पैदा हुआ हो। 'कुटिया' या 'कुटीर' शब्द भी कदाचित् इसी शब्द से सम्बद्ध हैं। कुट अर्थात् घड़े से उत्पन्न होने के कारण प्रतापी अगस्त्य मुनि भी 'कुटज' कहे जाते हैं। क्या इस शब्द का अर्थ घर ही है? 'कुट' घड़े को भी कहते हैं, घर को भी कहते हैं। संस्कृत में 'कुटकारिका' दासी को कहते हैं। कोई और बात होगी। घड़े से तो क्या उत्पन्न हुए होंगे। क्यों कहते हैं?

18.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ख) 5. (क)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

18.1 1. (ख) 2. (ख) 3. (क)

18.2 1. (ग) 2. (ग) 3. कुटज, दासी पुत्र होने के कारण 4. सिलवाँ लेवी

18.3 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. जिजीविषा 5. याज्ञवल्क्य

18.4 1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ख)

18.5 1. (ग) 2. (घ) 3. (मन के), 4. कामनाओं से मुक्त होने के कारण

18.6 1. (घ)

2. प्रस्तुत सूक्ति में लेखक वस्तु की आकृति और उसके नाम के महत्त्व को स्पष्ट करते हुए कहता है कि नाम को समाज ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर रखी है। मानव या वस्तु का रूप सौंदर्य तो व्यक्ति सत्य के अंतर्गत आता है जबकि मानव या वस्तु का नाम समाज-सत्य के अंतर्गत है।

301hi19

19

पत्र कैसे लिखें

आपने बहु प्रचलित फिल्मी गाना सुना होगा – ''कबूतर जा..जा.....जा..... पहले प्यार की पहली चिट्ठी साजन को दे आ।'' यही चिट्ठी ही पत्र है जो मन की बात कागज़ के छोटे टुकड़े पर लिखकर दूसरे तक पहुँचाने का कार्य करती है। इसमें मन के भावों या विचारों को संदेश के रूप में लिखा जाता है और किसी संदेश वाहक द्वारा या डाक द्वारा भेजा जाता है। आपने भी बहुत से लोगों को पत्र लिखे होंगे, जैसे– माता-पिता को, किसी मित्र या रिश्तेदार को, किसी अखबार के संपादक को या किसी और को। क्या आप जानते हैं कि पत्र-व्यवहार का संबंध केवल इतने ही लोगों से नहीं है। इसका क्षेत्र बहुत व्यापक और विस्तृत है।

आइए, इस पाठ में भिन्न -भिन्न प्रकार के पत्रों के बारे में विस्तार से पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विविध प्रकार के पत्र-लेखन के प्रयोजन का उल्लेख कर सकेंगे;
- अच्छे पत्रों के गुण बता सकेंगे;
- पत्रों के प्रकारों के बारे में बता सकेंगे;
- अनौपचारिक और औपचारिक पत्रों में अंतर बता सकेंगे;
- पत्र के विभिन्न अंगों का उल्लेख कर सकेंगे।
- कार्यालयी पत्राचार के स्वरूप के आधार पर विविध प्रकार के पत्र लिख सकेंगे।

19.1 पत्र लेखन का प्रयोजन

पत्र-लेखन भावों तथा विचारों के आदान-प्रदान का एक शक्तिशाली माध्यम है। पत्र का लेखक जहाँ अपना संदेश पत्र के माध्यम से भेजता है वहीं अपनी इच्छाएँ तथा आवश्यकताएँ उपयुक्त व्यक्ति तक पहुँचा देता है। पत्र में लेखक के व्यक्तित्व की छाप होती है। विशेष रूप से व्यक्तिगत पत्रों को पढ़कर आप किसी भी व्यक्ति के अच्छे-बुरे स्वभाव और मनोवृत्ति का परिचय आसानी से पा सकते हैं। पत्र एक पुल के समान है, जो दूर बैठे व्यक्तियों को एक-दूसरे से मिलाने में सहायक होता है।

टिप्पणी

पत्र-लेखन ऐसी कला है, जिसका हमारे जीवन में प्रायः उपयोग होता है। जहाँ बचपन में हम संबंधियों या मित्रों को पत्र लिखते हैं वहीं बड़े होने पर यह क्षेत्र अधिक विस्तृत हो जाता है। आजकल हम कार्यालय और व्यवसाय संबंधी पत्र भी अधिक लिखने लगे हैं। छोटी अवस्था में लिखे गए पत्रों में भावुकता का अंश अधिक होता है। धीरे-धीरे विचारों में प्रौढ़ता आने के साथ-साथ पत्रों की भाषा और शैली में निखार आने लगता है। अच्छा पत्र वही है, जिसे पढ़कर लिखी हुई बात सरलतापूर्वक समझ में आ जाए।

व्यापारी एक-दूसरे को अपने व्यवसाय से संबंधित पत्र लिखते हैं। ग्राहक अनेक जानकारियाँ प्राप्त करने के लिए पत्र लिखते हैं। व्यापारी या दुकानदार को वस्तुओं की खरीद आदि के लिए ग्राहक भी पत्र लिखते हैं। कार्यालयी ढाँचे में अधिकारियों और कर्मचारियों का एक-दूसरे से मिलकर बात करना संभव नहीं होता इसलिए अधिकतर काम पत्रों के माध्यम से ही किए जाते हैं। इन सभी क्षेत्रों में पत्रों का प्रयोजन अलग-अलग होता है इसलिए ये पत्र अपने स्वरूप में भी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। आइए, इन पत्रों के स्वरूप और विशेषताएँ पहचानें।

पत्र विचारों के आदान-प्रदान का एक सशक्त माध्यम है।

19.2 अच्छे पत्रों के गुण

पत्र पाने वाला व्यक्ति यदि पत्र पढ़कर वही समझ ले, जो पत्र लिखने वाला कहना चाहता है, तो उसे अच्छा पत्र माना जाएगा। एक अच्छे पत्र की भाषा स्पष्ट, सहज और प्रभावी होनी चाहिए जिससे पत्र पढ़ने वाला लिखी हुई बातों को आसानी से समझ ले और उनका पालन कर सके। पत्र लिखते समय ध्यान रखना चाहिए कि कम शब्दों में अपनी बात कहें, जटिल, कठिन शब्दों और कहावतों के प्रयोग से बचें। पत्र में निम्नलिखित गुण होने चाहिए:

1. संक्षिप्तता
2. सरलता
3. सहजता
4. प्रभावशीलता

आइए, इन गुणों को भली-भाँति समझ लें।

1. संक्षिप्तता

आज के व्यस्त जीवन में न तो किसी के पास लंबे पत्र लिखने का समय है न ही पढ़ने का। इसलिए पत्र में वही लिखा जाना चाहिए जो अनिवार्य हो। इसके लिए जरूरी है कि आवश्यक शब्दों का प्रयोग करें ताकि विषय स्पष्ट रूप से समझ में आ सके। संक्षिप्तता का अर्थ उसके आकार का छोटा या बड़ा होना नहीं है। यह पत्र के विवरण पर निर्भर करता है। मान लीजिए जो बात दो पंक्तियों में कहनी थी उसके लिए आपने दो पृष्ठ लिखे तब कहा जाएगा कि आपने संक्षिप्तता का ध्यान नहीं रखा परंतु यदि आपने दो पृष्ठ में सभी

पत्र संक्षिप्त कहने का मतलब यह नहीं है कि उसका आकार छोटा हो, बल्कि जरूरी यह है कि उसमें कुछ भी अनावश्यक न हो।

अनिवार्य बातें लिखीं और किसी भी शब्द को आप काट नहीं सकते तब भी यह पत्र संक्षिप्त ही कहलाएगा। पत्र में अपनी बात को नपे-तुले शब्दों में ही कहना चाहिए। एक ही बात को बार-बार दोहराना नहीं चाहिए। अनावश्यक स्पष्टीकरण नहीं देने चाहिए। सीधे-सीधे किसी बात को पूछना ठीक रहता है। घुमा-फिरा कर बात को न कहें। यदि कोई आपसे कुछ पूछे तो उसका उत्तर भी सीधा और स्पष्ट लिखना चाहिए।

2. सरलता

पत्र की भाषा सरल होनी चाहिए। आसान और दैनिक जीवन में काम आने वाले शब्दों का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। छोटे-छोटे वाक्य बनाएँ। छोटे अनुच्छेद बनाएँ। वाक्यों का क्रम ध्यान रखें। एक बात से दूसरी बात जुड़ती हो और जहाँ बात समाप्त हो जाए वहीं अनुच्छेद बदल दें। नई बात को सदैव नए अनुच्छेद से ही शुरू करें। बड़े-बड़े कठिन, क्लिष्ट और जटिल शब्दों का प्रयोग न करें। आइए ये उदाहरण पढ़ते हैं:

(क) वह बात जो मैंने पिछले पत्र में आपसे पूछी थी, उसका उत्तर देने का कष्ट आपने इस पत्र में नहीं किया जिससे यहाँ का सारा कार्यक्रम तब तक अस्त-व्यस्त है जब तक आपका उचित आदेश नहीं मिल जाता।

(ख) मैंने पिछले पत्र में आपसे कुछ बातें पूछी थीं। उनका ठीक उत्तर न मिला। कृपया उचित आदेश शीघ्र लिखें, जिससे यहाँ का कार्यक्रम ठीक से चल सके।

सरलता का तात्पर्य है उलझाव का न होना। यदि जो कुछ आप कह रहे हैं, वह ठीक से पहले, खुद समझ लें, तो आपके विचारों और भाषा में सरलता आ जाएगी।

उदाहरण (क) में एक ही बड़े वाक्य के अंतर्गत कई बातें लिखे जाने के कारण विचार समझने में कठिनाई होती है। किंतु वही विचार उदाहरण (ख) में छोटे-छोटे वाक्यों में लिखे जाने के कारण सरलता से समझा जा सकता है।

3. सहजता

आपसी बातचीत में हम सहज और स्वाभाविक भाषा-शैली का प्रयोग करते हैं, उसी प्रकार पत्र में करना चाहिए। पत्र पढ़ते समय यदि वार्तालाप का सा आनंद आए, तो समझ लें कि उसकी भाषा सहज है। पत्र में अपनेपन की झलक देने के लिए आवश्यकता के अनुसार 'आप', 'तुम', 'मैं' 'हम', 'वे', 'हमारे' आदि शब्दों का प्रयोग अच्छा रहता है। अनौपचारिक पत्रों में दादा जी, मामा जी, पिता जी, जीजी जैसे शब्दों का प्रयोग संबंधित व्यक्ति के प्रति निकटता तथा आत्मीयता की भावना पैदा करते हैं। अनौपचारिक पत्रों में तो इस गुण का होना अनिवार्य है।

सहजता का अर्थ यह है कि पत्र स्वाभाविक रूप में अनायास ढंग से लिखा जाना चाहिए।

पत्र में भावों को जितनी स्वाभाविकता से व्यक्त किया जाएगा, पाठक के लिए वह उतना ही सजह बन जाएगा। उदाहरण के लिए लेखक अपनी किसी गलती को सहज भाव से स्वीकार करके क्षमा माँग लें तो पत्र प्राप्तकर्त्ता अवश्य ही उदारता से क्षमा कर देगा। शिष्ट और विनम्र शब्दों के प्रयोग से भी पत्र में सहजता का गुण उत्पन्न होता है।

औपचारिक पत्रों में भी यदि हम अपनी बात संवाद की शैली में लिखें तो उसका प्रभाव बेहतर होगा।

टिप्पणी

पत्र ऐसा होना चाहिए कि वह अपने विचारों को भाषा और प्रस्तुति की द ष्टि से पत्र प्राप्तकर्त्ता पर अपेक्षित प्रभाव डाल सके।

4. प्रभावशीलता

एक अच्छे पत्र का अगला गुण है – प्रभाव उत्पन्न करना। पत्र की भाषा ऐसी हो कि वह पत्र प्राप्तकर्त्ता को प्रभावित कर सके। शब्दावली इतनी शक्तिशाली हो कि उसके मन में चित्र-सा उपस्थित कर दे। पत्र को प्रभावोत्पादक बनाने में मुहावरेदार भाषा बहुत सहायक होती है। अच्छा बताइए, इन दो वाक्यों में से कौन-सा ज्यादा प्रभावशाली है?

(क) आशा है इस कार्य में आप अवश्य ही सफल होंगे।

(ख) आशा है सफलता आपके कदम चूमेगी।

यहाँ (ख) ही अधिक प्रभावकारी है। इसी प्रकार यदि हम कहना चाहें कि (क) नाटक देखकर मैं बड़ी प्रसन्न हुई।

इसके लिए निम्नलिखित वाक्य अधिक प्रभाव उत्पन्न करेगा।

(ख) नाटक देखकर मेरा मन बाग-बाग हो गया।

कुछ शब्द जैसे 'सुविधा', 'लाभ', 'स्वीकार', 'विश्वास', 'ईमान', 'धन्यवाद' आदि का प्रयोग पत्र को प्रभावकारी बनाता है। कहने का मतलब यह है कि शब्दों का चुनाव पाठक की भावनाओं को स्पर्श करने वाला हो, तो पत्र पढ़ने में उसकी जिज्ञासा बनी रहेगी और वह प्रभावित भी होगा।

औपचारिक पत्रों में सीधे स्पष्ट शब्दों में अपनी बात लिखी जाती है। घुमावदार लच्छेदार बातों से बचा जाता है, मुहावरों का प्रयोग न के बराबर होता है। औपचारिक पत्रों में अपनी बात को बिंदुवार क्रमवार रूप से प्रस्तुत करने से अधिक प्रभाव उत्पन्न होता है।

पाठगत प्रश्न 19.1

1. निम्नलिखित वाक्यों को पढ़कर उनके सामने सही (√) अथवा गलत (X) का निशान लगाइए:

   (क) विषय को स्पष्ट करने के लिए अपनी बात विस्तार से कहनी चाहिए। ( )

   (ख) सरल भाषा के लिए दैनिक जीवन में प्रयोग में आने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाना चाहिए। ( )

   (ग) मैं, तुम आदि का प्रयोग अनौपचारिक पत्रों में नहीं किया जाता। ( )

   (घ) औपचारिक पत्रों की भाषा मुहावरेदार होनी चाहिए। ( )

   (ङ) सहज और वास्तविक भाषा लेखक और पाठक को निकट लाती है।( )

2. कोई दो सरल अथवा प्रभावी वाक्य लिखिए।

19.3 पत्रों के प्रकार

जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं, जब हमें पत्र लिखने की आवश्यकता पड़ती है।

विभिन्न अवसरों पर विभिन्न लोगों को पत्र लिखने का ढंग या शैली भी अलग होती है। उस दृष्टि से हम पत्रों को मुख्यतः दो भागों में बाँट सकते हैं:

1. अनौपचारिक पत्र
2. औपचारिक पत्र

1. अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक (अन् + औपचारिक अर्थात् जो औपचारिक न हो) सरल तथा स्वाभाविक व्यवहार जिसमें कोई नियम या परिपाटी का बंधन न हो। अपने संबंधियों या मित्रों को लिखे गए पत्र अनौपचारिक पत्र होते हैं। ऐसे पत्रों में हम संबंधी की कुशलता का समाचार पूछते हैं और अपनी कुशलता तथा अन्य समाचार लिखते हैं। इन पत्रों की भाषा बहुत सरल होती है और इनमें अपनापन झलकता है। इनमें संवादात्मक भाषा का प्रयोग होता है। लगता है कि जैसे पास बैठे बातचीत कर रहे हों।

अनौपचारिक पत्रों के शुरू में हम सबसे पहले ऊपर दाईं ओर अपना पूरा पता लिखते हैं। यदि पत्र पाने वाला हमें बहुत अच्छी तरह से जानता है और यदि उसे हमारा पता भली-भाँति मालूम है, तो हम वहाँ केवल स्थान का नाम लिख देते हैं या कुछ भी नहीं लिखते। पता न भी लिखा जाए तो भी उसके स्थान पर हम पत्र लिखे जाने की तारीख अवश्य लिखते हैं। इससे स्पष्ट हो जाता है कि पत्र किस दिन लिखा गया।

'अभिवादन' अनौपचारिक पत्रों की एक विशेषता है। संबोधन और अभिवादन पत्र लिखने वाले व पत्र पाने वाले के संबंध के अनुसार होता है और उसी के अनुसार पत्र की समाप्ति पर लिखे जाने वाले शब्द लिखे जाते हैं। आइए निम्नलिखित तालिका में इसके कुछ उदाहरण देखते हैं–

अनौपचारिक पत्रों के संबोधन, अभिवादन और समाप्ति

संबंध	**संबोधन**	**अभिवादन**	**समाप्ति**
अपने से बड़ों को	पूज्य पिताजी पूजनीय माताजी, आदरणीय भाई साहब/बहनजी/ पिता श्री/ माता श्री/	चरण स्पर्श, प्रणाम, सादर नमस्ते, नमस्कार	आपका, आज्ञाकारी पुत्र, आज्ञाकारिणी पुत्री, स्नेहाकांक्षी
बराबर वालों या मित्रों को	प्रिय, प्रियवर परम मित्र	नमस्ते, सप्रेम नमस्ते, नमस्कार	तुम्हारा मित्र , तुम्हारा अभिन्न मित्र
अपने से छोटों को	चिरंजीव प्रिय (नाम) परम मित्र	सुखी रहो, आशीर्वाद प्रसन्न रहो आशीष, शुभाशीष	शुभ चिंतक, शुभाकांक्षी शुभेच्छु

पाठगत प्रश्न 19.2

कॉलम 'क' में कुछ कथन दिए गए हैं। प्रत्येक कथन का संबंध कॉलम 'ख' में आए किसी एक शब्द से है। इन्हें मिलाइए:

	कॉलम 'क'	कॉलम 'ख'
1.	पत्रों की विशेषता	प्रणाम
2.	अपने से छोटी को संबोधन	सरलता
3.	अपने से बड़ों का अभिवादन	प्रसन्न रहो

अनौपचारिक पत्र और उनके प्रकार

मुख्य रूप से पारिवारिक संबंधियों तथा मित्रों को लिखे गए पत्र ही अनौपचारिक पत्र कहलाते हैं। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत रूप से लिखे गए निमंत्रण पत्र, बधाई पत्र तथा संवेदना पत्र भी अनौपचारिक पत्र कहे जा सकते हैं।

संबंधियों-मित्रों को लिखे गए पत्र

अपने माता-पिता, भाई-बहन या अन्य सगे संबंधियों तथा मित्रों को लिखे गए सामान्य पत्रों में हम उन लोगों को अपनी कुशलता का समाचार भेजते हैं और उनका समाचार पूछते हैं। इन पत्रों की भाषा सरल तथा स्वाभाविक होती है। विषयवस्तु के अंतर्गत प्रायः घरेलू बातें होती हैं लेखक किसी विशेष सूचना, घटना या स्थिति की जानकारी देता है या पूछता है। इस प्रकार के पत्रों के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं।

1. पिता को पत्र

345, अशोक विहार, नई दिल्ली
20.2.2007

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम

आशा है आप लोग स्वस्थ और प्रसन्नचित होंगे। आप लोगों से विदा लेकर मैं कुशल पूर्वक यहाँ पहुँच गया। रास्ते में ठंड लग जाने से थोड़ा जुकाम आदि हो गया था, लेकिन अब मैं पूर्ण रूप से स्वस्थ हूँ। मेरी पढ़ाई ठीक चल रही है। नई कक्षा में प्रवेश शुल्क तथा कमरे का किराया लगभग रु० 3000/– है। मेरे पास रु० 1000/– हैं। अतः शेष रु० 2000/– आप जल्दी ही भेज दीजिएगा।

माँ को सादर प्रणाम! बड़े भैया व भाभीजी को भी मेरा प्रणाम। आशु को प्यार।

आपका आज्ञाकारी पुत्र
आशीष

2. पिता द्वारा पत्र का उत्तर

445, रिसबगंज
फैजाबाद
1.3.2007

प्रिय बेटा आशीष

खुश रहो !

तुम्हारा पत्र पढ़कर खुशी हुई कि तुम स्वस्थ व आनंद-चित्त हो। यहाँ पर सब कुशल है। तुम्हारी माता जी और भाई-भाभी सभी लोग आनंद में हैं। तुम्हें खूब याद करते हैं।

मैं रु० 3000/– मनीऑर्डर से भेज रहा हूँ। अन्य खर्च के लिए भी रुपयों की आवश्यकता पड़ने पर लिख भेजना, मैं तुरंत भेज दूँगा। वार्षिक परीक्षा के लिए अच्छी तैयारी करना।

तुम्हारी माता जी तुम्हें आशीर्वाद कहती हैं। अपना कुशल-मंगल जल्दी लिखना।

तुम्हारा पिता

राजेंद्र

पाठगत प्रश्न 19.3

1. अपने मामा जी को पत्र लिखते समय संबोधन, अभिवादन और समाप्ति पर जो लिखना है, उसे यहाँ लिखिए

   (क) **संबोधन**..

   (ख) **अभिवादन** ....

   (ग) **समाप्ति** ....

2. नीचे दिए गए अधूरे पत्र को पूरा कीजिए:

225, हौज खास
नई दिल्ली
5 अप्रैल 07

प्रिय सुनीती,

नमस्ते!

यहाँ सब कुशल हैं। आशा है कि तुम लोग सकुशल होगे। अभी-अभी पिछले वर्ष की एक पत्रिका हाथ लग गई जिसमें तुम्हारा लिखा हुआ सुनामी पर एक लेख पढ़ा। तुम स्वयं भुक्त भोगी रही हो इसलिए तुमने जो लिखा वह हृदयस्पर्शी होने के साथ-साथ पाठकों को सचेत करने वाला भी था। तुमने उसके भौगोलिक कारण बड़े स्पष्ट रूप से बताए हैं, उससे बचाव के उपाय सुझाए, सभी ज्ञानवर्धक हैं। लेख पढ़ कर मेरे मन में विचार आया कि...............................

....

....

....

....

पत्र–समापन

टिप्पणी

जब हम पत्र लिखकर अपने संबंधियों आदि की खुशी में शरीक होते हैं, तो हम अनौपचारिक पत्र लिखते हैं।

इनके अतिरिक्त भी अनौपचारिक पत्र होते हैं; जैसे–

बधाई पत्र

किसी व्यक्ति को उसकी सफलता या किसी शुभ समाचार के अवसर पर अपनी प्रसन्नता और शुभकामना व्यक्त करने के लिए लिखे जाने वाले पत्र बधाई पत्र कहलाते हैं। बधाई पत्र कई प्रकार के हो सकते हैं जैसे – नववर्ष अथवा त्यौहार की शुभकामनाएँ और बधाई भेजना, अपने सगे संबंधियों की सफलता पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए बधाई पत्र भेजना, किसी मित्र को विवाह की बधाई भेजना इत्यादि।

2. औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र का अर्थ है कामकाजी, सरकारी या कार्यालयी स्तर पर लिखे गए पत्र। औपचारिक रूप से सरकारी कामकाज अथवा संबंधियों को लिखे गए पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। ऐसे पत्र प्रायः उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा व्यक्तिगत संबंध नहीं होता। इन पत्रों में हम केवल काम की बात करते हैं। संबंधों में दूरी के कारण इन पत्रों में भाषा की नियमबद्धता का पालन किया जाता है।

औपचारिक पत्र

उन लोगों को लिखे जाते हैं, जिनसे हमारा व्यक्तिगत संबंध नहीं होता। इनकी भाषा नियमबद्ध और शैली रस्मी होती है।

औपचारिक पत्रों में अनौपचारिक पत्रों के समान ही आरंभ, संबोधन, विस्तार और समाप्ति नामक अंग होते हैं। इन अंगों में आने वाली सामग्री विषय के अनुसार बदल जाती है। देखिए–

औपचारिक पत्र के अंग

प्रारंभ {

जनवरी 10, 2007
का. नं............

सेवा में

अध्यक्ष
खेलकूद सामग्री भंडार
खिलाड़ी नगर
मध्य प्रदेश

विषय : खेलकूद की सामग्री में दोष

संदर्भ : आपका पिछला पत्र दि. ....

संबोधन { महोदय,

मुख्य विषय { निवेदन यह है कि आपने जो सामग्री हमारे क्लब के लिए भेजी थी, उनमें न तो सामग्री पूरी है और न ही यह आदेश के मुताबिक है। हम आपका बंडल वापस भिजवा रहे हैं। जिससे कि आप इसकी जाँच कर लें और सामग्री को समुचित रूप में हमारे पास भेजें।

} पत्र

धन्यवाद।

समापन {
भवदीय
सुजान सिंह
फ्रैन्डस स्पोटर्स क्लब 2/3 रणजीत नगर दिल्ली

अगर हम इन अंगों की तुलना अनौपचारिक पत्र के अंगों से करें, तो हमें पता चलेगा कि औपचारिक पत्रों में ऊपर दाईं ओर दिनांक तो होता है, लेकिन वहाँ पत्र भेजने वाले का पता नहीं होता, इसके बजाय वहाँ पत्र का संदर्भ लिखा जाता है इधर बाईं ओर जहाँ अनौपचारिक पत्र संबोधन और अभिवादन से शुरू हो जाता है, वहाँ औपचारिक पत्र में इसे पहले 'सेवा में' लिखकर पत्र प्राप्त करने वाले का पद, नाम व पूरा पता लिखा जाता है। इसके बाद यहाँ पत्र का विषय भी होता है, जिसे अनौपचारिक पत्रों में लिखने की जरूरत नहीं होती।

इसके बाद संबोधन और पत्र का विस्तार होता है, जिनमें अनौपचारिक पत्रों की तुलना में भाषा और शैली में बहुत अंतर आ जाता है। अनौपचारिक पत्रों में जहाँ भाषा-शैली अपनापन लिए होती है, वहाँ औपचारिक पत्रों में विषय का क्रमबद्ध उल्लेख और पत्र-लेखन का प्रयोजन प्रमुख होता है।

पत्र की समाप्ति पर औपचारिक पत्रों में 'भवदीय' शब्द लिखा जाता है और फिर प्रेषक के हस्ताक्षर और उसका पूरा नाम व पता होता है।

अनौपचारिक पत्रों और औपचारिक पत्रों में एक और अंतर यह होता है कि अनौपचारिक पत्र जहाँ हाथ से लिखे जाते हैं, वहाँ औपचारिक पत्र प्रायः टंकित भेजे जाते हैं। कंप्यूटर की सुविधा के कारण पत्र का समापन भी बाईं ओर ही होता है।

कुछ पत्रों में विशेष रूप से छपे हुए पत्र (लैटर हैड) में प्रेषक या अधिकारी का नाम तथा पता बाईं ओर ही छपा रहता है ऐसे में पत्र भेजने वाले का पता नीचे देने की ज़रूरत नहीं होती।

पाठगत प्रश्न 19.4

निम्नलिखित कथनों में से जो सही है उनके सामने सही (√) निशान लगाइए और जो गलत है वहाँ (X) का निशान लगाइए:

1. औपचारिक पत्र संबंधी या मित्र को लिखे जाते हैं। ( )
2. औपचारिक पत्रों में संबोधन से पूर्व पाने वाले का पता लिखा जाता है। ( )
3. औपचारिक पत्रों में अभिवादन लिखा जाना आवश्यक है। ( )
4. औपचारिक पत्र में प्रेषक के हस्ताक्षर के पूर्व 'भवदीय' लिखा जाता है। ( )

औपचारिक पत्रों के प्रकार

औपचारिक पत्रों का प्रयोग कई रूपों में किया जाता है। व्यावसायिक पत्र भी औपचारिक होते हैं और घरों में आने वाले निमंत्रण-पत्र, बधाई-पत्र, संवेदना-पत्र आदि भी। कार्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले पत्र इनसे अलग हैं जिनका विस्तार से

उल्लेख आगे किया जाएगा। आइए, पहले हम व्यावसायिक पत्र और निमंत्रण पत्र आदि के विषय में जान लेते हैं।

निमंत्रण-पत्र

अभी हमने पढ़ा कि छपे हुए निमंत्रण-पत्र, शुभकामना अथवा बधाई-पत्र औपचारिक पत्रों की कोटि में आते हैं। इन पत्रों की रूपरेखा पूर्व निश्चित होती है तथा उनकी भाषा का गठन औपचारिक होता है। इनके कुछ नमूने इस प्रकार हैं:

1. विवाह के अवसर पर भेजे गए एक औपचारिक निमंत्रण-पत्र का नमूना देखिए:

मान्यवर,

आयु. रेनु

(सुपुत्री श्रीमती मंजू बंसल तथा श्री सुख नंदन लाल बंसल)

एवम्

चि. राज कुमार

(सुपुत्र श्रीमती संध्या गुप्ता तथा राधेश्याम गुप्ता, बल्लभगढ़ निवासी)

के

शुभ विवाहोत्सव

पर सपरिवार पधार कर वर-कन्या को आशीर्वाद प्रदान कर अनुग्रहीत करें।

कार्यक्रम

सोमवार, दिनांक 23 नवंबर, 2007

स्वागत बारात 9.00 बजे रात्रि
(सैंट्रल पार्क, ग्रीन पार्क, नई दिल्ली)

मंगलवार, दिनांक 24 नवंबर, 2007

विदा 5.00 बजे प्रातः

उत्तराकांक्षी
ऋषभ कलीनिक
S–38, खंडेलवाल नगर
फोन–27454182

विनीत
समस्त मेठी
परिवार

2. दीपावली का शुभकामना या बधाई पत्र

प्रिय पूनम

दीवाली के जगमगाते दीपों की रोशनी आपके मार्ग को उज्ज्वल बनाए। इस शुभ अवसर पर मेरी अनंत शुभकामनाएँ।

प्रदीप

3. संवेदना-पत्र

हमारे जीवन में दुख और निराशा के अवसर भी आते हैं। ऐसे अवसर पर दुखी व्यक्ति को सांत्वना देने के लिए लिखे गए पत्र संवेदना पत्र कहलाते हैं। आइए, इनके कुछ

टिप्पणी

उदाहरण देखें। मित्र के पिता का स्वर्गवास होने पर उसे संवेदना पत्र इस प्रकार लिखा जा सकता हैः

15–बी, कमला नगर, दिल्ली
11.3.2007

प्रिय दिनेश

तुम्हारे पिताजी के अचानक देहांत का समाचार सुनकर मैं स्तब्ध रह गया। यह तुम्हारे परिवार पर वज्रपात हुआ है। किंतु ईश्वर की इच्छा पर किसी का वश नहीं है।

हम सभी लोग तुम्हारे दुख से दुखी हैं। ईश्वर से प्रार्थना है कि स्वर्गवासी आत्मा को शांति दे और तुम सबको इस अपार दुख को सहन कर सकने की शक्ति प्रदान करे।

मैं समय मिलते ही तुम्हारे पास शीघ्र आऊँगा। माता जी का विशेष ध्यान रखना। उन्हें कोई आघात न लगने पाए।

तुम्हारा मित्र
डेविड

5. यौन रोग की समस्या से ग्रस्त मित्र को पत्र

ए–40 इंद्रपुरी
दिल्ली – 12
27.6.06

स्नेही निशांत

नमस्ते,

आज मैं तुम्हें यह पत्र एक विशेष उद्देश्य से लिख रहा हूँ। मैं पिछले दिनों अपने दोस्त अनुपम को बीमारी की हालत में देखने गया, जो यौन रोगग्रस्त होने के कारण पीड़ा से कराह रहा था। पिछले मास ही उसे एक नामी अस्पताल में गुर्दा प्रत्यारोपित कराना पड़ा था। परंतु दुर्भाग्य से यह गुर्दा किसी संक्रमित व्यक्ति का था, जिस वज़ह से अनुपम भी इसी रोग से घिर गया। अस्पताल से मुझे इस संबंध में जो जानकारी मिली, उसे मैं घर-घर पहुँचा कर अपने और साथियों को भी सचेत करना चाहता हूँ ताकि सभी इस भीषण बीमारियों से बच सकें और उन भ्रांतियों को मन से दूर करें जो अज्ञानता के कारण समाज में फैली हुई हैं।

जीवन बहुमूल्य है, यह हमें एक ही बार मिलता है। अतः सँभाल कर कदम बढ़ाएँ मैं अपनी जानकारी को तुम तक पहुँचाकर अनेक अन्य पीड़ितों की सहायता करना चाहता हूँ–

1) रोगी को रक्त देने से पूर्व उस रक्त का परीक्षण अवश्य करवाएँ, अच्छा हो किसी विश्वस्त 'ब्लड बैंक' से ही रक्त लिया जाए।
2) अपने मित्रों और संबंधियों को रक्त के लिए प्रेरित करें। रक्त-दान से दुर्बलता नहीं आती।
3) केवल कीटाणु रहित सुइयाँ और सिरिंज का ही प्रयोग करें।
4) लोगों के दबाव में न आएँ और जो बात अनुचित हो उसके लिए ना कहने में न चूकें।

5) अपने साथी के प्रति विश्वास रखें।

6) विवाह पूर्व यौन संबंध से बचें।

7) एक से अधिक साथियों के साथ यौन संबंध से बचें।

8) एक ही सुई से कई लोगों के साथ बैठकर नशा भी न लें।

तुम्हें यह पत्र कुछ अटपटा लग सकता है क्योंकि हम प्रायः यौन समस्याओं या यौन रोगों की चर्चा नहीं करते। मेरे विचार से यह ठीक नहीं है। हमें इन विचारों पर खुलकर चर्चा करनी चाहिए क्योंकि ये नियम हम नवयुवकों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

अनुपम मेरा इतना प्यारा दोस्त है उसका दुख मुझसे देखा नहीं जाता। परंतु यह रोग संक्रामक नहीं इसलिए मैं उसे गले लगा सका, उसके साथ खा-पी सका, उसे सांत्वना दे उसका मनोबल बढ़ा सका।

मुझे विश्वास है कि तुम प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी प्रथम ही आओगे।

शुभकामनाओं सहित

तुम्हारा अभिन्न मित्र

क.ख.ग

क्रियाकलाप-1

आप औपचारिक निमंत्रण-पत्र का नमूना देख चुके हैं। एक काम कीजिए– मान लीजिए आपकी बड़ी बहन का नाम शांतलता है। उसका विवाह कुछ ही दिनों में होने वाला है। अलग से कागज़ पर एक वैवाहिक निमंत्रण पत्र तैयार कीजिए।

19.4 कार्यालयी पत्राचार

आइए, कार्यालयों के मुख्य ढाँचे को समझते हैं। क्या आप कभी बैंक गए हैं। बैंक में बहुत से लोग काम करते हैं– चपरासी से लेकर मुख्य प्रबंधक तक। कोई व्यक्ति आपका खाता खोलता है तो कोई केबिन में बैठकर आपको पैसे देता है। कोई आपके द्वारा दिए गए चैक या ड्राफ्ट को आपके खाते में जमा करता है तो कोई आपका ड्राफ्ट बनाता है। अनेक व्यक्ति ऐसे भी होते हैं जिनसे आपका सीधा संबंध नहीं होता लेकिन वे भी बैंक की कार्यवाही में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को उसके पद के अनुसार कार्य दिया जाता है। यह तो एक छोटे से बैंक या शाखा की बात हुई। बहुत सी शाखाओं की एक मुख्य शाखा भी होती है और मुख्य शाखाओं का एक मुख्यालय भी होता है। मुख्य शाखा के माध्यम से इन शाखाओं के कार्य को संचालित किया जाता है। इस प्रकार आपने देखा कि एक कार्यालय का कामकाज अनेक स्थानों पर अनेक अधिकारियों/कार्यकत्ताओं/कर्मचारियों द्वारा किया जाता है तथा उनके बीच पत्रों के माध्यम से कोई भी सूचना दी जाती है।

विभिन्न मंत्रालयों, विभागों आदि के कार्यालयों के कामकाज के बारे में आप न जानते हों लेकिन उनमें भी कामकाज का ढंग यही है। इनमें अनेक प्रकार के अधिकारियों की

नियुक्ति की जाती है–सचिव से लेकर अनुभाग अधिकारी तक। इसे आप निम्नलिखित चित्र से भी समझ सकते हैं–

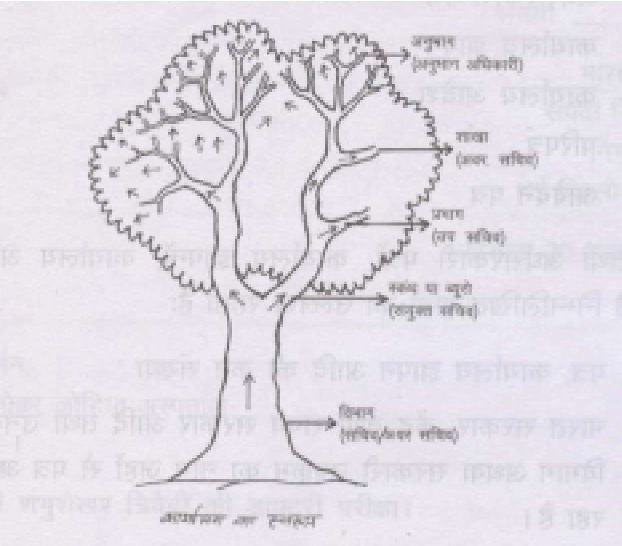

चित्र

जिस प्रकार एक पेड़ मुख्य तने से लेकर अनेक भागों में विभाजित होते हुए पत्तियों तक फैला होता है। वैसे ही कार्यालयी ढाँचे में सचिव से लेकर अनुभाग अधिकारी तक के बहुत सारे पद होते हैं जिनके माध्यम से सरकारी कामकाज किए जाते हैं तथा नीतियाँ जनता तक पहुँचाई जाती हैं।

इन मंत्रालयों, विभागों, प्राधिकरणों तथा आयोगों में प्रशासनिक कार्यों से संबंधित जो पत्र-व्यवहार किया जाता है वह कार्यालयी पत्राचार कहलाता है। इसमें सरकारी, अर्धसरकारी और अन्य प्रकार के पत्र शामिल हैं।

पाठगत प्रश्न 19.5

ऊपर वृक्ष का चित्र दिया गया है। उसे ध्यान से देखें और निम्नलिखित वाक्यों के सामने (√) अथवा (X) का निशान लगाइए।

1. स्कंध के अधीन अनेक प्रभाग होते हैं। ( )
2. शाखा के अंतर्गत अनेक प्रभाग होते हैं। ( )
3. सबसे ज्यादा संख्या अनुभागों की होती हैं। ( )
4. प्रभाग के अंतर्गत अनेक शाखाएँ होती हैं। ( )

19.5 कार्यालयी पत्राचार के विभिन्न प्रकार

अपनी बात किसी अन्य विभाग, व्यक्ति अथवा अपने ही कर्मचारियों को सूचित करने के लिए विभिन्न रूप से पत्राचार किया जाता है। ये निम्नलिखित प्रकार के होते हैं:

1. सरकारी पत्र या शासकीय पत्र
2. अर्धसरकारी पत्र
3. कार्यालय ज्ञापन
4. कार्यालय आदेश
5. परिपत्र
6. आवेदन पत्र

सरकारी तथा अर्धसरकारी पत्रों, कार्यालय ज्ञापनों, कार्यालय आदेशों आदि में आमतौर से निम्नलिखित बातों का उल्लेख रहता है:

(क) पत्र, कार्यालय ज्ञापन आदि की क्रम संख्या

(ख) भारत सरकार, केंद्र तथा राज्य सरकार आदि तथा उनके मंत्रालय या विभाग अथवा सरकारी उपक्रम का नाम जहाँ से पत्र आदि भेजा जा रहा है।

(ग) प्रेषक का नाम तथा/पदनाम

(घ) प्रेषिती का नाम तथा/पदनाम

(ङ) पत्र भेजने का स्थान तथा तारीख

(च) विषय

(छ) संबोधन

(ज) पत्र का मुख्य कलेवर

(झ) स्वनिर्देश

(ा) प्रेषक के हस्ताक्षर तथा पदनाम

(त) पृष्ठांकन

यह आवश्यक नहीं कि पत्राचार के सभी रूपों में ऊपर लिखी सभी बातें हों या उनका क्रम या स्थान एक जैसा हो।

कुछ प्रमुख कार्यालयी पत्रों की विशेषताएँ

1. सरकारी पत्र या शासकीय पत्र

केंद्रीय सरकार के मंत्रालय, राज्य सरकारें, सरकारी उपक्रमों, सार्वजनिक निकायों, व्यावसायिक फर्मों आदि के साथ होने वाले पत्र-व्यवहार में सामान्यतः सरकारी पत्र लेखन का प्रयोग किया जाता है। भारत सरकार के मंत्रालयों के आपसी पत्र-व्यवहार में भी सामान्यतः सरकारी पत्र लेखन का प्रयोग नहीं किया जाता। उसके लिए कार्यालय ज्ञापनों अथवा अर्धसरकारी पत्रों आदि का प्रयोग होता है।

टिप्पणी

नमूना

संख्या ....

भारत सरकार
संपदा निदेशालय,
निर्माण भवन,
नई दिल्ली–110001

दिनांक 20 फरवरी 2007

सेवा में,

सिविल सर्जन,
डा0 राममनोहर लोहिया अस्पताल
नई दिल्ली–1

विषय : श्री शंभुशेखर त्रिवेदी की डाक्टरी परीक्षा।

महोदय,

इस कार्यालय में श्री शंभुशेखर त्रिवेदी की नियुक्ति उच्च श्रेणी लिपिक के रूप में करने पर विचार किया जा रहा है। अनुरोध है कि उनकी डाक्टरी परीक्षा करें और शारीरिक स्वस्थता का प्रमाणपत्र इस कार्यालय को प्रस्तुत करें।

श्री शंभुशेखर त्रिवेदी को उनकी डाक्टरी परीक्षा के लिए आपके समक्ष दिनांक 6 मार्च 2007 को प्रातः 10.30 बजे उपस्थित होने का निर्देश दिया गया है।

घोषणा पत्र तथा डाक्टरी प्रमाणपत्र के रिक्त प्रपत्रों की आवश्यक प्रतियाँ संलग्न हैं। श्री शंभुशेखर त्रिवेदी के हस्ताक्षर कृपया आप अपने सामने करवाएँ।

भवदीय,
ह. च.छ.ज.
सहायक संपदा निदेशक (प्रशासन)

प्रतिलिपि श्री शंभुशेखर त्रिवेदी को प्रेषित। वह अपनी डाक्टरी परीक्षा के लिए सिविल सर्जन, डा0 अनुज श्रीवास्तव, राम मनोहर लोहिया अस्पताल, नई दिल्ली के समक्ष दिनांक 6 मार्च 2007 को प्रातः 10.30 बजे उपस्थित हों।

हस्ताक्षर
सहायक संपदा निदेशक (प्रशासन)

टिप्पणी : मुख्य पत्र की समाप्ति के बाद जो भाग 'प्रतिलिपि श्री शंभुशेखर त्रिवेदी को' से आरंभ हुआ है वह 'पृष्ठांकन' है।

टिप्पणी

2. अर्धसरकारी पत्र

अर्धसरकारी पत्र का प्रयोग सरकारी अधिकारियों के आपसी पत्र-व्यवहार में विचारों या सूचना के आदान-प्रदान अथवा प्रेषण के लिए किया जाता है। जब किसी अधिकारी का ध्यान किसी मामले की ओर व्यक्तिगत रूप से दिलवाना हो, या किसी मामले की विशेष स्थिति या पहलू पर विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करना हो, तब भी इसका प्रयोग होता है। इस प्रकार का पत्र प्रथम पुरुष में मित्र भाव से भी लिखा जाता है। इसके आरंभ में ''प्रिय....'' या ''प्रियवर.....'' या ''प्रिय श्री ......'' होता है और अंत में ''आपका'' लिखा जाता है। भेजने वाला अधिकारी इस पर नीचे अपना हस्ताक्षर करते समय अपना पदनाम नहीं लिखता।

नमूना

क.ख.ग.　　　　　　　　　　　　　　　　　　　　सं..................

निदेशक प्रशासन　　　　　　　　　　　　　　　　भारत सरकार

रेल मंत्रालय

नई दिल्ली,

दिनांक............

प्रिय श्री/प्रियवर

कृपया .... के बारे में अपना दिनांक .... का अर्धसरकारी पत्र संख्या. ..... .देखिए।

मैं......................... से संबंधित नियमावली के मसौदे की एक प्रति भेज रहा हूँ। यदि आप इसे पढ़कर इसके बारे में अपने विचार जितना शीघ्र हो सके मुझे लिख भेजें तो बड़ी कृपा होगी। इन नियमों को अंतिम रूप देने के लिए अगले महीने के आरंभ में एक अंतर्विभागीय बैठक बुलाने का विचार है।

सादर

श्री ....　　　　　　　　　　　　　　आपका

....　　　　　　　　　　　　　　क.ख.ग.

सरकारी पत्र और अर्धसरकारी पत्र में अंतर

अभी आपने पत्र और अर्धसरकारी पत्र के बारे में जानकारी प्राप्त की और यह पाया होगा कि दोनों के ढाँचे में पर्याप्त अंतर है। इस अंतर को हम इस प्रकार देख सकते हैं:

अंतर के स्थल	सरकारी पत्र	अर्धसरकारी पत्र
स्वरूप	औपचारिक	अनौपचारिक
प्राप्तकर्त्ता का विवरण	प्रेषक के नीचे	आपका के नीचे पृष्ठ के दाहिनी ओर
संबोधन	महोदय	प्रिय....जी, प्रिय श्री....
आभार प्रदर्शन या धन्यवाद ज्ञापन	नहीं किया जाता	किया जाता है
स्वनिर्देश	भवदीय	आपका
पृष्ठांकन	होता है	नहीं होता

3. कार्यालय ज्ञापन

इसका प्रयोग अधीन प्राधिकारियों के पास ऐसी सूचना भेजने के लिए किया जाता है जो सरकारी आदेश के समान नहीं है। इसका प्रयोग किसी मंत्रालय या प्रभाग के भीतरी पत्र-व्यवहार के लिए होता है यह अन्य पुरुष में लिखा जाता है तथा इसमें संबोधन तथा अधोलेख नहीं होता, सिर्फ अधिकारी के हस्ताक्षर और उसका पदनाम होता है। पाने वाले का नाम और/या पदनाम हस्ताक्षर के नीचे, पृष्ठ की बाईं तरफ लिखा जाता है।

नमूना

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

बी–31बी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली–110048

सं.रा.मु.वि.शि.सं./पर्स/07 दिनांक : 7.11.06

कार्यालय ज्ञापन

दिनांक .... के आवेदन के संबंध में श्री/श्रीमती/डॉ0/कु.................... .... को सूचित किया जाता है कि उन्हें स्वयं तथा निम्नलिखित आश्रित/परिवार के सदस्यों को ब्लॉक वर्ष .... के लिए अवकाश यात्रा रियायत .... (गृहनगर/भारत में कहीं भी) के लिए स्वीकृति प्रदान की जाती है। सुविधा का लाभ .... के दौरान उठाया जा सकता है।

क्रम सं.	*नाम*	*आयु*	*संबंध*

2. उन्हें उपर्युक्त कार्य के लिए ....रु. अग्रिम स्वीकृति दी जाती है।
3. यह सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

कार्यकारी अधिकारी (कार्मिक)

सेवा में हृ०

....

....

....

प्रतिलिपि :

लेखा अधिकारी – कृपया सूचना और आवश्यक कार्रवाई के लिए।

पाठगत प्रश्न 19.6

एक शब्द अथवा एक वाक्य में उत्तर लिखिए:

1. सरकारी और अर्ध-सरकारी पत्रों में से कौन-सा अनौपचारिक होता है?
2. 'महोदय' का प्रयोग किस प्रकार के पत्र में किया जाता है?
3. आप 'भवदीय' का प्रयोग किस प्रकार के पत्र में करेंगे?
4. सरकारी पद पर रहते हुए भी मित्रभाव से कौन-सा पत्र लिखा जाता है?
5. सामान्यतः 'पृष्ठांकन' किस प्रकार के पत्र में किया जाता है?

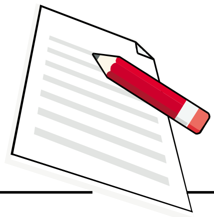

टिप्पणी

4. कार्यालय आदेश

विभिन्न विभाग अथवा कार्यालय अपने कर्मचारियों की छुट्टी, तैनाती उनके अथवा अनुभागों के बीच काम के वितरण आदि से संबंधित आदेश **'कार्यालय आदेश'** के रूप में जारी करते हैं। इस प्रकार के पत्रों में सदैव अन्य पुरुष का ही प्रयोग किया जाता है। ये औपचारिकता से पूर्णतः मुक्त होते हैं।

नमूना

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान

बी–31बी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली–110048

संदर्भ सं. रा.मु.वि.शि.सं./2007/............. दिनांक..................

कार्यालय आदेश

श्री/सुश्री .... को सूचित किया जाता है कि कार्यालय सहायक के रूप में उनकी रोजगार अवधि अन्य तीन महीने के लिए अर्थात् 7.4.2007 से 6.7.2007 तक निर्धारित नियमों तथा शर्तों पर बढ़ाई गई है।

यह सक्षम प्राधिकारी के अनुमोदन से जारी किया जाता है।

कार्यकारी अधिकारी (कार्मिक)

प्रति वितरण ह०

1. संबंधित व्यक्ति
2. संबंधित अधिकारी
3. मुख्य लेखा अधिकारी
4. कार्यालय आदेश फाइल

5. परिपत्र

ऐसे पत्र, कार्यालय ज्ञापन जो अनेक स्थानों को सूचना देने अथवा सूचना मँगाने के लिए एक साथ एक रूप में भेजे जाते हैं, परिपत्र कहलाते हैं।

नमूना

फा.स.11–3/2003/रखरखाव/2007 दिनांक 23/08/2007

परिपत्र

गणतंत्र दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के माननीय अध्यक्ष महोदय, श्री महेश चंद्र पंत, बी–31बी, कैलाश कॉलोनी, नई दिल्ली–110048 में 26 जनवरी, 2007 को प्रातः 10.30 बजे राष्ट्रीय ध्वज फहरायँगे। साथ ही अध्यक्ष महोदय संस्थान के समस्त अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ विशिष्ट बैठक लेंगे।

संस्थान के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों से अनुरोध है कि ध्वजारोहण समारोह में भाग लें।

सहायक निदेशक (प्रशासन)

प्रतिलिपि ह०

1. अध्यक्ष की सूचना के लिए निजी सचिव को
2. रा.मु.वि.शि.सं. के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को
3. रा.मु.वि.शि.सं. के सभी सूचना पट्ट पर।

आपने देखा कि परिपत्र में संस्था, मंत्रालय, विभाग, कार्यालय आदि का नाम नहीं लिखा जाता। कोई संस्था परिपत्र के द्वारा अपने ही अनेक अधिकारियों, कर्मचारियों को सूचित करती है इसलिए ऊपर नाम की आवश्यकता नहीं होती।

6. आवेदन पत्र

नौकरी पाने के इच्छुक व्यक्ति खाली पदों पर होने वाली भर्ती के लिए तथा अन्य किसी प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त करने या किसी परेशानी का निवारण कराने के लिए आवेदन पत्र प्रस्तुत करते हैं। छुट्टी लेने, अंतिम राशि प्राप्त करने आदि के लिए भी आवेदन-पत्र दिए जाते हैं।

किसी नौकरी पाने के लिए आवेदन पत्र सदैव वास्तविक होना चाहिए छाया प्रति कृपया न भेजें। सदैव अपना शैक्षिक तथा अनुभव का ब्यौरा वास्तविक ही दें। ऐसा न हो कि शेखी बघारने के चक्कर में जाँच होने पर कहीं आप झूठे साबित हो जाएँ। अंक, प्रतिशत, श्रेणी, कार्यानुभव आदि ठीक-ठीक ही लिखें।

नमूना

सेवा में

प्रधानाचार्य
गवर्नमेंट कॉलेज,
शिमला।

महोदय,

आपके द्वारा 20 जून 2007 के दैनिक ट्रिब्यून में प्रकाशित विज्ञापन के संदर्भ में मैं अर्थशास्त्र के प्राध्यापक पद के लिए स्वयं को प्रार्थी के रूप में प्रस्तुत करना चाहता हूँ। मेरी योग्यता तथा अनुभव निम्नलिखित हैं:

नाम, पता, दूरभाष, जन्मतिथि, वैवाहिक स्थिति, भाषाओं का ज्ञान

शैक्षिक योग्यता:

1. ....
2. ....
3. ....

अध्यापन अनुभव :

1. ....
2. ....
3. ....

क्रीड़ा-रुचि :

1. ....
2. ....
3. ....

लेखन-अभिरुचि :

1. ....
2. ....
3. ....

प्रमाण-पत्रों की यथावत् प्रतिलिपियाँ आवेदन पत्र के साथ संलग्न हैं।

दिनांक .... भवदीय

यह आवेदन पत्र का एक नमूना मात्र है। आवेदन-पत्र अनेक प्रकार के हो सकते हैं और उसमें दी जाने वाली सूचनाएँ भी भिन्न तथा अधिक हो सकती हैं। जिस भी क्षेत्र में आवेदन किया जा रहा है उसके अनुसार 'बायोडाटा' बनाना चाहिए और अधिक से अधिक सूचनाएँ देनी चाहिए। गलत सूचनाएँ कभी न दें। आत्म प्रशंसा से बचें। आत्मविश्वास के साथ क्रमवार सूचनाएँ व्यवस्थित करें।

पाठगत प्रश्न 19.7

नीचे लिखे कथनों को ध्यान से पढ़िए और सही के सामने (√) और ग़लत के सामने (X) का निशान लगाइए:

1. कार्यालय आदेश का प्रयोग कर्मचारियों को नियमित छुट्टी की मंजूरी देने के लिए किया जाता है। ( )
2. कार्यालय आदेश की भाषा में अन्य पुरुष का प्रयोग किया जाता है। ( )
3. ज्ञापन का प्रयोग मित्रों को पत्र लिखने के लिए किया जाता है। ( )
4. ज्ञापन में संबोधन तथा अधोलेख नहीं होता है। ( )
5. संस्थान के अनेक स्थानों पर सूचना देने के लिए परिपत्र का प्रयोग किया जाता है। ( )
6. एक कर्मचारी की पदोन्नति को परिपत्र द्वारा सूचित किया जाता है। ( )
7. छुट्टी लेने के लिए आवेदन पत्र की जरूरत नहीं होती। ( )
8. भर्ती के लिए आवेदन पत्र देना जरूरी होता है। ( )

19.5 आपने क्या सीखा

- पत्र के द्वारा हम अपने भावों और विचारों को दूसरों तक लिखकर पहुँचाते हैं।
- अच्छे पत्र में निम्नलिखित गुण होते हैं:
  (क) संक्षिप्तता (ख) सरलता (ग) सहजता (घ) प्रभावशीलता।
- अनौपचारिक पत्रों का प्रयोग सगे संबंधियों, मित्रों आदि के साथ संवाद के लिए किया जाता है। विशेष प्रयोजन के लिए लिखे जाने वाले पत्र औपचारिक पत्र कहलाते हैं। कुछ प्रमुख – औपचारिक पत्र हैं–व्यावसायिक पत्र, निमंत्रण पत्र, संवेदना पत्र आदि।
- मंत्रालयों, विभागों, प्राधिकरणों तथा आयोगों में प्रशासनिक कार्यों से संबंधित पत्र-व्यवहार कार्यालयी-पत्राचार कहलाता है।
- कार्यालय में जिन पत्रों का प्रयोग किया जाता है उनकी अपनी अलग विशेषताएँ होती हैं और उनका स्वरूप भी भिन्न-भिन्न होता है। उनके कई प्रकार हो सकते हैं, जैसे–सरकारी पत्र, अर्धसरकारी पत्र, कार्यालय ज्ञापन, कार्यालय आदेश, परिपत्र, आवेदन पत्र आदि।

- केंद्रीय सरकार के मंत्रालयों, राज्य सरकारों, सरकारी उपक्रमों, सार्वजनिक निकायों, व्यावसायिक धर्मों आदि के साथ होने वाले पत्र-व्यवहार में सामान्यतः सरकारी पत्र का प्रयोग करते हैं।
- अर्धसरकारी पत्र का प्रयोग सरकारी अधिकारियों के आपसी पत्र व्यवहार में विचारों या सूचनाओं के आदान-प्रदान अथवा प्रेषण के लिए किया जाता है।
- ज्ञापन का प्रयोग किसी मंत्रालय या प्रभाग के भीतरी पत्र-व्यवहार के लिए होता है। कार्यालय अपने कर्मचारियों की तैनाती, छुट्टी, उनके अथवा अनुभागों के बीच काम के वितरण आदि से संबंधित आदेश कार्यालय आदेश के रूप जारी करते हैं। अनेक स्थानों को सूचना देने अथवा सूचना मँगाने के लिए एक साथ, एक रूप में भेजे जाने वाले पत्र 'परिपत्र' कहलाते हैं।

19.6 योग्यता विस्तार

1. कार्यालयी पत्र के और भी कई प्रकार होते हैं, जैसे—अधिसूचना, प्रस्ताव, प्रेस विज्ञप्ति, निविदा, सूचना, विज्ञापन, तार, पावती पत्र, आदेश, अनुस्मारक आदि।
2. यदि आप इन पत्रों के स्वरूप तथा विशेषताओं से परिचित हो जाएँगे तो यह रोजगार प्राप्त करने में सहायक हो सकता है।
3. विभिन्न प्रकार के कुछ औपचारिक तथा अनौपचारिक पत्रों का संग्रह कीजिए और उनमें अंतर समझने की कोशिश कीजिए।

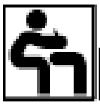

19.7 पाठांत प्रश्न

1. पत्र लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. अनौपचारिक तथा औपचारिक पत्रों में क्या भेद है?
3. अपने मित्र को पत्र लिखते हुए अच्छे पत्र के गुणों का वर्णन कीजिए।
4. कार्यालयी पत्राचार से आप क्या समझते हैं? उसके कौन-कौन से अंग हैं?
5. किशोरावस्था में आने वाले भावात्मक परिवर्तनों की महत्ता को समझाते हुए अपने अनुज/अनुजा को पत्र लिखिए,
6. नशीले/पदार्थों के व्यसन से ग्रस्त अपने मित्र को सेवन की बुराइयों से अवगत कराते हुए पत्र लिखिए।
7. यौन रोग ग्रस्त युवक के अनुभव से अपने अन्य मित्र करण को सचेत करते हुए पत्र लिखिए।
8. मान लीजिए आप एक सरकारी कार्यालय में काम करते हैं। अपनी बीमारी का उल्लेख करते हुए छुट्टी के लिए आवेदन पत्र लिखिए।

6\. गृह मंत्रालय के मुख्य लिपिक ने 2.3.07 से 20.3.07 तक उन्नीस दिन की अर्जित छुट्टी की माँग की है। उनकी छुट्टी की मंजूरी के लिए उपनिदेशक (प्रशासन) की ओर से कार्यालय आदेश का मसौदा तैयार कीजिए।

19.8 उत्तरमाला

19.1 1. (क) (X) (ख) (√) (ग) (X) (घ) (X) (ङ) (√) 2. स्वयं कीजिए

19.2 1. सरलता 2. प्रसन्न रहो 3. प्रणाम

19.3 1.स्वयं कीजिए 2. स्वयं कीजिए

19.4 1. (X) 2. (√) 3. (X) 4. (√)

19.5 1. (√) 2. (X) 3. (√) 4. (√)

19.6 1. अर्धसरकारी 2. औपचारिक 3. औपचारिक 4. अर्धसरकारी 5. सरकारी

19.7 1. (√) 2. (√) 3. (X) 4. (√) 5. (√) 6. (X) 7. (X) 8. (√)

20

301hi20

भाव-पल्लवन कैसे करें

भाव-पल्लवन का अर्थ है – किसी भाव का विस्तार करना। इसमें किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है। विस्तार की आवश्यकता तभी होती है, जब मूल भाव संक्षिप्त, सघन या जटिल हो। भाषा के प्रयोग में कई बार ऐसी स्थितियाँ आती हैं, जब हमें किसी उक्ति में निहित भावों को स्पष्ट करना पड़ता है। इसी को भाव-पल्लवन कहते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भाव-पल्लवन का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और व्याख्या में अंतर बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और भावार्थ में अंतर बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन और संक्षेपण में भेद कर सकेंगे;
- भाव-पल्लवन के नियम बता सकेंगे;
- भाव-पल्लवन के विभिन्न विचार बिंदुओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- किसी सूक्ति, गद्यांश अथवा काव्यांश का भाव-पल्लवन कर सकेंगे।

20.1 आइए समझें

भाव-पल्लवन का अर्थ

हम अपने भाषा व्यवहार में कई सूत्र वाक्य, सूक्तियाँ, कहावतें, लोकोक्तियाँ आदि बोलते और सुनते रहते हैं। इन सूक्तियों और कहावतों में भाव या विचार गठे और एक-दूसरे के साथ बँधे होते हैं। इन विचारों या भावों को समझने के लिए इनका विस्तार से विवेचन

करना होता है, ताकि उस सूत्र वाक्य, सूक्ति या कहावत में छिपे गहरे अर्थ को स्पष्ट किया जा सके। हमारी कहावतें या लोकोक्तियाँ हमारे समाज के अनुभव को अपने में समेटे होती हैं। ये लोकोक्तियाँ वस्तुतः पूरे समाज के विचारों का सार प्रस्तुत करती हैं। इसी प्रकार कई विचारक, विद्वान या संत-महात्मा ऐसे सूत्र वाक्य प्रस्तुत करते हैं, जिनमें वे कम-से-कम शब्दों में अधिक-से-अधिक बात कह जाते हैं। इस बात को समझने और समझाने के लिए हमें सोचना भी पड़ता है और उसका विस्तार भी करना पड़ता है। इसी को भाव-पल्लवन कहते हैं। वास्तव में भाषा व्यवहार में निपुण होने के लिए हमें भाव पल्लवन का अभ्यास करना आवश्यक है, जिससे हम ऐसी अभिव्यक्तियों में निहित भाव का इस प्रकार विस्तार करें कि सुनने वाले या पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी बात समझा सकें। इसे विस्तारण, भाव-विस्तारण, पल्लवन आदि भी कहा जाता है।

नीचे कुछ अंश दिए जा रहे हैं। आप इन्हें पढ़िए और सोचिएः

1. *स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।*

2. *जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।*
   जहाँ कुमति तहँ बिपति निदाना।।

3. *परहित सरिस धरम नहीं भाई।*
   पर पीड़ा सम नहीं अधमाई।।

4. *अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।*
   आँचल में है दूध और आँखों में पानी।।

5. *हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता उससे भी बुरी है।*

आपने देखा कि ये वाक्य छोटे तो अवश्य हैं, किंतु इनमें गहरा संदेश छिपा है। इसीलिए ये 'सूत्रवाक्य' कहलाते हैं। इन सूत्र वाक्यों को समझाने के लिए इनका विश्लेषण करना होगा, ताकि संदेश पूरी तरह समझ में आ सके। इन सूत्र वाक्यों में छिपे भाव का विस्तार करने के लिए पहली आवश्यकता है कि हमें इनका पूरा ज्ञान हो अर्थात् उनका पूरा अर्थ हमें मालूम हो। जैसे, *'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'* उक्ति का भाव-पल्लवन करने से पहले हमें मालूम होना चाहिए कि यह वाक्य किसने, कहाँ तथा किस संदर्भ में कहा था और इसकी पूरी भूमिका क्या है? इस उक्ति का अर्थ देते हुए यह भी बताना चाहिए कि स्वाधीन होने का महत्त्व क्या है? हम अपने अनुभव से यह भी स्पष्ट कर सकें कि स्वाधीन होना किसी की दया पर आश्रित रहना नहीं है, बल्कि प्रत्येक मनुष्य का अधिकार है। इसी प्रकार *'हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता इससे भी बुरी है' या 'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना'* का पूरा मंतव्य या उसमें निहित अर्थ हमें मालूम होना चाहिए। इसका भाव-पल्लवन लिखते समय हमें भाषा का अच्छा ज्ञान होना चाहिए और साथ में हमारा अनुभव भी गहरा तथा विस्तृत होना चाहिए। भाव-पल्लवन का पूरा अर्थ समझने के लिए यह ध्यान रखना चाहिए कि कहावतों, सूक्तियों, लोकोक्तियों आदि में बहुत से भाव और विचार कूट-कूट कर भरे होते हैं। वह देखने में तो छोटे लगते हैं, लेकिन उनके भाव गंभीर और बड़े ही अथाह होते हैं। वास्तव में इन छोटे वाक्यों या लोकोक्तियों के मूल में समाज के अनुभव होते हैं। उनमें विचारात्मक और भावात्मक प्रवाह होता है। ये

एक प्रकार से गागर में सागर के समान होते हैं। भाव-पल्लवन में हम गागर में भरे उस सागर को निकाल कर उसका पूरा प्रवाह दिखाना चाहते हैं, जिससे दूसरों को यह पता चल सके कि उस सागर का असली रूप क्या है? उसमें कौन-कौन से भाव रूपी मोती छिपे हुए हैं? यही भाव-पल्लवन का लक्ष्य होता है। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि भाव-पल्लवन में किसी गंभीर सूक्ति या कहावत की ऐसी व्याख्या की जाती है, जिससे लेखक का आशय या मंतव्य या संदेश पूरी तरह से स्पष्ट हो जाता है।

पाठगत प्रश्न 20.1

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने सही का निशान (√) लगाइए और गलत हो तो गलत का निशान (X) लगाइए:

   (क) कहावतें और लोकोक्तियाँ समाज के अनुभवों पर आधारित होती हैं। ( )

   (ख) भावों और विचारों का विस्तार करना भाव पल्लवन कहलाता है। ( )

   (ग) भाव-पल्लवन के लिए भाषा का अच्छा ज्ञान होना आवश्यक है। ( )

   (घ) भाव-पल्लवन में अनुभव की अपेक्षा कल्पना अधिक होती है। ( )

   (ङ) कहावतें, लोकोक्तियाँ या सूक्तियाँ गागर में सागर के समान होती हैं। ( )

2. भाव-पल्लवन का अर्थ है –

   (क) किसी गद्यांश को विस्तृत ढंग से समझाना।

   (ख) किसी कविता के अंश की व्याख्या करना।

   (ग) किसी उक्ति, सूक्ति या कहावत में निहित भाव का विस्तार करना।

   (घ) किसी भी विचार को बढ़ा-चढ़ाकर लिखना।

20.2 भाव-पल्लवन और व्याख्या

अब आप जानते हैं कि भाव-पल्लवन में किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि में निहित भाव का विस्तार किया जाता है, किंतु इस विस्तार में छिपे हुए भाव को स्पष्ट करना हमारा मुख्य उद्देश्य होता है न कि उस पर टीका-टिप्पणी करना या उसकी समीक्षा अथवा आलोचना करना। उदाहरण के लिए *''स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है''* का भाव-पल्लवन करते हुए हम यह नहीं कह सकते कि यह उक्ति लोकमान्य तिलक ने केवल अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ी जाने वाली लड़ाई में कही थी और अब इसका कोई महत्त्व नहीं है या 'जन्मसिद्ध अधिकार' कहना उचित नहीं है या जो लोग इस उक्ति को नहीं मानते, वे देशद्रोही हैं। भाव-पल्लवन में ये सभी बातें नहीं आएँगी। केवल इसमें निहित भाव को विस्तार से स्पष्ट किया जाएगा।

किसी उक्ति की व्याख्या करते समय उसमें निहित भाव को विस्तार से स्पष्ट किया जाता है, उसमें टीका-टिप्पणी या आलोचना करने की पूरी छूट होती है। इसमें भाव

पल्लवन की सीमाएँ नहीं होती। इसमें किसी उक्ति या सूत्र के पक्ष या विरोध में अपना मत प्रकट कर सकते हैं। उसके विभिन्न पक्षों पर, उसके गुणावगुणों पर चर्चा करते हुए ऐसे निष्कर्ष पर भी पहुँच सकते हैं, जो उसमें निहित भाव के एकदम विपरीत भी हो सकते हैं। *'स्वाधीनता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'* की व्याख्या करते हुए हम कह सकते हैं कि विश्व का इतिहास इस बात का साक्षी है कि हर देश और धर्म के लोगों ने लड़कर स्वाधीनता प्राप्त की है और लड़ते हुए अपनी स्वाधीनता की रक्षा की है। यदि ये लोग स्वाधीनता को जन्मसिद्ध अधिकार मानकर आश्वस्त बैठे रहते तो शीघ्र ही पराधीन हो जाते, क्योंकि दूसरों को अपने वश में करना मानवीय प्रवृत्ति का महत्त्वपूर्ण लक्षण है। व्याख्या में यह भी कह सकते हैं कि यद्यपि लोकमान्य तिलक ने यह उक्ति अंग्रेजों के विरुद्ध लड़ते हुए कही थी, लेकिन यह उक्ति अन्य संदर्भों में भी कही जा सकती है। इसके अतिरिक्त यह पराधीनता के समय जितनी उपादेय है, उतनी स्वतंत्रता के समय में भी है।

इस प्रकार भाव-पल्लवन करते समय उक्तियों, सूक्तियों आदि में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए उसका विस्तार किया जाता है जब कि व्याख्या में विस्तार से विवेचन के साथ-साथ टीका-टिप्पणी या आलोचना भी की जाती है। व्याख्या में संदर्भों का उल्लेख भी किया जाता है और उदाहरण भी दिए जाते हैं, जबकि भाव-पल्लवन में यह छूट नहीं है।

20.3 भाव-पल्लवन और भावार्थ

भाव-पल्लवन के बारे में ऊपर पढ़ चुकने के बाद आप इसके स्वरूप से कुछ-कुछ परिचित हो चुके होंगे, भाव-पल्लवन और भावार्थ में भी काफी अंतर है। भावार्थ में भाव-विस्तार की एक सीमा होती है, जबकि भाव-पल्लवन में ऐसी कोई सीमा नहीं है। भावार्थ में किसी भी उक्ति अथवा सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें मूल भाव को व्यक्त करना होता है, उसे विस्तार देना नहीं होता। भाव-पल्लवन में सूत्र वाक्य सूक्ति का विवेचन तब तक किया जा सकता है, जब तक लेखक का मूल मंतव्य पूरी तरह स्पष्ट नहीं हो जाता। उसे कई अनुच्छेदों में लिखा जा सकता है। भावार्थ में सूक्ति का मूल अर्थ देने की अपेक्षा की जाती है। भावार्थ में केवल मूल भावों को लिया जाता है, जबकि भाव-पल्लवन में मूल और गौण दोनों भावों को दिया जाता है। इस प्रकार 'भावार्थ' सीमित शब्दों में केंद्रीय भाव को स्पष्ट करता है।

पाठगत प्रश्न 20.2

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने रिक्त स्थान पर सही का निशान (√) लगाइए और गलत हों तो गलत का निशान (X) लगाइए:

   (क) भाव-पल्लवन में टीका-टिप्पणी और आलोचना होती है। ( )

   (ख) व्याख्या में संदर्भ का उल्लेख किया जाता है और उदाहरण भी दिए जा सकते हैं। ( )

(ग) व्याख्या और भाव-पल्लवन एक ही हैं। ( )

(घ) भावार्थ में किसी भी उक्ति या सूक्ति के केंद्रीय भाव को संक्षेप में स्पष्ट किया जाता है। ( )

(ङ) भावार्थ को कई अनुच्छेदों में लिखा जाता है। ( )

2. केवल केंद्रीय भाव स्पष्ट किया जाता है –

(क) व्याख्या में (ग) भाव-पल्लवन में

(ख) भावार्थ में (घ) आलोचना में

20.4 भाव पल्लवन, संक्षेपण और निबंध

भाव-पल्लवन संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है। संक्षेपण का अर्थ होता है – संक्षिप्त या छोटा रूप। इसमें विस्तृत विषय को संक्षेप में दिया जाता है। भाव-पल्लवन का अर्थ होता है – विस्तृत या बड़ा रूप। इसमें किसी उक्ति या विचार-सूत्र का विस्तार से विवेचन किया जाता है। संक्षेपण किसी बड़ी रचना के मूलभूत अर्थ या केंद्रीय भाव को पकड़ने की कोशिश करता है। इसके विपरीत भाव-पल्लवन मूल अर्थ या केंद्रीय भाव को विस्तार से समझाने का प्रयत्न करता है।

भाव-पल्लवन के बारे में पढ़ने के बाद आपने यह अनुमान लगाया होगा कि भाव-पल्लवन तो एक छोटा निबंध है। यह सही है कि भाव-पल्लवन एक प्रकार का लघु निबंध होता है, किंतु इस पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते। निबंध के विषयों की सीमा नहीं होती जबकि भाव-पल्लवन के अंतर्गत सभी प्रकार के विषय नहीं आते। निबंध में उद्धरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का बहुल प्रयोग हो सकता है, जबकि भाव-पल्लवन में बहुत कम। इस प्रकार भाव-पल्लवन को निबंध नहीं कहा जा सकता।

पाठगत प्रश्न 20.3

1. निम्नलिखित वाक्यों के रिक्त स्थानों को भरिए।

(क) भाव-पल्लवन संक्षेपण का .... है।

(ख) संक्षेपण किसी बृहत् रचना के .... को पकड़ने की कोशिश करता है।

(ग) भाव-पल्लवन मूल अर्थ या केंद्रीय भाव को .... से समझाने की कोशिश करता है।

(घ) भाव-पल्लवन पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू .... होते।

(ङ) निबंध में उदाहरणों, दृष्टांतों, प्रसंगों आदि का .... होता है।

2. भाव-पल्लवन और निबंध लेखन के विषयों में मुख्य अंतर क्या होता है?

20.5 भाव-पल्लवन की प्रक्रिया

आपको अब तक मालूम हो गया होगा कि भाव-पल्लवन से लेखन शक्ति का विकास होता है। आइए, अब हम देखें कि अच्छा भाव-पल्लवन लिखने की प्रक्रिया क्या है और इसके लिए हमें किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया के निम्नलिखित चरण हैं :

1. किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि को समझना;
2. उक्ति, सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले विचार बिंदुओं को लिखना;
3. इन बिंदुओं को क्रमवार रखना;
4. इन बिंदुओं का विस्तार करना; और
5. मूल भाव का प्रभावपूर्ण शैली में वर्णन करना।

सबसे पहले हम किसी उक्ति, सूक्ति, कहावत आदि पर विचार करते हैं और यह समझने का प्रयास करते हैं कि उसमें कौन-सा भाव निहित है और उसका क्या अर्थ है? इसके बाद उस उक्ति अथवा वाक्य के अर्थ या भाव को स्पष्ट करने के लिए तथा उसे प्रभावी बनाने के लिए अन्य मिलते-जुलते विचार बिंदुओं को अपने मन में जुटाते हैं तथा उन्हें किसी कागज़ पर लिखते है। इसके बाद मूल भाव पर ध्यान देते हुए उन्हें क्रमवार रखते हैं। तत्पश्चात् इन बिंदुओं को स्पष्ट करते हुए इसका विस्तार करते हैं ताकि उक्ति, वाक्य का मूल भाव पूरी तरह से स्पष्ट हो सके। इसमें यह भी ध्यान देते हैं कि मूल भाव का वर्णन प्रभावपूर्ण शैली में हो।

भाव-पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार हो सकती है:

1. सर्वप्रथम किसी दी गई मूल उक्ति, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि पर थोड़ी देर तक सोचें ताकि मूल भाव अच्छी तरह समझ में आ जाए।
2. मूल भाव को स्पष्ट करने और प्रभावपूर्ण बनाने वाले अन्य भावों या विचार बिंदुओं को इकट्ठा करें।
3. इनको संकेत के रूप में एक पृष्ठ पर लिख लें ताकि कोई विचार छूट न जाए।
4. इसके बाद इन विचार-बिंदुओं को एक-एक करके क्रमानुसार लिखें। यदि संभव हो तो प्रत्येक भाव या विचार अलग-अलग अनुच्छेद में भी दे सकते हैं।
5. मूल भाव का विस्तार करते समय उसकी पुष्टि में कोई उदाहरण या तथ्य देने की आवश्यकता पड़ती है, तो वह भी दिया जा सकता है।
6. भाव-पल्लवन की भाषा सरल और सुबोध होनी चाहिए ताकि भाव अच्छी तरह स्पष्ट हो सकें।
7. जहाँ तक संभव हो, वाक्य छोटे होने चाहिए और अलंकारपूर्ण भाषा से बचना चाहिए।
8. भाव-पल्लवन अन्य पुरुष शैली में लिखा जाना चाहिए।

9. प्रत्येक बात को विस्तार से लिखने की कोशिश करनी चाहिए।
10. इसमें किसी अनावश्यक या अप्रासंगिक बात का उल्लेख नहीं होना चाहिए। केवल वही बातें रखी जाएँ जो मूल भाव के लिए उचित और अपेक्षित हों।
11. भाव-पल्लवन को लिख लेने के बाद इसको एक-दो बार अवश्य पढ़ना चाहिए, ताकि यदि कोई विचार-बिंदु या बात रह गई हो तो उसे जोड़ा जा सके और यदि उसमें कोई दोष हो तो दूर किया जा सके।

पल्लवन करते समय निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना चाहिए:

⟹ मूल भाव पर विशेष ध्यान देना।

⟹ मूल भाव का विस्तार करते हुए उसकी पुष्टि में यदि किसी उदाहरण या तथ्य की आवश्यकता पड़े, तो उसे भी प्रस्तुत करना।

⟹ सरल और बोधगम्य भाषा का प्रयोग।

⟹ अनावश्यक या अप्रासंगिक विचार बिंदुओं से बचना।

⟹ मूल भाव पर किसी प्रकार की आलोचना और टिप्पणी न करना।

⟹ अन्य पुरुष शैली का प्रयोग करना।

पाठगत प्रश्न 20.4

1. भाव-पल्लवन पर निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि ये कथन सही हों तो उसके सामने रिक्त स्थान पर सही का निशान (√) लगाइए और गलत हों तो गलत का निशान (X) लगाइए:

(क) उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत आदि पर थोड़ी देर चिंतन करना चाहिए। ( )

(ख) भाषा अलंकारपूर्ण होनी चाहिए। ( )

(ग) इसे अन्य पुरुष शैली में लिखना चाहिए। ( )

(घ) इसे सरल और बोधगम्य भाषा में लिखना चाहिए। ( )

(ङ) भाव-पल्लवन में मूल भाव या विचार की आलोचना और टीका-टिप्पणी की जा सकती है। ( )

20.6 भाव-पल्लवन के कुछ नमूने

आपने अब तक भाव-पल्लवन के बारे में अच्छी तरह से जान लिया है। अब हम आपको भाव-पल्लवन के दो नमूने दे रहे हैं। भाव-पल्लवन लिखने से पहले आपके सामने कुछ विचार बिंदु दिए जाएँगे, ताकि भाव-पल्लवन लिखने के लिए कुछ मार्ग निर्देश मिल जाए। इसके बाद भाव पल्लवन का पूरा रूप दिया जाएगा। ये दोनों नमूने इस प्रकार हैं:

उदाहरण - 1 **'जहाँ सुमति तहँ संपति नाना........'**

शीर्षक पढ़ते ही आपके विचारों का क्रम कुछ इस प्रकार होना चाहिए:

विचार बिंदु

1. मनुष्य अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और विवेकशील है।
2. बुद्धि के दो पक्ष हैं: सुबुद्धि और दुर्बुद्धि।
3. सुबुद्धि और सुमति एक ही है और दुर्बुद्धि कुमति होती है।
4. सुमति के द्वारा ही संपत्ति की प्राप्ति होती है।
5. सुमति ही सफलता की जननी है।
6. अच्छी बुद्धि के व्यक्ति का सभी आदर करते हैं और वह स्वयं सभी का आदर करता है।
7. सुमति के न होने से व्यक्ति में दंभ, अहंकार, क्रोध आदि दुर्गुण आ जाते हैं।
8. सुमतिहीन व्यक्ति के पास विपत्तियाँ और कष्ट आते हैं।

अब आप उक्त विचारों को अपनी सरल सीधी भाषा में पिरो दीजिए और लिख कर देखिए क्या भाव-पल्लवन का रूप कुछ वैसा ही है जैसा हम आगे दे रहे हैं।

भाव-पल्लवन

संसार के समस्त जीवों में मनुष्य को श्रेष्ठ माना गया है, क्योंकि वह अन्य जीवों की अपेक्षा अधिक बुद्धिमान और विवेकशील होता है। वह केवल अपने तक ही सीमित नहीं रहता अपितु दूसरों का भी ध्यान रखता है। उसमें गुण-दोष और उचित-अनुचित का ज्ञान कराने वाली बुद्धि होती है। इसी आधार पर बुद्धि के दो पक्ष माने गए हैं – एक सुबुद्धि और दूसरी, दुर्बुद्धि। सुबुद्धि की बड़ी महिमा है। इसी को सुमति या अच्छी मति भी कहा जाता है। जब तक मनुष्य में सुमति रहती है, तब तक वह अच्छे कार्य में लगा रहता है और उसमें अच्छे-बुरे का विवेक भी होता है। जब वह सुमति से हटकर कुमति या दुर्बुद्धि वाला हो जाता है, तब वह अनुचित और गलत कामों में पड़ जाता है। सुमति से संपत्ति की भी प्राप्ति होती है। इससे मनुष्य को धन, सम्मान, स्त्री, पुत्र आदि का सुख मिलता है। सुमति वाले लोग मिलजुल कर और ईमानदारी से काम करते हैं। इसी कारण उन पर लक्ष्मी की कृपा रहती है। ऐसे लोगों को सभी व्यक्तियों से सम्मान और आदर मिलता है। इससे उनमें शक्ति पैदा होती है और वे देश, जाति और समाज के लिए तन, मन, धन से कार्य करते हैं। ऐसे लोगों से देश, समाज और परिवार को गौरव प्राप्त होता है। सुमति ही सफलता की जननी है। जीवन में वही व्यक्ति सफल होता है, जो कठिन से कठिन परिस्थितियों में अपनी बुद्धि से काम लेता है और परिश्रम, ईमानदारी तथा विवेक से काम करता है। वह सभी का सम्मान करता है और बड़ों के प्रति अप्रिय शब्द नहीं बोलता। सभी से नम्रता और उदारता का व्यवहार करता है। यही सुमति के गुण हैं। जहाँ सुमति नहीं रहती वहाँ दंभ, अहंकार, क्रोध और अधीरता के दुर्गुणों का साम्राज्य रहता है। सुमति के न रहने से ही तो कुमति आती हैं। सुमतिहीन लोगों से संपत्ति भी सदैव दूर रहती है और उनका कोई आदर और सम्मान भी नहीं करता। इसी कारण ऐसे लोग विपत्तियों तथा कष्टों से घिरे रहते हैं। इसलिए गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस के सुंदरकांड में कहा है:

जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।
जहाँ कुमति तहँ विपति निदाना।।

उदाहरण - 2 'हिंसा बुरी चीज़ है, पर दासता उससे भी बुरी चीज़ है।'

पहले उदाहरण के समान इस उक्ति को पढ़ने के बाद अपने विचार बिंदु यहाँ लिखिए:

1. ....
2. ....
3. ....
4. ....

अब निम्नलिखित विचार बिंदुओं को ध्यान पूर्वक पढ़िए। क्या ये बिंदु आपके लिखे बिंदुओं से समानता लिए हैं:

विचारबिंदु

1. प्रत्येक प्राणी में जीवन होता है और किसी को दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं हैं।
2. 'अहिंसा परमो धर्मः' का मंत्र प्राचीनकाल से मिलता है।
3. आधुनिक युग में महात्मा गांधी ने अहिंसा का प्रचार किया।
4. हिंसा से भी बुरी चीज़ दासता है।
5. दास व्यक्ति जीवित होकर भी मृत समान है।
6. दासता से मनुष्य का मानसिक विकास नहीं होता।
7. दासता को समाप्त करने के लिए हिंसा की आवश्यकता पड़े तो वह क्षमा योग्य है।
8. अहिंसा का पालन करने का अर्थ शक्तिहीन होना नहीं है।
9. भारत अहिंसा का पुजारी रहा है और अब भी है, लेकिन स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए वह अहिंसा का त्याग भी कर सकता है।
10. स्वतंत्रता की रक्षा के लिए हिंसा का मार्ग अपनाना बुरा काम नहीं है।

विचार बिंदु किस प्रकार भाव पल्लवन का रूप लेते हैं, आइए पढ़ें–

भाव-पल्लवन

यह सच है कि किसी प्राणी को जीव की हत्या नहीं करनी चाहिए। प्रत्येक पशु-पक्षी और मनुष्य में जीवन होता है और किसी को दूसरे के प्राण लेने का अधिकार नहीं है। भारत प्राचीनकाल से अहिंसा का प्रचार करता आ रहा है 'अहिंसा परमो धर्मः' आधुनिक युग में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी हिंसा के विरोध में आवाज़ उठाई थी और अहिंसा का प्रचार किया था। वास्तव में हिंसा मनुष्य को पशु के समान बना देती है और व्यक्ति में प्रेम तथा स्नेह की भावना समाप्त हो जाती है। निस्संदेह हिंसा बुरी चीज़ है, लेकिन दासता उससे भी अधिक बुरी चीज़ है। कोई भी व्यक्ति स्वतंत्रता खोकर सुख और चैन की नींद नहीं सो सकता। यदि किसी पक्षी को पिंजरे में डाल दिया जाए, तो बाहर

निकलने के लिए तड़फड़ाता है। उदास और दुखी रहता है। मनुष्य तो विवेकशील प्राणी है। उसके पास दिमाग और दिल है, तो वह भला दासता की कड़ियों में कैसे रह सकता है? यदि किसी को विवशता के कारण दास बनकर रहना पड़ता है, तो वह जीवन मृत्यु के समान है। जीवित होते हुए मुर्दे की भाँति जीना भी हिंसा से कम नहीं है। वास्तव में दासता से मनुष्य का मानसिक विकास नहीं हो पाता। वह गुलामों की ज़िंदगी बिताता है और मालिकों के इशारों पर नाचता है। इसलिए कहा गया है – 'पराधीन सपनेहुँ सुख नाहीं' अतः विचारकों ने यह भी कहा कि गुलामी की जंजीरों को तोड़ने के लिए यदि अहिंसा का मार्ग भी छोड़ना पड़े, तो वह बुरी बात नहीं होगी। यदि हिंसा भी करनी पड़े, तो वह क्षमा योग्य मानी जाएगी। कुछ लोगों का कहना है कि शक्तिहीन व्यक्ति ही अहिंसा की बात करते हैं। वह उनका भ्रम है। भारत सदैव अहिंसा का पुजारी रहा है, लेकिन इसका यह अभिप्राय नहीं कि वह शक्तिशाली नहीं है। इसी कारण विदेशी शक्तियों ने भारत पर अधिकार जमाने का कई बार प्रयास किया, किंतु भारत के वीर सिपाहियों ने उनके नाकों चने चबा दिए और उनकी आशाओं पर पानी फेर दिया। इसमें संदेह नहीं कि अहिंसा अच्छी चीज है और हिंसा बुरी चीज़ है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं कि अहिंसा-प्रेमी व्यक्ति को गुलाम बनाया जाए और वह कुछ बोले भी नहीं। अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए यदि कोई व्यक्ति अहिंसा का मार्ग त्याग देता है, तो वह बुरा काम होगा।

20.7 भाव-पल्लवन के अन्य नमूने

यहाँ हम दो उक्तियों और सूक्ति वाक्यों को ले रहे हैं। पहली सूक्ति की पहले रूपरेखा दी जा रही है और फिर उक्ति का भाव-पल्लवन दिया जा रहा है। आइए दोनों नमूने देखें–

उदाहरण - 3 'परहित सरिस धर्म नहीं भाई'

रूपरेखा

1. परहित का अर्थ है – दूसरों की भलाई करना।
2. धर्म का अर्थ है – सत्कर्म, पुण्य और सदाचार।
3. मनुष्य सामाजिक प्राणी है और परहित सच्ची मानवता है।
4. मनुष्य को तन, मन, धन से दूसरों की भलाई करनी चाहिए।
5. यदि जड़ पदार्थों में परहित की भावना मिलती है, तो मनुष्य में यह भावना अधिक होनी चाहिए।
6. संसार के सभी धर्मों में परहित सबसे बड़ा धर्म है। उसके समान तो कोई धर्म है ही नहीं।

भाव-पल्लवन

परहित का अर्थ है– दूसरों का भला। इसी को परोपकार भी कहते हैं। दोनों का भाव एक है। यदि एक में दूसरे के हित की भावना है, तो दूसरे में भला करने की भावना छिपी हुई है। अपने हित की चिंता न कर दूसरों का उपकार करना ही सच्चे अर्थ में परहित

या परोपकार है। धर्म का अर्थ है– पुण्य, कर्त्तव्य, सत्कर्म और सदाचार। यहाँ धर्म का अर्थ मजहब या मत नहीं हैं यदि मज़हब अर्थ है, तो यह मज़हब दूसरे मज़हब के प्रति द्वेष या बुरा करने के भाव लिए हुए नहीं है, बल्कि भलाई करने का भाव लिए हुए है। वास्तव में जिस आचरण या कार्य से समाज का कल्याण होता है, यही धर्म है।

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। उसका धर्म है कि वह स्वयं जीए और दूसरों को भी जीने दे। वह अपने सुख-दुख के साथ दूसरों के सुख-दुख की ओर भी ध्यान दे। अपने स्वार्थ को छोड़कर दूसरे के हित की सोचे। अपनी स्वार्थ सिद्धि करना मानवता नहीं है। परहित ही सच्ची मानवता है। यही सच्चा धर्म है। मनुष्य अपनी क्षमता या सामर्थ्य के अनुसार परहित कर सकता है। वह मन से, धन से या तन से या तीनों से दूसरों की भलाई कर सकता है। दूसरों के प्रति सच्ची सहानुभूति करना भी परहित है। किसी को संकट से बचाना, किसी को कुमार्ग से हटाना, किसी दुखी और निराश व्यक्ति को सांत्वना देना भी परहित के अंतर्गत आता है। भगवान राम ने ऋषि-मुनियों की तपस्या में भंग डालने वाले राक्षसों का संहार किया। ईसामसीह ने लोगों का उत्थान किया। सम्राट अशोक ने स्थान-स्थान पर कुएँ, तालाब आदि खुदवाकर तथा वृक्ष लगवाकर जनता का उपकार किया। यही मानवता का प्रमुख धर्म है।

परहित की प्रवृत्ति तो वृक्षों और नदियों में भी पाई जाती है। वृक्ष सभी प्राणियों को फल या छाँव प्रदान करते हैं। मनुष्य तो सभी प्राणियों से उत्कृष्ट प्राणी है। इसलिए उसका परम कर्त्तव्य है कि वह निःस्वार्थ भाव से सभी प्राणियों की सेवा करे। वह मन, वाणी और कर्म से दूसरों का उपकार करे, किसी को पीड़ा न पहुँचाए। संसार के सभी धर्मों में परहित ही सबसे महान् धर्म है। इसीलिए गोस्वामी तुलसीदास ने कहा कि परोपकार के समान कोई भी धर्म नहीं है और दूसरों को पीड़ा या दुख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं हैः

परहित सरिस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहिं अधमाई।

उदाहरण-4 'अविवेक आपत्तियों का घर है'

भाव-पल्लवन

अविवेक का अर्थ है– विवेक से काम न लेना या ज्ञान की कमी होना। अविवेक अज्ञान का ही एक रूप है। अविवेक और अज्ञान में अंतर भी है। अज्ञान में स्थिति आदि का ज्ञान नहीं होता, जबकि अविवेक में स्थिति आदि का ज्ञान तो होता है, किंतु अहंकार या किसी अन्य कारण से ऐसा कार्य किया जाता है, जो अपने-आप में उचित नहीं होता। यह भी अज्ञानता का ही एक रूप है। इसीलिए अविवेक को दोषी माना गया है क्योंकि इसके कारण व्यक्ति के सभी गुण दब जाते हैं। विवेकी होने से व्यक्ति को कई बार कष्ट भी भोगना पड़ता है और दुख उस व्यक्ति के यहाँ अपना निवास बना लेते हैं।

जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मनुष्य में विवेक आवश्यक है। विवेक व्यक्ति को विचारशील, सहनशील, धीर और साहसी बनाता है। विवेक से सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं। संपत्ति की प्राप्ति होती है। विवेक के बिना दुख और विपत्ति की प्राप्ति होती है। कल्याण

टिप्पणी

के स्थान पर दुर्गति होती है। अविवेक से मानव जीवन के विकास में बाधा पड़ती है। इतिहास में विवेकहीन व्यक्तियों के कई उदाहरण मिल जाते हैं। इसी अविवेक के कारण कई साम्राज्य नष्ट हो गए। इसी के कारण रावण के पूरे वंश का नाश हो गया। इसी विवेकहीनता के कारण भारतीय नरेश परस्पर लड़ते थे। इसी के कारण विदेशी आक्रमणकारियों को भारत पर आक्रमण करने का अवसर मिला। भारत परतंत्रता की ज़ंजीरों में बँध गया। अविवेक मनुष्य का शत्रु है। वह मनुष्य को मनुष्य बने रहने नहीं देता। इससे अहंकार, कपट, दंभ आदि का जन्म होता है। यहीं से मनुष्य का विनाश होता है। इसीलिए कहा गया है कि विवेक न होने के कारण आपत्तियाँ आ घेरती हैं। मनुष्य सुखी नहीं रहता। उसमें दुख और कष्ट अपना घर बना लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 20.5

''मन के हारे हार है मन के जीते जीत'' विषय पर विस्तृत रूपरेखा नीचे दी जा रही है। आप इसके आधार पर अलग कागज़ पर भाव-पल्लवन कीजिए:

1. मानव मननशील प्राणी है। मन उसके संकल्प-विकल्प की शक्ति है।
2. मन की विजय का एक मात्र शस्त्र है– संकल्प। मन ने किसी काम को पूरा करने का संकल्प किया है तो सफलता व्यक्ति के चरण चूमेगी। यदि मन किसी काम को करने में दुर्बलता दिखाएगा तो व्यक्ति को पराजय का मुँह देखना पड़ेगा।
3. सबल मन वाला व्यक्ति अपना भाग्य-निर्माता स्वयं होता है और निर्बल मन वाला व्यक्ति असफलता को अपना दुर्भाग्य मानता है। उसे चारों ओर से निराशा और हताशा मिलती है।
4. मनुष्य को कायर नहीं होना चाहिए। अपने हृदय की दुर्बलता को त्याग कर कर्म करना चाहिए। सबल मानसिक शक्ति ही जीवन में सफलता प्रदान करती है।
5. गुरुनानक जी ने कहा था – 'मन जीते जग जीत।' अतः विश्व को जीतने के लिए मन को जीतना आवश्यक है। मन की पराजय मनुष्य की अपनी पराजय है।

20.8 आपने क्या सीखा

1. भाव-पल्लवन से लेखन शक्ति का विकास होता है। यह किसी उक्ति, वाक्य, सूक्ति, कहावत, लोकोक्ति आदि के अर्थ को पूरी तरह समझने में सहायता करता है। उसमें उक्ति या सूक्ति की विस्तार से चर्चा की जाती है, ताकि लेखक का आशय या मंतव्य पूरी तरह से स्पष्ट हो जाए। यह एक प्रकार का लघु निबंध है, किंतु इस पर निबंध के नियम पूरी तरह लागू नहीं होते।
2. भाव-पल्लवन व्याख्या नहीं है क्योंकि इसमें आलोचना और टीका-टिप्पणी नहीं होती। यह भावार्थ से भी अलग है क्योंकि इसमें केंद्रीय भाव को स्पष्ट करने के लिए अन्य सहयोगी भावों को भी लिखा जाता है। यह संक्षेपण का एक प्रकार से विलोम है।

टिप्पणी

3. भाव-पल्लवन की प्रक्रिया इस प्रकार है:
   - उक्ति, वाक्य या सूक्ति आदि को समझना।
   - उक्ति, वाक्य या सूक्ति आदि के मूल भाव को स्पष्ट करने वाले भावों को पहचानना।
   - इन भावों का क्रम के अनुसार विस्तार से वर्णन करना।
4. भाव-पल्लवन के समय निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना आवश्यक है:
   - विषय के मूल भाव को पहचान कर विचार बिंदुओं का क्रम निर्धारित करना
   - अनावश्यक बातों को न लिखना।
   - मूल भाव की आलोचना आदि न करना।
   - भाषा का सरल और बोधगम्य होना।
   - भाव-पल्लवन को दोबारा पढ़ना और संशोधन करना।

20.9 योग्यता विस्तार

पुस्तकालय आदि से कहानी, उपन्यास, जीवनी, कविता आदि की पुस्तकें और पत्रिकाएँ लेकर पढ़िए और निम्नलिखित काम कीजिए:

1. उक्ति, वाक्य, सूक्तियाँ आदि चुनिए।
2. कहावतें और लोकोक्तियाँ आदि चुनिए।
3. इसमें से 20-20 अच्छी-अच्छी उक्तियों, वाक्यों, सूक्तियों, कहावतों, लोकोक्तियों, काव्यांशों को याद कीजिए और उनका भाव-पल्लवन करने का प्रयास कीजिए।

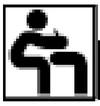

20.10 पाठांत प्रश्न

1. भाव-पल्लवन का अर्थ क्या है?
2. भाव-पल्लवन और व्याख्या में क्या अंतर है? इसे स्पष्ट कीजिए।
3. भाव-पल्लवन और भावार्थ में अंतर बताइए।
4. 'भाव-पल्लवन, संक्षेपण का विलोम है।' इसे अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।
5. क्या भाव-पल्लवन एक प्रकार का लघु निबंध है? इस संबंध में चर्चा करते हुए दोनों में अंतर बताइए।
6. भाव-पल्लवन की प्रक्रिया के बारे में दस वाक्य अपने शब्दों में लिखिए।
7. नीचे तीन उक्तियों के संक्षिप्त विचारबिंदु दिए गए हैं। इनके आधार पर भाव पल्लवन लिखिए।

   (क) 'सबै दिन जात न एक समान।'

      1. परिवर्तन सृष्टि का अटल नियम।

2. दिनों की परिवर्तनशीलता।
3. सुख-दुख का चक्र।
4. परिश्रम से दिन बदल जाते हैं।
5. मन का निराशावान होना आवश्यक नहीं।

(ख) 'नर और नारी एक गाड़ी के दो पहिए।'

1. वर्तमान युग में हर क्षेत्र में समानता के लिए विवाद।
2. नर और नारी में समानता।
3. अधिकार और कर्तव्य के लिए संघर्ष।
4. नर और नारी दोनों का अपना-अपना महत्त्व।
5. गाड़ी के सभी पहियों का महत्त्व सभी एक-दूसरे के लिए पूरक और उपयोगी।

(ग) 'अधिकार नहीं कर्तव्य बड़ा है।'

1. कर्तव्य और अधिकार का महत्त्व।
2. कर्तव्य और त्याग का संबंध।
3. कर्तव्य और अधिकार का परस्पर संबंध और अंतर।
4. कर्तव्य से व्यक्ति को शांति और सुख की प्राप्ति।

6. नीचे दी गई उक्तियों का भाव-पल्लवन लिखिए:
   1. करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
   2. पर उपदेश कुसल बहुतेरे।
   3. मनुष्य वही है जो मनुष्य के लिए मरे।
   4. अपनी करनी पार उतरनी।
   5. तेते पाँव पसारिए जेती लांबी सौर।

20.11 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

20.1 (क) √ (ख) √ (ग) √ (घ) X (ङ) √ 2. (ग)

20.2 (क) X (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) X 2. (ख)

20.3 (क) विलोम (ख) मूलभूत अर्थ (ग) विस्तार (घ) नहीं (ङ) बहुत प्रयोग
2. भाव पल्लवन के लिए विषय सीमित होते हैं।

20.4 (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) √ (ङ) X

20.5 स्वयं लिखिए।

21

301hi21

टिप्पणी

प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण

अभी तक आपने हिंदी साहित्य की छोटी-सी झलक ली है – कुछ कविताएँ, कुछ कहानियाँ, निबंध, संस्मरण, रेखाचित्र आदि पढ़े। क्या आपने कार्यालयी हिंदी के बारे में सुना या पढ़ा है? जी हाँ! यह वह हिंदी है जो कार्यालय में नित्य-प्रतिदिन के कामकाज के निपटान के काम आती है। यह आम बोलचाल की भाषा का ही व्यवस्थित और सुचारू रूप है। इसका सरकारी शासन व्यवस्था चलाने में प्रयुक्त भाषा संबंधी शब्दावली का प्रयोग होता है। इसी से मिलती-जुलती कुछ बातें आपने पाठ 19 में 'पत्र कैसे लिखें' में पढ़ी हैं। इस भाषा में एक ही वाक्य में हिंदी, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा के शब्द प्रयोग किए जा सकते हैं। कार्यालयी कामकाज में प्रयुक्त होने वाली पद्धतियों में प्रतिवेदन, टिप्पण तथा प्रारूपण लेखन प्रमुख हैं। आइए, प्रस्तुत पाठ में इनके बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- प्रतिवेदन क्या है, स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रतिवेदन लेखन की उपयोगिता स्पष्ट कर सकेंगे;
- टिप्पण लेखन की उपयोगिता स्पष्ट कर सकेंगे;
- मिसिल कार्य में टिप्पण लेखन की प्रक्रिया स्पष्ट कर सकेंगे;
- टिप्पणियों के प्रकार बता सकेंगे;
- प्रारूपण के लेखन का प्रयोजन स्पष्ट कर सकेंगे;
- प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण के स्वरूप में अंतर कर सकेंगे;
- विशिष्ट कार्यक्रमों के संदर्भ में प्रतिवेदन लिखना सीख सकेंगे,
- इन तीनों पद्धतियों का आवश्यकतानुसार कार्यालयी कामकाज में प्रयोग कर सकेंगे।

21.1 आइए समझें

सामान्यतः लेखन की अनेक पद्धतियाँ होती हैं। यहाँ हम कार्यालयों में प्रयोग में लाई जाने वाली विशेष पद्धतियों की चर्चा करेंगे। प्रतिवेदन, टिप्पण तथा प्रारूपण ऐसी ही पद्धतियाँ हैं। जहाँ तक प्रतिवेदन का सवाल है इसमें किसी घटना अथवा स्थिति आदि की जाँच-पड़ताल करके उनका विवरण प्रस्तुत किया जाता है। दूसरी ओर कार्यालय का लेखा-जोखा रखने के लिए दो पद्धतियों का प्रयोग किया जाता है – पहली टिप्पण लेखन और दूसरी प्रारूपण लेखन। आपने एक पाठ में सार लेखन के बारे में पढ़ा है। क्या आपको याद है वहाँ आपने एक प्रतिवेदन का सार करने की विधि सीखी है।

आइए, कार्यालय में प्रयुक्त होने वाली पद्धतियों के बारे में यहाँ विस्तार से जानकारी प्राप्त करें।

21.2 प्रतिवेदन क्या है?

प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ है – किसी प्रकरण, घटना या स्थिति-विशेष की क्रमिक जानकारी (रिपोर्ट) प्रस्तुत करना। आप जानते हैं कि देश-विदेश में अनेक ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं जिनके बारे में विस्तार से जानने के लिए हम सभी उत्सुक रहते हैं। लेकिन उसके लिए तथ्यों की जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है अर्थात् मामले की बारीकी से खोज-बीन की आवश्यकता पड़ती है जो किसी सरकारी या गैर सरकारी संस्था/एजेंसी द्वारा अथवा उसके द्वारा नियुक्त एक या एक से अधिक व्यक्तियों द्वारा की जा सकती है। ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों द्वारा प्रस्तुत विवरण को ही प्रतिवेदन कहा जाता है। जिस व्यक्ति या समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है उसे 'प्रतिवेदक' कहते हैं।

मान लीजिए किसी क्षेत्र विशेष में दंगा हो जाता है तो उसके बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए हम सभी उत्सुक रहते हैं। लेकिन उसके बारे में पूरी जानकारी या तो कोई व्यक्ति उस क्षेत्र में जाकर, तथ्यों की जाँच-पड़ताल करके दे सकता है या किसी समिति या आयोग को गठित करके सच्चाई को उजागर किया जा सकता है। जन संचार माध्यमों में सामान्यतः एक व्यक्ति को यह दायित्व दिया जाता है जबकि कार्यालयों में समिति के माध्यम से तथ्यों की जाँच-पड़ताल करके सच्चाई का पता लगाया जाता है।

आइए, एक उदाहरण के माध्यम से प्रतिवेदन का स्वरूप समझते हैं।

प्रतिवेदन का उदाहरण

''दिल्ली की पुनर्वास बस्तियों में फैले हैज़े के कारण किए गए सर्वेक्षण से संबद्ध प्रतिवेदन।''

''हैज़े संबंधी सर्वेक्षण पर प्रतिवेदन''

दिल्ली के उपराज्यपाल द्वारा दिनांक 21.6.06 को पुनर्वास बस्तियों-कालोनियों के सर्वेक्षण हेतु गठित महानगर परिषद्, दिल्ली विकास प्राधिकरण एवं नगर-निगम के आठ

सदस्यों की उप-समिति ने बस्तियों/कॉलोनियों में दौरा करने के बाद अनुभव, तथ्य तथा प्रमाणों के आधार पर जो निष्कर्ष निकाला है, इससे कहा जा सकता है कि–

(क) दिल्ली की समस्त पुनर्वास बस्तियाँ लगभग पच्चीस हैं और उनमें भी–

1. लगभग दस बस्तियों/कॉलोनियों (नाम संलग्न हैं) में नियमित ढंग से किए गए पूर्व-निर्माण को स्वेच्छा से बदला गया है तथा निरंतर अवैधानिक नव-निर्माण किया जा रहा है।
2. जितनी जनसंख्या के लिए ये बस्तियाँ/कॉलोनियाँ तैयार की गई थीं, उससे 50 प्रतिशत अधिक जनसंख्या इन मकानों में बस गई है।
3. लगभग सभी कॉलोनियों/बस्तियों में झुग्गी-झोंपड़ियाँ डाल कर ज़मीन पर अनधिकृत कब्जा कर लिया गया है।
4. योजनाबद्ध-निर्माण और आवास विकास की इन बस्तियों से संबद्ध सभी योजनाएँ पिछले पाँच वर्षों से ठप्प पड़ी हैं। परिणामतः गंदगी तथा बीमारी फैल रही है।

(ख) यमुनापार की बहुत-सी पुनर्वास बस्तियों/कॉलोनियों में वहाँ के निवासियों ने गलियों तथा सार्वजनिक स्थानों में गाय, भैंस, घोड़े, बैल, मुर्गे, बकरे आदि बाँध रखे हैं।

(ग) अधिकांश बस्तियों/कॉलोनियों में नगर-निगम या विकास-प्राधिकरण द्वारा बनाए गए विक्रय या व्यापार-केंद्र तो बंद ही पड़े हैं जबकि वहाँ के निवासियों या आस-पास के विक्रेताओं ने सड़कों और गलियों में ही दुकानें तथा मंडियाँ आदि खोल रखी हैं। परिणामतः वहाँ गंदगी, भीड़, शोर तथा अव्यवस्था फैली रहती है।

(घ) इन बस्तियों और कॉलोनियों में पिछले एक माह से फैले हुए हैज़े के कुछ अन्य कारण इस प्रकार हैं–

1. जल-मल प्रवाहन की ठीक व्यवस्था न होने से गंदगी चारों तरफ़ बिखरी हुई है।
2. मकान के निर्धारित नक्शे की अवहेलना करते हुए अनधिकृत-निर्माण बहुत अधिक कर लिए गए हैं। परिणामतः वहाँ घुटन, रोशनी का अभाव आदि बढ़ गया है।
3. अनधिकृत-निर्माण, पशुपालन तथा सड़कों, गलियों में बने बिक्री केंद्रों के कारण नगर-निगम के सफ़ाई कर्मचारी भी अपना दायित्व पूरी तरह से नहीं निभा रहे हैं। कर्मचारियों की कम संख्या भी इसका एक कारण है।
4. सड़कें-गलियाँ अधिकांशतः टूट चुकी हैं तथा जगह-जगह गोबर और पानी भरा हुआ है। सफ़ाई नियमित रूप से न होने के कारण सड़ाँध भी फैल रही है।

5. पानी का निकास (नालियों की स्थिति) भी अवरुद्ध है। किसी सामूहिक माध्यम के अभाव में यह समस्या बढ़ती जा रही है।
6. बीमार तथा हैज़ाग्रस्त बच्चों, बूढ़ों, महिलाओं और पुरुषों आदि के लिए चिकित्सा केंद्र, डिस्पेंसरी या अन्य किसी प्रकार की सहायता उपलब्ध नहीं है।
7. कूड़ाघर के अभाव में चारों तरफ़ गंद बिखर रहा है। जो दो एक कूड़ाघर बने हैं वहाँ से गंदगी उठवाने की पिछले कई दिनों से कोई व्यवस्था नहीं की गई है।
8. सार्वजनिक शौचालयों में बहुत दिनों से सफ़ाई आदि का कोई प्रबंध नहीं है। परिणामतः बीमारियों के कीटाणु फैल रहे हैं।

(ङ) बस्तियों/कॉलोनियों के कुछ लोगों का कहना है कि उनकी शिकायतों पर कोई गौर नहीं किया जाता। परिणामतः संपर्क-सूत्र ही टूट गया है।

समिति के सुझाव

समिति ने पुनर्वास बस्तियों/कॉलोनियों में घूम कर, लोगों से बातचीत करते हुए कुछ तथ्य, तर्क जुटाए हैं। इन सभी तर्कों, तथ्यों और प्रमाणों के आधार पर सर्वप्रथम समिति यह अनुभव करती है कि इन बस्तियों को साफ़-सुथरा, व्यवस्थित तथा सुविधा-संपन्न बनाए रखने का जो दायित्व नगर-निगम या अन्य संबद्ध विभागों का है, उसे पूरा किया जाना चाहिए। संबद्ध अधिकारियों को लगातार की गई शिकायतों (तथ्य तथा प्रमाण संलग्न हैं) पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। अधिकारियों की कर्त्तव्योपेक्षा के कारणों की अलग से जाँच अवश्य की जाए।

1. संबद्ध अधिकारियों को निर्देश दिए जाएँ कि वे बस्तियों/कॉलोनियों में जाकर वहाँ के निवासियों से परस्पर संपर्क समन्वय हेतु वहीं के हर वर्ग के शिक्षित-प्रतिष्ठित तथा समझदार व्यक्तियों की एक स्थानीय समिति गठित करवाएँ ताकि उसके माध्यम से जनता और अधिकारियों के बीच एक तालमेल बना रह सके।
2. फिलहाल, गलियों-सड़कों, नालियों तथा सार्वजनिक शौचालय आदि जन-सुविधाओं की सफ़ाई के लिए तत्काल निर्देश दिए जाएँ।
3. अनधिकृत निर्माण तथा पशु-पालन करने वालों के विरुद्ध सख्त कार्यवाही की जाए।
4. गलियों-सड़कों, नालियों तथा सार्वजनिक स्थानों पर दुकानें, पटरियाँ आदि लगा लेने वालों के विरुद्ध सख्ती की जाए।
5. समय-समय पर स्वास्थ्य एवं कल्याण मंत्रालय द्वारा कीट-नाशक दवाओं की आपूर्ति की जाए जिससे समय-समय पर इनका उपयोग किया जा सके।
6. तत्काल चिकित्सा संबंधी सरकारी सहायता उपलब्ध कराई जाए।
7. स्वच्छता नियमों का कठोरता से पालन किया और कराया जाए, तथा
8. अभी कुछ दिनों के लिए अभियान-स्तर पर सफ़ाई, सहयोग तथा चिकित्सा व्यवस्था प्रदान करते हुए, भविष्य के लिए कुछ ठोस कदम उठाए जाएँ।

समिति का निर्णय या अभिमत

समिति का मानना है कि यह विकट स्थिति सरकारी अधिकारियों तथा स्थानीय लोगों की लापरवाही से ही निर्मित हुई है। अतः संबद्ध अधिकारियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई की जाए तथा स्थानीय लोगों से स्वच्छता तथा सुचारु व्यवस्था संबंधी नियमों का सख्ती से पालन कराया जाए। साथ ही, कम-से-कम छह माह तक सफ़ाई, सुधार, सहयोग तथा विकास व्यवस्था का कार्यभार अभियान-स्तर पर कार्य करने वाली किसी गंभीर, कर्त्तव्यनिष्ठ तथा जन-सेवी संस्था को सौंप दिया जाए। इससे हैज़े जैसी खतरनाक बीमारी को रोकने में सहायता मिल सकेगी।

संलग्नकः

1. सभी तथ्यों तथा प्रमाणों की प्रतियाँ
2. कुछ चित्र
3. अलग-अलग बस्तियों की विवरणिकाएँ
4. साक्षियों के पत्रादि प्रमाण के रूप में।

....	....	....
अध्यक्ष	(समिति-सचिव) हस्ताक्षर	(समिति-संयोजक) हस्ताक्षर
....	....	....
(सदस्य) हस्ताक्षर	(सदस्य) हस्ताक्षर	(सदस्य) हस्ताक्षर

आइए, प्रतिवेदन का एक और उदाहरण पढ़ते हैं।

इस उदाहरण के आधार पर अब हम प्रतिवेदन की उपयोगिता, उसके प्रमुख तत्त्व, विशेषताएँ तथा प्रक्रिया के बारे में विस्तार से चर्चा करेंगे।

उदाहरण - दो

नशीले पदार्थों का सेवन हमारे देश की ज्वलंत समस्याओं में से एक है। कुछ लोग यह भ्रम फैलाते हैं कि नशा स्फूर्तिदायक होता है। कुछ लोग अवसाद, निराशा, अकेलेपन के शिकार होकर नशे के आदी हो जाते हैं, वस्तुतः नशीले पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य, परिवार, समस्त देश को हानि पहुँचाता है। आपने सुना होगा कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी भी जीतने के लिए नशीली दवाइयाँ ले लेते हैं लेकिन पकड़े जाने पर न केवल उनका जीवन बरबाद हो जाता है, उनके देश के नाम पर भी बट्टा लग जाता है। नशे की प्रवृत्ति – विशेष रूप से किशोरों और युवाओं में, एक ऐसी बीमारी है जिससे विश्व के लगभग सभी देश चिंतित हैं, प्रमाण के रूप में इस प्रतिवेदन को पढ़ते हैं –

टिप्पणी

किशोरों-युवाओं में मादक पदार्थों के बढ़ते सेवन पर चिंता

दुनिया भर में किशोरों-युवाओं में मादक पदार्थों के बढ़ते सेवन के मामलों पर चिंता जताते हुए संयुक्त राष्ट्र के मादक पदार्थ और अपराध विभाग ने अपने संदेश में कहा है कि हमें बच्चों को मादक पदार्थों से अलग रखने और बच्चों को यह बताने की ज़रूरत है कि मादक पदार्थ बच्चों का खेल नहीं है। यू.एन.ओ.डी.सी. तथा आर.ओ.एस.ए. के प्रतिनिधि गैरी लेविस ने कहा है कि भारत के स्कूलों के पाठ्यक्रम में इनके दुष्प्रभावों के बारे में बच्चों को जानकारी देनी चाहिए और इस पूरी प्रक्रिया से अभिभावकों को भी जोड़ना चाहिए। मादक पदार्थों के सेवन और तस्करी के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर यू.एन.ओ.डी.सी. के कार्यकारी निदेशक अंटोनिया मारिया कोस्टा ने अपने संदेश में कहा कि हमें बच्चों को मादक पदार्थों से अलग रखने और बच्चों को यह बताने की ज़रूरत है कि मादक पदार्थ बच्चों का खेल नहीं है।

मादक पदार्थों की विनाशात्मक शक्ति के बारे में किशोरों को जागरूक करने और इनके खतरनाक प्रभावों से उन्हें दूर रखने के उद्देश्य से यू.एन.ओ.डी.सी. ने प्रतिवर्ष 26 जून को मनाए जाने वाले इस दिवस का विषय ''इस वर्ष बच्चों का खेल नहीं है ड्रग्स'' बनाया है। इस अवसर पर भारत में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाएँगे। केंद्रीय सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री मीरा कुमार एक राष्ट्रीय जागरूकता अभियान की शुरूआत करेंगी जिसका उद्देश्य लोगों को मादक पदार्थों के कुप्रभावों के बारे में सूचित करना है। यह अभियान महानगरों के साथ-साथ पूर्वोत्तर राज्यों के शहरों में भी शुरू किया जाएगा। आगामी समय में इस अभियान को ग्रामीण क्षेत्रों में भी बढ़ाने का लक्ष्य है। दूसरी तरफ़ यू.एन.ओ.डी.सी. व आर.ओ.एस.ए. के प्रतिनिधि गैरी लेविस ने कहा है कि भारत मादक पदार्थों की तस्करी के मार्ग पर पड़ता है। इसके पश्चिमोत्तर में जहाँ गोल्डन क्रीसेंट है वहीं इसकी पूर्वोत्तर सीमा पर गोल्डन ट्राएंगल स्थित है। ऐसे में यहाँ किशोरों तथा युवाओं में इस लत के पनपने का अधिक खतरा है। उन्होंने कहा कि हमने सरकार को सुझाव दिया है कि मादक पदार्थ के खतरों, दुष्प्रभावों और जागरूकता के बारे में कक्षा छह से बारहवीं तक के पाठ्यक्रम में जानकारी सम्मिलित की जाए। लेविस ने कहा कि इस समस्या के बारे में हम भारत के शिक्षा बोर्डों के लिए मॉडल तैयार कर रहे हैं। सी.बी.एस.ई. तथा एन.सी.ई.आर.टी. की ओर से हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। लेविस ने कहा कि ब्रिटेन तथा दक्षिण अफ्रीका के स्कूलों की भाँति ही भारत के स्कूलों में भी इस बारे में कुछ निश्चित दिशा-निर्देश होने चाहिए।

विश्लेषण

अभी आपने प्रतिवेदन के दो उदाहरण पढ़े। आपने ध्यान दिया होगा –

पहला प्रतिवेदन एक समिति द्वारा जाँचपड़ताल कर आँकड़ों सहित प्रस्तुत किया गया है। इस समिति के पाँच सदस्य हैं – समिति सचिव, समिति संयोजन साथ तीन अन्य समिति के सदस्य। ये सभी सदस्य मौके पर पहुँच कर जाँच-पड़ताल कर प्रमाण जुटाते हैं, आँकड़े लेते हैं, स्थिति का मुआयना करते हैं, तब अपना प्रतिवेदन प्रस्तुत करते हैं। चित्र प्रमाण, आँकड़े आदि संलग्न आदि के रूप में लगाते हैं। इसमें सभी के हस्ताक्षर होना अनिवार्य होता है। दूसरा उदाहरण एक समारोह का प्रतिवेदन है। यह समारोह

मादक पदार्थों के सेवन तथा तस्करी के विरुद्ध अंतर्राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर आयोजित किया गया है। यह किसी एक व्यक्ति द्वारा लिखा गया है। इसे पढ़ कर हमें उस समारोह में हुई संपूर्ण गतिविधियों का विवरण प्राप्त हो जाता है। समारोह का आयोजन कब, किसने, क्यों किया, कौन-कौन लोग उपस्थित हुए। किसने क्या सुझाव दिए आदि सभी कुछ स्पष्ट हो जाता है।

इन दोनों उदाहरणों की भाषा पर भी ध्यान दीजिए। इसकी भाषा साहित्यिक भाषा नहीं है। यानी कि कहानी और निबंध की भाषा से अलग इसकी भाषा है। भाषा का यह रूप कामकाजी (कार्यालयी) हिंदी भाषा कहलाती है। कोई चार अंतर यहाँ लिखिए

	साहित्यिक भाषा	कामकाजी भाषा
1.	....	....
2.	....	....
3.	....	....
4.	....	....

21.3 प्रतिवेदन की उपयोगिता

आजकल प्रतिवेदन लेखन एक महत्त्वपूर्ण कार्य के रूप में स्वीकार किया जा रहा है। प्रतिवेदक (व्यक्ति या समिति) विभिन्न ज्ञात-अज्ञात तथ्यों की जाँच, सर्वेक्षण, अन्वेषण, साक्षात्कार तथा विश्लेषण आदि से जो निष्कर्ष निकलता है, उन्हें जनहित को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत करता है। अतः जब भी कोई विषय, मामला, मुद्दा सामान्य जनता के विरुद्ध होता है तो उस विवादास्पद विषय की छानबीन करना आवश्यक हो जाता है। ऐसी स्थिति में ही प्रतिवेदन की ज़रूरत पड़ती है। सरकारी, अर्धसरकारी या गैर सरकारी कार्यालयों और संस्थाओं में छोटी-बड़ी अनियमितताओं, गड़बड़ियों और विवादों की जाँच तथा उनकी रिपोर्ट आदि की आवश्यकता बनी ही रहती है।

पाठगत प्रश्न 21.1

1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (√) अथवा गलत (X) का निशान लगाकर उत्तर दीजिए:

   (क) प्रतिवेदन प्रस्तुत करने से पूर्व तथ्यों की जाँच-पड़ताल की आवश्यकता नहीं पड़ती। ( )

   (ख) व्यक्ति या समिति द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जाता है। ( )

   (ग) आजकल प्रतिवेदन लेखन का कोई महत्त्व नहीं रह गया है। ( )

   (घ) कार्यालयों और संस्थानों में अनियमितताओं की जाँच प्रतिवेदन के द्वारा की जाती है। ( )

टिप्पणी

(ङ) प्रतिवेदन, टिप्पण तथा प्रारूपण लेखन सरकारी कामकाज के निपटाने की अलग-अलग पद्धतियाँ होती हैं। ( )

2. प्रतिवेदन किसे कहते हैं?

3. प्रतिवेदन क्यों लिखा जाता है?

21.4 प्रतिवेदन के मुख्य तत्त्व

(क) **घटना या स्थिति विशेष** प्रतिवेदन का प्रमुख तत्त्व है। जब किसी विवादित प्रश्न, घटना, दुर्घटना, ज्वलंत समस्या, स्थिति, अनियमितता आदि की जानकारी पर कार्रवाई की जानी होती है तभी प्रतिवेदन लिखा जाता है।

(ख) **मनोनीत प्रतिवेदक या गठित समिति की नियुक्ति** किसी घटना या स्थिति की संपूर्ण जानकारी के लिए किसी व्यक्ति को ज़िम्मेदारी सौंपी जाती है या एक समिति गठित करके मामले की सच्चाई तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

(ग) **सूक्ष्म निरीक्षण तथा पूर्ण जाँच-पड़ताल** के माध्यम से ही समस्या की जड़ तक पहुँचना संभव होता है। चूँकि किसी भी समस्या की अनेक गुत्थियाँ होती हैं इसलिए उनके सभी पक्षों को उजागर करना कठिन होता है।

(घ) **प्रमाण तथा तथ्य** अर्थात् प्रतिवेदन की प्रामाणिकता दिए गए साक्ष्यों तथा तथ्यों पर ही निर्भर करती है।

(ङ) **सुझाव तथा सिफ़ारिशों** के माध्यम से ही प्रतिवेदक अथवा समिति अपने विचारों को अभिव्यक्त करता/करती है।

(घ) **निश्चित अवधि** में ही प्रतिवेदन को प्रस्तुत करना होता है क्योंकि कोई भी विषय सामयिक महत्त्व का होता है।

उपर्युक्त तत्त्वों के आधार पर प्रतिवेदन की विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

- प्रतिवेदन में **प्रामाणिकता** और **तथ्यात्मकता** होती है।
- प्रतिवेदन किसी एक **विषय** या **घटना** पर पूरी तरह केंद्रित होता है।
- प्रतिवेदन पूर्णतः **निष्पक्ष** तथा **तटस्थ** विवेचन पर आधारित होता है।
- प्रतिवेदन की **भाषा स्पष्ट, सरल, सहज और प्रभावी** होती है।

21.5 प्रतिवेदन लेखन की प्रक्रिया

प्रतिवेदन लिखने के लिए पूरी योजना बनानी पड़ती है। इस योजना को क्रमबद्ध तरीके से इस प्रकार देखा जा सकता है।

(क) प्रतिवेदन प्रक्रिया का पहला चरण है – संबद्ध विषय का गहन अध्ययन करते हुए उसके उद्देश्य को ध्यान में रखना।

(ख) उद्देश्यों के अनुरूप कार्य-प्रक्रिया की रूपरेखा बनाना।

(ग) प्रतिवेदन संबंधी विषय में संबद्ध तथ्य– चित्र, सूचना, आँकड़ों आदि के प्रमाण एकत्रित करना।

(घ) अनेक लोगों से मिलकर तथा पक्ष-विपक्ष के विचारों से अवगत होकर सूचनाएँ एकत्रित करना।

(ङ) सर्वेक्षण और साक्षात्कार आदि से प्राप्त सभी तथ्यों, आँकड़ों, प्रमाणों और विवरणों का विश्लेषण करते हुए उन्हें सारणीबद्ध करना।

(च) निष्कर्ष और सिफ़ारिशों सुझावों या अनुशंसाओं की रूपरेखा तैयार करते हुए एक कच्चा प्रारूप तैयार करना।

(छ) अंत में, सभी संबद्ध कागज़ातों को शामिल करते हुए मुख्य प्रतिवेदन का टंकण कराके, व्यक्ति अथवा समिति के सभी सदस्यों के हस्ताक्षर के साथ प्रस्तुत करना।

क्रियाकलाप-1

आपके पड़ोस के किसी घर में दो लोगों की हत्या हो गई है। घटना स्थल पर जाकर विभिन्न स्रोतों से विवरण प्राप्त करें और एक प्रतिवेदन तैयार करें।

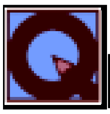

पाठगत प्रश्न 21.2

1. निम्नलिखित वाक्यों में उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिएः

   (क) प्रतिवेदन के द्वारा मामले की ....तक पहुँचने का प्रयास किया जाता है।

   (ख) प्रतिवेदन की प्रामाणिकता दिए गए साक्ष्यों और ....पर निर्भर करती है।

   (ग) प्रतिवेदन पूर्णतः निष्पक्ष तथा ....विवेचन पर आधारित होना चाहिए।

   (घ) प्रतिवेदन की भाषा ....,.............और ....होनी चाहिए।

   (ङ) प्रतिवेदन का पहला चरण ....,............................है।

   (च) निष्कर्ष और सुझाव की रूपरेखा तैयार करते हुए एक ....तैयार करना चाहिए।

2. प्रतिवेदन लेखन की कोई चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

अभी आपने प्रतिवेदन के बारे में कुछ विशेष जानकारी प्राप्त की। आइए, अब हम कार्यालयी कामकाज में लेखन की दूसरी पद्धति टिप्पण लेखन के बारे में पढ़ते हैं –

21.6 टिप्पण लेखन

'टिप्पण' अथवा 'टिप्पणी' अंग्रेज़ी शब्द नोटिंग का पर्याय है। 'टिप्पण' शब्द का सामान्य अर्थ किसी मामले में राय या सम्मति देना होता है। लेकिन कार्यालयी हिंदी में इसका अर्थ बाहर से आने वाले पत्रों या प्रशासनिक मामलों पर कार्रवाई करने के उद्‌देश्य से फाइल पर टिप्पण लिखना होता है।

विभिन्न कार्यालयों में कर्मचारी और अधिकारी टिप्पण के माध्यम से ही आपस में संवाद करते हैं। व्यक्तिगत जीवन में मौखिक बातचीत से काम चल सकता है लेकिन प्रशासन तथा व्यवसाय आदि में ऐसा संभव नहीं है। कार्यालयों में काम की मात्रा अधिक होती है तथा अधिकारी भी बदलते रहते हैं इसलिए रिकार्ड रखने की आवश्यकता पड़ती है। किसी संस्था या कार्यालय में कोई निर्णय किन परिस्थितियों में तथा किस आधार पर लिया गया तत्संबंधी क्या आदेश जारी किए गए, किस बात की मंजूरी दी गई, क्या शर्तें तय हुईं– इन सबका रिकार्ड रखना ज़रूरी है। इसलिए टिप्पण लेखन का बहुत महत्त्व होता है।

'टिप्पण' और 'टिप्पणी' में अंतर

आप पिछले कई पाठों में टिप्पणी शब्द पढ़ चुके हैं कविता तथा गद्‌य के प्रमुख अंशों की व्याख्या के साथ आपने टिप्पणी भी पढ़ी है। सामान्यतः 'टिप्पणी' में किसी विषय पर अपने विचारों को संक्षिप्त रूप में व्यक्त किया जाता है जबकि 'टिप्पण' विशेष रूप से सरकारी कार्यालयों में अधिकारियों-कर्मचारियों के आपस में अपनी बातों को संप्रेषित करने के लिए प्रयोग में लाया जाता है और इसे हरे रंग की 'नोटशीट' पर ही लिखा जाता है। इसलिए जब 'टिप्पणी' और 'टिप्पण' शब्दों का प्रयोग किया जाए तो आपको उनमें भेद समझना चाहिए। यहाँ टिप्पण के बारे में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

फ़ाइल का गठन

आप जानते हैं सरकारी कार्यालयों में सभी कामकाज कागज़ों पर होता है। किसी एक व्यक्ति अथवा विषय संबंधी कागज़ात एक स्थान पर रखे जाते हैं, उसे ही फ़ाइल कहते हैं। फ़ाइलों पर टिप्पण लिखने के तरीके को समझने के लिए आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि फ़ाइल कैसे तैयार होती है। फ़ाइल के मुख्यतः दो भाग होते हैं :

1. टिप्पण भाग, और
2. पत्राचार भाग, जिसके कच्चे रूप को प्रारूपण कहा जाता है।

टिप्पण हाशियेदार कागज़ यानी कि हरी नोटशीट पर लिखी जाती है। टिप्पण भाग को फ़ाइल के बाईं ओर नत्थी करके रखा जाता है। पत्राचार भाग फ़ाइल के अंदर होता है। जिसमें बाहर से आए पत्र या आवती को रखा जाता है। पत्राचार भाग में बाहर से आए पत्रों और उनके उत्तरों की कार्यालय प्रतियाँ रखी जाती हैं। टिप्पण भाग में सहायक और अधिकारी के बीच विचार-विमर्श होता है, स्थितियों के अनुसार निर्णय लिए जाते हैं। प्रशासनिक मामलों का निपटान किया जाता है। विभिन्न मामलों पर लिए गए निर्णय

फाइलों में सुरक्षित रहते हैं जिनका उपयोग भविष्य में मिलते-जुलते मामलों में समान निर्णय लेने के लिए किया जाता है।

फ़ाइल पर टिप्पण लिखने की पद्धति

आवतियों और दूसरे मामलों को निपटाने के लिए सहायक फ़ाइल पर टिप्पण लिखता है। इसमें निम्नलिखित बातें होती हैं :

(क) मामले से संबंधित पिछले कागज़-पत्रों का सार (हम पहली पुस्तक में पढ़ चुके हैं।)

(ख) विचाराधीन मुद्दों का विवरण

(ग) आवती या प्रशासनिक मामले पर कार्रवाई का सुझाव

फाइल पर टिप्पण लिखने के बाद टिप्पण के नीचे बाईं ओर सहायक तारीख के साथ आद्यक्षर (छोटे हस्ताक्षर) करता है। इसके बाद वह फ़ाइल को अनुमोदन के लिए अधीक्षक या अनुभाग अधिकारी के सामने प्रस्तुत (पेश) करता है। अगर अनुभाग अधिकारी डेस्क अधिकारी द्वारा टिप्पण में दिए गए सुझावों से सहमत होगा, तो वह टिप्पण के नीचे उत्तर का मसौदा प्रस्तुत करने का आदेश करता है और नीचे बाईं ओर तारीख के साथ हस्ताक्षर करता है। यदि वह टिप्पण के सुझाव से सहमत नहीं होगा, तो वह अपने सुझावों के साथ टिप्पण को अपने ऊपर के अधिकारी/डेस्क अधिकारी/अवर सचिव के सामने आदेश के लिए प्रस्तुत करता है। अधिकारी प्राप्त टिप्पण पर सहायक की तरह बाईं ओर दिनांक के साथ आद्यक्षर करता है।

आद्यक्षर

छोटे हस्ताक्षरों को कहते हैं जिसमें नाम के प्रथम अक्षर लिखे जाते हैं, जैसे विजय शंकर का संक्षिप्त रूप (वि.श.) है।

सामान्य रूप से डेस्क/अनुभाग अधिकारी नेमी (रूटीन) मामलों को अपने स्तर पर निपटा सकता है। दूसरे मामलों को वह अनुमोदन के लिए अवर सचिव के पास भेजता है।

पाठगत प्रश्न 21.3

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

1. फ़ाइल के दो भाग कौन-कौन से होते हैं ?
2. टिप्पण भाग में क्या होता है?
3. आवती को फ़ाइल के किस भाग में रखा जाता है?
4. सहायक टिप्पण के नीचे हस्ताक्षर करता है या आद्यक्षर?
5. किसी व्यक्ति का नाम, हस्ताक्षर तथा आद्यक्षर में मुख्य रूप से क्या अंतर होता है?
6. नेमी मामले किस स्तर पर निपटाए जाते हैं?
7. अनुभाग अधिकारी अपने टिप्पण पर कहाँ हस्ताक्षर करता है?

टिप्पणी

21.7 टिप्पण-लेखन के प्रकार

आप जानते हैं कि किसी पत्र के कार्यालय में पहुँचते ही सूक्ष्म टिप्पण लेखन कार्य शुरू हो जाता है। अधिकारी डाक देखते समय यह लिखता चलता है कि पत्र किस विभाग या किस अधिकारी के पास जाएगा, अब उस पर विस्तृत कार्रवाई प्रारंभ होती है। आइए, अब हम यह समझने की कोशिश करें कि कार्यालयों में कितने प्रकार के टिप्पण लिखे जाते हैं? टिप्पण लेखन मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं:

(क) नेमी टिप्पण।

(ख) अन्य नियमित टिप्पण

नियमित टिप्पण दो प्रकार के होते हैं:

1. अंतराविभागीय टिप्पण (विभाग के आंतरिक प्रयोग के लिए)
2. अंतर्विभागीय टिप्पण (दो विभागों के बीच)

अंतराविभागीय टिप्पण भी दो प्रकार के होते हैं :

1. सहायक स्तर 2. अधिकारी स्तर

इसे और अच्छी तरह समझने के लिए नीचे दिया गया आरेख (चार्ट) देखिए :

टिप्पण के प्रकार

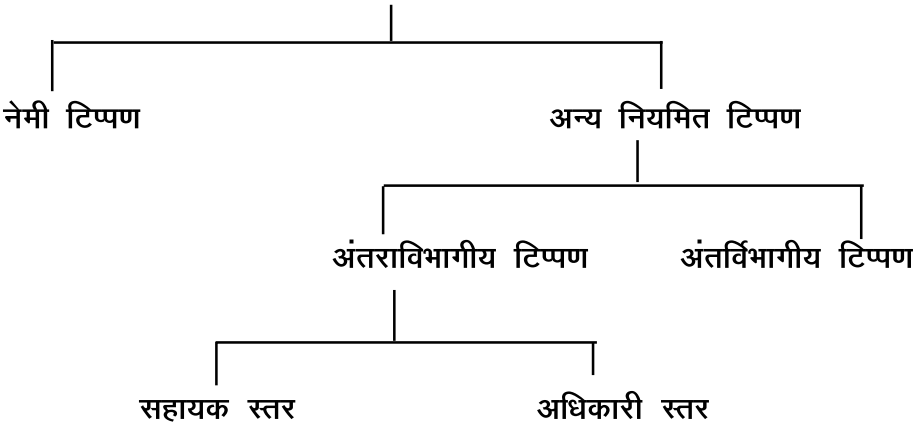

(क) नेमी कार्यालय टिप्पण

आइए, अब हम नेमी टिप्पण के बारे में विचार करें।

सामयिक और रोजमर्रा के टिप्पण को 'नेमी टिप्पण' कहते हैं; जैसे,

1. अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।
2. आवश्यक कार्रवाई कर दी गई है।
3. निदेशक महोदय कृपया स्वीकृति प्रदान करें।

4. प्रस्ताव स्वीकार किया जा सकता है।
5. आवश्यक कार्रवाई के लिए कृपया फ़ाइल प्रस्तुत है।

इन्हें निम्नलिखित प्रयोजनों से लिखा जाता है :

(क) सामान्य विचार-विमर्श और चर्चाओं से संबंधित टिप्पण।

(ख) छोटी-मोटी बातों के स्पष्टीकरण के लिए टिप्पण।

इसका प्रयोजन मामलों को निपटाना तथा ऊपर के अधिकारियों के विचार-विमर्श को सुविधाजनक बनाना होता है।

आपने नेमी टिप्पण के कुछ नमूने देखे। इनसे मामलों को निपटाने में मदद मिलती है। ये संक्षिप्त टिप्पण हैं। इनका प्रयोग अधिकारियों और सहायकों द्वारा किया जाता है। इनके प्रयोग से लंबी चर्चा से बचा जा सकता है और मामलों के संबंध में जल्दी निर्णय लिया जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 21.4

1. ऊपर गत इकाई में आपने जो कुछ पढ़ा उसके आधार पर रिक्त स्थानों में उपयुक्त शब्द भरिए :

   (क) नेमी टिप्पण सामान्य विचार-विमर्श और ....से संबंधित होते हैं।

   (ख) नेमी टिप्पण का प्रयोजन ....को निपटाने के लिए होता है।

   (ग) अंतराविभागीय टिप्पण के दो प्रकार होते हैं–सहायक-टिप्पण और ....,............ टिप्पण।

   (घ) अंतर्विभागीय टिप्पण का प्रयोग विभाग के ....होता है।

2. अंतराविभागीय टिप्पण किन-किन स्तरों पर प्रयोग में लाए जाते है?

3. नेमी टिप्पण लिखने के कोई दो प्रयोजनों का उल्लेख कीजिए।

(ख) अन्य नियमित टिप्पण

नेमी टिप्पण का प्रयोग सीखने के बाद आइए, अब नियमित टिप्पण के बारे में विचार करें। इस संबंध में कुछ सामान्य हिदायतों की जानकारी भी आपको दी जा चुकी है। टिप्पण लिखते समय आपको उनका ध्यान रखना आवश्यक है।

इस संबंध में आप पढ़ चुके हैं कि यह अंतराविभागीय और अंतर्विभागीय–दो प्रकार के होते हैं। इनमें अंतराविभागीय अर्थात् विभाग के आंतरिक प्रयोग के लिए जो टिप्पण होता है उसे दो स्तर पर प्रयोग में लाया जाता है, ये हैं–सहायक स्तर तथा अधिकारी स्तर।

टिप्पणी

(i) सहायक द्वारा टिप्पण लेखन

ये टिप्पण सामान्य रूप से सहायक द्वारा शुरू किए जाते हैं। यह टिप्पण किसी आवती (पत्र) या प्रशासनिक मामले के बारे में हो सकता है। आवती को फ़ाइल के पत्राचार भाग में रखकर सहायक टिप्पण प्रस्तुत करता है। सबसे पहले वह उस पर पत्राचार की पृष्ठ संख्या दर्ज़ करेगा और टिप्पण भाग में क्रम संख्या आवती दर्ज़ करेगा। अब वह पत्र के बारे में नीचे दी हुई जानकारी प्रस्तुत करेगा :

1. आवती में क्या माँग की गई है?
2. पत्र भेजने वाले ने उक्त माँग किस आधार पर की है?
3. माँग के संबंध में सरकारी नियमों की क्या स्थिति है?
4. कार्यालय के काम की दृष्टि से वह माँग कहाँ तक उचित है?
5. अंत में, सहायक पत्र पर कार्रवाई के बारे में अपना सुझाव देगा।

इन पाँच बातों की सूचना के साथ टिप्पण उच्च अधिकारी के अनुमोदन के लिए प्रस्तुत की जाती है। नमूना देखिए :

नमूना I

कार्यालय का एक सहायक एम.ए. करना चाहता है। उसके आवेदन के संदर्भ में नियमित टिप्पण का नमूना देखिए :

	क्रम सं.................................(आवती) पृष्ठ सं. ....(पत्राचार) श्री कर्मचंद्र, तकनीकी सहायक ने अपनी योग्ताएँ बढ़ाने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय से सांध्यकालीन कक्षाओं में पढ़कर हिंदी विषय में एम.ए. की परीक्षा देने की अनुमति माँगी है। श्री कर्मचंद्र बी.ए. पास है। आवेदन में यह भी आश्वासन दिया गया है कि इसके कारण उनके सरकारी काम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। (वि.श.) (आद्यक्षर दिनांक सहित) **सहायक**

सहायक टिप्पण का नमूना II

	आपके अनुभाग के एक निम्न श्रेणी के लिपिक के विरुद्ध अवज्ञा (हुक्मउदूली) की शिकायत प्राप्त हुई है। इस बारे में उनसे स्पष्टीकरण माँगने के लिए टिप्पण इस प्रकार लिखा जा सकता है – पूर्व पृष्ठ से .... श्री किशन लाल, नि.श्रे.लि., के विरुद्ध अनुभाग के अधीक्षक ने शिकायत की है कि वे कार्यालय के काम के प्रति बहुत लापरवाह हैं। वे प्रायः बिना

टिप्पणी

'पूर्व प ष्ठ से' का अर्थ है कि टिप्पणी पिछले प ष्ठ से जारी है।

नि.श्रे.लि.– (निम्न श्रेणी लिपिक)

अनुमति लिए कार्यालय से अनुपस्थित रहते हैं। कभी-कभी बिना छुट्टी मंजूर कराए कार्यालय नहीं आते। पिछले महीने वे पाँच दिन कार्यालय से अनुपस्थित रहे। इस अवधि की छुट्टी के लिए उन्होंने पूर्व-अनुमति भी नहीं ली।

इससे पहले वे प्रशासन अनुभाग में काम करते थे। वहाँ इनका अपने अधिकारियों के साथ आचरण ठीक नहीं था। वहाँ इन्हें अपने आचरण में सुधार करने के लिए चेतावनी भी दी गई थी।

ऐसा लगता है कि श्री किशन लाल के आचरण में कोई सुधार नहीं हुआ है। इनका बिना अनुमति लिए कार्यालय से अनुपस्थित रहना और छुट्टी मंजूर कराए बिना दफ़्तर न आना कार्यालय अनुशासन के विरुद्ध है।

इस बारे में श्री किशन लाल को स्पष्टीकरण देने को कहा जा सकता है।

(आद्यक्षर र.ना.) सहायक
दिनांक
अनुभाग अधिकारी

पाठगत प्रश्न 21.5

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए :

1. टिप्पण की शुरूआत कौन करता है?
2. टिप्पण किस पर आधारित होता है?
3. टिप्पण लिखते समय सहायक क्रम-संख्या आदि कहाँ लिखता है?
4. सहायक 'आवती' के संबंध में जो टिप्पण लिखता है, उसके कितने चरण होते हैं?
5. टिप्पण पर सहायक किस ओर आद्यक्षर करता है?

(ii) अधिकारी द्वारा टिप्पण लेखन

अभी आपने सहायक की टिप्पण के नमूने देखे। अब आप देखिए कि सहायक की टिप्पण पर अधिकारी कैसे टिप्पण लिखता है। सहायक द्वारा प्रस्तुत टिप्पण की जाँच पहले अधिकारी करता है, फिर उसमें अपने विचार और सुझाव जोड़ता है। जैसे–नमूने में दिए गए सहायक के टिप्पण पर अधीक्षक कुछ नीचे दिए गए प्रकार से टिप्पण लिखेगा:

उक्त टिप्पण के संदर्भ में श्री कर्मचंद्र को सूचित किया जा सकता है कि उन्हें निम्नलिखित शर्तों पर एम.ए. करने की अनुमति दी जाती है:

1. पढ़ाई के कारण कार्यालय के काम पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिए।
2. यह अनुमति लोकहित में बिना कारण बताए किसी भी समय वापस ली जा सकती है।

आदेशार्थ प्रस्तुत है।

ह. (वरुण)
अधीक्षक
अनुभाग अधिकारी

'ह' हस्ताक्षर का संक्षिप्त रूप है।

यदि अधिकारी सहायक के टिप्पण से सहमत न हो और उस पर निर्णय लेने में सक्षम न हो तो वह अपने सुझाव के साथ टिप्पण को आदेश के लिए उच्चतर अधिकारी के सामने प्रस्तुत करेगा। ऐसी स्थिति में वह सहायक की तरह बाईं ओर हस्ताक्षर करेगा। यदि उच्चतर अधिकारी पूर्वोक्त टिप्पण से सहमत होगा तो वह टिप्पण के दाईं ओर पूरे हस्ताक्षर करके फ़ाइल को अनुभाग में लौटा देगा और अनुभाग उत्तर भिजवाने की कार्रवाई करेगा, जैसे नीचे टिप्पण में किया है :

श्री कर्मचंद्र को यह भी सूचित कर दिया जाए कि यदि परीक्षा के समय कार्यालय में काम अधिक हुआ, तो उन्हें छुट्टी देना संभव नहीं होगा। कार्यालय आदेश का मसौदा प्रस्तुत करें।

(ह. रामप्रकाश अग्रवाल)
दिनांक
अनुभाग अधिकारी

अधीक्षक
व.र.
(आद्यक्षर दिनांक सहित)
आदेशानुसार कार्यालय-आदेश का संशोधित मसौदा अनुमोदन/हस्ताक्षर के लिए प्रस्तुत है।

(आद्यक्षर—सहायक दिनांक सहित)
अनुभाग अधिकारी

(ह. अनुभाग अधिकारी)
दिनांक

अभी आपने टिप्पण लेखन के स्वरूप के बारे में, उसके विभिन्न रूपों के बारे में जानकारी प्राप्त की। इस आधार पर अब आप टिप्पण लिखने का प्रयास करें।

21.8 अधिकारी द्वारा सहायक टिप्पण

आप यह समझ गए होंगे कि जब अधिकारी टिप्पण पर अपने सुझाव देकर उसे उच्चतर अधिकारी के सामने प्रस्तुत करता है तो वह सहायक जैसी टिप्पण होती है।

अधिकारी स्तर पर दूसरे प्रकार का टिप्पण स्वतंत्र होता है। यह टिप्पण किसी आवती पर आधारित न होकर अनुभाग या कार्यालय के काम के बारे में हो सकता है। अधिकारी किसी आवश्यक मामले में कार्रवाई के लिए सुझाव दे सकता है। इसके बाद वह फ़ाइल को अनुमोदन और आदेश के लिए उच्चतर अधिकारी के सामने प्रस्तुत करेगा जो उस पर निर्णय लेने में सक्षम होगा। वह फाइल पर अनुमोदन करके उसे आवश्यक कार्रवाई के लिए लौटा देगा। नमूना नीचे देखिए:

केंद्रीय हिंदी निदेशालय

(पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग)

उपनिदेशक (प्रशासन) को मालूम ही है कि पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग में फरवरी-मार्च में परीक्षाओं के कारण काम बहुत अधिक बढ़ जाता है। इस समय छात्रों से मूल्यांकन के लिए अधिक उत्तर-पुस्तकें प्राप्त होती हैं।

इस समय पत्राचार पाठ्यक्रम विभाग के तीन मूल्यांकक छुट्टी पर हैं। इनमें से श्री राममोहन शर्मा ने मकान बनाने के लिए एक महीने की छुट्टी ली है। श्री बाबूराम की पत्नी बहुत अधिक बीमार है तथा श्री नारायणन अस्वस्थ होने के कारण चिकित्सा-छुट्टी पर हैं। इन तीनों मूल्यांककों द्वारा छुट्टी बढ़ाने की संभावना है।

इन मूल्यांककों की छुट्टी स्वीकृत करते समय प्रशासन-अनुभाग से एवजी की माँग की गई थी। उपनिदेशक (प्रशा.) ने आश्वासन दिया था कि शीघ्र ही एवजी की व्यवस्था कर दी जाएगी, लेकिन अभी तक एक भी एवज़ी नहीं दिया गया। इससे पाठ्यक्रमों की उत्तर-पुस्तकों को जाँचने में विलंब हो रहा है। इस कारण परीक्षा परिणाम निकालने में विलंब होने की संभावना है।

उपनिदेशक (प.पा.) इस संबंध में उपनिदेशक (प्रशा.) से व्यक्तिगत रूप से मिलकर अनुरोध कर एवजी की शीघ्र व्यवस्था कराने का प्रयास करें, ताकि पत्राचार पाठ्यक्रम की परीक्षाओं का परिणाम समय पर निकल सके।

उपनिदेशक (प.पा.) आवश्यक कार्रवाई के लिए देखने की कृपा करें।

ह. कृष्णगोपाल	ह. (एम. गोपाल सक्सेना)
(सहायक निदेशक)	(उपनिदेशक प.पा.)

टिप्पण लिखते समय सदैव ध्यान रखें :

- विचाराधीन पत्र या समस्या का समाधान होने की दिशा में उपयुक्त विकल्पों को प्रस्तुत करें।
- विषय के अनुसार अनुच्छेदों में बाँट कर लिखें।
- एक ही बात को बार-बार न दोहराएँ।
- किसी भी साथी कर्मचारी पर व्यक्तिगत आक्षेप न लगाएँ।
- हमेशा सच्ची और तथ्यात्मक जानकारी दें।
- संक्षिप्त और स्पष्ट रूप से विचार प्रस्तुत करें।
- संयत भाषा का प्रयोग करें। मैं, हम, आप आदि के प्रयोग से बचें। अन्य पुरुष का प्रयोग करें।
- टिप्पण के अंत में दिनांक सहित हस्ताक्षर अथवा आद्यक्षर अवश्य करें।

टिप्पणी

21.9 प्रारूपण

कार्यालयों में पत्र के माध्यम से ही कार्रवाई की जाती है। 'प्रारूपण' का तात्पर्य है–किसी भी पत्र के उत्तर का एक कच्चा रूप तैयार करना अर्थात् यदि किसी कार्यालय में कोई पत्र प्राप्त होता है तो उत्तर देने के लिए पत्र का एक मसौदा अर्थात् कच्चा रूप तैयार किया जाता है। दूसरे शब्दों में जब किसी भी कार्यालय में कोई पत्र सहायक अथवा अधिकारी द्वारा प्रस्तुत किया जाता है तब उस पर उच्च अधिकारी का अनुमोदन लिया जाता है। अनुमोदन के पूर्व तैयार पत्र को प्रारूप या मसौदा कहा जाता है और अनुमोदन के बाद वह पत्र बन जाता है।

आप पहले पढ़ चुके हैं कि कार्यालयी प्रक्रिया में दो भाग होते हैं–टिप्पण भाग और प्रारूपण भाग। टिप्पण भाग में कर्मचारी द्वारा विषय के बारे में पूरी जानकारी संक्षिप्त रूप में दी जाती है तथा अपने विचारों से भी अवगत कराया जाता है। दूसरे भाग प्रारूपण में कर्मचारी एक संभावित पत्र की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

प्रारूपण की विशेषताएँ

- प्रारूप तैयार करते समय पत्राचार के विभिन्न रूपों की जानकारी आवश्यक है।
- प्रारूप अपने में पूर्ण तथा पूर्णतः विषय पर आधारित हो।
- प्रारूप तैयार करते समय क्रमबद्ध ढंग से विचारों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया जाए। संदर्भ रहित बातों से बचा जाए।
- यदि पत्र का उत्तर दिया जा रहा हो तो वह समुचित तथा सटीक होना आवश्यक है। शुद्धता तथा तथ्यात्मकता सरकारी कामकाज में अनिवार्य है। एक छोटी-सी भूल भी बड़ी महँगी पड़ सकती है।
- प्रारूप की भाषा पक्षपात से मुक्त, शिष्ट, स्पष्ट, सरल और सहज हो।

अभी आपने यह समझ लिया होगा कि कार्यालय में कर्मचारी द्वारा एक पत्र का प्रारूप तैयार किया जाता है जिसे प्रारूपण कहते हैं। यही प्रारूप बाद में पत्र का रूप ले लेता है। औपचारिक अथवा सरकारी पत्रों के स्वरूप और प्रकार के बारे में आप पहले ही 'पत्र कैसे लिखें' पाठ में विस्तारपूर्वक पढ़ चुके हैं। सरकारी पत्र के समान प्रारूप में भी शीर्षक, पत्र संख्या, दिनांक, प्रेषक, प्रेषिती, विषय, संदर्भ, संबोधन, मूल कथ्य, स्वनिर्देश तथा हस्ताक्षर, संलग्नकों की सूचना, पृष्ठांकन, संकेताक्षर और संबंधित लिपिक के हस्ताक्षर होते हैं। प्रारूप सदैव मुख्य फ़ाइल के साथ होता है। यह सभी कार्रवाई संबद्ध पत्र भेजने से पहले की तैयारी है। यह टंकित रूप में उच्च अधिकारी के समक्ष पताका लगा कर 'अनुमोदनार्थ प्रारूप प्रस्तुत' लिखकर पेश किया जाता है। अंग्रेज़ी में इसे ही DFA (Draft for approval) कहा जाता है। इस पर अधिकारी चाहे तो सुझाव भी दे सकता है या प्रारूप में सुधार कर सकता है।

क्रियाकलाप-2

अपनी बीमारी का उल्लेख करते हुए उच्च अधिकारी को आवेदन-पत्र भेजने के लिए एक कच्चा रूप या प्रारूप तैयार करें।

पाठगत प्रश्न 21.5

1. निम्नलिखित वाक्यों के सामने सही (√) अथवा अथवा (X) का चिह्न लगाइए:
   (क) किसी भी पत्र का कच्चा रूप तैयार करना प्रारूपण कहलाता है। ( )
   (ख) प्रारूप को अधिकारी से अनुमोदित करना आवश्यक नहीं होता। ( )
   (ग) प्रारूप को पूर्णतः विषय पर आधारित होना चाहिए। ( )
   (घ) प्रारूप को तैयार करते समय क्रमबद्धता की आवश्यकता नहीं है। ( )
2. पत्र और प्रारूपण में मुख्य अंतर क्या है? संक्षेप में लिखिए।

21.10 योग्यता-विस्तार

अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित पुस्तकों का अध्ययन उपयोगी होगा–

(क) केंद्रीय सचिवालयः कार्यालय पद्धति (Manual of office Procedure) नामक पुस्तक में कार्यालय व्यवस्था का विस्तृत विवरण है।

(ख) प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, कैलाशचंद्र भाटिया, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली–2 , सन् 1996

(ग) कार्यालय प्रवीणता – हरिबाबू कंसल, बसंत विहार, नई दिल्ली

(घ) प्रशासनिक हिंदी – पूरनचंद टंडन

(ङ) प्रयोजनमूलक व्यावहारिक हिंदी – डॉ. ओमप्रकाश सिंघल

21.11 आपने क्या सीखा

- सरकारी कार्यालयों में कामकाज निपटान की कई पद्धतियों में प्रतिवेदन, टिप्पण और प्रारूपण लेखन की विशेष पद्धतियाँ हैं।
- प्रतिवेदन का सामान्य अर्थ है– किसी प्रकरण, घटना या स्थिति-विशेष की जानकारी (रिपोर्ट) प्रस्तुत करना।
- प्रतिवेदन प्रस्तुत करने का कार्य एक व्यक्ति भी कर सकता है और अनेक व्यक्तियों से बनी समिति भी।
- प्रतिवेदन तैयार करते समय प्रतिवेदक जनहित को ध्यान में रखता है।
- प्रामाणिकता, तथ्यात्मकता, निष्पक्षता और स्पष्ट-सरल भाषा, प्रतिवेदन की प्रमुख विशेषताएँ हैं।
- प्रतिवेदन तैयार करते समय उसकी प्रक्रिया को ध्यान में रखना चाहिए।
- कार्यालयों में संवाद टिप्पण के माध्यम से होता है।

- बाहर से आए पत्रों या किसी भी समस्या के समाधान आदि पर निर्णय पर पहुँचने के लिए टिप्पण लिखा जाता है।
- टिप्पण दो प्रकार का होता है– नेमी टिप्पण, अन्य नियमित टिप्पण।
- टिप्पण लेखन के पाँच चरण होते हैं:
  1. पत्र की विषयवस्तु
  2. पत्र की माँग
  3. माँग का आधार
  4. सरकारी नियमों के अनुसार माँग को पूरा किया जा सकता है अथवा नहीं
  5. माँग का औचित्य सहायक के सुझाव

  विषय महत्त्वपूर्ण होने पर अधिकारी अपने स्तर पर भी कोई टिप्पण शुरूकर सकता है।
- टिप्पण की भाषा सरल और स्पष्ट होती है। अन्य पुरुष शैली का प्रयोग होता है।
- प्रारूपण का अर्थ है किसी भी पत्र का कच्चा रूप तैयार करना।
- अधिकारी द्वारा अनुमोदन के बाद प्रारूप ही पत्र बन जाता है। चूँकि प्रारूप पत्रों का पूर्व रूप है इसलिए उसमें पत्रों की सारी विशेषताएँ होती हैं।

21.12 पाठांत प्रश्न

1. प्रतिवेदन से आप क्या समझते हैं? प्रतिवेदन क्यों लिखा जाता है?
2. प्रतिवेदन के मुख्य तत्त्व कौन-कौन से हैं?
3. कार्यालयी प्रक्रिया में टिप्पण लिखने की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
4. फ़ाइल पर टिप्पण कौन प्रारंभ करता है?
5. टिप्पण भाग तथा पत्राचार भाग क्या होते हैं?
6. मंत्रालय के उपसचिव का एक पत्र मिला है जिसमें कार्यालय के कर्मचारियों की कुल संख्या माँगी गई है। इसकी जानकारी देते हुए अपने उच्च अधिकारी को एक टिप्पण लिखिए।
7. प्रारूपण किसे कहते हैं। इसकी प्रमुख पाँच विशेषताएँ उदाहरण सहित बताइए।
8. एक कर्मचारी ने अपनी पदोन्नति के लिए आवेदन किया है। उसके आवेदन का उत्तर देने के लिए एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।
9. नोएडा के निठारी कांड को ध्यान में रखते हुए कुछ आँकड़े एकत्रित कर एक प्रतिवेदन (रिपोर्ट) तैयार कीजिए।
10. निम्नलिखित समाचार को पढ़िए और उपयुक्त तथ्य और आँकड़े जुटा कर एक रिपोर्ट तैयार कीजिए–

    (क) डोडा में हल्का भूकंप

    नई दिल्ली, 24 फरवरी (भाषा)। जम्मू कश्मीर के डोडा जिले में शनिवार को भूकंप का हल्का झटका महसूस किया गया जिसकी तीव्रता रिक्टर

पैमाने पर 3.3 आंकी गई। मौसम कार्यालय ने यहाँ बताया कि यह भूकंप दो बजकर 36 मिनट पर महसूस किया गया।

(ख) नई दिल्ली (वि.सं.)। भारत में वृद्धों की बढ़ रही तादाद और समस्याओं को देखते हुए सरकार की ओर से आगामी बजट (2007-08) में 30 से 35 प्रतिशत तक वृद्धि का प्रस्ताव किया गया है। यह प्रस्तावित बजट 28 करोड़ रुपए है जबकि 2005-2006 में यह बजट 19 करोड़ रुपए था। वृद्धों को सामाजिक सुरक्षा देने के लिए सरकार कानून भी ला रही है।

11. आपके शहर में एड्स जागरूकता सप्ताह मनाया गया, तत्संबंधी लगभग 500 शब्दों की एक रिपोर्ट तैयार कीजिए।

21.13 उत्तरमाला

21.1 1. (क) X (ख) √ (ग) X (घ) √ (ङ) √

2. किसी घटना अथवा स्थिति की आँकड़ों और तथ्यों सहित क्रमिक जानकारी साथ ही सुझाव तथा सिफ़ारिशों की सूची का प्रस्तुतीकरण

3. सच्चाई और ईमानदारी के साथ कार्यालयी कामकाज का लेखा-जोखा रखने के लिए

21.2 1. (क) सच्चाई (ख) तथ्यों (ग) तटस्थ (घ) स्पष्ट, सरल और सहज (ङ) संबद्ध विषय का गहन अध्ययन (च) कच्चा प्रारूप।

2. तथ्यात्मकता, तटस्थता, किसी घटना या स्थिति पर आधारित, भाषा सरल, सहज।

21.3 1. पत्राचार भाग, टिप्पण भाग

2. किसी प्रशासनिक मामले पर सहायक अथवा अधिकारी द्वारा लिखे गए टिप्पण होते हैं।

3. पत्राचार भाग में

4. आद्यक्षर

5. हस्ताक्षर पूरे किए जाते हैं, आद्यक्षर बहुत छोटे होते हैं।

6. डेस्क अनुभाग/अधिकारी स्तर पर

7. दाईं ओर

21.4 1. (क) चर्चा (ख) मामलों (ग) अधिकारी (घ) बाहर

2. सहायक तथा अधिकारी स्तर

3. सामान्य विचार-विमर्श तथा चर्चाओं से संबंधी तथा दैनिक बातों के स्पष्टीकरण संबंधी।

21.5 1. (क) सहायक (ख) पत्र, आवती या प्रशासनिक कार्य पर (ग) टिप्पण प्रारंभ करने से पहले ऊपर (घ) पाँच (ङ) बाईं ओर

21.6 1. (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) X

2. पत्र का कच्चा रूप प्रारूपण कहलाता है। अधिकारी से अनुमोदन प्राप्ति के बाद पत्र होता है।

टिप्पणी

22

रामधारी सिंह 'दिनकर'

301hi22

रामधारी सिंह 'दिनकर' का नाम तो आपने सुना ही होगा। उनकी कुछ कविताएँ भी पढ़ी होंगी। *'हठ कर बैठा चाँद एक दिन माता से यह बोला, सिलवा दे माँ मुझे ऊन का मोटा एक झिंगोला'* कविता शायद आपने पढ़ी हो। यह इन्हीं की लिखी कविता है। सन् 1962 में जब चीन ने भारत पर आक्रमण किया था और उसमें हमारे देश की पराजय हुई थी, तो दिनकर का मन दुख से भर उठा। दिनकर राष्ट्रवादी कवि हैं। इस पराजय के लिए उन्होंने देश के राजनीतिक नेतृत्व को ज़िम्मेदार माना और 'परशुराम की प्रतीक्षा' शीर्षक से एक लंबी कविता की रचना की। इस पाठ में इसी कविता के कुछ चुने हुए अंश आप 'परशुराम के उपदेश' शीर्षक से पढ़ेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- कविता में निहित दर्शन और विचारों की सराहना कर सकेंगे;
- कविता में निहित उमंग, उत्साह, वीरता, स्वाभिमान, स्वतंत्रता, संस्कृति के प्रति प्रेम जैसे गुणों को पहचान कर उन पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- राष्ट्रवाद का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- कविता में प्रयुक्त लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों को स्पष्ट कर सकेंगे;
- कवि की ओजपूर्ण और दार्शनिक भाषा पर टिप्पणी कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

वर्तमान युग में विनम्र, संतोषी और वैरागी बने रहकर अपने देश तथा स्वाधीनता की सुरक्षा हम नहीं कर सकते। हमें शक्तिशाली और निडर होकर तथा जान हथेली पर रखकर शत्रु का सामना करना होगा। सबल हाथों में ही राष्ट्र सुरक्षित रह सकता है। 'दिनकर' ने अपने 'कुरुक्षेत्र' प्रबंध काव्य में लिखा है–

टिप्पणी

क्षमा शोभती उस भुजंग को, जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन, विषरहित, विनीत सरल हो?

इसी प्रकार सुभद्रा कुमारी चौहान, मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, माखनलाल चतुर्वेदी, सोहनलाल द्विवेदी आदि सुप्रसिद्ध कवियों ने भी भारतवासियों में राष्ट्रीय-भावना विकसित करने वाली कविताएँ लिखी हैं। आप उन्हीं में से किसी एक कविता की कुछ पंक्तियाँ यहाँ लिखिए—

....

....

....

....

....

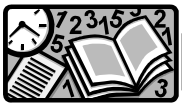

22.1 मूलपाठ

अब आप इस कविता को तीन-चार बार ओजपूर्ण स्वर में पढ़ जाइए—

परशुराम के उपदेश

(i)

सिखलायेगा वह, ऋत एक ही अनल है,
जिंदगी नहीं वह, जहाँ नहीं हलचल है।
जिनमें दाहकता नहीं, न तो गर्जन है,
सुख की तरंग का जहाँ अंध वर्जन है,
जो सत्य राख में सने, रुक्ष, रूठे हैं
छोड़ो उन को, वे सही नहीं, झूठे हैं।

(ii)

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

***   ***   ***

शब्दार्थ

ऋत – सत्य
अनल – आग
दाहक – जलाने वाला
वर्जन – मनाही
रुक्ष – रूखा, नीरस, कठोर
विभा – चमक, कांति
पीयूष – अम त, दूध
तुंग – ऊँचा
शैल-शिखर – पर्वत की चोटी
सोम – अम त

(iii)

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

(iv)

स्वातंत्र्य जाति की लगन, व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं, भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत चरण गहो रे!
जो पड़े आन, खुद ही सब आग सहो रे!

(v)

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं,
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

*** *** ***

(vi)

स्वर में पावक यदि नहीं, वृथा वन्दन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय क्रन्दन है।
सिर पर जिसके असिघात, रक्त-चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी खुलते हैं।

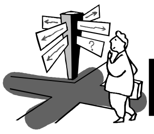

22.2 बोध प्रश्न

1. कवि ने किस प्रकार के जीवन को जीवंत माना है?
2. कैसे सच को कवि झूठा बता रहा है?

टिप्पणी

शब्दार्थ

आन	– शान
अनय	– अन्याय, अनीति
व्योम	– आकाश
अशनि-घात	– वज्र के समान कठोर चोट
संगीन	– नुकीला हथियार जो बंदूक के आगे लगाया जाता है।
शोणित	– खून
अयाल	– सिंह की गर्दन के बाल
किरिच	– छोटी बरछी, पेट में घोंपी जाने वाली तलवार या कटार
चाम	– चमड़ी, त्वचा, खाल
पावक	– अग्नि
वथा	– व्यर्थ
क्रंदन	– रोने की आवाज़
असिघात	– तलवार का घाव
भ्रामरी	– भवानी, पार्वती, दुर्गा

टिप्पणी

3. स्वातंत्र्य को व्यक्ति का भीतरी गुण क्यों कहा गया है?
4. भ्रामरी कैसे व्यक्ति का स्वागत करती है?

22.3 आइए समझें

परशुराम के उपदेश

प्रसंग

भारत पर चीन के आक्रमण के पश्चात् कवि ने देशवासियों को संबोधित करते हुए इस कविता की रचना की है। विभिन्न प्रतीकों के माध्यम से कवि देशवासियों में उमंग और उत्साह भरते हुए वीरता का भाव जगाना चाहता है।

व्याख्या - 1

कविता का प्रथम छंद एक बार फिर पढ़ लीजिए:

सिखलायेगा वह,
ऋत एक ही अनल है,

जिंदगी नहीं वह,
जहाँ नहीं हलचल है।
जिनमें दाहकता नहीं,
न तो गर्जन है,

सुख की तरंग का
जहाँ अंध वर्जन है,
जो सत्य राख में सने,

रुक्ष, रूठे हैं
छोड़ो उनको, वे सही नहीं, झूठे हैं।

कवि कहता है कि मानव में एक विशेष प्रकार की अग्नि है, जो शक्ति रूप में छिपी पड़ी है। वही उसके जीवन का सत्य है। कवि उसी सत्य को खोजने के लिए मनुष्य को प्रेरित करता है। सत्य वहीं है, जहाँ जीवन में हलचल है अर्थात् जीवन में गतिशीलता और क्रियाशीलता है। यहाँ क्रियाशीलता जीवन को गति देती है। किंतु यह क्रियाशीलता एक नियमित ढर्रे पर चलने वाली क्रिया नहीं बल्कि नित नई घटनाओं, नए विचारों से प्रेरित होकर नए कार्यों की ओर बढ़ने वाली क्रियाशीलता है। इसी को कवि ने हलचल कहा है।

कवि के अनुसार ऐसी हलचल के बिना कोई ज़िंदगी नहीं। इसी प्रकार वह जीवन भी व्यर्थ है जिसमें 'दाहकता और गर्जन' न हो। यहाँ 'गर्जन' का अर्थ दो विरोधी परिस्थितियों या विचारों की टकराहट से हृदय में उत्पन्न दाहकता या जलन है।

इसका परिणाम होता है कि हम गरज उठते हैं। इसको हम इस रेखाचित्र से समझने की चेष्टा करते हैं–

हलचल ⟶ **दाहकता** ⟶ **गर्जन**

हलचल – **भाव या विचार या परिस्थिति**

दाहकता – **आवेश की उत्तेजना**

गर्जन – **दहाड़ना, किसी विचार या कार्य को परिणति देना**

कहने का तात्पर्य यह है कि हलचल, दाहकता और गर्जन ये तीनों ही वीरता के लक्षण हैं और यह जीवन का सत्य भी है। इस प्रकार की ज़िंदगी सुखों की ओर आकर्षित नहीं होती, सुख की सेज वहाँ वर्जित है। इस प्रकार सुख-सुविधापूर्ण जीवन और हलचल-पूर्ण जीवन एक दूसरे से भिन्न है।

आइए अब, प्रथम छंद की अंतिम पंक्ति का आशय जानें–

यहाँ कवि उसी सत्य रूपी शक्ति को ढूँढ़ लाने के लिए प्रेरित करता हुआ कहता है कि जिन लोगों ने झूठ रूपी राख से सत्य रूपी अग्निशक्ति को ढक दिया है। भारत-चीनी भाई-भाई के नारे को झूठा कहते हुए कवि का आक्रोश व्यक्त हुआ है। इस नारे की आड़ में चीन हमारे देश पर घात कर रहा है। उन पर विश्वास मत करो, वे झूठे हैं। ऐ देशवासियो! तुम सत्य को पहचानो और अपने जीवन की दिशा को बदलो।

टिप्पणी

(क) 'हलचल न होना' से तात्पर्य है– 'भावना–विहीन', 'क्रिया–विहीन' होना। इस शब्द द्वारा कवि कहना चाहता है कि हमारे अंदर प्रतिस्पर्धा और प्रतिशोध की भावना भी आवश्यक है, वरना हमें कोई भी, किसी भी स्थिति में, कुछ भी कहता और सताता चला जाएगा। अतः हमारे भीतर प्रतिकार की भावना भी होनी चाहिए।

(ख) 'दाहकता और गर्जन' हमारी भावनात्मक प्रतिस्पर्धा और प्रतिशोध को बढ़ावा देने वाली वृत्तियाँ और कर्म हैं। जब तक हमें घनीभूत पीड़ा का अनुभव नहीं होता (इसे कवि ने दाहकता कहा है), तब तक हम गर्जन के लिए तत्पर नहीं होते।

(ग) गर्जन एक प्रकार की प्रतिक्रिया है, इससे सामने वाले को जताना होता है कि आपकी बात या कार्य मुझे पसंद नहीं। ऐसी स्थिति में सामने वाले से 'न' या 'नहीं' कहना ही उचित होता है, बाद में पछतावा करने से कुछ भी प्राप्त नहीं होता।

(घ) 'सुख की तरंग' संकेत है–ऐशो–आराम की ज़िंदगी। 'अंध वर्जन' से तात्पर्य है कि इसकी एक किरण या परछाईं भी अंदर घुस नहीं सकती अर्थात् जो व्यक्ति प्रतिशोध में भरकर गर्जन करता है, वह ऐशो-आराम की ज़िंदगी को भूल जाता है।

(ङ) 'सत्य राख में सने' का संकेत उस सत्य की ओर है जो शक्ति रूपी अग्नि के रूप में था किंतु अब झूठ रूपी राख से ढक जाने के कारण उसकी चिंगारी नहीं दिखाई देती।

(च) 'सत्य राख में सने' पंक्ति में रूपक अलंकार है। सत्य रूपी अग्नि शक्ति और झूठ रूपी राख में दबी होने का संकेत है।

पाठगत प्रश्न 22.1

नीचे दिए गए प्रश्नों को ध्यान से पढ़ते हुए उचित विकल्प पर सही (√) का चिह्न लगाइए:

1. 'हलचल' प्रतीक है–

(क) भावनाओं और क्रियाओं का   (ग) तेज़ बारिश का

(ख) भूकंप का   (घ) पानी में पत्थर फेंकने का

2. मनुष्य में दाहकता तब उभरती है–
   (क) जब बहुत गरमी पड़ती है
   (ख) जब आग लग जाती है
   (ग) जब वह क्रोधित हो जाता है
   (घ) जब वह दुखी होता है

3. 'जो सत्य राख में सने' काव्य पंक्तियों में 'राख' प्रतीक है–
   (क) लकड़ी के बाद शेष वस्तु का
   (ख) जलकर भस्म होने का
   (ग) झूठ का
   (घ) पराजय का

व्याख्या-2

अब आप कविता के दूसरे छंद को ओजपूर्ण स्वर में पढ़कर इसकी व्याख्या पर ध्यान दीजिए–

वैराग्य छोड़ बाँहों की विभा सँभालो,
चट्टानों की छाती से दूध निकालो।
है रुकी जहाँ भी धार, शिलाएँ तोड़ो,
पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो।
चढ़ तुंग शैल-शिखरों पर सोम पियो रे!
योगियों नहीं, विजयी के सदृश जियो रे!

कवि का विचार है कि अहिंसा का मार्ग हमें योग और वैराग्य की ओर ले जाता है। इसलिए वह देशवासियों से कहता है– तुम वैराग्य छोड़ो, अपनी भुजाओं की शक्ति को पहचानो अर्थात् अहिंसा का मार्ग छोड़कर, अपनी शक्ति के अनुरूप तलवार और बंदूकें उठाओ और कठिन परिस्थितियों में भी अपना मार्ग खोजो, दुर्गम सीमाओं को पार करो और अपना लक्ष्य प्राप्त करो। ऐ देशवासियो!, योगी नहीं, वरन् विजयी के समान जीना सीखो। 'विजयी के सदृश जियो रे!' पंक्ति में कवि देशवासियों को कर्मठता का प्रतीक बनाना चाहता है, जो जीवन संग्राम में अपने कर्तव्य बल पर सदा विजयी बनें। इस पंक्ति में उपमा अलंकार का सौंदर्य भी दिखाई देता है।

चित्र 22.1

योगी, योग–ध्यान में लीन सांसारिक मोह से दूर चुप बैठा होता है, जबकि वीर विजय की लालसा में कर्तव्य पथ पर चलता हुआ, विजय पताका फहरा कर ही दम लेता है।

कवि यहाँ कहना चाहता है कि योगियों से देश में विकास नहीं होगा, जबकि वीरों से देश विकास की ओर बढ़ेगा। दोनों की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

योगी	**विजयी (कर्मवीर)**
योग, ध्यान में लीन	दृढ़ निश्चयी
निर्मोही	निर्भीक
असांसारिक	वीर

अहिंसावादी	उत्साही
कोमल, दयालु	परिश्रमी

लेकिन कवि का तात्पर्य यह नहीं है कि हमेशा लड़ाई-झगड़े करते रहो। अहिंसा को त्यागने पर कवि का बल इसलिए है कि जब शत्रु हमारे ऊपर आक्रमण कर दे, तब भी अहिंसा के दर्शन पर अड़े रहना उचित नहीं होता। कभी-कभी देश की सुरक्षा, राष्ट्र की सुरक्षा के लिए हिंसा आवश्यक बन जाती है।

टिप्पणी

(क) 'बाँहों की विभा' से तात्पर्य है– भुजाओं की शक्ति। कवि यहाँ कहना चाहता है कि प्रत्येक देशवासी अपनी शक्तियों को पहचान कर उनका उपयोग करे।

(ख) 'चट्टानों की छाती से दूध निकालने' का अर्थ है–कठिन और दुर्गम परिस्थितियों में भी अपना लक्ष्य प्राप्त कर लेना।

(ग) 'पीयूष चंद्रमाओं को पकड़ निचोड़ो': ऐसा माना जाता है कि शरद पूर्णिमा के दिन चंद्रमा से अमृत वर्षा होती है। यहाँ कवि का तात्पर्य है कि चंद्रमा में जो अमृत तत्त्व है, उसे पाने की चेष्टा करो अर्थात् ऊँचे से ऊँचा लक्ष्य बनाकर उसका बहुमूल्य तत्त्व पाने की कोशिश करो।

व्याख्या - 3

अब आप तीसरे छंद को ध्यान से पढ़िए –

छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
मरता है जो, एक ही बार मरता है।
तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

कवि देशवासियों को संबोधित करते हुए कहता है कि व्यक्ति को अपनी शान, मान और आन नहीं छोड़नी चाहिए। भले ही देश की रक्षा करते हुए अपना सिर क्यों न कटाना पड़े। वह कहता है कि अन्याय और अनीति के आगे कभी मत झुको, भले ही आकाश क्यों न फट पड़े अर्थात् कितनी भी भारी मुसीबत का पहाड़ तुम पर क्यों न टूटे, मगर अन्याय की बात मत मानो। जीवन में मौत तो एक बार ही आती है–यमराज एक बार ही गर्दन पकड़ कर ले जाते हैं। अत:, जब एक बार ही मरना है तो शान से, निडर होकर मृत्यु की ओर स्वयं बढ़ो–अर्थात् वीरतापूर्वक मृत्यु का वरण करो।

टिप्पणी

1. 'व्योम फट जाए' 'आकाश फट पड़ना' मुहावरे का ही रूपांतरण है। इसका अर्थ है – बहुत सारी मुसीबतें एक साथ आ जाना। पंक्तियों का सौंदर्य यह है कि भले ही आपके सामने मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़े, किंतु अनीति के आगे आप कभी न झुकें।
2. मानव जीवन नश्वर है। जो पैदा हुआ है, उसकी मृत्यु निश्चित है। यह भी निश्चित है कि मनुष्य जीवन एक बार ही मिलता है और मृत्यु भी एक ही बार आती है। यमराज मृत्यु के देवता माने जाते हैं। इसलिए कवि का संकेत उनकी ओर है कि वे बार–बार गर्दन पकड़ने नहीं आएँगे।

याद कीजिए इतिहास की उस घटना को जब अहमदशाह अब्दाली ने भारत पर आक्रमण किया था। पानीपत के मैदान में मराठों के सेनापति इब्राहीम गार्दी से उसका मुकाबला हुआ। इब्राहीम गार्दी को वीरता पूर्वक लड़ते हुए बंदी बनाया गया। अहमदशाह अब्दाली ने उसे बहुत प्रलोभन दिए, किंतु उस देशप्रेमी सेनापति ने शरीर का अंग–अंग काट दिए जाने पर भी उस बादशाह के प्रलोभन को स्वीकार नहीं किया और अपने प्राणों की आहुति दे डाली। ऐसे ही वीरों की आवश्यकता इस समय भी कवि महसूस कर रहा है।

पाठगत प्रश्न 22.2

निम्नलिखित में जो सबसे उचित है उस पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

1. 'वैराग्य छोड़ बाहों की विभा सँभालो' पंक्ति में कवि किसे संबोधित कर रहा है:
   (क) देशवासियों को   (ग) कर्मवीरों को
   (ख) योगियों को   (घ) दुश्मनों को
2. 'है रुकी जहाँ भी धार' प्रतीक है:
   (क) पानी की धारा का
   (ख) मार्ग में आने वाली बाधाओं का
   (ग) नदी की धार के बीच में आई चट्टान का
   (घ) रास्ते में पड़ने वाले तालाब का
3. 'मरण के मुख पर चरण धरो रे' पंक्ति के लिए निम्नलिखित मुहावरों में जो सबसे उचित है, उस पर सही (√) का चिह्न लगाइए –
   (क) ओखली में सिर देना   (ग) जान हथेली पर रखना
   (ख) आ बैल मुझे मार   (घ) निर्बल के बल राम

व्याख्या - 4

अब आप चौथे छंद की ओर ध्यान दें–

स्वातंत्र्य जाति की लगन,
व्यक्ति की धुन है,
बाहरी वस्तु यह नहीं,
भीतरी गुण है।
नत हुए बिना जो
अशनि-घात सहती है,
स्वाधीन जगत में
वही जाति रहती है।
वीरत्व छोड़ पर का मत
चरण गहो रे!
जो पड़े आन,
खुद ही सब आग सहो रे!

चित्र 22.2

प्रत्येक प्राणी स्वतंत्र रहना चाहता है। इस चित्र की ओर ध्यान दें –

जब पक्षी भी स्वतंत्र रहना चाहता है तो भला हम मानव स्वतंत्र क्यों नहीं रहना चाहेंगे? इसी भाव को कवि ने इन पंक्तियों में व्यक्त करते हुए कहा है–सभी मानव स्वतंत्र रहना चाहते हैं। यह उनकी सीखी हुई आदत नहीं बल्कि मौलिक प्रवृत्ति है। संसार में वही जाति स्वतंत्र रह पाती है, जिसमें स्वाभिमान है, जो बिना झुके मुसीबतों की चोट सह लेती है।

ऐ देशवासियो! तुम वीरता छोड़कर दूसरों का पैर मत पकड़ो अर्थात् किसी की दासता मत स्वीकारो। कठिनाइयाँ सहते हुए अपनी आन बचाए रखो।

व्याख्या - 5

अब आप इस पाठ के पाँचवें छंद की ओर ध्यान दीजिए –

कवि कहता है कि वह देश जहाँ के लोगों में कठिनाइयों के आने पर उत्साह न जागे, जहाँ छातियाँ संगीनों के वारों से डर जाएँ, जहाँ के नागरिक खून बहाने के बदले आँसू बहाएँ, वे कभी स्वतंत्र नहीं रह सकते।

आगे कवि आह्वान करता कि शेर के अयाल (गर्दन के बाल) पकड़ने का साहस रखो, आँधियों पर सवारी करने का हौसला दिखाओ और किरिचों (घोंपने वाली तलवार या कटार) को अपनी खाल से मढ़ने की निर्भीकता का प्रदर्शन करो। अर्थ हुआ कि साहस, हौसला, चुस्ती-फुर्ती दिखाने के साथ-साथ अपने शरीर का बलिदान करने वाली निर्भीकता ही वीरत्व की पहचान है। जिस देश में ऐसे वीर होंगे वही देश स्वाधीन रह सकता है।

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।
पकड़ो अयाल, अन्धड़ पर उछल चढ़ो रे!
किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे!

आशय है कि ऐ देशवासियो, तुम शत्रु की गर्दन पकड़कर शत्रुसेना पर टूट पड़ो। इस क्रम में तुम भी क्षत-विक्षत हो सकते हो, मगर इसकी बिल्कुल भी परवाह न करो।

स्वाधीन रहने की कीमत मृत्यु भी हो तो उसका वरण करो।

टिप्पणी

1. कवि ने 'आँधियों' का प्रयोग शत्रु सेना के लिए किया है। एक विशाल सेना जो आँधी की भाँति आगे बढ़ी चली आ रही हो। एक वीर उनको देखकर युद्ध के लिए उमंग से भर उठता है।
2. यहाँ 'अन्धड़' शत्रु रूपी आँधी का प्रतीक है।

पाठगत प्रश्न 22.3

नीचे दिए प्रश्नों के सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगाइए –

1. स्वतंत्र रहना मनुष्य का ------ गुण है।
   (क) भीतरी   (ग) अर्जित
   (ख) बाहरी   (घ) क्षणिक
2. जगत में वह जाति स्वतंत्र कभी नहीं हो सकती जोः
   (क) अन्याय का विरोध करती है और दूसरों के आगे नहीं झुकती।
   (ख) झुककर अन्याय के कोड़े सहती जाती है और कुछ नहीं बोलती।
   (ग) बिना झुके कोड़े सहती जाती है पर अपनी आन को बचाए रखती है।
   (घ) अन्याय सहते हुए आन को बचाने की कोशिश करती है।

3. वीरों में उमंग तब उठती है जब वे–
   (क) आँधियों को आता देखते हैं।
   (ख) शत्रु-सेना को अपनी ओर आते देखते हैं।
   (ग) रक्त की बजाए आँसू बहाते हैं।
   (घ) दुश्मन को पराजित होता देखते हैं।

आइए, अब इस कविता के अंतिम छंद को पढ़िए–

व्याख्या - 6

स्वर में पावक यदि नहीं,
वृथा वन्दन है,
वीरता नहीं, तो सभी विनय
क्रन्दन है।
सिर पर जिसके असिघात,
रक्त–चन्दन है,
भ्रामरी उसी का करती
अभिनन्दन है।
दानवी रक्त से सभी पाप
धुलते हैं,
ऊँची मनुष्यता के पथ भी
खुलते हैं।

कवि वीरों का आह्वान करता हुआ कहता है कि वीर की वाणी में ओज रूपी अग्नि की शक्ति प्रतिध्वनित होनी चाहिए। यदि वाणी में ओज नहीं तो उसकी वंदना व्यर्थ है–अर्थात् उसे वीर कहना शोभा नहीं देता। विनम्रता व्यक्ति का गुण माना जाता है, किंतु कवि के अनुसार विनम्रता के साथ-साथ वीरता अनिवार्य है। केवल विनम्रता के साथ बोलते हुए व्यक्ति की वाणी रुदन करती-सी प्रतीत होती है।

वीर व्यक्ति वही सुंदर लगता है जिसके मस्तक पर शत्रु-प्रहार के चिह्न हों। यह चिह्न उसके मस्तक पर रक्त-रूपी चंदन के समान शोभायमान हो। ऐसे ही वीरों का अभिनंदन होता है। शक्ति की देवी दुर्गा भी ऐसे ही वीरों का अभिनंदन करती है।

अन्यायी शत्रु को मारने से धरती के पाप दूर होते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि अन्यायी को मारना पुण्य का कार्य है, क्योंकि अन्यायी व्यक्ति अपने जीवन काल में पाप और अपराध कर्म से पूरे वातावरण को दूषित कर देता है, ऐसे व्यक्ति की हत्या से जो खून बहेगा, उसी से उसके द्वारा किए गए पाप धुलेंगे। अतः ऐसे दुश्मनों का संहार करना पुण्य का कार्य है। इसी कार्य से समाज का विकास आदर्श रूप में हो सकेगा। समग्र रूप से कह सकते हैं कि इस कविता के द्वारा कवि वीरता के गुणों का वर्णन करने के साथ-साथ देशवासियों का आह्वान करता है कि वे उन गुणों को अपने में जगाकर तात्कालिक परिस्थितियों से निबटें।

टिप्पणी

1. 'स्वर में पावक होना' पंक्ति द्वारा कवि वाणी में ओजपूर्ण शक्ति की महत्ता सिद्ध करना चाहता है। वीर की वाणी में ओज का स्वर होना आवश्यक है।
2. 'विनय क्रंदन है' विनीत वाणी को कवि विलाप मानता है। वीरता हीन विनय विलापपूर्ण वाणी-सा लगता है।
3. अनाचारी, अन्यायी व्यक्ति को कवि ने दानव की संज्ञा दी है और उनके शरीर से बहा खून दानवी-रक्त है। लोक-प्रचलित मान्यता है कि गंगा-स्नान से सभी पाप धुलते हैं। कवि यर्थाथवादी दृष्टि रखता है, इसलिए उनकी मान्यता है कि समाज के वातावरण को प्रदूषण-रहित–पाप रहित बनाना है, तो इन दानवों का विनाश करना ही उचित है।

4. 'ऊँची मनुष्यता के पथ खुलना' से आशय है – समाज को एक आदर्श की ओर ले जाना, जहाँ पाप, अत्याचार, अन्याय न हो। यह तभी संभव है जब समाज के इन दानव रूपी शत्रुओं का संहार हो जाए।
5. 'रक्त-चंदन' में रूपक अलंकार है, क्योंकि माथे पर लगे रक्त को चंदन के रूप में माना गया है।

पाठगत प्रश्न 22.4

सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कवि ने अनुसार स्वर में पावक होना इसलिए आवश्यक है, क्योंकि इससे–
   (क) स्वर तेज हो जाता है।
   (ख) स्वर में ओज आ जाता है।
   (ग) स्वर जलने लगता है।
   (घ) स्वर में कर्कशता आ जाती है।
2. मस्तक पर रक्त रूपी चंदन उन्हीं को शोभित होता है, जो–
   (क) वीरता पूर्वक युद्ध करते हैं।
   (ख) शक्ति के उपासक हैं।
   (ग) भैरव के पूजक हैं।
   (घ) युद्ध में पराजित होते हैं।

22.4 भाव तथा शिल्प सौंदर्य

'परशुराम का उपदेश' शीर्षक कविता उन्होंने राजनीतिक परिस्थितियों में परिवर्तन के समय उत्पन्न हुए मानसिक दबाव में लिखी।

दिनकर अपने विशिष्ट काव्य-प्रयोगों से भाषा को लाक्षणिक बनाने में सिद्धहस्त हैं। वे ऐसे प्रयोगों की झड़ी लगा देते हैं, जैसे – सत्य का राख में सना होना, बाँहों की विभा सँभालना, चट्टानों की छाती से दूध निकालना, चंद्रमाओं को पकड़ कर निचोड़ना आदि।

किंतु ये प्रयोग मात्र चमत्कार पैदा करने के उद्देश्य से नहीं होते, बल्कि इससे भाषा और भावों की सामर्थ्य बढ़ जाती है।

वीरता और देशप्रेम दिनकर के काव्य का मूल स्वर है। प्रस्तुत रचना में दोनों का सुंदर समन्वय हुआ है। प्रत्येक पंक्ति प्रेरणा और उमंग से परिपूर्ण है, जैसे–

आँधियाँ नहीं जिसमें उमंग भरती हैं,
छातियाँ जहाँ संगीनों से डरती हैं।
शोणित के बदले जहाँ अश्रु बहता है,
वह देश कभी स्वाधीन नहीं रहता है।

दिनकर की कविताओं में भाषा का सुंदर प्रयोग मिलता है। भावानुरूप भाषा उनके संकेतों पर चलती दिखाई देती है। भाषा के तत्सम रूप के प्रयोग में वे अग्रणी दिखाई देते हैं; जैसे-ऋत, दाहक, गर्जन, वर्जन, विभा, शिला, पीयूष, व्योम आदि।

कविता की लयात्मकता और गत्यात्मकता सराहनीय है, जिससे कविता के वाचन में अद्भुत आनंद आता है।

कविता की निम्नलिखित पंक्तियों पर ध्यान दीजिए, इनमें कवि ने लाक्षणिक प्रयोग किए हैं–

(क) जिनमें दाहकता नहीं न तो गर्जन है:
(ख) वैराग्य छोड़ बाहों की विभा संभालो:
(ग) किरिचों पर अपने तन का चाम मढ़ो रे !

22.5 आइए, स्वयं पढ़ें

दिनकर की कविता को पढ़ने के बाद आपने जाना कि राष्ट्र की रक्षा, देश की रक्षा हमारा परम कर्त्तव्य है। हमारी पहचान हमारे देश से है। जब तक हम वीरव्रत का पालन नहीं करेंगे, दुश्मन हमारे ऊपर अत्याचार करते रहेंगे। इतिहास की पुस्तकों में आपने पढ़ा भी होगा कि किस तरह विदेशी आक्रांता समय-समय पर हमारे देश पर हमले करते रहे, अत्याचार करते रहे, देश की संपत्ति लूटते रहे। अगर हम कायर बने रहते, संन्यासियों की तरह हाथ पर हाथ धरे सब कुछ नियति पर छोड़ देते तो शायद आज भी हमारा देश गुलाम होता। आइए, दिनकर जैसे भाव-बोध वाली बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' की एक कविता पढ़ते हैं :

क्या गणना है कितनी लंबी
हम सबकी इतिहास – लड़ी?
हमें गर्व है कि है बहुत ही
गहरे अपनी नींव पड़ी।
हमने बहुत बार सिरजी हैं
कई क्रांतियाँ बड़ी-बड़ी
इतिहासों ने किया सदा ही
अतिशय मान हमारा है।

है आसन्न-भूत अति उज्ज्वल
है अतीत गौरवशाली
औ छिटकी है वर्तमान पर
बलि के शोणित की लाली
नव उषा-सी विजय हमारी
विहँस रही है मतवाली
हम मानव को मुक्त करेंगे
यही विधान हमारा है।

इस काव्यांश को पढ़ने के बाद आप तो समझ ही गए होंगे कि कवि किसके बारे में कह रहा है? कवि का यहाँ इतिहास-लड़ी से क्या आशय है? गहरी नींव की बात कह कर वह किस बात की ओर इशारा करना चाहता है? क्रांतियाँ सिरजने का तात्पर्य क्या है? अतीत के गौरवशाली होने और भविष्य के उज्ज्वल होने की उम्मीद उसे क्यों दिखाई दे रही है? बलि के शोणित की लाली और विजय को उषा-सी कहने के पीछे कवि का क्या तात्पर्य है? मानव को मुक्त करने के विधान से उसका क्या अभिप्राय है?

पाठगत प्रश्न 22.5

उम्मीद है, आपने उपर्युक्त प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ लिए होंगे, पूरे काव्यांश को एक बार फिर पढ़ जाइए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'आसन्न-भूत' से कवि का तात्पर्य है :

   (क) बीत चुका समय   (ग) कभी न आने वाला समय

   (ख) आने वाला समय   (घ) डरावना समय

2. 'नव उषा–सी विजय हमारी' का अर्थ है:

   (क) सुबह का समय   (ग) आजादी मिलना

   (ख) शाम ढलने का वक्त   (घ) लड़ाई का रुक जाना

3. कवि को किस बात का गर्व है?

22.6 आपने क्या सीखा

1. कवि ने 'परशुराम का उपदेश' कविता द्वारा देशवासियों में ओज और वीरता का भाव भरा है।

2. इस कविता का मूलभाव है – अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध आवाज़ उठाना मानव का धर्म है। अत्याचार और अन्याय सहना कायरों का काम है। मानव को प्रकृति से अनेक नैसर्गिक शक्तियाँ प्राप्त हुई हैं, जिनकी पहचान हो जाने पर उसकी भुजाओं में अत्यधिक बल आ जाता है कि एक–एक वीर सैकड़ों को परास्त कर पाता है। अब समय आ गया है कि प्रत्येक भारतवासी अपनी शक्ति को पहचाने और एक जुट होकर शत्रु पर टूट पड़े। इसलिए, कवि देशवासियों से कहता है – 'बाहों की विभा सँभालो।'

3. कविता में स्थान-स्थान पर अलंकारों, लाक्षणिक प्रयोगों और प्रतीकों के प्रयोग से कवि ने काव्य-सौंदर्य को बखूबी उभारा है।

22.7 योग्यता विस्तार

(क) कवि परिचय

रामधारी सिंह 'दिनकर का' जन्म 1908 ई0 में सिमरिया, ज़िला मुंगेर में हुआ। आपने बी. ए. तक पटना विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और सीतामढ़ी में सब-रजिस्ट्रार पद पर कार्य प्रारंभ किया। आप राज्य सभा के सदस्य (1952–1964) भागलपुर विश्व विद्यालय के कुलपति (1964–1965) और भारत सरकार में हिंदी सलाहकार (1965–1971) के पद पर भी कार्यरत रहे। आपकी लगभग 50 कृतियाँ प्रकाशित हैं।

हिंदी काव्य-जगत पर छाए छायावादी प्रभाव को काटने वाली शक्तियों में दिनकर की प्रवाहमयी ओजस्विनी कविता का स्थान विशिष्ट महत्त्व रखता है। वे छायावाद के कल्पनाजन्य निर्विकार मानव के खोखलेपन से परिचित हो चुके थे और उसे अपनी रचनाओं से खंडित करना चाहते थे। आपके प्रमुख प्रबंध-काव्यों में कुरुक्षेत्र (1946), रश्मिरथी और उर्वशी (1961 ई0) शामिल हैं।

आपकी गद्य रचनाओं में 'संस्कृति के चार अध्याय' प्रमुख है। इसके अतिरिक्त आपने मिट्टी की ओर, काव्य की भूमिका; पंत, प्रसाद और मैथिलीशरण गुप्त, शुद्ध कविता की खोज आदि अनेक समीक्षात्मक निबंध भी लिखे हैं। आपका देहावसान सन् 1974 में हुआ।

(ख) आपका मित्र जो खेल में हार गया है और बहुत निराश है, उसे पठित कविता से कुछ पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए पत्र लिखिए।

22.8 पाठांत प्रश्न

1. कवि देशवासियों को योगी के स्थान पर विजयी बनने का संदेश क्यों दे रहा है? योगी और विजयी की पाँच-पाँच विशेषताएँ बताइए।
2. सूर्य की किरणें हमें किस प्रकार शक्ति देती हैं?
3. कविता में अनेक स्थानों पर लाक्षणिक प्रयोग हुआ है, ऐसी चार पंक्तियों का उल्लेख कीजिए।
4. दानवी-रक्त से पाप धुलने की कल्पना कवि ने क्यों की है?
5. निम्नलिखित अंश की व्याख्या कीजिए–

    छोड़ो मत अपनी आन, सीस कट जाये,
    मत झुको अनय पर, भले व्योम फट जाये।
    दो बार नहीं यमराज कण्ठ धरता है,
    मरता है जो, एक ही बार मरता है।

तुम स्वयं मरण के मुख पर चरण धरो रे!
जीना हो तो मरने से नहीं डरो रे!

6. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

लड़कर अभाव के पतझड़ से
नव-सर्जन-रण में विजयी बन,
सुख सुविधा रस के सम-वितरण
का पा नवयौवन-मय जीवन,
हर मनुज-कुसुम संतोषीमय
मुस्कान मधुर बरसाएगा।
ऐसा वसंत कब आएगा?

(क) इस कविता का मूल आशय क्या है?

(ख) 'सुख सुविधा रस के सम-वितरण' से कवि का क्या तात्पर्य है?

(ग) 'अभाव' से लड़ने और सर्जन-रण में विजयी होने से कवि का क्या आशय है?

(घ) 'मनुज-कुसुम संतोषीमय' का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

22.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. हलचल भरे जीवन
2. राख में दबे, सूखे, पुराने
3. स्वतंत्र रहने की छटपटाहट ही व्यक्ति को स्वाभिमानी बनाती है। दासता को ठुकराती है।
4. वीर के माथे पर तलवार के घाव का तिलक हो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

22.1	1. (क)	2. (ग)	3. (ग)
22.2	1. (ग)	2. (ख)	3. (ग)
22.3	1. (क)	2. (ख)	3. (ख)
22.4	1. (ख)	2. (क)	
22.5	1. (ख)	2. (ग)	3. गौरवशाली अतीत होने पर

301hi23

23

गजानन माधव मुक्तिबोध

अक्सर आपने ध्यान दिया होगा कि लोग घर से बाहर किसी काम के लिए निकलते हैं और चौराहे पर पहुँचते ही कोई-न-कोई आता-जाता मिल जाता है और घंटों बातों का सिलसिला छिड़ जाता है। हर प्रकार की खबरें, समस्याएँ आदि इस चौराहे पर मिलती हैं। आइए इस पाठ में एक ऐसी ही कविता पढ़ते हैं। अब तक आप नई कविता धारा की कुछ कविताएँ अवश्य पढ़ चुके हैं। इस पाठ में हम नई कविता के सशक्त कवि गजानन माधव मुक्तिबोध की एक कविता – 'मुझे कदम-कदम पर' पढ़ेंगे। यह कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक काव्य-संग्रह में संकलित है। 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में रचनाकार ने कविता की रचना-प्रक्रिया को बताया है और विचारों के द्वंद्वों को चौराहा मानकर जगह-जगह बिखरे विषयों में से उपयुक्त विषय के चुनाव को एक चुनौती बताया है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- असमंजस की स्थिति से उबरकर सही निर्णय लेने के महत्त्व को बता सकेंगे;
- 'चौराहा' शब्द का प्रतीक रूप में विवेचन कर सकेंगे;
- साहित्य सृजन के लिए उपलब्ध विषयों की विविधता और उनके उपयुक्त चुनाव में रचनाकार की कठिनाई बता सकेंगे;
- कविता के भावपक्ष पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- कविता के भाषा-सौंदर्य तथा शिल्प-सौंदर्य पर टिप्पणी कर सकेंगें;

क्रियाकलाप

नीचे दिए चित्र को देखकर आपके मन में क्या-क्या विचार आते हैं? यहाँ लिखिए–

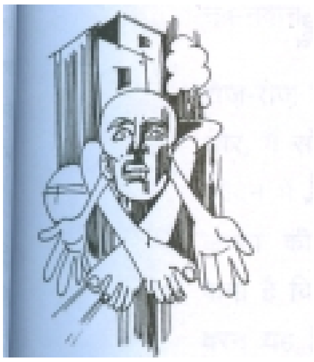

चित्र 23.1

____

____

____

____

____

____

23.1 मूलपाठ

आइए एक बार इस कविता को पढ़ लें:

'मुझे कदम-कदम पर'

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए !
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं
व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ,
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने सपने ...
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ;
जाने क्या मिल जाए!

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,

शब्दार्थ

तजुर्बे – अनुभव
अकुलाहट – व्याकुलता
गहरे में उतरना – तह तक जाना, गंभीर प्रयास करना
आत्मा अधीरा – व्याकुल मन
सुस्मित – मुस्कान
विमल – स्वच्छ
सदानीरा – सदैव जल से भरी हुई नदी

टिप्पणी

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िंदगी !
बेवकूफ़ बनने की खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत...स्वायत्त हुआ जाता है।

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दु:ख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार-विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
ज़माने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!

कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।
प्यार की बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

शब्दार्थ

- महाकाव्य पीड़ा – ऐसी वेदना जिस पर एक महाकाव्य लिखा जा सके।
- हँस-हँसकर – हँसते-हँसते
- अश्रुपूर्ण – आँखों में आँसू भरे होना
- मत्त होना – पागल होना
- स्वायत्त – जिस पर अपना अधिकार हो
- अहंकार – गर्व, घमंड
- आख्यान – कथा
- सूरे व आयतें – पवित्र कुरान की पंक्तियाँ, यहाँ आशय है आज के समय के व्यवहार को नियम के रूप में पेश करने की प्रवृत्ति
- लाग-डाँट करना – प्रेम पूर्ण उलाहना देना
- प्रतीक – प्रतिरूप, समता, तुलना

टिप्पणी

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय

रोज़-रोज़ मिलते हैं...
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!

शब्दार्थ

आधिक्य – अधिकता

23.2 बोध प्रश्न

1. अनेक राहें देखकर कवि क्या करना चाहता है?

   ....

2. कविताएँ मुस्कराकर प्यार भरी बातें किससे क्यों करना चाहती हैं?

   ....

3. 'प्रत्येक छाती में एक अधीर आत्मा का निवास है।' ऐसा कवि क्यों मानता है?

   ....

23.3 आइए समझें

'मुझे कदम-कदम पर' कविता एक बार पुनः पढ़ लीजिए।

संदर्भ

'मुझे कदम-कदम पर' शीर्षक कविता 'चाँद का मुँह टेढ़ा है' नामक कविता-संग्रह से ली गई है। इसके रचनाकार श्री गजानन माधव मुक्तिबोध हैं।

प्रसंग

'मुझे कदम-कदम पर' कविता का भाव समझने के लिए पहले आप कविता की अंतिम सात पंक्तियाँ फिर से ध्यानपूर्वक पढ़ जाइए:

और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।

इन पंक्तियों में कवि कहना चाहता है कि जीवन की वास्तविकता इतनी विस्तृत है कि लेखक या कवि को पग-पग पर चौराहे, सौ-सौ राहें और नवीन रूप-दृश्य वाले सौ-सौ विषय रोज़-रोज़ मिलते हैं। ऐसी स्थिति में रचनाकार की कठिनाई यह नहीं है कि रचना करने के लिए विषयों की कोई कमी है, बल्कि विषय तो बहुत अधिक हैं। समस्या है सही और उपयुक्त विषय का चुनाव करने की। आज के समय में उपयुक्त विषय का चुनाव करना एक चुनौती भरा कार्य है।

अब एक बार इस पूरी कविता को पढ़िए।

आपने कविता पढ़ी, न! क्या आप बता सकते हैं कि इस कविता में 'चौराहे' शब्द का क्या अर्थ है? जी हाँ, आप जानते हैं कि चौराहा वह स्थान है जहाँ से कई रास्ते निकलते हैं। ये चौराहे विचारों के क्षेत्र में भी होते हैं। जब आप किसी एक बात पर विचार करना प्रारंभ करते हैं, तो चिंतन के फलस्वरूप आपको अनेकानेक विचार आने लगते हैं। यह एक प्रकार से विकल्पों की स्थिति होती है। उन विकल्पों में से उपयुक्त का चुनाव करना ही चुनौती है। इस प्रकार की स्थितियाँ अक्सर हमारे समक्ष आकर खड़ी हो जाती हैं। उदाहरण के लिए कभी आप सोचते होंगे, मैं हिंदी का यही पाठ पढ़ लेता तो दूसरे ही क्षण आपको लगता होगा कि नहीं, मैं इस समय गणित के कुछ बचे हुए सवाल हल कर लेता तो अच्छा होता! यह समस्या भी चुनाव की समस्या है। आपके पास जितने अधिक रास्ते या विकल्प होते हैं, उतनी ही उलझन बढ़ती जाती हैं।

चित्र 23.2

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए!
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटती
व मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ,
बहुत अच्छे लगते हैं
उनके तजुर्बे और अपने-सपने ....
सब सच्चे लगते हैं;
अजीब-सी अकुलाहट दिल में उभरती है,
मैं कुछ गहरे में उतरना चाहता हूँ;
जाने क्या मिल जाए!

व्याख्या

आइए, कविता के पहले आधे अंश को पुनः पढ़कर समझने का प्रयास करते हैं।

इन पंक्तियों में कवि ने जिन चौराहों के कदम-कदम पर मिलने की बात कही है, वे कवि को चयन की चुनौती के रूप में अक्सर सामने खड़े नज़र आते हैं और वह अपनी चिंतन प्रक्रिया प्रारंभ कर देता है। विचारों का क्रम ज़रा-सा आगे बढ़ता है, तो उसे

टिप्पणी

और सौ राहें निकलती नज़र आती हैं। कवि उन सभी राहों पर चलना चाहता है अर्थात् उन सभी से गुज़रना चाहता है, उन सभी के अनुभव प्राप्त करना चाहता है। कवि ने चौराहों को सकारात्मक दृष्टि से देखते हुए उन्हें विकल्प भी माना है। ये विकल्प नित्य-प्रतिदिन व्यक्ति को अपनी ओर आकर्षित करते हैं। यदि व्यक्ति एक विकल्प पर चिंतन आरंभ करता है, तो अन्य अनगिनत विकल्प उसके समक्ष प्रकट होने लगते हैं। कवि को प्रत्येक व्यक्ति के अनुभव बहुत अच्छे लगते हैं और साथ ही उसे अपनी कल्पनाएँ, अपने सपने भी बहुत अच्छे लगते हैं। वह उन सभी अनुभवों को सँजोकर रखना चाहता है। अधिक से अधिक अनुभव इकट्ठे करने के चक्कर में वह समाज के हर एक व्यक्ति से मिलता है। उसका मन सभी से मिलकर बात करने के लिए छटपटाता है। वह हर बात की तह में उतरकर बात की सच्चाई जान लेना चाहता है। यह सोचकर कि न जाने किस व्यक्ति के अनुभवों में विचित्रता, विशिष्टता हो, वह उन सभी के पास जा-जाकर उनके दुख-सुख बाँट लेना चाहता है।

आगे कवि कहता है कि उसे इस बात का भी भ्रम होता है कि सड़क पर पड़ा हुआ साधारण-सा दिखने वाला पत्थर भी कहीं हीरा तो नहीं! अर्थात् सड़क पर आता-जाता साधारण-सा दिखने वाला व्यक्ति कहीं महत्त्वपूर्ण और विशेष तो नहीं। यहाँ कवि को लगता है कि समाज का हर व्यक्ति चमकता हुआ हीरा है। ठीक उसी प्रकार जीवन-जगत में छोटा-सा महसूस होने वाला महत्त्वहीन अनुभव कभी-कभी समय आने पर विशिष्ट हो जाता है और किसी महत्त्वपूर्ण घटना को जन्म दे देता है। कवि को लगता है कि प्रत्येक प्राणी के वक्षस्थल में एक अधीर आत्मा विद्यमान है, जो कुछ-न-कुछ कर गुज़रने को लालायित है। कवि को हर मुस्कराते चेहरे से प्रेम की निर्मल धारा फूटती नज़र आती है। उसे यह भी भ्रम होता है कि हर व्यक्ति के अंतर्मन में बहुत-से पीड़ादायक और साथ ही खुशी के अनुभव विद्यमान हैं, यदि वह उन्हें लिखने बैठे तो रामायण या महाभारत जैसे महाकाव्य की रचना हो सकती है।

यह सभी कुछ सोच-विचार कर रचनाकार जल्दी-जल्दी उन सभी के अनुभवों को बटोर लेना चाहता है। सभी से सहानुभूतिपूर्वक बातचीत करता है, उनके दुख-दर्द बाँटता है, उनमें रुचि लेता है, अपना समय लगाता है, अपनी शक्ति लगाता है और इस तरह स्वयं को दिए-दिए फिरता है। परंतु कवि कहता है कि ज़िंदगी के खेल ही निराले हैं। समाज का हर व्यक्ति मुझ जैसे व्यक्ति को जो दूसरों के दुखों को अपना मानकर जीते हैं; बेवकूफ़ करार देता है। कवि को लगता है सभी लोग उसे बेवकूफ़ समझकर ठगते हैं, पर उसे अपने ठगे जाने में कोई परेशानी नहीं होती और वह उसमें अत्यधिक खुशी का अनुभव करता है और अपूर्व आनंद की प्राप्ति कर पागल-सा हो जाता है। वह सोचता है कि मेरे अंदर एक प्रसन्नचित्त मूर्ख बैठा है, जो दूसरों से ठगे जाने पर भी खुश होता है। यह अनुभव उसे और भी अजीब और अटपटा लगता है कि समाज अपने आप में सिमटता जा रहा है। उसे रचनाकार की समस्या से कुछ भी लेना देना नहीं है।

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है,
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य पीड़ा है,
पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
अजीब है ज़िंदगी!
बेवकूफ़ बनने की खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...
हृदय में मेरे ही,
प्रसन्नचित्त एक मूर्ख बैठा है
हँस-हँसकर अश्रुपूर्ण, मत्त हुआ जाता है,
कि जगत...स्वायत्त हुआ जाता है।

टिप्पणी

टिप्पणी

1. कविता प्रतीकात्मक भाषा में है।
2. रचनाकार के सामने लेखन के लिए विषय बहुत हैं, वह प्रत्येक का अनुभव लेना चाहता है और विषय-चयन एक जटिल समस्या बन जाता है।
3. 'देख-देख बड़ा मज़ा आता है कि मैं ठगा जाता हूँ' उपर्युक्त कथन की तुलना कबीर के निम्नलिखित दोहे से की जा सकती है–

   कबीरा आप ठगाइए और न ठगिए कोय।
   आप ठगे सुख होत है और ठगे दुख होय।।
4. अपनी बात पर बल देने के लिए कहीं-कहीं शब्दों को बार-बार प्रयोग किया गया है:

   इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ।
   अजीब है ज़िंदगी!
   बेवकूफ बनने की ख़ातिर ही सब तरफ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
   और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
   कि मैं ठगा जाता हूँ।
5. चौराहे, पत्थर, चमकता हीरा आदि प्रतीकों का सहारा लेकर मुक्तिबोध ने कविता को नया संस्कार दिया है। यहाँ 'चौराहा' विकल्पों का, 'पत्थर' आम मनुष्य और 'चमकता हीरा' विशिष्ट अनुभव, घटना अथवा व्यक्तित्व का प्रतीक है।

अंश - 2

व्याख्या

समाज के सभी व्यक्यिों के अनुभवों को अपने साथ कहानियों के रूप में संजोकर जब कवि आगे बढ़ता है, तो उसे अपने चिंतन का क्रम आगे फैलता नज़र आता है अर्थात् विचारों का क्रम आगे-आगे विस्तार पाता है, जिसमें इतनी सामग्री एकत्रित हो जाती है कि एक उपन्यास की रचना की जा सके।

कहानियाँ लेकर और
मुझको कुछ देकर ये चौराहे फैलते
जहाँ ज़रा खड़े होकर
बातें कुछ करता हूँ...
...उपन्यास मिल जाते।

दु:ख की कथाएँ, तरह-तरह की शिकायतें
अहंकार-विश्लेषण, चारित्रिक आख्यान,
ज़माने के जानदार सूरे व आयतें
सुनने को मिलती हैं!

कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।

इसी क्रम में रचनाकार को व्यक्तियों के दुख-दर्द की कहानियाँ सुनने को मिलती हैं। यहीं पर समाज के लोग तरह-तरह की शिकायतें करते हैं। ये शिकायतें कभी सरकारी काम-काज की व्यवस्था पर हो सकती हैं या फिर अनुशासन चलाने वाले लोभी या गिरते हुए सामाजिक मूल्यों पर भी हो सकती हैं। विभिन्न व्यक्तियों का अहंकार भरा काला चिट्ठा भी इसी चौराहे पर सुनने को मिलता है। यह सब ऐसे पेश किया जाता है जैसे पवित्र कुरान के कथन हों अर्थात् समाज इन पर बल देता है। इन्हें बड़ी रुचि के साथ सुनता-सुनाता है। आगे कवि कहता है कि इन सभी जटिलताओं से जकड़े अनुभवों और व्यक्तियों के चेहरों की स्मृतियाँ लेकर जब कवि घर लौटता है तो विभिन्न प्रकार की अभिव्यक्तियाँ घर के द्वार पर आकर कहती हैं कि हमारी संख्या इतनी अधिक है जो सौ वर्ष तक प्रयोग करने पर भी समाप्त नहीं होंगी और तुम्हें हमारे लिए सौ वर्ष तक और जीवित रहना पड़ेगा।

कवि आगे कहता है कि घर पर आकर भी विचारों का यह क्रम आगे बढ़ता चला जाता है, यहाँ पर भी तरह-तरह के अनुभव और चिंतन की धाराएँ आकर खुले दिल से

उसका स्वागत करती हैं। जिस प्रकार वृक्ष से अनेक शाखाएँ निकल कर चारों ओर फैलती हैं, उसी प्रकार कवि के आत्म-चिंतन का क्रम भी आगे बढ़ता चला जाता है, फैलता जाता है। प्रतिदिन, प्रति पल नए-नए विषय अचानक कवि के सम्मुख आ जाते हैं।

अंत में, कवि कहता है कि आज रचनाकार के पास विषयों का अभाव नहीं है। विषयों की संख्या बहुत अधिक है, परंतु समस्या केवल सही और उपयुक्त चुनाव की है। सही विषय का चुनाव करने का काम रचनाकार के लिए बहुत कठिन कार्य है।

टिप्पणी

1. कविता आम बोल-चाल की सरल भाषा में लिखी गई है, उदाहरण के लिए पहली पंक्ति ही देखें–

   'मुझे कदम-कदम पर
   चौराहे मिलते हैं बाँहें फैलाए।'

2. हिंदी में नई कविता की विशेषता रही है परिपाटीबद्ध कविता के विरुद्ध विद्रोह। नई कविता परंपरागत छंदों का बंधन नहीं स्वीकारती, किंतु लय और प्रवाह इसमें भी होता है। नई कविता ने अपने ही छंद गढ़े हैं।
3. *'घबराए प्रतीक', 'मुस्काते रूप चित्र', 'कविताएँ मुस्करा कर लाग-डाँट करती हैं/प्यार की बात करती हैं/मरने और जीने की सीढ़ियाँ श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं'* में मानवीकरण अलंकार है।
4. इसमें एक ओर तो राहें, गुजरना, तजुर्बे, ज़िंदगी, खातिर आदि उर्दू भाषा के आगत शब्द हैं तो दूसरी ओर सुस्मित, विमल सदानीरा, वाणी, प्रसन्नचित, अश्रुपूर्ण जैसे संस्कृतनिष्ठ तत्सम शब्दों का प्रयोग कवि ने कुशलता के साथ किया है।
5. मुक्तिबोध मध्यमवर्गीय परिवार के थे। वे अक्सर मित्रों और जान-पहचान वालों के साथ किसी चाय के ढाबे पर या होटल में बैठकर दुख-दर्द बाँटा करते थे। घंटों बातें हुआ करती थीं। दैनिक जीवन की इन घटनाओं से मुक्तिबोध को कविता-लेखन की प्रेरणा मिलती थी।
6. इस कविता में कवि ने अपनी रचना-प्रक्रिया को स्पष्ट किया है कि किस प्रकार वह विषयों को आस-पास बिखरा हुआ पाता है और फिर कविता, कहानी, महाकाव्य, उपन्यास आदि के उपयुक्त विषयों को अलग-अलग करता है। उन्हें अभिव्यक्ति देने के लिए बिंबों, प्रतीकों, उपमाओं आदि की पहचान करता है। मुख्य बात है विषय के चुनाव की। कवि इसे एक चुनौती भरा कार्य मानता है।
7. पूरी कविता एक ही केंद्र के चारों ओर रची गई है कि विषय का चुनाव एक चुनौती है। यदि समय पर सही चुनाव होगा तो जीवन सार्थक हो जाएगा। अंग्रेज़ी में भी एक प्रसिद्ध कहावत है–Choice is your's, future is your's.
8. *'मुझे भ्रम होता है प्रत्येक पत्थर में चमकता हीरा है।'* अर्थात् महत्त्वहीन अनुभव विशिष्ट घटना को जन्म देता है। कभी-कभी छोटी-से-छोटी घटना में विलक्षण अनुभव प्राप्त हो जाता है। ऊपर से साधारण दिखने वाली वस्तु भीतर से असाधारण और अद्भुत हो सकती है। पत्थर और हीरे की तुलना इसी संदर्भ में की गई है। आप जानते होंगे कि वाल्मीकि कवि होने से पहले बहुत बड़े डाकू थे। कुछ साधुओं के संपर्क में आने पर उन्होंने यह पेशा त्याग दिया। एक दिन उन्होंने

टिप्पणी

प्यार की बात करती हैं।
मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।

घबराए प्रतीक और मुसकाते रूप-चित्र
लेकर मैं घर पर जब लौटता...
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं
कि सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

घर पर भी, पग-पग पर चौराहे मिलते हैं,
बाँहें फैलाए रोज़ मिलती हैं सौ राहें,
शाखा-प्रशाखाएँ निकलती रहती हैं
नव-नवीन रूप-दृश्य वाले सौ–सौ विषय
रोज़-रोज़ मिलते हैं.........
और, मैं सोच रहा कि
जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है!

टिप्पणी

एक शिकारी को उस मादा क्रौंच का वध करते देखा जो रति क्रीड़ा में मग्न थी। उन्हें यह देख बहुत दुख हुआ और अनायास ही उनके मुख से कुछ पंक्तियाँ प्रस्फुटित हुईं। यही उनके जीवन का प्रथम छंद था और यही कविता की शुरूआत थी। इस छोटी-सी घटना ने उन्हें कवि बना दिया और उन्होंने रामायण जैसे महाकाव्य की रचना कर दी।

पाठगत प्रश्न 23.1

1. 'कविताएँ मुस्कराकर लाग डाँट करती हैं', पंक्ति का अर्थ है कविताएँ–
   (क) छेड़खानी करती हैं। (ग) मुस्कराकर खिल्ली उड़ाती हैं।
   (ख) पीछे-पीछे लग जाती हैं। (घ) न लिखे जाने का उलाहना देती हैं।
2. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में 'चौराहा' शब्द प्रतीक है–
   (क) चार रास्तों का। (ग) बाज़ार के बीचों-बीच भटकने का।
   (ख) विकल्पोंऽकी अधिकता का (घ) कुछ समझ में न आने का।
3. सही वाक्य पर (√) और गलत पर (X) का चिह्न लगाइए–
   (क) कवि सभी के अनुभवों को सुनना चाहता है। ( )
   (ख) प्रत्येक मनुष्य में कोई न कोई विलक्षणता संभव है। ( )
   (ग) कवि को लगता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य के समान अथाह पीड़ा हो, संभव ही नहीं है। ( )
   (घ) दूसरों को ठगने में जितना आनंद आता है, उतना ही आनंद स्वयं को जान बूझ कर ठगवाने में भी आता है। ( )
   (ङ) हर व्यक्ति स्वायत्त है। ( )

23.4 शिल्प सौंदर्य

आपने मुक्तिबोध की कविता पढ़ी। क्या आप बता सकते हैं कि इस कविता में कवि ने 'मैं' और 'मुझे' का प्रयोग क्यों किया है?

अपने विचार लिखिए–

____

____

जी हाँ ! शायद आप ठीक समझे 'मैं' और 'मुझे' का प्रयोग कवि ने अपने लिए किया है। पर 'मैं' का अर्थ इस कवि जैसी विचारधारा रखने वाले अन्य लोगों से भी है, जो कवि द्वारा प्रयुक्त 'मैं' शब्द में निहित है। यह कविता स्वयं को केंद्र में रखकर रची गई है। अतः यह आत्मपरक संरचना की कविता है। इस कविता में 'मैं' शब्द के साथ कवि अपने जैसे व्यक्तियों को लेकर अपनी बात कहना चाह रहा है।

गजानन माधव मुक्तिबोध नयी कविता के श्रेष्ठतम कवि माने जाते हैं। इनकी कविताएँ जीवन के गहन भावों को अभिव्यक्त करती हैं। जीवन का यथार्थ बताती हैं। 'मुझे

कदम-कदम पर' कविता में कवि ने विकल्पों और अनुभवों को महत्त्वपूर्ण बताते हुए कहा है कि मैं और मेरे जैसे अन्य रचनाकारों के लिए विषय का अभाव नहीं है, बल्कि मुख्य परेशानी अच्छे और सटीक विषयों के चयन की है। यह कविता मन के भावों को आधार मानकर रची गई है।

➔ कविता में बोलचाल की सरल भाषा का प्रयोग किया गया है। कलात्मक होते हुए भी यह कवि के भावों को पूरी सामर्थ्य के साथ अभिव्यक्त करती है–

मरने और जीने की जलती हुई सीढ़ियाँ
श्रद्धाएँ चढ़ाती हैं।
उपमाएँ, द्वार पर आते ही कहती हैं कि
सौ बरस और तुम्हें
जीना ही चाहिए।

➔ एक ही शब्द का बार-बार प्रयोग करने से काव्य-सौंदर्य में निखार आता है और पाठक के दिल पर गहरा प्रभाव पड़ता है, कवि ने इस कविता में इस प्रकार के सफल प्रयोग किए हैं, जैसे–

नव-जीवन रूप दृश्य वाले सौ-सौ विषय
रोज़-रोज़ मिलते हैं...
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ
और यह देख-देख बड़ा मज़ा आता है
कि मैं ठगा जाता हूँ...

जब एक शब्द का प्रयोग एक से अधिक बार किया जाए, तो वहाँ **पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार** होता हैं।

➔ इस कविता को पढ़कर आपने अवश्य ही अनुभव किया होगा कि कवि का भाषा पर अच्छा अधिकार है। कवि ने अभिव्यक्ति की सामर्थ्य के अनुकूल ही भाषा के तत्सम और आम भाषा के शब्दों का भरपूर परंतु संतुलित प्रयोग किया है, जैसे–

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है,
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
महाकाव्य पीड़ा है,

इन पंक्तियों में तत्सम शब्दों का प्रयोग किया है तो नीचे की पंक्तियों में आम बोलचाल के शब्दों का–

मुझे कदम-कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाँहें फैलाए!

➔ जब कविता में किसी शब्द या कथन का इस तरह प्रयोग किया जाए कि वह किसी दूसरी वस्तु या विचार की ओर संकेत करे तो उसको **प्रतीक** कहा जाता है। इस कविता में चौराहे विकल्पों का प्रतीक है।

➔ काव्य में बिंब-विधान का भी बहुत महत्त्व होता है। पिछले पाठ में भी आपने

इसके बारे में पढ़ा है। विषय सामग्री के वर्णन के अनुरूप स्वरूप का बोध ही बिंब कहलाता है। अनुभवों को सजीव रूप में प्रस्तुत करने में **बिंब** उपयोगी सिद्ध होते हैं। कवि का दृष्टिकोण सौंदर्यवादी न होकर जीवनवादी अर्थात् उपयोगितावादी और व्यवहारवादी है। अतः कविता में बिंब के प्रयोग से अनोखा सौंदर्य उत्पन्न हो जाता है। इस कविता में दृश्य बिंब का प्रयोग किया गया है। ऐसा लगता है मानो आँखों के सामने एक चित्र-सा खड़ा कर दिया गया है।

मुझे कदम कदम पर
चौराहे मिलते हैं
बाहें फैलाए।
एक पैर रखता हूँ
कि सौ राहें फूटतीं,
मैं उन सब पर से गुज़रना चाहता हूँ

पाठगत प्रश्न 23.2

1. कविताएँ मुस्कराकर लाग-डाँट करती हैं।
   प्यार की बात करती हैं।
   कविता की उपर्युक्त पंक्तियों में किस अलंकार का प्रयोग किया गया है?
2. कवि ने कुछ अपने मुहावरे गढ़े हैं। कविता से ऐसे मुहावरे चुनकर लिखिए

23.5 आपने क्या सीखा

1. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता में बताया गया है कि चौराहे मिलना बहुत अच्छा है। ये रास्ते में संकट बनकर नहीं, बल्कि विकल्प बनकर हमारे सामने आते हैं यानी हमारे समक्ष जितने रास्ते होंगे, उतने ही विकल्प होंगे और हम उनमें से जो भी विकल्प चुनेंगे वह अपने आप में अनेक अन्य विकल्प लिए हुए होगा। अतः जीवन के लिए किसी भी अनुभव को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए। सभी का अपना महत्त्व होता है।
2. आज के रचनाकार की समस्या विषयों की कमी नहीं है। विषय तो सड़क पर, दफ्तरों में या घर पर भी उपलब्ध हो सकते हैं। बल्कि विषय तो अनेकानेक हैं पर उनका चुनाव करना अपने आप में एक गंभीर और चुनौती भरा कार्य है।
3. इस कविता में कवि का दृष्टिकोण व्यवहारवादी है।
4. कविता में कई स्थानों पर पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार का प्रयोग है। अपनी बात अस्पष्ट रूप से कहने के लिए कवि ने प्रतीकों का प्रयोग किया है।

23.6 योग्यता विस्तार

कवि परिचय

गजानन माधव मुक्तिबोध सुप्रसिद्ध और विशिष्ट कवि हैं। नयी कविता के क्षेत्र में

मुक्तिबोध का विशेष और ऐतिहासिक योगदान है।

मुक्तिबोध का जन्म ग्वालियर ज़िले में सन् 1917 में हुआ था। बी.ए. तक शिक्षा प्राप्त कर वे अध्यापन के कार्य में जुट गए थे। साथ ही पत्रिका संपादन का कार्य भी करते थे। मुक्तिबोध मध्यमवर्गीय परिवार के थे। मूलतः मराठी भाषी होते हुए भी प्रयोगवाद और नई कविता के कवियों में आपने शीर्ष स्थान बना लिया। आपकी कविताएँ पहली बार 'तार सप्तक' में प्रकाशित हुईं।

आपने अनेक लंबी कविताएँ लिखीं, जो जीवन के अनेक विकट संघर्षों से जूझते रहने और मनुष्य की जीवन शक्ति की पहचान करने पर आधारित हैं। आपने एक ओर परिपाटीबद्ध भारतीयता का विरोध किया तो दूसरी ओर अपनी अस्मिता, अपनी निजता की स्थापना की। आप सही अर्थों में बुद्धिजीवी और विचारक कवि थे। आपकी मृत्यु 1964 में दिल्ली में हुई। 'चाँद का मुँह टेढ़ा है', 'भूरी-भूरी खाक धूल', 'एक साहित्यिक की डायरी', 'कामायनी : एक पुनर्विचार' आदि इनकी प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। मृत्यु के पश्चात् आपकी सभी रचनाएँ 'मुक्तिबोध रचनावली' के नाम से छह खंडों में प्रकाशित हैं।

मुक्तिबोध की भाषा आम बोल-चाल की हिंदी है जो अरबी-फारसी मूल के शब्दों को समाहित किए हुए है। सन् साठ के बाद की सामाजिक-राजनीतिक विसंगतियों को उन्होंने फंतासी अर्थात् स्वप्न-चित्र के माध्यम से कविताओं में अभिव्यक्त किया है। व्यक्ति के पतन और सामाजिक दायित्वों से मुख मोड़ लेने की धिक्कारमयी कथा उनकी लगभग सभी कविताओं में देखने को मिलती है। कविता के विषय की वैचारिक जटिलता को अभिव्यक्त करने के लिए उन्होंने प्रतीकों तथा बिंबों का प्रयोग जान बूझकर किया है। इस कारण उनकी कविता बोध के स्तर पर थोड़ी दुरूह भी हो गई है।

23.7 पाठांत प्रश्न

1. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता का केंद्रीय भाव लिखिए।
2. कवि ने चौराहे को अच्छा क्यों माना है?
3. कवि को सड़क पर पड़ा हर पत्थर हीरा क्यों नज़र आता है? क्या आप कवि के विचारों से सहमत हैं?
4. कवि की दृष्टि में आज के लेखक की परेशानी क्या है?
5. निम्नलिखित काव्यांशों की व्याख्या कीजिए–

   (क) मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
   चमकता हीरा है,
   हर-एक छाती में आत्मा अधीरा है
   प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है,
   मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में
   महाकाव्य पीड़ा है,
   पलभर मैं सबमें से गुज़रना चाहता हूँ,
   इस तरह खुद को ही दिए-दिए फिरता हूँ,
   अजीब है ज़िंदगी!

टिप्पणी

बेवक़ूफ़ बनने के खातिर ही
सब तरफ़ अपने को लिए-लिए फिरता हूँ,

(ख) जीवन में आज के
लेखक की कठिनाई यह नहीं कि
कमी है विषयों की
वरन् यह कि आधिक्य उनका ही
उसको सताता है
और, वह ठीक चुनाव कर नहीं पाता है।

6. 'मुझे कदम-कदम पर' कविता की भाषा पर उदाहरण सहित टिप्पणी लिखिए।

7. निम्नलिखित काव्य पंक्तियों को पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

जब जब सिर उठाया
अपनी चौखट से टकराया
मस्तक पर चोट लगी,
मन से उठी कचोट,
अपनी ही भूल पर मैं
बार-बार पछताया।

(क) कविता में कवि ने चौखट शब्द का प्रयोग क्यों किया है?
(ख) मस्तक पर चोट लगने से कवि का क्या आशय है?
(ग) कवि अपनी किस भूल को रेखांकित करना चाहता है?
(घ) कचोट शब्द का शब्दिक अर्थ बताइए।

23.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. सभी राहों से होकर गुजरना
2. कवि से, मुखरित होने के लिए
3. जिससे बात कीजिए वही अनेक दुख भरी दास्तान सुनाने लगता है।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

23.1 1. (घ) 2. (ख)
3. (क) √ (ख) √ (ग) X (घ) √ (ङ) X

23.2 1. मानवीकरण
2. ● कदम-कदम पर चौराहे मिलना
● सौ राहें फूटना
● महाकाव्य पीड़ा होना
● जानदार सूरे और आयतें सुनना
● जलती हुई सीढ़ियाँ चढ़ाना

टिप्पणी

24

301hi24

राजेंद्र उपाध्याय

ऐसे जीवन की कल्पना कीजिए जिसमें आपको वही करना और सोचना पड़े जो दूसरे कहें, उसी तरह उठना-बैठना पड़े जिस तरह दूसरे कहें तो आपको कैसा लगेगा? कठपुतली का खेल तो आपने देखा ही होगा। दूसरों के वश में रहना यानीऽपराधीनता कठपुतली की नियति है। उसे दूसरा ही संचालित करता है। कठपुतली में प्राण यानी चेतना नहीं होती इसलिए पराधीनता के कारण न तो उसे पीड़ा होती है, न ही वह मुक्त होना चाहती है। लेकिन मनुष्य सदैव स्वतंत्र रहना चाहता है, यह उसका स्वभाव है। यह बात आपने पाठ 'परशुराम के उपदेश' कविता में भी पढ़ी है। यदि मनुष्य अपने इस स्वभाव को भूलकर अपनी विवेक-बुद्धि को त्यागकर वही करे जो दूसरे कहें तो मानवता का विकास कैसे होगा, उसका भविष्य क्या होगा आपने कभी सोचा है?

आइए, एक ऐसी कविता पढ़ते हैं, जिसमें कठपुतली जैसा जीवन व्यतीत करने वाले लोगों पर व्यंग्य करके उनकी आलोचना की गई है।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- पराधीन चेतना का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- मनुष्य पर पराधीनता के दुष्प्रभाव के बारे में बता सकेंगे;
- मनुष्य, विशेष रूप से युवा पीढ़ी द्वारा विवेक के उपयोग का महत्त्व समझा सकेंगे;
- स्वतंत्र विकास के लिए विचारों की द ढ़ता और आत्मनिर्भरता के योगदान का उल्लेख कर सकेंगे;
- 'कठपुतली' कविता के महत्त्वपूर्ण स्थलों की व्याख्या कर सकेंगे;
- कविता की भाषागत विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

मान लीजिए कठपुतली में भी सोचने-विचारने की क्षमता है। इस कल्पना के आधार पर

टिप्पणी

कठपुतली के पराधीन होने के दुख का वर्णन पाँच पंक्तियों में कीजिए।

....

....

....

....

....

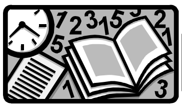

24.1 मूलपाठ

आइए, एक बार इस कविता को अच्छी तरह से पढ़ लें:

कठपुतली

हम कठपुतली हैं

पर हम नहीं जानते कि
हम कठपुतली हैं

हर आदमी एक कठपुतली है
हर औरत एक कठपुतली है।

हम जानते हैं कि
हम कठपुतली हैं
फिर भी हम कठपुतली बने रहते हैं
क्योंकि कठपुतली बने रहने में सुविधा है
किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर हम
खुश रहते हैं
क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती

हम कठपुतली हैं
और हमारे पास आए हर आदमी को हम कठपुतली बनाना चाहते हैं
वो भी इसी में अपनी भलाई मानता है
हर आदमी
एक दूसरे के हाथों में
अपनी डोर देकर आज़ाद है

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो–
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

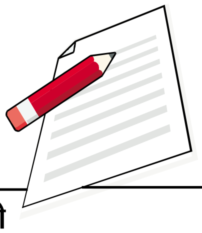

जो कहते हैं– कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे
वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं।
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।
नामालूम तरीके से
कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं बरस-दर-बरस
और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।
एक कठपुतली
हज़ारों कठपुतली तैयार करती है।
कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं। **–राजेंद्र उपाध्याय**

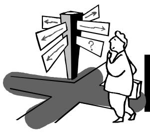

24.2 बोध-प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. हम जानते हुए भी कठपुतली बने रहते हैं, क्योंकि–
   (क) इसमें सुविधा मानते हैं (ग) स्वतंत्रता हमें अच्छी नहीं लगती
   (ख) यह हमारा स्वभाव है (घ) कठपुतली की तरह हम जड़ हो चुके हैं
2. 'उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है' – किसके बारे में कहा गया है?
   (क) कठपुतलियों के बारे में
   (ख) आज़ादी का नारा लगाने वालों के बारे में
   (ग) कठपुतली बनाने वालों के बारे में
   (घ) कठपुतली का खेल दिखाने वालों के बारे में
3. किन लोगों को अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती?
   (क) स्वतंत्र विचारों के लोगों को (ग) आज़ादी का नारा लगाने वालों को
   (ख) सुविधाजीवी लोगों को (घ) हर आदमी और हर औरत को
4. 'अरे! हम तो कठपुतली थे' – यह किस समय पता चलता है?
   (क) युवावस्था में (ग) मरते समय
   (ख) व द्धावस्था में (घ) वर्षों बाद

टिप्पणी

24.3 आइए समझें

अंश - 1

कठपुतली

हम कठपुतली हैं

पर हम नहीं जानते कि
हम कठपुतली हैं

हर आदमी एक कठपुतली है
हर औरत एक कठपुतली है।

हम जानते हैं कि
हम कठपुतली हैं
फिर भी हम कठपुतली बने रहते हैं
क्योंकि कठपुतली बने रहने में
सुविधा है
किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर
देकर हम
खुश रहते हैं
क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं
बनानी पड़ती

समस्त प्राणियों में मनुष्य ही ऐसा है जो अपने जीवन की समीक्षा करता है अर्थात् अपने गुण-दोषों का विवेचन करता है। इस कविता के आरंभ में कवि 'हम' शब्द का प्रयोग करता है। वह इसके माध्यम से मनुष्य के कठपुतली बन जाने यानी उसके पराधीन हो जाने की प्रव त्ति की ओर संकेत करता है। कवि इसमें स्वयं को भी शामिल करता है। वह कहना चाहता है कि पराधीन जीवन जीने वाला कोई भी हो सकता है – मैं भी, आप भी। स्पष्ट है कि वह इस संदर्भ में आत्मालोचन करता है। जब कोई किसी दोष को दूसरों के साथ-साथ अपने भीतर भी देखता है और उसका विरोध करता है तो वह आत्मालोचना होती है। आत्मालोचना व्यंग्य का आदर्श रूप है।

चित्र 24.1

अपने अस्तित्व और महत्त्व को भूलकर दूसरों के नियंत्रण में हो जाने की प्रव त्ति को हम अपने परिवार, समाज और देश से लेकर अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक देख सकते हैं। व्यक्ति ही कठपुतली नहीं बनता एक देश भी दूसरे देश की कठपुतली बन सकता है। जिस तरह स्वाधीनता केवल आर्थिक तथा राजनीतिक ही नहीं होती, मानसिक भी होती है उसी तरह पराधीनता भी मानसिक हो सकती है। पराधीन चेतना व्यक्ति, समाज और देश के विकास को अवरुद्ध करती है। एक अनुभव तो हम सब लोगों के बहुत निकट का ही है। आप देखते हैं कि बहुत से परिवारों में बड़े अपने से छोटों को सदैव अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। वे छोटों को उनकी क्षमता और इच्छा के अनुसार जीवन की सही राह नहीं चुनने देते, बल्कि अपनी इच्छाओं को उन पर थोपते हैं। परिणामस्वरूप किशोर तथा युवा पीढ़ी अनेक प्रकार के मानसिक दबावों में जीती है। इसके अनेक दुष्परिणाम होते हैं जिनके विषय में आप जानते ही हैं। क्या आप बता सकते हैं कि किशोर वर्ग के मानसिक दबाव क्या-क्या हैं? कोई पाँच का यहाँ उल्लेख कीजिए:

....

....

....

इतना तो आप समझ ही गए होंगे कि इस कविता में कठपुतली पराधीन व्यक्तित्व का प्रतीक है। कठपुतली का अपना कोई अस्तित्व नहीं होता। वह खेल दिखाने वाले की इच्छा के अनुसार कार्य करती है। यह खेल सभी को अच्छा लगता है। लेकिन यदि मनुष्य ही कठपुतली बन जाए तो? क्या यह अच्छा होगा? दुर्भाग्य से इधर यह प्रव त्ति हम अपने आस-पास अक्सर देखते हैं। बहुत से व्यक्ति आजीवन दूसरों के प्रभाव में कार्य करते हैं। यह स्थिति इतनी बढ़ रही है कि कवि को पुनः कहना पड़ता है–*'हर आदमी एक कठपुतली है, हर औरत एक कठपुतली है।'* हमारे समाज में लोगों को कठपुतली के रूप में रहते-रहते ऐसी आदत पड़ जाती है कि वे यह भूल जाते हैं कि वे पराधीन हैं। यहाँ एक अर्थ और भी है, वह यह कि अपनी मानसिक परतंत्रता का बोध ही समाप्त हो जाता है। यदि जीवन में कभी-कभार यह अहसास होता भी है कि हम कठपुतली हैं तो वह तुरंत ही समाप्त हो जाता है और हम कठपुतली ही बने रहने में अपना भला समझते हैं; क्यों? क्योंकि सुविधाएँ, उनसे प्राप्त खुशियाँ और जीवन जीने के बने-बनाए रास्ते तभी उपलब्ध हो सकते हैं, जब हम दूसरों का कहा करते रहें, अपनी डोर दूसरों के हाथों में दे दें। यह हम सबके जीवन का अनुभव है कि हममें से बहुत से लोगों का जीवन दूसरों का कहा करने में ही बीत जाता है, चाहे वह गलत हो, चाहे सही। ऐसा कभी भय के कारण किया जाता है, कभी भौतिक सुखों के लालच में। कभी नौकरी बचाने के लिए किया जाता है, कभी केवल इसलिए कि हमें बड़ों के आदेश का पालन करना है। कुल मिलाकर ऐसा करने के पीछे हमारा विवेक नहीं कोई भय, लोभ या जीवन की रूढ़ियाँ ही होती हैं।

अब तक आपके सामने यह स्पष्ट हो गया होगा कि अस्तित्व और उसकी स्वतंत्रता एक ऐसा मूल्य है जिसकी प्राप्ति के लिए बहुत-सी सुविधाएँ, खुशियाँ और बने-बनाए रास्तों की उपलब्धता को छोड़ना पड़ता है। अपनी राह खुद बनाने के लिए संघर्ष तो करना ही पड़ेगा। राह या डगर का अर्थ है जीवन जीने का अपना तरीका। कवि यह कहना चाहता है कि हम अपने विवेक के आधार पर यह चुनाव करें कि हमारे जीवन की सही दिशा क्या होगी? याद कीजिए महान् लोगों के जीवन-संघर्ष को। यदि वे भी वही करते जो दूसरों ने किया यानी बनी-बनाई राहों पर चलते तो क्या हम उन्हें महान व्यक्तित्व कहते? झाँसी की रानी, भगत सिंह, चंद्रशेखर आज़ाद, गांधी, नेहरु आदि को क्या किसी सुविधा की कमी होती, यदि वे अंग्रेज़ों की कठपुतलियाँ बन जाते? कल्पना चावला, सानिया मिर्ज़ा जैसी लड़कियाँ यदि बनी रूढ़ियों पर चलतीं तो क्या उस स्थान पर पहुँच सकती थीं जहाँ वे पहुँचीं? स्पष्ट है कि बने-बनाए रास्तों पर चलने वाले लोग सामान्य होते हैं और इन रास्तों को छोड़कर नई राह बनाने वाले महान। कहा भी गया है –*'छाँड़ि लीक तीनों चलें सायर, सिंह, सपूत।'*

पाठगत प्रश्न 24.1

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-एक पंक्ति में लिखिए–

1. 'कठपुतली' किसका प्रतीक है?
2. 'हम कठपुतली हैं' कविता की पंक्ति में 'हम' से कवि का क्या तात्पर्य है?

टिप्पणी

3. 'दूसरे के हाथों में अपनी डोर देने' का क्या अर्थ है?
4. अपनी डगर खुद बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता है?

अंश-2

कवि आगे कहता है कि कठपुतली बने हुए व्यक्ति के संपर्क में जो भी आता है उसे वह कठपुतली बनाना चाहता है। यानी न वह खुद स्वाधीन है और न ही किसी दूसरे को स्वाधीन देखना चाहता है। इस तरह लोगों को कठपुतली बनाना एक संक्रामक (फैलनेवाले) रोग के समान है। कठपुतली बनना मनुष्य का एक दोष है, यह वह जानता है। इसे समाप्त करने के दो तरीके हो सकते हैं। या तो वह स्वयं से लड़े और लालच को छोड़कर बड़े उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए इस बुराई को छोड़ दे। या जो इस बुराई से ग्रस्त नहीं हैं उन्हें भी अपने समान कठपुतली बना दे। अपने दोषों को छिपाने का दूसरा तरीका एक और सरल उपाय बन चुका है – 'बुरा मैं ही नहीं हूँ, सभी बुरे हैं' यह सोचकर व्यक्ति अपने को ठीक ठहराने का प्रयास करता है। दूसरी ओर जिस आदमी को कठपुतली बनाया जाता है वह भी इसी में अपनी भलाई मानता है, क्योंकि उसे लगता है कि कठपुतली बनकर जितनी आसानी से सुविधाएँ और बने-बनाए रास्ते प्राप्त हो जाते हैं, उतनी आसानी से स्वतंत्र व्यक्तित्व बनाए रखकर प्राप्त नहीं हो सकते। आप यह तो समझ ही गए होंगे कि यहाँ पर भलाई का क्या अर्थ है। जी हाँ, अपने आपको दूसरों के हाथों में सौंपने के बाद जो सुविधाएँ मिलती हैं, वे ही भलाई कही गई हैं। इस तरह 'भलाई' शब्द में व्यंग्य निहित है। इसके बाद की तीन पंक्तियों में एक विरोधाभासी अभिव्यक्ति की गई है। विरोधाभास वहाँ होता है जहाँ दो बातों में विरोध दिखाई पड़े, लेकिन वास्तव में न हो। कवि कहता है कि हर आदमी एक-दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर आज़ाद है। अगर कोई अपनी डोर दूसरे के हाथों में दे दे तो वह आज़ाद कैसे हो सकता है? वस्तुतः यहाँ आज़ादी से तात्पर्य है—श्रम और संघर्ष न करने की निश्चिंतता। स्वतंत्रता के बदले जो चीज़ें मिल रही हैं वे भी इस आज़ादी के अर्थ में शामिल हैं। स्पष्ट है कि यह आज़ादी वास्तविक नहीं, बनावटी है: पशुओं जैसी है। इस तरह के आज़ाद रहने वाले लोग वास्तविक आज़ादी के महत्त्व को नहीं समझते। वे आज़ादी का दिखावा करने के लिए उसके नारे लगाते हैं, क्योंकि दूसरे उनसे आज़ादी के नारे लगाने के लिए कहते हैं। क्या वे सचमुच आज़ादी का अर्थ समझते हैं? स्वयं आज़ाद हैं? आपने ठीक कहा—नहीं।

हम कठपुतली हैं
और अपने पास आए हर आदमी को
हम कठपुतली बनाना चाहते हैं
वो भी इसी में अपनी भलाई मानता है
हर आदमी
एक दूसरे के हाथों में
अपनी डोर देकर आज़ाद है

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो—
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित स्थिति को ध्यानपूर्वक पढ़िए:

मान लीजिए आप बहुत अच्छा गाना गाते हैं और जीवन में एक स्थापित संगीतकार बनना चाहते हैं परंतु आपके पिताजी आपको सलाह देते हैं कि यदि तुम आगे चलकर अच्छे संगीतकार बनना चाहते हो, ज़रूर बनो। पर मैं आगे तुम्हारे लिए कोई खर्चा नहीं उठा पाऊँगा क्योंकि आजकल कपड़े की दुकान पर धंधा बहुत अच्छा नहीं चल रहा। अभी

तुम्हारे छोटे भाई पढ़ रहे हैं और बड़ी बहन की शादी करनी हैं। पर हाँ! तुम मेरे साथ व्यवसाय में हाथ लगा सको तो अच्छा है। उक्त स्थिति में आप होते तब क्या करते?

(क) पिताजी की बात मान लेते और उनके साथ व्यवसाय में हाथ बँटाते।

(ख) तनावों से जूझते। पिताजी की बातों का सम्मान करते हुए, आधा समय अपने संगीत का अभ्यास कर अपना सपना पूरा करते।

(ग) भावनाओं से जूझते हुए स्वयं कुछ बनने का निर्णय लेते। घर छोड़कर अलग कहीं रहते...अपने हिसाब से समय का प्रबंधन करते, कहीं नौकरी करते और अपने सपनों को पूरा करते।

(घ) स्वयं को पिताजी की स्थिति में रखकर पूरी स्थिति का विश्लेषण करेंगे और सोचेंगे कि उन्होंने जो कहा ठीक कहा, मुझे उन्होंने बड़ा कर दिया, पढ़ा-लिखा दिया, अब मुझे ऐसा निर्णय लेना होगा जिससे उनके मन को ठेस न पहुँचे।

अब आप स्वयं को आँक सकते हैं यदि आपने (क) पर निशान लगाया है तब बड़ों की भावनाओं का सम्मान करना, आपका स्वभाव है। यदि आप (ख) पर निशान लगाते हैं, तब आपमें तनावों से जूझने, संतुलित निर्णय लेने, बड़ों का सम्मान करने, स जनात्मक चिंतन करने, समस्याओं का समाधान करने जैसे कई गुण हैं।

अब यदि आप (ग) विकल्प का चयन करते हैं, तब निश्चित रूप से आपमें तनावों से जूझने की क्षमता, स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता, समय-प्रबंधन, सकारात्मक सोच, चुनौतियों का सामना करने का साहस और स्वजागरूकता का गुण है। और यदि आप अंतिम विकल्प (घ) का चयन करते हैं, तब आपमें तद्नुभूति यानी कि अन्य व्यक्ति के द ष्टिकोण से स्थितियों को जाँचने-परखने की क्षमता की आधिक्य है। जीवन में स्थितियों से समझौता करना, सामंजस्य स्थापित करना जैसे कौशल आपके व्यक्तित्व के अंग हैं। इसके लिए दी गई परिस्थितियों में प्रश्न यह है कि आप अपने सपने कैसे पूरे कर पाएँगे? आपको अपने उत्तरों के अनुसार ही व्यक्तित्व का विकास करना होगा। जीवन में ऐसी अनेक परिस्थतियाँ आपके आगे आकर खड़ी होंगी तब जब-जब जैसे-जैसे आप निर्णय लेंगे, वैसे ही परिणाम आपके सामने आएँगे।

आइए कविता को आगे बढ़ाते हैं– कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो आज़ादी का ढोंग करते हुए ज़ोर-शोर से यह घोषणा करते हैं कि वे कठपुतली बनाए जाने के इस खेल में शामिल नहीं होंगे। कठपुतली नहीं बनेंगे यानी अपनी स्वतंत्रता दूसरे को नहीं सौंपेंगे। वे लोग यह प्रदर्शन इसलिए करते हैं कि कठपुतली बनाकर सुविधाएँ देने वाले लोगों का ध्यान उनकी तरफ़ जाए। दूसरों को पता भी नहीं चलता और वे लोग कठपुतली बना दिए जाते हैं। स्पष्ट है कि दिखावा करने वाले लोग दूसरों को अपनी आज़ादी सबसे पहले सौंपते हैं। इस तरह कठपुतली के रूप में मनुष्य अपना पूरा जीवन गुज़ार देता है। मरते समय वह यह सोचता है कि *'अरे! हम तो कठपुतली थे।'* जानते हैं यह वाक्य क्यों कहा गया है? कहा जाता है जीवन के अंतिम पड़ाव में मनुष्य अपने जीवन की समीक्षा करता है। यानी वह देखता है कि उसने अपना जीवन किस

टिप्पणी

जो कहते हैं– कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे
वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं।
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।
नामालूम तरीके से
कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं
बरस-दर-बरस
और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

तरह बिताया। उसकी कोई सार्थकता रही कि नहीं। वह दूसरे प्राणियों की तरह बनी-बनाई लीकों पर ही चलता रहा, कि नए रास्ते भी खोजे। जीवन के ऐसे क्षण में कठपुतली बनकर जीने वालों को अनुभव होता है कि उनका जीवन निरर्थक ही रहा, उन्होंने मानवता के विकास में कोई योगदान नहीं दिया। कवि यहाँ पर संदेश देता है कि हमें अपने जीवन को संतोषजनक और सार्थक बनाने के लिए सही-गलत का फ़ैसला बुद्धि के अनुसार करना चाहिए, इस आधार पर जीवन का मार्ग स्वयं तैयार करना चाहिए। तभी हमारा जीवन सार्थक होगा। अंत में हम संतुष्ट भी होंगे कि हम कठपुतली बनकर नहीं जिए।

पाठगत प्रश्न 24.2

निम्नलिखित वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही वाक्यों के आगे सही (√) और गलत वाक्यों के आगे गलत (X) का निशान लगाइए–

(क) परिश्रम तथा संघर्ष से बचने वाले लोग ही कठपुतली बनते हैं। ( )

(ख) कठपुतली बने लोग आज़ादी का वास्तविक महत्त्व नहीं समझते। ( )

(ग) जीवन की सार्थकता मनुष्य के कठपुतली बने रहने में ही संतोष प्रदान करती है। ( )

(घ) आज़ादी का नारा लगाने वाले सभी लोग स्वाधीन होते हैं। ( )

(ङ) नए मार्ग बनाकर हम मानवता के विकास में योगदान देते हैं। ( )

(च) विवेक सही-गलत का फैसला करने में रुकावट डालता है। ( )

अंश - 3

कविता के दूसरे अंश में आए 'आज़ादी'शब्द को इन अंतिम पंक्तियों में अधिक स्पष्ट करते हुए कवि कहता हैं कि कठपुतली बन चुके मनुष्य इस तरह से आज़ाद हैं कि वे अपने विवेक के अनुसार कार्य नहीं करते, बल्कि कोई और ही व्यक्ति उन्हें वश में किए हुए है। ये मनुष्य कठपुतली के समान सदैव दूसरों के अनुसार कार्य करते हैं। आप समझ ही गए होंगे कि इसे आज़ादी नहीं, पराधीनता कहते हैं। यहाँ कवि उन लोगों की आलोचना करता है, जो स्वतंत्र होने का आडंबर करते हैं, पर हैं वस्तुतः परवश। मानसिक रूप से पराधीन होना बहुत तेज़ी से फैलने वाली सामाजिक बुराई है, क्योंकि एक कठपुतली मनुष्य बहुत से कठपुतली मनुष्य तैयार करता है। क्यों? यह हम समझ ही चुके हैं।

अंत में कवि वास्तविक कठपुतली और कठपुतली बने मनुष्य के बीच अंतर करता है कि मनुष्य रूपी कठपुतली, वास्तविक कठपुतली से भी ज़्यादा पराधीन है, क्योंकि खेल दिखाने के लिए कठपुतली के केवल हाथ-पैर ही बाँधे जाते हैं, जबकि मनुष्य कठपुतली के आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे होते हैं। कहने का आशय यह है कि पराधीन व्यक्ति वही देखता, सुनता और कहता है जो दूसरा चाहता है। आँख, कान आदि हमारी

टिप्पणी

ज्ञानेंद्रियाँ हैं। प्रकृति ने ये मनुष्य को इसलिए दी हैं कि वह इनके द्वारा स्वयं ज्ञान प्राप्त करे और उसका उपयोग अपनी बुद्धि अपने विवेक से करे। लेकिन हम देखते हैं कि कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो न तो अपनी ज्ञानेंद्रियों का उचित और उपयुक्त उपयोग करते हैं और न ही अपनी बुद्धि का। वे दूसरों की कही गई प्रत्येक बात को, चाहे वह गलत ही क्यों न हो आँखें मूँदकर मान लेते हैं। इस तरह वे प्रकृति द्वारा दी गई संपत्ति का सही उपयोग नहीं करते और निरर्थक जीवन बिताते हैं। दरअसल कवि हमारे समक्ष एक प्रश्न प्रस्तुत कर देता है कि क्या ऐसे लोगों और कठपुतलियों के जीवन में कोई अंतर है?

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।
एक कठपुतली
हज़ारों कठपुतली तैयार करती है।
कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बंधे हैं।

पाठगत प्रश्न 24.3

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'ऐसे हम आज़ाद हैं' पंक्ति में कवि–
   (क) अपनी प्रशंसा कर रहा है
   (ख) आलोचना कर रहा है
   (ग) आज़ादी क्या है– यह बता रहा है
   (घ) अपने आज़ाद होने की बात कह रहा है।
2. प्राकृतिक संपदाओं का सही उपयोग हम कैसे कर सकते हैं?
   (क) अपनी डोर बड़ों के हाथ में देकर
   (ख) अपने विवेक का उपयोग करके
   (ग) दूसरों की बातों का पालन करके
   (घ) अपनी डोर छोटों के हाथ में देकर
3. 'आँख, नाक, कान, मुँह सब बँधे' होने का तात्पर्य है –
   (क) किसी के द्वारा कैद कर लिया जाना
   (ख) ज्ञानेंद्रियों द्वारा कार्य बंद कर देना
   (ग) पराधीन होकर सोचना-विचारना-महसूस करना
   (घ) कठपुतली के समान हो जाना

अंश - 4

24.4 भाषा तथा शिल्प सौंदर्य

अब तक आप अनेक कविताएँ पढ़ चुके हैं। लेकिन भाषा की द ष्टि से इस कविता में आपको क्या विशिष्टता या अलग बात नज़र आई? जी हाँ, इससे पहले आपने जितनी

भी कविताएँ पढ़ीं उनमें कुछ शब्द ऐसे आए होंगे जिनका अर्थ देखने के लिए कोश का सहारा लेना पड़ा होगा। क्या इस कविता में ऐसा एक भी शब्द ढूँढ़ा जा सकता है जो कठिन हो? नहीं। इसकी भाषा पूरी तरह से सामान्य बोलचाल की भाषा है। इसलिए शब्दार्थ के स्तर पर इसे समझने में कठिनाई नहीं होती। लेकिन यदि आप इसकी गहराई में उतरना चाहते हैं तो एक काम तो करना ही होगा और वह है इस कविता में आए प्रतीकों का अर्थ समझना। कविता में प्रतीकों के रूप में आए शब्द अपना अर्थ छोड़कर दूसरा अर्थ देते हैं। इस दूसरे अर्थ को जानकर ही कविता की गंभीरता को समझा जा सकता है। जैसे 'कठपुतली' शब्द को ही लें। क्या इस कविता में केवल खेल दिखाने के लिए उपयोग की जाने वाली कठपुतली की ही बात की जा रही है? जी नहीं, कवि तो मनुष्य के रूप में कठपुतली जैसा जीवन बिताने वाले लोगों की ओर संकेत कर रहा है। इसी प्रकार डगर, डोर, आज़ाद, भलाई शब्द भी यहाँ प्रतीक के रूप में आए हैं। इनके अर्थ हम पहले ही जान चुके हैं।

'हम सब कठपुतली हैं' या *'हमारे आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं'* जैसे स्थलों पर कवि लाक्षणिक भाषा का भी प्रयोग करता है। लाक्षणिकता वहाँ होती है, जहाँ बात को सीधे-सादे ढंग से न कहकर उसका संकेत मात्र किया जाता है या जैसे हमारे सभी मुहावरों में लाक्षणिकता होती है। मनुष्य कठपुतली नहीं हो सकता बल्कि कठपुतली जैसा पराधीन जीवन व्यतीत करता है, इसलिए उसके लिए इन अभिव्यक्तियों का उपयोग किया गया है।

इस कविता में कवि ने व्यंग्य-शैली का भी उपयोग किया है। हम अनुभव करते हैं कि कवि पराधीन व्यक्तित्व वालों के विरोध में यह कविता लिख रहा है। व्यंग्यात्मक शैली में लिखी गई रचनाओं में प्रायः समाज में फैली बुराइयों पर शब्दों के तीखे बाण चला कर उन्हें समाज की द ष्टि में लाया जाता है। इसका अर्थ यह नहीं होता कि लेखक बुराई का समर्थक है या उसकी स्थापना करना चाहता है। बल्कि वह वर्णन करके व्यंग्य-रूप में इसका विरोध करता है। समाज में गुण-दोष दोनों होते हैं। लेखक इन दोनों का चित्रण कर सकता है। हम भी जब किसी दोष की बात करते हैं तो अप्रत्यक्ष रूप से यह चाहते हैं कि उस दोष का अंत होना चाहिए। इस कविता में भी कवि चाहता है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व, अपनी व्यक्तिगत स्वतंत्रता को समाज और देश के विकास के लिए बनाए रखे। जो लोग ऐसा नहीं करते उन पर कवि व्यंग्य यानी शब्दों की चोट करता है, जैसे –

आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो–
उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

* * *

जो कहते हैं कठपुतली के इस खेल में
कठपुतली नहीं बनेंगे। वे चुपके से कठपुतली बना दिए जाते हैं
वे ही सबसे पहले अपनी डोर किसी और को थमा देते हैं।

* * *

कोई और कहीं से हमें चला रहा है
कोई और कहीं से हमें जो कह रहा है
वो हम कह-कर रहे हैं
ऐसे हम आज़ाद हैं।

पाठगत प्रश्न 24.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. कठपुतली कविता की भाषा

   (क) संस्कृतनिष्ठ है (ग) अरबी-फ़ारसी शब्दों से युक्त है

   (ख) सामान्य बोलचाल की है (घ) कठिन, जटिल और उलझी हुई है

2. लाक्षणिकता में बात को–

   (क) संकेत रूप में कहा जाता है (ग) जटिल शब्दों में कहा जाता है

   (ख) सीधे कह दिया जाता है (घ) आसान शब्दों में कहा जाता है

3. 'हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं,' पंक्ति में निम्नलिखित में से भाषा का कौन-सा गुण है?

   (क) अभिधात्मकता (ग) प्रतीकात्मकता

   (ख) मुहावरों का प्रयोग (घ) लाक्षणिकता

24.5 आपने क्या सीखा

- 'कठपुतली' कविता में कवि ने बढ़ती हुई पराधीनता की प्रव त्ति पर चिंता व्यक्त की है।
- पराधीनता मनुष्य को, विशेष रूप से युवा पीढ़ी को दिशाहीन बनाती है।
- छोटी-छोटी सुविधाओं तथा खुशियों के लिए मनुष्य अपनी स्वतंत्रता दूसरों को सौंप देता है, जो गलत है।
- अपने अस्तित्व और स्वाभिमान को सुरक्षित रखने के लिए परिश्रम और संघर्ष को अपनाना चाहिए। महान व्यक्तित्व स्वतंत्रता, संघर्ष और परिश्रम के आधार पर जीवन के नए मार्ग तैयार करते हैं। यही सार्थक जीवन है।
- आज़ादी का दिखावा न करके सच्ची आज़ादी का महत्त्व समझना चाहिए।
- प्रकृति ने हमें ज्ञान तथा विवेक के स्रोत इसलिए दिए हैं कि हम सही-गलत रास्तों का चुनाव स्वयं कर सकें, अपने निर्णय स्वयं ले सकें, विचारों में द ढ़ हो सकें और आत्मनिर्भर बन सकें।

- 'कठपुतली' कविता की भाषा आम बोलचाल की है। इसमें प्रतीकात्मकता तथा लाक्षणिकता है।
- इस कविता में कवि ने व्यंग्य-शैली का उपयोग किया है।

24.6 योग्यता-विस्तार

(क) कवि परिचय

'कठपुतली' कविता के लेखक राजेंद्र उपाध्याय का जन्म 20 जून, 1958 को सैलाना, ज़िला रतलाम (म.प्र.) में हुआ। उनकी उच्च शिक्षा हिमाचल प्रदेश और कोलकाता में हुई। अब तक उनके पाँच कविता-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं, जिनके नाम हैं – *'सिर्फ़ पेड़ ही नहीं कटते हैं', 'खिड़की के टूटे हुए शीशे में' 'लोग जानते हैं' 'मोबाइल पर ईश्वर' और 'पानी के कई नाम'।* राजेंद्र उपाध्याय की कुछ कविताओं का अनुवाद गुजराती, सिंधी, अंग्रेज़ी, मलयालम, पंजाबी और राजस्थानी में भी हुआ है। उन्होंने कविताओं के अतिरिक्त कई गद्य-विधाओं, जैसे–कहानी, आलोचना, भेंटवार्ता, डायरी आदि में भी लेखन-कार्य किया है, जो विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित है। सन् 2006 में डायरी लेखन में पुरस्कृत हुए।

भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता के संपादन-विभाग; पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली तथा भारत सरकार के प्रकाशन विभाग में कार्य करने के बाद अब आकाशवाणी, नई दिल्ली में हिंदी समाचार-संपादक हैं।

(ख) आइए, अब प्रसिद्ध कवि विनय विश्वास की कविता 'केंचुए' पढ़ते हैं, जिसमें व्यक्तित्वहीनता को ही कविता का विषय बनाया गया है:

केंचुए

पुरानी दिल्ली की पेचीदा गलियों की तरह
न जाने कहाँ से कहाँ निकलते
केंचुओं से मिल जाते हैं
केंचुए

पहले तो बारिश का मौसम ही
उनका होता था
कीचड़ में एक भी जगह नहीं बची
उनके रेंगने के निशानों से
एक भी पल नहीं राजधानी में जब वे बरस न रहे हों
ईमान के सर पे
मुश्किलों की तरह

एक था जिसे मैंने आदमी समझा
बात करते चला उसके साथ थोड़ी दूर
पर कीचड़ देखते ही वह पसर गया

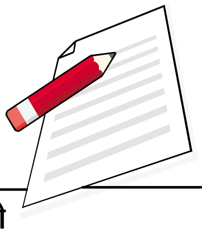

रेंगने लगा चरणों में लोटता
नाक उसकी थी ही नहीं जो इत्र-सड़े कीचड़ से लड़ती

बच्चे उसे देख तालियाँ बजाने लगे
मैंने देखा उनकी आँखों में
उसे
आदर्श की तरह खड़े होते।

24.7 पाठांत प्रश्न

1. बढ़ती हुई पराधीनता पर अपने विचार लिखिए।
2. मनुष्य के कठपुतली बन जाने से क्या-क्या हानियाँ होती हैं, तर्क सहित उल्लेख कीजिए।
3. कुछ लोगों के महान बनने में स्वाधीन चेतना का भी महत्त्व रहा है – इस विषय पर एक टिप्पणी लिखिए।
4. कठपुतली बना हुआ मनुष्य दूसरों को भी कठपुतली क्यों बनाना चाहता है?
5. कठपुतली बनकर जीनेवालों का जीवन निरर्थक ही बीत जाता है – इस विषय पर अपने विचार लिखिए।
6. कभी-कभी परिवार का दबाव भी व्यक्ति को पराधीन बनाता है – इस विषय पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
7. 'युवा पीढ़ी की आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के लिए स्वाधीन चेतना का होना बहुत आवश्यक है', इस कथन का विश्लेषण कीजिए।
8. निम्नलिखित पंक्तियों में निहित भाव स्पष्ट कीजिए–

   (क) किसी दूसरे के हाथों में अपनी डोर देकर हम खुश रहते हैं।
   क्योंकि फिर हमें अपनी डगर नहीं बनानी पड़ती।

   (ख) आज़ादी के नारे लगाने वालों को देखो –
   उनकी डोर भी उनके हाथ में नहीं है।

   (ग) कठपुतली बने हुए हम जीते रहते हैं बरस-दर-बरस
   और मरते वक्त पाते हैं कि 'अरे! हम तो कठपुतली थे।'

   (घ) कठपुतली के तो केवल हाथ-पैर ही बँधे होते हैं।
   हमारे तो आँख, कान, नाक, मुँह सब बँधे हैं।
9. 'कठपुतली' कविता की भाषागत विशेषताओं का उदाहरण सहित उल्लेख कीजिए।
10. कहते हैं 'श्री कृष्ण ने अपनी छोटी उँगली पर सभी को नचाया।' क्या आप स्वयं भी किसी की छोटी उँगली पर नाचते हैं और क्यों? और यह भी बताइए कि आप किसे नचाते हैं और क्यों?

24.8 उत्तरमाला

बोध-प्रश्नों के उत्तर

1. (क) 2. (ख) 3. (ख) 4. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

24.1 1. पराधीन व्यक्तित्व का
2. हम सभी वह कोई भी हो सकता है—मैं भी, आप भी
3. दूसरे के नियंत्रण या वश में होना
4. परिश्रम और संघर्ष की

24.2 (क) (√) (ख) (√) (ग) (X) (घ) (X) (ङ) (√) (च) (X)

24.3 1. (ख) 2. (ख) 3. (ग)

24.4 1. (ख) 2. (क) 3. (घ)

25
हिंदी कविता की विकास यात्रा

आप जानते हैं कविता का संबंध व्यक्ति के हृदय से माना गया है। कविता दिल से निकलती है और दिल तक पहुँचती हैं। अभी तक आपने इस पाठ्यक्रम की सभी कविताएँ तो पढ़ ही ली हैं। – रैदास, तुलसी, मीराँ आदि। आप सोच रहे होंगे कि रैदास से पहला पाठ आरंभ हो रहा है, इसलिए कविता की यात्रा भी रैदास से ही शुरू हुई होगी। एक प्रकार से आप ठीक सोच रहे हैं। कम-से-कम इस स्तर पर इस पाठ्यक्रम में कविता का प्रारंभ रैदास जी से ही हुआ है। परंतु क्या हिंदी कविता भी यहीं से शुरू हुई तो इसका उत्तर है–नहीं। हिंदी कविता की विकास यात्रा प्रारंभ हुई 1000 ईसवी से। आप जानते हैं भाषा तो बहता नीर है। कविता का इतिहास बहुत पुराना है – जैसे-जैसे समाज बदला, सामाजिक परिस्थितियाँ बदलीं, वैसे-वैसे कविता की भाषा और स्वरूप भी बदलता गया। आइए, पढ़ते हैं कि कविता कहाँ से चली और कहाँ तक पहुँची। इसकी यात्रा में कौन-कौन से पड़ाव आए।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल की कविताओं की विषय-वस्तु तथा स्वरूप पर विचार कर सकेंगे;
- कविता किस प्रकार से अपने युग से प्रभावित होती है और युग को प्रभावित करती है, इसे बता सकेंगे;
- हिंदी काव्य-विकास के विभिन्न चरणों में भाषा के प्रयोग को समझा सकेंगे;
- हिंदी साहित्य में पुनर्जागरण का महत्त्व समझा सकेंगे;
- आधुनिक काल की विभिन्न काव्य-विधाओं की विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

किताबों से खोजकर विद्यापति, सूरदास, बिहारीलाल, भारतेंदु हरिश्चंद्र के कृष्ण-भक्ति

टिप्पणी

सन् 1000 ई. से हिंदी काव्य का प्रारंभ होता है।

से संबंधित पदों-दोहों को अपनी नोटबुक पर उतारिए और उन्हें पढ़ कर यह खोजने का प्रयत्न कीजिए कि उनकी भाषा में क्या अंतर है? जो अंतर आपकी समझ में आए, उन्हें अपनी नोटबुक में दर्ज़ करके अपने शिक्षण-केंद्र के शिक्षक को दिखलाइए।

25.1 आइए समझें

हिंदी कविता की विकास यात्रा

हिंदी साहित्य का आरंभ सन् 1000 ई० से माना जाता है। भाषा, समाज, संस्कृति और साहित्य के बदलाव की कोई निश्चित तारीख नहीं होती। ये परिवर्तन धीरे-धीरे होते हैं। इस कारण कुछ विद्वान इस सीमा रेखा को सन् 1000 से आगे या पीछे तक भी ले जाते हैं। हिंदी साहित्य के इन 1000 वर्षों में भाषा के रूप तथा साहित्यिक प्रवृत्तियों में अनेक परिवर्तन हुए हैं। उन परिवर्तनों पर विचार करने के लिए हम प्रायः समूचे साहित्य को चार मोटे-मोटे भागों में विभाजित करते हैं। ये भाग मुख्यतः समय के अनुसार हैं अतः इन्हें 'काल' कहते हैं। ये चार काल आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिककाल के नाम से जाने जाते हैं। प्रथम काल में हिंदी की कुछ बोलियों में रचित काव्यों के साथ-साथ आज की हिंदी (जिसे हम खड़ी बोली हिंदी कहते हैं) के भी कुछ लक्षण दिखाई पड़ते हैं। भक्तिकाल के साहित्य में मुख्यतः ब्रजभाषा और अवधी की प्रध ाानता है। रीतिकाल में ब्रजभाषा अपने पूर्ण उत्कर्ष पर पहुँची। आधुनिक काल में खड़ी बोली मानक हिंदी भाषा का आधार बनी तो उसी पर आधारित उर्दू कभी उससे नज़दीक तो कभी दूर होती रही। साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, भाषा-रूपों और कवि तथा रचनाओं की दृष्टि से इस संपूर्ण हिंदी काव्य की प्रमुख बातों को हम पाठ में जानने का प्रयास करेंगे।

25.2 हिंदी साहित्य के इतिहास का काल-विभाजन

हिंदी साहित्य का इतिहास लिखने वाले विद्वानों ने अपने-अपने ढंग से काल-विभाजन किया है, आचार्य रामचंद्र शुक्ल का काल-विभाजन लोगों ने अधिक उपयुक्त माना है। शुक्ल जी ने विक्रम संवत् का उल्लेख किया है, जिसे हम निम्नलिखित वृक्ष-आरेख रूप में रख सकते हैं।

हिंदी साहित्य

- **आदिकाल** **(वीरगाथा काल)** 1000 ई. से 1350 ई.
- **मध्यकाल** **(भक्ति और रीतिकाल)** 1350 ई. से 1850 ई.
  - **पूर्व मध्यकाल** **(भक्तिकाल)** 1350 ई. से 1650 ई.
  - **उत्तर मध्यकाल** **(रीतिकाल या शृंगारकाल)** 1650 ई. से 1850 ई.
- **आधुनिक काल** **(गद्य काल)** 1850 ई. से आज तक

आइए, अब अलग-अलग कालों की राजनीतिक-सामाजिक परिस्थितियों, प्रमुख कवियों और उनकी विशेषताओं के बारे में पढ़ते हैं।

25.3 आदिकाल

आदिकाल में विविध प्रकार की काव्य रचनाएँ हुईं। जिनकी विशेषता के आधार पर इसे अलग-अलग नामों से जाना जाता है। इस काल को वीरगाथा काल, प्रारंभिक काल, संधिकाल, सिद्ध-सामंत आदि अनेक नाम दिए गए। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने इसे आदिकाल नाम से ही स्वीकार किया। आइए, इनके बारे में थोड़ा और पढ़ें:

आदिकाल की काव्य-प्रवृत्तियों पर विचार करने से पहले हम यह देखें कि आदिकाल में किस-किस प्रकार का साहित्य रचा गया।

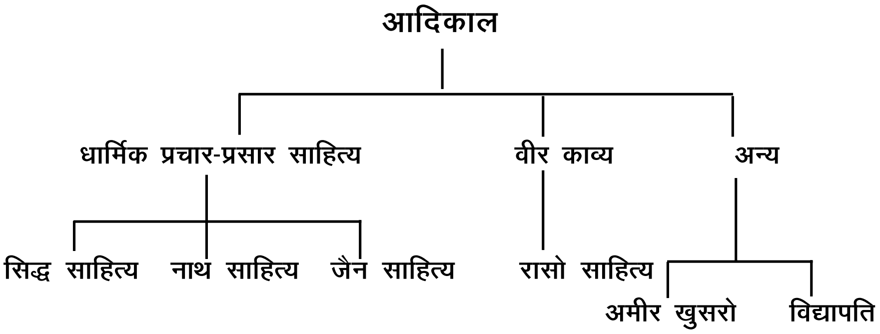

हिंदी साहित्य के आदिकाल का प्रारंभ वीर गाथाओं से शुरू होता है। भूमिका के रूप में अपभ्रंश-साहित्य को जानना इसलिए ज़रूरी है कि आधुनिक हिंदी-भाषाओं का उदय इसी अपभ्रंश काल से हुआ।

अपभ्रंश में रचना सातवीं सदी के आस-पास मिलने लगती है। लेकिन दसवीं सदी तक आते-आते इसमें प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा जा चुका था। अपभ्रंश साहित्य पर विचार करते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि ये रचनाएँ शुद्ध साहित्यिक कोटि की नहीं थीं। ये रचनाएँ विभिन्न धार्मिक संप्रदायों/मतों की हैं और धर्मों, मतों के प्रचार के लिए लिखी गई थीं।

बौद्ध धर्म का जब पतन हुआ तो वह हीनयान और वज्रयान दो शाखाओं में बँट गया। इनमें पूरब में वज्रयानी बिहार से लेकर आसाम तक फैले हुए थे। 'चौरासी सिद्ध' इन्हीं में से हुए। प्रसिद्ध गुरु गोरखनाथ भी इन्हीं चौरासी सिद्धों में से एक थे। इन्होंने अलग से नाथ पंथ चलाया। गोरखनाथ का समय राहुल सांकृत्यायन जी के अनुसार विक्रम की 10वीं सदी ठहरता है। यानी पृथ्वीराज चौहान के कुछ समय बाद में।

एक बात ध्यान देने की है। यही नाथ पंथ और सिद्ध संप्रदाय आगे चलकर भक्ति संप्रदाय का आधार बना। कम-से-कम ज्ञानाश्रयी शाखा का 75 प्रतिशत तो इन्हीं से लिया गया था। साखी, बानी, पद आदि विधाएँ इसी काल में पनपीं। साधुओं की सधुक्कड़ी और संधा भाषाओं का उदय भी इन्हीं नाथों और सिद्धों से मानना चाहिए। ज्ञानाश्रयी शाखा का रहस्यवाद तो पूरा का पूरा इन्हीं का था। इसके अतिरिक्त जाति-पाँति का विरोध, मूर्तिपूजा का विरोध भी यहीं से आया।

टिप्पणी

नाथ और सिद्धों की भाषा देश-भाषा मिश्रित अपभ्रंश है अर्थात् पुरानी हिंदी की काव्य-भाषा।

उस समय रचनाएँ मुख्य रूप से दोहों, चौपाइयों तथा पदों में की जाती थीं। लेकिन इन नाथों और सिद्धों की रचनाओं को शुद्ध साहित्य की कोटि में न मानकर धार्मिक अधिक माना गया।

सिद्ध-साहित्य

सिद्ध-साहित्य : बौद्धधर्म के वज्रयान तत्त्व के प्रचार के लिए रचित साहित्य। आदिकाल का सर्वाधिक उपयुक्त नाम 'आदिवासी' ही है।

आप अभी पढ़ चुके हैं कि बौद्ध-धर्म की एक शाखा वज्रयान कहलाई। इस शाखा के विद्वान् सिद्ध कहलाए। सिद्धों की संख्या चौरासी बताई गई है। इन सिद्धों ने बौद्ध-धर्म के वज्रयान तत्त्व का प्रचार करने के लिए जो साहित्य जनभाषा में लिखा वह सिद्ध-साहित्य कहलाया।

84 सिद्ध हुए। ये बौद्धधर्म की विकृत शाखा के महंत जैसे थे। इनके नामों के आगे 'पा' लिखा मिलता है–शबरपा, सरहपा आदि।

सिद्धों के नामों के आगे आदरार्थ 'पा' जोड़ा जाता है, जैसे सरहपा, शबरपा, लुइपा, डोम्भिमा, कण्हपा, आदि। सरहपा कृत 'दोहाकोश' तथा शबरपा कृत 'चर्यापद' सिद्ध-साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं। सिद्ध साहित्य का प्रभाव भक्तिकाल तक, विशेषतः संत साहित्य पर दिखाई देता है।

नाथ-साहित्य

सिद्धों की परंपरा का विकसित रूप नाथपंथ, नाथपंथियों द्वारा रचित साहित्य–नाथ-साहित्य।

सिद्धों की वाममार्गी भोगप्रधान योग-साधना की प्रतिक्रिया के रूप में आदिकाल में मत्स्येन्द्रनाथ (मछन्दरनाथ) तथा गोरखनाथ (जिनके नाम पर गोरखपुर शहर बसा है) ने नाथपंथ चलाया। गोरखपुर में बहुत बड़ा गोरखनाथ का मंदिर है नाथपंथ सिद्धों का ही सुधरा हुआ रूप है। नाथों की संख्या नौ बताई गई है। इन नाथों द्वारा रचित प्रचारात्मक साहित्य नाथ-साहित्य कहलाया।

नाथ-साहित्य के आरंभकर्ता हैं–गोरखनाथ। इनकी चौदह रचनाएँ बताई जाती हैं। डॉ. बड़श्वाल ने 'गोरखबानी' नाम से इनकी रचनाओं का एक संकलन संपादित किया है। इनके साहित्य में लोक नीति और साधना की व्यापकता है। गुरु गोरखनाथ ने सहयोग का उपदेश दिया था। 'ह' का अर्थ है सूर्य और 'ठ' का अर्थ है चंद्र। इन दोनों के योग को ही 'हठयोग' कहते हैं। गोरखनाथ ने ही षट्चक्रों वाला योगमार्ग हिंदी-साहित्य में चलाया था। गोरखनाथ ने लिखा है कि धीर वही है जिसका चित्त विकृत न हो :

नौ लख पातरि आगे नाचैं, पीछे सहज अखाड़ा।
ऐसे मन लै जोगी खेलै, तब अंतरि बसै भंडारा।।

नाथ नौ हुए।
सिद्धों के सिद्धांतों को इन्होंने सुधारा और योगमार्ग के प्रतिपादन का काव्य रचा।

स्पष्ट है कि खड़ीबोली की झलक गोरखनाथ की रचनाओं में मिलती है, इसीलिए इन्हें हिंदी का आदि कवि कहा जाता है।

इसी परंपरा का विकास भक्तिकाल के कवि कबीर में मिलता है।

अन्य प्रसिद्ध नाथपंथी कवि हैं – चौरंगीनाथ, गोपीचंद, भरथरी (भर्तृहरि) आदि। इन सभी कवियों ने प्रायः गोरखनाथ का ही अनुसरण किया है।

जैन-साहित्य

जिस प्रकार हिंदी के पूर्वी क्षेत्र में सिद्धों ने बौद्ध-धर्म का प्रचार हिंदी-कविता के माध्यम

से किया, उसी प्रकार पश्चिमी क्षेत्र में जैन साधुओं ने अपने मत का प्रचार किया। जैन-साहित्य का सर्वाधिक लोकप्रिय रूप 'रास' ग्रंथ हैं। इनमें उपदेशात्मकता है। मुख्यतः जैन-तीर्थंकरों के जीवनचरित्र तथा वैष्णव-अवतारों की कथाएँ हैं।

शालिभद्र सूरि रचित 'भरतेश्वर-बाहुबली रास' को जैन-साहित्य की रास-परंपरा का पहला ग्रंथ माना जाता है। इस ग्रंथ में भरतेश्वर तथा बाहुबली का चरित्र-वर्णित है। इसी प्रकार से जैन आचार्य ने 'श्रावकाचार' की रचना की। आसगु की रचना है 'चन्दनबालारास'। जिनधर्म सूरि की कृति है 'स्थूलिभद्ररास'। विजयसेन सूरि ने 'रेवंतगिरिरास' की रचना की तथा सुमति मणि ने नेमिनाथ का चरित्र 'नेमिनाथरास' में प्रस्तुत किया। स्वयंभू सर्वाधिक प्रसिद्ध हुए।

टिप्पणी

जैन साधुओं द्वारा अपने धर्म के प्रचार के लिए रचित साहित्य जैन साहित्य है। इनका सबसे लोकप्रिय रूप 'रास' है।

रासो-साहित्य या वीर-काव्य या वीरगाथाकाल (सं. 1050-1373)

वीर गाथाओं की रचना देश-भाषा अर्थात् जन भाषा में हुई है। यह भाषा उस समय के जनसाधारण की भाषा थी। ऐसा नहीं है कि उस काल में नीति धर्म या उपदेशपरक रचनाएँ नहीं हो रही थीं। लेकिन मुख्य बल वीर गाथाओं पर था। यह समय सल्तनत काल के आसपास का है। मुसलमान भारत के पश्चिमी छोर पर बसने लगे थे और तुर्कों के आक्रमण लगातार जारी थे। स्वयं राजपूत राजा भी आपस में युद्ध किया करते थे। ऐसी दशा में दरबारी कवि अपने आश्रयदाताओं के गुणों और शौर्य का अतिशयोक्ति पूर्ण वर्णन किया करते थे। इन्हीं दरबारी कवियों को 'चारण' भी कहा गया है। इसलिए वीर-काव्य को चारण-काव्य भी कहा जाता है।

क्षत्रिय राजाओं के दरबारी चरण कवियों द्वारा रचित रासो काव्यों में आश्रयदाता राजाओं की वीरता का वर्णन है। ये ही वीर-काव्य हैं।

जैन मुनियों ने अपने धर्म के प्रचार के लिए जो साहित्य रचा वह जैन साहित्य कहलाया।

ये वीरगाथाएँ दो रूपों में मिलती हैं—प्रबंध काव्य के रूप में और वीर गीतों के रूप में। प्रबंध काव्य के रूप में जो सबसे प्राचीन ग्रंथ उपलब्ध है, वह है 'पृथ्वीराज रासो।' वीर गीत के रूप में सबसे पुरानी रचना 'बीसलदेव रासो' है। इसमें समयानुसार भाषा-परिवर्तन के भी संकेत मिलते हैं। इसी तरह से आल्हा है, जिसमें समय-समय पर भाषा-परिवर्तन होता रहा।

खुमान रासो : शिव सिंह सरोज के अनुसार एक अज्ञातनामी भाट ने 'खुमान रासो' नामक काव्य ग्रंथ लिखा था, जिसमें श्री रामचंद्र से लेकर खुमान तक के युद्धों का वर्णन है। संवत् 810 से लेकर सं. 1000 के बीच चित्तौड़ में रावल खुमान नामक तीन राजा हुए। कर्नल टॉड ने इन तीनों को एक मान कर इनके युद्धों का वर्णन किया है। खुमान के समय बगदाद के खलीफा अलमान् ने चित्तौड़ पर आक्रमण किया। उसकी रक्षा हो गई, खुमान ने 24 युद्ध किए और सं. 869 से 893 तक राज्य किया। यह सारा वर्णन 'दलपति विजय' नामक किसी रासो पर आधारित है।

बीसलदेव रासो : नरपति नाल्ह नामक कवि बीसल देव का समकालीन था और संभवतः उसका दरबारी कवि था। इसने 'बीसलदेव रासो' नाम का एक छोटा-सा ग्रंथ लिखा है। शार्ङगधर कृत 'हम्मीर रासो', जगनिक रचित 'परमाल रासो' (उत्तर प्रदेश में 'आल्हखंड' के नाम से जो काव्य प्रचलित है। धीरे-धीरे 'आल्हा' लोकगीत की एक शैली बन गया और आधुनिक विषयों पर भी 'आल्हा' लिखे जाने लगे। इसी काव्य की ये पंक्तियाँ हैं, जो लोकजिह्वा पर चढ़ गई हैं—

'बारह बरिस सौ कूकर जीवै, अरु तेरह लौ जिये सयार।
बरस अठारह क्षत्रिय जीवै, आगे जीवन को धिक्कार।।'

पृथ्वीराज रासो: 'पृथ्वीराज रासो' हिंदी का प्रथम महाकाव्य है और इसके रचयिता चंदबरदाई हिंदी के प्रथम महाकवि हैं। पृथ्वीराज रासो ढाई हज़ार पृष्ठों का बहुत बड़ा ग्रंथ है जिसमें 96 अध्याय हैं। इसमें प्राचीन समय में प्रचलित प्रायः सभी छंदों का प्रयोग हुआ है। पृथ्वीराज रासो पूरा चंद का लिखा हुआ नहीं है। इसका उत्तरार्ध उनके पुत्र जल्हण ने पूरा किया। इसका संकेत रासो में ही मिलता है:

'पुस्तक जल्हण हाथ दै चलि गज्जन नृप काज।

टिप्पणी

इस काल में ऐसे प्रबंधकाव्य रचे गए जिनमें वीर रस तथा श्रं गार को महत्त्व मिला। इन युद्ध-कथाओं को 'रासो' कहा गया। 'प थ्वीराज रासो' सर्वाधिक चर्चित ग्रंथ है।

अन्य रचनाएँ: अब तक हम हिंदी-साहित्य के आदि काव्य पर बहुत बातें कर चुके हैं। हमने शुरू में ही कहा था कि असल में रासो ग्रंथों, नाथों और जैनियों की रचनाओं में बहुत कुछ प्राकृत का अंश बच रहा था। वे शुद्ध हिंदी की कोटि में नहीं आतीं। शुद्ध हिंदी में रचनाएँ परवर्ती काल में ही हो पाईं। और उस समय इसके दो प्रतिनिधि कवि थे– पश्चिम में अमीर-खुसरो और सुदूर पूरब में विद्यापति।

खुसरो ने पहेलियाँ, प्रव तियाँ लिखीं। विद्यापति की 'पदावली' अत्यंत प्रसिद्ध हुई। समय की द ष्टि से ये भी आदिकाल के कवि हैं पर अन्य प्रव तियों से अलग हैं।

खुसरो : खुसरो ने अपनी रचना सं. 1340 के आसपास आरंभ की। इन्होंने बलबन से लेकर अलाउद्दीन, कुतुबुद्दीन, मुबारक शाह आदि कई शासकों का जमाना देखा था। इनकी मृत्यु सं. 1381 में हुई। ये फ़ारसी के बहुत अच्छे कवि थे। सरल भाषा में इनकी मुकरियाँ और पहेलियाँ बहुत प्रसिद्ध हैं।

पटियाली जिला एटा (उ.प्र.) में 1253 ई. में जन्मे अमीर खुसरो ने दिल्ली-मेरठ की चलती खड़ी बोली में लोक-रंजक दोहे, मुकरियाँ, पहेलियाँ लिखीं, अन्य काव्य-रचना फ़ारसी में कीं।

गोरी सोवे सेज पर, मुख पर डारे केस।
चल खुसरो घर आपने रैन भई चहुँ देस।।
(हसरत निज़ामुद्दीन की म त्यु पर लिखा गया दोहा)

इनकी बोली पर दिल्ली तथा मेरठ की तत्कालीन भाषा का प्रभाव था। खड़ीबोली के पुराने रूप के दर्शन अमीर खुसरो की पहेलियों तथा मुकरियों में किए जा सकते हैं। इस भाषा में अरबी तथा फ़ारसी शब्दों का प्रयोग हिंदी क्रियाओं के साथ किया गया है। खुसरो की निम्नलिखित पहेली तो आज भी लोगों की जिह्वा पर है–

एक थाल मोती भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारों ओर वह थाली फिरे, मोती उससे एक न गिरे।।
(आकाश)

उनकी भाषा का एक और नमूना देखें –

'बाला था जब सबको भाया, बढ़ा हुआ कुछ काम न आया।
खुसरो कह दिया उसका नाँव, अर्थ करो नहीं छोड़ो गाँव।।'
(दिया, दीपक)

विद्यापति : विद्यापति अपभ्रंश के भी कवि हैं। लेकिन जिसके कारण ये कोकिल मैथिल कहलाए वह इनकी 'पदावली' है जो उस क्षेत्र में प्रचलित 'मैथिली' में है। विद्यापति के पद प्रायः श्रृंगार के ही हैं जिसमें नायक और नायिका कृष्ण और राधा हैं। विद्यापति सं. 1460 में तिरहर के राजा शिवसिंह के यहाँ वर्तमान थे। उनके काव्य में वैष्णव धर्म की मर्यादा और शैव मत का तादात्म्य-भाव दोनों एक साथ मिलते हैं। काम-भाव और शरीर के सौंदर्य के अनेक चित्र उनके काव्य में मिलते हैं। हालाँकि अपने समय की परंपरा

विद्यापति बिहार राज्य के मिथिला जनपद के अत्यंत लोकप्रिय कवि थे। उनकी राधा-कृष्ण से संबंधित 'पदावली' उनकी प्रसिद्धि का आधार है जिसकी भाषा मैथिली है।

के अनुसार विद्यापति ने अपने आश्रयदाता राजाओं को केंद्र में रखकर 'कीर्तिलता' और कीर्तिपताका' ग्रंथों की भी रचना की। **'कीर्तिलता'** अवहट्ठ भाषा रूप में उपलब्ध है।

मोटे हिसाब से वीरगाथा काल महाराज हम्मीर के काल तक ही समझना चाहिए। वीर गाथाएँ इसके बाद भी लिखी जाती रही होंगी। लेकिन इसके बाद हिंदी साहित्य की मुख्यधारा भक्तिकाल में प्रवेश कर जाती है।

आदिकालीन काव्य की विशेष बातें

- आदिकालीन साहित्य में विषयों, काव्य-रूपों तथा काव्य-भाषा की भरपूर विविधता है।
- सिद्ध कवि सरहपा (पं. राहुल सांकृत्यायन के अनुसार) हिंदी परंपरा के पहले कवि हैं।
- नाथपंथियों ने योगी को सबसे ऊँचा बताया और जैन कवियों ने अपनी धर्म-साधना को सीधे-सीधे अभिव्यक्त किया।
- चंदबरदाई कृत 'पृथ्वीराज रासो' इस काल का प्रसिद्ध वीर-काव्य है। यों, कुछ लोग नरपति नाल्ह रचित 'बीसलदेव रासो' (गीतात्मक ग्रंथ) को पहला वीर-काव्य मानते हैं।
- जगनिक ने प्रसिद्ध राजा परमाल के वीर सेनापतियों आल्हा और ऊदल के संबंध में 'परमाल रासो' नामक ग्रंथ रचा। यह ग्रंथ उपलब्ध नहीं है। बुंदेलखंड में लोकप्रिय आल्हा इसी काव्यग्रंथ का अंश है।
- वीरता पूर्ण रचनाओं द्वारा वीरों को प्रेरित करने का कार्य कवियों ने किया। इस काल का वीरगाथात्मक साहित्य युद्ध की गूँजों से भरा है।
- अमीर खुसरो ने दिल्ली-मेरठ की चलती खड़ी बोली में मुकरियाँ, पहेलियाँ तथा दोहे रचे।
- विद्यापति ने अपने कृष्णभक्ति के पदों में श्रृंगार का सुंदर चित्रण किया और **'कीर्तिलता'** अवहट्ठ में लिखी।

पाठगत प्रश्न 25.1

निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने (√) चिह्न और गलत के सामने (X) चिह्न लगाएँ–

1. आदिकाल का सर्वाधिक उपयुक्त नाम वीरगाथा-काल है। ( )
2. नाथपंथ सिद्धों की परंपरा का विकसित रूप है। ( )
3. जैन-साहित्य का सबसे लोकप्रिय रूप 'रास' है। ( )
4. बौद्ध धर्म की एक शाखा में से सिद्ध हुए। ( )
5. रासो-ग्रंथ दरबारी कवियों के द्वारा रचित है। ( )
6. अमीर खुसरो ने पहेलियाँ लिखीं तथा विद्यापति ने कृष्णभक्ति के पद रचे। ( )

7. विद्यापति ने पहेलियाँ रचीं। ( )
8. अमीर खुसरो ने भक्ति और श्रृंगार के पद रचे। ( )
9. खुसरो की भाषा आज की खड़ी बोली से नहीं मिलती। ( )
10. विद्यापति की भाषा मैथिली है। ( )

25.4 भक्तिकाल

भक्तिकाल से अभिप्राय

भक्तिकाल के कवियों की रचनाएँ आप रैदास, तुलसी, मीराँबाई आदि के पाठों में पढ़ चुके हैं। आप जानते हैं भक्ति का अर्थ है भजना। पूजा आदि में अनुराग तथा कथा आदि में अनुरक्ति को भक्ति कहते हैं। इसीलिए हिंदी साहित्य का वह समय जिसमें ईश्वर की आराधना, भजन आदि से संबंधित काव्य रचा गया, ईश्वर के अवतारों की कथा गाई गई, 'भक्तिकाल' कहलाता है।

हिंदी साहित्य के इतिहास में लगभग 1350 ई0 से 1650 ई0 तक का समय (लगभग तीन सौ वर्ष) भक्तिकाल कहलाता है। इन वर्षों में कवियों ने ईश्वर की आराधना में अपनी सारी रचना-शक्ति लगा दी। अलग-अलग कवियों ने ईश्वर के निराकार (जिसका कोई आकार या रूप नहीं) और साकार (जिनका आकार और रूप है) रूप का वर्णन किया और आपसी भेद-भाव भुला कर प्रेम से रहने का उपदेश दिया। धर्म के बाहरी आडंबरों, दिखावों आदि की आलोचना की और इनकी बुराइयों पर प्रहार किया। ऐसे ही काव्य को भक्ति-काव्य कहा गया। उस काल के प्रमुख कवि कबीर, रैदास, नानक, दादूदयाल, सुंदरदास, मलूकदास, कुतबन, मंझन, जायसी, उसमान, नूरमुहम्मद, सूरदास, परमानंददास, कुंभनदास, नंददास, हितहरिवंश, हरिदास, रसखान, ध्रुवदास, मीराँबाई, तुलसीदास, अग्रदास, नाभादास आदि हैं।

राजनीतिक तथा सामाजिक परिस्थितियाँ

भक्ति-आंदोलन के पूर्व राजनीतिक अव्यवस्था, उत्पीड़न तथा सामाजिक सुरक्षा का अभाव था। सामाजिक जीवन विच्छिन्न और क्षीण हो गया था। अनेक प्रकार की कुप्रथाओं ने घर कर लिया था तथा धर्म बाह्याडंबर और निरर्थक कर्मकांड से घिर गया था। शासन-व्यवस्थाएँ पूर्णतः अस्त-व्यस्त हो गई थीं। धर्म के नाम पर लोग आपस में झगड़ते रहते थे। आपसी भेद-भाव बढ़ रहा था। जाति-पाँति पर बल था। ऐसी स्थिति में भक्ति-भावना एक आंदोलन के रूप में उभर कर सामने आई। इस भक्ति-भावना के बीज तो आप आदिकाल में भी देख सकते हैं। भक्तिकाल के कुछ सच्चे भक्तों और साधकों ने सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए ईश्वर के सच्चे रूप और धर्म के मर्म को समझाने की ईमानदार कोशिश की। इसके फलस्वरूप भक्ति-काव्य का जन्म हुआ और धीरे-धीरे यह विकसित होता गया। इस काल के काव्य में ऊँचे आदर्शों के कारण इसे हिंदी साहित्य का 'स्वर्णयुग' कहा गया। इस काल के कवियों ने लोगों को बोलचाल की भाषा में मानव-जीवन का सही अर्थ समझाया और ऊँच-नीच तथा जाति-पाँति के भेद-भाव को भुलाकर, प्रेम से रहने की शिक्षा दी।

टिप्पणी

भक्ति-काव्य की विभिन्न शाखाएँ

आप पहले पढ़ चुके हैं प्रमुखतः भक्ति दो प्रकार की होती है, निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। इसी आधार पर भक्ति-काव्य की दो प्रमुख **धाराएँ** हुईं – निर्गुण काव्यधारा और सगुण काव्य धारा। निर्गुण काव्य-धारा दो रूपों में विकसित हुई–ज्ञानमार्गी तथा प्रेममार्गी। सगुण भक्ति में विष्णु के अवतारों में सर्वाधिक लोकप्रिय राम और कृष्ण को केंद्र में रख कर काव्यरचना की गई, जिसे राम भक्ति काव्य और कृष्ण भक्ति काव्य के नाम से जाना जाता है। निम्नलिखित वृक्ष आरेख से यह बात और स्पष्ट हो जाएगी–

भक्ति-काव्य

- **निर्गुण काव्य-धारा**
  - **ज्ञानमार्गी शाखा** (संतकाव्य)
  - **प्रेममार्गी शाखा** (सूफी काव्य)
- **सगुण काव्य-धारा**
  - **राम-भक्ति काव्य**
  - **कृष्ण-भक्ति काव्य**

भक्तिकाल का समय : 1350 ई. से 1650 ई. तक।

आइए, इन पर अलग-अलग चर्चा करें और इनके प्रमुख कवियों तथा रचनाओं का परिचय प्राप्त करें।

निर्गुण काव्य-धारा

इस काव्य-धारा के कवियों ने ईश्वर को रूप, आकार आदि से रहित (निः+गुण;गुण=रूप) माना है। ईश्वर के अवतार में ये विश्वास नहीं करते। वे तर्क (ज्ञान) के आधार पर अवतारवाद का खंडन करते हैं तथा ईश्वर को आंतरिक अनुभूति का विषय मानते हैं। कुछ निर्गुण उपासक कवियों ने प्रेमकथाओं के माध्यम से ईश्वर के निराकार रूप को समझाने का प्रयास किया। इस तरह निर्गुण काव्य-धारा की दो उप-धाराएँ हो गईं। पहली ज्ञानमार्गी धारा, दूसरी प्रेममार्गी धारा। ज्ञानमार्गी धारा को मुख्यतः संतों ने पुष्ट किया इसलिए इसे संत-काव्य या संत-साहित्य भी कहते हैं। प्रेममार्गी धारा के कवि सूफी मत (इस्लाम और भारतीय वेदांत दर्शन का मिला-जुला रूप) को मानते थे। इसीलिए प्रेममार्गी धारा के काव्य-साहित्य को सूफी काव्य या प्रेमाख्यानक (प्रेम+आख्यान; आख्यान अर्थात कथा) काव्य भी कहते हैं। निर्गुण संत-काव्य के प्रवर्तक **कबीरदास** (1399–1518 ई.) माने जाते हैं। कबीर के संबंध में अनेक परस्पर विरोधी धारणाएँ प्रचलित हैं। इतना निश्चित है कि उन्होंने औपचारिक शिक्षा नहीं प्राप्त की थी। वे रामानंद के शिष्य थे। उन्होंने हिंदू और मुसलमान दोनों में व्याप्त पाखंड की कड़े शब्दों में निंदा की। अन्य धार्मिक तथा सामाजिक संस्कारों की तरह अभिव्यक्ति की भाषा और शैली भी उन्होंने अपने पूर्ववर्ती सिद्धों और नाथपंथी जोगियों से प्राप्त की तथा उसे अपने समय और समाज के अनुकूल निखारा। उनकी गणना हिंदी के शीर्ष कवियों में की जाती है। अनेक भाषाओं के मिले-जुले रूप के कारण उनकी भाषा नितांत भिन्न प्रकार की है और संभवतः इसी कारण 'सधुक्कड़ी' है।

राजनीतिक और सामाजिक द ष्टि से इस काल में स्थिरता नहीं थी। सर्वत्र असंतोष था।

निर्गुण कवियों ने ईश्वर के उस स्वरूप की आराधना की जो रूप और आकार से रहित है। इन्होंने धार्मिक आडंबरों की निंदा की।

कबीर के अतिरिक्त निर्गुण संतों की परंपरा में रैदास, कमाल, नानक, दादू, मलूकदास, सहजोबाई, दयाबाई, सुंदरदास आदि अनेक भक्त हुए हैं। इनमें से अधिकांश तत्कालीन समाज में निम्न समझी जाने वाली जातियों के थे। इन्होंने जनसामान्य की भाषा में भक्ति का संदेश लोगों तक पहुँचाया।

संत-काव्य

संत-काव्य में शब्द और शैली के चमत्कार की जगह भाव-सौंदर्य पर ध्यान दिया गया है। संत कवियों ने किसी एक धर्म को अपना आदर्श न मानकर एक व्यापक जीवन-दर्शन की ओर संकेत किया है, जिसमें सारे विश्व का कल्याण समाहित हो। संत कवियों ने अपनी काव्य रचना प्रायः 'साखी' तथा 'सबद' में की है, जो अधिकतर गेय हुआ करती हैं। इनमें कवियों ने आत्म-निवेदन जैसे व्यक्तिगत उद्‌गारों को ही प्रधानता दी। संतों ने कविता लिखने के उद्‌देश्य से अपनी रचनाओं का संकलन नहीं किया। वे तो अपने उद्‌गार व्यक्त कर रहे थे, इनके शिष्यों ने इनकी वाणियों ('संतों की बानी') का संकलन किया। इन संत कवियों की संकलित बानी के आधार पर संत काव्य की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं :

संत काव्य की विशेषताएँ

- संतों ने ईश्वर को रूप-गुण से रहित मानकर उसके नाम की उपासना पर बल दिया। अवतारवाद को इन्होंने स्वीकार नहीं किया।
- ईश्वर प्राप्ति में माया को बाधक कहकर उसका तिरस्कार किया।
- गृहस्थ-जीवन में रहते हुए ईश्वर-भजन का उपदेश दिया।
- माला फेरने, मूर्ति-पूजा करने, तीर्थ आदि में जाने को धार्मिक आडंबर कहकर उनका खंडन किया। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र वर्णों के आधार पर लोगों को ऊँचा या नीचा, श्रेष्ठ तथा हीन समझने वाली वर्ण-व्यवस्था की इन्होंने विशेष रूप से निंदा की और हँसी उड़ाई।
- संतों ने मुख्यतः गेय मुक्तकों की रचना की।
- संत-साहित्य में सूक्तियों का प्राचुर्य है।
- संतों की भाषा सरल है। इसमें अनेक भारतीय भाषाओं के शब्द घुले-मिले हैं, इसलिए इसे सधुक्कड़ी अथवा खिचड़ी भाषा के नाम से भी जाना जाता है।

पाठगत प्रश्न 25.2

1. निम्नलिखित कथनों में से सही के सामने (√) चिह्न और गलत के सामने (X) चिह्न लगाएँ–

   (क) भक्ति का अर्थ है भजना, पूजा आदि में अनुराग और अनुरक्ति। ( )

   (ख) भक्तिकाल का समय 1350 ई. से 1650 ई. तक माना गया है। ( )

(ग) भक्तिकाल का समय राजनीतिक उथल-पुथल और सामाजिक असंतोष का काल है। ( )

(घ) भक्तिकाल को हिंदी का स्वर्णयुग कहा गया। ( )

2. निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

(क) .... दो प्रकार की होती है, निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति।

(ख) निर्गुण काव्य-धारा के कवि ईश्वर के ....में विश्वास नहीं करते।

(ग) .... काव्य-धारा की दो उपधाराएँ हैं– पहली ज्ञानमार्गी धारा, दूसरी प्रेममार्गी धारा।

(घ) संत-काव्य में शब्द और शैली के चमत्कार की जगह..............सौंदर्य पर ध्यान दिया गया है।

सूफी काव्य

सूफी साधक प्रेम के द्वारा परमात्मा को पाने की बात करते हैं। परमात्मा उनके लिए परम प्रिय है और आत्मा उस प्रियतम को पाने के लिए व्याकुल रहती है। आत्मा और परमात्मा के बीच के इस प्रेम को व्यक्त करने के लिए सूफी कवि प्रेम की विभिन्न मनोदशाओं का वर्णन करते हैं। साकी, शऱाब, माशूक, जुल्फ आदि का प्रयोग इन कवियों ने सांकेतिक अर्थ में किया। अधिकांश सूफी कवि मुस्लिम धर्म के मानने वाले हैं। इसके साथ-साथ वे लोक जीवन में गहरी पैठ रखते हैं तथा मनुष्यों के परस्पर संबंध और मनुष्य तथा प्रकृति के संबंध को प्रेममय देखना चाहते हैं। इस्लाम तथा भारतीय लोक संस्कृति का अद्भुत समन्वय इनके काव्य का विलक्षण गुण है। प्रसिद्ध लौकिक प्रेमकथाओं के द्वारा इन्होंने अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है। प्रेमकथाओं पर आधारित होने के कारण सूफी काव्य को प्रेमाख्यानक (प्रेम+आख्यानक) काव्य कहा जाता है। इन काव्य कथाओं की भाषा अवधी है। इस्लाम के एकेश्वरवाद और भारतीय वेदांत को मिलाकर इन्होंने अपना चिंतन विकसित किया। काव्यकला की दृष्टि से सूफी काव्य अत्यंत श्रेष्ठ है। सौंदर्य चित्रण और प्रकृति चित्रण के लिए विभिन्न अलंकारों तथा अभिव्यक्तियों का अनूठा और सहज प्रयोग इनके काव्य की प्रमुख विशेषता है।

मुल्ला दाऊद सूफी साहित्य के पहले कवि हैं। इनकी प्रसिद्ध रचना है–चंदायन। अन्य प्रसिद्ध सूफी कवि और उनके काव्य हैं–कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती), उसमान (चित्रावली), जायसी (पद्मावत) तथा नूर मुहम्मद (अनुराग बाँसुरी)। इन कवियों में सबसे अधिक प्रसिद्ध जायसी हैं और उनका 'पद्मावत' अत्यंत प्रसिद्ध ग्रंथ है।

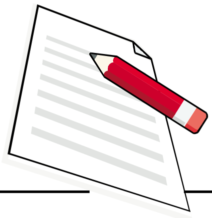

टिप्पणी

सूफी काव्य की विशेषताएँ

- सूफियों ने प्रायः कथा-काव्य (प्रबंध काव्य) लिखे हैं।
- इन्होंने इस्लाम, वेदांत और भारतीय लोक-संस्कृति का सुंदर समन्वय किया है।
- आत्मा-परमात्मा के बीच इन्होंने आत्मा को प्रेमी और परमात्मा को प्रेमिका माना है।
- लौकिक प्रेम-कथाओं के माध्यम से इन्होंने अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है इसी कारण इनके काव्य प्रतीकात्मक हैं।
- इन काव्यों में प्रेम और विशेषतः विरह की प्रधानता है। विरह-वर्णन के लिए इन्होंने प्रायः बारहमासा शैली (बारह महीनों में प्रेमिका या प्रेमी की मनोदशा तथा तड़प का वर्णन) का प्रयोग किया है।
- इनकी भाषा अवधी है।
- इनकी शैली **मसनवी** है। मसनवी ऐसे कथाकाव्य का प्रतिरूप है, जो महाकाव्य के निकट पहुँचता है।

सगुण काव्य-धारा

सगुण का अर्थ है गुण सहित, यहाँ पर गुण का अर्थ है– रूप। यह हम जान ही चुके हैं कि ईश्वर के रूप, आकार, अवतार में विश्वास करने वाली भक्ति सगुण भक्ति कहलाती है। स्पष्ट है कि सगुण काव्यधारा में ईश्वर के साकार स्वरूप की लीलाओं का गायन हुआ है। कहते हैं–*'भक्ति द्राविड़ ऊपजी, लाये रामानंद।'* अर्थात् सगुण भक्ति-धारा या वैष्णव (विष्णु के अवतारों के प्रति) भक्ति दक्षिण भारत में प्रवाहित हुई। उत्तर भारत में इसे रामानंद लेकर आए। राम को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना का प्रवर्तन किया। इसी प्रकार वल्लभाचार्य ने कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी उपासना का प्रारंभ किया। इस तरह से रामभक्ति और कृष्णभक्ति की दो धाराएँ चल निकलीं। रामभक्ति धारा के तुलसीदास तथा कृष्णभक्ति धारा के सूरदास प्रमुख कवि हैं। सगुण भक्तिधारा के कवियों ने भक्ति की नौ विधियाँ (नवधा भक्ति) बताई। भक्ति के ये नौ विधि या प्रकार हैं – 1. श्रवण (ईश्वर के गुणों का सुनना), 2. कीर्तन (स्वयं ईश्वर का कीर्तन करना), 3. स्मरण (ईश्वर को याद करना), 4. पाद-सेवन (ईश्वर के चरणों की सेवा करना) 5. अर्चन (प्रभु की सेवा, शुश्रुषा करना), 6. वंदन (पूजा करना), 7. सख्य (सखा भाव से निवेदन करना), 8. दास्य (ईश्वर को स्वामी और स्वयं को उनका दास मानकर उपासना करना), 9. आत्मनिवेदन (अपनी बात विनयपूर्वक कहना)। सगुण काव्य-धारा के कवियों की रचनाओं में इन सब प्रकार की भक्ति का वर्णन हुआ है। सूर की रचनाओं में मुख्यतः सख्य भाव है हालाँकि वे वल्लभाचार्य से मुलाकात होने से पहले आत्मनिवेदन और दास्य भाव की रचनाएँ करते थे। उन्होंने 'श्रीमद्भागवत' के आधार पर कृष्ण-लीला का गायन किया है। तुलसी में दास्य भाव की प्रधानता है। रामकथा का आधार-ग्रंथ 'वाल्मीकि रामायण' है। सूर और तुलसी ने अपनी दृष्टि, नई शैली तथा रसों के विधान के द्वारा अपने काव्य को विशिष्ट बना दिया।

नौ प्रकार की भक्ति

1. श्रवण
2. कीर्तन
3. स्मरण
4. पाद–सेवन
5. अर्चन
6. वंदन
7. सख्य
8. दास्य
9. आत्म निवेदन

सगुण भक्ति-धारा तथा काव्य की विशेषताएँ

- सगुण भक्त-कवि जाति-पाँति में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने सभी को भक्ति का अधिकारी माना है।

  ''जाति-पाँति पूछे नहिं कोई। हरि को भजै सो हरि का होई।।''

- सगुण भक्त कवियों के आराध्य लीला करते हैं अर्थात् ये सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान हैं फिर भी आम आदमी की तरह चलते-फिरते, हँसते-बोलते तथा व्यवहार करते हैं।
- निर्गुण भक्तों की तरह इस धारा के कवियों ने भी गुरु को महत्त्व दिया है।
- इनके अनुसार ज्ञान से ईश्वर नहीं मिलते, इनकी भक्ति ईश्वर के नाम, गुण, रूप और लीला का स्मरण और वर्णन तथा उसके प्रति समर्पण भाव से प्रकट होती है।
- इनके काव्य में नवधा भक्ति को आधार बनाया गया है।
- इन्होंने भगवान के पालन करने वाले रूप की ओर अधिक ध्यान दिया है।
- मुख्यत: इन सब ने अपने आराध्य का गुण-कीर्तन किया है।

राम-भक्ति काव्यधारा

राम-भक्ति शाखा के कवियों ने राम को विष्णु का अवतार मानकर उन्हें ही अपने काव्य का विषय बनाया। रामकथा का आधारभूत ग्रंथ वाल्मीकि रचित 'रामायण' है। हिंदी में राम-भक्ति के प्रवर्तक रामानंद हैं। तुलसीदास राम-भक्ति के सबसे बड़े कवि हैं। सोलहवीं शताब्दी में इन्होंने 'रामचरितमानस' की रचना अवधी भाषा में की। यह हिंदी का अन्यतम महाकाव्य है। यह काव्यग्रंथ लोकप्रियता के साथ-साथ आदर और सम्मान का भी पात्र बना। 'रामचरितमानस' की चौपाइयाँ और दोहे जनता के हृदय में बसे हैं तथा प्रमाण की तरह प्रयुक्त किए जाते हैं। तुलसीदास ने राम-संबंधी ग्रंथ ब्रजभाषा में भी रचे, जैसे 'गीतावली', 'कवितावली', 'विनयपत्रिका' आदि।

चित्र 25.1तुलसीदास

तुलसीदास के अतिरिक्त स्वामी अग्रदास ने 'रामध्यान मंजरी' की रचना की, नाभादास ने राम-संबंधी फुटकर पद रचे। इनके बाद प्राणचंद्र चौहान ने 'रामायण महानाटक' तथा हृदयराम ने 'हनुमन्नाटक' लिखा।

राम-भक्ति धारा के काव्य की विशेषताएँ

- रामकाव्य में राम को विष्णु का अवतार माना गया है। इस धारा के काव्य के मुख्य विषय मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' इस धारा का विश्वप्रसिद्ध ग्रंथ है।
- 'रामचरितमानस' में राम के मर्यादापूर्ण स्वरूप का चित्रण हुआ है।
- इस धारा की भक्ति शास्त्रीय न होकर लोक-व्यवहार पर आधारित है।
- राम-काव्य प्रमुख रूप से प्रबंधात्मक (कथात्मक) काव्य है।
- मुख्यतः राम-काव्य अवधी में रचित है। यद्यपि ब्रजभाषा में भी रचनाएँ प्राप्त होती हैं।
- राम-काव्य प्रायः सभी काव्य-शैलियों में रचे गए हैं।
- मुख्यतः दोहा, चौपाई में यह काव्य रचा गया है, इसके अलावा कवित्त, सवैया आदि छंदों का प्रयोग भी हुआ है।

पाठगत प्रश्न 25.3

1. निम्नलिखित कथनों में सही अथवा गलत कथन के आगे 'हाँ' या 'नहीं' लिखकर उत्तर दीजिए :

   (क) सूफी साधक प्रेम के द्वारा परमात्मा को पाने की बात करते हैं। ( )

   (ख) सूफी काव्य की भाषा ब्रज है। ( )

   (ग) सूफी कवियों में मुल्ला दाऊद सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं। ( )

   (घ) सूफी कवियों ने हिंदू घरों में प्रसिद्ध लौकिक प्रेमकथाओं के द्वारा अलौकिक ईश्वर-प्रेम का वर्णन किया है। ( )

2. उचित विकल्प चुनकर नीचे लिखे वाक्यों को पूरा कीजिए:

   (क) सगुण भक्ति काव्य ....का काव्य है।

   (ख) राम-भक्ति काव्य में ....भक्ति प्रमुख है।

   (ग) राम-भक्ति काव्य के सबसे प्रमुख कवि ....हैं।

   (घ) सगुण भक्ति-काव्य में ....भक्ति को आधार बनाया गया है।

कृष्ण-भक्ति काव्यधारा

कृष्ण-भक्त कवि कृष्ण को विष्णु का अवतार मानते हैं, अतः कृष्ण-भक्ति भी वैष्णव भक्ति का अंग है। राम-काव्य में राम के मर्यादा-पुरुषोत्तम, आदर्श रूप का चित्रण हुआ है। जबकि, कृष्ण-काव्य में कृष्ण के लोक-रंजक रूप को ध्यान में रखकर उनकी मनोहारी लीलाओं का वर्णन किया गया है। कृष्ण-भक्ति को प्रचारित करने वाले प्रमुख संत और आचार्य हैं—निम्बार्काचार्य, चैतन्य महाप्रभु, हित हरिवंश तथा वल्लभाचार्य। आचार्य वल्लभ

ने कृष्ण-भक्ति का सर्वाधिक प्रचार किया और पुष्टि-मार्ग की स्थापना की। पुष्टि का अर्थ है भगवान् की कृपा या अनुग्रह। इसमें कृष्ण के बाल रूप की उपासना की जाती है। पुष्टिमार्ग के कई कवि हुए हैं। वल्लभाचार्य के पुत्र गोसाईं विट्ठलनाथ ने अपने पिता के चार शिष्य कवियों, कुंभनदास, सूरदास, परमानंददास और कृष्णदास तथा अपने शिष्यों में से चार कवियों, नंददास, गोविंदस्वामी, छीतस्वामी और चतुर्भुजदास को मिलाकर पुष्टि मार्गी भक्त-कवियों का एक वर्ग तैयार किया। जिसे 'अष्टछाप' के नाम से जाना जाता हैं। इन आठ कवियों के अतिरिक्त मीराँ और रसखान आदि ऐसे प्रमुख कवि हैं जिनका संबंध किसी संप्रदाय से नहीं था। सूर ने कृष्ण की लीलाओं से संबंधित लाखों पद लिखे जिनका संकलन 'सूरसागर' के नाम से प्रसिद्ध है। सूर जैसे अनन्य भक्त हैं वैसे ही उत्कृष्ट कवि। कृष्ण की बाल-लीला का अत्यंत मनोहारी चित्रण सूरदास ने किया है। सूर के पदों की भाषा ब्रज है। कृष्ण-भक्ति कवियों ने बाल-लीला के अतिरिक्त सौंदर्य का भी अत्यंत हृदयस्पर्शी चित्रण किया है। सगुण-काव्य की परंपरा में कृष्ण-भक्ति काव्य अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और यह धारा लंबे समय तक प्रवाहमान रही है।

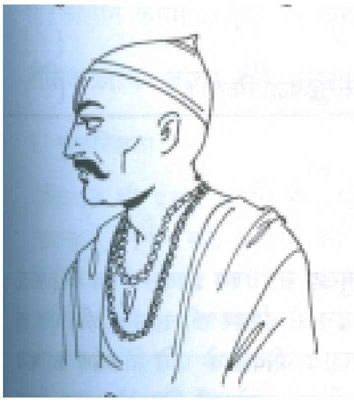

चित्र 25.2 सूरदास

कृष्ण-भक्ति काव्य की प्रमुख विशेषताएँ

- इस धारा के कवियों ने कृष्ण को विष्णु का अवतार मानकर उनकी लीलाओं का वर्णन किया है। इनकी काव्य-रचना का मूल आधार 'श्रीमद्भागवत' है।
- इस काव्य में मुख्यतः कृष्ण के लोकरंजक रूप का वर्णन किया गया है।
- इनकी भक्ति सख्य भाव की है अर्थात् इन्होंने कृष्ण के साथ सखा-भाव प्रदर्शित किया है। मीराँ ने कृष्ण को अपना पति माना है। इसे दांपत्य भाव कहते हैं।
- मुख्यतः कृष्ण की बाल-लीला और गोपियों के विरह का अत्यंत मनोहारी वर्णन किया गया है। सूर का वात्सल्य भाव का वर्णन तो अद्वितीय है।
- वात्सल्य, माधुर्य और सखा-भाव की अत्यंत सुंदर और सजीव अभिव्यक्ति कृष्ण-काव्य में हुई है।
- कृष्ण-काव्य की भाषा अत्यंत सरस ब्रजभाषा है।
- यह काव्य मुक्तक पदों के रूप में रचित है इसलिए, यह अत्यंत गेय है। सवैया, घनाक्षरी आदि छंदों का सुंदर प्रयोग हुआ है।

पाठगत प्रश्न 25.4

बताइए–सही (√) या गलत (X) ?

1. कृष्ण-भक्ति काव्य की भाषा मुख्यतः ब्रजभाषा है। ( )

टिप्पणी

2. इस काव्य में मुख्यतः कृष्ण की बाल तथा यौवन-लीलाओं का वर्णन हुआ है। ( )
3. इस धारा के सबसे प्रसिद्ध कवि सूरदास हैं। ( )
4. सूरदास का वात्सल्य-वर्णन अद्भुत है। ( )
5. 'अष्टछाप' के कवियों को वल्लभाचार्य ने समूहबद्ध किया। ( )

25.5 रीतिकाल

रीतिकाल से अभिप्राय

एक निश्चित परिपाटी पर लिखे जाने के कारण इस काल को रीतिकाल और इस काल में रचे गए काव्य को रीतिकाव्य कहा गया। यह समय 1650 ई. से 1850 ई. तक का है।

हमने देखा कि भक्तिकाल की हिंदी कविता का मुख्य उद्देश्य ईश्वर-भक्ति था। संतों, सूफ़ियों और सगुण भक्त कवियों ने अपने-अपने ढंग से ईश्वर की साधना की। एक तो यह कि भक्तिकालीन कविता में लोक-सुख के बजाय जीवन के प्रति विकर्षण का भाव था। दूसरे यह कि इस काल में छोटे-बड़े राजाओं-रजवाड़ों को फिर से अपना राज्य मिल गया। दिल्ली में मुग़ल शासन स्थापित हो चुका था। इस काल के कवि प्रायः किसी-न-किसी राज दरबार से जुड़े थे। दरबारों के कवि (या अन्य कवि भी) अपने आश्रयदाताओं को प्रसन्न करने के लिए प्रेम और शृंगार का चित्रण करने के साथ-साथ अलंकार, नायिका-भेद, छंद, रस आदि के शास्त्रीय विवेचन संबंधी ग्रंथ या इन्हीं विषयों पर आधारित मुक्तकों की रचनाएँ करने लगे। काव्य की इस शास्त्रीय प्रवृत्ति को 'रीति' कहा जाता है। (विशिष्ट पद-रचना रीति है)। काव्य-रचना की यह प्रवृत्ति सन् 1650 से 1850 तक प्रमुख बनी रही। इसीलिए इस प्रवृत्ति को 'रीति' प्रवृत्ति, इस काल को रीतिकाल और इस समय के साहित्य को रीतिकालीन साहित्य कहते हैं। शृंगार की अधिकता होने के कारण इस काल को 'शृंगार काल' भी कहा गया, चूँकि शृंगार वर्णन भी एक निश्चित रीति में ही लिया गया, अतः इसे रीतिकाल कहना ही उचित है। इस प्रवृत्ति के अतिरिक्त कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने इस परिपाटी से अलग काव्य रचना की। ऐसे कवियों को रीतिमुक्त कवि कहा जाता है।

रीतिकालीन युग की परिस्थितियाँ

हम पहले पढ़ चुके हैं, इस दौर में मुग़ल साम्राज्य के गौरव का स्थान विलासिता, साज-सज्जा, सुरा-सुंदरी, नाच-गान, खुशामद और पाखंड ने ले लिया था। फलस्वरूप बड़े-छोटे सामंतों और ज़मीदारों में इसी विलासिता, शान-शौकत और दरबार सजाने की प्रवृत्ति बढ़ गई। काव्य-चर्चा भी इन राजाओं के लिए मनोरंजन का एक और साधन थी। इनके दरबारों में कवियों कलाकारों को इसी कारण सम्मान मिलता था। दरबारी कवि भी हर तरह से अपने आश्रयदाता को रिझाने-प्रसन्न करने का प्रयत्न करते थे और उनकी वीरता, उदारता तथा उनके पूर्वजों का गुणगान बढ़ा-चढ़ाकर करते थे। फल यह निकला कि भक्तिकाल की आध्यात्मिक साधना और लोक-जीवन से जुड़ाव वाले सरल मार्ग से भटक कर कविता आश्रयदाता राजाओं की चाटुकारिता और नायक-नायिका के चटपटे शृंगार-वर्णन में उलझकर रह गई।

इस युग के कवि के लिए प्रमुख विषय थी नारी, किंतु ध्यान नारी के तन पर था, उसके मन को पढ़ने का अवकाश न था। रीतिकालीन कवियों के वर्णन के मुख्य विषय

नायिका-भेद, नखशिख-वर्णन (नारी के पाँव से सिर तक के अंग-प्रत्यंग का शृंगारिक वर्णन) रहे। यहाँ शृंगार का प्रतिपादन ही मुख्य है। यद्यपि रीतिकालीन कवियों ने भक्ति और नीतिपरक काव्य भी रचा, परंतु वह गौण है। पर हाँ! एक विशेषता है रीतिकालीन काव्य जड़ाऊ है, खूब चमक-दमक भरा, चमत्कार-पूर्ण।

रीतिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

1. शृंगारिकता

रीतिकाल की प्रमुख प्रवृत्ति है– शृंगारिकता। कृष्णभक्त कवियों की प्रेम पगी रसिक भावनाओं, निर्गुण संत कवियों की कोमल प्रेम-व्यंजनाओं तथा 'लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम' को समझाने वाली सूफ़ी कवियों की प्रेम कथाओं ने रीतिकालीन कवियों के लिए शृंगार-वर्णन का द्वार पहले ही खोल दिया था। इस काल के कवियों ने दरबारी वातावरण की रसिकता के अनुरूप उसे ढालकर भोगपरक शृंगार-चित्रण में अपना कौशल दिखाया।

2. आलंकारिकता

रीतिकाल की दूसरी प्रमुख प्रवृत्ति है– आलंकारिकता। रसिकता-पगे दरबारी वातावरण में चमत्कार-प्रदर्शन के लिए कवियों को अलंकारों का सहारा लेना आवश्यक जान पड़ा। यह प्रवृत्ति दो प्रकार से परिलक्षित होती है :

(i) कुछ कवियों ने अलंकारों के लक्षण बताकर उनके उदाहरण दिए।

(ii) अन्य कवियों ने अलग से लक्षण तो नहीं बताए, किंतु उनकी कविता अलंकारों के साँचों में ढल गई।

दरबार में ही नहीं, समाज में भी धाक जमाने के लिए पांडित्य का प्रदर्शन आवश्यक था। सो इन कवियों ने अलंकृत रचनाओं से अपने आचार्यत्व की धाक जमाई। अलंकारों के द्वारा काव्य में चमत्कार पैदा किया। बिहारीलाल के ही एक दोहे में 'श्लेष' का चमत्कार देखें :

मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोय।

जा तन की झाँई परै, स्याम हरित दुति होय।।

इस दोहे में 'हरित' शब्द से तीन अर्थ निकलते हैं – 1. हरा 2. प्रसन्न 3. हर ली गई, मंद पड़ गई।

3. भक्ति और नीति

भक्तिकाल के परवर्ती होने के कारण रीतिकाल के कवियों में भक्ति का रुझान भी मिलता है। दरबारी कवि होने के कारण वे नीति के उपदेश भी देते हैं, किंतु इनकी कविताओं में भक्त-कवियों की-सी तल्लीनता नहीं है। फिर भी यत्र-तत्र भक्ति और नीति की प्रभावशाली रचनाएँ इन्होंने की हैं। भक्ति और नीति की एक-एक रचना देखें क्रमशः

टिप्पणी

(i) *वृंदावनवारी बनवारी की मुकुट वारी*
पीत पटवारी वाहि मूर्ति पै वारी हौं। (देव)

(ii) *नर की अरु नल-नीर की, गति एकै करि जोय।*
जेतो ऊँचो चढ़ि चलै, तेतो नीचो होय।।

— बिहारीलाल (विनम्रता का बखान)

4. काव्य-रूप

दरबारी वातावरण होने के कारण इस काल में प्रबंध काव्य की रचना के लिए अनुकूल वातावरण नहीं था, इसलिए इस काल में प्रायः मुक्तक ही रचे गए। दोहा, कवित्त, सवैया जैसे छंदों में रचनाएँ कर इस समय के कविगण अपने ज्ञान, कवित्व-शक्ति और चमत्कार के प्रदर्शन से बाजी मारने के पक्ष में थे।

5. ब्रजभाषा

इस काल की प्रमुख भाषा ब्रजभाषा है। भक्तिकाल में सूरदास ब्रजभाषा को विशिष्ट आकर्षण दे चुके थे। रीतिकालीन कवियों को भी ब्रजभाषा की मधुरता और कोमलता ने आकृष्ट किया।

6. लक्षण-ग्रंथों का निर्माण

आप जान चुके हैं कि दरबार में अपने पांडित्य की धाक जमाने के लिए रीतिकाल के कवियों ने आचार्य कर्म भी निभाया और लक्षण ग्रंथों की रचना की। हालाँकि इन्होंने काव्यशास्त्र के क्षेत्र में कोई मौलिकता नहीं दिखाई और संस्कृत के काव्यशास्त्रों को ही एक प्रकार से पुनः प्रस्तुत कर दिया।

7. वीर रस की कविता

इस युग के कुछ कवियों ने वीर रस की कविताएँ लिखीं। दरबार में रह रहे कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं का मनोबल बढ़ाने के लिए वीर रस की कविताएँ लिखीं, हालाँकि अलंकारों का बाहुल्य इनकी कविताओं में भी है। भूषण, सूदन आदि ऐसे ही कवि हैं। भूषण की ये पंक्तियाँ देखें :

इंद्र जिमि जंभ पर बाड़व सु-अंभ पर,
रावन स-दंभ पर रघुकुल राज है।
तेज तम-अंस पर कान्ह जिमि कंस पर,
त्यों मलिच्छ—बंस पर सेर सिवराज है।

8. आलंबन-रूप में प्रकृति-चित्रण

रीतिकाल के कवियों ने प्रकृति का अत्यंत मनोहारी चित्रण किया है विभिन्न ऋतुओं के अत्यंत सजीव चित्र रीतिकालीन कविता में मिलते हैं। कहीं-कहीं ये प्रकृति के स्वतंत्र चित्र न होकर रस-विशेष के वर्णन-क्रम में उद्दीपन के रूप में आए हैं। संयोग शृंगार के क्रम में प्रकृति का रूप अत्यंत रमणीय है तो वियोग-वर्णन के क्रम में मार्मिक और पीड़ा को बढ़ाने वाला।

9. नारी-चित्रण

रीतिकाल के कवियों को अपनी उद्दाम शृंगार की कविताओं से आश्रयदाता राजाओं की

कुंठा-वासना को तृप्त करना अभीष्ट था, इस कारण उन्होंने नारी को जिस रूप में चित्रित किया है वह विलासिनी प्रेमिका है, भोग-विलास की सामग्री है। नारी के बाहरी सौंदर्य पर ही इन कवियों का ध्यान रहा है। नारी के सामाजिक महत्त्व, प्रेम- स्नेह, उसके माता-भगिनी रूप की उन्होंने अनदेखी की है। स्त्री के माथे की बिंदी के संदर्भ में बिहारीलाल का यह दोहा देखें :

कहत सबै बेंदी दिए आँक रसगुनो होत।
तिय लिलार बेंदी दिए अगनित बढ़त उदोत।।

10. नायिका-भेद वर्णन

संस्कृत काव्यशास्त्र की नकल पर इन्होंने नायिकाओं के भेद-प्रभेद का भी खूब वर्णन किया है, जैसे–स्वकीया, परकीया, सामान्या, मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा आदि।

रीतिकाल की प्रमुख काव्य-धाराएँ

आप पहले भी पढ़ आए हैं, रीतिकालीन कवियों को तीन धाराओं में रखा जा सकता है –

(क) रीतिबद्ध धारा, (ख) रीतिमुक्त धारा, (ग) रीति सिद्ध धारा

निम्नलिखित आरेख से इसे स्पष्टता से समझ सकते हैं –

रीतिकाल

रीतिबद्ध काव्यधारा
प्रमुख कवि : केशवदास, पद्माकर, भिखारीदास, चिंतामणि, देव, मतिराम, भूषण, सेनापति आदि

रीतिमुक्त काव्यधारा

- **शृंगारिक रचनाएँ** — **प्रमुख कवि** : घनानंद, बोधा
- **नीतिपरक रचनाएँ** — **प्रमुख कवि** : गिरधर
- **वीर काव्य** — **प्रमुख कवि** : सूदन, लाल

रीतिसिद्ध काव्यधारा
प्रमुख कवि : बिहारी लाल

(क) रीतिबद्ध काव्य-धारा

रीतिबद्ध कवि उन आचार्य कवियों को कहते हैं जिन्होंने अपने आश्रयदाता राजाओं, कवियों और काव्य-रसिकों के लिए काव्य के अंगों का निरूपण करने वाली कविता रची। काव्यांगों के लक्षण भी पद्य में ही लिखकर इन्होंने सरस और चमत्कारपूर्ण उदाहरणों की रचना की। इनका मन इन सरस उदाहरणों को रचने में ही रमता था। इनमें से कुछ कवियों ने लक्षण-ग्रंथों के साथ-साथ लक्ष्य ग्रंथ (व्यावहारिक ग्रंथ) भी रचे। कुछ ने केवल लक्षण-ग्रंथों की ही रचना की। लक्षण-ग्रंथ और लक्ष्य ग्रंथ दोनों

टिप्पणी

रचने वाले प्रमुख कवि हैं : केशव, देव, मतिराम, चिंतामणि, पद्माकर आदि तथा केवल लक्षण-ग्रंथ लिखने वाले कवियों में प्रमुख हैं श्रीपति आदि।

(ख) रीतिमुक्त काव्य-धारा

रीतिकाल का अधिकांश काव्य रीतिबद्ध परिपाटी पर रचा गया है, परंतु इस काल में ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने केशवदास और चिंतामणि की तरह कोई लक्षण ग्रंथ नहीं रचा और न ही बिहारीलाल की तरह कोई रीतिसिद्ध रचना की। घनानंद, आलम, बोधा और ठाकुर आदि ऐसे ही कवि हैं। इन्होंने युगीन रूढ़ि-पालन का निर्वाह न करते हुए, अपनी स्वच्छंद भावनाओं-अनुभूतियों को सरस कवित्त-सवैयों में अभिव्यक्त किया। प्रेम और अनुराग के चित्र यहाँ भी हैं, किंतु इनमें वाक्-चातुर्य की जगह हृदय की सहजता और सरसता है। स्थूल रूप-चित्रण के साथ-साथ इन्होंने आंतरिक भाव-सौंदर्य का भी चित्रण किया। घनानंद रचित निम्नलिखित सवैया देखें :

पहिलें घन-आनँद सींचि सुजान कहीं बतियाँ अति प्यार पगी।
अब लाय बियोग की लाय बलाय बढ़ाय बिसास दगानि दगी।
अँखियाँ दुखियानि कुबानि परी, न कहूँ लगैं कौन घरी सुलगी।
मति दौरि थकी, न लहै ठिक ठौर, अमोही के मोह मिठास ठगी।

(ग) रीतिसिद्ध काव्य-धारा

रीतिकाल में ऐसे कवि भी हुए जिन्होंने रीति-काव्य की परिपाटी को अपनाते हुए भी लक्षण-ग्रंथ नहीं रचे, अपितु स्वतंत्र तथा मौलिक काव्य रचनाओं के द्वारा अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। इस धारा के अत्यंत प्रसिद्ध कवि बिहारी हैं। इनकी 'सतसई' मुक्तकों का सागर है और इसमें संकलित हर दोहे का स्वतंत्र विषय है। इन दोहों की कसावट, थोड़े से शब्दों में बड़ी बात कह देने की कला देखते ही बनती है। बिहारी-सतसई के संदर्भ में एक उक्ति काफी प्रचलित है –

सतसैया के दोहरे, ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं, घाव करैं गंभीर।।

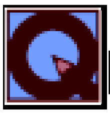

पाठगत प्रश्न 25.5

1. उपयुक्त शब्द चुनकर खाली स्थानों को भरिए।

   (क) ....कवि के लिए प्रमुख विषय नारी थी।

   (ख) ....कविता में इसी लोक के सुखों-आकर्षणों की प्रमुखता थी।

   (ग) 1650 ई. से 1850 ई. तक ....काव्य की मुख्य प्रवृत्ति बनी रही।

   (घ) रीतिकाल के काव्य में ....रस की प्रधानता रही।

2. नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' या 'नहीं' में दीजिए–

   (क) रीतिकालीन कविता में ईश्वर-भक्ति का स्वर प्रमुख है। ( )

(ख) रीतिकाल के कवियों ने अधिकतर मुक्तक काव्य-शैली को अपनाया है। ( )

(ग) रीतिकालीन कवियों ने नारी के केवल बाहरी रूप को देखा। ( )

(घ) रीतिकाल की कविता में अलंकारों का कुशल प्रयोग हुआ है। ( )

3. निम्नलिखित वाक्यों में विकल्प के रूप में दिए गए दो-दो शब्दों में से उपयुक्त शब्द पर (√) का चिह्न लगाइए :

(क) केशव, चिंतामणि, देव और पद्माकर *रीतिबद्ध/रीतिमुक्त* कवि हैं।

(ख) घनानन्द *वीर-भावना/प्रेम-भावना* के कवि हैं।

(ग) रीतिकालीन कवि पहले *आचार्य/कवि* थे बाद में *कवि/आचार्य।*

(घ) रीतिकालीन कवियों के प्रिय छंद *दोहा-कवित्त-सवैया/चौपाई-सोरठा* थे।

(ङ) रीतिकालीन कवियों की भाषा अवधी/ब्रजभाषा है।

25.6 आधुनिक काल

आधुनिकता का अभिप्राय

हम पढ़ चुके हैं कि हिंदी साहित्य के इतिहासकारों से सन् 1850 ई. से हिंदी के आधुनिक काल का प्रारंभ माना है। आपके मन में यह प्रश्न उठता होगा कि आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व जो आधुनिक था, वह भी तो आज प्राचीन हो गया। वस्तुतः आधुनिकता केवल समय की नहीं होती, दृष्टि और चेतना की होती है। 1850 ई. के आसपास से हमें हिंदी साहित्य में देश और समाज की समस्याओं और प्रश्नों के प्रति नई चेतना, नई दृष्टि और नए जीवन-मूल्य दिखाई पड़ने लगते हैं तथा अंध-जर्जर रूढ़ियों और परंपराओं के तिरस्कार का भाव दिखाई पड़ने लगता है। इसीलिए इस काल को हम 'आधुनिक काल' कहते हैं।

विदेशी शिक्षा तथा विचारों के संपर्क में आने के फलस्वरूप जनता जागरूक हुई और उसका ध्यान अपने गौरवपूर्ण अतीत साथ ही वर्तमान अधोगति पर गया। धार्मिक-सामाजिक सुधार आंदोलनों के द्वारा समाज को नई प्रेरणा मिली और आर्थिक शोषण तथा दुर्दशा ने राजनीतिक चेतना जगाई। स्वतंत्र ढंग से विचार करने की परिस्थिति बनी। परिणामतः कविता राज्याश्रय, सामंतों-धनिकों से हटकर मध्यवर्ग, दीन-दलितों, किसानों-मज़दूरों तक पहुँची। सामयिक समस्याओं और संघर्षों का चित्रण होने लगा।

आधुनिक काल के संदर्भ में दो महत्त्वपूर्ण बातें याद रखनी चाहिए। एक तो यह कि छापेखानों के आने और नए ज्ञान-विज्ञान से परिचय के बाद हिंदी गद्य में भी विभिन्न विधाओं में लेखन प्रारंभ हुआ। दूसरी महत्त्वपूर्ण बात यह कि गद्य-पद्य दोनों के लिए दिल्ली-मेरठ में बोली जाने वाली खड़ी बोली में लेखन होने लगा। आधुनिक काल के पूर्व हिंदी क्षेत्र के भिन्न-भिन्न भाषाओं में काव्य-रचना होती रही थी, जैसे मैथिली,

अवधी, ब्रजभाषा, राजस्थानी आदि। हाँ, आदिकाल के गोरखनाथ अमीर खुसरो की भाषा इसी खड़ी बोली का पूर्व रूप थी।

यहाँ हम आधुनिक काल के काव्य-विकास पर ही ध्यान केंद्रित करेंगे। इस काल की परिस्थितियाँ तेजी से बदलती रही हैं इसलिए इस काल की कविताओं के विषय और स्वर भी बदलते रहे हैं। डेढ़ सौ वर्ष से भी लंबे आधुनिक काल के प्रारंभ के कई वर्षों तक को हम उस समय के ऐसे महत्त्वपूर्ण साहित्य-सेवियों के नाम से याद करते हैं जिन्होंने हिंदी के विकास में मूल्यवान योगदान किया। बाद में काव्य-शिल्प, काव्य-चेतना और काव्य-विषयों को ध्यान में रखकर उन काव्यांदोलनों के नाम से उन कालखंडों को जाना जाने लगा।

आधुनिक काल के काव्य-विकास को हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता तथा समकालीन कविता के उप-शीर्षकों में बाँटकर देखते-पढ़ते हैं।

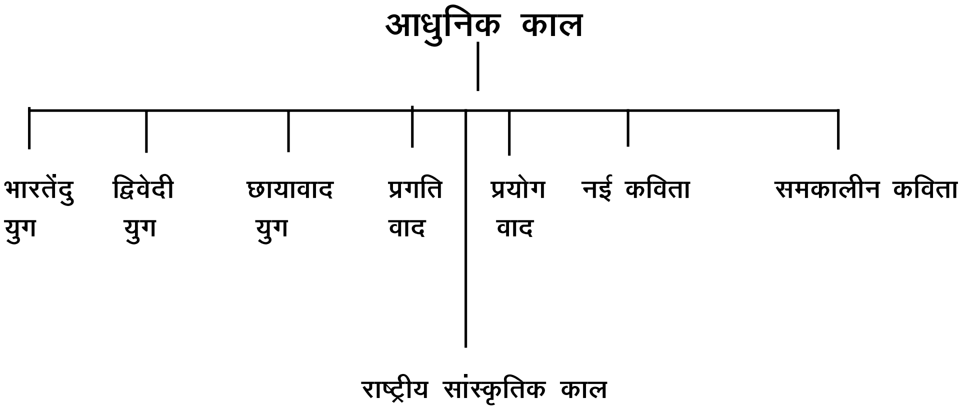

आइए, क्रमशः इनसे हम परिचित हो लें तथा इस काल के प्रतिनिधि कवियों के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

1. भारतेंदु युग

सन् 1850 से 1900 तक के आधुनिक हिंदी काव्य को हम भारतेंदु युग के अंतर्गत रखते हैं। 1870 के आसपास भारतेंदु की प्रारंभिक रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं। अपनी 'कालचक्र' नामक पुस्तक में भारतेंदु ने नोट किया: 'हिंदी नए चाल में ढली, सन 1873 ई.'।

सन् 1850 ई. से आधुनिक काल का प्रारंभ होता है।

भारतेंदु हरिश्चंद्र ने ब्रजभाषा में कविताएँ लिखीं और गद्य-लेखन में खड़ी बोली का प्रयोग किया। पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं, अनेक साहित्यिक संस्थाएँ बनीं। भारतेंदु की प्रेरणा से ही हिंदी-जगत् में राष्ट्रीय-सांस्कृतिक वातावरण बना तथा अनेक लेखकों ने इनके दिखाए मार्ग पर चलकर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया। भारतेंदु के इन महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण ही इस कालखंड को **भारतेंदु युग** कहा गया।

यह युग हिंदी का प्रवेश-द्वार है। अंग्रेज़ी शासन स्थापित हो जाने पर देशी उद्योग-धंधे चौपट होने लगे। वे भारत का कच्चा माल अपने देश में ले जाकर उनसे बने सामान भारत में ही महँगी कीमत पर बेच रहे थे। राजनीतिक अत्याचारों और आर्थिक शोषण

के दो पाटों के बीच जनता पिस रही थी। महँगाई और अकाल से भारतीयों की कमर टूट रही थी। हिंदू समाज में प्रचलित कुरीतियों, जैसे– बाल-विवाह, छुआछूत, धार्मिक बाह्याडंबरों के खिलाफ़ लोगों में जागरूकता आ रही थी। इस नई चेतना से भरकर कवियों ने अपनी कविताओं में तत्कालीन दुर्दशा का चित्रण कर जनता को जगाने का काम किया। अतीत का गौरव-गान भी किया गया। इस युग का काव्य बहुरंगी है। इस युग में भक्ति के पद, श्रृंगार रस के सवैये और कवित्त नीतिपरक रचनाएँ भी मिलती हैं और राजभक्ति, देशभक्ति, समाज-सुधार तथा तत्कालीन जीवन की सच्चाई को उजागर करने वाली कविताएँ भी मिलती हैं। एक ओर आदर्श है तो दूसरी ओर यथार्थ, एक तरफ़ अलंकारों के प्रति मोह, पुराने छंदों का प्रयोग, चली आती काव्यभाषा (ब्रजभाषा) में कविता लिखने की प्रवृत्ति है, तो दूसरी ओर लोक-छंदों का प्रयोग भी है।

भारतेंदु युग के काव्य की विशेषताएँ

देशभक्ति और राजभक्ति का मिला-जुला भाव

इस युग के कवि एक ओर अंग्रेज़ी शासन में शांति, सुव्यवस्था, नए आविष्कारों-विचारों की प्रशंसा करते हैं, दूसरी ओर देश के नैतिक पतन और आर्थिक दुर्दशा पर आँसू बहाते हैं। **भारतेंदु** ने लिखा :

आवहु, सब मिलि के रोवहु भारत-भाई।
हा!हा! भारत-दुर्दशा न देखी जाई।
तथा
अंगरेज-राज सुख-साज सजै सब भारी,
पै धन बिदेस चलि जात यहै अति ख्वारी।

जनजीवन का चित्रण तथा सुधार का स्वर

इस काल के अधिकांश कवि पत्रकार भी थे। वे नई चेतना और सुधार की भावना से भरे थे, अतएव उन्होंने बाल-विवाह, छुआछूत, पुलिस, भ्रष्टाचार, अकाल, कर, महामारी आदि पर चोट करने के साथ ही धार्मिक आडंबरों आदि की भी निंदा कर जनता को जगाने का यत्न किया।

प्रकृति-चित्रण

इस युग के कवियों ने प्रकृति का चित्रण प्रायः उद्दीपन के रूप में किया है अर्थात् संयोग के क्षणों में यह नायक-नायिका के सुख को बढ़ाती है तो वियोग के क्षणों में विरह-वेदना को। यत्र-तत्र आलंबन के रूप में जो प्रकृति-चित्रण हुआ है उसमें संवेदना कम, विवरणात्मक चित्रण अधिक है। उदाहरण के लिए भारतेंदु के 'यमुना-वर्णन' को देखा जा सकता है।

इतिवृत्तात्मकता की प्रधानता

इस युग के काव्य में देशोद्धार की भावना अधिक है, काव्यत्व कम। अनुभूति की

टिप्पणी

गहराई, संवेदना की तीव्रता की जगह इतिवृत्तात्मकता (सपाट, सीधे ढंग का वर्णन) है। यत्र-तत्र व्यंग्य-विनोद ने कथन में पैनापन अवश्य ला दिया है। **भारतेंदु** की एक मुकरी देखें:

बाहर-बाहर सब रस चूसै
भीतर से तन-मन-धन मूसै
जाहिर बातन में अति तेज
क्यों सखि, साजन? नहिं, अंगरेज।

प्रतापनारायण मिश्र की 'हर गंगा' और 'बुढ़ापा' आदि में भी ऐसा ही व्यंग्यात्मक-स्वर है।

प्रमुख विशेषताएँ
- देशभक्ति और राजभक्ति का समन्वय
- जनजीवन का चित्रण और सुधार पर बल
- प्रकृति का उद्दीपन-रूप में या यथार्थ चित्रण
- इतिव त्तात्मकता
- काव्य में ब्रजभाषा का ही प्रयोग
- परंपरागत छंदों का प्रयोग

भाषा

भारतेंदु-युग में गद्य खड़ी बोली में लिखा जाने लगा, किंतु काव्य-लेखन प्रायः ब्रजभाषा में ही होता रहा।

ब्रजभाषा-काव्य के परंपरागत छंदों तथा लोक छंदों का प्रयोग

कवित्त, सवैया, छप्पय, दोहा आदि ब्रजभाषा के प्रचलित छंदों के प्रयोग के साथ-साथ, जनजीवन से जुड़ाव के कारण, कवियों ने लावनी, कजली, बिरहा, मल्हार, ठुमरी, कहरवा, चैती जैसे लोक छंदों में भी काव्य-रचना की। संस्कृत के वर्ण-वृत्तों के साथ-साथ ग़ज़ल के प्रयोग भी हुए। इसके साथ-साथ अंग्रेज़ी और बांग्ला के छंदों का प्रयोग भी मिलता है।

इस काल के प्रमुख कवि हैं — भारतेंदु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन' और अंबिकादत्त व्यास।

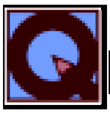

पाठगत प्रश्न 25.6

1. निम्नलिखित कथनों के आगे सही (√) या गलत (X) का निशान लगाइए :

   (क) आधुनिकता केवल समय की होती है। ( )

   (ख) आधुनिक काल में विदेशी शिक्षा तथा विचारों के संपर्क में आने से जनता जागरूक हुई और उसका ध्यान अपनी वर्तमान अधोगति तथा गौरवपूर्ण अतीत की ओर गया। ( )

   (ग) आधुनिक काल की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता खड़ी बोली का काव्य-भाषा के रूप में प्रयोग है। ( )

   (घ) आधुनिक काल की कविता को हम भारतेंदु युग, द्विवेदी युग, छायावाद, राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद तथा नई कविता के उपशीर्षकों में बाँटकर देखते-पढ़ते हैं। ( )

2.. रिक्त स्थानों को भरिए–

   (क) भारतेंदु युग का आरंभ सन् ....में और अंत सन्.............में होता है।

(ख) भारतेंदु युग में भक्ति और श्रृंगार के साथ-साथ ....और ....की कविताएँ लिखी गईं।

(ग) भारतेंदु युग के काव्य की भाषा .... थी।

(घ) इस युग के काव्य में काव्यत्व कम .... अधिक है।

(ङ) इस काल के सर्वप्रमुख कवि हैं .... ।

3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

(क) इस युग को भारतेंदु युग क्यों कहा गया?

(ख) नई चेतना जगाने का मुख्य कारण क्या था?

(ग) भारतेंदु युग में किन दो धाराओं का समन्वय हुआ?

---

2. द्विवेदी युग

बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक 18 वर्षों, सन् 1900 से 1918 ई. के समय को हिंदी साहित्य के इतिहास में 'द्विवेदी युग' के नाम से जाना जाता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र के बाद हिंदी को आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के रूप में प्रखर साहित्य सेवी मिला। सन् 1900 में हिंदी की साहित्यिक पत्रिका 'सरस्वती' का प्रकाशन आरंभ हुआ। सन् 1903 में द्विवेदी जी ने इसका संपादन भार सँभाला और सन् 1920 तक इस पद पर बने रहे। 'सरस्वती' के माध्यम से उन्होंने हिंदी भाषा को निखारा और नए कवियों को प्रेरणा दी, उन्हें तैयार किया और अपने समय की साहित्यिक चेतना को नई दिशा दी। इसीलिए उन्हीं के नाम से इस काल-खंड को **'द्विवेदी युग'** कहा जाता है।

राजनीति के क्षेत्र में गोखले, तिलक और फिर गांधी के आने से राष्ट्रीयता और स्वतंत्रता की भावना बलवती हो रही थी। 'आर्य समाज' के द्वारा दयानंद सरस्वती सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक रूढ़ियों पर आघात कर रहे थे। सारा वातावरण सुधार की भावनाओं से भरा था। ऐसे में श्रृंगार की कविताओं, नीतिपरक सूक्तियों, समस्या पूर्तियों (किसी एक पंक्ति के आधार पर काव्य-रचना) में लोगों की रुचि नहीं रह गई थी। अतः हिंदी कविता ने भी करवट बदली और विषय तथा शिल्प की दृष्टि से उसमें परिवर्तन आया। **मैथिलीशरण गुप्त** की ये पंक्तियाँ देखें –

हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी,
आओ विचारें आज मिलकर, ये समस्याएँ सभी।

('भारत भारती' से)

द्विवेदी युग के काव्य की विशेषताएँ

समाज-सुधार

आर्यसमाज तथा अन्य सुधारवादी आंदोलनों और महात्मा गांधी के विचारों-आंदोलनों से प्रभावित होकर इस युग के कवियों ने बाल-विवाह, दहेज, छुआछूत, स्त्री-अशिक्षा जैसी सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया तथा विधवा-विवाह, नारी-शिक्षा, वेश्या-उद्धार आदि का समर्थन किया।

सामान्य जन का चित्रण

पहले ईश्वर, ईश्वर के अवतार, राजा, अमीर-उमरा, योद्धा और सुंदरी-स्त्रियाँ आदि काव्य का विषय हुआ करते थे। इस युग में किसान-मज़दूर, अछूत, साधारण स्त्री, विधवा आदि की करुणा और दीनता का चित्रण किया गया अर्थात् सामान्य जन काव्य का विषय बना।

मानवतावाद

ऐसा नहीं है कि इस युग के कवि ईश्वर के प्रति आस्थावान् नहीं थे, किंतु अब वे भगवान् के कोरे गुणगान, मूर्तिपूजा और धार्मिक अनुष्ठानों की जगह दीन-दलितों की सेवा, मानव-प्रेम आदि को सच्ची ईश्वरभक्ति मानने लगे थे। जैसे :

जग की सेवा करना ही बस
है सारे सारों का सार।

नीति और आदर्श

नीतिमयता और मर्यादा भारतीय संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। इस काल के कवियों के कथा-काव्यों के पात्र उदार आचरण और व्यवहार वाले हैं तथा कथा के अंत में नीति और आदर्श का रंग है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक प्रसंग इसी दृष्टि से चुने गए हैं। सर्वत्र सत् जीतता है, असत् हारता है तथा ऊँचे आदर्शों के लिए पात्र अपना सर्वस्व बलिदान करते हैं। इन कविताओं का लक्ष्य केवल मनोरंजन करना न होकर पाठकों को आदर्श पर चलने की प्रेरणा देना था। अतः इन कथा-काव्यों में चित्रित प्रेम भी वासनापूर्ण तथा उदात्त न होकर त्याग-बलिदान की भावनाओं से परिपूर्ण है।

बौद्धिकता

इस काल के कवि यह समझ रहे थे कि विज्ञान और तर्क के इस युग में पुरानी आस्थाएँ डगमगा रही हैं। अतएव उन्होंने अपने समय की धारा के मेल में अपने पात्रों और प्रसंगों को मानवीय और विश्वसनीय बनाया। मैथिलीशरण गुप्त के राम (साकेत) अवतार होकर स्वर्ग का संदेश नहीं लाए हैं। बल्कि भूतल को ही स्वर्ग बनाने आए हैं। 'हरिऔध' की राधा ('प्रिय-प्रवास') समाज-सेविका है। उनके कृष्ण कनिष्ठिका पर गोवर्धन को धारण नहीं करते बल्कि उनके पराक्रम और सेवा-कार्य से आश्चर्यचकित ब्रजवासी कह उठते हैं कि लगता है कृष्ण ने पहाड़ ही उठा लिया है।

प्रकृति-वर्णन

इस युग के काव्य में प्रकृति का सजीव, संवेदनशील, मानव के सुख-दुख में सहभागी के रूप में चित्रण नहीं के बराबर हुआ है। मात्र उद्दीपन के रूप में भी चित्रण नहीं हुआ है। यत्र-तत्र स्वतंत्र प्रकृति-चित्रण मिलता है, वह भी ग्रामीण परिवेश का अधिकांश चित्रण इतिवृत्तात्मक ही है।

काव्य-रूप

इस युग में कथा-काव्यों की प्रधानता रही। 'साकेत' (गुप्त जी), 'प्रियप्रवास' (हरिऔध जी) जैसे महाकाव्य, 'जयद्रथ वध' (गुप्त जी) जैसे खंडकाव्य इसी समय में लिखे गए। छोटे-छोटे विषयों पर मुक्तक और कुछ गीत भी लिखे गए।

भाषा

हम जान चुके हैं कि भारतेंदु-युग में गद्य तो खड़ी बोली में लिखा जाने लगा था, परंतु पद्य-लेखन ब्रजभाषा में ही हो रहा था। वे खड़ी बोली को रूखी कहकर काव्य के लिए अनुपयुक्त ठहराते थे। द्विवेदी जी के प्रयत्नों से अब कविताएँ भी खड़ी बोली में लिखी जाने लगीं। जब बात खड़ी बोली के प्रयोग (भाषा-प्रयोग) पर हो तो स्पष्ट है कि कविता बहुत मार्मिक-भावात्मक नहीं बन पाएगी। द्विवेदी युग की कविताएँ प्रायः इतिवृत्तात्मक हैं। मैथिलीशरण गुप्त जैसे कवियों ने खड़ी बोली का काव्य-भाषा के रूप में निरंतर प्रयोग करते हुए कविता को भी निखारा। इस तरह से द्विवेदी युग में काव्य-लेखन पूर्णतः खड़ी बोली में होने लगा और कविता धीरे-धीरे इतिवृत्तात्मकता की कैद से भी निकलने लगी। हालाँकि ब्रजभाषा-प्रेमी कवि अभी भी अपनी राह चलते रहे।

छंद

इस युग की एक अन्य विशेषता विविध छंदों का प्रयोग है। ब्रजभाषा के कवि तो पारंपरिक कवित्त और सवैया छंदों में ही लिखते रहे। 'हरिऔध' ने संस्कृत के वर्णवृत्तों और उर्दू के चौपदों ('चुभते चौपदे') में कविता लिखी। मैथिलीशरण गुप्त ने हरिगीतिका आदि अपेक्षाकृत कम प्रचलित छंदों का भी कुशलता से प्रयोग किया और (संस्कृत की शैली वाले) अतुकांत छंद भी रचे।

द्विवेदी युग के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ

इस युग के कवियों में नाथूराम शर्मा 'शंकर' (शंकर-सर्वस्व), श्रीधर पाठक (कश्मीर-सुषमा, भारत-गीत), अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (प्रिय प्रवास, वैदेही वनवास, चोखे चौपदे), मैथिलीशरण गुप्त (भारत भारती, जयद्रथ वध, 'साकेत', 'यशोधरा') तथा रामनरेश त्रिपाठी (मिलन, पथिक) को भुलाया नहीं जा सकता। इनमें भी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं मैथिलीशरण गुप्त।

गुप्त जी ने अपने काव्य में भारत के प्राचीन गौरव को याद दिलाया, वर्तमान के प्रति निराशा प्रकट की, किंतु भविष्य के लिए आशा का संदेश देते रहे। सौभाग्य से उन्होंने लंबी आयु पाई और अंत तक वे राष्ट्र की उन्नति की प्रेरणा देने वाले काव्य रचते रहे। इसीलिए आदर देने को उन्हें राष्ट्रकवि कहा गया। 'भारत भारती' का प्रकाशन सन् 1912 में हुआ और उन्हें इससे देशव्यापी ख्याति मिली। गुप्त जी के काव्यों के विषय प्रायः पौराणिक और ऐतिहासिक हैं। अपने कथा-काव्यों में उन्होंने बार-बार देश-प्रेम, स्वतंत्रता, नारी-गौरव, अछूतोद्धार जैसे ज्वलंत विषयों को वाणी दी।

द्विवेदी युग की प्रमुख विशेषताएँ

- समाज-सुधार
- सामान्य जन का चित्रण
- मानवतावाद
- नीति और आदर्श
- बौद्धिकता
- प्रकृति-वर्णन
- काव्य-रूप
- काव्य-भाव के रूप में खड़ी बोली का प्रयोग
- छंदों का प्रयोग

पाठगत प्रश्न 25.7

1. निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनकी स्थिति के अनुसार सही (√) या गलत (X) के चिह्न लगाइए :

   (क) द्विवेदी-युग का नाम हजारीप्रसाद द्विवेदी के नाम पर पड़ा। ( )

   (ख) द्विवेदी-युग की प्रमुख पत्रिका 'सरस्वती' थी। ( )

(ग) द्विवेदी-युग की काव्य-भाषा ब्रजभाषा थी। ( )

(घ) गांधी जी और आर्यसमाज से यह युग अत्यंत प्रभावित था। ( )

(ङ) इस युग की कविता का प्रधान स्वर राष्ट्रीयता था। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(क) द्विवेदी-युग के काव्य की तीन विशेषताएँ लिखिए।

(ख) इस युग के तीन प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

(ग) इस युग में रचे दो महाकाव्यों के नाम बताइए।

---

3. छायावाद युग (1918-1938)

छायावाद युग का आरंभ 1918 से माना जाता है। कुछ लोग इसमें अंग्रेज़ी और बांग्ला के रोमांटिसिज़्म और मिस्टिसिज़्म का प्रभाव देखते हैं तो कुछ द्विवेदी युगीन इतिवृत्तात्मकता से मुक्ति तथा खड़ी बोली कविता के परिष्कार के रूप में इसका मूल्यांकन करते हैं। निश्चित ही छायावादी काव्य अपने पूर्ववर्ती काव्य से अनेक स्तरों पर नितांत भिन्न था। यह कविता मनुष्य की आंतरिक भावनाओं को व्यक्त करने में कविता की सार्थकता तलाश कर रही थी। इसीलिए इसे 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह भिन्न भी कहा गया। शुरू में, पारंपरिक कविता से भिन्न होने के कारण इसे हल्का–फुल्का और भिन्न ढंग से लिया गया। **'छायावाद'** नाम भी इसी का परिणाम है। यद्यपि बाद में खुद छायावादी कविताओं ने न सिर्फ़ इस नाम को स्वीकारा बल्कि अपने तरह से अपनी कविताओं की विशेषता के संदर्भ में इसकी व्याख्या भी प्रस्तुत की। प्रसाद, पंत, निराला तथा महादेवी वर्मा छायावाद के आधार स्तंभ हैं। छायावाद की उपलब्धियों के आधार पर इसे आधुनिक हिंदी कविता का 'स्वर्णिम काल' माना जाता है।

तत्कालीन परिस्थितियाँ

गांधी जी की अगुवाई में चल रहा स्वतंत्रता आंदोलन अपने संघर्ष काल में था। देश में पश्चिमी अर्थव्यवस्था, औद्योगीकरण और संस्कृति का प्रभाव दिखाई दे रहा था। सामंती व्यवस्था टूट रही थी और तेज़ी से शहरीकरण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी थी। लेकिन सामाजिक मूल्य व्यवस्था अपनी जगह बरकरार थी। व्यक्ति की निजी ज़िंदगी में समाज संस्थाओं की भूमिका सहयोग के स्तर पर कम हो रही थी जबकि तमाम निर्णायक मुद्दों पर उसे उन संस्थाओं से नियंत्रित होना पड़ता था। फलतः व्यक्ति का मन छटपटाहट के दौर से गुज़र रहा था। कवि-साहित्यकार तथा अन्य प्रबुद्ध जन धर्म के आचार-पक्ष की अपेक्षा उसके विचार-पक्ष (भारतीय दर्शन) की ओर आकृष्ट हो रहे थे। अद्वैतवाद (जीवात्मा और परमात्मा एक हैं, सब में वही ईश्वर समाया है) तथा सर्वात्मवाद (सभी जगह एक ही आत्मा का निवास है) का प्रभाव हमारे चिंतन पर पड़ रहा था। पश्चिमी विचारों से प्रभावित, अपेक्षाकृत समृद्ध जीवन जी रहे पढ़े-लिखे लोग समाज में व्याप्त रूढ़ियों-अंधविश्वासों से खिन्न थे, किंतु उनसे मुक्ति का वातावरण अभी नहीं बना था, अतः वे भीतर-भीतर घुटन का अनुभव कर रहे थे। पश्चिमी मानवतावाद तथा शैली, कीट्स, वड्र्सवर्थ जैसे अंग्रेज़ी कवियों का काव्य उभरते कवियों को प्रभावित कर रहा

था। द्विवेदी युग के काव्य की नीरसता के विरुद्ध विद्रोह की भावना पनप ही रही थी। इन सब के मिले-जुले परिणाम में एक नई काव्यधारा चल निकली जिसे हम **छायावाद** कहते हैं।

छायावादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ

वैयक्तिकता

दो महायुद्धों के बीच बढ़ते औद्योगीकरण और धार्मिक-सामाजिक रूढ़ियों के दमघोंटू वातावरण के प्रति लोगों के भीतर सुलगते विद्रोह के भाव ने उन्हें परंपरा से हटकर नए सिरे से विचार करने का महत्त्व समझाया। कविगण बाहरी दुनिया के साथ-साथ अपने दुख-सुख सुनाने को भी बेचैन हुए। परिणामतः छायावादी कविता बहिर्मुखी न होकर अंतर्मुखी होती गई। 'प्रसाद' के 'आँसू', पंत के 'उच्छ्वास' तथा 'निराला' और महादेवी वर्मा के गीतों में हृदय का यही विषाद और अवसाद का वैयक्तिक स्वर व्यक्त हुआ है, किंतु ये कवि इतने कुशल हैं कि निजी अनुभूतियों को जगत् से जोड़ देते हैं। निराला की निम्न पंक्तियों को देखें:

देखा दुखी एक निज भाई
दुख की छाया पड़ी हृदय पर मेरे
झट उमड़ वेदना आई
मैंने 'मैं' शैली अपनाई।

सौंदर्य और प्रेम

छायावादी कवि संवेदनशील थे और उनकी दृष्टि भी सूक्ष्म थी। प्रकृति और नारी दोनों का सौंदर्य उन्हें आकृष्ट करता था, इसीलिए उनके काव्य में नारी और प्रकृति के बड़े आकर्षक चित्रण हुए हैं। छायावादी कवि प्रकृति को जड़ नहीं, चेतन मानते है। नारी के बाह्य रूप की अपेक्षा उसके आंतरिक गुणों (त्याग, कोमलता, सहृदयता आदि) पर उसकी दृष्टि गई है। जहाँ नारी के बाहरी आकर्षण का चित्रण है वहाँ भी उसमें वैसी स्थूलता नहीं है। 'कामायनी' में श्रद्धा के सौंदर्य का वर्णन, जयशंकर प्रसाद ने इस प्रकार किया है :

नील परिधान बीच सुकुमार
खुल रहा मृदुल अधखुला अंग,
खिला हो ज्यों बिजली का फूल
मेघ वन बीच गुलाबी रंग।

रहस्यवाद

छायावादी कवियों ने प्रकृति में चेतना का आरोप किया है। उन्हें कण-कण में अनंत सत्ता की उपस्थिति प्रतीत होती है। उस परम सत्ता से वियोग की वेदना है इनमें। अंत में वे उस परमसत्ता के दर्शन अपने अंतर्जगत् में ही प्राप्त कर संतुष्ट हो लेते हैं :

तरी को ले जाओ मँझधार
डूब कर हो जाओगे पार;
विसर्जन ही है कर्णाधार
वही पहुँचा देगा उस पार! **(महादेवी)**

राष्ट्रीय भावना

छायावादी काव्य पर जीवन से पलायन का आरोप लगाया जाता रहा है *('ले चल मुझे भुलावा देकर/मेरे नाविक, धीरे-धीरे।' – प्रसाद)*, किंतु देशप्रेम और राष्ट्रीय गौरव को भी छायावादी कवियों ने वाणी दी है। प्रसाद के 'लहर' संकलन की अनेक कविताओं और उनके नाटकों में राष्ट्रीय भाव के अनेक प्रेरक गीत हैं

अरुण यह मधुमय देश हमारा ....'

या।

हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती
स्वयंप्रभा समुज्ज्वला स्वतंत्रता पुकारती ....

निराला जी का यह गीत भी भुलाने लायक नहीं है–

वर दे, वीणावादिनी वरदे

मानवतावाद

छायावादी कवि रवींद्रनाथ ठाकुर की लोकप्रियता से आकृष्ट थे। बंग्ला मनीषी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद आदि से भी ये प्रेरित हुए और उनसे रचनात्मक ऊर्जा ली। एक अंतर्राष्ट्रीय चेतना भी उस समय जाग रही थी। इन सभी के प्रभाव में छायावादी काव्य में विश्व-प्रेम की भावना मिलती है तथा जाति-धर्म जैसी संकीर्णताओं से ऊपर उठने का शंखनाद भी सुनाई देता है। प्रसाद जी की 'कामायनी' में मनु को प्रेरित करते हुए श्रद्धा कहती है :

शक्ति के विद्युत्कण, जो व्यस्त
विकल बिखरे हैं, हो निरुपाय;
समन्वय उसका करो समस्त
विजयिनी मानवता हो जाए।

भाषा तथा शैलीगत विशेषताएँ

डॉ. नगेंद्र ने छायावाद को 'स्थूल के प्रति सूक्ष्म का विद्रोह' कहा है। विभिन्न आलोचकों ने छायावाद को द्विवेदी युग की इतिवृत्तात्मकता की प्रतिक्रिया का परिणाम बताया है। स्वयं कवि प्रसाद ने संस्कृत प्रयोगों के साक्ष्य पर 'छाया' की व्याख्या करते हुए कहा था – 'मोती के भीतर छाया की जैसी तरलता'' 'छाया' का अर्थ पानी अर्थात् आब, चमक, कांति लिए हुए। उन्होंने निष्कर्षतः कहा, ''छाया भारतीय दृष्टि से अनुभूति और अभिव्यक्ति की भंगिमा पर अधिक निर्भर करती है।'' छायावादी काव्य की शैली और इसके शिल्प को देखते हुए ये बातें ठीक लगती हैं। छायावादी काव्य मुख्यतः प्रबंध-काव्य न होकर, गीति-काव्य है ('कामायनी' और 'लोकायतन' अपवाद हैं)। छायावादी काव्य में मुक्तक गीतों और लंबी कविताओं की प्रधानता है। इन कविताओं की भाषा की विशेषता है वक्रता, व्यंजना का प्रयोग, बात को सांकेतिक शैली में कहना :

टिप्पणी

वह मेरे प्रेम विहँसते
जागो, मेरे मधुबन में

यहाँ प्रातः कालीन बिंबों के बीच जागरण-वेला का चित्रण है। यह जागना केवल नींद से जागना नहीं, चेतना के स्तर पर जागना है *(जगे हम, लगे जगाने विश्व/लोक में फैला फिर आलोक'*–प्रसाद)। छायावादी काव्य में अलंकारों का प्रयोग चमत्कार पैदा करने के लिए नहीं, कथन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किया गया है। 'कामायनी' की पंक्ति है : *'सिंधुसेज पर धरा वधू अब, तनिक संकुचित बैठी सी'* – यहाँ रूपक भी है और पृथ्वी का चित्रण वधू के रूप में करके उसका मानवीकरण किया गया है।

अनुभूति की तीव्रता, रम्य कल्पना, भाषा की वक्रता और गीतिमयता ने छायावाद को अभूतपूर्व गौरव प्रदान किया है। छायावादी काव्य पर पलायन का जो आरोप लगाया जाता रहा है, वह आंशिक रूप से ही सत्य है। छायावादी कविताओं में पुनर्जागरण की चेतना अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। शक्ति के आह्वान की अनेक महत्त्वपूर्ण कविताएँ इस धारा के अंतर्गत लिखी गई हैं। निराला की लंबी कविता 'राम की शक्तिपूजा' इसका अन्यतम उदाहरण है। डॉ. नगेंद्र ने ठीक कहा है कि *'इस कविता का गौरव अक्षय है।'*

छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं –

1. व्यक्तिवाद
2. सौंदर्य तथा प्रेम
3. रहस्यवाद
4. राष्ट्रीय भावना
5. मानवतावाद
6. विशेष प्रकार की शैली

मुक्त छंद

हम पहले जान चुके हैं छायावादी कविता ने पूर्ववर्ती काव्य की परिपाटी से अनेक स्तरों पर मुक्ति का प्रयास किया। कविता की विषयवस्तु, भाषा, शैली के साथ-साथ यह बात छंद पर भी लागू होती है। परंपरागत छंदों के यथारूप प्रयोग, उनमें बदलाव से लेकर मुक्त छंद तक का प्रयोग इन कवियों ने किया। निराला मुक्त छंद के आरंभकर्ता माने जाते हैं। उनका मानना था कि 'मनुष्यों की तरह कविता की भी मुक्ति होती है। यह मुक्ति मात्रा के बंधनों को त्यागने में है। निराला ने कविता के प्रवाह और लय को महत्त्वपूर्ण माना। उनकी कविता 'जूही की कली' शुरू में स्वीकार नहीं की गई। इस तरह की कविता का ''रबड़ छंद'', केंचुआ छंद' आदि कह कर उपहास किया गया, किंतु जैसाकि आप आगे जानेंगे, मुक्त छंद ही बाद की हिंदी कविता का आधार बना। आपके इस पाठ्यक्रम में निर्धारित निराला की कविता 'तोड़ती पत्थर' मुक्त छंद की ही रचना है।

पाठगत प्रश्न 25.8

1. निम्नलिखित कथनों के आगे सही (√) अथवा ग़लत (X) का चिह्न लगाइए:

   (क) छायावादी काव्य में छाया का वर्णन किया गया है। ( )

   (ख) छायावादी कविता द्विवेदीयुगीन कविता की इतिवृत्तात्मकता के विरुद्ध विद्रोह की कविता है। ( )

   (ग) निराला के काव्य में छायावादी काव्य की कोमलता भी है और शोषण के विरुद्ध विद्रोह का स्वर भी। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

   (क) छायावादी कविता की तीन विषयगत विशेषताएँ लिखिए।

   (ख) छायावादी कविता की भाषा-शैली की दो विशेषताएँ लिखिए।

   (ग) छायावादी कविता के चार प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

टिप्पणी

4. राष्ट्रीय-सांस्कृतिक काव्य-धारा

अंग्रेज़ों के शासन में भारत आर्थिक-राजनीतिक अत्याचार, शोषण और दमन का संकट झेल रहा था। स्वतंत्रता की कामना देशवासियों में बलवती होती जा रही थी। अंततः उनका क्षोभ और आक्रोश स्वतंत्रता-संग्राम के रूप में फूट पड़ा। हमारे देश में जो राष्ट्रीयता की भावना उभरी उसकी तीन मुख्य बातें हैं :

1. पराधीनता की ग्लानि और उससे मुक्त होने की इच्छा तथा प्रयास।
2. देश की मुक्ति तथा उद्धार के लिए एकता, स्वाभिमान और आत्मविश्वास की भावना तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए देश के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण।
3. आधुनिक जीवन-मूल्यों के आलोक में वर्तमान व्यवस्था पर पुनर्विचार तथा उसका पुनर्गठन।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक धारा के कवियों में चिंतक-विचारक, समाज-सुधारक, देश-प्रेमी का रूप प्रबल है।

मैथिलीशकरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा, 'नवीन, 'एक भारतीय आत्मा', माखनलाल चतुर्वेदी आदि कवियों ने स्वतंत्रता-संघर्ष में योगदान किया और जेल यातना भोगी। परिणामस्वरूप यत्र-तत्र क्रांति और विद्रोह के स्वर भी कविता में आए। गुप्त जी ने भारत के गौरवपूर्ण अतीत का बार-बार स्मरण कराया, माखनलाल चतुर्वेदी मातृभूमि के लिए शीष चढ़ाने वालों को ही असली श्रद्धा-पात्र मानते हैं और ब्रिटिश राज्य के गहनों (हथकड़ियों) को तोड़ने के लिए आतुर हैं। 'नवीन' शोषित-पीड़ितों, भूखे-नंगों को जगाने के लिए शंखनाद करते हैं, रामनरेश त्रिपाठी ग़रीबों की सेवा को ही सच्ची ईश्वर-भक्ति समझते हैं और दिनकर 'दिल्ली' जैसी कविता के माध्यम से अतीत का गौरव-गान भी करते हैं और वर्तमान दुर्दशा पर क्षोभ भी प्रकट करते हैं। इन राष्ट्रवादी भावधारा के कवियों में से अधिकांश गांधीवादी थे और सत्य-अहिंसा सांप्रदायिक सद्भाव के आदर्शों का पूर्णतः पालन करने वाले थे, यद्यपि कुछ सशस्त्र क्रांति के समर्थक भी थे :

कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ
जिससे उथल-पुथल मच जाए।

दिनकर जैसे कवियों ने महाजनी शोषण के विरुद्ध आवाज़ उठाई :

हटो व्योम के मेघ पंथ से, स्वर्ग लूटने हम आते हैं।
दूध-दूध ओ वत्स, तुम्हारा दूध खोजने हम आते हैं।

हिंदी की राष्ट्रीय-सांस्कृतिक धारा की रचनाएँ मुख्यतः दो प्रकार की है:

1. तात्कालिक समस्याओं-राजनीतिक परतंत्रता, सामाजिक कुरीतियों, आर्थिक शोषण, ग़रीबी – से संबंधित। इनका लक्ष्य जनता को जगाना, तात्कालिक लक्ष्य-सिद्धि के

लिए जन-चेतना पैदा करना है।

2. शाश्वत जीवन-मूल्यों– आपसी भाईचारा, समता, न्याय, बुद्धि और हृदय का समन्वय, अहंकार से मुक्ति, सेवा-भाव, सहिष्णुता, धर्म-निरपेक्षता आदि पर बल देने वाली कविताएँ।

इस धारा की कविताओं के मूल में पीड़ा की अनुभूति है, चूँकि इनका उद्देश्य जन-चेतना पैदा करना है, अतः वैचारिकता और उपदेशात्मकता अधिक है। अर्थात् कवित्व पर चिंतक, सुधारक, देश-प्रेमी का रूप हावी है। अतः काव्य-कला की दृष्टि से यह बहुत श्रेष्ठ कोटि का काव्य नहीं है।

5. उत्तर छायावाद तथा प्रगतिवाद काव्य

छायावाद और प्रगतिवाद के बीच प्रखर कवियों की जमात हमें मिलती हैं जिनकी चर्चा के बिना हिंदी काव्य का इतिहास पूरा नहीं होता। पहले रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' (लाल चूनर) और फिर हरिवंश राय 'बच्चन' (निशा निमंत्रण, मधुशाला आदि) के आने से यह नया परिदृश्य सामने आता है। इस दौर के कवियों की अपनी-अपनी मानसिकता है, किंतु एक सामान्य बात यह है कि इन कवियों ने जीवन के अनुभव को सीधी-सरल भाषा में अभिव्यक्त किया। भगवतीचरण वर्मा, बच्चन, सुमन, अंचल आदि की कविताएँ इस प्रसंग में स्मरणीय हैं। एक तरह से कहें तो छायावादी और प्रगतिवादी काव्य के बीच की जगह को इन कवियों ने पाटा है। इनके स्वर मिले-जुले हैं। आइए इस कविता की कुछ बानगी देखें:

है चिता की राख कर में माँगती सिंदूर दुनिया
आज मुझसे दूर दुनिया
X X X
मंदिर-मस्जिद बैर कराते
मेल कराती मधुशाला......... **–बच्चन**

उत्तर छायावादी कवियों ने जीवनानुभवों को सीधी-सरल भाषा में अभिव्यक्त किया।

मोटे तौर पर राजनीति की भाषा में जो मार्क्सवाद है, कविता की भाषा में वह 'प्रगतिवाद' है। 1936 ई. तक भारत में अंग्रेज़ी शासन के संरक्षण में व्यापार, उद्योग-धंधे सुदृढ़ हो चुके थे। जमींदारी-प्रथा स्थापित हो चुकी थी। ग़रीबों पर अमीरों का शोषण-चक्र बढ़ता जा रहा था। जमींदार और किसान, उद्योगपति और मज़दूर-वर्गों की यह विषमता स्पष्ट थी। देश के स्वतंत्रता-आंदोलन ने शोषण से मुक्ति की चेतना भी जगाई। जीवन के कटु यथार्थ से लोगों का हर दिन सामना हो रहा था। ऐसे में छायावादी कल्पना लोक की कविताओं के लिए अवकाश नहीं था। उधर रूस की सफल क्रांति से प्रेरित लेखकों ने अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर प्रगतिवादी लेखक संघ की स्थापना की थी जिसकी शाखा भारत में भी खुली और 1936 में प्रेमचंद की अध्यक्षता में इसका प्रथम सम्मेलन संपन्न हुआ। इस विचार और आंदोलन से प्रेरित हिंदी के कवियों ने जो काव्य रचा वह प्रगतिवादी काव्य कहलाया।

मुख्य प्रवृत्तियाँ

सारा समाज दो वर्गों में बँटा है–शोषक (पूँजीपति) और शोषित (गरीब)। पूँजी के

टिप्पणी

प्रमुख विशेषताएँ :

1. देश की स्वतंत्रता की कामना
2. देश की अखंडता के प्रति विश्वास
3. नए जीवन-मूल्यों के प्रति विश्वास

असमान वितरण को समाप्त कर, वर्गहीन समाज की स्थापना के द्वारा ही विश्व में सुख-शांति लाई जा सकती है। साहित्यकार का कर्त्तव्य है कि वह अपने लेखन से ऐसी चेतना जगाए जिससे शोषकों के विरुद्ध जनता में क्षोभ और आक्रोश पैदा हो, वह क्रांति करे और इस शोषण-चक्र को निर्मूल करे। इस दृष्टि से हिंदी में जो काव्य लिखा गया, वह क्रांति की ललकार से भरा और वर्तमान जीवन की आर्थिक कठिनाइयों तथा शोषण के चित्र उकेरने वाला था। निराला और पंत ने भी बाद में ऐसी कविताएँ लिखीं। प्रगतिवादी कवियों में **नागार्जुन** प्रमुख हैं :

फटे वस्त्र हैं, घर से बाहर निकलेगी कैसे लजवंती।
शर्म न आती, मना रहे वे महँगाई की रजत जयंती।।

केदारनाथ अग्रवाल ने उतनी ही धारदार प्रगतिवादी कविताएँ लिखीं, किंतु वे प्रकृति के अत्यंत सुरम्य चित्र भी उकेरते रहे :

मैंने उसको/जब जब देखा/लोहा देखा
लोहा जैसा/तपते देखा/गलते देखा/ढलते देखा
('वीरांगना' स्त्री पर कविता)

X X X

धूप चमकती है चाँदी की साड़ी पहने
मैके में आई बेटी की तरह मगन है
(प्रकृति का चित्र)

क्रांति के लिए ललकार का यह स्वर देखें:

गा कोकिल, बरसा पावक कण
नष्ट-भ्रष्ट हो जीर्ण-पुरातन
(पंत)

पंत की ही नारी-मुक्ति का आह्वान करनेवाली पंक्तियाँ :

मुक्त करो नारी को मानव, मुक्त करो नारी को,
युग-युग की निर्मम कारा से, सजनि, सखी, प्यारी को।

प्रगतिवादी कवि साहित्य को मनोरंजन की वस्तु नहीं मानता, उसे उपयोगिता की तुला पर तौलता है। प्रगतिवादी काव्य की भाषा लोकग्राहक है। छंदों में लोकगीतों का प्रभाव है। वस्तुतः शिल्प-शैली से अधिक, इन कवियों का ध्यान विषय पर केंद्रित है। 'सुंदर' की अपेक्षा यह कविता 'सत्यं' और 'शिवं' की है।

प्रगतिवादी कवियों ने थोथे आदर्शवाद और रूढ़ियों से ध्यान हटाकर वास्तविक यथार्थवाद की ओर ध्यान केंद्रित किया तथा कविता को जीवन के निकट ले आए। यत्र-तत्र रूस-चीन के खुले समर्थन आदि के कारण प्रगतिवादी कवियों ने सपाटबयानी भी की है:

लाल रूस का दुश्मन, साथी, दुश्मन हिंदुस्तान का

ऐसी कविताओं में प्रगतिवाद की सही सामर्थ्य नहीं दिखाई पड़ती।

प्रगतिवादी काव्य की मुख्य प्रवृत्तियाँ :

1. पूँजी के असमान वितरण के विरोध में शोभितों में जन-चेतना जगाना।
2. कहीं-कहीं कविता शुद्ध प्रचार बन गई।
3. प्रकृति के सुंदर चित्र भी मिलते हैं।
4. कविता को मनोरंजन की नहीं, उपयोग की वस्तु मानते हैं।
5. भाषा में सरलता
6. छंदों में लोकगीतों का प्रभाव।
7. कविता को जीवन के निकट ले आया।

6. प्रयोगवाद और नई कविता

सन् 1943 में अज्ञेय (सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय) के संपादन में सात कवियों (मुक्तिबोध, नेमिचंद्र जैन, भारतभूषण अग्रवाल, गिरजाकुमार माथुर, प्रभाकर माचवे, रामविलास शर्मा और अज्ञेय) का सम्मिलित संकलन 'तार सप्तक' के नाम से छपा। यहीं से प्रयोगवाद का आरंभ माना जाता है। पुनः सन् 1951 में अज्ञेय ने सात अन्य कवियों (भवानीप्रसाद मिश्र, शकुंत माथुर, हरिनारायण व्यास, शमशेर बहादुर सिंह, नरेश मेहता, रघुवीर सहाय और धर्मवीर भारती) का संकलन 'दूसरा सप्तक' के नाम से संपादित किया। इस संकलन की भूमिका में अज्ञेय ने लिखा कि प्रयोग का कोई वाद नहीं है.........प्रयोग अपने आप में इष्ट नहीं है, वह साधन है, सत्य को जानने का। अर्थात् नए-नए प्रयोगों के द्वारा कवि कविता के सत्य तक पहुँच सकता है।

वस्तुतः प्रयोगवादी जीवन-मूल्यों को नई दृष्टि से देखने के आग्रही हैं। उन्होंने व्यक्ति, उसके सुख-दुख, आशा-आकांक्षा को अधिक महत्त्व दिया। यूरोपीय साहित्य और वहाँ के आंदोलनों से भी ये कवि प्रभावित रहे, विशेषकर टी.एस. इलियट से। मनोवेत्ता फ्रायड का भी प्रभाव इन पर है। शैली-शिल्प में नए प्रयोग करने के कारण ही इस धारा का नाम प्रयोगवाद पड़ा। प्रयोगवादी कवि व्यक्ति की विकृतियों को दमित वासना, अतृप्त कामना, कुंठा का भंडार मानता है। वर्तमान इनके लिए पीड़ा, त्रास, निराशा से भरा है। विज्ञान, बुद्धिवाद और तर्क के प्रभाव में आकर वे भावनाओं की अनदेखी करते हैं। प्रयोगवादी कवि मानता है कि उसने जिस सत्य का अनुभव किया है वह नया है और उसे पुराने भाषा–शब्दों, उपमानों, प्रतीकों–के सहारे स्पष्ट नहीं किया जा सकता। अतएव वे अभिव्यक्ति के नए-नए ढंग खोजते हैं, जैसे विराम-चिह्नों का मनचाहा प्रयोग, छोटे-बड़े अक्षर, आड़ी-तिरछी रेखाएँ, छोटी-बड़ी काव्य-पंक्तियाँ, व्याकरण के नियमों का बेपरवाही से प्रयोग। यही कारण है कि प्रारंभ में इस कविता को समझने में लोगों को कठिनाई हुई। परंपरागत छंद-विधान की जगह इन्होंने विषयानुकूल नई गद्‌य-लय का भी प्रयोग किया।

'संघर्ष-क्रांत' मानव की स्थिति का चित्रण मुक्तिबोध इस प्रकार से करते हैं:

> दिल के भीतर गर्म ईंट है, गर्म ईंट है
> जले हुए ठूँठ के तने सी स्याह पीठ है
> जमाने की जीभ निकल पड़ी है।

सन् 1959 में अज्ञेय ने ही जब नए सात कवियों (प्रयागनारायण त्रिपाठी, कीर्ति चौधरी, मदन वात्स्यायन, केदारनाथ सिंह, कुँवर नारायण, विजयदेव नारायण साही और सर्वेश्वरदयाल सक्सेना) का संकलन संपादित किया तब तक नई कविता स्थापित हो चुकी थी।

प्रयोगवाद और **नई कविता** के दौर ऐसे घुले-मिले हैं कि इनके सहयोगी कवि इनमें से एक से अधिक को छूते-काटते चलते हैं और इनकी विचारधारा में भी कोई मूलभूत अंतर नहीं दिखलाई पड़ता।

सन् 1954 में 'नयी कविता' (संपादक : जगदीश गुप्त और रामस्वरूप चतुर्वेदी) पत्रिका का प्रकाशन हुआ। चाहें तो यहीं से प्रयोगवाद से अलग नई कविता की पहचान कर सकते हैं। नई कविता में मनुष्य और उसके समग्र अनुभव को पकड़ने का यत्न हुआ है। नई कविता की पहली पहचान हैं सर्वेश्वरदयाल सक्सेना :

टिप्पणी

सन् 1954 में 'नयी कविता' पत्रिका के प्रकाशन के आसपास से नई कविता आंदोलन का प्रारंभ हुआ।

और अब छीनने आये हैं वे
हमसे हमारी भाषा
यानी हमसे हमारा रूप
जिसे हमारी भाषा ने गढ़ा है

नई कविता के कवियों का मानना था कि अनुभूतियों के नए रचना-विधान को परंपरागत या रूढ़ भाषा-शैली में नहीं बाँधा जा सकता। इस तरह से हिंदी को नया भाषिक तेवर और नया मुहावरा मिला। अधिकांश कवियों ने नई कविता को प्रयोगवाद की विरासत अथवा उसका विकसित रूप माना है।

मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी वर्ग की मानसिक दुविधा का चित्रण अजित कुमार ने इस प्रकार किया है :

क्या करे नया लेखक?
पूँजी की, महलों की, सट्टे की प्रशस्ति करे?
बदले में सिल्क का कुर्ता, सोलापुरी धोती पहन
खुद भी चमक-दमक भरी सड़कों पर मौज करे?
सजे बजे ड्राइंग रूमों में कविता बनाये,
गुनगुनाये, गीत गाये।
नया लेखक क्या करे?

आगे चलकर नई कविता नाम ही प्रचलित हुआ और इस कविता की मोटे तौर पर दो धाराएँ मानी गईं : एक जिसमें व्यक्ति सत्य प्रमुख था तथा जिसका प्रतिनिधित्व अज्ञेय करते हैं और दूसरी जो सामाजिक प्रतिबद्धता को प्रमुखता देती है तथा जिसका प्रतिनिधित्व मुक्तिबोध करते हैं। अज्ञेय की 'नदी के द्वीप', 'साँप', 'असाध्यवीणा', 'कलगी बाजेर की' तथा मुक्तिबोध की 'ब्रह्मराक्षस', 'भूल-गलती', 'अंधेरे में' आदि कविताओं ने बहुत प्रसिद्धि पाई।

7. समकालीन (आज की) कविता

नई कविता-आंदोलन के बाद कई छोटे-बड़े काव्यांदोलन चलाए गए और नए-नए नामों से कविता को पुकारा गया, जैसे युयुत्सावादी कविता, अकविता आदि किंतु कोई भी आंदोलन कविता का स्वतंत्र स्वरूप गढ़ने में कामयाब नहीं हुआ और दीर्घजीवी भी नहीं रहा। आज हिंदी में ढेर सारी कविताएँ लिखी जा रही हैं और अच्छी कविताएँ भी लिखी जा रही हैं। किंतु आज का कवि किसी विशेष वाद से बँधा हुआ नहीं है। कविता की एक जनवादी धारा अवश्य है, किंतु वह भी आज की कविता की कई-कई धाराओं में से एक है।

आज की कविता के लिए कोई विषय अछूता नहीं है। मामूली से मामूली विषय पर भी प्रभावशाली कविताएँ लिखी जा रही हैं। वस्तुतः आज की कविता की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताएँ हैं– विषय-वैविध्य तथा मामूलीपन के भीतर की असाधारणता। भाषा के स्तर पर आज की कविता में बातचीत की सहजता या वार्तालाप की लय का होना महत्त्वपूर्ण है। आज के कवि की प्रतिबद्धता भावों की अभिव्यक्ति के प्रति है। आज की कविता में छंदों की वापसी भी हुई है। नई कविता के दौर में नवगीत आंदोलन चला था और तब शंभूनाथ सिंह, नईम, वीरेंद्र मिश्र, उमाकांत मालवीय, माहेश्वर, रमानाथ अवस्थी जैसे अनेक गीतकार सक्रिय थे। आज फिर गीतों को प्रतिष्ठा मिली है।

टिप्पणी

यों तो भारतेंदु, निराला, जानकीवल्लभ शास्त्री तक ने गज़लें लिखी हैं किंतु दुष्यंत कुमार के गज़ल-संग्रह 'साये में धूप' की सफलता के बाद हिंदी में गज़ल करने वाले कवियों की संख्या काफी बढ़ी है। दुष्यंत कुमार के एक शेर पर ध्यान दीजिए :

कोई हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

प्रयोगवादी दौर के कवियों में रघुवीर सहाय, कुँवर नारायण आदि को आज की कविता में भी सम्मान की दृष्टि से देखा गया। समकालीन कवियों की सूची लंबी है, किंतु धूमिल, अशोक वाजपेयी, भगवत रावत, ज्ञानेंद्रपति, राजेश जोशी, स्वप्निल श्रीवास्तव, गीतकार यश मालवीय, अनामिका, गोरख पांडेय, अरुण कमल आदि महत्त्वपूर्ण हैं। आज के कवियों में व्यंग्य-स्वर की भी प्रधानता मिलती है। तद्‌भव शब्दों की प्रधानता वाली भाषा के प्रति आज के कवि आग्रही हैं। यत्र-तत्र सपाटबयानी भी दिखती है। कविता की भाषा का मुहावरा तय करने का श्रेय प्रायः धूमिल और रघुवीर सहाय को दिया जाता है। इस संदर्भ में धूमिल की कुछ पंक्ति देखिए :

एक आदमी है जो रोटी बेलता है
एक आदमी है जो रोटी खाता है
एक तीसरा आदमी और है जो न रोटी बेलता है न खाता है
वह रोटी से खेलता है
मैं पूछता हूँ यह तीसरा आदमी कौन है?
मेरे देश की संसद इस पर मौन है।

आज की कविता संकलनों और पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से हर दिन सामने आ रही है।

1943 में 'तार सप्तक' के प्रकाशन से प्रयोगवाद का प्रारंभ माना जाता है।

नए सत्य की अभिव्यक्ति के लिए नई शिल्प-शैली पर बल।

आज की कविता की मुख्य विशेषताएँ :

1. मामूलीपन के भीतर की असाधारणता
2. विषय-वैविध्य
3. वार्तालाप की लय
4. व्यंग्य-स्वर
5. दोहों-ग़ज़लों की लोकप्रियता
6. केवल भावाभिव्यक्ति के प्रति प्रतिबद्धता, अन्य कोई प्रतिबद्धता नहीं।
7. तद्‌भव शब्द-बहुल भाषा

पाठगत प्रश्न 25.9

1. निम्नलिखित वाक्यों के आगे उनकी स्थिति के अनुसार सही (√) या ग़लत (X) का निशान लगाइएः
   - (क) राष्ट्रप्रेम की भावना स्वतंत्रता के बाद के हिंदी के काव्य में ही पाई जाती है। ( )
   - (ख) दिनकर के काव्य में माधुर्य और कोमल कल्पना है। ( )
   - (ग) रामेश्वर शुक्ल, 'अंचल' तथा 'बच्चन' छायावादी कवि हैं। ( )
   - (घ) प्रगतिवादी कविता में पूँजीपतियों का पक्ष लिया गया है। ( )
   - (ङ) 'तार सप्तक' में पाँच कवियों की कविताएँ संकलित हैं। ( )
   - (च) नई कविता में व्यक्ति का कम और समाज का चित्रण अधिक है। ( )
   - (छ) आज की कविता की एक मुख्य विशेषता मामूलीपन के भीतर की असाधारणता है। ( )
2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :
   - (क) राष्ट्रीय काव्यधारा के तीन मुख्य स्वर कौन-कौन से थे?
   - (ख) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्यधारा के दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
   - (ग) आधुनिक हिंदी काव्य में नारी के प्रति कवियों का क्या दृष्टिकोण रहा है?

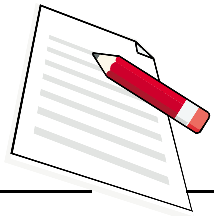

टिप्पणी

(घ) प्रयोगवादी कविता का आरंभ किस पुस्तक से माना जाता है? उसके संपादक कौन थे?

(ङ) आज की कविता के किंहीं दो प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।

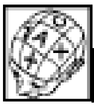

25.7 आपने क्या सीखा

हिंदी साहित्य के इतिहास को चार खंडों में बाँटकर पढ़ते हैं :

1. आदिकाल (वीरगाथा काल) 1000 ई. से 1350 ई.
2. पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) 1350 ई. से 1650 ई.
3. उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल या शृंगार काल) 1650 ई. से 1850 ई.
4. आधुनिक काल (इस काल में हिंदी में गद्य में भी लिखा जाने लगा इसलिए इसे गद्यकाल भी कह देते हैं) 1850 ई. से।

आदिकाल में सिद्धों, नाथों, जैनियों ने अपने-अपने धार्मिक विश्वासों के प्रचार के लिए काव्य रचे। क्षत्रिय राजाओं के दरबारी कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं की प्रशंसा में वीरकाव्य लिखे, जो मुख्यतः 'रासो' ग्रंथों के नाम से जाने जाते हैं। खुसरो और मैथिली के कवि विद्यापति भी इसी काल में हुए।

पूर्व मध्यकाल में निर्गुण और सगुण भक्ति की कविताएँ लिखी गईं। कुछ निर्गुण कवियों ने ज्ञान के सहारे निर्गुण ब्रह्म का उपदेश दिया। ऐसे कवियों को निर्गुण ज्ञानाश्रयी कवि या संत-साहित्य के रचयिता कहते हैं। ये कवि हैं – कबीर, नानक, रैदास आदि। सूफी कवियों (इसलाम के एकेश्वरवाद के साथ वेदांत के ब्रह्मज्ञान और लोक-संस्कृति को मिलाकर प्रचलित लोक कथाओं के आधार पर प्रेमकथाएँ लिखीं और प्रेम के सहारे निर्गुण ब्रह्म की प्राप्ति का मार्ग बताया। इन्हें प्रेममार्गी या प्रेमाश्रयी कवि कहते हैं। ऐसे कवियों में मुख्य हैं कुतुबन, मंझन, मलिक मुहम्मद जायसी। सगुण भक्त कवियों में से कुछ ने कृष्ण भक्ति का आधार ग्रहण किया, कुछ ने राम भक्ति का। कृष्णभक्ति धारा के प्रसिद्ध कवि हैं- सूरदास, नंददास आदि। रामभक्तिधारा के सर्वप्रमुख कवि हैं - 'रामचरितमानस' के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास।

भक्तिकाल के बाद के काल को रीतिकाल या शृंगारकाल कहते हैं। राजाओं के दरबारों में रहनेवाले कवि अपने राजाओं को प्रसन्न करने के लिए शृंगारिक कविताएँ लिख रहे थे। कुछ कवियों ने अपने पांडित्य प्रदर्शन के लिए लक्षण-ग्रंथ भी रचे। इन्हें रीतिबद्ध कवि कहते हैं, जैसे पद्माकर। कुछ कवियों ने लक्षण-ग्रंथ तो नहीं रचे किंतु उनका हर दोहा किसी न किसी लक्षण का उदाहरण है। ऐसे कवियों को रीतिसिद्ध कहा गया, जैसे बिहारीलाल। कुछ कवि ऐसे भी हैं जिन्होंने रीतियों का अनुसरण नहीं किया। इन्हें रीतिमुक्त कवि कहा गया, जैसे आलम, बोधा घनानंद। भूषण ने वीर-रसात्मक कवित्त लिखे तो गिरिधर तथा वृंद ने नीतिपरक काव्य रचा।

मुग़लों को अपदस्थ कर जब अंग्रेज़ों ने भारत का शासन-सूत्र सँभाल लिया और उनका शोषण-चक्र शुरू हुआ तो देश में नई राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना जगी और इस पुनर्जागरण के स्वर हिंदी कविता में भी सुनाई पड़ने लगे। इस काल को आधुनिक काल कहा गया। चूँकि छापेखाने वगैरह आ जाने, शिक्षा की नई प्रणाली शुरू होने और ज्ञान-विज्ञान के नए विषयों से हमारा परिचय बढ़ता जा रहा था अतएव आधुनिक काल में हिंदी में गद्य-लेखन भी होने लगा। इसीलिए आधुनिक काल को गद्य काल भी कहा गया है। आधुनिक काल का प्रारंभ 1850 ई. से होता है। आधुनिक काल

टिप्पणी

के पहले अवधी, ब्रजभाषा आदि में काव्य रचना होती थी। आधुनिक काल में खड़ी बोली का प्रयोग होने लगा और परंपरागत विषयों और काव्य-शैलियों से हटकर नवीनता की ललक दिखलाई पड़ने लगी। इस काल की कविताओं को निम्नलिखित खंडों में बाँटकर पढ़ते हैं :

(i) भारतेंदु युग (देशभक्ति, समाज-सुधार का प्रमुख स्वर)
(ii) द्विवेदी युग (मानवतावाद, आदर्श, प्रकृति-चित्रण की कविता। 'हरिऔध', गुप्त जी आदि कवि)
(iii) छायावाद (प्रसाद, पंत, निराला, महादेवी)। वैयक्तिकता, सौंदर्य और प्रेम का आंतरिक पक्ष, रहस्यवाद, मानवतावाद और भाषा-शैली तथा छंद में युगांतर
(iv) राष्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य (नवीन, माखनलाल चतुर्वेदी, दिनकर आदि कवि)
(v) छायावादोत्तर कवि तथा प्रगतिवाद (बच्चन, अंचल, सुमन, नागार्जुन, केदार, आदि। मार्क्सवाद से प्रेरित कविता)
(vi) प्रयोगवाद तथा नई कविता
(vii) आज की कविता

(अज्ञेय द्वारा संपादित 'तारसप्तक' से प्रयोगवाद का प्रारंभ, उसका उत्तर चरण नई कविता आज की कविता किसी वाद में बँधी नहीं। साधारण से साधारण विषय पर कविता-लेखन की प्रवृत्ति। व्यंग्य स्वर आदि प्रमुख कवि धूमिल, रघुवीर सहाय आदि।

25.8 पाठांत प्रश्न

1. आदिकाल में लिखी गई विभिन्न प्रकार की कविताओं का परिचय दीजिए।
2. भक्तिकाल की कविता की विशेषताएँ बतलाइए।
   भक्तिकाल की विविध धाराओं का परिचय देते हुए प्रत्येक के दो–दो कवियों का नामोल्लेख कीजिए।
3. रीतिकाल में किस प्रकार की कविता लिखी गई?
4. आधुनिक काल में भारतेंदु के महत्त्व का परिचय दीजिए।
5. द्विवेदी युगीन काव्य के विषय तथा भाषा-शैली की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए।
6. छायावादी काव्य की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
7. 'प्रगतिवादी काव्य शोषितों के प्रति सहानुभूति का काव्य है।' सोदाहरण समझाइए।
8. नयी कविता की विशेषताएँ बताइए।
9. आज की कविता के स्वरूप पर विचार कीजिए।

25.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

25.1 1. (X) 2. (√) 3. (√) 4. (√) 5. (√) 6. (√) 7. (X) 8. (X) 9. (X) 10. (√)

25.2 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (√)
2. (क) भक्ति (ख) अवतार (ग) निर्गुण (घ) भाव

टिप्पणी

25.3 1. (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ
2. (क) राम और कृष्ण की उपासना (ख) दास्य (ग) तुलसीदास
(घ) नवधा–अर्थात् नौ प्रकार की

25.4 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (√) 5. (X)

25.5 1. (क) रीतिकालीन (ख) रीतिकालीन (ग) रीति–पद्धति (घ) शृंगार
2. (क) नहीं (ख) हाँ (ग) हाँ (घ) हाँ
3. (क) रीतिबद्ध (ख) प्रेम-भावना (ग) आचार्य/कवि
(घ) दोहा-कवित्त-सवैया (ङ) ब्रजभाषा

25.6 1. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) √
2. (क) 1850–1900
(ख) देशभक्ति और राजभक्ति
(ग) ब्रजभाषा
(घ) इतिवृत्तात्मकता
(ङ) भारतेंदु हरिश्चंद्र
3. (क) भारतेंदु जी के महत्त्वपूर्ण कार्यों के कारण
(ख) राजनीतिक अत्याचार और आर्थिक शोषण
(ग) आदर्श और यथार्थ

25.7 1. (क) X (ख) √ (ग) X (घ) √ (ङ) √
2. (क) देशप्रेम, समाज-सुधार, मानवतावाद, नीति-आदर्शों की प्रतिष्ठा, सामान्य जन के दुख-दर्द का चित्रण (कोई तीन)
(ख) नाथूराम शर्मा, श्रीधर पाठक, अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी (कोई तीन)
(ग) प्रियप्रवास, साकेत

25.8 1. (क) X (ख) √ (ग) √
2. (क) प्रकृति और नारी के कोमल रूप का चित्रण, प्रेम की विविध अनुभूतियों का चित्रण, वेदना के चित्र, कवियों की निजी अनुभूतियों का वर्णन, कल्पना का प्रयोग, आध्यात्मिकता का पुट (कोई तीन)
(ख) कोमलता, लाक्षणिकता, प्रतीकों का प्रयोग, गीति-तत्त्व की प्रमुखता (कोई दो)
(ग) जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा

25.9 1. (क) X (ख) X (ग) X (घ) X (ङ) X
(च) X (छ) √
2. (क) राष्ट्रप्रेम, प्राचीन संस्कृति का गौरव-गायन तथा विद्रोह का स्वर
(ख) रामधारी सिंह 'दिनकर', बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'
(ग) नारी के प्रति सहानुभूति तथा उसे सभी प्रकार के बंधनों से मुक्त करने का।
(घ) तारसप्तक। सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय।
(ङ) धूमिक, अशोक वाजपेयी, ज्ञानेंद्रपति, राजेश जोशी (कोई दो)

26

301hi26

क्रोध

मन के किसी विकार को भाव कहते हैं। मानव-मन में कुछ भाव अज्ञात रूप से विद्यमान होते हैं, जो अनुकूल अवसर पाकर अपने आप पैदा होते और दबते रहते हैं, जैसे– प्रेम, हास्य, शोक, उत्साह और वैराग्य आदि। मानव के यही विविध भाव रस कहलाते हैं। साहित्य में वर्णित नौ रसों की उत्पत्ति इन्हीं भावों के आधार पर होती है। क्रोध एक प्रमुख भाव है। सुप्रसिद्ध लेखक आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने क्रोध की उत्पत्ति, उसके कारण, प्रकार, लाभ और उसकी हानियों का वर्णन कर उसका मनोवैज्ञानिक आधार प्रस्तुत किया है। आइए, अब इस विचारात्मक निबंध 'क्रोध' की विशेष जानकारी प्राप्त करें।

उद्देश्य

इस निबंध को पढ़ कर आप

- क्रोध के विभिन्न पक्षों का विवेचन कर सकेंगे;
- क्रोध के सकारात्मक-नकारात्मक पक्षों की पहचान कर सकेंगे;
- क्रोध की उत्पत्ति, कारण और उपयोगिता पर प्रकाश डाल सकेंगे;
- कारण-अकारण क्रोध करने से होने वाली हानियों का उल्लेख कर सकेंगे;
- अतिक्रोध पर विवेकपूर्वक अंकुश लगाने के लाभ बता सकेंगे;
- साहित्यिक, ललित तथा व्यंग्य शैली में लिखे निबंधों से इस विचारात्मक निबंध की शैली को अलग कर सकेंगे;
- निबंध के चरणों के आधार पर 'क्रोध' नामक विचारात्मक निबंध की विवेचना कर सकेंगे;
- शुक्ल जी के निबंधों की तत्समबहुला भाषा और सूत्र-शैली की व्याख्या कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

क्रोध में हम अपना आपा खो बैठते हैं। हमारा व्यवहार कुछ अनुचित-सा हो जाता है, जैसे– ज़्यादा खाने लगते हैं, आवाज़ ऊँची हो जाती है, चिल्लाने लगते हैं या तोड़-फोड़ भी कर सकते हैं। अब कभी क्रोध आए तो ऐसा कीजिए–

- अपने इस आचरण पर गौर कीजिए।
- गुस्से में आप क्या-क्या करते हैं, उसे अपनी डायरी में नोट कीजिए।
- आपको गुस्सा क्यों आया, गुस्सा कैसे बढ़ा, कब शांत हुआ, क्यों शांत हुआ, क्या नुकसान हुआ आदि इसका आत्मविश्लेषण कीजिए।
- दूसरे की जगह स्वयं को रखकर स्थिति को परखिए।
- अब विचार कीजिए कि क्या क्रोध के बिना काम नहीं हो सकता था।
- इस प्रकार की सकारात्मक सोच स्वभाव को परिपक्व बनाती है। क्रोध आने पर उसे वहीं रोका जा सकता है। क्रोध पर नियंत्रण करने के सबके अलग-अलग अनुभव होते हैं, जैसे कोई पानी पीता है, कोई घटना स्थल से दूर चला जाता है आदि–इस बारे में अपने मित्रों से बातचीत कीजिए।

अब आइए, रामचंद्र शुक्ल द्वारा रचित 'क्रोध' के मूल-पाठ का एक बार वाचन कर जाएँ।

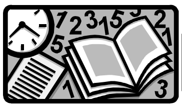

26.1 मूलपाठ

क्रोध

क्रोध दु:ख के चेतन कारण के साक्षात्कार या अनुमान से उत्पन्न होता है। साक्षात्कार के समय दु:ख और उसके कारण के संबंध का परिज्ञान आवश्यक है। तीन-चार महीने के बच्चे को कोई हाथ उठाकर मार दे, तो उसने हाथ उठाते तो देखा है पर अपनी पीड़ा और उस हाथ उठाने से क्या संबंध है, यह वह नहीं जानता है। अत: वह केवल रोकर अपना दु:ख मात्र प्रकट कर देता है। दु:ख के कारण की स्पष्ट धारणा के बिना क्रोध का उदय नहीं होता। दु:ख के सज्ञान कारण पर प्रबल प्रभाव डालने में प्रवृत्त करवाने वाला मनोविकार होने के कारण क्रोध का आविर्भाव बहुत पहले देखा जाता है। शिशु अपनी माता की आकृति से परिचित हो जाने पर ज्यों ही यह जान जाता है कि दूध इसी से मिलता है, भूखा होने पर वह उसे देखते ही अपने रोने में कुछ क्रोध का आभास देने लगता है।

सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर पड़ती है। यदि क्रोध न हो तो मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय ही न कर सके। कोई मनुष्य किसी दुष्ट के नित्य दो-चार प्रहार सहता है। यदि उसमें क्रोध का विकास नहीं हुआ है तो वह केवल आह-ऊह करेगा, जिसका उस दुष्ट पर कोई प्रभाव नहीं। उस दुष्ट के हृदय में विवेक, दया आदि उत्पन्न करने में बहुत समय लगेगा। संसार किसी

शब्दार्थ

चेतन – जिसमें सोचने-समझने की शक्ति हो
साक्षात्कार – सामने दिखाई देने वाला
परिज्ञान – विशेष ज्ञान
धारणा – बोध या विचार
सज्ञान – ज्ञान युक्त
मनोविकार – मन में पैदा होने वाले भाव
आविर्भाव – पैदा होना
चिरनिव त्ति – सदा के लिए समाप्त होना।
प्रहार – चोट

को इतना समय ऐसे छोटे-छोटे कामों के लिए नहीं दे सकता। भयभीत होकर प्राणी अपनी रक्षा कभी-कभी कर लेता है, पर समाज में इस प्रकार प्राप्त दुःख निवृत्ति चिरस्थायिनी नहीं होती। हमारे कहने का अभिप्राय यह नहीं है कि क्रोध करने वाले के मन में सदा भावी कष्ट से बचने का उद्देश्य रहा करता है। कहने का अभिप्राय केवल इतना ही है कि चेतना-सृष्टि के भीतर क्रोध का विधान इसीलिए है।

चित्र 26.1

जिससे एक बार दुःख पहुँचा, पर उसके दोहराए जाने की संभावना कुछ भी नहीं है, जो कष्ट पहुँचाया जाता है वह प्रतिकार मात्र है; उसमें रक्षा की भावना कुछ भी नहीं रहती। अधिकतर क्रोध इसी रूप में देखा जाता है। एक-दूसरे से अपरिचित दो आदमी रेल पर चले जा रहे हैं। इनमें से एक को आगे ही के स्टेशन पर उतरना है। स्टेशन तक पहुँचते-पहुँचते बात-ही-बात में एक ने दूसरे को तमाचा जड़ दिया और उतरने की तैयारी करने लगा। अब दूसरा मनुष्य भी यदि उतरते-उतरते उसे एक तमाचा लगा दे तो यह उसका बदला या प्रतिकार ही कहा जाएगा, क्योंकि उसे फिर उसी व्यक्ति से तमाचा खाने का कुछ तो निश्चय नहीं था। जहाँ और दुःख पहुँचाने की कुछ भी संभावना होगी, वहाँ क्रुद्ध प्रतिकार न होगा, उसमें स्वरक्षा की भावना भी मिली होगी।

हमारा पड़ोसी कई दिनों से नित्य आकर हमें दो-चार टेढ़ी-सीधी सुना जाता है, यदि हम एक दिन उसे पकड़ कर पीट दें तो हमारा यह कर्म शुद्ध प्रतिकार न कहलाएगा क्योंकि हमारी दृष्टि नित्य गालियाँ सहने के दुःख से बचने के परिणाम की ओर भी समझी जाएगी। इन दोनों दृष्टांतों को ध्यानपूर्वक देखने से पता लगेगा कि दुःख से उद्विग्न होकर दुःखदाता को कष्ट पहुँचाने की प्रवृत्ति दोनों में है; पर एक में वह परिणाम आदि का विचार बिल्कुल छोड़े हुए है और दूसरे में कुछ लिए हुए। इनमें से पहले दृष्टांत का क्रोध उपयोगी नहीं दिखाई पड़ता। पर क्रोध करने वाले के पक्ष में उसका उपयोग चाहे न हो पर लोक के भीतर वह बिल्कुल खाली नहीं जाता। दुःख पहुँचाने वाले से हमें फिर दुःख पहुँचने का डर न सही, पर समाज को तो है। इससे उसे उचित दंड दे देने से पहले तो उसी की शिक्षा या भलाई हो जाती है, फिर समाज के और लोगों के बचाव का बीज भी बो दिया जाता है। यहाँ पर भी वही बात है कि क्रोध के समय लोगों के मन में लोक-कल्याण की यह व्यापक भावना सदा नहीं रहा करती। अधिकतर तो ऐसा क्रोध प्रतिकार के रूप में ही होता है।

यह कहा जा चुका है कि क्रोध दुःख के चेतन कारण साक्षात्कार या परिज्ञान में होता है, अतः एक तो जहाँ कार्य-कारण के संबंध ज्ञान में त्रुटि या भूल होती है, वहाँ क्रोध धोखा देता है। दूसरी बात यह है कि क्रोध करने वाला जिस ओर से दुःख आता है उसी ओर देखता है, अपनी ओर नहीं। जिसने दुःख पहुँचाया है उसका नाश हो या उसे दुःख पहुँचे, क्रुद्ध का यही लक्ष्य होता है। न तो वह यह देखता है कि मैंने कुछ

शब्दार्थ

दुःख निव ति – दुःख का समाप्त होना।
चिरस्थायिनी – सदा बने रहने वाली
भावी – भविष्य में होने वाला
स ष्टि – संसार, जगत
विधान – व्यवस्था
प्रतिकार – बदला
स्वरक्षा – अपनी रक्षा
टेढ़ी-सीधी – बुरी-भली
द ष्टांतों – उदाहरणों
उद्विग्न – व्यग्र, दुःखी, बेचैन
प्रव ति – भावना
व्यापक – विस्त त, फैली हुई
त्रुटि – कमी, भूल
क्रुद्ध – क्रोध करने वाला
परिमित – सीमित
विवेक – अच्छे-बुरे का ज्ञान
उग्र – तेज़, प्रचंड
अंकुश – रोक लगाना,
अनर्थ – गलत अर्थ
व्याकुल – दुःखी

किया है या नहीं, और न इस बात का ध्यान करता कि क्रोध के वेग में मैं जो कुछ करूँगा उसका परिणाम क्या होगा। यही क्रोध का अंधापन है। इसी से एक तो मनोविकार ही एक-दूसरे को परिमित किया करते हैं, ऊपर से बुद्धि या विवेक भी उन पर अकुंश रखता है। यदि क्रोध इतना उग्र हुआ कि मन में दुःखदाता की शक्ति के रूप और परिणाम के निश्चय, दया, भय आदि और भावों के संचार तथा उचित-अनुचित के विचार के लिए जगह ही न रही तो बड़ा अनर्थ खड़ा हो जाता है, जैसे यदि कोई सुने कि उसका शत्रु बीस-पच्चीस आदमी लेकर उसे मारने आ रहा है और वह चट क्रोध से व्याकुल होकर बिना शत्रु की शक्ति का विचार और अपनी रक्षा का पूरा प्रबंध किए उसे मारने के लिए अकेले दौड़ पड़े, तो उसके मारे जाने में बहुत कम संदेह समझा जाएगा। अतः कारण के यथार्थ निश्चय के उपरांत, उसका उद्देश्य अच्छी तरह समझ लेने पर ही आवश्यक मात्रा और उपयुक्त स्थिति में ही क्रोध वह काम दे सकता है जिसके लिए उसका विकास होता है।

क्रोध की उग्र चेष्टाओं का लक्ष्य हानि या पीड़ा पहुँचाने के पहले आलंबन में भय का संचार करना रहता है। जिस पर क्रोध प्रकट किया जाता है वह यदि डर जाता है और नम्र होकर पश्चात्ताप करता है तो क्षमा का अवसर सामने आता है। क्रोध का गर्जन-तर्जन क्रोधपात्र के लिए भावी दुष्परिणाम की सूचना है, जिससे कभी-कभी उद्देश्य की पूर्ति हो जाती है और दुष्परिणाम की नौबत नहीं आती। एक की उग्र आकृति देख दूसरा किसी अनिष्ट व्यापार से विरत हो जाता है या नम्र होकर पूर्वकृत दुर्व्यवहार के लिए क्षमा चाहता है। बहुत से स्थलों पर क्रोध का लक्ष्य किसी का गर्व चूर्ण करना मात्र रहता है अर्थात् दुःख का विषय केवल दूसरे का गर्व या अहंकार होता है। अभिमान दूसरों के मन में या उसकी भावना में बाधा डालता है, उससे वह बहुत से लोगों को यों ही खटका करता है। लोग जिस तरह हो सके– अपराध द्वारा, हानि द्वारा – अभिमानी को नम्र करना चाहते हैं। अभिमान पर जो रोष होता है उसकी प्रवृत्ति अभिमानी को केवल नम्र करने की रहती है; उसको हानि या पीड़ा पहुँचाने का उद्देश्य नहीं होता। संसार में बहुत से अभिमान का उपचार अपमान द्वारा ही हो जाता है।

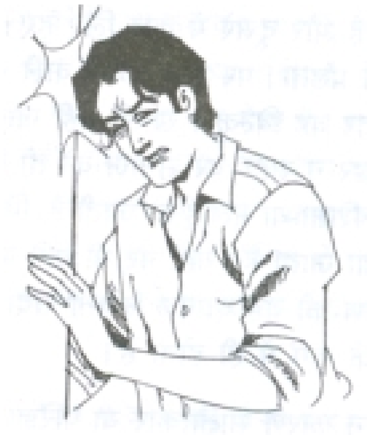

चित्र 26.2

कभी-कभी लोग अपने कुटुंबियों या स्नेहियों से झगड़कर क्रोध में अपना ही सिर पटक देते हैं। यह सिर पटकना अपने को दुःख पहुँचाने के अभिप्राय से नहीं होता, क्योंकि बिल्कुल बेगानों के साथ कोई ऐसा नहीं करता। जब किसी को क्रोध में अपना ही सिर पटकते या अंग-भंग करते देखें तब समझ लेना चाहिए कि उसका क्रोध ऐसे व्यक्ति के ऊपर है जिसे उसके सिर पटकने की परवा है अर्थात् जिसे उसका सिर फूटने से उस समय नहीं तो आगे चलकर दुःख पहुँचेगा।

क्रोध का वेग इतना प्रबल होता है कि कभी-कभी मनुष्य यह भी विचार नहीं करता कि

शब्दार्थ

उपरान्त	– बाद
आलम्बन	– भाव का कारण
पश्चात्ताप	– पछतावा
गर्जन-तर्जन	– गरजना और डाँटना
दुष्परिणाम	– बुरा फल
उग्र आकृति	– क्रोधपूर्ण मुख-मुद्रा
अनिष्ट व्यापार	– बुरे काम
विरत	– ध्यान हटाना, रुकना
पूर्वकृत	– पहले किया हुआ
दुर्व्यवहार	– बुरा आचरण
चूर्ण करना	– खत्म करना, चूर-चूर करना
रोष	– क्रोध
उपचार	– उपाय
कुश	– सूखी घास
अपरिष्कृत	– अशुद्ध, असभ्य
अन्तःप्रकृति	– स्वभाव
अव्यवस्था	– अस्थिरता
फुर्तीला	– तेज, चुस्त

जिसने दुःख पहुँचाया है, उसमें दुःख पहुँचाने की इच्छा थी या नहीं। इसी से कभी तो यह अचानक पैर कुचल जाने पर किसी को मार बैठता है और कभी ठोकर खाकर कंकड़-पत्थर तोड़ने लगता है। चाणक्य ब्राह्मण अपना विवाह करने जा रहा था। मार्ग में कुश उसके पैर में चुभे। वह चट मट्ठा और कुदाली लेकर पहुँचा और कुशों को उखाड़कर उनकी जड़ों में मट्ठा देने लगा। एक बार मैंने देखा कि एक ब्राह्मण देवता चूल्हा फूँकते-फूँकते थक गए। जब आग न जली तब उस पर क्रोध करके चूल्हे में पानी डाल किनारे हो गए। इस प्रकार का क्रोध अपरिष्कृत है। यात्रियों ने बहुत से ऐसे जंगलियों का हाल लिखा है जो रास्ते में पत्थर की ठोकर लगने पर बिना उसको चूर-चूर किए आगे नहीं बढ़ते। अधिक अभ्यास के कारण यदि कोई मनोविकार बहुत प्रबल पड़ जाता है, तो यह अंतःप्रकृति में अव्यवस्था उत्पन्न कर मनुष्य को बचपन से मिलती-जुलती अवस्था में ले जाकर पटक देता है।

क्रोध सब मनोविकारों से फुर्तीला है, इसी से अवसर पड़ने पर यह और मनोविकारों का भी साथ देकर उसकी तुष्टि का साधक होता है। कभी वह दया के साथ कूदता है, कभी घृणा के। एक क्रूर कुमार्गी किसी अनाथ अबला पर अत्याचार कर रहा है। हमारे हृदय में उस अनाथ अबला के प्रति दया उमड़ रही है। पर दया की अपनी शक्ति तो त्याग और कोमल व्यवहार तक होती है। यदि वह स्त्री अर्थकष्ट में होती तो उसे कुछ देकर हम अपनी दया के वेग को शांत कर लेते पर यहाँ तो उस अबला के दुःख का कारण मूर्तिमान तथा अपने विरुद्ध प्रयत्नों को ज्ञानपूर्वक रोकने की शक्ति रखने वाला है। ऐसी अवस्था में क्रोध ही उस अत्याचारी के दमन के लिए उत्तेजित करता है जिसके बिना हमारी दया ही व्यर्थ जाती। क्रोध अपनी इस सहायता के बदले में दया की वाहवाही को नहीं बँटाता। काम क्रोध करता है, पर नाम दया का ही होता है। लोग यही कहते हैं कि 'उसने दया करके बचा लिया', कोई यह नहीं कहता कि 'क्रोध करके बचा लिया'। ऐसे अवसरों पर यदि क्रोध दया का साथ न दे तो दया अपनी प्रवृत्ति के अनुसार परिणाम उपस्थित ही नहीं कर सकती।

क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है। एक का क्रोध दूसरे में भी क्रोध का संचार करता है। जिसके प्रति क्रोध प्रदर्शन होता है वह तत्काल अपमान का अनुभव करता है और इस दुःख पर उसकी भी त्योरी चढ़ जाती है। यह विचार करने वाले बहुत थोड़े निकलते हैं कि हम पर जो क्रोध प्रकट किया जा रहा है वह उचित है या अनुचित। इसी से धर्म, नीति और शिष्टाचार तीनों में क्रोध के निरोध का उपदेश पाया जाता है। संत लोग तो खलों के वचन सहते ही हैं, दुनियादार लोग भी न जाने कितनी ऊँची-नीची पचाते रहते हैं। सभ्यता के व्यवहार में भी क्रोध नहीं तो क्रोध के चिह्न दबाये जाते हैं। इस प्रकार का प्रतिबंध समाज की सुख-शांति के लिए बहुत आवश्यक है। पर इस प्रतिबंध की भी सीमा है। यह परपीड़कोन्मुख क्रोध तक नहीं पहुँचता।

क्रोध के निरोध का उपदेश अर्थपरायण और धर्मपरायण दोनों देते हैं। पर दोनों में जिसे अति से अधिक सावधान रहना चाहिए वही कुछ भी नहीं रहता। बाकी रुपया वसूल करने का ढंग बतानेवाला चाहे कड़े पड़ने की शिक्षा दे भी दे, पर धज के साथ धर्म की ध्वजा लेकर चलने वाला धोखे में भी क्रोध को पाप का रूप ही कहेगा। क्रोध रोकने का अभ्यास ठगों और स्वार्थियों को सिद्धों और साधकों से कम नहीं

शब्दार्थ

तुष्टिसाधक	– संतोष देने वाला
नम्र	– विनम्र, बिना अभिमान का
अर्थकष्ट	– धन का अभाव
दमन (करना)	– दबाना
उत्तेजित करना	– उकसाना
तत्काल	– उसी समय
त्योरी चढ़ना	– क्रोधित होना
शिष्टाचार	– सभ्य आचरण
निरोध	– रोकना
खलों	– दुष्टों
ऊँची-नीची पचाना	– भली-बुरी बातें सहना
प्रतिबंध	– रोक
परपीड़कोन्मुख	– दूसरे को पीड़ा देने की ओर बढ़ा हुआ
अर्थपरायण	– धन में लगा
धर्मपरायण	– धर्म में लगा
धज	– सुंदर रंगढंग मजबूत शरीर,
ध्वजा	– झंडा

होता। जिससे कुछ स्वार्थ निकलना रहता है, जिसे बातों में फँसाकर ठगना रहता है, उसकी कठोर और अनुचित बातों पर न जाने कितने लोग ज़रा भी क्रोध नहीं करते, पर उसका यह अक्रोध न धर्म का लक्षण है, न साधन।

क्रोध के प्रेरक के दो प्रकार के दुःख हो सकते हैं अपना दुःख और पराया दुःख। जिस क्रोध के त्याग का उपदेश दिया जाता है वह पहले प्रकार के दुःख से उत्पन्न क्रोध है। दूसरे के दुःख पर उत्पन्न क्रोध बुराई की हद के बाहर समझा जाता है। क्रोधोत्तेजक दुःख जितना ही अपने संपर्क से दूर होगा, उतना ही लोक में क्रोध का स्वरूप सुंदर और मनोहर दिखाई देगा। दुःख से आगे बढ़ने पर कुछ दूर तक क्रोध का कारण थोड़ा-बहुत अपना ही दुःख कहा जा सकता है; जैसे, अपने या आत्मीय परिजन का दुःख, इष्ट-मित्र का दुःख। इसके आगे भी जहाँ तक दुःख की भावना के साथ कुछ ऐसी विशेषता लगी रहेगी कि जिसे कष्ट पहुँचाया जा रहा है वह हमारे ग्राम, पुर, देश का रहने वाला है, वहाँ तक हमारे क्रोध से सौंदर्य की पूर्णता में कुछ कसर रहेगी। जहाँ उक्त भावना निर्विशेष रहेगी वहीं सच्ची परदुःखकातरता मानी जाएगी, वहीं क्रोध के स्वरूप को पूर्ण सौंदर्य प्राप्त होगा; ऐसा सौंदर्य जो काव्यक्षेत्र के बीच भी जगमगाता आया है।

यह क्रोध करुणा के आज्ञाकारी सेवक रूप में हमारे सामने आता है। स्वामी से सेवक कुछ कठिन होते ही हैं, उनमें कुछ अधिक कठोरता रहती ही है। पर यह कठोरता ऐसी कठोरता को भंग करने के लिए होती है जो पिघलनेवाली नहीं होती। क्रौंच के वध पर वाल्मीकि मुनि के करुण क्रोध का सौंदर्य एक महाकाव्य का सौंदर्य हुआ। उक्त सौंदर्य का कारण है निर्विशेषता। वाल्मीकि के क्रोध के भीतर प्राणिमात्र के दुःख की सहानुभूति छिपी है–राम के क्रोध के भीतर संपूर्ण लोक के दुःख का क्षोभ समाया हुआ है। क्षमा जहाँ से श्रीहत् हो जाती है, वहीं से क्रोध के सौंदर्य का आरंभ होता है। शिशुपाल की बहुत-सी बुराइयों तक जब श्रीकृष्ण की क्षमा पहुँच चुकी तब जाकर उसका लौकिक लावण्य फीका पड़ने लगा और क्रोध की समीचीनता का सूत्रपात हुआ। अपने ही दुःख पर उत्पन्न क्रोध में या तो हमें तत्काल क्षमा का अवसर या अधिकार ही नहीं रहता अथवा वह अपना प्रभाव खो चुकी रहती है।

बहुत दूर तक और बहुत काल से पीड़ा पहुँचाते चले आते हुए किसी घोर अत्याचारी का बना रहना ही लोक की क्षमा की सीमा है। इनके आगे क्षमा न दिखाई देगी, नैराश्य, कायरता और शिथिलता छाई दिखाई पड़ेगी। ऐसी गहरी उदासी की छाया के बीच आशा, उत्साह और तत्परता की प्रभा जिस क्रोधाग्नि के साथ फूटती दिखाई पड़ेगी, उसके सौंदर्य का अनुभव सारा लोक करेगा। राम का कालाग्नि-सदृश क्रोध ऐसा ही है। वह सात्विक तेज है; तामस ताप नहीं।

दंड कोप का ही एक विधान है। राजदंड राजकोप है, और लोककोप धर्मकोप है। जहाँ राजकोप धर्मकोप से एकदम भिन्न दिखाई पड़े, वहाँ उसे राजकोप न समझकर कुछ विशेष मनुष्यों का कोप समझना चाहिए। ऐसा कोप राजकोप के महत्त्व और पवित्रता का अधिकारी नहीं हो सकता। उसको समान जनता अपने लिए आवश्यक नहीं समझ सकती।

वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। जिससे हमें दुःख पहुँचता है उस पर यदि हमने क्रोध किया और यह क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहा तो वह वैर कहलाता

शब्दार्थ

प्रेरक – आगे बढ़ाने वाला
क्रोधोत्तेजक – क्रोध को बढ़ाने वाला
पुर – नगर
निर्विशेष – समान, भेदभाव रहित
परदुःखकातरता – दूसरे के दुःख से व्याकुल होने की भावना
श्रीहत् – शोभा रहित
समीचीनता – ठीक होना, उपयुक्त होना
नैराश्य – निराशा
क्षोभ – क्रोध मिश्रित दुख
सूत्रपात – प्रारंभ
लावण्य – सौंदर्य
शिथिलता – कमजोरी
कालाग्नि – म त्यु के समान
सद श – भयंकर
सात्विक – पवित्र
तामस – अज्ञानयुक्त, बुरा
कोप – क्रोध
विधान – व्यवस्था, उपाय
लोककोप – संसार का क्रोध
राजकोप – राजा का क्रोध

टिप्पणी

है। इस स्थायी रूप में टिक जाने के कारण क्रोध का वेग और उग्रता तो धीमी पड़ जाती है; पर लक्ष्य को पीड़ित करने की प्रेरणा बराबर बहुत काल तक हुआ करती है। क्रोध अपना बचाव करते हुए शत्रु को पीड़ित करने की युक्ति आदि सोचने का समय प्रायः नहीं देता, पर वैर उसके लिए बहुत समय देता है। पूछिए तो क्रोध और वैर का भेद केवल कालकृत है। दुःख पहुँचाने के साथ ही दुःखदाता को पीड़ित करने की प्रेरणा करने वाला मनोविकार क्रोध और कुछ काल बीत जाने पर प्रेरणा करने वाला भाव वैर है। किसी ने आपको गाली दी। यदि आपने उसी समय मार दिया तो आपने क्रोध किया। मान लीजिए कि वह गोली देकर भाग गया और दो महीने बाद आपको कहीं मिला। अब यदि आपने उससे बिना फिर गाली सुने मिलने के साथ ही उसे मार दिया तो यह आपका वैर निकालना हुआ। इस विवरण से स्पष्ट है कि वैर उन्हीं प्राणियों में होता है जिनमें धारणा अर्थात् भावों के संचय की शक्ति होती है। पशु और बच्चे किसी से वैर नहीं मानते। चूहे और बिल्ली के संबंध को 'वैर' नाम आलंकारिक है। आदमी का न आम-अंगूर से कुछ वैर है न भेड़-बकरे से। पशु और बच्चे दोनों क्रोध करते हैं और थोड़ी देर के बाद भूल जाते हैं।

क्रोध का एक हल्का रूप है चिड़चिड़ाहट, जिसकी व्यंजना प्रायः शब्दों ही तक रहती है। इसका कारण भी वैसा उग्र नहीं होता। कभी-कभी चित्त व्यग्र रहने, किसी प्रवृत्ति में बाधा पड़ने या किसी का ठीक सुभीता न बैठने के कारण ही लोग चिड़चिड़ा उठते हैं। ऐसे सामान्य कारणों के अवसर बहुत अधिक आते रहते हैं, इसमें चिड़चिड़ाहट स्वभावगत होने की संभावना बहुत अधिक रहती है। किसी मत, संप्रदाय या संस्था के भीतर निरूपित आदर्शों पर ही अनन्य दृष्टि रखने वाला बाहर की दुनिया देख-देखकर अपने जीवन पर चिड़चिड़ाते चले जाते हैं। जिधर निकलते हैं, रास्ते भर मुँह बिगड़ा रहता है। चिड़चिड़ाहट एक प्रकार की मानसिक दुर्बलता है, इसी से रोगियों और बुड्ढों में अधिक पाई जाती है। इसका स्वरूप उग्र और भयंकर न होने से यह बहुतों के विशेषतः बालकों के – विनोद की एक सामग्री भी हो जाती है। बालकों को चिड़चिड़े बुड्ढों को चिढ़ाने में आनंद आता है और कुछ विनोदी बुड्ढे भी चिढ़ने की नकल किया करते हैं। कोई 'राधाकृष्ण' कहने से, कोई 'सीताराम' पुकारने से और कोई 'करेले' का नाम लेने से चिढ़ता है और अपने पीछे लड़कों की एक खासी भीड़ लगाए फिरता है। जिस प्रकार लोगों को हँसाने के लिए कुछ लोग मूर्ख या बेवकूफ बनाते हैं उसी प्रकार चिड़चिड़े भी। मूर्खता मूर्ख को चाहे रुलाए पर दुनिया को तो हँसाती ही है। मूर्ख हास्यरस के बड़े प्राचीन आलंबन हैं। न जाने कब से इस संसार की रुखाई के बीच हास्य का विकास कराते चले आ रहे हैं। आज भी दुनिया को हँसाने का हौसला बहुत कुछ उन्हीं की बरकत से हुआ करता है।

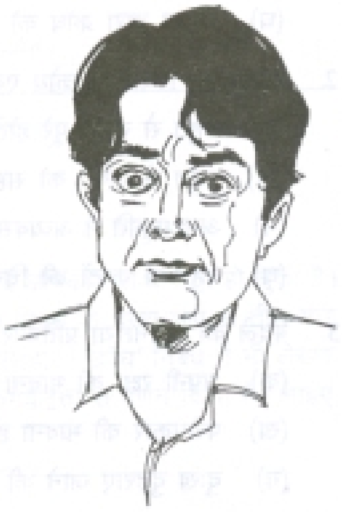

चित्र 26.3

शब्दार्थ

युक्ति	– उपाय
कालकृत	– समय से किया हुआ
व्यंजना	– प्रकट होना
सुभीता	– सुविधाजनक
निरूपित	– जिसकी विस्त त आलोचना हो चुकी है
अनन्य	– एकनिष्ठ, पूरी, तरह से
आलंबन	– आश्रय
बरकत	– सामर्थ्य
असह्यता	– सहन न करने की भावना
क्षोभयुक्त	– क्रोध मिश्रित दुःख से पूर्ण
अमर्ष	– वह दुःख या द्वेष जो विपक्षी या शत्रु का कोई अपकार या बुरा न कर सकने पर पैदा हो।

किसी बात का बुरा लगना, उसकी असह्यता का क्षोभयुक्त और आवेगपूर्ण अनुभव होना, अमर्ष कहलाता है। पूर्ण क्रोध की अवस्था में मनुष्य दुःख पहुँचाने वाले पात्र की ओर ही उन्मुख रहता है। उसी को भयभीत या पीड़ित करने की चेष्टा में प्रवृत्त रहता है। अमर्ष में दुःख पहुँचाने वाली बात के ब्योरों पर और उसकी असह्यता पर विशेष ध्यान रहता है। इसकी ठीक व्यंजना ऐसे वाक्यों में समझनी चाहिए– 'तुमने मेरे साथ यह किया, वह किया, अब तक तो मैं सहता आया, अब नहीं सह सकता।' इसके आगे बढ़कर जब कोई दाँत पीसता और गरजता हुआ कहने लगे कि ''मैं तुम्हें धूल में मिला दूँगा, तुम्हारा घर खोदकर फेंक दूँगा'' तब क्रोध का पूर्ण स्वरूप समझना चाहिए।

26.2 बोध प्रश्न

आशा है आपने पूरे निबंध को एक बार पढ़ लिया होगा और पढ़ते समय आए कठिन शब्दों के अर्थ भी आपने समझ लिए होंगे। अब नीचे लिखे प्रश्नों के उचित विकल्प चुनकर सही उत्तर के सामने सही का निशान (√) लगाइए–

1. क्रोध की उत्पत्ति का कारण है –
   (क) बच्चे द्वारा यह देखा जाना कि कोई उसे मारना चाहता है।
   (ख) व्यक्ति का यह अनुभव कि उसकी रक्षा कोई नहीं कर रहा।
   (ग) दुःख के चेतन कारण का साक्षात्कार या अनुमान।
   (घ) मनुष्य द्वारा क्रोध को जन्मसिद्ध अधिकार मानना।

2. सामाजिक स्थिति में क्रोध एक आवश्यक भाव है, क्योंकि इससे –
   (क) बहुत से स्वार्थ पूरे होते हैं।
   (ख) बहुत से कष्टों को सहन किया जा सकता है।
   (ग) अन्तःप्रकृति में अव्यवस्था उत्पन्न की जा सकती है।
   (घ) बहुत से कष्टों की चिरनिवृत्ति का उपाय होता है।

3. बदले की भावना या प्रतिकार में–
   (क) अपनी रक्षा की भावना रहती है।
   (ख) परोपकार की भावना होती है।
   (ग) दुःख दुहराए जाने की संभावना नहीं होती।
   (घ) परम आनंद की प्राप्ति होती है।

4. रिक्त स्थान की उपयुक्त शब्द से पूर्ति कीजिए:
   (क) जहाँ कार्य-कारण के संबंध ज्ञान में ....होती है, वहाँ क्रोध धोखा देता है। (बुराई/सच्चाई/त्रुटि)
   (ख) अधिकतर तो ....प्रतिकार के रूप में ही होता है। (आनंद/प्रेम/क्रोध)

(ग) क्रोध शांति ....मनोविकार है। (प्रदान करने वाला/भंग करने वाला)

(घ) क्रोध के निरोध का उपदेश ....और .... दोनों देते हैं। (साधु, संत/अर्थपरायण, धर्मपरायण)

5. क्रोध अंधा होता है, क्योंकि–

(क) उसकी आँखें नहीं होतीं।

(ख) इसमें परिणाम की चिंता नहीं होती।

(ग) वह बहुत परोपकारी होता है।

(घ) वह चल नहीं सकता।

6. जब क्रोध हमारे हृदय में बहुत दिनों तक टिका रहता है तो वह

(क) वैर कहलाता है।

(ख) अमर्ष कहलाता है।

(ग) अपने आप शांत हो जाता है।

(घ) चिड़चिड़ाहट बन जाता है।

7. क्रोध के प्रेरक दुःख हैं–

(क) क्रुद्ध का हाथ-पैर पटकना।

(ख) क्रुद्ध का पत्थरों को चूर-चूर करना।

(ग) क्रुद्ध का अपना और पराया दुःख।

(घ) क्रुद्ध का आग न जलने पर पानी डालना।

26.3 आइए समझें

अंश-1

हम आशा करते हैं कि निबंध की विषय-वस्तु से अब आपका पूरा परिचय हो चुका है। आप पहले पढ़ चुके हैं कि किसी भी विचारप्रधान निबंध के मुख्य रूप से तीन भाग हैं – भूमिका या प्रस्तावना, विषय-सामग्री तथा उपसंहार। 'क्रोध' निबंध में भी लेखक रामचंद्र शुक्ल ने विस्तार से इन तीनों भागों का क्रमबद्धता से वर्णन किया है। आइए, अब विस्तार से इनकी जानकारी प्राप्त करें।

प्रस्तावना

लेखक ने 'क्रोध' निबंध का प्रारंभ क्रोध के कारण का पता लगाने से किया है। लेखक के अनुसार क्रोध मनुष्य के हृदय में स्थित वह भाव है, जो दूसरे के द्वारा सताए जाने पर या इच्छा के अनुकूल काम न करने पर अपने-आप पैदा हो जाता है। इसके लिए कार्य-कारण संबंध स्पष्ट दिखाई देता है। जैसे हम भूख से व्याकुल शिशु को रोते हुए देखकर कितना भी चुप कराने की कोशिश करें परंतु वह माँ के गोद में जाते ही चुप हो जाता है, क्योंकि उसे मालूम है कि अब उसकी भूख शांत हो जाएगी। इसलिए

क्रोध में कार्य-कारण संबंध सदैव रहता है। शिशु को भी ज्ञान है कि भूख लगने पर क्रोध करने से उसे माँ से ही दूध मिलेगा। यही कारण है कि अन्य व्यक्तियों के चुप कराने की कोशिश बेकार सिद्ध होती है।

कई बार क्रोध उसी समय परिस्थिति से उत्पन्न किसी कारण से भी पैदा हो जाता है, जो अपनी रक्षा करने के लिए न होकर बदले की भावना से होता है। जैसे लेखक ने रेल से उतरने वाले दो अपरिचितों के परस्पर तमाचा मारने वाले उदाहरण से स्पष्ट किया है।

जीवन में क्रोध की आवश्यकता भी होती है। जैसे आपने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए बने नरम दल और गरम दल के विषय में अवश्य सुना होगा। अंग्रेज़ों के अत्याचारों के सामने घुटने टेकना या उनसे दया और ममता की आशा करना कठिन हो गया था। कंस और रावण के उदाहरण भी इस संबंध में दिए जा सकते हैं। इनके साथ-साथ कृष्ण और राम को अनेक अत्याचारियों का वध करना पड़ा था। इसका मूल कारण क्रोध ही था। दुष्ट के हृदय में अच्छे और बुरे कामों को पहचानने की शक्ति या सहनशीलता अथवा दया आदि नहीं होती, इसलिए उसके अत्याचारों के बढ़ जाने पर अपनी रक्षा और समाज को उनके अन्याय से बचाना ज़रूरी हो जाता है। इसके लिए सशक्त का क्रोध करना स्वाभाविक है, चाहे वह स्वयं के लिए हो या पूरे समाज का उससे लाभ होता हो। इनमें से वह क्रोध अधिक सुंदर और उपयोगी होगा, जिसमें अपने-पराए का भेद न होकर सच्ची परदुःखकातरता हो।

विषय-वस्तु

अब तक आप क्रोध के कार्य-कारण ज्ञान और उसकी आवश्यकता से परिचित हो चुके हैं। आप जान चुके हैं कि अपनी रक्षा और समाज के उपकार के लिए भी क्रोध करना ज़रूरी होता है।

आप स्वयं कई बार अनुभव करते हैं कि क्रोध करने वाला व्यक्ति कारण और परिणाम को बिना सोचे लाल-पीला हो अकेले ही कई शत्रुओं पर टूट पड़ता है। इसमें उसकी अपनी पराजय ही है, समाज भी उसका साथ नहीं देता। इसी को क्रोध का अंधापन कहते हैं। जब कोई परिणाम को विचार किए बिना, अपनी सामर्थ्य को आँके बिना योजना बनाए बिना, विपक्षी पर टूट पड़े तो उसकी असफलता निश्चित ही है। वह किसी सिनेमा का 'हीरो' नहीं, जो अकेले ही दस-पंद्रह पहलवानों को पछाड़ दे। वास्तविक जगत में ऐसा नहीं होता। इसलिए ऐसी स्थिति में क्रोध पर संयम रखना ज़रूरी हो जाता है। परिस्थिति को देखते हुए यदि बुद्धि का प्रयोग कर क्रोध न करें तो भयंकर परिणाम से बच सकते हैं। आप रामायण में भी देखते हैं कि श्रीराम ने लंका पर अकस्मात् ही चढ़ाई नहीं की। उसके लिए पहले पूरी योजना बनाई, सेना एकत्र की, समुद्र पर पुल बनाया फिर योजनाबद्ध तरीके से रावण-वध किया और विजय प्राप्त की। यदि विरोधी की शक्ति को बिना जाँचे हुए तत्काल टूट पड़ते तो न जाने क्या अनर्थ हो जाता।

आप समाज में अपने आस-पास कई बार ऐसी परिस्थिति को देखते ही होंगे। यहाँ भी लेखक ने स्पष्ट किया है कि यदि कोई सुने कि उसका शत्रु बीस-पच्चीस लोगों को साथ

लेकर उस पर आक्रमण करने के लिए आ रहा है तो वह तुरंत ही बिना सोचे-समझे क्रोध में दाँत पीसते हुए यदि उन सभी का सामना करने के लिए मैदान में आ जाता है तो उसके मारे जाने में कोई संदेह नहीं रह जाता। अतः कार्य-कारण के संबंध को बिना सोचे उपयुक्त स्थिति में क्रोध पर काबू रखना बहुत ज़रूरी हो जाता है।

अधिकतर क्रोध करने वाला व्यक्ति अपनी कमी की ओर न देख, दूसरे यानी विपक्षी की गलती को ही बढ़ा-चढ़ाकर देखता है। ऐसे में भी उसे अपने क्रोध के परिणाम का ध्यान नहीं रहता है। अतः क्रोध के मूल उद्देश्य को पहले समझना चाहिए। व्यक्ति, क्रोध दो कारणों से करता है—पहला, वह विपक्षी को डरा सकेः दूसरा, उससे क्षमा याचना या पश्चात्ताप करवा सके। अपने शत्रु की क्रोधपूर्ण चेष्टाओं को देखकर कई बार विपक्षी भयभीत होते हुए दिखाई दिए हैं। कई बार क्रोधी के सम्मुख उन्हें पश्चात्ताप करते भी देखा गया है। अपनी भूल के लिए वे अपने शत्रु से माफी तक माँग लेते हैं। इससे क्रोध करने वाला स्वतः उन्हें क्षमा प्रदान कर देता है। कई बार क्रोध किसी के घमंड को खत्म करने के लिए भी किया जाता है। वहाँ क्रोध करने वालों का उद्देश्य केवल अपमान करके ही अभिमानी को नम्र बनाने का होता है, जिससे अपनी वास्तविकता को वह समझ सके।

कई बार ऐसा भी देखा गया है कि क्रोधी अपने सगे संबंधियों से लड़-झगड़कर फिर अपना ही सिर फोड़ने लगता है। आपने घर में छोटे बच्चे को माँ के पीटने पर अक्सर इसी तरह क्रुद्ध होते देखा होगा। यहाँ क्रोध करने वाले बच्चे को यह मालूम है कि उसके सिर फोड़ने से माँ को उससे भी ज़्यादा कष्ट होता है। इसलिए वह स्वयं को पीड़ा पहुँचाने की बात न सोचकर माँ को दुःख देने के लिए सिर फोड़ता है। बिल्कुल ऐसा ही पत्थर से ठोकर खाने पर व्यक्ति पत्थर को ही चूर-चूर करने लगता है। यद्यपि उसे अच्छी तरह मालूम है कि पत्थर का वह कुछ नहीं बिगाड़ सकता, परंतु इससे उसका अपना क्रोध शांत हो जाता है। इसी तरह के एक और उदाहरण द्वारा भी लेखक ने क्रोध को शांत करने की बात स्पष्ट की है। चाणक्य अपने विवाह की धुन में प्रसन्न वदन जा रहे थे कि उसकी इस प्रसन्नता में सूखी घास ने पैरों में चुभ कर बाधा डाली। फिर क्या था? चाणक्य ने क्रोध में आकर अपने मूल उद्देश्य विवाह को भुला दिया और लगे उस सूखी घास को जड़ों से उखाड़ने। इतना ही नहीं, यह घास फिर पैदा न हो जाए इसके लिए उन्होंने उसकी जड़ों को गलाने के लिए उसमें मट्ठा भी डालना शुरू कर दिया। इस प्रकार का क्रोध भला किसको डराने, किससे क्षमा-याचना करवाने या किससे बदला लेने के लिए किया गया था। ऐसा क्रोध तो मनुष्य के दिमागी हाल में अव्यवस्था या असंतुलन उत्पन्न होने पर ही हो सकता है। इसका कोई लाभ नहीं, कोई कारण नहीं और न इससे किसी भी प्रकार सफलता की प्राप्ति हो सकती है।

क्रोध में कभी घृणा और कभी दया का भाव भी मिला होता है। उदाहरण देते हुए लेखक ने स्पष्ट किया है कि कोई अत्याचारी यदि किसी अबला को सता रहा है तो देखने वाले के हृदय में अबला के प्रति दया और अत्याचारी के प्रति घृणा का सम्मिलित भाव देखा जाता है। यहाँ अबला का संकट धन देकर दूर नहीं किया जा सकता अपितु उस कष्ट को दूर करने के लिए अत्याचारी का दमन ज़रूरी है जो

क्रोध से ही संभव हो सकता है। क्रोध संक्रामक रोग की तरह भी होता है। अपने ऊपर क्रोध करते देखकर दूसरे का भी अपने मनोभावों पर कोई काबू नहीं रहता। इसीलिए क्रोध शांति को समाप्त करने वाला मनोविकार माना जाता है।

धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र में ही नहीं अपितु सभ्य समाज में भी क्रोध पर संयम करने का उपदेश दिया जाता है। गीता में भगवान कृष्ण ने क्रोध से बुद्धिनाश और बुद्धि के नष्ट हो जाने पर व्यक्ति के नष्ट हो जाने की बात स्पष्ट की है। कबीर और तुलसी आदि कवियों ने भी क्रोध को बुरा कहा है:

जहँ दया तहँ धर्म है, जहाँ लोभ तहँ पाप!
जहाँ क्रोध तहँ काल है, जहाँ छमा तहँ आप।।

आपको पहले भी बताया गया है कि आततायियों को दबाने के लिए, समाज-सुधार के लिए, लोगों के कष्टों को दूर करने के लिए किया गया क्रोध समाज के लिए उपयोगी ही नहीं जरूरी भी है।

क्रोध पर संयम धन और धर्म दोनों को मानने वाले कराते हैं। आपने स्वयं देखा होगा कि कई ठग या स्वार्थी क्रोध करने पर भी शांत बने, अपने धन बटोरने के चक्कर में क्रोध को पचा जाते हैं अर्थात् उन पर क्रोध का कोई असर ही नहीं पड़ता। कठोर से कठोर बात पर वह कोई बदला नहीं लेते क्योंकि उन्होंने अपने स्वार्थ अर्थात् धन ऐंठने के लिए क्रोध पर काबू कर लिया होता है। ऐसा संयम समाज में उपयुक्त नहीं समझा जाता क्योंकि यहाँ व्यक्ति लालची होता है जो धर्म का लक्षण नहीं है। हाँ, धर्मपरायण व्यक्ति यदि दूसरों को सुख पहुँचाने के लिए शांत रहता है तो क्रोध संयम की श्रेणी में आता है, अन्यथा नहीं।

क्रियाकलाप-2

26.4 26.5 26.5

उपर्युक्त चित्रों को देखकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. निषाद पर वाल्मीकि ने क्रोध क्यों किया?

   ....

2. क्रौंच को बाणबिद्ध देखकर क्रौंची की क्या स्थिति हुई?

....

3. इस क्रोध के परिणामस्वरूप वाल्मीकि ने कौन-सा ग्रंथ लिखा?

....

अंश - 2

अपना और पराया दुःख दोनों क्रोध को बढ़ाने वाले हैं। इसमें अपने स्वार्थ के लिए क्रोध पर संयम ही उपयुक्त समझा गया है। इसका मुख्य कारण यही है कि दूसरे के लिए किया जाने वाला क्रोध तो दूसरे के दुःख से व्याकुल होने पर ही होता है। जो सगे-संबंधियों या मित्रों के लिए किए गए क्रोध से भी उत्तम कोटि का माना जा सकता है। ऐसे ही क्रोध का उदाहरण काव्य-जगत का जगमगाता रत्न 'रामायण' है, जिसकी रचना आदिकवि वाल्मीकि ने की थी। व्याध द्वारा क्रौंच पक्षी को मारने पर वाल्मीकि के मुख से क्रोधरूपी काव्यधारा बह निकली थी जिससे आगे चलकर 'रामायण' की रचना हुई। यहाँ वाल्मीकि ने बिना किसी भेद-भाव के कल्याण के लिए व्याध को शाप दिया जो व्याध की कठोरता का दंड और साहित्य का अनूठा ग्रंथ बना। इसी प्रकार शिशुपाल के अत्याचार जब सीमा पार कर गए तो श्रीकृष्ण को क्रुद्ध होकर उसे दंडित करके, समाज के कल्याण का बीड़ा उठाना पड़ा। इन दोनों ही परिस्थितियों में क्षमा अपनी सीमा समाप्त कर चुकी थी। उस समय यदि ऐसा न किया जाता तो समाज में निराशा और अत्याचार का बोलबाला बढ़ता ही चला जाता। आशा और उत्साह सदा के लिए समाप्त हो जाते। इन परिस्थितियों में धर्म के उद्धार के लिए, पवित्र भावों की रक्षा के लिए, अन्याय का विरोध करना ज़रूरी हो जाता है। ऐसा क्रोध धर्म में विश्वास को बढ़ाता है। संसार में शांति की स्थापना करता है। अतः इस प्रकार के क्रोध को पवित्र या पावन क्रोध की संज्ञा दी गई है। राम और कृष्ण ने ऐसा ही कालाग्निसदृश अर्थात् मृत्यु के समान भयंकर क्रोध कर तत्कालीन समाज की रक्षा की थी।

क्रोध करने पर दंड देना ज़रूरी हो जाता है। यह भी दो प्रकार का होता है—राजदंड और लोकदंड। राजदंड में यदि अधिकारवश कुछ लोग दंड देते हैं; जो न्याय के विरुद्ध हो सकता है, यह उपयुक्त नहीं क्योंकि कुछ लोगों से डरकर, अधिक शक्तिशाली बनने के कारण क्रोधवश दिया गया यह दंड कभी सात्विक नहीं हो सकता। जब लोककोप अर्थात् जनता का क्रोध होने पर दंड दिया जाता है, तब वह धर्मप्रधान और आदर्श की रक्षा करने वाला होता है।

आपने देखा होगा कि कई बार हम क्रोध का जवाब नहीं देते क्योंकि क्रोध करने वाला कोई बड़ा व्यक्ति है या समाज में प्रतिष्ठा का पात्र बना बैठा है अथवा बहुत धनी है। हम किसी भी तरह से उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकते, मुकाबला भी नहीं कर सकते। तब हम क्रोध को अपने भीतर दबा देते हैं, परंतु जब हम लगातार क्रोध को दबाते चले जाते हैं तो यही क्रोध 'वैर' का रूप धारण कर लेता है। इसलिए लेखक ने इस वैर को क्रोध का अचार या मुरब्बा कहा है। जिस तरह अचार और मुरब्बा धीरे-धीरे पककर

स्वादिष्ट होता है, बनाते ही उसे नहीं खाया जाता, कुछ समय के बाद ही वह रसीला बनता है। उसी प्रकार यह क्रोध भी लगातार दबाए जाने के कारण क्रोध करने वाले व्यक्ति को पीड़ित करने का अवसर ढूँढ़ता रहता है। जिसे लेखक ने वैर का नाम दिया जिसमें व्यक्ति की यादें जमा होती रहती हैं और उचित अवसर आने पर वह लक्ष्य को अपना निशाना बना लेता है। यहाँ क्रोध का बाहरी वेग भले ही शांत दिखाई दे परंतु मौका आने पर वह अपने लक्ष्य को पीड़ित करने में चूकता नहीं है। लेखक ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है कि यदि कोई व्यक्ति हमें गाली दे और हम तुरंत उसका जवाब गाली अथवा थप्पड़ से देते हैं तो यह हमारा क्रोध है परंतु यदि हम उसी समय गाली देने वाले का कुछ बिगाड़ नहीं सकते या वह भाग जाता है तो यह क्रोध हमारी स्मृति में धारण अर्थात् भावों को जमा करने की शक्ति के रूप में विद्यमान हो जाता है और अवसर पाते ही वैर के रूप में निकलता है। इस तरह क्रोध जमा होकर अंदर-ही-अंदर वैर का रूप धारण कर लेता है। लेखक ने यहाँ यह भी स्पष्ट कर दिया है कि छोटे बच्चे और पशु अपनी इसी स्मृति या धारणा शक्ति के न होने के कारण वैर नहीं रखते। जैसा कि आप मानते हैं छोटे बच्चों की लड़ाई में कभी-कभी माता-पिता जानी दुश्मन बन जाते हैं जबकि बच्चे फिर वैसे ही परस्पर खेलने लगते हैं। ईंट और पत्थर के जवाब की ही तरह चूहे और बिल्ली का वैर भी कवियों ने आलंकारिक रूप में प्रयुक्त किया है। यह उनकी वास्तविक वैर की शक्ति के कारण नहीं है, यहाँ तो यह दोनों जीव परस्पर भोज्य हैं अर्थात् बिल्ली का खाद्य चूहा है। यहाँ यह वैर के कारण नहीं है।

क्रोध के उग्र रूपों की जानकारी पा लेने के बाद लेखक ने इस क्रोध के हल्के रूप को भी यहाँ समझाने की कोशिश की है। क्रोध का एक हल्का रूप चिड़चिड़ाहट है। आपने देखा होगा कि किसी विशेष धर्म या मत को मानने वाले लोग किसी दूसरे मतावलंबी की बात सुनना ही नहीं चाहते। इसका कारण उनकी कट्टरता ही हो सकती है, क्योंकि बिना सुने ही वह उसे नकार देते हैं। उसको यदि हानि नहीं पहुँचा सकते तो कुछ बोल कर अपना विरोध प्रकट कर दिया करते हैं। ऐसे व्यक्ति केवल बोलने तक ही अपना मतभेद स्पष्ट करते हैं। कुछ बूढ़े 'सीताराम' या 'राधेश्याम' शब्द से चिढ़ते देखे गए हैं। इसका मूल कारण उनका अपने किसी मत या संप्रदाय अथवा संस्था के प्रति ऐसा लगाव है कि वह दूसरों के मत, संप्रदाय या संस्था के नाम मात्र को सुनने से चिढ़ जाते हैं। कई बार तो वह छोटे बच्चों के उपहास का कारण भी बन जाते हैं। कुछ वृद्ध 'करेले' के नाम लेने भर से चिड़चिड़ा उठते हैं। आपने विदूषक का नाम ज़रूर सुना होगा या फिर सर्कस में जोकर की भूमिका अदा करने वाले व्यक्ति को भी देखा होगा जो कभी अपने हाव-भावों से दर्शकों का मनोरंजन करते हैं तो कभी अपने बौनेपन से दर्शकों का मन मोह लेते हैं।

पाठगत प्रश्न 26.1

निम्नलिखित प्रश्नों के सही उत्तर के सामने सही का निशान (√) लगाइए।

1. वैर की संभावना होती है–

   (क) पशुओं और बच्चों में।

   (ख) चूहे और बिल्ली के संबंध में।

(ग) भावों के संचय की क्षमता रखने वालों में।

(घ) पीड़ित करने वाले को तुरंत दंड देने वालों में।

2. चिड़चिड़ाहट बहुत बढ़ जाए तो–

(क) मनोरंजक हो जाती है।

(ख) खतरनाक हो जाती है।

(ग) वैर का रूप ले लेती है।

(घ) क्रोध को शांत कर देती है।

3. केवल 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए :

(क) क्रोध सदैव धोखा दे सकता है। ( )

(ख) क्रोध पर विवेक के अंकुश का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ( )

(ग) राजकोप प्रजा के हित के लिए किया जाता है। ( )

(घ) क्रोधपूर्ण मुख-मुद्राओं का पहला लक्ष्य विरोधी को डराना-धमकाना होता है। ( )

(ङ) क्रुद्ध यदि अपना सिर फोड़ता है तो यह भी दूसरे को कष्ट दे सकता है। ( )

4. निम्नलिखित कथनों में सही उत्तर पर (√) तथा गलत उत्तर पर (X) का निशान लगाइए।

(क) चाणक्य ने कुशा को उखाड़ कर उनकी जड़ों में मट्ठा डाला। ( )

(ख) क्रुद्ध का लक्ष्य दूसरे को बिना कारण दुख पहुँचाना ही होता है।( )

(ग) संत खलों के वचन सदा सहन करते हैं। ( )

(घ) दंड कोप का एक विधान है। ( )

अंश - 3

उपसंहार

अब तक आप क्रोध के मूल रूप, कारण और क्रोध पर संयम की आवश्यकता से भली-भाँति परिचित हो चुके हैं। निबंध के अंत यानी उपसंहार या समाप्ति पर आते-आते लेखक ने क्रोध आने के सभी कारणों और उनके प्रकट न कर सकने की असमर्थता को 'अमर्ष' नाम दिया है। आइए, इस अमर्ष की विशेष जानकारी प्राप्त करें।

मुख्यतः दूसरे पर क्रोध बढ़ने के क्रमशः तीन कारण होते हैं—पहला हमें किसी की बात बुरी लगी हो। दूसरा वह बात बुरी लगने के कारण सहन न होती हो और तीसरा सहन न होने की स्थिति में वह दुःखयुक्त क्रोध व्यक्ति के अंदर ही जमा हो जाए।

क्रमशः इन तीनों स्थितियों के बाद जो क्रोध की अवस्था होती है उसे 'अमर्ष' कहते हैं। यह अमर्ष वस्तुतः वह दुःख या द्वेष है, जो विपक्षी या शत्रु का कोई उपकार अथवा

बुरा न कर सकने के कारण पैदा होता है। उसमें व्यक्ति का ध्यान लगातार दुःख पहुँचाने वाले की ओर ही लगा रहता है जिससे उसकी सहनशीलता भी खत्म होती चली जाती है। वह विपक्षी के शक्तिशाली, अधिक प्रभावशाली अथवा बहुत समृद्ध होने के कारण उसका कुछ बिगाड़ नहीं सकता तो अपने क्रोध को केवल कठोर शब्दों में ही व्यक्त कर अपनी भड़ास या गरमी निकाल लेता है। उचित अवसर प्राप्त होने पर वह उसे पूरी तरह बरबाद कर सकता है।

इस प्रकार लेखक ने दैनिक जीवन में विभिन्न अवसरों पर पैदा होने वाले क्रोध, उसके प्रकट करने के तरीके, उससे होने वाली हानियाँ, उससे होने वाले समाज के हित तथा क्रोध के विभिन्न रूपों के मनोवैज्ञानिक वर्णन कर क्रोध पर विवेक का संयम रखने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया है ताकि क्रोध के अंधेपन में व्यक्ति अपना संतुलन ही न खो बैठे।

पाठगत प्रश्न 26.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के सही विकल्प चुनिए–

1. किसी बात का बुरा न लगना, उसकी असह्यता का क्षोभयुक्त और आवेगपूर्ण अनुभव होना–
   (क) वैर कहलाता है।
   (ख) चिड़चिड़ाहट है।
   (ग) प्रतिकार कहलाता है।
   (घ) अमर्ष कहलाता है।
2. क्रोध की वह अवस्था सबसे सुंदर है जिसमें मनुष्य–
   (क) पत्थर को चूर-चूर करने लगता है।
   (ख) अपना सिर फोड़ने लगता है।
   (ग) दुःख अपना है या पराया–इस ज्ञान से मुक्त रहता है।
   (घ) 'राधेश्याम' कहने मात्र से ही चिढ़ता है।
3. उपयुक्त शब्द या मुहावरे से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:
   (क) मैं तुम्हें........................में मिला दूँगा।
   (ख) मैं तुम्हारी ....खोदकर फेंक दूँगा।
   (ग) अब तक तो मैं..................आया, अब नहीं रह सकता।
   (घ) मैं तुम्हारा ....नोंच लूँगा।
   (ङ) कभी-कभी लोग क्रोध में अपना ....पटक देते हैं।

26.4 भाषा-शैली

आधुनिक काल के प्रसिद्ध निबंधकार और समीक्षक पंडित रामचंद्र शुक्ल ने इस विचारात्मक निबंध की रचना की है। शुक्ल जी की भाषा गंभीर, तत्समनिष्ठ, साहित्यिक

और प्रभावोत्पादक है। विषय के अनुरूप लेखक ने इस निबंध में संस्कृत के तत्सम शब्दों का प्रयोग अधिक किया है, जैसे – साक्षात्कार, मनोविकार, आविर्भाव, विवेक, अंकुश, परदुःखकातरता, चिरनिवृत्ति, निर्विशेषता आदि। परंतु विषय के अनुकूल देशज और विदेशी शब्दों, जैसे – मुरब्बा, चिड़चिड़ाहट, फुर्तीला, दुनियादार, मट्ठा, तमाचा आदि को भी सहज ही स्वीकार किया है। भाषा की सबसे बड़ी विशेषता समासयुक्त और संधियुक्त होना है, जैसे मनोविकार, परपीड़कोन्मुख, आविर्भाव आदि शब्दों के साथ ही वह विभिन्न उपसर्गयुक्त शब्दों का प्रयोग भी सहज ही कर देते हैं, जैसे–प्रतिकार, परिज्ञान, अनन्य आदि।

आप जानते हैं कि निबंध के अनेक प्रकार होते हैं, इनमें से प्रमुख हैं–वर्णनात्मक, भावात्मक और विचारात्मक। आवश्यकतानुसार इनमें अलग-अलग शैलियों का उपयोग किया जाता है। वर्णनात्मक निबंध में बात को फैलाकर कहा जाता है, इसलिए इसे व्यास शैली में लिखा जाता है। भावात्मक निबंध में भावुकता के तत्त्व के कारण तरंग और विक्षेप शैली होती है। विचारात्मक निबंध गंभीर होता है। उसमें अधिकतर सूत्र-शैली का प्रयोग किया जाता है। सूत्र-शैली का अर्थ है – अत्यधिक सार या संक्षिप्त रूप में विचार प्रस्तुत करना। देखने में तो वह वाक्य छोटा लगता है, लेकिन उसमें बहुत बड़ी बात या घटना छिपी होती है। 'क्रोध' में इस शैली को आप अनेक स्थानों पर देख सकते हैं। छोटे-छोटे अर्थगर्भित वाक्यों में गागर में सागर भरने का शुक्ल जी का प्रयास सचमुच प्रशंसनीय है, जैसे–

1. क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है।
2. क्रोध वैर का अचार या मुरब्बा है।
3. दंड कोप का एक विधान है।

इतना ही नहीं विभिन्न ऐतिहासिक तथा पौराणिक अनुक्रियाओं को पिरोकर लेखक ने क्रोध निबंध की रोचकता और उपयोगिता को बढ़ा दिया है, जैसे–वाल्मीकि की रामायण की रचना, श्रीकृष्ण का शिशुपाल-वध और श्रीराम का रावण और बालि-वध आदि। इसी के साथ-साथ दैनिक जीवन में घटित होने वाली छोटी-छोटी महत्त्वहीन घटनाओं को लेकर क्रोध की प्रासंगिकता को स्पष्ट करना भी शुक्ल जी की भाषा-शैली की विशेषता ही है, जैसे रेल पर सवार व्यक्तियों को तमाचा मारना, 'राधेश्याम' या 'सीताराम' कहने मात्र से किसी का चिढ़ना तथा प्रयास करने पर भी चूल्हा न जलने पर ब्राह्मण देवता का क्रुद्ध होकर आग में पानी डालना। ये प्रसंग हमारे दैनिक जीवन में घटित होते रहते हैं।

शुक्ल जी ने इस निबंध में लोक प्रचलित मुहावरों का प्रयोग कर इसमें प्रवाह और प्रभाव का विशेष संचार किया है। एक ही वाक्य में दो-तीन मुहावरों का प्रयोग दर्शनीय है–'जब कोई दाँत पीसता और गरजता हुआ यह कहने लगे, कि मैं तुम्हें धूल में मिला दूँगा।'

इस तरह के वाक्यों से हमारे सामने एक क्रोधी का चित्र-सा खिंच जाता है। अन्यत्र भी लेखक ने टेढ़ी-सीधी सुनाना, सिर पटकना, किनारे होना तथा ऊँची-नीची पचाना

टिप्पणी

आदि मुहावरों का बड़ी कुशलता पूर्वक प्रयोग किया है, जिससे विषय में गंभीरता के साथ-साथ हास्य-व्यंग्य की छटा पाठक को मोह लेती है।

हिंदी भाषा में मुख्यत: दो प्रकार से शब्दों की रचना की जा सकती है– पहली हैं **उपसर्ग** द्वारा और दूसरी **प्रत्यय** द्वारा। जब मूल शब्द से पहले कुछ जोड़ देते हैं तो उसे 'उपसर्ग' कहते हैं। जब मूल शब्द के बाद कुछ जोड़कर नया शब्द बना देते हैं तो उसे 'प्रत्यय' कहते हैं।

संस्कृत में 'अ' और 'अन्' उपसर्ग, शब्दों के प्रारंभ में जोड़कर विपरीतार्थक शब्द बना लिए जाते हैं, जिनका नियम बहुत स्पष्ट है। आज हिंदी में इन दोनों उपसर्गों का प्रयोग स्वीकार्य है–

'अ' – जब कोई शब्द व्यंजन से प्रारंभ हो। इस पाठ में ही निम्नलिखित शब्द इस प्रकार के हैं।

अपरिचित = अ + परिचित (जो परिचित नहीं है)

अपरिष्कृत = अ + परिष्कृत (जो परिष्कृत नहीं है)

अव्यवस्था = अ + व्यवस्था (जहाँ व्यवस्था नहीं है)

अन् – जब कोई शब्द स्वर से प्रारंभ हो। इस पाठ में ही निम्नलिखित शब्द इस प्रकार हैं:

अनर्थ = अन् + अर्थ (जिसका अर्थ नहीं है, अर्थ का विपरीतार्थक)

अनुचित = अन् + उचित (जो उचित नहीं है)

टिप्पणी : हिंदी का 'अन' उपसर्ग भी विपरीत अर्थ देने के लिए हिंदी के शब्दों में लगाया जाता है।

अनपढ़ = अन + पढ़ (जो पढ़ा नहीं है)

अनजान = अन + जान (जिसको जानते नहीं है)

'अभि' – अधिकता लाने के लिए इस उपसर्ग का प्रयोग किया जाता है। इस पाठ में प्रयुक्त यह शब्द देखिए–

अभिमान = अभि + मान (जिसमें अधिक मान या घमंड है)

आजकल वैशिष्ट्य लाने के लिए इसका प्रयोग किया जा रहा है:

रक्षा = अभिरक्षा (विशेष रूप से की गई रक्षा)

भाषण = अभिभाषण (सामान्य भाषण से विशेष)

इसी प्रकार शब्द के अंत में किसी प्रत्यय को लगाकर नया शब्द बना दिया जाता है। विशेषण से भावात्मक संज्ञा बनाने के लिए दो प्रत्यय हैं–

-ता = मानव+ता = मानवता

पाठ में आए हुए इस प्रकार के शब्द हैं– कठोरता, कायरता, शिथिलता, निर्विशेषता आदि।

-पन = लड़का + पन = लड़कपन

(स्पष्ट है कि 'लड़का' का अंत दीर्घ रूप ह्रस्व)

इसी प्रकार का अन्य शब्द है:

बच्चा + पन = बचपन

इसी प्रकार के अन्य शब्द हैं–अंधापन, खट्टापन, कठोरपन आदि।

जीविकावाचक/पेशा स्पष्ट करने के लिए

- **'दार'** प्रत्यय का प्रयोग किया जाता है; जैसे जमीं (जमीन) + दार = जमींदार

अन्य शब्द हैं– खबरदार, चौकीदार आदि।

पाठगत प्रश्न 26.3

दिए गए विकल्प में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विदेशी शब्द है–

   (क) प्रतिकार — (ग) आँख

   (ख) फुर्तीला — (घ) आविर्भाव

2. निम्नलिखित में से किस शब्द में विसर्ग संधि नहीं है–

   (क) मनोविकार — (ग) पश्चात्ताप

   (ख) दुर्व्यवहार — (घ) आविर्भाव

3. निम्नलिखित में से किस शब्द में प्रत्यय लगा है–

   (क) आलंबन — (ग) चिड़चिड़ाहट

   (ख) अव्यवस्था — (घ) मनोविकार

4. निम्नलिखित में से किस शब्द में उपसर्ग नहीं है–

   (क) अधिकतर — (ग) प्रतिकार

   (ख) अनर्थ — (घ) अपरिचित

5. निम्नलिखित में से किस वाक्य में मुहावरे का प्रयोग है–

   (क) क्रोध दु:ख के चेतन कारण के साक्षात्कार से उत्पन्न होता है।

   (ख) क्रोध वैर का अचार या मुरब्बा है।

   (ग) तुमने मुझे समझा क्या है! मैं तुम्हें धूल में मिला दूँगा।

   (घ) मूर्खता मूर्ख को चाहे रुलाए, पर दुनिया को तो हँसाती ही है।

26.5 भाषा-प्रयोग

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए:

1. सामाजिक जीवन में क्रोध की ज़रूरत बराबर *पड़ती है।*

2. वह चट मट्ठा और कुदाली लेकर पहुँचा **और** कुशों को उखाड़कर उनकी जड़ों में मट्ठा देने *लगा।*
3. यदि आपने उसी समय मार दिया तो आपने क्रोध किया।

- वाक्य 1 में एक ही क्रिया है जो कर्त्ता पद 'क्रोध की ज़रूरत' से जुड़ी है। इसे **'सरल वाक्य'** कहते हैं।
- वाक्य 2 में दो स्वतंत्र वाक्य हैं, उन्हें 'और' योजक से संयुक्त किया गया है। इसे **'संयुक्तवाक्य'** कहा जाता है।
- तीसरे वाक्य में दो क्रियापद है और दो वाक्यांश भी, पर एक वाक्यांश मुख्य अर्थ दे रहा है (आपने क्रोध किया), दूसरा पहले वाक्यांश की शर्त बता रहा है और पहले के आश्रित है, ऐसे वाक्यों को **'मिश्र वाक्य'** कहा जाता है।

निम्नलिखित वाक्यों को पढ़िए और पहचान कर उनका भेद सामने लिखिए:

1. क्रोध सब मनोविकारों से फुर्तीला है। ....
2. क्रोध कभी दया के साथ-कूदता है और कभी घृणा के ....
3. अभिमान दूसरों के मन में या उसकी भावना में बाधा डालता है ....
4. यह कठोरता ऐसी कठोरता को भंग करने के लिए होती है, जो पिघलने वाली नहीं होती। ....
5. वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है। ....
6. राजदंड कोप है और लोककोप धर्मकोप है। ....
7. जिसे अति से अधिक सावधान रहना चाहिए वही कुछ भी नहीं करता। ....
8. काम क्रोध करता है पर नाम दया का ही होता है। ....

- सरल, संयुक्त, मिश्र वाक्यों को एक-एक उदाहरण लिखिए:

सरल वाक्य : ....

संयुक्त वाक्य : ....

मिश्र वाक्य : ....

26.6 आपने क्या सीखा

1. क्रोध मनुष्य के हृदय में स्थित वह भाव है जो दूसरे द्वारा सताए जाने पर या इच्छा के अनुकूल काम न करने पर या अपने-पराए की भावना उत्पन्न होने पर स्वत: ही पैदा होता है।
2. क्रोध की आवश्यकता लोकहित के लिए भी होती है। ऐसी स्थिति में अक्सर वह साहित्य का रूप ले लेता है।

3. क्रोध कभी-कभी घातक भी सिद्ध होता है। इससे बनते काम बिगड़ जाते हैं, क्रोध करने से मानसिक शांति भंग हो जाती है, ऐसे समय मानसिक संतुलन बनाए रखना अति आवश्यक हो जाता है। किसी भी प्रकार से क्रोध पर नियंत्रण रखना चाहिए।
4. क्रोध जब किसी कारणवश प्रकट नहीं हो पाता तो वैर का रूप ले लेता है। शुक्ल जी ने इसे अचार या मुरब्बा कहा है। इस प्रकार के क्रोध भाव का संचयन बच्चों तथा जानवरों में नहीं होता, अतः उनमें वैर-भाव नहीं होता।
5. संपूर्ण निबंध में तत्समनिष्ठ शैली और प्रवाहपूर्ण मुहावरों का सार्थक प्रयोग हुआ है।
6. पारिभाषिक और सूक्तिमय वाक्यावलि का प्रयोग, जैसे–*'क्रोध शांति भंग करने वाला मनोविकार है।', 'वैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।', 'दंड कोप का ही एक विधान हैं।,' 'मैं तुम्हें धूल में मिला दूँगा।'*
7. शब्द-रचना मुख्यतः दो प्रकार से होती है–पहली उपसर्ग जोड़कर और दूसरी प्रत्यय जोड़कर, जैसे–**अन**जान, **ना**समझ (उपसर्ग), पान**दान**, समझ**दार** (प्रत्यय)।

26.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

आचार्य रामचंद्र शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के बस्ती ज़िले के अगोना गाँव में हुआ था। उत्तर प्रदेश में ही उनकी शिक्षा-दीक्षा हुई। सन् 1910 में काशी नागरी प्रचारणी सभा द्वारा प्रकाशित 'हिंदी शब्दकोश' निर्माण में सहायक संपादक के पद पर कार्य कर शुक्ल जी ने अपनी हिंदी योग्यता की अमिट छाप छोड़ी।

सर्वप्रथम आपने हिंदी साहित्य का इतिहास लिखा, जो आज भी प्रामाणिक है। इसके अतिरिक्त आपकी अनेक रचनाएँ हैं– जायसी ग्रंथावली की भूमिका, सूरदास, तुलसीदास तथा चिंतामणि (कई भागों में)। चिंतामणि आलोचनात्मक, साहित्यिक और विचार प्रधान मनोवैज्ञानिक निबंधों का संग्रह है। 'क्रोध' निबंध आपकी पुस्तक 'चिंतामणि' संकलन से ही लिया गया है।

शुक्ल जी की भाषा-शैली की विशेषताएँ इस प्रकार हैं –

1. प्रवाहपूर्ण, विचारप्रधान, तत्समनिष्ठ भाषा।
2. क्रमबद्धता और विचारों की एकसूत्रता, जैसे–*'क्रोध का वैर से अमर्ष की ओर क्रमशः बढ़ना।'*
3. विभिन्न उदाहरणों को देकर विषय को समझाने का प्रभावपूर्ण तरीका, जैसे–*''यात्रियों का परस्पर तमाचा मारना'', 'चाणक्य का कुश चुभने पर उसकी जड़ों को उखाड़ना'* आदि।

संक्षेप में कहा जा सकता है, उनकी भाषा-शैली उनके व्यक्तित्व की छाप छोड़ती है।

(ख) क्रोध स्थायी भाव से रौद्र रस की उत्पत्ति होती है। हिंदी साहित्य में नौ रस और उनके स्थायी भाव निम्नलिखित प्रकार से हैं।

रस	**स्थायीभाव**
श्रृंगार	रति

टिप्पणी

हास्य	हास
वीर	उत्साह
करुण	शोक
भयानक	भय
बीभत्स	घृणा
अद्‌भुत	विस्मय
शांत	निर्वेद/शम
रौद्र	क्रोध

साहित्य में वर्णित इन नौ रसों के नाम तथा स्थायी भाव याद कीजिए।

26.8 पाठांत प्रश्न

1. क्रोध की आवश्यकता क्यों पड़ती है?
2. क्रोध करने से क्या हानि हो सकती है?
3. शुल्कजी ने क्रोध को अंधा क्यों कहा?
4. क्रोध वैर में कैसे बदल जाता है?
5. बच्चों और पशुओं में वैर क्यों नहीं होता?
6. राजकोप और लोककोप में क्या अंतर है?
7. चिड़चिड़ाहट विनोद की सामग्री कैसे हो सकती है?
8. अमर्ष को क्रोध का असहाय रूप क्यों माना जाता है?
9. पाठ से पाँच मुहावरे छाँटिए तथा उनका अपने वाक्यों में ठीक-ठीक प्रयोग कीजिए।
10. निम्नलिखित अंशों की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए।
    (क) सामाजिक जीवन में क्रोध ....प्रभाव नहीं।
    (ख) क्रोध सब मनोविकारों ....कभी घृणा के।
    (ग) जिस क्रोध के त्याग ....दिखाई देगा।

26.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (घ) 3. (ग) 4. (क) त्रुटि (ख) क्रोध (ग) भंग करने वाला
   (घ) अर्थपरायण, धर्मपरायण
5. (ख) 6. (क) 7. (ग)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

26.1 1. (ग)
2. (क)
3. (क) नहीं (ख) नहीं (ग) हाँ (घ) हाँ (ङ) हाँ
4. (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) √

26.2 1. (घ) 2. (ग)
3. (क) धूल/मिट्टी (ख) जड़ें (ग) सहता (घ) मुँह (ङ) सिर

26.3 1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (क) 5. (ग)

टिप्पणी

301hi27

27

आखिरी चट्टान

हमारे देश में एक से बढ़कर एक आकर्षक प्राकृतिक दृश्य हैं—बर्फ से ढके पहाड़, कल-कल करतीं नदियाँ-झरने, हरे-भरे जंगल, लहलहाते खेत, दूर-दूर तक फैले हुए सागर। क्या इन्हें आप अपनी आँखों से नहीं देखना चाहेंगे? यदि हाँ ! तो निकल पड़िए घर से बाहर किसी लंबी यात्रा पर। संसार में बहुत से ऐसे लोग हुए हैं जिन्होंने लंबी-लंबी यात्राएँ की हैं। कोलंबस, मार्कोपोलो, वास्कोडिगामा, मेंगस्थनीज, फाइयान, राहुल सांकृत्यायन आदि साहसी यात्रियों से यदि आप थोड़ी-सी भी प्रेरणा ले सकें तो आपका जीवन अनेक रोमांचकारी अनुभवों से जुड़ जाएगा।

इसी कड़ी में एक नाम और भी है—मोहन राकेश। उनकी रचना 'आखिरी चट्टान' में उन्होंने बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और अरब सागर के मिलन-स्थल पर स्थित कन्याकुमारी के आस-पास के दृश्यों का चित्रात्मक वर्णन किया गया है। आइए, इस पाठ में हम प्रकृति के अनुपम सौंदर्य का आनंद लें और उसकी सराहना करें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भारत के दक्षिणी भाग की भौगोलिक जानकारी दे सकेंगे;
- कन्याकुमारी और उसके परिवेश का वर्णन कर सकेंगे।
- समुद्र के बीच में स्थित विवेकानंद चट्टान का वर्णन अपने शब्दों में लिख सकेंगे;
- कन्याकुमारी का सूर्योदय और सूर्यास्त के आनंददायक दृश्य का वर्णन अपने शब्दों में कर सकेंगे;
- यात्रा-वृत्तांत विधा के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' का विवेचन कर सकेंगे;
- लेखक की लालित्यपूर्ण भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।

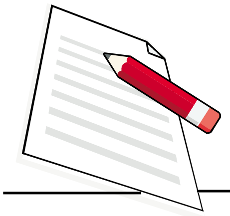

टिप्पणी

क्रियाकलाप

क्या आप सूर्योदय से पूर्व उठते हैं? यदि नहीं, तो एक दिन उठिए और पूर्व की ओर मुख कीजिए। देखते रहिए पूर्व दिशा की ओर। देखिए पूर्वी आकाश में धीरे-धीरे एक अद्‌भुत लालिमा छा रही है। यही उषाकाल कहलाता है। और उस सूर्य की एक हल्की-सी लकीर ऊपर उठ रही है। देखते-ही-देखते सूरज का गोला अपनी किरणों के साथ कितनी तेज़ी से ऊपर उठ गया है। सूरज कितना गोल और लाल नज़र आता है, इसे ही बाल सूर्य कहते हैं। जिस सूरज को हम दिन में थोड़ी देर तक भी नहीं देख पाते, इस समय कितना कोमल और सुहावना लग रहा है।

अब इंतजार कीजिए शाम का। शाम होते ही पश्चिमी आकाश की ओर देखिए। सूरज का गोला फिर लाल हो गया है, आपके देखते-ही-देखते सूरज का निचला भाग दिखना बंद हो गया है। अरे यह क्या! सूरज का आधा हिस्सा कहाँ चला गया? और अब? सूर्य का पूरा गोला ही अदृश्य हो गया है। यह संध्याकाल है।

इन दोनों दृश्यों की तुलना कीजिए। कागज़-कलम लेकर अपने इस अनुभव का वर्णन अपने शब्दों में लिखिए।

आइए, अब हम मोहन राकेश के इस पाठ को ध्यानपूर्वक पढ़ लेते हैं। पाठ बहुत सरल भाषा में है। आपकी सुविधा के लिए जहाँ कहीं कुछ कठिन शब्द आए हैं, वहीं हाशिए पर उनके अर्थ दे दिए गए हैं।

शब्दार्थ

पृष्ठभूमि – पीछे का भाग
समाधिस्थ – ध्यान मग्न
क्षितिज – जहाँ धरती और आकाश मिलते दिखाई दें
चूरा बूँद – छोटी-छोटी बूँद, जलकण
अपेक्षया – अपेक्षाकृत, बनिस्पत

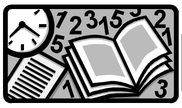

27.1 मूलपाठ

आखिरी चट्टान

कन्याकुमारी। सुनहले सूर्योदय और सूर्यास्त की भूमि।

केप होटल के आगे बने बाथ टैंक के बायीं तरफ़ समुद्र के अन्दर से उभरी स्याह चट्टानों में से एक पर खड़ा होकर मैं देर तक भारत के स्थल-भाग की आखिरी चट्टान को देखता रहा। पृष्ठभूमि में कन्याकुमारी के मन्दिर की लाल और सफ़ेद लकीरें चमक रही थीं। अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगायी थी, हर तरफ़ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी। हिन्द महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बल खाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थीं। मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था– शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति। तीनों तरफ़ से क्षितिज तक पानी-पानी था, फिर भी सामने का क्षितिज, हिन्द महासागर का, अपेक्षया अधिक दूर और अधिक गहरा जान पड़ता था। लगता था कि उस ओर दूसरा छोर है ही नहीं। तीनों ओर के क्षितिज को

आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ। एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा– बड़ी–बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान जब अपना होश हुआ, तो देखा कि मेरी चट्टान भी तब तक बढ़ते पानी में काफ़ी घिर गई है। मेरा पूरा शरीर सिहर गया। मैंने एक नज़र फिर सामने के उमड़ते विस्तार पर डाली और पास की एक सुरक्षित चट्टान पर कूद कर दूसरी चट्टानों पर से होता हुआ किनारे पर पहुँच गया।

पच्छिमी क्षितिज में सूर्य धीरे-धीरे नीचे जा रहा था। मैं सूर्यास्त की दिशा में चलने लगा। दूर पच्छिमी तट-रेखा के एक मोड़ पर पीली रेत का एक ऊँचा टीला नज़र आ रहा था। सोचा उस टीले पर जाकर सूर्यास्त देखूँगा।

यात्रियों की कितनी ही टोलियाँ उस दिशा में जा रही थीं। हम लोग टीले पर पहुँच गये। यह वह 'सैंडहिल' थी जिसकी चर्चा मैं वहाँ पहुँचने के बाद से ही सुन रहा था। सैंडहिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक, दो-तीन गांधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेन्ट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी। कन्याकुमारी का सूर्यास्त देखने के लिए उन्होंने विशेष रुचि के साथ सुन्दर रंगों का रेशम पहना था। हवा समुद्र की तरह उस रेशम में भी लहरें पैदा कर रही थी। मिशनरी युवतियाँ वहाँ आकर थकी-सी एक तरफ़ बैठ गयीं–उस पूरे केनवस में एक तरफ़ छिटके हुए कुछ बिन्दुओं की तरह। उनसे कुछ दूर पर एक रंगहीन बिन्दु, मैं, ज़्यादा देर अपनी जगह स्थिर नहीं रह सका। सैंडहिल से सामने का पूरा विस्तार तो दिखायी दे रहा था, पर अरब सागर की तरफ़ एक और ऊँचा टीला था जो उधर के विस्तार को ओट में लिये था। सूर्यास्त पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में देखा जा सके, इसके लिए मैं कुछ देर सैंडहिल पर रुका रहकर आगे उस टीले की तरफ़ चल दिया। पर रेत पर अपने अकेले कदमों को घसीटता हुआ वहाँ पहुँचा, तो देखा कि उससे आगे उससे भी ऊँचा एक और टीला है। जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किये। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था। हर अगले टीले पर पहुँचने पर लगता था कि शायद अब एक ही टीला और है, उस पर पहुँचकर पच्छिमी क्षितिज का खुला विस्तार अवश्य नज़र आ जाएगा। और सचमुच एक टीले पर पहुँचकर वह खुला विस्तार सामने फैला दिखायी दे गया– वहाँ से दूर तक एक रेत की लम्बी ढलान थी, जैसे वह टीले से समुद्र में उतरने का रास्ता हो। सूर्य तब पानी से थोड़ा ही ऊपर था। अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो, और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

पीछे दायीं तरफ़ दूर-दूर हटकर नारियलों के झुरमुट नज़र आ रहे थे। गूँजती हुई तेज हवा से उनकी टहनियाँ ऊपर को उठ रही थीं। पच्छिमी तट के साथ-साथ सूखी पहाड़ियों की एक श्रृंखला दूर तक चली गई थी जो सामने फैली रेत के कारण बहुत रूखी, बीहड़ और वीरान लग रही थी। सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस

शब्दार्थ

सैंडहिल – रेत का टीला
मिशनरी – सेवा भाव वाले ईसाई
केनवस – खुला चित्रपट
सर करना – विजय, जीतना

टिप्पणी

तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत का कुँवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई।

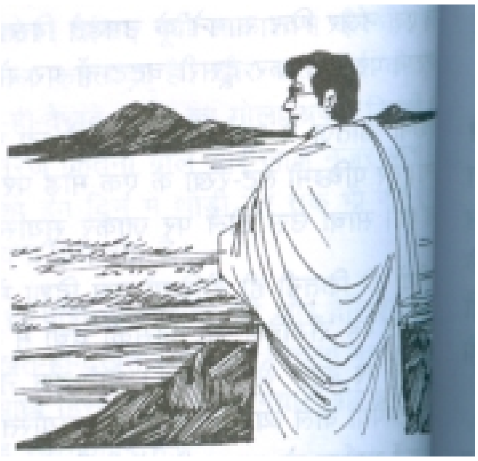

चित्र 27.1

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना-ही-सोना घुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असम्भव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण बीतने पर वह लहू भी धीरे-धीरे बैंजनी और बैंजनी से काला पड़ गया। मैंने फिर एक बार मुड़कर दायीं तरफ़ पीछे देख लिया। नारियलों की टहनियाँ उसी तरह हवा में ऊपर उठी थीं। हवा उसी तरह गूँज रही थी पर पूरे दृश्य पर स्याही फैल गयी थी एक दूसरे से दूर खड़े झुरमुट, स्याह पड़कर, जैसे लगातार सिर धुन रहे थे और हाथ-पैर पटक रहे थे। मैं अपनी जगह से उठ खड़ा हुआ और मुट्ठियाँ भींचता-खोलता कभी उस तरफ और कभी समुद्र की तरफ़ देखता रहा।

अचानक खयाल आया कि मुझे वहाँ से लौटकर भी जाना है। इस खयाल से ही शरीर में कँपकँपी भर गई। दूर सैंडहिल की तरफ़ देखा। वहाँ स्याही में डूबे कुछ धुँधले रंग हिलते नज़र आ रहे थे। मैंने रंगों को पहचानने की कोशिश की, पर उतनी दूर से आकृतियों को अलग-अलग कर सकना सम्भव नहीं था। मेरे और उन रंगों के बीच स्याह पड़ती रेत के कितने ही टीले थे। मन में डर समाने लगा कि क्या अँधेरा होने से पहले मैं उन सब टीलों को पार करके जा सकूँगा? कुछ कदम उस तरफ़ बढ़ा भी पर लगा कि नहीं! उस रास्ते से जाऊँगा, तो शायद रेत में ही भटकता रह जाऊँगा। इसलिए सोचा बेहतर है नीचे समुद्र तट पर उतर जाऊँ– तट का रास्ता निश्चित रूप से केप होटल के सामने तक ले जाएगा। निर्णय तुरन्त करना था, इसलिए बिना और सोचे मैं रेत पर बैठकर नीचे तट की तरफ़ फिसल गया। पर तट पर पहुँचकर फिर कुछ क्षण बढ़ते अँधेरे की बात भूला रहा। कारण था तट की रेत। यूँ पहले भी समुद्र तट पर कई-कई रंगों की रेत देखी थी। सुरमई, खाकी, पीली और लाल। मगर जैसे रंग उस रेत में थे, वैसे मैंने पहले कभी कहीं की रेत में नहीं देखे थे। कितने ही अनाम रंग थे वे, एक-एक इंच पर एक-दूसरे से अलग और एक-एक रंग कई-कई रंगों की झलक लिए हुए। काली घटा और घनी लाल आँधी को मिलाकर रेत के आकार में ढाल देने से रंगों के जितनी तरह के अलग-अलग सम्मिश्रण पाये जा सकते थे, वे सब यहाँ थे और उनके अतिरिक्त भी बहुत-से रंग थे। मैंने कई अलग-अलग रंगों की रेत को हाथ में लेकर देखा और मसल कर नीचे गिर जाने दिया। जिन रंगो को हाथों से नहीं छू सका, उन्हें पैरों

शब्दार्थ

द श्यपट	–	आँखों के आगे का विस्तार
सुरमई	–	काली, मटमैली
स्याह	–	काला
सिर धुनना	–	बहुत दुखी होना
अनाम	–	जिसका नाम न हो
सम्मिश्रण	–	अच्छी तरह से मिलाया हुआ

से मसल दिया। मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था। यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।

समुद्र में पानी बढ़ रहा था। तट की चौड़ाई धीरे-धीरे कम होती जा रही थी। एक लहर मेरे पैरों को भिगो गई, तो सहसा मुझे खतरे का एहसास हुआ। मैं जल्दी-जल्दी चलने लगा। तट का सिर्फ़ तीन-तीन, चार-चार फुट हिस्सा पानी से बाहर था। लग रहा था कि जल्दी ही पानी उसे भी अपने अन्दर समा लेगा। एक बार सोचा कि खड़ी रेत से होकर फिर ऊपर चला जाऊँ। पर वह स्याह पड़ती रेत इस तरह दीवार की तरह उठी थी कि उस रास्ते जाने की कोशिश करना ही बेकार था। मेरे मन में खतरा बढ़ गया। मैं दौड़ने लगा। दो-एक और लहरें पैरों के नीचे तक आकर लौट गईं। मैंने जूता उतारकर हाथ में ले लिया। एक ऊँची लहर से बचकर इस तरह दौड़ा जैसे सचमुच वह मुझे अपनी लपेट में लेने आ रही हो। सामने एक ऊँची चट्टान थी। वक्त पर अपने को सँभालने की कोशिश की, फिर उससे टकरा गया। बाहों पर हल्की खरोंच आ गई, पर ज़्यादा चोट नहीं लगी। चट्टान पानी के अन्दर तक चली गई थी–उसे बचाकर आगे जाने के लिए पानी में उतरना आवश्यक था। पर इस समय पानी की तरफ़ पाँव बढ़ाने का मेरा साहस नहीं हुआ। मैं चट्टान की नोकों पर पैर रखता किसी तरह उसके ऊपर पहुँच गया। सोचा नीचे खड़े रहने की अपेक्षा वह अधिक सुरक्षित होगा। पर ऊपर पहुँचकर लगा जैसे मेरे साथ मज़ाक किया गया हो। चट्टान के उस तरफ तट का खुला फैलाव था – लगभग सौ फुट का। कितने ही लोग वहाँ टहल रहे थे। ऊपर सड़क पर जाने के लिए वहाँ से रास्ता भी बना था। मन से डर निकल जाने से मुझे अपने आप काफ़ी हल्का लगा और मैं चट्टान से नीचे कूद गया।

रात केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिन्द महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें–एक पौधे की टहनियाँ। नीचे सड़क पर टार्च जलाता-बुझाता एक आदमी। दक्षिण-पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी।

सूर्योदय। हम आठ आदमी 'विवेकानन्द चट्टान' पर बैठे थे। चट्टान तट से सौ-सवा-सौ गज आगे समुद्र के बीच जाकर है– वहाँ, जहाँ बंगाल की खाड़ी की भौगोलिक सीमा समाप्त होती है। मेरे अलावा तीन कन्याकुमारी के बेकार नवयुवक थे जिनमें से एक ग्रेजुएट था। चार मल्लाह थे जो एक छोटी-सी मछुआ नाव में हमें वहाँ लाए थे। नाव क्या

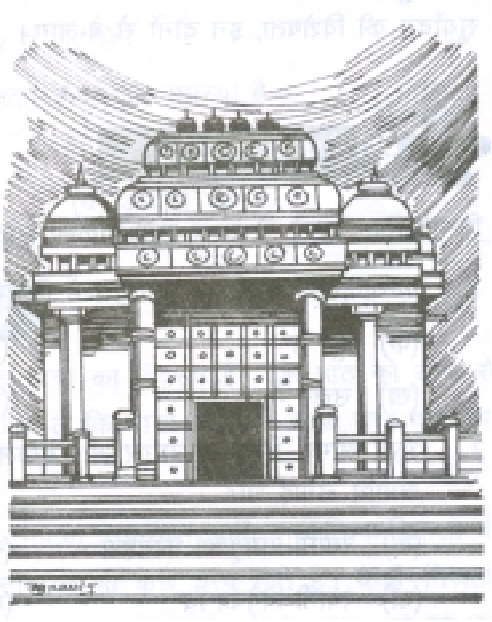

चित्र 27.2 विवेकानंद रॉक

टिप्पणी

शब्दार्थ

एहसास – अनुभव
ग्रेजुएट – बी.ए. या उसके समकक्ष उपाधि प्राप्त
स्थगित – टालना, रोकना
अर्जियाँ – आवेदन-पत्र
दार्शनिक – दर्शनशास्त्र संबंधी
बाइना-क्यूलर – एक यंत्र जिससे छोटी चीज़ बड़ी, और दूर की चीज़ पास नज़र आती है।
कडल-काक – एक प्रकार का पक्षी
अर्घ्य – जल चढ़ाना
बेलाग – निश्चिंत

टिप्पणी

थी, रबड़-पेड़ के तीन तनों को साथ जोड़ लिया गया था, बस। नीचे की नुकीली चट्टानों और ऊपर की ऊँची-ऊँची लहरों से बचाते हुए मल्लाह नाव को उस तरफ़ ला रहे थे, तो मैंने आसमान की तरफ़ देखते हुए उतनी देर अपनी चेतना को स्थगित रखने की चेष्टा की थी, अपने अन्दर के डर को दिखावटी उदासीनता से ढके रखना चाहा था। पर जब चट्टान पर पहुँच गए, तो डर मेरी टाँगों में उतर गया क्योंकि वहाँ बैठे हुए भी वे हल्के-हल्के काँप रही थीं।

ग्रेजुएट नवयुवक मुझे बता रहा था कि कन्या-कुमारी की आठ हज़ार की आबादी में कम-से-कम चार-पाँच सौ शिक्षित नवयुवक ऐसे हैं जो बेकार हैं। उनमें से सौ के लगभग ग्रेजुएट हैं। उनका मुख्य धन्धा है नौकरियों के लिए अर्जियाँ देना और बैठकर आपस में बहस करना। वह खुद वहाँ फ़ोटो-एल्बम बेचता था। दूसरे नवयुवक भी उसी तरह के छोटे-मोटे काम करते थे। "हम लोग सीपियों का गूदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धान्तों पर बहस करते हैं", वह कह रहा था, "इस चट्टान से इतनी प्रेरणा तो हमें मिलती ही है।"

पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में बिखरी स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत-से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। घाट से थोड़ा हटकर गवर्नमेंट गेस्ट हाउस के बैरे सरकारी मेहमानों को सूर्योदय के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख मालाएँ दिखला रही थीं। वे लोग दोनों काम साथ-साथ कर रहे थे—मालाओं का मोल-तोल और अपने बाइनाक्यूलर्स से सूर्यदर्शन। मेरा साथी अब मुहल्ले-मुहल्ले के हिसाब से मुझे बेकारी के आँकड़े बता रहा था। बहुत-से कडल-काक हमारे आस-पास तैर रहे थे—वहाँ की बेकारी की समस्या और सूर्योदय की विशेषता, इन दोनों से बे-लाग।

— **मोहन राकेश**

बोध प्रश्न 27.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प छाँटकर सही (√) का चिह्न लगाइए।

1. कन्याकुमारी भारत के मानचित्र में किधर की ओर स्थित है—

   (क) पूर्व में (ग) दक्षिण में

   (ख) उत्तर में (घ) पश्चिम में

2. अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी के संगम स्थल पर किसने समाधि लगाई थी?

   (क) स्वामी रामकृष्ण परमहंस (ग) स्वामी दयानंद सरस्वती

   (ख) स्वामी विवेकानंद (घ) स्वामी चिन्मयानंद

3. लेखक का पूरा शरीर सिहर गया, क्योंकि–
   (क) वह लोगों की भीड़ देखकर डर गया।
   (ख) सामने समुद्र में ऊँची-ऊँची लहरें उठ रही थी।
   (ग) चारों ओर अँधेरा छा गया था।
   (घ) वह जिस चट्टान पर खड़ा था वह बढ़ते पानी में घिर गई थी।
4. लेखक के अनुसार सैंडहिल के रंगीन होने का कारण था–
   (क) बहुत से लोगों की उपस्थिति।
   (ख) चारों ओर रंगीन रेत बिखरी हुई थी।
   (ग) सूर्य की रंग-बिरंगी किरणें सैंडहिल पर पड़ रही थीं।
   (घ) बहुत से लोग सैंडहिल पर लाल, पीला, हरा, नीला रंग बिखेर रहे थे।
5. पीछे दाईं तरफ़ लेखक को दूर-दूर हटकर नज़र आ रहे थे–
   (क) पक्षियों के झुंड
   (ख) पशुओं के झुंड
   (ग) लोगों का रेला
   (घ) नारियलों के झुरमुट
6. सूर्यास्त देखने के बाद वापस लौटते हुए सहसा लेखक को एहसास हुआ कि
   (क) कहीं चोर-उचक्के उसे लूट न लें।
   (ख) कोई भूत-प्रेत उससे चिपट न जाए।
   (ग) समुद्र की लहरें उसे चारों ओर से कहीं घेर न लें।
   (घ) तट-रक्षक उसे गिरफ़्तार न कर लें।
7. कन्याकुमारी के शिक्षित नवयुवकों की प्रमुख समस्या है–
   (क) पीने के पानी की।
   (ख) बेकारी की।
   (ग) विवाह की।
   (घ) आवास की।

27.3 आइए समझें

यह पाठ एक यात्रा-वृत्तांत यानी कि यात्रा का विवरण है। इस पाठ को ठीक से समझने के लिए आइए, पहले यह जाने लें कि यात्रा-वृत्तांत के मुख्य तत्त्व क्या-क्या हैं।

आप जानते हैं जिस प्रकार कहानी, नाटक, उपन्यास आदि साहित्यिक-विधाओं के तत्त्व होते हैं, उसी प्रकार यात्रा-वृत्तांत के भी कुछ तत्त्व होते हैं। ये हैं–निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता तथा चित्रात्मक सरल भाषा का प्रयोग। आइए, अब हम यह देखें कि 'आखिरी चट्टान' पाठ में ये विशेषताएँ मिलती हैं या नहीं।

टिप्पणी

यात्रा-साहित्य के तत्त्वों के आधार पर पाठ की समीक्षा

निजता

यात्रा-साहित्य में लेखक के अपने अनुभवों का वर्णन होता है, दूसरों के अनुभवों का नहीं। इन रचनाओं के माध्यम से हम लेखक के निजी जीवन के बारे में अनेक महत्त्वपूर्ण बातों को जानने में समर्थ हो जाते हैं। लेखक यात्रा के दौरान प्राकृतिक दृश्यों में स्वयं को पूरी तरह समा लेता है, वह चेतनाहीन-सा उन्हें देखता रहता है। एक उदाहरण देखिए– *'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ।* इसी प्रकार– *'उस दृश्य के बीच मैं जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा– बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'*

इस रचना के निम्नलिखित अंश को पढ़कर हमें ज्ञात होता है कि लेखक कोई भी काम अधूरे मन से नहीं करता, वह कष्ट-कठिनाई से घबराता नहीं– *'जल्दी-जल्दी चलते हुए मैंने एक के बाद एक कई टीले पार किए। टाँगें थक रही थीं पर मन थकने को तैयार नहीं था।'*

निजता के अंतर्गत आत्मीयता का भाव भी जुड़ा हुआ है। आत्मीयता का अर्थ यह है कि लेखक ने जिन स्थानों या व्यक्तियों का वर्णन किया है, उनमें या उनके साथ वह पूरी तरह रम पाया है या नहीं। पूरी तरह रम जाना ही आत्मीयता है। यह निजता या आत्मीयता ही यात्रा-वृत्तांत को पर्यटक गाइड से अलग करती है। 'आखिरी चट्टान' रचना से उद्धृत निम्नलिखित अवतरण से ज्ञात होता है कि लेखक का मन समुद्र तट की रेत में किस कदर रम गया हैं– *'मन था कि किसी तरह हर रंग की थोड़ी-थोड़ी रेत अपने पास रख लूँ। पर उसका कोई उपाय नहीं था, यह सोचकर कि फिर किसी दिन आकर उस रेत को बटोरूँगा, मैं उदास मन से वहाँ से आगे चल दिया।*

स्थानीयता

स्थानीयता से आशय होता है कि यात्रा-वर्णन के लिए लेखक एक स्थान-विशेष को अपना विषय चुनता है। यात्रा के दौरान विभिन्न स्थान, नगर, वन, समुद्र आदि अपने प्राकृतिक सौंदर्य, रीतिरिवाज़, संस्कृति-कला आदि की अमिट छाप लेखक के मन पर अंकित कर देते हैं। अतः जब वह इन सबके बारे में लिखने बैठता है तो उन विशेषताओं को अवश्य प्रकट करता है जो उस स्थान से जुड़ी हैं। उदाहरण के लिए 'आखिरी चट्टान' से लिए गए निम्नलिखित अंश को देखिए जिसमें लेखक ने कन्याकुमारी में स्थित विवेकानंद चट्टान का प्रभावशाली वर्णन किया है: *'अरब सागर, हिन्द महासागर और बंगाल की खाड़ी–इन तीनों के संगम-स्थल-सी वह चट्टान, जिस पर कभी स्वामी विवेकानन्द ने समाधि लगाई थी, हर तरफ़ से पानी की मार सहती हुई स्वयं भी समाधिस्थ-सी लग रही थी।'* अपने असीम प्रकृति प्रेम के कारण मोहन राकेश ने 'आखिरी चट्टान' में कन्याकुमारी के मंदिर, पच्छिमी तट रेखा पर स्थित सैंडहिल, सैंडहिल के पीछे पश्चिमी क्षितिज, सागर-तट के नारियलों के झुरमुट, अनेक रंगों की रेत, उफनती-मचलती हुई सागर-लहरों का अत्यंत, मोहक वर्णन किया है, जिससे सिद्ध

होता है कि लेखक ने इस पाठ में स्थान-विशेष के साथ निजता या आत्मीयता स्थापित की है।

तथ्यात्मकता

अपने यात्रा-वृत्तांत में लेखक जिस स्थान, व्यक्ति या अन्य वस्तुओं का वर्णन करता है, पाठकों को उनके बारे में तथ्यात्मक जानकारी भी देता चलता है। इससे पाठक यात्रा किए बिना ही उन तमाम तथ्यों से परिचित हो जाता है। तथ्यों के विवरण से स्थान या वस्तु-विशेष का अधिक सजीव चित्र उभरता है। इसीलिए तथ्यात्मकता को स्थानीयता का एक पूरक गुण भी माना जाता है। 'आखिरी चट्टान' के इस अंश को देखिए:

हिन्द महासागर की ऊँची-ऊँची लहरें मेरे आस-पास की स्याह चट्टानों से टकरा रही थीं। बलखाती लहरें रास्ते की नुकीली चट्टानों से कटती हुई आती थीं जिससे उनके ऊपर चूरा बूँदों की जालियाँ बन जाती थी।'

इसी प्रकार 'सैंडहिल पर बहुत से लोग थे। आठ-दस नवयुवतियाँ, छह-सात नवयुवक, दो-तीन गांधी टोपियों वाले व्यक्ति। वे शायद सूर्यास्त देख रहे थे। गवर्नमेन्ट गेस्ट हाउस के बैरे उन्हें सूर्यास्त के समय की कॉफ़ी पिला रहे थे। उन लोगों के वहाँ होने से सैंडहिल बहुत रंगीन हो उठी थी।'

'सूर्यास्त और सूर्योदय के समय सूर्य की किरणों द्वारा रेत पर बिखेरा गया रंग', 'समुद्र के पानी का सुनहरी से लाल, लाल से बैंजनी और अंत में काला-स्याह पड़ना' आदि अनेक तथ्यात्मक विवरण इस पाठ में मौजूद हैं।

चित्रात्मक सरल भाषा

यात्रा-वृत्तांत में स्थान, व्यक्ति आदि का विवरण ही अधिक होता है। इन विवरणों को प्रस्तुत करते समय यात्रा-साहित्य का लेखक सरल, रोचक और चित्रात्मक भाषा का प्रयोग करता है। इससे जहाँ वर्णन में रोचकता आती है, वहीं पाठक भी उस विवरण को मनोयोग से पढ़ता है। यात्रा साहित्य के लेखक और पाठक में बातचीत का सा संबंध बना रहता है। 'आखिरी चट्टान' की भाषा भी ऐसी ही चित्रात्मक, सरल और आम बोलचाल की भाषा है। एक उदाहरण देखिए– *'रात। केप होटल का लॉन। अँधेरे में हिन्द महासागर को काटती हुई स्याह लकीरें–एक पौधे की टहनियाँ, नीचे आदमी। दक्षिण पूर्व के क्षितिज में एक जहाज की मद्धिम-सी रोशनी'*। एक और उदाहरण देखिए–

'पानी और आकाश में तरह-तरह के रंग झिलमिलाकर, छोटे-छोटे द्वीपों की तरह समुद्र में स्याह चट्टानों की ओट से सूर्य उदित हो रहा था। घाट पर बहुत से लोग उगते सूर्य को अर्घ्य देने के लिए एकत्रित थे। दो स्थानीय नवयुवतियाँ उन्हें अपनी टोकरियों से शंख और मालाएँ दिखला रही थीं।

यात्रा-साहित्य का लेखक जिस स्थान-विशेष का वर्णन करता हैं, वहाँ के जन-जीवन संबंधी अनुभवों को अपनी रचना में पिरोता है। ऐसा करते समय बहुत से विदेशी शब्दों

टिप्पणी

का प्रयोग हो जाना स्वाभाविक है। 'आखिरी चट्टान' पाठ में भी उर्दू , अंग्रेज़ी, आदि के शब्दों का समावेश हुआ है परंतु ये शब्द पाठक के सामान्य ज्ञान के हैं। इनके प्रयोग से अर्थ-ग्रहण में बाधा उत्पन्न नहीं होती। जैसे – केप होटल, बाथ टैंक, स्याह, लकीरें, हिस्सा, होश, नज़र, सैंडहिल, मिशनरी, केनवस, वीरान, खयाल, एहसास, लॉन, ग्रेजुएट, फोटो-एल्बम, मेहमान, बाइनाक्यूलर आदि।

इसी प्रकार सामान्य बोलचाल के शब्दों की भी इस पाठ में कमी नहीं है। जैसे – टोलियाँ, टीला, झुरमुट, टहनियाँ, लहू, मुट्ठियाँ, भींचता, कँपकँपी, लपेट, खरोंच, मछुआ, नाव, धंधा, मोल-तोल, मुहल्ले आदि। इन सामान्य बोलचाल के शब्दों के प्रयोग से वर्णन में स्वाभाविकता, रोचकता और चित्रात्मकता आ गई है। अतः हम कह सकते हैं कि 'आखिरी चट्टान' शीर्षक रचना में यात्रा-वृत्तांत के सभी आवश्यक तत्त्वों का समावेश हो गया है।

पाठगत प्रश्न 27.1

1. यात्रा-वृत्तांत के चार तत्त्वों का उल्लेख कीजिए–

   (क) .... (ख) ....

   (ग) .... (घ) ....

2. पाठ में से किन्हीं दो अंशों का चुनाव कीजिए जिनसे लेखक के प्रकृति-प्रेमी होने का पता चलता है।

   (क) ....

   (ख) ....

3. सूर्यास्त देखने के लिए आतुर लेखक की टाँगें थक रही थीं पर मन क्यों नहीं थक रहा था?

   ....

   ....

4. इस पाठ से पाँच विदेशी शब्द और पाँच बोलचाल के शब्द चुनकर लिखिए:

   (क) पाँच विदेशी शब्दः ....

   (ख) पाँच बोलचाल के शब्दः ....

27.4 प्रमुख व्याख्याएँ

आपने पूरा पाठ पढ़ लिया है और यात्रा-वृत्तांत के तत्त्वों से भी आप परिचित हो चुके हैं। आइए, पाठ में आए कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या को पढ़कर समझते हैं–

अंश-1

'मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था—शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।'

संदर्भ

यह गद्यांश मोहन राकेश द्वारा लिखित यात्रा-वृत्तांत 'आखिरी चट्टान' से लिया गया है।

प्रसंग

लेखक हिन्द महासागर में स्थित एक ऊँची-सी चट्टान पर खड़ा होकर चट्टानों से टकराती हुई लहरों को देख रहा था, उसके सामने विशाल समुद्र दूर-दूर तक फैला हुआ था। इन पंक्तियों में लेखक ने समुद्र की व्यापकता का वर्णन किया हैं।

व्याख्या

लेखक कन्याकुमारी मंदिर के सामने समुद्र में स्थित एक चट्टान पर खड़ा होकर समुद्र के फैलाव को देख रहा था। यह फैलाव इतना व्यापक था कि लेखक की नज़र दाएँ-बाएँ और सामने जहाँ-जहाँ तक जा रही थी, उसे सागर के पानी के अलावा और कुछ भी नज़र नहीं आ रहा था। लेखक यह देखकर सहसा दार्शनिक-सा हो उठता है। वह अपने पूरे होशो-हवास से अनुभव करता है कि समुद्र की ताकत कितनी अधिक है साथ ही उसे समुद्र की व्यापकता की अपार शक्ति का भी एहसास होता है। अभिप्राय यह है कि समुद्र जितना ताकतवर है, उतना ही व्यापक भी है। उसके विस्तार और उसकी ताकत में से कौन अधिक शक्तिशाली है। यह कह पाना बहुत मुश्किल है।

अंश-2

'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ। एक जीवित व्यक्ति, दूर से आया यात्री, एक दर्शक। उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा— बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'

संदर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग

इस गद्यांश में लेखक कन्याकुमारी मंदिर के सामने समुद्र में स्थित जिस चट्टान पर खड़ा है उसके बाईं ओर बंगाल की खाड़ी है, सामने हिन्द महासागर और दाईं ओर अरब सागर। लेखक की नज़र जहाँ-जहाँ तक पहुँच सकती थी, वहाँ-वहाँ तक समुद्र का पानी फैला हुआ था। सागर के इस विस्तार को देखकर लेखक ठगा-सा रह गया।

व्याख्या

सागर में स्थित एक ऊँची-सी चट्टान पर लेखक खड़ा है। उसके बाएँ-दाएँ और

सामने दूर-दूर तक समुद्र-ही-समुद्र है। लेखक पूरे मनोयोग से एक साथ उस विस्तार को देखता है, और उस संपूर्ण फैलाव को अपनी आँखों में समेट लेता है। उस समय लेखक सब कुछ भूल गया। यहाँ तक कि उसे अपने अस्तित्व का एहसास भी नहीं रहा। वह निश्चेष्ट, निष्प्राण-सा हो गया। वह यह भी भूल गया कि वह एक यात्री है, जो उस सागर में सूर्य को डूबते और उदय होते हुए देखने के लिए बहुत दूर से यहाँ तक आया है। उस दृश्य को देखकर लेखक इतना हक्का-बक्का सा रह गया कि खुद भी एक प्राणवान् व्यक्ति न रहकर एक अप्राण दृश्य-सा ही बन गया। उसे अनुभव हुआ कि उन बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच में जैसे वह भी एक छोटी-सी चट्टान हो। अभिप्राय यह है कि लेखक संज्ञाहीन, किंकर्त्तव्य-विमूढ़, ठगा-सा सागर के विस्तार को देखता रह गया।

विशेष

यात्रा-वृत्तांत के लेखक की विशेष शैली होती है। वह सामान्य शब्दों का प्रयोग करते हुए अपने कथन में काव्यात्मकता उत्पन्न कर देता है। इस कथन में *'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ'* एक भी शब्द कठिन या साहित्यिक नहीं है। फिर भी पूरा वाक्य विशिष्ट कथन बन गया है। लेखक के उस कथन में भी बहुत सुंदरता आ गई है– *'उस दृश्य के बीच में जैसे दृश्य का एक हिस्सा बनकर खड़ा रहा बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी सी चट्टान के समान',* लेखक का स्वयं को चट्टानों के बीच एक प्राणहीन चट्टान-सा अनुभव करना ही यह सिद्ध करता है कि समुद्र की विशालता को देखकर लेखक कितना अवाक् और गद्गद हो गया।

अंश-3

अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

संदर्भ–पूर्ववत्।

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए किसी ऊँचे-से स्थान की तलाश में था जहाँ से पश्चिमी क्षितिज का खुला विस्तार नज़र आ सके। इस स्थान की खोज में उसने कई रेतीले टीले पार किए और अंततः उसे एक ऐसा ऊँचा टीला मिल ही गया जहाँ से वह सूर्यास्त को पूरे विस्तार में देख सकता था।

व्याख्या

लेखक बहुत देर तक रेत में चलता रहा। समुद्र के किनारे सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए बहुत से लोग जा रहे थे। लेखक की इच्छा थी कि वह कोई ऐसा स्थान खोज पाए जहाँ से डूबते सूर्य का नज़ारा अपने पूरे खुले विस्तार में दिखाई दे सके। अनेक रेतीले टीलों को पार करते हुए वह अंत में एक ऐसे ही ऊँचे टीले पर पहुँच गया। चूँकि लेखक ने इस टीले को खोजने और उस पर चढ़ने में बहुत अधिक प्रयत्न किया था, इस कारण

उसे लगा कि कोशिश बेकार नहीं गई। उसे इस बात पर पूरा संतोष हुआ कि उसे सूर्यास्त देखने के लिए एक मनपसंद जगह मिल ही गई। उस टीले पर चढ़ जाने पर उसे ठीक वैसा ही सुख और संतोष मिला जैसा तेनजिंग और हिलेरी को पहली बार हिमालय की सबसे ऊँची चोटी माउंट एवरेस्ट पर विजय प्राप्त करने में मिला होगा। लेखक को अनुभव हुआ कि यह रेत का टीला भी एवरेस्ट से कम ऊँचा नहीं है और केवल उसी ने इस पर चढ़ने में पहली बार सफलता प्राप्त की है।

विशेष

एक ऊँचा टीला मिल जाने पर लेखक का अपनी संतुष्टि को एवरेस्ट विजय की संतुष्टि के समान दर्शाना वास्तव में सराहनीय है। इस कथन में मनोविज्ञान का यह सिद्धांत निहित है कि आदमी को अपनी खोज, अपने प्रयास और अपनी सफलता पर जो प्रसन्नता होती है, वह अन्य किसी परिस्थिति में नहीं होती। लेखक ने बड़ी खूबसूरती से अपनी मनोदशा का स्वाभाविक वर्णन किया है।

अंश-4

सूर्य पानी की सतह के पास पहुँच गया था। सुनहली किरणों ने पीली रेत को एक नया-सा रंग दे दिया था। उस रंग में रेत इस तरह चमक रही थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण करके उसे वहाँ उड़ेला गया हो। मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा। लगा जैसे रेत का कुँवारापन पहली बार उन निशानों से टूटा हो। इससे मन में एक सिहरन भी हुई, हल्की उदासी भी घिर आई।

संदर्भ—पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए समुद्र-तट की रेत पर बड़ी देर तक चलता रहा, जब वह रेत के एक ऊँचे टीले पर चढ़ गया तो उस ऊँचाई से उसने नीचे रेत पर नज़र डाली। उसे रेत पर अपने पैरों के निशान दिखाई दिए।

व्याख्या

रेतीले टीले पर चढ़ कर लेखक को नीचे की सुनहली रेत पर अपने पाँवों के निशान दूर-दूर तक दिखाई दिए क्योंकि इसी रेत पर चल कर लेखक उस टीले पर चढ़ा था। रेत बड़ी साफ़, स्वच्छ, सुनहली और चमकदार थी जैसे अभी-अभी उसका निर्माण हुआ हो। उस पर बने अपने पैरों के निशानों को देखकर लेखक का मन सिहरन और ग्लानि से भर उठा। ऐसी साफ़, स्वच्छ, सुनहली रेत को अपने पाँवों से रौंदने के कारण उसे पश्चात्ताप हुआ कि उसके कारण रेत की पवित्रता नष्ट हो गई। वह इस अनुभूति से सिहर उठा और उसका मन अपने इस अपराध-बोध के कारण उदास हो गया।

विशेष

'रेत का कुँआरापन, में निहित मानवीकरण दर्शनीय है। निष्प्राण रेत लेखक के लिए

केवल रेत नहीं है, लेखक की दृष्टि में वह सप्राण हो उठी है। कविता में इसे ही मानवीकरण कहा जाता है। लेखक को यह देखकर अत्यंत दुख होता है कि कितनी साफ़, स्वच्छ, चमकीली रेत को रौंदकर उसने रेत की पवित्रता नष्ट कर दी है।

टिप्पणी

अंश-5

सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना घुल आया, पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था। धीरे-धीरे वह पूरा डूब गया और कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था, वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक सूर्यास्त का दृश्य देखने के लिए रेत के ऊँचे टीले पर चढ़ जाता है, जहाँ से वह पश्चिमी क्षितिज में सूर्य को धीरे-धीरे अस्त होते हुए देख रहा है।

व्याख्या

लेखक के सामने अरब सागर का जल दूर-दूर तक फैला हुआ है। आकाश में सूर्य का गोला धीरे-धीरे नीचे की ओर जाते हुए पानी को छू गया, अस्त होते हुए सूर्य की सुनहरी किरणों ने अरब सागर के जल में जैसे सोना घोल दिया है। पर जल का रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि उस रंग को किस नाम से पुकारा जाए। अब सूर्य इतनी जल्दी-जल्दी नीचे की ओर जा रहा था जैसे कोई शक्ति उसे पिघले हुए लावे में लुप्त होने के लिए विवश कर रही हो। डूबते हुए सूर्य की किरणों ने पानी को इतना लाल बना दिया था कि लेखक को वह पिघलते हुए लावे की तरह लग रहा था। थोड़ी देर पहले पानी पर जो पीला प्रकाश फैला हुआ था, देखते ही देखते वह एकदम लाल नजर आने लगा। वह ऐसा लग रहा था मानो दूर-दूर तक लहू बह रहा हो।

विशेष

मोहन राकेश ने इस गद्यांश में सौंदर्य जैसे अमूर्त विषय को मूर्त बना दिया है। डूबते हुए सूर्य की किरणों के पल-पल परिवर्तित रूप-रंग को भाषा में व्यक्त करना बहुत कठिन है, पर लेखक ने अपने सटीक शब्द-प्रयोगों से इसमें सफलता प्राप्त की है। *'सोना ही सोना घुल गया', 'पानी के लावे में डूबना' 'सोना बहना', 'लहू बहना'* जैसे प्रयोग लेखक की विशिष्ट कथन-शैली के नमूने हैं। प्रकृति के बाह्य सौंदर्य को मन में बसाकर उसे सार्थक शब्दों के माध्यम से व्यक्त करने में लेखक को सराहनीय सफलता प्राप्त हुई है। यहाँ सूर्य का मानवीकरण है। वह किसी डूबते हुए बेबस व्यक्ति जैसा चित्रित किया गया है।

पाठगत प्रश्न 27.3

पठित पाठ के आधार पर सही विकल्प का चयन कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'शक्ति का विस्तार और विस्तार की शक्ति' में लेखक का वर्ण्य विषय है-

   (क) आकाश   (ग) समुद्र का सुनहला पानी

   (ख) समुद्र   (घ) उपर्युक्त तीनों

2. 'मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ' पंक्ति का आशय है–

   (क) लेखक चेतना शून्य हो गया।

   (ख) लेखक अपना नाम भूल गया।

   (ग) उसको लगा कि वह कहीं कुछ भूल आया है।

   (घ) वह आश्चर्य चकित हो गया।

3. 'मैंने सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो' यहाँ 'सर' से आशय है–

   (क) सिर झुकना।   (ग) पहुँचकर विजय प्राप्त करना।

   (ख) देखना   (घ) उपर्युक्त तीनों।

4. 'मैंने उस रेत पर दूर तक बने अपने पैरों के निशानों को देखा' ये निशान बने–

   (क) स्वप्न देखते समय।

   (ख) वापस लौटते समय।

   (ग) वहाँ आए अन्य पर्यटकों के पैरों से।

   (घ) सूर्यास्त देखने के लिए जाते समय।

5. 'कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा' पंक्ति का आशय है–

   (क) समुद्र खून से भर गया।

   (ख) लाल रंग बहने लगा।

   (ग) किसी ने समुद्र में रंग मिला दिया था।

   (घ) समुद्र का पानी सूर्य के लाल रंग के प्रकाश से लाल दिखने लगा था।

27.5 भाषा-शैली

इस पाठ में लेखक की भाषा बहुत सरल और प्रवाहयुक्त है। तत्सम शब्दों का प्रयोग

टिप्पणी

बहुत कम हुआ है। समाधिस्थ, क्षितिज, अपेक्षया, सूर्योदय, शृंखला, दृश्यपट, दार्शनिक जैसे कुछ तत्सम शब्द अवश्य आए हैं परंतु ये शब्द पाठ के प्रसंगानुकूल है। इन्हें समझने में खास कठिनाई नहीं होती। कुछ विदेशी शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। ये शब्द कहने को तो विदेशी हैं लेकिन अब हिंदी भाषा में इतने रच-बस चुके हैं कि हिंदी के ही लगते हैं, जैसे–लकीरें, स्याह, हिस्सा, सैंडहिल, मिशनरी, केनवस, सर, वीरान, बेबसी, सुरमई, एहसास, ग्रेजुएट, बाइनाक्युलर्स आदि। ये सभी शब्द सामान्य बोलचाल के शब्द हैं और अर्थग्रहण में बाधक नहीं होते। स्थान-स्थान पर भाषा का रूप चित्रात्मक भी हो गया है। इससे वर्णन में चार चाँद लग गए हैं।

शैली में वर्णनात्मकता है। वर्णन में बिंबात्मकता सहज रूप से आ गई है। लेखक ने सभी प्रसंगों, दृश्यों, स्थानों तथा अनुभवों का वर्णन इस कुशलता से किया है कि पाठक की रुचि बढ़ती जाती है और लेखक पाठक के साथ एकता स्थापित कर सकने में पूर्ण रूप से सफल रहा है।

इस प्रकार लेखक ने इस पाठ में यात्रा-साहित्य के अनुकूल भाषा-शैली का चयन किया है।

हिंदी में संधि, समास, उपसर्ग और प्रत्यय के योग से नए शब्द बनते हैं। इस बात का ज्ञान आप पिछले पाठों में प्राप्त कर चुके हैं। यहाँ हम कुछ शब्द दे रहे हैं। आप इन्हें देखिए ये शब्द कैसे बने हैं और इस बात पर ध्यान दीजिए:

विवेकानंद, समाधिस्थ, सूर्यास्त, नवयुवक, रंगहीन, सार्थकता, पच्छिमी, असंभव, दृश्यपट, दार्शनिक, सूर्योदय।

इनमें संधि के कारण बने शब्द हैं:

विवेकानंद,	सूर्यास्त,	सूर्योदय
(विवेक+आनंद)	(सूर्य+अस्त)	(सूर्य+उदय)

नवयुवक, दृश्यपट समासयुक्त शब्द हैं।

नव (विशेषण) + युवक (संज्ञा) दोनों के योग से नया शब्द नवयुवक बन गया।

दृश्य पट: दृश्य का पट, 'का' का लोप होने पर बना 'दृश्यपट'। इस प्रकार जब दो शब्दों के बीच में किसी विभक्ति अर्थात्–से, का, की, के, रा, री, रे आदि का लोप हो जाता है वहाँ समास होता हैं।

असंभव: शब्द में संभव से पूर्व 'अ' लगने से शब्द में परिवर्तन के साथ-साथ अर्थ भी बदल गया है। ऐसे शब्दांश जो शब्द से पहले जुड़कर नया शब्द बनाते हैं, **उपसर्ग** कहलाते हैं। यह बात आप पहले भी समझ चुके हैं।

समाधिस्थ, रंगहीन, सार्थकता, पच्छिमी, दार्शनिक शब्दों में प्रत्यय के कारण परिवर्तन आया है।

जब शब्दांश शब्द के बाद में जुड़कर नया शब्द बनाते हैं तब वे 'प्रत्यय' कहलाते हैं।

समाधि+स्थ = समाधिस्थ   रंग+हीन = रंगहीन   सार्थक+ता =सार्थकता
पच्छिम+ई = पच्छिमी   दर्शन+इक = दार्शनिक

पाठगत प्रश्न 27.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. इस पाठ की शैली किस प्रकार की है–

   (क) व्यंग्य प्रधान   (ग) बनावटी

   (ख) वर्णात्मक   (घ) कथात्मक

2. 'सूर्योदय' शब्द बना है–

   (क) समास द्वारा   (ग) उपसर्ग द्वारा

   (ख) प्रत्यय द्वारा   (घ) संधि द्वारा

3. 'अन्' उपसर्ग निम्नलिखित में से किस शब्द में जुड़ा है–

   (क) अनुसार   (ग) अनादि

   (ख) अनुज   (घ) अनश्वर

4. प्रत्यय जुड़ता है–

   (क) मूल शब्द से पूर्व   (ग) शब्द के बाद में

   (ख) मूल शब्द के बीच में   (घ) इनमें से कोई नहीं

भाषा कार्य

आप संज्ञा और विशेषणों के बारे में तो जानते ही हैं। किसी वस्तु, स्थान अथवा व्यक्ति के नाम को **संज्ञा** कहते हैं और संज्ञा के बारे में बताने वाले या उसकी विशेषता बताने वाले शब्दों को **विशेषण** कहा जाता है। हिंदी में संज्ञा से विशेषण और विशेषण से संज्ञा शब्द बनाए जा सकते हैं, जैसे:

संज्ञा → विशेषण

सोना → सुनहरा   रेत → रेतीला
कंकर → कंकरीला   नोक → नुकीला
उत्तर → उत्तरी   स्थान → स्थानीय
सुरमा → सुरमई   रंग → रंगीन

विशेषण → संज्ञा

स्याह → स्याही   ऊँचा → ऊँचाई
लाल → लाली, लालिमा   बच्चा → बचपन

पीला → पीलाई, पीलिमा, पीलापन   सुंदर → सुंदरता

गोल → गोला, गोलाई   बूढ़ा → बुढ़ापा

1. निम्नलिखित शब्दों से विशेषण शब्द बनाइए–

   बुद्धि, पत्थर, ऊबना, पहाड़, दर्शन, दक्षिण, न्याय

   ....

   ....

2. निम्नलिखित शब्दों से संज्ञा शब्द बनाइए:

   सफ़ेद, हरा, धुँधला, चमकीला, गहरा, उड़ना

   ....

   ....

27.6 आपने क्या सीखा

1. कन्याकुमारी के समीप समुद्र में स्थित विवेकानंद चट्टान बड़ी भव्य है।
2. बंगाल की खाड़ी, हिन्द महासागर और अरब सागर के संगम-स्थल पर सागर का असीम विस्तार है।
3. अरब सागर के तट पर स्थित सैंडहिल से हजारों लोग पश्चिमी क्षितिज में सूर्यास्त का मनमोहक दृश्य देखते हैं।
4. सूर्यास्त के समय सागर-तट की रेत और सागर-जल अनेक रंग-रूप बदलता है।
5. लेखक को पूरे विस्तार की पृष्ठभूमि में सूर्यास्त देखने की इच्छा थी, इस कारण उसे रेत में चलने और चट्टानों पर चढ़ने के लिए बहुत प्रयास करना पड़ा। अंततः लेखक अपने प्रयत्न की सार्थकता पर संतुष्ट हुआ।
6. सागर-तट से अपने होटल में लौटते समय लेखक को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा।
7. रात में समुद्र में सिर्फ़ काली छायाओं की लकीरें मात्र दिखाई देती हैं।
8. कन्याकुमारी में सूर्योदय का दृश्य भी बड़ा आकर्षक होता है।
9. यात्रा-साहित्य के मुख्य तत्त्व- निजता, स्थानीयता, तथ्यात्मकता और चित्रात्मकता है। यात्रा-साहित्य के तत्त्वों पर यह रचना खरी उतरती है। इस पाठ की भाषा-शैली सरल, रोचक, प्रवाहमान और आत्मीयतापूर्ण है।
10. मोहन राकेश हिंदी कहानी, एकांकी और नाटक साहित्य लिखने के कारण प्रसिद्ध हैं। लेकिन वे यात्रा-साहित्य के भी सिद्धहस्त लेखक हैं।
11. शब्दों का निर्माण कई प्रकार से होता है– मूल शब्द से पहले शब्दांश जोड़कर

(उपसर्ग), मूल शब्द के बाद शब्दांश जोड़कर (प्रत्यय), दो शब्दों के बीच विभक्ति का लोप (समास): दो शब्दों में आए वर्णों के मिलने पर किसी प्रकार के रूपांतरण से (संधि)।

27.7 योग्यता-विस्तार

(क) लेखक-परिचय

यह पाठ श्री मोहन राकेश द्वारा लिखा हुआ है, जिनका जन्म अमृतसर में 8 जनवरी 1925 में हुआ था। इन्होंने हिंदी और संस्कृत में एम.ए. की उपाधि प्राप्त करने के बाद कुछ दिनों तक शिक्षण कार्य किया। फिर 'सारिका' के संपादक बने। ये हिंदी के एक सुप्रसिद्ध नाटककार थे। 'आधे-अधूरे' 'आषाढ़ का एक दिन' 'लहरों के राजहंस' इनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

मोहन राकेश एक सफल यात्रा-साहित्य लेखक भी थे। ये अपनी गहन अनुभूति को सरल शब्दों में अभिव्यक्त करने में सिद्धहस्त थे। 1972 ई में सिर्फ़ 47 वर्ष की आयु में इनका निधन हो गया।

(ख) हिंदी में अनेक यात्रा-वृत्तांत लिखे गए हैं। आप कुछ महत्त्वपूर्ण यात्रा-साहित्य प्राप्त कर पढ़िए। आपकी जानकारी के लिए कुछ नाम यहाँ दिए जा रहे हैं:

- हरिद्वार की यात्रा (भारतेंदु हरिश्चंद्र)
- अमरीका दिग्दर्शन, अमरीका भ्रमण (सत्यदेव परिव्राजक)
- तिब्बत में सवा वर्ष, मेरी तिब्बत यात्रा, मेरी यूरोप यात्रा, किन्नर देश में, घुमक्कड़ शास्त्र (राहुल सांकृत्यायन)
- सुदूर दक्षिण पूर्व, पृथ्वी परिक्रमा (सेठ गोविंददास)
- देश-विदेश, मेरी यात्राएँ (रामधारी सिंह दिनकर)
- पैरों में पंख बाँधकर, उड़ते चलो। (रामवृक्ष बेनीपुरी)
- अरे यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली। (अज्ञेय)

27.8 पाठांत प्रश्न

1. लेखक ने आखिरी चट्टान किसे कहा है?
2. पश्चिमी क्षितिज में अस्त होते हुए सूर्य का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए।
3. निम्नलिखित कथनों का भाव स्पष्ट कीजिए:

   (क) 'मैं देख रहा था और अपनी पूरी चेतना से महसूस कर रहा था– शक्ति का विस्तार, विस्तार की शक्ति।'

   (ख) 'तीनों ओर के क्षितिज को आँखों में समेटता मैं कुछ देर भूला रहा कि मैं मैं हूँ।'

(ग) 'बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच एक छोटी-सी चट्टान।'

(घ) 'कुछ क्षण पहले जहाँ सोना बह रहा था वहाँ अब लहू बहता नज़र आने लगा।'

(ङ) 'हम लोग सीपियों का गुदा खाते हैं और दार्शनिक सिद्धांतों पर बहस करते हैं।'

4. यात्रा-साहित्य के तत्त्वों के आधार पर 'आखिरी चट्टान' की समीक्षा कीजिए।

5. निम्नलिखित की प्रसंग सहित व्याख्या कीजिए:

(क) अपने प्रयत्न की सार्थकता से संतुष्ट होकर मैं टीले पर बैठ गया, ऐसे जैसे वह टीला संसार की सबसे ऊँची चोटी हो और मैंने, सिर्फ़ मैंने, उस चोटी को पहली बार सर किया हो।

(ख) सूर्य का गोला पानी की सतह से छू गया। पानी पर दूर तक सोना ही सोना ढुल आया। पर वह रंग इतनी जल्दी-जल्दी बदल रहा था कि किसी एक क्षण के लिए उसे एक नाम दे सकना असंभव था। सूर्य का गोला जैसे एक बेबसी में पानी के लावे में डूबता जा रहा था।

6. दो-दो उदाहरण देते हुए उपसर्ग और प्रत्यय में अंतर स्पष्ट कीजिए।

7. निम्नलिखित की संधि कीजिए:

नित्य+आनंद, वर्णन+आत्मक, सूर्य+उदय, पीत+अंबर

27.9 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ग) 2. (ख) 3. (घ) 4. (क) 5. (घ)
6. (ग) 7. (ख)

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 1. (क) निजता (आत्मीयता) (ख) स्थानीयता,
(ग) तथ्यात्मकता, (घ) बोलचाल की सरल, चित्रात्मक भाषा।

2. (क) सूर्यास्त देखने के लिए लेखक के द्वारा किए गए अथक प्रयास वाला अंश।
(ख) रेत के रंगो को समेट लेने की इच्छा वाला प्रसंग।

3. लेखक के मन में सूर्यास्त देखने की बड़ी लालसा और उत्कंठा थी।

4. (क) तथा (ख) विद्यार्थी स्वयं करें।

27.2 1. (ख) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (घ)

27.3 1. (ख) 2. (घ) 3. (ग) 4. (ग)

टिप्पणी

28

301hi28

जिजीविषा की विजय

अपंगता को हम प्रायः जीवन का अभिशाप मानते हैं। जब हम किसी नेत्रहीन या हाथ-पैर से अपंग व्यक्ति को देखते हैं, हमारा मन दया और सहानुभूति से भर उठता है। क्या आप किसी ऐसे अपंग व्यक्ति से मिले हैं जिसने अपनी शारीरिक अशक्तता को ताक पर रख कर ऐसे कार्य किए, जिनसे उसकी अपंगता का एहसास मिट गया। जीवन में बहुत से लोग हमारे संपर्क में आते हैं, परंतु उनमें कुछ एक लोग ऐसे भी होते हैं, जिनके प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व को हम उनकी विशेषताओं के कारण कभी भूल नहीं पाते। उनकी स्मृति हमारे मानस-पटल पर सदैव उजागर होती रहती है। ऐसे व्यक्तित्व को उचित प्रकार से स्मरण करना ही **'संस्मरण'** है।

आइए, प्रस्तुत पाठ में जिजीविषा और संकल्पशक्ति से जुड़े साहित्यकार और विचारक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व के बारे में पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विकलांगता पर समाज की दृष्टि का विवेचन कर सकेंगे;
- विकलांगता के बावजूद डॉ. रघुवंश के संकल्प और अध्यवसाय पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व और कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे;
- शारीरिक अशक्तता के प्रति करुणा, दया और सहानुभूति के स्थान पर सहयोग, अधिकार और समझदारी का महत्त्व बता सकेंगे;
- विकलांगों में आत्मनिर्भरता उत्पन्न करने के गुर बता सकेंगे;
- संस्मरण की भाषा और शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- संस्मरण विधा के स्वरूप को स्पष्ट कर सकेंगे तथा उनके आधार पर पाठ की समीक्षा कर सकेंगे।

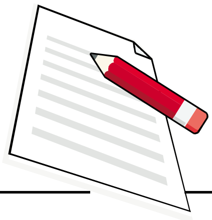

टिप्पणी

क्रियाकलाप

क्या आपके जीवन में कोई ऐसा मित्र, पड़ोसी, सगा-संबंधी या शिक्षक आया जिसने आपके मन पर गहरी छाप छोड़ी हो, उसे भूल पाना संभव न हो। ऐसे किसी व्यक्ति के विषय में एक अनुच्छेद लिखिए।

एक जंगल में चार लोग भटक गए। उनमें एक अंधा, एक बहरा, एक लूला और एक लंगड़ा था। अचानक बहरा बोला– 'सब शांत हो जाओ, मुझे तो घोड़ों की टापें सुनाई दे रही हैं।' तभी अंधा बोला, हाँ! कुछ घोड़े आते हुए तो मुझे भी दिखाई दे रहे हैं।'' चारों घनघोर जंगल में डर के मारे काँपने लगे। तभी लूला कहता है, ''तुम सब डरते क्यों हो! आने दो सभी को, हो जाएँगे दो-दो हाथ!'' तभी एक कोने में घुसा हुआ लँगड़ा बोला ''तुम्हीं लोग लड़ना, मैं तो फटाफट भाग लूँगा।''

खैर, यह तो थी मज़ाक की बात! सच्चाई यह है कि विश्व में अनेक ऐसे अपंग व्यक्ति हुए हैं, जिन्होंने अपंगता को अनदेखा कर दुनिया को चकित कर देने वाले कार्य किए और बहुत प्रसिद्धि पाई। नीचे कुछ चित्र दिए जा रहे हैं। क्या आप इन लोगों को पहचानते हैं? इनके नाम और कार्यक्षेत्र का उल्लेख कीजिए

नाम:	**नाम:**	**नाम:**
कार्यक्षेत्र:	**कार्यक्षेत्र:**	**कार्यक्षेत्र:**

क्या आप भी किसी ऐसे व्यक्ति से परिचित हैं तो यहाँ उसके बारे में लिखिए।

....

....

....

....

....

28.1 मूलपाठ

जिजीविषा की विजय

मन में समाहित 'जीवन लालसा' ने ही गोपामऊ (हरदोई) निवासी श्री रामसहाय के घर में जन्मे बालक रघुवंश सहाय वर्मा को हिंदी साहित्य के सुप्रसिद्ध विद्वान आचार्य डॉ. रघुवंश के रूप में प्रतिष्ठित कर दिया।

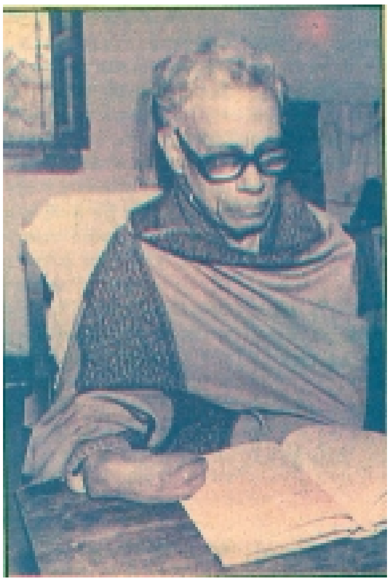

चित्र : डॉ. रघुवंश

मेरी डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम भेंट भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में 1954 में हुई। राम निवास बाग के भव्य हॉल में अधिवेशन संपन्न हो रहा था। मैं तो देखते ही दंग रह गया कि एक व्यक्ति पैर से निरंतर तेज़ी से लिखता जा रहा है। जब वहाँ विद्यमान अन्य विद्वानों से उनका परिचय प्राप्त हुआ तो ज्ञात हुआ कि यह तो वही डॉ. रघुवंश हैं, जिनके विषय में विद्यार्थी जीवन से सुनता आया हूँ, पर यह नहीं मालूम था कि लेखन कार्य में इतना सक्रिय विद्वान दोनों हाथों से लाचार है। तब तक उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. तथा 1948 में ''हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य'' विषय पर डी.फिल्. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। भाई डॉ. रमानाथ सहाय ने बातचीत के दौरान सूचित किया कि वह जब संस्कृत में एम.ए. कर थे तब डॉ. रघुवंश हिंदी में एम.ए. कर चुके थे और संस्कृत की कक्षाओं में उपस्थित रहते थे। उसी विश्वविद्यालय में वह प्राध्यापक बने। डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निकटस्थ होने के कारण वह सक्रिय रूप से भारतीय हिंदी परिषद् से जुड़ चुके थे और इसके मंत्री थे। मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघवुंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे। एक व्यक्ति इतना अधिक सक्रिय रह सकता है, यह आश्चर्यचकित करने के लिए पर्याप्त था। साधारणतः परीक्षा में भी ऐसे बालकों को कोई लेखक देने का प्रावधान है पर डॉ. रघुवंश ने अपनी सूझबूझ से ऐसी पद्धति विकसित कर ली थी जो प्रायः देखने को नहीं मिलती है। इस पद्धति से उन्होंने सारी परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

इसमें दो राय नहीं है कि उन्हें प्रेरणा मिली – हिंदी भाषा और साहित्य के प्रकाश स्तम्भ डॉ. धीरेन्द्र वर्मा से और अभूतपूर्व सहयोग और सहायता मिली डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी से। (संयोग से एलनगंज में डॉ. रघुवंश और डॉ. चतुर्वेदी साथ ही एक घर में निवास करते थे और बैंक रोड स्थित अपना-अपना स्थायी आवास भी पड़ोसी के रूप में बनवाया, जहाँ अब दोनों ही निवास कर रहे हैं।)

शब्दार्थ

जीजिविषा	– जीने की इच्छा
सक्रिय	– क्रियाशील
निकटस्थ	– समीप, करीबी
निरंतर	– लगातार
प्रावधान	– सुविधा
आवास	– घर

लेकिन यह सब तो प्राप्त हुआ इलाहाबाद आने के बाद ही। मैं निरंतर सोचता रहा कि आखिर कौन-सा तत्त्व है, जिससे रघुवंश विपरीत परिस्थितियों में भी आगे ही बढ़ते गए। काफ़ी सोच-विचार के बाद मत बनाया कि हो-न-हो उन्होंने अपने मन में कुछ बनने की ठान ली हो। एक बार दिल्ली में ''मन क्या है'' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी हुई थी। देश-विदेश के विद्‌वानों, वैज्ञानिकों ने गंभीर विचार-विमर्श कर मन को परिभाषित करने की चेष्टा की। यह माना गया कि मन-मस्तिष्क नहीं है। वैज्ञानिकों के अनुसार मस्तिष्क शरीर के भीतर एक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण केंद्र है जिसमें बहुत कुछ घटता रहता है। मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है। मन को विद्‌वानों ने तीन मंजिला भवन-नववल्कल, वत्सल, सर्पिल माना। लगता है, अतींद्रिय अनुभवों के केंद्र मन (सर्पिल) में ही उन्होंने पक्का विचार बना लिया होगा। उन्होंने जो लेखन कार्य किया, वह बहुत से उन विद्‌वानों से भी संभव नहीं हो सका जिन्होंने मज़बूत हाथ लेकर जन्म लिया। मात्र मन की मज़बूती से ही कालांतर में वह सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित हुए। इस समय मुझे महाकवि प्रसाद की पंक्तियाँ स्मरण आ रही हैं :

मन जब निश्चित-सा कर लेता कोई मत है अपना।
बुद्धि-देव-बल से प्रमाण का सतत निरखता सपना।

यह मन ही तो है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है, वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता है। उनका नव उत्साह से भरा मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है। बहुत से लोगों में यह स्वच्छता बाह्य रूप में ही मिलती है, पर डॉ. रघुवंश बाह्य रूप और आंतरिक रूप में तो स्वच्छ हैं ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी स्वच्छ हैं जो आजकल कम ही दिखाई देता है। किस युक्ति से वह रिक्शा में बैठने से पूर्व उस चालक की देय राशि निकालकर रख लेते हैं, यह विस्मयकारी है जिससे उनको साथ ले जाने वाले व्यक्ति अपने पास से रुपये न दे दें। अर्थ की शुचिता के वह ज्वलंत उदाहरण हैं। उनके रहन-सहन व व्यक्तित्व में जितनी स्वच्छता मिलती है, उसका स्पष्ट प्रभाव उनके द्वारा संपादित कार्यों में परिलक्षित होता है।

यह सब कुछ संभव हो पाने के पीछे उनका मज़बूत मन तो है ही, साथ ही वह संकल्प शक्ति भी है, जो उन्होंने स्वतः ही धारण कर ली थी क्योंकि मन ही तो संकल्पमय होकर सक्रिय हो उठता है। संकल्प ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा है।

डॉ. रघुवंश ने जीवन में जो सर्जना की, वह सब कुछ इसी कारण है क्योंकि सर्जनात्मक, चैतन्य ही तो संकल्प है, फिर सर्जना चाहे किसी भी प्रकार की हो, संकल्प के बिना संभव ही नहीं। संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है, जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं। गुण के रूप में संकल्प ही मन का लक्षण है। मनुष्य मात्र इस संकल्प से ही संचालित होता है। इसको ही शोपेनहावर ने जीने का संकल्प, नीत्शे ने शक्ति संकल्प व विलियम जेम्स ने श्रद्धा का संकल्प बताया है। उसकी कुछ भी व्याख्या करें, संकल्प शक्ति ही मन में जागरित होती है और व्यक्ति के जीवन में नया

शब्दार्थ

चेष्टा	– प्रयत्न
चिति	– जागृति
संज्ञान	– ज्ञान सहित
पर्यवेक्षण	– निरीक्षण
समुच्चय	– सुगठित
नव	– नया
वल्कल	– वृक्ष की छाल का कपड़ा
वत्सल	– बच्चों से प्रेम करने वाला
सर्पिल	– साँप जैसा घुमावदार
अवधान	– ध्यान, मनोयोग मन की एकाग्रता
बाह्य	– बाहरी
देय राशि	– देने के लिए धन
विस्मयकारी	– आश्चर्यजनक
शुचिता	– पवित्रता
संकल्प शक्ति	– दृढ़ निश्चय
परिलक्षित	– दिखाई देना
सर्जनात्मक	– निर्माणकारी
चैतन्य	– चेतना, जागृति

प्राण फूँकती है, उसके जीवन को अर्थ देती है। तभी तो मनीषियों ने 'सर्वसंकल्पमूलम्' स्वीकार किया है।

इस संकल्प-शक्ति के कारण ही डॉ. रघुवंश निरंतर लिखते रहे। तंतुजाल, अर्थहीन, छायालय (कथा साहित्य), हरिघाटी (यात्रा संस्मरण), मानस पुत्र ईसा (जीवन), नाट्यकला, साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य आदि कृतियाँ प्रकाशित हुईं। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में जो विशिष्ट व्याख्यानमाला के अंतर्गत भाषण दिए, उनको संस्थान ने ही ''समसामयिक हिंदी कविता और आलोचना'' शीर्षक से प्रकाशित किया।

हमेशा उनका व्यक्तित्व सौम्य रहा। व्यक्ति की वृत्ति ही प्रसन्नता का रूप ले लेती है। उसके बाद स्वतः ही सौम्यता झलकती है और चेहरा तेज से दमकता है – प्रसन्नवृत्तिः सौम्यत्वम्।

मैं किसी से कम नहीं हूँ, यह भाव प्रारंभ से ही उनमें विद्यमान रहा। सच्चे अर्थों में वह 'कर्मयोगी' रहे हैं। शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव-नव प्रकाश विकीर्ण होता रहा।

डॉ. रघुवंश को अधिक निकट से देखने का सौभाग्य मुझे 1963 में मिला। इस बार भी भारतीय हिंदी परिषद् का अखिल भारतीय अधिवेशन था।

यह अधिवेशन डॉ. नगेन्द्र की अध्यक्षता में अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में संपन्न हुआ। जिसका उद्घाटन महादेवी जी ने किया। परिषद् के विविध क्रियाकलापों से जुड़े होने के कारण डॉ. रघुवंश पर विशेष उत्तरदायित्व था और मैं विश्वविद्यालय में कार्यरत था। उस समय उनकी कार्यपद्धति से अधिक अवगत हुआ।

जो आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करता है, उसकी योग्यता तो उनके कार्यों से प्रकट होती है। यही कारण है कि डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में जब 'हिंदी साहित्य कोश' का निर्माण प्रारंभ हुआ तो डॉ. रघुवंश न केवल संपादक मंडल में रहे वरन् उस परियोजना का संयोजकत्व भी किया। उन्होंने कोश के लिए लेखन-कार्य भी किया। हिंदी 'साहित्य कोश' के प्रकाशन में उनका बड़ा योगदान रहा। किसी भी परियोजना का विकास कर, उसको ऊँचाई तक ले जाना और उसके लिए अपने को न्योछावर करते रहना उनका स्वभाव बन गया। योजकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वह निरंतर आगे बढ़ते ही गए।

समझौतावादी प्रवृत्ति उनमें कभी नहीं रही। अपनी योग्यता और क्षमता के बलबूते पर वह निरंतर अग्रसर हुए और सर्वोच्च पद से अवकाश प्राप्त कर उच्च शिक्षा संस्थान, शिमला में भी प्रतिष्ठित रहे। वहाँ रहते हुए भी उन्होंने अपने प्रतिमान स्थापित किए।

लेखन के साथ-साथ निरंतर संपादन कार्य भी किया। भारतीय हिंदी परिषद् के मुख्यपत्र 'अनुशीलन' का अनेक वर्षों तक संपादन किया।

प्रारंभ से ही वह विद्रोही व जुझारू प्रकृति के रहे। लोहिया जी की विचारधारा से वह प्रभावित रहे। देश में आपात् काल की घोषणा के बाद उन्होंने कारागार से जो पत्राचार किया, वह पत्र-विधा की अभूतपूर्व कृति बन गई और बाद में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक

टिप्पणी

शब्दार्थ

मनीषियों	– ज्ञानी विद्वान, विचारशील
व्याख्या-माला	– कई व्याख्यान एक के बाद एक होना
समसामयिक	– वर्तमान समय के संदर्भ में
सौम्य	– शीतल, स्निग्ध
कर्मयोगी	– कर्म में लगा व्यक्ति
अप्रत्याशित	– आकस्मिक, जिसकी आशा न रही
विकीर्ण	– फैला हुआ
न्योछावर करते रहना	– पूरी तरह से लगे रहना
योजकता	– मिला हुआ
सर्वोच्च	– सबसे ऊँचा
प्रतिमान	– नमूना, मानक

टिप्पणी

से प्रकाशित हुई। इस प्रकार डॉ. रघुवंश 'मन जिसका मजबूत' के जीते-जागते उदाहरण हैं।

डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व का मूल्यांकन अधूरा रह जाएगा यदि उनके विचारक-रूप को न समझा जाए। उनके प्रत्येक आलेख में उनकी मौलिकता तो झाँकती ही है, पर विचारक का रूप सबसे अधिक मुखर हुआ जब विचारों का त्रैमासिक 'क ख ग' उनके प्रयासों से प्रारंभ हुआ। वह इसके संपादक मंडल में भी थे और संयोजक भी थे।

जुलाई 1963 के प्रवेशांक में 'दृष्टिकोण' के अंतर्गत उनका सुविचारित आलेख 'नये राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती' प्रकाशित हुआ जिसके कुछ अंश आज तीन दशक के बाद भी सामयिक होने के कारण उद्धृत करना चाहता हूँ। इसका सार-संक्षेप देने में मूल भाव के ओझल होने का खतरा है, अतएव कुछ उपयोगी अंश इस प्रकार हैं :

"यदि सचमुच एशिया और अफ्रीका को विकसित होना है, तो अपने सभी प्रश्नों को निजी संदर्भ में रखकर देखना होगा। विकास की यह पद्धति मूलतः भ्रामक है कि जिस रेखा में किसी दूसरे देश ने उन्नति की है, उसी रेखा पर आगे बढ़ा जा सकेगा। विकास की रेखा का प्रत्येक बिंदु आगे आने वाले बिंदुओं को अग्रसर करने में सहायक हुआ है, स्वयं पीछे रहकर, पिछड़कर। ऐसी स्थिति में दूसरा व्यक्ति या राष्ट्र अपने विकास के लिए उस रेखा का अनुकरण करना चाहेगा तो वह सदा के लिए अनुवर्ती बना रहेगा, पिछड़ा रहेगा। विकास की प्रतिद्वन्द्विता में, और बिना प्रतिद्वन्द्विता के विकास कभी संभव नहीं होता, सदा अपनी स्वतंत्र रेखा खींचनी होगी। अपना निजी मार्ग बनाना होगा। वह कितना ही छोटा प्रयत्न क्यों न लगे, परंतु एक ओर तो उस रेखा पर हमारी दृष्टि विकसित राष्ट्रों के उच्चतम बिंदु पर रह सकेगी और दूसरी ओर हमारी सर्जनात्मक प्रतिभा को पूर्ण मुक्ति मिल सकेगी। एशिया अथवा अफ्रीका के सभी स्वाधीन देशों को यूरोप की बौद्धिक पराधीनता से मुक्त होकर अपनी निजी प्रतिभा का अन्वेषण करना होगा और अपने निजी वैशिष्ट्य के बिना उनके विकास की संभावना पर विचार किया ही नहीं जा सकता। आर्थिक सहायताओं से अविकसित देशों की आर्थिक नीति, औद्योगिक पद्धति तथा विकास की दिशा निर्धारित हो जाती है। ये देश बिना मौलिक रूप से विकसित हुए ही विकास का अनुभव करने लगे हैं और बिना संतुलित संपन्नता के संपन्नता का आभास पाने लगे हैं।"

चिंतन के दो पक्ष हैं : चिंतन के क्षेत्र में शुद्ध सैद्धांतिक ज्ञान और राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोगों और परीक्षणों की निश्चित योजना। चिंतन के क्षेत्र में निर्दिष्ट अंतर्राष्ट्रीयता के आधार पर आगे बढ़ा जा सकता है, और विज्ञान तथा प्रविधि के क्षेत्र में मौलिक तत्त्वों, सिद्धांतों तथा पद्धतियों के आधार पर अग्रसर हुआ जा सकता है। रूस और जापान ने यही करके दिखा भी दिया है। अपने मौलिक वैशिष्ट्य तथा सर्जनात्मक प्रतिभा के सहारे आगे बढ़ना है, उनके विकास का मार्ग वही भाग होगा।

निष्कर्ष रूप में डॉ. रघुवंश ने इस लंबे आलेख में घोषणा की :

"आज इन नयी स्वाधीनता प्राप्त और विकास की कामना करने वाले राष्ट्रों की सबसे बड़ी माँग होनी चाहिए – बौद्धिक मुक्ति और मौलिक सर्जनशीलता का अवसर।"

शब्दार्थ

अन्वेषण की वत्ति	– खोज, खोजी स्वभाव
कारागार	– जेल
अभूतपूर्व	– जो पहले न हुआ हो
संयोजक	– अनोखा, संयोजन करने वाला
भ्रामक	– भ्रम पैदा करने वाला
उन्नति	– प्रगति
अग्रसर	– आगे बढ़ना
अनुकरण	– नकल, पीछे चलना
प्रतिद्वन्द्विता	– मुकाबला करने की अवस्था
वैशिष्ट्य परीक्षण	– परीक्षा लेने की विशेष क्रिया
मार्ग	– रास्ता

बौद्धिक जागरूकता के लिए 'क ख ग' का प्रकाशन महत्त्वपूर्ण उपलब्धि रही। ईमानदारी से सोचने व कहने की शुरूआत इस पत्रिका के माध्यम से हुई जिसका श्रेय डॉ. रघुवंश के विचारक स्वरूप को है।

डॉ. रघुवंश का विचारक रूप निरंतर प्रखर होता गया जिसका दिग्दर्शन उनकी कृति ''मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'' में हुआ। इस कृति में ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से संपृक्त कर व्याख्या करने का प्रयास किया गया है। हिंसा, प्रतिशोध और स्वार्थ के अंधकार से घिरे आज के विश्व के सामने ईसा का जीवन और दर्शन-दोनों ही प्रकाश की ओर उन्मुख करता है, निश्चय ही भारतीय ज्ञान परंपरा के रंग इससे समानता रखते हैं। मनुष्य जाति के कल्याण और उसके आसपास के मौलिक विश्व की भलाई के लिए उपयुक्त सत्य पाने की ओर प्रयास किया गया है जिसमें अन्वेषण की वृत्ति भी है। यह जीवनी विधा में लिखी गई पुस्तक हमारे समाज के लिए परम उपयोगी है जिस पर धर्म-दर्शन के लिए 1985 का श्री भगवानदास पुरस्कार उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा डॉ. रघुवंश को दिया गया। डॉ. रघुवंश को यही सम्मान नहीं मिला, उनको अन्य सम्मान भी मिलते रहे जिनमें से बिड़ला ट्रस्ट द्वारा दिया गया ''शंकर पुरस्कार'' सर्वोच्च है। 1994 में उन्हें उत्तर प्रदेश शासन का प्रतिष्ठित ''भारत भारती पुरस्कार'' प्रदान किया गया। सहाय परिवार में असहाय स्थिति में उत्पन्न होते हुए मन की मज़बूती व संकल्प-शक्ति से वह मूर्द्धन्य स्थान पर प्रतिष्ठित हुए।

– प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया

शब्दार्थ

विचारक	– विचार करने वाला
प्रखर	– तीव्र बुद्धिवाला
दिग्दर्शन	– दिशा दिखाना
संपृक्त	– डूबा हुआ
उन्मुख	– जिसका मुख उस ओर हो, उत्सुक, तैयार
प्रतिष्ठित	– सम्मान-प्राप्त

28.2 बोध प्रश्न

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

1. लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम भेंट कहाँ हुई
   (क) इलाहाबाद में
   (ख) भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में
   (ग) भारतीय हिंदी परिषद् के अखिल भारतीय अधिवेशन में
   (घ) अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में
2. डॉ. रघुवंश अपंग थे क्योंकि –
   (क) उनका एक हाथ नहीं था
   (ख) उनका एक पाँव नहीं था
   (ग) उनके दोनों हाथ लुंज थे पर काम नहीं करते थे
   (घ) वे दृष्टिहीन थे
3. डॉ. रघुवंश अपंग होते हुए भी कैसे लिखते थे –
   (क) दोनों बाँहों में कलम फँसा कर
   (ख) हाथ की मुट्ठी में कलम फँसा कर

(ग) पैर की अँगुली में कलम फँसा कर

(घ) मुँह से कलम पकड़ कर

4. डॉ. रघुवंश ने निम्न विषय पर डी.फिल. की उपाधि प्राप्त की –

(क) हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य

(ख) हिंदी भाषा और डॉ. नगेन्द्र का साहित्य

(ग) साहित्य का नया परिप्रेक्ष्य

(घ) मन और मस्तिष्क

5. 'मन क्या है' विषय पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन कहाँ हुआ?

(क) इलाहाबाद में (ग) लखनऊ में

(ख) दिल्ली में (घ) अलीगढ़ में

6. निम्नलिखित वाक्यों में सही शब्द भर कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

(क) डॉ. रघुवंश की प्रेरणा का आधार ———— थे और अभूतपूर्व सहयोग और सहायता का आधार ————।

(ख) डॉ. रघुवंश ने ———— विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर कार्य किया।

(ग) लेखन कार्य के साथ-साथ उन्होंने निरंतर ———— कार्य भी किया और भारतीय हिंदी परिषद् के मुख्यपत्र ———— का अनेक वर्षों तक संपादन किया।

(घ) उनका सुविचारित आलेख ———— आज भी सामयिक होने के कारण प्रसिद्ध है।

(ङ) डॉ. रघुवंश ने ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से संपृक्त कर ———— में व्याख्या प्रस्तुत की।

(च) धर्म दर्शन के लिए उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान, लखनऊ ने उन्हें ———— पुरस्कार से सम्मानित किया।

(छ) बिड़ला ट्रस्ट द्वारा दिया गया ———— पुरस्कार उनकी विशेष उपलब्धि है।

28.3 आइए समझें

प्रिय विद्यार्थियो ! 'जिजीविषा की विजय' पाठ के प्रारंभ में ही आप पढ़ चुके हैं कि यह एक संस्मरण है। हिंदी साहित्य की कई नवीन विधाओं की तरह यह भी एक महत्त्वपूर्ण और रोचक विधा है। इस पाठ को भली-भाँति समझने के लिए आइए, पहले जान लें कि संस्मरण है क्या?

संस्मरण क्या है?

अपनी यादों के आधार पर किसी को याद करना, उसका स्मरण करना ही संस्मरण कहलाता है। ध्यान देने योग्य बात है कि आत्मीयता से जुड़े उस व्यक्तित्व को और उससे जुड़ी विशिष्ट घटनाओं को जब हम घटनाक्रम में बाँधकर उसे आकर्षक संस्मरण चरित्र के रूप में उजागर करते हैं तो साहित्य में वह विधा संस्मरण कहलाती है।

आपको एक बात और बता दें कि जब हम संस्मरण को पढ़ते हैं तो हमें स्थान-स्थान पर शब्दचित्रात्मक अभिव्यक्ति भी देखने को मिलती है। स्थान-स्थान पर शब्दों की इसी चित्रात्मक अभिव्यक्ति होने के कारण कभी–कभी यह रेखाचित्र विधा की झलक भी देने लगता है।

संस्मरण विधा की इस कड़ी में प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया ने जिजीविषा और संकल्प से जुड़े डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व को संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति दी है। लेखक ने डॉ. रघुवंश को अपने स्मृतिपटल पर उभारा है और उस आधार पर संस्मरण की मुख्य विशेषताएँ – संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आई हैं।

जिस प्रकार कहानी, नाटक, उपन्यास, निबंध आदि गद्य साहित्य की विधाएँ हैं, उसी प्रकार संस्मरण भी गद्य साहित्य की नवीन विधा है। इसकी भी कुछ विशेषताएँ हैं, जिन्हें जानना बहुत ज़रूरी है। संस्मरण की प्रमुख विशेषताएँ हैं – परिचित प्रभावपूर्ण व्यक्ति की सत्ता, चरित्र का स्पष्टीकरण, आत्मीयता, तटस्थ दृष्टि और रोचक शैली।

आइए, अब हम यह पढ़ें कि 'जिजीविषा की विजय' रचना में यह विशेषताएँ कितनी और किस प्रकार मिलती हैं।

28.4 संस्मरण विधा की विशेषताओं के आधार पर पाठ की समीक्षा

संस्मरणात्मक अभिव्यक्ति

आपने पूरा पाठ पढ़ा। लेखक डॉ. रघुवंश के नाम से विद्यार्थी जीवन से परिचित हैं। उनकी डॉ. रघुवंश से पहली भेंट हुई–भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में। डॉ. रघुवंश को देखकर लेखक दंग रह गए कि वे एक पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते जा रहे थे। उन्हें अभी तक यह नहीं पता था कि डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से लाचार हैं। वह उनके व्यक्तित्व से कितने प्रभावित हुए इस अंश से समझा जा सकता है, *"मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे। एक व्यक्ति इतना अधिक सक्रिय रह सकता है, यह आश्चर्य चकित करने के लिए पर्याप्त था।"* लेखक न केवल डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व से प्रभावित हुए अपितु उनकी निजी दृष्टि ने उन्हें यह सोचने पर मजबूर कर दिया था कि साधारणतया परीक्षा में अपंग बालकों के लिए लेखक देने की सुविधा होती है परंतु डॉ. रघुवंश अकेले निरंतर रिपोर्टिंग का काम कर रहे थे। वास्तव में उन्होंने अपनी सूझ-बूझ से लेखन की इस

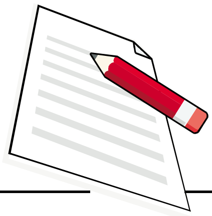

टिप्पणी

पद्धति को विकसित कर लिया था। डॉ. रघुवंश ने स्वयं आचार्य लोढ़ा को पत्र में लिखा, *''... आज न मेरा दाहिना पैर उठता है, जिसके पंजों के सहारे हज़ारों-हज़ार पृष्ठ लिखता रहा हूँ और न अपनी रीढ़ के सहारे बैठ पाता हूँ।... मैं अपनी लेखन प्रक्रिया में किस प्रकार दाहिनी टाँग और रीढ़ पर जोर डालता रहा हूँ।'* (दिनांक 26.7.05) उनका मन विपरीत स्थितियों में भी उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता था। उन्होंने अपने जीवन में कुछ-न-कुछ बनने की ठान ली थी। यह जानकारी पाठ के इस अंश को पढ़कर मिलती है। ''उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए. किया तथा ''हिंदी साहित्य के भक्तिकाल और रीतिकाल में प्रकृति और काव्य विषय पर डी.फिल्. की उपाधि प्राप्त कर ली थी। उसी विश्वविद्यालय में वे प्राध्यापक बने।''

इस संदर्भ में डॉ. रघुवंश को समीप से जानने वाले उनके शिष्य डॉ. रामकमल राय ने उनके बारे में उल्लेख किया है, *''इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की एम.ए. की परीक्षा में सर्वाधिक अंक प्राप्त कर उन्होंने सभी को चकित कर दिया। किंतु जब उन्होंने यह संकल्प व्यक्त किया कि वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापन के अतिरिक्त और कोई कार्य नहीं स्वीकार करेंगे तो फिर उनके शुभचिंतकों के सामने एक नई समस्या आ खड़ी हुई। जो व्यक्ति हाथ से खड़िया नहीं पकड़ सकता, श्यामपट्ट पर कुछ लिख नहीं सकता उसे शिक्षक कैसे बनाया जाए? चयन समिति और विश्वविद्यालय की कार्यसमिति में इस बात पर काफी बहस हुई किंतु विजय अंतिम रूप से नैतिकता की ही हुई और रघुवंश जी इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्राध्यापक हो गए।''*

घटनाओं की सत्यता और चरित्र का स्पष्टीकरण

विद्यार्थियो ! आपके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि संस्मरण में स्मृति के आधार पर हम जिस प्रभावपूर्ण व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देते हैं उसके जीवन से जुड़ी हुई जिन घटनाओं का हम उल्लेख करते हैं उसमें सच्चाई का होना अत्यंत आवश्यक है। उसमें कल्पना का तत्त्व रंचमात्र भी नहीं होता। घटनाओं के साथ-साथ उस विशिष्ट व्यक्ति का चरित्र भी उभर कर सामने आता है। लीजिए, अब हम इस दृष्टि से देखते हैं कि प्रस्तुत संस्मरण में ये विशेषताएँ किस सीमा तक हैं। आप ऐसी किन्हीं दो सत्य घटनाओं का उल्लेख यहाँ कीजिए–

1. ....

2. ....

विद्यार्थियो ! आपने मूल पाठ पढ़ा। आपने इस बात पर भी ध्यान दिया होगा कि लेखक प्रत्येक घटना के साथ-साथ डॉ. रघुवंश के चरित्र को खोलता चला जाता है। आपने अनुभव किया होगा कि घटनाक्रम के साथ-साथ हम डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का परिचय प्राप्त करते चलते हैं। उदाहरण के लिए – उनके साथ पहली ही भेंट में हमने डॉ. रघुवंश के हाथों से अपंग होने और उनकी कार्यक्षमता, तत्परता, सूझ-बूझ तथा कर्मठ प्रवृत्ति के बारे में पढ़ा। साथ ही यह सूचना भी हमें मिली कि

''उन्होंने जो लेखन कार्य किए, वे बहुत से उन विद्वानों से भी संभव न हो सके जिन्होंने मज़बूत हाथ लेकर जन्म लिया।''

लीजिए एक अन्य घटना के द्वारा हम जानेंगे कि डॉ. रघुवंश बाह्य और आंतरिक रूप में तो स्वच्छ थे ही, अर्थ संबंधी मामलों में भी उनमें शुचिता दिखाई देती थी। आइए यह उदाहरण देखें, *''किस युक्ति से वह रिक्शा में बैठने से पूर्व उस चालक की देय राशि निकाल कर रख लेते हैं, यह विस्मयकारी है जिससे उनको साथ ले जाने वाले व्यक्ति अपने पास से रुपए न दे दें।''* विद्यार्थियो ! आप जैसे-जैसे पाठ पढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे डॉ. रघुवंश का चरित्र उजागर होता जाता है। उनकी संकल्पशक्ति, सौम्य व्यक्तित्व, कर्मयोगी प्रवृत्ति, आत्मविश्वासपूर्ण कार्य करने की क्षमता, आगे बढ़ने की योग्यता, विद्रोही और जुझारू प्रकृति विभिन्न रूपों में दिखाई देती हैं। इसी प्रकार आप पाठ पढ़ते-पढ़ते डॉ. रघुवंश के चरित्र की अन्य विशेषताएँ प्रकट कर सकते हैं। डॉ. रघुवंश के चरित्र की किन्हीं अन्य दो विशेषताएँ आप यहाँ लिखिए:

1. ....

2. ....

आत्मीयता तथा तटस्थ दृष्टि

विद्यार्थियो ! यहाँ पहले यह जानना ज़रूरी है कि आत्मीयता तथा तटस्थ दृष्टि से क्या तात्पर्य है। अभी तक आप यह जान चुके हैं कि संस्मरण में अनुभूत स्मृतियाँ सँजोई जाती हैं और उसमें कल्पना का स्थान ही नहीं होता है। परिचित व्यक्ति से जुड़ी अनुभूतियों में निजी दृष्टि प्रधान होती है। परंतु साथ ही यह बात भी ध्यान देने योग्य है कि संस्मरण अतीत से जुड़ा होता है। आत्मीयता यानि अपनापन, निजता संस्मरण का मूल आधार है। तटस्थ दृष्टि से विशिष्ट व्यक्ति का विश्लेषण करना संस्मरण की विशेषता है।

प्रस्तुत संस्मरण में हम यह पाते हैं कि लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व से बहुत अधिक प्रभावित हैं और अपनी स्मृतियों के आधार पर अनुभूत सत्यों और घटनाओं को प्रकट करते हुए वे उनके चरित्र को खोलते चले जाते हैं। एक-एक करके उनके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से जुड़ी विशेषताएँ प्रकट होती चलती हैं। लेखक उनके कृतित्व को समसामयिक परिवेश के साथ जोड़ते चलते हैं। उदाहरण के लिए – उन्होंने डॉ. रघुवंश के आलेख 'नए राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती' के उस अंश को उभारा है जो आज तीन दशक के बाद भी सामयिक है। ''यदि सचमुच एशिया और अफ्रीका को विकसित होना है, तो अपने सभी प्रश्नों को निजी संदर्भ में रखकर देखना होगा। विकास की यह पद्धति मूलतः भ्रामक है कि जिस रेखा में किसी दूसरे देश ने उन्नति की है, उसी रेखा पर आगे बढ़ा जा सकेगा। विकास की रेखा का प्रत्येक बिंदु आगे आने वाले बिंदुओं को अग्रसर करने में सहायक हुआ है, स्वयं पीछे रहकर, पिछड़कर। ऐसी स्थिति में दूसरा व्यक्ति या राष्ट्र अपने विकास के लिए उस रेखा का अनुकरण करना चाहेगा तो वह सदा के

टिप्पणी

लिए अनुवर्ती बना रहेगा, पिछड़ा रहेगा। विकास की प्रतिद्वन्द्विता में, और बिना प्रतिद्वन्द्विता के विकास कभी संभव नहीं होता, सदा अपनी स्वतंत्र रेखा खींचनी होगी।

डॉ. रघुवंश और उनका कृतित्व

- डॉ. रघुवंश ने अनुशीलन पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया।
- अभूतपूर्व कृति के रूप में 'जेल और स्वतंत्रता' शीर्षक से पत्रों का संग्रह प्रकाशित हुआ।
- डॉ. रघुवंश एक विचारक के रूप में अधिक मुखर रूप में त्रैमासिक पत्रिका – 'क ख ग' से सभी के सामने आए। उन्होंने इस पत्रिका का संयोजन किया तथा संपादक मंडल में भी प्रमुख भूमिका निभाई।
- ''मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'' कृति द्वारा डॉ. रघुवंश का प्रखर विचारक रूप निखर कर आया। जिसके लिए उन्हें सन् 1985 में श्री भगवान दास पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अन्य अनेक सम्मानों में बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार' तथा उत्तर प्रदेश शासन द्वारा प्रतिष्ठित 'भारत भारती पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

यह सभी कुछ उन्होंने मज़बूत मन और दृढ़ इच्छाशक्ति द्वारा प्राप्त किया।

लेखक की तटस्थ दृष्टि ही डॉ. रघुवंश द्वारा रचित जीवनी 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' की उस दृष्टि को उभारती है जिसमें हिंसा, प्रतिशोध और स्वार्थ के अंधकार में घिरा वर्तमान विश्व का वातावरण ईसा की दया, करुणा और क्षमा को भारतीय परंपरा से जोड़ कर देखता है। ईसा का जीवन और दर्शन भारतीय ज्ञान परंपरा से मेल खाते हैं।

रोचक भाषा-शैली

संस्मरण परिचित व्यक्ति के जीवन से जुड़ी घटनाओं की सत्य अभिव्यक्ति होता है। इसलिए संस्मरण में स्वाभाविकता, सरलता व रोचकता के साथ-साथ वर्णनात्मक शैली भी होती है। प्रस्तुत संस्मरण सरल भाषा में लिखा गया है, जिसमें रोचकता का गुण विशेष रूप से विद्यमान है। जैसे-जैसे आप पाठ पढ़ते जाते हैं, वैसे-वैसे आपकी रुचि डॉ. रघुवंश को जानने के लिए बढ़ती चली जाती है। घटनाओं में वर्णनात्मकता के साथ-साथ कौतूहल और रुचि दोनों का समावेश है। आपने पढ़ा लेखक ने कितने अच्छे ढंग से 'मन' का विश्लेषण किया है। मन की व्याख्या जहाँ आपको एक नई दृष्टि देती है वहाँ दूसरी तरफ़ डॉ. रघुवंश के सुदृढ़ मन से भी परिचित कराती है। लेखक की भाषा सरल परंतु शुद्ध साहित्यिक भाषा है। तटस्थ, निकटस्थ, संगोष्ठी, पर्यवेक्षण अभिक्रिया, समुच्चय, नव-वल्कल, शुचिता, परिलक्षित, सर्जनात्मक, चैतन्य, बौद्धिक, प्रतिद्वन्द्विता जैसे शुद्ध साहित्यिक शब्द संस्मरण को प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

भावात्मक, वर्णनात्मक और व्याख्यात्मक शैली के संयोजन से यह संस्मरण बहुत ही प्रभावपूर्ण बन पाया है।

- **भावात्मक शैली**

  ''मैं यह देखकर चकित रह गया कि इतने विशाल समुदाय में इतने सक्षम लेखकों के होते हुए भी पूरी कार्यवाही की निरंतर रिपोर्टिंग डॉ. रघुवंश ही बड़ी तेज़ी से अपने पैर से ही कर रहे थे।''

  ''मैं निरंतर सोचता रहा कि आखिर कौन-सा तत्त्व है, कारण है जिससे रघुवंश विपरीत परिस्थितियों में भी आगे ही बढ़ते गए।''

- **सहज-सरल भाषा**

  ''यह मन ही तो है, जिसमें चाह है, लक्ष्य है वहीं उसमें पवित्रता, कोमलता व प्रियता है। उनका नव उत्साह से भरा मन हमेशा लेखन कार्य, सेवा कार्य में रमता है।''

- **विषय के अनुसार गंभीर परंतु बोधगम्य भाषा**

  ''देश-विदेश के विद्वानों-वैज्ञानिकों ने गंभीर विचार-विमर्श कर 'मन' को परिभाषित करने की चेष्टा की। मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है। कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।''

- **पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग**

  आप जानते हैं 'विशिष्ट क्षेत्र में विशिष्ट संदर्भ में निश्चित संकल्पनाओं को खोलने वाले शब्द ही पारिभाषिक शब्द कहलाते हैं। यहाँ 'मन' की बात विस्तार से हुई है तो तत्संबंधी पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग दर्शनीय है: *''मन को विद्वानों ने तीन मंजिला भवन – नववल्कल, वत्सल और सर्पिल माना''*।

- मानक वर्तनी का प्रयोग आपने ध्यान दिया होगा पूरे पाठ में गद्य, शुद्ध, बुद्धि, औद्योगिक आदि शब्दों में संयुक्त शब्द तोड़ कर लिखे गए हैं। मानक भाषा वर्तनी के यही रूप स्वीकार्य हैं। इस प्रकार के अन्य शब्द चुनकर मानक और अमानक शब्दों की एक सूची तैयार कीजिए।

अतः हम कह सकते हैं कि 'जिजीविषा की विजय', संस्मरण में वे सभी विशेषताएँ हैं जो एक अच्छे संस्मरण में होनी चाहिए। इस प्रकार किसी भी पाठक के मन पर संस्मरण के रूप में यह पाठ समग्र प्रभाव डालता है।

पाठगत प्रश्न 28.1

1. निम्नलिखित कथनों में सही के सामने (√) तथा गलत के आगे (X) का निशान लगाइए:

   (क) संस्मरण गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में समाहित है। ( )

   (ख) कहानी, नाटक और उपन्यास भी गद्य साहित्य की नवीन विधाएँ ही हैं। ( )

(ग) संस्मरण लेखन में कल्पना जगत की ऊँची उड़ान भरने की पूरी छूट है। ( )

(घ) सत्यता, तटस्थता और आत्मीयता अच्छे संस्मरण की विशेषताएँ हैं। ( )

(ङ) डॉ. रघुवंश ने 'अनुशीलन' पत्र का अनेक वर्षों तक संपादन किया। ( )

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक–दो शब्दों अथवा वाक्यों में दीजिए:

(क) डॉ. रघुवंश ने किस त्रैमासिक पत्रिका का संपादन कार्य किया?

(ख) डॉ. रघुवंश को सन् 1985 में किस कृति के लिए कौन से पुरस्कार से सम्मानित किया गया?

(ग) शुद्ध साहित्यिक भाषा के कोई दो उदाहरण मूलपाठ से छाँट कर लिखिए।

(घ) मूलपाठ से कोई दो पारिभाषिक शब्द चुनकर लिखिए।

28.5 प्रमुख व्याख्याएँ

अब आपने पूरा पाठ पढ़ लिया है और संस्मरण की विशेषताओं से भी आप परिचित हो गए हैं। आइए, पाठ में आए कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या पढ़-समझ लेते हैं –

अंश - 1

साधारणतः परीक्षा में भी ऐसे बालकों को कोई लेखक देने का प्रावधान है पर डॉ. रघुवंश ने अपनी सूझबूझ से ऐसी पद्धति विकसित कर ली थी जो प्रायः देखने को नहीं मिलती है। इस पद्धति से उन्होंने सारी परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं।

संदर्भ

यह गद्यांश प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया द्वारा रचित 'जिजीविषा की विजय' नामक संस्मरण में से लिया गया है।

प्रसंग

लेखक भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में गए थे, जहाँ उनकी भेंट डॉ. रघुवंश से पहली बार हुई और वे डॉ. रघुवंश को पैर से निरंतर तेज़ी से लिखते देख कर दंग रह गए। इन पंक्तियों में अपंग होते हुए भी डॉ. रघुवंश की तीव्र कार्यक्षमता को प्रकट किया गया है।

व्याख्या

भारतीय हिंदी परिषद् के जयपुर अधिवेशन में रिपोर्टिंग का कार्य डॉ. रघुवंश कर रहे थे। डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से अपंग थे, किसी भी हाथ में कलम नहीं पकड़ सकते थे। उनके कार्य में कहीं भी अक्षमता का बोध नहीं हो रहा था, वे बड़ी तीव्रता से पैर की उँगलियों में कलम फँसाकर रिपोर्टिंग का कार्य कर रहे थे। लेखक को बहुत ही आश्चर्य हो रहा था कि अपंग होने के बावजूद भी एक व्यक्ति इतनी अधिक सक्रियता से कार्य कर सकता है। प्रायः ऐसा होता है कि यदि कोई बालक अपंग हो तो परीक्षा में लेखन कार्य करने के लिए लेखक नियुक्त किया जाता है, ताकि परीक्षा में उसे कोई व्यवधान न हो।

परंतु डॉ. रघुवंश ने अपने हाथों के न होने को अपनी कमजोरी या अक्षमता नहीं माना था। उन्होंने अपनी व्यावहारिक योग्यता से पैरों से ही लिखने का अभ्यास किया और इसी प्रक्रिया के माध्यम से सभी परीक्षाओं में उत्तीर्ण हुए। उन्होंने मन में जो निश्चय किया उसे अपनी बुद्धि के धरातल पर स्थापित कर पूर्ण किया।

अंश – 2

मन को विद्वानों ने तीन मंजिला भवन-नववल्कल, वत्सल, सर्पिल माना। लगता है, अतींद्रिय अनुभवों के केंद्र मन (सर्पिल) में ही उन्होंने पक्का विचार बना लिया होगा।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक की डॉ. रघुवंश से सर्वप्रथम हुई भेंट में उनकी अपंगता का ज्ञान हुआ और साथ ही उनके ज़िंदादिल, कर्मठ व्यक्तित्व का साक्षात्कार भी हुआ। तब से वह निरंतर यह सोचा करते थे कि आखिर वह कौन-सा तत्त्व है जो डॉ. रघुवंश को विपरीत परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। काफी सोच-विचार कर उन्होंने यह मत बनाया कि निश्चित रूप से डॉ. रघुवंश के मन के कुछ बनने का दृढ़ निश्चयी भाव था। प्रस्तुत पंक्तियों में लेखक मन के स्वरूप को व्याख्यायित करते हुए डॉ. रघुवंश के दृढ़ व्यक्तित्व को उजागर कर रहे हैं।

व्याख्या :

इस अनुच्छेद में लेखक ने 'मन क्या है' विषय पर हुई अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के आधार पर यह स्पष्ट किया है कि मन और मस्तिष्क में अंतर है। मस्तिष्क में अनगिनत चेतना की तरंग उठती रहती हैं और मन उन तरंगों का समुच्चय (संगठन) है। विद्वान मन को तीन मंजिले भवन की भाँति मानते हैं जिनमें भाव तरंगें उठती हैं और संवेगात्मक प्रक्रिया में विकसित होती हैं, फिर क्रियात्मक रूप धारण करती हैं। डॉ. रघुवंश ने अपनी अपंगता को संवेगात्मक सशक्तता प्रदान की और मन में सुदृढ़ता से यह निश्चय किया कि यह अपंगता उनके जीवन के किसी कार्य में बाधक नहीं होगी और जीवन भर, उनके मन की सुदृढ़ता कायम रही और वे हर क्षेत्र में आगे बढ़े। उन्होंने निश्चित रूप से मन की गहराई में दृढ़ संकल्प कर लिया था कि जीवन में सफल होना ही है चाहे जैसी भी परिस्थितियाँ आड़े आएँ। जिसका मन मज़बूत होता है, उसका कोई कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता।

अंश - 3

अर्थ की शुचिता के वे ज्वलंत उदाहरण हैं। हर प्रकार की स्वच्छता की भावना उनके स्वभाव का अभिन्न अंग रही है।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग

लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की सुदृढ़ता के साथ-साथ उनके स्वभाव की निश्छलता, आत्मसम्मान का भाव और पवित्रता को प्रस्तुत पंक्ति में अभिव्यक्त कर रहे हैं।

व्याख्या

डॉ. रघुवंश के मन में निरंतर आगे बढ़ने की इच्छा थी। जीवन के लिए लक्ष्य निर्धारित था। उनका मन सदैव नई प्रेरणा और उत्साह के साथ कार्य करने की ओर अग्रसर रहता था। लेखन के प्रति उनकी समर्पित भावना थी। उनका स्वभाव बहुत ही पवित्र और निर्मल था। उनकी यह पवित्रता उनके रहन-सहन, व्यक्तित्व तथा हर कार्य-व्यापार में दृष्टिगत होती थी। जिसका प्रभाव उनके साहित्य में स्पष्ट दिखाई देता है। उक्त पंक्तियों को विशेष रूप से अर्थ की पवित्रता के संदर्भ में लेखक ने कहा है। डॉ. रघुवंश अर्थ के मामले में कभी भी किसी की दया या एहसान लेने को राज़ी नहीं थे। वे रिक्शे में भी जाते तो रिक्शे वाले को देने वाली रकम न जाने किस ढंग से पहले ही निकाल कर रख लेते थे। इसीलिए लेखक ने डॉ. रघुवंश को अर्थ की शुचिता का ज्वलंत उदाहरण माना है।

अंश – 4

संकल्प ही तो चेतना का वह गुण है जिसमें मन की दृढ़ता, इच्छा, विचार, चिंतन, विमर्श विद्यमान रहते हैं।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग – इस गद्यांश में लेखक डॉ. रघुवंश के जीवन की हर कार्य प्रवृत्ति के मूल में उनके मन की संकल्पमय सक्रियता को उजागर कर रहे हैं।

व्याख्या – संकल्प शक्ति जीवन का सुदृढ़ आधार है जो मनुष्य के मन की इच्छाओं व विचारों को सुनिश्चित गतिशीलता व सशक्तता प्रदान करती है। संकल्पशक्ति मनुष्य की प्रतिष्ठा का मूल मंत्र है। डॉ. रघुवंश के संदर्भ में कहा जा सकता है कि उन्होंने अपने जीवन में जो सर्जनात्मक कार्य किए उनका आधार सुदृढ़ संकल्प चेतना है। इसी वैचारिक चिंतनशील संकल्पपूर्ण इच्छाशक्ति ने उन्हें निरंतर लेखन कार्य की ओर प्रेरित किया और वे एक सच्चे 'कर्मयोगी' के रूप में कार्यरत रहे।

अंश – 5

जो आत्मविश्वासपूर्वक कार्य करता है, उसकी योग्यता तो उनके कार्यों से प्रकट होती है। यही कारण है कि डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के निर्देशन में जब 'हिंदी साहित्य कोश' का निर्माण प्रारंभ हुआ तो डॉ. रघुवंश न केवल संपादक मंडल में रहे वरन् उस परियोजना का संयोजकत्व भी किया। उन्होंने कोश के लिए लेखन-कार्य भी किया। हिंदी 'साहित्य कोश' के प्रकाशन में उनका बड़ा योगदान रहा। किसी भी परियोजना का विकास कर, उसको ऊँचाई तक ले जाना और उसके लिए अपने को न्योछावर करते रहना उनका स्वभाव बन गया। योजकता, आत्मविश्वास, आत्मबल, कर्त्तव्यनिष्ठा आदि गुणों का संबल लेकर वह निरंतर आगे बढ़ते ही गए।

संदर्भ – पूर्ववत्

प्रसंग – इस गद्यांश में लेखक डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की अन्य विशेषताओं को उजागर करने के साथ-साथ उनके कृतित्व को भी स्पष्ट कर रहे हैं –

व्याख्या – डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व की यह विशेषता थी कि वह हर कार्य आत्मविश्वासपूर्ण ढंग से करते थे, जिससे उनकी योग्यता और कार्यकुशलता दोनों का ही परिचय मिलता था। ''हिंदी साहित्य कोश'' का निर्माण कार्य आरंभ हुआ तब डॉ. धीरेन्द्र वर्मा इस कार्य का निर्देशन कर रहे थे। डॉ. रघुवंश ने इस कार्य के लिए न केवल संपादक का कार्य किया अपितु कार्य संयोजन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, साथ ही कोश के लिए लेखन कार्य भी किया। यह तीनों कार्य साधारण नहीं थे। उनके असाधारण सहयोग से 'साहित्य कोश' का प्रकाशन कार्य संभव हुआ। उनके भीतर कार्य करने की लगन थी, अपने ऊपर पूरा विश्वास था। पूरी कर्त्तव्य निष्ठा से कार्य करना, उस कार्य को ऊँचाई तक ले जाना, काम के लिए मर मिटना, खुद को न्योछावर कर देना, आत्मविश्वास पूर्वक कार्य करना उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी। वास्तव में कहा जाए तो कार्य के प्रति उनमें आत्मसमर्पण का भाव था। इन्हीं अनेक गुणों के कारण आपने जीवन में सफलता पाई और आगे ही आगे बढ़ते चले गए।

28.6 आपने क्या सीखा

1. मन में समाहित 'जीवन की लालसा' मनुष्य की सबसे बड़ी शक्ति है।
2. अपंगता जीवन की गतिशीलता में बाधक नहीं हो सकती, डॉ. रघुवंश इसके साक्षात उदाहरण हैं।
3. डॉ. रघुवंश के जीवन जीने का ढंग यह सिद्ध करता है कि अपंग लोगों को दया व सहानुभूति के स्थान पर अपनत्व और सहयोग चाहिए।
4. मन की सुदृढ़ता और संकल्प शक्ति ही व्यक्ति की प्रतिष्ठा का आधार है, डॉ. रघुवंश इसी संकल्प-शक्ति के कारण निरंतर लिखते रहे और सफलता की ऊँचाइयों को छूते रहे। डॉ. रघुवंश में आत्मविश्वास कूट-कूट कर भरा हुआ है।
5. डॉ. रघुवंश के व्यक्तित्व उनकी जिजीविषा शक्ति और कार्यक्षमता की चरम परिणति में योजकता, अर्थ की शुचिता, आत्मबल, कर्त्तव्य निष्ठा, क्षमता के गुण समाहित हैं।
6. गद्य साहित्य की नवीन विधाओं में संस्मरण एक जीवंत और रोचक विधा है।
7. संस्मरण की विशेषताएँ हैं – आत्मीयता, स्मरणभाव, सत्यता, लेखक की निजी दृष्टि की प्रधानता, तटस्थ दृष्टि, परिचित व्यक्ति का अपने दृष्टिकोण से विश्लेषण। संस्मरण की प्रमुख विशेषताओं के आधार पर यह रचना खरी उतरती है। संस्मरण की भाषा-शैली सरल, रोचक, भावात्मक, प्रवाहमान तथा आत्मीयतापूर्ण है।
8. डॉ. रघुवंश की प्रमुख कृति है – मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन। इसके द्वारा उनका विचारक रूप प्रखर होकर निखरा।
9. उन्हें 'भारत भारती सम्मान', बिड़ला ट्रस्ट द्वारा 'शंकर पुरस्कार', 'श्री भगवान दास पुरस्कार' से समय-समय पर सम्मानित किया गया।

28.7 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

प्रो. कैलाश चंद्र भाटिया लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी, मसूरी से सेवा निवृत्त हुए। वहाँ वे 'हिंदी तथा प्रादेशिक भाषाएँ' विभाग के विभागाध्यक्ष थे। अनेक संस्थाओं तथा भारत सरकार की विविध समितियों में भाषा विशेषज्ञ के रूप में कार्यरत। भाषा विज्ञान तथा हिंदी भाषा के विविध पक्षों पर अनुसंधान के साथ गद्य साहित्य की नवीन विधाओं की ओर प्रवृत्त। आगरा तथा अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से संबद्ध। वृंदावन शोध संस्थान, वृंदावन के पूर्व निदेशक।

प्रमुख रचनाएँ: अखिल भारतीय प्रशासनिक कोश, अंग्रेज़ी-हिंदी अभिव्यक्ति कोश, अंग्रेज़ी हिंदी शब्दों का ठीक प्रयोग, हिंदी भाषा शिक्षण, भारतीय भाषाएँ, विधा-विविधा, प्रयोजनमूलक कामकाजी हिंदी, व्यावहारिक हिंदी, अनुवाद कला: सिद्धांत और प्रयोग, भाषा-भूगोल, संक्षेपण और पल्लवन आदि 35 से अधिक प्रकाशित पुस्तकें।

लिंग्विस्टिक सोसाइटी ऑफ इंडिया के **'सील आफ़ आनर'** साहित्य वाचस्पति, नातालि पुरस्कार से सम्मानित, महामना मदन मोहन मालवीय सम्मान से अलंकृत।

(ख) संस्मरण गद्य साहित्य की एक सशक्त विधा है। इस विधा का आरंभ भारतेंदु युग से हुआ। हिंदी में अनेक संस्मरण लिखे जा चुके हैं। आपकी जानकारी के लिए कुछ नाम दिए जा रहे हैं –

'दीप जले शंख बजे'	–	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
'गांधी : कुछ स्मृतियाँ'	–	जैनेन्द्र कुमार
'जिन्हें भूल न सका'	–	रामनारायण उपाध्याय
'आत्मनेपद'	–	अज्ञेय
'उजाले अपनी यादों के'	–	भगवानसिंह
'बच्चन निकट से'	–	अजित कुमार
'मेरे हमदम मेरा दोस्त'	–	कमलेश्वर
'यादों की तीर्थयात्रा'	–	विष्णु प्रभाकर
'युगपुरुष'	–	रामेश्वर शुक्ल अंचल
'याद हो कि न याद हो'	–	काशीनाथ सिंह

(ग) भारत के राष्ट्रपति ऐ.पी.जे. अब्दुल कलाम ने देश के हज़ार विकलांग बच्चों से ख़ास मुलाकात की और अपने अनुभवों को 'अदम्य साहस' नामक कृति में सँजोया। इस कृति में एक स्थान पर लिखा है, *"विकलांगता का भाव तो इनसान के दिमाग़ में होता है। निर्मल और तेजस्वी दिमाग वाला व्यक्ति एक मूल्यवान नागरिक होता है भले ही वह शारीरिक रूप से विकलांग हो।"*

(घ) हिंदी साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाले डॉ. गोपाल राय ने अपंग होते हुए भी

सफलता की बुंलदियों को चूमा है। इस पाठ्यक्रम में आप 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास पढ़ेंगे जिसका संक्षेपण और पाठ लेखन का कार्य उन्होंने ही किया है। हिंदी-उर्दू के सुप्रसिद्ध लेखक तथा 'महाभारत' धारावाहिक के संवाद लेखन के लिए प्रसिद्ध डॉ. राही मासूम रज़ा ने अपाहिज होते हुए भी तीन सौ से ज़्यादा फिल्मों की पटकथा लिखीं और ''आधा गाँव'' जैसा उपन्यास साहित्य जगत को दिया।

28.8 पाठांत प्रश्न

1. संस्मरण की चार विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. पाठ में से उन दो अंशों का चयन कीजिए, जब लेखक की डॉ. रघुवंश से भेंट हुई।
3. डॉ. रघुवंश को देखकर लेखक के दंग रह जाने का कारण स्पष्ट कीजिए।
4. डॉ. रघुवंश दोनों हाथों से लाचार थे फिर भी वह कैसे लिखते थे ?
5. मन क्या है ? स्पष्ट कीजिए।
6. लेखक ने डॉ. रघुवंश को 'कर्मयोगी' क्यों कहा है ?
7. डॉ. रघुवंश में समझौतावादी प्रवृत्ति कभी नहीं रही। इसकी पुष्टि हेतु उदाहरण दीजिए।
8. उनका विचारक रूप सबसे अधिक मुखर कब हुआ ?
9. 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन' में डॉ. रघुवंश द्वारा व्याख्यायित मुख्य विचारों को प्रकट कीजिए।
10. 'डॉ. रघुवंश का बाह्य और आंतरिक रूप तो स्वच्छ था ही, अर्थ संबंधी शुचिता भी उनके व्यक्तित्व में देखने को मिलती है,' इसका एक उदाहरण दीजिए।
11. डॉ. रघुवंश के लेखन कार्य पर संक्षिप्त टिप्पणी कीजिए।
12. डॉ. रघुवंश की विद्रोही और जुझारू प्रकृति को अपने शब्दों में लिखिए।
13. निम्नलिखित अंशों की व्याख्या कीजिए :

(क) मस्तिष्क की तरंगों को कोई चेतना, कोई चिति, कोई संज्ञान की संज्ञा देता है, कल्पना करना, अतीत में जाना, अवधान, पर्यवेक्षण, विचारणा आदि अभिक्रियाओं का संपादन मस्तिष्क करता है, जिनके समुच्चय का नाम 'मन' है।

(ख) शारीरिक दृष्टि से छोटा नहीं, अप्रत्याशित बाधा होते हुए भी मन कर्म में निरंतर रत रहा और नव-नव प्रकाश विकीर्ण होता रहा।

14. निम्नलिखित शब्दों की मानक वर्तनी लिखिए:
    सम्पादन, चट्टान, पद्य, पद्धति, उद्धरण, विद्यार्थी

28.8 उत्तरमाला

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (ख) 2. (ग) 3. (ग) 4. (क) 5. (ख)

6. (क) डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, डॉ. रामस्वरूप चतुर्वेदी

(ख) इलाहाबाद,

(ग) संपादन, अनुशीलन।

(घ) 'नये राष्ट्र और वर्तमान की चुनौती।'

(ङ) 'मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन'

(च) श्री भगवानदास पुरस्कार

(छ) शंकर

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

27.1 1. (क) √ (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) √

2. (क) 'क ख ग',

(ख) **कृतिः** मानव पुत्र ईसा : जीवन और दर्शन,

पुरस्कारः श्री भगवानदास पुरस्कार

(ग) स्वयं कीजिए

(घ) स्वयं कीजिए

301hi29

29
निबंध कैसे लिखें

पिछले पाठों में आप सार-लेखन और भाव-पल्लवन के बारे में पढ़ चुके हैं। आशा है कि आप अब तक अपनी बातों को लिखित रूप में ठीक ढंग से व्यक्त करना सीख चुके होंगे। आपने यह भी पढ़ा कि निबंध लिखते समय अपने भावों और विचारों को एकत्रित कर उन्हें सही क्रम देना, उदाहरण देकर अपनी बात की पुष्टि कर उन्हें प्रभावशाली ढंग से कहना या लिखना ही निबंध लिखने का कौशल है। अब तक आप कई सुप्रसिद्ध रचनाकारों के निबंध भी पढ़ चुके हैं। क्या आप जानते हैं कि लेखन या रचना का सर्वोत्तम रूप निबंध में ही देखने को मिलता है और निबंध को ही उत्तम गद्य-लेखन की कसौटी माना गया है। इस कला में आप भी सिद्धहस्त हो सकते हैं, आइए, यह हम इस पाठ में सीखते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- आदर्श निबंध के गुणों का उल्लेख कर सकेंगे;
- निबंध को विभिन्न चरणों में बाँट कर उन पर अनुच्छेद लिख सकेंगे;
- निबंध के प्रकारों का वर्गीकरण कर सकेंगे;
- निबंध की रूपरेखा निर्धारित कर उपशीर्षक दे सकेंगे;
- शीर्षक तथा उपशीर्षकों के अनुरूप निबंध को विस्तार दे सकेंगे;
- किसी दिए गए विषय पर आवश्यकतानुसार वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक तथा आलोचनात्मक निबंधों का लेखन कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित दोनों अनुच्छेदों को पढ़िए:

1. भारत-भूमि सदा से वीर वसुंधरा रही है। अन्याय और अत्याचार का सामना करने के लिए समय-समय पर यहाँ एक-से-एक वीर पैदा होते रहे हैं। उन्होंने अपने

शौर्य, उत्साह और त्याग का जो आदर्श उपस्थित किया है, वह आज भी हमें प्रेरणा देता है। झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ऐसी ही वीरांगना थीं। उन्होंने अल्प वय में ही जिस वीरता का प्रदर्शन किया, वह हमारे इतिहास की अमूल्य निधि है।

2. भारत की ज़मीन बहादुरी की भूमि है। यहाँ बुराई और अत्याचार का सामना किया गया। यह समय आने पर बहुत से बहादुरों ने किया। उन्होंने अपनी बहादुरी दिखाई अपने जोश और परित्याग का अच्छा रूप हमें दिया। उससे हम में भी खूब उत्साह पैदा हो गया। लक्ष्मीबाई नामक रानी जो झाँसी की थी, उसने छोटी उमर में ही जो वीरता दिखा दी उसे आज भी भारत का बहुमूल्य खज़ाना कह सकते हैं।

ऊपर लिखे दोनों अनुच्छेदों में वर्णित विषय, विचारक्रम, शब्दों के चुनाव, वाक्यों की रचना तथा भाषा-शैली पर ध्यान दीजिए। निश्चित रूप से आपको पहला अनुच्छेद पसंद आया होगा। प्रत्येक अनुच्छेद के लिए यहाँ एक-एक पंक्ति लिखिए।

....

....

ऊपर के दोनों अनुच्छेद झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई से संबंधित हैं। इनमें यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि विषय या विचार एक होने पर भी भाषा के व्यवहार में भिन्नता के कारण ही उनके प्रभाव में अंतर आ गया है। जी, हाँ। यहाँ हम कहना चाहते हैं कि आप पहले अनुच्छेद के समान लिखना सीखें तब आप परीक्षा में अधिक अंक प्राप्त कर सकते हैं।

29.1 निबंध के गुण

अक्सर विद्यार्थी परीक्षा भवन में कुछ निबंध रट कर पहुँच जाते हैं। यदि उन गिने चुने निबंधों में से प्रश्न पत्र में कुछ आ गया तो बहुत अच्छे! वर्ना उनके हाथ-पैर फूल जाते हैं। कई विद्यार्थी तो इस प्रश्न को छोड़ कर ही चले जाते हैं। ऐसी स्थिति से बचने के लिए सबसे पहले अच्छे निबंध के गुणों को पहचानना बहुत आवश्यक है। उससे भी पहले आवश्यक है यह जानना कि निबंध क्यों लिखा जाता है।

निबंध लेखन

- लिखित आत्माभिव्यक्ति की शक्ति का विकास करता है, जिसे स्वतंत्र रचना-शक्ति या सृजन-शक्ति भी कहते हैं।
- भाषा के शुद्ध परिमार्जित और प्रभावशाली प्रयोग की क्षमता का विकास करता है।
- किसी दिए गए विषय पर स्पष्ट और क्रमबद्ध रूप में विचारों को लिपिबद्ध करने के कौशल का विकास करता है।
- विषय को एकसूत्रता में पिरोने का कौशल विकसित करता है।
- भाषा और शैली में निखार लाता है।

अब आइए, निबंध के बारे में कुछ और जानकारी हासिल करें–

निबंध शब्द 'नि+बंध' से बना है, जिसका अर्थ है–अच्छी तरह से बँधा हुआ। निबंध में व्यक्त किए गए भाव या विचार एक-दूसरे से शृंखलाबद्ध होते हैं। इसकी भाषा विषय के अनुकूल होती है। इसके माध्यम से नपे-तुले शब्दों में अधिक-से-अधिक बातें कही जाती हैं। निबंध की शक्ति है–अच्छी भाषा। भाषा के अच्छे प्रयोग द्वारा ही भावों, विचारों और अनुभवों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त किया जा सकता है।

अच्छे निबंध की विशेषताएँ हैं:

● **कसावट,** ● **प्रभावशाली भाषा,** ● **विषयानुकूलता**

इसे इस रेखाचित्र से भी समझा जा सकता है–

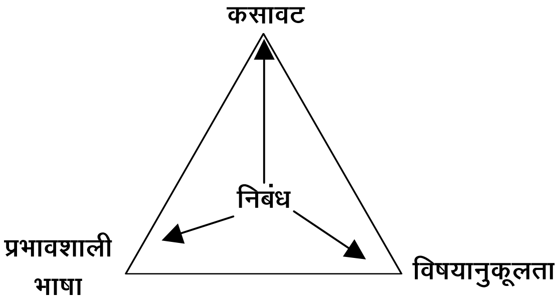

कसावट

आप पढ़ चुके हैं–निबंध का अर्थ ही है–भली-भाँति बँधा हुआ या कसा हुआ। निबंध में विचार और भाषा, दोनों में ही कसावट का गुण होना आवश्यक है। निबंध लिखते समय इस बात का ध्यान रखा जाता है कि उसमें व्यक्त किए गए विचार या भाव एक निश्चित क्रम में हों और आपस में जुड़े हुए हों। आप अपनी बात को तर्क पूर्ण ढंग से लिखें, जिसे पढ़ने के बाद पाठक किसी निष्कर्ष पर पहुँच सके। उदाहरण के लिए नीचे लिखे दो वाक्यों पर ध्यान दीजिए:

1. ज्ञानी मनुष्य सब प्राणियों को अपने अंदर और अपने आपको सब प्राणियों के अंदर देखता है।
2. ज्ञान वाला जीव हर प्रकार के जीवों को अपने आप के भीतर और अपने को सभी जीवों के बीच में पाता है।

उपर्युक्त वाक्यों में एक ही बात को कहने की कोशिश की गई है, किंतु कुछ शब्दों के हेर-फेर से दूसरे वाक्यों में कसावट का अभाव हो गया है। इसलिए वाक्य–1 को पढ़कर मन पर जैसा प्रभाव पड़ता है, वैसा वाक्य–2 को पढ़ने से नहीं होता।

प्रभावशाली भाषा

शब्द का वाक्य में तथा वाक्य का अनुच्छेद में उचित तथा क्रमबद्ध प्रयोग होने से भाषा में प्रभाव उत्पन्न होता है। अच्छे निबंध में शब्द, वाक्य तथा अनुच्छेद एक विशेष क्रम में गुँथे हुए होते हैं। उनका क्रम और परस्पर संबंध इस प्रकार का होता है कि

टिप्पणी

इसमें तनिक भी उलट-फेर करने से अस्वाभाविकता आ जाती है। यदि आपके लिखे हुए निबंध में भाषा की यह विशेषता है, तो उसे पढ़कर मन पर अच्छा प्रभाव अवश्य ही पड़ेगा। भाषा को प्रभावी बनाने के बारे में आप विस्तार से पहली पुस्तक की पाठ संख्या – **9 (अच्छा कैसे लिखें)** में पढ़ चुके हैं। फिर भी याद रहे **निबंध की भाषा सरल, स्पष्ट, व्याकरणिक दृष्टि से शुद्ध, प्रभावपूर्ण और गठी हुई होनी चाहिए।**

निबंध को लिखते समय यदि आप आवश्यकतानुसार उदाहरण, दृष्टांत और सूक्तियों का भी प्रयोग करते रहें, तो वह और अधिक रोचक तथा प्रभावशाली बन जाएगा। इस गुर को प्राप्त करने के लिए आप निम्नलिखित क्रियाएँ कीजिए – अधिक से अधिक पठन का अभ्यास, मुहावरों और लोकोक्तियों का उचित अवसरानुकूल सही प्रयोग, अच्छी बातों का स्मरण, देशाटन और सत्संग या बड़ों से वार्तालाप द्वारा प्राप्त किए गए अनुभव।

विषयानुकूलता

निबंध की भाषा विषय तथा विचारों के अनुरूप होनी चाहिए। उदाहरण के लिए सरल तथा सरस विषय पर लिखे गए निबंध की भाषा भी सरल, मुहावरेदार तथा आम बोलचाल के निकट होगी। किंतु गंभीर और साहित्यिक निबंध में तत्सम शब्दावली तथा साहित्यिक भाषा का प्रयोग आवश्यक हो जाता है। भाषा और शैली की दृष्टि से भाव-प्रधान निबंध भावात्मक होगा, तो विचारप्रधान निबंध में चिंतन-मनन और तर्क-वितर्क की अधिकता होगी। इन विशेषताओं के अतिरिक्त विचारों की मौलिकता और क्रमबद्धता भी अच्छे निबंधों की विशेषता होती है।

पाठगत प्रश्न 29.1

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि कथन सही है, तो उसके सामने (√) का निशान और गलत हो, तो (X) का निशान लगाइए :

   (क) निबंध में व्यक्त विचार और भाषा में कसावट होनी चाहिए। ( )

   (ख) सुगठित और सुसंबद्ध भाषा से निबंध में अस्वाभाविकता आ जाती है। ( )

   (ग) विचारों के अनुरूप भाषा होने से निबंध का प्रभाव बढ़ जाता है। ( )

   (घ) गंभीर और साहित्यिक निबंध की भाषा अधिक मुहावरेदार और आम बोलचाल की भाषा होगी। ( )

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर दीजिए–

2. निबंध लिखने का अभ्यास आवश्यक है क्योंकि यह–

   (क) दृष्टांतों और सूक्तियों का उचित प्रयोग करना सिखाता है।

   (ख) लेखन कौशल में निपुण बनाता है।

   (ग) विभिन्न विषयों पर अपने विचार व्यक्त करना सिखाता है।

   (घ) उपर्युक्त तीनों

29.2 निबंध के अंग

निबंध का आकार निश्चित नहीं किया जा सकता क्योंकि विषय के अनुसार वह सीमित भी हो सकता है और कुछ बड़ा भी। लेकिन इतना तो तय ही है कि अपने विचारों को सुसंगत और क्रमबद्ध रूप में लिखना चाहिए। आप अपनी बात कहाँ से शुरू करें, क्या-क्या लिखें और अंत कैसे करें, इसके लिए आवश्यक है कि निबंध लिखने से पहले उसकी रूपरेखा बना ली जाए। एक प्रकार से निबंध का पूरा खाका तैयार करना ही रूपरेखा कहलाता है। रूपरेखा बनाने से पूर्व हम यह जान लें कि निबंध के तीन अंग होते हैं:

प्रस्तावना या भूमिका, **मुख्य अंश** या विषयवस्तु का विवेचन, **उपसंहार** या अंत।

आइए, अब हम निबंध के अंगों को विस्तार से जानें:

प्रस्तावना

निबंध के प्रारंभ में उसकी प्रस्तावना या भूमिका लिखी जाती है। निबंध की प्रस्तावना रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होनी चाहिए। इसके द्वारा पाठक के मन में निबंध को विस्तारपूर्वक पढ़ने की उत्सुकता जाग उठती है। प्रस्तावना संक्षिप्त किंतु प्रभावशाली होनी चाहिए। निबंध का पहला अनुच्छेद ही उसकी प्रस्तावना या भूमिका होता है। जहाँ तक संभव हो थोड़े वाक्यों में ही निबंध के मुख्य विषय के बारे में संकेत कर देना चाहिए।

मुख्य अंश

प्रस्तावना के बाद निबंध का महत्त्वपूर्ण भाग मुख्य अंश होता है। यहाँ विषय-वस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है। निबंध से संबंधित सामग्री को चार-पाँच छोटे-बड़े अनुच्छेदों में इस प्रकार व्यक्त किया जाता है कि उसके सभी पहलुओं पर प्रकाश पड़ सके।

मुख्य घटना, भाव या विचार प्रस्तुत करते समय उसके क्रम का ध्यान रखना आवश्यक है साथ ही विचार तर्कसंगत हों और भाषा प्रभावशाली। विषय की पुष्टि के लिए जो भी उद्धरण, दृष्टांत या प्रमाण चुने जाएँ, वे सरल, आकर्षक तथा प्रभावोत्पादक हों। जहाँ तक संभव हो, वे पाठक के दैनिक जीवन के अनुभवों से संबंधित हों। प्रत्येक मुख्य विचार या बात के लिए एक अनुच्छेद बनाया जाए। सभी अनुच्छेद आपस में इस प्रकार संबद्ध हों कि विचारों की एक अटूट श्रृंखला बनी रहे। विचार एक-दूसरे से जुड़े रहें।

हम पढ़ चुके हैं कि निबंध लेखन में अच्छी भाषा-शैली का बड़ा महत्त्व है। यदि भाषा विषय के अनुरूप हो तथा शुद्ध, सरल, स्पष्ट, कसी हुई तथा प्रभावशाली हो तो पाठक निबंध को पढ़कर प्रभावित होगा। निबंध लेखन के समय सामान्यतः समास शैली का प्रयोग किया जाना चाहिए।

उपसंहार

निबंध का अंतिम भाग उपसंहार कहलाता है। यहाँ विषय-वस्तु के विवेचन के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए जाते हैं। कभी-कभी लेखक अपना विचार या प्रतिक्रिया भी व्यक्त करता है। निबंध का अंत ऐसा होना चाहिए कि उसका स्थायी प्रभाव पाठक पर पड़ सके। प्रस्तावना की भाँति उपसंहार भी एक ही अनुच्छेद का होता है। संक्षिप्त होने पर भी निबंध का यह अंश पाठक को प्रभावित करने की सबसे अधिक क्षमता रखता है। निबंध का मूल्यांकन करते समय परीक्षक उपसंहार को अवश्य पढ़ता है। यही वह कसौटी है जिस पर परख कर प्रायः परीक्षक अंक देने का निर्णय करता है। अतः उपसंहार संक्षिप्त, सुसंगठित, स्पष्ट और शुद्ध होना चाहिए। किसी लोकोक्ति, सूक्ति अथवा अभीष्ट सामग्री के समावेश से इसका अंत करें तो प्रभावी रहता है।

क्रियाकलाप

अभी कुछ ही समय पूर्व आपने 'कुटज' नामक निबंध पढ़ा। उस निबंध की प्रस्तावना, मुख्य अंश और उपसंहार का संक्षिप्त रूप एक-एक, दो-दो वाक्य में यहाँ लिखिए–

प्रस्तावना ....

....

मुख्य अंश..

....

उपसंहार..

....

पाठगत प्रश्न 29.2

1. निम्नलिखित कथनों के रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

   (क) निबंध के प्रारंभ में भूमिका या ....लिखी जाती है।

   (ख) मुख्य अंश लिखते समय विषय-वस्तु का क्रमानुसार ....किया जाता है।

   (ग) निबंध की भाषा विषय के ....होनी चाहिए।

   (घ) ....में प्रायः निबंध का निष्कर्ष होता है।

29.3 निबंध की रूपरेखा

निबंध की रूपरेखा प्रायः दो प्रकार से बनाई जा सकती है–विस्तृत तथा संक्षिप्त। यदि रूपरेखा में प्रत्येक बिंदु के साथ-साथ महत्त्वपूर्ण तथ्य, घटना, विचार तथा उद्धरण आदि

लिखते हैं तो वह विस्तृत रूपरेखा कहलाती है। जहाँ केवल मुख्य बिंदुओं को ही लिख दिया जाए, उसे संक्षिप्त रूपरेखा कहते हैं। नीचे दिए गए उदाहरणों से यह बात आपको अधिक स्पष्ट हो जाएगी।

(क) विस्तृत रूपरेखाएँ

मान लीजिए हमें 'वायुयान' शीर्षक से एक निबंध लिखना है। इसकी रूपरेखा बनाने से पूर्व किसी पुस्तक या विशेषज्ञ से हमें यह जानकारी प्राप्त करनी होगी कि वायुयान का आविष्कार कब, कहाँ और कैसे हुआ? उसकी बनावट और कार्य प्रणाली की सामान्य जानकारी भी हमें अपने अनुभव तथा चिंतन से खोजनी होगी। आइए, 'वायुयान' शीर्षक निबंध की एक विस्तृत रूपरेखा बनाएँ, यह एक वर्णनात्मक निबंध है।

वायुयान (वर्णनात्मक निबंध)

प्रस्तावना

पक्षियों को देखकर मनुष्य की उड़ने की कल्पना, परियों की कहानी, उड़नखटोला, पुष्पक विमान आदि की कल्पना से इस भावना को बल मिलता है।

मुख्य अंश

वायुयान का आविष्कार

18वीं शताब्दी में हाइड्रोजन के गुब्बारे की उड़ान का चलन प्रारंभ, जर्मनी में 1897 ई. में प्रथम वायुयान की कल्पना, अमेरिका के राबर्ट ब्रदर्स द्वारा वायुयान का आविष्कार।

वायुयान की बनावट,

इसका शरीर, आगे एल्यूमीनियम का इंजन, जहाज़ के दोनों ओर पंखे, प्रोपेलन द्वारा वायुयान में गति, पहिए की सहायता से उड़ना तथा उतारना संभव।

वायुयान से लाभ तथा हानि – स्वयं विचार कर लिखें।

उपसंहार

वायुयान का उपयोग बढ़ रहा है, विभिन्न देशों तथा संस्कृतियों में एकता तथा मेल-मिलाप बढ़ाने में वायुयान की महत्त्वपूर्ण भूमिका, 'वसुधैव कुटुंबकम्' का स्वप्न साकार।

इसी प्रकार यदि आपको 'समय के सदुपयोग' विषय पर एक विचारात्मक निबंध लिखना है, तो इससे संबंधित सामग्री के संकलन के लिए किसी पुस्तक या पत्रिका की तलाश में समय न गँवाकर अपने घर या पड़ोस के किसी अनुभवी व्यक्ति से वार्तालाप द्वारा कुछ नए बिंदु मिल सकें तो लेना अच्छा ही रहेगा। समय से संबंधित कुछ महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों के विचारबिंदु, सूक्ति, श्लोक आदि देना भी सार्थक सिद्ध होगा।

(ख) संक्षिप्त रूपरेखाएँ

संक्षिप्त रूपरेखाओं की आवश्यकता प्रायः तब पड़ती है, जब तुरंत निबंध लिखना हो, जैसे परीक्षा भवन में निबंध लगभग 30 या 40 मिनट में ही लिखना होता है। वहाँ पाठ्य सामग्री के चुनाव का समय नहीं होता। वहाँ अपने आप सामग्री का निर्धारण करते हुए निबंध लिखना होता है। ऐसे अवसर पर निबंध लेखन से पूर्व संक्षिप्त रूपरेखा बना लेना अच्छा रहता है। वैसे कुछ लोग बिना रूपरेखा के भी निबंध लिखना प्रारंभ कर देते हैं। आपको यदि जल्दी में भी निबंध लिखना हो, तो भी कम-से-कम उसकी संक्षिप्त रूपरेखा बना लेना अच्छा रहेगा। नीचे कुछ निबंधों की संक्षिप्त रूपरेखाएँ दी गई हैं इन्हें ध्यान से पढ़िए।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली के गुण-दोष *(विचारात्मक निबंध)*

प्रस्तावना	जीवन में शिक्षा का महत्त्व
मुख्य अंश	आधुनिक शिक्षा पद्धति, गुण-दोष, समाज के सभी वर्गों के लिए शिक्षा का समान अवसर।
	नवीन शिक्षा पद्धति, व्यक्तित्व के समन्वित विकास पर बल।
उपसंहार	आधुनिक शिक्षा पद्धति, व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक तथा चारित्रिक विकास में साधक।

उपर्युक्त रूपरेखा को पढ़ने के बाद आपको स्पष्ट हो गया होगा कि उनकी सहायता से निबंध लेखन सरल हो जाता है। लिखते समय हम किसी बिंदु को भूल न जाएँ, इसलिए उन्हें पहले से नोट कर लेना अच्छा रहता है। किंतु इन्हें संकेत मात्र समझना चाहिए। निबंध लिखते समय भाव या विचारों के प्रवाह में यदि कोई नए बिंदु ध्यान में आ जाएँ तो उन्हें लिख लेना चाहिए। साथ ही रूपरेखा में निर्धारित कोई बिंदु यदि अनावश्यक लगे, तो उसे छोड़ देने में भी संकोच नहीं करना चाहिए। आप जानते हैं कि प्रायः कुशल लेखक कागज़ पर रूपरेखा निर्माण किए बिना भी निबंध लिखना प्रारंभ कर देता है। रूपरेखा का निर्माण निबंध लेखन के समय उनके मस्तिष्क में स्वतः ही क्रमबद्ध होता रहता है। आप भी जब निबंध लेखन में अभ्यस्त हो जाएँगे, तो विस्तारपूर्वक रूपरेखा बनाने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी। परीक्षा भवन में निबंध का सवाल सबसे अंत में करना अच्छा रहता है। परंतु प्रक्रिया पहले से ही प्रारंभ कर देनी चाहिए, जैसे – निबंध के विषय का चुनाव। उसकी रूपरेखा उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ पर बना लेनी चाहिए। अन्य प्रश्नों के उत्तर देते समय यदि विषय से संबंधित बिंदु, कहावत, लोकोक्ति, श्लोक आदि याद आते जाएँ, उन्हें एक जगह पर लिखते जाना चाहिए। इसके लिए प्रश्न-पत्र की सहायता भी ली जा सकती है, अर्थात् प्रश्न-पत्र में दिए गए कवितांश तथा गद्यांशों में से उदाहरण स्वरूप अंश रेखांकित कर लेने चाहिए।

पाठगत प्रश्न 26.3

1. नीचे कुछ कथन दिए गए हैं। इन्हें ध्यान से पढ़िए। कथन सही हो तो उसके सामने (√) का निशान और गलत हो, तो (X) का निशान लगाइए:

टिप्पणी

(क) बिना रूपरेखा बनाए निबंध लिखा ही नहीं जा सकता ( )

(ख) निबंध की संक्षिप्त रूपरेखा में केवल मुख्य बिंदुओं का संकेत होता है। ( )

(ग) जल्दी में निबंध लिखना हो, तो उसकी विस्तृत रूपरेखा बनानी चाहिए। ( )

(घ) निबंध लिखते समय बनाई गई रूपरेखा का अक्षरशः पालन करना अनिवार्य है। ( )

(ङ) कुशल निबंध-लेखक कागज़ पर रूपरेखा बनाए बिना भी निबंध लिख सकता है। ( )

2. दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर पर सही (√) का चिह्न लगाइए–

निबंध की रूपरेखा लिख लेना आवश्यक है क्योंकि–

(क) हम निबंध के हर बिंदु को याद रखते हैं। ( )

(ख) निबंध का रूप स्पष्ट हो जाता है। ( )

(ग) सूक्तियों, उद्धरणों को प्रयोग कर सकते हैं। ( )

(घ) परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त होते हैं। ( )

29.4 विषय-सामग्री का चुनाव

निबंध के विषय से संबंधित यदि कोई पुस्तक, निबंध या लेख मिल सके तो आप अवश्य पढ़ें उसे पढ़कर विषयानुरूप सूचनाएँ, भावनाएँ तथा विचार आदि को समझने में सरलता होगी। उदाहरण के लिए ताजमहल अथवा सम्राट अशोक विषय पर निबंध लिखने के लिए किसी ऐतिहासिक पुस्तक अथवा लेख का पढ़ना लाभदायक होगा। महात्मा गांधी अथवा जवाहरलाल नेहरू पर निबंध लिखने के लिए किसी पुस्तक से उनकी जीवनी पढ़ना आवश्यक है। प्रदूषण अथवा स्वास्थ्य रक्षा पर निबंध लेखन तो बिना संबंधित साहित्य का अवलोकन किए लिखा ही नहीं जा सकता।

लिखित सामग्री पढ़ने के साथ ही निबंध की विषय-वस्तु समझने में विद्वान तथा अनुभवी व्यक्तियों से वार्तालाप तथा विचार-विनिमय भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए 'देशाटन से लाभ', 'आत्मनिर्भरता', 'वन महोत्सव', 'विश्व शांति', 'पर्वत प्रदेश की यात्रा', 'बादल की आत्मकथा', 'यदि मैं डॉक्टर बन जाऊँ' आदि विषय ऐसे हैं, जिनसे संबंधित सामग्री के चुनाव में पुस्तकों की अपेक्षा आपस में अथवा बड़ों से विषय पर चर्चा करना अधिक सहायक हो सकता है।

किसी व्यक्ति, वस्तु, घटना, स्थिति या अनुभूति संबंधी विषय पर निबंध लिखने में लेखक का अपना ज्ञान, अनुभव तथा निरीक्षण सबसे उपयोगी होता है। उदाहरण के लिए किसी त्योहार, दृश्य, यात्रा आदि का वर्णन करते समय लेखक केवल अपने

अनुभव तथा विचारों का ही सहारा ले सकता है। इसी प्रकार 'यदि मैं पक्षी होता', 'भिखारी की आत्मकथा', 'मेरी माँ', 'पुस्तक की आत्मकथा' जैसे भावात्मक तथा कल्पना-प्रधान निबंध आप अपने निरीक्षण, कल्पना, भावुकता तथा अनुभूति की सहायता से लिख सकते हैं। हाँ, विचार प्रधान तथा साहित्यिक निबंधों के लेखन में अन्य स्रोतों से भी सामग्री का संकलन कर लेना अच्छा रहता है। इस प्रकार संगृहीत महत्त्वपूर्ण विचारों को क्रमबद्ध रूप से संकलित किया जाना चाहिए तथा अनुच्छेदों में उन्हें व्यवस्थित ढंग से रखा जाना चाहिए। आवश्यकतानुसार उद्धरणों का चुनाव भी किया जाना चाहिए।

पाठगत प्रश्न 29.4

1. निम्नलिखित कथनों को ध्यान से पढ़िए। यदि कथन सही है तो उसके सामने (√) का निशान और गलत है, तो (X) का निशान लगाइए:

   (क) निबंध लिखने से पूर्व विषय सामग्री का संकलन आवश्यक नहीं। ( )

   (ख) विषय सामग्री का चुनाव अनेक तरीकों से किया जाता है। ( )

   (ग) भावात्मक निबंध के लेखन में लेखक का निरीक्षण तथा अनुभव उपयोगी होता है। ( )

   (घ) विचारात्मक निबंध कल्पना के सहारे लिखा जा सकता है। ( )

2. किसी ऐतिहासिक विषय पर निबंध लिखने की क्या तैयारी करनी चाहिए?

29.5 निबंध के प्रकार

किसी विषय पर निबंध लिखने से पहले हम अपने अनुभव के आधार पर यह निश्चित करते हैं कि विषय का विवेचन कैसे करें। एक निबंध में घटनाओं के वर्णन की प्रधानता हो सकती है, तो दूसरे में भावना या विचार की। किसी निबंध को लिखते समय हम कल्पना की उड़ान भरते हैं, तो किसी के लेखन में साहित्य का सहारा लेते हैं। कभी-कभी एक ही विषय पर हम अनेक प्रकार से निबंध लिख सकते हैं। उदाहरण के लिए ताजमहल से संबंधित सूचनाओं के आधार पर घटना या दृश्य का वर्णन करते हैं, तो यह वर्णनात्मक निबंध बन जाएगा। लेकिन यदि हम संस्कृति और सभ्यता के प्रतीक के रूप में ताजमहल के महत्त्व का विवेचन करते हैं, तो यह विचारात्मक निबंध कहलाएगा। यदि हमारे लेख में ताजमहल के कलात्मक सौंदर्य का भावना प्रधान विवेचन होता है, तो यह भावात्मक निबंध बन जाता है। किंतु यदि विभिन्न कवियों और साहित्यकारों के ताजमहल संबंधी दृष्टिकोण का आलोचनात्मक विवेचन करते हुए निबंध लिखा जाता है, तो यह साहित्यिक निबंध माना जाएगा। हाँ, यह भी संभव है कि एक ही निबंध में ये सभी विशेषताएँ समाहित कर दी जाएँ। अतः हम कह सकते हैं कि विषयवस्तु के विवेचन की दृष्टि से निबंध चार प्रकार के माने जा सकते हैं। ये हैं:

1. वर्णनात्मक निबंध
2. विचारात्मक निबंध
3. भावात्मक निबंध
4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

1. वर्णनात्मक निबंध

किसी त्योहार, जैसे – होली, दीवाली, ईद या क्रिसमस; यात्रा, दृश्य, स्थान या घटना, गणतंत्र दिवस की परेड, ताजमहल, ओलंपिक खेल आदि पर लिखे गए निबंध प्रायः **वर्णनात्मक निबंध** कहलाते हैं। इनमें वर्णन या विवरण की प्रधानता होती है। इनके लेखन में पहले विषय से संबंधित सूचना या विवरण का चुनाव किया जाता है। उदाहरण के लिए गणतंत्र दिवस की रूपरेखा इस प्रकार होगीः

गणतंत्र दिवस *(वर्णनात्मक निबंध)*

प्रस्तावना

किसी भी देश में उसके धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय त्योहारों का विशेष महत्त्व होता है। ये देश की संस्कृति, परंपरा, मेल-जोल, एकता तथा आत्मविश्वास के प्रतीक होते हैं। राष्ट्रीय त्योहार देशवासियों में देशभक्ति, स्वाभिमान, स्वतंत्रता तथा राष्ट्रीय भावना का विकास करते हैं। भारत का गणतंत्र दिवस ऐसा ही राष्ट्रीय त्योहार है। इस पर्व को हम हर वर्ष 26 जनवरी को बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

मुख्य अंश

गणतंत्र का अर्थ है सामुदायिक व्यवस्था। सन् 1950 ई में 26 जनवरी को ही भारत का संविधान लागू किया गया। इसी दिन भारत को सर्वप्रथम प्रभुता संपन्न, लोकतंत्रात्मक गणराज्य घोषित किया गया। यही दिन था जब डॉ. राजेंद्र प्रसाद भारत के प्रथम राष्ट्रपति बने। 26 जनवरी को ही यह सौभाग्य क्यों प्राप्त हुआ? इसके कुछ ऐतिहासिक कारण हैं। लाहौर में रावी नदी के तट पर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ, जिसके सभापति पं. जवाहरलाल नेहरू थे। उन्होंने इसी दिन पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करने की घोषणा की। अगले वर्ष सन् 1930 में 26 जनवरी को ही तिरंगा झंडा फहराकर पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने की प्रतिज्ञा दोहराई गई। स्वतंत्रता प्राप्ति तक यह दिन इसी रूप में बार-बार मनाया जाता रहा। यही कारण है कि स्वतंत्र भारत के संविधान को लागू करने के लिए इसी दिन को चुना गया। इसी दिन को हम गणतंत्र दिवस कहते हैं।

प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को भारत की राजधानी दिल्ली, राज्य के मुख्यालय, जिला, तहसील, सरकारी और गैर सरकारी संस्थान तथा शिक्षा संस्थाओं में गणतंत्र दिवस का पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है। चारों ओर हर्ष और उल्लास का वातावरण रहता है। दिल्ली में इंडिया गेट पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करने के पश्चात् राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है। राजपथ पर एक विशाल परेड का आयोजन होता है,

जिसे देखने के लिए देश-भर से लाखों लोग आते हैं ये लोग राजपथ तथा इंडिया गेट से लाल किले तक जाने वाली सड़क के दोनों ओर परेड देखने के लिए एकत्र हो जाते हैं। प्रातः नौ बजे राष्ट्रपति के आगमन के पश्चात् परेड शुरू होती है। सेना के तीनों अंगों—जल, थल तथा वायुसेना की टुकड़ियाँ मार्च करती हुई राष्ट्रपति को सलामी देती हैं। इनके पीछे पुलिस, एन. सी. सी. कैडेट तथा स्कूली बच्चों की टुकड़ियाँ होती हैं। अंत में अनेक राज्यों की सांस्कृतिक झाँकियाँ निकलती हैं। इसके साथ ही लोक नर्तकों के दल अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए राजपथ पर आते हैं। वायु सेना के करतब के साथ गणतंत्र दिवस की परेड समाप्त होती है।

सायंकाल में राष्ट्रपति भवन, संसद भवन तथा अन्य सरकारी तथा गैर सरकारी भवनों पर रोशनी की जाती है। रात में कवि-सम्मेलन, मुशायरा तथा अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। राज्य की सभी राजधानियों, नगर, कस्बों तथा विद्यालयों में भी 26 जनवरी को इसी प्रकार के जलूस निकाले जाते हैं। राष्ट्र-ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रगान होता है। खेल-कूद की प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। रात को रोशनी की जाती है तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं।

उपसंहार

गणतंत्र दिवस पर हर भारतवासी आनंद तथा उल्लास से भर जाता है। यह दिन हमारे लिए प्रेरणादायक भी होता है। हम उन अमर शहीदों को श्रद्धा से नमन करते हैं, जिन्होंने देश को आजादी दिलाने के लिए अपना तन-मन-धन, सब कुछ अर्पित कर दिया। उनका बलिदान हमें प्रेरणा देता है कि अपने देश की खुशहाली के लिए हम ईमानदारी और कर्त्तव्यनिष्ठा के साथ देश की प्रगति में अपना योगदान दें। हम देश की एकता तथा अखंडता की रक्षा के लिए हर प्रकार का त्याग तथा बलिदान करने का व्रत भी लेते हैं।

2. विचारात्मक निबंध

विचारात्मक निबंध के अंतर्गत साहस, उत्साह, श्रद्धा, घृणा जैसे मनोवैज्ञानिक; अछूतोद्धार, विधवा-विवाह जैसे सामाजिक; राष्ट्रीय एकता, विश्वबंधुत्व जैसे राजनीतिक तथा ईश्वर, आत्मा जैसे दार्शनिक विषय आते हैं। विचार या चिंतन की प्रधानता होने के कारण इन्हें **विचारात्मक निबंध** कहते हैं।

इन निबंधों में स्थिति या समस्या का सूक्ष्म विश्लेषण किया जाता है। विषय के विभिन्न पक्षों पर चिंतन-मनन करते हुए उनकी समालोचना या गुण-दोषों का विवेचन किया जाता है। इसी प्रकार गहन विचार और चिंतन-मनन से जुड़े आपने अपनी पुस्तकों में 'कुटज' और 'क्रोध' नामक विचारात्मक निबंध अवश्य पढ़े होंगे।

विचारात्मक निबंधों में किसी एक समस्या को उठाकर उनके विभिन्न पक्षों पर विचार किया जाता है। समस्या के पक्ष-विपक्ष पर तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। विभिन्न उदाहरणों द्वारा अपने विचार की पुष्टि की जाती है। तथ्यों का विवेचन करते समय पाठक को ध्यान में रखकर चित्र, ग्राफ या आरेख आदि का उपयोग किया जाता है। इन निबंधों की शैली गंभीर होती है। उदाहरण स्वरूप आपके लिए 'भारत में जनसंख्या वृद्धि की समस्या' नामक समस्यात्मक निबंध की विस्तृत रूपरेखा दी जा रही है।

भारत में जनसंख्या वृद्धि – एक समस्या

प्रस्तावना

किसी देश में बसने वाले नागरिक उस देश की जनसंख्या होते हैं। भारत देश की जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ रही है। विश्व में सबसे अधिक लोग चीन में रहते हैं उसके बाद भारत का दूसरा स्थान है। किसी भी देश की जनसंख्या परिवर्तित होती रहती है। अनुकूल परिस्थितियों में यह बढ़ती है वहीं किसी बीमारी या आपदाकालीन स्थितियों में अधिक मृत्यु होने के कारण यह घट जाती है। इंदिरा गांधी ने भी जनसंख्या वृद्धि की ओर विचार किया और कहा कि ''हमने बहुत प्रगति की है, परंतु विकास की उपलब्धियाँ को तीव्र जनसंख्या वृद्धि ने नगण्य बना दिया है।'' यदि एक वर्ष में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या यानी जन्मदर में से मरने वालों की संख्या यानी मृत्युदर को घटा दें तो वही जनसंख्या वृद्धि का स्वरूप है।

भारत में प्रति मिनट 52 बच्चे पैदा होते हैं। भारत के लिए यह समस्या विकराल रूप धारण करती जा रही है। सन् 2000 तक भारत की कुल आबादी बढ़कर एक अरब हो गई थी। आज उससे भी कहीं अधिक हो चुकी है।

मुख्य अंश

जनसंख्या वृद्धि के कारण

हमारे देश में जनसंख्या वृद्धि के अनेक कारण हैं, जैसे–चिकित्सा सुविधाओं का योगदान, तरह-तरह की दवाइयों, चिकित्सा पद्धतियों और वैज्ञानिक उपकरणों की खोज के कारण मृत्युदर पर तो अवश्य नियंत्रण कर लिया किंतु जन्मदर पर नियंत्रण पा सकने में असमर्थ रहे, जिसके कारण जनसंख्या वृद्धि होती जा रही है।

अशिक्षा तथा अंधविश्वास

भारत विकसित राष्ट्र होने की ओर तेज़ी से बढ़ रहा है लेकिन अभी भी जनता का बहुत बड़ा हिस्सा गाँवों में रहता है जहाँ गरीबी, अशिक्षा और अंधविश्वास का बोलबाला है। अशिक्षा के कारण लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी साफ़ दिखाई देती है। इसलिए वे इस बात को कोई महत्त्व ही नहीं देते कि अधिक बच्चे होने से क्या-क्या समस्याएँ हो सकती हैं। अशिक्षा के कारण उन्हें जनसंख्या वृद्धि रोकने के कारण की जानकारी कम होती है। यदि उन्हें कुछ पता चल भी जाता है तो अंधविश्वास के कारण वे इन उपायों को प्रयोग में लाने से डरते हैं।

यद्यपि सरकार ने विवाह के लिए कानून बना दिया है कि लड़की 18 वर्ष, लड़का 21 वर्ष का हो तभी विवाह करें, उससे पूर्व नहीं। किंतु बहुत से सामाजिक वर्ग अभी भी इन नियमों को नहीं मानते। इस कारण से समस्याएँ बढ़ती जाती हैं।

समाज में ऐसी धारणा है कि लड़का ही माँ-बाप के बुढ़ापे का सहारा है। यदि लड़का नहीं हुआ तो खानदान का नाम डूब जाएगा, अतः लड़के की प्रतीक्षा में लड़कियाँ पैदा होती जाती हैं।

- बाल विवाह या कम उम्र में विवाह
- लड़का, लड़की में अंतर
- भूमि तथा आवास की समस्या
- संसाधनों, पर्यावरण पर कुप्रभाव
- बेरोजगारी तथा अपराधीकरण की समस्या

टिप्पणी

जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न समस्याएँ

अधिक लोगों को अधिक ज़मीन की आवश्यकता पड़ती है। भूमि का क्षेत्रफल निश्चित है और जनसंख्या अनिश्चित गति से बढ़ती जा रही है। इसके कारण जहाँ कृषि-योग्य भूमि छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट जाती है और उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ता है वहीं बहुत से लोगों को रहने के लिए मकान नहीं मिल पाते। यदि मिल भी जाते हैं तो उनमें इतने लोग रहते हैं कि अनेक समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। साथ ही बड़ी संख्या में लोगों को हर मौसम में फुटपाथ या सड़क के किनारे सोना पड़ता है।

बढ़ती जनसंख्या के लिए मूलभूत सुविधाएँ और अन्य सुविधाएँ चाहिए, जिन्हें उपलब्ध कराने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का दोहन किया जा रहा है। जंगल काटे जा रहे हैं, पानी की समस्या उत्पन्न हो रही है। इसी प्रकार के अन्य प्राकृतिक संसाधनों की कमी हो रही है जिससे पर्यावरण असंतुलित हो रहा है, जो अंततः मानव के लिए विनाशकारी सिद्ध होगा। बढ़ती जनसंख्या के कारण अनेक प्रकार का प्रदूषण भी बढ़ता जाता है।

रोजगार के सीमित क्षेत्रों के चलते इतनी बड़ी जनसंख्या के लिए काम उपलब्ध करवाना लगातार कठिन होता जा रहा है। इसका परिणाम यह होता है कि जनसंख्या का बड़ा हिस्सा अपराध-कर्म की ओर उन्मुख होता है।

भारत की बढ़ती जनसंख्या 1901 से 1991 तक : एक द ष्टि

जनगणना का वर्ष	कुल जनसंख्या करोड़ में	प्रति 1000 की जनसंख्या में जन्मदर	प्रति 1000 की जनसंख्या में म त्युदर	ग्रामीण जनसंख्या	शहरी जनसंख्या
1901	23.84	–	–	89.2	10.8
1911	25.21	49.2	42.6	29.7	10.3
1921	25.21	48.1	47.2	88.8	11.2
1931	27.09	46.4	36.2	88.0	12.0
1941	31.87	45.9	37.2	86.0	13.9
1951	36.11	39.9	27.4	82.7	17.3
1961	43.92	41.7	23.8	82.0	18.0
1971	54.82	41.2	19.0	80.10	19.9
1981	68.52	37.2	15.0	76.7	23.3
1991	84.62	29.0	10.0	74.3	25.7
2001	102.87	-	-	74.24	28.61

उपसंहार

भारत में जनसंख्या बढ़ने से प्राकृतिक संसाधनों की कमी होती जा रही है, अनेकानेक समस्याएँ बढ़ती चली जा रही हैं। यदि यही बढ़ते नागरिक कड़ी मेहनत और लगन के साथ देश की प्रगति में अपना हाथ बटाएँ तब क्या हम अपने देश भारत के लिए सफलता की नई राह नहीं खोल सकते! सर्वाधिक जनसंख्या वाले देश चीन ने विश्वपटल पर छा

कर एक उदाहरण पहले ही प्रस्तुत कर दिया है। अतः भारत भी सभी को पीछे छोड़ उन्नति के पथ पर अग्रसर हो सकता है।

3. भावात्मक निबंध

भावना प्रधान विषयों पर लिखे गए निबंध **भावात्मक निबंध** कहलाते हैं, जैसे– वसंतोत्सव, चाँदनी रात, बुढ़ापा, बरसात का पहला दिन, मेरे सपनों का भारत आदि। इसमें कल्पनात्मक निबंध भी आते हैं। कल्पनात्मक निबंध के उदाहरण हैं–'यदि मैं प्रधानमंत्री होता', 'मेरी अभिलाषा', 'नदी की आत्मकथा' आदि।

इस प्रकार के निबंधों में चिंतन की प्रधानता न होकर भावना की प्रधानता होती है। यहाँ लेखक का व्यक्तित्व भी झलकता है। भावात्मक निबंध पढ़ते समय पाठक को कविता पढ़ने जैसा आनंद आता है। इन निबंधों की भाषा कोमल शब्दों से युक्त सरस तथा काव्यात्मक होती है। कल्पनात्मक निबंध में लेखक अपनी सूझ-बूझ तथा कल्पना को मूर्त रूप देने के लिए विषय के अनुसार आलंकारिक भाषा का प्रयोग करता है। उदाहरण के लिए भावात्मक निबंध का यह नमूना देखते हैं।

फूल की आत्मकथा (भावात्मक निबंध)

मेरा जन्म एक मनोहर उद्यान में हुआ। कली के रूप में मेरा बचपन डाली की गोद में हँसते-खेलते बीता। पवन मुझे झूला झुलाती थी और चिड़िया गीत गाकर लोरी सुनाती थी। कभी-कभी तेज़ हवा मुझे झकझोर भी देती थी, काँटे मुझे आघात पहुँचाते, किंतु मैं कभी भी भयभीत नहीं हुआ। हँसते-हँसते इन कठिनाइयों का सामना करता। सदा प्रसन्न रहता। इसीलिए लोग मुझे सुमन भी कहा करते हैं।

प्रातः काल ओस के जलकण मेरा मुँह धोते और सूर्य की कोमल किरणों के स्पर्श से मैं खिलखिलाने लगता। धीरे-धीरे मैं बड़ा होने लगा। अब तितलियाँ मेरे चारों ओर मँडराने लगीं। मधु-मक्खियाँ मेरी सुगंध से खिंची आतीं और मैं उन्हें मधुपान कराता। मैं जब खिलखिलाकर हँसता, तो चारों ओर खुशी की लहरें दौड़ जातीं। लोग मुझे देखते, तो देखते ही रह जाते। उनकी प्रसन्नता को देख मैं भी आनंदित होता। हँसना ही मेरा काम था। उदासी और निराशा से तो मेरा दूर-दूर का भी नाता न था।

बगिया में मेरे बहुत से दोस्त थे जूही, चंपा, चमेली, मोतिया, रातरानी, गेंदा, गुलाब आदि। हम सब एक साथ झूला झूलते, हँसते, गाते और खुशी मनाते। प्रकृति के सभी सुखों को मिल-जुलकर भोगते। आँधी, तूफान, बारिश और ओले का भी एक-साथ एक जुट होकर सामना करते। अगर दुर्भाग्य से हमारा कोई साथी डाल से टूट कर गिर जाता, तो हम सभी दुखी हो जाते। उसके वियोग में हमारे आँसू थमते ही न थे। प्रातःकाल की समीर हमारे आँसू पोंछती। चिड़ियों का संगीत हमें दिलासा देता। इस प्रकार दुख में भी मुस्कराते रहने की प्रेरणा हमें मिली। हम सभी मित्र अपने परिवार सहित सुख-दुख का आनंद लेते हुए अपने दिन प्रसन्नतापूर्वक बिताते रहे।

जीवन के अंतिम क्षणों में मैं सोचने लगा कि इस क्षण-भंगुर संसार में कुछ भी तो स्थायी नहीं। फिर भला लोग सुख में गर्व और दुख में चिंता क्यों करते हैं? हाँ, यह सोचकर कष्ट अवश्य हुआ कि मुझ जैसा जीव जिसने सदा दूसरों को सुख और

आनंद ही प्रदान किया, बदले में उसे क्या मिला? दूसरों के लिए अपना तन-मन-धन सब कुछ समर्पित कर देने वाले को अंत में क्या सुख शांति से मरने का भी अधिकार नहीं, संसार इतना निष्ठुर क्यों है? उसमें प्रेम, दया और करुणा की भावना क्यों नहीं जागती? वह त्याग के मूल्य को क्यों नहीं समझता? मेरी अंतिम इच्छा यही है कि आने वाली पीढ़ियाँ मेरे इन प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर देकर मुझे कृतार्थ करें।

4. साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध

किसी साहित्यकार, साहित्यिक विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति पर लिखा गया निबंध **साहित्यिक या आलोचनात्मक निबंध** कहलाता है, जैसे – मुंशी प्रेमचंद, तुलसीदास, आधुनिक हिंदी कविता, छायावाद, हिंदी साहित्य का स्वर्ण युग आदि। इसमें ललित निबंध भी आते हैं। इनकी भाषा काव्यात्मक और रसात्मक होती है। इन्हें पढ़ते समय कविता जैसा आनंद आता है आपने दूसरी पुस्तक में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का 'कुटज' निबंध पढ़ा है यह एक प्रकार का ललित निबंध हैं आजकल नए निबंधकार ललित निबंध खूब लिख रहे हैं। आलोचनात्मक निबंध लिखने से पहले आवश्यक है कि विषय से संबंधित सामग्री का विस्तृत अध्ययन कर लिया जाए। उदाहरण के लिए किसी साहित्यकार के विषय में लिखने से पूर्व उसकी जीवनी तथा रचनाओं के साथ ही उस पर लिखी हुई समालोचना भी पढ़ लेनी चाहिए। यह सामग्री सुनिश्चित रूप से अधिक मात्रा में इधर-उधर बिखरी हुई होगी। निबंध लिखते समय आवश्यकतानुसार लेखक की रचनाओं से उद्धरण लेकर अपने विचार या दृष्टिकोण की पुष्टि भी की जानी चाहिए। साहित्यिक निबंध के लेखन में विषय के अनुरूप भाषा प्रवाह तथा शैली का प्रयोग बहुत ज़रूरी है। ऐसे निबंध शोध-पत्र के रूप में अधिक लिखे जाते हैं। अतः उच्च कक्षाओं में इनकी आवश्यकता होती है। उदाहरण के रूप में आपके लिए समाज सुधारक कवि 'कबीर की काव्य साधना' नामक आलोचनात्मक निबंध की विस्तृत रूपरेखा दी जा रही है।

कबीर की काव्य साधना

प्रस्तावना

काल की कठोर आवश्यकताओं से महान आत्माओं का जन्म, मुसलमानों की कट्टरता और हिंदुओं की रूढ़िवादिता को चुनौती देने वाला कवि कबीर। धर्म, समाज, विश्वास और परंपरा की कुरीतियों को समाप्त करने का सफल प्रयास।

मुख्य अंश

लगभग 500 वर्ष पूर्व जन्मे कबीर अनपढ़ (मसि कागद छुयो नहीं) होने पर भी निडर और साहसी, स्वभाव से फक्कड़ और मस्त (कबिरा खड़ा बाजार में ....), धार्मिक तथा सांप्रदायिक संकीर्णताओं से मुक्त (जो कबिरा काशी मरे, रामहिं कौन निहोरा) उनके व्यक्तित्व में भक्त, कवि और समाज सुधारक की सुंदर त्रिवेणी विद्यमान थी।

कबीर ने हिंदू-मुसलमान दोनों को सावधान किया (अरे इन दोउन राह न पाई) मुल्ला और पंडित की आचरणहीनता पर प्रहार, धर्मग्रंथ की आड़ में छल-कपट करने वालों से सभी को सावधान किया (पोथी पढ़ि-पढ़ि जग मुआ..........)।

कबीर का ईश्वर सर्वव्यापक, मूर्ति पूजा का विरोध (पाहन पूजे हरि मिले....), कबीर के रहस्यवाद में सूफीमत का आभास (हरि मोर पीउ, मैं राम की बहुरिया।)

कबीर की कविता में भाव और कला पक्ष दोनों ही श्रेष्ठ। कविता में बुद्धितत्त्व की प्रधानता; यथार्थ जीवन का प्रतीकात्मक चित्रण (पानी केरा बुदबुदा अस मानुस की जात.....); अलंकार तथा कल्पना तत्त्व से युक्त काव्य; भाषा सधुक्कड़ी तथा सामान्य बोलचाल की।

उपसंहार

स्वाभाविकता कबीर की कविता का प्राण, उनकी वाणी हृदय को छूने वाली और बाह्य-आडंबर को तीखे व्यंग्य से ध्वस्त करने वाली। कर्मकांड का खंडन कर पवित्र मन से ईश्वर में विश्वास। कबीर के लिए 'ढाई आखर प्रेम का.........' ही सर्वश्रेष्ठ।

पाठगत प्रश्न 29.5

1. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति केवल एक शब्द लिखकर कीजिए।

   (क) ....निबंध में किसी व्यक्ति, स्थान या घटना के विवरण का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है।

   (ख) चिंतन-प्रधान निबंध को ....निबंध कहते हैं।

   (ग) भावात्मक निबंध प्राकृतिक ....तथा कोमल विषय पर लिखे जाते हैं।

   (घ) आलोचनात्मक निबंध लिखते समय विचार और घटनाओं के वर्णन के साथ ही..........................के प्रवाह को बनाए रखना भी आवश्यक है।

2. निबंध लेखन के समय तालिका, पाई चार्ट, ग्राफ आदि का प्रयोग क्यों किया जाता है? किस प्रकार के निबंधों के लिए इनका उपयोग उपयुक्त माना गया है।

29.6 आपने क्या सीखा

1. निबंध को लेखन का एक ऐसा रूप कहा जा सकता है, जिसमें भावों या विचारों को क्रमानुसार और शृंखलाबद्ध रूप से व्यक्त किया जाता है।
2. निबंध की भाषा विषय के अनुरूप रखी जाती है। उसमें कसावट तथा प्रभाव का होना आवश्यक है।
3. निबंध लेखन से पूर्व विभिन्न स्रोतों से सामग्री का चुनाव किया जाता है। संकलित सामग्री को विषय के अनुरूप एक खाके में रखना ही रूपरेखा कहलाती है। ये दो प्रकार की होती हैं–विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा।
4. निबंध के तीन अंग होते हैं–

   प्रस्तावना : संक्षिप्त, रोचक तथा विषय-वस्तु को स्पष्ट करने वाली होती है।

मुख्य अंश : में निबंध की विषयवस्तु का विस्तृत विवेचन किया जाता है।

उपसंहार : निबंध का अंत उपसंहार से होता है, जिसमें लेखक का निष्कर्ष या मंतव्य प्रकट होता है।

5. निबंध मूलतः चार प्रकार के होते हैं–
    - **वर्णनात्मक निबंध** वर्णन और विवरण से युक्त होता है।
    - **विचारात्मक निबंधों** के विषय मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, राजनीतिक अथवा दार्शनिक चिंतन से संबंधित होते हैं।
    - **भावात्मक निबंध** विभिन्न भावों पर लिखे जाते हैं, जैसे 'क्रोध, घृणा, श्रद्धा' आदि।
    - **साहित्यमक या आलोचनात्मक निबंध** में किसी साहित्यकार, विधा या साहित्यिक प्रवृत्ति का विवेचन होता है।
6. निबंध की भाषा-शैली विषय के अनुरूप परिवर्तित होती है, जैसे किसी भावात्मक निबंध की भाषा-शैली भावपूर्ण, आलंकारिक और सरल होगी जबकि किसी वैज्ञानिक निबंध की भाषा तथ्य-परक और सपाट होगी।

29.7 योग्यता विस्तार

1. विभिन्न विषयों पर लिखे गए निबंधों की अच्छी पुस्तकें लेकर उन्हें पढ़िए तथा निम्नलिखित क्रियाएँ कीजिए:
    (क) निबंध में बताए गए गुणों की दृष्टि से अच्छे निबंधों की सूची बनाइए।
    (ख) प्रत्येक निबंध का प्रभाव (वर्णनात्मक, विचारात्मक, भावात्मक आदि) निश्चित कीजिए।
    (ग) प्रस्तावना, मुख्य अंश तथा उपसंहार की दृष्टि से अच्छे निबंधों को छाँटिए।
    (घ) पढ़े हुए निबंध लेकर उनकी विस्तृत और संक्षिप्त रूपरेखा सुनिश्चित कीजिए।
2. पाठ्य पुस्तक में निर्धारित निबंधों को पढ़कर निम्नलिखित क्रिया-कलाप कीजिए:
    (क) प्रत्येक निबंध के प्रकार का निश्चय।
    (ख) भाव या विचार तथा भाषा-शैली की दृष्टि से प्रत्येक निबंध की समालोचना या गुण-दोष का विवेचन।
3. विभिन्न प्रकार के निबंधों के लिए विषयों का चुनाव कीजिए तथा प्रत्येक प्रकार के कुछ निबंध स्वयं लिखिए।
4. साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, जैसे – कादंबिनी, हंस, साहित्य अमृत, अक्षरा, विकल्प आदि का अध्ययन कीजिए।
5. इंटरनेट पर निम्नलिखित वेब साइट खोलकर एक-एक हर प्रकार का निबंध पढ़िए: (अभिव्यक्ति कॉम abhivyakti.com)

29.8 पाठांत प्रश्न

1. अच्छे निबंध में कौन-कौन से गुण होने चाहिए?
2. निबंध के अंगों के नाम लिखिए तथा प्रत्येक का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।
3. निबंध कितने प्रकार के होते हैं? सोदाहरण परिचय दीजिए।
4. (क) निम्नलिखित विषयों की विस्तृत प्रस्तावना लिखिए:
   मेरा देश, मेरा प्रिय कवि, वसंत ऋतु

   (ख) निम्नलिखित की संक्षिप्त प्रस्तावना लिखिए:
   यदि मैं डॉक्टर होता, एक दिवस जेल में, दीपों का पर्व – दीपावली
5. निम्नलिखित रूपरेखा के अनुसार निबंध लिखिए:

(क) पुस्तकालय से लाभ

प्रस्तावना

पुस्तकालय की आवश्यकता – ज्ञान का जीवन में महत्त्व, ज्ञान प्राप्त करने के अनेक साधन–निरीक्षण, सत्संग, पर्यटन और पठन, पुस्तकें ज्ञान-प्राप्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन।

मुख्य अंश

पुस्तकालय के प्रकार – विद्यालय, महाविद्यालयों अथवा विश्वविद्यालयों के पुस्तकालय, सार्वजनिक पुस्तकालय, चलते-फिरते पुस्तकालय, निजी पुस्तकालय, उनसे पुस्तकें प्राप्त करने के भिन्न-भिन्न नियम।

पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग : बालक तथा युवाओं के लिए पुस्तकालय में ज्ञानदायक तथा सुरुचिपूर्ण पुस्तकों का क्रमानुसार संकलन, पुस्तकों का वितरण-सप्ताह, पक्ष या मास के लिए, पुस्तकों की उचित देखभाल, सही उपयोग तथा पढ़ लेने के बाद तुरंत वापसी आवश्यक।

उपसंहार

पुस्तकालय की पुस्तकों का वितरण सप्ताह, पक्ष या मास के लिए, पुस्तकों का पठन आवश्यक ज्ञानार्जन तथा मनोरंजन दोनों ही पुस्तकों से संभव, सामान्य व्यक्ति के लिए पुस्तकें खरीदना संभव नहीं, अतः अधिक सार्वजनिक पुस्तकालयों की व्यवस्था अनिवार्य।

(ख) प्रदूषण की समस्या

प्रस्तावना – प्रकृति की पवित्रता, विज्ञान द्वारा दूषित पर्यावरण

मुख्य अंश – औद्योगिक विकास तथा प्रदूषण, वन और जल पर दुष्प्रभाव।
जनसंख्या-वृद्धि से आवश्यकताओं में वृद्धि, प्रदूषण।
प्रदूषण की समस्या का समाधान, सफ़ाई तथा वृक्षारोपण।

उपसंहार – प्रदूषण की समस्या-आज की सभ्यता के लिए भयानक चुनौती: इस पर विजय प्राप्त करना अनिवार्य।

(ग) यदि मेरे पंख होते

- उड़ने की इच्छा स्वाभाविक– स्वतंत्रता की द्योतक।
- उड़कर इच्छित स्थान पर घूमना संभव।
- बिना किसी बंधन के प्रकृति के विभिन्न दृश्यों का आनंद लेना।
- बाढ़, भूकंप तथा बर्फ से घिरे लोगों की सहायता करता।
- पंख लगाकर लोक में भी अलौकिक बन जाता।

(घ) सुनामी में उजड़े गाँव की आत्मकथा

- सुनामी की ऊँची-ऊँची लहरों के थपेड़े कैसे बहा ले गए सब कुछ।
- चारों ओर पानी ही पानी, दिल दहलाने वाला दृश्य।
- मानवों के साहसिक कार्य।
- वर्तमान स्थिति–परिस्थितियों से जूझते लोग, सुनामी के दुष्प्रभाव।
- सरकारी और गैरसरकारी संस्थाओं का सहयोग।
- आशा की किरण।

6. नीचे दिए गए विषयों पर निबंध लिखिए:

   मेरा बचपन, वर्षा ऋतु, यदि मैं प्रधानमंत्री होता, सूरदास, आधुनिक हिंदी कविता, मादक पदार्थ – हमारे दुश्मन, जाता बचपन आती युवावस्था; बगीचे में एक दिन

29.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

29.1 1. (क) √ (ख) X (ग) √ (घ) X 2. (घ)

29.2 (क) प्रस्तावना (ख) विवेचन/वर्णन

(ग) अनुकूल/अनुसार/अनुरूप (घ) उपसंहार

29.3 1. (क) X (ख) √ (ग) X (घ) X (ङ) √ 2. (ख)

29.4 1. (क) X (ख) √ (ग) √ (घ) X

2. संबद्ध ऐतिहासिक व्यक्ति अथवा व्यक्ति की जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकें पढ़नी आवश्यक हैं।

29.5 1. (क) वर्णनात्मक (ख) विचारात्मक (ग) सौंदर्य (घ) भाषा

2. आँकड़ों और तथ्यों को स्पष्ट करने के लिए; विचारात्मक निबंधों के लिए।

301hi30

30
तालिका, आरेख निर्माण... आदि

आपने हिंदी तथा अन्य विषय–इतिहास, भूगोल, गृह विज्ञान, विज्ञान के पाठों या पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ते समय कुछ तालिका, आरेख आदि अवश्य देखे होंगे। यहाँ तक कि कभी-कभी विज्ञापनों, खेल संबंधी सूचनाओं आदि में भी इनका प्रयोग होता है। यह अध्ययन का आवश्यक अंग है। विषयों को अधिक स्पष्ट रूप से समझने और समझाने में इनका बहुत महत्त्व है। आइए, इसके बारे में यहाँ विस्तार से जानें।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- तालिका, आरेख आदि का महत्त्व बता सकेंगे;
- विवरण में दी गई सूचनाओं के आधार पर विभिन्न प्रकार की तालिका, आरेख पाई चार्ट, प्रवाह चार्ट, वृक्ष आरेख, मानचित्र, ग्राफ, दंड चित्र आदि का निर्माण कर सकेंगे;
- विविध प्रकार की प्रस्तुतियों को भाषाई कौशलों में परिवर्तित कर सकेंगे;
- विभिन्न प्रकार के प्रस्तुतीकरण से आवश्यक सूचनाएँ प्राप्त कर सकेंगे।

30.1 विभिन्न प्रकार के प्रस्तुतीकरण का महत्त्व

किसी विषय को ठीक से समझने-समझाने के लिए हम उपयुक्त शब्दों, चित्रों, संकेतों आदि का प्रयोग करते हैं। हमारी सदैव यही कोशिश होती है कि हम अपनी बात को किसी भी प्रकार के तरीके अपनाकर दूसरों तक पहुँचाएँ और हमारी सफलता सिर्फ इसी में है कि पढ़ने वाला दी गई बात को ठीक प्रकार से समझे और व्यक्त कर पाए। इसके लिए कभी-कभी केवल शब्दों से बात नहीं बनती उन्हें विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया जाता है तभी वे सरलता से एक दृष्टि में समझ में आते हैं और उनका प्रभाव हमारे मस्तिष्क पर लंबे समय तक बना रहता है। आप जानते हैं कि मानव का मन और मस्तिष्क हमेशा सरल से कठिन की ओर धीरे-धीरे बढ़ता है। सबसे पहले विद्यार्थी

को शब्द या अंक का ज्ञान चित्रों के माध्यम से ही दिया जाता है। हमारी सीखने की प्रक्रिया में प्रत्येक स्तर पर शब्दों के साथ-साथ दृश्य भी बहुत बड़ी भूमिका निभाते हैं। ज़रा विचार कीजिए यदि आपके सामने ढेर सारे आँकड़ों का विवरण अंकों में न देकर शब्दों में दिया जाए तो आपको कैसा लगेगा। निश्चित रूप से आप बौखला जाएँगे। मगर यदि उन्हें सुव्यवस्थित ढंग से कम शब्दों की सहायता लेकर आकर्षक और प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया जाए, जिससे आँकड़ों, सूचनाओं और विचारों को समझने में सुगमता हो तो आप उसे कभी नहीं भूलेंगे। यही इनकी सबसे बड़ी विशेषता है। इस पाठ में हम विभिन्न प्रकार के प्रस्तुतीकरण की ही चर्चा करेंगे।

30.2 तालिकाएँ

आप प्रतिदिन घर में लगा कलेंडर अवश्य देखते होंगे। यह एक प्रकार की तालिका ही है जिसमें दो आधार होते हैं। इसमें एक ओर दिनों के नाम होते हैं और दूसरी ओर दिन की संख्या या तारीख लिखी होती है। यह तालिका का सरलतम रूप है।

अब यदि आपसे कहा जाए कि आप बाज़ार जाएँ और एक दर्जन केले, दो किलो आलू, आधा किलो चीनी, एक चाय का डिब्बा (आधा किलो) और पाँच किलो आटा... लेकर आएँ। ऐसी स्थिति में निश्चित रूप से आप कहेंगे ठहरो, ठहरो! मैं कागज़-पेन लाती हूँ और एक सूची बना लेती हूँ! है न! देखिए ऐसे–

सामान	मात्रा
केले	1 दर्जन
आलू	2 किलो
चीनी	½ किलो
चाय	½ किलो
आटा	5 किलो
....	....

अभी आपने सरलतम तालिका के बारे में जानकारी प्राप्त की। तालिकाएँ विषयों और सूचनाओं के पक्षों का क्षेत्र बढ़ने के अनुरूप जटिल होती चली जाती हैं। किसी एक वयस्क स्त्री को जो दिन भर में सामान्य कार्य करती है उसके शरीर के लिए 440 ग्राम अनाज, 45 ग्राम दाल, 100 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जियाँ, 40 ग्राम अन्य सब्जियाँ, 50 ग्राम जड़ या तने वाले फल-सब्जियाँ, जैसे आलू, चुकंदर, मूली, गाजर आदि, 150 ग्राम दूध व दूध से बनी चीजें, 25 ग्राम तेल और घी और 20 ग्राम चीनी आवश्यक है।

इसी प्रकार अधिक कार्य करने वाले या कठिन श्रम करने वाले पुरुषों को 670 ग्राम अनाज, 60 ग्राम दालें, 40 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जियाँ, 80 ग्राम अन्य सब्जियाँ, 80 ग्राम जड़ या तनेदार सब्जियाँ या फल, 250 ग्राम दूध, 65 ग्राम तेल और घी तथा 55 ग्राम चीनी प्रतिदिन के आहार में लेनी आवश्यक है।

क्या आप इन सभी तथ्यों को एक तालिका के द्वारा बता सकते हैं? जी हाँ, ऊपर के दोनों—एक वयस्क महिला और पुरुष के भोजन की मात्रा को हम एक साथ एक ही तालिका में स्पष्ट कर सकते हैं। इसके साथ-साथ हम यह भी अलग-अलग स्पष्ट कर सकते हैं कि कम कार्य करने वाली स्त्री और पुरुष, सामान्य कार्य करने वाली स्त्री और पुरुष और अधिक श्रम करने वाली स्त्री तथा पुरुष को अपने शरीर की आवश्यकता के अनुसार भोज्य पदार्थों की कितनी-कितनी मात्रा लेनी आवश्यक है।

खाद्य पदार्थ (मात्रा ग्राम में)	वयस्क पुरुष			वयस्क स्त्री			बच्चे		लड़का	लड़की
	कार्य क्षमता			कार्य क्षमता						
	कम कार्य	सामान्य कार्य	भारी कार्य	कम कार्य	सामान्य कार्य	भारी कार्य	1-3 वर्ष	4-6 वर्ष	10-12 वर्ष	10-12 वर्ष
अनाज	460	520	670	410	440	575	175	270	420	380
दालें	40	50	60	40	45	50	35	35	45	45
हरी पत्तेदार सब्जियाँ	40	40	40	100	100	50	40	50	50	50
अन्य सब्जियाँ	60	70	80	40	40	100	20	30	50	50
जड़ें (कंद) और तनेदार सब्जियाँ	50	60	80	50	50	60	10	20	30	30
दूध	150	200	250	100	150	200	300	250	250	250
तेल और घी	40	45	65	20	25	40	15	25	40	35
चीनी	30	35	55	20	20	40	30	40	45	45

विभिन्न आयु वर्ग के लिए खाद्य तालिका (ग्राम में)

इसके अतिरिक्त उसी तालिका में आप एक से तीन वर्ष के बच्चों तथा चार से छह वर्ष के बच्चों के लिए आवश्यक मात्रा तथा दस-बारह वर्ष के लड़के तथा

लड़की की आवश्यक मात्रा भी दर्शा सकते हैं। आइए, उपर्युक्त सभी पक्षों को ध्यान में रखते हुए बनाई गई इस तालिका को ध्यानपूर्वक देखते हैं।

उपर्युक्त तालिका में व्यक्ति की प्रति दिन की खाद्य सामग्री की मात्रा का ग्राम में विवरण दर्शाया गया है। यह वर्गीकरण प्रत्येक व्यक्ति के शरीर की आवश्यकता के अनुरूप है। आप जानते ही होंगे कि विभिन्न खाद्य पदार्थों में विटामिन– ए, बी, सी, डी, ई, कार्बोहाइड्रेट, प्रोटीन, मिनरल तथा अन्य तत्त्व होते हैं जो शरीर के लिए आवश्यक हैं। इन तत्त्वों की उपलब्धता के अनुसार ही उपर्युक्त तालिका तैयार की गई है। उपर्युक्त तालिका से एक दृष्टि में ही हमें सभी जानकारियाँ प्राप्त हो जाती हैं।

पाठगत प्रश्न 30.1

दिए गए विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. तालिका, आरेख, पाई चार्ट आदि का उपयोग
   (क) मस्तिष्क पर अधिक समय तक प्रभाव बनाए रखने के लिए किया जाता है।
   (ख) अधिक-से-अधिक शब्दों के प्रयोग से बचने के लिए किया जाता है।
   (ग) एक दृष्टि में तथ्यों को समझने के लिए किया जाता है।
   (घ) उपर्युक्त सभी के लिए किया जाता है।
2. हमारे घर की दीवार पर लगा कलेंडर भी एक प्रकार का/की
   (क) चार्ट है।
   (ख) आरेख है।
   (ग) तालिका का सरलतम रूप है।
   (घ) आकर्षक चित्र है।
3. उपर्युक्त विभिन्न आयु वर्ग के लिए खाद्य तालिका देखकर बताइए कि सामान्य श्रम करने वाली लड़की को शरीर की आवश्यकता के अनुसार .... लेना ज़रूरी है।
   (क) 270 ग्राम दालें
   (ख) 45 ग्राम हरी पत्तेदार सब्जियाँ
   (ग) 250 ग्राम दूध
   (घ) 40 ग्राम चीनी
4. प्रतिदिन 300 ग्राम दूध .... के लिए आवश्यक है।
   (क) एक वयस्क पुरुष
   (ख) एक से तीन वर्ष के बच्चे
   (ग) एक लड़के
   (घ) एक सामान्य वयस्क नारी।

30.3 वृत्तीय चित्र

वृत्तीय चित्र अध्ययन को अधिक प्रभावी बनाने का एक और माध्यम है। इसमें अधिकतर लोग अपने शोध अथवा अध्ययन के परिणाम प्रदर्शित करते हैं। इस प्रकार के चित्र अन्य प्रकार की सूचनाएँ प्रदर्शित करने के काम में भी लाए जाते हैं– उदाहरण के लिए मान लीजिए किसी एक विद्यालय में 1000 विद्यार्थी हैं, जिसमें 600 विज्ञान पढ़ते हैं, 200 कला और 200 कॉमर्स, इसे आप वृत्तीय चित्र द्वारा जिसे पाई चार्ट भी कहते हैं, दिखा सकते हैं। गणित में पाई के लिए ' ' (पाई) निर्धारित है।

इस प्रकार के चित्रों को बनाने के लिए आँकड़ों को पहले प्रतिशत में बदलना होता है। एक पूरा गोला 100% को दर्शाता है।

प्रतिशत निकालने का सूत्र तो आपको पता ही होगा–

$$\text{प्रतिशत} = \frac{\text{संख्या जिसका प्रतिशत ज्ञात करना है}}{\text{कुल योग}} \times 100$$

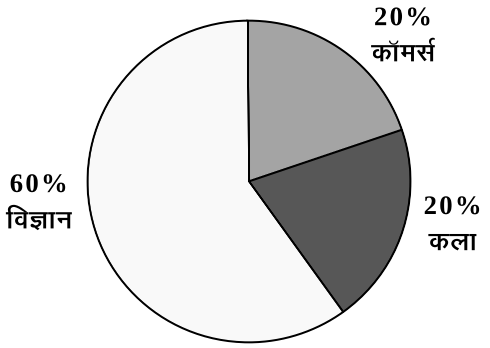

π

इन्हें हम अलग-अलग प्रकार के रंग भर कर भी स्पष्ट कर सकते हैं।

वृत्तीय आरेख में एक अन्य प्रकार का आरेख भी आता है, जिसे वैन आरेख या वैन डायग्राम भी कहते हैं। इसके द्वारा भी विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ प्रदर्शित की जाती हैं। उदाहरण के लिए आप कहना चाहते हैं कि केला, सेब, अनार और अंगूर सभी फल हैं। इस सूचना को आप निम्नलिखित वैन डायग्राम द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं–

अब आप निम्नलिखित वैन डायग्राम को ध्यानपूर्वक देखिए–

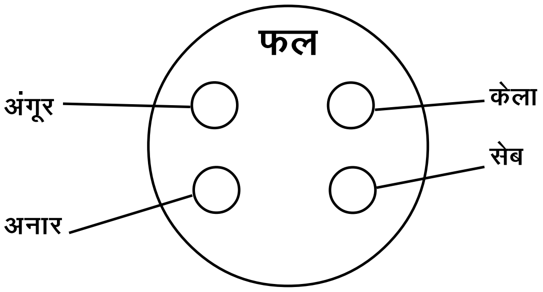

उपर्युक्त चित्र के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयास कीजिए–

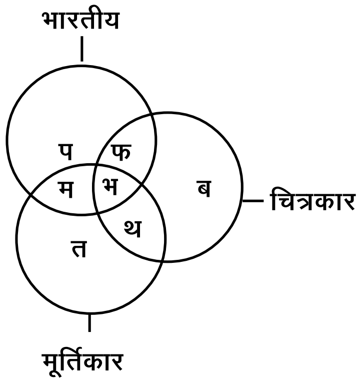

1. भारतीय जो चित्रकार हैं किंतु मूर्तिकार नहीं हैं।
2. चित्रकार जो न तो भारतीय हैं और न मूर्तिकार ही हैं।
3. चित्रकार तथा मूर्तिकार जो भारतीय नहीं हैं।
4. भारतीय जो मूर्तिकार हैं लेकिन चित्रकार नहीं हैं।
5. भारतीय जो चित्रकार हैं और साथ ही मूर्तिकार भी हैं।

हमें विश्वास है आपको चित्र द्वारा सभी बातें स्पष्ट हुई होंगी और आपने इनके सभी उत्तर देने का प्रयास किया होगा। यदि आप नहीं भी दे पाए हैं तो निराश न हों, हम आपकी सहायता के लिए मौजूद हैं।

उपर्युक्त वृत्तीय चित्र में तीन वृत्त दिए गए हैं जो क्रमशः भारतीय, चित्रकार और मूर्तिकार को दर्शाते हैं। साथ ही ये तीनों वृत्त कई स्थान पर एक दूसरे को काटते हैं। जिसका परिणाम होता है कि कई विशिष्ट आकृतियाँ बन कर तैयार हो जाती हैं जो व्यक्तियों के एक विशेष वर्ग को निरूपित करती हैं, इन्हें हमने यहाँ वर्णमाला के विविध अक्षरों से इंगित किया है। यहाँ एक विशेष क्षेत्र, विशेष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए पहले का उत्तर 'फ' होगा क्योंकि यह क्षेत्र केवल भारतीय तथा चित्रकार अंकित वृत्तों का सम्मिलित क्षेत्र दर्शाता है। इसी प्रकार दूसरे का उत्तर 'ब' है। यहाँ चित्रकार अंकित वृत्त का केवल वह भाग आना चाहिए जो किसी और वृत्त से घिरा हुआ नहीं है।

तीसरे का उत्तर 'थ' है, यह वह क्षेत्र है जो केवल चित्रकार और मूर्तिकार अंकित वृत्तों का सम्मिलित क्षेत्र दर्शाता है। चौथे का सही उत्तर है– 'म' यह केवल भारतीय मूर्तिकारों को प्रदर्शित करता है। अंतिम में वह क्षेत्र जो तीनों वृत्तों का सम्मिलित क्षेत्र है 'भ' दर्शाता है। यही इसका सही उत्तर है।

पाठगत प्रश्न 30.2

1. निम्नलिखित पाई चार्ट को ध्यानपूर्वक देखिए इसमें राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के तीन पाठ्यक्रमों–सेतु, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के

टिप्पणी

31

301hi31

परियोजना लेखन

आपने अखबार या पुस्तक पढ़ते हुए या राह चलते कहीं किसी साइनबोर्ड पर परियोजना शब्द लिखा हुआ ज़रूर देखा और पढ़ा होगा। समाचारों में भी अक्सर पढ़ने-सुनने को मिलता है कि अमुक कार्य के लिए सरकार ने अमुक परियोजना चलाई है, या प्रधानमंत्री या अमुक मंत्री ने अमुक परियोजना का उद्घाटन किया। आजकल विद्यालयों में भी विद्यार्थियों को परियोजना तैयार करने के लिए कहा जाता है। क्या कभी आपने सोचा है कि परियोजना कहते किसे हैं? परियोजना का अर्थ क्या है? आइए इस पाठ में हम परियोजना के बारे में विस्तार से जानते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- परियोजना शब्द का अर्थ बता सकेंगे;
- परियोजना का महत्त्व समझा सकेंगे;
- परियोजना के विविध प्रकारों का उल्लेख कर सकेंगे;
- परियोजना तैयार करना सीख सकेंगे।

क्रियाकलाप

आप सड़कों के किनारे लगे साइनबोर्डों पर लिखे या समाचारों में पढ़-सुन कर कुछ परियोजनाओं के बारे में अवश्य जानते होंगे। उदाहरण के लिए स्वर्ण चतुर्भुज परियोजना। इसी तरह अन्य किन्हीं चार परियोजनाओं के नाम याद कीजिए या उनके बारे में पता कर यहाँ लिखिए।

1. .... 3. ....

2. .... 4. ....

31.1 परियोजना का अर्थ

अब आपके मन में परियोजना शब्द के बारे में कुछ-कुछ बातें स्पष्ट हो गई होंगी। क्या आप बता सकते हैं कि परियोजना कहते किसे हैं? नहीं? चलिए हम आपको बताते हैं—

'परियोजना' शब्द 'योजना' में 'परि' उपसर्ग लगने से बना है। 'परि' यहाँ पर 'पूर्णता' के अर्थ में लगा है। यानी एक ऐसी योजना, जो अपने आप में पूर्ण हो। परियोजना का शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी विचार को व्यवस्थित रूप में स्थिर करना या प्रस्तुत करना। इसके लिए अंग्रेजी में शब्द है— प्रोजेक्ट। प्रोजेक्ट का एक अर्थ होता है, प्रकाशित करना। यानी इसके शाब्दिक अर्थों का सहारा लेते हुए कहें तो ***परियोजना किसी समस्या के निदान या किसी विषय के तथ्यों को प्रकाशित करने के लिए तैयार की गई एक पूर्ण विचार योजना होती है।***

हमें आए दिन किसी-न-किसी समस्या का सामना करना पड़ता है और हम उससे निपटने के लिए कोई-न-कोई तरीका सोचते रहते हैं। जैसे—यातायात की समस्या, पीने के पानी की समस्या, बिजली की समस्या आदि। इसी तरह हमारे आसपास बहुत-सी ऐसी समस्याएँ मौजूद हैं, जिन्हें देख या सुनकर हम सोचने पर मजबूर हो उठते हैं और उनके समाधान के लिए कुछ-न-कुछ उपाय सोचने लगते हैं, जैसे—गंदगी की समस्या, आत्महत्या की घटना, नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाली बीमारियों की समस्या, आदि।

इस प्रकार जब हमारे सामने कोई समस्या आती है तो सबसे पहले हम उस समस्या की तह तक जाकर उसके सभी पहलुओं को जानने की कोशिश करते हैं। समस्या का कारण क्या है, समस्या कितनी गहरी है, इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है या पड़ेगा, कितने लोग उससे प्रभावित हैं या होंगे आदि। फिर हम उस समस्या के निदान या समाधान के बारे में सोचते हैं। उसके निदान की सभी संभावनाओं और उपायों का विचार करते हैं। इस तरह हमारे मन में तैयार यह पूरी विचार योजना एक प्रकार की परियोजना होती है।

लेकिन विद्यालयों में या कक्षा में जो परियोजना तैयार करने को दी जाती है या कही जाती है वह सरकार द्वारा चलाई जा रही परियोजनाओं से भिन्न होती है। इस तरह की परियोजनाओं का उद्देश्य आपके पाठ्यक्रम के बोध को और गहरा या पैना करना होता है। इसलिए इन परियोजनाओं के विषय प्रायः आपके पाठ्यक्रम के विषयों पर आधारित होते हैं। मान लीजिए आपके पाठ्यक्रम में पर्यावरण पर एक पाठ है। आप पर्यावरण के बारे में काफ़ी कुछ पढ़ चुके हैं लेकिन उसके विभिन्न कारणों और दुष्प्रभावों के बारे में आपको अभी बहुत कुछ जानना बाकी है। इसी को ध्यान में रखकर आपसे कहा जाता है कि पीने के पानी की समस्या पर एक परियोजना तैयार कीजिए। तो इसके लिए आप जो परियोजना तैयार करेंगे वह सरकारी या किसी संगठन द्वारा तैयार परियोजना से थोड़ी भिन्न होगी।

31.2 परियोजना का महत्त्व

परियोजना-निर्माण शिक्षा का एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण अंग है। इसे तैयार करने में किसी

खेल की तरह का ही आनंद भी मिलता है। इस तरह परियोजना तैयार करने का अर्थ है– खेल-खेल में बहुत कुछ सीखना। जैसे ऊपर कही गई पीने के पानी की समस्या पर परियोजना तैयार करने का ही उदाहरण लें। यदि आपको कहा जाए कि इस पर निबंध लिखिए तो आपको शायद उतना आनंद नहीं आएगा। लेकिन यदि आपसे कहा जाए कि अलग-अलग शहरों में और गाँवों में पीने के पानी की समस्या से संबंधित अखबारों में छपे समाचारों को काट कर अपनी कॉपी में चिपकाइए तो शायद आपको बहुत मज़ा आएगा। इस तरह से समाचार इकट्ठे करके चिपकाना भी एक शैक्षिक परियोजना है। इस तरह से न सिर्फ़ आपने समाचार काटे और चिपकाए, बल्कि कई शहरों में और गाँवों में पीने के पानी की समस्या, उसके कारणों और कुछ हद तक उसके समाधान के तरीकों से भी परिचित हो गए।

परियोजना द्वारा पाठ्य सामग्री से प्राप्त जानकारियों के अलावा भी आपको देश-दुनिया की बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं। यह आपमें तथ्यों को जुटाने तथा उन पर विचार करने का अवसर प्रदान करती है। इससे आपमें नए-नए तथ्यों के प्रति जिज्ञासा और उन पर अपने विचार प्रकट करने के कौशल का विकास होता है। इससे आपमें एकाग्रता का विकास होता है। लेखन संबंधी नई-नई शैलियों की जानकारी प्राप्त होती है। आपमें चिंतन करने तथा किसी पूर्व घटना से वर्तमान घटना को जोड़कर देखने की क्षमता का विकास होता है।

इस आधार पर हम कह सकते हैं कि परियोजना का महत्त्व निम्नलिखित है–

- आप अपने पूर्व ज्ञान के आधार पर नए विषयों के ज्ञान की ओर उन्मुख होते हैं।
- आपके अंदर नए-नए विषयों के प्रति चिंतन करने की प्रवृत्ति का विकास होता है।
- खेल-खेल में बहुत-सी नई बातें सीखते हैं।
- नए-नए तथ्यों के संग्रह करने का अभ्यास होता है।
- पाठ्य सामग्री के अलावा अन्य पुस्तकों को पढ़ने की रुचि विकसित होती है।
- लेखन संबंधी नई-नई शैलियों का अभ्यास तथा प्रयोग करना सीखते हैं।
- आपका अर्जित भाषा-ज्ञान समृद्ध तथा व्यावहारिक रूप ग्रहण करता है।
- आप योजनाबद्ध तरीके से अध्ययन के लिए प्रेरित होते हैं।
- आपके पाठ्य सामग्री से संबंधित बोध में विस्तार होता है।
- आप में किसी समस्या के मूल कारण तक पहुँचने की प्रवृत्ति का विकास होता है।
- खोजी प्रवृत्ति का विकास होता है तथा सामग्री जुटाने, उसे व्यवस्थित करने तथा उसे विश्लेषित करने की क्षमता का विकास होता है।
- किसी समस्या के निदान के लिए संभावित समाधान खोज निकालने की क्षमता का विकास होता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 31.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. परियोजना में निम्नलिखित में से किसे प्रकाशित किया जाता है–

   (क) मन के भावों को (ग) घटना की भाषा को

   (ख) तथ्य आधारित विचारों को (घ) समस्या के तथ्यों को

2. परियोजना का विषय मुख्यतः किस पर आधारित होता है–

   (क) केवल पर्यावरण पर (ग) किसी भी समस्या पर

   (ख) सरकारी विभागों की समस्या पर (घ) पानी की समस्या पर

3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–

   (क) परियोजना पाठ्य-सामग्री के अलावा भी बहुत-सी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ने की प्रेरणा देती है।

   (ख) परियोजना तैयार करते समय नए-नए तथ्यों को संग्रह करने की आदत विकसित होती है।

   (ग) परियोजना से पाठ्य-सामग्री से प्राप्त बोध का विकास होता है।

   (घ) परियोजना का संबंध पाठ्य-सामग्री से नहीं होता।

31.3 परियोजना का स्वरूप

परियोजना तैयार करने के कई तरीके हो सकते हैं। हर व्यक्ति की परियोजना तैयार करने की शैली अलग हो सकती है, जैसे–निबंध, कहानी, कविता लिखने या चित्र बनाते समय होता है। लेकिन ऊपर कही गई बातों के आधार पर यहाँ हम परियोजना को मोटे तौर पर दो भागों में बाँट सकते हैं–एक तो वे, जो समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाती हैं और दूसरी वे जो किसी विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए तैयार की जाती हैं।

समस्याओं के निदान के लिए तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में संबंधित समस्या से जुड़े सभी तथ्यों पर प्रकाश डाला जाता है और उस समस्या के समाधान के लिए सुझाव भी दिए जाते हैं। इस तरह की परियोजनाएँ प्रायः सरकारी अथवा दूसरे संगठनों द्वारा किसी समस्या पर कार्य योजना तैयार करते समय बनाई जाती हैं। इससे उस समस्या के विभिन्न पहलुओं पर कार्य करने में आसानी हो जाती है।

किंतु दूसरे प्रकार की परियोजना आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। इसे शैक्षिक परियोजना भी कहा जा सकता है। इस तरह की परियोजनाएँ तैयार करते समय आप संबंधित विषय पर तथ्यों को जुटाते हुए बहुत सारी नई-नई बातों से अपने आप

परिचित भी होते चले जाते हैं। शैक्षिक परियोजना को भी आगे दो भागों में बाँटा जा सकता है–

1. पाठ आधारित शैक्षिक परियोजना तथा
2. शुद्ध ज्ञान के विषयों पर आधारित परियोजना

1. पाठ आधारित शैक्षिक परियोजना

पाठों पर आधारित परियोजनाओं को ठीक से समझने के लिए आइए एक उदाहरण लेते हैं। मान लीजिए आपकी पाठ्यपुस्तक में 'वह तोड़ती पत्थर' (निराला) पाठ पर आधारित परियोजना बनानी है तो उसके लिए उसी से मिलती-जुलती अन्य पाँच कवियों की कविताएँ संकलित कर अपनी अभ्यास पुस्तिका में लिख सकते हैं और उनकी तुलना करते हुए अपने विचार भी लिख सकते हैं। या सड़कों, नए बनते भवनों के लिए काम करती महिलाओं के चित्र इकट्ठे करके उन्हें चिपका सकते हैं और यदि उनके बारे में कहीं कोई जानकारी उपलब्ध है तो वह भी लिख सकते हैं। इसी प्रकार रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविता पर आधारित परियोजना तैयार कर सकते हैं। 'आखिरी चट्टान' यात्रा-वृत्तांत पढ़ने के बाद अन्य पर्यटन स्थलों के बारे में बहुत-सी नई जानकारियाँ आपको प्राप्त हुई होंगी। इनमें से बहुत-सी बातें आप पहले से भी जानते होंगे या इनके अलावा भी बहुत-सी बातें आपको मालूम होंगी। आपके मन में बहुत से नए विचार भी आए होंगे। फिर इन्हीं सब बातों को जुटाइए, पर्यटन स्थलों के महत्त्व पर सामग्री जुटाइए, कुछ प्रसिद्ध स्थलों के चित्र जुटाइए और उन्हें क्रम से लिखते और लगाते चले जाइए। पाठ पर आधारित परियोजना तैयार। यह तो हुआ पाठ पर आधारित परियोजना का स्वरूप।

2. शुद्ध ज्ञान के विषयों पर आधारित परियोजना

आप जान चुके हैं, पाठ आधारित परियोजना के अलावा कुछ परियोजनाएँ शुद्ध ज्ञान पर आधारित हो सकती है। इस तरह की परियोजनाओं का संबंध सीधे-सीधे पाठ से तो नहीं होता, किंतु इन्हें तैयार करने से आपको पाठ से संबंधित अनेक जानकारियाँ अपने आप मिलती चली जाती हैं। जो बातें आपको पाठ पढ़ते समय समझ में नहीं आ पातीं वही बातें परियोजना तैयार करते समय स्वयं आसानी से आ जाती हैं। इन परियोजनाओं का उद्देश्य एक प्रकार से आप द्वारा पढ़े हुए पाठ से प्राप्त जानकारियों के प्रति जागरूक बनाना और आपके अभिव्यक्ति कौशल को विकसित करना होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए आपसे 'साक्षरता के महत्त्व' पर एक परियोजना तैयार करने को कहा जाता है तो एक बार को आपको लग सकता है कि इस विषय का हमारी पाठ्य पुस्तक से भला क्या संबंध है। लेकिन जब आप अपने आस-पास नज़र डालते हैं। लोगों में अशिक्षा के बारे में अखबारों अथवा पत्रिकाओं से आँकड़े इकट्ठे करते हैं, चित्र जुटाते हैं, फिर इससे पैदा होने वाली परेशानियों के बारे में पता लगाते हैं तो आपको समझ में आता है कि अरे, यह परियोजना तो हमारी पाठ्य सामग्री के 'अनपढ़ बनाए रखने की साज़िश' पाठ को समझने में बहुत मददगार

टिप्पणी

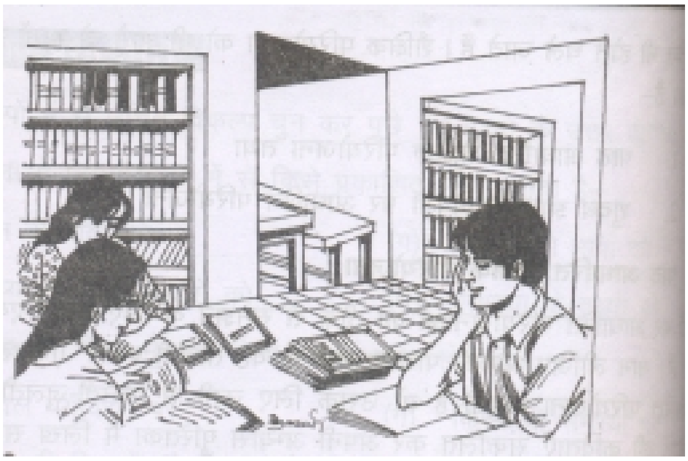

चित्र 31.1 पुस्तकालय की सहायता से परियोजना लेखन की तैयारी

साबित हुई। इस प्रकार शुद्ध ज्ञान की परियोजनाएँ कहीं-न-कहीं आपके पढ़े हुए पाठों को समझने अथवा पाठ्य पुस्तक से प्राप्त जानकारी को और बढ़ाने तथा आपके अभिव्यक्ति कौशल का विकास करने में मदद करती हैं।

इस प्रकार आपने शायद यह बात महसूस कर ली होगी कि परियोजना भी एक प्रकार का क्रियाकलाप ही होती है। लेकिन पाठों में दिए गए क्रियाकलापों से इसका क्षेत्र थोड़ा व्यापक होता है।

पाठगत प्रश्न 31.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. परियोजना तैयार करने के तरीके–
   (क) सभी के एक होते हैं
   (ग) कुछ के एक से हो सकते हैं
   (ख) भिन्न हो सकते हैं
   (घ) मिले-जुले होते हैं
2. परियोजना पाठ्य-सामग्री को ठीक से समझने में–
   (क) मदद नहीं करती
   (ग) मददगार होती है
   (ख) बाधा उत्पन्न करती है
   (घ) उलझन पैदा करती है
3. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है–
   (क) परियोजना का विषय पाठों पर आधारित भी हो सकता है।
   (ख) परियोजना के विषय में कोई-न-कोई समस्या अवश्य होती है।
   (ग) परियोजना का विषय शुद्ध ज्ञान के लिए भी दिया जा सकता है।
   (घ) परियोजना केवल समस्याओं के समाधान के लिए तैयार की जाती है।

31.4 परियोजना तैयार कैसे करें

ऊपर कही गई बातों के आधार पर आपने कुछ-न-कुछ तो अंदाज़ा लगा ही लिया होगा कि परियोजना कैसे तैयार की जाए। परियोजना तैयार करते समय आप 'अच्छा कैसे लिखें' पाठ में बताई गई सभी युक्तियों का प्रयोग कर सकते हैं। परियोजना लिखते समय निम्नलिखित बिंदुओं को ध्यान में रखना आवश्यक होता है:

- परियोजना के लिए दिए गए विषय को पूरी तरह समझें।
- दिए गए विषय से संबंधित आँकड़े जुटाएँ।
- अखबारों में छपे विषय संबंधी समाचार एकत्रित करें।
- समस्या से संबंधित चित्र प्राप्त करें।
- यदि ग्राफिक और रेखाचित्र पुस्तकों और पत्र-पत्रिकाओं में आसानी से उपलब्ध हैं तो उन्हें भी इकट्ठा करें।
- परियोजना तैयार करने से पहले उसकी एक अच्छी-सी भूमिका लिखें और फिर उसी के आधार पर परियोजना तैयार करें।
- आँकड़ों के आधार पर समस्या के विभिन्न पहलुओं का एक-एक कर, अलग-अलग उदाहरणों के रूप में शीर्षक के साथ विश्लेषण करें।
- हर पहलू का सटीक वर्णन करें।
- जो भी आँकड़े, चित्र, रेखाचित्र, ग्राफिक, विज्ञापन आदि प्रमाणस्वरूप दें, उनके स्रोत यानी उसे आपने कहाँ से प्राप्त किया उसके बारे में अवश्य उल्लेख करें। (उदाहरण के लिए समाचार पत्र-पत्रिका का नाम, अंक, दिनांक आदि)।
- विश्लेषण तथ्यों पर आधारित सटीक होना चाहिए। विश्लेषण करते समय भावना में न बहें।
- किसी से सुनी हुई बात को प्रमाणस्वरूप प्रस्तुत न करें। सही स्रोत से उसकी पुष्टि करने के बाद ही उसका उल्लेख करें। हाँ, देश के किसी ज़िम्मेदार पद पर बैठे किसी नेता, जैसे– मंत्री, प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति आदि के कथनों अथवा भाषणों का उल्लेख कर सकते हैं।

हम जान चुके हैं कि परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की तैयार की जा सकती है, एक तो किसी समस्या के निदान के लिए और दूसरी किसी दिए हुए विषय की समुचित जानकारी प्रदान करने के लिए। आइए दोनों तरह की परियोजनाएँ बनाना सीखते हैं।

चित्र 31.2 संदर्भ पुस्तकें पढ़ें

समस्या प्रधान परियोजना

अब आइए उक्त बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए उदाहरणस्वरूप 'देश में पेय जल-समस्या' विषय पर एक परियोजना लिखना सीखते हैं। इस विषय पर लिखने के लिए पहले तो आप इस समस्या को पूरी तरह समझें कि यह समस्या किस रूप में है। यह समस्या कई कारणों से हमारे देश में उत्पन्न हुई है। इनमें से बरसात कम होने के कारण नदियों का जल स्तर कम होना, जमीन के भीतर जलस्तर का काफी नीचे चले जाना, कुएँ-तालाब आदि जैसे प्राकृतिक जल स्रोतों का सूख जाना, प्रदूषण के कारण पानी का पीने लायक न होना, जनसंख्या वृद्धि, पानी का अनावश्यक खर्च आदि।

अब इस समस्या के इन सभी पहलुओं पर अलग-अलग आँकड़े एकत्र करें। ये आँकड़े आपको समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, सरकार द्वारा जारी जल संरक्षण संबंधी पोस्टरों, दस्तावेज़ों आदि से प्राप्त हो सकते हैं। आप सरकार या किसी अन्य संस्था द्वारा जारी उन पोस्टरों, चित्रों, ग्राफिक आदि को भी प्रमाणस्वरूप परियोजना के साथ लगा सकते हैं। फिर इस बात की जानकारी प्राप्त करें कि देश के किन-किन राज्यों में पेय जल की सबसे अधिक समस्या है। इससे संबंधित आँकड़े और चित्र भी एकत्र करें। आप अक्सर समाचारों में पढ़ते होंगे कि राजस्थान, मध्य प्रदेश, दिल्ली आदि राज्यों में पेय जल की समस्या भयानक रूप में है। अब आप यह खोजने का प्रयास करें कि इन राज्यों में रोज प्रति व्यक्ति कितने पानी की आवश्यकता है और वहाँ कितना पानी उपलब्ध हो पा रहा है। जैसे एक मोटे अनुमान के मुताबिक रोज एक आदमी को पीने के लिए सात लीटर पानी की आवश्यकता होती है। लेकिन देखा यह गया है कि कई-कई दिनों तक नलों में या तो पानी आता ही नहीं या आता भी है तो इतना कम आता है कि लोग कतार लगाए खड़े रहते हैं और सबको पानी नहीं मिल पाता। गरमी के मौसम में अखबारों में अक्सर पानी के लिए लंबी कतार में खड़े लोगों या दूर से पानी लेकर आती महिलाओं के चित्र छपते रहते हैं। ये चित्र आपकी परियोजना के लिए प्रमाण का काम करेंगे। इसी प्रकार पेय जल की समस्या के निदान के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे प्रयासों का पता लगाइए और जानने की कोशिश कीजिए कि सरकार इन प्रयासों में कहाँ तक सफल रही है और नहीं रही है तो क्यों नहीं रही है। उन योजनाओं में क्या कोई कमी रही है?

अब इन सभी बातों पर विचार करते हुए सोचिए कि पेय जल से निपटने के क्या-क्या उपाय हो सकते हैं? जैसे बरसात के पानी को जगह-जगह एकत्र कर प्राकृतिक जल स्रोतों का विकास करना, घर में पानी के अनावश्यक खर्च पर रोक, नदी जल को प्रदूषित होने से रोकना आदि। फिर इन्हीं बातों को क्रमवार प्रमाण के साथ लिखते चले जाइए। और फिर अंत में अपने सुझाव लिखिए।

शुद्ध ज्ञान वर्द्धन वाले विषय पर परियोजना

आप 'अनुराधा' कहानी का पाठ पढ़ चुके हैं। सोचिए तो, क्या उस विषय पर कोई परियोजना बन सकती है। जी हाँ बन सकती है। उस पाठ का स्वरूप काफ़ी हद तक परियोजना की शर्तों को पूरा करता है। आपको इसी तरह के अनंत विषय मिल सकते

हैं, जैसे–मान लीजिए आप को भारत में ग्रामीण महिलाओं की स्थिति पर परियोजना तैयार करने को कहा जाता है। आप गाँव में रहते हैं। आप अपने गाँव या आसपास के गाँव की महिलाओं की स्थिति का अध्ययन कीजिए और देखिए कि वहाँ महिलाओं की क्या स्थिति है? वहाँ की महिलाओं का रहन-सहन कैसा है? क्या उनमें आपको कोई ऐसी महिला मिली, जिसने समाज के विकास में योगदान दिया हो या देने की क्षमता रखती हो। उस महिला से बातचीत कीजिए। साथ ही अन्य महिलाओं से भी बात कीजिए और जानने का प्रयास कीजिए कि समाज-निर्माण के बारे में वे क्या करना चाहती हैं। वर्तमान सामाजिक व्यवस्था के बारे में उनकी क्या राय है? इसी प्रकार आप अपने गाँव में बोली जाने वाली लोकोक्तियों का संग्रह कर सकते हैं। गाँव में पानी की समस्या पर परियोजना तैयार कर सकते हैं। पुस्तक में आए कठिन शब्दों को चुनकर उन्हें क्रम में लगाकर एक शब्द-कोश बना सकते हैं या किसी पत्रिका को देखकर अपनी एक लघु पत्रिका का प्रारूप तैयार कर सकते हैं आदि। विषय अनंत हो सकते हैं। बस ज़रूरत है आपको अपने दैनिक जीवन की घटनाओं के प्रति सजग रहने और उन पर चिंतन करने की।

इसी प्रकार आप पेड़ का उदाहरण लेते हुए संज्ञा पर परियोजना तैयार कर सकते हैं, जैसे पेड़ अपने आप में एक संज्ञा है लेकिन उसमें जड़, पत्तियाँ, कोपल, तना, टहनी आदि कई संज्ञाएँ छिपी हैं। उसे आप रेखाचित्र के माध्यम से भी तैयार कर सकते हैं।

इस तरह की परियोजनाएँ किसी विषय के बारे में समुचित और रोचक जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से तैयार की जाती हैं। इस तरह की परियोजना आप आसानी से तैयार कर सकते हैं। ऐसी परियोजनाएँ समस्या प्रधान परियोजनाओं से भिन्न होती हैं क्यों कि इनमें आपको अपने सुझाव देने की गुंजाइश नहीं होती या बहुत कम होती है। बाकी इसे तैयार करते समय भी उक्त बिंदुओं का ध्यान रखना आवश्यक होता है।

31.5 नमूने की परियोजना

ऊपर हम पीने के पानी की समस्या पर बात कर आए हैं, आइए इसी विषय पर एक नमूने की परियोजना तैयार करना सीखते हैं।

पानी की समस्या

भूमिका

पीने के पानी की समस्या दिन पर दिन भयावह रूप लेती जा रही है। इसका मुख्य कारण पारंपरिक जल स्रोतों का लगातार सूखते जाना, ज़मीन के अंदर के जल स्तर का नीचे जाना और जल स्रोतों का प्रदूषित होना है। यही कारण है कि जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है लोगों को पीने के पानी की कमी होती जा रही है और यह समस्या सिर्फ़ शहरों में नहीं बल्कि गाँवों में भी अपने पाँव पसार रही है। लोगों को मीलों दूर से पानी लाना पड़ता है। सरकार लोगों को पानी पहुँचाने, पानी के

पारंपरिक स्रोतों– जैसे नदी, तालाब, कुएँ, बावड़ियाँ आदि के संरक्षण आदि की पूरी कोशिश कर रही है, उस पर भी पीने के पानी को लेकर आपसी झगड़े की घटनाएँ अक्सर सामने आती रहती हैं।

पानी की कमी का कारण

कहते हैं जल ही जीवन है। पीने के पानी की खपत से कहीं ज़्यादा दूसरे कार्यों के लिए पानी की ज़रूरत होती है। पानी न सिर्फ़ पीने के लिए बल्कि अच्छी फ़सल के लिए खेतों की सिंचाई, रोजमर्रा के उपयोग के लिए और पशुओं आदि के लिए भी ज़रूरी है।

लेकिन आज स्थिति यह है कि पीने का पानी भी लोगों को मुश्किल से मिल पाता है। हमारे देश में पानी की समस्या 1980 के दशक में पहली बार भयानक रूप लेती दिखाई दी। सरकार ने शहरों के अलावा गाँवों में भी घरों तक पानी की पाईप लाइनें बिछाने के काम में तेज़ी दिखाई। फिर भी आज राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, दिल्ली आदि शहरों में करोड़ों लोगों को ज़रूरत भर का पानी भी नहीं मिल पाता। पानी की कमी के मुख्य रूप से निम्नलिखित कारण हैं:

1. बढ़ती जनसंख्या
2. जल प्रदूषण
3. पारंपरिक जल स्रोतों का गलत प्रयोग
4. उपलब्ध जल की बर्बादी

1. बढ़ती जनसंख्या

आजादी के बाद हमारे देश की जनसंख्या इतनी तेज़ी से बढ़ी है कि आज यह एक अरब के आँकड़े को भी पार कर गई है। जाहिर है जब जनसंख्या बढ़ती है तो उसके अनुसार संसाधनों का विकास भी ज़रूरी होता है, जैसे भोजन के लिए अन्न, पीने के लिए पानी, पहनने के लिए वस्त्र, रहने के लिए घर आदि। इनमें से खेती को बढ़ावा देकर या दूसरे देशों से आयात कर खाद्यान्न की समस्या पर कुछ हद तक काबू पाया जा सकता है, कपड़ा मिलें लगा कर वस्त्र संबंधी समस्या को दूर किया जा सकता है। बहुमंजिली इमारतों का निर्माण कर रहने की समस्या को भी काफ़ी हद तक दूर किया जा सकता है लेकिन पीने के पानी के लिए तो हमें अपने प्राकृतिक जल स्रोतों पर ही निर्भर रहना पड़ता है। लेकिन तेज़ी से बढ़ती जनसंख्या के कारण प्राकृतिक संसाधनों का अंधाधुंध दोहन शुरू हो गया, जिससे प्रदूषण और जल स्रोतों के सूखते चले जाने के कारण पानी की समस्या दिन-पर-दिन बढ़ती चली गई।

2. जल प्रदूषण

बढ़ती जनसंख्या के कारण पानी की खपत तो बढ़ी ही है, प्राकृतिक प्रदूषण में भी तेजी से वृद्धि हुई है। घरों से निकलने वाला कचरा, जल-मल या तो नदियों में बहा दिया

जाता है या ज़मीन के नीचे दबा दिया जाता है। हालाँकि अब तो सरकार ने नदियों में कचरा बहाए जाने पर कानूनी रोक लगा दी है, लेकिन शहरों में घरों से निकलने वाला कचरा अभी भी काफ़ी मात्रा में नदियों में बहाया जाता है, जिससे उनमें गाद भर जाती है और पानी काफ़ी समय तक नहीं ठहर पाता और बहकर समुद्र में चला जाता है। यही कारण है कि जहाँ नदियों में पानी साल भर भरा रहता था वे अब गरमी का मौसम शुरू होने से पहले ही सूखी रहने लगी हैं। यही नहीं आमतौर पर इन्हीं नदियों का पानी साफ कर पाईपलाइनों के जरिए घरों तक पहुँचाया जाता है। घरेलू गंदगियों के इनमें मिल जाने के कारण वह पानी हानिकारक होता चला जाता है और नदियों में पानी की कमी के कारण जल की उपलब्धता प्रभावित होती है। दूसरी ओर जमीन के नीचे कचरा दबाए जाने के कारण ज़मीन के नीचे का पानी प्रदूषित हो जाता है। जिसे जब हम हैंड पाईपों के जरिए पीने के लिए पानी खींचते हैं तो उससे कई बीमारियाँ पैदा होने का खतरा बना रहता है।

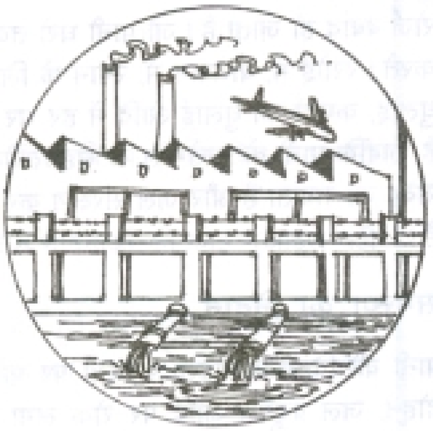

चित्र 31.3 जल प्रदूषण

3. पारंपरिक जल स्रोतों का गलत प्रयोग

नदियाँ और ज़मीन के भीतर का जमा जल ही मुख्य रूप से हमारे पारंपरिक जल स्रोत हैं। लेकिन बढ़ते पर्यावरण प्रदूषण के कारण वैश्विक तापमान बढ़ने सेऽपहाड़ों पर जमी रहने वाली बर्फ अब जल्दी पिघलने लगी है, जिससे नदियों में भरपूर पानी नहीं आ पाता। बरसात की कमी या वर्षा जल का सही संरक्षण न हो पाने के कारण ज़मीन एक ओर उचित मात्रा में पानी को सोख नहीं पाती जिससे ज़मीन के भीतर का जल स्रोत कम होता जा रहा है और दूसरी ओर हैंडपाईपों और ट्यूबवेलों के माध्‍यम से धरती और नदी के जल का अधिक दोहन होने लगा है। इस कारण प्राप्त आँकड़ों के आधार पर कहा जा सकता है कि हर साल ज़मीन के नीचे जितना जल संचय हो पाता है उसका लगभग तीन गुना पानी खींच लिया जाता है। इस तरह सदियों से संचित जल का स्तर भी काफ़ी नीचे चला गया है। इस चिंता से सरकार अब वर्षा जल के संग्रहण के लिए लोगों को प्रोत्साहित कर रही है, जिसे अब 'जल-खेती' के नाम से जाना जाता है।

4. उपलब्ध जल की बर्बादी

इन सबके अलावा जहाँ पानी उपलब्ध है, लोगों में पानी के प्रयोग की सही जानकारी न होने के कारण, उसका दुरुपयोग भी जल की उपलब्धता में कमी का एक मुख्य कारण है। लंबी पाइपलाइनों के जगह-जगह फटे होने के कारण करोड़ों लीटर पानी

रोज बर्बाद हो जाता है। जो पानी घरों तक पहुँचता है उसका भी लोग सही प्रयोग नहीं करते। रसोई में, बाथरूम में, स्नान के लिए, पौधों की सिंचाई, कार की धुलाई, घर की धुलाई, कपड़ों की धुलाई आदि में हर घर में सैकड़ों लीटर पानी व्यर्थ बहा दिया जाता है, जबकि पानी के इस्तेमाल के सही तरीके अपना कर इस बर्बादी को काफ़ी हद तक रोका जा सकता है और जल संरक्षण कर पानी की समस्या पर रोक लगाई जा सकती है।

समस्या का निदान

पानी की दिनोंदिन बढ़ती समस्या पर पानी के सही प्रयोग पारंपरिक जल स्रोतों के दोहन, जल प्रदूषण आदि पर रोक लगा कर काबू पाया जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कि हम स्वयं तो पानी की समस्या के प्रति जागरूक हों ही अपने आस-पास के लोगों को भी जागरूक बनाएँ।

उक्त परियोजना सीमित शब्दों में आपके लिए दी गई है। आप अन्य सामग्री जुटाकर अनेक प्रकार से इसे विस्तार भी दे सकते हैं। समाचार पत्र अथवा पत्रिकाओं से अनेक प्रकार के चित्र काट कर लगा सकते हैं। कुछ आँकड़े जुटा कर तालिका, चार्ट, प्रवाह चाट्र आदि बनाकर सुंदर प्रस्तुती कर सकते हैं। आपकी कल्पना, आपकी सर्जनात्मकता के लिए सारे रास्ते खुले हैं। यह आप पर निर्भर करता है कि आप उनका किस प्रकार सदुपयोग करते हैं।

पाठगत प्रश्न 31.3

उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. समस्या प्रधान परियोजना में प्रमुख रूप से किन-किन विषयों को समाहित किया जाता है?

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

   (घ) ....

2. शुद्ध ज्ञान की परियोजना के विषय मुख्यत: किन बातों पर आधारित होते हैं?

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

   (घ) ....

31.6 आपने क्या सीखा

- परियोजना किसी समस्या के निदान अथवा किसी विषय की समुचित जानकारी देने के उद्देश्य से तैयार की जाती है।
- परियोजना तथ्यों पर आधारित होती है। इसमें भावनाओं की कोई गुंजाइश नहीं होती।
- परियोजना तैयार करने से पहले विषय की पूरी जानकारी, उससे संबंधित तथ्यों, चित्रों, आँकड़ों, ग्राफिक, विज्ञापन आदि का संग्रह करना आवश्यक होता है।
- परियोजना मोटे तौर पर दो प्रकार की तैयार की जाती है– एक कार्य परियोजना और दूसरी शैक्षिक परियोजना।
- समस्या मूलक परियोजना में आप सलाह दे सकते हैं, जबकि किसी विषय की जानकारी देने वाली परियोजना में अपने सुझाव देना आवश्यक नहीं होता। शैक्षिक परियोजनाएँ खेल-खेल में बहुत-सी नई-नई बातें सीखने का अवसर प्रदान करती है।

31.7 पाठांत प्रश्न

1. परियोजना किसे कहते हैं?
2. परियोजना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए?
3. परियोजना का क्या महत्त्व है? अपने शब्दों में बताइए।
4. परियोजना तैयार करते समय किन बातों का ध्यान रखना आवश्यक होता है?
5. समस्या प्रधान विषय और शुद्ध ज्ञानवर्द्धन वाले विषयों पर तैयार की जाने वाली परियोजनाओं में क्या अंतर होता है? किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।
6. 'देश में आतंकवाद की समस्या और निदान' विषय पर एक परियोजना तैयार कीजिए।
7. पाठ्य-सामग्री में समाहित विभिन्न कवियों के बारे में सामान्य परिचय, चित्र, रचनाएँ आदि एकत्रित कर एक सुंदर परियोजना प्रस्तुत कीजिए।
8. 'बालिका पढ़े, परिवार पढ़ें तो पूरा देश पढ़े' विषय पर एक परियोजना तैयार कीजिए।

31.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

31.1 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)
31.2 1. (ख) 2. (ग) 3. (घ)
31.3 स्वयं कीजिए

टिप्पणी

32

विराटा की पद्‌मिनी

'विराटा की पद्‌मिनी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है। इसमें एक दाँगी कन्या कुमुद के प्रेम और बलिदान की कहानी प्रस्तुत की गई है। इसके साथ ही इसमें बुंदेलखंड की वीरता, जुझारूपन, संस्कृति, प्राकृतिक सुषमा और वहाँ के जनजीवन का भी अंकन किया गया है। आइए, देखें कि उपन्यास में यह सब कैसे प्रस्तुत किया गया है।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- उपन्यास क्या है, स्पष्ट कर सकेंगे;
- उपन्यास और कहानी में अंतर बता सकेंगे;
- उपन्यास के तत्वों पर आधारित 'विराटा की पद्‌मिनी' उपन्यास का विश्लेषण कर सकेंगे;
- 'विराटा की पद्‌मिनी' की कथावस्तु के बारे में बता सकेंगे;
- उपन्यास के प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण कर सकेंगे;
- उपन्यास की विषय-वस्तु और संदेश स्पष्ट कर सकेंगे;
- उपन्यास की भाषा-शैली और संवाद की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- बुंदेलखंड के आंचलिक परिवेश पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- उपन्यास की विशेषताओं का उल्लेख कर सकेंगे;
- अच्छे संवादों को याद कर सकेंगे;

क्रियाकलाप

आप फिल्म या टी.वी. पर धारावाहिक (सीरियल) अवश्च ही रुचि से देखते होंगे।

टिप्पणी

अपनी पसंद के किसी एक की प्रमुख घटनाएँ सूची बद्ध कीजिए। और प्रमुख पात्रों की सूची तथा चरित्र की दो-दो विशेषता लिखिए।

32.1 आइए समझें

उपन्यास का परिचय

(क) कथा-कहानी तथा उपन्यास

कथा और **कहानी** शब्द से आप सुपरिचित है। बचपन से ही आप **कहानी** सुनते रहे हैं। कभी-कभी आप अपने से छोटे बच्चों को **कहानी** सुनाते भी होंगे। पर यदि कोई आपसे पूछ बैठे कि **कहानी** क्या है तो शायद आप बता न सकें। सबसे पहले तो आप यह जानें कि **कथा, कहानी, किस्सा** आदि शब्द प्रारंभिक तौर पर एक-दूसरे के पर्याय हैं। **प्रारंभिक तौर** पर इसलिए कि आज **कथा** और **कहानी** शब्दों के अर्थ में थोड़ा परिवर्तन हो गया है। पर इसे हम बाद में स्पष्ट करेंगे। पहले हम **कथा, कहानी या किस्सा** शब्दों के मूल अर्थ को समझ लें। **कथा** या **किस्सा** में तीन बातें प्रमुख होती हैं– **1. घटनाएँ, 2. समयानुक्रम और 3. उत्सुकता जगाने की शक्ति। घटना** का अर्थ तो आप जानते ही हैं: जो घटित हो वही **घटना** है। **समयानुक्रम** का अर्थ है काल की कड़ी: जैसे, सुबह-दोपहर-शाम-रात......... या आज-कल-परसों-नरसों.........आदि। जब घटनाएँ इस समयानुक्रम में गूँथ दी जाती हैं तब कथा बन जाती है। **जैसे–एक राजा था। वह बीमार पड़ा और मर गया। फिर उसकी रानी भी मर गई..........**। यह **कथा** का प्रारंभिक रूप है। पर यह कथा तभी कथा होगी जब घटनाओं में नयापन और कौतूहल पैदा करने का गुण हों। उदाहरण के लिए एक कथा लें, जो अक्सर माँ-बाप बच्चों को चिढ़ाने के लिए कहा करते हैं। **एक आँगन में बहुत-सी चिड़ियाँ दाना चुग रही थीं। उनमें से एक चिड़िया उड़ी फुर्र; फिर दूसरी चिड़िया उड़ी फुर्र; फिर तीसरी चिड़िया उड़ी फुर्र.. ....।** यदि इसी प्रकार एक-एक चिड़िया को फुर्र-फुर्र उड़ाया जाए तो यह कहानी नहीं कहलाएगी। सुनने वाला बच्चा भी 'धत्तेरे की' कह कर चलता बनेगा। अत: घटनाओं में नयापन और उत्सुकता पैदा करने की क्षमता होने पर ही कहानी कहानी बनती है।

मूलत: इसी **कथा, कहानी** या **किस्सा** से **कथा साहित्य** या **उपन्यास, कहानी** जैसी साहित्यिक विधाओं का विकास हुआ है। फिलहाल हिंदी में 'कथा साहित्य' व्यापक अर्थ में प्रयुक्त होने वाला साहित्यिक पद है। इसके अंतर्गत सभी तरह की लिखित और काल्पनिक **गद्‌य कथाएँ, उपन्यास, कहानी, लघु कथा** आदि आते हैं। यहाँ फिर **कहानी** और **लघु कथा** पद आपको भ्रमित कर सकते हैं। यह हमेशा याद रखें कि प्राथमिक अर्थ देने वाला **कहानी** शब्द और साहित्यिक विधा के रूप में प्रयुक्त होने वाला **कहानी** शब्द, दोनों एक-दूसरे से भिन्न हैं। **लघु कथा** पद का प्रयोग भी एक खास अर्थ में होता है।

उपन्यास का अर्थ

पर सबसे पहले हम **उपन्यास** पद का अर्थ जानने की कोशिश करें। हिंदी और बँगला में **उपन्यास** पद का प्रयोग अंग्रेज़ी के **नॉवेल** के अर्थ में होता है। यहाँ हम **उपन्यास**

के व्युत्पत्तिपरक या ऐतिहासिक अर्थ पर विचार न कर उसके स्वरूप को ही समझने की कोशिश करें। इस संबंध में पहली जानने की बात यह है कि उपन्यास कथा से भिन्न होने पर भी कथा से मुक्त नहीं होता। उपन्यास में कथा **अवश्य** होती है, चाहे उसकी **मात्रा** या **रूप** जो रहे। एक मानक उपन्यास में **कथा** की मात्रा तो कम होती ही है, उसका रूप भी भिन्न हो जाता है। पहली बात तो यह होती है कि **घटना** का स्थान **कार्यव्यापार** ले लेता है। घटना में आकस्मिकता और चौंकाने वाले तत्त्व ज़्यादा होते हैं, जबकि **कार्यव्यापार** जीवन में सामान्य रूप से घटित होने वाले कार्य होते हैं। एक उदाहरण से इस अंतर को समझिए। रेल दुर्घटना या बैंक में डकैती **घटना** है, जबकि दोस्तों में कहासुनी हो जाना या किसी को उसके जन्मदिन पर उपहार देना **कार्यव्यापार** है। कथा में घटनाएँ प्रमुख होती हैं, जबकि उपन्यास में कार्यव्यापारों की योजना की जाती है।

कथा और **उपन्यास** में दूसरा प्रमुख अंतर यह है कि कथा में समयानुक्रम सीधा चलता है, जैसे आज, कल, परसों, नरसों..... आदि। पर एक मानक उपन्यास में समयानुक्रम सीधा नहीं होता। वहाँ उसका क्रम बदल कर नरसों, आज, परसों, कल.....या इसी तरह का कुछ और हो जाता है। उपन्यास में कोई ज़रूरी नहीं कि पहले पात्रों का परिचय दिया जाए। हो सकता है कि शुरू में कुछ पात्रों के कार्यकलाप और वार्तालाप आपके सामने आएँ और उनका परिचय आपको बाद में तथा धीरे-धीरे मिले। 'विराटा की पद्मिनी' को ही देखें। शुरू में पहूज नदी में स्नान करने लिए आए राजा नायक सिंह और उनके दरबारियों, जनार्दन शर्मा, लोचन सिंह, सैयद आगा हैदर, कुंजर सिंह आदि के क्रियाकलाप और वार्तालाप हैं। पात्रों का परिचय न के बराबर मिलता है। बाद में धीरे-धीरे इन पात्रों का पूरा परिचय प्राप्त होता है। पर समयानुक्रम का उलटफेर मानक उपन्यास में ज़रूर ही होता है। **कथा** में ऐसा नहीं होता।

तो, इतना तो आप अब तक समझ ही गए होंगे कि उपन्यास में एक **लिखित गद्य कथा** ज़रूर होती है, भले ही **कथा** की मात्रा जितनी कम हो अथवा कालक्रम में चाहे जितना उलटफेर किया गया हो।

कथा का स्वरूप

कथा के संबंध में एक और बात उल्लेखनीय है। कथा **वास्तविक** भी हो सकती है और **काल्पनिक** भी। वास्तव में जो घटित होता है और जिसके घटित होने का कोई प्रमाण या साक्ष्य होता है, वह **तथ्य** या **सच्ची घटना** कही जाती है। **इतिहास** या **जीवनी** की घटनाएँ और पात्र **तथ्य** या **सच्चे** होते हैं। इतिहास और जीवनी भी **गद्य कथा** तो है, पर वे उपन्यास नहीं हैं, क्योंकि उपन्यास के लिए जरूरी है कि उसमें आई कथा कल्पना से उत्पन्न हो।

पर, कथा के **कल्पनाप्रसूत** (कल्पना से उत्पन्न) होने का यह अर्थ नहीं कि यह यथार्थ न हो। केवल तथ्य या सच्ची घटनाएँ ही यथार्थ नहीं होतीं। काल्पनिक कथा भी यथार्थ हो सकती है। उदाहरण के लिए यदि किसी कथा में किसी मनोज नामक सज्जन के दुष्टों के चक्कर में पड़कर दुख झेलने का वर्णन आता है तो इसे काल्पनिक भले कहा जाए, **अयथार्थ** नहीं कहा जा सकता। क्योंकि भले ही मनोज और क–ख–ग नामधारी पुरुष वास्तव में न हों और उनकी कथा भी सच में न घटी

हो, पर अपने अनुभव से हम जानते हैं कि वैसी घटनाएँ जीवन में घटित होती हैं। इस प्रकार जिन घटनाओं या कथा के घटित होने की **संभावना** होती है, वे तथ्य न होने पर भी यथार्थ होती हैं। अतः यह ध्यान रखिए कि उपन्यास में आने वाली कथा कल्पनाप्रसूत होने पर भी यथार्थ होती है।

ऐतिहासिक और जीवनीपरक उपन्यास में अंतर

यहाँ आपके मन में एक सवाल पैदा हो सकता है। यदि उपन्यास में आई कथा केवल कल्पनाप्रसूत होती है तो **ऐतिहासिक उपन्यास** या **जीवनीपरक उपन्यास** में कथा का रूप क्या होगा? इसका उत्तर यह है कि **ऐतिहासिक उपन्यास** अथवा **जीवनीपरक उपन्यास** में भी कथा कल्पनाप्रसूत ही होती है। फर्क केवल यह होता है कि **ऐतिहासिक उपन्यास** में इतिहास का आधार लिया जाता है और **जीवनीपरक उपन्यास** में किसी ऐतिहासिक व्यक्ति की जीवनी का। इसे यों समझने की कोशिश करें। मान लीजिए, आपके सामने प्रसिद्ध मुगल सम्राट अकबर के काल भी प ष्ठभूमि पर लिखा हुआ कोई **ऐतिहासिक उपन्यास** है, जिसमें अकबर, बीरबल, अबुल फ़ज़ल, सलीम, जोधाबाई आदि ऐतिहासिक पात्र भी हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि उपन्यासकार इतिहास में वर्णित घटनाओं का पुनर्लेखन नहीं करता। ऐसा होने पर वह उपन्यास न होकर इतिहास बन जाएगा। उपन्यासकार ऐतिहासिक पात्रों के चरित्रों का पुनर्निमाण करता है। अर्थात् वह अकबर, बीरबल आदि पात्रों के चरित्र के उस आंतरिक पक्ष का, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक पहलू का उद्‌घाटन करता है जिसका इतिहास में संक्षिप्त उल्लेख या संकेत मात्र होता है। वह ध्यान केवल इस बात का रखता है कि उसके द्वारा निर्मित अकबर, बीरबल या किसी दूसरे ऐतिहासिक स्त्री-पुरुष का चरित्र इतिहास में दिए गए तथ्यों के प्रतिकूल न हो। उपन्यासकार ऐतिहासिक व्यक्तियों के जीवन में घटित प्रसिद्ध घटनाओं को भी, जैसे उनके युद्धों, संधियों, शासन, विद्रोह, दमन आदि को अधिक महत्त्व देने को बाध्य नहीं है। उसका उद्देश्य इतिहास-पुरुषों के काल का ऐतिहासिक यथार्थ प्रस्तुत करना होता है। अर्थात् उस समय का जन-जीवन, संस्कृति, रीतिरिवाज़, विचारधारा, मनोभाव आदि कैसे थे, इसका अंकन करना उसका मुख्य लक्ष्य होता है। एक अच्छा **ऐतिहासिक उपन्यास** वही माना जाता है जिसमें इतिहास में वर्णित तथ्य कम-से-कम और **युग-सत्य** तथा **इतिहास-बोध** अधिक-से-अधिक हो।

यदि हम इसे गणित की भाषा में प्रस्तुत करें तो कहेंगे कि ऐतिहासिक उपन्यास की कथा एच+एक्स के रूप में होती है। इसमें **एच** (H) तो इतिहास का प्रतीक है जिसमें उपन्यासकार कोई भी परिवर्तन नहीं कर सकता। अधिक से अधिक वह उसे छोटा या हल्का कर सकता है। सूत्र का **एक्स** (X) कथा का कल्पना वाला पक्ष है जिसके अनंत रूप संभव हैं। वह अनुपात में भी बड़ा होता है और रूप में भी। यही उपन्यास का मुख्य पक्ष है। 'विराटा की पद्‌मिनी' को ही लें। यह इतिहास की किताब नहीं है। इसमें इतिहास का अंश भी कम ही है। दूसरी तरफ इसमें ऐतिहासिक यथार्थ का, उस काल में बुंदेलखंड की आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, वैचारिक, मनोवैज्ञानिक अवस्था आदि का अधिक चित्रण है। इसमें इतिहास कम, ऐतिहासिक यथार्थ पर आधारित कल्पना अधिक है।

जीवनीपरक उपन्यास पर भी यही बात लागू होती है। उदाहरण के लिए आप **हजारी प्रसाद द्विवेदी** के **'बाणभट्ट की आत्मकथा'** या **अम त लाल नागर** के **'मानस का हंस'** को लें। हमें विश्वास है कि आपने ये उपन्यास पढ़े होंगे। यदि अब तक न पढ़ें हों तो आशा है भविष्य में आपको इन्हें पढ़ने का मौका ज़रूर मिलेगा। **'बाणभट्ट की आत्मकथा'** में प्रसिद्ध संस्कृत गद्य लेखक **बाणभट्ट** की और **'मानस का हंस'** में **गोस्वामी तुलसीदास** की जीवनी को आधार बनाया गया है। उनके जीवन के संबंध में जितनी बातें इतिहास या किवदंतियों से ज्ञात हैं उन्हें तो उपन्यासकारों ने ग्रहण कर लिया है, पर उनके आधार पर अपनी कल्पना को उन्होंने खूब स्वतंत्रता दी है। ध्यान केवल इस बात का रखा गया है कि कल्पनाजन्य कोई भी प्रसंग या विचार उस युग की भावना या यथार्थ का विरोधी न हो। यदि कोई प्रसंग विशुद्ध रूप से कल्पित भी है तो इसका तर्कसंगत होना आवश्यक है।

आशा है आप अब ऐतिहासिक उपन्यास के कल्पनाप्रसूत कथा-संसार का अर्थ अच्छी तरह समझ गए होंगे। सूत्र रूप में इसे यों भी रख सकते हैं:

(क) सामान्य उपन्यास का कथा-संसार विशुद्ध रूप से कल्पनाजन्य होता है। उसके पात्र सर्वथा कल्पित होते हैं। स्थानों के नाम वास्तविक भी हो सकते हैं और काल्पनिक भी। स्थानों के विवरण में तथ्य और कल्पना दोनों का मिश्रण संभव है। कभी-कभी सड़कों, गलियों और मकानों के नाम तथा नंबर तो वास्तविक होते हैं पर उनमें रहने वाले पात्र काल्पनिक ही होते हैं।

(ख) ऐतिहासिक उपन्यास की कथा इतिहास पर आधारित होती है, पर उसमें इतिहास का अंश बहुत कम होता है। उपन्यासकार इतिहास के पात्रों और घटनाओं में कोई परिवर्तन नहीं करता, पर पात्रों के भावजगत, मनोविज्ञान, विचारधारा आदि का अपनी कल्पना से निर्माण करता है। वह गौण पात्रों की कल्पना से स ष्टि करके ऐतिहासिक युग के यथार्थ का उद्घाटन करता है।

उपन्यास का आकार

सामान्य उपन्यास और ऐतिहासिक उपन्यास के अंतर को समझ लेने के बाद अब यह जानना भी जरूरी जान पड़ता है कि कोई उपन्यासकार उपन्यास क्यों लिखता है। उपन्यास में उसका रचयिता अपने अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों को व्यक्त करना चाहता है। वस्तुतः अनुभव, संवेदना और विचार की नवीनता और मौलिकता के कारण ही उपन्यास में नयापन आता है, जिससे अंग्रेज़ी शब्द नॉवेल की सार्थकता बनती है। उपन्यास पद में 'नएपन' का संकेत न होने पर भी यह विशेषता उसमें अंतर्निहित है।

उपन्यास का आकार कितना बड़ा हो, इसका निर्धारण आज तक नहीं हो सका है। यह संभव भी नहीं है। **ई. एम. फोर्स्टर** नामक अंग्रेज़ विचारक ने उपन्यास के लिए कम-से-कम पचास हजार शब्दों के आकार का सुझाव दिया है। पर इस शब्द-संख्या पर उनका भी अधिक ज़ोर नहीं है। यह शब्द-संख्या कम भी हो सकती है, पर कितनी कम, इसका निर्णय करना कठिन है। अतः उन्होंने यह कहकर संतोष किया है कि उपन्यास का आकार पर्याप्त लंबा होना चाहिए।

उपन्यास की परिभाषा

अब तक के विचार-विमर्श के आधार पर हम उपन्यास की एक कामचलाऊ परिभाषा

भी बना सकते हैं। आइए, कोशिश करें। अब तक उपन्यास की निम्नलिखित विशेषताएँ हमारे सामने आ चुकी हैं:

1. उपन्यास में एक **कथा** होती है।
2. कथा **गद्‌य** में, और **लिखितरूप** में होती है।
3. कथा कल्पनाप्रसूत होती है।
4. कथा यथार्थ होती है।

इन विशेषताओं को एक साथ जोड़ें तो हम यह कह सकते हैं कि उपन्यास पर्याप्त आकार की एक लिखित और कल्पनाप्रसूत किंतु यथार्थ-बोध से संपन्न कथा होती है, जिसमें उपन्यासकार का अनुभव, संवेदना और विचार, मौलिकता के साथ अभिव्यक्त होते हैं। कृपया आप यह मानने की भूल न करें कि यह उपन्यास की कोई सर्वमान्य परिभाषा है। वस्तुतः आज तक उपन्यास की कोई सर्वमान्य परिभाषा बनी ही नहीं है। पर इस कामचलाऊ परिभाषा से आप पुस्तकों के ढेर में उपन्यास की पहचान तो कर ही सकते हैं।

(ख) उपन्यास और कहानी में अंतर

पहले हम यह समझ लें कि यहाँ **कहानी** पद का प्रयोग **कथा** या **किस्सा** के रूप में नहीं किया जा रहा। **कहानी** एक आधुनिक साहित्यिक विधा है। अंग्रेज़ी में इसे **शॉर्ट स्टोरी** कहते हैं। हिंदी में भी इसके लिए 'छोटी कहानी' पद का कभी-कभी प्रयोग होता है, पर अधिक प्रचलन **कहानी** पद का ही है। इसके चलते कभी-कभी शुद्‌ध 'कथा' और 'कहानी' विधा में अर्थ का भ्रम भी होता है। इसलिए इस संबंध में विशेष सावधानी बरतने की ज़रूरत है।

उपन्यास और कहानी (अंग्रेज़ी की शार्ट स्टोरी) दोनों एक ही प्रजाति की साहित्य की विधाएँ हैं। कल्पनाप्रसूत, यथार्थ गद्‌य कथा दोनों में होती है। अनुभव, संवेदना और विचार की अभिव्यक्ति की द ष्टि से भी दोनों समान हैं। पर दोनों में परस्पर भिन्नता भी है। पहली प्रमुख भिन्नता उनके आकार को लेकर है। उपन्यास का आकार बड़ा होता है, कहानी का छोटा, पर बड़ा और छोटा सापेक्ष शब्द हैं। इन्हें एक-दूसरे से अलग करने वाली कोई निश्चित रेखा नहीं है। उपन्यास के लिए यदि निम्नतम सीमा पचास हजार शब्दों के आसपास की और कहानी के लिए अधिकतम सीमा एक हजार-पाँच सौ शब्दों के आसपास की मान ली जाए (यद्यपि यह भी विवादास्पद ही होगा) फिर भी 1,500 और 50,000 शब्दों के बीच की कथा-पुस्तक को कौन-कौन सा नाम दिया जाएगा, यह मुश्किल बनी ही रहेगी। 'लंबी कहानी' और 'लघु उपन्यास' के नाम से जानी जाने वाली विधाएँ इस बीच के साहित्य-रूप का प्रतिनिधित्व करती हैं। पर, ये भी **उपन्यास** और **कहानी** के आकार का कोई विवादरहित समाधान नहीं प्रस्तुत कर पातीं। अतः **उपन्यास** और **कहानी** के आकार की समस्या को तरल अवस्था में ही छोड़ देना अच्छा होगा। पर यह तो मानना ही पड़ेगा कि उपन्यास आकार की द ष्टि से 'बड़ा' और कहानी 'छोटी' होती है। **उपन्यास** और **कहानी** को एक-दूसरे से अलग करने वाली सर्वप्रमुख विशेषता उनके केंद्रीय विषय का स्वरूप है। एक मानक उपन्यास का केंद्रीय विषय प्रायः व्यापक होता है, जबकि एक मानक 'कहानी' का विषय कोई एक संवेदना, कोई एक अनुभव या

कोई एक विचार होता है। उपन्यास में अनुभवों, संवेदनाओं और विचारों की श्रृंखला होती है, जबकि कहानी में उसकी एक ही इकाई रहती है।

उपन्यास और **कहानी** का दूसरा प्रमुख अंतर यह है कि मानक उपन्यास में कथा का विकास होता है, जबकि मानक 'कहानी' में कथा का विकास नहीं दिखाया जाता। विकास यदि दिखाई भी पड़ता है तो बहुत थोड़ा। उपन्यास में समय का विस्तार तो होता ही है, जबकि कहानी में समय या तो किसी क्षण तक सीमित होता है या उसका प्रसार कुछ घंटों या दिनों तक सीमित होता है। इसी प्रकार उपन्यास की कथा, समय या दिन की सीमा कई दिशाओं में फैली हुई होती है, जिसकी गुंजाइश 'कहानी' में नहीं होती।

इसी से मिलता-जुलता **उपन्यास** और **कहानी** का एक अंतर यह है कि उपन्यास में एक साथ कई कथाएँ अग्रसर होती हैं तथा उनमें अनेक प्रसंग होते हैं। 'कहानी' में अनेक कथाओं की बात तो अलग है, अनेक प्रसंग भी नहीं हो सकते। कहानी के लिए एक ही प्रसंग, यहाँ तक कि एक ही क्रिया-व्यापार काफ़ी होता है।

आशा है, आप अब **उपन्यास** और **कहानी** का अंतर समझ गए होंगे। संक्षेप में इसे दोहरा लें तो अच्छा हो।

समानताएँ

(क) उपन्यास और कहानी एक ही प्रजाति की विधाएँ हैं।

(ख) दोनों गद्य में लिखे जाते हैं।

(ग) दोनों में किसी-न-किसी रूप में कथा होती है।

(घ) दोनों जीवन के यथार्थ से जुड़े हैं।

(ङ) दोनों लेखक के अनुभव, संवेदना और विचार की अभिव्यक्ति करते हैं।

अंतर

(क) उपन्यास की कथा लंबी और वैविध्यपूर्ण होती है।

(ख) उपन्यास की कथा काल और दिनों में फैली हुई होती है, जबकि कहानी की कथा किसी क्षण अथवा कुछ घंटों और प्रायः एक स्थान अथवा बहुत छोटे क्षेत्र से जुड़ी होती है।

(ग) उपन्यास में कथा का विकास होता है, जबकि 'कहानी' में कथा का विकास नहीं होता, अथवा बहुत कम विकास होता है।

(घ) उपन्यास में एक से अधिक कथाएँ और अनेक प्रसंग होते हैं जबकि 'कहानी' में एक से अधिक कथाओं की बात तो दूर रही, प्रसंग भी एक ही होता है। यदि किसी कहानी में एक से अधिक प्रसंग होते भी हैं तो वे मुख्य प्रसंग के अभिन्न अंग के रूप में होते हैं।

(ङ) उपन्यास का केंद्रीय विषय व्यापक और बहुआयामी होता है, जबकि 'कहानी' का कोई एक अनुभव, संवेदना या विचार ही पर्याप्त होता है।

32.2 उपन्यास का पठन

सर्वप्रथम हम यह जान लें कि उपन्यास कैसे पढ़ना चाहिए। जब भी हमारे सामने कोई किताब आती है तो वह कुछ छपे हुए पृष्ठों के संग्रह के रूप में ही होती है। पृष्ठों पर

मुद्रित शब्द होते हैं, जो वाक्यों में निबद्ध होते हैं। शब्दों की क्रम-भिन्नता के कारण गद्‌य और काव्य के वाक्यों में भिन्नता आ जाती है। इस भिन्नता के और भी कारण होते हैं, जिन्हें आप पिछले पाठों में पढ़ चुके हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि कुछ रचनाएँ गद्‌य में होती हैं और कुछ काव्य अथवा कविता में। गद्‌य में वाक्यों की बनावट हमारे लिए सुपरिचित होती है, क्योंकि हम अपनी दैनिक बातचीत में भाषा के गद्‌यरूप का ही प्रयोग करते हैं। काव्य में वाक्यों की बनावट गद्‌य से भिन्न होती है। इस कारण गद्‌य और काव्य पढ़ने के तरीके भी एक-दूसरे से अलग हो जाते हैं। उपन्यास गद्‌य में होता है, अतः उसमें आए वाक्यों का अर्थ समझने में अधिक कठिनाई नहीं होती। उपन्यास में कठिन या अपरिचित शब्दों का प्रयोग प्रायः कम होता है। इस कारण भी उसे समझने में कम कठिनाई होती है। कथा के कारण भी उपन्यास पढ़ना आसान और सुखद होता है।

इसका यह अर्थ नहीं कि उपन्यास पढ़ने के लिए किसी विशेष योग्यता की ज़रूरत नहीं पड़ती। हमें यह याद रखना चाहिए कि उपन्यास और कथा दोनों एक नहीं है। कथा पढ़ने के लिए अधिक योग्यता की ज़रूरत नहीं पड़ती। उपन्यास पढ़ने के लिए कुछ अधिक योग्यता चाहिए। उपन्यास पढ़ना भी एक सर्जनात्मक क्रिया है। उपन्यासकार अपनी रचना में एक कथा-संसार का निर्माण करता है। यह निर्माण शब्दों के माध्यम से होता है। ये ही शब्द मुद्रित होकर पुस्तक का रूप धारण करते हैं। उपन्यास के रूप में ऐसी ही एक किताब आपके हाथों में है। छपे हुए प ष्ठों के पठन से ही आपका मस्तिष्क एक कथा-संसार का निर्माण करता है। वस्तुतः उपन्यास पढ़ते समय आप भी एक रचनाकार होते हैं। यदि आपमें यह सर्जन-क्षमता न होती तो आपके मानस में इस कथा-संसार का निर्माण होता ही नहीं, उदाहरण के लिए आप अपनी ही उम्र के किसी नवसाक्षर को 'विराटा की पद्‌मिनी' पढ़ने को कहें। वह उसे नहीं पढ़ पाएगा और यदि किसी प्रकार पढ़ भी ले तो उसके पल्ले कुछ भी न पड़ेगा। इसका कारण यह है कि उसका मस्तिष्क उतना विकसित नहीं है कि वह छपे शब्दों के द्वारा कथा-संसार की रचना कर सके।

जब आप कोई उपन्यास पढ़ना शुरू करते हैं तो आपके मस्तिष्क में या तो कोई कथा प्रस्तुत होती है या कोई द श्य उभरता है। आप अनुभव करते हैं कि कोई अद श्य कथाकार आपको कोई कथा सुना रहा है। आपके मानस-पटल पर किसी एक या एकाधिक पात्रों की कथा उभरती चली जाती है। कुछ देर के बाद आप अनुभव करते हैं कि कोई द श्य आपके सामने है, जिसमें कथा के कुछ पात्र आपस में बातचीत कर रहे हैं। बातचीत के समय उनके हाव-भाव और क्रिया-व्यापार का बिंब भी शब्दों के द्वारा बनता दिखाई देता है, पर कथा कहने वाला बिल्कुल गायब है, रंगमंच के पीछे, नेपथ्य में चला गया है। यह सिलसिला पूरे उपन्यास में चलता रहता है। पर कथा के प्रवाह में आप इस प्रकार बहते रहते हैं कि इस परिवर्तन का आपको पता भी नहीं चलता। भविष्य में आप जब भी कोई उपन्यास पढ़ें तो इस बात पर अवश्य ध्यान दें कि कहाँ कोई अद श्य कथाकार आपको कथा सुना रहा है और कहाँ आप बिना कथाकार की उपस्थिति का बोध किए किसी द श्य को अपने मन की आँखों से देख रहे हैं।

उपन्यास पढ़ते हुए एक और बात का ध्यान रखना ज़रूरी है। अधिकतर उपन्यासों में

एक साथ कई कथाएँ अग्रसर होती हैं। उनमें कोई एक कथा मुख्य होती है और अन्य कथाएँ गौण। मुख्य कथा को **आधिकारिक** कथा भी कहते हैं। गौण कथाएँ भी उपन्यास के विषय से संबद्ध होती हैं। वे कभी तो मुख्य कथा में समाप्त होती हैं और कभी मुख्य कथा के साथ अंत तक चलती रहती हैं। उपन्यासकार किसी एक कथा को लगातार कई परिच्छदों में नहीं प्रस्तुत करता। यदि उपन्यास में तीन कथाएँ हैं तो वे प्रायः पहले तीन परिच्छेदों में अलग-अलग प्रस्तुत की जाती हैं। अगले परिच्छेदों में उनका बारी-बारी से विकास दिखाया जाता है। प्रथम परिच्छेद की कथा यदि चौथे, छठे, सातवें, नवें.......परिच्छेदों में अग्रसर होती है तो दूसरे परिच्छेद की कथा पाँचवें, आठवें, दसवें.....परिच्छेदों में और तीसरे परिच्छेद की कथा क्रमशः ग्यारहवें, बारहवें... ......परिच्छेदों में प्रस्तुत की जा सकती है। पर इसका कोई निर्धारित और स्थिर नियम नहीं है। विभिन्न कथाओं के महत्त्व के अनुपात में उनका परिच्छेदों में वितरण होता है। आपको उपन्यास पढ़ते समय सावधानी यह बरतनी है कि जब कोई कथा पहले या दूसरे परिच्छेद में समाप्त होकर चौथे या पाँचवे परिच्छेद में फिर शुरू होती है तो उनका संबंध स्थापित करने में कोई चूक न हो। दरअसल आपको अपने मस्तिष्क को सतर्क रखना होगा कि वह एक से अधिक कथाओं को साथ-साथ, युगपत रूप में अग्रसर होता हुआ अनुभव करे। इसे पारिभाषिक शब्दावली में **युगपत कथा संक्रमण प्रविधि** कहते हैं, जो प्रायः सभी उपन्यासों में पाई जाती है।

उपन्यास में अनेक पात्र होते हैं। पूरी कथा को समझने के लिए पात्रों का नाम स्मरण रखना जरूरी होती है। यदि आप अपनी स्मरण शक्ति से पात्रों के नाम याद रख सकें तो बहुत अच्छा, अन्यथा पात्रों के नाम किसी कागज पर लिखते जाएँ और जब उनकी कथा अगले परिच्छेदों में आए तो कथा की संगति जोड़ लें। पात्र क्या बोलते हैं या मन में क्या सोचते हैं, इसे भी स्मरण रखने की कोशिश करें, ताकि उनके चरित्रों को समझने में सहायता मिले। पर इस बात को कभी न भूलें कि उपन्यास स्वस्थ मनोरंजन का साधन है। अतः सहज रीति से पढ़ें और उसका आनंद लें। दूसरी बार, जब उपन्यास का विवेचन और मूल्यांकन करना हो, उसे अधिक सतर्कतापूर्वक, आलोचनात्मक द ष्टि से पढ़ें और उस पर अपने विचार व्यक्त करें। दूसरी बार के पठन में यदि कागज पेंसिल का इस्तेमाल करें और अपनी प्रतिक्रियाएँ लिखते जाएँ तो उपन्यास के विवेचन-मूल्यांकन में सहायता मिलेगी।

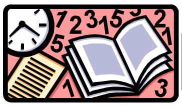

32.3 मूलपाठ

आइए, 'विराटा की पद्‌मिनी' नामक उपन्यास के मूलपाठ का एक बार वाचन कर लें। इसकी भाषा-शब्द और वाक्य-रचना प्राचीन समय की बुंदेलखंडी है, जो आज की भाषा से भिन्न है। इस उपन्यास को अध्ययन की सुविधा की द ष्टि से चार इकाइयों में विभाजित किया गया है और बीच में कुछ पाठगत प्रश्न दिए गए हैं यदि आप उनके उत्तर दे देते हैं और उत्तरमाला से मिलान करने पर सही पाते हैं तो बहुत अच्छा है और यदि नहीं दे पाते तो निराश न हों इकाई को पुनः ध्यान से पढ़िए और सही उत्तर देने का प्रयास कीजिए। तो आइए, उपन्यास को एक बार ध्यानपूर्वक पढ़ जाते हैं।

टिप्पणी

'विराटा की पद्‌मिनी'

खंड-एक

मकर-संक्रांति के स्नान के लिए दलीप नगरी के राजा नायक सिंह पहूज में स्नान करने के लिए विक्रमपुर आए। विक्रमपुर पहूज नदी के बाएँ किनारे पर बसा हुआ था। नगर छोटा-सा था, परंतु राजा और राजसी ठाठ-बाठ के इकट्‌ठे हो जाने से चहल-पहल और रौनक बहुत हो गई थी।

दूसरे दिन दोपहर के समय स्नान का मुहूर्त था। राजा के कुछ दरबारी संध्या के उपरांत राजभवन में मुज़रा के बहाने गपशप के लिए आ गए। जनार्दन शर्मा मंत्री न था, तथापि राजा उसे मानते बहुत थे। वह भी आया।

राजा ने जनार्दन से कहा, 'पहूज में तो पानी बहुत कम है। डुबकी लगाने के लिए पीठ के बल लेटना पड़ेगा।'

नायक सिंह का पहूज में स्नान

'हाँ महाराज,' जनार्दन ने सकारा, 'पानी मुश्किल से घुटनों तक होगा। थोड़ी दूर पर एक कुंड है, यदि मर्जी हो तो उसमें स्नान हो।' अधेड़ अवस्था का दरबारी लोचन सिंह, जो अपने सनकी स्वभाव के लिए विख्यात था, बोला, 'दो हाथ के लंबे-चौड़े उस कुंड में डुबकी लगाकर कीचड़ उछालना होली के हुल्लड़ से कम थोड़े ही होगा।'

जिस समय लोचन सिंह राजा के सामने बातचीत करने के लिए मुँह खोलता था, अन्य दरबारियों का सिर घूमने लगता था। लोचन सिंह की बात पर राजा ने गरम होकर कहा, 'तब तुम सबको कल कोस-भर नदी खोद कर गहरी करनी पड़ेगी।

लोचन सिंह बोला, 'मैं अपनी तलवार की नोंक से कोस-भर तो क्या बेतवा को भी खोद सकता हूँ हुक्म-भर हो जाए।'

राजा का कोप तो कम न हुआ, परंतु खीज बढ़ गई। सैयद आगा हैदर राजवैद्य एक सावधान दरबारी था। मौका देखकर बोला 'महाराज की तबीयत कुछ दिनों से खराब है। धार्मिक कार्य थोड़े जल से भी पूरा किया जा सकता है। अगर मुनासिब समझा जाए, तो गहरे, ठंडे पानी में देर तक डुबकी न ली जाए।

लोचन सिंह तुरंत बोला, 'जितना पानी इस समय पहूज में है, वह बीमारी को सौ गुना कर देने के लिए काफ़ी है।'

राजा ने द ढ़तापूर्वक कहा, 'यही तो देखना है लोचन सिंह। बीमारी बढ़ जाए तो हकीमजी के हुनर की परख हो जाए और यह भी मालूम हो जाए कि तुम मुझे पानी में एक हजार डुबकियाँ लगाने से कैसे रोक सकते हों?'

लोचन सिंह बोला, 'हकीमजी का कहना न मानकर जब महाराज को डुबकी लगाने पर उतारू देखूँगा, तब अपना गला काट कर उसी जगह डाल दूँगा, फिर देखा जाएगा।'

लोचन सिंह की सनक से राजा की भड़क का ज्वार बढ़ा। बोला, 'शर्माजी, पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। पहले तुमने नहीं बतलाया, नहीं तो उस कंबख्त नदी की तरफ सवारी न जाती।'

'महाराज!' जनार्दन ने सकपका कर कहा, 'मुझे स्वयं पहले से मालूम न था।'

राजा बोले, 'बको मत। तुम्हारे षड्‌यंत्रों को खूब समझता हूँ। कुंजर सिंह को बुलाओ।

शब्दार्थ:

मकर-संक्रांति– माघ महीने में 14 जनवरी को मनाया जाने वाला पर्व संक्रांति, जब सूर्य उत्तरायण होता है। उस दिन लोग नदियों में स्नान करते हैं और मेला लगता है।

पहूज – बुंदेलखंड की एक नदी

मुहूर्त – कार्य हेतु निश्चित किया हुआ विशिष्ट समय।

कुंजर सिंह का आगमन

कुंजर सिंह राजा की दासी का पुत्र था। वह राज्य का उत्तराधिकारी न था, तो भी राजा उसे बहुत चाहते थे। राजा के दो रानियाँ थीं। बड़ी रानी उसे चाहती थी, इसलिए छोटी का उस पर प्यार न था। राजा बहुत व द्ध न हुए थे। इधर-उधर के कई रोगों के होते हुए भी राजवैद्य ने आशा दिला रखी थी कि उत्तराधिकारी उत्पन्न होगा। इसलिए राजा ने दूसरा विवाह भी कर लिया था और दासियों को बढ़ाने की प्रव त्ति में भी, चाहे पागलपन से प्रेरित होकर चाहे किसी प्रेरणावश, बहुत अधिक कमी नहीं हुई थी।

कुंजर सिंह आया। बीस-इक्कीस वर्ष का सौंदर्यमय बलशाली युवा था। राजा ने उसे अपने पास बिठा कर कहा, 'कल पहूज में स्नान न होगा। उसमें पानी नहीं है। हमको व्यर्थ ही यहाँ लिवा लाए।'

आत्मरक्षा में हकीम को कहना पड़ा, 'थोड़ी देर के स्नान से कुछ नुकसान न होगा।' राजा बोले, 'तब पालर की झील में डुबकी लगाई जाएगी, बड़े सवेरे डेरा पालर पहुँच जाए।'

पालर ग्राम विक्रमपुर से चार कोस की दूरी पर था। चारों ओर पहाड़ों से घिरी हुई पालर की झील में गहराई बहुत थी। उसमें डुबकियाँ लगाने के परिणाम का अनुमान करके आगा हैदर काँप गया। बोला, 'ऐसी मर्जी न हो। झील बहुत गहरी है और उसका पानी बहुत ठंडा है।'

'और तुम्हारी दवा घूरे पर फेंकने लायक।' राजा ने हँसकर और तुरंत गंभीर होकर कहा, 'तुम्हारे कुश्त में कुछ गुण होगा और तुम्हारी शेखी में कुछ सच्चाई, तो झील में नहाने से कुछ न बिगड़ेगा।'

जनार्दन विषयांतर के प्रयोजन से बोला, 'अन्नदाता, सुना जाता है पालर में एक दाँगी के घर दुर्गाजी ने अवतार लिया है। सिद्धि के लिए उनकी बड़ी महिमा है।'

'तुमने आज तक नहीं बतलाया?' राजा ने कड़क कर पूछा और तकिए पर अपना सिर रख लिया।

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'सुनी हुई खबर है। गलत निकलती है तो कहने वाले को यों ही अपने सिर की कुशल के लिए चिंता करनी पड़ती।'

राजा ने जनार्दन से प्रश्न किया, 'इस अवतार को हुए कितने दिन हो गए?'

'—सुनता हूँ, अन्नदाता, कि वह लड़की अब सोलह-सत्रह वर्ष की है।' जनार्दन ने राजा को प्रसन्न करने के लिए उत्तर दिया, 'पालर में तो उसके दर्शनों के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं।'

खंड-दो

दूसरे दिन राजा ने पालर की विशाल झील में, जो आजकल गढ़मऊ की झील के नाम से विख्यात है, खूब स्नान किया। स्नान करने के बाद कुंजर सिंह को उक्त अवतार के दर्शन की लालसा हुई। पंद्रह-सोलह वर्ष पहले नरपति सिंह दाँगी के घर लड़की उत्पन्न हुई थी। जब वह गर्भ में थी, उसकी माँ विचित्र स्वप्न देखा करती थी। लड़की के उत्पन्न होने पर पिता को ऐसा जान पड़ा मानो प्रकाशपुंज ने घर में जन्म लिया हो। उसकी माँ लड़की को जन्म देने के कुछ मास उपरांत मर गई।

शब्दार्थः

कुश्त – घूरे, कूड़े का ढेर
विषयांतर – विषय परिवर्तन
दाँगी – बुंदेलखंड की एक विशेष जाति
विख्यात – प्रसिद्ध
प्रकाश पुंज – प्रकाश का ढेर
उपरांत – बाद

टिप्पणी

नरपति दुर्गा का भक्त था और जागते हुए भी स्वप्न-से देखा करता था। गाँव वाले उसे श्रद्धा और भय की द ष्टि से देखते थे।

कुमुद का जन्म

वह कन्या रूप-राशि थी। उस पर देवत्व का आरोप होने में विलंब न हुआ। अविश्वास करने के लिए कोई स्थान न था। बालिका दाँगी की लड़की में इतना रूप, इतना सौंदर्य कभी न देखा गया था। गाँव के मंदिर में दुर्गा की मूर्ति थी, शिल्प की कला उसे वह रूपरेखा नहीं दे पाई थी, जो इस बालिका में सहज ही भासित होती है। ज्यों-ज्यों उसने वय प्राप्त किया त्यों-त्यों अंग सुडौल होते गए, सौंदर्य की विभूति बढ़ती, निखरती गई और गाँव वाले नरपति सिंह की उस कन्या को किसी निर्भ्रांत सिद्धांत की तरह स्वीकार करते गए। कभी विश्वास से फल हुआ और कभी नहीं भी। पहले बालिका की पूजार्चा नरपति सिंह के ही घर पर होती रही, पीछे बालिका द्वारा मंदिर में स्थापित मूर्ति की पूजा कराई जाने लगी।

कुंजर सिंह के मन में देवी के दर्शन की इच्छा तो हुई, परंतु लज्जाशील होने के कारण अकेले जाने की हिम्मत नहीं पड़ी। कोई शायद पूछ बैठे, 'क्यों आए? देवी अवश्य है, युवती भी है।' संयोग से लोचन सिंह मिल गया। साथ के लिए लोचन सिंह से कहा, 'दाऊजू, देवी-दर्शन के लिए चलते हो?'

उसने उत्तर दिया, 'किन बातों में पड़े हो राजा? दाँगी की लड़की दुर्गा नहीं होती। देहात के भूतों ने प्रपंच बना रखा होगा।'

कुंजर सिंह की इच्छा ने ज़रा हठ का रूप धारण किया। बोला, 'अवतार के लिए कोई विशेष जाति नियुक्त नहीं है, देख न लो।'

कुंजर सिंह द्वारा कुमुद के दर्शन

लोचन सिंह ने विरोध नहीं किया। आगे-आगे लोचन सिंह और पीछे-पीछे कुंजर सिंह नरपति सिंह के मकान का पता लगाकर चले। वह घर पर मिल गया। लोचन सिंह ने बिना किसी भूमिका के प्रस्ताव किया, 'तुम्हारी लड़की देवी है? दर्शन करेंगे।'

नरपति की बड़ी-बड़ी लाल आँखों में आश्चर्य छिटक गया। बोला, 'कहाँ के हो?'

'दलीप नगर के राजकुमार।' उत्तर देते हुए लोचन सिंह ने कुंजर की ओर इशारा किया।

'इस तरह दर्शन करने के लिए तो यहाँ देवता भी नहीं आते।' संदेह के स्वर में नरपति ने कहा।

'तब किस तरह देख पाएँगे?'

'मंदिर में जाओ।'

कुंजर सिंह की हिम्मत टूट गई। लौट पड़ने की इच्छा हुई। परंतु पैर वहीं अड़-से गए। धीरे से लोचन सिंह से कहा, 'तो चलो दाऊ' और नरपति के खुले हुए घर की ओर मुँह फेर लिया। पौर के धुँधले प्रकाश में उसे एक मुख दिखाई पड़ा, जैसे अँधेरी रात में बिजली चमक गई हो। आँखों में चकाचौंध-सी लग गई।

लोचन सिंह ने कुंजर के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया। नरपति से बोला, 'मंदिर में पाषाण-मूर्ति के दर्शन होंगे। हम लोग यहाँ तुम्हारी लड़की को, जो देवी का अवतार कही जाती हैं, देखने आए हैं।'

प्रस्ताव की इस स्पष्ट भाषा के कारण कुंजर सिंह को पसीना-सा आ गया।

नरपति सिंह ने ज़रा सोच कर कहा, 'हमारी बेटी देवी है, इसमें ज़रा भी संदेह, जो भी

शब्दार्थ :

रूप राशि – अत्यंत रूपवती, बहुत सुंदर
वय – उम्र, यौवन
निर्भ्रांत – जिसके संबंध में कोई भ्रम न हो, अटल
पूजार्चा – पूजा और वंदना, पूजा और अर्चना, पूजा–पाठ
प्रपंच – ढोंग
पौर – ड्योढ़ी, दरवाजा

करता है, उसका सर्वनाश तीन दिन के भीतर ही हो जाता है। तुम लोगों को यदि दर्शन करना हो, तो मंदिर में चलो। यहाँ दर्शन न होंगे। कोई मेला या तमाशा नहीं है। नारियल, मिठाई, पुष्प, गंध इत्यादि ले कर चलो, मैं वहाँ लिवा कर आता हूँ।'

इतने ही में दो आदमी और आए। वेशभूषा से मुसलमान सैनिक जान पड़ते थे। उनमें से एक ने कुंजर से पूछा। 'क्योंजी, नरपति दाँगी का यही मकान है?'

'हाँ, क्यों?'

'देवी के दर्शनों को आए हैं?'

बोला, 'होगा कहीं, क्या मालूम।'

कुंजर को यह अच्छा न मालूम हुआ। तीव्र उत्तर न दे सकने के कारण उसे अपने ऊपर ग्लानि हुई। वह कहने और कुछ करने के लिए आतुर हुआ।

चित्र : लोचन सिंह और कुंजर सिंह का नरपति सिंह से मिलना

वे दोनों उसी चबूतरे पर बैठ गए। कुछ क्षण उपरांत लोचन सिंह एक पोटली में पूजन की सामग्री बाँधे हुए आ गया।

लोचन और कुंजर के मंदिर पहुँचने के आधी ही घड़ी पीछे नरपति अपनी लड़की को लेकर आ गया। वे दोनों मुसलमान सैनिक भी पीछे-पीछे आकर मंदिर के बाहर बैठ गए। कुंजर सिंह ने देखा। मन खीझ गया। परंतु नरपति के ऊपर उन दोनों सैनिकों की उपस्थिति का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

'पूजा करो।' नरपति ने आदेश दिया।

लोचन सिंह ने बिना संकोच के लड़की को ऊपर से नीचे तक ध्यान से देखा। उसने आँखें नीची कर लीं। बोला 'किसकी पूजा पहले होगी?'

नरपति ने मूर्ति की ओर संकेत किया।

कुंजर ने भक्ति के साथ मूर्ति का पूजन किया।

'इनका क्या नाम हैं?' लोचन ने पूछा।

'दुर्गा, दुर्गा का अवतार।' उत्तर मिला।

कुंजर प्रश्न और उत्तर से सिकुड़-सा गया, परंतु नाम जानने की उठी हुई उत्सुकता ठंडी नहीं पड़ी। लड़की के मुख पर इस बेधड़क प्रश्न से हलकी लालिमा दौड़ आई। लोचन ने फिर शिष्टता के साथ पूछा, 'यह नाम नहीं, यह तो गुण है। घर में इस बेटी को क्या कहते हो?

'कुमुद-पर तुम्हें इससे क्या? पूजा हो गई। अब चढ़ावा चढ़ाकर यहाँ से जाओ। दूसरों को आने दो।' नरपति ने कहा।

कुंजर ने अपने गले से सोने की माला और उँगली से हीरे की अँगूठी उतार कर मूर्ति के चरणों में चढ़ा दी। नरपति ने प्रसन्न होकर माला हाथ में ले ली और अँगूठी लड़की को पहना दी, जिसका नाम उसके मुँह से कुमुद निकल पड़ा था। कुमुद ने पहले हाथ

टिप्पणी

थोड़ा पीछे हटाया। परंतु पिता की व्यग्रता ने उसकी उँगली को अँगूठी में पिरो दिया।

नरपति ने कुंजर से पूछा, 'आप कौन हैं?'

कुंजर के मुँह से नम्रतापूर्वक निकला, 'राजकुमार'।

लोचन ने गर्व के साथ कहा, 'यह हैं दलीप नगर के महाराजाधिराज के कुमार राजा कुंजर सिंह।'

कुमुद का कुंजर सिंह को संकोच के साथ देखना

कुमुद ने धीरे से गरदन उठाकर कुंजर सिंह की ओर पैनी निगाह से देखा। लालिमा मुख पर नहीं दौड़ी और न आँखें नीची पड़ी। फिर सरल, स्थिर द ष्टि से मंदिर के एक कोने की ओर देखने लगी।

खंड-तीन

लोचन सिंह और कुंजर सिंह मंदिर के बाहर निकल आए। कुमुद भीतर ही बैठी रही। नरपति दरवाजे के पास खड़ा होकर मुसलमान सैनिकों से बोला, 'पूजा करनी हो तो कर लो, नहीं तो हम घर जाते हैं। ज़्यादा देर नहीं बैठेंगे।'

'जाइए,' उनमें से एक बोला, 'हम लोगों ने तो यहीं से दीदार कर लिया'।

'तब क्यों बैठे हो?' कुंजर ने स्पष्ट स्वर में पूछा।

उसने लापरवाही के साथ उत्तर दिया, 'चले जाएँगे, बैठे हैं, किसी का कुछ लिए तो हैं नहीं।'

कुंजर की भ कुटी टेढ़ी हो गई। 'जाओ, अभी जाओ।' आपे से बाहर होकर बोला, 'यह देवी का मंदिर है, दिल्लगी की जगह नहीं।'

नरपति ने ढले हुए कंठ से कहा, 'झगड़ा मत करिए, पूजन के लिए आए होंगे।'

कुंजर सिंह का मुसलमान सिपाहियों से युद्ध तथा कुमुद का बीच बचाव का प्रयास।

'पूजन के लिए नहीं आए हैं', दूसरे सिपाही ने कहा, 'मन बहलाने आए हैं। अपना काम देखो, हम भी चले जाएँगे। कड़े होने की जरूरत नहीं हैं, क्योंकि हमारी ज़बान और तेग दोनों ही कड़े हैं।'

लोचन सिंह दाँत पीसकर बोला, 'उस जबान और तेग दोनों के टुकड़े कर डालने की ताकत हमारे हाथ में है। सीधे-सीधे चले जाओ वरना कौए यहाँ से हड्डियाँ उठाकर ले जाएँगे।

दोनों सिपाहियों ने अपनी-अपनी तलवारें खींच लीं। लोचन सिंह की उनसे पहले ही निकल चुकी थी।

नरपति मंदिर की ओर मुँह करके चिल्ला कर बोला, 'भाई, भाई! निवारण करो।'

कुमुद दरवाजे के पास आ गई। कुंजर से बोली, 'राजकुमार।'

इन शब्दों में जो प्रबलता थी, जो आदेश था, उसने कुंजर को कर्त्तव्यारूढ़ कर दिया। तुरंत दोनों ओर की खिंची तलवारों के बीच पहुँच कर बोला, 'यहाँ पर नहीं, किसी उपयुक्त स्थान पर।'

कुमुद एक कदम आगे बढ़ कर एक हाथ आकाश की ओर ज़रा-सा उठा कर बोली, 'मत लड़ो, अपने-अपने घर जाओ। पुण्य-पर्व है, जो लड़ेगा, दुख पावेगा।'

दोनों मुसलमान सैनिकों ने अपनी तलवार नीची कर लीं। कुँवर ने लोचन सिंह का हाथ पकड़ लिया। वे दोनों सिपाही एकटक कुमुद की ओर देखने लगे, अत प्त, अचल नेत्रों

शब्दार्थः

तेग – तलवार
दीदार – दर्शन
निवारण – रोकना
कर्त्तव्यारूढ़ – कर्त्तव्य के प्रति तत्पर

से, मानो अनंत काल तक देखते रहेंगे।

कुमुद ने कुंजर से कहा, 'राजकुमार, इनको यहाँ से ले जाइए।' फिर मुसलमान सैनिकों से बोली,' आप लोग यहाँ से जाएँ।'

इतने में शोरगुल सुन कर गाँव के कुछ आदमी आ गए।

मंदिर पर मुसलमानों की उपस्थिति देख कर उन लोगों ने सैनिकों पर झगड़े का संदेह ही नहीं, चुपचाप विश्वास भी कर लिया। कई कंठों से यकायक निकला, 'कौन हो? क्या करते हो? मंदिर की बेइज्जती करने आए हो?'

कुमुद भीड़ की ओर मुड़कर चिल्लाई, जैसे कोयल ने ज़ोर की कूक दी हो, 'जाओ अपने-अपने घर, व्यर्थ झगड़ा मत करो।

'जाओ कमबख्तों यहाँ से।' दोनों मुसलमान सिपाहियों ने भी कहा। कुंजर सिंह ने हाथ के इशारे से भीड़ हटाने का प्रयत्न किया।

परंतु आगे वाले पीछे को न मुड़ पाए थे कि पीछे से और भीड़ आ गई। इसमें दलीप नगर के राजा के कुछ सैनिक भी थे। वास्तविक स्थिति को बिना ठीक-ठीक समझे ही पीछे वाले चिल्लाए, 'मारो-मारो।' लोचन सिंह को तलवार निकाले और कुंजर सिंह को बीच में देखकर पीछे आए सिपाहियों ने भी तलवारें निकाल लीं।

शब्द बढ़ता गया। कुमुद का बारीक स्वर उस भीड़ के हुल्लड़ को न चीर पाया। प्रत्युत पीछे वालों को पूरा विश्वास हो गया कि न केवल लोचनसिंह उनका सरदार, बल्कि उनका राजकुमार और धर्म भी उन दो मुसलमान सैनिकों के कारण संकट में पड़ गए हैं। कुछ ही क्षण में मुसलमान सैनिक भीड़ से घिर गए।

इसी समय दो-तीन मुसलमान सिपाही और उस स्थान पर आ गए। 'क्या है?' उन्होंने आवेश के साथ पूछा।

उन नवांगतुक मुसलमान सिपाहियों के आने पर गाँव वाले ज़रा पीछे हटे और पीछे वाले दलीप नगर के सैनिक नंगी तलवारें लिए आगे आ गए। तुरंत 'मारो-मारो' की पुकार मच गई और खिंची हुई तलवारों ने अपना काम शुरू कर दिया।

लोचन सिंह ने पीछे आए हुए मुसलमान सिपाहियों में से एक को समाप्त कर दिया। पूर्वागंतुकों ने भी भीड़ के कई आदमी कतर डाले और घायल कर दिए। कुंजर सिंह तलवार निकाल कर कुमुद के पास जा खड़ा हुआ। वह कुंजर को वहीं छोड़ कर अपने पिता के साथ घर चली गई।

खंड-चार

संध्या होने के पहले गाँव में खबर फैल गई कि चार-पाँच कोस पर मुसलमानों की एक बड़ी सेना ठहरी हुई है और वह शीघ्र की आक्रमण करेगी, गाँव में आग लगाएगी और देवी के अवतार का अपहरण करेगी।

राजा को भी यह समाचार मिल गया था।

राजा का रामदयाल नामक एक विश्वस्त निजी नौकर था। राजा ने उससे पूछा, 'तूने उस लड़की को देखा है?'

'हाँ महाराज!'

शब्दार्थ
प्रत्युत – बल्कि
पूर्वागंतुक – पहले आया हुआ

'बहुत खूबसूरत है?'

'ऐसा रूप कभी देखा-सुना नहीं गया।'

'कुछ कर सकता है?'

'कोई कठिन बात नहीं है।'

'राजमहल की दासियों में डाल ले।'

'जब आज्ञा होगी, तभी।'

'आज रात को।'

रामदयाल बोला, 'मुसलमानी सेना पास ही दो-तीन कोस फासले पर ठहरी हुई है। तुरही पर तुरही बज रही हैं। गाँव पर हल्ला बोला जाने वाला है।

'यह तुरही हमारी फ़ौज की थी। तू झूठ बोलता है।'

'रात को वे लोग गाँव में आग लगा देंगे और उस लड़की को उठा ले जाएँगे।'

राजा रामदयाल के इस अंतिम कथन को सुन उठ बैठे। आँखें नाचने-सी लगीं। कहा, 'लोचन सिंह को इसी समय बुला ला।'

राजा का कुमुद पर आसक्त होना

लोचन सिंह आ गया। जुहार करके बैठा ही था कि राजा ने तमक कर पूछा, 'तुमने आज एक आदमी मार डाला है?'

उसने शांतिपूर्वक जवाब दिया, 'हाँ महाराज, एक ही मार पाया, बाकी भाग गए।'

'यह कहाँ की सेना है?'

'कहीं की हो महाराज! मुझे तो उनमें से कुछ को मारना था, सो एक को देवी की भेंट कर दिया।'

'देवी! देवी! तुम लोगों ने एक छोकरी को मुफ्त देवी बना रखा है। मैं देखूँगा, कैसी देवी है।'

'महाराज देखें या न देखें परंतु उसकी महिमा देवी से कम नहीं।'

'उसे हमारे डेरे पर भिजवा दो, लोचन सिंह, हम उसकी रक्षा करेंगे।'

लोचन सिंह ने उपेक्षा के साथ कहा, 'कुँवर और हम उस देवी की रक्षा करेंगे।'

राजा क्रोध से थर्रा गए। बोले, 'रामदयाल, जनार्दन शर्मा को लिवा ला।'

रामदयाल के जाने पर लोचन सिंह ने कहा, 'महाराज! एक विनती है।'

भर्राए हुए गले से राजा ने पूछा, 'क्या ?'

'विनती करने-भर का बस मेरा है।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'फिर मर्जी महाराज की। वह लड़की अवश्य देवी या किसी का अवतार है। उसका बाप बज्र लोभी और मूर्ख है। परंतु बालिका शुद्ध, सरल और भोली-भाली है। अब महाराज को ऐसी बातों की ओर ध्यान नहीं देना चाहिए।'

राजा विष का-सा घूँट पी कर चुप रहे। इतने में जनार्दन शर्मा आ गया। राजा ने ज़रा नरम स्वर में कहा, 'शर्माजी, मेरी दो आज्ञाएँ हैं।'

'एक तो यह कि जो मुसलमान सेना यहाँ आई है, उसे किसी प्रकार यहाँ से हटा दो।'

'महाराज!' जनार्दन बोला और दूसरी आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा।

शब्दार्थ:

विश्वस्त – विश्वासी, जिस पर भरोसा किया जाए।

'दूसरी यह कि लोचन सिंह को इसी समय मरवा कर झील में फिंकवा दो। ' राजा ने क्षोभातुर कंठ से बोला।

जनार्दन सन्नाटे में आ कर एक बार लोचन सिंह और दूसरी बार राजा का मुँह निहार कर माथा खुजाने लगा।

लोचन सिंह ने अपनी तलवार राजा के हाथ में देते हुए कहा, 'मुझे मारने की यहाँ किसी की सामर्थ्य नहीं। जब तक यह मेरी कमर में रहेगी, तब तक आपकी इस आज्ञा के पालन किए जाने में सहस्रों बाधाएँ खड़ी होंगी। आप ही इससे मेरी गरदन उतार दीजिए।'

राजा तलवार को नीचे पटक कर थके हुए स्वर में बोले, 'तुम बहुत बातूनी हो, लोचन।'

'जैसे था वैसे हूँ और वैसा ही रहूँगा भी। मरवा डालिए महाराज, परंतु अपने शरीर को अब और मत बिगाड़िए।' लोचन सिंह ने हाथ बाँध कर कहा।

राजा बोले, 'उठा लो तलवार, लोचन सिंह, तुमको मार कर हाथ गंदा नहीं करूँगा।'

तलवार कमर में बाँध कर लोचन सिंह ने पूछा, 'महाराज ने मुझे किस लिए बुलाया था?'

'जाओ, जाओ।' राजा ने फिर गरम होकर कहा, 'तुम्हारी हमको जरूरत नहीं है।'

राजा ने जनार्दन से पूछा, 'यह सेना कहाँ की है?'

'कालपी की अन्नदाता।' जनार्दन ने उत्तर दिया।

'भगा दो, मार दो, आग लगा दो, कोई हो, कहीं की हो।' राजा ने हाथ-पैर फेंक कर आज्ञा दी।

'अन्नदाता'

'बको मत जनार्दन, कालपी पर अब हमारा फिर राज्य होगा।'

'होगा अन्नदाता, परंतु अभी विलंब है। दिल्ली गड़बड़ के तूफान में पड़ी हुई है।'

किंतु तूफान अभी काफ़ी ज़ोर पर नहीं है। कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान की सेना मालवे में मराठों से हार कर लौटी है, परंतु अब भी इतनी अधिक है कि मुठभेड़ करना ठीक न होगा। दूसरे राज्यों का रुख हमसे कटा हुआ-सा है।

राजा फिर बैठ गए। बोले, 'अच्छा, तुम सब जाओ। जिसको जो देख पड़े सो करो। मैं सवेरे कालपी की सेना को अकेले मार भगाऊँगा। मैं निज़ाम-इज़ाम को कुछ नहीं समझता। कालपी बुंदेलों की है।'

जनार्दन और लोचन सिंह चले गए। परंतु उन लोगों ने सिवाय रक्षात्मक यत्नों के किसी आक्रमणमूलक उपाय का प्रयोग नहीं किया। जनार्दन ने राजा के डेरे का अच्छा प्रबंध कर दिया। लोचन सिंह कई सरदारों के साथ पहरे पर स्वयं डट गया।

राजा ने रामदयाल को पास बुलाकर धीरे से कहा, 'आज ही, थोड़ी देर में, अभी।'

'जो आज्ञा।' कहकर दयाल चला गया।

खंड-पाँच

रात हो गई। खूब अंधकार छा गया। जगह-जगह लोग आक्रमण रोकने की योजना में लग गए। गाँव में खूब हल्ला-गुल्ला होने लगा, मानो असंख्य सैनिक किसी स्थान

शब्दार्थ :
क्षोभातुर – खीज के कारण बेचैन

पर आक्रमण कर रहे हों। कुंजर सिंह नरपति के मकान के बाहर, वेश बदले, शस्त्र-सुसज्जित टहल रहा था। पहरेवालों की टोलियाँ इधर-उधर से आकर, शोर करती हुई, इस मकान के सामने कुछ क्षण के लिए खड़ी होकर 'अंबा की जय, दुर्गा मैया की जय' कहती हुई गुजर जाती थीं, परंतु कुंजर चुपचाप टहल रहा था। केवल कभी-कभी कहीं दूर की आहट के लिए एक-आध बार ठिठक जाता था। नरपति के किवाड़ बंद थे, भीतर से सुगंधित द्रव्यों के होम की खुशबू आ रही थी।

थोड़ी देर में एक मनुष्य ने आकर नरपति सिंह के किवाड़ खटखटाए।

कुंजर सिंह ने कदाचित् उसे पहचान लिया। भाला साधा और स्वर बदल कर पूछा, 'कौन?'

'महाराज का आदमी रामदयाल।'

'रामदयाल, इतनी रात तुम यहाँ कैसे?'

बदले हुए स्वर के कारण रामदयाल न ताड़ पाया। समझा, दलीप नगर का कोई सैनिक है। बोला, 'महाराज यहाँ की रक्षा-निमित्त बड़े चिंतित हो रहे हैं। सारी मुसलमानी सेना छिपे-छिपे यहीं आ रही है। अबेर-सबेर आक्रमण होगा। इसलिए मैं देवी को राज महल में सुरक्षित रखने के लिए लिवाने आया हूँ।'

जब कई बार कुंडी खटखटाने पर भी भीतर से कोई उत्तर न मिला, तब रामदयाल ने कुंजर से पूछा, 'आप कौन हैं? बतला सकते हैं—नरपति सिंह कहाँ हैं और देवी जी कहाँ हैं?'

'मैं हूँ कुंजर सिंह। नरपति सिंह भीतर हैं।'

कुंजर सिंह द्वारा देवी की रक्षा के लिए पहरा देना

रामदयाल सकपका गया, परंतु शीघ्र सँभलकर बोला, 'राजा, यहाँ कैसे?'

'देवी की रक्षा के लिए।'

'लो, यह बहुत अच्छा, परंतु क्या राजा अकेले ही रक्षा करने के लिए डटे रहेंगे।'

'हाँ, उसके लिए मुझे तुम्हारी जरूरत नहीं पड़ेगी।'

इतने में रामदयाल ने अपनी स्वभावसिद्ध स्थिरता पुनः प्राप्त कर ली। बोला, 'महाराज की आज्ञा है कि देवी राजमहल में आज की रात सुरक्षित रहें।' भाले के बल अपने शरीर को थामे हुए कुंजर ने कहा, 'रामदयाल, देवी की रक्षा उसके मंदिर में ही सबसे अच्छी होती है। तुम जाओ। मेरे साथ तर्क मत करो।'

'तो महाराज से जा कर यही कह दूँगा, राजा?'

'कह दो।'

खंड-छह

गाँव में रात भर हो-हल्ला होता रहा, परंतु किसी ने किसी पर आक्रमण नहीं किया। सवेरे नहा-धोकर राजा के सामने लोग इकट्‌ठे हुए। कुंजर सिंह भी आया। रात भर के जागरण के कारण आँखें फूली हुई थीं और चेहरे पर थकावट छाई थी। प्रणाम करके राजा के पास जा कर यथानियम बैठ गया। राजा की आँखें चढ़ गईं, परंतु कुछ कहा नहीं। देर तक किसी दरबारी की हिम्मत कोई बात कहने की नहीं पड़ी।

लोगों के बीच कानाफूसी होती देख राजा उस सन्नाटे को अधिक समय तक न सह सके। 'बोलो लोचन सिंह!'

शब्दार्थ :

स्वभावसिद्ध स्थिरता – जैसा स्वभाव उसने बना लिया था।

टिप्पणी

'महाराज!' उसने उत्तर दिया।

'तुम्हारे घराने में चामुंडराय की उपाधि चली आई है, जानते हो?'

'हाँ महाराज, सारा संसार जानता है कि सिर काटने के बाद यह उपाधि हम लोगों को मिली है।'

'वह तुमको प्यारी है?'

'हाँ महाराज, प्राणों से भी अधिक।'

चामुंडराय की जो प्रतिष्ठा है वह ह दय का खून बहा कर प्राप्त की गई है। किसी भी लोभ के वश में वह दलित नहीं हो सकती।

'लोचन सिंह, तुमने रात को कहाँ पहरा लगाया था?'

'राजमहल पर।'

'झूठ बोलते हो। उस लड़की के यहाँ, जो देवी कहलाती है, रखवाली करने पर तुम भी तो थे?'

'मैं न था महाराज।'

'काकाजू, वहाँ पर मैं अकेला ही था।' बहुत विनीत, परंतु द ढ़ भाव के साथ कुंजर सिंह बोला।

'हाँ, तुम अब बहुत मनचले हो गए हो।' राजा ने उपस्थित लोगों की परवाह न करते हुए कहा, 'तुम्हारे ये सब लक्षण मुझे बहुत अखरने लगे हैं। तुम क्या यह समझते हो कि ऐसी बेहूदा हरकतों से मैं प्रसन्न बना रहूँगा?'

कुंजर सिह स्थिर द ष्टि से एक ओर देखता रहा। उत्तर में कुछ नहीं बोला। राजा, लोचन सिंह की ओर एकटक द ष्टि से देखने लगे। लोचन ने नेत्र नीचे नहीं किए।

'आज तुम्हारी चामुंडराय की परीक्षा है, लोचन सिंह।' राजा ने कुछ क्षण पश्चात् कहा।

'आज्ञा हो महाराज।' लोचन सिंह बोला।

पहरा बिठाने के लिए महाराज की कुंजर सिंह को फटकार।

'यह मुसलमानी फ़ौज हमको और हमारे धर्म को नष्ट-भ्रष्ट करने के लिए आई है।' राजा ने कहा, उन लोगों की आँख मंदिर की मूर्ति तोड़ने और मूर्ति की पूजारिन-उस दाँगी की लड़की-को उड़ा ले जाने पर है। मेरी आज्ञा है, उस सेना का मुकाबला करो और लड़की को सुरक्षित दलीप नगर पहुँचा दो।'

कुंजर सिंह काँप उठा। जनार्दन को रोमांच हो आया और लोचन सिंह की नहीं पर सबकी आशा जा अटकी।

लोचन सिंह ने हाथ बाँध कर उत्तर दिया, 'उस सेना का सामना करने के लिए मैं अभी तैयारी कराता हूँ अपने पास उस युद्ध के लिए काफ़ी सैनिक नहीं हैं। दलीप नगर से और सेना बुलाने का प्रबंध कर दीजिए। दूसरी आज्ञा जो दाँगी की लड़की को दलीप नगर पहुँचाने से संबंध रखती है उसका पालन उस लड़की की इच्छा पर निर्भर है। यदि वह दलीप नगर न जाना चाहेगी तो मैं उसे पकड़ कर न भेजूँगा।'

उसी समय ढोल, ताशों, रमतूलों का शब्द फिर सुनाई दिया।

खंड-सात

राजा के जासूसों ने बाजों का पता दिया। मालूम हुआ, एक दरिद्र ठाकुर की बारात आ रही है, और दूरी पर उसके पीछे-पीछे, छिपी-छिपी कालपी की सेना भी आक्रमण

शब्दार्थः

स्वभावसिद्ध – स्वाभाविक

यथा नियम – नियम के अनुसार

आक्रमण मूलक – जिसका उद्देश्य आक्रमण करना हो

करने के लिए आ रही है।

हकीम ने मना किया परंतु राजा ने एक न सुनी। घोड़े पर सवार हो कर लड़ाई की तैयारी कर दी।

हकीम ने जनार्दन से कहा, 'पंडितजी, इस राज्य की खैर नहीं है। अब क्या होगा?' जनार्दन ने माथा ठोक कर उत्तर दिया, 'बड़ी कठिनाइयों से राज्य को अब तक बचा पाया है। मंत्री केवल गुणा-भाग जानता है। नीति-वीति कुछ नहीं समझता। कुमार दासीपुत्र है। अधिकांश सरदार उसे अंगीकार न करेंगे। रानियों में लड़ाई ठनी रहती है। लोचनसिंह एक महज झंझावात है। उत्तराधिकारी कोई नियुक्त नहीं है। महाराज का पागलपन और भी अधिक बढ़ गया है। राज्य की नैया डूबने से बचती नहीं दिखाई देती।'

यह कष्ट-कहानी शायद और लंबी होती, परंतु इसी समय राजा की सवारी आ पहुँची। पीछे-पीछे कुंजरसिंह का घोड़ा था। जहाँ जनार्दन और हकीम खड़े थे, राजा ने घोड़े की बाग थमा कर कहा, 'आप लोग लड़ नहीं सकते। पीछे रहें।' फिर मुड़ कर कुंजर सिंह से कहा, 'तुम मेरे साथ मत रहो। लोचन सिंह इधर आएँ।'

लोचन सिंह तुरंत घोड़ा कुदाकर आ गया।

'क्या आज्ञा है?'

'कालपी की फ़ौज पर धावा बोल दो।'

'जो हुकुम।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया। दलीप नगर की सेना जासूसों के बताए मार्ग पर चल पड़ी।

कुंजर सिंह मन मसोस कर पीछे रह गया था। नरपति के दरवाजे के सामने से निकला। उधर द ष्टि गई। कुमुद को देखा। सचमुच अवतार। कुंजर ने नमस्कार किया। कुमुद ज़रा-सी मुस्कराई, शायद उसे मालूम भी न हुआ होगा कि मुस्करा रही है।

कुंजर सिंह आगे बढ़ गया।

जिस घर बारात आ रही थी, उसके दरवाजे पर तोरण-वंदनवार लगे हुए थे। वहीं होकर दलीप नगर की सेना निकली। राजा ने लोचन सिंह से पूछा, 'क्या यहीं उस ठाकुर की बारात आ रही है?'

'हाँ महाराज।' लोचनसिंह ने उत्तर दिया।

राजा ने कहा, 'बहुत दरिद्र मालूम होता है। द्वार पर कोई ठाठ-बाट नहीं।'

'होगा महाराज, किस-किस का दुख रोवें।'

'अजी नहीं।' राजा ने चलते-चलते कहा, 'सब शरारत है, बदमाशी है; घर में संपत्ति गाड़ कर रखते हैं, ऊपर से गरीबी का दिखलावा करते हैं। इस लड़ाई से लौट कर साहूकारों से सारी क्षति की पूर्ति कराऊँगा। बहुत दिनों से उनसे कुछ नहीं लिया है।'

लोचन सिंह कुछ नहीं बोला। थोड़ी देर में दलीप नगर की छोटी-सी सेना पालर के बाहर जंगल के मुहाने पर पहुँच गई। ठाकुर की छोटी-सी बारात एक ओर से आ रही थी। वह कुछ दूरी पर ठिठक गई। दूल्हा पालकी में। कहार पालकी को अपने कंधों पर ही लिए रहे।

राजा ने लोचन सिंह से कहा, 'इस घमंड को देखते हो? पालकी नहीं उतारी गई। चाहूँ तो अभी दूल्हा के खंड-खंड कर डालूँ।

लोचन सिंह ने उपेक्षा के साथ कहा, 'महाराज! यह बुंदेला की बारात है। दूल्हा किसी के लिए भी पालकी से नहीं उतरेगा। निर्धन हो, चाहे श्रीसंपन्न, परंतु बुंदेले आपस में सब बराबर हैं।'

थोड़ी देर में कालपी की सेना से राजा की मुठभेड़ हो गई। राजा का घोड़ा आहत हो गया। राजा के घोड़े से उतरते ही उनके अन्य सरदार भी पैदल लड़ने लगे।

कालपी की सेना बड़ी द ढ़ता और दिलेरी के साथ लड़ी, परंतु वह अल्पसंख्यक थी। दलीप नगर की सेना बहुत न थी। एक को दूसरे के बल का पता न था। टुकड़ियों में बँटकर दोनों ओर की सेनाएँ भिड़ गईं और कटने लगीं।

कालपी की टुकड़ी ने राजा को उनके कुछ सरदार सहित धर दबाया। रोगग्रस्त होने पर भी राजा पागलों की तरह लड़ने लगे। कई आक्रमणकारी हताहत हुए, परंतु ठेल पर ठेल होने के कारण एक किनारे दूर तक राजा को हटना पड़ा। उनके साथी ज़रा दूर पड़ गए। राजा मुश्किल से अपना बचाव करने लगे। क्षण-क्षण पर यह भासित होता था कि राजा अब आहत हुए और अब। सहायता के लिए ऐसे समय में पुकारना राजा की बचीखुची शक्ति के बाहर था। इतने में पेड़ों के एक झुरमुट के पीछे इधर-उधर कुछ आदमी ज़ोर से भागे। हमला करने वालों का ध्यान ज़रा उचटा कि ब्याह का झाँगा पहने और मुकुट बाँधे बारात का वह दूल्हा तलवार भाँजता हुआ वहाँ आ टूटा। ठेठ बुंदेलखंडी में बोला, 'काकाजू, एक हाथ मोरोई देखवे में आवे।' उधर पालकी पटक कर भागे हुए कहारों ने कुहराम मचाया।

वह दूल्हा इतने वेग से लड़ा कि जगह-जगह से उसका झाँगा कटफट गया, रुधिर की धार बदन से बह निकली और सिर का मौर टुकड़े-टुकड़े हो कर धरती पर रूँध गया। उसी समय दलीप नगर की सेना सिमिट आई। तलवार अनवरत रूप में चली। ऐसे चली कि कालपी वालों के छक्के छूट गए। जो सशक्त थे वे भाग खड़े हुए। मालवा से लड़ाई हार कर तो वे आए ही थे, इस लड़ाई में भी भागने में ही कुशल देखी।

संध्या होने के पूर्व ही युद्ध समाप्त हो गया। कालपी की घबराई हुई सेना कालपी की ओर कोसों दूर निकल गई।

राजा की देवी सिंह से मुलाकात तथा युद्ध

राजा घायल हो गए थे और बहुत थक गए थे। दूल्हावाली पालकी में राजा को लिटा कर ले चले। दूल्हा साथ-साथ था। शरीर से रक्त बह रहा था, परंतु उसकी द ढ़ता में कमी नहीं दिखाई पड़ती थी। जान पड़ता था, मानो लोहे का बना हो।

राजा ने पालकी में लेटे-लेटे क्षीण स्वर में उसका नाम पूछा।

उत्तर मिला, 'अन्नदाता, मुझे देवी सिंह कहते हैं।'

'ठाकुर हो?'

'हाँ महाराज।'

चित्र : राजा का देवी सिंह से मिलना

शब्दार्थ:

दिलेरी – हिम्मत
अल्पसंख्यक – कम संख्या में
मोरोई – मेरा भी
झाँगा – विवाह के अवसर पर पहना जाने वाला ढीला–ढाला वस्त्र

'बुंदेला?'

'हाँ महाराज।'

'जीते रहो। तुमको ऐसा पुरस्कार दूँगा, जैसा कभी किसी को न मिला होगा।'

इस समय जनार्दन शर्मा और आगा हैदर भी पालकी के पास आ चुके थे और बड़े आदर की द ष्टि से उस दरिद्र दूल्हा को देख रहे थे। कुंजर सिंह उदास-सा पीछे-पीछे चला आ रहा था। लोचन सिंह कुछ गुनगुनाता हुआ चला जा रहा था।

वंदनवार वाले दरवाजे पर जब राजा की पालकी पहुँची तब देवी सिंह से राजा बोले, 'देवी सिंह, अब तुम अपना ब्याह करो। टीके का मुहूर्त आ गया हे। ब्याह होने के बाद दलीप नगर आना, अवश्य आना। भूलना मत।'

पालकी दरवाजे पर ठहर गई। दूल्हा ने पालकी की कोर हाथ में पकड़ कर क्षीण स्वर में कहा, 'मेरा ब्याह रणक्षेत्र में हो गया। अब महाराज के चरणों में म त्यु हो जाए, बस यही एक कामना है।'

जब तक कोई सँभालने को दौड़ता तब तक देवी सिंह धड़ाम से पालकी का सहारा छोड़ कर अपनी भावी ससुराल के सामने गिर पड़ा। कुंजर सिंह से उसे सँभाला।

सब लोग डेरे पर पहुँचे। राजा की मरहम-पट्टी हो गई। घाव काफ़ी लगे थे, परंतु कोई भय की बात न जान पड़ती थी। लोग रात-भर उपचार में लगे रहे। देवीसिंह को भी लाया गया। कुंजर सिंह उसकी दवा-दारू करता रहा। अवस्था चिंताजनक थी।

दलीप नगर के सरदार राजा को दूसरे ही दिन दलीप नगर ले गए। राजा ने देवी सिंह को भी साथ ले लिया।

खंड-आठ

दलीप नगर पहुँचने पर राजा के घाव अच्छे हो गए, परंतु पागलपन बहुत बढ़ गया। देवी सिंह को अच्छे होने में कुछ समय लगा। राजा का स्नेह उस पर इतना बढ़ गया कि निजी महल में उसे स्थान दे दिया। राजा का स्नेह-भाजन होने के कारण बड़ी रानी भी देवी सिंह पर कृपा करने लगी और छोटी रानी अकारण ही घ णा।

उत्तराधिकारी को लेकर रानी तथा लोचन सिंह के बीच वार्तालाप

रामदयाल बचपन से महलों में आता-जाता था। उन दिनों तो वह राजा की विशेष टहल ही करता था। रानियाँ उससे परदा नहीं करती थीं। छोटी रानी का वह विशेष रूप से कृपापात्र था, परंतु इतना चतुर था कि बड़ी रानी को भी नाखुश नहीं होने देता था। एक दिन वह किसी काम से छोटी रानी के महल में गया। छोटी रानी ने राजा की तबीयत का हाल पूछा। फिर एक क्षण बाद बोली, 'रामदयाल, यदि धर्म पर टिका रहा, तो प्रतिफल पावेगा।'

रामदयाल ने नम्रतापूर्वक कहा, 'महाराज, मैं तो चरणों का दास हूँ।'

'तू मुझे महाराज के महलों के समाचार नित्य दिया कर। अब जा और ज़रा लोचन सिंह को भेज दे।'

थोड़े समय उपरांत लोचन सिंह आया। दासी द्वारा परदे में रानी से बातचीत हुई। रानी ने कहलवाया, 'लोचन सिंह, भगवान न करे कि महाराज का अनिष्ट हो; परंतु यदि अनहोनी हो गई, तो राज्य का भार किसके सिर पड़ेगा?'

'जिसे महाराज कह जाएँ।'

'तुम्हारी क्या सम्मति है?'

'जो मेरे स्वामी की होगी।'

'यदि महाराज कोई आज्ञा न छोड़ गए, तो?'

'वैसी घड़ी ईश्वर न करे आवे।'

'और यदि आई?'

'यदि आई, तो उस समय जो आज्ञा होगी या जैसा उचित समझूँगा, करूँगा।'

रानी कुछ सोचती रही। अंत में उसने यह कहलवा कर लोचन सिंह को विदा किया कि 'भूलना मत कि मैं रानी हूँ।'

'इस बात को बार-बार याद करने की मुझे आवश्यकता न पड़ेगी।' यह कहकर लोचन सिंह चला। रानी ने फिर रुकवा दिया। दासी द्वारा कहलवाया, 'सिंहासन पर मेरा हक़ है, भूल तो न जाओगे?'

उसने उत्तर दिया, 'जिसका हक़ होगा, उसी की सहायता के लिए मेरा शरीर है।'

'और किसी का नहीं है?'

'मैं इस समय इस विषय में कुछ कह नहीं सकता।'

'स्वामिधर्म का पालन करना पड़ेगा।'

'यह उपदेश व्यर्थ है'

'तुम्हारे आँखें और कान हैं। किस पक्ष को ग्रहण करोगे?'

'जिस पक्ष के लिए मेरे राजा आज्ञा दे जाएँगे। और यदि वह बिना कोई आज्ञा दिए सिधार गए, तो उस समय जो मेरी मौज में आवेगा।' लोचन सिंह चला गया। रानी बहुत कुढ़ी।

खंड-नौ

कुछ दिनों बाद बड़ नगर से यह उलाहना आया कि दलीप नगर की सेना ने अपने राज्य की सीमा के बाहर उपद्रव किया और कालपी के मित्र राज्य को बड़ नगर का शत्रु बनाने में कसर नहीं लगाई। दलीप नगर उस समय के राजनीतिक नियमानुसार दिल्ली का आश्रित राज्य था। दिल्ली को उस समय दलीप नगर और कालपी दोनों की जरूरत थी। कम-से-कम दिल्ली को उन दोनों से आशा भी थी। कालपी वस्तुतः दिल्ली की सहायक थी। दोनों की मुठभेड़ में दिल्ली को कालपी का पक्ष लेना अनिवार्य-सा था। परंतु यह तभी हो सकता था, जब दिल्ली को अपनी अन्य उलझनों से साँस लेने का अवकाश मिलता। अलीमर्दान इस बात को जानता था और उसे यह भी मालूम था कि न जाने किस समय कहाँ के लिए दिल्ली से बुलावा आ जाए, इसलिए उसने पालर के पास अपनी टुकड़ी के ध्वस्त किए जाने पर तुरंत कोई बड़ी सेना बदला लेने के लिए नहीं भेजी, केवल चिट्‌ठी भेज दी। चिट्‌ठी में पद्‌मिनी का कोई जिक्र न किया।

यह चिट्‌ठी मंत्री को दी गई। मंत्री ने जनार्दन के पास भेज दी। चिट्‌ठी पा कर जनार्दन गूढ़ चिंता में पड़ गया। हर्जाना दे कर और माफ़ी माँग कर पिंड छुड़ा लेना तो व्यावहारिक जान पड़ता था, परंतु बाकी शर्तें बहुत टेढ़ी थीं। पद्‌मिनी बादशाह के

टिप्पणी

लिए नहीं माँगी गई थी, बादशाह की ओट ले कर अलीमर्दान ने उसे अपने लिए चाहा था, यह बात जनार्दन की समझ में सहज ही आ गई। लोचन सिंह को जीवित या म त किसी भी अवस्था में कालपी भेजना दलीप नगर में किसी के भी बस के बाहर की बात थी। किंतु सबसे अधिक टेढ़ा प्रश्न उस समय इन बातों को राजा के सम्मुख उपस्थित करने का था।

जनार्दन, आगा हैदर की उपस्थिति में राजा के पास पहुँचा। परंतु उसने एक बुद्धिमानी का काम किया। दूत के जरिए कालपी जवाब भेज दिया कि हरजे की रकम एक लाख बहुत है, परंतु दी जाएगी और माफी माँगने के लिए प्रधान राज्य-कर्मचारी जर्नादन शर्मा स्वयं शीघ्र दरबार में उपस्थित होंगे। दाँगी-कन्या दलीप नगर राज्य की हद के बाहर कहीं लापता है और लोचन सिंह की चिंता न की जाए।

खंड-दस

राजा के सामने पहुँचते ही जनार्दन का मन और भी छोटा हो गया। उनकी तबीयत आज ज्यादा खराब थी। वह बहुत हँस रहे थे और बिल्कुल बेसिर-पैर की बातें कर रहे थे। आगा हैदर मौजूद था।

इतने में लोचन सिंह आया। प्रणाम करके बैठ गया।

लोचन सिंह ने हकीम से धीरे-से पूछा, 'आज अवस्था क्या कुछ अधिक भयानक है?'

'नहीं, ऐसा कुछ नहीं।'

'आप सदा यही कहते करते हैं, परंतु महाराज के जी के सँभलने का रत्ती-भर भी लक्षण नहीं दिखलाई देता है। सच्ची बात तो यह है कि राजा को वह बीमारी आप ही ने दी है।'

राजा का ध्यान आकृष्ट हुआ। जनार्दन से पूछा, 'क्या गड़बड़ है? क्या किसी षड्यंत्र की रचना कर रहे हो?' जनार्दन के उत्तर देने के पूर्व ही लोचनसिंह बोला, 'षड्यंत्रों का समय भी, महाराज, इन लोगों ने मिल-जुल कर बुला लिया है, परंतु जब तक लोचन सिंह के हाथ में तलवार है, तब तक किसी का कोई भी षड्यंत्र नहीं चल पावेगा।'

'क्या बात है?' राजा ने आँखें फैलाकर पूछा।

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'महाराज अपने किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त कर दें, नहीं तो शायद बीमारी के साथ-साथ गोलमाल भी बढ़ा चला जाएगा। जगह-जगह लोग चर्चा करते हैं– अब कौन राजा होगा?'

जनार्दन उस दिन ठीक मौका न समझ कर कालपी से आई हुई चिट्ठी के विषय में कोई चर्चा न करके लौट आया। लोचन सिंह भी साथ ही आया।

मार्ग में जनार्दन ने कहा, 'आपसे एक विनती है, ठाकुर साहब, बुरा न मानें तो निवेदन करूँ।' 'करिए।'

'ऐसे समय महाराज से कोई तीखी बात मत कहिए।'

कुंजर सिंह को कुमुद का स्मरण

खंड-ग्यारह

कुंजर सिंह को राजसिंहासन प्राप्त करने की बहुत आशा न थी। वह यह जानता था कि राजा का अंतिम समय निकट है और उनके मरते ही सिंहासन के लिए दौड़ो-झपटो की धूम मच जाएगी। उसका संसार में कोई न था, केवल राजा का स्नेह

था, सो पालर से लौटने के बाद राजा के पागलपन में ऐसा लीन हो गया कि उसके चिह्न तक न दिखाई पड़ते थे। बड़ी रानी की जरूर कुछ कृपा थी, परंतु उस कृपा में स्नेह के लिए व्याकुल हृदय के लिए प्रीति न थी।

पालर में एक आलोक उसने देखा था। वह बिजली की तरह चमका और उसी तरह विलीन हो गया। उसकी दिव्यता का आतंक-मात्र मन पर जमा हुआ था; जैसे प्रातः काल कोई सुख-स्वप्न हो, दूर से एक क्षण के लिए किसी आकाश-कुसुम के दर्शन किए हों और वह विस्त त अनंत प्रसारमय प्रकाश में कहीं छिप गया हो।

एक-आध बार कुंजर सिंह ने सोचा, स्त्री थी, मनोहर थी, लज्जावती थी, एक बार स्नेह की द ष्टि से देखा भी था। परंतु यह भाव बहुत थोड़ी देर मन में टिकता। उसके मानस-पटल पर जो चित्र बना था, वह स्पष्ट द ष्टिवाली, अपरिमित शालीनतामय नेत्रों वाली, कठिनाइयों के सामने अपनी कोमल, गोरी भुजा की एक छोटी उँगली के संकेत से अनंत लहरावलि की प्रबलताओं को जगाने वाली दुर्गा का था। स्वप्न सच्चा था, अनूठा था और शांतिदायक था। अथवा कदाचित उत्साह-मात्र दान करने वाला। परंतु उस समय के चिंताजनक और शून्य-से काल में उस आलोक की दिव्यता-मात्र की स्म ति ही थी।

कुंजर को सिंहासन की आशा कम थी, परंतु उपेक्षा न थी। उसने लोगों से प्रायः सुना था कि संसार में पासा पलटते विलंब नहीं होता।

राजा की बढ़ती बीमारी में एक दिन बड़ी रानी ने राजा के पास से लौट कर अपने महल में कुंजर को बुलाया और कहा, 'राजा का बचना असंभव जान पड़ता है। मेरे सती हो जाने के बाद किसका राज्य होगा?'

'इस तरह की बातें सुन कर मेरा मन खिन्न हो जाता है और यथासंभव मैं इस तरह की चर्चा से बचा करता हूँ।'

'परंतु कुंजर!' रानी ने कहा, 'जो अवश्यंभावी है, वह होकर रहेगा।'

कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचकर उत्तर दिया, 'जो आप सती हो गईं और महाराज ने किसी को उत्तराधिकारी नियुक्त न किया, तो इस राज्य का अनिष्ट ही दिखाई देता है।'

राज्य के उत्तराधिकारी को लेकर रानी तथा कुंजर सिंह के बीच वार्तालाप

'छोटी रानी राज्य करेंगी।' रानी ने आँखें तानकर कहा, 'वह सती न होगी।'

कुंजर सिंह बोला, 'यह आपको कैसे मालूम?'

'क्या मैं उनकी प्रकृति को नहीं जानती हूँ? वह राज्य-लिप्सा में कुछ भी कर सकती है। देखो न, देवी सिंह नाम का एक दीन ठाकुर, जिसे महाराज ने अपने महल में ठहरा रखा है, उनकी आँखों में खटक गया है। कारण केवल इतना ही कि मैंने दो मीठी बातें कह दी थीं।' रानी ने उत्तर दिया।

'परंतु।' कुंजर सिंह बोला, 'महाराज उस बेचारे को राज्य थोड़े ही दे रहे हैं, जो छोटी सरकार को खटके।' और उसने घबराहट की एक साँस को दबाया।

रानी ने कहा, 'कुंजर सिंह, जब तक मैं राज्य का कोई स्थायी प्रबंध न कर दूँगी, सती न होऊँगी। यदि मेरे पीछे रानी ने राज्य करके प्रजा को पीसा, तो मुझे स्वर्ग में भी नरक-यातना-सी अनुभव होगी।'

'मेरे लिए जो आज्ञा हो, सेवा के लिए तैयार हूँ। संसार में आपके सिवा और मेरा कोई नहीं।'

'तीन आदमियों के हाथ में इस समय राज्य की सत्ता बँटी हुइहै—है-जनार्दन, लोचन सिंह और हकीमजी। इनमें से किस पर तुम्हारा काबू है?'

'काबू तो मेरा पूरा किसी पर नहीं है।' कुंजरसिंह ने विश्वास परित्याग कर उत्तर दिया, 'परंतु लोचन सिंह थोड़ा-बहुत मेरा कहना मानते हैं।'

'और जनार्दन?' रानी ने पूछा।

'वह बड़ा काइयाँ है। उसका दाँव समझ में नहीं आता।'

'मैं उसे बहुत दिनों से जानती हूँ। मैंने उसके साथ बहुत से एहसान भी किए हैं। वह उन्हें भूल नहीं सकता। उसे ठीक करना होगा।'

'कैसे?' कुंजर सिंह ने भोले भाव से प्रश्न किया।

रानी बोलीं, 'मैं उसे ठीक करूँगी। जो कुछ कहती जाऊँ, करते जाना और यदि महाराज स्वस्थ हो गए और मैं उनके समय उस लोक को चली गई तो सोलह आना बात रह जाएगी।'

कुछ क्षण बाद फिर बोलीं, 'कालपी से एक चिट्ठी आई थी। कल महाराज को जनार्दन ने सुनाई। आपे से बिल्कुल बाहर हो गए।' रानी ने चिट्ठी का सविस्तार व त्तांत कुंजर सिंह को सुनाया।

कुंजर सिंह ने भी उस चिट्ठी का हाल सुना था, परंतु यथावत् उसे मालूम न था। रानी के मुख से संपूर्ण ब्योरा सुन कर उसे आश्चर्य हुआ।

रानी बोलीं, 'मुझे राज्य की खबरों का सब पता रहता है। यह तुमने समझ लिया या नहीं?'

कुंजर ने स्वीकार किया। बोला, 'उस लड़की का पता क्या मुसलमानों को लग गया है?'

'नहीं, परंतु जनार्दन ने पता लगा लिया है। बहुत सुरक्षित स्थान में विराटा के रजवाड़े के दाँगी राजा सबदल सिंह के दुर्ग में वह पहुँच गई है। हकीमजी जनार्दन के कहने में हैं। जनार्दन को ठीक कर लेने से वह भी ठीक हो जाएँगे।'

खंड-बारह

राजा का जनार्दन को कालपी पर चढ़ाई के लिए आदेश देना।

राजा न सँभले। मर्ज बढ़ता गया, ज्यों-ज्यों दवा की। अवस्था इतनी खराब हो गई थी कि आगा हैदर के सिवाय और किसी को उसकी चिंता न गई थी। सब बेचैन थे, व्यग्र थे उग्र चिंता में कि आगे क्या होगा?

जिस समय जनार्दन ने राजा को कालपी की चिट्ठी का सारांश सुनाया, उन्होंने उपस्थित लोगों को तरह-तरह की फूहड़ गालियाँ दे कर अंत में आज्ञा दी कि कालपी पर चढ़ाई करने की तैयारी कर दो।

बात-बात पर सिर काटने और कटवाने की योजना वाले लोचन सिंह को भी इस आज्ञा का पालन करने में कठिनाई अनुभव हुई।

इसलिए जनार्दन ने सेना को धीरे-धीरे तैयार कर डालना ठीक समझा। बड़े पैमाने पर सेना रखना उस समय की माँग थी। शायद इस तैयारी से अलीमर्दान सहम जाए और

यदि इससे न भी माना तो डटकर लड़ाई लड़ ली जाएगी। परंतु कालपी पर आक्रमण करना जनार्दन का ध्येय न था और न उसकी व्यवहारमूलक राजनीति में इस प्रकार के विचार के लिए स्थान था।

वास्तव में इसी का जनार्दन को बहुत खटका था। राजा कालपी पर चढ़ाई करने की आज्ञा दे चुके थे। जनार्दन दलीप नगर को इस तरह की मुठभेड़ से बचाना चाहता था। सेना की धीमी तैयारी से इस मुठभेड़ का कुछ समय तक बरकाव हो सकता था। जनार्दन को एक और आशा थी-राजा का शीघ्र मरण। और जो कुछ उसके मन में रहा हो, उसे कोई नहीं जानता था।

जनार्दन के एक दिन राजा की बहुत भयानक अवस्था देखकर और दोनों रानियों के बुलावों को टालने के बाद आगा हैदर के घर जा कर मंत्रणा की। कहा, 'आज सवेरे राजा को ज़रा चेत था। स्थिति की भयंकरता देखकर, जी कड़ा करके मैंने राजा से स्पष्ट कहा कि किसी को गोद ले लिया जाए। आश्चर्य है, वह इस बात पर नाराज़ नहीं हुए। केवल यह कहा कि अभी मैं नहीं मरूँगा, जिऊँगा। फिर मैं ज़्यादा कुछ न कह सका।'

हकीम बोला, 'अब उनके जीवन में बहुत थोड़े दिन रह गए हैं। बहुत कोशिश की, मगर यमराज का मुकाबला नहीं कर सकता। राजा की बदपरहेजी पर मेरा कोई काबू नहीं। यदि कमबख़्त रामदयाल मर जाए, तो शायद अब भी राजा बच जाएँ। उनकी नामुमकिन फरमाइशों को पूरा करने के लिए वह सदा कमर कसे खड़ा रहता है। ऐसा बदकार है कि कुछ ठिकाना नहीं।'

'हकीमजी।' जनार्दन ने साधारण निश्चय के साथ यकायक कहा, 'या तो राजा का रोग समाप्त होना चाहिए या उन्हें शीघ्र स्वर्ग मिलना चाहिए।'

'दोनों बातें परमात्मा के हाथ में हैं।' हकीम ने निराशापूर्ण स्वर में कहा।

जनार्दन बोला, 'नहीं, आपके हाथ में हैं।'

'यानी?'

'यानी यह कि आप ऐसी दवा दीजिए कि या तो उनका रोग शीघ्र दूर हो जाए या उनका कष्टपीड़ित जीवन समाप्त हो जाए।'

जनार्दन द्वारा राजा को मारने के लिए हकीम के समक्ष प्रस्ताव

आगा हैदर सन्नाटे में आ गया। बोला, 'शर्माजी, अपने मालिक के साथ यह नमकहरामी मुझसे न होगी, चाहे आप उनके साथ मुझे भी मरवा डालिए।'

बिना किसी व्याकुलता के जनार्दन ने अनुनय के साथ प्रस्ताव किया, 'हकीमजी, मैं हाथ जोड़ता हूँ, कुछ तो इस राज्य के लिए करो, जिसके अन्न-जल से हमारे और आपके हाड़-माँस बने हैं।'

'क्या करूँ?' हकीम ने अन्यमनस्क होकर पूछा।

जनार्दन ने उत्तर दिया, 'सैयद अलीमर्दान को मना लो। दलीप नगर को बचा लो। सुना है उसकी फ़ौज कालपी से शीघ्र कूच करने वाली है। यदि आप उसे बिल्कुल न रोक सकें, तो कम-से-कम कुछ दिनों तक अटका लें, तब तक मैं राजा द्वारा किसी उत्तराधिकारी को नियुक्त कराके राज्य को सुव्यवस्थित करा लूँगा। यदि राजा बच गए, तो उत्तराधिकारी की देख-रेख में राज-काज ठीक तौर से होता रहेगा, न बचे, तो

शब्दार्थ :
बरकाव – टालने की क्रिया, बचाव
बदपरहेजी – असंयम
नामुमकिन – असंभव

जो राजा होगा, सँभाल लेगा। इस समय सबके मन किसी अनिश्चित, अंधकाराव त, अद श्य, घोर विपत्ति के आ टूटने की संभावना के डर से थर्रा रहे हैं।'

हकीम सोचकर बोला, 'मैं कालपी तुरंत जाने को तैयार हूँ, परंतु राजा के इलाज का क्या होगा?'

'किसी अच्छे वैद्य या हकीम को नियुक्त कर जाइए।'

'मैं अपने लड़के के हाथ में राजा का इलाज छोड़ जाऊँगा, और किसी हाथ में नहीं।'

खंड-तेरह

कालपी से आगा हैदर ने जनार्दन को लिखा कि अलीमर्दान नाराज तो बहुत था, परंतु अब शांत है और दलीप नगर को मित्र की द ष्टि से देखता है। लड़ाई की कोई संभावना नहीं है और मुझे कुछ दिनों मेहमान बनाए रखना चाहता है।

ऐसी परिस्थिति में जनार्दन ने राजा के मनोवेग का समर्थन किया। दलीपनगर में सेना का एक काफ़ी बड़ा भाग अपनी मंडली के कुछ विश्वस्त लोगों के हाथ छोड़ा और पंचनद की ओर राजा को ले कर कूच कर दिया। खबर लेने के लिए जहाँ-तहाँ जासूस नियुक्त कर दिए। वह राजा का साथ बहुत कम छोड़ता था। रानियाँ साथ गईं। देवी सिंह अब बिलकुल चंगा हो गया था। उसे भी राजा ने साथ ले लिया।

जनार्दन का राजा को लेकर पंचनद की ओर प्रस्थान तथा रास्ते में देवी सिंह के शौर्य की प्रशंसा

जनार्दन ने मार्ग में एकांत पाकर देवी सिंह से कहा, 'आप बड़े वीर हैं। उस दिन महाराज की रक्षा आप ही ने की।'

'बुंदेला का कर्तव्य ही और क्या है, शर्माजी?' देवी सिंह ने लापरवाही के साथ कहा, 'परंतु अब किस तरह उनके प्राण बचेंगे, यह मेरी समझ में नहीं आ रहा है।'

'दवा-दारू हो रही है। देखिए, आशा तो बहुत कम है।' आह भरकर जनार्दन बोला।

'ऐसी दशा में महाराज को इतनी दूर नहीं आने देना चाहिए था।'

'यमुनाजी की रज में वह अपने जन्म की यात्रा समाप्त करना चाहते हैं, इसीलिए हम लोगों ने निषेध का उपाय नहीं किया।'

जनार्दन द्वारा देवी सिंह को राजा का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव

देवी सिंह ने पूछा, 'यदि महाराज का स्वर्गवास बीच में ही हो गया, तब क्या कीजिएगा?'

उत्तर मिला, 'यमुनाजी की रज में उनके फूल विश्राम करेंगे। आपके प्रश्न के साथ हम सबकी एक और घोर चिंता का भी संबंध है। वह यह कि उनके पश्चात् इस राज्य का शासन कौन करेगा?'

'सिवा बुंदेला के और कौन कर सकता है?' देवी सिंह ने कहा, 'कुंजर सिंह तो दासीपुत्र हैं, गद्दी के हक़दार नहीं हो सकते, इसलिए कोई भाई-बंद (बंधु) ही सिंहासन पर बैठेगा।

'इधर-उधर कोई भी उपयुक्त भाई-बंद नहीं। बड़ी कठिन समस्या है।'

'सब बुंदेले भाई-बंद ही हैं।'

'आप भी?' जनार्दन ने आँख गड़ाकर पूछा।

उसने उत्तर दिया, 'हाँ, मैं भी। प्रजा होने से क्या भाई-बंद में अंतर आ सकता है?'

हँसते हुए जनार्दन ने पूछा, 'आपको राजा नियुक्त कर दें तो?'

देवी सिंह सन्न रह गया। ज़रा रीती द ष्टि से जनार्दन की ओर देखने लगा।

जनार्दन बोला, 'यदि कर दें, तो गो-ब्राह्मणों की तो रक्षा होगी?' और हँसा।

शब्दार्थ :
बदकार – कुकर्मी
यकायक – अचानक
अंधकाराव त – अंधकार से ढकी
मनोवेग – मन का आवेग, मन में उठे विचार
रज – धूल
निषेध – नहीं, रोक

टिप्पणी

खंड-चौदह

पालर में और आस-पास भी खबर फैली हुई थी कि घोर लूट-मार और मार-काट होनेवाली है। उपद्रवों के मारे नगरों और राजधानियों में खलबली मची रहती थी। दिल्ली डावाँडोल हो चुकी थी। उसके सहायक और शत्रु अपने-अपने राज्य स्थापित कर चुके थे। परंतु ईर्ष्या और शत्रुता बढ़ने के भय से अपनी पूर्ण स्वतंत्रता बहुत थोड़े राजा या नवाब घोषित कर रहे थे। बहुत से स्वाधीन हो गए थे किंतु नाममात्र के लिए दिल्ली की अधीनता प्रकट करते रहते थे। इनमें जो प्रबल थे वे चौकस थे, निर्भय थे और उनकी प्रजा को बहुत खटका नहीं था, किंतु ऐसे थोड़े थे। जो छोटे या निर्बल थे, वे किसी प्रबल पड़ोसी या दूर के शक्तिशाली तूफानी जननायक की ओर निहारते रहते थे।

पालर में उठने वाले राजनीतिक उपद्रव के भय से वहाँ के ग्रामीण लोगों में चिंता का व्यापना तथा छोटे-छोटे राजाओं द्वारा सैनिक शक्ति की बढ़ोत्तरी

बड़नगर के राजा के लिए भी कम परेशानियाँ न थीं। पालर के निकट किसी होने वाले तूफान की खबर पाकर कुछ प्रबंध करने का संकल्प किया कि दूसरी ओर बड़े झंझावातों की दुश्चिंता में फँस जाना पड़ा। पालर के निकटवर्ती ग्रामों की रक्षा का कोई प्रबंध न किया जा सका। ऐसी अवस्था में साधारण तौर पर जैसे प्रजा को अपने भाग्य के भरोसे छोड़ दिया जाता था, छोड़ देना पड़ा।

पालर के और पड़ोस के निकटवर्ती ग्रामीणों ने इस बात को समझ लिया। कोई कहीं और कोई कहीं चला गया। रह गए अपने घरों में केवल दीन-हीन किसान जो हल-खेती छोड़कर कहीं न जा सकते थे। उन्हें पेट के लिए, राजा के लगान के लिए, लुटेरों की पिपासा के लिए खेतों की रखवाली करनी थी। आशा तो न थी कि चैत-वैशाख तक खेती बची रहेगी। यदि कहीं से घुड़सवार सेना आ गई तो खेतों में अन्न का एक दाना और भूसे का एक तिनका भी न बचेगा। परंतु जहाँ आशा नहीं होती, वहाँ निराशा ईश्वर के पैर पकड़वाती है। यदि बच गए, तो कृतज्ञ हृदय ने एक आँसू डाल दिया और बह गए तो भाग्य तो कोसने के लिए कहीं गया ही नहीं।

जिस समय बड़े-बड़े राजा और नवाब अपनी विस्त त भूमि और दीर्घ संपत्ति के लिए रोज-रोज खैर मनाते थे, अपने अथवा पराए हाथों अपने मुकुट की रक्षा में व्यस्त रहते थे और उसी व्यस्त अवस्था में, बहुधा दिन में दो-चार घंटे नाच, रंग, दुराचार और सदाचार के लिए भी निकाल लेते थे, उस समय प्रजा अपनी थोड़ी-सी भूमि और छोटी-सी संपत्ति के बचाव की फिक्र करते हुए भी देवालयों में जाती, कथा-वार्ता सुनती और दान-पुण्य करती थी। संध्या-समय लोग भजन गाते थे। एक-दूसरे की सहायता के लिए यथावकाश प्रस्तुत हो जाते थे।

पालर के सीधे-सीधे जीवन में जहाँ विशाल झील में नहा-धो कर काम करना और पेट-भर खा लेने के बाद शाम को झाँझ बजाकर ढोलक पर भजन गाना भी प्रायः नित्य का सरल कार्यक्रम था, वहाँ देवी के अवतार का चमत्कार भी एक महत्त्वपूर्ण विशेषता थी। इसके रंग को बाहर वालों ने अधिक गहरा कर दिया था, क्योंकि पालर वालों ने इसकी विज्ञप्ति के लिए स्वयं कोई कष्ट नहीं उठाया था।

वही चमत्कार उन दिनों उनकी विपत्ति का कारण हुआ। असंख्य घुड़सवारों की टापों से टूटे हुए हरे-हरे पौधों की टहनियों को धूल के साथ गगन में उड़ते देखना वहाँ के बचे-खुचे लोगों का जागते-सोते का स्वप्न हो गया था।

शब्दार्थः
झंझावात – तूफान, आँधी
पिपासा – प्यास
बहुधा – प्रायः

टिप्पणी

दलीप नगर तथा कालपी के बीच युद्ध छिड़ जाने के कारण कुमुद को लेकर उसके पिता द्वारा अपने राज्य का त्याग

जिस दिन दलीप नगर के राजा की मुठभेड़ कालपी के दस्ते के साथ हुई, उसी दिन कुमुद का पिता उसे ले कर कहीं चल दिया था। सब धन-संपत्ति नहीं ले जा पाया था। उसका ख्याल था कि शायद शांति हो जाए। थोड़े ही दिन बाद लौट आया।

उसके पड़ोस में केवल ठाकुर की एक लड़की, जिसका नाम गोमती था, रह गई थी। वह घर में अकेली थी। देवी सिंह के साथ इसी का विवाह होने वाला था। परंतु दूल्हा को राजा की पालकी थामे हुए गिरते, लोगों ने और गोमती ने देख लिया था। लोचन सिंह की सहानुभूतिमयी वार्ता गोमती नहीं भूली थी। दूसरे दिन जब राजा नायक सिंह दलीप नगर की ओर चलने लगे, तब डर के मारे किसी पालर-निवासी ने देवी सिंह की कुशल-वार्ता का समाचार भी न पूछा था। गोमती स्वयं जा नहीं सकती थी। उड़ती खबर सुन ली थी कि हाल अच्छा नहीं है।

नरपति सिंह को गाँव में फिर देखकर गोमती को बड़ा ढाँढ़स हुआ। जाकर पूछा, 'काकाजू, कहाँ चले गए थे? दुर्गा कहाँ है?'

'मंदिर में हैं।' नरपति सिंह ने अपना सामान जल्दी-जल्दी बाँधते हुए उत्तर दिया।

बड़ी विनय के साथ गोमती ने कहा, 'काकाजू, मैं भी उसी मंदिर में तुम्हारे साथ चलूँगी। जहाँ कुमुद होगी, वहीं मेरी रक्षा होगी। इस विशाल झील के सिवा और कोई मेरा यहाँ रक्षक नहीं।'

'चल सकोगी?' करारे स्वर में नरपति सिंह ने गोमती को विचलित करने के लिए कहा।

अचल कंठ से गोमती ने उत्तर दिया, 'चलूँगी, चाहे जितनी दूर और चाहे जैसे स्थान पर हों।'

'विराटा, भयानक बेतवा के बीच में यहाँ से दस कोस।'

'चलूँगी।'

थोड़ी देर बाद दोनों पोटली बाँधकर पालर से चल दिए।

खंड-पंद्रह

विराटा पालर से उत्तर-पूर्व के कोने में है। बेतवा के तट और टापू पर, घोर वन के आँगन में छोटी, संपन्न बस्ती थी। राजा दाँगी था। नाम सबदल सिंह। नदी की कगार पर उसका गढ़ था, जो दूर से वन के सघन और दीर्घकाय व क्षों के कारण कई ओर से दिखाई भी न पड़ता था।

विराटा में भी कुमुद के दुर्गा होने की बात विख्यात थी। राजा दाँगी था, इसलिए कुमुद के देवत्व को यहाँ और भी अधिक बड़प्पन मिला। नरपति सिंह थोड़े ही दिनों गाँव की बस्ती में रहा। नदी के बीच में टापू की पहाड़ी पर स्थित मंदिर उसे अपनी रक्षा और निधि के बचाव के लिए बहुत उपयुक्त जान पड़ा। कुमुद भी आवभगत और पूजा की बहुलता के मारे इतनी थक गई थी कि टोरिया के मंदिर के एकांत को उसने कम-से-कम कुछ दिनों के लिए बहुत हितकर समझा।

पालर से लौटकर गाँव में पहुँचने पर नरपति सिंह ने गोमती से कहा, 'तुम अब यहीं कहीं अपने रहने का बंदोबस्त करो। मैं देवी के पास मंदिर में जाऊँगा।'

'मैं भी वहीं चलूँगी।'

'बड़ा भयानक स्थान है।'

'भयानक स्थानों से नहीं डरती। देवी की सेवा में मेरा संपूर्ण जीवन सुभीते के साथ बीत जाएगा।' नरपति सिंह ने ज़िद न की।

जिस समय गोमती मंदिर में पहुँची, कुमुद बेतवा के पूर्व तट के उस ओर वन के जंगली पशुओं की आवाजें सुन रही थी। संध्या हो चुकी थी। पिता को देखते ही एकांतता का गांभीर्य चला गया। हर्ष की एक सुनहली रेखा से आँखें जग गई और गोमती को देखते ही आनंद की पुलकावलि का रेखाजाल विकसित मुख पर नाचने-सा लगा।

नरपति सिंह का कुमुद को लेकर विराटा में निवास कर जाना

गोमती को गले लगाकर बोली, 'गोमती, तुम भी आ गई! अच्छा किया। भूली नहीं। एक से दो हुए। अच्छी तरह हो। जब पालर चलेंगे, साथ ही चलेंगे।'

यह मिलाप नरपति सिंह को भी बुरा नहीं लगा। देवी को-अपनी कन्या को-एक घड़ी के लिए स्वाभाविक आनंद में लहराते देखकर वह बूढ़ा भी प्रसन्न हो गया।

नरपति सिंह बोला, 'गोमती, तुम इस कोठरी में अपना डेरा डाल लो। तुम्हें मैं कुछ वस्त्र और दूँगा। भोजन करके आराम से सो जाओ।'

कुमुद ने अपने सहज मीठे स्वर में कहा, 'हम और वह एक ही स्थान पर सोवेंगी। मैंने उसे अपनी छोटी बहिन बना लिया है।'

चित्र : गोमती का कुमुद से मिलना, प्रसन्न होना

भोजन के उपरांत नरपति सिंह मंदिर के एक बड़े कोठे में जा लेटा और तुरंत सो गया। दूसरी ओर की एक कोठरी में कुमुद और गोमती जा लेटीं।

कुमुद ने पूछा, 'उस दिन युद्ध में क्या हुआ था?'

'दुर्गा ने जो चाहा, सो हुआ। अंतर्यामिनी हो कर भी आप यह प्रश्न करती हैं, यह केवल आपकी महत्ता है।'

'फिर भी तुम्हारे मुँह से सुनना चाहती हूँ।'

गोमती ने जितना वत्तांत सुन रखा था, सुनाया। अपने विवाह से संबंध रखने वाली घटना नहीं कही।

कुमुद ने पूछा, 'उस दिन तुम्हारी बारात आ रही थी, टीका कुशलपूर्वक हो गया था या नहीं?'

गोमती ने कोई उत्तर नहीं दिया। एक आह भर ली।

कुमुद ने कहा, 'उधर के समाचार मुझे नहीं मिले। पूजा-अर्चना में इतनी संलग्न रही कि पूछ नहीं पाई।'

रूद्ध स्वर में गोमती ने कहा, 'आपसे कोई बात छिपी थोड़े ही रह सकती है? मैं क्या बतलाऊँ।'

कुमुद ने सहानुभूति के साथ कहा, 'तुम्हारे ही मुँह से सुनूँगी। सच मानो, मुझे नहीं

शब्दार्थ :

पुलकावलि – रोमांच
अंतर्यामिनी – मन की बात जानने वाली
निठुर – कठोर हृदय

टिप्पणी

गोमती द्वारा कुमुद को उस दिन के युद्ध का वर्णन

मालूम।'

कुमुद ने उस अँधेरी कोठरी में यह नहीं देखा कि गोमती के कानों तक आँसू बह आए।

'एक निठुर ठाकुर पास आ कर बुरी-भली बातें कहने लगा। किसी ने उसे लोचन सिंह के नाम से संबोधन किया था।' गोमती ने कहा।

'लोचन सिंह!' कुमुद ने कुछ सोच कर कहा, 'यह नाम मुझे भी मालूम है। उस दिन की लड़ाई से इस नाम का कुछ संबंध है। कहे जाओ बहिन, आगे क्या हुआ?'

गोमती कहने लगी, 'वह पत्थर का मनुष्य लोचन सिंह उन्हें ठुकरा देना चाहता था। मेरे मन में आया कि खड्ग लेकर उसे ललकारूँ और सिर काट कर फेंक दूँ। इतने में घोड़े पर बैठे राजकुमार वहाँ आ गए।'

'राजकुमार!' ज़रा चकित होकर कुमुद बोली, 'अच्छा फिर?'

गोमती ने उत्तर दिया, 'राजकुमार आ गए। उन्होंने धीरे से उनके घायल शरीर को अपने घोड़े पर कस लिया और अपने डेरे पर ले गए। उनका नाम भूल गई हूँ।'

'नाम कुंजर सिंह है।' कुमुद ने कहा, फिर तुरंत ज़रा उपेक्षा के साथ बोली, 'कुछ भी नाम सही, फिर वे सब कहाँ गए?'

गोमती ने उत्तर दिया, 'वह पाषाण-हृदय लोचन सिंह तब राजकुमार को वहाँ से जल्दी-जल्दी लिवा ले गया। सवेरे सुना, राजा अपने दल के साथ दलीप नगर चले गए।'

कई क्षण बाद कुमुद ने पूछा, 'दूल्हा का कुशल समाचार मिल गया था?'

ज़रा संकोच के साथ गोमती ने कहा, 'दूसरे दिन खबर लगी थी कि राजकुमार रात-भर मरहमपट्टी करते और दवा देते रहे। इससे आगे कुछ नहीं सुना। आप तो राजकुमार को जानती होंगी।

'मैंने उसका वह नाम यों ही सुन लिया था।' कुमुद बोली, 'अब सो जाओ, बहुत थकी हुई हो।'

खंड-सोलह

राजा नायक सिंह अपने दल के साथ एक दिन पंचनद पहुँच गए।

पंचनद, जिसे पचनदा भी कहते हैं, बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है। यमुना, चंबल, सिंधु, पहूज और कुमारी, ये पाँच नदियाँ उस जगह आकर मिली हैं। स्थान की विस्त त भयानकता उसकी विशाल सुंदरता से होड़ लगाती है। बालू, पानी और हरियाली का यह संगम वैभव, भय और सौंदर्य के विचित्र मिश्रण की रचना करता है। इस संगम के करीब एक गढ़ी थी। राजा उसी में जाकर ठहरे। संध्या के पहले ही डेरे पड़ गए। मार्ग से भटकी हुई दूर की गढ़ी में पहुँचकर किसी को भी हर्ष नहीं हुआ। केवल लोचन सिंह ने ठंडा पानी पीकर, घोड़े की पीठ ठोंकते-ठोंकते सोचा कि आज रात-भर अच्छी तरह सोऊँगा। कालपी पंचनद से दूर नहीं थी। कालपी के फ़ौजदार से किसी तत्काल संकट की आशंका न थी। उन दिनों मिलाप करते-करते छुरी चल पड़ती थी और छुरी चलते-चलते मिलाप हो जाता था। जनार्दन मेल और लड़ाई दोनों के लिए तैयार था। कुछ लोग सोचते थे कि दलीप नगर छोड़ आने में राज्य की हत्या का-सा काम किया, परंतु उस परिस्थिति में राजा की आज्ञा का उल्लंघन करना असंभव था। इसलिए ऐसे लोग पछतावा तो प्रकट न करते थे; परंतु राजा के लिए चिंतित दिखाई पड़ते थे। केवल

जनार्दन कम-से-कम ऊपर से चिंतित नहीं दिखाई पड़ता था।

सभी अगुओं के मन में एक बात ही थी, राजा की समाप्ति कब शीघ्रतापूर्वक हो और कब राजसत्ता किसी अच्छे आदमी के हाथ में आए। केवल देवी सिंह भगवान से राजा के स्वास्थ्य-लाभ के लिए दिन में एक-आध बार प्रार्थना कर लेता था।

लोगों को दिखाई पड़ रहा था कि सैनिकों का विश्वास लोचन सिंह के बल-विक्रम पर और जनार्दन की दक्षता तथा कुशलता पर है। जनार्दन अपनी आर्थिक समर्थता और व्यवहार-पटुता के कारण पंचनद पर सेना के विश्वास का स्तंभ हो गया। खुल्लम-खुल्ला कोई रानी उसके खिलाफ कुछ नहीं कह रही थी। लोचन सिंह के पास न कोई षड्यंत्र था और न कोई षड्यंत्रकारी दल। षड्यंत्र की स ष्टि के लायक कुंजर सिंह में न तो यथेष्ट मानसिक चपलता थी और न किसी षड्यंत्र के प्रबल नायकत्व के लिए पूरी नैतिकहीनता। भीतर महलों में षड्यंत्र बनते और बिगड़ते थे। परंतु उनके लिए योग्य संचालक की अटक थी।

राजा की तबीयत ज़्यादा खराब हो जाने के कारण उत्तराधिकारी की घोषणा को लेकर अटकलों का लगाया जाना तथा राजा की इस संबंध में प्रतिक्रिया पर कर्मचारियों की निगाह

दो दिन के बाद बड़ी रानी ने कुंजर सिंह को बुला कर प्रस्ताव किया, 'दलीप नगर तुरंत लौट चलो।'

'प्रयत्न करता हूँ।' उत्तर मिला।

कुंजर सिंह वहाँ से जाने को ही हुआ था कि रामदयाल रोती सूरत बनाए आया, बोला, 'कक्काजू....'

रामदयाल ने कहा, 'जमनाजी से रज और गंगाजल मँगाने का हुकुम हुआ है। चलना होवे।'

'क्या दशा बहुत बिगड़ गई है?' रानी ने कंपित स्वर में पूछा।

'हाँ महाराज।' कह कर रामदयाल छोटी रानी के पास चला गया।

उसी समय जनार्दन वहाँ आया। रानी आड़ में हो गई। उत्तर देनेवाली दासी, जिसे जवाब कहते हैं, रानी के कहलवाने से बोली, 'कहिए, महाराज का हाल अब कैसा है?'

'पहले से बहुत अच्छा है।' जनार्दन ने उत्तर दिया, 'उन्हें खूब चेत है। परंतु अंत समय दूर नहीं मालूम होता। बार-बार देवी सिंह का नाम ले रहे हैं। वह महाराज के पास ही बैठे हैं। 'दवात-कलम मँगाई थी।'

कुंजर सिंह ऐसे हिला, जैसे किसी ने यकायक झकझोर डाला हो। बोला, 'दवात-कलम किसलिए मँगाई थी?'

स्पष्टता के साथ जनार्दन ने जवाब दिया, 'कदाचित् अपना अंतिम आदेश करना चाहते हैं। दवात-कलम पहुँच गई है, कागज पर कुछ लिख भी चुके हों।'

कुंजर सिंह सन्न हो कर बैठ गया। जनार्दन चला गया।

खंड-सत्रह

उसी समय पंचनद की छावनी में हकीम आगा हैदर आ गया। आते ही उसने जनार्दन से कहा, 'यहाँ आकर बहुत बुरा किया। क्या राजा को मारने के लिए आए थे?'

'नहीं, उनकी इच्छा उन्हें यहाँ ले आई। अब वह जा रहे हैं।'

'ऐसी जल्दी! उफ!'

शब्दार्थ:
यथेष्ट – पर्याप्त

'यह सब पीछे सोचिएगा। राजा के पास तुरंत चलिए।'

दोनों जा पहुँचे। लोचन सिंह दवा-दारू में व्यस्त था। देवी सिंह राजा के पास बैठा उनकी देखभाल कर रहा था। छोटी रानी एक ओर परदे में बैठी हुई थीं।

संकेत में आगा हैदर ने अपने लड़के से राजा की दशा पूछी। उसने सिर हिला कर निराशासूचक संकेत किया।

राजा क्षीण स्वर में बोले, 'हकीमजी, कहाँ थे?'

काँपे हुए गले से आगा हैदर ने कहा, 'कदमों में।'

'आज सब पीड़ा खत्म होती है, हकीमजी।' राजा सिसकते हुए बोले।

रोते आगा हैदर ने कहा, 'हुज़ूर की ऐसी अच्छी तबीयत बहुत दिनों से देखी गई थी। आशा होती है....!'

राजा ने हाथ हिला कर सिर पर रख लिया।

'हकीमजी कालपी गए थे, महाराज। वह अलीमर्दान को किसी गड्ढे में खपाने की चिंता में हैं।' लोचन सिंह ने राजा को शायद प्रसन्न करने के लिए कहा।

आगा हैदर ने हाथ जोड़ कर लोचन सिंह को वर्जित किया।

'हकीमजी,' लोचन सिंह ने धीरे से कहा, 'क्षत्रिय न तो रण की म त्यु से डरता है और न घर की म त्यु से।'

इतने में एक ओर परदे में बड़ी रानी भी आ बैठीं।

रामदयाल ने छोटी रानी के पास से आकर जनार्दन से ज़रा ज़ोर से कहा, 'आप सब लोग बाहर हो जाएँ। कक्कोजू दर्शन करना चाहती हैं।'

राजा ने यह सब वार्ता कुछ सुन ली, कुछ समझ ली। टूटे हुए स्वर में बोले, 'तब सब लोग यही समझ रहे हैं कि मैं मरने को हूँ। कुंजर सिंह कहाँ है?'

राजा को म त्युआसन्न देख कर लोचन सिंह तथा जनार्दन का कुंजर सिंह के खिलाफ षड्यंत्र

कुंजर सिंह तुरंत हाथ जोड़ कर सामने खड़ा हो गया। राजा की आँखों में आँसू आ गए और गला रुँध गया। कुछ कहने को हुए, न कह पाए। कुंजर सिंह की आँखें भी डबडबा आईं।

जनार्दन इस तरह बहुत सतर्क था, द ष्टि तुली हुई और सारी देह कुछ करने के लिए सधी हुई वह ऐसा जान पड़ता था, जैसे कि महत्त्वपूर्ण नाटक का सूत्रधार हो। उसने लोचन सिंह की ओर देखते हुए कहा, 'इस समय महाराज को बात करने में जितना कम कष्ट हो, हम अपना उतना ही बड़ा सौभाग्य समझें।'

लोचन सिंह ने कुंजर सिंह के पास जाकर कहा, 'राजकुमार, ज़रा इधर आइए।' इच्छा-विरुद्ध कुंजर सिंह दूसरी ओर दो-तीन कदम के फासले पर हट गया।

जनार्दन दवात-कलम और कागज ले कर राजा के पास जा कर झुक गया। राजा असाधरण चीत्कार के साथ बोले, 'मुझे क्या तुम सबने पागल समझ लिया है?' और तुरंत अचेत हो गए। रामदयाल झपट कर राजा के पास आना चाहता था, लोचन सिंह ने रोक लिया।

कुंजर सिंह ने हकीम से कहा, 'आप देख रहे हैं कि आपकी आँखों के सामने यह क्या हो रहा है?'

शब्दार्थ :
कदाचित – शायद

'मेरी समझ में कुछ नहीं आता।' हकीमजी ने आँखें मलते हुए कहा।

'यह दुधारा खाँड़ा भी आज किसी लोभ में आ गया है।' लोचन सिंह की ओर इंगित करके कुंजर सिंह ने दबे गले से कहा और द ढ़तापूर्वक अपने पिता के पैताने जा कर खड़ा हो गया।

लोचन सिंह धीरे से बोला, 'महाराज जिसे चाहेंगे, उसे लिख देंगे। किसी को उनसे अपनी माँग-चूँग नहीं करनी चाहिए।'

एक क्षण बाद राजा को होश आता देखकर जनार्दन ने ज़ोर से कहा, 'कलम-दवात मँगवाई थी, सो आ गई। देवी सिंह के लिए आदेश हुआ, वह वहाँ उपस्थित है।'

'मुझे किसलिए?' परंतु सुनाई नहीं पड़ा।

जनार्दन ने आग्रह के ऊँचे स्वर में कहा, 'अब आज्ञा हो जावे।'

राजा ने कुछ मुँह में कहा, एक कोने से देवी सिंह ने पूछा।

रानी द्वारा कुंजर सिंह को अपने सिंघासन के अधिकार को माँगने के लिए उकसाया जाना।

जनार्दन ने मानो कुछ सुना हो। बोला, 'बहुत अच्छा महाराज, यमुनाजी की रज और गंगाजल ये हैं।' वह सामग्री पास ही रखी थी।

रामदयाल ने छोटी रानी के परदे के पास से चिल्लाकर कहा, 'हकीमजी, यहाँ जल्दी आइए।'

हकीम राजा को छोड़कर नहीं गया। तब रामदयाल चिल्लाया, 'कुंजर सिंह राजा, आप ही इधर तक चले आओ।'

जैसे किसी ने ढकेल दिया हो, उसी तरह कुंजर सिंह छोटी रानी के परदे के पास पहुँचा। छोटी रानी ने सबके सुनने लायक स्वर में कहा, 'भकुए बने खड़े क्या कर रहे हो? तुम राजा के कुँवर हो, क्यों अपना हक मिटने देते हो? जाओ, राजा के पास अपना हक लिखवा लो।'

लोचन सिंह बोला, 'राजा जिसे देंगे, वही पावेगा। यह जबरदस्ती नहीं लिखवाया जा सकता।'

कुंजर सिंह राजा के पलंग की ओर बढ़ा। इतने में जनार्दन ने कहा, 'महाराज देवी सिंह का नाम ले रहे हैं। सुन लो चामुंडराय लोचन सिंह, सुन लो हकीमजी, सुन लो कुंजर सिंह राजा, सुन लो कक्कोजू!' और सब चुप रहे।

लोचन सिंह बोला, 'आप झूठ थोड़े ही कह रहे हैं।'

राजा ने वास्तव में देवी सिंह का नाम दो-चार बार उच्चारण किया था। परंतु क्यों किया था, इस बात को सिवा जनार्दन के और कोई नहीं बतला सकता था।

जनार्दन ने और किसी ओर ध्यान दिए बिना ही खूब चिल्ला कर राजा से कहा, 'तो महाराज देवी सिंह को राज्य देते हैं?'

राजा ने केवल 'देवी सिंह' नाम ले कर उत्तर दिया और राजा देर तक सिर कँपाते रहे। होंठों पर कुछ स्पष्ट शब्द हिले, परंतु सुनाई कुछ भी नहीं पड़ा। और लोगों के मन में संदेह जाग्रत हुआ हो या न हुआ तो, परंतु लोचन सिंह के मन में कोई संशय न रहा।

शब्दार्थः

खाँड़ा – तलवार

इंगित – इशारा

भकुआ – क्या करें, क्या न करें की मनः स्थिति

टिप्पणी

जनार्दन ने राजा के हाथ में कलम पकड़ा कर कहा, 'तो लिख दीजिए इस कागज पर, देवी सिंह राजा हुआ।' राजा का हाथ अशक्त था। किंतु किसी क्रिया के लिए ज़रा हिल उठा। सबने देखा जनार्दन ने तुरंत उस हिलते हुए हाथ को अपने हाथ में पकड़ कर कागज पर लिखवा लिया-देवी सिंह राजा हुए। उसके नीचे राजा की सही भी करा ली।

राजा द्वारा देवी सिंह को राजा बनाया जाना

रामदयाल चिल्लाया, 'कक्कोजू की मर्जी है कि यह सब जाल है। महाराज कुछ सुन या समझ नहीं सकते। राजा कुंजर सिंह महाराज हो सकते हैं, और किसी का हक़ नहीं।'

बड़ी रानी ने कहलवाया, 'पहले भलीभाँति जाँच कर ली जाए कि महाराज ने अपने चेत में यह आदेश लिखा है या नहीं। व्यर्थ का बखेड़ा नहीं करना चाहिए।'

बड़ी रानी की ओर हाँथ बाँधकर जनार्दन बोला, 'बड़ी कक्कोजू के जानने में आवे कि राज्य कुँवर देवी सिंह को ही दिया गया है।'

'धाँय, धाँय, धाँय।' उधर तोपों का शब्द हुआ।

'महाराज देवी सिंह की जय!' तुमुल स्वर में कोठी के बाहर सिपाही चिल्लाए।

इतने में क्षीण स्वर में 'कुंजर सिंह!' फिर कहा, 'कुंजर सिंह' और रामदयाल ने सुना शायद जनार्दन ने भी। कुंजर सिंह बोला, 'अब भी छल और धूर्त न करते चले जाओगे? मेरा नाम ले रहे हैं।'

'नहीं' देवी सिंह ने कहा, 'नहीं' जनार्दन बोला आगा हैदर चुपचाप एक कोने में खड़ा था।

छोटी रानी परदे से चिल्ला उठी, 'कायर! डरपोक! क्या राज्य ऐसे लिया जाता है?' परदा ज़ोर से हिला, मानो रानी सबके सामने किसी भयानक वेश में आने वाली हैं। रामदयाल लपक कर दरवाजे पर जा डटा।

कुंजर सिंह ने तलवार खींच ली। इतने में लोचन सिंह आ गया। बोला, 'यह क्या है कुंजर सिंह राजा?'

प्रतिक्रिया स्वरूप कुंजर सिंह द्वारा अपनी तलवार म्यान से बाहर निकाल लेना

'ये लोग मुझे अब अपने राज्य से वंचित करना चाहते हैं, दाऊजू। कक्काजू ने अभी नाम लेकर मुझे राज्य दिया है।'

'तलवार म्यान में राजा।' लोचन सिंह ने कुंजर सिंह के पास जा कर डपटकर कहा, 'जो कुछ महाराज ने किया है, वह सब मेरे देखते-सुनते हुआ है।' 'धोखा है।' रामदयाल चिल्ला कर छोटी रानी के दरवाजे पर डटे हुए बोला।

महाराज का देहांत

राजा ऊर्ध्वश्वास लेने लगे।

राजा की अवस्था ने उपस्थित लोगों के बढ़ते हुए क्रोध पर छाप-सी लगा दी। राजा को भूमि पर शय्या दे दी गई। मुँह में गंगाजल डाल दिया गया। तोपों और जयजयकार के नाद में राजा नायकसिंह की संसार-यात्रा समाप्त हो गई।

खंड-अट्ठारह

जनार्दन प्रधानमंत्री घोषित कर दिया गया और लोचन सिंह प्रधान सेनापति। इसी बीच दिल्ली से जो समाचार अलीमर्दान को मिला, उससे उसकी बहुत सी चिंताएँ दूर हो गईं। उसने दलीप नगर पर आक्रमण करना निश्चित कर लिया। यदि अलीमर्दान को वह समाचार कुछ दिन पहले मिल गया होता तो शायद वह पंचनद पर ही युद्ध ठानने की

शब्दार्थः

उर्ध्वश्वास–मरते समय चलने, वाली लंबी साँसें

धूर्त – कपटी, छली, झूठा

टिप्पणी

चेष्टा करता। परंतु इसकी संभावना थी बहुत कम, क्योंकि बहुत दूर न होते हुए कालपी से पंचनद पर तोपों का घसीट ले जाना काफ़ी समय ले लेता।

थोड़े दिनों बाद यह सेना कालपी से चल पड़ी।

देवी सिंह का राज के रूप में कार्यभार संभालना तथा अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर आक्रमण

उधर दलीप नगर में भी खूब तत्परता के साथ जनार्दन और लोचन सिंह द्वारा सैन्य-संगठन होने लगा। प्रजा में विश्वास का संचार हुआ। देवी सिंह इस तरह राजसिंहासन पर बैठने लगा, जैसे दरिद्रता या सामाजिक स्थिति की लघुता ने कभी उसका संपर्क ही न किया हो। उसी समय समाचार मिला कि कुंजर सिंह ने कुछ सरदारों को साथ ले कर सिंहगढ़ पर कब्जा करके विद्रोह का झंडा खड़ा कर दिया है। जनार्दन ने यह भी सुना कि छोटी रानी कुंजर सिंह को उभाड़ने और द्रव्य आदि से सहायता करने में कोई संकोच नहीं कर रही हैं। इस पर भी नए राजा ने उनके साथ कोई बुरा बरताव करने का लक्षण नहीं दिखाया।

इसी बीच खबर लगी कि अलीमर्दान सेना लेकर राज्य की सीमा के पास से होता हुआ बढ़ता आ रहा है। शायद कहीं और जा रहा हो। कम-से-कम अपनी तरफ से कारण न उपस्थित किया जाए। ऐसी दशा में उससे लड़ने के लिए सेना भेजना राजा देवी सिंह ने उचित नहीं समझा, परंतु अपने यहाँ चौकसी रखी। कुंजर सिंह को सिंहगढ़ से निकाल भगाने के लिए सिंहगढ़ में घेर लिया गया। सिंधु नदी साँप की तरह कतराती हुई इस किले के नीचे से बहती चली गई है। नदी के उस ओर भयानक जंगल था। किले में खाद्य-सामग्री थोड़े दिनों के लिए थी। घेरा प्रचंडता और निष्ठुरता के साथ पड़ा। किले के बाहर निकल कर लड़ना आत्मघात से भी बुरा था। किले की दीवारों पर तोपें निरंतर गोले फेंकने लगीं। बचने का कोई उपाय न देखकर जो कुछ कुंजर सिंह को अनिवार्य दिखाई पड़ा, वही निश्चय किया, अर्थात् लड़ते-लड़ते मर जाना।

मौका मिलते ही रामदयाल ने छोटी रानी के कान भर दिए। रानी के क्रोध का पार न रहा, बोलीं, 'मैं तब अन्न-जल ग्रहण करूँगी, जब जनार्दन का सिर काट कर मेरे पास ले आवेगा।'

रामदयाल को विस्मय हुआ, वह रानी के हठी स्वभाव को जानता था। उसकी यह कल्पना न थी कि बात इतनी बढ़ जाएगी। बोला, 'अभी काकाजू की तेरही नहीं हुई है; जब हो जाएगी, तब इस काम के होने में देर नहीं लगेगी।'

रामदयाल द्वारा रानी का कान भरना तथा रानी का प्रण

'यदि जनार्दन मार डाला गया, तो मानो राज्य प्राप्त हो गया। उसी के प्रपंच से आज मैं इस दशा को पहुँची हूँ। उसी के षड्यंत्रों से राज्याधिकार से वंचित रही। बोल, तू उसका सिर काट सकेगा?'

'मैं आज्ञापालन से कभी न हिचकूँगा।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'फिर चाहे चरणों की सेवा में मुझे अपने प्राण भले ही उत्सर्ग करने पड़ें।'

'तब ठीक है।' रानी ने ज़रा संतोष के साथ कहा, 'परंतु अन्न-जल तभी ग्रहण करूँगी।' रामदयाल ने विषयांतर के प्रयोजन से कहा, 'कालपी से अलीमर्दान की सेना आ रही है।' 'आती होगी, मुझे उसकी कोई चिंता नहीं।'

'इधर से सिंहगढ़ की ओर सेना भेजी गई है। बहुत-सी तोपें भी गई हैं। जनार्दन को इस समय अलीमर्दान इतना शत्रु नहीं जान पड़ रहा है जितना कुंजर सिंह राजा।'

शब्दार्थ:

नाद – स्वर, आवाज़

तेरही – म त्यु से तेरहवाँ दिन, श्राद्धकर्म के अंतिम दिन का संस्कार

रानी ने चकित होकर पूछा, 'कुंजर सिंह को समाचार भेज दिया या नहीं?'

उत्तर दिया, 'कड़ा पहरा बिठलाया गया है। गुप्तचर वेश बदलकर घूम रहे हैं। वहाँ जाने के लिए मेरे सिवा और कोई नहीं है।'

रानी बोलीं, तुम किसी तरह उनके पास यह समाचार पहुँचा दो कि सिंहगढ़ की रक्षा के लिए अधिक मनुष्य एकत्र कर लो, तब तक मैं अन्य सरदारों को ठीक करती हूँ।'

सिर खुजलाते हुए अत्यंत दीनतापूर्वक रामदयाल ने कहा, 'सेना को सिंहगढ़ की ओर गए हुए देर हो गई है। बहुत तेज घोड़े की सवारी से ही इस सेना से पहले सिंहगढ़ पहुँचा जा सकता है। इधर जनार्दन की हम लोगों पर बड़ी पैनी आँख है। कोई अन्य विश्वसनीय आदमी हाथ में नहीं।'

'अच्छा, मैं पुरुषवेश में सिंहगढ़ जाती हूँ।' रानी ने तमककर कठिनाइयों का निराकरण किया, 'देखें मेरा कोई क्या करता है?'

परंतु धीरे से रामदयाल ने कहा, 'महाराज, इस तरह अपने महल को छोड़ कर स्वयं देश-निष्कासित होने से कुंजर सिंह राजा को कोई सहायता आपके द्वारा न मिलेगी और निश्चित स्थान से अनिश्चित स्थान में भटकने की नई कठिनाई का भी सामना करना पड़ेगा।'

रानी की आँख से चिनगारी छूट पड़ी। 'दलीप नगर के इस बिल में चूहे की मौत नहीं मरूँगी।' रानी ने कहा, 'बड़ी की तरह नहीं हूँ कि ऐरों-गैरों का उस पवित्र सिंहासन पर बैठना सह लूँ। घोड़ा तैयार करवा। हथियार और कवच ला।'

रामदयाल आज्ञापालन के लिए चला, फिर लौट कर खड़ा हो गया।

रानी डपट कर बोली, 'क्या मैं ही तेरी खाल खींचूँ? जानता है क्षत्रिय-कन्या हूँ, अपने हाथ से भी घोड़े पर जीन कस सकती हूँ।'

'महाराज!' रामदयाल बड़बड़ाया।

रानी ने अपने कोषागार से तलवार, ढाल और दो पिस्तौलें निकाल लीं। मुस्करा कर कहा, जैसे सावन की अँधेरी रात में बादलों के भीतर बिजली की एक रेखा थिरक गई हो, 'तुझे हथियार उठा लाने का प्रयत्न न करना पड़ेगा। घोड़ा कस सकेगा?'

'महाराज।' रामदयाल ने कंपित स्वर में कहा, 'मैं भी साथ चलूँगा। यदि सर्वनाश ही होना है, तो हो। नहीं तो पीछे मेरी लाश को किसी घूरे पर गीध और गीदढ़ नोचेंगे।'

रानी थक कर चौकी पर तकिया के सहारे बैठ गई।

एक क्षण बाद पूछा, 'बोल, क्या कहता है?'

रामदयाल ने स्थिरता के साथ उत्तर दिया, 'अलीमर्दान की सेना दलीप नगर पर आक्रमण करने आ रही है। अभी दूर है, परंतु थोड़े दिन में अवश्य ही निकट आ जाएगी। जनार्दन उस सेना से युद्ध करने की तैयारी कर चुका है। लड़ाई अवश्य होगी। संधि के लिए कोई गुंजाइश नहीं रही।'

'यह सब क्या पहेली है रामदयाल?' रानी ने झुँझला कर पूछा, 'सीधी तरह कह डाल, जो कुछ कहना हो।'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'अन्नदाता, अलीमर्दान ने अपने राज्य का कुछ नहीं बिगाड़ा था। लोचन सिंह दाऊजी ने नाहक उसकी फ़ौज के एक सरदार को मार डाला। यदि

शब्दार्थ:
बिसावे, बिसाना–झेल लेना, सहन कर लेना

वह बदला लेने के लिए आ रहा है, तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। मंदिर और दुर्गाजी के अपमान की बात बिल्कुल बनावटी है। अलीमर्दान को केवल रुपए से गरज है।'

रानी उठ खड़ी हुई, आँखें जल रही थीं। परंतु धीमे स्वर में बोलीं, 'देख रामदयाल, यदि तू पागल हो गया है, तो मेरी कोई दवा-दारू न होगी। यदि तेरी बात समाप्त हो गई हो और तू अचेत न हो, तो तुरंत घोड़ा कस ले।'

रामदयाल वहाँ से नहीं टला। शीघ्रतापूर्वक बोला, 'कई बार दिल्ली के बादशाहों का साथ इस राज्य ने दिया है। अबकी बार दिल्ली के सरदार से यदि सहायता ली जाए, तो क्या बुराई है?'

रानी बैठ गई, सोचने लगीं। सोचती रहीं।

रामदयाल बीच में बोला, 'अलीमर्दान से बड़नगर वाले नहीं लड़ रहे हैं, विराटा का दाँगी राजा नहीं लड़ रहा है, दलीप नगर को ही क्या पड़ी है, जो व्यर्थ का वैर बिसावे? उसकी सहायता से यदि आप या कुंजर सिंह राज–सिंहासन पा सकें तो कोई अनुचित बात नहीं।'

रानी ने थोड़ी देर में बहुत थके हुए स्वर में कहा, 'तब कुंजर सिंह के पास न जाकर अलीमर्दान के पास जा। मेरी राखी लेता जा। यदि वह मंदिर तोड़ने के लिए आया हो, तो बिना कोई बातचीत किए तुंरत लौट आना।

खंड-उन्नीस

कुछ दिन पीछे विराटा में भी खबर पहुँची कि कालपी के सूबेदार अलीमर्दान की सेना पालर में पहुँच गई है। मंदिर तोड़कर नष्ट कर दिया है और कुमुद को लक्ष्य करके दलीप नगर पर आक्रमण करने वाली है। यह समाचार वहाँ पहले ही पहुँच गया था कि दलीप नगर का राज्य किसी एक अप्रसिद्ध, दरिद्र ठाकुर देवी सिंह को मिल गया है। किस तरह मिला, यह बात भी नाना रूप धारण करके वहाँ पहुँची थी।

विराटा छोटा-सा राज्य था, परंतु वहाँ का राजा सबदल सिंह सावधान और दिलेर आदमी था। मालूम था कि इस लड़ाई का कारण मंदिर की मूर्ति और कदाचित् कुमुद है। उसे वह सुरक्षित रखे हुए था। जब उसके पड़ोस में होकर अलीमर्दान की सेना निकली, तब उसने कोई रोक-टोक नहीं की, बल्कि खातिर से पेश आया, जिससे अलीमर्दान को कोई संदेह न हो।

इधर-उधर के समाचार कुमुद को बहुत कम मिलते थे। रात को नरपति सिंह से जो कुछ मालूम होता था, उसमें सांसारिक समाचारों का समावेश बहुत कम रहता था।

उस दिन जो कुछ गोमती ने सुना, उससे उसकी विचित्र दशा हो गई। वह कुमुद से कुछ कहना चाहती थी। पूजा और पुजारियों की भीड़ के मारे दिन में अवसर न मिला। दोनों रात गए अपनी कोठरी में चली गईं। कुमुद को विश्राम की ओर प्रव त्त होते देखकर गोमती ने कहा, 'क्या नींद आ रही है?'

'बड़ी क्लांत हूँ गोमती। आजकल काम के मारे जी बेचैन हो जाता है। मूर्ति से वरदान न माँग कर लोग मेरे सामने हाथ फैलाते हैं। मैं तो दुर्गा से केवल प्रार्थना करती हूँ, स्वयं किसी को कुछ नहीं दे सकती।'

शब्दार्थ:
क्लांत – थकी हुई

गोमती उसाँस लेकर बोली, 'उधर के समाचार सुने हैं? युग परिवर्तन-सा हुआ है।'

'क्या हुआ है गोमती?' कुमुद ने ज़रा रुचि दिखलाते हुए पूछा।

'अब राजा कौन हुआ है? युवराज को गद्दी मिली होगी।' उठती हुई उत्सुकता को शांत करके कुमुद ने पूछा।

'सो नहीं हुआ।' संयत आवेश के साथ गोमती बोली, 'राजकुमार को नहीं दूसरे को राजा राज्य देकर मरे हैं।'

बड़े कुतूहल के साथ कुमुद ने प्रश्न किया, 'किसको गोमती? किसको?'

'देवी का वरदान खाली नहीं जाता।' गोमती ने कहा, 'देवी की पूजा रीती नहीं पड़ती।'

'तुमने जो कुछ सुना हो, मुझे सविस्तार बतलाओ।' कुमुद ने उत्सुकता के साथ कहा।

गोमती चुप रही, जैसे किसी ने उसका गला पकड़ लिया हो। थोड़ी देर बाद बोली, 'जिसने उस दिन पालर की लड़ाई में राजा के प्राण बचाने के लिए अपने शरीर को लगभग कटवा दिया था।'

कुमुद ने अनसुनी-सी करके कहा, राजकुमार का क्या दोष समझा गया? इस कृत्य का मूल कारण राजा का पागलपन न समझा जाए, तो क्या समझा जाए?'

'पागलपन नहीं था जीजी?' गोमती ने द ढ़ता के साथ कहा।

इस नए संबोधन से कुमुद बहुत संतुष्ट नहीं हुई। परंतु उसी सहज म दुल स्वर में बोली, 'तो क्या था गोमती?'

'राजकुमार दासी से उत्पन्न हैं, इसलिए उन्हें राज्य नहीं मिला।' गोमती ने स्वाभाविक गति से उत्तर दिया।

लंबी उसाँस लेकर कुमुद ने पूछा, 'कौन राजा हुआ गोमती?'

गोमती ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'मैंने बतलाया था, जिन्होंने उस दिन राजा के प्राणों की रक्षा की थी।

कुमुद ने विस्मयपूर्वक कहा, 'तुम्हारे दूल्हा?'

गोमती ने कुछ नहीं कहा।

पाठगत प्रश्न 32.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. राजा नायक सिंह ने पहूज में स्नान न करने का फैसला किया, क्योंकि-
   (क) वह लोचन सिंह से डर गया
   (ख) नदी में पानी बहुत कम था
   (ग) हकीम के इलाज पर उसका विश्वास नहीं था
   (घ) कुंजर सिंह उसके साथ नहीं था
2. लोचन सिंह ने मुसलमान-सैनिक को दुर्गामंदिर से चले जाने को कहा, क्योंकि-
   (क) वह मंदिर की मर्यादा भंग कर रहा था
   (ख) उसने कुंजरसिंह को अपशब्द कहा

(ग) वह मुसलमान था

(घ) दुर्गा की पूजा करना चाहता था

3. कुंजर सिंह को सिंहासन प्राप्ति की आशा न थी, क्योंकि-

(क) वह कायर था

(ख) छोटी रानी उसे नहीं चाहती थी

(ग) राजा उससे घ णा करते थे

(घ) वह दासी पुत्र था

4. देवी सिंह को राजगद्दी इसलिए मिली क्योंकि –

(क) वह नायक सिंह का पुत्र था

(ख) जनार्दन उसका समर्थक था

(ग) उसने नायक सिंह की जान बचाई थी

(घ) वह वीर था

दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए:

5. राजा ने पालर झील में स्नान करने का विचार क्यों रखा ?

6. दाँगी कन्या कुमुद के दुर्गा का अवतार होने का विश्वास क्यों फैला ?

7. दलीप नगर और कालपी की सैनिक टुकड़ियों में झड़प क्यों हुई ?

8. नायक सिंह ने रामदयाल को क्या आदेश दिया ?

9. नायक सिंह कुंजर सिंह पर क्यों नाराज़ हुआ ?

10. जिस समय नायक सिंह कालपी के सैनिकों से घिर गया था, उस समय देवी सिंह कहाँ जा रहा था ?

द्वितीय अंश

खंड-बीस

कुंजर सिंह के विद्रोह और अलीमर्दान की अवश्यंभावी चढ़ाई का समाचार यथासमय टोरिया पर पहुँचा। गोमती ऐसे सब समाचारों को जासूसों की तरह खोद निकालने में निमग्न थी।

गोमती ने वार्तालाप आरंभ किया।

'मैंने सुना है 'कि कुंजर सिंह ने राज्य-विद्रोह किया है। सिंहगढ़ पर अनधिकार चेष्टा से दखल कर लिया है और इस अनुचित, अधर्मपूर्ण युद्ध में मनुष्यों के सिर काट और कटवा रहे हैं। छोटी रानी, जो म त राजा को विष देकर मार डालना चाहती थीं, उनका साथ दे रही हैं। ग ह-कलह की ऐसी आग दोनों ने मिलकर सुलगा दी कि दलीप नगर का राज्य राख में मिल जाने ही को है।'

कुमुद के हृदय से एक उष्ण उसाँस निकली।

गोमती कहती गई, 'इधर कालपी के मुसलमान सूबेदार ने चढ़ाई कर दी है। वह अपने विराटा के पास से होकर आजकल में ही निकलने वाला है। उसका प्रयोजन पालर

गोमती द्वारा दलीप नगर के नए राजा कुंजर सिंह के विद्रोह तथा अलीमर्दान के आक्रमण की कहानी कुमुद को सुनाया जाना।

शब्दार्थ:

टोरिया – छोटी पहाड़ी, बड़े-बड़े पत्थरों से युक्त ऊँचा टीला

उष्ण – गर्म

धर्मानुमोदित – धर्म द्वारा समर्थित

टिप्पणी

गोमती द्वारा देवी के मंदिर के अस्तित्व को लेकर आशंका व्यक्त करना

में मंदिर को विध्वंस करने का है। उसने आपके विषय में जो वासना प्रकट की है, उसे कहने से मेरी जीभ के खंड-खंड हो जाएँगे।'

कुमुद देर तक सोचती रही। थके हुए कुछ काँपते स्वर में बोली, 'गोमती, सो जाओ, फिर कभी बात करूँगी। नींद आ रही है।

परंतु भक्त का हठ चढ़ चुका था। गोमती बोली, 'नहीं देवी, आज वरदान देना होगा, जिसमें कोई अनिष्ट न हो। यदि कहीं आपने समझ लिया कि कुंजर सिंह का पक्ष न्यायसंगत है तो दलीप नगर का, संसार-भर का सर्वनाश हो जाएगा। यदि दलीप नगर के धर्मानुमोदित महाराज, कुंजर सिंह से हार गए, यदि अलीमर्दान ने ऐसी अव्यवस्थित अवस्था में राज्य पाया, तो आपके मंदिर का क्या होगा? धर्म का क्या होगा? अन्य राजा अपनी तर्जनी भी मंदिर की रक्षा में न उठावेंगे। विराटा राज्य में इतनी शक्ति नहीं कि अलीमर्दान का मर्दन कर सके। इसलिए जननी! रक्षा करो, बचाओ।'

गोमती कुमुद के पैरों से लिपट गई और आसुँओं से कुमुद के पैर भिगो दिए।

कुमुद ने कठिनाई से उसे छुड़ा कर अपने पास बैठा लिया। सिर पर हाथ फेर कर बोली, 'क्या चाहती हो गोमती? जो कुछ कहोगी, उसके लिए माता दुर्गा से प्रार्थना करूँगी। यह निश्चय जानो कि माता का मंदिर भ्रष्ट न होने पावेगा। उसकी रक्षा भगवती करेंगी।'

'तो मैं यह वरदान चाहती हूँ!' गोमती ने अँधेरे में हाथ जोड़कर कहा, 'यह भीख माँगती हूँ कि कुंजर सिंह का नाश हो, अलीमर्दान मर्दित हो और दलीप नगर के महाराज की जय हो।'

'कुमुद ने कुछ समय पश्चात् शांत, स्थिर स्वर में कहा, 'यह न होगा गोमती। परंतु मंदिर की रक्षा होगी और अलीमर्दान का मर्दन होगा, इसमें कोई संदेह नहीं।'

'यह वरदान नहीं है।' गोमती ने प्रखर स्वर में कहा, 'यह मेरे लिए अभिशाप है'

'मैं बतलाती हूँ। ठहरो।' कुमुद ने कहा और कुछ क्षण तक कुछ सोचती रही। फिर द ढ़तापूर्वक बोली, 'तुम्हारे राजा का राज स्थिर रहेगा। मंदिर बचेगा और अलीमर्दान की जय न होगी। तुम्हें इससे अधिक और क्या चाहिए?

गोमती संतुष्ट हो गई।

खंड-इक्कीस

अलीमर्दान एक बड़ी संख्या में सेना लिए हुए पालर जा पहुँचा। उसे अपने पड़ाव के लिए वहाँ से बढ़कर अच्छा स्थान मालूम न था। घोड़ों के लिए पानी और चारा दोनों का सुभीता था तथा उसी स्थान पर दुर्गा का मंदिर और पुजारिन का घर भी था।

बड़नगर के राजा को अलीमर्दान ने आश्वासन दे दिया था कि उसकी प्रजा के साथ किसी प्रकार का दुर्व्यवहार न किया जाएगा और न मंदिर को नष्ट। दलीप नगर के राजा को दंड देना, राज्य-च्युत करके हलवाहे को हलवाहा कर देना ही सिर्फ मेरी मंशा है। दलीप नगर और बड़नगर वर्षों से दिल्ली के मातहत राज्य थे, परंतु परस्पर स्वतंत्र थे। उनकी दिल्ली की मातहती भी दिल्ली के बल के हिसाब से घटती-बढ़ती या तिरोहित होती रहती थी। इस समय इनमें से कोई भी दिल्ली के प्रति व्यावहारिक रूप में अपनी अधीनता प्रकट नहीं कर रहा था; लेकिन खुल्लमखुल्ला विरोध भी न था।

दलीप नगर दुविधा में था। एक ओर सिंहगढ़ का घेरा, दूसरी ओर अलीमर्दान; घर में

टिप्पणी

छोटी रानी का भय और पूर्ण-दुर्व्यवस्था से राज्य को निकाल कर वर्तमान में संगठन का आयोजन।

इसलिए पालर तक पहुँच जाने में अलीमर्दान की रोक-टोक न की गई।

चित्र : अलीमर्दान का पालर पहुँचना

अलीमर्दान द्वारा पालर पहुँचकर मंदिर का निरीक्षण

अलीमर्दान जब पालर पहुँचा, उसे वहाँ सिवाय किसानों के कोई नहीं मिला। मंदिर का निरीक्षण करने गया। साथ में उसका एक सरदार था। अलीमर्दान ने सरदार से कहा, 'मंदिर तो बहुत छोटा है, काले खाँ। मैंने बहुत बड़े-बड़े मंदिर देखे हैं। क्या इसी के ऊपर उन लोगों को इतना नाज़ था?'

'हुज़ूर, इस जगह को उन लोगों ने अपनी नाक बना रखा है। पुजारिन कहीं भाग गई होगी, मगर पता लग जाएगा। बुंदेलखंडी लोग भागते भी हैं, तो घर छोड़कर दूर नहीं जाते।'

'तुम्हारे साथ किस जगह लोचन सिंह लड़ा था?'

काले खाँ ने स्थान बतलाकर कहा, 'इस जगह, हुज़ूर।'

'और वह कहाँ थी?'

अलीमर्दान को रानी द्वारा राखी भेजना तथा उससे अपनी सहायता का आश्वासन प्राप्त करना

लड़ाई के समय कुमुद जिस स्थान पर अपने पिता के साथ कुंजर सिंह की अभिभावकता में खड़ी थी, वह स्थान भी अलीमर्दान को बताया गया। यह सब देख-भाल कर और आसपास के रास्ते, छिपाव और आक्रमण के स्थानों की परीक्षा करके संध्या के पहले अलीमर्दान काले खाँ को साथ ले कर झील पर गया।

'पानी का बड़ा सहारा है यहाँ काले खाँ। यहीं से दस्ते बना-बना कर हमला करना अच्छा है।'

'बेहतर है हुज़ूर।'

'दो दिन सामान इकट्ठा कर लो। तीसरे दिन धावा कर दिया जाए। सिपाहियों को इस बीच में आराम भी मिल जाएगा।'

इतने में एक सिपाही ने सूचना दी कि दलीप नगर से कोई मुज़रा करने के लिए आया है। उससे नमाज़ के बाद तक ठहरने के लिए कह दिया गया।

नमाज़ के बाद अलीमर्दान से दलीप नगर का जो मनुष्य मिला, वह रामदयाल था। उस समय अलीमर्दान के पास काले खाँ के सिवा और कोई न था।

रामदयाल ने कहा, 'मैं सरकार के पास राखी लाया हूँ।'

'राखी!' अलीमर्दान आश्चर्य से बोला, 'किसने भेजी है? मैं राखी मंजूर न करूँगा।'

'यह राखी लौट नहीं सकती। म त महाराज की छोटी रानी ने भेजी है। जो नए राजा के विरुद्ध आपसे सहायता चाहती हैं।'

शब्दार्थ:

- **मर्दित** – पराजित, कुचला हुआ
- **च्युत** – हटाना
- **मातहत** – अधीन
- **तिरोहित** – समाप्त
- **अभिभावकता** – पिता तुल्य संरक्षण
- **वत्त** – हाल
- **राखी** – सूत का बना बन्धन जिसे बहन भाई को बाँधती है और उससे अपनी रक्षा का आश्वासन प्राप्त करती है।

अलीमर्दान चौंक पड़ा। 'छोटी रानी की राखी मंजूर है।' वह एक क्षण बाद बोला, 'जाओ, आज से वह मेरी धर्म की बहिन हुई।'

रामदयाल ने प्रसन्नतापूर्वक अलीमर्दान को राखी दे दी। उसने पगड़ी में रख ली। फिर रामदयाल से उसने एक-एक करके रियासत संबंधी सब व त्त पूछ डाला। सब हाल सुनकर काले खाँ से बोला, 'तुम एक दस्ता लेकर कुंजर सिंह की मदद के लिए सिंहगढ़ जाओ। मैं दूसरे दस्ते से दलीप नगर पर धावा करता हूँ।'

खंड-बाईस

रानी की रक्षा के लिए कुछ सरदारों को नियुक्त कर अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर आक्रमण

अपनी सेना का एक दस्ता पालर में छोड़कर दूसरे दिन उसने कूच कर दिया। जब दलीप नगर के राज्य में कई कोस घुस गया तब रामदयाल को विदा करते समय बोला, 'रानी के पास कुछ सरदार हैं?'

'उन सबको लेकर सिंहगढ़ पहुँचो। अब रानी का दलीप नगर में रहना ठीक नहीं।'

'बहुत अच्छा। मैं अभी जाकर इसका प्रबंध करता हूँ।'

कुछ समय उसे रोक कर अलीमर्दान ने कहा, 'मंदिर के विषय में तुम्हारा क्या ख्याल है कि मैं तुड़वा दूँगा।'

'कभी नहीं।' रामदयाल ने आवेश में आकर उत्तर दिया।

ज़रा ठहर कर अलीमर्दान ने कहा, 'मगर जिस लड़की ने यह फसाद करवाया था, उसे कुछ सजा दी जाएगी।'

अलीमर्दान हँस कर बोला फिर, 'मगर उस लड़की को जो सजा दी जाएगी, वह किसी बड़े पुरस्कार से भी बढ़कर होगी।'

रामदयाल अलीमर्दान का मुँह जोहने लगा।

अलीमर्दान कहता गया, 'उसे मैं अपने महल में जगह दूँगा। पालर की अपेक्षा शायद कालपी उसे शुरू-शुरू में कम पसंद आवे, बस, इतने में ही सजा समझो। इसके बाद अगर वह सुखी न रह सकी, तो तुम मुझे दोष देना। क्या कहते हो रामदयाल?' उसने उत्तर दिया, 'इसमें तो किसी प्रकार का हर्ज नहीं दिखलाई पड़ता हुजूर।'

राजा देवी सिंह और लोचन सिंह के नायकत्व में दलीप नगर की सेना को अलीमर्दान नुकसान नहीं पहुँचा पाया। दलीप नगर की ओर उसकी बढ़ती हुई प्रगति को निश्चित रूप से रुक जाना पड़ा। नालों, जंगलों और पहाड़ियों में लड़ते-लड़ते अलीमर्दान ने सोचा, बिना किसी अच्छे किले को हाथ में किए युद्ध आसानी से, और विजय की पूरी आशा के साथ न हो सकेगा। इसलिए उसने देवी सिंह की सेना को अटकाए रखने के लिए एक दस्ता जंगल में छोड़ दिया और उसी सेना के दूसरे दस्ते को लेकर होशियारी के साथ चुपचाप सिंहगढ़ रवाना हो गया। बहुत चक्करदार मार्ग से जाना पड़ा, इसलिए वह सिंहगढ़ के निकट देर में पहुँचा।

राजा देवी सिंह को इस चाल की सूचना विलंब से मिली। उस समय पालर की छावनी से अलीमर्दान की इस नई योजना के अनुसार और सिपाही आ पहुँचे। देवी सिंह इस सेना का मुकाबला और पालर की छावनी पर धावा करने के लिए वहीं गया और लोचन सिंह को सिंहगढ़ की ओर भेजा।

परंतु इसके पहले ही रामदयाल ने छोटी रानी के पास पहुँच कर राजधानी में ही उपद्रव

जाग्रत कर दिया। जो लोग राजा देवी सिंह के अभिषेक से असंतुष्ट थे वे सब छोटी रानी के झंडे के नीचे आ गए और उन्होंने खास दलीप नगर में ग ह युद्ध आरंभ कर दिया। छोटी रानी ने एक सरदार के नीचे थोड़ी-सी सेना राजधानी को तंग करने के लिए छोड़ दी और एक बड़ी तादाद में सेना को लेकर सिंहगढ़ की ओर चल पड़ी। उसे यह नहीं मालूम था कि अलीमर्दान सिंहगढ़ की ओर गया है। मालूम भी हो जाता, तो वह न रुकती। जनार्दन ने इस विद्रोह का समाचार राजा के पास, जहाँ वह लड़ रहा था, भेजा। पत्रवाहक लोचन सिंह को बीच ही में मिल गया। तब लोचन सिंह सिंहगढ़ की ओर न जाकर सीधा दलीप नगर पहुँचा। राजधानी के बलवे को दबाने के लिए लोचन सिंह को कई दिन लग गए।

चित्र : रामदयाल की छोटी रानी भेंट

इस बीच में रानी और अलीमर्दान की सेनाएँ सिंहगढ़ के मुहासिरे पर पहुँच गईं। राजा देवी सिंह की सेना को कुंजर सिंह, अलीमर्दान और छोटी रानी की सेनाओं से लोहा लेना पड़ा।

खंड-तेईस

राजा देवी सिंह की सेना सिंहगढ़ के घेरे में हार गई और भागकर दलीप नगर पहुँची। देवी सिंह ने जनार्दन से कहलवा भेजा, 'यदि लोचन सिंह से काम न चलता हो, तो किसी दूसरे सरदार को सिंहगढ़ भेजो। यहाँ उसे मत लौटाना मैं उसका मुँह नहीं देखना चाहता।'

जनार्दन ने सामयिक स्थिति पर बातचीत करते हुए लोचन सिंह से कहा, 'यदि आप सीधे सिंहगढ़ चले जाते, तो अच्छा होता। राजा की आज्ञा का उल्लंघन करके अच्छा नहीं किया।'

'वह पुरानी बात है। यदि काम करना है, तो उसे तो यों ही मानूँगा और नहीं करना है तो अपने घर चला जाऊँगा, परंतु युद्ध के विषय में मैं पंडितों की आज्ञा नहीं लिया करता।'

'महाराज ने क्या कहलवाया है, जानते हो?' जनार्दन ने उत्तेजित होकर कहा, 'और युद्ध के दिनों में घर बैठ जाना तो किसी भी सरदार को शोभा नहीं देता।'

लोचन सिंह ने तड़ककर कहा, 'तो अब राजा को सूचित कर दो कि जहाँ पौरुष की कदर नहीं, वहाँ लोचन सिंह नहीं रहेगा।' और जनार्दन के विनय-प्रार्थना करने पर भी वहाँ से उठ गया।

खंड-चौबीस

सिंहगढ़ में कुंजर सिंह को छोटी रानी की सेना के आने का और उसके उद्देश्य का समाचार मिल गया था। इन दोनों का संयुक्त दल सिंहगढ़ के फाटक खुलवाकर

शब्दार्थ :
मुहासिरा–सीमाबंदी
उत्फुल्ल–प्रसन्न, खिला हुआ
जुहार–निवेदन

भीतर पहुँच गया। कुंजर सिंह को अलीमर्दान के दस्ते का हाल मालूम न था। रामदयाल अलीमर्दान के साथ-साथ था। डोले में रानी की सवारी सबसे पहले दाखिल होकर दूसरी ओर चली गई। कुंजर सिंह सबसे पहले रानी के पास गया। पैर छूकर खड़ा हो गया। परिश्रम और थकावट के सारे चिह्न उसके मुख पर थे, परंतु हर्ष की भी रेखाएँ चमक रही थीं; जैसे धूल में सोना दमक रहा हो।

कुंजर सिंह का सिंहगढ़ पहुँचना

रानी ने कृतज्ञ कुंजर सिंह से कहा, 'खास दलीप नगर में लड़ाई हो रही है। सैयद की फ़ौज देवी सिंह से पालर की ओर लड़ रही है और स्वयं सैयद को रामदयाल यहाँ लिवा लाया है। उसकी सहायता न होती, तो तुमसे मिल पाना असंभव होता।' और कुंजर के मस्तक पर हाथ फेरा।

सुनकर कुंजर की आँखों में तारे छिटक उठे। अलीमर्दान का नाम सुनते ही शरीर में पसीना आ गया। जब उसका सिर उठा, रानी ने देखा, एक क्षण पहले का उत्फुल्ल मुख मुरझा गया है, जैसे कमल को पाला मार गया हो।

'क्या है कुंजर सिंह? क्या कहना चाहते हो?' रानी ने पूछा।

'कुछ नहीं कक्कोजू!' कुंजर ने उत्तर दिया, 'मुझ सरीखे तुच्छ मनुष्य के लिए आपने जो कष्ट उठाया है, वह व्यर्थ गया-सा जान पड़ता है।'

इस रुखाई से रानी तिलमिला उठीं। बोलीं, 'तुम सदा से रोते-से ही बने रहे। क्या इस विजय से तुम्हें राजसिंहासन अपने अधिक निकट नहीं दिखाई पड़ रहा है? सेना एक-आध रोज विश्राम कर ले कि तुरंत दलीप नगर के ऊपर प्रबल आक्रमण कर दिया जाएगा और जनार्दन, देवी सिंह, लोचन इत्यादि बागियों को उनके किए का भरपूर बदला दे दिया जाएगा।'

'महाराज'-कुंजर सिंह कहता-कहता रुक गया।

'बोलो, बोलो, कुंजर सिंह क्या कहते हो?' रानी ज़रा चिढ़कर बोलीं।

सामने से रामदयाल को और उससे थोड़े ही पीछे अलीमर्दान को देख कर कुंजर सिंह ने कहा, 'अभी कक्कोजू विश्राम करें, बहुत परिश्रम किया है। अवकाश मिलने पर निवेदन करूँगा।' रानी का डोला किले के भीतर महलों में चला गया और कुंजर सिंह मुड़कर रामदयाल के पास पहुँचा।

कुंजर सिंह का अलीमर्दान से मिलना

रामदयाल ने महत्त्वपूर्ण द ष्टि और मिठास-भरे स्वर में जुहार किया, धीरे से बोला, 'कालपी के नवाब साहब हैं। इन्होंने बात रख ली।'

कुंजर सिंह चुपचाप बिना कोई भाव प्रदर्शित किए अलीमर्दान के पास पहुँचा। अभिवादन किया।

अलीमर्दान को जान पड़ा, इस स्वागत में अतिथि-पूजा की अनुभूति नहीं है; परंतु उसने अपनी कुढ़न को तुरंत दबा लिया। हँसकर बोला, -सिंहगढ़ के बहादुर शेर राजा कुंजर सिंह का दर्शन हो रहा है न?'

कुंजर सिंह ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया। उसका आंतरिक भाव जो कुछ भी रहा हो, परंतु उसमें इतनी शिष्टता थी कि हर्ष का उत्तर खिन्नता से न दे।

अलीमर्दान हँसकर बोला, 'राजा साहब, रामदयाल ने बड़ी सहायता की है। आपके शुभचिंतकों में ऐसे कुशल मनुष्य का होना गर्व की बात है।'

शब्दार्थ:

उत्फुल्ल – प्रसन्न, खिला हुआ

जुहार – निवेदन

कुंजर सिंह ने संयत शब्दों में उसकी प्रशंसा की परंतु उनमें काफ़ी कृपणता थी और रामदयाल को वह खटकी। कुंजर सिंह के स्थान पर पहुँच कर अलीमर्दान ने तय किया कि रात को आनंदोत्सव मनाया जाए।

कड़ी लड़ाई के बाद सिपाही जब आनंद मनाते हैं, तब उनका वेग पाठशाला से छूटे हुए छोटे-छोटे विद्यार्थियों के हुल्लड़ से कहीं अधिक बढ़ जाता है। इस शोर-गुल को एक ओर छोड़कर अलीमर्दान, कुंजर सिंह और रामदयाल एकांत स्थान में जा बैठे। उमंग के साथ अलीमर्दान ने कहा, 'जिस दिन राजा साहब का तिलक होगा, उस दिन जश्न और भी ज़ोर-शोर के साथ मनाया जाएगा।'

'बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ सामने हैं।' कुंजर सिंह ने गंभीरता के साथ कहा, 'मैंने तो समझा था कि सिंहगढ़ के भीतर ही रणक्षेत्र और श्मशान दोनों हैं।'

रामदयाल बोला, 'अब उतनी कठिनाइयाँ हमारे सामने नहीं हैं, जितनी देवी सिंह इत्यादि के सामने हैं।'

'आप राजा साहब,' अलीमर्दान स्वाभाविक गति के साथ बोला, 'राज्य प्राप्त करते ही रामदयाल को बड़ा सरदार बनाइएगा। मैं इनके लिए सिफारिश करता हूँ, निवेदन करता हूँ।'

'परंतु', भाव को छिपाकर बोला, 'शुभ घड़ी आने पर किसी सेवक की कोई सेवा नहीं भुलाई जा सकती, नवाब साहब। यथोचित पुरस्कार सभी को मिलेगा।'

रामदयाल के मन में इस वचन से किसी उमंग का संचार न हुआ। बोला, 'महारानी साहिबा और राजा की कृपा बनी रहे नवाब साहब हमारे ऊपर। हमें तो चरणों में पड़े रहने में ही सुख है, सरदारी लेकर क्या करेंगे?'

अलीमर्दान की समझ में न आया। 'भविष्य में आपकी क्या कार्यविधि होगी, राजा साहब? अब सेनापतित्व का भार आपको लेना होगा।'

उत्तर के लिए कुंजर सिंह तैयार था। बोला, 'मेरी गति-मति के ऊपर रानी साहिबा को अधिकार है। उनकी इच्छा मालूम करके आपसे प्रार्थना करूँगा।'

'बहुत अच्छा।' अलीमर्दान ने कहा, 'सवेरे तक बतला दीजिएगा। परंतु एक सम्मति है, उसे ध्यानपूर्वक सुन लीजिए और रानी साहिबा से अर्ज कर दीजिए। वह यह है कि सवेरे तुरंत कुछ फ़ौज दलीप नगर पर हमला करने के लिए रवाना करवा दी जाए और एक टुकड़ी पास-पड़ोस के छोटे-मोटे किलों पर कब्जा करने के लिए भिन्न-भिन्न दिशाओं में भिजवा दी जाए।'

कुंजर सिंह बोला, 'सेना को इस तरह कई भागों में विभक्त कर देना ठीक रणनीति होगी या नहीं, कक्कोजू से पूछ निवेदन करूँगा।'

उसी संध्या के बाद रामदयाल ने अलीमर्दान से बात करने का अवसर निकाला। वह भी रामदयाल की टोह में था।

'गद्दी मिलने के बाद राजा साहब दीवान किसको बनाएँगे, रामदयाल?' अलीमर्दान ने पूछा।

'हुज़ूर, या वह, जिसे उस पद पर बिठलाएँ।' रामदयाल ने उत्तर दिया।

'मैं तो उन्हें गद्दी पर बिठला कर कालपी चला जाऊँगा। वहीं के मामलों से फुरसत नहीं। न मालूम दिल्ली जाना पड़े, न मालूम मालवे की तरफ़।'

'तब जिसे वह चाहेंगे; परंतु राज्य, इस तिलक के बाद भी, बिना आपकी सहायता के किस तरह चलेगा सो ज़रा मुश्किल से समझ में आता है। यदि महारानी के हाथ में शासन की बागडोर रहने दी जाएगी, तो निस्संदेह कठिनाइयाँ कम नज़र आवेंगी।'

अलीमर्दान हँसकर बोला, 'यदि रामदयाल को दीवान बना दिया जाएगा तो शायद ज़्यादा गड़बड़ न हो।' फिर तुरंत गंभीर हो कर कहने लगा, 'तुम क्या इसे असंभव समझते हो? दिल्ली की सल्तनत में छोटे-छोटे आदमी बहुत बड़े-बड़े हो गए हैं। दिमाग और होशियारी की कद्रदानी की जाती है, रामदयाल!'

रामदयाल चुप रहा।

अलीमर्दान ने कहा, 'तुम्हें अगर दीवान मुकर्रर किया, तो महारानी साहिबा को तो कोई एतराज न होगा?'

उसने उत्तर दिया, 'उनके चरणों की कृपा से तो मैं जीता ही हूँ।' कुछ और कहना चाहता था, झिझक गया।

अलीमर्दान ने कहा, 'राजा साहब तो बेचारे बड़े नेक और सीधे आदमी मालूम होते हैं।'

रामदयाल ने कोई मंतव्य प्रकट नहीं किया।

'हमारा कुछ काम, रामदयाल?' उसने पूछा।

रामदयाल बोला, 'आज्ञा?'

'मैंने तुमसे पालर में कुछ कहा था?'

'याद है।'

'इस बीच में तुम बहुत उलझनों में रहे हो। अगर पता लगा सको, तो अच्छा है, नहीं तो खैर।'

'लगा लिया।' रामदयाल ने कहा।

उत्सुकता के साथ अलीमर्दान ने पूछा, 'कहाँ है?'

अलीमर्दान द्वारा कुमुद के बारे में रामदयाल से पूछताछ

'ख़बर लगी है कि वह विराटा के जंगलों में किसी गुप्त किले की अद श्य गुफा में है।'

अलीमर्दान अपनी सहज सावधानता के व त्त का उल्लंघन करके बोला, 'रामदयाल, बड़ा पुरस्कार मिलेगा।'

'हुज़ूर, मैं उसे ढूँढूँगा और आपके सम्मुख कर दूँगा। इसका बीड़ा उठाता हूँ।'

ज़रा दबी जबान से अलीमर्दान ने पूछा, 'तुम उसे देवी का अवतार तो नहीं समझते?'

'ज़रा भी नहीं।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'यह तो मूर्खों का ढकोसला है।'

'उसका नाम क्या है?'

'कुमुद।'

खंड-पचीस

जिस समय अलीमर्दान और रामदयाल की बातचीत हो रही थी, उस समय कुंजर सिंह छोटी रानी के पास था।

छोटी रानी उससे कह रही थीं, 'तो तुम्हारा यह तात्पर्य है कि यहाँ हम लोग न आते, तुम्हें यहीं लड़ने, सड़ने और मरने दिया जाता। ठीक है न, कुंजर सिंह?'

'आपके दर्शनों से तो मेरे पाप कटते हैं।' कुंजर सिंह ने कहा, 'परंतु अलीमर्दान को नहीं

शब्दार्थ:
मुकर्रर – नियुक्त

बुलाना चाहिए था।'

'अलीमर्दान को न बुलाया होता, तो सर्वनाश हो गया होता। उसने तो वैसे भी चढ़ाई कर दी थी। उसे रोक ही कौन सकता था? और दलीप नगर के पूर्व राजा इस तरह की सहायता का आदान-प्रदान पहले से भी करते आए हैं।

'परंतु जिस प्रयोजन से वह आया है, वह आपको मालूम है?'

'वह जनार्दन और लोचन सिंह को सूली देने आया है। यदि वह इसमें सफल हो जाए, तो मैं कहूँगी कि बहुत अच्छा हुआ।'

'वह पालर की देवी और उनका मंदिर नष्ट करने आया है। आपको यह बात स्मरण रखनी चाहिए।'

रानी ने झल्लाकर कहा, 'मुझे क्या बात स्मरण रखनी चाहिए, मैं इसे बहुत अच्छी तरह जानती हूँ। यदि तुम साथ रहकर लड़ाई करना चाहो, तो अच्छा है। यदि तुम्हारे मन को न भावे, तो जिस तरह चाहो, लड़ो, या धर्मद्रोही, स्वामिघाती जनार्दन की शरण चले जाओ और हम लोगों का अशुभ चिंतन करो।'

कुंजर सिंह का कलेजा हिल गया। नम्रतापूर्वक बोला, 'महाराज रुष्ट न हों। आप राज्य करें। मुझे राज्य की उतनी अधिक परवाह नहीं। यदि होगी भी, तो जनार्दन इत्यादि को दंड देने के उपरांत जो कुछ भाग्य में होगा, पाऊँगा।' इस नम्रता में द ढ़ता की गूँज सुन कर रानी कुछ नरम पड़ीं। बोलीं, 'अलीमर्दान का वह प्रयोजन नहीं, जो तुम समझ रहे हो। उसने मेरी राखी स्वीकार की है, मुझे बहिन की तरह माना है। हिंदुओं का धर्मनाश उसका कदापि उद्देश्य नहीं है। ऐसी हालत में तुम्हें व्यर्थ के संदेहों में माथापच्ची नहीं करनी चाहिए।'

इतने में वहाँ रामदयाल आ गया। रानी के पास किसी समय भी आने की उसे मनाही नहीं थी।

रानी ने उससे कहा, 'रामदयाल, आगे के लिए क्या ढंग सोचा गया है?'

कुंजर सिंह की ओर संकेत करके उसने उत्तर दिया, 'जैसा निश्चय किया जाए, वैसा होगा।'

'अभी तक कुछ निश्चय नहीं हुआ?' रानी बोली।

कुंजर सिंह ने कहा, 'अलीमर्दान की राय सेना को टुकड़ियों में विभक्त करके इधर-उधर बिखेरने की है। सेना का अधिक भाग वह सिंहगढ़ में रखना चाहते हैं। यदि देवी सिंह की सेना ने किसी ओर से प्रचंड वेग के साथ चढ़ाई कर दी, तो सिंहगढ़ हाथ से चला जाएगा और बिखरी हुई टुकड़ियाँ कभी संयुक्त न हो पाएँगी।'

रानी झुँझला कर बोली, 'रामदयाल, क्या इसी तरह का युद्ध करने की बात अलीमर्दान ने कही है?'

उसने उत्तर दिया, 'ठीक इसी तरह की तो नहीं कही है। नवाब साहब दलीप नगर को अधिकृत करने के लिए पर्याप्त सेना भेजना चाहते हैं।'

रामदयाल की बात कुंजर सिंह को कभी अच्छी नहीं लगती थी। इस समय और भी प्रखरता के साथ पड़ गई। बोला, 'तो कक्कोजू, रामदयाल को सेनानायक बना दें। बस, प्रधान सेनापति अलीमर्दान और सहकारी सेनाध्यक्ष रामदयाल।'

टिप्पणी

अपने इस क्षोभ पर कुंजर सिंह को तुरंत पछतावा हुआ। कुछ कहना भी चाहता था कि रामदयाल ने बहुत विनीत भाव के साथ कहा, 'कक्कोजू ने पूछा था, इसलिए मैंने निवेदन किया। यदि कोई अपराध किया हो, तो क्षमा कर दिया जाऊँ। मैं तो सदा भगवान से मनाया करता हूँ कि आप लोगों के चरणों में पड़ा रहूँ।'

रानी ने पूछा, 'तब क्या कार्यक्रम स्थिर किया?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'हमारी कुछ सेना सिंहगढ़ में रहे, बाकी दलीप नगर पर ध ावा कर दे और अलीमर्दान अपनी सेना लेकर देवी सिंह पर छापा मारे।'

रानी ने रामदयाल की ओर देखते हुए कहा, 'अलीमर्दान को पसंद आवेगा?'

'नहीं आवेगा, महाराज।' रामदयाल ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह ने कहा, 'मैं नवाब से बात करूँगा।'

दूसरे दिन सवेरे कुंजर सिंह ने अलीमर्दान से अपने संकल्प के अनुरूप कराने की चेष्टा की, परंतु सफल न हुआ। अलीमर्दान सिंहगढ़ को अपने अधिकार से बाहर नहीं होने देना चाहता था। दो-तीन दिन इसी विषय को लेकर वाद-विवाद होता रहा। सहज निर्णयशीला रानी कुंजर सिंह को किले के बाहर निकाल देने की कल्पना करने लगी। अलीमर्दान को रानी का यह भाव कुछ-कुछ अवगत हो गया। उन दो-तीन दिनों में कोई सेना कहीं नहीं भेजी गई। अलीमर्दान ने मुस्तैदी के साथ खाद्य-सामग्री इकट्‌ठी कर ली। परंतु तीन दिन के उपरांत की रण की योजना अनिश्चित ही थी।

खंड-छब्बीस

लोचन सिंह के रुष्ट हो कर चले जाने पर जनार्दन बहुत चिंतित हुआ। वह उसके हठी स्वभाव को जानता था। इसलिए उस समय मनाने के लिए नहीं गया।

राजधानी में बलवा ऊपर से देखने में दब गया था, परंतु शांत नहीं हुआ था। जिन लोगों ने यह विश्वास करके उपद्रव किया था कि देवी सिंह यथार्थ में राज्य का अधिकारी नहीं है, बड़ी रानी अनुचित रूप से देवी सिंह का साथ दे रही हैं, और छोटी रानी अन्याय पीड़ित हैं, उन लोगों के कुचल दिए जाने से भावों की तरंग नहीं कुचली जा सकी, प्रत्युत् वह भीतर-ही-भीतर और भी प्रबल और प्रचंड हो उठी। जनार्दन इस बात को जानता था, इसलिए लोचन सिंह जैसे सबल योद्धा और सेनापति को ऐसे गाढ़े समय में हाथ से नहीं खो सकता था।

परंतु लोचन सिंह की प्रकृति में ऐसी बातों के लिए बहुत ही कम स्थान था। जनार्दन कुछ समय का अंतर देकर बिना किसी ठाठ-बाठ के, अकेला, लोचन सिंह के घर गया।

जाते ही हाथ बाँध कर खड़ा हो गया। बोला, 'आज एक भीख माँगने आया हूँ।'

चित्र : रुष्ट लोचनसिंह से जनार्दन का हाथ जोड़कर भीख माँगना

शब्दार्थ:
प्रत्युत – इसलिए

सैनिक लोचन सिंह ने बँधे हुए हाथ छुड़ा दिए। कहने लगा, 'पंडितजी, मुझे हाथ जोड़कर पाप में मत घसीटो।'

'भीख माँगने आया हूँ। इससे तो आप ब्राह्मणों को वर्जित नहीं कर सकते!'

'मैं आपकी सब करामात समझता हूँ! आप जो कुछ माँगें, दे डालूँगा, परंतु बात न दूँगा। मैं सिहंगढ़ न जाऊँगा।'

जनार्दन ने तुरंत कहा, 'उसके विषय में जो आपको उचित दिखलाई पड़े, सो कीजिए। मैं और एक भीख माँगने आया हूँ।'

लोचन सिंह ने गंभीर हो कर पूछा, 'और क्या! पंडितजी?'

जनार्दन ने राज्य की मुहर लोचन सिंह के सामने डालकर कहा, 'सिंहगढ़ मत जाइए। कहीं न जाइए। यह मुहर लीजिए और दीवानी का काम कीजिए। मेरे बाल-बच्चों की रक्षा का भार लीजिए और मुझे विदा दीजिए। मैं बदनीनारायण जाता हूँ। ग्रीष्म ऋतु आने तक वहाँ पहुँच जाऊँगा। यदि कभी लौटकर आ सका और दलीप नगर का बचा-खुचा देख सका, तो बाल-बच्चों का भी मुँह देख लूँगा, अन्यथा ब्राह्मणों को तीर्थ में प्राणत्याग करने का भय नहीं है।'

लोचन सिंह ने अचंभे के साथ कहा, 'मैं दीवानी करूँगा? दीवानी में क्या-क्या करना होता है, इसे जानने की मैंने आज तक कभी कोशिश नहीं की। यह मुझसे न होगा।'

आतंक के साथ बाह्मण बोला, यह भी न होगा, वह भी न होगा, तब होगा क्या? बात देकर बदलता आपको आज ही देखा, अभी-अभी आपने क्या कहा था?'

लोचन सिंह की आँख के एक कोने में एक छोटा-सा आँसू ढलक आया। बोला, 'मैं हार गया।'

'क्या हार गए? भीख न दोगे?' जनार्दन ने पूछा।

'सिंहगढ़ जाऊँगा। या तो सिंहगढ़ राजा को दे दूँगा या कभी अपना मुँह न दिखाऊँगा।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'अभी सेना लेकर रवाना होता हूँ।'

खंड-सत्ताईस

अलीमर्दान को खबर लगी कि देवी सिंह का सामना करने के लिए जिस फ़ौज को वह छोड़ आया था, उसे मैदान छोड़ना पड़ा और पालर की सेना को देवी सिंह ने इस तरह आक्रांत किया कि दूसरी टुकड़ी उसमें नहीं मिल सकी। वह चक्कर काट कर सिंहगढ़ की ओर आ रही है। यह सूचना पाकर उसने एक बड़े दस्ते के साथ दलीप नगर पर धावा कर देने का निश्चय किया। वह सिंहगढ़ को भी नहीं भूला। काले खाँ के सेनापतित्व में सैनिकों को छोड़ने का उसने प्रबंध कर लिया।

अलीमर्दान द्वारा दलीप नगर पर धावा बोलने की योजना बनाना तथा कुंजर सिंह द्वारा उसकी सहायता लेने से इन्कार तथा उससे युद्ध का प्रण।

रानी को भी खबर लगी। उसने कुंजर सिंह को उसी समय बुलाकर कहा, 'अब क्या करने की ठानी है मन में, अब भी परस्पर लड़ते-झगड़ते ही रहोगे?'

'मैं यदि किले में ही लड़ते-लड़ते मर जाता, तो बहुत अच्छा होता।'

रानी ने कहा, 'वह अब भी हो सकता है, कुंजर सिंह। मौत के लिए किसी को भटकना नहीं पड़ता। तुम्हें यदि क्षत्रियों की मौत चाहिए, तो योजनाओं में मीन-मेख मत निकालो। जो कहा जाए, करो।'

'मैंने अपनी नीति निश्चित कर ली है।' कुंजर सिंह ने निर्णय-व्यंजक स्वर में कहा। 'मैं इस गढ़ को अलीमर्दान के अधिकार में न जाने दूँगा। वह हमारी सहायता सेंत-मेंत करने नहीं आया है। सिंहगढ़ का परगना और किला सदा के लिए हथियाना चाहता है, क्योंकि कालपी की भूमि इसके पास पड़ती है। मैं इस बपौती को प्राण रहते न जाने दूँगा। केवल आपकी आज्ञा मुझे शिरोधार्य है, और किसी की नहीं।'

रानी ने वाक्य पूरा होने दिया। बोलीं, 'तुम कदाचित् यह समझते हो कि यहाँ न होगे तो प्रलय हो जाएगी। मैं भी सैन्य-संचालन कर सकती हूँ। लड़ना, मरना और राज्य करना भी जानती हूँ।'

असंदिग्ध भाव से कुंजर सिंह ने कहा, 'आप राज्य करें, मैं आड़े नहीं हूँ। पर मैं सिंहगढ़ को दूसरों के हाथ न जाने दूँगा।'

'मूर्ख!' रानी प्रचंड स्वर में बोलीं, 'सदा मूर्ख रहा और सदा मूर्ख ही रहेगा। मैंने अलीमर्दान को सेनापति नियुक्त किया है, उसकी आज्ञा माननी होगी। जो कोई उल्लंघन करेगा, वह दंड का भागी होगा।'

कुंजर सिंह क्रोध के मारे काँपने लगा। काँपते हुए स्वर में उसने कहा, 'आप स्त्री हैं, यदि किसी पुरुष ने यह बात कही होती, तो अपने खड्ग से उसका उत्तर देता।'

रानी का हाथ अपने हथियार पर गया ही था कि दौड़ता हुआ रामदयाल आया। यकायक बोला, 'हम लोग घिर गए हैं।'

'किनसे?' कुंजर सिंह और रानी दोनों ने पूछा।

'लोचन सिंह की सेना का एक भाग सिंधु नदी के उस पार उत्तर की ओर बहुत निकट आ गया है। दक्षिण और पश्चिम की ओर से भी एक बड़ी सेना आ रही है।'

रानी दाँत पीसकर बोलीं, 'कुंजरसिंह, जाओ। अब मेरे सामने मत आना।'

कुंजर सिंह यह कहता हुआ वहाँ से चला गया, 'मैं किला छोड़कर बाहर नहीं जाऊँगा।'

कुंजर सिंह ने अपने सब आदमी इकट्ठे करके सिंधु नदी की ओर उत्तर वाले छोटे फाटक के आस-पास फैला दिए और उन्हें अपनी स्थिति समझा दी। वे लोग बहुत नहीं थे, परंतु आज्ञाकारी थे। फिर वह अलीमर्दान के पास गया। 'नवाब साहब,' कुंजरसिंह ने साधारण शिष्टाचार के साथ कहा, 'लोचन सिंह का विरोध बड़ी सावधानी और कड़ाई के साथ करना पड़ेगा। उस सरीखा रण-सूर और रण-चतुर कठिनाई से कहीं और मिलेगा।'

अलीमर्दान ने कहा, 'आप, काले खाँ और रानी साहिबा किले के भीतर से लड़ें और मैं बाहर से लड़ूँगा।'

'मुझे यह सलाह पसंद है।' कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचने का भाव दिखाते हुए कहा।

कुंजर सिंह अपने स्थान पर चला गया। थोड़े ही समय में उसे ज्ञात हो गया कि गढ़ का नायकत्व उसके हाथ में नहीं है और रानी के नाम की ओट में अलीमर्दान सेनापतित्व कर रहा है।

खंड-अट्ठाईस

लोचन सिंह का सिंहगढ़ पर आक्रमण।

लोचन सिंह एक बड़ी सेना लेकर तूफान की तेजी से सिंहगढ़ पर चढ़ आया। चक्कर दिलवा कर उसने अपनी सेना का एक भाग सिंधु के उस पार किले के ठीक उत्तर में

भेज दिया।

अलीमर्दान ने गढ़ से बाहर निकल कर उसका सामना किया। दो दिन की लड़ाई में दोनों ओर के बहुत से आदमी मारे गए। बार-बार लोचन सिंह विरोधी दल को गढ़ में भगा देने की चेष्टा करता था और अलीमर्दान उसे विफल-प्रयत्न कर डालता था। तीसरे दिन लोचन सिंह ने निरंतर आक्रमण जारी रखने के लिए अपनी सेना के अनेक दल बनाए, जो बारी-बारी से जागते, सोते और युद्ध करते थे। यह योजना बहुत अंशों में सफल हुई और दिन-रात की लड़ाई में उसका प्रभाव अलीमर्दान की पीछे हटती हुई सेना पर दिखाई देने लगा। गढ़ अभी लोचन सिंह से दूर था। थोड़ा-सा पीछे हट कर अलीमर्दान खूब जम कर लड़ने लगा। दिन-भर ज़ोर की लड़ाई हुई। संध्या से ज़रा पहले अलीमर्दान की सेना दाएँ-बाएँ कट कर बहुत तेजी के साथ लड़ते-लड़ते भाग गई। आध-आध मील पश्चिम और पूर्व दिशाओं में भागने के बाद दूर पर एक जगह-इकट्ठी होने लगी।

लोचन सिंह की समझ में यह रहस्य न आया। परंतु सामने कहीं-कहीं आग का प्रकाश देख कर उसका भ्रम दूर हो गया। विश्रामप्राप्त दल को लेकर उसने तुरंत हमला करने का निश्चय किया।

घुड़सवारों ने आक्रमण किया। आक्रमण का वेग पहले कम, फिर प्रचंड हो उठा। जो घुड़सवार आगे थे, एक स्थान पर जाकर यकायक रुक गए। एकबारगी चिल्लाए, 'मत बढ़ो, धोखा है।' और बहुत-से सवारों का चीत्कार और घोड़ों के आहत होने का स्वर सुनाई पड़ा। तुरंत ही बंदूकों की बाढ़ दगने लगी।

लोचन सिंह द्वारा खाई में फँसे अपने सैनिकों की सहायता।

गोलियों की भनभनाहट के बीच लोचन सिंह अपना घोड़ा दौड़ाता हुआ उस स्थान पर पहुँचा। देखा, सामने एक बड़ी गहरी और चौड़ी खाई है, जिसमें पड़े-पड़े घोड़े अपने टूटे सिर-पैर फड़फड़ा और घायल सिपाही कराह रहे हैं।

घोड़े की लगाम हाथ में पकड़े हुए, घुटने टेके हुए सैनिक से लोचन सिंह ने पूछा, 'इसमें कितने खप गए होंगे?'

'सैकड़ों।' उत्तर मिला।

'मेरे पीछे आओ।' लोचन सिंह ने कहा।

'मौत के मुँह में?'

'नहीं, मौत के मुँह से बचाने के लिए। अभागे, सब खाई में कूद पड़ो।'

बोला, 'साफा मेरी कमर में बाँध कर नीचे लटका दो। मैं वहाँ की दशा देखता हूँ। उसके बाद घोड़ों को छोड़ कर और लोग भी इसी तरह उतर आओ। घोड़ों की लोथों और आदमियों की लाशों को इकट्ठा करके गड्ढा पाट दो, और मार्ग बनाकर खाई को पार लो। एक घंटे के भीतर सिंहगढ़ हाथ में आ जाएगा। मैंने निश्चय किया है कि आज वहीं सोऊँगा।'

लोचन सिंह को नीचे अकेले न जाना पड़ा। कई सैनिक इसके लिए तैयार हो गए, परंतु लोचन सिंह सबसे पहले नीचे उतरा। नीचे जाकर इन लोगों ने लाशों को ढेर लगाकर खाई में एक सँकरा रास्ता बना लिया। वह इतना बड़ा था कि दो-तीन सवार एक साथ निकल सकते थे। दूसरी ओर से बंदूकें चल रही थीं, परंतु लोचन सिंह आगे

शब्दार्थ :

साफा – पगड़ी बाँधने का कपड़ा।

तुमुलध्वनि – युद्ध के लिए शंखनाद

टिप्पणी

और उसके सवार पीछे-पीछे खाई पार करके दूसरी ओर पहुँच गए। अलीमर्दान ने कल्पना नहीं की थी कि लोचन सिंह की सेना खाई पार करके शीघ्र आ जाएगी। उसने इस खाई के पश्चिमी तथा पूर्वी सिरों पर व्यूह बना लिया था और बीच की पाँत को ज़रा पीछे हटाकर जमा किया था। सिरे वाली टुकड़ियाँ उसके बँधे हुए इशारे पर काम नहीं कर पाईं, नहीं तो लोचन सिंह की सेना का बहुत बड़ा भाग थोड़ी देर में नष्ट हो जाता। लोचन सिंह की सेना ने खाई पार करके तुमुलध्वनि के साथ जय जयकार किया। खाई के उस तरफ जो लोग रह गए थे, उन्होंने भी जयकार किया। इसी बीच किले के ऊपर तोपें गोले उगलने लगीं। खाई के दोनों सिरों की टुकड़ियाँ किले की ओर भागीं। इस गोलमाल में अलीमर्दान की बीच की पाँत भी पीछे हटी। किले की तोपों ने शत्रु और मित्र का भेद न पहचाना। दोनों दलों के अनेक लोग इन गोलों से चकनाचूर हो गए।

अलीमर्दान ने किले के भीतर घुस कर युद्ध करना पसंद नहीं किया। वह पूर्व की ओर दूरी पर अपनी सेना ले कर चला गया। यद्यपि वह चतुराई के साथ पीछे हटने में दक्ष था, परंतु इस लड़ाई में उसका नुकसान हुआ।

लोचन सिंह की विजयिनी सेना किले की ओर बढ़ती गई। खाई के सिरों पर अलीमर्दान की जो टुकड़ियाँ किले की ओर भागीं, उनके लिए द्वार न खुल पाया। उत्तर की ओर से लोचन सिंह के दूसरे दस्ते ने ज़ोर का धावा किया। कुंजर सिंह के दल ने यथाशक्ति उत्तर की ओर से आने वाली बाढ़ का प्रतिरोध किया, परंतु कुछ बन न पड़ा। वह दल दूसरी ओर से किले के भीतर घुस आया। कुंजर सिंह ने अपने साथियों सहित लड़कर मर जाने की ठानी।

उसी समय रामदयाल, कुंजर सिंह के पास आया। बोला, 'राजा, महारानी के महलों पर चल कर लड़ो। यह स्थान घिर गया है। काले खाँ फाटक पर लड़ रहे हैं। उस तरफ से दुश्मन की फ़ौज दाबे चली आ रही है। यदि फाटक खोलते हैं, तो भीतर-बाहर सब ओर बैरी का लोहा बज जाएगा।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'महारानी जितने सिर कटवा सकती हैं, उतने बचा नहीं सकतीं। इस जगह लड़ना व्यर्थ है, मैं तो बाहर जाकर लड़ूँगा।'

यह कहकर कुंजर सिंह अपने आदमियों को लेकर चलने को हुआ। इतने में काले खाँ आ गया। बोला, 'कुंजर सिंह, तुमने हमारा सत्यानाश किया। कहाँ जाते हो?'

काले खाँ द्वारा कुंजर सिंह को ललकारना तथा लोचन सिंह के हाथों लड़ते हुए हार जाना, फिर लोचन सिंह द्वारा रानी को बंदी बनाया जाना।

'जहाँ इच्छा होगी, वहाँ?'

'यह नहीं हो सकता। मैं कोटपाल हूँ। मेरा हुकुम मानना होगा, न मानोगे, सजा पाओगे।'

कुंजर सिंह नंगी तलवार हाथ लिए था। बोला, 'दंड-विधान मेरे हाथ में है। जाओ, अपना काम देखो। गढ़ और राज्य का मालिक मैं हूँ, और फिर बतलाऊँगा।' काले खाँ चिल्लाया, 'पकड़ो, पकड़ो।'

लोचन सिंह की सेना के जो सैनिक गढ़ के भीतर आ गए थे, वे काले खाँ की ओर झपटे। वह तो लड़ता हुआ किले की दक्षिण की ओर निकल गया, परंतु रामदयाल पकड़ा गया।

सिपाहियों ने उसे कैद कर लिया।

उधर से लोचन सिंह की सेना ने गढ़ का सदर फाटक तोड़ डाला। काले खाँ की सेना

शब्दार्थ :
बैरी–दुश्मन

घमासान युद्ध करने लगी, परंतु लोचन सिंह को पीछे न हटा सकी। काले खाँ कुछ सिपाहियों को लेकर किले से बाहर निकल गया। उसकी शेष सेना का अधिकांश भाग मारा गया; जो नहीं लड़े, वे कैद कर लिए गए।

लोचन सिंह ने रानी को भी कैद कर लिया।

मशालों की रोशनी में किले का प्रबंध करके लोचन सिंह ने किले के भीतर और बाहर सेना को नियुक्त किया। एक दल काले खाँ का पीछा करने के लिए भी भेजा। अलीमर्दान भी स्थिति को समझ कर वहाँ से दूर चला गया। काले खाँ अपने बचे-खुचे आदमी लेकर उससे जा मिला और दोनों-पालर वाले दस्ते से कई कोस के फासले पर कुछ समय उपरांत जा मिले। उस रात लोचन सिंह सिंहगढ़ में तो पहुँच गया, परंतु सो नहीं सका।

खंड-उनत्तीस

राजा देवी सिंह ने अलीमर्दान के पालर वाले दस्ते को हटा कर ही चैन नहीं लिया। बल्कि इस बात का प्रबंध करने की चेष्टा की कि वह लौट कर फिर उपद्रव न करे। राजधानी सुरक्षित थी। सिंहगढ़-विजय का समाचार पाकर उसने दलीप नगर की सीमा को बचाव के लिए द ढ़ करना आरंभ कर दिया। उधर लोचनसिंह को उचित धन्यवाद देते हुए आदेश भेजा।

लोचन सिंह द्वारा रानी पर दबाव डाला जाना कि दलीप नगर पर वे अपना अधिकार न समझें।

लोचन सिंह ने रामदयाल को बुलाया। कैद में था, पहरेदारों के साथ आया। लोचन सिंह ने कहा, 'छोटी रानी से मिलना चाहता हूँ। कागज-कलम और दवात तैयार रखें।'

रानी के पास पहुँचे लोचन सिंह ने बहुत शिष्टाचार के साथ, पर कठोरतापूर्वक कहा, 'आपको कागज पर यह लिखना होगा कि दलीप नगर राज्य से आपको कोई वास्ता नहीं।'

'किसकी आज्ञा से?' रानी ने काँपते हुए स्वर में पूछा।

'राजा की आज्ञा से।' उत्तर मिला।

'राजा की आज्ञा से।' बड़ी घ णा के साथ रानी बोली, 'उस भिखमंगे की आज्ञा से! जाओ उससे कह दो कि मैं रानी हूँ, राज्य की स्वामिनी हूँ। वह लुटेरा और जनार्दन विश्वासघाती हैं, चोर हैं, मैं तुम सबको दंड की व्यवस्था करूँगी।'

'तुम अब रानी नहीं हो।' लोचन सिंह ने उत्तेजित हो कर कहा, स्त्री हो, नहीं तो....।' लोचन सिंह वाक्य पूरा नहीं कर पाया।

उस दिन लोचन सिंह ने रानी का पहरा बहुत कड़ा कर दिया।

खबर पाकर राजा देवी सिंह ने रानी को रामदयाल समेत दलीप नगर बुलवा लिया और लोचन सिंह को सिंहगढ़-रक्षा के लिए वहीं रहने दिया।

राजा ने जनार्दन से कहा, 'लोचन सिंह ने रानी के साथ बहुत कढ़ाई का बरताव किया है, परंतु इसमें दोष मेरा है। मुझे लिखा-पढ़ी कराने का काम लोचन सिंह के हाथ में न देना चाहिए था। तुम्हारे हाथ में होता तो सुभीते के साथ हो जाता।'

'नहीं महाराज।' जनार्दन बोला, 'मुझ पर तो रानी का पूरा कोप है। उन्होंने मुझे मरवा डालने का प्रण किया है। मेरे द्वारा वह काम और भी दुष्कर होता।'

टिप्पणी

देवी सिंह द्वारा रामदयाल समेत रानी को दलीप नगर बुलाना।

राजा ने हँसकर कहा, 'मैं ऐसे पागलों की बहक की कुछ भी परवाह नहीं करता। मैं चाहता हूँ, रानी का अब किसी तरह का अपमान न किया जाए और पहरा बहुत हल्का कर दिया जाए। वह राजमाता हैं, आदर की पात्रा हैं, केवल इतनी देखभाल की जरूरत है जिसमें संकट उपस्थित न कर सकें।'

'यह बात ज़रा कठिन है' महाराज! पहरा कठोर न होगा तो किसी दिन महल से निकल भाग कर विद्रोह खड़ा कर देंगी।' जनार्दन द ढ़ता के साथ बोला।

राजा ने एक क्षण सोच कर कहा, 'तब उन्हें बड़ी रानी के महलों में एक ओर रख दो। वहाँ पहले ही से बहुत नौकर-चाकर और सैनिक रहते हैं। पहरा काफ़ी बना रहेगा और रानी को खटकने न पावेगा।'

इस प्रस्ताव को ध्यानपूर्वक सोच कर जनार्दन ने स्वीकार कर लिया।

इसके बाद दोनों छोटी रानी के पास गए।

रानी परदे में थीं। राजा ने देहरी पर माथा टेक कर प्रणाम किया। रानी ने आशीर्वाद नहीं दिया। बोलीं, 'जनार्दन को यहाँ से हटा दो।'

देवी सिंह इस तरह के अभिवादन की आशा नहीं करता था। सन्नाटे में आ गया। उसे अवाक् होता देख जनार्दन आगे बढ़ा। कहने लगा, 'मेरे ऊपर आपको जो रोष है सो उचित ही है परंतु यदि आप विचार करें, तो समझ में आ जाएगा कि वास्तव में मेरा अपराध कुछ नहीं। और मान लिया जाए कि मैं अपराधी हूँ, तो भी आपको माता के बराबर मानता हूँ, इसलिए क्षमा के योग्य हूँ। मैंने जो कुछ किया है, राज्य के उपकार के लिए किया है।'

रानी ने टोक कर कहा, 'हम जो दर-दर मारे-मारे फिर रहे हैं, हमारे साथ जो छोटे-छोटे आदमी पशुओं जैसा बरताव कर रहे हैं, हमें बंदीग ह में डाल रखा है, वह सब राज्य का उपकार ही है न, पंडितजी? स्मरण रखना, इस लोक के बाद भी कुछ और है, और देर-सबेर वहीं जाओगे।'

जनार्दन कुछ कहना चाहता था, परंतु राजा ने आँख के संकेत से मना कर दिया और बोला 'रामदयाल को मैं इसी समय मुक्त करता हूँ। वह सदा आपकी चाकरी में रहेगा और आप बड़ी कक्कोजू वाले महल में चली जाएँ।'

'न।' रानी ने कहा, 'मैं इसी कैदखाने में अच्छी, जो पहले मेरा ही महल था, आज यातना-ग ह हो गया है।'

राजा ने जनार्दन से कहा, 'मैंने रामदयाल को मुक्त कर दिया है। आप उसे तुरंत यहाँ भेजें।'

जनार्दन रामदयाल को लेने गया।

राजा ने कहा, 'कक्कोजू, आप पंडितजी पर क्रोध न करें। राज्य सँभालने के लिए उन्हें अपना काम करना पड़ता है।'

'कक्कोजू मुझे मत कहो।' रानी ने रोते हुए कहा, 'मैं राजा की रानी हूँ और तुम्हारी कोई नहीं। यदि कोई होती, तो क्या लोचन सिंह इत्यादि मेरा ऐसा अपमान कर पाते?'

'जो कुछ हुआ, वह अनिवार्य था, कक्कोजू।' राजा बोले, 'जो कुछ हुआ, उसका स्मरण छोड़ दीजिए। आगे जो कुछ करूँगा, आपकी आज्ञा से।'

इतने में रामदयाल को लेकर जनार्दन आ गया।

राजा ने रामदयाल से कहा, 'कक्कोजू को बड़ी कक्कोजू वाले महल में पहुँचा दो। उन्हें यदि किसी तरह का कष्ट हुआ, तो तुम्हें संकट में पड़ना होगा।'

खंड-तीस

टिप्पणी

छोटी रानी को बड़ी रानी के महल में रखने के बाद जनार्दन ने सोचा, अच्छा नहीं किया। एक तो यह कि छोटी रानी शायद उन्हें भी विचलित करने की कोशिश करें, और दूसरे यह कि वहाँ से निकल भागने का अधिक सुभीता है।

राजा द्वारा छोटी रानी को बड़ी रानी के महल में रखा जाना।

राजा ने छोटी रानी को बड़ी रानी के भवन में भेज देने के बाद पहरा शिथिल कर दिया और रामदयाल को उनकी सेवा में बने रहने की अनुमति दे दी। जो लोग बड़ी रानी की टहल में रहते थे, उन्हीं से छोटी रानी पर निगरानी रखने के लिए चुपचाप कह दिया।

दो-तीन दिन के बाद छोटी रानी से सलाह करके रामदयाल बड़ी रानी के पास पहुँचा। जब तक दासियाँ पास रहीं, तब तक वह केवल शिष्टाचार की बातें करता रहा। बड़ी रानी समझ गईं कि किसी गुप्तचर की उपस्थिति के कारण रामदयाल हृदय की बात कहने से झिझक रहा है। अपनी निज की दासियों को हटाकर रानी ने रामदयाल के साथ अधिक स्वतंत्र वार्तालाप की आशा की।

दासियों के चले जाने पर रामदयाल ने कहा, 'वह आपसे छोटी हैं। आप क्या उनके किए को क्षमा न कर देंगी? जो दुख आपको है, वही उन्हें भी है।'

ठंडी साँस लेकर रानी ने कहा, 'उनमें और सब गुण हैं, केवल एक वाणी उनके काबू में होती, तो व था का झंझट आपस में कभी न होता। उनके कष्ट और अपमान की बात सुनकर हृदय बैठ जाता है।'

रामदयाल ने इधर-उधर की बातें करने के सिवा उस समय और कुछ नहीं कहा। जाते समय बोला, 'यदि कक्कोजू आपके पास आएँ, तो क्या आपको अखरेगा?'

आँखें छलक पड़ीं। रुद्ध कंठ से कहा, 'वह क्या और हैं? अवश्य आवें।'

'बहुत अच्छा, महाराज।' कहकर रामदयाल चला गया।

नियुक्त समय पर छोटी रानी बड़ी रानी के पास आईं। बड़ी का चरण-स्पर्श द्वारा अभिवादन किया। बोलीं, 'जो कुछ मुझसे बुरा-भला बना हो, उसे बिसार दिया जाए, क्योंकि अब यह सोचना है कि इतने बड़े जीवन को कैसे छोटा किया जाए।'

छोटी रानी का बड़ी रानी से मिलना

बड़ी ने कहा, 'मैं तो आज ही जीवन को समाप्त करने के लिए तैयार हूँ, अब और क्या देखना है, जिसके लिए जीऊँ।'

छोटी रानी ने ज़रा घूँघट उघारा। बोलीं, 'मैं केवल एक अनुष्ठान के लिए अब तक जीवन बनाए हुए हूँ। बात फैल गई है, परंतु उसकी चिंता नहीं। आज्ञा हो, तो सुनाऊँ?'

'अवश्य, अवश्य।'

'जनार्दन हम लोगों के सर्वनाश की जड़ है।'

'अब उसकी चर्चा व्यर्थ है।'

'वह चर्चा अमिट है। क्या भूल गईं, किस तरह से उसने महाराज के हस्ताक्षर का जाल

शब्दार्थ :

अखरेगा – खलेगा, बुरा लगेगा

भुला देना – बिसारना

अनुष्ठान – विधिपूर्वक पूरा किया जाने वाला धार्मिक कृत्य

बनाया? किस तरह उसने एक अनजान लड़के को अपना खिलौना बनाकर सारे राज्य की बागडोर अपने हाथ में रखी है?'

बड़ी रानी ने कोई उत्तर नहीं दिया। नीचा सिर कर लिया। छोटी रानी ने ज़रा धीमे होकर कहा, 'असल में हम लोग राज्य के अधिकारी हैं। बिराने को अपनी संपत्ति भोगते देख कर छाती सुलग जाती है। यही मेरा दोष है, यही मेरा पाप है।'

'पर इसका प्रतिकार ही क्या हो सकता है? जो भाग्य में लिखा है, सो होकर रहेगा।'

'हमारे भाग्य में यह सब दुख और जनार्दन के भाग्य में हमारा अपमान करना ही लिखा है, यह कैसे कहा जा सकता है?'

बड़ी रानी छोटी का मुँह ताकने लगीं।

छोटी रानी ने उत्तेजित होकर कहा, 'हमारे भाग्य में राज्य लिखा है, प्रजापालन लिखा है, और जनार्दन के भाग्य में प्राणवध का दंड बदा है। मुझे देवी ने सपना दिया है।'

देवी के सपने की बात सुनकर बड़ी रानी बोलीं, 'अलीमर्दान को तुमने क्योंकि निमंत्रण दिया? इसे लोग अच्छा नहीं कहते।'

'न कहें अच्छा।' छोटी ने कहा, 'कष्टों से पार पाने के लिए मैंने उसके पास राखी भेजी थी। और क्या करती?'

'वह देवी का मंदिर तोड़ने आया है।'

'नहीं।'

'और मंदिर की पुजारिन को, जो देवी का अवतार भी मानी जाती हैं, नष्ट करने।'

'इसमें बिलकुल तथ्य नहीं। हमारे विरुद्ध राजा को उभारने के लिए ही जनार्दन इत्यादि ने यह षड्‌यंत्र खड़ा किया है।'

'लोचन सिंह सौगंध खा कर कहता है।'

'ओह! उस नीच, नराधम पशु की बात मत कहो। उस जैसी हृदयहीनता पत्थर की शिलाओं में भी न होगी। ऐसा मूर्ख, ऐसा अभिमानी...

बड़ी रानी ने धीरे से छोटी रानी की उग्रता के बढ़ते हुए वेग को रोकने के लिए टोक कर कहा, 'अपने स्वभाव को अपने हाथ में रखो। जो कुछ करो, समझ-बूझ कर करो। हमारे निर्बल हाथों में कोई शक्ति नहीं। जो सरदार किसी समय तरफ़दार थे, उनके जी मुरझा गए हैं। अब कदाचित् कोई साथ न देगा।'

'मैं किसी से नहीं डरती।' छोटी रानी ने कहा, 'मन की बात मन में ही बंद कर लेने से वह वहीं हो कर रह जाती है। आपको सीधा पा कर ही तो इन लोगों की बन आई है। आप कैसे इन लोगों की करतूतों को सहन करती हैं?'

इसका उत्तर बड़ी रानी ने एक लंबी साँस लेकर दिया। थोड़ी देर में छोटी रानी चली गई। बड़ी रानी ने सोचा, यदि मैं छोटी के साथ अपनी शक्ति को मिला देती तो ये दिन सिर न आते। मैं अपने को निस्सहाय, निराश्रय समझकर ही इस हीन दशा को पहुँची हूँ।

शब्दार्थ:

प्रतिकार – किसी कार्य को रोकने के लिए किया जाने वाला उपाय

सौगंध – कसम

नराधम – बुरा आदमी

निराश्रय – बिना और ठिकाने वाला

पाठगत प्रश्न 32.2

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उचित विकल्प चुनकर सही () का निशान लगाकर दीजिए तथा पाठ के अंत में दी गई उत्तरमाला से उनका मिलान कीजिए:

1. छोटी रानी ने रामदयाल को जनार्दन का सिर काट कर लाने का आदेश दिया, क्योंकि
   (क) उसने उसका अपमान किया था
   (ख) उसने षड्‌यंत्र करके देवी सिंह को राजगद्दी दिला दी थी
   (ग) उसने राजा को विष दे दिया था
   (घ) उसने कुंजर सिंह को धोखा दिया था
2. अलीमर्दान दलीप नगर पर आक्रमण करता है, क्योंकि
   (क) वह कुमुद को प्राप्त करना चाहता है
   (ख) छोटी रानी ने उसे अपना राखीबंद भाई बनाया है।
   (ग) दलीप नगर को अपने राज्य में मिलाना चाहता है
   (घ) मंदिर तोड़ना चाहता है
3. कुंजर सिंह दलीप नगर के ग हयुद्ध में अलीमर्दान को बुलाने का समर्थन नहीं करता, क्योंकि
   (क) उसे अलीमर्दान पर विश्वास नहीं है
   (ख) वह अलीमर्दान से डरता है
   (ग) वह अपने घरेलू मामलों में किसी बाहरी शक्ति का हस्तक्षेप नहीं चाहता
   (घ) अलीमर्दान को देवी सिंह का दोस्त समझता है
4. देवी सिंह छोटी रानी को बड़ी रानी के साथ रखने की आज्ञा देता है, क्योंकि
   (क) छोटी रानी से उसे खतरा है
   (ख) बड़ी रानी छोटी रानी को प्यार करती है
   (ग) उसे छोटी रानी के भाग जाने का डर है
   (घ) वह चाहता है कि छोटी रानी के प्रति कठोर भी न हुआ जाए और उस पर निगरानी भी रहे

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

5. देवी सिंह के राजा बनने के बाद प्रधान मंत्री कौन बना ?
6. छोटी रानी ने रामदयाल को सर्वप्रथम क्या आदेश दिया ?
7. छोटी रानी ने अलीमर्दान की सहायता पाने के लिए क्या प्रयत्न किया?
8. देवी सिंह के राजा बन जाने पर कुंजर सिंह ने क्या किया ?
9. गोमती ने दुर्गा से क्या वरदान माँगा ?
10. अलीमर्दान ने रामदयाल को कौन-सा काम सौंपा ?

टिप्पणी

कुंजर सिंह की अपने साथियों के साथ सिंहगढ़ से निकल कर विराटा में बसने की योजना।

त तीय अंश

खंड-इकत्तीस

कुंजर सिंह अपने साथियों को लेकर अँधेरे में सिंहगढ़ से निकल आया था। सिंधु नदी के उत्तर की ओर कई कोस तक दलीप नगर का राज्य था। वन और पर्वतों से आकीर्ण; परंतु कोई द ढ़ किले उस ओर नहीं थे। जहाँ दलीप नगर की सीमा खत्म हुई थी, वहाँ से कालपी का सूबा शुरू हो गया था। उस ओर चले जाने पर दलीप नगर के क्षेत्र से संबंध टूट जाता और कोई पक्का आश्रय मिलता नहीं। ऐसी दशा में उसने पूर्व की ओर पहूज और बेतवा नदियों के आस-पास ठहरकर अपनी टूटी हुई शक्ति को फिर से जोड़ने का निश्चय किया।

झाँसी से पूर्वोत्तर कोण में विराटा की गढ़ी, जिसका अवशेष अब एक मंदिर-मात्र है, पच्चीस मील की दूरी पर है। रामनगर और विराटा में केवल कोस-भर का अंतर है। दोनों बेतवा के किनारे भयंकर वन में छिपे से अर्द्धभग्नावस्था में अब भी पड़े हैं।

उन दिनों विराटा में दाँगी राजा राज्य करता था और रामनगर में एक बुंदेला सरदार रहता था। ये दोनों कभी पूर्ण स्वतंत्र नहीं रहे, परंतु इनकी अधीनता भी नाममात्र की थी। कभी कालपी को कर देते थे, कभी ओरछा को और किसी को भी नहीं। उसने सोचा, मुसावली में पहुँचकर स्थिति का निरीक्षण और विराटा तथा रामनगर के सरदार से मिल कर अपने बल की पुनः स्थापना करूँगा। यदि संभव न हुआ, तो विराटा-वन के किसी एकांत स्थान में भगवती दुर्गा का स्मरण करते-करते जीवन समाप्त कर दूँगा। और अलीमर्दान इस स्थान पर किसी मतलब से चढ़ाई करे, तो उसके विरोध में शरीर-त्याग करना राज्य-प्राप्ति से भी बढ़कर होगा। उसे मालूम था कि कुमुद कहीं विराटा के आसपास ही है।

खंड-बत्तीस

कुंजर सिंह का चरवाहे लड़के से वार्तालाप।

कुंजर सिंह मुसावली में एक अहीर के घर ठहर गया था। घर से लगा हुआ काँटों की बिरवाई से घिरा एक बेड़ा था, उसमें कुंजर सिंह घोड़ा बाँधकर स्वयं घर के एक कोने में अकेला जा बसा।

बिरवाई से लगे तीन-चार महुए के पेड़ थे। महुओं के पीछे से एक चक्करदार नाला निकला था। दूसरी ओर वह पहाड़ी थी, जो मुसावली पाठा कहलाती है। एक ओर बीहड़ जंगल। कुंजर सिंह महुओं के नीचे गया। अहीर की कुछ भैंसें नाले के पास चर रही थीं, कुछ महुए के नीचे ऊँघ रही थीं। एक लड़का कुछ धूप कुछ छाया में सोता हुआ जानवरों की देखभाल कर रहा था। सूर्य की किरणों में कुछ तेजी और हवा में थोड़ी उष्णता आ गई थी। कुंजर सिंह अपने घोड़े के सामने घास डालकर महुए के नीचे आया। जो भैंसें दूर पर बैठी ऊँघ रही थीं, यकायक उठ खड़ी हुईं। चरवाहे की आँख खुल गई। पास में कुंजर सिंह को देख कर लड़के ने उठाई हुई लाठी को नीचा कर लिया। बोला, 'दाऊजू, सीताराम।' प्रणाम का उत्तर देकर कुंजर सिंह पेड़ की जड़ से टिक कर बैठ गया। लड़का बिना किसी संकोच के एकटक कुंजर सिंह की ओर देखने लगा। उस चरवाहे के शरीर पर फटी हुई अँगरखी थी। आँखों में एक निर्मल, निर्भय द ढ़ता थी।

शब्दार्थ :

आकीर्ण – व्याप्त, फैला हुआ
भग्नावस्था – टूटी-फूटी हालत
बिरवाई – बिरवे, पौधे

कुछ देर टकटकी लगाने के बाद बोला, 'दाऊजू, अबै दर्शन नई भए का?'

लड़के की सहज, सरल निर्भयता और प्रश्न की विचित्रता से ज़रा आकृष्ट होकर कुंजर सिंह ने प्रश्न किया, 'किसके दर्शन भाई?'

'एल्लो! हमई से टिटकरी करन आए! दर्शन खों नई आए, इतै तो कायके लानै आए इत्ती दूर सें? संसार-भर के राजाराव नित्त आउत रहत।'

चित्र : कुंजर सिंह की चरवाहे से बातचीत

कुंजर सिंह चौंक पड़ा। पालर से आना तो उसने ही चरवाहे के पिता को बतलाया था, परंतु आने का प्रयोजन उसने कुछ और ही जाहिर किया था। कुंजर सिंह को अनुमान करने में विलंब नहीं हुआ कि किसके दर्शन की ओर लड़के का भोला संकेत था। उससे कहा, 'तुम्हारे साथ चलेंगे, कब जाओगे?'

लड़के ने उत्तर दिया, 'जब चाए, तब। कौन दूर है? तुम जो कछू माँगो सो तुमें सोऊं मिल जैहे।'

कुंजर सिंह के हृदय में गुदगुदी पैदा हुई। उसने कल्पना की कि पूजा और वरदान का स्थान एक कोस पर विराटा ही है। पूरा पता लगाने के प्रयोजन से पूछा, 'रास्ता क्या बहुत बीहड़ में होकर है? यहाँ से तो मंदिर दिखाई नहीं देता।'

'पाठ पै होके सब दिखात है।' लड़का बोला, 'विराटा की गढ़ी दिखात और देवी कौ मंदिर दिखात। ठीक नदी के बीच में विराजमान हैं। ए दाऊजू, हमने जब पैलउंपैल देखाँ तब आँखें मिच गईं हतीं। उनके नेत्रन में से झार सी निकर रई हती।'

कुंजर सिंह को विश्वास हो गया कि यह वर्णन कुमुद का ही है। तो भी और अच्छी जानकारी पाने की गरज से कहा, 'कब से आइ हैं यह देवी?'

'सदा से।' लड़के ने चकित होकर जवाब दिया, 'उनकी कछू आद अंत थोरक सौ है।'

इसके बाद उस सीधे लड़के ने देवी की करामातों की गिनती का ताँता बाँध दिया। सूर्यास्त के पहले दूर के खेत से ग हस्वामी जब आया, तब कुंजर सिंह ने अवसर प्राप्त होते ही उससे कहा, 'देवी के दर्शन करके मैं यहाँ से दो-चार दिन में चला जाऊँगा।'

कृषक बोला, 'सो काए? ऐसी का जल्दी परी, दाऊजू? हमसे ऐसी का बिगरी कि अबई जावौ हो जै है?'

कृषक के इस सरल और सच्चे आतिथ्य-हठ से कुंजर सिंह का जी भर आया।

खंड-तेंतीस

छोटी रानी की वाग्मिता बड़ी रानी को अधिक आकृष्ट करने लगी और दोनों एक-दूसरे से बहुधा मिलने-जुलने लगीं। थोड़े ही दिनों में दोनों के बीच का बहुत दिनों से चला आनेवाला अंतर कम हो गया। राजा को इस मेल-जोल पर संतोष हुआ, परंतु जनार्दन

शब्दार्थ :

अबै – अभी
नई – नहीं
एल्लो – यह लो
हमई से – हम से ही
टिटकरी – मजाक, हँसी
करन – करते
खों – के लिए
इतै – फिर
कायके – किस
लानै – लिए
आउत रहत – आते रहते हैं
सोऊं – वही
बीहड़ – बियाबान
पाठ – ऊँचाई
पैलउपैल – पहले–पहल

टिप्पणी

छोटी और बड़ी रानी का परस्पर मेलमिलाप तथा छोटी रानी द्वारा राजा के चंगुल से भाग जाने का षड्यंत्र।

को इसमें श्रद्धा के योग्य कुछ न दिखाई दिया।

एक दिन बहुत लगन के साथ छोटी रानी बड़ी रानी से बातें कर रही थीं। बातचीत के सिलसिले में छोटी रानी ने कहा, 'जब तक हम लोग इस बंदीग ह में बैठी-बैठी दूसरों का मुँह ताकती रहेंगी, तब तक कोई सरदार मैदान में नहीं आवेगा। बाहर निकलते ही बहुत से सरदार साथ हो जाएँगे।'

बड़ी रानी ने कहा, 'इसमें कोई संदेह नहीं कि इस राज्य के असली अधिकारी कैद में हैं और जिसे कैद में होना चाहिए, वह राज-दंड हाथ में लिए हैं।'

'परंतु उसके छीनने की शक्ति अब भी हमारे हाथ में है।' छोटी रानी ने उत्तर दिया।

'मैं भी मानती हूँ और यदि काफ़ी तादाद में सरदार लोग सहायता के लिए आ गए, तो सब काम बन जाएगा। परंतु यदि ऐसा न हुआ तो प्रलय की आशंका है।'

छोटी रानी अधिक निश्चयपूर्ण स्वर में बोलीं, 'बिल्कुल सोच-समझ लिया है। रामदयाल अपने पक्ष के सरदारों से मिल चुका है। वे लोग नए राजा से असंतुष्ट हैं, परंतु जब तक हम लोग महलों में बंद हैं, तब तक वे लोग अपनी निजी प्रेरणा से कुछ नहीं कर सकते।'

'यहाँ से चलकर ठहरोगी कहाँ?' बड़ी रानी ने ज़रा संकोच के साथ पूछा।

'कहीं भी, दलीप नगर के बाहर कहीं भी सिंह की गुफा में, नदी की तली में, पहाड़ के शिखर पर, कहीं भी।' छोटी रानी ने उत्तेजित होकर उत्तर दिया, 'हमारे स्वामिधर्मी सरदार कहीं भी हमारी सहायता के लिए आ सकते हैं।'

बड़ी रानी ने प्रतिवाद करते हुए, कुछ रुखाई के साथ कहा, 'मैं इस तरह की यात्रा के प्रस्ताव से सहमत नहीं हो सकती। व्यर्थ मारे-मारे फिरने से यहीं अच्छे।'

छोटी रानी तुरंत रुख बदल कर बोलीं, 'रामनगर के राव के यहाँ ठिकाना रहेगा। वहाँ से अलीमर्दान की भी सहायता सहज हो जाएगी। सिंहगढ़ पर चढ़ाई उसी ओर से अच्छी तरह हो सकती है।'

छोटी रानी के ढले हुए स्वर ने बड़ी रानी को नरम कर दिया। कहा, 'रामनगर के राव के पास बड़ा बल तो नहीं, परंतु स्थान रक्षा के विचार से अच्छा है। अलीमर्दान की सहायता के बिना काम न चलेगा?'

जनार्दन द्वारा रानियों को फुसलाने का प्रयास विफल।

'वह हमारा राखीबंद भाई है।' छोटी रानी ने उत्तर दिया, 'उसकी ओर से जी में कोई खटका मत कीजिए। किसी भी मंदिर के विध्वंस करने की कोई इच्छा उसके मन में नहीं है।'

इसी समय एक दासी ने बड़ी रानी को खबर दी कि दीवान जनार्दन आशीर्वाद लेने के लिए आना चाहते हैं। थोड़ी देर में जनार्दन आ गया। आशीर्वाद और कुशल-मंगल पूछने के पश्चात् उस दासी द्वारा जनार्दन और बड़ी रानी का वार्तालाप होने लगा।

जनार्दन ने पूछा, 'छोटी महारानी न मालूम मुझसे क्यों रुष्ट हैं? महाराज इस बात को जानते हैं कि मैं उनका कोई अहित-चिंतन नहीं करता।'

बड़ी रानी ने जवाब दिलवाया, 'इस बात से मेरा कोई संबंध नहीं। आप इस विषय पर इन्हीं से कहें-सुनें।'

'मैं आपकी सहायता चाहता हूँ। उन्हें इस राज्य में जो स्थान पसंद हो, उसमें आनंदपूर्वक रहें, जिससे इस लांछन से बचूँ कि दलीप नगर में मैंने इन्हें बरबस रोक रखा है।'

शब्दार्थ :

झार – प्रकाश की तेज किरणें
आद – शुरूआत
थोरक – थोड़े
वाग्मिता – बोलने का गुण, वाक्चातुय
स्वामिधर्मी – अपने स्वामी की रक्षा करने वाले
लांछन – आरोप

'इसे तो वह अवश्य पसंद करेंगी।' और जवाब देनेवाली ने रानी की ओर से कहा, 'बड़ी महारानी भी कुछ दिनों के लिए बाहर यात्रा कर आवेंगी।'

जनार्दन को यह प्रस्ताव पसंद न आया। बोला, 'आजकल अवस्था ज़रा खराब हो रही है और वैसे भी यह स्थान तो आपको बहुत प्यारा रहा है। आपने कभी शिकायत नहीं की कि....

बीच में टोक दिया गया। बड़ी रानी की तरफ से कहा गया, 'जरूर जाऊँगी। कैदी नहीं हैं, जो उन्हें तो जाने दिया जाए और इन्हें रोक रखा जाए।'

जनार्दन बोला, 'मैं महाराज से अनुमति के लिए कहूँगा। परंतु जिस काम से मैं आया था, वह यदि वहाँ नहीं हो सकता, तो छोटी रानी के ही पास जाकर अपने अपराधों की क्षमा माँगूँगा।'

'वहाँ आने की कोई आवश्यकता नहीं।' छोटी रानी ने दासी का आश्रय लिए बिना ही परदे के भीतर से कहा, 'हम दोनों अत्याचार-पीड़ित स्त्रियाँ एक स्थान में शांति के साथ रहना चाहती हैं, वह भी तुम्हें सहन नहीं। हमारा राज-पाट ले लिया। दोनों को एक-दूसरे से अलग करके क्या किसी एकांत गढ़ी में हमारा सिर कटवाओगे?'

जनार्दन चौंका नहीं। थोड़ी देर तक स्तब्ध, निश्चय बना रहा। कुछ ही क्षण पश्चात् बोला, 'मैंने तो ऐसी कोई बात नहीं कही, जिससे आपके निष्कर्ष की पुष्टि होती हो। आपसे क्षमा-प्रार्थना करने की ही बात कह रहा था। वह न रुची, जाता हूँ।'

जनार्दन दोनों रानियों को एक-दूसरे से अलहदा करना चाहता था। इसी प्रयोजन से वहाँ गया भी था, परंतु सावधानी से काम न करने के कारण और छोटी रानी के ताड़ लेने से उसका मनोरथ निष्फल हो गया। छोटी रानी के कुवाक्य का उसे बहुत थोड़ी देर ध्यान रहा होगा। उसके मन में बहुत ग्लानि थी कि चतुराई के साथ बातचीत नहीं की।

राजा के पास गया। चतुर मंत्री के लिए समय से बढ़कर मूल्यवान और कोई चीज़ नहीं हो सकती। इसलिए उसने राजा से तुरंत भेंट की। दोनों रानियों की परस्पर बढ़ती हुई घनिष्ठता में किसी भयंकर विपदा की विभीषिका, किसी विकट षड्‌यंत्र की जननशक्ति की आशंका का चित्र जनार्दन ने खींचा।

राजा ने ज़रा खीझ कर कहा, 'तब क्या करूँ? जब तक कोई बड़ा अपराध सिद्ध न हो जाए, दंड दिया नहीं जा सकता।'

जनार्दन द्वारा दोनों रानियों को परस्पर अलग रखने की कोशिश।

राजा की खिझलाहट से ज़रा भी न घबरा कर जनार्दन बोला, 'न तो किसी अपराध को सिद्ध करने की जरूरत है और न किसी दंड के विधान की। इन्हें तो अन्नदाता दो अलग-अलग स्थानों में सम्मानपूर्वक रख दें।'

'इससे वैमनस्य और बढ़ेगा। जो सरदार अभी पीछे-पीछे और शायद दबी-जबान यह कहते हैं कि इन लोगों ने रानियों को महल में कैद कर रखा है, वे भड़ककर खुल्लमखुल्ला बुराई करेंगे। रानियों को यहाँ से हटाकर मैं अपने लिए व्यर्थ का विरोध नहीं खड़ा करना चाहता।'

'अन्नदाता, वे यहाँ बैठी-बैठी सम्मिलित शक्ति से राज्य को उलटने-पलटने की तरकीबें सोचा करती हैं, सरदारों को अराजकता के लिए उभाड़ा करती हैं। एक-दूसरे से दूर रहने पर दोनों निर्बल हो जाएँगी।'

शब्दार्थ :

अलहदा – अलग
विभीषिका – त्रास, भयानक रूप
जननशक्ति – पैदा करने की शक्ति
खिझलाहट – खीझ, गुस्सा

टिप्पणी

'मैं इस बात को नहीं मानता।'

जैसी महाराज की मर्जी हो, परंतु छोटी रानी की हरकतों के मारे मेरी तो नाक में दम आ गया है। यह तो अन्नदाता को मालूम ही है कि मेरा सिर काटने या कटा लेने का रानी ने प्रण ठान रखा है.....।'

राजा ने हँसकर जनार्दन की बात काट दी। कहा, 'डरो मत। तुम्हारी उम्र अभी बहुत है। चाहे ज्योतिषियों से पूछ लेना।' फिर एक क्षण बाद गंभीर होकर बोले, 'शर्माजी, तुम्हें तलवार चलाना सीखना चाहिए था। राजनीति के गणित लगाते-लगाते बहुत से व्यर्थ भय के भूत तुम्हें सताने लगे हैं। स्त्रियाँ बात काटतीं हैं, सिर नहीं काटतीं। अपना काम-काज देखो। राज्य की बहुत-सी समस्याएँ तुम्हें उलझाने के लिए यों ही काफ़ी हैं। इधर का ख़्याल ज़रा कम कर दो। कुछ मेरा भी भरोसा करो।'

खंड-चौंतीस

अलीमर्दान द्वारा पालर तथा विराटा की देवी में समानता तलाशने का प्रयास।

अलीमर्दान अपनी फ़ौज लिए भांडेर में पड़ा था। दलीप नगर के दमन की प्रबल आकांक्षा उसके मन में थी। परंतु दिल्ली की अस्थिर अवस्था और इलाहाबाद के सैयद भाइयों की प्रबल हलचल उसे उग्र रूप धारण करने से वर्जित कर रही थी। काले खाँ पालर की पुजारिन की बीच-बीच में याद दिला देता था। उस विषय के लिए भी अलीमर्दान के हृदय में एक बड़ा-सा लालसायुक्त स्थान था। परंतु इस स्थान में भी उसकी इच्छाओं का एक बड़ा बंधन कसा हुआ था। वह यह था कि अलीमर्दान और उस सरीखे अन्य मनचले सूबेदार, जो सिर से दिल्ली का बोझ हल्का होते ही स्वतंत्र हो जाने के मनोहर स्वप्नों में डूबे रहते थे, अपने सूबे की और पड़ोस की हिंदू जनता पर साधनों और सैनिकों के लिए बहुत निर्भर रहते थे, इसलिए यथासंभव उसे व्यर्थ नहीं चिढ़ाते-छेड़ते थे।

धीरे-धीरे भांडेर में भी यह खबर पहुँच गई कि विराटा में एक देहधारिणी देवी है, जो अपने वरदानों से निस्सहायों को समर्थ कर देती है। यदि अलीमर्दान चढ़ाई के साथ अनुसंधान करता, तो पालर और विराटा की देवी की समानता उसे कदाचित् मालूम हो जाती। उसने इस विषय को किसी अनुकूल समय की आशा से प्रेरित होकर स्थगित कर दिया और केवल ऐसी साधारण ढूँढ़-खोज को, जो आसानी से दूसरों पर प्रकट न हो पाए, जारी रखी।

रामनगर का राव पतराखन इस बीच में कई बार भांडेर गया-आया। वह यह जानना चाहता था कि अलीमर्दान क्यों यहाँ पड़ा हुआ है और कब तक इस तरह पड़ा रहेगा। साथ ही वह अलीमर्दान को मौका मिलने पर यह विश्वास दिलाना चाहता था कि भांडेर में और अधिक ठहरना बेकार है।

एक दिन अलीमर्दान से अकेले में बातचीत हुई। अलीमर्दान ने पूछा, 'सुना है रावसाहब, आपके पड़ोस में देवी का कोई अवतार हुआ है।'

'जी हाँ। कोई बात नहीं है, हमारे धर्म में ऐसा होता रहता है।'

'कब हुआ था?'

'बरसों हो गए हैं। हमेशा से उसकी बावत सुनता आया हूँ।'

'हाँ साहब, अपने-अपने मजहब की बात है। मुझे उसमें दखल देने की कोई जरूरत नहीं है। वैसे ही पूछा है।'

शब्दार्थ :
नाक में दम आ जाना (मुहावरा) – परेशान हो जाना

परंतु रामनगर लौट आने के कई रोज पीछे भी पतराखन ने सुना कि अलीमर्दान भांडेर में ही है।

खंड-पैंतीस

संध्या हो चुकी थी। रामनगर की गढ़ी के फाटक बंद होने में अधिक विलंब न था। पहरेवालों ने फाटकों को अधमुँदा रख छोड़ा था। उनका कोई साथी गाँव में तंबाकू लेने गया था। इतने में गढ़ी के नीचे, जो बेतवा-किनारे एक ऊँची टोरिया पर बनी थी, दस-बारह घुड़सवार आकर रुक गए। और सवार तो वहीं रहे, एक उनमें से फाटक पर आया। पहरे वाले ने फाटक को ज़रा और खोलकर पूछा, ''आप कौन हैं?'

'दलीप नगर से आ रहा हूँ। महारानी और कुछ सरदार नीचे खड़े हैं, बहुत शीघ्र और आवश्यक काम से मिलना है।' आंगतुक ने उत्तर दिया।

पहरे वाले ने नम्रतापूर्वक कहा, 'आपका नाम?'

'रावसाहब को मेरा नाम रामदयाल बतला देना।' उत्तर मिला।

पहरे वाला भीतर गया। राव पतराखन आ गया। अँधेरा था, नहीं तो रामदयाल ने देख लिया होता कि पतराखन के चेहरे पर प्रसन्नता के कोई चिह्न न थे। पतराखन मीठे स्वर में बोला, 'महारानी को ऐसे समय यहाँ आने की क्या आवश्यकता पड़ी?'

रामदयाल ने कहा, 'कालपी के नवाब अलीमर्दान को कर्त्तव्य-पथ पर सजग करने के लिए आई हैं।'

पतराखन ने पूछा, 'महारानी कहाँ हैं?'

रामदयाल ने इशारे से बतला दिया।

महारानी का चुपके से दलीप नगर से राम नगर पहुँचना तथा पतराखन से मिलना।

कुछ सोचता-विचारता पतराखन गढ़ी से उतरा और नीचे से दलीप नगर के सवारों को गढ़ी पर लिवा लाया।

पतराखन ने कहा, 'अबकी बार बड़ी रानी ने भी छोटी रानी का साथ दे दिया।'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'साथ तो वह सदा से हैं परंतु कुछ लोगों ने बीच में मनमुटाव खड़ा कर दिया था।'

'परंतु बड़ी रानी के साथ हो जाने पर भी फ़ौज़-भीड़ तो कुछ भी नहीं दिखाई पड़ती। इतने आदमियों से देवी सिंह का क्या बिगड़ेगा?'

'ये सब सरदार हैं। इनके साथ की सेना पीछे है और फिर नवाब साहब की मदद होगी। आप भी सहायता करेंगे?'

'इसमें संदेह ही क्या है? यदि नवाब साहब ने सहायता कर दी, तो बहुत काम बनने की आशा है। मैं भी जो कुछ सहायता बनेगी, करूँगा ही। विराटा का दाँगी भी अपने भाई-बंदों को लाएगा। आजकल उसे ज़रा घमंड हो गया है।'

'किस बात का?'

'अपनी संख्या का। इसके गाँव में देवी का अवतार हुआ है। उसका भी उसे बहुत भरोसा है।'

'देवी का अवतार? हाँ, हो सकता है। होता ही रहता है। पालर में हुआ था, परंतु'

टिप्पणी

'परंतु क्या? सुनते हैं, वही यहाँ चली आई है। एक दिन अलीमर्दान ने मुझसे पूछा था। लोग कहते थे, उनके कारण ही देवी को पालर से भागना पड़ा। यह सब गलत है। नवाब कहता था कि अवतार सब कौमों में होते हैं और उसे किसी धर्म में दखल देने की ज़रूरत नहीं है और मैं इन विषयों पर बहुत कम बहस करता हूँ।'

'नवाब साहब कहते थे!' रामदयाल ने प्रकट होते हुए आश्चर्य को रोक कर कहा, 'जरूर कहते होंगे। वह तो बड़े उदार पुरुष हैं। उन्होंने पालर में जाकर देवी की पूजा की थी। मूर्तियों को छुआ तक नहीं, तोड़ने की तो बात क्या।'

'कुमुद के पालर से भागकर विराटा पहुँचने पर अलीमर्दान को शक।

किसी कल्पना से विकल पतराखन बोला, 'हमारी गढ़ी की बहुत दिनों से मरम्मत नहीं हुई है। दीवारें गोलाबारी नहीं सह सकतीं। फाटक भी नए चढ़वाने हैं, गोला-बारूद की भी कमी है। इस गढ़ी में होकर युद्ध करना बिलकुल व्यर्थ होगा। वैसे मैं और मेरे सिपाही सेवा के लिए तैयार हैं।'

रामदयाल समझ गया। बोला, 'यहाँ से युद्ध कदापि न होगा। आप गढ़ी की मरम्मत चाहे कल करा लें, चाहे दस वर्ष बाद। यह स्थान छिपा हुआ है और सुरक्षित है, इसलिए महारानी को पसंद आया।'

पतराखन ने रोक कर कहा, 'सो तो उनका घर है, चंपतराय कई बार ठहरे हैं। परंतु ठहरे वह थोड़े-थोड़े दिन ही हैं। खैर उसकी कोई बात नहीं है। विराटा की गढ़ी देखी है?'

'नहीं तो।'

'बहुत सुरक्षित है। दाँगी को उसी का तो बड़ा गर्व है।'

'मैं कल ही जाकर देखूँगा।'

'परंतु मेरी ओर से वहाँ कुछ मत कहना।'

पतराखन के साथ बड़ी रानी की बातचीत तथा सहायता की मांग।

'नहीं, मैं तो किला देखने और देवी के दर्शनों को जाऊँगा, किसी से वहाँ बातचीत करने का क्या काम? इसके पश्चात् परसों नवाब साहब के पास जाऊँगा। देवी सिंह से जो लड़ाई होगी, उसमें महारानी आपसे बहुत आशा करती हैं और आपको पुरस्कार भी बहुत देंगी।'

पतराखन ने उत्तर दिया, 'वैसे तो मैं किसी का दबा हुआ नहीं हूँ दलीप नगर के राजा से कोई संबंध नहीं। कालपी के नवाब और दिल्ली के बादशाह से हमारा ताल्लुक है, इसलिए जिस पक्ष में नवाब होंगे, उसी का समर्थन मैं भी करूँगा।'

पतराखन को रामदयाल रानियों के डेरे पर ले गया। दोनों आड़-ओट से वार्तालाप करने लगीं।

छोटी रानी ने कहा, 'बड़ी महारानी ने भी अब की बार हम लोगों का साथ दिया है। चोर-डाकू एक अधर्मी ब्राह्मण की सहायता से हमारे पुरखों के सिंहासन पर जा बैठा है। कुछ दिनों तो वह बड़ी महारानी और क्षेत्रीय सरदारों को भुलावे में डाले रहा, परंतु अंत में भंडाभोड़ हो गया। अब की बार बहुत से सामंत हमारे साथ हैं। आशा है, विजय प्राप्त होगी। आपको हम धन-धान्य और जागीर से संतुष्ट करेंगे। टेढ़े समय में जो हमारी सहायता करेगा, उसे सीधे समय में हम कभी नहीं भूल सकेंगे।'

पतराखन ने बड़ी रानी के सिसकने का शब्द सुना।

शब्दार्थ :
ताल्लुक – संबंध
अद ष्ट – भाग्य, नियति

टिप्पणी

बोला, 'मुझसे शक्ति-भर जितनी सहायता बनेगी, करूँगा। यह टूटी-फूटी-सी गढ़ी आप अपनी समझें।'

बड़ी रानी के करुण कंठ से कहा, 'राव साहब, हम आपको इसका पुरस्कार देंगे।'

राव पतराखन ने अद ष्ट को, अनिवार्य को सिरे-माथे ले कर सोचा, यदि इन दो निस्सहाय स्त्रियों की रक्षा में इस गढ़ी को धूल में मिलाना पड़ा, तो कुछ हर्ज नहीं। कोई और गढ़ी ढूँढ लेगा।

खंड-छत्तीस

कुंजर सिंह का चोरी छिपे विराटा की देवी के दर्शनों का प्रयास

कुंजर सिंह मुसावली वाले कृषक और चरवाहे के साथ विराटा की ओर पैदल गया। वह अपने को प्रकट नहीं करना चाहता था। मार्ग के भरकों और व क्षों के समूहों में होकर जाते हुए उसने सोचा, यदि वही हैं, तो शायद पहचान लें। न पहचानें, तो बुराई ही क्या? जिसे संसार ने करीब-करीब त्याग दिया है, उसे देवता क्यों तिरस्कृत करने चला? न पहचाने जाने में एक सुख भी है। खोद-खोदकर लोग कुशल-वार्ता न पूछेंगे और उन्हें व्यथा न होगी। शांतिपूर्वक उनके दर्शन कर लूँगा। परंतु यदि उन्होंने पहचान भी लिया, तो उन्हें व्यथा क्यों होने लगी? मैं उनका कौन हूँ। केवल भक्त, और फिर थोड़े से पलों का परिचय।

थोड़ी देर में नदी पार करके टापू के सिरे पर स्थित मंदिर में पहुँच गए। वह देवी के दर्शनों का खास समय न था। कृषक और उसके साथी को घर लौटना था, परंतु कुंजर सिंह ने कहा, 'क्यों जल्दी करते हो? यदि किसी ने मना कर दिया, तो अपना-सा मुँह लेकर रह जाएँगे और ठहराना तो पड़ेगा ही।'

कृषक ने गोमती से विनय के साथ कहा, 'पालर सैं जे कोऊ ठाकुर आए हैं, दर्शन करन चाऊत है। का अबै दर्शन न हुईएँ? कोऊ बहुत बड़े आदमी हैं।'

गोमती पालर का नाम सुनकर ज़रा पास आई। कुंजर सिंह को पहचानने की चेष्टा की, न पहचान पाई।

इस चर्चा ने कुमुद को भी आकृष्ट कर लिया। एक ओर से अपने आंगतुकों को बारी-बारी से देखा। कुंजर सिंह को उसने कई बार बारीकी से देखा। वहाँ से हटकर चली गई। नरपति सिंह को भीतर से भेजा।

कुंजर सिंह का नरपति सिंह से परिचय होने के बाद देवी के दर्शनों के लिए प्रस्ताव।

नरपति ने आते ही पूछा, 'आपको पालर में तो मैंने कभी नहीं देखा। आप वहाँ के रहने वाले नहीं हैं।'

कुंजर सिंह, 'रहने वाला तो वहाँ का नहीं हूँ, परंतु उस समय अर्थात् कुछ दिन हुए, तब आया वहीं से था।'

नरपति ने पास आकर कुंजर सिंह को घूरा। कुछ सोच कर बोला, 'आपको कभी कहीं देखा अवश्य है, परंतु याद नहीं पड़ता। पालर के ऊपर कालपी के नवाब के आक्रमण के समय आप दलीप नगर की सेना में या ऐसे ही किसी मेले में उससे पहले कभी आए हैं।'

'आप ठीक कहते हैं।' कुंजर सिंह ने ज़रा सँभलकर कहा, 'मैं मेले में पालर गया था।'

कुमुद ने भी वार्तालाप सुना। गोमती ज़रा उत्सुकता के साथ बोली, 'आप दलीप नगर के रहने वाले होंगे।'

शब्दार्थ :

भरका	–	बुंदेलखंड में नदियों के किनारे की बंजर और ऊँची–नीची भूमि
जे कोऊ	–	ये कोई
करन	–	करना
चाहत	–	चाहते
का	–	क्या
अबै	–	अभी
हुईएँ	–	होंगे

टिप्पणी

'हाँ।' कह कर कुंजर ने सोचा, प्रश्नों की समाप्ति हो जाएगी और हाथ-पाँव धोने के लिए नदी की ओर टौरिया से नीचे उतर गया।

थोड़े समय के पीछे हाथ-पाँव धोकर कुंजर सिंह नदी से आ गया। उसने नरपति सिंह से दर्शनों की इच्छा प्रकट की।

कुंजर द्वारा कुमुद के दर्शन।

देवी की मूर्ति के पास एक किनारे पर कुमुद बैठी थी। वही मुख, वही रूप। पर आज कुछ अधिक आतंकमय दिखलाई पड़ा। भौंहों के बीच में सिंदूर और भस्म का टीका अधिक गहरा था। कुंजर ने पुजारिन को एक बार चंचल द ष्टि से देखा। फिर देवी को साष्टांग प्रणाम करके मन-ही-मन कुछ कहता रहा। जब विभूति-प्रसाद की बारी आई, तब फिर कुमुद की ओर देखा। वह पीली पड़ गई थी।

काँपते हुए हाथ से कुमुद ने फूल और भस्म कुंजर सिंह को दी। वह अँगूठी उसकी उँगली में अब भी थी। कुंजर ने नीची द ष्टि किए हुए ही काँपते कंठ से कहा, 'वरदान मिले। बहुत दुर्गति हो चुकी है।'

कुमुद देवी की ओर देखने लगी, कुछ न बोली।

कुंजर ने फिर कहा, 'देवी के वरदान के बिना मेरा जीवन असंभव है।' कुंजर का गला और अधिक काँपा।

'देवी जो कुछ करेंगी, सब शुभ करेंगी।' कुमुद ने कुंजर की ओर द ष्टिपात करने का प्रयत्न करते हुए उत्तर दिया।

इतने में नरपति बोला। 'आप पालर क्या अभी चले जाएँगे?'

कुंजर के मन में कोई जल्दी न थी। बोला, 'अभी तो न जाऊँगा। और कुछ ठीक नहीं, कहाँ जाऊँ।'

'तो क्या आप दलीप नगर जाएँगे?' नरपति ने पूछा।

'वहाँ का भी कुछ ठीक नहीं।' कुंजर ने संयत निःश्वास के साथ उत्तर दिया।

कुमुद अपने सहज-स्वाभाविक धैर्य को पुनः प्राप्त-सा करके भर्राए कंठ से बोली, 'इनके भोजन का प्रबंध कर दीजिए।'

खंड-सैंतीस

कुमुद के घर पर कुंजर सिंह का ठहरना।

नरपति ने अपनी कोठरी में कुंजर सिंह को स्थान दिया। भोजन के उपरांत नरपति कुंजर के पास बैठ गया। दोनों एक दूसरे के साथ बातचीत करने के इच्छुक थे, परंतु यह निश्चय नहीं कर रहे थे कि चर्चा का आरंभ किया किस तरह जाए।

नरपति ने पूछा, 'आप दलीप नगर के रहने वाले हैं?'

'जी हाँ।'

'वहाँ का राजा कौन है?' सुनते हैं, 'कोई देवी सिंह राज्य करते हैं।'

'आपको मालूम तो है।'

'कैसे राजा हैं?'

कुंजर चुप रहा।

नरपति ने ज़िद करके पूछा, 'कैसा राजा है? प्रजा को कोई कष्ट तो नहीं देता?'

'अभी तो सिंहासन को अपने पैरों के नीचे बनाए रखने के लिए खून-खराबी करता है।'

शब्दार्थ:
विभूति – भस्म

टिप्पणी

‘यह राज्य तो उन्हें महाराज नायक सिंह ने दिया था?’

‘बिल्कुल झूठ बात है।’

नरपति सिंह ने पांडित्य प्रदर्शित करते हुए कहा, ‘हमें भी ख़्याल होता है कि महाराज ने राज्य न दिया होगा, क्योंकि उनके एक कुमार थे। उनका क्या हुआ? अब क्या वह राजकुमार नहीं हैं? सच-सच बतलाइए।’

कुंजर सिंह ने एक क्षण सोचकर कहा, ‘नहीं, परंतु जो राजकुमार है, वह किसी समय प्रकट अवश्य होगा।’

नरपति सिंह द्वारा दलीप नगर के राजा तथा उत्तराधिकारी राजकुमार के बारे में कुंजर सिंह से बातचीत।

नरपति सिंह बोला, ‘राजकुमार बड़ा सुशील और होनहार था। मैंने उसके लिए देवी से प्रार्थना की थी। उस बेचारे को राज्य तब नहीं मिला, तो कभी-न-कभी मिलेगा।’

‘स्वार्थियों की नीचता के कारण।’ कुंजर ने उत्तर दिया, ‘दलीप नगर में जनार्दन शर्मा एक पापी है। उसके षड्यंत्रों से देवी सिंह राजा बन बैठा है। वास्तविक राजकुमार वंचित हो गया है और रानियों की मूर्खता के कारण भी उसे नुकसान पहुँचा है—’

नरपति ने टोक कर कहा, ‘देवी की कृपा हुई, तो असली हक़दार को फिर राज्य मिलेगा और नीच, स्वार्थी, पापी लोग अपने किए का फल पावेंगे।’

गोमती को दूसरी कोठरी में बड़ी ज़ोर से खाँसी आई।

कुंजर ने पूछा, ‘विराटा के राजा के पास फ़ौज-फाँटा कैसा है?’

‘अच्छा है।’ नरपति ने उत्तर दिया, ‘रामनगर के राव साहब की अपेक्षा यह बहुत जन और धन-संपन्न हैं। वह अपने को छिपाते बहुत हैं, नहीं तो उनमें इतनी शक्ति है कि किसी राजा या नवाब का मुकाबला कर सकते हैं। हमारी जाति के वह गौरव हैं।’

कुंजर सिंह द्वारा विराटा के राजा से सहायता के लिए प्रस्ताव रखना।

कुंजर ने पूछा ‘यदि किसी समय दलीपनगर के राजकुमार उनसे मिलने आवें तो अच्छी तरह मिलेंगे या नहीं?’

‘अवश्य।’ नरपति ने उत्तर दिया, ‘राजा राजाओं के साथ बराबरी का ही बरताव करते हैं। आपसे उस राजकुमार से कोई संबंध है?’

‘जी हाँ’

‘क्या ?’

‘मैं उनकी सेना का सेनापति हूँ।’

‘वही तो, वही तो।’ नरपति ने दंभ के साथ कहा, ‘मेरी स्मरणशक्ति ने धोखा नहीं खाया था। मुझे देखते ही विश्वास हो गया था कि आप राजकुमार या राजकुमार के साथी या दलीप नगर के कोई व्यक्ति अवश्य हैं।’

कुंजर सिंह को मन में हँसी आ गई। बोला, ‘राजकुमार आपके राजा से पीछे मिलेंगे, मैं उनसे पहले मिल लूँगा। आप कुछ सहायता करेंगे?’

नरपति ने पूछा, ‘उस दंगे के दिन राजकुमार के साथ आप किस समय आए थे या शुरू से ही साथ थे?’

कुंजर ने उत्तर दिया, ‘मैं शुरू से ही साथ था।’ उसने अपने पहले प्रश्न को फिर दुहराया, ‘आप राजकुमार की कुछ सहायता कर सकेंगे?’

नरपति बोला, ‘अवश्य। मैं आपके कुमार के लिए देवी से प्रार्थना करूँगा और राजा

टिप्पणी

सबदल सिंह से भी कहूँगा। अपने साथ आपको ले चलूँगा।'

सवेरे कुंजरसिंह नरपति के साथ विराटा के राजा सबदल सिंह के पास गया। राजा ने स्पष्ट इंकार तो नहीं किया, परंतु नरपति के बहुत हठ करने पर कहा, 'देवीजी की कृपा से काम बनने की आशा करनी चाहिए, परंतु भरोसा पक्का उस समय दिला सकूँगा, जब यह निश्चय हो जाए कि कालपी के नवाब की सहायता के बिना आपके कुमार दलीप नगर के राजा की शक्ति का सफलतापूर्वक सामना कर सकते हैं। यदि दिल्ली का पाया लौट गया और कालपी की नवाबी खत्म हो गई, तो मुझे आपके राजा का साथ देने में बिलकुल संकोच न होगा। अथवा यदि आप लोग किसी तरह कालपी के नवाब को अपने पक्ष में कर लें, तो कदाचित् मुझे अपना सिर खपाने में ऊँच-नीच का विचार न करना पड़ेगा।'

कुंजर सिंह बोला, 'कालपी का नवाब दलीप नगर पर धावा अवश्य करेगा। परंतु वह अपने स्वार्थ के लिए करेगा।'

विराटा के राजा द्वारा सहायता का आश्वासन तथा कुंजर को अपने यहाँ ठहरने का प्रस्ताव।

'तब ऐसी दशा में आपको कुछ दिन बल-एकत्र करने और चुपचाप परिस्थिति का अध्ययन करने में बिताना पड़ेगा। अनुकूल स्थिति होने पर हम और आप 'दोनों मिल-जुल कर काम कर सकते हैं।'

सबदल ने पूछा, 'आपका नाम?'

बिना किसी हिचकिचाहट के कुंजर ने उत्तर दिया, 'अतबल सिंह।'

सबदल ने कहा, 'आप यहाँ ठहर सकते हैं, यदि आपकी इच्छा हो तो। परंतु आपको रहना इस तरह पड़ेगा कि आपका पता किसी को न लगे, अर्थात् जब तक आपको अभिप्राय सिद्ध न हो जाए।'

कुंजर बोला, 'यह ज़रा मुश्किल है। ऐसा स्थान कहाँ है, जहाँ मैं बिना टोका-टोकी के बना रहूँ, स्वेच्छापूर्वक जब चाहे, जहाँ आ-जा सकूँ।'

चित्र : कुंजर सिंह की नरपति सिंह के साथ विराटा के राजा सबदल सिंह से भेंट

'ऐसा स्थान है।' नरपति ने बात काटकर कहा, 'ऐसा स्थान देवी का मंदिर है। एक तरफ कहीं, जब तक चाहो तब तक पड़े रहो। तैरना जानते हो?'

'हाँ' कुंजर ने उत्तर दिया।

तब नरपति बोला, 'डोंगी की सहायता बिना भी स्वेच्छापूर्वक चाहे जहाँ आ-जा सकते हो।'

एक धीमी, अस्पष्ट आह भरकर कुंजर बोला, 'देखें कब तक वहाँ इस तरह टिका रहना पड़ेगा।' फिर तुरंत भाव बदलकर उसने कहा, 'सैन्य-संग्रह शीघ्र हो जाएगा और देवीजी की कृपा होगी, तो बहुत शीघ्र सफलता भी प्राप्त हो जाएगी।'

शब्दार्थ:
अभिप्राय– उद्देश्य

खंड-अड़तीस

गोमती को मालूम हो गया कि दाँगी राजा ने अपने को कुंजर सिंह का सेनापति बताने वाले व्यक्ति को सहायता प्रदान का पक्का वचन न भी दे कर आश्रय-दान दिया है। गोमती को अखरा। यद्यपि वह स्वयं दूसरों के आश्रित थी, परंतु अपने को धीरे-धीरे दलीप नगर की रानी समझने लगी थी और राजा देवी सिंह के सब प्रकार के शत्रुओं के प्रति उसके जी में घ णा उत्पन्न हो गई थी।

सबदल सिंह के यहाँ से लौट आने पर गोमती की इच्छा कुंजर को दो खोटी बातें सुनाने की हुई, परंतु नरपति साफ़ तौर पर उसे देवी सिंह के द्रोही का पक्षपाती जान पड़ता था। कुमुद देवी का अवतार या देवी की अद्वितीय पुजारिन होने पर भी लड़की तो नरपति की थी। गोमती को रोष हुआ, कष्ट हुआ। भीतर ही भीतर असंतोष और ग्लानि बढ़ने लगी।

इसी समय उस मंदिर में एक व्यक्ति और आया। गोमती को उसके पुष्ट, भरे हुए चेहरे पर सतर्कता के चिह्न मालूम हुए, परंतु इससे अधिक वह उस समय और कुछ न देख सकी। वह व्यक्ति रामदयाल था।

रामदयाल ने बहुत थोड़ी देर के लिए कुमुद को पालर में देखा था। गोमती को उसने देखा न था। इसलिए पहले उसकी धारणा हुई कि यही पुजारिन कुमुद है। गोमती भी सौंदर्यपूर्ण युवती थी। रामदयाल को उसके नेत्र अवश्य बहुत मादक जान पड़े। ज़रा सिर झुका कर गोमती से बोला, 'दूर से दर्शन करने आया हूँ।'

'कहाँ से?' गोमती ने बिना सोचे-समझे पूछा।

रामदयाल ने कुमुद को देखा था। गोमती को हाथ के संकेत से रोकता हुआ-सा बोला, 'मैं दूर से दर्शन करने आया हूँ, क्या इस समय दर्शन हो जाएँगे?'

देवी के दर्शनों के लिए रामदयाल का आना तथा कुंजर सिंह से उसका सामना होना।

'मैं पूछ कर बतलाती हूँ।' गोमती ने उत्तर दिया।

रामदयाल ने प्रश्न किया, 'किससे?'

गोमती बोली, 'यदि तुम्हें इस समय दर्शन न हों, तो सवेरे तो हो ही जाएँगे।'

रामदयाल ने विनयपूर्वक कहा, 'दूर से आया हूँ। क्या इस समय दर्शन हो जाएँगे? यदि न हो सकें तो सवेरे तक के लिए ठहर जाऊँगा और फिर कदाचित् एक अनुष्ठान के लिए यहाँ कई रोज ठहरना पड़ेगा।'

कुमुद बोली, 'दर्शन इस समय भी हो सकते हैं, परंतु यदि तुम सवेरे तक के लिए ठहर सकते हो, तो प्रातःकाल का समय सबसे अच्छा है।'

उस मंदिर में नरपति सिंह नहीं था। परंतु कुंजर सिंह अपनी कोठरी में था। उसने रामदयाल के कंठ को पहचान लिया। सन्नाटे में आकर अपनी कोठरी में ही बैठा रहा। थोड़ी देर में अपने को सँभाल कर बाहर निकला। उस समय रामदयाल दालान के उस कोने में अपना डेरा लगा रहा था। पहचान लिया। रामदयाल नहीं देख पाया। कुंजर अपनी कोठरी में लौट आया।

दूसरे दिन सवेरे रामदयाल दर्शनों के लिए मूर्ति के सामने पहुँचा। कुमुद मूर्ति के पास बैठी हुई थी और नरपति उससे ज़रा हट कर। रामदयाल ने बड़ी श्रद्धा दिखलाते हुए मूर्ति पर जल चढ़ाया और बेले के फूल अर्पण किए। उसने कपड़े की ओर कुछ

शब्दार्थ
डोंगी – छोटी नाव

निकालने के लिए हाथ बढ़ाया। नरपति ने एक बार उस ओर देखकर दूसरी ओर मुँह कर दिया। इतने में कुंजर सिंह भी आ गया। कुमुद की आँखें मूर्ति की ओर देखने लगीं। रामदयाल ने बगल से कुंजर सिंह को देखा, फिर मुड़ कर। पहचानने में संदेह न रहा। एक क्षण के लिए सकपका-सा गया। कपड़ों में से सोने का बहुमूल्य गहना निकाल कर मूर्ति के चरणों में चढ़ा दिया।

गहना हाथ में उठा कर नरपति ने कहा, 'आप कहाँ से, कौन हैं?'

'मैं दलीप नगर का हूँ।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'इससे अधिक कुछ और बतलाना मेरे लिए इस समय असंभव है। आफ़त में हूँ। दुर्गा के दर्शनों से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आया हूँ। मेरी प्रार्थना है कि मेरे स्वामी का भला हो।'

गोमती ने उसी समय आँखें मूँदकर रामदयाल की प्रार्थना स्वीकार की जाने के लिए देवी से प्रार्थना की और बड़े अनुनय की द ष्टि से कुमुद की ओर देखा।

नरपति बोला, 'आपके स्वामी का कल्याण होगा।'

गोमती किसी उमड़े हुए भाव के वेग को सहन न कर सकने के कारण बोली, 'जीजी के मुख से यह आशीर्वाद और अच्छा मालूम होगा।'

कुमुद कुछ नहीं बोली।

नरपति ने तुरंत कहा, 'दुर्गा का प्रसाद इन्हें दिया जाए-फल और भस्म।'

कुमुद ने भस्म उठाकर रामदयाल को दे दी। पुष्प नहीं दिया।

गोमती के हृदय को बड़ी पीड़ा हुई। नरपति बोला, 'यदि समझा जाए, तो पुष्प भी दे दिया जाए। यह दुर्गा के अच्छे सेवक जान पड़ते हैं।'

कुमुद मूर्ति को प्रणाम करके वहाँ से मंदिर के दूसरे भाग में धीरे से चली गई। गोमती ने कुमुद के नेत्रों में इतनी अवज्ञा पहले कभी नहीं देखी थी।

बड़ी कठिनाई से गोमती ने नरपति से कहा, 'इन्होंने क्या कोई अपराध किया है?'

उदास स्वर में नरपति बोला, 'कोई अपराध नहीं किया और न देवी इनसे रुष्ट हैं। रुष्ट होतीं, तो भस्म का प्रसाद क्यों देतीं? जान पड़ता है, अभी इनके कार्य में कुछ विलंब है, इसलिए पुष्प-प्रसाद नहीं मिला।'

रामदयाल कुंजर सिंह को देख कर सकपकाया था, परंतु इस घटना से विचलित नहीं जान पड़ा। मुस्करा कर बोला, 'एक दिन उसकी कृपा अवश्य होगी और मेरा तथा मेरे स्वामी का अवश्य कल्याण होगा।'

'अवश्य।' नरपति बोला।

रामदयाल वहाँ से उठकर मंदिर के बाहर गया। कुंजर सिंह उसके पीछे-पीछे।

जब दोनों अकेले रह गए, कुंजर सिंह ने धीमे स्वर में, परंतु तीखेपन के साथ कहा, 'यहाँ किसलिए आए हो?'

'दर्शनों के लिए।'

'तुम्हें ये लोग जानते नहीं हैं?'

'जानते हैं।'

'ये लोग यह जानते हैं कि तुम्हारा नाम रामदयाल है और किस तरह के मनुष्य हो?'

शब्दार्थ:

अनुनय – प्रार्थना, विनय

अवज्ञा – उपेक्षा, अनादर

'मैंने उन्हें स्वयं बतला दिया है।'

'तुम यहाँ से चले जाओ।'

क्रोध के मारे कुंजर सिंह काँपने लगा।

रामदयाल ठंडक के साथ बोला, 'राजा, गुस्से से काम न चलेगा। मैंने अपना परिचय इन लोगों को दे दिया है, परंतु आप यहाँ नाम और काम दोनों की द ष्टि से छिपे हुए हैं। आपका भेद खुलने से मेरी कोई हानि न होगी। राजा देवी सिंह के आदमी आपके लिए घूम रहे हैं। कालपी का नवाब, जो भांडेर में यहाँ से पास ही ठहरा हुआ है, आपसे शायद बहुत संतुष्ट नहीं है। रानियों की आपसे पटती नहीं। रियासत के सरदार आप लोगों के झगड़ों से अपने को बचाए हुए हैं। लोचन सिंह अभी जीवित है और मैंने कभी आपका कोई बिगाड़ नहीं किया, फिर न जाने राजा मुझसे क्यों रुष्ट हैं।'

कुंजर सिंह जिस बात का संदेह रामदयाल पर कर रहा था, उसे प्रकट करना उसने उचित नहीं समझा।

रामदयाल ने कहा, 'इस बार दोनों रानियाँ देवी सिंह के विरुद्ध हैं। दोनों दलीप नगर छोड़ कर चली आई हैं। आप उनके साथ अपनी शक्ति सम्मिलित कर दें और कालपी के नवाब के साथ घ णा न करें तो दलीपनगर का सिंहासन आपके पाँव-तले शीघ्र आ जाएगा।'

'मैं सदा, रानियों के सम्मान का ध्यान रखता आया हूँ परंतु अनुचित कार्यों का सहायक नहीं हो सकता। कालपी के नवाब के ऊपर भी कोई है, जानते हो?'

'हाँ, राजा। दिल्ली है। परंतु वहाँ किसी की कोई कुछ भी सुनने वाला नहीं मालूम पड़ता, ऐसा मैं आप ही लोगों से सुना करता हूँ।'

'खैर, देखा जाएगा, परंतु मैं एक बात से तुम्हें सावधान करना चाहता हूँ।'

'वह क्या, राजा?'

'तुमने जिसके प्रति अपना अशुद्ध प्रयत्न पालर में किया था, उनसे दूर रहना-बहुत दूर। नहीं तो मैं सिंहासन प्राप्ति की अभिलाषा को एक ओर रख दूँगा और तुम्हें पछताने का भी समय न मिलने दूँगा।'

रामदयाल बोला, 'राजा, यदि मैंने कुछ किया था, तो अपने मालिक की आज्ञा से। जो कुछ करूँगा, अब अपने स्वामी की भलाई के लिए। परंतु मैं वचन देता हूँ कि आपका मार्ग लाँघने की चेष्टा न करूँगा। यदि आप मेरी प्रार्थना स्वीकार करें, तो यही विनती करूँगा कि यहाँ न पड़े रह कर आप राज्य-प्राप्ति का भी उपाय करें।

'मैं पूछता हूँ, तुम उस लड़की से कल शाम को क्या घुल-घुल कर बातें कर रहे थे?' कुंजर ने एकाएक पूछा।

प्रश्न के आकस्मिक वेग से बिल्कुल विचलित न होकर रामदयाल ने उत्तर दिया, 'पुजारिन से तो मेरी कोई बातचीत नहीं हुई।'

'वह नहीं।' कुंजर जी कड़ा करके बोला, 'तुम उस दूसरी लड़की से घुल-घुल कर क्या बातें करते थे?'

'वह कौन है, आप जानते हैं?' रामदयाल ने द ढ़तापूर्वक पूछा।

कुंजर सिंह ने अवहेलना की द ष्टि से उसकी ओर देखा।

टिप्पणी

रामदयाल ने कहा, 'वह राजा देवी सिंह की रानी है।'

कुंजर सिंह सन्नाटे में आ गया। एक कदम पीछे हट गया, बोला, 'झूठ, असंभव!'

कोई उत्तर न दे कर रामदयाल फिर मंदिर में चला गया।

मंदिर में घुसते हुए रामदयाल को नरपति मिला। वह कहीं बाहर जा रहा था। कानाफूसी-सी करते हुए नरपति बोला, 'यहाँ के राजा से कुछ काम हो, तो मेरे साथ चलो।'

रामदयाल बोला, 'अभी तो नहीं, किसी और समय चलूँगा। एकाध दिन यहाँ रह कर मैं काम से बाहर जाऊँगा। लौट कर फिर विनती करूँगा।'

नरपति चला गया।

रामदयाल द्वारा गोमती को कुंजर सिंह के बारे में सब कुछ बता देना।

गोमती को एकांत में देखकर रामदयाल ने एक ओर बुलाने का सम्मानपूर्वक संकेत किया। वह आ गई।

रामदयाल ने कहा, 'जिसे आपने कुंजर सिंह का सेनापति समझ रखा था, वह सेनापति नहीं है।'

'तब कौन है?' गोमती ने ज़रा चिंतित होकर पूछा।

'स्वयं कुंजर सिंह।'

गोमती चौंकी। रामदयाल ने निवारण करते हुए कहा, 'आप आश्चर्य न करें, वह महाराज को हानि पहुँचाने के लिए तरह-तरह के उपायों की रचना में सदा व्यस्त रहते हैं। परंतु मैं इसका उपाय करूँगा, आप चिंतित न हों?'

'आप इस भेद को कदापि किसी के सामने प्रकट न करें। मेरी अनुपस्थिति में यहाँ जो कुछ हो, उस पर अपनी द ष्टि रखें और मेरे ऊपर विश्वास। मैं एक-आध रोज के लिए बाहर जाऊँगा। वहाँ से लौट कर अपनी और योजनाएँ बतलाऊँगा। उसके अनुसार फिर काम करें।'

गोमती ने प्रसन्न हो कर कहा, 'तुम बड़े चतुर मनुष्य जान पड़ते हो, रामदयाल। धन्य हैं महाराज, जिनका ऐसा दक्ष और पुरुषार्थी सेवक हो। तुम कब तक यहाँ रहोगे?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'एक-आध दिन और हूँ। ज़रा यहाँ के राजा को कुंजर के पक्ष से विमुख कर लूँ, या कम-से-कम उत्साहरहित कर दूँ, तब दूसरा काम देखूँ।'

यह कह कर रामदयाल एकटक गोमती की ओर देखने लगा मानो कुछ कहना चाहता हो।

गोमती बोली, 'क्या कहते हो, कहो।'

'आपका इन पुजारिन के विषय में क्या विश्वास है?' उसने पूछा।

गोमती ने उत्तर दिया, 'बहुत शुद्ध हैं। दुर्गा से उनका संपर्क है। लोग उन्हें देवी का अवतार समझते हैं।'

'यह सब ठीक है।' रामदयाल आँखें नीची करके बोला, 'परंतु मेरी यह प्रार्थना है कि आप ज़रा यह अच्छी तरह से देखती रहें कि कुंजर सिंह का वह कितना पक्ष करती हैं और क्यों करती हैं? आपको स्मरण होगा कि उन्होंने मुझे स्वामी की सफलता के लिए पूरा आशीर्वाद नहीं दिया।'

कुछ सोच कर गोमती ने कहा, 'मुझे खूब याद है। उन्होंने एक बार आशीर्वाद दे दिया है। दूसरी बार आशीर्वाद फिर भी दे देंगी।'

खंड-उनतालीस

कुंजर सिंह को जितनी बेचैनी उस दिन हुई, उतनी लोचन सिंह के मुकाबले में सिंहगढ़ छोड़ने के लिए विवश होने पर भी नहीं हुई थी। उसे भय हुआ कि रामदयाल कुमुद को किसी षड्यंत्र में फँसाने और स्वयं उसे किसी विपद् में डालने की चिंता में है। उसने कुमुद से उसी दिन अकेले में कुछ कहने का निश्चय किया।

अंत में कुंजर सिंह को दोपहर के लगभग एक अवसर तथा लगा। गोमती रसोई बनाने के लिए एक कोठरी में चली गई। दूसरी में नरपति को कुमुद भोजन कराने लगी। रामदयाल मंदिर के एक कोने में मुँह पर चादर ढाँपे पड़ा था। कुंजर सिंह मंदिर के आँगन में जाकर ऐसी जगह खड़ा हो गया, जहाँ नरपति उसे नहीं देख सकता था, केवल कुमुद देख सकती थी, परंतु कुमुद ने उसकी ओर देखा नहीं। जब धूप में खड़े-खड़े कुमुद की ओर टकटकी लगाए कुंजर को कई पल बीत गए, तब उसने धीरे-धीरे से पैर की आहट की।

कुंजर सिंह द्वारा कुमुद को सारी स्थिति बताने के लिए योजना बनाना।

कुंजर ने कुमुद को हाथ जोड़ कर सिर से बुलाने का संकेत किया। देख कर भी वह कुछ समय तक वहीं बैठी रही।

यथेष्ट से कुछ अधिक भोजन-सामग्री नरपति के सामने रख कर कुमुद ने पिता से कहा, 'मैं अभी आती हूँ।'

आँगन में प्रवेश करते ही कुमुद ने चारों ओर आँख डाली। गोमती वहाँ न थी, मंदिर की बगल वाली छोटी-सी दलान में रामदयाल चादर से मुँह ढके पड़ा था। वहाँ और कोई न था।

कुंजर सिंह ने मंदिर के बाहर चलने का इशारा करते हुए दरवाजे की ओर कदम बढ़ाया। कुमुद भीतर जा कर देवालय की चौखट पर जा बैठी। कुंजर लौटकर वहीं जा पहुँचा। नीचे बैठ गया। कुमुद भी चौखट से उतर कर नीचे बैठने को ज़रा हिली, परंतु फिर जहाँ की तहाँ बैठी रही। उस स्थान से जहाँ रामदयाल लेटा था, ओट थी।

'यहाँ कोई संकट उपस्थित होने वाला है।' कुंजर सिंह बोला, 'षड्यंत्र रचे जा रहे हैं। यह जो पुरुष कल यहाँ आया है, बड़ा भयंकर और नीच है। उस लड़की के साथ कुछ सलाह कर रहा था। आपकी रक्षा का कुछ उपाय होना चाहिए।'

नेत्र स्थिर करके कुमुद ने कहा, 'मेरे लिए किसी बात की चिंता न करनी चाहिए। दुर्गाजी की कृपा से मेरे ऊपर कोई संकट कभी नहीं आ सकता। यह लड़की मेरे गाँव की है। उस दिन पालर में युद्ध हुआ, इस लड़की का विवाह उस पुरुष के साथ होने जा रहा था, जो अब दलीप नगर का राजा है। वह अपने पति के लिए चिंतित रहा

चित्र : देवालय में कुमुद और कुंजर सिंह बातचीत करते हुए

टिप्पणी

करती है, और कोई बात नहीं है।'

आग्रह के स्वर में बोला, 'मैंने दलीप नगर के सिंहासन की रक्षा में प्राणों के अतिरिक्त लगभग सभी कुछ त्यागा है। आशीर्वाद दिया जाए कि इन चरणों की रक्षा में उनका भी उत्सर्ग कर दूँ।'

किसी अन्य को दूसरे समय दिए गए वरदान का स्मरण करके कुमुद ने कहा, 'आपको ऐसी कोई चिंता न करनी चाहिए।' कुमुद ने विश्वासपूर्ण स्वर में बात कही, परंतु उसमें किसी तरह की अवहेलना न थी।

कुंजर सिंह द्वारा कुमुद के समक्ष संकट की स्थिति का बयान तथा परोक्ष रूप से अपने मनोभवों का प्रकटीकरण।

कुंजर सिंह ने हाथ जोड़ कर कहा, 'आशीर्वाद दीजिए कि इन चरणों के लिए ही जीवन धारण करूँ।'

कुमुद के मुख पर लालिमा छा गई। नेत्रों में निस्संकोचता का वह भाव न रहा। एक ओर आँखें करके बोली, 'आपकी बात मुझे विचित्र-सी जान पड़ती है। किसी तरह के कष्ट की कोई आशंका मुझे नहीं है। यदि कोई होगी, तो मैं आपको विश्वास दिलाती हूँ कि रक्षा का उचित उपाय किया जाएगा।'

उत्तर की प्रतीक्षा किए बिना ही कुमुद वहाँ से चली गई। जब तक वह रसोईघर में नहीं पहुँच गई, कुंजर सिंह सोने को लजाने वाले उसके पैरों को देखता रहा। उसे ऐसा जान पड़ा, जैसे उसकी नाड़ी में बिजली कौंध गई हो। जब वहाँ से चला, तब उसकी आँखों में तारे-से छिटक रहे थे। उस समय उसने यह नहीं देखा कि दालान में रामदयाल अपने स्थान पर न था।

खंड-चालीस

रानियों के विद्रोह से विचलित हो कर देवी सिंह का जनार्दन के साथ उनके दमन हेतु मंत्रणा करना।

रानियों के विद्रोह का पता राजा देवी सिंह को शीघ्र लग गया। जनार्दन को बहुत खेद और क्षोभ हुआ। खोज लगाने पर उसे मालूम हो गया कि रानियाँ रामनगर की गढ़ी में पहुँच गई हैं। रामनगर का पतराखन दलीप नगर का जागीरदार न था और अपेक्षाकृत भांडेर के अधिक निकट होने के कारण उसके ऊपर कुछ ज़ोर नहीं चल सकता था। एक निश्चय करके जनार्दन राजा के पास गया।

राजा ने कहा, 'तुम्हारा कहना न माना, इसलिए यह एक नई समस्या और कष्ट देने खड़ी हो गई।'

जनार्दन बोला, 'अब जैसे बनेगा, वैसे इस समस्या को भी देखना है। एक उपाय सोचा है।'

'वह क्या?' राजा ने सतर्क होकर पूछा।

मंत्री ने उत्तर दिया, 'मैं एक विश्वस्त दूत दिल्ली को रवाना करता हूँ। वह सैयदों की चिट्ठी कालपी के नवाब के नाम लाएगा।'

राजा बोले, 'उस चिट्ठी का असर एक वर्ष पीछे दिखलाई पड़ेगा। कौन पूछता है, अँधेरे गड्ढे में कि उस चिट्ठी का क्या होना चाहिए।'

'वह ऐसी चिट्ठी न होगी।' जनार्दन ने कहा, 'कालपी के नवाब की सेना के लिए उस चिट्ठी का काफ़ी महत्त्व होगा अर्थात् नवाब अलीमर्दान को दिल्ली से बुलावा आवेगा।'

'दूत कौन है आपका?' राजा ने पूछा।

'हकीमजी।' मंत्री ने उत्तर दिया, 'वह स्वयं सैयद हैं और राजनीति में भी निपुण हैं।'

'और वह हमारे राज्य से कुछ विरक्त-से भी रहते हैं।' राजा ने कहा।

'नहीं महाराज।' जनार्दन बोला, 'आपके उदार और विश्वासपूर्ण बरताव के कारण वह बहुत संतुष्ट हैं। मुझसे भी मित्रता का कुछ नाता मानते हैं। उनके बाल-बच्चे यहीं हैं और वह कृतज्ञ-हृदय पुरुष हैं। दलीप नगर दिल्ली के मुगल सम्राटों का सहायक रहता चला आया है। हकीमजी की बात मानी जाएगी और अलीमर्दान को अपना हठ छोड़ना पड़ेगा। वह इधर-उधर कहीं थोड़े दिन के लिए चला जाए, फिर रानियों के विद्रोह का दमन बहुत सहज हो जाएगा।'

राजा ने कहा, 'मुठभेड़ टल जाए, तो अच्छा है। नहीं तो हमें एक ज़ोर का हमला कालपी के नवाब पर भांडेर में शायद करना पड़ेगा। विलंब होने से रानियाँ बाहर कुछ सरदारों को अपनी ओर कर लेंगी और हमारे यहाँ के भी कुछ मनमुटाव रखने वाले जागीरदार उभड़ पडेंगे।'

'उधर कुंजर सिंह भी अभी बने हुए हैं।' जनार्दन बोला, 'वैसे उनकी ओर से बहुत कम खटका है। किसी बात पर बहुत दिन जमे रहना उनके स्वभाव में नहीं है। आजकल वह विराटा की ओर हैं। यदि उन्होंने अलीमर्दान के साथ संधि कर ली, तब अवश्य अवस्था कुछ कष्टसाध्य हो जाएगी। उनका छोटी रानी के साथ मेल शायद हो जाए, परंतु अलीमर्दान के साथ न होगा। मैंने उनकी गति की परख के लिए जासूस छोड़ रखे हैं। ठीक बात मालूम होने पर निवेदन करूँगा। तब तक मैं हकीमजी को दिल्ली भेज कर अलीमर्दान का प्रबंध करता हूँ।'

जनार्दन के इस निर्णय के अनुसार हकीम को दिल्ली भेजा गया।

खंड-इकतालीस

भांडेर का पुराना नाम लोग भद्रावती बतलाते हैं। यह पहूज नदी के पश्चिमी किनारे पर बसा हुआ है। खंडहरों पर खंडहर हो गए हैं। किसी समय बड़ा भारी नगर रहा होगा। अब मसजिदों और सोन तलैया के मंदिर के सिवा और खास इमारत नहीं बची है। पहूज के पूर्वी किनारे पर जंगल से दबा और भरकों से कटा हुआ एक विशाल प्राचीन नगर है। नदी के दोनों ओर भरकों, मैदानों, टीलों, और पहाड़ियों के विशृंखल क्रम हैं। पहूज छोटी-सी, परंतु पानी वाली नदी है और बड़ी सुहावनी है। भांडेर से दो-ढाई कोस दक्षिण-पूर्व की ओर जहाँ से कुछ अंतर पर लहराती हुई पहूज नदी उत्तर-पश्चिम की ओर आई है, सालोन भरौली की पहाड़ियाँ हैं। इनके बीच में पत्थर का एक विशाल तथा बहुत प्राचीन मंदिर है। मंदिर में महादेवजी की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यहाँ से विराटा पश्चिम की ओर करीब छह कोस है। यहीं अलीमर्दान अपनी सेना के लिए पड़ा था।

एक दिन रामदयाल अँधेरे में अलीमर्दान की छावनी में आया। ज़रा दिक्कत के बाद अलीमर्दान के डेरे पर पहुँचा। काले खाँ उसके पास मौजूद था।

रामदयाल को अलीमर्दान ने पहचान लिया। पूछा, 'तुम यहाँ कैसे आ गए? सुना था, कैद में हो।'

'कैद में अवश्य था, परंतु छूटकर आ गया हूँ। महारानी भी कैद कर ली गई थीं, परंतु वह भी स्वतंत्र हो गई हैं।'

शब्दार्थः

विशृंखल – क्रमहीन, बिखरे हुए

'अब वह कहाँ हैं?'

'रामनगर में राव पतराखन की गढ़ी में।'

अलीमर्दान ने आश्चर्य प्रकट किया, 'उन जैसी वीर स्त्री शायद ही कहीं हो। कैसी जवाँमर्द और दिलेर हैं! मुझे उनके राखीबंद भाई होने का अभिमान है।'

रामदयाल बोला, 'प्रण निभाने का ठीक समय आ गया है। दलीप नगर पर चढ़ाई करने के लिए प्रार्थना करने को यहाँ भेजा गया हूँ।'

अलीमर्दान ने कहा, 'मैं दिल्ली के समाचारों के लिए ठहरा हुआ हूँ। इस लड़ाई में उलझ जाने के बाद यदि दिल्ली का ऐसा समाचार मिला, जिससे दूसरी जगह जाने का निश्चय करना पड़ा तो बुरा होगा।'

'परंतु,' रामदयाल ने विनती की, 'आप हम लोगों को मझधार में नहीं छोड़ सकते। महारानी आपके भरोसे कैदे से स्वतंत्र हुई हैं। बड़ी रानी ने भी अबकी बार उनका साथ दिया है।'

'अब तो राज्य के कुछ अधिक सरदार उनके साथ होंगे।' अलीमर्दान ने सम्मति प्रकट की 'सरदार महारानी के साथ हैं या उन्होंने साथ देने का वचन दिया है?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'वचन दिया है। अवसर आते ही रण-स्थल पहुँच जाएँगे।'

'कुंजर सिंह कहाँ है?'

'उनके विषय में भी निवेदन करने के लिए आया हूँ।'

एक बार काले खाँ और फिर अलीमर्दान की ओर देख कर रामदयाल बोला, 'मैं आपको अच्छी तरह जानता हूँ आप कुंजर सिंह से भली भाँति परिचित हैं। वह इस समय विराटा की गढ़ी में हैं। राजा देवी सिंह से शायद अकेले ही लड़ने की चिंता कर रहे हैं।'

अलीमर्दान ने कहा, 'विराटा का सबदल सिंह क्या कुंजर सिंह का तरफ़दार है?'

'नहीं सरकार, उन्होंने कोई वचन नहीं दिया है।' विराटा के राजा को अभी पता भी नहीं कि कुंजर सिंह गढ़ी में हैं।'

'यह कैसे?' अलीमर्दान ने अचंभा किया।

रामदयाल बोला, 'गढ़ी में देवी का मंदिर है। पालर की वही पुजारिन लड़की उस मंदिर में छुपी हुई है और वहीं पर कुंजर सिंह हैं।'

'ऐं!' काले खाँ ने कहा।

'हैं!' अलीमर्दान को ताज्जुब हुआ।

'हाँ सरकार।' रामदयाल बोला, 'मैं अपनी आँखों से देख आया हूँ।'

अलीमर्दान ने कुछ सोच कर कहा, 'मैं कुछ दिनों से पता लगा रहा था, परंतु मुझे सफलता नहीं मिली।'

काले खाँ बोला, 'अब तो हुजूर को पक्का पता लग गया। कोई शक नहीं रहा।'

'यह सब ठीक है।' अलीमर्दान ने कहा, 'परंतु मैं मंदिर की पुजारिन के साथ कोई ज़्यादती नहीं करना चाहता।'

काले खाँ ने आग्रह किया, 'मंदिर या मूर्ति के साथ ज़्यादती करने का हुज़ूर ने कभी इरादा जाहिर नहीं किया, परंतु मेरी विनती है कि वह पुजारिन देवी या मंदिर तो है

नहीं।'

'नहीं काले खाँ।' अलीमर्दान ने द ढ़ता के साथ कहा, 'हिंदू लोग उस पर विश्वास करते हैं। वह अवतार हो या न हो, मैं हिंदुओं के जी दुखाने वाले किसी काम को न करूँगा।'

रामदयाल हाथ जोड़ कर बोला, 'दीनबंधु, वह न तो अवतार है और न कुछ और। मैं अपनी आँखों से सब बातें देख आया हूँ। उसका बाप हद दर्जे का लालची है और वह स्वयं कुंजरसिंह के पंजे में शीघ्र आने वाली है।'

'क्या?' अलीमर्दान ने आश्चर्यसूचक प्रश्न किया।

'हुज़ूर को रामदयाल की साख का यकीन करना पड़ेगा।' काले खाँ ने कहा। अलीमर्दान थोड़ी देर तक चुप रहा। सन्नाटा छाया रहा।

रामदयाल ने स्तब्धता भंग की। बोला, 'सरकार मेरे साथ वेश बदल कर चलें तो अपनी आँखों से सब देख लें।'

अलीमर्दान ने काले खाँ की ओर गुप्त रीति से देखा। एक क्षण बाद बोला, 'मुझे महारानी साहब से बातचीत करने के लिए एक दिन जाना है। वेश बदल कर विराटा भी हो आऊँगा। परंतु मैं चाहता हूँ कि महारानी के पास का जाना अभी किसी को मालूम न हो। मैं काले खाँ को भी साथ ले चलूँगा।'

रामदयाल द्वारा अलीमर्दान को देवी का झूठा अवतार बताकर उसके कुंजर सिंह के हाथों में चली जाने की आशंका प्रकट करना।

खंड-बयालीस

कुंजर सिंह को दलीप नगर का मुकुट प्राप्त करने की पूरी आशा थी। देवी सिंह बिना अधिकार के सत्ता धारण किए हुए है, इसलिए जी में कड़ी ठेस-सी लगी रहती थी। इसके सिवा देवी सिंह से पराजय का जब वह कारण ढूँढ़ता था, तब उसका मन यही उत्तर देता था कि यदि रानी ने गड़बड़ न की होती तो पराजय न होती।

कुंजर सिंह के पास न सेना थी, न सरदार थे और न था उसके पास धन, परंतु उसके पास निराशाओं की आशा थी। देवी सिंह और जनार्दन के प्रति हृदय में थी कुढ़न और रक्त में शूरता, जो असंभव की प्राप्ति के लिए भी उद्योग करने की कभी-कभी प्रेरणा देती थी।

कुंजर सिंह द्वारा अपने अन्य साथियों की तलाश में विराटा से प्रस्थान।

उसने विराटा का पड़ोस स्वच्छंद गढ़पतियों को एकत्र करने के लिए ढूँढ़ा था। परंतु विराटा में आने पर उसने अपने मन को टटोला तो देखा कि वहाँ अब अपने प्रयोजन पर आरूढ़ करने वाली वह लगन नहीं है जो पहले कभी थी। रामदयाल के चले जाने पर उसे कुमुद से फिर एक बार बातचीत करने की अभिलाषा हुई। कोई विशेष विषय न था, कोई अर्थमूलक प्रश्न भी न था, परंतु बातचीत करने की लालसा प्रबल थी। कुमुद नहीं मिली। प्रयत्न करने पर भी वह उससे न मिल पाया।

तब कुंजर अपने दूसरे ध्येय की प्राप्ति या खोज में विराटा से निकल पड़ा मुसावली से अपना घोड़ा ले कर और शीघ्र लौटने का वचन दे कर वह अपने मित्रों की टोह में चल दिया।

उधर रामदयाल अलीमर्दान और कालेखाँ को छद्मवेष में विराटा लिवा लाया। पर वहाँ से अलीमर्दान को शीघ्र जाना पड़ा। जीवन में पहले कभी उसने हिंदुओं के रीति-रिवाज का अभ्यास न किया था, इसलिए बदली हुई वेश-भूषा का निर्वाह करना

शब्दार्थ :

साख – प्रतिष्ठा, मर्यादा

स्तब्धता – चुप्पी

उसे लगभग असंभव प्रतीत हुआ। अलीमर्दान इसलिए इच्छा न होते हुए भी शीघ्र लौटा और रामदयाल के साथ रामनगर चला गया।

राव पतराखन ने गढ़ी में प्रवेश के पश्चात् उन दोनों के विषय में रामदयाल से पूछा। उसने उत्तर दिया, 'महारानी के सरदार हैं। वेश बदले हुए हैं। कुछ सलाह करके अभी भांडेर की ओर कालपी के नवाब से बात करने के लिए लौट जाएँगे। मैं नवाब साहब के पास हो आया हूँ। सहायता का वचन पक्का हो गया है।'

रामदयाल रानियों के पास चला गया। वह अलीमर्दान और काले खाँ को पहले ही एक ओर बिठा आया था।

छोटी रानी से बोला, 'नवाब साहब आए हैं।'

छोटी रानी ने पूछा, 'सेना ले कर या अकेले ही?'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'अपने सेनापति के साथ, अकेले आए हैं। आपका आशीर्वाद ले कर इसी समय भांडेर चले जाएँगे।'

छोटी रानी ने कहा, 'विराटा के राजा से बातचीत हुई या नहीं?'

'अवसर नहीं मिला, महाराज।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'नवाब साहब को भांडेर लौटने की जल्दी पड़ रही है। यदि विराटा का राजा हमारा साथ देने से नाहीं भी करेगा, तो इसमें हमारी कुछ हानि नहीं हो सकती। अपना बल बहुत अधिक है। नवाब की पूरी सेना देखकर चकित हो गया हूँ।'

छोटी रानी ने कहा, 'नवाब को बुला ला। जल्दी बातचीत करके लौट जाएँ और तुरंत कार्यक्रम का निर्णय करके दलीप नगर से उस डाकू को भगा दें।'

रामदयाल परदे का प्रबंध करके अलीमर्दान और काले खाँ को लिवा लाया। दोनों रानियों ने ओट से उन दोनों को देखा।

रामदयाल के मार्फत बातचीत होने लगी।

अलीमर्दान का छोटी रानी के साथ मिलकर दलीप नगर सिंहगढ़ पर आक्रमण की योजना बनाना।

छोटी रानी, 'अब क्या किया जाए? आप ही के भरोसे इतनी हिम्मत करके और कष्ट उठा कर दलीप नगर छोड़ा।'

अलीमर्दान, 'मैं तुरंत हमला करने के लिए तैयार हूँ। दिल्ली से एक संदेशा आने वाला है। उसी की बाट देख रहा हूँ। केवल आठ-दस दिन का विलंब है। तब तक आप अपने सरदार भी इकट्ठे कर लें।'

'यह हो रहा है। विराटा का राजा किस ओर रहेगा?'

'वह यदि आपके पक्ष में न होगा, तो मैंने उसे चकनाचूर करने की ठान ली है।'

'आप पहले दलीप नगर या सिंहगढ़ पर आक्रमण करेंगे?'

'दोनों ठिकानों पर एक साथ धावा बोला जाएगा। आप क्या पसंद

चित्र : छोटी रानी की पर्दे के पीछे से रामदयाल और अलीमर्दान से आक्रमण की योजना पर चर्चा

करती हैं?'

मैं स्वयं दलीप नगर पर चढ़ाई करूँगी। आप हमारी सेना के साथ रहें। अपने सेनापति को सिंहगढ़ की ओर भेजें।'

'यही मैंने सोचा है। यदि कार्य-विधि में कोई तबदीली हुई, तो आपको मालूम हो जाएगा।'

'अब की बार तोपों की संख्या बढ़ा दी गई या नहीं?'

'पहले से कहीं अधिक, कई गुनी।'

'और सैनिक?'

'सैनिक भी बढ़ा दिए गए हैं।'

बड़ी रानी ने धीरे से छोटी रानी के कान में कहा, 'बदले में नवाब क्या लेंगे?'

'कुछ नहीं।' छोटी रानी ने कान ही में उत्तर दिया, 'वह मेरे राखीबंद भाई हैं।'

बड़ी रानी ने कहा, 'पहले तय कर लेना चाहिए। पीछे पैर फैलावेंगे, तो बहुत गड़बड़ होगी।'

'क्या गड़बड़ होगी?' छोटी रानी ने पूछा।

बड़ी रानी ने उत्तर दिया, 'दलीप नगर को अपने अधिकार में कर लेंगे।'

'कर लें।' छोटी रानी ने तीव्रता के साथ, परंतु बहुत धीरे से कहा, 'देवीसिंह डाकू से तो दलीप नगर का छुटकारा हो जाएगा। चाहे प्रलय हो जाए, परंतु देवी सिंह को दलीप नगर से निकालना और जनार्दन को प्राणदंड देना है।'

खंड-तैंतालीस

काले खाँ द्वारा विराटा के राजा सबदल सिंह के साथ वार्तालाप तथा सबदल सिंह का अलीमर्दान की सहायता का आश्वासन।

रामनगर से लौट कर एक दिन काले खाँ विराटा में सबदल सिंह के पास आया। राजा ने उसका आगत-स्वागत किया। जितनी देर वह ठहरा, राजा देवी सिंह के विरुद्ध बातें करता रहा, परंतु जाते समय तक अपने आने का तात्पर्य नहीं बताया। सबदल सिंह ने सोचा कि युद्धों का समय है, कुंजर सिंह की सहायता का वचन नहीं तो भरोसा दे ही दिया है, नवाब भी शायद उसका पक्षपाती हो, कालपी के साथ विराटा का करीब-करीब मातहती का संबंध था, इसलिए स्पष्ट कथन की जरूरत सबदल सिंह ने नहीं समझी। काले खाँ से, जाने के पहले, वह बोला, 'हमारे पास आदमी रामनगर के रावसाहब से अधिक नहीं हैं, परंतु हृदय हमारा वैसा लोभी नहीं है। नवाब साहब के लिए हम लोग अपना सिर देने के लिए तैयार हैं।'

'यह तो उम्मीद ही है।' काले खाँ ने कहा, 'जिस समय जरूरत पड़ेगी, आपसे देवी सिंह को ललकारने के लिए कहा जाएगा।'

सबदल सिंह ने नम्र हो कर पूछा, 'मेरे लायक और कुछ आज्ञा हो, कहिए।'

काले खाँ ने एक-एक शब्द तौल कर कहा, 'आपके यहाँ देवीजी के मंदिर में पालर से एक लड़की भाग कर आई है....।'

काले खाँ रुक गया। सबदल सिंह ने भयभीत हो कर प्रश्न किया, 'क्या उस बेचारी से कोई अपराध हो गया है? देखने में तो बड़ी भोली-भाली दीन कन्या है।'

काले खाँ ने नम्रता का आवरण दूर फेंक कर कहा, 'उसके सौभाग्य में रानी बनना

टिप्पणी

काले खाँ द्वारा सबदल सिंह के समक्ष कुमुद के साथ अलीमर्दान के विवाह का प्रस्ताव रखना।

लिखा है, नवाब साहब को उसके सौंदर्य के मारे खाना-पीना हराम है।'

सबदल सिंह का कलेजा धुक-धुक् करने लगा। कोई शब्द मुँह से न निकला।

काले खाँ ने उसी स्वर में कहा, 'आपके लिए कोई संकट की समस्या नहीं है। आपके धर्म पर कोई हस्तक्षेप नहीं किया जा रहा है। नवाब साहब आप लोगों के मूर्ति-पूजन और लाखों देवी-देवताओं के पूजन में कभी खलल नहीं डालते। वह लड़की आपके गाँव की भी नहीं है। आपको कुछ करना नहीं होगा। हम सब ठीक-ठाक कर लेंगे। यह हम कुरान शरीफ की कसम पर आपको यकीन दिलाते हैं कि आपके मंदिर या देवता का किसी तरह का अपमान न किया जाएगा और वह लड़की नवाब साहब के महल में रहते हुए भी शौक से अपनी पूजा-पत्री करती रह सकती है।'

सबदल सिंह बोला, 'मैं इसमें अपने लिए बड़ी भारी आफ़त देख रहा हूँ। उस लड़की को लोग देवी का अवतार मानते हैं। और वह मेरी जाति की है। क्या करूँ, कुछ समझ में नहीं आता।'

काले खाँ ने कहा, 'आपको कुछ करने की ज़रूरत नहीं। आप चुपचाप अपने घर में बैठे रहिए। हम दोनों आदमी यानि मैं और नवाब साहब उसे एक दिन चुपके से आकर लिवा जाएँगे। वह हँसती-खेलती यहाँ से चली जाएगी। ऐसा हो जाने देने में आपका फायदा है। लड़ाई में आपको आदमी या रुपया-पैसा न देना पड़ेगा और मौका आने पर आपके पुराने दुश्मन रामनगर के राव को नष्ट करके वह गढ़ी भी आपको दिला दी जाएगी।'

सबदल सिंह ने कहा, 'हमें थोड़ा-सा समय दीजिए। भाई-बंदों से बात करके बहुत शीघ्र कहला भेजूँगा।'

'यदि उस लड़की को आपने कहीं छिपा दिया या भाग जाने दिया तो अंत में जो कुछ होगा उसका दोष मेरे मत्थे न दीजिएगा।'

काले खाँ यह धमकी दे कर चला गया। सबदल सिंह बहुत खिन्नमन हो कर एक कोने में बैठ कर सोच-विचार में डूबता-उतराता रहा।

उसने उसी दिन लोगों के साथ बातचीत की। नरपति सिंह बहुत उत्तेजित और भयभीत था। आशा, विश्वास और सौगंध दिला कर उसे कुछ शांत किया। परंतु इन दाँगियों के निश्चय का किसी को पता न लगा। केवल यह देखा गया कि गढ़ी की मरम्मत शीघ्रता के साथ हो रही है और तोपें मौके के स्थानों पर लगाई जा रही हैं।

खंड-चवालीस

जनार्दन के प्रयत्न से हकीम आगा हैदर को दिल्ली की दूरी बहुत कम अखरी। वह खुशी-खुशी जल्दी लौट भी आया। उसे अपनी सफलता पर गर्व था। उसने जनार्दन को दिल्ली के प्रधानमंत्री की चिट्‌ठी दी जिस में लिखा था कि आप और कालपी का नवाब अलीमर्दान बादशाह की दो आँखें हैं। किसी को भी कष्ट होने से उन्हें दुख होगा; अलबत्ता इस समय नवाब अलीमर्दान की दिल्ली में बहुत जरूरत है, इसलिए वह फौरन दिल्ली बुलाए जाने वाले हैं।

जनार्दन ने बड़े हर्ष के साथ यह चिट्‌ठी राजा देवी सिंह को सुनवाई। पर उन्हें कोई हर्ष नहीं हुआ। बोले, 'यह सब पाखंड मुझे धोखे में नहीं डाल सकता। पहले मारे सो ठाकुर, पीछे मारे सो फिसड्डी, मैं तो यह जानता हूँ। बहुत होगा, तो दिल्ली वाले अपने नवाब

शब्दार्थ :
खलल – बाधा
यकीन – विश्वास

की मदद कर देंगे, बस। परंतु मैं बुंदेलखंड में वह आग सुलगाऊँगा, जो चंपत महाराज ने भी न सुलगाई होगी और फिर बहुत गिरती हालत में मराठों को तो बुलाया ही जा सकता है।'

'मैं नाहक युद्‌ध करने के पक्ष में नही हूँ।' जनार्दन बोला, 'मराठे सेंत-मेंत सहायता किसी की नहीं करते। उन्हें बुलाइएगा तो वे यहाँ से कुछ-न-कुछ ले कर ही जाएँगे।'

'पंडितजी।' देवी सिंह ने उत्तेजित हो कर कहा, 'मराठे अगर कुछ लेंगे, तो मैं उन्हें दे दूँगा, परंतु जीते-जी नवाबों और सूबेदारों को सिर नहीं झुकाऊँगा। क्या भूल गए कि अलीमर्दान विराटा के मंदिर को नष्ट करने वाला है?'

'नहीं महराज, मैं नहीं भूला हूँ।' जनार्दन बोला, 'परंतु मेरा एक निवेदन है।'

'कहिए।' राजा ने कहा।

जनार्दन बोला, 'थोड़े दिन युद्‌ध स्थगित रखिए। यदि नवाब दिल्ली चला गया, तो ठीक है और यदि न गया, तो रणभेरी बजवा दीजिए।'

राजा बोले, 'मैं ठहरा हूँ; युद्‌ध न करूँगा, परंतु तैयारी में कोई कसर नहीं लगाऊँगा। मेरी इच्छा है कि बैरी के घर धावा करूँ। उसे यहाँ आने देना और पीछे सँभाल करना बुरी नीति होगी। मैं लोचन सिंह दाऊजू को सिंहगढ़ से बुला कर ऐसे स्थान पर भेजना चाहता हूँ, जहाँ से बैरी के घर में घुस कर छापा डाल सकें।'

जनार्दन ने प्रतिवाद नहीं किया। केवल यह कहा, 'सिंहगढ़ बहुत महत्त्वपूर्ण स्थान है, वहाँ किसे भेजिएगा?'

और सरदार हैं, जो अपना जौहर दिखलाने की आकांक्षा रखते हैं।' राजा बोला, 'अब की बार आपकी रण-कुशलता की परीक्षा ली जाएगी।'

जनार्दन ने सच्चे हर्ष के साथ कहा, 'मैं लड़ना तो नहीं जानता, परंतु लड़ाई से भागना भी नहीं जानता।'

राजा बोला, 'आप दलीप नगर को अपने किसी विश्वसनीय सेवक या मित्र की निगरानी में छोड़ देना। अब की बार हम लोग अपने समग्र बल से इस धर्मद्रोही को ठीक कर दें।'

कृतज्ञतासूचक स्वर में जनार्दन बोला, 'मेरा शरीर यदि अन्नदाता की सेवा में काम आए, तो इससे बढ़ कर और किसी बात में मुझे सुख नहीं होगा। यदि आज्ञा हो, तो मैं स्वयं विराटा की वास्तविक स्थिति की खोज कर आऊँ? जासूस लोग बात का बिल्कुल ठीक-ठाक पता नहीं लगा पा रहे हैं।'

खंड-पैंतालीस

जिस दिन से काले खाँ विराटा से गया, वहाँ के वातावरण में सन्नाटा-सा छा गया। एक भ्रांति-सी फैली हुई थी, जिसके विषय में खुल कर चर्चा करने में भी लोगों का मन नहीं जमता था। आने वाले संकट का साफ रूप बहुत कम लोगों की समझ में आ रहा था, परंतु यह स्पष्ट था कि विराटा निरापद स्थान नहीं है। खतरे के समय विराटा-निवासियों का ग्राम त्याग कर उस पार जंगल और भरकों में महीनों छिपे रहना कोई असाधारण स्थिति न थी। परंतु इस समय तक विपद के ठीक-ठीक रूप की कल्पना का आभास न मिला था, इसलिए घबराहट थी।

टिप्पणी

विराटा पर अलीमर्दान के आक्रमण की आशंका से चिंतित विराटावासी

नरपति को उसका यथासंभव यथावत् रूप बतलाया गया था। उसे देवी का भरोसा था, परंतु वह बाहर के भी किसी आश्रय के लिए उद्योग करने की जी में ठान चुका था। कुमुद से उसने कहा, 'दुर्गा ने ही पालर की रक्षा की थी। यहाँ पर भी वह रक्षा करेंगी। मैं एक दिन के लिए दलीप नगर जाऊँगा।' कुमुद से और कुछ न कह कर वह मूर्ति के सामने प्रार्थना करने लगा।

स्पष्ट तौर पर बतलाए बिना भी कुमुद ने बात समझ ली।

गोमती ने मंदिर के अन्य आने-जाने वालों से, जो विराटा में रहते थे, पूछा।

एक बोला, 'राजा देवी सिंह यहाँ आ कर युद्ध करने वाले हैं, उधर अलीमर्दान की तोपें हमारी गढ़ी पर गोले बरसाएँगी।'

सबदल सिंह ने अपने चुने हुए भाई-बंदों को छोड़ कर ठीक बात किसी को नहीं बताई थी। इस कारण गोलमाल फैला हुआ था। इस विषय को ले कर गोमती और कुमुद में बातचीत होने लगी। कुमुद ने कहा, 'विपद् में धीरज रखना चाहिए। दुर्गाजी का भरोसा सबसे बड़ा बल है। दूसरे आश्रय छूँछे हैं।'

गोमती ने पूछा, 'अलमर्दान यहीं से क्यों युद्ध करेगा?'

'उसकी मति फिर गई है, वह बावला है। वह मंदिर के ऊपर उत्पात करना चाहता है।'

'तभी दलीप नगर के महाराज यहीं आ कर युद्ध करना चाहते हैं।'

'तुम्हें कैसे मालूम?'

'मैंने एक गाँव वाले से सुना है।'

'यह गलत है।'

'मेरी प्रार्थना स्वीकार कीजिए, ठीक बात क्या है, मैं जानना चाहती हूँ। जो कुछ मुझसे बनेगा, मैं भी करूँगी।'

कुमुद ने आकाश की ओर नेत्र करके उत्तर दिया, 'एक बादल उठने वाला है। मंदिर के ऊपर उत्पल वर्षा होगी।'

इतने में नरपति प्रार्थना करके उन के पास आ पहुँचा। बोला, 'इस समय देवी के भक्तों से सबसे अधिक प्रबल राजा देवी सिंह जान पड़ते हैं। उन्हें दुर्गा का आदेश सुनाने के लिए जा रहा हूँ। अब की बार उन्हें सर्वस्व का बलिदान करके दुष्टों का दमन करना होगा।'

'यह आपसे किसने कहा कि आप राजा देवी सिंह के पास इस याचना के लिए जाएँ?' कुमुद ने सिर ऊँचा करके प्रश्न किया।

नरपति सिंह के उत्तर देने से पूर्व ही गोमती बोली, 'न तो इसमें किसी से कहने-सुनने की कोई बात है और न यह याचना है। यह दुर्गा की आज्ञा है।'

'नहीं है।' कुमुद ने गंभीर हो कर कहा, 'देवी की यह आज्ञा नहीं है। देवी सिंह इसके अधिकारी नहीं हैं। वह यदि रक्षा करने आएगा, तो निश्चय जानो हानि होगी, लाभ न होगा।'

गोमती द ढ़ता के साथ बोली, 'इसमें देवी का अनिष्ट नहीं हो सकता। राजा का अमंगल हो, तो हो। परंतु क्षत्रिय को अपने कर्त्तव्यपालन में मंगल-अमंगल का विचार नहीं करना

पड़ता। उसे प्रयत्न करने-भर से सरोकार है। आप काकाजू, राजा के पास अवश्य जाएँ, उन्हें लिवा लाएँ और उनसे कहें कि. . . .'

यहाँ गोमती अपने आवेश के द्रुतवेग के कारण स्वयं रुक गई। कुमुद की क्षणिक उत्तेजना शांत हो गई थी। बहुत मीठे स्वर में बोली, 'गोमती, तुम्हें व्यर्थ ही कष्ट झेलना पड़ रहा है। मैं नवाब की आँखों में मार डालने योग्य भले ही समझी जाऊँ, क्योंकि दुर्गा की पूजा करती हूँ, परंतु तुमने किसी का क्या बिगाड़ा है? तुम क्यों यहाँ वन के क्लेशों को नाहक भुगत रही हो? मेरी एक सम्मति है।'

'क्या आदेश है?' गोमती ने भोलेपन के साथ परंतु काँपते हुए स्वर में पूछा।

'तुम दलीप नगर के राजा के पास चली जाओ।'

'क्यों?' क्षीण स्वर में गोमती ने प्रश्न किया।

कुमुद ने उत्तर दिया, 'तुम रानी हो। वह राजा हैं। तुम्हारे हाथ में उस रात का कंकण अब भी बँधा है। भाँवर पड़ना-भर रह गया था। वह दलीप नगर में हो जाएगा। मुझे ऐसा जान पड़ता है कि अगामी युद्ध, जो राजा और नवाब के बीच यहाँ होने वाला है, कुशलपूर्वक समाप्त होगा। इसलिए मैं चाहती हूँ कि गोमती, तुम दलीप नगर चली जाओ। देवी सर्वव्यापिनी है। हम लोग किसी जंगल में भजन करेंगे।'

खंड-छियालीस

कुमुद की इच्छा न थी कि नरपति दलीप नगर के राजा को आमंत्रित करने जाए, परंतु वह उसे द ढ़ता और स्पष्टता के साथ न रोक सकी। भीतरी इच्छा के इस तरह अवरुद्ध रह जाने के कारण उसका मन चंचल हो उठा। किसी से बातचीत करने की इच्छा न हुई। मन में आया कि इस स्थान को छोड़ कर कहीं दूर चली जाए। यह असंभव था। वह उस स्थान को छोड़ कर अपनी कोठरी में चली गई। और भीतर से किवाड़ बंद कर लिए। गोमती ने समझ लिया कि उसके लिए भीतर जाने के विषय में निमंत्रण नहीं है।

गोमती अकेली मंदिर की ड्योढ़ी में बैठ गई। दलीप नगर और उसके राजा से घनिष्ठ संबंध रखने वाली घटनाओं की कल्पनाएँ मन में उठने लगीं। उन सब कल्पनाओं के ऊपर रह-रह कर उठने वाली अभिलाषा यह थी कि नरपति राजा से यह न कहें कि गोमती विराटा के बीहड़ में अकेली पड़ी है, उसे लिवा लाओ। इसी समय रामदयाल मंदिर में आया।

उसे देख कर गोमती को हर्ष हुआ।

बोली, 'नरपति काका महाराज के पास दलीप नगर अभी-अभी गए हैं। कालपी का नवाब इस नगर और मंदिर को विध्वंस करना चाहता है। उसके दमन के लिए रण-निमंत्रण देने के लिए वह गए हैं। तुम्हें महाराज कब से नहीं मिले?'

'मुझे तो हाल ही में दर्शन हुए थे।'

'कुछ कहते थे?'

'बहुत कुछ। यहाँ कोई पास में नहीं है?'

'बाहर चट्टान पर चलो। वहाँ बिलकुल एकांत हैं।'

दोनों मंदिर के बाहर एक चट्टान पर चले गए। एक बड़े ढोंके पर गोमती बैठ गई।

शब्दार्थ:
बावला – उन्मादी
उत्पल – ओला, पत्थर
बीहड़ – ऊबड़–खाबड़, बियाबान भूखंड
विध्वंस – विनाश
दमन – कठोरता पूर्वक दबाना

टिप्पणी

पेड़ की छाया थी। वहाँ रामदयाल खड़े-खड़े बातचीत करने लगा। बोला 'रण की बड़ी भयंकर तैयारी हो रही है। नवाब और उसके मित्रों से वह लोहा बजेगा, जैसा बहुत दिनों से न बजा होगा। विराटा बहुत शीघ्र बड़ी प्रचंड आँधी में पड़ने वाला है और कारण बड़ा साधारण-सा है।'

'साधारण-सा?' गोमती ने आश्चर्य प्रकट किया, 'तुम्हारा क्या अभिप्राय है?'

रामदयाल आवाज को धीमा करके बोला, 'अलीमर्दान मंदिर विध्वंस नहीं करना चाहता, कुंजर सिंह की सहायता करना चाहता है और महाराज यहीं आकर कुंजर सिंह को धर दबाना चाहते हैं।'

'कुंजर सिंह की सहायता? यदि ऐसा है, तो मंदिर को अपवित्र करने का संकल्प उसने क्यों किया है?'

'मैंने दलीप नगर में बड़े विश्वस्त सूत्र से सुना है कि वह कुमुद के विषय में कुछ विशेष दुष्प्रव त्ति रखता है। और उसे कुछ प्रयोजन नहीं। यदि वह मंदिर-भंजक होता, तो पालर का मंदिर कदापि न छोड़ता।'

'यह काम कम निंदनीय है? मैं तो कुमुद की रक्षा के लिए तलवार हाथ में ले कर अलीमर्दान से लड़ सकती हूँ। क्या महाराज इसे छोटा कारण समझते हैं? क्या वह नहीं जानते कि कुमुद लोकपूज्य है और देवी का अवतार है।'

रामदयाल ने अदम्य द ढ़ता के साथ कहा, 'लोकपूज्य तो वह जान पड़ती है। मैंने भी अपने स्वामी की हित-कामना से उस दिन श्रद्धांजलि चढ़ा दी थी। परंतु इसमें कोई संदेह नहीं कि महाराज उसे देवी का अवतार नहीं मानते। वह उसकी रक्षा एक हिंदू स्त्री के नाते करना चाहते हैं और उनका अभिप्राय कुंजर सिंह को सदा के लिए ठीक कर देना है। वह यहाँ आया करते हैं, ठहरते हैं, आश्रय पाते हैं और न जाने क्या-क्या नहीं होता है! परंतु आपको सब हाल मालूम नहीं है।'

गोमती उत्तर न देते हुए बोली, 'आज जब नरपति काकाजू ने महाराज को यहाँ बुलाने की बात कही, तो उन्होंने विरोध किया। कम-से-कम वह यह नहीं चाहती थीं कि महाराज यहाँ आवें।'

'मेरी एक प्रार्थना है।' रामदयाल ने हाथ जोड़ कर बहुत अनुनय के साथ कहा।

गोमती बोली, 'क्या है, रामदयाल? तुम इतने विह्वल क्यों हो रहे हो?'

रामदयाल ने काँपते हुए स्वर में उत्तर दिया, 'सरकार अब यहाँ न रहें।'

'क्यों?' गोमती ने पूछा।

रामदयाल ने कहा, 'कुंजर सिंह यहाँ आ कर अड्डा बनावेंगे। वह नवाब को न्योता देकर आग बरसावेंगे। महाराज का आना अवश्य होगा। कुंजर सिंह और नवाब से उनकी लड़ाई होगी। आपका यहाँ क्या होगा?'

'परंतु मैं दलीप नगर नहीं जा सकती।'

खंड-सैंतालीस

नरपति सिंह यथासमय दलीप नगर पहुँच गया। विराटा के राजा की चिट्ठी जनार्दन शर्मा के हाथ में रख दी गई। नवाब के पड़ोस में ही दलीप नगर के राजा की सहायता चाहने वाले व्यक्ति के पत्र पर उसे उत्साह मिला। उसने सोचा, यदि सबदल सिंह

शब्दार्थ :

भंजक – तोड़ने वाला

श्रद्धांजलि – श्रद्धांपूर्वक की गयी पूजा

विह्वल – अशान्त व्याकुलता

साधारण सा ही सरदार है, तो भी अपना कुछ नहीं बिगड़ता, लाभ है।

नरपति सिंह से उसने पूछा, 'आपकी बेटी आनंदपूर्वक है?'

उत्तर मिला, 'दुर्गा से सब आनंद-ही-आनंद है। यह जो विघ्न का बादल उठ रहा है, उसे टाल कर आप विराटा को बिल्कुल निरापद कर दें।'

जनार्दन ने कहा, 'सो तो होगा ही, परंतु मैं कहता हूँ कि आप लोग पालर ही में क्यों नहीं आ जाते? पालर ओरछा राज्य में है और हमारे बाहु के पास है।'

'यह समय बड़ा संकटमय है।' नरपति बोला, 'केवल बीहड़ स्थान कुछ सुरक्षित समझा जा सकता है। जब युद्‌ध समाप्त हो जाएगा, तब निस्संदेह हम लोग पालर लौटने के विषय में सोच सकते हैं।'

जनार्दन ने पूछा, 'कुंजर सिंह विराटा कब से नहीं आए?'

'कुंजर सिंह?' नरपति ने आश्चर्य प्रकट किया, 'कुंजर सिंह यहाँ आ कर क्या करेंगे? अन्य लोग आए-गए हैं। कुंजर सिंह को मैंने वहाँ कभी नहीं देखा।'

'और कौन लोग आए-गए हैं?' जनार्दन ने प्रश्न किया।

उसने उत्तर दिया, 'बहुत लोग आए-गए हैं, किस-किसका नाम गिनाऊँ।'

जनार्दन ने कहा, 'उदाहरण के लिए कुंजर सिंह का सेनापति तथा रामदयाल इत्यादि।'

नरपति चौंका, बोला 'आपको कैसे मालूम?'

जनार्दन ने अभिमान के साथ कहा, 'यह मत पूछो। महाराज देवी सिंह आँखें मूँद कर राज्य नहीं करते।'

'यह ठीक है।' नरपति बोला, 'परंतु देवी के मंदिर में किसी के आने की रोक-टोक नहीं है। यदि किसी ने आपको कुछ और बना कर बतलाया है तो झूठ है।'

जनार्दन ने कहा, 'आपकी चिट्‌ठी महाराज की सेवा में थोड़ी देर में पेश कर दी जाएगी। पालर की घटना के कारण ही हम लोग कालपी के नवाब के विरुद्ध हैं और वह विराटा के मंदिर को विध्वंस करने के लिए कुछ प्रयत्न करने वाला है। परंतु हमारे लक्ष्य कुंजर सिंह अधिक हैं। उन्होंने तमाम बखेड़ा खड़ा कर रखा है। रानियाँ भी तो उनका साथ देंगी? आजकल रामनगर में हैं न?'

नरपति को यह बात न मालूम थी। आश्चर्य के साथ बोला, 'यह सब हम क्या जानें।'

जनार्दन ने एक क्षण विचार करके कहा, 'हमारी सेना आप लोगों की सहायता के लिए जाएगी, आप अपने राजा को आश्वासन दे दें। हम महाराज की मुहर-लगी चिट्‌ठी आपको देंगे। कब तक हमारी सेना आपके यहाँ पहुँचेगी, यह कुछ समय पश्चात् मालूम हो जाएगा।'

जनार्दन की इच्छा न थी कि नरपति उसे अपनी पूरी बात सुनाए बिना राजा से मिल ले। परंतु नरपति के हठ के सामने जनार्दन की न चली। राजा से साक्षात्कार हुआ। राजा को आश्चर्य था कि मेरे निज के सुख से संबंध रखने वाली ऐसी कौन-सी कथा कहेगा।

नरपति ने कहा, 'उस दिन पालर में प्रलय हो गया होता, यदि महाराज ने रक्षा न की होती।'

टिप्पणी

जनार्दन की नरपति को धमकी, तथा युद्ध का भय दिखाना।

टिप्पणी

'किस दिन?' राजा ने विशेष रुचि प्रकट न करते हुए पूछा।

नरपति बोला, 'उस दिन, जब पालर की लहरों पर देवी की मौज लहरा रही थी और मुसलमान लोग उन लहरों को छोड़ना चाहते थे।'

राजा ने ज़रा अरुचि के साथ कहा, 'आप जो बात कहना चाहते हों, स्पष्ट कहिए।'

नरपति ने हाथ बाँध कर कहा, 'उस दिन, जिस दिन पालर में बारात आई थी उस दिन, जिस दिन स्वर्गवासी महाराज को देवी की रक्षा के लिए अपनी रोग-शय्या छोड़नी पड़ी थी उस दिन, जब बड़े गाँव से आकर श्रीमान् ने हम सब लोगों को सनाथ किया था।'

नरपति का राजा देवी सिंह से मिलकर गोमती से विवाह का प्रस्ताव

राजा मुस्कराए। बोले, 'मुझे याद है वह दिन। मैं आपकी बस्ती में घायल हो कर मार्ग में अचेत गिर पड़ा था। बहुत समय पश्चात् होश आया था।'

राजा यह कहकर नरपति के मन की बात जानने के लिए उसकी आँखों में अपनी द ष्टि गड़ाने लगे। नरपति उत्साहित होकर बोला, 'यदि महाराज उस दिन घायल न हुए होते, तो उसी दिन एक क्षत्रिय के द्वार के बंदनवारों पर केशर छिटक गई होती और वह क्षत्रिय-कन्या आज दलीप नगर की महारानी हुई होती।'

राजा को याद आ गई। परंतु आश्चर्य प्रकट करके बोले, 'वह तो एक छोटी-सी घटना थी, कुछ ऐसी साधारण-सी रही होगी कि अच्छी तरह याद नहीं आती। बहुत दिन हो गए हैं। तुम्हारा प्रयोजन इन सब बातों के कहने का क्या है, वह स्पष्ट प्रकार से कह क्यों नहीं डालते?'

नरपति ने गोमती के पिता का नाम लेते हुए कहा, 'उनके घर महाराज की बारात आई थी। इस कन्या के हाथ पीले होने में कोई विलंब नहीं दिखलाई पड़ता था। ठीक उस घर के सामने महाराज अचेत हो गए थे। हम लोग औषधोपचार की चिंता में थे और चाहते थे कि स्वस्थ हो जाने पर पाणिग्रहण हो जाए। परंतु सवारी स्वर्गवासी महाराज के साथ दलीप नगर चली गई। उसके उपरांत घटनाओं के संयोग से फिर इस चर्चा का समय ही न आया। वह क्षत्रिय-कन्या इस समय विराटा के दुर्गा के मंदिर में हम लोगों के साथ है। महाराज शीघ्र चल कर उसे महलों में लिवा लाएँ और विवाह की रीति भी पूरी कर लें।'

राजा ने धीमे स्वर में कहा 'आपको किसने भेजा है?'

'विराटा के राजा ने।' नरपति ने नम्रता के भीतर छिपे हुए अभिमान के साथ कहा।

'वाग्दान किसने किया था?' राजा ने पूछा।

नरपति बिना संकोच के बोला, 'यह तो महाराज जानें, परंतु इतना मैं जानता हूँ कि वह महाराज की रानी है। केवल भाँवर की कसर है। यदि उस दिन युद्ध न हुआ होता, तो विवाह को कोई रोक नहीं सकता था और आज वह महलों में होती।'

राजा ने कहा, 'मुझे याद पड़ता है कि एक ठाकुर उस नाम के पालर में रहते थे। उनकी कन्या का संबंध मेरे साथ स्थिर हुआ था, 'परंतु इसका क्या प्रमाण है कि यह वही कन्या है?'

नरपति के सिर से एक बोझ-सा हट गया। प्रमाण प्रस्तुत करने के उत्साह और आग्रह से बोला, 'मैं सौगंध के साथ कह सकता हूँ, मेरे सामने वह उत्पन्न हुई थी। अठारह वर्ष से उसे खाते-खेलते देखा है। ऐसी रूपमती कन्या बहुत कम देखी-सुनी गई है। महाराज

शब्दार्थ :

औषधोपचार-दवा– दारू, चिकित्सा

पाणिग्रहण– विवाह,

वाग्दान – विवाह के लिए वचन देना

ने भी तो विवाह संबंध कुछ देख कर ही किया होगा।'

राजा मानो लाज में डूब गया। परंतु एक क्षण में सँभल कर द ढ़ता के साथ बोला, 'मैं भोग-विलास के पक्ष में नहीं हूँ। यह समय दलीप नगर के लिए बड़ा कठिन जान पड़ता है। इस समय निरंतर युद्ध करने की इच्छा मन में है, उसी में हम सबका त्राण है। जब अवकाश का समय आवेगा, तब इन बातों की ओर ध्यान दूँगा।'

राजा ने अंत में नवाब के खिलाफ विराटा को सहायता देने और सेना ले कर आने का वचन दे कर नरपति को बिदा किया।

खंड-अड़तालीस

नरपति दलीप नगर से लौट आया। विराटा के राजा को उसने यह संतोषजनक समाचार सुनाया कि बहुत शीघ्र राजा देवी सिंह की सेना सहायता के लिए आएगी। परंतु जिस समय नरपति अपने घर-विराटा के द्वीप वाले मंदिर में आया, चेहरे पर उदासी थी।

रामदयाल उस समय वहाँ न था। कुमुद और गोमती थीं।

मंदिर के दालान में बैठ कर नरपति ने कुमुद से कहा, 'मंदिर की रक्षा तो हो जाएगी।'

कुमुद ने लापरवाही के साथ कहा, 'इसमें मुझे कभी संदेह नहीं रहा है। दुर्गा रक्षा करेंगी।'

'राजा देवी सिंह ने भी वचन दिया है।' प्रतिवाद न करते हुए नरपति बोला।

गोमती आँख के एक कोने से देखने लगी। कुमुद ने कहा, 'राजा ने गोमती के विषय में कुछ पूछा था? या राजा होते ही वह भूल गए कि उस दिन पालर में उनकी बारात हुई थी वंदनवार सजाए गए थे, स्त्रियों ने कलश रखे थे, मंडप बनाया गया था और गोमती के शरीर पर तेल चढ़ाया गया था? आपने क्या उन्हें स्मरण दिलाया?'

'मैंने इन सब बातों की याद दिलाई थी।' नरपति ने जवाब दिया, 'परंतु उन्होंने कोई ऐसी बात नहीं की, जिससे मन में उमंग उत्पन्न होती। वह तो सब कुछ भूल-से गए हैं।'

गोमती पसीने में तर हो गई। सिर में चक्कर-सा आने लगा।

'उन्होंने क्या कहा था?' कुमुद ने पूछा।

नरपति ने उत्तर दिया, 'राज-काज की उलझनों में स्मरण नहीं रह सकता। यदि वह आना चाहे और वही हो जिसके साथ पालर में संबंध होने वाला था, तो कोई रोक-टोक न की जाएगी। मैं स्वयं न आ सकूँगा। सेना ले कर जब विराटा की रक्षा के लिए आऊँगा, तब जैसा कुछ उचित समझा जाएगा, करूँगा।'

गोमती चीख उठी। नरपति ने देखा, पसीने में डूब-सी गई और शायद अचेत हो गई है। पंखा ढूँढ़ने के लिए अपनी कोठरी में चला गया।

कुमुद ने गोमती को धीरे से अपनी गोद की ओर खींचा। वह अचेत न थी, परंतु उसके मन और शरीर को भारी कष्ट हो रहा था।

कुमुद का जी पिघल उठा। बोली, 'गोमती, इतनी-सी बात से ऐसी घबरा गई! इतनी अधीर मत होओ। न मालूम महाराज ने क्या कहा है और काकाजू ने क्या समझा है।

शब्दार्थ :
ससैन्य – सेना के साथ
प्रतिवाद – विरोध

टिप्पणी

वह सेना ले कर थोड़े दिनों में यहाँ आ ही रहे हैं। यहाँ सब बात यथावत् प्रकट हो जाएगी। मुझे आशा है, राजा तुम्हें अपनाएँगे।'

गोमती चुप रही।

कुमुद एक क्षण सोच कर बोली, 'यदि हम लोगों को यहाँ से किसी दूसरे स्थान पर जाना पड़ा, तो तुम अवश्य हमारे साथ रहना। हमें आशा है, राजा ससैन्य, आएँगें, परंतु यह आशा बिल्कुल नहीं है कि उनके आने तक हम लोग यहाँ ठहरे रहेंगे। उनके आने की खबर मिलने के पहले नवाब अपनी सेना इस स्थान पर भेजने की चेष्टा करेगा। हम लोगों को शायद बहुत शीघ्र ही यह स्थान छोड़ना पड़ेगा।'

गोमती ने साथ ही रहने का द ढ़ निश्चय प्रकट किया।

खंड-उनचास

दलीप नगर का राज्य उन दिनों भँवर में फँसा-सा जान पड़ता था। राजा देवी सिंह का अधिकार अवश्य हो गया था, परंतु उसकी सत्ता सभी ने नहीं मानी थी। कोई-कोई खुल्लम-खुल्ला विरोध कर देते थे। बहुतों के भीतर-भीतर प्रतिकूलता की लहरें उठ रही थीं। जनार्दन शर्मा, हकीमजी और लोचन सिंह-सद श लोग गए राजा के द ढ़ पक्षपाती थे, परंतु अनेक प्रमुख लोग विपरीत भाव का प्रदर्शन न करते हुए भी कोई ऐसा काम नहीं कर रहे थे, जिससे स्पष्ट तौर पर यह विश्वास होता कि वे देवी सिंह के सहायक हैं। माल विभाग और सेना को देवी सिंह बहुत ध्यान के साथ सुधार रहे थे, परंतु वर्षों की बिगड़ी हुई संस्थाओं का ठिकाना लगाना कुछ विलंब का काम होता है।

उधर कुंजर सिंह बिगड़े-दिल सरदारों को अपनी ओर जुटाने में दत्तचित्त था। रानियों की ओर से भी परिश्रम जारी था। जो लोग देवी सिंह के विरुद्ध थे, वे यह जानते थे कि रानियों को कालपी के फ़ौजदार की सहायता मिल रही है। उन्हें यह भी मालूम था कि यह सहायता कुंजर सिंह के लिए अप्राप्य है, परंतु वे लोग यह विश्वास करते थे कि नवाब, कुंजर सिंह के साथ पुरुष होने के कारण मैत्री की संधि ज़्यादा जल्दी करेगा। इसलिए उन्होंने सहायता का वचन तो रानियों को दे दिया, परंतु मन के भीतर कुंजर सिंह के लिए फाटक बिल्कुल बंद नहीं किए। यह कहा कि नवाब को आपके साथ होते देखकर हम लोग साथ हो जाएँगे। नहीं नहीं की। वचन भी नहीं दिया।

कुंजर सिंह पर इसका बहुत कष्टदायक प्रभाव पड़ा। वह कुछ दिन आशा और निराशा के बीच में भटकता हुआ अंत में बहुत थोड़ी-सी आशा मन में लिए हुए विराटा लौट आया। उस समय नरपति को दलीप नगर से लौटे हुए दो-एक दिन को चुके थे।

देवी सिंह के खिलाफ सेना तथा अन्य प्रांतों के राजाओं को संगठित करने के बाद कुंजर सिंह पुनः विराटा के मंदिर में कुमुद के पास वापस आ गया।

संध्या के पूर्व ही कुंजर सिंह मंदिर में आ गया। उसे देखते ही गोमती अपनी कोठरी में चली गई। कुमुद ने देखा, कुंजर का चेहरा बहुत उतरा हुआ है।

धीरे-धीरे पास जा कर ज़रा गंभीर भाव से कुमुद ने कहा, 'आप थके-माँदे मालूम होते हैं। क्या दूर से आ रहे हैं?'

'हाँ, दूर से आ रहा हूँ।' कुंजर सिंह ने थके हुए स्वर में जवाब दिया, 'आशा नहीं कि अब की बार विराटा छोड़ने पर फिर कभी लौट कर आऊँगा।'

कुमुद ने सहज कोमल स्वर में कहा, 'जब तक आप यहाँ हैं इस दालान में डेरा डालें।'

दालान में अपना सामान रख कर कुंजर सिंह बोला, 'सुनता हूँ कुछ दिनों में विराटा का

शब्दार्थः
शिविर – खेमा

यह गढ़ और मंदिर दलीप नगर के राजा देवी सिंह के शिविर बन जाएँगे।'

'उस दिन के लिए हम लोग कदाचित् यहाँ नहीं बने रहेंगे।' कुमुद ने धीरे से कहा।

कुंजर को नरपति सिंह का ख्याल आया पूछा, 'काकाजू कहाँ हैं?'

'किसी काम से उस पार गए हैं। आते ही होंगे। आपको नहीं मिले? आप तो गाँव में ही हो कर आए हैं? कुमुद ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह ने ज़रा उत्तेजित स्वर में कहा, 'अब यह गाँव देवी सिंह को अपने यहाँ बुला रहा है। मैं और देवी सिंह एक स्थान पर नहीं रह सकते। इसलिए अलग होकर आया हूँ। यदि गाँव में ही किसी से बतबढ़ाव हो पड़ता, तो यहाँ तक दर्शनों के निमित्त न आ पाता।'

चित्र : कुंजर सिंह की कुमुद से देवी सिंह के बारे में चर्चा

कुमुद ने पूछा, 'राजा देवी सिंह कालपी के नवाब का दमन करने के लिए इस ओर आवेंगे, इसमें आपको क्या आक्षेप है?'

कुंजर सिंह ने उत्साह के साथ उत्तर दिया, 'यह मेरे बड़े सौभाग्य की बात है कि कम-से-कम आपके हृदय में तो मेरे लिए थोड़ी-सी सहानुभूति है। वैसे इस अपार संसार में मेरे कितने हितू हैं?'

कुमुद ने द्वार की ओर देख कर कहा, 'अब तक काकाजू नहीं आए। न जाने कहाँ देर लगा दी है।'

कुंजर ने इस मंतव्य के विषय में कुछ न कह कर अपनी ही चर्चा जारी रखी, 'कालपी का नवाब मेरा शत्रु है। मैं उसके विरुद्ध सदा खड्ग उठाए रहने को तैयार हूँ। परंतु मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि देवी सिंह अनधिकार चेष्टा से, अन्याय से; छल-कपट से मेरी गद्दी पर जा बैठा है? देवी सिंह का प्रतिकार मेरे लिए उतना ही आवश्यक है, जितना कालपी के नवाब का।'

बात काट कर कुमुद बोली, 'मैं ज़रा बाहर से देखती हूँ कि पिताजी आ रहे हैं या नहीं और उन्हें कितनी देर है। अभी सूर्यास्त नहीं हुआ है, दूर तक का आदमी दिखलाई पड़ सकता है।'

बाहर जा कर कुमुद ने देखा कि नरपति के लौट आने का कोई लक्षण नहीं। बाहर ही ठिठक गई। पूर्व की ओर के वन की रेखा को परखने लगी। इतने में कुंजर सिंह वहाँ आ गया। हाथ जोड़ कर बोला, 'मैं देवी सिंह का विरोधी हूँ, इसमें यदि आपको कोई बात खटकती हो, तो आज से संपूर्ण विरुद्ध भाव को हृदय के भीतर से धो कर बहा सकता हूँ। परंतु यदि मैं आपको यह विश्वास दिला दूँ कि कपट और अन्याय से देवी सिंह मेरे राज्य का अधिकारी हुआ है तब भी आप क्या उसका साथ देने की आज्ञा देंगी? यदि ऐसी अवस्था में भी अपना हक छोड़ देने का आदेश हो, तो वह आज्ञा भी शिरोधार्य होगी।'

शब्दार्थ:

हितू – **भलाई चाहने वाले**

टिप्पणी

कुमुद ने आग्रह के साथ कहा, 'हाथ मत जोड़िए। यह अच्छा नहीं मालूम होता। आप राजकुमार हैं।'

कुंजर अधिकतम आग्रह के साथ बोला, 'राजकुमार नहीं हूँ। कम-से-कम आपके समक्ष मैं कुछ भी नहीं हूँ, केवल सेवक हूँ, भक्त हूँ।'

कुमुद ने कहा, 'तब तक काकाजू नहीं आते, चलिए, उस चट्टान पर बैठ कर आपसे लड़ाइयों की कुछ चर्चा सुनूँ। हम लोगों को यहाँ संसार का कोई व त्तांत सुनने को नहीं मिलता। काकाजू हाल में दलीप नगर गए थे।'

परंतु अंतिम बात के मुँह से निकलते ही कुमुद ने अपना होठ काट लिया। वह इस बात को कहना नहीं चाहती थी, न मालूम कैसे निकल पड़ी।

जिस चट्टान पर बैठने की कुमुद ने इच्छा प्रकट की थी, वह पास ही थी। कुंजर उसके नीचे की ओर वाली ढाल पर जा बैठा और कुमुद उसकी टेक पर। दोनों की पीठ मंदिर के द्वार की ओर थी।

कुंजर ने पूछा, 'काकाजू दलीप नगर किसलिए गए थे?'

'आपको जो मालूम ही होगा।' कुमुद ने उत्तर दिया, 'मेरी इच्छा न थी कि वह जाते, परंतु यहाँ के राजा ने उन्हें हठ करके भेजा। इस समय विराटा को सहायता की बड़ी आवश्यकता है।'

'इसमें हर्ज ही क्या हुआ?' कुंजर ने कहा, 'विराटा इस समय संकट में है। मुझ सरीखे लोग यदि उसकी सहायता नहीं कर सकते, तो जो उसकी सहायता कर सकते हैं, उनके पास तो निमंत्रण जाएगा ही। परंतु यदि आपकी कृपा हुई, तो देवी सिंह के बिना मैं अकेला ही बहुत कुछ करके दिखलाऊँगा।'

कुमुद ने कोई उत्तर नहीं दिया।

कुंजर बोला, 'आगामी युद्ध में, ऐसा जान पड़ता है, विराटा का राजा, देवी सिंह का साथ देगा। ऐसी अवस्था में मेरा यहाँ आना अब असंभव होगा। क्या विराटा का राजा किसी प्रकार मेरी ओर हो सकता है?'

कुमुद ने कहा, 'हम लोगों का कुछ ठीक नहीं, कब तक यहाँ रहें, कब यहाँ से चले जाएँ और कहाँ जा रुकें।'

'इसमें मेरे लिए कोई बाधा नहीं। 'कुंजर सिंह उमंग के साथ बोला, 'आप यहाँ न रहें, यह मेरी पहली प्रार्थना है। दूसरी प्रार्थना यह है कि आप जहाँ भी जाएँ, मुझे साथ रहने की अनुमति दें। बुरा समय आ रहा है यदि साथ में एक सैनिक रहेगा, तो हानि न होगी।'

कुमुद चुप रही।

कुंजर द्वारा कुमुद के समक्ष प्रणय निवेदन।

कुंजर सिंह किसी भाव के प्रवाह में बहता हुआ-सा बोला, 'यदि आपने निषेध किया, तो मैं आज्ञा का उल्लंघन करूँगा, यदि आपने अनुमति न दी तो मैं अपने हठ पर अटल रहूँगा। मैं छाया की तरह फिरूँगा। पक्षियों की तरह मँडराऊँगा। चट्टानों की तली में, पेड़ों के नीचे, खोहों में, पानी पर, किसी-न-किसी प्रकार बना रहूँगा। आपको भ कुटी-भंग का अवसर न दूँगा, परंतु निकट बना रहूँगा। साथ रखूँगा केवल अपना खड्ग। समय आने पर दुर्गा के चरणों में अपना मस्तक अर्पण कर दूँगा।'

'राजकुमार!' काँपते हुए गले से कुमुद ने कहा।

'आज्ञा?' पुलकित हो कर कुंजर बोला।

कुमुद ने उसी स्वर में कहा, 'आपको इतना बड़ा त्याग नहीं करना चाहिए।'

'कितना बड़ा? कौन-सा?' कुंजर धारा-प्रवाह कहता चला गया, 'नवाब से लड़ना धर्म है। धर्म की रक्षा करना कर्त्तव्य है। कर्त्तव्यपालन करना धर्म है। आपकी आज्ञा का पालन करना ही धर्म, कर्त्तव्य और सर्वस्व है। यदि इन चरणों की कृपा बनी रहे, तो मैं संसार-भर की एकत्र सामर्थ्य को तुच्छ त ण के समान समझूँ, मुझे कुछ न मिले, संसार-भर मुझे तिरस्कृत, बहिष्कृत कर दे, परंतु यदि चरणों की कृपा बनी रहे, तो मैं समझूँ कि देवी सिंह मेरा चाकर है, नवाब मेरा गुलाम है और संसार-भर मेरी प्रजा है।'

कुमुद बोली, 'आप यदि देवी सिंह से लड़ेंगे, तो कालपी के नवाब का पक्ष सबल हो जाएगा।'

'मैं देवी सिंह ने नहीं लड़ूँगा।'

'क्यों?'

'आपकी इच्छा नहीं जान पड़ती, मैं देवी सिंह से संधि कर लूँगा। अपना सारा हक त्याग दूँगा।' 'मैं यह नहीं चाहती, और न यह कहती ही हूँ।

इसके बाद कुछ पल तक सन्नाटा रहा। कुंजर ने कहा, 'वास्तव में अब मेरे जी में कोई बड़ी महत्त्वाकांक्षा शेष नहीं है। यदि कोई परम अभिलाषा है, तो चरणों की सेवा की है।' यह कह कर कुंजर सिंह ने कुमुद के पैरों को छू लिया। कुमुद ने पीछे पैर हटाने चाहे, परंतु न हटा सकी बोली, 'आपने क्या किया?'

कुंजर सिंह ने कहा, 'आप मेरी पूज्य हैं। मेरी संपूर्ण श्रद्धा की केंद्र हैं। मैंने कोई अनोखा कार्य नहीं किया।'

कुमुद काँपती हुई आवाज में बोली, 'आप ऐसा फिर कभी न करना। मैं कोई अवतार नहीं हूँ। साधारण स्त्री हूँ। हाँ, दुर्गा माता की सच्चे जी से पूजा किया करती हूँ। आप मुझे अवतार न समझें।'

'और आप मुझे', कुंजर ने कहा, 'नीच व्यक्ति न समझें।'

तुरंत कुमुद बोली, 'आप क्यों यह बार-बार कहते हैं? मैं सब बातें सुन-समझ कर ही आपको राजकुमार कहकर संबोधित करती हूँ और करती रहूँगी।'

बड़ी द ढ़ता के साथ कुंजर ने कहा, 'मैंने आज से देवी सिंह का विरोध छोड़ा। चरणों में ही सदा रहने का निश्चय किया।'

'न-न' कुमुद जल्दी से बोली, 'इस तरह का प्रण मत करिए। आप देवी सिंह का सामना अवश्य करें। अपने हक़ के लिए लड़ें, परंतु कालपी के नवाब से जब वह निबट लें।'

कुमुद चट्टान की टेक पर खड़ी हो गई। ऐसा जान पड़ा, मानो कमलों का समूह उपस्थित हो गया हो, जैसे प्रकाश-पुंज खड़ा कर दिया गया हो। पैरों के पैंजनी पर सूर्य की स्वर्ण-रेखाएँ फिसल रही थीं। पीली धोती मंद पवन में धीमे झकोरे से दुर्गा की पताका की तरह धीरे-धीरे लहरा रही थी। उन्नत भाल मोतियों की तरह भासमान था। बड़े-बड़े काले नेत्रों की बरौनियाँ भौंहों के पास पहुँच गई थीं। आँखों से झरती हुई प्रभा ललाट पर से चढ़ती हुई उस निर्जन स्थान को आलोकित-सा करने लगी। आधे खुले हुए सिर पर से स्वर्ण को लजाने वाली बालों की एक लट गरदन के पास

शब्दार्थ:

पैंजनी – पैरों में पहने जाने वाला आभूषण

पताका – झंडा

टिप्पणी

ज़रा चंचल हो रही थी। उस विस्त त विशाल वन और नदी की उस ऊँची चट्टान से सिरे पर खड़ी हुई कुमुद को देख कर कुंजर का रोम-रोम कुछ कहने के लिए उत्सुक हुआ।

कुंजर को अपनी ओर आँख गड़ा कर ताकते हुए देखकर कुमुद के चहेरे पर और गहरी लाली छा गई। उस समय सूर्य की कुछ किरणें ही बाकी रह गई थीं। वे उस लालिमा को और भी उद्‌दीप्त कर गईं।

कुंजर को ऐसा आभास हुआ, मानो संपूर्ण विश्व के पुष्पों ने अपनी ताजगी उस लालिमा को दे दी हो। हृदय उमड़ पड़ा। विश्व-भर को अपने में भर लेने के लिए लालायित हो उठा और किसी अपरिचित, किसी निस्सीम, किसी अनिश्चित बलिदान के लिए द ढ़ता अनुभव करने लगा।

कुंजर उन्मत्त-सा हो कर बोला, 'एक बार, केवल एक बार चरणों को अपने मस्तक से छुआ लेने दीजिए और हृदय से'

कुमुद के मुखमंडल पर फिर गहरी लाली दौड़ आई। बोली, 'यदि आपने यह प्रयास किया तो मैं इसी टोर से कूद पडूँगी, फिर चाहे चोट भले ही लग जाए।'

'नहीं, मैंने इस संकल्प का त्याग कर दिया। आप इसी ओर से उतर आवें।'

कुमुद बिना कोई शब्द किए धीरे से उतर आई।

खंड-पचास

रामदयाल का विराटा आकर दलीप नगर की सैनिक तैयारियों की सूचना देना।

एक दिन रामदयाल सवेरे ही आया। कुंजर सिंह विराटा के टापू में था। उस समय मंदिर में केवल नरपति मिला, और कोई वहाँ न था। रामदयाल को नरपति, देवी सिंह का आदमी समझता था, इसलिए उसने आने पर हर्ष प्रकट किया। बोला, 'कहो भाई, क्या समाचार है?'

'समाचार साधारण है। दलीप नगर में ज़ोरों के साथ तैयारियाँ हो रही हैं।'

'यह समाचार साधारण नहीं, बहुत आशापूर्ण है'

'यहाँ आज सन्नाटा कैसा छाया हुआ है?'

'स्नान-ध्यान हो रहे हैं।'

'और लोग भी तो होंगे?'

'रहने दो। तुम्हें उनसे क्या? मंदिर में तो सभी प्रकार के लोग आया-जाया करते हैं।'

रामदयाल ने बात बदल कर कहा, 'आप इस बीच में दलीप नगर भी हो आए और मुझे कुछ न मालूम पड़ा। यदि पहले से मालूम होता, तो कदाचित् मैं किसी सेवा में पड़ जाता।'

नरपति प्रसन्न हो कर बोला, 'जल्दी में गया और जल्दी में ही आया। दलीप नगर में ज्यादा देर ठहरने की नौबत ही नहीं आई, कार्य बन गया। मैं लौट पड़ा।'

'हमारे राजा', रामदयाल ने कहा, 'टाला-टूली नहीं करते। जिसके लिए जो कुछ करना होता है, शीघ्र कर देते हैं। आपको तो पक्का वचन दे दिया है।'

'वह बड़े ज़ोर से अपनी सेना की तैयारी इसलिए तो कर रहे हैं। बड़े पुरुषार्थी हैं, बड़े ब्रह्मचारी हैं। सूरमाओं की धुन के सिवा और कोई ध्यान ही नहीं। वह लड़की जिसे

शब्दार्थ:
बरौनी – पलकें

आपने यहाँ देखा होगा, उनकी रानी होने की अधिकारिणी है। केवल भाँवर नहीं पड़ पाई है।' नरपति ने मंतव्य प्रकट किया। इस सिलसिले में दिमाग दूसरी तरफ घूमा। नरपति कहता गया, 'उस दिन जब पालर में लड़ाई हुई थी, ज़रा-सी ही देर हो गई, नहीं तो दांपत्य संबंध पक्का हो जाता। रह गया, सो रह गया। अब तो उस लड़की को वह पहचानते ही नहीं। कहते थे, कौन? कहाँ की! इत्यादि-इत्यादि।'

रामदयाल चौंका। उसने पूछा, 'इसका भी जिक्र आया था?'

नरपति ने उत्तर दिया, 'खूब, मैंने कहा था। गोमती ने तो मना कर दिया था, परंतु मेरा जी नहीं माना।'

रामदयाल ने अपने आश्चर्य को दबा दिया। बोला, 'इसका कारण है। मैं जानता हूँ परंतु मुझे आपसे कहने की जरूरत नहीं है।'

रामदयाल को गोमती के ढूँढ़ने में विलंब नहीं हुआ। वार्तालाप के लिए उपयुक्त समय और स्थान के लिए भी विशेष प्रयास नहीं करना पड़ा।

गोमती की आकृति गंभीर थी। रामदयाल के मुख पर किसी भय या चिंता की छाप लग रही थी।

कुशल-मंगल के बाद दोनों कुछ क्षण चुपचाप रहे।

अंत में गोमती ने बारीक, पैने और कुछ काटते हुए से स्वर में पूछा, 'तुम्हारे महाराज तो आजकल सैन्य-संग्रह और चढ़ाई की तैयारी के सिवा और सोचते ही क्या होंगे?'

रामदयाल ने नीचा सिर किए हुए घायल आदमी की तरह उत्तर दिया, 'उस धुन के सिवा और धुन ही नहीं है। आजकल तो और किसी बात के लिए ज़रा भी अवकाश नहीं मिलता परंतु...'

'परंतु क्या रामदयाल?' गोमती ने धड़कते हुए कलेजे से, परंतु उपेक्षा की मुद्रा धारण करके कहा, 'तुमने तो नहीं मेरी ओर से कुछ कहा था?'

'आपकी ओर से तो नहीं, 'रामदयाल ने उत्तर दिया, 'अपनी ही ओर से कहा था। बोले, इस समय राजनीति और रणनीति के अतिरिक्त और कोई चर्चा न करो।'

ज़रा चिढ़ कर गोमती बोली, 'तुमने नाहक मेरी बात छेड़ी रामदयाल।'

'क्या करूँ, मन नहीं माना।' गद्‌गद-सा हो कर रामदयाल ने कहा, 'आपको दुखी देख कर छाती फटती है। आपको सुखी देख कर यदि तुरंत मर जाऊँ तो मेरे बराबर पुण्य वाला किसी को न समझा जाए।

रामदयाल ने गोमती को बताया कि देवी सिंह अब उसके बारे में बात करना भी पसंद नहीं करता।

गोमती को उस गद्‌गद कंठ ने तुरंत आकृष्ट किया। स्त्री की सहज साधारण सावधानी को गोमती दूर रख कर बोली, 'मैं राज-पाट की भिखारिन नहीं हूँ। महाराज सुख के साथ संसार में रहें, मेरे लिए इतना ही बहुत है।'

रामदयाल ने कहा, 'परंतु मेरे संतोष के लिए इतना कम-से-कम आवश्यक है कि आप आनंदपूर्वक रहें। मैं साधारण मनुष्य हूँ, परंतु मेरे हृदय को यह कहने का अधिकार है।'

गोमती ने उत्सुकता की अधीरता के वश होकर कहा, 'यह निश्चय जानो रामदयाल, मैं स्वयं दलीप नगर नहीं जाऊँगी। निरादर के सिंहासन से इस जंगल का जीवन सहस्र गुना अच्छा। यहाँ मेरे लिए सब कुछ है। उन्हीं के संग रह जाऊँगी।'

खंड-इक्यावन

राजा देवी सिंह ने अलीमर्दान के ऊपर तीन ओर से आक्रमण करने का निश्चय किया। सिंहगढ़ से लोचन सिंह, दलीप नगर से पालर होते हुए स्वयं, और बड़गाँव से जनार्दन शर्मा दस्ते ले चलें। यह निश्चय किया गया था कि लोचन सिंह नवाब को भांडेर में कुछ समय तक अटकाए रखे, तब तक राजा पालर से आ कर रानियों को परास्त कर देंगे और भांडेर पहुँच कर लोचन सिंह की सहायता करके नवाब का अड्‌डा समाप्त कर देंगे तथा जनार्दन का दस्ता जरूरत पड़ने पर कुमुक पहुँचाने के लिए बड़गाँव से भांडेर की ओर राजा के पीछे-पीछे बढ़ेगा।

रामनगर में रानियों को पालर वाली सेना के आने की सूचना मिली। उनके पास भी कुछ सरदार और सैनिक इकट्‌ठे हो गए थे। रामनगर गढ़ हाथ में था, परंतु पड़ोस में विराटा का कंटक भी था। रामनगर के राव पतराखन को विराटा के सबदल सिंह के प्रति सहृद भाव बनाए रखने के लिए विशेष कारण न था। इस समय यह काफ़ी तौर पर प्रकट हो गया था कि सबदल सिंह ने नवाब के मुकाबले के लिए राजा देवी सिंह को निमंत्रित किया है। पतराखन को मालूम था कि रानियों के पक्ष में नवाब है, परंतु नवाब ने विराटा पर चढ़ाई करने का अभी तक कोई लक्षण नहीं दिखलाया था। रामनगर में रानियों और पतराखन की स्थिति तभी तक सुरक्षित समझी जा सकती थी, जब तक विराटा और पालर की ओर से आई हुई सेनाओं का सहयोग नहीं हुआ था। पतराखन को अपनी गढ़ी का इतना मोह न था, जितना उसमें रखी हुई संचित संपत्ति और गाढ़े समय में काम आने वाले अपने थोड़े से, परंतु निर्भीक योद्धाओं का। उसने रामदयाल को बुलाया। वह उसी दिन विराटा से लौट कर आया था। उसने रानियों से सलाह करने के लिए मिलने की इच्छा प्रकट की। रामदयाल उसे रनिवास में ले गया। परदे में हो कर रानियों से प्रत्यक्ष बातचीत होने लगी। किसी बीच वाले की जरूरत नहीं पड़ी।

छोटी रानी ने कहा, 'परदे से काम नहीं चल सकता, रावसाहब। अटक पड़ने पर तो मुझे तलवार हाथ में ले कर रणक्षेत्र में आना पड़ेगा।'

पतराखन के जी में लड़ने के लिए बहुत उत्साह न था, तो भी तेजी दिखलाते हुए उसने कहा, 'ठीक है महाराज! और वह दिन शीघ्र आने वाला है। देवी सिंह अपनी सेना ले कर आ रहे हैं। बहुत संभव है, कल तक हम लोग यहीं घिर जाएँ या विराटा की गढ़ी से तोप हमारे ऊपर गोले उगलने लगे।'

छोटी रानी ने कहा, 'तब हमें तुरंत अपनी सेना पहले से ही भेज कर कहीं पालर के पास ही लड़ाई करनी चाहिए और जैसे बने, विराटा की गढ़ी अपने हाथ में कर लेनी चाहिए।'

पतराखन बोला, 'मुझे दोनों प्रस्ताव पसंद हैं, परंतु आदमी मेरे पास इतने नहीं कि इन प्रस्तावों में से एक को भी सफलतापूर्वक कार्य में परिणित कर सकूँ। बिना नवाब की सहायता के कुछ न होगा। मालूम नहीं, उन्होंने अभी तक विराटा को क्यों अपने अधिकार में नहीं लिया।'

बड़ी रानी ने कहा, 'विराटा को हमें स्वयं अधिकार में कर लेना चाहिए, नहीं तो नवाब कदाचित् वहाँ के मंदिर को तुड़वा डालेगा।'

छोटी रानी ने कहा, 'यह असंभव है।'

शब्दार्थः
कुमुक – सैनिक सहायता
गाढ़े समय में – संकट के समय

पतराखन ने कहा, 'असंभव तो कुछ भी नहीं है, परंतु वह ऐसा करेगा नहीं। सबदल ने उनके साथ जैसा बरताव किया है, उससे यह प्रकट होता है कि नवाब मंदिर को छोड़ कर गाँव-भर को तो अवश्य ही तहस-नहस कर देगा।'

रामदयाल बोला, 'गाँव को खाक करने से क्या मतलब? नवाब तो उस दाँगी की छोकरी का डोला चाहते हैं, जिसे मूर्खों ने अवतार मान रखा है।'

बड़ी रानी ने पूछा, 'कौन को?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'स्वयं उसे देख आया हूँ। वह नित्य देवी से कुंजर सिंह की सफलता के लिए प्रार्थना किया करती है और कुंजर सिंह नित्य यह सोचा करते हैं कि अन्नदाता और देवी सिंह को परास्त करके दलीप नगर के राजसिंहासन पर बैठ जाऊँ और कुमुद को अपनी रानी बना लूँ। महाराज, अपनी आँखों सब हाल देख आया हूँ। मैंने अपने को वहाँ राजा देवी सिंह का नौकर प्रसिद्ध कर रखा है।'

'राजा देवी सिंह!' छोटी रानी ने अत्यंत घ णा के साथ कहा, 'चाहे कुछ हो जाए, देवी सिंह राजा न रहने पावेगा।'

पतराखन अधैर्य के साथ बोला, 'जो कुछ करना हो, जल्दी करिए। मेरी राय है कि रामदयाल को नवाब के जताने के लिए तुरंत भेजिए, अपने सरदारों और सैनिकों को दो भागों में बाँट कर एक को देवी सिंह से लड़ने के लिए पहुँचाइए और दूसरे को विराटा के ऊपर धावा करने के लिए भेजिए। एक ओर से आपकी टुकड़ी विराटा पर धावा करे और दूसरी ओर से मेरी टुकड़ी। मैं उस पार जा कर उधर से धावा करूँगा और विराटा वालों को निकल भागने का अवसर न दूँगा।'

बड़ी रानी ने कहा, 'विराटा की उस कन्या का क्या होगा? क्या उसे मुसलमानों द्वारा मर्दित होते हुए देखा जाएगा?'

रामदयाल ने तुरंत उत्तर दिया, 'उसी लोभ के वश असल में नवाब हमारा साथ देने यहाँ आवेगा। दलीप नगर का एक-चौथाई राज्य भी उसे चाहिए, परंतु उस लड़की के बिना वह तीन-चौथाई हिस्से पर भी लड़ने को राजी न होगा। फिर भी मैं विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने ऐसा प्रबंध किया है कि उस लोभ से नवाब हमारी सहायता के लिए आवे और यथासंभव उसे पावे नहीं।'

बड़ी रानी ने पूछा, 'यह कैसे होगा?'

उसने उत्तर दिया, 'यह ऐसे कि विराटा में कुंजर सिंह विद्‌यमान हैं। वह उस लड़की को बिना अपनी रानी बनाए दम नहीं लेंगे, चाहे दलीप नगर का या दलीप नगर की एक हाथ भूमि का भी राज्य मिले या न मिले। विराटा के अधिकृत होने के पहले ही मुझे पूर्ण आशा है वह लड़की कुंजर सिंह के साथ सुरक्षित स्थान में भाग जाएगी।'

बड़ी रानी इस उत्तर से संतुष्ट नहीं हुई। कुछ पूछना चाहती थीं कि छोटी रानी बीच में पड़ गई। बोलीं, 'ऐसी छोटी-छोटी बातों पर इस समय ध्यान देने की आवश्यकता नहीं है। रामदयाल जो कह रहा है, वह ठीक है। तुरंत नवाब को ससैन्य बुलाना चाहिए। रामदयाल, तुम इसी समय घोड़े पर सवार हो कर सरपट जाओ। मैं चाहती हूँ कि सवेरा होने के पहले ही हमारी और नवाब की सेनाएँ देवी सिंह को कुचलने और विराटा को ढाह देने के काम में नियुक्त हो जाएँ।'

अलीमर्दान द्वारा काले खाँ को सेना की एक टुकड़ी के साथ दिल्ली भेजकर स्वयं दलीप नगर के राजा के साथ संधि-प्रस्ताव की चाल चलकर विराटा पर आक्रमण की तैयारी।

शब्दार्थ :

ढाह देने – गिरा देने।

फरमान – आदेश पत्र

टिप्पणी

रामदयाल ने स्वीकार किया।

रामदयाल भांडेर की ओर गया और पतराखन गढ़ी को अपने सिपाहियों और संपत्ति से खाली करके उस पार सुरक्षित जंगल में चला गया।

खंड-बावन

रामदयाल बहुत तेजी के साथ भांडेर गया और दिन-ही-दिन में नवाब के सामने जा पहुँचा। दिल्ली से एक बहुत जरूरी फरमान आया था कि तुरंत संपूर्ण सेना ले कर दिल्ली आ जाओ। इस फरमान को आए हुए कई दिन हो गए थे। अलीमर्दान को राजा देवी सिंह की तैयारियों की खबर लग चुकी थी, इसलिए और शायद किसी और कारणवश भी अलीमर्दान स्वयं तो दिल्ली की ओर रवाना नहीं हुआ, परंतु अपनी सेना के एक बड़े भाग के साथ काले खाँ को दिल्ली की ओर भेज दिया। वह भांडेर में ही बना रहा। राजा देवी सिंह को कुछ समय तक रोके रहने के लिए उसने एक चाल चली। दलीप नगर को संधि का प्रस्ताव भेजा। कहलवाया कि दो निकटवर्ती राज्यों में मेल रहना चाहिए। लड़ाई की तैयारी बंद कर दो, नहीं तो अनिवार्य संकट में पड़ जाओगे। राजा इसका उत्तर नहीं देना चाहता था, परंतु जनार्दन नहीं माना। उसने एक बड़ी मीठी चिट्ठी लिखवाई, जिसका सार यह था कि यहाँ भी तुरंत लड़ डालने की किसी की अभिलाषा नहीं है। संधि-प्रस्ताव और उसकी अर्द्ध-स्वीकृति पर दोनों को संदेह था।

देवी सिंह रानियों से लड़ने जा रहा था। जानता था कि अलीमर्दान उत्तर से सहायता के लिए आएगा, तब इस संधि की रद्दी के टुकड़े से बढ़ कर प्रतिष्ठा न होगी। अलीमर्दान को विश्वास था दलीप नगर मेरे चकमे में आ गया है।

रामदयाल को ऐसी हड़बड़ी में आता देख कर अलीमर्दान को आश्चर्य नहीं हुआ, क्योंकि वह समय ऐसा था कि अचेती और अनजानी उलझनें अकस्मात् उपस्थित हो जाया करती थीं।

एकांत पाने पर रामदयाल ने कहा, 'हजूर, मामला बहुत टेढ़ा है। राजा देवी सिंह की सेना रामनगर पर चढ़ी चली आ रही है।'

'कब?' अलीमर्दान ने पूछा।

'आज पालर के करीब थी।' उसने उत्तर दिया, 'कल संध्या तक रामनगर और विराटा पर दखल हो जाने का भय है।'

'मेरी आधी सेना तो काले खाँ के साथ दिल्ली चली गई है।'

'परंतु जो कुछ सरकार के पास है, वह सरकार के शत्रुओं के दाँत खट्टे करने के लिए बहुत है।'

'तुम लोगों के पास कितनी सेना है?'

रामदयाल ने अपनी सेना का कूता अलीमर्दान को बतलाया।

अलीमर्दान ने कहा, 'तब तक इतनी सेना से लड़ो। काफ़ी है। कुछ समय बाद हमारी कुमुक पहुँच जाएगी।'

रामदयाल घबरा कर बोला, 'तब तक हम लोग शायद बिल्कुल पिस-कुट जाएँ। विराटा से सबदल और कुंजर सिंह हम लोगों को संतप्त करेंगे, उधर से देवी सिंह हमें भून डालेंगे, रामनगर के रावसाहब अपनी सेना ले कर उस पार जगलों में चले गए हैं। यदि

शब्दार्थ :

कूता – अनुमानित आकार

उन्होंने विराटा पर आक्रमण न किया, तो हम लोग ऐसे गए, जैसे पिंजड़े में बंद चिड़ियों को बिल्ली मरोड़ देती है।'

'बेतवा-किनारे के किलेदारों को,' अलीमर्दान ने कहा, 'मैं खूब जानता हूँ। ऐसे बदमाश और दगाबाज हैं कि कुछ ठिकाना नहीं। कई बार सोचा, मगर मौका नहीं मिला। अब की बार मौका मिलते ही पहले इन वनबिलाबों को मटियामेट करूँगा।'

कुछ उत्साहित हो कर रामदयाल बोला, 'वह मौका हुज़ूर न जाने कब आने देंगे। सरकार सोचें, कैसी विकट समस्या हम सब लोगों के लिए है। हमें मिटाने के बाद निश्चय ही देवी सिंह आपको छेड़ेगा। फिर क्यों उसे इस समय छोड़ा जाए?'

अलीमर्दान ने सोच कर कहा, 'विराटा में है कुंजर सिंह?'

'हाँ, सरकार।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'और कमर कस कर हुज़ूर से लड़ने के लिए तैयार है। सबदल सिंह बागी हो गया। लड़ेगा। उसने देवी सिंह को इस ओर आपसे और रानी साहब से लड़ने के लिए बुलाया है।'

स्वप्न-सा देखते हुए अलीमर्दान ने कहा, 'बागी तो कुल बेतवा का किनारा ही है, अकेला सबदल क्या। पर अब की बार उसके किले को ज़मीन में मिला देना है।'

फिर मुस्कराकर बोला, 'केवल तुम्हारे मंदिर को छोड़ दूँगा। तुम जानते हो कि मंदिरों से मुझे दुश्मनी नहीं है।'

जिस बात के कहने के लिए रामदयाल उकता-सा रहा था, अवसर मिलने पर प्रकट किया, 'मंदिरों को तो हुज़ूर ने कभी छुआ नहीं है। उसी मंदिर में पालर वाली वह दाँगी की जवान लड़की भी है। वह पद्‌मिनी जाति की स्त्री है।'

नवाब ने मुसकराहट के साथ पूछा, 'अभी तक वहाँ से भागी नहीं? मैं समझता था, चली गई होगी। दिक्कत तो यह है कि बहुत से हिंदू उसे देवी का अवतार मानते हैं। क्या हिंदुओं का यह सिर्फ ढकोसला ही है?'

रामदयाल ने जवाब दिया, 'बिल्कुल। मैंने अपनी आँखों से उन लोगों को देखा है और कान से उनका प्रेम-संभाषण सुना है।'

अलामर्दान थोड़ी देर तक कुछ सोचता रहा। कुछ देर में बोला, 'तुम्हारी यह इच्छा है कि मैं विराटा की तरफ़ तुरंत कूच करूँ?'

अलीमर्दान का अपनी सेना के साथ विराटा पर आक्रमण के लिए कूच।

हाथ जोड़ कर रामदयाल ने उत्तर दिया, 'हुज़ूर, मेरी क्या, आपकी राखीबंद बहिन रानी साहब की भी यही प्रार्थना है।'

अलीमर्दान ने कहा, 'अभी तैयारी होती है तुम चलो। आता हूँ। कुंजर सिंह को भी सजा देनी है और उस अहमक सबदल को भी सबक सिखलाना है। दो-तीन दिन में ही यह सब काम निबट जाएगा। मैं पहले विराटा को देखूँगा।'

अलीमर्दान ने अपने सब सरदारों को इकट्‌ठा करके संपूर्ण सेना को जल्दी-से-जल्दी तैयार किया। भांडेर में थोड़ी-सी सेना छोड़ कर बाकी सेना लेकर वह पहर रात गए चल पड़ा। सालौन भर्रोली में, जो भांडेर से करीब चार-पाँच मील पर है, सेना को थोड़ा-सा विश्राम करने के लिए रोक लिया। प्रातः काल होने के पहले विराटा पर आक्रमण करने का निश्चय कर लिया गया था।

शब्दार्थ :
पद्‌मिनी - सुंदरियों का एक प्रकार, जो स्त्री चंपा के समान गोरी, सुगंधमय और कमल के समान कोमल हो।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 32.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए और अंत में दी गई उत्तर माला से सही उत्तर का मिलान कीजिए:

1. बड़ी रानी ने छोटी रानी के विद्रोह में शामिल होने का निश्चय किया, क्योंकि
   (क) वह छोटी रानी की बातों में आ गयी
   (ख) वह स्वयं राजगद्दी पर बैठना चाहती थी
   (ग) वह देवी सिंह को दंड देना चाहती थी
   (घ) वह सती होना नहीं चाहती थी
2. सबदल सिंह कुंजर सिंह को आश्रय देने में हिचकता है, क्योंकि
   (क) वह कायर है
   (ख) उसे कुंजर सिंह की सैनिक सफलता में संदेह है
   (ग) वह दलीप सिंह का आश्रित है
   (घ) वह अलीमर्दान से मिला हुआ है
3. जनार्दन हकीम जी को दिल्ली इसलिए भेजता है, क्योंकि
   (क) वह दिल्ली के बादशाह से अलीमर्दान की शिकायत करे
   (ख) वह वहाँ से राजा के लिए कोई दवा लाए
   (ग) उसकी अनुपस्थिति में राजा के विरुद्ध षड्यंत्र कर सके
   (घ) वह दिल्ली प्रशासन से अलीमर्दान के लिए कोई ऐसा फरमान भिजवाए कि उसे तुरंत वहाँ के लिए प्रस्थान करना पड़े
4. अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करने का निश्चय करता है, क्योंकि
   (क) वह दुर्गा का मंदिर तोड़ना चाहता है।
   (ख) विराटा गढ़ को अपने राज्य में मिलाना चाहता है।
   (ग) कुमुद को अपनी रानी बनाना चाहता है।
   (घ) कुंजर सिंह को दंड देना चाहता है।
5. सिंहगढ़ की लड़ाई में हारने के बाद कुंजर सिंह पहले कहाँ गया ?
6. छोटी रानी ने बड़ी रानी को अपने षड्यंत्र में कैसे शामिल किया ?
7. छोटी रानी और बड़ी रानी दलीप नगर से भाग कर कहाँ पहुँची ?
8. कुंजर सिंह की कुमुद से भेंट कहाँ हुई ?
9. कुंजर सिंह को विराटा की गढ़ी में किस प्रकार आश्रय मिला ?
10. रानियों के विद्रोह का पता लगने पर जनार्दन ने कौन-सी राजनीतिक चाल चली ?

टिप्पणी

चतुर्थ अंश

खंड-तिरपन

अलीमर्दान द्वारा आक्रमण की खबर पाकर विराटा के राजा द्वारा चढ़ाई की तैयारी तथा देवी सिंह की सहायता की उम्मीद

जिस रात अलीमर्दान की सेना ने सालौन भर्रोली में डेरा डाला, उस रात विराटा के राजा ने अपने भाईबंदों को इकट्ठा करके लड़ाई की तैयारी की। बाहर निकल कर नवाब की सेना से सफलतापूर्वक लड़ना विराटा की सेना के लिए बहुत कठिन था, परंतु उसे अपने जंगलों, पहाड़ों और 'माई बेतवा' की धार का बड़ा भरोसा था और फिर यह कोई पहली ही लड़ाई नहीं थी।

मुख्य-मुख्य लोगों की बैठक हुई। सबको विश्वास था कि देवी सिंह समय पर सहायता देंगे। सब जानते थे कि देवी सिंह पालर की ओर से आ रहे हैं, परंतु सबकी शंका थी कि यदि नवाब की सेना बीच में आ पड़ी, तो राजा की सेना का इस ओर आना बहुत कठिन हो जाएगा और यदि नवाब ने एक दस्ता विराटा को नष्ट करने के लिए भेज दिया और उसी समय रामनगर से आक्रमण हो गया तो भयंकर समस्या उपस्थित हो जाएगी।

इन सब बातों पर विचार हुआ। अधिकांश लोगों में लड़ाई का उत्साह था। सबदल सिंह संयत भाषा में बोल रहा था, परंतु द ढ़तापूर्ण निश्चय से भरा हुआ था।

अंत में कुमुद के विराटा में बने रहने के विषय में प्रश्न उपस्थित हुआ। अधिकांश लोगों की धारणा हुई कि कुमुद को किसी दूसरे स्थान पर भेज देना चाहिए। सबदल सिंह अपने निश्चय से न डिगा। उसने कहा, 'मैं फिर यही कहूँगा कि उनके यहाँ बने रहने में ही हम लोगों की कुशल है। उन्हें वहाँ से हटाओ, तो मूर्ति को हटाओ, मंदिर को हटाओ।'

सबदल सिंह द्वारा कुंजर सिंह को अपने महल में आश्रय

कुंजर सिंह वहीं था—सभा में नहीं, सभा से दूर मंदिर में। परंतु उसका विराटा में होना सबदल सिंह को मालूम हो गया था और लोगों ने इच्छा प्रकट की कि कुंजर सिंह को हटा दिया जाए।

नरपति बोला, 'परंतु वह कहते हैं कि हम दुर्गा की रक्षा करते-करते अपना प्राण देंगे, हमें किसी के राजपाट से कुछ सरोकार नहीं। उन्होंने शपथपूर्वक कहा है कि देवी सिंह के साथ नहीं लड़ेंगे।'

सबदल ने कहा, 'यह तो ठीक है, परंतु जब देवी सिंह को मालूम होगा कि कुंजर सिंह हमारे यहाँ आश्रय पाए हुए हैं, तब हमारी बात पर से उनका विश्वास उठ जाएगा और वह अपना हाथ हमसे खींच लेंगे।'

नरपति बोला, 'तब जैसा आप चाहें, करें, परंतु वह अपनी शरण में हैं और यह स्मरण रखना चाहिए कि राजकुमार हैं। किसी के भी सब दिन एक-से नहीं रहते। उन्होंने शपथ ली है कि हमें किसी के राजपाट से कोई सरोकार नहीं।'

सबदल ने अपनी सम्मति बदलते हुए कहा, 'वह हमारे और देवी सिंह राजा, दोनों के समान शत्रु से लड़ने में सहायक होंगे। सुना है, तोप अच्छी चलाते हैं। मंदिर में बना रहने देंगे। वहाँ से वह तोप चलावेंगे। कोई हर्ज नहीं।'

टिप्पणी

नरपति सोच में पड़ गया। कुछ क्षण बाद बोला, 'कुमुद देवी विश्वास दिलाती हैं कि कुंजर सिंह कभी दगा न करेंगे। छल उन्हें छू नहीं गया है। वह तोप चलाने का काम बहुत अच्छा जानते हैं।'

खंड-चौवन

अलीमर्दान की सेना ने विराटा को और दलीप नगर की सेना ने रामनगर को अपना लक्ष्य बनाया। लोचन सिंह भांडेर पर धावा करना चाहता था, परंतु देवी सिंह की स्पष्ट आज्ञा थी कि भांडेर पर आक्रमण करके कठिनाइयों को न बढ़ाया जाए। यह प्रपंच लोचन सिंह की समझ में अच्छी तरह न आता था कि भांडेर की सेना हमारे ऊपर तो आक्रमण करे और हम शत्रु के राज्य के बाहर से उसका विरोध करें, परंतु उसके घर में घुस कर मार न करें। इसका समाधान लोचन सिंह को इस प्रकार मिला कि दिल्ली का बादशाह इस भाँति की लड़ाई को आत्म-रक्षा समझ कर तरह दे देगा, परंतु शाही सूबे में घुस कर मार-काट करने को चुनौती का रूप दे डालेगा।

उधर अलीमर्दान ने सालौन भर्रोली से शीघ्र कूच कर दी। तोपें वह बहुत कम साथ ला सका था। विराटा में प्रवेश करने की पूरी चेष्टा की, परंतु मुसावली के पास दलीप नगर के कई दस्तों के साथ मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में दोनों दलों को अनचाहे स्थानों पर मोर्चाबंदी करनी पड़ी। अलीमर्दान की सेना धनुष के आकार में नदी किनारे-किनारे रामनगर के नीचे तक भरकों में फैल गई। दलीप नगर की सेना रामनगर और विराटा को हस्तगत करने के प्रयत्न में इस मोर्चेबंदी का प्रतिकार करने में प्रथम से ही विवश हुई। न तो अलीमर्दान रामनगर की टुकड़ी से मिल पाता था और न दलीप नगर की सेना विराटा में पहुँच पाती थी। रामनगर के गढ़ से विराटा और देवी सिंह के मोर्चों पर गोली-बारी की जा रही थी, परंतु इतनी शिथिलता और अनजानपने के साथ कि वह बहुत कम हानि पहुँचा रही थी। उधर विराटा की सेना को अपनी भौगोलिक स्थिति के कारण अधिक सुभीता था, परंतु अलीमर्दान की रोकथाम के सिवा वहाँ के भी गोलंदाज और अधिक कुछ नहीं कर पा रहे थे। दलीप नगर की तोपें रामनगर की गढ़ी को ढीला कर देने में कोई कसर नहीं लगा रही थीं।

इस तरह लड़ते-लड़ते कई दिन हो गए। देवी सिंह को चिंता हुई। मंत्रणा के लिए एक दिन राजा, जनार्दन, लोचन सिंह और कुछ और सरदार बैठे।

जनार्दन ने कहा, 'यदि अलीमर्दान के पास और कुमुक आ गई या बादशाह ने हम लोगों को बागी समझ कर दिल्ली से कोई बड़ा दस्ता भेज दिया तो बड़ी कठिनाई होगी। युद्ध खिंच गया है, कौन जाने क्या होगा।'

लोचन सिंह बोला, 'होगा क्या, आप अपने घर में बैठ कर जप-तप करना, हम अपनी निबट लेंगे।'

'इन बातों से काम न चलेगा, लोचन सिंह।' राजा ने कहा, 'इस समय हम यह निश्चय कर रहे हैं कि शीघ्र क्या करना चाहिए।'

लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'मेरी समझ में तो यह आता है कि इधर-उधर की हाथापाई छोड़ कर भांडेर पर ज़ोर हल्ला बोल दिया जाए, तो अलीमर्दान को लेने के देने पड़ जाएँगे।'

शब्दार्थ :
विशारद – पंडित

'यह तो नहीं हो सकता।' जनार्दन ने कहा।

'राजनीति इस समय ऐसा करने से रोकती है।' देवी सिंह बोला।

लोचन सिंह तुरंत बोला, 'मुझे महाराज जो आज्ञा दें, उसके लिए तैयार हूँ, परंतु केवल राजनीति-विशारदों से लड़ाई के दाँव-पेंच सीखने का उत्साह मेरे भीतर नहीं है। उस सेना का भार, जिसका संचालन शर्माजी कर रहे हैं, किसी और को दीजिए तब....

राजा देवी सिंह ने स्नेह और द ढ़ता के ढंग से कहा, 'चामुंडराय, कल तुम्हारी शूरता और विलक्षण स्फूर्ति की फिर परीक्षा है।'

देवी सिंह को रामनगर पर धावा बोलने की योजना।

लोचन सिंह बोला, 'क्या आज्ञा है?'

'कल रामनगर की गढ़ी में हम लोग प्रवेश कर लें।' राजा ने कहा। शब्दों की झंकार सब लोगों के कानों में समा गई। लोचन सिंह की आँखों से चिनगारी-सी छूटी, बोला, 'आज्ञा का पालन होगा, परंतु दो शर्तें हैं।'

राजा ने कहा, 'तुमने चामुंडराय कभी आज तक वीरता-प्रदर्शन में शर्तें नहीं लगाई। आज नई बात कैसी?'

'पहली तो यह', लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'सैन्य-संचालन का काम आपके हाथ में न रहे, और दूसरी यह कि मैं यदि मारा जाऊँ, तो मेरी लाश की मिट्टी बिगड़ने न पावे, उसकी खोज करके शास्त्र के अनुसार दाह किया जाए। नदी में न फेंका जाए और न किसी गड्ढे में डाला जाए।'

'स्वीकृत है।' राजा ने प्रसन्न होकर कहा, 'जनार्दन मेरे साथ रहेंगे। मैं अब इनके दस्ते का संचालन करूँगा।

खंड-पचपन

विराटा की रक्षा द ढ़ता के साथ हो रही थी। दाँगियों ने अपने स्थान को बचाने के लिए प्राणों की होड़ लगा रखी थी। गढ़ी के भीतर आदमी बहुत अधिक न थे। तोपें भी थोड़ी ही थीं। तोपों के चलाने वाले भी चतुर न थे। परंतु उन लोगों में मर-मिटने की लगन थी और विश्वास था कि देवी उनकी सहायता पर हैं।

विराटा में युद्ध।

नदी के पश्चिम तटवर्ती भरकों से अलीमर्दान की सेना विराटा की गढ़ी पर आक्रमण करती थी, परंतु बेतवा की धार उसे विफल-मनोरथ कर देती थी। देवी सिंह की सेना की चपेट के कारण अलीमर्दान को विराटा को पीस डालने का अवकाश न मिल पाता था, नहीं तो विराटा के थोड़े से बहादुर दाँगी बहुत देर तक नहीं टिक सकते थे।

विराटा-युद्ध में कुंजर सिंह को कोई स्थान न मिल सका था। सबदल सिंह की यह धारणा थी कि कुंजर सिंह को हरावल में या कहीं पर भी कोई मुख्य पद देने से देवी सिंह का विमुख हो जाना संभव है। ऐसी दशा में उसे मंदिर की रक्षा के काम पर नियुक्त कर दिया। कुंजर सिंह का विराटा से निकल भागना असंभव था। सबदल सिंह को विश्वास था कि उसे वहाँ केवल बने रहने देने में देवी सिंह अप्रसन्न न होंगे।

एक दिन कुंजर सिंह ने रामदयाल को मंदिर के पास अचानक देखा। चकित हो गया। खासा कड़ा पहरा देते हुए भी कैसे प्रवेश पा गया? उसकी पहली इच्छा यही हुई कि तलवार के वार से समाप्त कर दे, परंतु रामदयाल मुस्कराता हुआ उसी की ओर बढ़ा। कुंजर सिंह अपनी इच्छा पूरी करने में हिचक गया।

शब्दार्थ :

किंकर्तव्यविमूढ़ – असंमजस में पड़ना

टिप्पणी

रामदयाल का सबदल सिंह के पास देवी सिंह का संदेश लेकर जाना तथा रास्ते में कुंजर से टकरा जाना।

रामदयाल ने कहा, 'राजा मुझे शायद अपना शत्रु समझते हैं। संभव है, राजा की कल्पना सही हो।'

कुंजर सिंह इस बेधड़क मंतव्य पर क्षुब्ध हो गया और किंकर्तव्यविमूढ़।

रामदयाल ने और पास आकर कहा, 'परंतु आप और मैं समान भाव से इस गढ़ी की रक्षा के आकांक्षी हैं। मैं अब महारानी की सेवा में नहीं हूँ। राजा देवी सिंह का संदेशा लाया हूँ।'

'रानी को किस दलदल में फँसा कर चले आए हो?' कुंजर सिंह ने कठोरता के साथ प्रश्न किया।

'मैंने किसी को दलदल में नहीं फँसाया है।' रामदयाल ने ठंडक के साथ उत्तर दिया, 'मैं खुद उनके पीछे बहुत बरबाद हूँ। बहुत मारा-मारा फिरा हूँ। उनका मुझ पर भी विश्वास नहीं रहा, तब निकाल दिया। मैं राजा देवी सिंह की शरण में गया। उन्होंने क्षमा प्रदान करके अपना लिया है और यहाँ भेजा है। राजा देवी सिंह के नाते से आप भले ही मुझे अपना बैरी समझें, परंतु मैं आपके बैर के योग्य नहीं हूँ।'

कुंजरसिंह ने एक क्षण सोचा। रामदयाल की बात पर उसे ज़रा भी विश्वास न हुआ। पूछा, 'क्या संदेशा लाए हो?'

'यदि क्षमा किया जाऊँ, तो कहना चाहता हूँ कि मेरा संदेशा यहाँ के राजा सबदल सिंह के लिए ही है।'

कुंजर सिंह का जी जल गया। बोला, 'तब चलो उनके पास। मैं साथ चलता हूँ।'

'किसी को भेज कर उन्हें यहीं बुलवा लीजिए। सबके सामने जाने से संदेश के खुल कर फैल जाने का भय है।' रामदयाल ने कहा।

पास ही एक तोप लगी हुई थी। गोलंदाज और सैनिक वहाँ नियुक्त थे। कुंजर सिंह ने एक सैनिक को बुला कर कहा, 'यह मनुष्य शत्रु या मित्र पक्ष का है। अभी निश्चय नहीं हो सकता कि किस श्रेणी में इसे समझा जाए। राजा से कुछ बात करना चाहता है। उन्हें तुरंत यहाँ भेज दो। मैं इस पर तब तक पहरा लगाए हूँ।'

थोड़ी देर में वह सैनिक सबदल सिंह को लेकर आ गया। राजा ने उतावली में पूछा, 'क्या बात है?'

वह बोला, 'क्या मैं राजा कुंजर सिंह के सामने कह सकता हूँ? राजा देवी सिंह का संदेशा है।'

कुंजर सिंह ने झुँझला कर, 'मैं अब विराटा का शुभाकांक्षी हूँ। अब जो विराटा के मित्र हैं, वे मेरे मित्र हैं और जो उसके शत्रु हैं, वे मेरे शत्रु।'

सबदल सिंह बोला, 'तुम अपना संवाद सुनाओ।'

रामदयाल ने कहा, 'कल बड़े ज़ोर का आक्रमण आपकी गढ़ी पर होगा-अलीमर्दान की सेना का। उसका ध्यान बँटाने के लिए हमारे महाराज रामनगर पर बड़े ज़ोर का हल्ला बोलेंगे। आप तोपों की बाढ़ का पक्का बंदोबस्त रखें।'

खंड-छप्पन

रात का समय था। काली रात। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। पवन ने पेड़ों को चूम कर सुला-सा दिया था। बेतवा अचेत पत्थरों से निरंतर टकरा कर अनंत कल-कल शब्द

रच-रचकर रह-रह जाती थी।

कुंजर सिंह मंदिर की दीवार के पास, एक टोर की आड़ में, जहाँ से नदी की धार रामनगर की ओर से बह कर आई है, कंधे से बंदूक लगाए अकेला बैठा था। उत्साह था, हृदय में अपूर्व बल प्रतीत होता था-मंदिर की रक्षा के लिए, मंदिर की विभूति के लिए। दिन को गोलियाँ पास से निकल जाती थीं, गोले धम से आ कर धूल और कंकड़ों को बिखेर देते थे। एक छोटी-सी जगह उस युद्ध में सबदल सिंह ने दे रखी थी, उसको उस राजकुमार ने बहुत समझा। मुस्तैदी से अपने स्थान पर डटा रहता था। केवल प्रातः काल मंदिर में दर्शन के लिए जाता था और एक-आध बार दिन में भी नरपति की कुशल-क्षेम पूछने को गुफ़ा पर पहुँच जाता था। यह टोर, जहाँ एक कंबल और लोटा ले कर कुंजर सिंह सशस्त्र डटा रहता था, उसके लिए तीर्थस्थान-सी हो उठी थी।

परंतु उस रात मन बेचैन था। रामदयाल पिशाच है। उसकी पैशाचिकता को सबदल सिंह नहीं समझता। गोमती उसे बिल्कुल नहीं पहचानतीं। वह क्यों आया है? अवश्य अलीमर्दान का भेदी है। निस्संदेह कुछ उत्पात खड़ा करेगा, शायद विराटा को ध्वस्त करने की चिंता में हो। कुमुद इस युद्ध का लक्ष्य है। देवी सिंह बचाने के लिए आ रहा है। यदि इस समय मैं दलीप नगर का राजा होता, तो देवी सिंह की अपेक्षा कहीं अधिक प्रबलता और चतुरता के साथ युद्ध करता। राजा नायक सिंह के वीर्य से उत्पन्न, एक हाथ भूमि के लिए जंगलों में मारा-मारा भटके और देवी सिंह दलीप नगर की सेनाओं का संचालन करे।

रामदयाल के विराटा आने पर कुंजर के मन में आशंका का सूत्रपात।

रामदयाल क्यों आया? वह रामदयाल जो राजा नायक सिंह की वासनाओं की त प्ति के लिए खुल्लमखुल्ला साधन जुटाया करता था, वही जो देवी सिंह का शत्रु है और साथ ही विराटा के सब लोगों का और अवश्य ही विराटा-निवासिनी कुमुद का भी। उसने मन ही मन सोचा-'मैं इसके कुचक्रों का निवारण कर सकता हूँ। करूँगा।' फिर अपनी तोपों की ओर ध्यान गया जिस प्रयोजन से वे वहाँ स्थित थीं और वह स्वयं उस स्थान पर जिस धारणा को लेकर गड़ा-सा था, उस ओर भी ध्यान गया।

कुंजर सिंह दबे पाँव गुफ़ा की ओर गया।

गुफ़ा में निविड़ अंधकार था। पत्थर से सट कर कुंजर सिंह ने कान लगाया। उस तमोराशि में केवल कुछ साँसों का शब्द सुनाई पड़ता था।

इस गुफा में वह देवी है। कुंजर सिंह ने सोचा, 'कल्याण और रूप, स्निग्धता और लावण्य, वरदान और प्रेरणा की वह निधि उस कठोर गुफ़ा के भीतर!' कुंजर सिंह और अधिक नहीं ठहरा। उसका कर्तव्य इस निधि की रक्षा के साथ संबद्ध था। लौट आया। मन में कहा—देवी को किसी का कोई स्वप्न भी कभी आता होगा?'

खंड-सतावन

दलीप नगर और भांडेर की सेनाएँ एक-दूसरे पर बिना बड़ा जनसंहार किए हुए तोपें और बंदूकें दाग रही थीं। इक्के-दुक्के सैनिक लड़-भिड़ जाते थे, कभी-कभी, छोटी-छोटी टोलियों की मुठभेड़ भी हो जाती थी। परंतु सौ-पचास हाथ भूमि इधर या उधर, इससे अधिक जय या पराजय किसी पक्ष को भी प्राप्त न हो पाती थी।

शब्दार्थ :
स्निग्धता – कोमलता
लावण्य – सौंदर्य
निधि – खजाना

टिप्पणी

लोचन सिंह द्वारा देवी सिंह को तत्काल अलीमर्दान की सेना पर धावा बोलने की सलाह।

अकस्मात् राजा, जनार्दन शर्मा, लोचन सिंह इत्यादि मुसावली के निकटवर्ती नाले में इकट्ठे हो गए।

आगे क्या करना चाहिए, इस पर सलाह होने लगी।

लोचन सिंह ने कहा, 'यहीं गड़े-गड़े मरना तो अब बिल्कुल अच्छा नहीं लगता। हथियार बिना चलाए ही कदाचित् किसी दिन टें हो जाना पड़े।'

'तब क्या किया जाए?' जनार्दन ने धीरे से पूछा।

'अलीमर्दान की सेना पर तीर की तरह टूट पड़ना चाहिए।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया।

'और तीर की तरह छूट निकल कर कमान को खाली कर देना चाहिए।' राजा देवी सिंह ने व्यंग्य किया।

'जैसी मरजी हो।' लोचन सिंह ने कुढ़कर कहा, 'लड़ाई के बहाने भड़भड़ करते रहिए, जब अलीमर्दान की सेना दुगुनी-चौगुनी हो जाए, तब घर चले चलिए।'

देवीसिंह का थका हुआ चेहरा लाल हो गया। सोचने लगे। एक पल बाद बोले, 'आज रात तक रामनगर पर अपना झंडा फहरा सकोगे?'

लोचनसिंह उत्तर देने में ज़रा-सा हिचका।

देवी सिंह, 'मौत के बदले रामनगर मिलेगा, लोचन सिंह!'

'मैं तैयार हूँ।' लोचनसिंह ने द ढ़ता से कहा।

जनार्दन ज़रा कसे स्वर में बोला, 'और आपके सरदार?'

लोचन सिंह ने कहा, 'मेरे साथी सरदार कुछ करने या मरने के लिए बहुत उतावले हो रहे हैं, परंतु....'

जनार्दन उत्तेजित हो कर कुछ कहना ही चाहता था कि देवी सिंह ने कहा, 'मेरा एक मंतव्य है।' लोचन सिंह, 'क्या मरजी है?'

देवी सिंह, 'रामनगर पर शीघ्र अधिकार कर लेने के लिए बढ़ना यमराज को न्योतने के बराबर है, परंतु अलीमर्दान पर धावा बोलने की अपेक्षा यह भी कहीं ज्यादा अच्छा है। रामनगर का गढ़ और तोपें हाथ में कर लेने के उपरांत अलीमर्दान से खुली मुठभेड़ करना सरल हो जाएगा।'

'हम जितने आदमी रामनगर की ओर आज बढ़ेंगे, सब अपने-अपने सिर पर कफन बाँधेंगे। वाह! क्या वेश रहेगा। कोई देखेगा तो कहेगा कि मौत से लड़ने के लिए यमदूत जा रहे हैं।'

खंड-अठावन

दूसरे दिन संध्या के पूर्व नित्य-जैसी लड़ाई होती रही। लोचन सिंह जितने सैनिक रामनगर पर आक्रमण करने के लिए चाहता था, उतने उसे मिल गए। उनके चेहरे पर उत्साह था या नहीं, यह अँधेरे में नहीं दिखाई पड़ रहा था। बिल्कुल पास से देखने वाला जान सकता था कि वे लोचन सिंह के साथ होने पर भी फुसफुसाहट में ठिठोली कर रहे थे और मुस्कराते भी थे।

नदी के किनारे-किनारे बिना पहचाने जाना असंभव था। इसलिए अपने भरके की सीध से कभी तैर कर और कभी भूमि पर रामनगर तक चुपचाप जाना लोचन सिंह ने

शब्दार्थ :
मंतव्य – सलाह, विचार

तय किया। रामनगर के नीचे पहुँच कर फिर आक्रमण करना था या मौत के मुँह में धँसना था।

लोचन सिंह ने नदी में उतरने के लिए कपड़े कसे। पानी में जाने से पहले कुछ सोचने लगा। पास खड़ा एक सैनिक बोला, 'दाऊजू, देखते क्या हो, कूद पड़ो।'

लोचनसिंह ने कहा, 'जो कुछ देखना' है, रामनगर में देखूँगा। यहाँ देखने को रखा ही क्या है। नदी का तैरना शूरता का काम नहीं, केवल बल का काम है।'

नदी के बहाव के विपरीत अँधेरी रात में तैरना वीरता का भी काम था, और खास तौर से उस समय, जब किनारों पर शत्रु बंदूकें भरे धाँय-धाँय कर रहे थे।

घोर परिश्रम के पश्चात् रामनगर से कुछ दूरी पर सब-के-सब पहुँच गए। वहाँ पानी चट्‌टानों से हो कर आया है। धार तेज बहती है। विजय प्राप्ति के लिए सुरक्षित स्थान पर इकट्‌ठा होना आवश्यक था। परंतु इस स्थान पर प्रकृति को पराजित करना सहज न था। टुकड़ी तितर-बितर हो कर, इधर-उधर चट्‌टानों पर बैठ कर दम लेने लगी। थोड़े समय पश्चात् किसी पूर्वनिर्णय के अनुसार दलीपनगर की सेना की ओर से रामनगर के ऊपर असाधारण रीति से गोलीबारी शुरू हो गई। लोचन सिंह को अपने निकट एक ऊँची चट्‌टान दिखाई दी, जो चढ़ाव खाती हुई रामनगर के किले की दीवार के नीचे तक चली गई थी। परंतु बीच में तेज धार वाला पानी पड़ता था और साथी इधर-उधर बिखरे हुए थे। एक नाव दिखाई दी।

लोचन सिंह ने आवाज दबा कर कहा, 'पीछे-पीछे आओ।'

'धायँ-धायँ की आवाजें आगे-पीछे जल्दी-जल्दी हुईं। तेज बहती हुई धार पर गोलियाँ धर्र हो गईं। लोचन सिंह पानी में कूद पड़ा। परंतु नाव के पास पहुँचने में धार बार-बार विघ्न उपस्थित करने लगी। लोचन सिंह को आभास हुआ कि अब की बार बचना असंभव होगा। वह धार के खिलाफ बहुत बल लगाने लगा और धार भी उसे ज़ोर से झटके देने लगी। हाँफता हुआ लोचन सिंह धीरे से चिल्लाया, 'क्या सब मर गए?'

पास की चट्‌टान से टकराते हुए पानी को चीरते हुए आकर एक व्यक्ति ने स्पष्ट कहा, 'अभी तो सिर का कफन गीला भी नहीं हुआ है।'

'शाबाश! लोचन सिंह बोला, 'कौन?'

उत्तर मिला, 'बुंदेला।'

वह सिपाही किसी द ढ़ता में इतराता हुआ-सा, उस धार को पार करके नाव के पास जा पहुँचा। लोचन सिंह ने भी दुगुना बल लगा दिया। वह भी नाव के नीचे जा लगा। पीछे से और सिपाहियों के आने की आवाज मालूम हुई। जो सिपाही पहले आया था, उसने नाव पर चढ़ने की चेष्टा की। नाव के भीतर से किसी ने बंदूक की नाल से उसे ढकेल दिया। वह नीचे गिर गया और थोड़ा-सा बह गया। तब तक लोचन सिंह आ धमका। उसके साथ भी वही क्रिया की गई। लोचन सिंह भी नीचे से धसक गया। इतने में वह सैनिक आ गया और नाव पर चढ़ गया। लोचन सिंह और कुछ अन्य सिपाही भी नाव में जा घुसे। नाव में रामनगर के छह-सात सैनिक थे, परंतु दो के सिवा और सब सो रहे थे। दूर की तोपों और पास की बंदूकों से वे थके-थकाए जाग न सके थे परंतु नवागंतुकों के धँस पड़ने से रस्सों से बँधी हुई नाव डगमगा उठी। दो सिपाही

टिप्पणी

जो बंदूकें लिए तैयार थे, चला न पाए। लोचन सिंह ने उन्हें तलवार से असमर्थ कर दिया। लोचन सिंह और उसके सिपाहियों को नाव में जितनी बंदूकें मिलीं, ले लीं और अपने पास की पिस्तौलें पौंछ-पौंछकर भर लीं। बोंडे सुलगाकर और उन्हें भलीभाँति छिपाकर किले की ओर आड़ें लेती हुई यह टुकड़ी बढ़ी। ऊपर से तोपें आग उगल कर दलीप नगर की सेना को जवाब देने लगी थीं। कभी-कभी आग की चादर-सी तन जाती थी।

आगे चल कर उस बातूनी सैनिक ने लोचन सिंह से कहा, 'अब क्या करोगे, दाऊजू?'

'फाटक पर गोलियों की बाढ़ दागो।' लोचन सिंह ने आज्ञा के स्वर में उत्तर दिया। वह सैनिक बिना किसी झिझक के बोला, 'फाटक पर बाढ़ दागने की अपेक्षा उस पर ज़ोर का हल्ला बोलना अच्छा होगा।'

लोचन सिंह ने कड़वे कंठ से कहा, 'यह गलत कार्यवाही होगी। जो कहता हूँ, सो करो। तुम अकेले फाटक पर जा कर चिल्लाओ।'

वह सैनिक बिना कुछ कहे-सुने तुरंत फाटक की ओर दीवार के किनारे-किनारे बढ़ गया।

लोचन सिंह का अपने सिपाहियों के साथ राम नगर के फाटक में प्रवेश।

दूसरे सैनिकों ने कहा, 'हमें भी वहीं जा कर मरने की आज्ञा हो?'

लोचन सिंह ज़रा सहमा। मौत की छाती पर सवार सैनिकों की इस बात के भीतर किसी उलाहने की छाया देख कर वह ज़रा-सा लज्जित भी हुआ। बोला, 'हम सब वहीं चल रहे हैं।'

इतने में वह वाचाल सैनिक फाटक के पास पहुँच गया। तोपों की उस धूमधाम में आवाज खूब ऊँची करके चिल्लाया, 'खोलो, हम आ गए।'

फाटक पर रामनगर की सेना के योद्धा थे, वे घबराए। इधर-उधर बंदूकें दाग हड़बड़ाहट में पड़ गए। उसी समय लोचन सिंह और उसके साथियों ने फाटक के पास आकर ज़ोर का शोर-गुल किया। कुछ बंदूकें भी दागीं।

भीतर के सिपाही फाटक छोड़ कर भीतर की ओर हटे। लोचन सिंह और उनके साथी कमंद की सीढ़ी लगा कर दीवार पर चढ़ गए।

छोटी रानी का युद्ध में कूद पड़ना

भीतर घमासान युद्ध होने लगा। बंदूकें-तमंचे कड़कने और तलवारें खनकने लगीं। रामनगर वालों को अँधेरे में यह जान न पड़ा कि दूसरी ओर से कितने सैनिक घुस आए हैं। फाटक खुल गया और रामनगर की सेना में भगदड़ मच गई। छोटी रानी लड़ती हुई फाटक से निकल गई।

दलीप नगर की सेना ने जोश के साथ जय जयकार किया।

रामनगर में बहुत कम लड़ाके भागने से बचे। जो नहीं भागे थे, उन्होंने हथियार डाल दिए। लोचन सिंह की सेना के भी कई आदमी मारे गए और अधिकांश घायल हो गए। परंतु अपने अदम्य उत्साह और विजय के हर्ष में घावों की पीड़ा बहुत कम जान पड़ी।

बातूनी सिपाही ने लोचन सिंह से कहा, 'दाऊजू, फाटक बंद कर लीजिए, अपनी सेना को जय-जयकार सुना कर बुलाइए, नहीं तो यह विजय अकारथ जाएगी।'

लोचन सिंह ने पूछा, 'तुम्हारा नाम?'

'कफन सिंह बुंदेला।'

शब्दार्थ :

बोंडा – बारूद में आग देने का पतीला

हल्ला बोलना– आक्रमण करना

वाचाल – बातूनी

कमंद – फंदा लगी रस्सी जिसे दीवार पर फेंककर फँसा दिया जाता है।

तमंचा – पिस्तौल बंदूक

लोचन सिंह ने कोई प्रत्युत्तर नहीं दिया। फाटक बंद करवा कर देवी सिंह का जय जयकार करता रहा। दलीप नगर की सेना का घेरा रामनगर की बाहरी वाली सेना और अलीमर्दान वाले दस्ते ने छोड़ दिया और टुकड़ियाँ दूर हट गईं। दलीप नगर की सेना ने रामनगर के गढ़ पर अधिकार कर लिया। उस अँधेरी रात में यह किसी को न मालूम होने पाया कि देवी सिंह ने कब और कहाँ से गढ़ में प्रवेश किया।

देवी सिंह के आ जाने पर गढ़ की ढूँढ़-खोज की गई। छोटी रानी तो निकल गई थीं, पर बड़ी रानी मिल गईं। उन्हें कैद कर लिया गया।

देवी सिंह का भी गढ़ में प्रवेश

रामनगर के पतन के बाद पतराखन ने राजा देवी सिंह का अधिकार स्वीकृत कर लिया, परंतु राजा ने उसे रामनगर में ससैन्य रहने का अवसर नहीं दिया। बेतवा के पूर्वी किनारे पर ही पूर्ववत् रहने को कहा, जिससे आवश्यकता पड़ने पर उसकी सेना का उपयोग किया जा सके।

बड़ी रानी को अपनी मूर्खता पर बड़ा पछतावा था, राजा ने क्षमा दे दी। द ष्टि ज़रूर उन पर काफ़ी रखी। रानी ने इस नजरबंदी को ही बहुत गनीमत समझा।

विजय की रात्रि के बाद जो सवेरे रामनगर में राजा के सरदारों की बैठक हुई, उसमें सभी लोग राजा की इस उदारता पर मन में रुष्ट थे। छोटी रानी का जिक्र आने पर लोचन सिंह ने कहा, 'महाराज यदि अपराधियों को दंड न देंगे तो विजय पर विजय बेकार होती चली जाएगी।'

जनार्दन अवसर पाकर मुस्कराया। बोला, 'दाऊजू, यह प्रश्न सेनापति नहीं राजनीतिज्ञ ही सुलझा सकते हैं।'

लोचन सिंह को किसी बहस का स्मरण हो आया। राजा से बोला, 'रामनगर की जागीर कब और किसे दी जाएगी?'

जनार्दन बोला, 'चामुंडराय लोचन सिंह के सिवा उसे कौन पाएगा?' महाराज ने उसी समय तय कर दिया था। कुछ और निर्णय उसके विषय में नहीं करना है। मुझे तो चिंता छोटी रानी की है। उन्हें तुरंत कैद करने की आवश्यकता है। उनके स्वतंत्र रहने से बहुत सरदार चल-विचल हो जाते हैं और अलीमर्दान को उनकी ओट में अपना काम बनाने का सुभीता भी रहता है।'

राजा ने कहा, 'छोटी रानी को जो कोई कैद कर लावेगा, उसे सहस्र मुहरें इनाम में दी जाएँगी।'

जनार्दन खुशी के मारे उछल पड़ा। बोला, 'सौ मुहरें महाराज के दीन ब्राह्मण जनार्दन की ओर से भी दी जाएँगी।'

राजा हँस पड़ा। एक क्षण बाद बोला, 'रामनगर की जागीर का सिरोपाव चामुंडराय लोचन सिंह को इसी समय दे दिया जाए, शर्माजी।'

लोचन सिंह ने बारीक आह ले कर कहा, 'यदि मुझे मिल सकती होती, तो पहले ही कह चुका हूँ कि मैं महाराज को लौटा देता, परंतु वह मुझे नहीं मिलना चाहिए।'

'क्यों?' राजा ने ज़रा विस्मय के साथ पूछा।

उत्तर मिला, 'इसलिए कि मैंने रामनगर नहीं जीता।'

'तब किसने जीता?' जनार्दन ने प्रश्न किया।

शब्दार्थ :

सहस्र – हजार

सिरोपाव – जिम्मेदारी

लोचन सिंह ने कहा, 'उसका संपूर्ण श्रेय मेरे एक सैनिक को है, रात के कारण उसका नाम नहीं पूछ पाया। वह जीवित अवश्य है, परंतु अँधेरे में न मालूम कहाँ चला गया। उसकी खोज करवाई जानी चाहिएः मर गया हो, तो उसके घर में जो कोई हो, उसे यह जागीर दे दी जाए।'

राजा ने सहज रीति से सम्मति प्रकट की, 'यदि सबकी सम्मति हो तो मैं यह चाहता हूँ कि रामनगर का कुछ भाग पतराखन के पास रहने दिया जाए। अब यह शरणागत हुआ है, इसलिए बिल्कुल बेदखल न किया जाए।'

लोचन सिंह ने निरपेक्ष भाव से कहा, 'हमारे उस सैनिक का पता महाराज पहले लगवाएँ, तब रामनगर का कोई एक टुकड़ा पतराखन को या और किसी को दें।'

राजा बिना उत्तेजना के बोला, 'लोचन सिंह, तुम्हें उस सिपाही ने कुछ तो अपना नाम बताया होगा?'

'बतलाया था, महाराज।' लोचन सिंह ने उत्तर दिया, 'परंतु वह नाम बनावटी जान पड़ता है। कहता था, मेरा नाम कफन सिंह बुंदेला है....'

'विचित्र नाम है!' राजा ने मुस्करा कर ज़रा आश्चर्य के साथ कहा, 'तुम्हारी सेना में क्या सब योद्धा इसी तरह के बेतुके नाम रखते हैं?'

लोचन सिंह गंभीर स्वर में बोला, 'यदि मेरी सेना में सब सैनिक उस कफन सिंह सरीखे हों, तो आपको घर-घर चामुंडराई की उपाधि न बाँटनी पड़े।'

राजा ने पूछा, 'क्या तुम उसका स्वर पहचान सकते हो?'

राजा ने तुरंत स्वर बदल कर कहा, 'कफन सिंह बुंदेला।'

लोचन सिंह का क्रोध घोर विस्मय में परिवर्तित हो गया। क्षीण स्वर में बोला, 'यही स्वर सुना था।'

'महाराज का!' जनार्दन ने आश्चर्य के साथ कहा।

देवी सिंह खूब हँस कर बोला, 'महाराज का नहीं, कफन सिंह बुंदेला का।'

लोचन सिंह सँभल गया। गंभीर होकर बोला, 'तब आप जागीर चाहे जिसे दे सकते हैं।'

'तीन-चौथाई लोचन सिंह को और एक-चौथाई पतराखन को, यदि वह स्वामिभक्त बना रहा तो।'

खंड-उनसठ

अपनी सेना के प्रधान भाग से देवी सिंह का संबंध रामनगर में स्थापित हो गया था, परंतु विराटा की इससे मुक्ति नहीं हुई। अलीमर्दान की सेना की कमान रामनगर के पास से खिंच कर विराटा की ओर और अधिक सिमट आई। अपनी ओर अलीमर्दान की सेना को और अधिक सिमटा हुआ देख कर राजा सबदल सिंह ने समझा, दलीप नगर की सेना पीछे हट गई है। सेना छोटी थी। मुट्ठी-भर दाँगी इतनी बड़ी फ़ौज का सामना कर रहे थे-अपनी बान पर न्योछावर होने के लिए। तोपें थोड़ी थीं, साहस बहुत।

कुंजर सिंह तोप के काम में बहुत कुशल था। यद्यपि सबदल सिंह ने राजा देवी सिंह के भय के कारण कुंजर सिंह को छोटा-सा पद ही दे रखा था, तथापि अपनी दिलेरी और चतुरता के कारण बहुत थोड़े समय में उसे तोपची से सभी तोपों के नायक का पद मिल गया। उसे सेना की विश्वासपात्रता सहज ही प्राप्त हो गई। वह विराटा के कागजों

में सेनापति नहीं था, परंतु वास्तव में था और सैनिकों के हृदय में उसके शौर्य ने स्थान कर लिया था।

रामनगर-विजय के दूसरे दिन संध्या समय राजा देवी सिंह ने नाव द्वारा विराटा जाने का निश्चय किया। अलीमर्दान से आँख बचाने के लिए एक छोटी-सी नाव में थोड़े से आदमी ले लिए और लोचन सिंह, जनार्दन इत्यादि से जाते समय कह गए कि आध ी रात के पहले लौट आएँगे।

बेतवा का पूर्वी तट पतराखन के शरणागत हो जाने के कारण निस्संकट हो गया था, इसलिए उसी ओर से, अँधेरे में, देवी सिंह अपनी नाव विराटा ले गया मंदिर के पीछे और नाव लगा दी। अपने सिपाहियों में से दो को साथ लेकर वह अनुमान से मंदिर की ओर बढ़ा।

वहीं एक तोप लगी हुई थी। कुंजर सिंह पास खड़ा, परंतु राजा असाधारण मार्ग से होकर आया था, इसलिए जब तक बिल्कुल पास आ न गया, कुंजर सिंह को मालूम न हुआ।

जब देवी सिंह पास आ गया, कुंजर ने ललकारा और तलवार खींच कर दौड़ा।

देवी सिंह ने शांत, परंतु गंभीर स्वर में कहा, 'मैं हूँ दलीप नगर का राजा देवी सिंह। कुंजर सिंह ने वार नहीं किया, परंतु पास के सैनिकों को सावधान करके देवी सिंह के पास आगे बढ़ गया।

कंपित स्वर में बोला, 'इस अँधेरे में आपके यहाँ आने की क्या ज़रूरत थी?'

'मैं हूँ कुंजर सिंह। महाराज नायक सिंह का कुमार।'

'आप! तुम यहाँ कैसे?'

इस संबोधन की अवज्ञा कुंजर सिंह के हृदय में चुभ गई। देवी सिंह से कहा, 'क्षत्रिय अपनी तलवार की नोंक से अपने लिए संसार में कहीं भी ठौर बना लेता है।'

'आपको विराटा का शत्रु समझा जाए या मित्र?'

'जैसी आपकी इच्छा हो।'

'सबदल सिंह कहाँ है?'

'गढ़ी की रक्षा कर रहे हैं।'

'मैं उनसे मिलना चाहता हूँ?'

'किसलिए?'

'रामनगर हमारे हाथ में आ गया है। विराटा के उद्धार के लिए सुभीता होते ही हम शीघ्र आते हैं, तब तक अलीमर्दान का निरोध द ढ़ता के साथ करते रहें, इस बात को बतलाने के लिए।'

'यह संदेश उनके पास यथावत् पहुँचा दिया जाएगा।'

देवी सिंह ने क्षुब्ध होकर कहा, 'आप इस गढ़ी में मित्र के रूप में न होते, तो आप जिस पद के वास्तव में अधिकारी हैं, वह आपको तुरंत दे दिया जाता।'

कुंजर सिंह ने पहले अपनी तोप और सुलगते हुए बोंडे की ओर, फिर रामनगर की ओर देखा। एक बार मन में आया कि सैनिकों को आज्ञा देकर आगंतुक को कैद कर लूँ

टिप्पणी

और तोपों के मुँह से रामनगर पर गोले उगलवा दूँ, परंतु कुछ सोच कर रह गया। बोला, 'इसका ठीक-ठीक कभी उत्तर दूँगा अवश्य।'

देवी सिंह ने कहा, 'मुझे इस समय इस व्यर्थ विवाद के लिए अवकाश नहीं। यदि आप सबदल सिंह को स्वयं बुला सकते हों, तो बुला लाइए, नहीं तो इन सैनिकों में से कोई उनके पास चला जाए और कह दे कि दलीप नगर के महाराज बड़ी देर से खड़े बाट जोह रहे हैं।'

कुंजर सिंह ने दाँत पीसे, परंतु बड़े संयम के साथ अपने सैनिकों से कहा, 'एक आदमी राजा के पास जाओ। जो कुछ इन्होंने कहा है, उन्हें सुना देना। इनसे मुलाकात मंदिर में होगी। चार आदमी इन्हें लेकर मंदिर में बिठलाओ।'

इस पर एक सैनिक सबदल सिंह के पास गया और चार देवी सिंह और उनके साथियों को मंदिर में ले गए। उस समय कुंजर सिंह ने बड़े क्षोभ और क्रोध की द ष्टि से उन लोगों की ओर देखा। मन में बोला– इस भुक्खड़ भिखारी के दिमाग में इतना घमंड! दलीप नगर के महाराज! महाराज नायक सिंह के दलीप नगर का अधिकारी यह चोर! चाहे जो हो, यदि इसके टुकड़े-टुकड़े न किए तो मनुष्य नहीं।

एक सैनिक ने कुंजर सिंह से सावधानी जताने के लिए कहा, 'यह शायद देवी सिंह न हों। नवाब के आदमी हों, वेश बदल कर आए हों।'

कुंजर सिंह बोला, 'हूँ?'

सिपाही कहता गया, 'मंदिर को कहीं ये लोग अपवित्र न कर दें, देवी की पुजारिन...'

कुंजर सिंह ने जाग्रत-सा हो कर कहा, 'तुमने कैसे अनुमान किया?'

'मैं खूब जानता हूँ।' वह बोला, 'ये लोग मूर्तियाँ तोड़ डालते हैं, स्त्रियों को ज़बरदस्ती पकड़ ले जाते हैं। उसके साथ दो आदमी भी हैं। नाव में बैठ कर आए होंगे। पठारी के नीचे नाव लगी होगी। उसमें और आदमी भी होंगे।'

तमक कर कुंजर सिंह ने कहा, 'और हमारे सिपाही क्या उन लोगों के गुलाम हैं जो उन्हें उत्पात करने देंगे?' वह सैनिक ज़रा सहम गया परंतु ढिठाई के साथ बोला, 'हम लोग तो अपने प्राणों की होड़ लगा ही रहे हैं, परंतु कोई अनहोनी न हो जाए, इसलिए कहा। शायद उसके पास और आदमी किसी दूसरी ओर से भी आ जाएँ।'

कुंजर सिंह ने सोचा-कहीं देवी सिंह नरपति सिंह इत्यादि को रामनगर न लिवा ले जाएँ। शायद गोमती को लिवाने आया हो और उसके साथ उन लोगों से भी चलने के लिए कहे। उसने और अधिक नहीं सोचा। सैनिक से कहा, 'तुम तोप पर डटे खड़े रहो। मैं देखता हूँ, वहाँ क्या होता है। राजा सबदल सिंह मंदिर में थोड़ी देर में आते होंगे। वहाँ मेरी उपस्थिति आवश्यक होगी।

थोड़ी देर में वह मंदिर के द्वार पर पहुँच गया। वहाँ पहरे पर सिपाही थे। जो आदमी कुंजर सिंह ने देवी सिंह के साथ किए थे, वे भी पहरे वाले सिपाहियों के साथ रह गए। भीतर कुछ बातचीत हो रही थी। कुंजर सिंह ने सोचा, वहीं चल कर सुनूँ। पहरे वाले सिपाही से पूछा, 'सबदल सिंह आ गए या नहीं? मालूम हुआ, अभी नहीं आए हैं। कुंजर सिंह और आगे बढ़ा। अभी कुमुद इत्यादि मंदिर छोड़कर अपनी खोह में नहीं गई थीं, परंतु आँगन में अंधकार छाया हुआ था। केवल मूर्ति के पास घी का एक छोटा-सा दीपक

शब्दार्थ :
निरोध – रोक
सरीखा – जैसा

टिप्पणी

टिमटिमा रहा था। उसी जगह बातचीत हो रही थी।

कुंजर सिंह पहले तो ठिठका, फिर सोचा, सबदल सिंह के आने तक बातचीत के लिए आगे न बढ़ूँ। परंतु उसने यह विचार शीघ्र बदल दिया। मन में कहा—देवी सिंह सरीखा आदमी इन लोगों से क्या बातचीत करता है, उसे छिप कर सुनने में कोई दोष नहीं। ज़रा आगे बढ़ कर एक कोने में छिपे-छिपे कुंजर सिंह वहाँ की बातचीत सुनने लगा।

खंड-साठ

देवी सिंह अपने दोनों सैनिकों को लिए हुए, मंदिर में चला गया। मूर्ति के पास दीपक टिमटिमाता हुआ देखकर आगे बढ़ा। सबसे पहले नरपति सिंह मिला। उसने अचकचा कर पूछा, 'आप लोग कौन हैं?'

देवी सिंह ने उत्तर दिया, 'आप लोगों के मित्र।'

देवी सिंह बैठने के लिए उपयुक्त स्थान देखने लगा।

नरपति एक क्षण चुप रह कर ज़रा ज़ोर से बोला, 'आपका नाम?'

'थोड़ी देर में अपने आप प्रकट हो जाएगा।' देवी सिंह ने ज़रा बेतकल्लुफी के साथ कहा।

इतने में रामदयाल आ गया।

पहले उसे संदेह हुआ। फिर सोचा, असंभव है। विश्वास को द ढ़ करने के लिए ज़रा और आगे बढ़ा।

पहचानने में विलंब नहीं हुआ।

तुरंत पीछे हटने की ठानी, परंतु देवी सिंह ने पहचान लिया। बोले, 'रामदयाल!'

'महाराज!' अनायास रामदयाल के मुँह से निकल पड़ा।

देवी सिंह ने कहा, 'बड़ा आश्चर्य है तू यहाँ कैसे आया और कौन तेरे साथ है?' राजा ने बहुत संयत भाव से प्रश्न किया था, परंतु आत्मगौरव से प्रेरित प्रश्न का स्वर काफ़ी ऊँचा हो कर रहा। ज़रा प्रखर स्वर में पूछा, 'जानता है रामदयाल, यह मंदिर है और मैं......

'महाराज, महाराज, मैं निरपराध हूँ। मैंने क्या किया है?'

'तुने जो कुछ किया है, उसका भरपूर पुरस्कार मिलेगा। तेरे सरीखे नराधम की अपवित्र देह कम-से-कम इस देवालय में नहीं आनी चाहिए थी।' फिर देवी सिंह ने स्वर की कर्कशता को कम करके पूछा, 'मंदिर की अधिष्ठात्री कहाँ हैं?'

रामदयाल सँभल कर बोला, 'जिस मंदिर की रक्षा के लिए हिंदू प्राण हथेली पर रखे फिर रहे हैं, उसी की रक्षा के लिए हम लोग भी यहाँ जमा हैं।

'हम लोग।' देवी सिंह आपे से बाहर हो कर बोले, 'बदमाश! नीच! यहाँ से हटना मत।'

'मैं स्वामिभक्त हूँ।' भर्राए हुए गले से रामदयाल बोला, 'मैं स्वामिधर्मी हूँ। मुझे केवल मंदिर की अधिष्ठात्री की ही रक्षा अभीष्ट नहीं है, किंतु जिनके एक संकेत मात्र से मैं अपना सिर घूरे पर काट कर फेंक सकता हूँ उनकी भी रक्षा वांछनीय है और यही कुछ दिनों से मेरा अपराध आपकी द ष्टि में रहा है।'

कोई उत्तर न देकर देवी सिंह ने दूसरा प्रश्न किया, 'राजा सबदल सिंह का

शब्दार्थ :

अनायास – सहज ही

नराधम – नीच आदमी

देवालय – मंदिर

अधिष्ठात्री – देवी

टिप्पणी

निवास-स्थान क्या यहाँ से बहुत दूर है?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'ज़रा दूर है। मैं बुला लाऊँ? जाता हूँ?

'नहीं, कदापि नहीं। 'देवी सिंह ने कड़क कर कहा, 'यहीं खड़ा रह।'

रामदयाल हट नहीं पाया। आधे क्षण उपरांत देवी सिंह ने उसी वेग से फिर पूछा, 'वह स्त्री कहाँ है?'

रामदयाल एक दीर्घ निःश्वास परित्याग कर बोला, 'वह बेचारी आफ़त की मारी, पदवंचित और कहाँ होगी?'

'क्या ? कहाँ छिपाया है?'

गोमती का देवी सिंह के समक्ष उपस्थित होकर वार्तालाप करना।

'यहाँ। और जो कुछ मन में हो, सो कर डालिए। चूकिए नहीं।' गोमती ने पीछे से आ कर कहा। अंचल के सामने के नीचे छोर पर दोनों हाथ बाँधे गोमती बेधड़क राजा के सामने आकर खड़ी हो गई। देवी सिंह ने गोमती को पहले कभी नहीं देखा था। घटना की आकस्मिकता से वह चकित हो गया। रामदयाल पर आँख अपने आप जा पड़ी। वह शायद पहले से तैयार था। बोला, 'महाराज ने शायद न पहचान पाया हो परंतु मैं विश्वास दिलाता हूँ कि बहुत दिन कष्ट में बीते हैं। महारानी ने कष्ट में जीवन बिताना अच्छा समझा, परंतु स्वाभिमान के विरुद्ध अपने आप आपके पास जाना उचित नहीं समझा।'

गोमती क्रुद्ध हो कर बोली, 'रामदयाल, तुम मेरे लिए कुछ भी मत कहो। वह धर्मशास्त्र को बहुत अच्छी तरह जानते हैं। सामंत-धर्म का वीरों की तरह निर्वाह करते हैं। जो कुछ शेष रह गया हो, उसे भी कर डालने दो। मेरे बीच में मत पड़ो।'

रामदयाल, देवी सिंह से बोला, 'महाराज को याद होगा कि उस दिन, अभी बहुत समय नहीं हुआ, पालर में किसी के हाथ पीले करने के लिए बारात सजा कर लाए थे। लड़ाई हो पड़ी, घायल हो गए, फिर वे हाथ पीले न हो पाए। अब तक वे ज्यों-के-त्यों हैं और ये हैं। खैर, अब मुझे मार डालिए।'

देवी सिंह का हाथ खड्ग पर नहीं गया। छाती पर हाथ बाँधे हुए बोले, 'झूठी बात बनाने में इस धरती पर तेरी बराबरी का शायद और कोई न मिलेगा। सच-सच बतला, छोटी रानी को कहाँ छिपाया है? मेरे सामने पहेलियों में बात मत करना, नहीं तो मैं इस स्थान की भी मर्यादा भूल जाऊँगा।'

फिर नरपति की ओर देखते हुए राजा ने कहा, 'मैंने आपको अब पहचाना। कुछ समय हुआ, आप मेरे पास गए थे।'

नरपति कुछ देर से कुछ कहने के लिए उतावला-सा हो रहा था। बोला, 'बहुत दिनों से आपकी इस थाती को हम लोग टिकाए हुए थे। अब आप स्वयं गोमती को लिवाने आ गए हैं, लेते जाइए। सयानी लड़की को अपने घर ही पर रहना अच्छा होता है। इस समय जो कुछ थोड़ी-सी कडुआहट पैदा हो गई, उसे बिसार दीजिएगा।'

'किसे लिवा लेता जाऊँ?' देवी सिंह ने कहा।

'किसे लिवा ले जाएँगे?' गोमती ने तमककर पूछा। बोली, 'क्या मैं कोई ढोर-गाय हूँ?'

देवी सिंह ने नरपति से कहा, 'मैंने इन्हें आज के पहले कभी नहीं देखा। संभव है, वह पालर की रहने वाली है। आपने मुझसे दलीप नगर में कहा था। परंतु मैं इस समय इन्हें

कहीं भी लिवा ले जाने में असमर्थ हूँ।

लड़ाई हो रही है। तोपें गोले उगल रही हैं। मार-काट मची हुई है। अब शांति स्थापित हो जाए, तब इस प्रश्न पर विचार हो सकता है। मैं इस समय यह जानना चाहता हूँ कि छोटी रानी कहाँ है? यहाँ हैं या नहीं?'

कुमुद बोली, 'इस नाम की यहाँ कोई नहीं हैं। मैं दूसरा ही प्रश्न करना चाहती हूँ। क्या आप समझते हैं कि स्त्रियों में निजत्व की कोई लाज नहीं होती?'

देवी सिंह ने नरम स्वर में उत्तर दिया, 'आप सब लोग मेरे साथ रक्षा के स्थान में चलना चाहें तो अभी ले चलने को तैयार हूँ, परंतु दूसरे प्रसंग वर्तमान अवस्था के अनुकूल नहीं हैं।'

'मैं नहीं जाऊँगी।' क्षीण स्वर में गोमती ने कहा। फिर क्षीणतर स्वर में बोली, 'दुर्गा मेरी रक्षा करेंगी।' तुरंत धड़ाम से प थ्वी पर गिर कर अचेत हो गई। कुमुद उसे सँभालने के लिए उससे लिपट-सी गई।

राजा देवी सिंह यथार्थ दशा समझने के लिए उसकी ओर झुके। ज़रा दूर से ही कुंजर सिंह सब सुन रहा था, परंतु इस समय दीपक के टिमटिमाते प्रकाश में उसे वास्तविक वस्तु-परिचय न हुआ। इतना ज़रूर भान हुआ कि देवी सिंह किसी भीषण दुर्घटना के जिम्मेदार हो रहे हैं।

इतने में रामदयाल चिल्लाया, 'सर्वनाश होता है।'

कुंजर सिंह ने तलवार खींच ली। ज़ोर से बोला, 'न होने पाएगा।' और लपक कर देवी सिंह के पास जा पहुँचा।

देवी सिंह तथा कुंजर के बीच विवाद का बढ़ना तथा तलवारें खींच लेना।

देवी सिंह ने भी तलवार खींच ली। उनके साथियों के भी खड्ग बाहर निकल आए। पहरेवालों ने भी समझा कि गोलमाल है। वे हथियार ले कर भीतर घुस आए।

कुंजर सिंह से देवी सिंह बोला, 'दुष्ट, छली, सँभल!'

कुमुद गोमती को छोड़ कर खड़ी हो गई! परंतु विचलित नहीं हुई। कोमल किंतु द ढ़ स्वर में बोली, 'देवी के मंदिर में रक्त न बहाया जाए।'

देवी सिंह रुके। कुंजर सिंह ने भी वार नहीं किया।

कुमुद ने फिर कहा, 'राजा, आपको यह शोभा नहीं देता।'

'मेरा इसमें कोई अपराध नहीं।' 'देवी सिंह बोला, 'यह मनुष्य नाहक बीच में आ कूदा।'

'देवी सिंह' कुंजर सिंह ने दाँत पीस कर कहा, 'ना मालूम यहाँ ऐसी कौन-सी शक्ति है, जो मुझे अपनी तलवार तुम्हारी छाती में ठूँसने से रोक रही है। तुम तुरंत यहाँ से चले जाओ। बाहर जाओ।'

'जाइए।' कुमुद भी बिना किसी क्षोभ के बोली।

देवी सिंह की आँखों में खून-सा आ गया। तो भी स्वर को यथासंभव संयत करके बोले, कुंजर सिंह, मैं आज ही तुम्हारा सिर धड़ से अलग करना चाहता था। परंतु यहाँ न कर सका, इसका उस समय तक खेद रहेगा जब तक तुम्हारा सिर धड़ पर मौजूद है।'

उस अँधेरे में तारों के प्रकाश में मार्ग टटोलता हुआ देवी सिंह पत्थरों और पठारियों की ऊबड़-खाबड़ भूमि लाँघता हुआ नदी की ओर उतर गया।

थोड़ी देर में सबदल सिंह मंदिर के पास आया। चिल्ला कर बोला, 'कुंजर सिंह' यह क्या है, कहाँ हो?'

चिल्लाहट के पैने किंतु बारीक स्वर में किसी ने मंदिर से कहा 'शत्रुता का निवारण कर रहे हैं।'

यह स्वर कुमुद का था। सबदल सिंह पहचान नहीं पाया, परंतु समझ गया कि दो में से किसी स्त्री का स्वर है और अवस्था संकटमय है। तोपों की ओर जल्दी-जल्दी डग बढ़ा कर उसने फिर कुंजर सिंह को पुकारा।

कुंजर सिंह के पास पहुँच कर सबदल सिंह ने पूछा, 'क्या था कुमार? क्या राजा देवी सिंह आए थे?'

कुंजर सिंह उत्तर नहीं दे पाया। उसके उसी सैनिक ने, जिसने देवी सिंह पर विराटा गढ़ी के पास आने के समय ही संदेह किया था, कहा, 'देवी सिंह कैसे हो सकते थे? मुसलमान लोग हिंदुस्तानी वेश रख कर घुस आए थे। मैंने उसी समय कह दिया था, परंतु कुँवर को विश्वास था कि दलीप नगर के राजा ही हैं। इनके साथ कुछ बातचीत भी हो पड़ी थी। न मालूम क्यों उसी समय काट कर नहीं डाल दिया?'

'मुसलमान थे?' सबदल सिंह ने आश्चर्य से कहा, 'पठारी का पहरा कमज़ोर हो गया था?'

'न' वह सिपाही तुरंत बोला, 'कुँवर तलवार खींच कर तुरंत दौड़ पड़े थे और हम लोग तैयार थे, परंतु उसके वेश और देवी सिंह की नकल के धोखे में आ गये।'

उस सिपाही को अपने मन में इस अन्वेषण पर बड़ा हर्ष हो रहा था।

'क्या बात थी?' सबदल सिंह ने कुंजर सिंह से पूछा, 'आप चुप क्यों हैं?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'यह सिपाही ठीक कह रहा है। हम लोग धोखे में आ गए थे।'

'तब रामनगर—पतन की बात निरी गप थी?' सबदल सिंह ने रामनगर गढ़ी की ओर देखते हुए प्रश्न किया, 'न मालूम कब विपद् से छुटकारा मिलेगा?'

कुंजर सिंह ने बेतवा की दूर बहती हुई धार की ओर देखते हुए उत्तर दिया, 'अभी तक हम थोड़े से आदमियों ने जैसी और जिस तरह से लड़ाई लड़ी है, वह आपसे छिपी नहीं है। अब और घोर, घोरतर युद्ध होगा, आप विश्वास रखें। हमारे गोलंदाज आज रात में रामनगर को चकनाचूर कर डालेंगे।

सबदल सिंह क्षमा-प्रार्थना के स्वर में बोला, 'आपके कौशल से ही अब तक हम इने-गिने मनुष्य अपने पैरों पर खड़े हुए हैं।'

थोड़ी देर में रामदयाल कुंजर सिंह के पास आया। हाथ जोड़ कर बोला, 'क्या मेरा अपराध क्षमा किया जाएगा?'

कुंजर सिंह ने थोड़ी देर पहले रामदयाल को शत्रु रूप में देखा था। उसके जी में रामदयाल के लिए इस समय बहुत घ णा न थी। उसने उत्तर दिया, 'और बातें पीछे देखी जाएँगी। हम इस समय यह चाहते हैं कि देवी सिंह के इस तरह यहाँ घुस आने का समाचार इधर-उधर न फैलने पावे।'

रामदयाल ने इस प्रस्ताव को समझ लिया। कहा, 'उसमें मेरा लाभ ही क्या है? उलटे

मुसीबत में पड़ने का डर है।'

'मंदिर में कुशल है?' कुंजर सिंह ने पूछा।

'मेरे इस समय यहाँ आने का कारण वही बात है।' रामदयाल ने उत्तर दिया, 'गोमती की हालत खराब मालूम होती है। आप एक क्षण के लिए चलिए।'

गोलंदाजों को रामनगर पर अनवरत गोले बरसाने का हुक्म देकर कुंजर सिंह रामदयाल के साथ चला गया।

खंड-इकसठ

गोमती का अचेत होना तथा कुंजर सिंह का कुमुद और गोमती को किसी दूसरे सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का प्रस्ताव।

कुमुद गोमती का सिर अपनी गोद में रखे टकटकी बाँधे कुँजर सिंह की ओर देख रही थी-मानो काफ़ी समय से उसकी प्रतीक्षा कर रही हो।'

कुंजर सिंह ने बड़ी उत्कंठा के साथ कुमुद से पूछा, 'अवस्था बहुत बुरी तो नहीं है?'

कोमलतापूर्ण कंठ से कुमुद बोली, 'बहुत बुरी तो नहीं जान पड़ती, परंतु कुछ उपचार आवश्यक है।'

'बहुत संयत स्वर में कुंजर सिंह ने कहा, 'आज्ञा हो।'

गोमती की ओर देख कर कुमुद बोली, 'यह दुखिनी है और कोमल। हम लोगों का कुछ ठीक नहीं, यहाँ क्या हो। शीघ्र अच्छी हो जाएगी। परंतु अच्छे होते ही इसे किसी सुरक्षित स्थान में पहुँचा देना चाहिए।'

'पहुँचा दिया जाएगा।' कुंजर सिंह ने उत्तर दिया।

कुंजर सिंह कुछ और कहता, परंतु कुमुद ने रोक कर पूछा, 'वह यहाँ तक कैसे आए? चारों ओर मुसलमानों और उनके सहायकों की सेनाएँ रुकी हुई हैं।'

कुमुद के साथ वह छल नहीं कर सकता था। बहुत बारीक आह को दबाकर उसने उत्तर दिया, 'रामनगर पर उसका अधिकार हो गया है। कम-से-कम वह कहता यही था। इसीलिए शायद यहाँ तक चला आया।'

कुमुद ने कहा, 'आपकी तोपें किस ओर गोले फेंक रही हैं?'

'रामनगर पर।' कुंजर सिंह का सहज उत्तर था।

कुमुद ने अपने आँचल से गोमती पर हवा करते हुए कहा, 'मैं भी यही सोच रही थी।'

'क्यों?' कुंजर सिंह ने ज़रा डरते हुए प्रश्न किया।

कुमुद बोली, 'आपको कभी-न-कभी देवी सिंह से लड़ना ही पड़ेगा; परंतु अवस्था कुछ भयानक हो जाएगी।'

'मैंने एक उपाय सोचा है।' कुंजर सिंह ने कहा, 'मुझे एक चिंता सदा लगी रहती है।'

आँखें नीचे किए हुए ही कुमुद ने पूछा, 'क्या?'

'यह खोह सुरक्षित नहीं है। किसी दूसरे स्थान में आपको पहुँचा कर फिर निश्चिंतता के साथ यहाँ लड़ता रहूँगा।'

'मैं नहीं जाऊँगी।' कुमुद ने धीरे से कहा।

'मैं नहीं जाऊँगी।' क्षीण स्वर में अचेत गोमती बोली।

कुमुद चौंक पड़ी। गोमती अचेत थी।

कुमुद बोली, 'आपके लिए यदि यह स्थान सुरक्षित है, तो मेरे लिए भी।' फिर मुस्करा कर कहा, 'मुझे आपकी तोपों पर विश्वास है।'

कुंजर सिंह की देह-भर में रोमांच हो आया। उसे ऐसा जान पड़ा मानो आकाश के नक्षत्र तोड़ लाने की सामर्थ्य रखता हो। कुछ कहना चाहता था। अवाक् रह गया। उसी समय नरपति और रामदयाल के आने की आहट मालूम हुई।

कुमुद ने जल्दी से कहा, 'यदि रामदयाल अविश्वसनीय हो तो उसके सहारे गोमती को नहीं छोड़ना चाहिए।'

औषधोपचार के बाद गोमती को चेत आने लगा। अर्द्ध-चेतनावस्था में बोली, 'वह कहाँ है?'

जब गोमती को बिल्कुल चेत आ गया, वह अपने सिर को कुमुद की गोद से उठाने लगी। कुमुद ने रोक लिया। बोली, 'लेटी रहो।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'रात बहुत हो रही है। अब आप लोग अपनी खोह में चले जाएँ।'

कुमुद इत्यादि वहाँ से चली गईं।

उस रात कुंजर सिंह कदाचित् इच्छा होने पर भी खोह के पास न जा सका। रात-भर बेतरह रामनगर पर गोले ढाए। उधर से भी तोपें गोला उगलती रहीं। परंतु एक बात का आश्चर्य कुंजर सिंह को हो रहा था। अलीमर्दान की ओर से विराटा पर एक तोप ने भी वार नहीं किया। कुंजर सिंह ने भी शायद यह समझ कर कि पहले एक शत्रु से सुलझ लें, फिर दूसरे को देख लेंगे, अलीमर्दान को नहीं छेड़ा।

खंड-बासठ

सवेरे सबदल सिंह कुंजर सिंह के पास आया। उदास था। बिना किसी भूमिका के बोला 'रामनगर पर देवी सिंह का अधिकार हो गया है। आपने रामनगर पर गोले क्यों बरसाए?'

कुंजर सिंह ने उत्तर दिया, 'पहले मेरे मन में भी कुछ इसी तरह की कल्पना जगी थी, परंतु पीछे विश्वास हो गया कि रामनगर पर अभी देवी सिंह का दखल नहीं हुआ है।'

'परंतु नरपति सिंह दूसरी ही बात कहते हैं।'

'वह धोखे में आ गए हैं।'

'और गोमती?'

'वह भी; और रामदयाल भी। वह छद्मवेश में था।'

'रामदयाल कहता था कि धोखा-सा था। मान लीजिए, देवी सिंह नहीं थे, तो वह इस तरफ क्यों और कैसे आए?'

'कैसे आए वे लोग, सो तो आपको मालूम ही हो चुका है; परंतु उस व्यक्ति के देवी सिंह होने में बिल्कुल संदेह है।'

'खैर, दो-एक दिन में मालूम हो जाएगा, परंतु यदि वास्तव में रामनगर देवी सिंह के अधिकार में है, तो उस ओर गोलाबारी करना आत्मघात के समान होगा।'

'और यदि रामनगर अलीमर्दान या रानियों के हाथ में है, तो उस गढ़ पर गोले न चलाना आत्मघात से भी बुरा सिद्ध होगा।'

कुंजर सिंह ने अपनी बात की पुष्टि का प्रण कर लिया था। बोला, 'यदि आपकी इच्छा

शब्दार्थ :
बेतरह – बुरी तरह
आत्मघात – आत्महत्या
मुरकना – मोड़ना

हो, तो मैं तोपों का मुँह मुरका दूँ?'

सबदल तोपों का कुल भार कुंजर सिंह को सौंप चुका था। वह सहमत न हुआ। कहा, 'तोपों के संचालन का संपूर्ण कार्य आपके हाथ में है। मैं हस्तक्षेप नहीं करना चहता। असली बात एक-आध दिन में ही मालूम हो जाएगी। यदि वास्तव में रामनगर देवी सिंह के अधीन हो गया है, तो कुछ-न-कुछ समाचार किसी-न-किसी प्रकार हमारे पास बिना आए न रहेगा, तब तक आपको जैसा उचित जान पड़े, करिए।'

आँख से ओझल होते हुए सबदल को कुंजर सिंह ने देखा। सरल, द ढ़ व्यक्ति। कुंजर को झूठ बोलने के कारण अपने ऊपर बड़ी ग्लानि हुई। तुरंत ही उसने मन में कहा—इसने जितना विश्वास मेरा कर रखा है, उससे कहीं अधिक मूल्य इसे दूँगा। इस गढ़ी की रक्षा में अंतिम श्वास की होड़ लगाऊँगा। इसे भ्रम में डालने के सिवा मुझे कोई और उपाय न सूझा। क्या करूँ, देवी सिंह ने झूठ बोलने के लिए विवश किया।

खंड-तिरेसठ

रामदयाल भी छोटी रानी के डेरे पर पहुँचा। कालपी की सेना की छावनी के एक सुरक्षित कोने में एक छोटा-सा तंबू खड़ा था। उसी में छोटी रानी अपने कुछ आदमियों के साथ थीं। भाग कर जब रामनगर में रानी आई थीं तब से अब उनके गौरव में और भी कमी हो गई थी।

रामदयाल को देख कर रानी ने कहा, 'इन दिनों कहाँ छिपा था?'

रामदयाल ने कुछ डरते हुए हाथ जोड़ कर उत्तर दिया, 'मैं विराटा में जासूसी के काम पर नियुक्त था।'

'वहाँ क्या जासूसी की?'

'देवी सिंह का सेवक बन कर कुछ समय तक रहा। कुंजर सिंह ने कल पहचान लिया। लगभग उसी समय देवी सिंह भी वहाँ आ गए। उन्होंने भी पहचान लिया। दोनों को लड़ा-भिड़ाकर यहाँ चला आया हूँ। देवी सिंह रामनगर चले आए हैं और अब कुंजर सिंह रामनगर पर गोले बरसा रहे हैं।'

अपनी दशा की याद करके रानी ने कहा, 'अब और किसी के हाथ से कुछ होता नहीं दिखाई देता। यदि दिलेर आदमियों की एक छोटी-सी सेना मुझे मिल जाए, तो मैं कुछ करके दिखला दूँ। क्या कुंजर सिंह अपना पुराना पागलपन छोड़ कर हमारा साथ देने को तैयार हो जाएगा?'

रामदयाल ने उत्तर दिया, 'कुंजर सिंह का पागलपन अब और बढ़ गया है। जिसे विराटा में देवी का अवतार या देवी की पुजारिन बतलाया जाता है, वह उनके कुल कर्त्तव्य की लक्ष्य है। नवाब की एक बड़ी सेना शीघ्र ही यहाँ आने वाली है।'

धीरे स्वर में छोटी रानी बोलीं, 'अब वही एक आधार है। मुझे चाहे राज्य न मिले, कुंजर सिंह राजा हो जाए या कोई और, परंतु देवी सिंह और वह पिशाच जनार्दन धूल में मिल जाएँ। रामदयाल, मेरा प्रण न पूरा हो पाया! यदि मेरे मरने के पहले कम-से-कम जनार्दन का सिर काट लाता, तो मुँहमाँगा इनाम देती, परंतु तेरे किए कुछ न हुआ।'

रामदयाल ने उत्साहित हो कर कहा, 'नहीं महारानी, जनार्दन का सिर अवश्य किसी दिन काट कर आपके सामने पेश करूँगा।'

टिप्पणी

खंड-चौसठ

विराटा की गढ़ी पर गोला-बारी बढ़ गई। कुंजर सिंह की तोपें उत्तर देने लगीं। परंतु कुंजर सिंह ने एक घंटे के भीतर ही देख लिया कि समस्या अत्यंत विकट हो गई है और अधिक समय तक विराटा की गढ़ी को सुरक्षित रखना संभव न होगा।

तोपों के ऊपर अपने चुस्त तोपचियों को छोड़ कर वह कुमुद के पास गया। खोह में इस समय नरपति न था।

'कुंजर सिंह ने धीमे स्वर में कहा, 'विदा माँगने आया हूँ।'

कुमुद उसके असाधारण तने हुए नेत्र देख कर चकित हो गई। कोमल स्वर में पूछा, 'क्यों? क्या...'

'अंतिम विदाई के लिए आया हूँ। आज की संध्या देखने का अवसर मुझे न मिलेगा। चार-छह घंटे में यह गढ़ ध्वस्त हो जाएगा और रामनगर की सेनाएँ प्रवेश करेंगी। कुछ डर मत करना, खोह में ही बनी रहना। कोई सेना आपका अपमान नहीं कर सकेगी।'

कुमुद कुछ चुप रही। स्वर को संयत करके बोली, 'दुर्गा कल्याण करेंगी, विश्वास रखिए।'

'दुर्गा और आपका विश्वास ही तो मुझसे काम करवा रहा है।' कुंजर सिंह ने कहा, 'इसीलिए आपसे इसी समय बिदा माँगने आया हूँ। दुर्गा से मरते समय बिदा मागूँगा।'

कुमुद की आँखें तरल हो गईं। ऐसी शायद ही कभी पहले हुई हों; जैसे गुलाब की पंखुड़ी पर बड़े-बड़े ओस कण ढलक आए हों। उन्हें किसी तरह छिपा कर कुमुद ने कंपित स्वर में कहा, 'मैं आपके साथ चलूँगी।'

'मेरे साथ!' सिपाही कुंजर बोला, 'नहीं कुमुद, यह न होगा। गोलों की वर्षा हो रही है। उस संकट में आपको नहीं जाने दूँगा।'

'मैं चलूँगी।'

युद्ध में जाने से पूर्व कुंजर का कुमुद से विदा लेना।

कुमुद की आँखों में अब आँसू न थे। कुंजर ने द ढ़ता के साथ कहा, 'देवी सिंह की महत्त्वाकांक्षा पर मुझे बलिदान होना है, आपको नहीं। आप इसी खोह में रहें।'

'अभी मत जाओ।' क्षीण स्वर में कुमुद ने कहा, 'ज़रा ठहर जाओ। गोलाबारी थोड़ी कम हो जाने दो।' और बड़े स्नेह की द ष्टि से कुमुद ने कुंजर के प्रति देखा।

कुंजर सिंह उत्साहपूर्ण स्वर में बोला, 'मैं अभी थोड़ी देर और नहीं मरूँगा। देवी सिंह के सिर पर तलवार बजा कर फिर मरूँगा।'

कुमुद चुप रही। जल्दी-जल्दी उसकी साँस चल रही थी। आँखें नीची किए खड़ी थी। कुंजर सिंह भी चुप था। तोपों की धूम-धड़ाम आवाजें आ रही थीं।

कुछ क्षण बाद कुंजर ने कहा, 'तुम मेरे हृदय की अधिष्ठात्री हो, मालूम है?'

कुमुद का सिर न मालूम ज़रा-सा कैसे हिल गया। आँखें फिर तरल हो गईं।

'तुम मेरी हो?' आवेशयुक्त स्वर में कुंजर ने प्रश्न किया।

कुमुद ने कुछ उत्तर नहीं दिया।

कुंजर सिंह ने उसी स्वर में फिर प्रश्न किया, 'मैं तुम्हारा हूँ?'

कुमुद नीचा सिर किए खड़ी रही।

शब्दार्थ :
तरल – नम, गीली
पंखुड़ी – फूल का दल

कुंजर सिंह ने बड़े कोमल स्वर में प्रस्ताव किया, 'कुमुद, एक बार कह दो कि तुम मेरी हो और मैं तुम्हारा हूँ, संपूर्ण विश्व मानो मेरा हो जाएगा और देखना, कितने हर्ष के साथ मैं प्राण विसर्जन करता हूँ।'

कुमुद ने सिर नीचा किए ही कहा, 'आप अपनी तोपों को जा कर सँभालिए। मैं दुर्गाजी से आपकी रक्षा और विजय के लिए प्रार्थना करती हूँ।'

कुंजर सिंह ने हँस कर कहा, 'उसके विषय में तो दुर्गा ने पहले ही कुछ और तय कर दिया है।'

किसी पूर्व-स्म ति ने कुमुद के हृदय पर एकाएक चोट की। 'दुर्गा ने पहले ही कुछ और तय कर दिया है।' इस वाक्य ने कुमुद के कलेजे में बरछी-सी छेद दी। वह विस्फारित लोचनों से कुंजर की ओर देखने लगी। चेहरा एकाएक कुम्हला गया। होंठ काँपने लगे। उसे ऐसा जान पड़ा, जैसे लड़खड़ा कर गिरना चाहती हो। सहारा लेकर बैठ गई। दोनों हाथों से सिर पकड़ लिया।

कुंजर सिंह ने पास आ कर उसके सिर पर हाथ रखा, 'क्या हो गया है कुमुद? घबराओ मत। तुम दूसरों को धैर्य बँधाती हो। स्वयं अपना धैर्य स्थिर करो। संभव है, मैं आज की लड़ाई में बच जाऊँ।'

कुमुद फिर स्थिर हो गई। बोली, 'मैं आज लड़ाई में तुम्हारे साथ ही रहूँगी। मानो।'

कुंजर सिंह कुछ क्षण कोई उत्तर न दे पाया। कुमुद ने फिर कहा, 'वहाँ पास रहने से आपके कर्त्तव्यपालन में विघ्न न होगा और मैं दुर्गा की प्रार्थना भी कर सकूँगी।'

कुंजर बोला, 'केवल एक बात मुँह से सुनना चाहता हूँ।'

बहुत मधुर स्वर में कुमुद ने पूछा 'क्या?'

'तुम मुझे भूल जाना!'

नीचा सिर किए हुए ही कुमुद ने कुंजर की ओर देखा। थोड़ी देर देखती रही। आँखों से आँसुओं की धार बह चली।

कंपित स्वर में कुंजर सिंह ने पूछा, 'भुला सकोगी?'

कुमुद के होंठ कुछ कहने के लिए हिले, परंतु खुल न सके। आँखों से और भी अधिक वेग से प्रवाह उमड़ा।

कुंजर सिंह की आँखें भी छलक आईं! बड़ी कठिनाई से कुंजर सिंह के मुँह से ये शब्द निकले, 'प्राणप्यारी कुमुद, सुखी रहना। एक बार मेरी तलवार की मूठ छू दो।' तुरंत कुमुद उसके सन्निकट आ कर खड़ी हो गई। उसका एक कोमल कर कुंजर सिंह की कमर में लटकती हुई तलवार की मूठ पर जा पहुँचा और दूसरा उसके उन्नत भाल को छूता हुआ

चित्र : कुमुद को गले लगाते हुए कुंजर सिंह

शब्दार्थ :

विस्फारित – फैले हुए

उसके कंधे पर जा पड़ा।

ऊपर गोले साँय-साँय कर रहे थे। तोपचियों ने कुंजर सिंह को पुकारा। कुंजर ने अपना एक हाथ कुमुद की पीठ पर धीरे से रखा और फिर ज़ोर से उसे हृदय से लगा लिया। कुमुद ने अपना सिर कुंजर के कंधे पर रख दिया।

तोपचियों ने कुंजर सिंह को फिर पुकारा।

कुंजर सिंह कुमुद से धीरे से अलग हुआ। बोला, 'यहीं रहना बाहर मत आना। सुखी रहना।'

कुमुद कुछ न बोल सकी।

खोह से बाहर जाते हुए पीछे एक बार मुड़ कर कुंजर ने फिर कहा, 'अगले जन्म में फिर मिलेंगे अवश्य मिलेंगे।'

खंड-पैंसठ

अलीमर्दान शीघ्र युद्ध समाप्त करना चाहता था। दीर्घकाल तक लगातार लड़ते रहना किसी पक्ष के भी मन में न था। छोटी रानी को कुछ समय पहले वह सहायक समझता था, परंतु अब उसके लिए भार सी होती जा रही थीं। विराटा की पद्‌मिनी के लिए उसका जी उत्सुकता से भरा हुआ था। देवी सिंह को यदि वह चार-छह कोस ही पीछे हटा सकता और थोड़ा-सा अवकाश पा कर कुमुद को विराटा से अपने साथ ले जाता, तो भी वह अपने को विजयी मान लेता। विराटा और रामनगर के छोट-छोटे से राज्य उसकी महत्त्वाकांक्षा के क्षितिज नहीं थे। उसकी राजनीतिक कल्पनाओं के केंद्र दिल्ली और कालपी थे।

अपनी ही उमंग और सनक से उत्तेजित हो कर उसने अपने एक सरदार को बुलाया। कहा, 'देवी सिंह पर ज़ोर का हमला करके उसे पीछे हटाना बहुत जरूरी है। विराटा को भी आँख से ओझल नहीं होने देना चाहिए। यदि विराटा वालों के ध्यान में पूर्व दिशा की ओर भाग खड़े होने की बात समा गई, तो फिर कुछ हाथ नहीं लगेगा। सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।'

'जब तक कुंजर सिंह विराटा में है' उसने मंतव्य प्रकट किया, 'तब तक वहाँ की चिंता नहीं है। वह बराबर देवी सिंह की सेना पर गोलाबारी करता रहेगा।'

अलीमर्दान उत्तेजित स्वर में बोला, 'मैं चाहता हूँ अपने सिपाही बढ़ कर हाथ करें।

देवी सिंह पीछे हटाया जाए। तुम रानी को साथ ले कर पहल करो। मैं एक दस्ता ले कर विराटा पर धावा करता हूँ। आगे तकदीर।'

अलीमर्दान और सरदार इस अभीष्ट से अपने स्थान से बाहर जाने को ही थे कि एक हरकारा सामने आया।

'हुज़ूर!' हाँफता हुआ बोला, 'दिल्ली से खानदौरान का पत्र आया है।' हरकारे ने अलीमर्दान के हाथ में चिट्ठी दी। दिल्ली का सिंहासन संकट में था। दिल्ली में ही दिल्ली का एक सरदार विमुख हो गया था। और सरदार पर इतना भरोसा न था जितना अलीमर्दान पर। अलीमर्दान को तुरंत सेना समेत दिल्ली आने के लिए पत्र में लिखा था। पत्र पर बादशाह की मुहर थी। खानदौरान ने उसे भेजा था। खानदौरान के बनने-बिगड़ने पर अलीमर्दान का, इस तरह के अनेक सरदारों की भाँति, भविष्य निर्भर था। इसलिए

शब्दार्थ :

हरकारा – पत्रवाहक

कसदार – जोरदार

वह पत्र फरमान के रूप में था और अनिवार्य था।

अलीमर्दान ने सरदार को पत्र या फरमान दे दिया। उसने पढ़ कर मुस्करा कर कहा, 'हुज़ूर को शायद पहले से कुछ मालूम हो गया था। कल के लिए लड़ाई का जो कुछ ढंग तय किया गया है, वह इस फरमान की एक लकीर के खिलाफ नहीं जा रहा है।'

अलीमर्दान भी उत्साहित हो कर बोला, 'इसमें संदेह नहीं कि इस परवाने से कल की लड़ाई को दोहरा ज़ोर मिलना चाहिए। भाई खाँ, अगर लड़ाई चींटी की रफ़्तार से चली, तो कल ही या ज्यादा-से-ज्यादा दो दिन बाद हमें देवी सिंह से सुलह करनी पड़ेगी और जीते-जिताए मैदान को छोड़कर चला जाना पड़ेगा। अंत में कुंजर सिंह और उनके देवी-देवता कहीं कूच कर देंगे और फिर हजार लड़ाइयों का भी वह फल न होगा, जो कल की एक कसदार लड़ाई का होना चाहिए। क्या कहते हो?'

सरदार ने उत्तर दिया, 'इंशाअल्लाह! कल ही सवेरे लीजिए, चाहे हमारी आधी सेना कट जाए।'

खंड-छियासठ

संध्या होने के उपरांत राजा देवी सिंह ने भी दूसरे दिन की समर-योजना के सब छोटे-बड़े अंगों पर विचार करने के बाद यह तय किया कि प्रातः काल के लिए न ठहर कर आधी रात के बाद ही लड़ाई आरंभ कर दी जानी चाहिए। लोचन सिंह संतुष्ट था।

देवी सिंह ने इस योजना में विराटा को भी स्थान दिया। विराटा व्यर्थ ही हमारे कार्य में बाधा डालता है। प्रातः काल होने के पूर्व ही उस पर अधिकार कर लेना चाहिए। फिर दिन में रामनगर और विराटा दोनों गढ़ों की तोपों के गोले अलीमर्दान की सेना पर फेंके जाएँ। इधर लोचन सिंह और जनार्दन खुले में उसकी सेना के पैर उखाड़ दें।

दलीप नगर की सेना खुली लड़ाई की आशा की उमंग में तीन दलों में विभक्त हो कर सावधानी के साथ आधी रात के बाद आगे बढ़ी। एक दल उत्तर की ओर नदी के किनारे-किनारे विराटा की ओर चला। इसका नायक देवी सिंह था। दूसरा दल जनार्दन के सेनापतित्व में नदी के भरकों और किनारों को देवी सिंह के दल की ओट बनाता हुआ उसी दिशा में बढ़ा। लोचन सिंह का दल पश्चिम और उत्तर की ओर से चक्कर काट कर अलीमर्दान की सेना को आगे से युद्ध में अटका लेने और पीछे से घेर कर दबा लाने की इच्छा से उमड़ा। विराटा की गढ़ी से रामनगर पर उस रात कभी थोड़े और कभी बहुत अंतर पर गोले चलते रहे, परंतु देवी सिंह के पूर्वनिर्णय के अनुसार रामनगर से उन तोपों का जवाब नहीं दिया जा रहा था। रामनगर के तोपचियों को आदेश दिया जा चुका था कि जब एक बँधा हुआ संकेत उन्हें अपनी क्षेत्रवर्ती सेना से मिले, तब वे तोपों में बत्ती दें।

लोचन सिंह ने उस रात देवी सिंह के आदेश के अनुसार बहुत सावधानी के साथ कूच किया। उसने अपने सैनिकों से कहा था, 'बिल्ली की तरह दबे हुए चलो और समय आने पर बिल्ली की तरह की झपाटा मारो।' थोड़ी देर तक लोचन सिंह और उसके सैनिकों ने इस सतर्क-व ति का पूरी तरह पालन किया, परंतु पग-पग पर लोचन सिंह को उसका अधिक समय तक पालन कर पाना दुष्कर और दुस्सह जान पड़ने लगा।

शब्दार्थ :

दुरूह – कठिन, दुष्कर

हताहत – म त और घायल

टिप्पणी

मार्ग बहुत बीहड़ और ऊँचा-नीचा था। सावधानी के साथ उस पर चलना संभव न था, किंतु अनिवार्य था। परंतु जहाँ मार्ग सुथरा और विस्त त मैदान पर होकर गया था, वहाँ सावधानी का व्रत बनाए रखना स्थिति की व्यग्रता और लोचन सिंह की प्रकृति के विरुद्ध था। इसलिए लोचन सिंह अपने दल के आगे विशुद्ध उमंग से प्रेरित होता हुआ सपाटे के साथ बढ़ने लगा। निकट भविष्य में किसी तुरंत होने वाले भयंकर विस्फोट की कल्पना से उन पके-पकाए सैनिकों का कलेजा धक्-धक् नहीं कर रहा था, परंतु पैर के पास ही किसी छोटी-सी असाधारण आकस्मिक ध्वनि के होते ही सैनिक चौकन्ने हो जाते थे, कभी-कभी थर्रा भी जाते थे और आधे क्षण में उनका धैर्य फिर उनके साथ हो जाता था।

इस तरह से वे लोग करीब आधे कोस बढ़े होंगे कि लोचन सिंह यकायक रुक गया और ज़मीन से घुटनों और छाती के बल सट गया। उसके पीछे आने वाले सैनिक यकायक खड़े हो गए। उनके चलते रहने से जो शब्द हो रहा था, वह मानो सिमट कर केंद्रित हो गया और एक बड़ी गूँज-सी उस जंगल में उठ कर फैल गई।

आकाश में चंद्रमा न था। बड़े-बड़े और छोटे-छोटे तारे प्रभा में डूबते-उतराते से मालूम पड़ते थे। छोटे तारे टिमटिमा रहे थे। तारिकाएँ अपनी रेखामयी आभा आकाश पर खींच रही थीं। पक्षी भरभरा कर व क्षों से उड़-उड़ जाते थे। आकाश के तारों की टिमटिमाहट की तरह झींगुरों की झंकार अनवरत थी। लोचन सिंह ने अपने पास खड़े हुए सैनिक का पैर दबाया। लोचन सिंह के इस असाधारण ढंग से उस सैनिक को तुरंत यह धारणा हुई कि कोई बड़ा और विकट संकट सामने है। वह भी घुटनों और छाती के बल प थ्वी से सट गया। लोचन सिंह के पास अपना कान ले जा कर धीरे से बोला, 'दाऊजू, क्या बात है?'

'सामने और दाएँ-बाएँ से कोई आ रहा है। शायद अलीमर्दान की सेना बढ़ी चली आ रही है– बड़ी सावधानी के साथ।'

कुछ ही क्षण बाद लोचन सिंह को सामने आनेवाला शब्द यकायक बंद होता हुआ जान पड़ा और उसकी दाहिनी ओर नदी की दिशा में बंदूक की आवाज सुनाई पड़ी, लोचनसिंह ने अपने पासवाले सैनिकों से धीरे से कहा, 'अभी हिलना-डुलना मत।'

जिस दिशा में बंदूक चली थी, उस दिशा में शोर हुआ। एक ओर से कालपी और दूसरी ओर से दलीप नगर की जय का शब्द परस्पर गुँथ गया। तब भी लोचन सिंह का हाथ बंदूक या तलवार पर नहीं गया।

लोचन सिंह के नेत त्व में पश्चिम की ओर से अलीमर्दान की सेना से मुकाबला

पास खड़े हुए सैनिक ने लोचन सिंह से पूछा, 'दाऊजू, क्या आज्ञा है?'

लोचन सिंह ने कड़ुवाहट के साथ उत्तर दिया, 'चुप रहो। जब तक मैं कुछ न कहूँ, तब तक चुप रहो।'

जिस दिशा में जय की गूँज उठी थी, उस दिशा में बंदूकों की नाल से निकलने वाली लौ प्रति क्षण बढ़ने लगी और वह नदी की ओर अग्रसर होने लगी।

लोचन सिंह ने धीरे से अपने पास के सैनिक से कहा, 'जान पड़ता है, अलीमर्दान की सेना सब ओर से बढ़ती आ रही है। इस समय जनार्दन की टुकड़ी के साथ मुठभेड़ हो गई है। होने दो। बोलो मत। उसका करतब थोड़ी देर देख लिया जाए।'

पास के सैनिक ने कोई उत्तर नहीं दिया। परंतु पीछे के सैनिकों में से कुछ चिल्ला उठे,

'दाऊजू, क्या आज्ञा है?'

इस प्रकार की आवाज उठते ही सामने से कुछ बंदूकों ने आग उगली। लोचन सिंह के पीछे वाले सैनिकों ने उत्तर दिया, परंतु आगे की कतार, जो प थ्वी से सटी हुई थी, उसने कुछ नहीं किया। लोचन सिंह के उन साथियों की बंदूकों की गोलियाँ वायु में फुफकार मारती हुई कहीं चल दीं, किसी के बाल को भी उन्होंने न छुआ होगा, परंतु अलीमर्दान की सेना के उस दल की बाढ़ ने लोचन सिंह के कई सैनिकों को हताहत कर दिया। इसका पता लोचन सिंह को उनके कराहने से तुरंत लग गया।

बहुत शीघ्र लोचन सिंह की दाहिनी ओर लड़ाई ने गहरा रंग पकड़ा। उसकी टुकड़ी का एक भाग और जनार्दन की सेना का बड़ा खंड उसी केंद्र पर सिमट पड़े। देवी सिंह नदी किनारे पर अपने दल को लिए स्थिर हो गया।

लोचन सिंह के निकटवर्ती सैनिक सोचने लगे कि वह कहीं मारा तो नहीं गया, नहीं तो ऐसा किंकर्तव्यविमूढ़ क्यों हो जाता? अलीमर्दान की सेना के उस भाग ने, जो लोचन सिंह के सामने था, सोचा कि इस ओर क्षेत्र रीता है। वह बढ़ा। जब वह लोचन सिंह के बहुत पास आ गया, तब तारों के प्रकाश में लोचन सिंह को एक बढ़ता हुआ झुरमुट-सा जान पड़ा।

लोचन सिंह ने कड़क कर कहा, 'दागो।'

प थ्वी से सटे हुए उसके सैनिकों ने बंदूकों की बाढ़ एक साथ दागी। पीछे के सैनिकों ने भी गोली चलाई। इस बाढ़ से कालपी की सेना का वह भाग बिछ-सा गया। थोड़ी देर में बंदूकों को फिर भर कर लोचन सिंह अपने उस दल को ले कर बढ़ा। कालपी की सेना के योद्धा भी इस मुठभेड़ के लिए सन्नद्ध थे। एक क्षण में ही बंदूकों ने आग और लोहा उगला। फिर धीरे-धीरे बंदूकों की ध्वनि कम और तलवारों की झनझनाहट अधिक बढ़ने लगी। लोचन सिंह पल-पल पर अपने दल के साथ एक भाग के साथ आगे बढ़ रहा था। परंतु वह नदी से बराबर दूर होता चला जा रहा था। उसके दल का दूसरा भाग नदी की ओर कट कर आगे-पीछे होता जाता था। उसी ओर से जनार्दन का दल खूब घमासान करने में लग पड़ा था। कालपी की सेना का भी अधिकांश भाग इसी ओर पिल पड़ा।

कुछ घड़ियों पीछे अलीमर्दान के सरदार को मालूम हुआ कि दलीप नगर की एक सेना का भाग उसके पीछे घूम कर युद्ध करता हुआ बढ़ रहा है। वह धीरे-धीरे पीछे हटने लगा। परंतु लोचन सिंह के बढ़ते हुए दबाव का विरोध करने के लिए उसे रुक जाना पड़ा। युद्ध कभी थम कर और कभी बढ़-घट कर होने लगा। अँधेरे में मित्र-शत्रु की पहचान लगभग असंभव हो गई। सैनिक केवल एक धुन में मस्त थे–'जब तक बाँह में बल है, अपने पास वाले को तलवार के घाट उतारो।'

खंड-सड़सठ

मुसलमान नायक छोटी रानी और रामदयाल को जिस प्रकार घुमाना चाहता था, वे नहीं घूम पाते थे। इसलिए उसकी प्रगति को बाधा पहुँच रही थी। तो भी वह धैर्य और चतुरता के साथ सैन्य-संचालन कर रहा था। जिस स्थान पर लोचन सिंह के दल के साथ उसकी टुकड़ी की मुठभेड़ हो गई थी, वहाँ पर वह न था। वह जनार्दन के मुकाबले में था।

शब्दार्थ:

किंकर्त्तव्यविमूढ़ – क्या करें क्या न करें इसका निश्चय न कर पाने वाला।
सन्नद्ध – तत्पर, तैयार, उद्यत
अनवरत – लगातार
उत्तरोत्तर – अधिकाधिक
अक्षुण्ण – अखंडित
अनवरत – लगातार

वह सँभल कर, डट कर लड़ना चाहता था। परंतु अँधेरी रात में अपनी इच्छा के ठीक अनुकूल सारी सेना का संचालन करना असंभव था। इधर-उधर सारी सेना गुँथ गई, कोई नियम या संयम नहीं रहा।

रामनगर से विराटा पर तोपें नहीं चल रही थीं। विराटा से इसी कारण उत्तरोत्तर तोपों की बाढ़ बढ़ने लगी। कोई निशाना चूकता था और कोई लगता था। रामनगर की अस्त-व्यस्त दीवारें और द ढ़ बुर्ज धीरे-धीरे भरभरा कर टूट रहे थे। गढ़वर्ती सैनिकों की चिंता पल-पल पर बढ़ती जा रही थी, परंतु देवी सिंह का बँधा हुआ संकेत अभी तक नहीं मिला था।

देवी सिंह ठीक नदी किनारे था। दोनों किनारों के भीतर तोपों और बंदूकों की आवाज दुगुनी-चौगुनी हो कर गर्जन कर रही थी। घायलों का चीत्कार धूम-धड़ाके से मथे हुए सन्नाटे को बीच-बीच में चीर-चीर-सा देता था।

बेतवा अपने अक्षुण्ण कलरव के साथ बहती चली जा रही थी। तारों का न त्य बेतवा की जलराशि पर अनवरत रूप से होता जा रहा था।

देवी सिंह ने अपने पास खड़े हुए एक सरदार से कहा, 'यदि कुंजर सिंह थोड़े समय के लिए भी अपनी मूर्खता के साथ संधि कर ले, तो आज का युद्ध अलीमर्दान के लिए अंतिम हो जाए।' एक क्षण बाद बोला, 'आज रात शायद रामनगर से तोप चलाने का अवसर ही न आवे।'

सरदार ने कोई मंतव्य प्रकट नहीं किया, परंतु प्रश्नसूचक द ष्टि से उसकी ओर देखा।

'इसलिए कि,' 'देवी सिंह ने उत्तर दिया, 'रामनगर से तोप चलाते ही विराटा का नदी-कूल भी बिल्कुल सतर्क हो जाएगा और हम लोग आसानी से विराटा की गढ़ी में प्रवेश न करने पाएँगे।'

इसके बाद देवी सिंह अपने दल को ले कर बहुत धीरे-धीरे और सावधानी के साथ विराटा की ओर बढ़ा।

खंड-अड़सठ

अलीमर्दान और देवी सिंह की सेनाओं का सामना। किसी एक प्रहरी का विराटा पर आक्रमण की सूचना देना।

रात को इस उथल-पुथल ने विराटा को और भी सचेत कर दिया। विराटा में थोड़े से सैनिक थे। साधारण बने रहने में ही उसकी रक्षा थी। उस रात के भयानक हल्ले, असाधारण आक्रमण ने विराटा के प्रत्येक शस्त्रधारी को किसी अनहोनी के लिए बिल्कुल तैयार कर दिया। उस रात, जब तक देवी सिंह की अलीमर्दान के दलों से टक्कर नहीं हुई थी, तब तक कुंजर सिंह की तोपें केवल इस बात का प्रमाण देती रहीं कि उनके तोपची सोए नहीं हैं, परंतु जब बंदूकों की बाढ़ें उन दोनों दलों की भभकी तब किसी संकट के तुरंत सिर पर आ पड़ने की आशंका ने कुंजर सिंह को बहुत सक्रिय कर दिया।

आक्रमण होने के कुछ घड़ी पीछे ही अलीमर्दान अपने दल के साथ विराटा के नीचे, नदी के किनारे आ गया। उसके बिल्कुल पास ही देवी सिंह का दल भी आकर ठिठक गया था। परंतु दोनों इतनी सावधानी से चले थे कि एक दूसरे की गति को नहीं समझ पाए थे। तो भी विराटा के सतर्क योद्धा की द ष्टि से उन दोनों की गतिविधि न बच पाई। उसने तुरंत अपने गढ़ में इसकी सूचना दी। अभी तक देवी सिंह और अलीमर्दान की

सेनाएँ एक-दूसरे के सम्मुख मोर्चा लिए हुए डट रही थीं, इसलिए भी विराटा के थोड़े से मनुष्यों की कुशल-क्षेम बनी रही। परंतु उस प्रहरी को मालूम हो गया कि उनमें से एक का, कदाचित् दोनों का, लक्ष्य विराटा है। यही समाचार तुरंत विराटा के भीतर पहुँचाया गया।

प्रहरी से समाचार पाते ही, सबदल सिंह और उनकी सेना, विश्राम और थकावट से उचट कर सजग हो गई और एक मार्के के ठौर पर इकट्ठी हो गई। सबदल सिंह थोड़ा ही सो पाया था। धँसी हुई आँखों को पोंछता-पोंछता आ गया। कुंजर सिंह भी अपने तोपचियों को कुछ सलाह दे कर उसी समय आया। एक बड़े पीपल के पेड़ के नीचे सब इकट्ठे हो गए। कुंजर सिंह ने कहा, 'आज हम लोगों की विजय-रात्रि है।'

'कदाचित् अंतिम भी' सबदल सिंह बोला।

'रामनगर की गढ़ी मेरी तोपों ने ध्वस्त कर दी। अलीमर्दान और देवी सिंह की सेनाएँ सवेरा होते-होते आपस में लड़-कट कर समाप्त हुई जाती हैं। तब कल विजय अवश्यंभावी है।'

सबदल सिंह ने क्षीण मुस्कराहट के साथ उत्तर दिया, 'हमें जो समाचार अभी मिला है, वह किसी दूसरे भविष्य की ही सूचना देता है। अलीमर्दान की सेना का एक बड़ा भाग किनारे पर आ पहुँचा है। दूसरी ओर से देवीसिंह का एक दल भी निकट आ गया है। रामनगर पर गोले चलाने में कोई बुद्धिमानी नहीं जान पड़ती।'

कुंजर सिंह ने कहा, 'तब किस बात में बुद्धिमानी है?'

'मरने में।' तीक्ष्णता के साथ सबदल सिंह बोला, 'मरने में। देवी सिंह से कोई सहायता प्राप्त नहीं हो सकती। उस ओर से हम बिल्कुल निराश हो चुके हैं। एक-एक पल हमारे लिए बहुमूल्य है। मालूम नहीं, कब अलीमर्दान की सेना यहाँ घुस पड़े और हमारी मर्यादा पर आ बने।'

सबदल सिंह ने धीरे, परंतु द ढ़ता के साथ कहा, 'हम लोगों ने संधि के धर्मसम्मत सब उपाय कर छोड़े। अलीमर्दान हमारी मर्यादा चाहता है। वह हम उसे नहीं देंगे। बाहर से अब किसी सहायता की कोई आशा नहीं है, इसलिए मेरी समझ में केवल एक उपाय आता है।'

उपस्थित लोगों की द ष्टियाँ तारों के क्षीण प्रकाश में उस उपाय को सुनने के लिए सबदल सिंह की ओर घिर गई।

सबदल सिंह ने उसी द ढ़ स्वर में कहा, 'हम सब गढ़ी से निकल कर शत्रुओं से लड़ते-लड़ते मरें। किसी को इंकार हो, तो कह डालने में संकोच न करें।'

कोई न बोला।

सबदल सिंह कहता गया, 'परंतु हम अपने पीछे बाल-बच्चों को अनाथ नहीं छोड़ सकते। अपनी बहू-बेटियों को मुसलमानों के घरों में भेजने से जो कालिख हमारे नाम पर लगेगी, उसे सहस्र गंगा नदियाँ नहीं धो सकेंगी। इसलिए ग्वालियर, चित्तौड़ और चंदेरी में जो कुछ हुआ था, वही विराटा में भी हो।'

'वह क्या?' व्याकुलता के साथ कुंजर सिंह ने प्रश्न किया।

'जौहर।' धीरज के साथ सबदल सिंह ने उत्तर दिया, 'हमारी स्त्रियाँ और बच्चे हम

टिप्पणी

सबको मरा हुआ समझ कर चेतन चिता पर चढ़ जाएँगे और हम सब थोड़े समय बाद ही अपनी तलवारों के विमान पर बैठ कर उनसे स्वर्ग में जा मिलेंगे।'

कुंजर सिंह को यह काव्यात्मक कल्पना कुछ कम पसंद आई। बोला, 'मुझे यह बहुत अनुचित जान पड़ता है। जिन बालकों को गोद में खिलाया है, जिन स्त्रियों के कोमल कंठों के आशीर्वाद से बाँहों ने बल पाया है, उन्हें अपनी आँखों जीते-जी खाक होते हुए कभी नहीं देखा जा सकता। जब लोग सुनेंगे कि हमने अपने हाथों से निर्दोष बालकों को जला मारा, तब क्या कहेंगे?'

सबदल सिंह ने कहा, 'क्या कहेंगे? कहें। हमारे मर जाने के पीछे लोग हमारे लिए क्या कहते हैं, उसे हम नहीं सुनेंगे और फिर ऐसी अवस्था में हमारे बड़ों ने भी तो जगह-जगह यही किया है।'

'यहाँ कदापि न हो।' कुंजर सिंह बोला, 'जीते-जी ऐसा काम क्यों किया जाए कि मरने के समय जिसके लिए पछताना हो और आसानी के साथ मरने में बाधा पहुँचे?'

सबदल सिंह ने क्षीण स्वर में कहा, 'हम लोग कई दिन से यही बात सोच रहे हैं। मरने से यहाँ कोई नहीं डरता। परंतु हमारे पीछे जो विधवाएँ और अनाथ होंगे, उनकी कल्पना कलेजे को तड़पा देती हैं।'

'क्या पहले कभी विधवा या अनाथ नहीं हुए हैं?' अपने मन को आश्वासन देने के लिए अधिक और अपने श्रोताओं को अपेक्षाकृत कम, कुंजर सिंह ने कहा, 'यदि हमारा यही सिद्धांत है, तो हमें कभी न मरने का ही उपाय सोचना चाहिए और जब हमारे सामने हमारे सब प्रियजन समाप्त हो जाएँ, तब हमें मरना चाहिए। जब रणक्षेत्र में सैनिक जाता है, तब क्या वह यह सब सोच-विचार ले कर जाता है? चलो, हम सब मरने के लिए बढ़ें। एक-एक प्राण का मूल्य सौ-सौ प्राण लें और अपने बाल-बच्चों को परमात्मा के भरोसे छोड़ें। उनके लिए हमें इसलिए भी नहीं डरना चाहिए कि हमारे विरोधियों में अनेक हिंदू भी हैं।'

सबदल सिंह के साथियों ने इस बात को मान लिया। वे सब मरने से नहीं हिचकते थे, परंतु अपने नन्हे बच्चों को अपने हाथ से नष्ट नहीं कर सकते थे।

सबदल सिंह द्वारा रण क्षेत्र में जान की बाजी लगा देने का प्रस्ताव।

'परंतु।' उनमें से एक असाधारण उत्साह के साथ बोला, 'केसरिया बाना हम अवश्य पहनेंगे। मौत के साथ हमारा ब्याह होना है, हम सादा कपड़ा पहन कर दूल्हा नहीं बनेंगे।'

घोर विपत्ति में भी मनुष्य का साथ हँसी नहीं छोड़ती। वे सब इस बात पर थोड़े हँसे और सभी ने इस बात को पसंद किया।

सबदल सिंह बोला, 'परंतु केशर शायद ही विराटा-भर में किसी के घर मिले।' उन सैनिकों में से जिसने दूल्हा बनाने का प्रस्ताव किया था, कहा, 'मैं अभी ढूँढ़ कर लाता हूँ। केशर न मिलेगी, तो हल्दी तो मिलेगी। मौत के हाथ भी तो उसी से पीले होंगे।' और तुरंत वहाँ से अद श्य हो गया।

सबदल सिंह ने कुंजर से कहा, 'अब अपनी तोपों से और अधिक आग उगलाओ।'

कुंजर सिंह बोला, 'परंतु जान पड़ता है, अँधेरी रात के युद्ध में दोनों दल गुँथ गए होंगे।'

'तब जहाँ इच्छा हो, गोले बरसाओ।' सबदल सिंह ने कहा, 'परंतु शत्रु के हाथ गोला-बारूद न पड़ने पावे।'

कुंजर सिंह अपने तोपचियों के पास गया। तोपों के मुँह मुस्कराए। बहुत देर लग गई। लक्ष्य बाँधने में कम समय नहीं लगा। जब इस लक्ष्य पर गोलाबारी आरंभ करा दी, तब सबदल सिंह के पास लौटा।

इस बीच में सबदल सिंह के उन सब सैनिकों ने अपने फटे कपड़े हल्दी से रंग लिए थे। थोड़ी-सी केशर भी एक जगह मिल गई थी। सबदल सिंह ने उसका टीका सबके भाल पर लगाया। कुंजर सिंह ने भी अपने वस्त्र हल्दी में रँगे। सबदल सिंह ने केशर का टीका उसके भाल पर लगाते हुए कहा, 'आज दाँगियों की लाज ईश्वर और तुम्हारी तोपों के हाथ है।'

'राजा !' कुंजर सिंह ने कहा, 'निराश नहीं होना चाहिए। शायद ईश्वर कोई ऐसा ढंग निकाल दे कि बात रह जाए और सब बच जाएँ।'

'और कुछ रहने की जरूरत नहीं, रहे या न रहे।' एक अधेड़ सैनिक बोला, 'हम लोग केसरिया बाना पहन चुके हैं। यह बिना ब्याह के नहीं उतारा जा सकता। सगाई पक्की करके अब विवाह से भागना कैसा? बचने-बचाने के सब विचार ध्यान से हटाओ। यदि यही बात मन में थी, तो भाल पर केशर का तिलक किस बिरते पर लगाया? अब ब्रह्म के सिवा उसे कौन पोंछ सकता है? और इतने दिनों धीरे-धीरे बहुत लड़े, अब जी खोलकर हाथ करेंगे और स्वर्ग में विश्राम लेंगे। सच मानिए, देह भार-सी जान पड़ने लगी है।'

केसरिया बाना पहन कर विराटा के सैनिकों के साथ कुंजर सिंह तथा सबदल सिंह का युद्ध में कूद पड़ना।

सबदल सिंह चिल्लाकर बोला, 'मूठ पर हाथ रख कर राम-दुहाई करो कि सब-के-सब मरने का प्रयत्न करेंगे।'

सबने तलवार की मूठों पर हाथ रख कर ज़ोर से कहा, 'राम दुहाई, राम दुहाई।' ये शब्द कई बार और देर तक दुहराए गए। उत्तरोत्तर उस ध्वनि में प्रचंडता आती गई। वे लोग इधर-उधर घूम कर दुहाई देने लगे। इन लोगों के बढ़ते हुए शोर को अलीमर्दान ने भी सुना। उसने सोचा, खेल बिगड़ गया, अब चुपचाप काम नहीं बन सकता। यही विचार उसके सरदारों और सैनिकों के भीतर उठा। किसी एक ही भाव से प्रेरित हो कर वे लोग, थोड़े-से और कुछ पल उपरांत ही बहुत से, गला खोल कर बोले, 'अल्ला हो अकबर।'

देवी सिंह द्वारा मुसलमानों की नीति समझने के बाद अपनी योजना में परिवर्तन ।

'राम दुहाई' पुकार इस प्रखर और प्रबल स्वर की गूँज में पतली और फीकी-सी पड़ गई। एक बार विराटा के सिपाहियों का कलेजा धसक-सा गया। परंतु 'अल्ला हो अकबर' की प्रबल गूँज के ऊपर कुंजर की तोपों की प्रबलता धायँ-धायँ हो रही थी, इसलिए सबदल सिंह के सैनिकों के हृदय में मरने-मारने की धुन ने, पुनः साहस का संचार कर दिया। उन्हें आशा हो चली कि लड़ाई की लंबी घसीटी हुई थकावट से निस्तार पाने में विलंब नहीं है।

देवी सिंह ने भी 'राम दुहाई' और 'अल्ला हो अकबर' के जयकारे सुने और उसे भी अपनी योजना को बदलना पड़ा। उसने सोचा, अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करना ही चाहता है। अब किसी उपयुक्त अवसर की बाट जोहना बिल्कुल व्यर्थ है। विराटा पर जिसका अधिकार पहले होगा, वही इस युद्ध को जीतने की आशा करे। इन मूर्खों

शब्दार्थ :

केसरिया बाना – केसर के रंग में रँगा कपड़ा।

बिरता – बलबूता

टिप्पणी

देवी सिंह का अलीमर्दान की सेना से युद्ध करना।

की तोपें बिना किसी भेद के गोला बरसा रही हैं। यदि शीघ्र हमारे हाथ में आ गईं तो हम रामनगर और विराटा दोनों स्थानों से अलीमर्दान की सेना को कुचल सकेंगे। वह अपनी सेना लेकर ज़रा और आगे बढ़ा, सवेरा होने में दो-तीन घंटे की देर थी। वह थोड़ा-सा और ठहरना चाहता था, कम-से-कम उस समय तक, जब तक अपने दल को खुल कर लड़ने योग्य परिस्थिति में प्रस्तुत न देख ले।

खंड-उनहत्तर

प्रभात-नक्षत्र क्षितिज के ऊपर उठ आया। दमक रहा था और मुस्करा-सा रहा था। वनराज और नीचे की पर्वत-श्रेणी पर उसका मंद म दुल प्रकाश झर-सा रहा था।

देवी सिंह ने देखा, प्रातःकाल होने में अब विलंब नहीं है। उसने रामनगर की ओर वह बँधा हुआ संकेत किया, जिसे पाकर उस गढ़ी की तोपों को विराटा पर गोले बरसाने थे। उस संकेत के पाने के आधी घड़ी बाद विराटा पर गोले आने लगे।

तब देवी सिंह ने सोचा, यह अच्छा नहीं किया। यदि हमारी तोपों ने इन पागल दाँगियों को पीस डाला, तो अलीमर्दान का विरोध करने के लिए केवल हम हैं। अब किसी तरह यहाँ से अलीमर्दान को हटाना चाहिए। दिन निकलने के पहले यदि हम विराटा पहुँच गए। तो कदाचित् हमारी ही तोपों से हमारा ही चकनाचूर हो जाए, इसलिए सूर्योदय तक केवल अलीमर्दान को खदेड़ने का उपाय करना ही ठीक जान पड़ता है।

देवी सिंह ने अपने दल को आक्रमण करने का आदेश दिया। 'अल्ला हो अकबर' के साथ 'दलीप नगर की जय, महाराज देवी सिंह की जय की पुकारें सम्मिलित हो गईं। अलीमर्दान को अनजानी दिशा के आकस्मिक आक्रमण के धक्के को झेलने में विचलित हो जाना पड़ा, परंतु उसके सैनिक दलीप नगर के सैनिकों की तरह ही युद्ध के लिए तैयार खड़े थे। मुठभेड़ के प्रथम धक्के से पहले ज़रा पीछे हट कर फिर आगे बढ़े। आज अलीमर्दान बेतरह सचेष्ट था। देवी सिंह भी कोई कसर नहीं छोड़ रहा था। दोनों ओर के सैनिक भी हाथ और हथियार दोनों पर प्राणों की होड़ लगा रहे थे। बराबरी का युद्ध हो रहा था। दोनों सयंत तेजस्विता के साथ लड़ रहे थे। ऐसा भासित होता था कि उस युद्ध का भाग्य-निर्णय एक बाल से टँगा हुआ है।

प्रातः काल का प्रकाश होने तक देवी सिंह ने जम कर लड़ना ही ज़्यादा अच्छा समझा। तितर-बितर होने में सारी योजना भ्रष्ट हो जाने का भय था। यही बात अलीमर्दान ने भी सोची।

उत्सुकता के साथ देवी सिंह ने जनार्दन शर्मा और लोचन सिंह के दलों को आँख से टटोला। जनार्दन की टुकड़ी तितर-बितर हो गई थी। कालपी के दल का एक भाग रामनगर की तलहटी में पहुँच गया था, दूसरा देवी सिंह की बगल में ही जनार्दन के एक भाग से उलझा हुआ था और जनार्दन थोड़े से सैनिकों के साथ कालपी की दूसरी टुकड़ी से घिरा हुआ था। लोचन सिंह का एक दस्ता कालपी के एक टुकड़े को अलीमर्दान की छावनी के पीछे निकाल चुका था। लोचन सिंह कालपी वाले दस्ते पर एक ओर और अलीमर्दान के तैयार योद्धाओं पर दूसरी ओर से प्रहार कर रहा था।

लोचन सिंह को अपने निकट देखकर देवी सिंह ने चिल्ला कर कहा, 'शाबाश चामुंडराय, बढ़े चले जाओ।'

'लोचन सिंह की टुकड़ी ने भी उत्तर दिया, 'आए, अभी आए।'

जनार्दन देवी सिंह के और भी पास था। देवी सिंह ने चिल्ला कर कहा, 'जनार्दन, घबराना नहीं। लोचन सिंह और हमारे बीच में शत्रु अभी दबोचा जाता है।' देवी सिंह इतने ज़ोर से चिल्लाया था कि उसका गला भर्रा गया और उसे उठी खाँसी ने उसके सिर को ज़रा नीचा कर दिया और तिरछा भी, इसलिए एक स्थान से आई हुई एक अचूक गोली उसके कान को लेती हुई चली गई, परंतु प्राण बच गए।

चिंता के साथ अलीमर्दान ने देखा। भयानक उत्तेजना के साथ उसकी सेना ने जनार्दन के खंड पर वार करने शुरू किए। जनार्दन के लिए पीछे हटने को न स्थान था, न अवसर। इसलिए वह देवी सिंह की ओर ढलने लगा। देवी सिंह के सैनिकों की मार के कारण कालपी के सैनिकों ने जनार्दन को स्थान दे दिया और वह अपने सैनिकों सहित देवी सिंह की टुकड़ी के साथ आ मिला।

'महाराज देवी सिंह की जय!' इस छोर से अतुल ध्वनि हुई।

'महाराज देवी सिंह की जय!' लोचन सिंह के दल से प्रचंड शब्द गूँज उठे।

रामनगर के गढ़ से विराटा की गढ़ी पर निशाना बाँध कर धाँय-धाँय गोले बरसने लगे और उसकी दीवारें एक-एक करके टूटने लगीं। एक गोला मंदिर पर गिरा। उसका एक भाग खंडित हुआ। दूसरा गिरा, दूसरा भाग खंडित हुआ। तीसरा गिरा, वह धुस्स होकर रह गया। इतनी धूल उड़ी कि चारों ओर छा गई। पत्थरों और ईटों के इतने टुकड़े टूट कर बेतवा की धार में गिरे की पानी छर्र-छर्र हो गया।

रामनगर की तोपों के मुँह बंद करने का कोई उपाय देवी सिंह के हाथ में न था। पहले रामनगर, फिर विराटा की ओर चिंतित द ष्टि से देवी सिंह ने देखा। आँखों में आँसू आ गए, वे कान की जड़ से बहने वाले खून में ढल कर जा मिले।

आह भर कर उसने कहा, 'मेरे हाथ से मंदिर टूटा। हे भगवान्, किसी तरह इस युद्ध को बंद करो—चाहे मेरे प्राण ले कर ही।'

परंतु न तो रामनगर की तोपों ने गोले बरसाने बंद किए और न देवी सिंह के प्राण ही उस समय ले पाए।

विराटा की टूटी हुई दीवारों से फटे चिथड़े पहने हुए सबदल सिंह के सैनिक दिखाई पड़ने लगे। उनके चिथड़े पीले रँगे हुए थे। सिर से फटे हुए साफों के चिथड़े लहरा रहे थे, मानो विजय पताकाएँ हों। रामनगर की तोपों से वे नहीं डर रहे थे। उनकी तोपें कभी अलीमर्दान और कभी जनार्दन की टुकड़ियों पर आग उगल रही थीं। परंतु एक गोले के बाद दूसरे के चलने में बराबर अंतर बढ़ता चला जाता था।

सूर्योदय हुआ—उसी सज-धज के साथ, जैसा असंख्य युगों से होता चला आया है। सूर्य की किरणों ने भी विराटा के दुर्बल, विवर्ण सैनिकों के पीले वस्त्र-खंडों की ओर झाँका और उनकी दमकती तलवारों को चमका दिया, मानो रश्मियों ने उन्हें अर्घ्य दिया हो।

विराटा के सैनिक उन टूटी-फूटी दीवारों के पीछे डटे हुए थे। बाहर निकल कर लड़ने को अब तक नहीं आए थे। देवी सिंह ने इन पीत-पट-धारियों की चुप्पी का अर्थ समझ लिया। आह भर कर मन में कहा, 'इसका पाप भी मेरे सिर आना है। किस कुघड़ी

शब्दार्थः

भासित – प्रतीत, लग रहा था

विवर्ण – कांतिहीन, मुरझाए

रश्मि – किरण

अर्घ्य – पूजन के लिए दूध और जल

टिप्पणी

में दलीप नगर का राजमुकुट मेरे माथे पर रखा गया था!' एक ही क्षण पीछे देवी सिंह ने दाँत पीस कर निश्चय किया– इन्हें अवश्य बचाऊँगा, चाहे होड़ में दलीप नगर नहीं, सारी प थ्वी और स्वर्ग को भी हार जाऊँ और चिल्ला कर बोला, 'बढ़ो-बढ़ो। क्या खड़े हो कर युद्ध कर रहे हो! आज ही माँ का ऋण चुकाना है। बढ़ो और मरो, इससे अच्छी म त्यु कभी नहीं मिलेगी।'

सैनिक बढ़े और उन सबके आगे उछलता हुआ देवी सिंह।

खंड-सत्तर

परंतु अलीमर्दान वाले दस्ते ने इस भीषण आक्रमण को उसी तरह रोक लिया, जैसे ढाल तलवार का वार रोक लेती है। जिस ओर से लोचन सिंह आक्रमण कर रहा था, उस ओर कालपी की एक टुकड़ी ने भयंकर संग्राम आरंभ कर दिया परंतु वह दो तरफ से घिर गई।

अलीमर्दान, देवी सिंह के सैनिकों से लड़ता-भिड़ता, पंक्तियों को चीरता-फाड़ता नदी के किनारे आ गया, जहाँ रात के आरंभ से ही विराटा के कुछ सैनिक प्रहरी का काम कर रहे थे। उन्हें थोड़े-से क्षणों में समाप्त करके वह अपने कुछ सैनिकों सहित नाव पर चढ़ गया। उसके एक दस्ते ने तीरवर्ती गाँव पर अधिकार कर लिया। विराटा-गढ़ी की फूटी दीवारों में से बंदूकों की एक बाढ़ चली। अलीमर्दान के कुछ सैनिक हताहत हुए। उसके और सैनिक प्रचुर संख्या में पानी में कूद पड़े। वहाँ धार छोटी थी। वे लोग जल्दी ही ध्वस्त मंदिर के पीछे वाली पठारी पर आ गए। अलीमर्दान भी वहीं नाव द्वारा आ गया।

देवी सिंह प्रबल पराक्रम से ही अलीमर्दान के शेष सैनिकों को पानी में कूद पड़ने से न रोक सका। उसके दल ने उन लोगों को थोड़ा-सा पीछे हटाया। फिर देवी सिंह भी अपने कुछ सैनिकों के साथ पानी में कूद पड़ा।

अलीमर्दान और उसके सैनिक दौड़ते हुए ऊपर चढ़े।

विराटा के पीत-पट-धारी अपनी टूटी दीवारों के बाहर निकल पड़े। तलवारों से सिर और धड़ कटने लगे। अलीमर्दान के सैनिक कवच और झिलम पहने हुए थे, तो भी दाँगियों की तलवारों ने उन्हें चीर डाला।

सबदल सिंह ने अलीमर्दान को ललकारा, 'जब तक इस गढ़ी में दाँगी का जाया जीवित है, तेरी साध पूरी न हो पाएगी। ले।'

अलीमर्दान चतुर लड़ाका था। सबदल सिंह के वार को बचा गया और फिर उसने अपनी तलवार का ऐसा प्रहार किया कि उसका दायाँ हाथ कंधे से कट कर अलग जा गिरा। सबदल सिंह भूशायी हो गया। बेतवा की मंदगामिनी धारा पर रपट-रपट कर चमकने वाली किरणों की ओर उसकी द ष्टि थी।

फिर जो कुछ हुआ, वह थोड़े-से क्षणों का काम था। सबदल सिंह के योद्धा, अलीमर्दान के बचे हुए दस्ते की तलवारों की नोकों पर झूम-झूम कर आ टूटने लगे। अलीमर्दान के थोड़े से ही कवचधारी उन लोगों से बच पाए। परंतु दाँगी कोई न बचा। जगह-जगह कटे शरीरों के ढेर लग गए। केसरिया बानों से ढँकी हुई प थ्वी हल्दी से रँगी मालूम होती थी, मानो रणचंडी के लिए पावड़ा बिछाया गया हो।

शब्दार्थ :
तीरवर्ती – किनारे पर बसे
झिलम – लोहे का टोप
प्रचुर – बहुत सारे
जाया – बेटा, जन्मा
भूशायी – भूमि पर गिरा, म त

देवी सिंह अपने थोड़े से सैनिकों सहित गढ़ी के नीचे आ गया। विलंब हो गया था। अलीमर्दान गढ़ी में प्रवेश कर चुका था।

देवी सिंह ने अपने सैनिकों को, जो उस पार थे, नदी में कूद पड़ने के लिए हाथ झुकाया। इतने में कुंजर सिंह ने एक गोला दलीप नगर की इस टुकडी पर फेंका। इस कारण उन्हें ज़रा पीछे हटना पड़ा। परंतु दलीप नगर की सेना का एक बहुत बड़ा भाग नदी-किनारे के ज़रा ऊपरी भाग से पानी में कूद पड़ा और वेग तथा व्यग्रता के साथ देवी सिंह की ओर आने लगा। देवी सिंह धीरे-धीरे गढ़ी की टूटी दीवारों की ओर चढ़ने लगा। पीले कपड़ों से ढ़की हुई म त और अर्द्धम त देहों को देख कर उसका कलेजा धँसने लगा और पैर लड़खड़ाने लगे। वह गढ़ी के भीतर न जा सका। धार तैरकर आने वाले अपने सैनिकों के आने तक वहीं ठिठक गया। पीले वस्त्रों से ढके हुए लहूलुहान शवों की ओर फिर आँख गई। होंठ दबा कर मन में कहा-कुंजर सिंह की हिंसा ने इन्हें मुझसे न मिलने दिया।

खंड-इकहत्तर

कुंजर सिंह की तोप का वह अंतिम गोला था। उसे दागकर कुंजर सिंह अपनी तोपों को नमस्कार कर खोह की ओर तेजी के साथ आया। खोह के बाहर उसे वीणा-विनिंदित स्वर में सुनाई पड़ा -

> 'मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के।
> बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी रास;
> उड़ गए फुलवा, रह गई बास।
> मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के।

'उठो चलो।' कुंजर सिंह ने खोह में धँस कर कुमुद से कहा,' 'मुसलमान घुस आए। हमारे सैनिकों ने जौहर कर लिया है।'

कुमुद खड़ी हो गई। मुस्कराई। परंतु आँखों में एक विलक्षण प्रचंडता थी। बोली, 'सबने जौहर कर लिया है! सबने? अच्छा किया। चलो, कहाँ चले?'

'नदी के उस पार गढ़ी के पूर्व की ओर से। अभी वहाँ कोई नहीं पहुँचा है। हम दोनों चलेंगे'।

'हाँ, दोनों चलेंगे उस पार; परंतु अकेले-अकेले।'

'मैं समझा नहीं।' कुंजर सिंह ने व्यग्रता के साथ कहा।

'मैं उस ओर से जाऊँगी, जहाँ मार्ग में कोई न मिलेगा।' कुमुद द ढ़ता के साथ बोली, 'आप उस ओर से आएँ, जहाँ जौहर हुआ है। हम लोग अंत में मिलेंगे।'

और उसने अपने आँचल के छोर से जंगली फूलों की गूँथी हुई एक माला निकाली और कुंजर के गले में डाल दी। उस माला में फूल अधखिले और सूखे थे।

कुंजर सिंह ने कुमुद को छाती से लगा लिया। कुमुद तुरंत उससे अलग हो कर बोली, 'यह मेरा अक्षय भंडार ले कर जाओ, अब मेरे पास और कुछ नहीं।' कुमुद के आँसू आ गए। उसने उन्हें निष्ठुरता के साथ पोंछ डाला। थोड़ी दूर पर लोगों की आहट सुन कर कुमुद ने आदेश के स्वर में कहा, 'जाओ। खड़े मत रहो। मुझे मार्ग मालूम

कुमुद द्वारा जंगली फूलों की माला कुंजर के गले में डालकर पति रूप में वरण करना।

शब्दार्थ :
विनिंदित – वीणा–विनिन्दित **वीणा को लजाने वाला**
नंदन वन – इन्द्र का मंघ्न नामक वन
रास – ढेर, राशि
निःशंक – जिसमें कोई शंका न हो
असंदिग्घ – जिसमें कोई संदेह न हो।

टिप्पणी

है।' फिर जाते-जाते मुड़कर बोली, 'मेरा मार्ग निःशंक है ; तुम अपना असंदिग्ध करो।'

'मैं अभी आकर मिलता हूँ। तुम चलो।' कुंजर सिंह ने कहा। कुमुद तेजी के साथ एक ओर चली गई और दूसरी ओर तेजी के साथ कुंजर सिंह।

उन दोनों के चले जाने के थोड़ी देर बाद अलीमर्दान अपने लहूलुहान सैनिकों के साथ आ धमका। जब वहाँ कोई न मिला उसने अपने सैनिकों से कहा, 'यहीं कहीं इन चट्टानों में तलाश करो। मैं इधर देखता हूँ। कुछ लोग इधर से आने वालों को रोकने के लिए मुस्तैद रहना।'

अलीमर्दान और उसके कुछ सैनिक इधर-उधर ढूँढ़ने-खोजने लगे। जिस ओर कुंजर सिंह गया था, उसी ओर अलीमर्दान गया। एक ऊँची चट्टान पर खड़े हो कर अलीमर्दान ने धीरे से अपने निकटवर्ती एक सैनिक से कहा, 'वह देखो, धीरे-धीरे उस ढालू चट्टान की तरफ जा रही है। कमाल है, देखो।'

खंड-बहत्तर

कुंजर सिंह और देवी सिंह के बीच युद्ध

कुंजर सिंह को मार्ग में देवी सिंह मिल गया।

'तुम कहाँ जा रहे हो?' देवी सिंह ने पूछा और जो बात वह कहना नहीं चाहता था, वह उसके मुँह से निकल गई, 'तुमने जौहर नहीं किया?'

कुंजर सिंह ने भी अपने कपड़े पीले किए थे, परंतु वह सार्वजनिक बलिदान में अपनी तोपों की धुन के कारण शामिल न हो पाया था। देवी सिंह की बात उसके कलेजे में काँटे की तरह चुभ गई।

बोला, 'जौहर ही के लिए आया हूँ। आज जीवन-भर की कसक मिटाऊँगा। तुमने मेरे स्वत्व का अपहरण किया। तुम्हें मारे बिना मुझे कभी चैन न मिलेगा। तुम्हारा सिर काटने से बढ़ कर मेरे लिए कुछ भी नहीं!' और देवी सिंह पर वार करने लगा। वार सँभालते हुए देवी सिंह ने कहा, 'स्वर्ग या नरक जो तुम्हारे भाग्य में होगा, वहीं अभी भेजता हूँ।'

लड़ाई के लिए स्थान उपयुक्त न था, इसलिए स्वभावतः दोनों लड़ते-लड़ते नदी की ढालू पठारी की ओर क्रमशः चले गए।

दलीप नगर की सेना ने अपने राजा को इस विपत्ति में ग्रस्त देखा। अलीमर्दान भी बहुत अधिक सैनिक लेकर विराटा की गढ़ी में नहीं गया था, इसलिए उसकी सेना भी अपने नायक की रक्षा के लिए उत्साहित हो उठी। दोनों दल नदी की ओर झुके और परस्पर लड़ते-भिड़ते पानी में कूद पड़े। लोचन सिंह पीछे से दबाता हुआ आ पहुँचा। जनार्दन भी दौड़ पड़ा। इसी भीड़ में एक ही स्थान पर रामदयाल, लोचन सिंह और छोटी रानी आ भिड़े।

रानी ने लोचन सिंह पर तलवार उठाई और कहा, 'ले बेईमान, मूर्ख!' लोचन सिंह के पैर को इस वार ने थोड़ा-सा घायल कर दिया। लोचन सिंह बोला, 'दलीप नगर की दुर्दशा के कारण को अभी मिटाता हूँ।' और आँधी की तरह तलवार घुमाकर लोचन सिंह ने छोटी रानी की भूलोक-यात्रा समाप्त कर दी।

रामदयाल खिसका। कहता गया, 'दाऊजू, मैं लड़ाई में नहीं हूँ। मैं तो किसी को ढूँढ़ रहा हूँ।' 'जो जन्म-भर किया है, वही किया कर नीच!' लोचन सिंह ने लात मार कर कहा और वह तुरंत अपनी सेना के आगे पानी में कूद पड़ा। रामदयाल एक चट्टान पर

से भरभरा कर पत्थरों से टकराता हुआ पानी में जा गिरा और फिर कभी नहीं देखा गया।

नदी की वह छोटी धार उतराते हुए सिपाहियों से भर गई। कोई कूदते जा रहे थे, कोई तैरते और कोई गढ़ी के नीचे पहुँचते जा रहे थे।

उधर खुली और विस्त त जगह पाकर कुंजर सिंह, देवी सिंह पर वार पर वार करने लगा। दलीप नगर और कालपी के भी कुछ सैनिक लड़ते-लड़ते इसी ओर आ रहे थे। ढालू चट्‌टान के धारवर्ती छोर की ओर कुमुद सरकती जा रही थी और पीछे-पीछे अलीमर्दान। वह शीघ्र गति से और अलीमर्दान हथियारों के बोझ के मारे ज़रा धीरे-धीरे।

कुंजर सिंह ने देवी सिंह पर वार करते-करते उस ओर देखा। हाथ शिथिल हो गया। हाँफते-हाँफते बोला, 'प्रलय हुआ चाहती है।'

'अभी, एक क्षण की भी कसर नहीं।' देवी सिंह ने कहा और तलवार का भरपूर हाथ दिया। कुंजर सिंह का सिर धड़ से कटकर अलग जा पड़ा। गले की माला छिन्न हो गई। सूखे हुए फूल पर रक्त का छींटा पड़ा। सूर्य की किरण में वह चमक उठी मानो अनेक रश्मियों की ज्योति उसमें समा गई हो।

देवी सिंह द्वारा कुंजर सिंह का सिर काट देना

अलीमर्दान और कुमुद के बीच अभी कई डगों का अंतर था। देवी सिंह उसी ओर लपका।

कुमुद शांत गति से ढालू चट्‌टान के छोर पर पहुँच गई। अपने विशाल नेत्रों की पलकों को उसने ऊपर की ओर उठाया उँगली में पहनी हुई अँगूठी पर किरणें फिसल पड़ीं। दोनों हाथ जोड़कर उसने धीमे स्वर में गाया

मलिनिया, फुलवा ल्याओ नंदन वन के
बीन-बीन फुलवा लगाई बड़ी रास;
उड़ गए फुलवा, रह गई बास।'

उधर तान समाप्त हुई, इधर उस अथाह जल-राशि में पैंजनी का 'छम्म' से शब्द हुआ। धार ने अपने वक्ष को खोल दिया और तान समेत उस कोमल कंठ को सावधानी से अपने कोश में रख लिया।

ठीक उसी समय वहाँ अलीमर्दान भी आ गया। घुटना नवा कर उसने कुमुद के वस्त्र को पकड़ना चाहा, परंतु बेतवा की लहर ने मानो उसे फटकार दिया। मुट्‌ठी बाँधे खड़ा रह गया।

इतने में रक्त से रँगी तलवार लिए हुए देवी सिंह आ पहुँचा। अलीमर्दान ने तलवार समेत अपने दोनों हाथों को अपनी छाती पर कस कर कहा, 'आप—राजा देवी सिंह हैं?'

'हाँ सँभालो।' देवी सिंह ने उत्तर दिया।

'क्या झलक थी महाराज!' लड़ने का कोई भी लक्षण न दिखाते हुए अलीमर्दान बोला, 'बहुत हो चुकी। अब बंद करिए। आप दलीप नगर पर राज्य करिए। हम लोग लड़ना नहीं चाहते। भ्रम ने हमारे-आपके बीच में बैर खड़ा कर दिया था।'

दोनों पक्षों के सैनिक मतवाले से दौड़ते चले आ रहे थे। अलीमर्दान ने निवारण करने

के लिए ज़ोर से कहा, 'दूर रहो। चट्टान की उस छोटी-सी खोह पर जो मिट्टी है, उसके पास मत आना। उसमें पद्मिनी के पैर का और सरकने का चिह्न बना हुआ है। उससे दूर रहना।'

तलवार नीची करके देवी सिंह ने कहा, 'पद्मिनी का नाम आपके मुँह से अच्छा नहीं लगता नवाब साहब। आप ही ने उसके प्राण लिए हैं। आप यहाँ से जाइए। यह स्थान हमारी पूजा की चीज़ है।'

'अवश्य।' अलीमर्दान क्षीण हँसी हँस कर बोला, 'तभी आपकी तोपों ने उसकी एक-एक ईंट धूल में मिला दी है।'

सैनिकों की भीड़ बढ़ती चली जा रही थी, परंतु वे लड़ रहे थे। रण का उत्साह एक अनिश्चित उत्सुकता में परिवर्तित हो गया था। एक ओर से घायल लोचनसिंह और दूसरी ओर से लहूलुहान मुसलमान नायक वहाँ आए। नायक ने अपने नवाब से कहा, 'क्या चली गई? लड़ाई क्यों बंद कर दी गई?'

अलीमर्दान ने तलवार नहीं उठाई। अपने सैनिकों को रोकते हुए बोला, 'लड़ाई बंद करो। महाराज देवी सिंह के साथ हमारी संधि हो गई है।' फिर पास खड़े हुए देवी सिंह से कहा, 'रोकिए अपने सिपाहियों को। नाहक खूनखराबी को बचाइए।'

देवी सिंह ने कड़क कर लोचन सिंह से कहा, 'तुम्हारे जैसा मूर्ख पशु ढूँढ़ने पर नहीं मिलेगा। शांत हो जाओ, नहीं तो तुम्हारे ऊपर मुझे हथियार उठाना पड़ेगा।'

अलीमर्दान और देवी सिंह के बीच कुछ शर्तों के साथ संधि स्थापित हो गई। सब लोग लौटकर धीरे-धीरे चले। अभी ढालू चट्टान के सिरे पर पहुँच न पाए थे कि कुछ सिपाही अचेत, आहत गोमती को देवी सिंह के सामने ले आए।

'क्या महारानी?' देवी सिंह ने पूछा, 'पुरस्कार के लिए ले आए हो? मिलेगा, पर यहाँ से सबको ले जाओ।'

कुमुद का आत्मोत्सर्ग

'रानी नहीं हैं महाराज!' एक सैनिक ने उत्तर दिया, 'उनका रुंड तो उस पार पड़ा है। यह कोई और है। कहती थी, राजा के पास ले चलो, बदला लेना है। कहकर अचेत हो गई। इसके पास तमंचा था। वह हमने ले लिया है।'

देवी सिंह ने ज़रा बारीकी के साथ देखा। एक आह ली और कहा, 'मरणासन्न है।' सैनिकों ने अचेत गोमती को नीचे रखा। देवी सिंह ने उसके सिर पर हाथ फेरा। एक क्षण बाद गोमती ने आँखें खोलीं। भूली-भटकी हुई द ष्टि। फिर तुरंत बंद कर लीं। अलीमर्दान अपनी सेना ले कर चला गया। देवी सिंह दाँगी वीरों के शवों के पास गया। सिर नवा कर उसने प्रणाम किया। उसके सैनिकों ने नतमस्तक हो कर नमस्कार किया।

देवी सिंह ने कहा, 'अपनी बान पर अटल थे ये। इन्हें मरने में जैसा सुख मिला होगा, हमें कदाचित् जीवन में भी न मिलेगा। बहुत समारोह के साथ इनकी दाह-क्रिया की जानी चाहिए।' देवी सिंह का गला भर आया।

फिर संयत हो कर थोड़ी देर में बोला, 'विराटा का गाँव किसी अन्य को जागीर में कभी नहीं दिया जाएगा। जब तक दाँगियों में कोई भी बचेगा, उसी के हाथ में यह गाँव रहेगा।'

फिर जनार्दन शर्मा और अपने सरदारों को वह उस स्थान पर ले गया जहाँ जाकर कुमुद

शब्दार्थ :

रश्मियों – किरणों

पैंजनी – पैर का एक आभूषण, पायल

ने आत्म-बलिदान किया था। वह स्थान मंदिर के सामने से ज़रा हट कर दक्षिण की ओर था। ढालू चट्टान पर बारीक मिट्टी का एक बहुत हल्का घर जमा था। उस पर कुमुद के पद और सरकने के चिह्न अंकित थे। दह की लहरें सजग और चपल थीं। देवी सिंह को रोमांच हो आया। उस ओर उँगली से संकेत करते हुए जनार्दन से कहा, 'देवी ये अंतिम चिह्न छोड़ गई हैं। लहरें कुछ कह-सी रही हैं। उनके नीचे से पैंजनी की ध्वनि अब भी आती जान पड़ती है।'

जनार्दन थके हुए स्वर में बोला, 'महाराज, हम लोगों के आने में बहुत विलंब हो गया।'

जनार्दन' राजा ने कहा, 'कुंजर सिंह की नादानी ने मेरी सारी योजना पर पानी फेर दिया।' दह की लहरों पर से आँख को हटा कर एक क्षण बाद बोला, 'इन चिह्नों को इस चट्टान पर ज्यों-का-त्यों अंकित करवा देना चाहिए। लोग पर्वो पर आकर इस पुण्य-स्म ति से अपने को पवित्र किया करेंगे।

'जो आज्ञा।' जनार्दन ने उत्तर दिया। देवी सिंह ने दह की ओर देखा।

अभी-अभी थोड़ी देर पहले किसी की उँगली की अँगूठी ने सूर्य की किरणों से होड़ लगाई थी। अभी-अभी थोड़ी ही देर पहले उस जलराशि पर 'छम्म' से कुछ हुआ। किसी अलौकिक सौंदर्य का उस शब्द के साथ संबंध था और लहरों पर पवन में वह गीत गूँज रहा था–

'उड़ गए फुलवा, रह गई बास।'

शब्दार्थ :
बान – प्रण
दह – नदी का गहरा भाग

पाठगत प्रश्न 32.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. अलीमर्दान विराटा की तरफ तुरंत कूच करने का निश्चय करता है, क्योंकि
   (क) वह रामदयाल के बहकावे में आ गया है
   (ख) वह मंदिर को ध्वस्त करना चाहता है
   (ग) वह जल्द-से-जल्द कुमुद को अपने कब्जे में करना चाहता है
   (घ) वह सबदल सिंह को सबक सिखाना चाहता है
2. सबदल सिंह कुंजर सिंह को इसलिए शरण देता है कि
   (क) कुंजर सिंह राजकुमार है और शरणागत है।
   (ख) कुंजर सिंह उसका दूर का संबंधी है।
   (ग) कुंजर सिंह की सहायता से वह रामनगर को सबक सिखा सकता है।
   (घ) कुंजर सिंह तोप चलाने में निपुण है।
3. कुंजर सिंह रामदयाल को गढ़ में देखकर चकित होता है, क्योंकि
   (क) उसे अपने रहस्य का भंडाफोड़ होने की आशंका होती है।
   (ख) वह रामदयाल से डरता है।
   (ग) उसे किसी षड्यंत्र की आशंका होती है।
   (घ) वह उसे अलीमर्दान का जासूस समझता है।

4. कुमुद युद्ध में कुंजर सिंह के साथ चलने का प्रस्ताव करती है, क्योंकि
   (क) वह देवी सिंह की महत्त्वाकांक्षा पर अपना बलिदान करना चाहती है।
   (ख) अलीमर्दान से वह डर गई है।
   (ग) वह नरपति सिंह से अपना पीछा छुड़ाना चाहती है।
   (घ) वह कुंजर सिंह से प्रेम करती है।

5. कुमुद बेतवा में छलाँग लगा लेती है, क्योंकि
   (क) वह अपने जीवन से निराश हो गई है।
   (ख) कुंजर सिंह को पति रूप में पाना उसके लिए संभव नहीं है।
   (ग) अलीमर्दान के स्पर्श से अपने को अपवित्र नहीं करना चाहती।
   (घ) वह अपने को दुर्गा का अवतार नहीं मानती।

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए:

6. कुमुद की रक्षा के विषय में रामदयाल ने बड़ी रानी से क्या कहा ?
7. रामदयाल ने कुमुद के बारे में अलीमर्दान से क्या कहा ?
8. सबदल सिंह ने कुंजर सिंह को आश्रय देने के संबंध में क्या व्यवस्था की ?
9. कुंजर सिंह विराटा के दुर्गा मंदिर की रक्षा किस तरह करता है ?
10. देवी सिंह ने कफन सिंह बुंदेला के रूप में युद्ध में कैसी भूमिका निभाई ?
11. देवी सिंह ने गोमती को अपनाने के प्रस्ताव पर क्या उत्तर दिया ?

32.4 बोध प्रश्न

आप पूरा उपन्यास एक बार पढ़ चुके हैं। आशा है आपको पसंद आया होगा। अब पाठ के आधार पर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

1. नायक सिंह ने देवी सिंह को क्या वचन दिया ?
2. जनार्दन ने हकीम आगा हैदर से राजा नायक सिंह संबंधी कौन–सा प्रस्ताव किया था ?
3. कालपी और दलीप नगर की सैनिक टुकड़ियों में झड़प के बाद कुमुद कहाँ गई ?
4. नायक सिंह की म त्यु के बाद राजगद्दी किसे मिली ?
5. कुंजर सिंह को अलीमर्दान की सहायता क्यों अच्छी नहीं लगी ?
6. लोचन सिंह देवी सिंह से क्यों नाराज़ हो कर चला गया ?
7. जनार्दन ने लोचन सिंह को कैसे मनाया ?
8. सिंहगढ़ पर विजय प्राप्त करने के बाद देवी सिंह ने छोटी रानी के साथ कैसा व्यवहार किया ?
9. रामदयाल द्वारा कुमुद का पता दिए जाने पर अलीमर्दान ने क्या प्रतिक्रिया व्यक्त की ?

10. काले खाँ ने विराटा के राजा सबदल सिंह से क्या प्रस्ताव किया ?
11. नरपति सिंह विराटा के राजा की चिट्‌ठी ले कर दलीप नगर क्यों गया ?
12. विराटा में लौटने पर कुंजर सिंह ने कुमुद से क्या कहा ?
13. कुंजर सिंह ने सबदल सिंह के साथ कैसा छल किया ?
14. कुंजर सिंह ने कुमुद की रक्षा के लिए क्या प्रस्ताव किया और उसने क्या उत्तर दिया ?
15. विराटा के पतन की संभावना पर कुंजर सिंह ने कुमुद से क्या कहा ?
16. अलीमर्दान ने विराटा पर तेजी से आक्रमण करने का निश्चय क्यों किया ?
17. विराटा के पतन की संभावना देख कर वहाँ के राजा सबदल सिंह ने क्या निर्णय लिया ?
18. विराटा के पतन के बाद, अलीमर्दान द्वारा पीछा किए जाने पर कुमुद ने क्या किया?

32.5 कथा-सार

'कथा' क्या है, इसे हम प्रारंभ में ही जान चुके हैं; और आशा करते हैं कि आप उसे समझ गए होंगे, अब हम संक्षेप में 'विराटा की पद्‌मिनी' उपन्यास की कथा प्रस्तुत कर रहे हैं।

'विराटा की पद्‌मिनी' में बुंदेलखंड के कुछ छोटे-छोटे राज्यों के आपसी संघर्ष की कथा प्रस्तुत की गई है। ये राज्य थे : दलीप नगर, रामनगर, गढकुंडार, बड़ नगर आदि। कालपी मुगल साम्राज्य का एक सूबा था जिसका फ़ौजदार अलीमर्दान था। उस समय दिल्ली में फर्रुखसियर का (1713–1719) शासन था।

बड़ नगर के पालर नामक गाँव में दुर्गा का एक प्रसिद्ध मंदिर था। वहीं नरपति दाँगी के घर एक सुंदर कन्या का जन्म हुआ, जो किशोरावस्था में पहुँचने पर दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो गई। उसका नाम कुमुद था। वह पद्‌मिनी कन्या कहलाती थी क्योंकि वह चंपा के समान गोरी थी उसके शरीर से सुगंध निकलती थी और वह कमल के समान कोमल थी।

संयोगवश दलीप नगर का सनकी और अधपगला राजा नायक सिंह अपने दरबारियों के साथ पालर की झील में मकर संक्रांति का स्नान करने आया। राजकुमार कुंजर सिंह और सैनिक सरदार लोचन सिंह, देवी के दर्शन के लिए दुर्गा मंदिर गए। उसी समय कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान के दो मुसलमान सैनिक भी दर्शन के बहाने वहाँ आए। बातों-बातों में दलीप नगर और कालपी के सैनिकों में झड़प हो गई। फिर इस झड़प ने कालपी और दलीप नगर की सैनिक टुकड़ियों ने युद्ध का रूप ले लिया। मुसलमान सैनिक दुर्गा मंदिर को ध्वस्त कर दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली दाँगी कन्या पद्‌मिनी का अपहरण करना चाहते थे। इधर दलीप नगर का राजा भी उसके सौंदर्य की कहानी सुन उसे अपने महल में रखना चाहता है। अपनी सनक में वह कालपी की सैनिक टुकड़ी पर आक्रमण कर बैठता है। मार-काट मच जाती है। तभी इस युद्ध में दलीप नगर के राजा की पराजय होने ही वाली थी कि एक बहादुर बुंदेला देवी सिंह जो पालर में बारात के साथ दूल्हा वेश में आया था, राजा नायक सिंह की

सहायता के लिए पहुँच गया और नायक सिंह की रक्षा हो गई। कालपी की सैनिक टुकड़ी भी पराजित होकर भाग गई।

पर युद्ध में राजा और बुंदेला युवक दोनों घायल हो गए। उपचार के बाद देवी सिंह स्वस्थ होकर राजा के साथ रहने लगा। वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन गया।

उधर दाँगी-कन्या कुमुद के प्रति श्रद्धा भाव होने पर भी राजकुमार कुंजर सिंह के मन में उसके प्रति अनुराग पैदा हो गया। कुमुद के मन में भी राजकुमार के प्रति वैसा ही अनुराग भाव जन्म लेता है। कुंजर सिंह कुमुद को दलीप नगर के राजा नायक सिंह और कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान दोनों से बचाने का संकल्प करता है।

इस बीच दलीप नगर का राजा नायक सिंह अपने बिगड़ते स्वास्थ्य के कारण मर जाता है और उसके स्थान पर उसका प्राण-रक्षक देवी सिंह दलीप नगर का राजा बन जाता है। कुंजर सिंह, जो नायक सिंह का दासी-पुत्र था, इस निर्णय का विरोध करता है। नायक सिंह की छोटी रानी भी विद्रोह कर देती है। वह स्वयं दलीप नगर की गद्दी पाना चाहती है। इसके लिए वह अलीमर्दान को अपना राखीबंद भाई बनाती है। उसके पति स्वर्गीय नायक सिंह का प्रिय पात्र किंतु धूर्त नौकर रामदयाल उसकी सहायता करता है। कुंजर सिंह नए राजा देवी सिंह का तो विरोध करता है, पर वह अलीमर्दान से सहायता लेना पसंद नहीं करता। इस कारण कुंजर सिंह छोटी रानी के क्रोध का भाजक बनता है। पर वह सिंहगढ़ के किले पर कब्जा करके वहीं रहने लगता है। छोटी रानी भी वहीं आ जाती है।

अलीमर्दान कुमुद को अपने हरम में शामिल करना चाहता है। उसके भय से नरपति सिंह कुमुद को पालर के दुर्गामंदिर से हटाकर विराटा के दुर्गामंदिर में ले जाता है। उधर कुछ दिनों तक सिंहगढ़ में रहने के बाद कुंजर सिंह को देवी सिंह से पराजित होकर सिंहगढ़ छोड़ना पड़ता है। वह भटकता हुआ विराटा के किले में पहुँचता है। वहाँ का राजा उसे दुर्गामंदिर की रक्षा का भार और तोपखाने का संचालन कार्य सौंपता है। छोटी रानी सिंहगढ़ के दुर्ग से निकल कर रामनगर राज्य की शरण लेती है। विराटा और रामनगर के राज्य एक-दूसरे के पुश्तैनी दुश्मन हैं।

अलीमर्दान विराटा पर आक्रमण करता है। उसका उद्देश्य कुमुद को प्राप्त करना है। देवी सिंह अलीमर्दान का सामना करता है पर न चाहते हुए भी वह विराटा पर आक्रमण करने को बाध्य होता है। वह कुंजर सिंह को उसके विद्रोह के लिए दंड देना चाहता है। इस बीच कुंजर सिंह और कुमुद का अनुराग गंभीर प्रेम में परिणत हो गया है। कुंजर सिंह अपने प्राण देकर भी कुमुद की रक्षा करने का संकल्प करता है।

विराटा की गढ़ी अलीमर्दान और देवी सिंह, दोनों की सेनाओं के बीच घिर जाती है। विराटा के राजा और सैनिक केसरिया वस्त्र धारण कर अलीमर्दान की सेना के साथ जौहर-युद्ध में कूद पड़ते हैं और म त्यु का आलिंगन करते हैं। कुंजर सिंह कुमुद को अलीमर्दान के हाथों से बचाने के लिए उसे लेकर मंदिर से बाहर निकलता है। कुमुद, कुंजर सिंह के गले में जंगली फूलों की एक माला डालती है, जो उसे स्वीकार है। वहाँ से दोनों अलग-अलग राहों से प्रस्थान करते हैं। कुंजर सिंह की भेंट देवी सिंह से हो जाती है, जहाँ युद्ध ज़ोरों पर है। कुंजर सिंह देवी सिंह के हाथों मारा जाता है। उधर अलीमर्दान कुमुद का पीछा करता है। पर वह उसके हाथ नहीं आती। वह बेतवा नदी में छलाँग लगाकर प्राण त्याग देती है। इस प्रकार कुमुद अपना नाम 'विराटा की पद्मिनी' सार्थक करती है।

32.6 कथा में इतिहास और लोक-कथा

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्‌मिनी' में इतिहास को प्रमुखता न देकर मात्र उसका उल्लेख ही किया है। प्रस्तुत उपन्यास की प्रमुख कथा बुंदेलखंड के छोटे-छोटे हिंदू राज्यों—दलीप नगर, बड़ नगर, विराटा, रामनगर, भांडेर और कालपी से संबद्ध है। कालपी के अतिरिक्त शेष हिंदू राज्यों का तो विवरण भी इतिहास की पुस्तकों में नहीं मिलता पर इन राज्यों के गढ़ और किले आज भी भग्नावशेष रूप में बुंदेलखंड में विद्‌यमान हैं। इनके संबंध में बुंदेलखंड के लोगों में अनेक लोक-कथाएँ और किंवदंतियाँ भी प्रचलित हैं। पुराने दस्तावेजों में इनके कुछ विवरण भी मिल जाते हैं। इन्हीं में से एक लोक-कथा एक दाँगी-कन्या की है, जो पालर गाँव में पैदा हुई थी और पंद्रह-सोलह वर्ष की अवस्था तक पहुँचते-पहुँचते दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थी। लोक-कथा के अनुसार वह अभूतपूर्व सुंदरी और तेजस्वी कन्या थी। विराटा के दुर्गामंदिर में वह दुर्गा के समान ही पूजी जाती थी। पर कालपी का शासक उसके सौंदर्य पर रीझ कर उसे अपनी रानी बनाना चाहता था। इस उद्‌देश्य से उसने विराटा के गढ़ पर आक्रमण किया। विराटा के वीरों ने जौहर व्रत धारण कर युद्ध किया और सभी वीरगति को प्राप्त हुए। पर कालपी का मुसलमान शासक 'पद्‌मिनी' को प्राप्त करने में असफल रहा, क्योंकि उसने बेतवा नदी में कूद कर अपने प्राणों का विसर्जन कर दिया।

इस लोक-कथा को आधार बना कर वर्मा जी ने अपने उपन्यास के कथा-संसार का निर्माण किया है। अपनी कल्पना से उन्होंने इस दाँगी कन्या के रूप, जनता की उसके प्रति असीम श्रद्‌धा, उसके प्रेम और बलिदान की मार्मिक कथा प्रस्तुत की है। इस कथा में उन्होंने दलीप नगर राज्य के आंतरिक षड्‌यंत्रों तथा छोटे-छोटे हिंदू राज्यों के आपसी वैमनस्य और कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से उनके युद्ध का वर्णन करके कथा को और भी रोचक तथा सार्थक बना दिया है।

इससे स्पष्ट है कि 'विराटा की पद्‌मिनी' में इतिहास, लोक-कथा और कल्पना का अद्‌भुत मिश्रण है। वर्मा जी ने उस काल के ऐतिहासिक परिद श्य को प्रस्तुत किया है और लोक कथाओं, किंवदंतियों तथा कल्पना का भी सहारा लिया है।

32.7 विषयवस्तु और संदेश

आपके मन में यह प्रश्न उठ सकता है कि 'विराटा की पद्‌मिनी' उपन्यास की विषयवस्तु और उसका संदेश क्या है ? केवल कथा कहना और उसके द्वारा पाठकों का मनोरंजन करना वर्माजी का उद्‌देश्य नहीं है। वस्तुतः इस उपन्यास द्वारा लेखक विभिन्न चरित्रों के माध्यम से बुंदेलखंड के दिव्य प्रेम और अपूर्व बलिदान को दिखाना चाहता है। उपन्यास में कुमुद, कुंजर सिंह और गोमती जैसे साधारण प ष्ठभूमि के पात्र हैं जो देशभक्ति, वीरता, निर्भीकता जैसे असाधारण गुणों का परिचय देते हैं। अलीमर्दान, जनार्दन, नायक सिंह, रामदयाल जैसे पात्र सत्ता प्राप्ति के लिए षड्‌यंत्र, भोगविलास, स्वार्थ, धनलिप्सा आदि में लिप्त दिखाए गए हैं। वे अपनी स्वार्थपूर्ति के लिए किसी भी सीमा तक जा सकते हैं।

कुंजर सिंह और कुमुद दोनों में ही स्वदेश-प्रेम की भावना कूट-कूट कर भरी हुई है और दोनों ही आत्मसम्मान और संस्कृति की रक्षा के लिए आत्मबलिदान करने का

टिप्पणी

अपना-अपना मार्ग चुनते हैं। कुमुद की बचपन की सहेली गोमती का चरित्र भी बलिदान और त्याग का अपूर्व उदाहरण प्रस्तुत करता है। वधू के रूप में सजी गोमती अपने दूल्हे देवी सिंह के राजा बन जाने पर अपने प्रेम को प्रकट तक नहीं होने देती।

उपन्यास में बुंदेलखंड के लोक जीवन और प्राकृतिक परिवेश का मोहक चित्रण है। विभिन्न पात्रों के परस्पर व्यवहार से मानवीय विशेषताओं और दुर्बलताओं को भी रेखांकित किया गया है। इस उपन्यास में देशभक्ति–देश की स्वाधीनता की रक्षा के लिए प्राण तक न्योछावर कर देने, किसी भी कीमत पर देश के शत्रुओं का साथ न देने तथा प्रेम की वेदी पर प्राणों को उत्सर्ग कर देने का संदेश दिया गया है।

32.8 प्रमुख पात्रों का चरित्र-चित्रण

'विराटा की पद्‌मिनी' की केंद्रीय पात्र दाँगी कन्या कुमुद है। जिसे विराटा की पद्‌मिनी कहा गया है। इसके अतिरिक्त उसके प्रमुख पात्र, 'कुंजर सिंह', 'नायक सिंह', 'देवी सिंह', 'छोटी रानी', 'रामदयाल', 'अलीमर्दान', 'काले खाँ' आदि हैं।

कुमुद : विराटा की पद्‌मिनी

दाँगी-कन्या कुमुद को 'विराटा की पद्‌मिनी' क्यों कहा गया है यह प्रश्न आपके मन में उठना स्वाभाविक है। आपने संभवतः 'चितौड़ की पद्‌मिनी' का नाम सुना होगा। उसकी कहानी भी सुनी होगी। कहा जाता है कि उसके सौंदर्य पर मुग्ध होकर अल्लाउद्‌दीन खिलजी ने उसे पाने के लिए चित्तौड़गढ़ पर आक्रमण किया था। जब गढ़ के टूटने की नौबत आई तो पद्‌मिनी के साथ गढ़ की सारी स्त्रियाँ एक साथ, एक विशाल चिता की आग में कूद गई। पद्‌मिनी के पति रत्नसेन के साथ सभी वीर राजपूत केसरिया बाना धारण करके हाथों में तलवारें लेकर गढ़ के बाहर निकले। अल्लाउद्‌दीन की सेना के साथ लड़ते हुए वे वीर गति को प्राप्त हुए। इस प्रकार अल्लाद्‌दीन विजयी होकर भी पद्‌मिनी को न पा सका।

कुछ-कुछ ऐसी ही कहानी कुमुद की भी है। कुमुद एक साधारण दाँगी (बुंदेलखंड की एक जाति) किसान नरपति सिंह की पुत्री है। वह जन्म से ही अतीव सुंदर है। किशोरावस्था में पहुँचते-पहुँचते उसके सौंदर्य और तेज की ख्याति चारों ओर फैल जाती है। चंपा के समान गोरी, सुगंधमय तथा कमल के समान कोमल स्त्री को 'पद्‌मिनी' कहते हैं। कुमुद भी 'पद्‌मिनी' नाम से विख्यात हो जाती है। लोग उसे दुर्गा का अवतार मानने लगते हैं। कुमुद का पिता नरपति सिंह भी अपना लाभ देखकर कुमुद को दुर्गा के अवतार के रूप में प्रचारित करता है। कुमुद नित्य दुर्गा की पूजा करती है और दर्शनार्थियों को प्रसाद देती है। यह माना जाने लगा कि उसके आशीर्वाद से लोगों की मनोकामनाएँ फलीभूत होती हैं। दूर-दूर से लोग उसका आशीर्वाद और प्रसाद पाने के लिए आते हैं। इस प्रकार कुमुद पर देवत्व का आरोप हो जाता है, यद्यपि वह स्वयं को मानवी ही मानती और कहती है।

इसी क्रम में दलीप नगर का राजकुमार कुंजर सिंह उसके दर्शनों के लिए पालर के दुर्गामंदिर में आता है। कुमुद को देखकर कुंजर सिंह के मन में प्रेम का अंकुर जन्म लेता है, जिससे कुमुद भी अछूती नहीं रहती। पर यह प्रेमभाव वाणी द्वारा व्यक्त नहीं होता। दलीप नगर के विलासी राजा और अपने पिता नायक सिंह तथा कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से कुमुद को बचाने के लिए कुंजर सिंह अपने प्राण तक न्योछावर कर देने

का संकल्प करता है। इससे कुमुद का कुंजर सिंह के प्रति प्रेम और भी प्रगाढ़ हो जाता है। नायक सिंह तो अपनी मौत मर जाता है, पर अलीमर्दान कुमुद को पाने के लिए विराटा के गढ़ पर आक्रमण करता है, जहाँ के दुर्गामंदिर में कुमुद रह रही है। गढ़ का पतन होने पर कुंजर सिंह और कुमुद मंदिर के बाहर निकलते हैं। पर कुंजर सिंह मारा जाता है। अलीमर्दान द्वारा पीछा की जाती हुई कुमुद बेतवा नदी में छलाँग लगाकर अपने प्राणों का विसर्जन करती है। इस प्रकार वह अपने 'विराटा की पद्मिनी' नाम को सार्थक करती है।

कुमुद का चरित्र दिव्य प्रेम और बलिदान की एक मधुरागिनी है। वह दुर्गा की अवतार न बन पाई हो, विराटा की पद्मिनी अवश्य बन जाती है जैसा कि उपन्यास के शीर्षक से स्पष्ट होता है।

कुंजर सिंह

कुंजर सिंह दलीप नगर का राजकुमार है, पर दासी-पुत्र होने के कारण वह सिंहासन का उत्तराधिकारी नहीं है। जब देवी सिंह राजसिंहासन का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया जाता है तो कुंजर सिंह की राजगद्दी पाने की क्षीण आशा भी समाप्त हो जाती है। इस बीच कुमुद से उसका प्रेम हो गया है और वह अपने कामुक पिता तथा कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से उसकी रक्षा करने का संकल्प कर चुका है। देवी सिंह के राजसिंहासन पर आसीन हो जाने पर वह विद्रोह कर देता है और सिंहगढ़ नामक दुर्ग पर कब्ज़ा करके वहाँ भावी युद्ध के लिए सैन्य संगठन करना आरंभ कर देता है। दलीप नगर की छोटी रानी भी भाग कर सिंहगढ़ के दुर्ग में आ जाती है, पर वह कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान की सहायता से स्वयं राजसिंहासन पर कब्ज़ा करना चाहती है। कुंजर सिंह इसे पसंद नहीं करता, क्योंकि वह देशभक्त है और अपने स्वार्थ के लिए विदेशियों की सहायता लेना उचित नहीं समझता।

किंतु कुंजर सिंह सिंहगढ़ को अधिक दिनों तक अपने कब्ज़े में नहीं रख पाता। देवी सिंह से युद्ध में उसकी हार होती है और उसे गढ़ छोड़ना पड़ता है। सिंहगढ़ से वह विराटा के गढ़ में पहुँचता है। कुमुद भी अपने पिता नरपति सिंह के साथ पालर के दुर्गा मंदिर को छोड़ कर विराटा के देवी मंदिर में चली आई है। इस बार कुंजर सिंह, कुमुद के प्रति अपने प्रेम को छिपाता नहीं और उसकी रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्योछावर कर देने का आश्वासन देता है।

विराटा पर अलीमर्दान और देवी सिंह एक साथ आक्रमण करते हैं। कुंजर सिंह इस युद्ध में अद्भुत वीरता और रण-कौशल का परिचय देता है। पर वह विराटा गढ़ का पतन रोक नहीं पाता। गढ़ का राजा और अन्य सैनिकों के साथ कुंजर सिंह भी केसरिया बाना धारण करके जौहर-व्रत का संकल्प कर मंदिर से कुमुद को लेकर बाहर निकलता है। बाहर निकलते ही उसका देवी सिंह से सामना होता है, जिससे लड़ते हुए वह वीर गति को प्राप्त होता है।

उपन्यास में कुंजर सिंह प्रमुख रूप से एक वीर योद्धा, स्वाभिमानी, देशभक्त और सच्चे प्रेमी के रूप में सामने आता है। देश और प्रेम के लिए अपना सर्वस्व अर्पित कर देना, प्राणों की भी बलि चढ़ा देना उसके चरित्र की प्रमुख पहचान है। दासी पुत्र होने का कलंक उसके चरित्र की उदात्तता में चंद्रमा के कलंक के समान उपेक्षणीय बन जाता है।

देवी सिंह

देवी सिंह एक वीर बुंदेला किसान है। इसका प्रमाण पाठक को उससे प्रथम परिचय में ही मिल जाता है। वह दूल्हे के वेश में बारात ले कर विवाह करने के लिए जा रहा है। अपनी भावी पत्नी के द्वार पर पहुँचते ही वह देखता है कि राजा नायक सिंह और मुसलमान सेना में युद्ध हो रहा है और राजा की जान खतरे में है। यह देख वह दूल्हे के वेश में ही मुसलमान सैनिकों पर टूट पड़ता है और राजा की प्राण-रक्षा में सफल हो जाता है। पर लड़ाई में वह घायल होकर बेहोश हो जाता है और सैनिक उसे उठा कर राजा के साथ ही दलीप नगर ले आते हैं। उपचार के बाद स्वस्थ होने पर वह राजा का अत्यंत प्रिय पात्र बन जाता है और राजा के विश्वासपात्र दरबारी जनार्दन शर्मा के प्रयत्न से उसे ही दलीप नगर के राज सिंहासन का उत्तराधिकारी बना दिया जाता है। राजा की म त्यु के बाद देवी सिंह दलीप नगर का राजा बनता है। इस पर नायक सिंह का दासी पुत्र कुंजर सिंह और छोटी रानी विद्रोह कर बैठते हैं।

राजा के रूप में देवी सिंह अपनी योग्यता का विश्वसनीय परिचय देता है। वह कुंजर सिंह और रानियों का सम्मान करता है और उन्हें अनावश्यक रूप से परेशान नहीं करता। दरबारियों और छोटे सामंतों को भी वह यथासंभव अनुकूल बनाए रखता है। किंतु जब कुंजर सिंह और छोटी रानी, विद्रोह कर सिंहगढ़ पर अधिकार कर लेते हैं तो देवी सिंह अपने कर्त्तव्य पालन में भी नहीं चूकता। वह सिंहगढ़ पर आक्रमण करता है और उस पर अधिकार कर लेता है। अलीमर्दान को भी इस युद्ध में मुँह की खानी पड़ती है और कुंजर सिंह को भी गढ़ छोड़ कर भागना पड़ता है। छोटी रानी कैद कर ली जाती है। पर देवी सिंह उसे क्षमा कर देता है।

देवी सिंह एक सच्चरित्र, धर्म-परायण और संवेदनशील राजा है। थोड़े ही दिनों में वह राजधर्म के सभी गुणों से संपन्न और राजनीति में माहिर हो जाता है। उसके युद्ध और शांति विषयक सारे निर्णय तर्क संगत तथा समयानुकूल होते हैं। उद्‌दंड सामंतों को काबू में रखना भी उसे आता है। वह एक तरफ़ अपने राज्य के आंतरिक विद्रोह को दबाने का यत्न करता है तो दूसरी तरफ़ धर्म रक्षा के लिए कालपी के फ़ौजदार अलीमर्दान से भी लोहा लेता है। अलीमर्दान कुमुद को अपनी रानी बनाना चाहता है और इस उद्‌देश्य से वह विराटा राज्य पर आक्रमण करता है, क्योंकि कुमुद वहीं के दुर्गा मंदिर में रह रही है। देवी सिंह अलीमर्दान के इस प्रयास को विफल करने का निश्चय करता है। यद्यपि अपने राज्य के विद्रोहियों, छोटी रानी और कुंजर सिंह का दमन करने के लिए उसे रामनगर और विराटा दोनों पर आक्रमण करना पड़ता है, पर उसका मुख्य लक्ष्य अलीमर्दान ही है। इस युद्ध में देवी सिंह अपनी वीरता और रण कौशल का परिचय देता है। यद्यपि विराटा का गढ़ और दुर्गा मंदिर इस युद्ध में ध्वस्त हो जाते हैं, पर अलीमर्दान अपने उद्‌देश्य में सफल नहीं होता। कुमुद बेतवा में छलाँग लगा कर अपने प्राण विसर्जन कर देती है और वह हाथ मलता रह जाता है। कुंजर सिंह भी देवी सिंह के हाथों मारा जाता है। पर देवी सिंह इस युद्ध से प्रसन्न नहीं है। विराटा के वीरों के जौहर व्रत से वह दुखी है और कुमुद का आत्मबलिदान तो उसके हृदय को गहरी करुणा और पश्चात्ताप से भर देता है। उसकी सहृदयता और धर्मपरायणता का पता इस बात से भी चलता है कि वह 'विराटा की पद्‌मिनी' के सम्मान में उसके बलिदान स्थल को स्मारक बनाने का आदेश देता है। इस प्रकार देवी सिंह का चरित्र एक वीर,

रणकुशल, धर्मपरायण, राजनीति में दक्ष, अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग और संवेदनशील तथा सहृदय राजा के रूप में सामने आता है।

छोटी रानी

छोटी रानी नायक सिंह की दूसरी पत्नी है। वह अन्यंत महत्वाकांक्षिणी है। नायक सिंह के कोई वैध पुत्र नहीं है। उसका दासी-पुत्र कुंजर सिंह राज्याधिकार से वंचित है। अतः बीमार राजा की म त्यु के बाद वह स्वयं राजसिंहासन पर बैठना चाहती है परंतु राजा के दरबारी, उसके विरुद्ध हैं। छोटी रानी राजगद्दी पाने के लिए इतनी आतुर है कि वह पति की म त्यु की प्रतीक्षा कर रही है। जब जनार्दन शर्मा म त्युशैया पर पड़े राजा से देवी सिंह को राजगद्दी का उत्तराधिकारी घोषित कराने में सफल हो जाता है, तो छोटी रानी उसका प्रबल विरोध करती है। इसमें असफल होने पर वह षड्‌यंत्र रचती है तथा कुंजर सिंह और बड़ी रानी को अपने षड्‌यंत्र में शामिल कर लेती है। वह राजा के विश्वस्त सेवक रामदयाल को भी अपने शतरंज का मोहरा बनाती है और उसके द्वारा पत्र भेज कर अलीमर्दान को अपना राखीबंद भाई बनाती है। छोटी रानी स्वार्थ में इतनी अंधी है कि वह राजगद्दी के बदले में अलीमर्दान को राज्य का कोई भी हिस्सा या धन देने को तैयार है। उसे दुर्गा के अवतार के रूप में प्रतिष्ठित कुमुद को अलीमर्दान को सौंपने में भी कोई आपत्ति नहीं है।

छोटी रानी के चरित्र में एक गुण है, उसकी वीरता। वह अपनी महत्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए बड़े से बड़ा साहसिक कर्म कर सकती है, करती भी है। पर विराटा के पतन, कुमुद के बलिदान, कुंजर सिंह की हत्या और दलीप नगर राज्य की तबाही का एक मात्र कारण वही है। छोटी रानी देश विद्रोह का प्रतीक चरित्र है, जिसके उदाहरण इतिहास में भरे पड़े हैं।

अलीमर्दान

अलीमर्दान कालपी का फ़ौजदार है, जो मुगल दरबार की राजनीति से भी जुड़ा हुआ है। वह कालपी के आसपास के हिंदू राज्यों पर नज़र रखता है और उन्हें डराता-धमकाता रहता है। उसके पास एक बड़ी सेना है और रणनीति का ज्ञान भी उसे अच्छा है। पालर में अपनी सैनिक टुकड़ी के दलीप नगर की सैनिक नगर की सैनिक टुकड़ी से पराजय के बाद वह दलीप नगर के राजा के पास एक पत्र भेजता है। पत्र में कई कड़ी शर्तों का पालन न करने पर युद्ध की धमकी दी गई है। राजा नायक सिंह की म त्यु के बाद जब छोटी रानी विद्रोह करती है तो वह उसके राखीबंद भाई होने के प्रस्ताव को स्वीकर कर लेता है। अपने दरबारियों तथा रामदयाल के उकसाने पर वह दुर्गा का अवतार समझी जाने वाली कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी करता है। वह दलीप नगर को तो दबा नहीं पाता पर विराटा के गढ़ को ध्वस्त कर डालता है। फिर भी कुमुद उसे प्राप्त नहीं होती। उसके बेतवा नदी में कूद कर प्राण विसर्जन कर देने पर वह हाथ मलता रह जाता है।

अलीमर्दान के चरित्र का सबसे उज्ज्वल पक्ष यह है कि वह हिंदुओं की धार्मिक भावनाओं पर चोट नहीं पहुँचाता। वह दुर्गा का मंदिर ध्वस्त करने का प्रयास नहीं करता। वस्तुतः दुर्गामंदिर देवी सिंह की तोपों की मार से ध्वस्त होता है, अलीमर्दान की तोपों से नहीं। कुमुद को अपनी रानी बनाने का निश्चय भी वह तब करता है जब उसे यह समझाया जाता है कि वह दुर्गा की अवतार नहीं है। रामदयाल तो यह कह

टिप्पणी

कर भी उसके कान भरता है कि कुंजर सिंह कुमुद को अपने प्रेम-जाल में फँसा कर उसे अपनी पत्नी बना लेगा। जब कुमुद बेतवा नदी में छलाँग लगा कर प्राण विसर्जन कर देती है तो अलीमर्दान भी उसके प्रति श्रद्धा भाव से भर जाता है।

वर्मा जी ने अलीमर्दान को धार्मिक सहिष्णुता, मानवीय सहानुभूति, संवेदनशीलता आदि से संपन्न मुसलमान शासक के रूप में चित्रित किया है।

नायक सिंह

नायक सिंह दलीप नगर का राजा है। वह एक बहुत ही अयोग्य, विलासी, सनकी, नीम पागल, असंयमी, अतिक्रोधी, विवेकहीन, डींग हाँकने वाला, अविचारी, अविश्वासी, कान का कच्चा और चरित्रहीन राजा है। वह उन सामंतों का प्रतीक है, जो अपने राज्य को मिट्टी में मिला देते हैं। उसके राज्य में प्रजा दुख भोगती है और दरबारी खुशामदी व त्ति अपना कर राज्य को दुर्बल और साधनहीन बनाते हैं। उसकी आँख के नीचे षड्यंत्र होते रहते हैं, और वह बेखबर रहता है।

रामदयाल

रामदयाल राजा नायक सिंह का मुँह लगा और प्रिय पात्र नौकर है। वह अत्यंत स्वार्थी, झूठा, खुशामदी, आत्मसम्मान से शून्य, मक्कार, धर्मभाव से रहित, क्रूर, कायर और चरित्रहीन व्यक्ति है। राजा नायक सिंह की वासना पूर्ति के लिए वह युवतियों का अपहरण करता है, छोटी रानी के आदेश पर जनार्दन शर्मा का सिर काट कर लाने का वचन देता है, छोटी रानी की चिट्ठी लेकर अलीमर्दान के पास जाता है, एक-दूसरे के बारे में झूठी बातें गढ़ कर उनमें मनमुटाव पैदा करता है, दुख की मारी गोमती को अपने जाल में फँसाता है और छोटी रानी से मिल कर तरह-तरह के जाल रचता है। कुल मिला कर रामदयाल एक खल चरित्र का प्रतिनिधित्व करता है।

32.9 परिवेश

'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड का आंचलिक परिवेश पूरी सजीवता के साथ प्रस्तुत हुआ है। भौगोलिक द ष्टि से यह क्षेत्र यमुना, बेतवा, पहूज, सिंधु, चंबल, कुमारी आदि पर्वतीय नदियों, छोटी-छोटी पहाड़ियों, टीलों, घनघोर जंगलों, झीलों और भरकों से भरा हुआ है। इन नदियों, पहाड़ियों, जंगलों और भरकों के बीच बसे बुंदेलों और दाँगी सामंतों के गढ़ मानो प्रकृति की गोद में सुरक्षित शिशुओं की तरह हैं। 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड के प्राकृतिक सौंदर्य का अत्यंत यथार्थ और सजीव वर्णन मिलता है। इस सौंदर्य में कोमलता के साथ-साथ भयानकता का भी अद्भुत समावेश है।

एक उदाहरण द्रष्टव्य है : ''पंचनद, जिसे पचनदा भी कहते हैं बुंदेलखंड का एक विशेष स्थान है। यमुना, चंबल, सिंधु, पहूज और कुमारी, ये पाँच नदियाँ उस जगह आकर मिली हैं। स्थान की विस्त त भयानकता उसकी विशाल सुंदरता से होड़ लगाती है। बालू, पानी और हरियाली का यह संगम वैभव, भय और सौंदर्य के विचित्र मिश्रण की रचना करता है।''

''विराटा का गढ़ बेतवा नदी के तट पर अवस्थित है, जो सघन वन के बीच दूर से दिखाई भी नहीं देता। वहाँ का दुर्गा मंदिर, जहाँ दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली कुमुद रहती है, बेतवा नदी के मध्य एक टापू पर स्थित है। दलीप नगर, बड़नगर, रामनगर और

सिंहगढ़ भी बुंदेलखंड की प्राकृतिक सुषमा के बीच अवस्थित हैं।

वर्मा जी ने बुंदेलखंड के प्राकृतिक परिवेश मात्र का अंकन करके संतोष नहीं कर लिया है। उन्होंने बुंदेलखंड की शौर्य-परंपरा, संस्कृति, धार्मिक विश्वास, रहन-सहन, रीति-रिवाज, लोक-गीत और कथा, आम आदमी की स्थिति तथा भाषा का विश्वसनीय और सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। बुंदेलखंड सदा से वीर भूमि के रूप में प्रसिद्ध रहा है। 'विराटा की पद्मिनी' में भी यहाँ के राजाओं की वीरता और बलिदान का चित्रण किया गया है। विराटा का दाँगी राजा सबदल सिंह अपने नायकों के साथ अलीमर्दान की सेना से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त होता है। दलीप नगर का राजा देवी सिंह भी अलीमर्दान से वीरतापूर्वक युद्ध करता है और कभी झुकता नहीं। यहाँ तक कि दूल्हा वेश में विवाह के लिए जाता हुआ बुंदेला किसान भी अपने राजा को संकट में पड़ा देख कर उसकी रक्षा के लिए प्राणों की बाजी लगा देता है। स्त्रियाँ तक तलवार चलाना और घोड़े पर चढ़ना जानती हैं और अवसर आने पर युद्ध के मैदान में कूद पड़ती हैं।

धर्म के प्रति द ढ़ आस्था और देवी-देवता में विश्वास बुंदेलखंड की संस्कृति का प्रमुख अंग है, जो इस उपन्यास में कुमुद को दुर्गा का अवतार मानने के प्रसंग से प्रस्तुत किया गया है। यह विश्वास इतना द ढ़ है कि राजा से लेकर सामान्य जनता तक कुमुद को श्रद्धा की द ष्टि से देखते हैं तथा उससे प्रसाद और आशीर्वाद ग्रहण करते हैं। पर्व-त्यौहारों के अवसरों पर बुंदेलखंड के लोगों का उल्लास भी उनकी सांस्कृतिक विशेषता को प्रकट करता है।

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्मिनी' में केवल सामंतों का ही चित्रण नहीं किया है, वरन् बुंदेलखंड के गाँवों में रहने वाले साधारण किसानों का भी अंकन किया है, जो जी-तोड़ परिश्रम करते हैं, सामंतों को लगान देते हैं। जहाँ तक लोक-कथा के उपयोग की बात है 'विराटा की पद्मिनी' का आधार ही लोक विश्वास और दुर्गा की अवतार मानी जाने वाली पद्मिनी के बलिदान की कथा है। उपन्यास के लगभग अंत में *'मलिनिया, फुलवा ल्याओ रे नंदन वन के'*, शीर्षक लोकगीत तो कुमुद के बलिदान को एक अद्भुत प्रभाव से भर देता है।

32.10 भाषा-शैली और संवाद योजना

वर्मा जी ने वैसे तो 'विराटा की पद्मिनी' में परिनिष्ठित हिंदी का ही प्रयोग किया है, पर उसके बीच बुंदेली के शब्दों का समावेश कर उसे सजीव बना दिया है। उपन्यास के किसान पात्र तो शुद्ध बुंदेली में ही बातचीत करते हैं। इसका बहुत सुंदर उदाहरण मुसावली के किसान और कुंजर सिंह के वार्तालाप में दिखाई पड़ता है।

बुंदेलखंड अंचल को उसकी समग्रता और सजीवता में प्रस्तुत करने के कारण 'विराटा की पद्मिनी' में आंचलिक उपन्यास की विशेषताएँ भी समाविष्ट हो गई हैं।

वर्मा जी ने 'विराटा की पद्मिनी' की रचना परिनिष्ठित हिंदी में की है। वर्मा जी ने ध्वनिमूलक, अर्थमूलक आदि शैलीय उपकरणों की सहायता से अपनी भाषा-शैली को व्यंजक और मधुर बनाने का भी सफल प्रयास किया है। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि साद श्य प्रधान अलंकारों तथा मौलिक उपमानों की सहायता से उन्होंने अपनी भाषा-शैली को नवीनता और व्यंजकता प्रदान की है। उदाहरण द्रष्टव्य है : *''झील में*

लहरें उठ-उठ कर बैठ रही थीं और सूर्य की किरणों का एक अनंत भंडार-सा प्रतीत हो रहा था। जैसे स्वर्ण की खानें खुल पड़ी हों और चारों ओर से विशाल ढोंके और पर्वत अपनी निधि की रक्षा के लिए तुले खड़े हों।''

अथवा

''वह कन्या रूप राशि थी। उस पर देवत्व के आरोप होने में विलंब न हुआ। गाँव के मंदिर में दुर्गा की मूर्ति थी, शिल्प की कला उसे वह रूपरेखा नहीं दे पाई थी, जो इस बालिका में सहज ही भासित होती है।''

वर्मा जी की भाषा-शैली की एक उल्लेखनीय विशेषता है, आंचलिक शब्दों का प्रयोग। परिनिष्ठित तत्सम-तद्भव शब्दों के बीच-बीच में उन्होंने बुंदेलखंडी शब्दों का ऐसा सुघड़ प्रयोग किया है जो भाषा में अद्भुत सहजता और सजीवता ला देते हैं। उदाहरण के लिए पाही, झाँगा, टीका, साँकल, गुहार, बोदापन, झाँझ, दह, टौरिया, भरका, घूमरी, जैसे शब्द और 'कच्चा गटक जाना' और 'राजा करे सो न्याय', 'फँसा पड़े सो दाँव' जैसे ठेठ मुहावरे और कहावतें भाषा की बोधगम्यता को कायम रखते हुए वर्मा जी की भाषा-शैली को ताजगी से भर देती हैं।

उपर्युक्त विवेचना से वर्मा जी की भाषा-शैली की शक्ति और सीमा दोनों उजागर होती हैं। वर्मा जी ने कही-कहीं असावधानी भी बरती है।

यद्यपि उपयुक्त शब्दों के चुनाव में असावधानी, वाक्यों की बनावट में अनावश्यक पद-बंधों के समावेश, वाक्यों में पद-बंधों के सही स्थान निर्धारण में भूल और संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि व्याकरणिक कोटियों तथा कारक चिह्नों की प्रयोग बहुलता के कारण वर्मा जी की भाषा यत्र-तत्र दुर्बोध भी हो गई है।

'विराटा की पद्मिनी' में पात्रों के संवाद भरे पड़े हैं। वस्तुतः जहाँ भी कथा प्रस्तुति की द श्यात्मक प्रविधि काम में लाई गई है, वहाँ पात्रों का वार्तालाप सहज रूप में आ गया है। उपन्यास का आरंभ ही एक द श्य योजना से होता है जिसमें दलीप नगर के अध-पागल राजा और उसके दरबारियों का वार्तालाप सामने आता है। यद्यपि इस वार्तालाप में सहजता और पैनापन अधिक नहीं है, पर इससे राजा के सनकीपन, दरबारियों की खुशामदी व त्ति, केवल मरने-मारने की भाषा बोलने वाले सेनानायक का अक्खड़पन और स्वामिभक्ति का भाव अच्छी तरह व्यक्त हो जाता है। पात्रों के मनोभावों को व्यक्त करने, कथा को आगे बढ़ाने और भावी घटनाओं के प्रति जिज्ञासा पैदा करने में उपन्यास के संवाद पर्याप्त सक्षम हैं। कुंजर सिंह और कुमुद के गूढ़ व्यंजना से भरे संवादों से उनका दिव्य प्रेम अपनी आध्यात्मिक ऊँचाई पर पहुँच जाता है। कुंजर सिंह और मुसावली के किसान बालक के बीच के संवाद की उल्लेखनीय विशेषता यह है कि कुंजर सिंह सरल परिनिष्ठित हिंदी बोलता है जबकि किसान बालक शुद्ध बुंदेलखंडी में बात करता है। इस वार्तालाप से किसान बालक की सरलता, भोले स्वभाव और अतिथि के प्रति उसके सहज प्रेम की प्रीतिकर झलक मिलती है।

उपन्यास में कुमुद और गोमती, कुंजर सिंह और अलीमर्दान, कुंजर सिंह और दलीप सिंह, देवी सिंह और छोटी रानी, राजा पतराखन और रामदयाल, कुंजर सिंह और नरपति सिंह आदि के दर्जनों संवाद हैं जो अपनी खूबियों और खामियों के साथ उपन्यास में विद्यमान हैं।

32.11 उपन्यास की प्रमुख विशेषताएँ

हमें विश्वास है कि अब आप स्वयं भी 'विराटा की पद्‌मिनी' उपन्यास की विशेषताएँ बता सकते हैं। चलिए, हम साथ-साथ इस काम को करें। 'विराटा की पद्‌मिनी' एक ऐतिहासिक उपन्यास है, यह तो आप जान ही चुके हैं। ऐतिहासिक उपन्यास के रूप में इसकी सफलता की चर्चा भी हम पहले कर चुके हैं। इसकी पहली विशेषता यह है कि इसमें इतिहास का उबाऊ वर्णन नहीं है। इसीलिए समकालीन इतिहास का वर्णन इसमें बहुत कम किया गया है। केवल ऐतिहासिक प ष्ठभूमि का निर्माण करने के लिए यत्र-तत्र ऐतिहासिक घटनाओं और विवरणों की सहायता ली गई है। दूसरी, उपन्यास के मुख्य कथा-संसार की रचना ऐतिहासिक किंवदंतियों, लोक-कथाओं और उपन्यासकार की कल्पनाशक्ति के द्वारा हुई है। अगली विशेषता है कि उपन्यास का मुख्य उद्‌देश्य बुंदेलखंड के चरित्र को प्रस्तुत करना है। बुंदेलखंड की वीरता, देशभक्ति, स्वाभिमान, सांस्कृतिक सम द्धि, प्राकृतिक सौंदर्य, आम किसानों की कष्टपूर्ण जिंदगी, सामंतों की विलासिता और राज्य प्राप्ति के लिए किए जाने वाले षड्‌यंत्र इसके मुख्य विषय हैं। पर साथ ही उपन्यासकार प्रेम की गहरी संवेदना का अंकन भी सहृदयता और गहन अनुभूति के साथ करता है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने मार्मिक प्रसंगों की योजना को महाकाव्य का एक महत्त्वपूर्ण गुण बताया है। इस उपन्यास पर भी यह बात लागू होती है। मार्मिक प्रसंग उपन्यास के प्राण होते हैं। 'विराटा की पद्‌मिनी' इस द ष्टि से बहुत सफल उपन्यास तो नहीं कहा जा सकता, पर इसका अंतिम प्रसंग बहुत मार्मिक है। आपको स्मरण होगा ही, यह प्रसंग कुमुद के बलिदान का है। कुमुद को समाज ने दुर्गा का अवतार बना दिया है, पर वह है मानवी ही। दुर्गा की पुजारिन के रूप में अपना कर्त्तव्य निभाते हुए भी वह अपनी मानवीय भावनाओं को मार नहीं पाती। कुंजर सिंह से प्रथम साक्षात्कार के समय ही उसके प्रति उसका अनुराग पैदा हो जाता है। कुंजर सिंह भी उसके प्रति अनुरक्त है। पर दोनों ही, और विशेष रूप से कुमुद अपनी भावनाओं पर नियंत्रण रखती है और कहीं भी संयम का परित्याग नहीं करती, यद्यपि उनका प्रेम निरंतर द ढ़ होता जाता है। अंत में स्थिति यह उत्पन्न होती है कि विराटा का गढ़ एक साथ अलीमर्दान और देवी सिंह के आक्रमण का शिकार होता है। विराटा के वीर दाँगी तो जौहर करके वीर गति को प्राप्त होते हैं और कुमुद बलिदान का दूसरा मार्ग चुनती है। वह अपने प्रेमी कुंजर सिंह को जंगली फूलों की माला पहना कर शत्रु से जूझने के लिए भेज देती है और स्वयं बेतवा माता की गोद में शरण लेने का निश्चय करती है। अलीमर्दान उसे पकड़ना चाहता है, पर वह शीघ्रता से बेतवा नदी में छलाँग लगा देती है। दूर से *'मलिनिया फुलवा ल्याओ नंदन वन के' गीत की गूँजती हुई अंतिम कड़ी 'उड़ गए फुलवा, रह गई बास'* इस आत्मोत्सर्ग के प्रसंग को गहरी करुणा से भर देती है। इस बलिदान का प्रभाव क्रूर हृदयों पर भी पड़ता है। अलीमर्दान और देवी सिंह दोनों कुमुद के इस आत्मोत्सर्ग से विचलित होकर उसकी स्म ति में नतमस्तक होते हैं और परस्पर वैर भाव त्याग कर संधि कर लेते हैं।

'विराटा की पद्‌मिनी' का दूसरा मार्मिक प्रसंग है विराटा के राजा और उसके सेनानायकों तथा सैनिकों का जौहर व्रत। अलीमर्दान पद्‌मिनी को अपनी रानी बनाने

के लिए विराटा पर आक्रमण करता है, क्योंकि पद्‌मिनी विराटा के दुर्गामंदिर में वहाँ के राजा सबदल सिंह के संरक्षण में है। कुंजर सिंह विराटा के तोपखाने का संचालन कर रहा है। विराटा से दलीप सिंह को कोई शत्रुता नहीं है, पर सैनिक द ष्टि से उस पर कब्ज़ा करना देवी सिंह के लिए आवश्यक हो गया है। इस प्रकार विराटा अलीमर्दान और देवी सिंह दोनों की सेनाओं की चपेट में आ जाता है। उसका गढ़ ध्वस्त हो जाता है। राजा सबदल सिंह सब तरफ से निराश होकर गढ़ से बाहर निकल कर आमने-सामने युद्ध करने का निर्णय करता है। उसके सरदार भी इस निर्णय का समर्थन करते हैं। सबदल सिंह यह प्रस्ताव भी रखता है कि गढ़ में रहने वाली स्त्रियाँ और बच्चे जौहर करें अर्थात् सामूहिक चिता में जल कर अपने प्राण विसर्जन करें और सैनिक केसरिया बाना धारण कर शत्रु से लड़ते-लड़ते वीर गति को प्राप्त हों। कुंजर सिंह के सुझाव पर स्त्रियों और बच्चों के जौहर का निर्णय त्याग दिया जाता है, पर सैनिक युद्ध में म त्यु का वरण करने के लिए तैयार हो जाते हैं। विराटा में किसी के भी घर में केसरिया बाना तैयार करने के लिए केसर नहीं है। अंततः हल्दी से ही फटे-पुराने वस्त्र रंगे जाते हैं। थोड़ी-सी केशर से सबदल सिंह सैनिकों के माथे पर तिलक लगाता है। सभी तलवार की मूठों का स्पर्श कर म त्युपर्यंत युद्ध करने की शपथ लेते हैं। कथाकार के शब्दों में *''उनके चिथड़े पीले रंगे हुए थे। सिर से फटे हुए साफों के चिथड़े लहरा रहे थे, मानो विजय पताकाएँ हों।''* विराटा के ये वीर सैनिक गढ़ से बाहर निकल कर अलीमर्दान की सुसज्जित सेना के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त होते हैं। सबदल सिंह भी मारा जाता है। कोई भी दाँगी नहीं बचता। उपन्यासकार के शब्दों में, *''केसरिया बानों से ढकी हुई प थ्वी हल्दी से रंगी मालूम होती थी, मानो रणचंडी के लिए पाँवड़ा बिछाया गया हो।''*

इस प्रसंग की मार्मिकता भी निर्विवाद है। 'विराटा की पद्‌मिनी' में दर्जनों प्रसंग हैं, जैसे दलीप नगर के राजा का पालर झील में स्नान-उत्सव, पालर में नायक सिंह तथा अलीमर्दान की सैनिक टुकड़ियों में संघर्ष और दूल्हा वेश में देवी सिंह की सहायता से नायक सिंह की प्राण रक्षा, सिंहगढ़ का युद्ध, छोटी रानी का विद्रोह और अलीमर्दान को राखीबंद भाई बनाने का प्रकरण, रामनगर में छोटी रानी का शरण लेना आदि, पर ये प्रसंग अपेक्षित रूप से मार्मिक नहीं बन सके हैं।

किसी उपन्यास की श्रेष्ठता का निर्धारण पात्रों के कलात्मक चरित्र स जन से भी होता है। हम पहले ही 'विराटा की पद्‌मिनी' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डाल चुके हैं। 'विराटा की पद्‌मिनी के अधिकतर पात्र सपाट हैं क्योंकि उनमें कोई परिवर्तन या विकास नहीं दिखाई देता। वे शूरता, विलासिता, धार्मिकता, छल-प्रपंच, षड्‌यंत्र आदि के प्रतीक हैं। मनोवैज्ञानिक तनाव या मानसिक द्वंद्व का इनमें अभाव है। मानसिक द्वंद्व की झलक हमें केवल कुमुद और कुंजर सिंह के चरित्र में देखने को मिलती है। इसी कारण इनके चरित्र विकासमान और मार्मिक हो पाए हैं। कुमुद का चरित्र, प्रेम की गहरी संवेदना के कारण विशेष प्रभावशाली बन गया है।

'विराटा की पद्‌मिनी' का केंद्रीय पात्र एक नारी है। यद्यपि 'विराटा की पद्‌मिनी' में पुरुष पात्र ही अधिक संख्या में है। स्त्री पात्रों को उनकी संवेदना का जितना संस्पर्श मिला है, उतना पुरुष पात्रों को नहीं। कुमुद का चरित्र तो वर्मा जी की स जन क्षमता का नायाब फूल है ही, गोमती और छोटी रानी के चरित्र भी अपने भटकाव के बावजूद, अपनी

विशेषताओं से युक्त हैं।

जैसा हम पहले बता चुके हैं, 'विराटा की पद्मिनी' परिवेश-निर्माण, भाषा-शैली और संवाद-योजना की द ष्टि से भी पर्याप्त संतोषजनक उपन्यास है। जहाँ तक शिल्प का प्रश्न है वर्मा जी ने कथा-वर्णन और द श्य-निर्माण की प्रविधियों द्वारा ही अपने कथा-संसार की रचना की है। उपन्यास में कई कथाएँ साथ-साथ चलती हैं और कहीं-कहीं आपस में उलझ कर पाठक के लिए बोध की समस्या भी पैदा करती हैं। इसे आपने भी अनुभव किया होगा। पर यदि तनिक सावधानी के साथ उपन्यास पढ़ा जाए तो कथा का उलझाव दूर हो जाता है।

32.12 आपने क्या सीखा

उपन्यास और उसकी पाठ सामग्री पढ़ने के बाद आप जान गए हैं कि –

- 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास, कल्पना और लोकतत्त्व का अद्भुत समन्वय है।
- कथानक में एक ओर साधारण प ष्ठभूमि के पात्रों के अद्भुत शौर्य, देश-प्रेम, लगन और बलिदान जैसे गुणों का चित्रण है, वहीं सामंती परिवेश में होने वाले षड्यंत्रों, स्वार्थसिद्धि, छल, भोग-विलास, अत्याचार आदि को भी चित्रित किया गया है।
- 'विराटा की पद्मिनी' उदात्त प्रेम की कथा है, जिसका अंत आत्मोसर्ग में होता है।
- उपन्यास के पात्र मुख्यतः दो प्रकार के हैं– एक वे जो राज परिवारों से जुड़े हैं और दुर्गुणों के प्रतीक हैं। दूसरे वे जिनमें बुंदेलखंड की मिट्टी की महक है। वे सरलता, वीरता, त्याग, देशभक्ति और प्रेम के प्रतीक हैं।
- 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड की प्रकृति, लोक-जीवन, लोक-गीत, लोक-भाषा का समर्थ चित्रांकन हुआ है। इनसे उपन्यास की रोचकता बढ़ गई है।
- उपन्यास की भाषा परिनिष्ठित हिंदी है, उसमें लोक-भाषा का भी प्रयोग है। भाषा में कहीं-कहीं शिथिलता भी पाई जाती है और कहीं-कहीं भाषा जटिल और दुर्बोध हो गई है। उदाहरण के लिए *'एल्लो हमरे से टिटकरी करन आए। दर्शन खों नहीं आए नई आए, इतै को काम के लावें आए इत्ती दूर से?'*
- विराटा की पद्मिनी के संवाद बड़े सरस और रोचक हैं। उनमें पात्रानुकूलता और परिस्थिति की माँग झलकती है। दरबारियों के संवादों में चाटुकारिता, छल, कपट और मरने-मारने की शब्दावली है। कुंजर सिंह और कुमुद के संवादों से उनका दिव्यप्रेम झलकता है। पात्र अपने सामाजिक स्तर के अनुकूल भाषा का प्रयोग करते हैं।
- उपन्यास में कुछ विशेष मार्मिक स्थल हैं। कुमुद की नारी भावनाएँ सहज विकसित होकर उदात्त स्थिति तक पहुँचती हैं और अंततः आत्मोसर्ग से परिचित होती हैं। अलीमर्दान पद्मिनी को अपनी रानी बनाने के लिए आक्रमण करता है। सबदल सिंह के सुझाव पर सभी जौहर व्रत का निर्णय लेते हैं और वीरगति को प्राप्त होते हैं।

32.13 योग्यता विस्तार

(क) लेखक परिचय

व ंदावन लाल वर्मा हिंदी के प्रथम ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं। उनका जन्म 1889 ई. में उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले में मऊरानीपुर गाँव में हुआ था। यों तो उनका लेखन कार्य लगभग 1904 ई. में ही आरंभ हो गया था, पर नियमित रूप से लिखना 1927 ई. में **'गढ़कुंडार'** नामक ऐतिहासिक उपन्यास से शुरू हुआ। **'विराटा की पद्‌मिनी'** की रचना 1933 ई. में और प्रथम प्रकाशन 1936 ई. में हुआ। इसके बाद वर्माजी के चौदह ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हुए जिनमें **'झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई', 'कचनार', 'म गनयनी', 'टूटे काँटे', 'माधवजी सिंधिया', 'भुवन विक्रम'** आदि विशेष महत्त्व के हैं। ऐतिहासिक उपन्यासों के अतिरिक्त वर्मा जी ने सामाजिक उपन्यास, कहानियाँ, नाटक और अन्य प्रकार की पुस्तकें भी लिखीं पर उनकी ख्याति ऐतिहासिक उपन्यासकार के रूप में ही है। वर्मा जी का निधन 1969 ई. में हुआ।

वर्मा जी का जीवन बहुत संघर्षपूर्ण रहा। जीविकोपार्जन के लिए प्रारंभ में उन्हें तरह-तरह के पापड़ बेलने पड़े और अनेक मुश्किलों के बीच उनका अध्ययन संपन्न हुआ। उनकी रुचियाँ भी बेहद रोचक थीं। मसलन वे पहलवानी के शौकीन थे, नियमित रूप से अखाड़े में जाते थे और रोज सैकड़ों दंड बैठक लगाया करते थे। खाने के भी बड़े शौकीन थे। पाँच किलो दूध और **आधा किलो** जलेबी खा जाना उनके लिए कोई बड़ी बात न थी। अब आप अनुमान कर सकते हैं उनके स्वास्थ्य के बारे में। जो आदमी सत्तर बाद की उम्र तक दंड पेलता रहे, बैठकें लगाता रहे और मुग्दर भाँजता रहे, वह स्वस्थ तो रहेगा ही।

वर्मा जी का दूसरा बड़ा शौक था शिकार और साथ-साथ घुमक्कड़ी की धुन। उन्होंने बुंदेलखंड की पहाड़ियों, नदियों, नालों और जंगलों का चप्पा-चप्पा छान मारा था। इसका प्रभाव उनके उपन्यासों पर साफ़-साफ़ दिखाई देता है।

वर्मा जी को बुंदेलखंड की धरती से गहरा लगाव था। बुंदेली भाषा, बुंदेली लोक-गीत, लोक-कथाएँ, स्थानीय मेले और उत्सव सबमें उनकी गहरी रुचि थी। इसकी अभिव्यक्ति उनके ऐतिहासिक उपन्यासों में सफलतापूर्वक हुई।

इतिहास के अध्ययन में भी वर्माजी की गहरी रुचि थी। पुरातत्त्व विषय की पुस्तकें, पुराने सरकारी अभिलेख, गजट आदि का अध्ययन वे बड़ी लगन के साथ करते थे और उसका उपयोग अपने उपन्यासों में करते थे और इसके साथ ही बुंदेलखंड की किंवदंतियों, लोक-कथाओं और लोक-गीतों का संग्रह भी उनकी रुचि का विषय था।

वर्मा जी को देशभक्ति का भाव विरासत में प्राप्त हुआ था। उनके पितामह आनंद राव ने 1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम में हिस्सा लिया था और शहीद हुए थे। अपनी माँ से अपने पूर्वजों की वीरता की गाथा सुन कर ही उनके मन में 'झाँसी की रानी' पर उपन्यास लिखने की प्रेरणा पैदा हुई थी। वर्मा जी का यह देश अथवा जाति-प्रेम उनके सभी उपन्यासों में दिखाई पड़ता है। बुंदेलखंड की अदम्य वीरता, सम द्ध संस्कृति और प्राकृतिक सुषमा का इतने मनोयोग के साथ उनकी रचनाओं में मिलना, उनके देश-प्रेम का ही परिचायक है।

(ख) हिन्दी उपन्यास का विकास

हिंदी उपन्यास का जन्म उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में हुआ। यों तो हिंदी की पहली मौलिक, कल्पनाप्रधान गद्यकथा इंशा अल्ला खाँ द्वारा रचित 'रानी केतकी की कहानी' (1803) है, पर यथार्थ से कटी और अलौकिक तत्त्वों से भरी होने के कारण उसे उपन्यास नहीं माना जा सकता। इसके बाद की दूसरी गद्यकथा पं. गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' (1870) है, जो तत्कालीन जीवन के यथार्थ से जुड़ी होने के कारण हिंदी का प्रथम उपन्यास है। पर इसकी कथावस्तु इकहरी और वर्णनात्मक है, इसलिए कुछ विद्वान इसे उपन्यास नहीं मानते। लाला श्री निवास दास कृत 'परीक्षा गुरु' (1882) कथावस्तु और शिल्प दोनों ही द ष्टियों से उपन्यास की शर्तें पूरी करता है, इसलिए अनेक आलोचक इसे ही हिंदी का पहला उपन्यास मानते हैं। 'परीक्षा गुरु' से यथार्थपरक उपन्यासों की एक परंपरा आरंभ हुई, जिसके लेखकों में बालकृष्ण भट्ट, भुवनेश्वर मिश्र, लज्जाराम शर्मा, ब्रजनंदन सहाय आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। इनके उपन्यासों में यथार्थ चित्रण के साथ-साथ उपदेश देने की प्रव त्ति भी मिलती है। उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में घटना प्रधान उपन्यासों की परंपरा आरंभ हुई जिसके प्रमुख लेखक देवकी नंदन खत्री, गोपाल राम गहमरी और किशोरी लाल गोस्वामी हैं। खत्री जी ने तिलस्म ऐयाशी प्रधान उपन्यास, गहमरी जी ने जासूसी उपन्यास और गोस्वामी जी ने घटना प्रधान उपन्यासों के साथ-साथ ऐतिहासिक रोमांस भी लिखे। इन उपन्यासों की सबसे बड़ी उपलब्धि यह मानी जाती है कि इन्होंने हिंदी कथा-पाठकों की संख्या में बहुत व द्धि की। हिंदी उपन्यास के विकास के लिए पाठक वर्ग का विकास भी जरूरी था। यह कार्य इन घटना प्रधान उपन्यासों के द्वारा संभव हुआ।

सन् 1918 ई. तक हिंदी उपन्यास में घटना प्रधान और यथार्थपरक (किंतु उपदेशात्मक) उपन्यासों की प्रधानता रही। इसमें बदलाव प्रेमचंद के 'सेवासदन' नामक उपन्यास से हुआ। प्रेमचंद ने हिंदी में ऐसे यथार्थवादी उपन्यासों की परंपरा की नींव डाली, जिनमें घटनाएँ और उपदेश तत्त्व कम-से-कम होते हैं। 1918-36 ई. की अवधि में प्रेमचंद ने 'सेवा सदन', 'प्रेमाश्रम', 'रंगभूमि', 'कायाकल्प', 'गबन', 'कर्मभूमि', 'गोदान' आदि उपन्यास लिखे, जिनमें उत्तर भारत के किसानों की और मध्य वर्ग की जिंदगी साकार हो उठी है। प्रेमचंद के समकालीन उपन्यासकारों में सुदर्शन, विश्वंभर नाथ शर्मा कौशिक, जयशंकर प्रसाद, बेचैन शर्मा 'उग्र', जैनेंद्र कुमार, भगवतीचरण वर्मा, व ृंदावन लाल वर्मा आदि उल्लेखनीय हैं।

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास का बहुमुखी विकास हुआ है। विषय की द ष्टि से इसे ग्राम जीवन, नगरीय मध्य वर्ग और राजनीतिक जीवन पर आधारित, ऐतिहासिक, मनोवैज्ञानिक, आंचलिक, जीवनीपरक आदि प्रकारों में विभाजित कर सकते हैं। इस काल के ग्रामीण जीवन का चित्रण करने वाले प्रमुख उपन्यासकार नागार्जुन, फणीश्वरनाथ रेणु, राही मासूम रज़ा, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, श्रीलाल शुक्ल, विवेकी राय, मैत्रेयी पुष्पा आदि हैं। नगरीय मध्य वर्ग पर आधारित उपन्यास लिखने वालों में अम तलाल नागर, कमलाकांत त्रिपाठी आदि हैं। व ृंदावन लाल वर्मा, हजारीप्रसाद द्विवेदी, शिवप्रसाद सिंह आदि इस काल के प्रमुख ऐतिहासिक उपन्यासकार हैं।

ऐतिहासिक जीवनीपरक उपन्यास लिखने वालों में हजारीप्रसाद द्विवेदी और अम तलाल नागर अग्रगण्य हैं। हाल ही में भारत के निकट अतीत को आधार बनाकर कुछ उपन्यास लिखे गए हैं इनमें अमरकांत का 'इन्हीं हथियारों से', भारत छोड़ो आंदोलन पर आधारित उपन्यास है। भारत-विभाजन की त्रासदी को लेकर यशपाल का 'झूठा-सच' और भीष्म साहनी का 'तमस' उपन्यास की रचना उल्लेखनीय हैं। पुरानी काव्यकृतियों, रामायण और महाभारत, पर आधारित उपन्यास लिखने में नरेंद्र कोहली को भी अच्छी सफलता मिली है।

प्रेमचंदोत्तर काल में मनोवैज्ञानिक उपन्यासों के रचयिता जैनेंद्र कुमार, इलाचंद्र जोशी, अज्ञेय आदि के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। आंचलिक उपन्यासकारों के रूप में फणीश्वरनाथ रेणु, उदय शंकर भट्ट, रांगेय राघव, शानी, रामदरश मिश्र आदि के नाम अग्रगण्य हैं। नारी मन की भावनाओं का चित्रण यों तो हिंदी के अधिकांश उपन्यासों में मिलता है पर विगत तीन दशकों में अनेक महिला उपन्यासकारों ने नारी का चित्रण अधिक धारदार ढंग से किया है। इन उपन्यासकारों में कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, अलका सरावगी, शशिप्रभा शास्त्री, राजी सेठ, प्रभा खेतान, नासिरा शर्मा आदि के नाम लिए जा सकते हैं।

32.14 पाठांत प्रश्न

1. 'विराटा की पद्मिनी' की कथा संक्षेप में देते हुए उसके किसी एक मार्मिक प्रसंग का उल्लेख कीजिए।
2. 'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास में इतिहास और लोक तत्त्व का समन्वय है, इस कथन का विवेचन कीजिए।
3. 'विराटा की पद्मिनी' का केंद्रीय पात्र कौन है ? उसकी चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।
4. 'विराटा की पद्मिनी' के आधार पर कुंजर सिंह के चरित्र का संक्षेप में परिचय दीजिए।
5. 'विराटा की पद्मिनी' का कौन-सा वीर पात्र आपको सबसे अधिक प्रभावित करता है ? और क्यों ?
6. कालपी के नवाब अलीमर्दान की सर्वाधिक उल्लेखनीय विशेषता क्या है ?
7. 'विराटा की पद्मिनी' में वर्णित प्रकृति सौंदर्य पर टिप्पणी कीजिए।
8. बुंदेलखंडी लोक-गीत और लोक-भाषा के प्रयोग से उपन्यास में क्या विशेषता आ गई है ?
9. ''विराटा की पद्मिनी में ऐतिहासिक हलचल के भीतर एक प्रेमकथा अपनी पूरी मार्मिकता के साथ विद्यमान है।'' इस कथन का स्पष्टीकरण कीजिए।
10. ''विराटा की पद्मिनी' में राजमहलों में होने वाले षड्यंत्रों की एक झलक देखने को मिलती है।'' इस कथन की सोदाहरण पुष्टि कीजिए।
11. 'विराटा की पद्मिनी' की संवाद-योजना पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।
12. 'विराटा की पद्मिनी' की भाषा-शैली पर टिप्पणी कीजिए।

13. 'विराटा की पद्मिनी' में बुंदेलखंड अंचल अपनी सजीवता में विद्यमान है। कथन की पुष्टि कीजिए।

32.15 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

37.1 1. (ख) 2. (क) 3. (घ) 4. (ग)

5. पालर झील में नहाने के लिए पर्याप्त पानी था।
6. वह जन्म से ही अत्यंत सुंदर और तेजवान थी। जब वह गर्भ में थी, उसकी माँ विचित्र स्वप्न देखा करती थी, लड़की के जन्म लेने पर उसके पिता को ऐसा जान पड़ा जैसे प्रकाशपुंज ने घर में जन्म लिया हो।
7. कुंजर सिंह और लोचन सिंह दुर्गा के दर्शन के लिए गए थे। उसी समय दो मुसलमान सैनिक भी दर्शन के लिए पहुँचे। पर उनमें दुर्गा और उसकी पुजारिन के प्रति अपेक्षित श्रद्धाभाव न था। इस कारण दोनों दलों में विवाद हो गया, जो बढ़ते-बढ़ते मारकाट में परिणत हो गया ?
8. नायक सिंह ने रामदयाल को आदेश दिया कि वह दाँगी कन्या कुमुद को तत्काल उसके महल में पहुँचा दे।
9. नायक सिंह कुमुद को अपने महल में लाना चाहता था। कुंजर सिंह ने उसका समर्थन नहीं किया और कुमुद की रक्षा के लए पहरा देता रहा।
10. उस समय देवी सिंह दूल्हे के वेश में विवाह करने जा रहा था।

37.2 1. (ख) 2. (क) 3.(ग) 4. (घ)

5. देवी सिंह के राजा बनने के बाद जनार्दन शर्मा प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ।
6. छोटी रानी ने रामदयाल को प्रथम आदेश यह दिया कि वह जनार्दन शर्मा का सिर काट कर ले आए।
7. अलीमर्दान की सहायता प्राप्त करने के लिए छोटी रानी ने उसके पास राखी भेजी और उसे राखीबंद भाई बनाया।
8. देवी सिंह के राजा बन जाने पर कुंजर सिंह ने विद्रोह कर दिया और सिंहगढ़ पर अधिकार कर सैन्य संगठन करने लगा।
9. गोमती ने दुर्गा से वरदान माँगा कि कुंजर सिंह का नाश हो, अलीमर्दान मर्दित हो और दलीप नगर के राजा को विजय प्राप्त हो।
10. अलीमर्दान ने रामदयाल से यह पता लगाने को कहा कि दुर्गा के अवतार के रूप में प्रसिद्ध कुमुद पालर के दुर्गामंदिर से निकल कर कहाँ गई।

37.3 1. (क) 2. (ख) 3. (घ) 4. (ग)

5. सिंहगढ़ की लड़ाई में हारने के बाद कुंजर सिंह मुसावली में एक अहीर के घर पहुँचा और कुछ दिन उसका अतिथि बन कर रहा।
6. छोटी रानी ने अपनी मीठी और चिकनी-चुपड़ी बातों से बड़ी रानी को अपने पक्ष में कर लिया। उसने बड़ी रानी को यह विश्वास भी दिलाया

कि उनके महल से बाहर निकलते ही देवी सिंह से असंतुष्ट सरदार उनकी सहायता के लिए पहुँच जाएँगे।

7. रामनगर के गढ़ में राव पतराखन के पास पहुँची और उसका आश्रय ग्रहण किया।
8. विराटा के दुर्गामंदिर में।
9. नरपति सिंह कुंजर सिंह को विराटा के राजा सबदल सिंह के पास ले गई। उसके अनुरोध पर सबदल सिंह ने कुंजर सिंह को आश्रय और सहायता देने का वचन दिया।
10. उसने हकीम आगा खाँ को दिल्ली भेजा ताकि वह कालपी के नवाब के नाम सैयद बंधुओं की चिट्ठी लाए जिसमें अलीमर्दान को सेना के साथ दिल्ली आने का बुलावा हो।

32.4 1. (ग) 2. (क) 3. (ग) 4. (घ) 5. (ग)

6. अलीमर्दान कुमुद के लोभ से ही उनका साथ देगा। उसने आशा व्यक्त की कि विराटा पर अलीमर्दान का कब्जा होने के पहले ही कुमुद कुंजर सिंह के साथ किसी सुरक्षित स्थान में चली जाएगी और इस प्रकार वह अलीमर्दान से बच जाएगी।
7. दाँगी कन्या कुमुद विराटा के दुर्गा मंदिर में है, और कुछ ठीक नहीं कि वह कब कुंजर सिंह के साथ भाग जाए।
8. वह मंदिर में रहे और वहीं से अलीमर्दान की सेना पर तोप दागने का काम करे।
9. कुंजर सिंह मंदिर की रक्षा के लिए कड़ा पहरा बिठा देता है। वह मंदिर की दीवार के पास, एक टोर की आड़ में, कंधे से बंदूक लगाए मुस्तैदी से अपने स्थान पर डटा रहता है।
10. देवी सिंह छद्म वेश में, कफन सिंह बुंदेला नाम बताकर लोचन सिंह की सहायता के लिए पहुँचा। उसने लोचन सिंह के समक्ष दुर्ग के फाटक पर ज़ोर का आक्रमण करने का प्रस्ताव रखा। लोचन सिंह के आदेश पर वह अकेले फाटक पर पहुँच कर ज़ोर से चिल्लाया और फाटक खोलने को कहा। प्रहरी घबरा गए और लोचन सिंह तथा उसके साथी कमंद की सीढ़ी लगा कर गढ़ में प्रवेश कर गए। इस प्रकार रामनगर गढ़ पर देवी सिंह की सेना की विजय हुई।
11. देवी सिंह ने कहा कि लड़ाई हो रही है। तोपें गोले उगल रही हैं। मार–काट मची हुई है। जब शांति हो जाए तब इस प्रश्न पर विचार हो सकता है।

बोध प्रश्नों के उत्तर

1. नायक सिंह ने देवी सिंह को ऐसा पुरस्कार देने का वचन दिया, जैसा उसने कभी न पाया होगा।
2. वह उन्हें कोई ऐसी दवा दे, जिससे उनकी जीवन लीला समाप्त हो जाए।
3. विराटा में बेतवा नदी में स्थित टापू पर स्थित दुर्गामंदिर में।
4. देवी सिंह को।

5. कुंजर सिंह नहीं चाहता था कि दलीप नगर के ग ह-कलह में कोई बाहरी शक्ति हस्तक्षेप करे और उसके बदले में राज्य के किसी हिस्से पर अधिकार कर ले।
6. लोचन सिंह देवी सिंह से बिना पूछे सिंहगढ़ छोड़ कर दलीप नगर का विद्रोह दबाने चला गया था, जिसके लिए देवी सिंह ने उसे फटकारा था। जनार्दन से यह सूचना पाकर लोचन सिंह नाराज़ हो गया और अपने घर चला गया।
7. जनार्दन ने लोचन सिंह के घर जाकर अपनी विनम्रता और चतुराई से मना लिया।
8. सिंहगढ़ पर विजय प्राप्त करने के बाद लोचन सिंह ने छोटी रानी को कैद कर लिया। पर देवी सिंह ने उसे राजमाता समझ कर क्षमा कर दिया और उसे बड़ी रानी के महल में रखने की व्यवस्था कर दी।
9. अलीमर्दान की प्रतिक्रिया थी कि वह मंदिर की पुजारिन के साथ कोई ज़्यादती नहीं करना चाहता। उसने हिंदुओं का जी दुखाने वाला कोई काम करने के प्रति अनिच्छा व्यक्त की।
10. काले खाँ ने सबदल सिंह से कहा कि अलीमर्दान दुर्गामंदिर की पुजारिन लड़की को अपनी रानी बनाना चाहता है, अतः वह इसका विरोध न करे।
11. नरपति सिंह विराटा के राजा सबदल सिंह का पत्र लेकर दलीप नगर इसलिए जाता है कि विराटा तथा दुर्गा की पुजारिन कुमुद की अलीमर्दान से रक्षा करने में दलीप नगर की सहायता प्राप्त हो।
12. विराटा लौट कर कुंजर सिंह ने कुमुद से कहा कि कालपी का नवाब अलीमर्दान उसका शत्रु है, पर देवी सिंह ने भी अन्याय से उसकी राजगद्दी हड़प ली है, अतः वह दोनों का प्रतिकार करेगा।
13. कुंजर सिंह ने सबदल सिंह को बताया कि देवी सिंह नहीं, बल्कि मुसलमान सैनिक हिंदुस्तानी वेश में किले में घुस आए थे। उसने यह भी कहा कि रामनगर देवी सिंह के कब्जे में नहीं आया है। ये दोनों बातें झूठ थीं।
14. कुंजर सिंह कुमुद को विराटा के दुर्गामंदिर से हटा कर किसी अन्य सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने का प्रस्ताव रखता है पर कुमुद इसे स्वीकार नहीं करती, क्योंकि उसे कुंजर सिंह की शक्ति पर विश्वास है।
15. कुंजर सिंह पहले कुमुद से अंतिम विदा माँगता है। वह कहता कि आज की संध्या देखने का अवसर मुझे न मिलेगा। चार छह घंटे में यह गढ़ ध्वस्त हो जाएगा और रामनगर की सेनाएँ प्रवेश करेंगी।
16. एक तो अलीमर्दान कुमुद को पाने के लिए स्वयं ही शीघ्र युद्ध समाप्त करना चाहता था, दूसरे दिल्ली से उसके पास फरमान आ गया था कि वह अपनी सेना के साथ शीघ्र दिल्ली आए। यदि वह शीघ्रतापूर्वक विजय नहीं प्राप्त करता तो उसे देवी सिंह से सुलह करनी पड़ती।
17. विराटा के पतन की संभावना देख कर सबदल सिंह ने जौहर करने का निश्चय किया। उसने प्रस्ताव रखा कि स्त्रियाँ और बच्चे चिता में जल कर प्राण विसर्जन कर दें और योद्धा गढ़ी से निकल कर शत्रुओं से लड़ते हुए वीर गति को प्राप्त हों।
18. कुमुद बेतवा नदी की ढालू चट्टान के छोर पर पहुँच गई, उसने 'मलिनिया फुलवा ल्याओ नंदन वन के' गीत गाया और बेतवा नदी में छलाँग लगा ली।

301hi33

33
तीन लघुकथाएँ

साहित्य की सबसे लंबी विधा उपन्यास का रूप आपने पिछले पाठ में पढ़ा। आइए गद्य साहित्य की सबसे छोटी और हृदय पर सीधे प्रभाव डालने वाली विधा लघुकथा को पढ़ते हैं। इस पाठ में हम हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में लिखी सुप्रसिद्ध लेखकों की तीन लघुकथाएँ पढ़ेंगे – पहली है, तमिल भाषाभाषी सुविख्यात लेखक 'सुब्रह्मण्यम् भारती' द्वारा लिखित 'कवि और लोहार', दूसरी लघुकथा का शीर्षक है 'क्या नहीं कर सकता'। यह एक मणिपुरी लघुकथा है जिसके लेखक 'इबोहलसिंह कांग्जम' हैं। तीसरी है बांग्ला लेखक 'बनफूल' की लिखी 'सड़क का आदमी' लघुकथा। आइए इन्हें विस्तार से इस पाठ में पढ़ते हैं और लघुकथा की विशेषताओं का विश्लेषण करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- गद्य साहित्य की सबसे अधिक लोकप्रिय विधा लघुकथा की विशेषताओं की सूची बता सकेंगे;
- हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में रचित साहित्य की सराहना कर सकेंगे;
- कम शब्दों में अधिक प्रभावी ढंग से अपनी बात संप्रेषित करने की कला पहचान सकेंगे;
- गरीब व्यक्ति का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा करता है तथ्य को विश्लेषित कर सकेंगे;
- अपने व्यवसाय के अतिरिक्त दूसरों के व्यवसाय का पूरा सम्मान देना ही सभ्यता है, सिद्ध कर सकेंगे;

- आजकल भ्रष्टाचार के चलते कुछ भी संभव है, लघुकथा के आधार पर विश्लेषित कर सकेंगे;
- सरल भाषा का प्रयोग करते हुए गहरी बात की पहचान कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर एक छोटी-सी कहानी विकसित कीजिए–

- बुधिया काका की पनसारी की दुकान
- नीता का रोज़ बुधिया काका की दुकान से सामान खरीदना
- नीता का अपनी चार वर्ष की बेटी को घर पर अकेला छोड़ कर बैंक की नौकरी करना और परेशान रहना
- अगले दिन से नीता का बुधिया काका के यहाँ बेटी को छोड़ने का निर्णय लेकर निश्चिंत होना
- अगले दिन घर पर आकर बेटी का माँ नीता से लिपट-लिपट कर बहुत रोना

33.1 मूलपाठ

आइए एक बार तीनों लघुकथाएँ पढ़ लेते हैं –

1. कवि और लोहार

योरोप का एक प्रसिद्ध कवि किसी समय एक लोहार की दुकान के नज़दीक से गुज़र रहा था। कहीं से उसे गाने की आवाज सुनाई दी। कवि ने ध्यान से सुना तो पाया कि भीतर लोहार गा रहा था और वह गीत, जो लोहार गा रहा था, उसी कवि का लिखा हुआ था। लोहार कविता के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर मनमाने ढंग से ऊँची आवाज में गाता जा रहा था। कवि के क्रोध का ठिकाना न रहा। वह तुरंत दुकान के भीतर चला गया। वहाँ लोहार के सारे औजार तरतीब से रखे हुए थे। कवि ने शीघ्रता से उन सबको तितर-बितर कर दिया। हँसली कहीं फेंकी तो हथौड़ा कहीं।

क्रुद्ध लोहार बोला, ''कौन है रे तू पागल ! मेरे औजारों को यों बिखेरकर मेरा काम क्यों बिगाड़ रहा है?''

कवि ने कहा, ''तुम्हारे सभी औजार अभी तो दुकान में ही हैं न? तुम्हारा क्या बिगड़ गया?''

शब्दार्थ

लोहार – लोहे का काम करने वाला

लज्जा से – शर्मसार होना, सिर झुकाना

''वाह, वाह ! ये औजार ही तो मेरी संपत्ति हैं। यही मेरी जिंदगी हैं। इन पर इतना गुस्सा क्यों?'' उसने नम्र होकर जवाब दिया।

कवि ने कहा, ''तो मेरा गीत भी मेरी जिंदगी है। अभी-अभी तुम एक गीत गा रहे थे, वह मेरा ही लिखा हुआ है। मेरे गीत को तुम तोड़-मरोड़ कर क्यों गा रहे थे। उस पर तुम्हें इतना गुस्सा क्यों?''

लोहार ने लज्जा से सिर झुका दिया।

—सुब्रह्मण्यम् भारती

2. क्या नहीं कर सकता?

''अभी-अभी जोर-शोर से गरजने के बाद क्यों चुप हो गए?''

''सोच रहा हूँ, बरसूँ या नहीं।''

''क्यों? मौसम तो है ही तुम्हारा, है कि नहीं ?''

''हाँ, है, लेकिन.......।''

''उतर नहीं सके तो मैं ले चलूँ। तुम्हारी मदद करने आई हूँ।''

''नहीं, रुको, सोच रहा हूँ।''

''क्या?''

''न बरसूँ, यही।''

''तब तो सूखा पड़ जाएगा। सूखे के नाम पैसे बटोरने वाले बहुत हो गए हैं।''

''बरसूँगा, तो भी वही हाल। बाढ़ के नाम पर पैसे बनाने वाले लाभ की खुशी की कल्पना में मस्त हैं।''

''सही मात्रा में बरसों, ज्यादा नहीं ताकि बाढ़ न आ जाए।''

''वह कैसे? अगर थोड़ा-सा भी बरसूँ तो यूँ ही नकली बाढ़ तो आ ही जाएगी। आदमी क्या नहीं कर सकता?''

शायद फिर उत्तर देने की आवश्यकता न रही हो, हवा चुप हो गई।

—इबोहलसिंह कांग्जम

3. सड़क का आदमी

जेठ की तपती दुपहरी में भी बिना छतरी के राघव सरकार को चलने की आदत थी। वे दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे, सो आज भी पगडंडी पर निकल पड़े। पैरों में जूते जरूर थे, लेकिन उनकी कीलें उस तरह निकली हुई थीं कि दोनों पैरों में जख्म हो गए थे। उनके दोनों पैरों की तुलना मृत्युशैया पर पड़े भीष्म पितामह के पैरों से करना अनुचित नहीं होगा। उनके मुखमंडल पर परेशान आदमी जैसी कोई झलक नहीं थी और उनके कदम तेजी से निश्चिंत बढ़ रहे थे।

टिप्पणी

किसी का अनुग्रह या किसी की दया उन्होंने कभी चाही हो, ऐसा आज तक नहीं सुना गया। उनके मित्र बताते हैं, वे किसी पर कभी आश्रित नहीं हुए, खुद सबका भला करने की भरसक कोशिश करते हैं। अपने सिर को सदा ऊँचा उठाए रखना ही उनकी जिंदगी का एक मात्र सिद्धांत है।

वे पगडंडी पर चले जा रहे थे कि टन-टन की घंटी बजाता हुआ एक रिक्शावाला उनके पीछे हो लिया, ''रिक्शा चाहिए बाबू, रिक्शा!''

राघव सरकार ने देखा, एक कृशकाय उनकी ओर याचना-भरी नजर से देख रहा था, पर इस मामले में उनका सिद्धांत ही निराला था। वे यह मानते थे कि कोई अमानुष ही होगा, जो दूसरे से अपना बोझ खिंचवा सकता है, वह अपने जीवन में कभी भी पालकी या रिक्शा पर नहीं चढ़े थे। वह उसे पशुता मानते थे। माथे का पसीना पोंछते हुए उन्होंने कहा, ''नहीं, रिक्शा नहीं चाहिए।''

पगडंडी पर वह तेजी से चलने लगे। रिक्शेवाला भी उनके पीछे टन-टन घंटी बजाते हुए चलने लगा। अचानक उनके दिमाग में कौंधा – शायद इस गरीब के पास अन्न जुटाने का यही एकमात्र उपाय हो। वह पढ़े-लिखे थे, सो उनके मन में पूंजीवाद, दरिद्र नारायण, बोलेशेविककार, श्रम के विभाजन, बस्ती की दुर्दशा आदि अनेक बातें क्षण भर में आईं और गईं। राघव ने फिर एक बार जाते-जाते देखा। ओह, यह रिक्शेवाला सचमुच ही कितना निरीह है... उसकी दुर्बलता देखकर राघव का हृदय दया से भर आया।

घंटी टनाटनकर रिक्शेवाले ने फिर कहा, ''बाबू चलिए न! आपको पहुँचा दें, कहाँ जाएंगे ?''

''शिवतला तक जाने के कितने पैसे लोगे?''

''छह पैसे!''

''अच्छा चलो।''

लेकिन राघव सरकार रिक्शे पर सवार नहीं हुए। वह पहले की तरह ही पगडंडी पर चलते रहे।

''आइए बाबू, चढ़िए।'' रिक्शेवाला फिर गिड़गिड़ाया।

''तुम चलो न !''

राघव ने चलने की रफ़्तार तेज कर दी।

बीच-बीच में दोनों के बीच यह संवाद होते रहे।

''आइए बाबू चढ़िए न!''

''तुम चलो न !''

शिवतला पहुँचकर जेब से छह पैसे निकालकर राघव सरकार ने रिक्शेवाले को देते हुए कहा,

''यह लो ।''

शब्दार्थ

दृढ़ संकल्प – पक्का इरादा
मृत्युशैया – वह बिस्तर जहाँ मृत व्यक्ति लेटा हो
निश्ंचित – बिना किसी चिंता के
अनुग्रह – कृपा
आश्रित – निर्भर होना
सिर को ऊँचा – सम्मान से रहना उठाए रखना
कृशकाय – पतला-दुबला व्यक्ति
अमानुष – मानव के गुणों से रहित, अमानवीय
पशुता – पशु के समान व्यवहार
दुर्दशा – बुरी स्थिति
आँखों से – दिखाई न देना ओझल हो जाना

"आप तो रिक्शे पर चढ़े ही नहीं।"

"मैं रिक्शे पर नहीं चढ़ता।"

"क्यों ?"

"रिक्शे पर चढ़ना पाप है।"

"ओह आपको पहले ही बता देना था।" रिक्शेवाला के चेहरे पर घृणा का भाव उभर आया। उसने पसीना पोंछा और धीरे-धीरे चलने लगा।

"पैसे ले जाओ।"

"हम किसी से भीख नहीं लेते।"

टन-टन घंटी बजाता हुआ वह आँखों से ओझल हो गया।

—बनफूल

33.2 बोध प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उत्तर दीजिए –

1. कवि को गाने की आवाज़ कहाँ से सुनाई दी?
2. गाना सुनते ही कवि के क्रोध का ठिकाना क्यों न रहा?
3. लोहार को गुस्सा क्यों आया?
4. बादल बार-बार क्यों सोच रहा था, "बरसूँ या नहीं।"
5. हवा किस प्रकार से बादल की मदद करने को तैयार थी?
6. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार के मित्रों की उनके बारे में क्या राय है?
7. राघव सरकार रिक्शे पर क्यों नहीं बैठना चाहते थे?
8. राघव सरकार ने जीवन में किन-किन सिद्धांतों को अपनाया हुआ था?

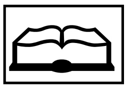

33.3 आइए समझें

आपने तीन लघुकथाएँ पढ़ीं। लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। आप अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में इन्हें पढ़ते होंगे। आप इन लघुकथाओं को पढ़ कर समझ गए होंगे कि

- लघुकथा कहानी की तुलना में बहुत छोटी है,
- छोटी होने के कारण सरलता और जल्दी से पढ़ी जाती है,
- यह एक बहुत ही रोचक विधा है,
- इसे पढ़ने में समय बहुत कम लगता है, और

- यह पाठक के हृदय पर तीखा वार करती है।
- इसकी भाषा तीखी और चुटीली होती है,
- लघुकथा में कोई-न-कोई व्यंग्य निहित होता है,
- इसमें नैतिक मूल्य प्रधान होता है जिससे कोई-न-कोई सीख मिलती है।

आइए तीन लघुकथाओं – 'कवि और लोहार', 'क्या नहीं कर सकता', और 'सड़क का आदमी' के बारे में थोड़ी और चर्चा करते हैं। पहली लघुकथा एक बार पुनः पढ़िए। इस कहानी को पढ़ने के बाद आपको क्या महसूस हुआ? यही न कि सभी को अपना कार्य बहुत प्यारा होता है चाहे वह लोहार हो या कवि। सभी को अपने कार्य करने के माध्यम भी बहुत प्यारे होते हैं चाहे वे औजार हों या शब्द। कोई भी उनमें बेतरतीबी नहीं देख सकता। मान लीजिए आप एक कलाकार हैं तो क्या आप अपने रंगों को ऐसे बिखरे हुए सहन कर पाएँगे या आपका ब्रुश कोई उठा कर कहीं फैंक दे तो क्या आपको अच्छा लगेगा इसी प्रकार कवि को भी अपने लिखे गीत के शब्दों की तोड़-मरोड़ पसंद नहीं आई और उसने उस पर प्रतिक्रिया व्यक्त की। कोई भी व्यवसाय छोटा अथवा बड़ा नहीं होता। आपने एक कहावत तो सुनी होगा – 'जहाँ काम आवै सुई कहा करै तलवार'। प्रत्येक का अपना महत्त्व है, कोई किसी का स्थान नहीं ले सकता। व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण हैं।

इसी प्रकार सभी मातृभाषियों को अपनी भाषा से लगाव होता है, प्रेम होता है परंतु इसका यह बिल्कुल भी अर्थ नहीं है कि आप दूसरे की मातृभाषा का सम्मान न करें। आप दूसरों से सम्मानपूर्वक व्यवहार करेंगे तो आपका भी लोग सम्मान करेंगे।

आइए, दूसरी लघुकथा 'क्या नहीं कर सकता' पुनः पढ़ते हैं। इस लघुकथा का शीर्षक कथा की सारी बातों को एक दम खोल देता यदि इसमें 'आदमी' भी लगा होता। आजकल भ्रष्टाचार के युग में आदमी कुछ भी कर सकता है। यही सोच कर बादल बार-बार विचार कर रहा है कि बरसे या न बरसे। हवा उसकी मदद करने पहुँचती है परंतु बादल उसे भी निरुत्तर कर देता है। भ्रष्टाचार अपने चरम पर है। ज़रा सा बादल बरसेगा और आदमी उसे नकली बाढ़ का रूप तुरंत कागजों पर दिखा कर अपना लाभ कमा लेगा। कथाकार ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य कर स्थिति को उभारा है।

आइए तीसरी लघुकथा 'सड़क का आदमी' की चर्चा करते हैं। आप पहली लघुकथा में पढ़ चुके हैं कि हमें दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा की आदि सभी की इज्ज़त करनी चाहिए, उसे भरपूर सम्मान देना चाहिए। यदि आपके कुछ सिद्धांत हैं तो अगला व्यक्ति भी अपना सम्मान और सिद्धांत रखता है। यदि आप दृढ़ संकल्प हैं तो अन्य व्यक्ति चाहे उसका कोई भी व्यवसाय हो अपने संस्कार, संकल्प और आत्मसम्मान रखता है। यह बात सोच कर, समझ कर दूसरों का सम्मान करना आवश्यक है। तीसरी लघुकथा में इसी बात को एक घटना के द्वारा खोला गया है। माना राघव सरकार बहुत पढ़े-लिखे,

टिप्पणी

सिद्धांतवादी, आदर्शवादी, दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति हैं पर वह यह कैसे सुनिश्चित कर सकते हैं एक रिक्शेवाले के अपने आदर्श और सिद्धांत नहीं हो सकते। छोटा काम करने वाला, दिखने में कृशकाय, निरीह व्यक्ति बिल्कुल वैसा ही करे जैसा कि सरकार राघव चाहते हैं।

ऐसा संभव नहीं है प्रत्येक व्यक्ति की अपनी पहचान होती है जिसे वह बरकरार रखने में अपना सब कुछ न्यौछावर कर देता है। रिक्शा चलाने वाले का भी अपना सम्मान है जिसे उसने बना कर रखा है। क्या आप रिक्शेवाले के दुख का अनुमान लगा सकते हैं जब राघव सरकार ने रिक्शे पर चढ़ने से इसलिए मना कर दिया क्यों कि वे मानते है कि रिक्शे पर चढ़ना पाप है। यहाँ राघव सरकार ने दूसरे के व्यवसाय को, उसकी रोजी–रोटी कमाने के माध्यम को तिरस्कृत किया, उसका अपमान किया जिसका उत्तर रिक्शेवाले ने यह कह दिया कि हम किसी से भीख नहीं माँगते। गरीब व्यक्ति का भी आत्मसम्मान होता है और वह उसकी रक्षा करता है।

उपर्युक्त तीनों कहानियों का विश्लेषण करने पर आप स्वयं ही समझ सकते हैं कि प्रत्येक कथा में कोई-न-कोई शिक्षा निष्कर्ष रूप में सामने आती है, क्या आप बता सकते हैं कि वे क्या हैं? यहाँ एक-एक वाक्य में लिखिए –

1. ....

2. ....

3. ....

पाठगत प्रश्न 33.1

1. निम्नलिखित कथनों में से सही तथा गलत कथनों के सामने सही (√) तथा गलत (X) के निशान लगाइए –

   (क) लोहार ने कविता के शब्दों को तोड़-मरोड़ कर ऊँची-नीची आवाज में गाया।

   (ख) इसके बदले में कवि ने लोहार का सामान तरतीब से लगा दिया।

   (ग) लोहार अपने औजारों को इधर-उधर देखकर बहुत आनंदित हुआ।

   (घ) यदि बादल न बरसता तो सूखा पड़ जाता और सूखे के नाम पर पैसे बटोरने वाले बहुत आ खड़े होते।

   (ङ) यदि हवा की सलाह मानकर बादल बरस जाता तो सभी बहुत आनंदित होते।

   (च) टन-टन घंटी वाला रिक्शा सरकार राघव को शिवतला पहुँचा कर आया।

   (छ) शिवतला पहुँचाने के रिक्शेवाले ने अधिक पैसे बोले इसलिए राघव ने चढ़ने से मना कर दिया।

टिप्पणी

2. निम्नलिखित कथनों का उपयुक्त मिलान कीजिए –

स्तंभ क	स्तंभ ख
(क) लोहार मनमाने ढंग से	i) लोहार के औजार तितर-बितर कर दिए।
(ख) सरकार राघव सिद्धांतवादी होने के कारण	ii) यदि तुम न बरसे तो सूखा पड़ जाएगा।
(ग) कवि ने प्रतिक्रियावश	iii) दोनों पैरों के जख्मी होने पर भी रिक्शे पर न बैठे।
(घ) हवा का बादल से कहना था	iv) कवि का लिखा गीत गा रहा था।

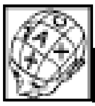

33.4 आपने क्या सीखा

1. लघुकथा नवीन साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधा है। इनका प्रकाशन अकसर समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में होता रहता है।
2. लघुकथा कहानी की तुलना में बहुत छोटी है, छोटी होने के कारण सरलता और तीव्रता से पढ़ी जाती है।
3. यह एक बहुत ही रोचक विधा है, लघुकथा में कोई-न-कोई व्यंग्य निहित होता है।
4. इसमें नैतिक मूल्य प्रधान होता है जिससे कोई-न-कोई सीख मिलती है। इसकी भाषा तीखी और चुटीली होती है।
5. व्यक्ति को अपना व्यवसाय तो पसंद होता ही है साथ ही दूसरे के कार्य को सम्मान देना भी उसका कर्तव्य बनता है। यही सभ्य मानव के गुण हैं।
6. दूसरी लघुकथा में कथाकार ने आज के बढ़ते भ्रष्टाचार पर तीखा व्यंग्य पैदा कर वास्तविक स्थिति को उभारा है।
7. तीसरी लघुकथा 'सड़क का आदमी' बताती है कि हमें दूसरे व्यक्ति के व्यवसाय की, उसके काम में आने वाले औजारों की, उसकी भाषा आदि की सभी की इज्ज़त करनी चाहिए, उसे भरपूर सम्मान देना चाहिए।

33.5 योग्यता विस्तार

1. इस पाठ में आपने तीन लघुकथाएँ पढ़ीं। ये लघुकथाएँ डा. बलराम द्वारा संपादित विश्व लघुकथा कोश के दूसरे खंड से आपके पठन के लिए चयनित की गई हैं। यह विश्व कोश आठ खंडों में प्रकाशित है। इसमें विश्व की सभी सुप्रसिद्ध भाषाओं में लघुकथाएँ संगृहीत हैं। आपको जानकर अचरज होगा कि ये लघुकथाएँ हिंदी भाषा में ही नहीं बल्कि विश्व की अनेक भाषाओं के साथ-साथ

हमारी अन्य भारतीय भाषाओं से हिंदी में अनुवादित की गई है। पहली तमिल लघुकथा ''कवि और लोहार'', दूसरी लघुकथा ''क्या नहीं कर सकता'' मणिपुरी भाषा में इबोहलसिंह कांग्जम द्वारा रचित से हिंदी में अनूदित कथा है तथा तीसरी लघुकथा ''सड़क का आदमी'' बांग्ला भाषा में सुप्रसिद्ध लेखक बनफूल द्वारा रचित है।

2. हिंदी पत्र-पत्रिकाओं से विषय संबंधी अन्य लघुकथाएँ ढूँढ़ कर पढ़िए।
3. अन्य भारतीय भाषाओं की लघुकथाओं के अनुवाद अकसर प्रकाशित होते रहते हैं, उन्हें एकत्रित कर पढ़ने का प्रयास कीजिए।
4. पुस्तकालय में जाकर अन्य लघुकथा कोश की खोज कीजिए और उनमें से अपनी पसंद की लघुकथाएँ पढ़िए।

33.6 पाठांत प्रश्न

1. लघुकथा की प्रमुख तीन विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।
2. लोहार ने क्यों कहा कि ''ये औजार ही तो मेरी संपत्ति हैं।''
3. ''तो यह गीत भी मेरी जिंदगी है।'' वाक्य कहने से कवि का क्या आशय है स्पष्ट कीजिए।
4. पहली कथा में अंत में लोहार ने लज्जा से सिर क्यों झुका लिया?,
5. दूसरी लघुकथा में हवा ने बादल को क्या सलाह दी?
6. बादल का जवाब सुनकर हवा की बोलती क्यों बंद हो गई?
7. ''क्या नहीं कर सकता'' लघुकथा के शीर्षक की सार्थकता सिद्ध कीजिए।
8. ''सड़का का आदमी'' लघुकथा के राघव सरकार के पैरों की तुलना मृत्युशैया पर पड़े भीष्म पितामह के पैरों से क्यों की गई है?
9. दूसरी लघुकथा में बादल ने क्या सोच कर कहा, ''बरसूँ या नहीं।''
10. तीसरी लघुकथा में राघव सरकार को दृढ़ संकल्प वाला व्यक्ति क्यों कहा गया है?
11. राघव सरकार रिक्शे पर बैठना पाप क्यों मानते थे?
12. निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए ––

    पूंजीवाद, दरिद्र नारायण, श्रम के विभाजन
13. रिक्शेवाले के चेहरे पर घृणा का भाव क्यों उभर आया?
14. रिक्शेवाले ने क्यों कहा ''हम किसी से भीख नहीं लेते।''
15. निम्नलिखित मुहावरों का वाक्यों में इस प्रकार प्रयोग कीजिए कि उनका अर्थ स्पष्ट हो जाए––

    सिर ऊँचा उठाए रखना, आँखों से ओझल हो जाना, लज्जा से सिर झुकाना,

16. निम्नलिखित शब्दों में उपसर्ग या प्रत्यय जोड़कर दो-दो नए शब्द बनाइएः

    सिद्ध, नम्र, उचित, आवश्यक, उत्तर, ग्रह, हृदय

17. निम्नलिखित शब्दों के दो-दो पर्यायवाची शब्द लिखिएः

    जिंदगी, खुशी, मानुष, निराला

33.7 उत्तरमाला

बोधप्रश्नों के उत्तर

1. लोहार की दुकान से
2. कवि का रचित गीत मनमाने ढंग से लोहार गा रहा था।
3. कवि ने उसके औजार तितर-बितर कर दिए थे।
4. यदि बादल बरसेगा तो आदमी नकली बाढ़ कागज पर दिखा कर भ्रष्टाचार करेगा।
5. वह नीचे तक लेकर जाने के लिए तैयार थी।
6. वे कभी किसी पर आश्रित नहीं हुए।
7. वे रिक्शे पर बैठना अमानवीय और पाप समझते थे।
8. सिर उठाकर जीना, किसी पर आश्रित न होना, दृढ़ संकल्पी, पढ़े-लिखे, आत्मसम्मानी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

33.1 1. (क) √ (ख) X (ग) X (घ) √ (ङ) √ (च) X

(छ) X

2.

स्तंभ क	स्तंभ ख
(क)	iv)
(ख)	iii)
(ग)	i)
(घ)	ii)

टिप्पणी

301hi34A

34

सूचना प्रौद्योगिकी : स्वरूप और महत्त्व

संचार माध्यमों का प्रमुख कार्य सूचना देना होता है। संचार माध्यम सूचनाएँ किस प्रकार संकलित-संपादित तथा प्रकाशित-प्रसारित करते हैं, इस बारे में आप आगे के पाठों में जानकारी प्राप्त करेंगे।

आजकल सूचना प्रौद्योगिकी, सूचना तंत्र और संचार माध्यम जैसे शब्दों का प्रयोग किया जाता है जिसका संक्षिप्त नाम आई.टी. (इन्फोरमेशन टेक्नॉलॉजी) है। आपने भी इस शब्द के बारे में निश्चित रूप से पढ़ा या सुना होगा। पहले इस शब्द का प्रयोग सिर्फ कंप्यूटर विज्ञान तथा उपग्रह प्रणाली के लिए किया जाता था। किंतु अब इसके अंतर्गत रेडियो, टी.वी., फोटोग्राफी, प्रेस, उपग्रह, कंप्यूटर, इंटरनेट, फैक्स, टेलीविज़न आदि सब कुछ आ गया है। इस पाठ में हम सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में इन सभी नए उपकरणों की भूमिका के बारे में पढ़ेंगे और यह जान सकेंगे कि इन उपकरणों के आ जाने से संचार के क्षेत्र में किस प्रकार क्रांति आई है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- समाज में सूचना प्रौद्योगिकी की बढ़ती लोकप्रियता का कारण बता सकेंगे;
- इस क्रांति की व्याख्या कर सकेंगे तथा इसके पीछे निहित उद्देश्यों को पहचान सकेंगे;
- उपग्रह (सेटेलाइट) की कार्यप्रणाली तथा संचार के क्षेत्र में इसके महत्त्व को रेखांकित कर सकेंगे;
- समाचार संकलन, संपादन तथा प्रकाशन-प्रसारण में कंप्यूटर की भूमिका स्पष्ट कर सकेंगे;
- पत्रकारिता के क्षेत्र में इंटरनेट और 'ई-मेल' की उपयोगिता स्पष्ट कर सकेंगे;

टिप्पणी

- वीडियो पत्रकारिता का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- सूचना प्रौद्योगिकी में संचार के महत्त्व को रेखांकित कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

क्या आप बता सकते हैं कि सूचना प्रौद्योगिकी कितने क्षेत्रों में उपयोगी है, कोई छह का उल्लेख कीजिए:

1. .... 2. ....

3. .... 4. ....

5. .... 6. ....

34.1 आइए समझें

सूचना प्रौद्योगिकी के कारण संचार में क्रांति

आज से तीन दशक पूर्व सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार माध्यम जन साधारण को आसानी से सुलभ नहीं थे। दूरदर्शन तो लोगों के लिए कौतूहल का विषय बना हुआ था। लेकिन आज रेडियो, दूरदर्शन तथा पत्र-पत्रिकाएँ लोगों की आवश्यकता बन चुके हैं। राजनीति, साहित्य, कला, संगीत, सामाजिक घटना-दुर्घटना, व्यापार, खेल, अपराध, शेयर बाजार, कृषि, शिक्षा आदि जीवन का कोई भी ऐसा क्षेत्र नहीं है, जो संचार माध्यमों की दृष्टि से अछूता रह गया हो। आज हमारे देश में 700 रेडियो तथा दूरदर्शन केंद्र हैं, जिससे देश की लगभग 90% आबादी लाभ उठा रही है। देश के हर कोने में डिश एंटीना का जाल-सा बिछ गया है जिसके माध्यम से देश-विदेश में प्रसारित होने वाले अनेकानेक कार्यक्रम देखे जा सकते हैं। देश की लगभग हर भारतीय भाषा में पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होने लगा है। वर्तमान आँकड़ों के अनुसार सभी भारतीय भाषाओं को मिलाकर हमारे देश में करीब चौंतीस हजार पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन होता है। इनमें से विभिन्न भारतीय भाषाओं के करीब चार हजार ऐसे पंजीकृत अखबार हैं, जो प्रतिदिन लाखों की संख्या में विविध शहरों से अपने संस्करण प्रकाशित करते हैं। यह संख्या दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है। ये सारे तथ्य सूचना प्रौद्योगिकी तथा संचार के क्षेत्र में आई क्रांति को रेखांकित करते हैं। अब आपके मन में निश्चित रूप से यह जिज्ञासा उभरी होगी कि इसके क्या कारण हैं? आइए, अब हम इनकी चर्चा करते हैं:

आर्थिक तथा व्यापारिक संसाधनों को मजबूत करने के उपकरण के रूप में संचार माध्यमों का प्रयोग होता है।

1. व्यापार

जनसंचार के क्षेत्र में उच्च अध्ययन के लिए गठित संस्था 'इंटरनेशनल सेंटर एंड हायर स्टडीज़ इन कम्यूनिकेशंस फॉर लैटिन अमेरिका' की सन् 1975 में हुई बैठक में पीटर शेर्कल ने कहा था कि ''तीसरी दुनिया के अधिकांश राष्ट्रों में जन-संचार के उद्देश्य निजी अर्थ व्यवस्था और व्यापार प्रणाली को पुष्ट करना, राजनीतिक यथास्थिति को कायम रखना, पारंपरिक रीति-रिवाजों को मजबूत करना और उद्योगपतियों के हाथ में जन संचार की गारंटी सुनिश्चित करना है।''

निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा संचार माध्यमों पर नियंत्रण

दुनिया के विकासशील देशों ने अपनी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए कल-कारखानों तथा अपनी उत्पादन क्षमता को बढ़ावा दिया। ऐसी स्थिति में विश्वबाजार में अपने उत्पादन की खपत तथा गुणवत्ता को प्रचारित-प्रसारित करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस प्रचार-प्रसार का माध्यम संचार व्यवस्था ही हो सकती थी, जिसके माध्यम से आसानी से दूर-देश तक लोगों के बीच उत्पादनों की जानकारी को पहुँचाया जा सकता था। इसलिए तीसरी दुनिया की सरकारों ने संचार माध्यमों को अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार के लिए नीतियाँ बनाईं तथा कई सुविधाएँ प्रदान कीं। आपने पत्र-पत्रिकाओं तथा रेडियो-दूरदर्शन पर प्रकाशित-प्रसारित होने वाले विज्ञापनों को देखा और सुना होगा। हमारे देश में तो सरकार ने रेडियो तथा दूरदर्शन पर कई व्यावसायिक चैनल भी शुरू कर दिए हैं।

अखबार पढ़ते समय आपने ध्यान दिया होगा तो पाया होगा कि कई राष्ट्रीय अखबारों का लगभग साठ प्रतिशत भाग विज्ञापनों से भरा रहता है। इस प्रकार देश के उत्पादनों की खपत तथा गुणवत्ता के प्रोत्साहन में आज संचार माध्यमों ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस कारण संचार माध्यमों में भी निरंतर प्रतियोगात्मक विकास हुआ है।

2. निजी कंपनियों की आपसी होड़

आज संचार के क्षेत्र में निजी कंपनियों का प्रवेश बहुत तेजी से हुआ है। इसके पीछे सरकार द्वारा प्रेस को स्वतंत्रता दिए जाने तथा जनसाधारण की मनोरंजन की बढ़ती आवश्यकता प्रमुख कारण रहे हैं। सरकार द्वारा संचार माध्यमों को स्वतंत्रता प्रदान किए जाने के कारण हमारे देश में पत्रकारिता जनतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में उभर कर सामने आई है। आप तो जानते ही हैं कि विधायिका, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका तीन प्रमुख स्तंभ हैं। किंतु प्रेस लोगों में सामाजिक, राजनीतिक तथा वैधानिक सक्रियता पैदा करता है और उसकी समस्याओं को सरकार तथा न्यायालयों की दृष्टि में ले आता है, इसलिए इसे जनतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पहचाना जाने लगा है। प्रेस की इस स्वतंत्रता के चलते संचार के क्षेत्र में निजी कंपनियाँ आसानी से प्रवेश कर जाती हैं। निजी कंपनियाँ तो अखबार निकालती ही हैं साथ ही उपग्रहों को पट्टे पर लेकर अथवा दूरदर्शन से कुछ अवधि खरीदकर ये कंपनियाँ रेडियो तथा दूरदर्शन पर भी अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करती हैं। **98.3 एफ.एम., रेडियोमिर्ची, रेड.एफ.एम.** आदि रेडियो पर तथा **स्टार टी.वी., सोनी टी.वी., जी.टी.वी., बी.बी.सी, सी.एन.एन., डिस्कवरी, इ.एस.पी.एन.** आदि दूरदर्शन पर कुछ ऐसी ही प्रमुख निजी कंपनियों द्वारा चलाए जाने वाले चैनल हैं। ये सभी चैनल निजी कंपनियों द्वारा उपग्रह पट्टे पर लेकर (समय लेकर) स्वतंत्र रूप से चलाए जाते हैं। इन पर मनोरंजन के अनेक कार्यक्रमों के साथ-साथ समाचार भी प्रसारित किए जाते हैं। निजी कंपनियों द्वारा दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों की कीमत कार्यक्रमों के साथ दिखाए जाने वाले विज्ञापनों के द्वारा जुटाई जाती है। विज्ञापनों की उपलब्धता किसी भी कार्यक्रम की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। जो कार्यक्रम जितना अच्छा और लोकप्रिय होता है उसके लिए उतने ही अधिक विज्ञापन अथवा प्रायोजक प्राप्त होते हैं।

पत्रकारिता को चौथा स्तंभ भी कहा जाता है।

इस तरह निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अधिक-से-अधिक विज्ञापन प्राप्त करने तथा लाभ कमाने के लिए अच्छे-से-अच्छे कार्यक्रम प्रसारित करने का प्रयास करती हैं। इस

प्रकार की सैकड़ों कंपनियों के आ जाने और अच्छे-से-अच्छे कार्यक्रमों के प्रसारण के उद्देश्य के कारण उनमें आपसी होड़ भी लगी हुई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि ये कंपनियाँ संचार के क्षेत्र में रोज़ नए-नए शोध तथा अनुसंधान करती हैं तथा एक-दूसरे से आगे निकलने की होड़ में अच्छे-से-अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास करती हैं।

दूरदर्शन ने भी निजी कंपनियों को अपने प्रसारण के लिए समय बेचना शुरू कर दिया है। यहाँ समय बेचने का अर्थ है कि दूरदर्शन निर्धारित राशि लेकर अपने यंत्रों के माध्यम से निजी कंपनियों द्वारा बनाए गए कार्यक्रमों को प्रसारित करता है। चूँकि ये कार्यक्रम कम समय के होते हैं इसलिए कंपनियों को उपग्रह पट्टे पर लेना ज्यादा महँगा पड़ता है। ऐसे में वे अपने कार्यक्रम के प्रसारण-भर का समय दूरदर्शन से खरीद लेती हैं।

इस प्रकार हमने देखा कि निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आ जाने से संचार के क्षेत्र में एक प्रतियोगिता-सी चल पड़ी है। इस प्रतियोगिता के चलते संचार के क्षेत्र में नए-नए शोध और आविष्कार हुए हैं। इन आविष्कारों के चलते संचार और प्रौद्योगिकी का क्षेत्र अधिक महत्त्वपूर्ण हो गया है।

3. इलेक्ट्रॉनिकी का उपयोग

इसका सबसे महत्त्वपूर्ण कारण है इलेक्ट्रॉनिकी का उपयोग। संचार और पत्रकारिता के क्षेत्र में एक वाक्य चलता है कि 'जो मारे सो मीर' अर्थात् किसी भी खबर को जिसने सबसे पहले पकड़ लिया वही सबसे अधिक सफल पत्रकार अथवा माध्यम है। जैसा कि आपने ऊपर पढ़ा संचार के क्षेत्र में निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आ जाने से प्रतियोगिता बढ़ी है। ऐसे में सफल बनने के लिए जल्दी नई-से-नई खबर जुटाने तथा लोगों तक पहुँचाने के लिए तत्परता की आवश्यकता बढ़ी है।

पहले खबर जुटाने तथा संबंधित संचार माध्यम तक पहुँचाने में बहुत समय लग जाता था। किंतु अब इलेक्ट्रॉनिक यंत्रों के प्रयोग से यह कार्य बहुत आसान हो गया है। अब चलते-फिरते समाचार भेजे और प्राप्त किए जा सकते हैं। सेल्यूलर फोन, पेजर, फैक्स मशीन, 'ई-मेल', आदि अनेक ऐसी सुविधाएँ हैं जिनके द्वारा पलक झपते ही समाचार संकलित किए जा सकते हैं। कंप्यूटर द्वारा सुंदर साज-सज्जा के साथ कम-से-कम समय में समाचारों का संपादन किया जा सकता है। उपग्रहों के माध्यम से दूर-दराज़ के गाँवों में कार्यक्रम पहुँचाए जा सकते हैं। इस पाठ में आगे आप इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों के बारे में पढ़ेंगे और जान सकेंगे कि संचार क्रांति में इन उपकरणों की क्या भूमिका है।

पाठगत प्रश्न 34.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर सही उत्तर के सामने सही (√) का निशान लगाइए:

1. सूचना प्रौद्योगिकी शब्द का प्रयोग किया जाता है–
   (क) अखबार के लिए　　(ख) टेलीविज़न के लिए
   (ग) रेडियो के लिए　　(घ) सभी संचार माध्यमों के लिए

टिप्पणी

2. हमारे देश में लगभग ....रेडियो तथा दूरदर्शन केंद्र हैं।

(क) 500 (ख) 700

(ग) 900 (घ) 800

3. हमारे देश में विभिन्न भारतीय भाषाओं के कुल मिलाकर प्रतिदिन प्रकाशित होने वाले अखबारों की संख्या ....है।

(क) दो हजार (ख) करीब चार हजार (ग) साढ़े सात हजार (घ) डेढ़ हजार

4. जी.टी.वी. एक स्वतंत्र चैनल है, जो कि...............द्वारा चलाया जाता है।

(क) सरकार (ख) निजी कंपनी (ग) गुलशन कुमार (घ) रजत शर्मा

5. निजी कंपनियाँ अपने कार्यक्रम ....प्रसारित करती हैं।

(क) उपग्रह पट्टे पर लेकर (ख) उपग्रह खरीद कर

(ग) उपग्रह उधार लेकर (घ) दूरदर्शन से सीधे

34.2 विविध इलेक्ट्रॉनिक उपकणों की भूमिका तथा महत्त्व

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में विविध इलैक्ट्रॉनिक उपकरण कार्य करते हैं। आइए, इनकी भूमिका तथा इसके महत्त्व के बारे में विस्तार से चर्चा करते हैं:

1. उपग्रह

उपग्रह एक प्रकार का धुरी यंत्र है, जिसके माध्यम से अत्याधुनिक इलेक्ट्रॉनिक संचार उपकरणों को संचालित किया जाता है। इसके माध्यम से एक संचार उपकरण द्वारा भेजे गए संदेश को दूसरे संचार उपकरण पर लिखित, वाचिक अथवा चित्रात्मक रूप से प्राप्त किया जाता है। सेल्यूलर फोन, टेलीफोन, फैक्स, इंटरनेट तथा रेडियो और दूरदर्शन पर अनेक प्रसारित कार्यक्रम भी उपग्रह के माध्यम से ही संचालित होते हैं।

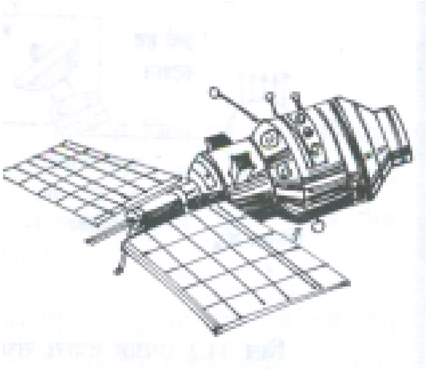

34.1 उपग्रह

उपग्रह का प्रयोग सबसे पहले अमेरिका में किया गया। वहाँ के वैज्ञानिकों ने सोचा कि क्यों न कोई ऐसा उपग्रह बनाया जाए जो धरती से भेजी गई रेडियो तरंगों को ग्रहण करे और उस संदेश को दूसरी रेडियो तरंग पर पुनः पृथ्वी तक भेज सके। इसलिए उन्होंने 1960 में इसी प्रकार का 'कूरियर' नामक उपग्रह अंतरिक्ष में छोड़ा। उसमें चार रेडियो रिसीवर तथा चार ट्रांसमीटर लगे थे। उसमें पाँच टेपरिकार्डर भी थे। टेपरिकार्डर उन रिसीवरों के ज़रिए पृथ्वी से भेजे गए संदेश रिकार्ड करता और फिर कुछ देर बाद उस संदेश को ट्रांसमीटर के माध्यम से प्रसारित कर देता। वैज्ञानिकों का यह प्रयोग सफल रहा।

बाद में अनुसंधानों से पता चला कि यदि उपग्रहों को पृथ्वी की कक्षा में 35,700 किलोमीटर की ऊँचाई पर स्थापित कर दिया जाए तो इनकी भी गति पृथ्वी की गति के बराबर हो जाती है, पृथ्वी की परिक्रमा में इन्हें 24 (चौबीस) घंटे लगते हैं। इस प्रकार ये उपग्रह स्थिर-से लगते हैं। इसलिए यह ऊँचाई उपग्रहों के लिए उपयुक्त मानी गई।

सिंकाम-1 के नाम से बाद में अमेरिका ने दो उपग्रह छोड़े। 1964 में ओलंपिक खेलों का पहली बार उपग्रह के माध्यम से प्रसारण किया गया।

इसके बाद पूरी दुनिया में संचार के क्षेत्र में क्रांति-सी आ गई। लगभग हर देश इस उपग्रह प्रणाली का प्रयोग करने के लिए लालायित हो उठा। जल्दी ही अमेरिका में इस उपग्रह प्रणाली को संचालित करने के लिए **इंटेल सेट** नामक संस्था का गठन हो गया। अब तक कुल 100 से ऊपर देश इस संस्था के सदस्य हैं।

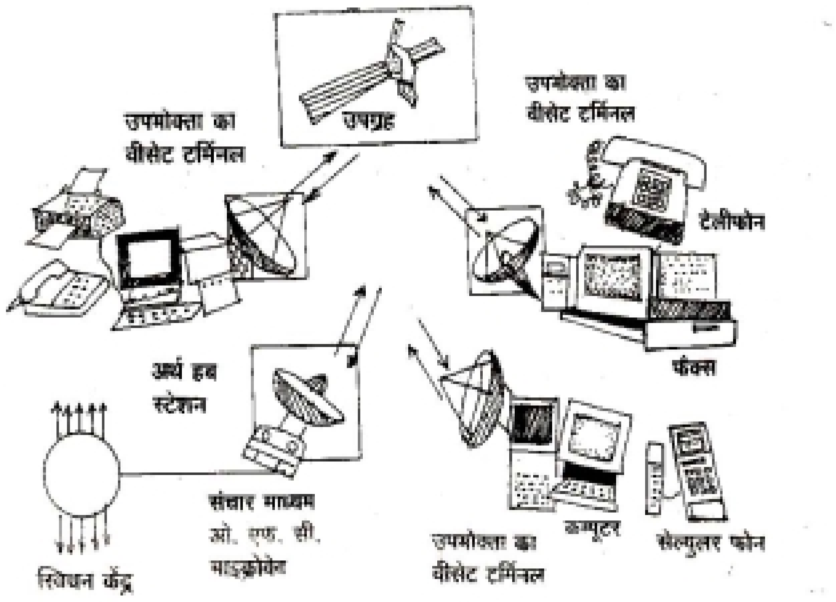

चित्र 34.2 उपग्रह द्वारा संचालित विभिन्न उपकरणों की कार्यप्रणाली

कोमसेट नामक एक दूसरा संगठन है जो अमेरिका द्वारा संचालित किया जाता है। कोमसेट इंटेलसेट के सभी संचार उपग्रहों को संचालित करता है, नियंत्रित करता है। नासा की मदद से उपग्रहों को पृथ्वी की कक्षा में यही स्थापित करता है। भारत भी इंटेलसेट का सदस्य है। वह अपने आप **पी.एस.एल.वी.-3** नामक संचार उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा में स्थापित कर चुका है। इस प्रकार भारत को अमेरिका के ऊपर उपग्रहों के नियंत्रण के लिए निर्भर रहने की आवश्यकता नहीं रह गई है।

संचार उपग्रहों तक संदेश भेजने तथा ग्रहण करने का कार्य उपग्रह भू-केंद्रों के माध्यम से किया जाता है। इन भू-केंद्रों पर बड़े-बड़े एंटीना लगे होते हैं। आपने भी केबल टी.वी. का **एंटीना** देखा होगा। यह भी ठीक उसी प्रकार का एंटीना होता है। यह एंटीना उपग्रहों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। इसी के माध्यम से संदेश भेजे तथा ग्रहण किए

जाते हैं। ये एंटीना कटोरे के आकार के होते हैं तथा इसकी परत चमकीली होती है। इसके ठीक बीचों-बीच एक खोखला पाइप लगा होता है जिसे वेव गाइड कहते हैं। यही **वेव गाइड** संदेशों को भेजते हैं तथा ग्रहण कर केबल तक पहुँचाने का कार्य करते हैं। इसके माध्यम से तरंगों को उपग्रह तक भेजा जाता है तथा वहाँ से आई तरंगों को एंटीना की सतह पर ग्रहण कर वेव गाइड तक पुनः पहुँचाया जाता है।

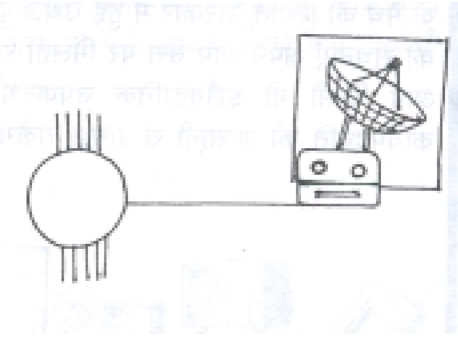

34.3 एंटीना

उपग्रहों से पूर्व संचार प्रणाली भूमिगत केबल के माध्यम से संचालित होती थी। इससे समुद्र पर अथवा चलते-फिरते संदेश भेजने में काफी समय लग जाता था। किंतु अब तो किसी भी स्थान से कहीं भी संदेश भेजे जा सकते हैं। ये संदेश उपग्रहों के माध्यम से विभिन्न संचार उपकरणों द्वारा भेजे तथा ग्रहण किए जाते हैं। अब उपग्रहों के माध्यम से एक साथ कई शहरों में अखबार छप जाते हैं। किसी भी अखबार के मुख्य कार्यालय में उसकी कॉपी तैयार की जाती है और फिर वही बाकी शहरों में भी एक साथ छाप दी जाती है। 'दि हिंदू', 'अमर उजाला', 'दैनिक जागरण' आदि कई ऐसे अखबार इस विधि का प्रयोग करने लगे हैं।

इन उपकरणों के बारे में विस्तार से आप आगे पढ़ेंगे।

2. पेजर

यह माचिस की डिब्बी के आकार का एक उपकरण होता है जिस पर संदेश लिखित रूप में प्राप्त किए जाते हैं। इस उपकरण के द्वारा संदेश भेजे नहीं जा सकते। कुछ साल पहले, जब मोबाइल फोन का बहुत प्रचलन नहीं था, पेजर एक उपयोगी यंत्र होता था, पर अब इसका उपयोग प्रायः नहीं दिखाई देता।

टेलीफोन नंबर की तरह ही हर पेजर का एक नंबर होता है इसके नंबर को टेलीफोन द्वारा डायल करने पर संबंध स्थापित किया जाता है। इसकी संकेत ध्वनि उस पेजर से संबंधित स्टेशन पर होती है। फिर वहाँ पर बैठा व्यक्ति आपका संदेश सुनता है और फिर उस डायल किए गए पेजर तक लिखित रूप में पहुँचा देता है। इस प्रकार यह ध्वनि संदेश को लिखित रूप में प्राप्त करने का उपकरण होता है।

इस उपकरण से निर्धारित ध्वनि क्षेत्र के भीतर कहीं भी किसी भी समय चलते-फिरते संदेश प्राप्त किए जा सकते हैं। चूँकि यह उपकरण बहुत छोटा होता है इसलिए इसे आप जेब में आसानी से रखकर चल-फिर सकते हैं।

इस उपकरण के द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत सुविधा हो गई है। किसी भी पत्रकार के पास किसी भी घटना-दुर्घटना अथवा अन्य कार्यक्रमों की सूचना इसके माध्यम से तुरंत दे दी जाती है। लगभग सभी पेजर स्टेशन एक प्रकार से खबरें देने का कार्य करते हैं। इन स्टेशनों पर मुख्य समाचार आते हैं। जैसे ही किसी विशेष समाचार का पता

चलता है उस स्टेशन से सभी पेजर उपरणों तक उसे पहुँचा दिया जाता है। जैसे क्रिकेट के मैच की स्थिति, सरकार में हुई उथल-पुथल या किसी विशिष्ट व्यक्ति की मृत्यु आदि की सूचनाएँ अपने आप उस पर मिलती रहती हैं। निम्नलिखित रेखाचित्र के माध्यम से आप किसी भी इलैक्ट्रानिक उपकरण-पेजर, सेल्युलर फोन, फैक्स आदि की कार्यपद्धति को आसानी से समझ सकेंगे।

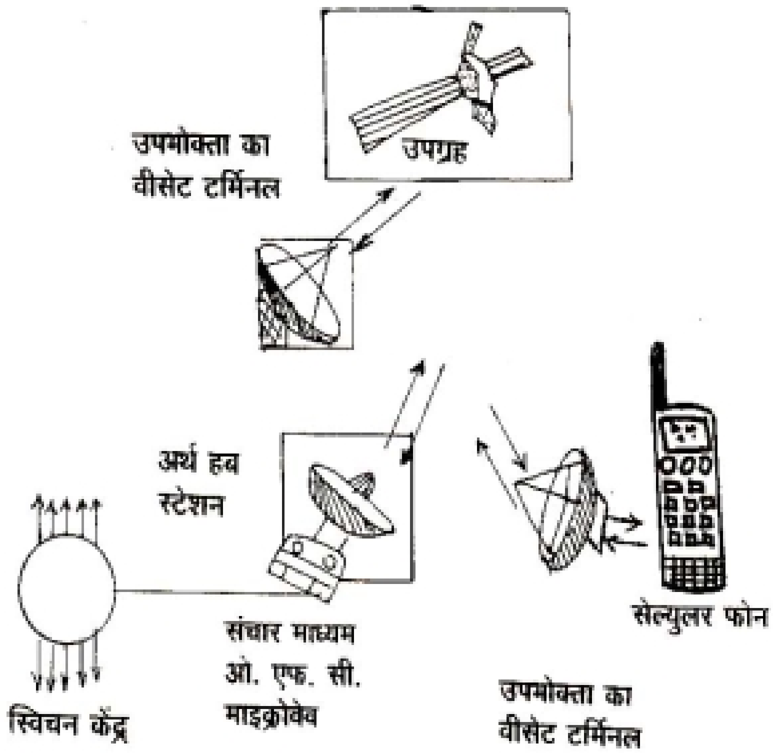

चित्र 34.4 : उपग्रह द्वारा संचालित सेल्युलर फोन की कार्यप्रणाली

3. सेल्यूलर फोन

आपने अक्सर पुलिस वालों को हाथ में एक यंत्र लेकर बात करते हुए देखा होगा। इस यंत्र को आप लोग वायरलेस के नाम से जानते हैं। वायरलेस का अर्थ होता है तारविहीन अर्थात् इस पर बात करने के लिए टेलीफोन की तरह तार की आवश्यकता नहीं होती।

सेल्युलर फोन भी एक प्रकार का वायरलेस ही है। किंतु इसका संचालन उपग्रह के माध्यम से होता है। यह पेजर से थोड़ा बड़ा किंतु किसी भी पेंसिल बॉक्स से छोटा उपकरण होता है। दिन-पर-दिन इनका आकार भी छोटा होता जा रहा है। अब तो आप आते-जाते हर किसी के हाथ में ये फोन देखते हैं, जी हाँ। यही मोबाइल फोन है। मोबाइल इन्हें इसीलिए कहा जाता है क्योंकि इन्हें कहीं भी लेकर जाया जा सकता है। अब तो ये एक मित्र की तरह काम करते हैं, सोते-जागते-उठते-बैठते बस मोबाइल हर किसी को चाहिए।

घरेलू टेलीफोन के साथ परेशानी यह है कि आप उसे घर में ही रख सकते हैं। यदि आप घर से बाहर हैं तो उस पर आए संदेश को प्राप्त नहीं कर सकते अथवा उससे संदेश नहीं भेज सकते। किंतु सेल्युलर फोन द्वारा चलते-चलते कहीं भी संदेश प्राप्त कर सकते हैं। सेल्युलर फोन पर फोन की तरह ही नंबर डायल करके बात करते हैं तथा कहीं से आए फोन प्राप्त कर सकते हैं।

सेल्युलर फोन की कार्य प्रणाली भी उपग्रह के माध्यम से ही होती है। किंतु इस पर बीच में स्थित किसी स्टेशन पर बैठे किसी व्यक्ति के माध्यम से संदेश देने की ज़रूरत नहीं पड़ती। इसमें नंबर डायल करते ही उपग्रह के माध्यम से संबंधित स्टेशन पर स्थित कंप्यूटरीकृत चैनल के माध्यम से सीधा दूसरे टेलीफोन, अथवा सेल्युलर फोन पर उपलब्ध व्यक्ति को संदेश दे सकते हैं, बातचीत कर सकते हैं।

34.5 सेल्युलर फोन

पत्रकारिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सूचनाएँ संकलित करने अथवा भेजने में सेल्युलर फोन से बहुत सुविधा हो गई है। चलते-चलते किसी भी स्थिति में इससे सूचनाएँ भेजी अथवा प्राप्त की जा सकती हैं। कोई भी पत्रकार किसी भी जगह से तुरंत अपने कार्यालय को सूचना भेज देता है। गुड़गाँव के दूर किसी गाँव में खेतों के बीच हुई हवाई जहाज दुर्घटना की रिपोर्ट देने के लिए अब किसी शहर अथवा कस्बे के पब्लिक बूथ तक आकर फोन करने की किसी पत्रकार को जरूरत नहीं है। वह वहीं से सेल्युलर फोन के माध्यम से आसानी से अपनी रिपोर्ट भेज देता है। इस प्रकार इसके द्वारा आसानी से तथा तुरंत खबरें प्राप्त हो जाती हैं। पहले दिए गए रेखाचित्र के माध्यम से सेल्युलर की कार्यप्रणाली को आप आसानी से समझ सकेंगे। सेल्लुयर फोनों में अब बातचीत को टेप करने, फोटो खींचने और इंटरनेट सुविधा का इस्तेमाल करने की भी व्यवस्था होती है। इस तरह अब यह फोन केवल बातचीत करने का माध्यम भर नहीं बल्कि जिन फोनों में मल्टी मीडिया सिस्टम यानी एम.एम.एस. की व्यवस्था है उनसे फोटो खींच सकते हैं छोटी फिल्म बना सकते हैं, खबरें लिख सकते हैं, खबरें प्राप्त कर सकते हैं, चिट्ठी लिख और भेज सकते हैं। इस तरह यह आज संचार के युग में बहुत उपयोगी उपकरण साबित हो रहा है।

4. फ़ैक्स

यह किसी लिखित संदेश को लिखित रूप में ही प्राप्त करने का अनूठा उपकरण है। यह टेलीफोन के साथ ही आसानी से जोड़ दिया जाने वाला उपकरण है। फोन नंबर की तरह ही इसका भी एक कोड होता है। यह एक प्रकार की मशीन होती है जो घरेलू फोन के साथ आसानी से जोड़ दी जाती है।

आपने फोटो कॉपी करने वाली मशीन देखी होगी। जिस तरह किसी भी लिखे हुए कागज की फोटो कॉपी होकर आपको मिल जाती है उसी प्रकार फ़ैक्स मशीन भी दूर कहीं से भेजे गए लिखे हुए कागज की फोटोकॉपी निकाल देती है।

टिप्पणी

फैक्स द्वारा चित्रों को भी मिनटों में अमेरिका अथवा किसी भी दूर के स्थान से प्राप्त किया जा सकता है।

इसमें भी फोन का नंबर डायल करने पर ध्वनि संकेत प्राप्त होते हैं तथा दूसरी तरफ डाले गए लिखित कागज की फोटोकॉपी निकलनी शुरू हो जाती है।

यह टेलीफोन से थोड़ा बड़ा उपकरण होता है। इसके द्वारा पत्रकारिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत सुविधा होती है। कोई भी पत्रकार पहले अपनी रिपोर्ट दूर किसी गाँव से या शहर से डाक द्वारा भेजता था। उस खबर को दिल्ली के किसी समाचार कार्यालय में पहुँचते-पहुँचते कई दिन लग जाते थे। किंतु अब लगभग हर कस्बे में दर्जनों व्यावसायिक फ़ैक्स मशीनें लग गई हैं। कोई भी पत्रकार अपने नज़दीकी कस्बे से अपनी लिखी हुई रिपोर्ट फ़ैक्स द्वारा तुरंत भेज देता है। इस प्रकार पल-भर में वह रिपोर्ट समाचार पत्र तक सीधी पहुँच जाती है। इसके अलावा विभिन्न विभागों, मंत्रालयों पर नागरिक संगठनों द्वारा भेजी गई विज्ञप्तियाँ भी फैक्स के ज़रिए आसानी से समाचार कार्यालय तक पहुँच जाती हैं।

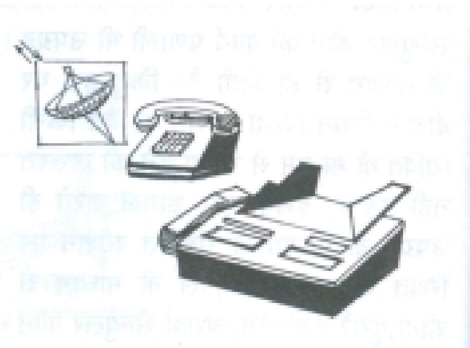

34.6 फ़ैक्स मशीन

5. टेलीप्रिंटर

यह फ़ैक्स की तरह का ही एक उपकरण है, जिस पर समाचार लिखित रूप में प्राप्त किए जाते हैं इसके द्वारा कोई संदेश भेजा जा सकता है। पत्रकारिता की दुनिया में इस उपकरण का प्रयोग फ़ैक्स के आविष्कार से बहुत पहले से हो रहा है। इस उपकरण के बारे में आप जानते होंगे।

इस उपकरण का इस्तेमाल उपग्रह के द्वारा न हो कर सीधी केबल लाइनों द्वारा होता है। इस माध्यम का उपयोग समाचार एजेंसियाँ करती हैं। **यू.एन.आई., पी.टी.आई, भाषा, यूनीवार्ता** आदि समाचार एजेंसियाँ भारत-भर में समाचार पत्रों को अपने समाचार इस माध्यम द्वारा उपलब्ध करवाती हैं। इस माध्यम का उपयोग हर कोई नहीं कर पाता है। इसलिए यह माध्यम एकतरफा संदेश देने वाली प्रणाली होने के कारण फ़ैक्स जितना उपयोगी नहीं है।

यह उपकरण फ़ैक्स मशीन की तरह लिखित संवादों की फोटो कॉपी नहीं देता बल्कि टाइप करके देता है।

6. कंप्यूटर

आज के युग में कंप्यूटर का आविष्कार एक वरदान साबित हुआ है। कंप्यूटर दुनिया के जटिल से जटिल और श्रमसाध्य कार्यों को चुटकी बजाते ही हल कर देता है। कंप्यूटर एक बहु-उद्देशीय यंत्र है। इसका उपयोग किसी भी क्षेत्र में किया जा सकता है। कंप्यूटर भविष्यवाणी तक कर सकता है, चित्र बना सकता है, छपाई कर सकता है, गणित के सवाल हल कर सकता है, मनोरंजन करा सकता है, वैज्ञानिक अनुसंधानों में सहायता कर सकता है, फसलों में होने वाली बीमारी पहचान सकता है, आदमी के शरीर

का विश्लेषण और अध्ययन कर सकता है, दुनिया की किसी भी जानकारी को पकड़ सकता है। कंप्यूटर सूचनाओं को मानव-मस्तिष्क से अधिक तीव्र गति से विश्लेषित कर सकता है।

आइए, अब हम यहाँ संचार के क्षेत्र में कंप्यूटर की उपयोगिता की बात करते हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और संचार के क्षेत्र में आई क्रांति का वास्तविक कारण कंप्यूटर को माना जा सकता है। कंप्यूटर एक ऐसा इलेक्ट्रॉनिक उपकरण है, जिसमें सूचनाओं को चुंबकीय टेप पर भरा जाता है। इसमें चिप पर कार्यक्रम तैयार किए जाते हैं। चिप आदमी के नाखूनों के बराबर होते हैं। इस पर पैकेज तैयार होते हैं, जिसके माध्यम से कंप्यूटर कार्य करता है।

कंप्यूटर में टेलीविज़न की तरह का ही एक स्क्रीन होता है, उससे जुड़ा एक हार्डवेयर होता है और उसी से जुड़ा टाइपराइटर की तरह ही अंकित अक्षरों वाला एक उपकरण होता है जिसे 'की बोर्ड' कहते हैं। कंप्यूटर में 'मेमोरी' अर्थात् स्मृति की व्यवस्था होती है। कंप्यूटर की मेमोरी में सूचनाओं को सुरक्षित रखा जाता है। इससे एक प्रिंटर भी जुड़ा होता है, जिसके द्वारा सूचनाएँ मुद्रित की जाती हैं।

किसी भी सूचना को 'की बोर्ड' के माध्यम से स्क्रीन पर देखकर अंकित किया जाता है तथा हार्डवेयर द्वारा फ्लॉपी पर उसे सुरक्षित किया जाता है। फ्लॉपी पोस्टकार्ड से भी छोटी एक वस्तु है जिस पर सूचनाएँ अंकित हो जाती हैं। जिस तरह टेपरिकार्डर में कैसेट पर आवाज़ टेप हो जाती है उसी तरह फ्लॉपी में सूचनाएँ टेप हो जाती हैं। उस फ्लॉपी में अंकित सूचनाओं को कभी भी विश्लेषित किया जा सकता है। अब तो एक उँगली के बराबर छोटी-सी पेन ड्राइव द्वारा भी डाटा संरक्षित किया जा सकता है एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर पर ले जाया जा सकता है अथवा एक गोदी कंप्यूटर (लैपटॉप) को इधर-उधर ले जाया जा सकता है। कंप्यूटर से जुड़े प्रिंटर के द्वारा स्क्रीन पर दिखने वाली किसी भी सामग्री को प्रिंट किया जा सकता है।

6.1 प्रिंट मीडिया में कंप्यूटर का उपयोग

पहले समाचारों की कंपोजिंग लेटर कंपोजिंग के द्वारा की जाती थी। किंतु कंप्यूटर के आ जाने से कंपोजिंग कंप्यूटर द्वारा होने लगी। अब सुंदर से सुंदर अक्षरों को कंप्यूटर से टाइप करके उसका नेगेटिव तैयार कर लिया जाता है तथा उसे सीधे कागज पर छाप लिया जाता है। किंतु अब तो और भी आसान पद्धति विकसित हो गई है। कंप्यूटर टाइपिंग-कंपोजिंग के अलावा पेस्टिंग भी करने लगा है। पहले कंपोज किए हुए मैटर को काट-काट कर अखबार के आकार के कागजों पर सजाकर चित्रों के साथ चिपकाया जाता था फिर उसका नेगेटिव बनाया जाता था, फिर उसकी छपाई होती थी। इस कार्य में समय अधिक लगता था। अब समाचारों के ढेर में से बहुत आसानी से कंप्यूटर के माध्यम से समाचारों की छँटनी कर ली जाती है।

चित्रों को कंप्यूटर द्वारा जुड़े स्कैनर के माध्यम से उसकी मेमोरी में डाल दिया जाता है। समाचारों को कंपोज कर लिया जाता है तथा उसकी स्क्रीन पर अखबार के नाप के आकार से व्यवस्थित कर लिया जाता है। ज़रूरत के हिसाब से चित्रों को भी

व्यवस्थित कर लिया जाता है। इस प्रकार समाचारों के कटिंग और पेस्टिंग के झंझट से मुक्ति मिल जाती है। फिर उसको पेज के हिसाब से सीधा कैमरे में प्रेषित कर दिया जाता है और तुरंत-फुरत उसका नेगेटिव बनकर तैयार हो जाता है। घंटे-भर में अखबार की लाखों कॉपियाँ छपकर, तह होकर लोगों तक पहुँचाए जाने के लिए तैयार हो जाती हैं।

पहले संवाददाता समाचार भेज देते थे, उपसंपादक तथा संपादकीय विभाग मिलकर उसको संपादित करते थे और फिर उसे कंपोज किया जाता था। उसके बाद उसकी प्रूफ़रीडिंग की जाती थी। इस प्रकार उसमें भी बहुत समय लग जाता था। किंतु अब तो कंपोजीटर और प्रूफ़रीडर की ज़रूरत ही नहीं है। खबरें सीधे कंपोज होती हैं और उनमें यदि कोई प्रूफ की गलती होती है तो कंप्यूटर अपने आप पकड़ लेता है और संकेत देने लगता है। इस प्रकार उसे आसानी से सुधार लिया जाता है। इस आसानी के चलते अब दिनभर में अखबारों के कई-कई संस्करण, जैसे दोपहर, शाम या किन्हीं विशेष परिस्थितियों में प्रति घंटे संस्करण भी छापे और वितरित किए जाते हैं।

6.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कंप्यूटर का योगदान

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी प्रिंट मीडिया की तरह ही समाचार संकलन के बाद उसके संपादन में कई प्रकार की कठिनाइयाँ आती थीं। फोटोग्राफर किसी घटना के चित्रों की एक पूरी श्रृंखला लाते हैं। उसमें से मुख्य अंश संपादित करके दर्शकों के सामने प्रस्तुत कर दिया जाता है। इन चित्रों को संपादित करना कठिन कार्य होता है। यदि समाचार प्रसारित किए जाने से एक घंटा पूर्व कोई नया समाचार चित्रों के साथ प्राप्त होता है और उसे दिखाया जाना बहुत आवश्यक होता है उस स्थिति में चित्रों का संपादन बहुत चुनौती भरा होता है। पहले चित्रों का संपादन बहुत कठिनाई से होता था। कंप्यूटर के आने से इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के लिए जो सबसे बड़ी सहूलियत हुई है वह है चित्रों का संपादन।

34.7: प्रिंटर के साथ कंप्यूटर

अब टी.वी. पर हर पल समाचार प्रसारित करने की योजना बन गई है। कई चैनलों ने अपना 24 घंटे का समाचार चैनल शुरू कर दिया है। ऐसे में जल्दी से जल्दी नए से नए और बेहतरीन साज-सज्जा के साथ समाचारों को प्रस्तुत करने की एक प्रतियोगिता शुरू हो गई है।

कंप्यूटर के माध्यम से बहुत आसानी से सुंदर से सुंदर ढंग से फिल्म एडिटिंग तथा डबिंग कर ली जाती है। कंप्यूटर के माध्यम से एडिटिंग तथा डबिंग के अलावा फोटोग्राफी में भी बहुत तरह की तरकीबें अपनाई जाती हैं।

अब मुंबई में बैठे किसी व्यक्ति से दिल्ली में बैठे-बैठे बातचीत की जा सकती है तथा उन दोनों व्यक्तियों के चित्र भी साथ-साथ दिखाए जा सकते हैं। देखने वाले को लगेगा ही नहीं कि दोनों व्यक्ति दो अलग-अलग शहरों में बैठे हैं। 1996 चुनावों में पहली बार इस विधि द्वारा विभिन्न शहरों से विशिष्ट व्यक्तियों के विचार जानने का सफल प्रयास किया गया था। आज इसका भरपूर उपयोग हो रहा है।

कंप्यूटर द्वारा 'वीडियो डिस्प्ले इकाइयाँ' नियंत्रित की जाती हैं, जिसकी सहायता से समाचारों का वर्गीकरण, संपादन तथा वितरण आसान हो गया है। प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया के दिल्ली कार्यालय में ऐसी इकाइयाँ कार्य कर रही हैं। नई दिल्ली में ही इलेक्ट्रॉनिक आयोग के तत्वावधान में राष्ट्रीय सूचना केंद्र स्थापित किया गया है। इस केंद्र में सुपर कंप्यूटर साइबर 630 लगाया जाता है। इसके माध्यम से सूचना के त्वरित प्रेषण में सुगमता आई है।

अब कंप्यूटर आकार में इतने छोटे और वज़न में इतने हल्के बनने लगे हैं कि इन्हें पुस्तक की तरह बैग में लेकर कहीं भी ले जाया जा सकता है और चलते-फिरते कहीं भी इस पर काम किया जा सकता है। इससे यह सुविधा हो गई है कि कोई भी पत्रकार दुनिया के किसी भी कोने में समाचार संकलित कर, उसे संपादित कर पूरी तरह तैयार रूप में समाचार कार्यालय तक भेज सकता है, चाहे वह अखबार का माध्यम हो या टेलीविज़न का। इस पर श्रवण कार्यक्रमों और फिल्मों का संपादन भी आसानी से किया जा सकता है।

बच्चों को दिखाई जाने वाली कार्टून फिल्मों अथवा धारावाहिकों की फोटोग्राफी तथा डबिंग अब कंप्यूटर के माध्यम से आकर्षक और आसान ढंग से कर ली जाती है। 'जंगल बुक', 'कहानी पोटली बाबा की', 'बगदाद का सौदागर' आदि धारावाहिकों की फोटोग्राफी कंप्यूटर की ही सहायता से की गई थी। वीडियो पत्रकारिता में भी कंप्यूटर का अपना विशिष्ट योगदान है।

इस प्रकार आपने यह बात अवश्य महसूस की होगी कि पहले समाचारपत्रों अथवा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में समाचारों के पीछे लोगों की चेतना को परिष्कृत करने का उद्देश्य था। किंतु बाद में सरकार द्वारा निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों को संचार के क्षेत्र में प्रोत्साहित किए जाने के कारण समाचार प्रतिस्पर्धात्मक रूप ग्रहण करते चले गए। आज संचार माध्यमों की पारस्परिक प्रतिस्पर्धा में कंप्यूटर वरदान सिद्ध हुआ है।

6.3 ओ.बी.वैन

यह टेलीविजन अथवा रेडियो पर समाचारों के प्रसारण में काम आने वाला एक प्रकार का चलता-फिरता प्रसारण केंद्र होता है। इसलिए इसे ओ.बी. वैन यानी आउटडोर ब्राडकास्टिंग वैन कहते हैं। इसके लिए एक गाड़ी में एक डिश एंटीना लगाया जाता है जिसे कंप्यूटर और कैमरे से जोड़ दिया जाता है। किसी भी स्थान से तस्वीरें लेकर या आवाज रिकॉर्ड कर इस एंटीना के ज़रिए सीधा समाचार कार्यालय तक भेजा जा सकता है। आपने देखा होगा कि कई बार टेलीविज़न पर संवाददाता दूर किसी स्थान से किसी घटना का सीधा प्रसारण कर देता है। यह ओ.बी. वैन के ज़रिए संभव हो जाता है।

यह भी उपग्रह प्रणाली के ज़रिए काम करता है। इस व्यवस्था के उपलब्ध हो जाने से अब किसी भी समाचार का सीधा प्रसारण संभव हो सकता है।

6.4 इंटरनेट

इंटरनेट एक प्रकार का कंप्यूटर नेटवर्क है। इसे एक प्रकार की लाइब्रेरी भी कह सकते हैं। इंटरनेट के माध्यम से विश्वभर की, लगभग हर क्षेत्र की, जानकारी प्राप्त की जा सकती है। इसके माध्यम से कोई भी चिट्ठी मिनटों में विश्व के किसी भी कोने में भेजी जा सकती है। किसी फाइल को एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस में पहुँचाने के लिए अब किसी आदमी को यात्रा नहीं करनी पड़ती। इंटरनेट के माध्यम से कोई भी फाइल कहीं भी मिनटों में भेजी जा सकती है।

जिस प्रकार उपग्रहों के माध्यम से टेलीफोन एक-दूसरे के साथ जोड़ दिए गए हैं। किसी भी देश से दूसरे देश में बातचीत आसानी से की जा सकती है। ठीक उसी तरह उपग्रह के माध्यम से एक कंप्यूटर को कई कंप्यूटरों के साथ जोड़ दिया जाता है।

इंटरनेट के माध्यम से दुनिया भर में हुए किसी भी शोध अथवा विचार-विमर्श को कंप्यूटर की स्क्रीन पर आसानी से पढ़ सकते हैं अथवा अपनी फ्लॉपी अथवा पेन ड्राइव में उतार सकते हैं। इसके लिए भी जिस प्रकार आप किसी लाइब्रेरी में जाकर कैटलॉग देखते हैं, फिर अपने विषय की किताबें अथवा कैसेट इकट्ठा करते हैं, फिर उसमें विषय सूची पढ़ते हैं और अपने विषय पर सामग्री जुटाते हैं, उसी प्रकार कंप्यूटर में दी हुई सूची को क्रमशः पढ़ते हुए आसानी से अपने विषय के लेख, शोध-पत्र अथवा चित्र प्राप्त कर सकते हैं।

इंटरनेट के माध्यम से जानकारियों के अलावा मनोरंजन भी कर सकते हैं। इसके माध्यम से अपने विचार अथवा शोध को फीड कर सकते हैं जिसका लाभ दूसरों को मिल सके। अब तो इंटरनेट के माध्यम से चुनाव प्रचार भी किया जाने लगा है।

इंटरनेट के आ जाने से पत्रकारिता के क्षेत्र में बहुत आसानी हो गई है। अब अखबार के छपते ही उसे इंटरनेट में फीड कर सकते हैं। इस प्रकार यह अखबार पूरी दुनिया में पलक झपकते ही फैल जाता है। उसे कंप्यूटर के स्क्रीन पर पढ़ा जा सकता है। अब हमारे देश में छपने वाले सभी महत्त्वपूर्ण अखबारों को इंटरनेट के माध्यम से पढ़ा जा सकता है। अमेरिका अथवा दूसरे विकसित देशों में छपने वाले महत्त्वपूर्ण अखबारों को छपने के कुछ ही पल बाद आप भी उसे अपने घर में पढ़ सकते हैं।

6.5 ई-मेल

इंटरनेट के द्वारा ही संचालित होने वाली एक महत्त्वपूर्ण व्यवस्था है–'ई-मेल' अर्थात् 'इलेक्ट्रॉनिक मेल'। इस माध्यम से किसी भी चिट्ठी अथवा संदेश/संवाद को विद्युतगति से दुनिया के किसी भी कोने में पहुँचाया जा सकता है। टेलीफोन की तरह ही इंटरनेट से जुड़ा एक कंप्यूटर का नंबर डायल करके अपना संवाद उस तक तुरंत भेजा जा सकता है। यह विधि भी फ़ैक्स की तरह ही संवाद भेजने की है किंतु इन दोनों की विधियों में बहुत अंतर है। पहली बात तो यह कि फ़ैक्स विधि से संवाद भेजना मँहगा है। 'ई-मेल' में बड़ा संवाद अथवा पूरी की पूरी फ्लॉपी कुछ ही सेकेंड में दूसरे कंप्यूटर की समृति अथवा फ्लॉपी में उतार दी जाती है। जिस तरह आप अपने घर के बक्से में पड़ी चिट्ठियों को निकाल लेते हैं उसी तरह कंप्यूटर के मेल बॉक्स में से अपनी चिट्ठियाँ प्रिंटर से निकाल सकते हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में ई-मेल के कारण संवाद भेजने में बहुत आसानी हो गई है। ई-मेल

द्वारा भेजे गए संवाद को पुनः कंपोज करने की ज़रूरत नहीं होती। उसे फ्लॉपी में उतार कर सीधे छाप सकते हैं। इस तरह धन और समय दोनों की बचत हो जाती है। इंटरनेट प्रणाली का संचालन भी केबल टी.वी. की ही भाँति एंटीना के माध्यम से उपग्रह द्वारा ही किया जाता है। इसे घरेलू या मोबाइल फोन से कंप्यूटर से जोड़कर भी उपयोग में लाया जा सकता है।

इंटरनेट का प्रसार पूरी दुनिया में बहुत तेजी से हो रहा है। हमारे देश में भी अब कई हजार कंप्यूटर इंटरनेट से जुड़ गए हैं।

6.6 वीडियो पत्रकारिता

जिस प्रकार प्रिंट मीडिया के क्षेत्र में त्रैमासिक, मासिक, पाक्षिक तथा साप्ताहिक कई प्रकार की पत्रिकाओं का प्रचलन है उसी प्रकार इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में भी पत्रिकाओं का प्रचलन आज तेजी से हमारे देश में बढ़ रहा है। पत्रिकाओं की तरह ऑडियो तथा वीडियो कैसेट बाजार में आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। इनसाइट तथा न्यूजट्रैक जैसे अंग्रेजी वीडियो समाचार पत्रिकाओं के सफल प्रदर्शन के बाद 'कालचक्र' नाम की हिंदी वीडियो पत्रिका का जन्म हुआ था।

1988 में 'इंडिया बुक हाउस' ने 'मूवी वीडियो' पत्रिका निकाली थी जिसमें फिल्मी अभिनेता अभिनेत्रियों से गपशप, फिल्मी गाने आदि होते थे। वह पत्रिका खूब चली। किंतु अब तो राजनीति, फिल्म, अध्यात्म आदि विभिन्न विषयों से जुड़ी वीडियो पत्रिकाएँ बाजार में उपलब्ध हैं। टी.सीरीज नामक कैसेट कंपनी ने अध्यात्म से संबंधित कई वीडियो पत्रिकाओं को बाजार में फैला दिया है। वीडियो पत्रकारिता ने ऑडियो कैसेटों की पहले से ही बच्चों के लिए किस्से-कहानी, राइम्स तथा चुटकुलों के ऑडियो कैसेटों की बाजार में भरमार है।

इस प्रकार हम देख रहे हैं कि जैसे-जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया अपना प्रसार कर रही है वीडियो पत्रकारिता का प्रचलन दिनों-दिन बहुत तेजी से हमारे देश में बढ़ता जा रहा है।

6.7 कंपैक्ट डिस्क (सी.डी.)

जिस प्रकार कैसेट अथवा फ्लॉपी के टेप पर कोई भी गीत-संगीत-संवाद संकलित किया जाता है उसी प्रकार कंपैक्ट डिस्क पर भी सूचनाओं को संग्रहीत किया जाता है। किंतु कंपैक्ट डिस्क तश्तरी की तरह गोल ऑप्टीकल धातु से बनी होती है। इस पर लेजर किरणों द्वारा संदेश भरे अथवा देखे-सुने जाते हैं। इस पर भरे जाने वाले संदेश देखने अथवा सुनने में बहुत ही स्पष्ट और प्रभावशाली होते हैं।

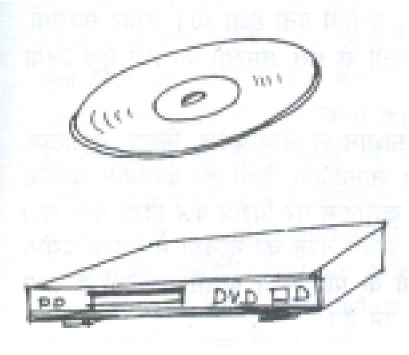

34.8 सी.डी.

अब तो सी.डी. द्वारा बच्चों को घर में पढ़ाने का कार्य होने लगा है। पाठ्यक्रम की पूरी किताब को सी.डी. पर उसकी व्याख्या के साथ भी दिया जाता है और बच्चा अपने कंप्यूटर के माध्यम से उसे पढ़ लेता है। इस प्रकार ये किसी भी शिक्षक से सस्ती ही पड़ती हैं। सी.डी. पर पत्रिकाएँ भी टेप की जाने लगी हैं।

पाठगत प्रश्न 34.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. पहली बार ओलंपिक खेलों का प्रसारण........................में उपग्रह के माध्यम से हुआ था। (1958, 1964, 1975)
2. पृथ्वी की कक्षा में उपग्रहों को स्थापित करने के लिए ....किलोमीटर की ऊँचाई उपयुक्त मानी गई है। (1,900, 37,120, 35,700)
3. संचार उपग्रहों तक संदेश भेजना तथा वहाँ से ग्रहण करने का कार्य .... के माध्यम से किया जाता है। (केबल टी.वी., एंटीना, रेडियो)
4. पेजर में सूचनाएँ........................रूप में प्राप्त होती हैं। (चित्रात्मक, लिखित, ध्वनि)
5. सेल्यूलर फोन का संचालन ....द्वारा होता है। (रेडिया, उपग्रह, टेलीफोन लाइन)
6. फैक्स में संवाद ....पहुँचाया जाता है। (बोलकर, लिखकर, फ्लॉपी द्वारा)
7. कंप्यूटर द्वारा सूचनाओं को ....पर भरा जाता है। (चुंबकीय टेप, कैसेट, उपग्रह)
8. 'वीडियो डिस्क इकाइयाँ'.....................द्वारा नियंत्रित की जाती हैं। (पेजर, सेल्यूलर फोन, कंप्यूटर)
9. इंटरनेट एक प्रकार का ....है। (फोन, कैसेट, कंप्यूटर नेटवर्क)
10. 'ई-मेल' ....द्वारा संचालित होता है। (केबल टी.वी., इंटरनेट, फोन)

34.3 सूचना प्रौद्योगिकी के लाभ

1. शिक्षा का प्रचार-प्रसार

सूचना प्रौद्योगिकी के विकास से शिक्षा के प्रचार-प्रसार में बहुत सहायता मिली है। दूर-दराज़ के गाँवों में, जहाँ शिक्षा का स्तर बहुत नीचे था, वहाँ के लोगों में शिक्षा के प्रति रुचि पैदा करने और उनके भीतर फैली कुरीतियों तथा अंधविश्वासों को दूर करने के लिए शिक्षा का प्रचार-प्रसार सरकार के लिए चुनौती बना हुआ था। संचार माध्यमों, विशेषकर रेडियो तथा दूरदर्शन के द्वारा आसानी से इस समस्या का हल ढूँढ़ लिया गया है।

भारत में पहली बार 1975–76 में उपग्रह के माध्यम से आंध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, तथा राजस्थान के 2,400 गाँवों में सामाजिक शिक्षा का कार्यक्रम चलाया गया था। इसमें कृषि तथा स्वास्थ्य से संबंधित कार्यक्रम पर विशेष बल दिया गया था। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि यह प्रयोग अपने तरह का दुनिया में पहला प्रयोग था। अब तो दिनों-दिन लोगों में इन कार्यक्रमों के प्रति रुचि बढ़ती जा रही है तथा कार्यक्रमों में भी कई कार्यक्रम और जुड़ते जा रहे हैं।

आपको पता ही है कि सरकार ने अब तक लगभग हर गाँव पंचायत में सौर ऊर्जा से

चलने वाले टेलीविज़न सैट मुहैया कराए हैं। इस प्रकार टेलीविज़न के माध्यम से लगभग हर गाँव को मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा के भी कार्यक्रम आसानी से उपलब्ध हो पा रहे हैं। आकाशवाणी द्वारा प्रसारित शिक्षा संबंधी कार्यक्रम तो विद्यालयों की तरह ही निर्धारित पाठ्यक्रमों के आधार पर प्रस्तुत किए जाते हैं।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान के पाठ्यक्रमों संबंधी कार्यक्रम भी टेलीविज़न और रेडियो के माध्यम से नियमित प्रसारित किए जाते हैं।

2. लोगों के बीच बढ़ती मनोरंजन की आवश्यकता की पूर्ति

सामाजिक विकास तथा कल-कारखानों की संख्या में हो रही निरंतर बढ़ोत्तरी के चलते आज आदमी दिन-पर-दिन व्यस्त होता चला जा रहा है। ऐसी स्थिति में हर आदमी की मनोरंजन की आवश्यकता बढ़ी है।

संचार माध्यमों ने आदमी की मनोरंजन की इस बढ़ी हुई आवश्यकता को पूरा किया है। निजी तथा बहुराष्ट्रीय कंपनियों की आपसी होड़ के कारण कार्यक्रमों में विविधता तथा बहुलता आई है। अब साहित्य, संगीत, नाटक, कला, फिल्में, धारावाहिक, खेल, आदि विभिन्न मनोरंजन के क्षेत्र संचार माध्यमों के ज़रिए आदमी के सामने फैले पड़े हैं। विशेषकर दूरदर्शन तथा रेडियो ने जनसाधारण के मनोरंजन की आवश्यकता की पूर्ति की है। साथ ही उसमें मनोरंजन के प्रति रुचि का परिष्कार भी हुआ है। कई लोग दूरदर्शन द्वारा उपलब्ध कराए जाने वाले मनोरंजन की निंदा भी करते हैं तथा मनोरंजन के गिरते हुए स्तर पर चिंता व्यक्त करते हैं। किंतु संक्षेप में यही कहा जा सकता है कि अब हर स्तर तथा रुचि के लोगों के लिए मनोरंजन संचार माध्यमों द्वारा उपलब्ध कराए जाते हैं।

3. लोगों में आई सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता

संचार माध्यमों के निरंतर विकास से लोगों में सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता आई है। अब दुनिया में घटित होने वाले किसी भी सामाजिक-राजनीतिक घटना-दुर्घटना पर जनसाधारण की दृष्टि होती है। लोगों में अपने अधिकारों के प्रति सजगता आई है। विधान मंडल अथवा संसद में होने वाली बैठकों, उसमें होने वाली बहसों तथा उठाए जाने वाले मुद्दों की जानकारी के लिए अब जनसाधारण लालायित रहता है। सामाजिक हितों के प्रति हर नागरिक में जागरूकता आई है। लोग एक-दूसरे के आचार-विचार खान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, भाषा-संस्कृति से परिचित हुए हैं। इस तरह एक प्रकार से भाई-चारे को बढ़ावा भी मिला है।

कुल मिलाकर संक्षेप में यह कह सकते हैं कि संचार माध्यमों ने लोगों के भीतर सामाजिक-राजनीतिक जागरूकता को तेज किया है।

4. समाचारों के प्रति लोगों में बढ़ती रुचि

जिस तरह संचार के क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा का भाव फैला हुआ है और निजी कंपनियाँ बेहतर से बेहतर ढंग से समाचार परोसने की होड़ में लगी हुई हैं उससे समाचारों की भाषा में विविधता भी आई है। व्यंग्यात्मक, मनोरंजनपूर्ण, अंग्रेज़ी मिश्रित, उर्दू मिश्रित आदि कई प्रकार की भाषा शैलियाँ समाचारों तथा सामाजिक समीक्षाओं के लिए प्रयोग में लाई जाने लगी हैं। इससे विशेष दर्शक–श्रोतावर्ग लाभान्वित हो रहे हैं।

जी.टी.वी पर प्रसारित होने वाले समाचार दिल्ली तथा मुंबई जैसे महानगरों में बोली जाने

वाली मिश्रित हिंदी को लक्ष्य बनाकर उसी दर्शक-श्रोता वर्ग तक अपनी पहुँच बनाए रखने की कोशिश करते हैं। 'आज तक' की भाषा में सरलता, सरसता तथा व्यंग्यात्मक पुट होता है, जो कि अधिक से अधिक दर्शक-श्रोता वर्ग तक अपनी पहुँच बना चुका है। 'आज तक' चैनल के समाचारों में लोक रुचि का भी ध्यान रखा जाता है। 'स्टार टी. वी.' तथा बी.बी.सी. के समाचारों की भाषा सूचनापरक होते हुए भी जनसाधारण की समझ में आसानी से आ जाती है। इस प्रकार भाषा की विशिष्टता के द्वारा लोगों का ध्यान आकर्षित करना भी संचार माध्यमों की नीति में शामिल हो गया है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की ही तरह प्रिंट मीडिया भी भाषा का अपना स्वरूप निर्धारित करती है किंतु इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की तरह करिश्मा करने का ख्याल उनके मन में नहीं रहता बल्कि सूचनाओं तथा ख़बरों के नएपन तथा अनूठेपन की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। फिर भी 'जनसत्ता', 'हिंदुस्तान' और 'नवभारत टाइम्स' की भाषा को तथा 'दैनिक जागरण' तथा 'पंजाब केसरी' की भाषा को तुलनात्मक रूप में आसानी से अलग किया जा सकता है।

संचार माध्यामों में अब तेज़ी से विशिष्ट क्षेत्रों की पत्रकारिता जैसे खेल, कृषि, विज्ञान आदि से संबंधित विषयों पर संपूर्ण रूप से केंद्रित तथ्यों को प्रस्तुत किए जाने की भी होड़ लगी हुई है। इ.एस.पी.एन टी.वी. पूरी तरह खेल पत्रकारिता पर आधारित चैनल है। इसी तरह खेल से संबंधित अनेक पत्र-पत्रिकाएँ भी निकलती हैं। शेयर बाज़ार, आर्थिक जगत, वाणिज्य आदि से संबंधित समाचार तो लगभग हर अखबार नियमित रूप से निकालता है।

इस प्रकार यह पता चलता है कि लोगों में समाचारों के प्रति रुचि बढ़ी है। इसलिए लगातार समाचारों के क्षेत्र में विशेष रूप से होड़ लगी हुई है। क्योंकि जब तक समाचारों के प्रति लोगों में रुचि नहीं होगी तब तक होड़ लग ही कैसे सकती है।

पाठगत प्रश्न 34.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प पर सही (√) का निशान लगाइए:

1. पहली बार उपग्रह द्वारा सामाजिक शिक्षा के कार्यक्रम प्रसारित कब किए गए थे?
   (क) 1975–76 (ख) 1981 में (ग) 1983 में (घ) 1992 में
2. उपग्रह द्वारा चलाए गए सामाजिक शिक्षा कार्यक्रम के तहत कितने गाँव लाभान्वित हुए थे?
   (क) 2,200 (ख) 2,400 (ग) 2,600 (घ) 2,800
3. सामाजिक विकास के साथ-साथ लोगों में मनोरंजन की आवश्यकता
   (क) बढ़ी है। (ख) घटी है। (ग) स्थिर है। (घ) शून्य हुई है।
4. संचार क्रांति के कारण लोगों में किस प्रकार की जागरूकता आई है।
   (क) सामाजिक (ख) राजनीतिक (ग) सांस्कृतिक (घ) सामाजिक-राजनीतिक
5. सूचना प्रौद्योगिकी के विकास के चलते लोगों में समाचारों के प्रति रुचि
   (क) घटी है। (ख) बढ़ी है। (ग) स्थिर हुई है। (घ) बढ़ने वाली है।

टिप्पणी

34.4 आपने क्या सीखा

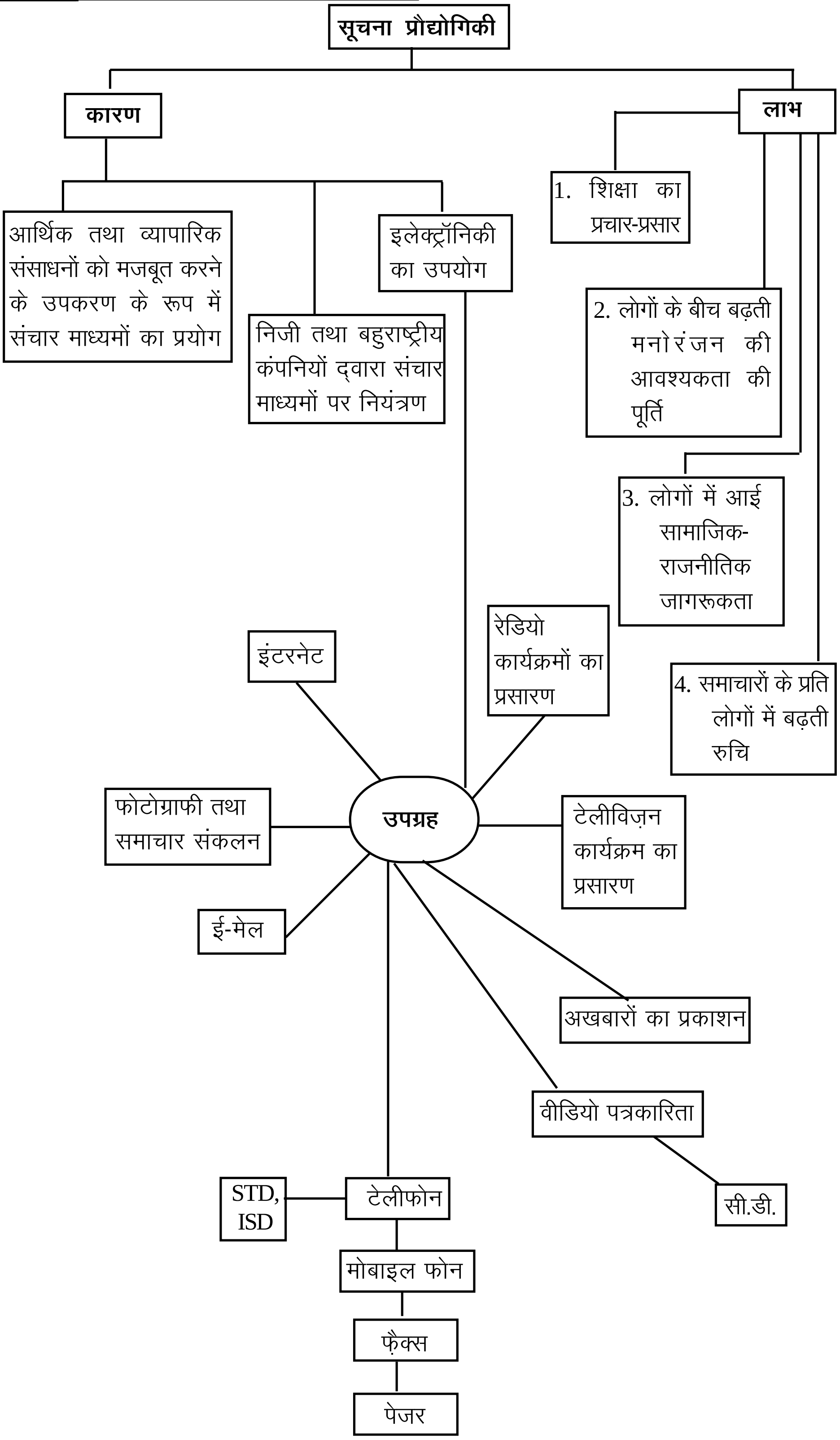

टिप्पणी

34.5 योग्यता विस्तार

- पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित संचार माध्यम और उपग्रहों की कार्यविधि से संबंधित आलेखों को ध्यान से पढ़िए।
- किसी साइबर कैफे में जा कर इंटरनेट तथा ई-मेल संबंधी जानकारी प्राप्त कीजिए और अपना ई-मेल खाता खोलिए।
- निम्नलिखित वेबसाइट खोलकर देखिए:

  www.jagran.com, www.nios.ac.in, www.hindustan.com

34.6 पाठांत प्रश्न

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. संचार क्रांति के मुख्य कारणों की संक्षेप में चर्चा कीजिए।
2. उपग्रह की कार्यपद्धति तथा उसके लाभों का विश्लेषण कीजिए।
3. कंप्यूटर के बारे में आप क्या जानते हैं ? स्पष्ट विवेचन प्रस्तुत कीजिए।
4. 'इंटरनेट' क्या है ? इसकी कार्यप्रणाली को विस्तार से समझाइए।
5. संचार क्रांति के लाभों का विश्लेषण कीजिए।
6. आज का युग संचार क्रांति का युग है। इस कथन की सत्यता को प्रमाणित करते हुए 10 मिनट की अवधि का एक आलेख, टेलिविज़न पर दस्तावेज़ी फिल्म बनाने के लिए तैयार कीजिए।

34.7 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

34.1	1. (घ)	2. (ख)	3. (ख)	4. (ख)	5. (क)
34.2	1. 1964	2. 35,700	3. एंटीना	4. लिखित	5. उपग्रह
	6. लिखकर	7. चुंबकीय टेप	8. कंप्यूटर	9. कंप्यूटर नेटवर्क	
	10. इंटरनेट				
34.3	1. (क)	2. (ख)	3. (क)	4. (घ)	5. (ख)

टिप्पणी

301hi34B

34

वैज्ञानिक दृष्टि और वैज्ञानिक विकास

वैज्ञानिक युग में जीते हुए हम इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। विज्ञान हमारे दैनिक जीवन में रच-बस गया है। विज्ञान ने हमारे रहन-सहन का ढाँचा काफी बदल दिया है। यह सच है कि वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय प्रगति किसी भी समाज की जीवन-शैली और सोच को प्रभावित करती है। परंतु वैज्ञानिक दृष्टि के अभाव में कोई भी समाज सर्वांगीण विकास नहीं कर पाता। जनसामान्य में फैले अंधविश्वास तथा जादू-टोने हमारी सोचने की क्षमता को क्षीण कर देते हैं, जिसका परिणाम यह होता है कि हमारा समाज सारी सुविधाएँ उपलब्ध होने के बावजूद विकास के पथ पर सही गति से आगे नहीं बढ़ पाता। अक्सर हम आस-पास प्रचलित अंधविश्वास और ढोंगी बाबाओं के तथाकथित चमत्कारों और चक्करों से प्रभावित हो जाते हैं और उनमें फँस जाते हैं। यदि हमें जीवन में प्रगति करनी है, तो कदम-कदम पर हमें एक-एक बात को सच्चाई और तर्क की कसौटी पर परखना होगा, अंधविश्वास और ढकोसलेबाजी से बचना होगा, वहमों से छुटकारा पाना होगा। अपने अंदर वैज्ञानिक दृष्टि का विकास करना होगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- विज्ञान क्या है, बता सकेंगे;
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण की पहचान कर सकेंगे;
- विज्ञान, विश्वास और अंधविश्वास में अंतर कर सकेंगे;
- अंधविश्वासों से जुड़ी घटनाओं को वैज्ञानिक सोच के आधार पर परख सकेंगे;
- वैज्ञानिक सोच विकसित करने के महत्त्व की पहचान कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

कागज़ के छोटे-छोटे टुकड़े तोड़कर मेज़ पर बिखेर लीजिए। एक कंघा लीजिए।

अपने सूखे बालों पर कंघी कीजिए और कागज़ के टुकड़ों के पास ले जाइए तब देखिए क्या होता है। इसे बार-बार करके देखिए और ऐसा होने के कारण जानने का प्रयास कीजिए और यहाँ लिखिए। यह भी बताइए कि कागज़ के आकर्षण को कैसे चमत्कार या अंधविश्वास का रूप दिया जा सकता है।

....

....

....

34.1 विज्ञान क्या है

मनुष्य द्वारा एकत्रित ज्ञान को तर्कसंगत तरीके से समझना तथा उसे प्रयोगों द्वारा सिद्ध करना विज्ञान कहलाता है। हमारे दैनिक जीवन में ऐसी घटनाएँ और क्रियाएँ होती हैं, जिनके पीछे कोई-न-कोई वैज्ञानिक कारण छिपा होता है पर हम अक्सर उस पर ध्यान नहीं देते। उदाहरण के लिए, हम सभी मूँग को भिगोते हैं। मूँग के कुछ दाने पानी में डूब जाते हैं तथा कुछ तैरते रहते हैं। हम तैरते हुए मूँग को फेंक देते हैं। वर्षों से यही होता आया है। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसा हम क्यों करते हैं ? हम ऐसा इसलिए करते हैं कि तैरने वाले मूँग प्रायः खराब होते हैं।

सूक्ष्म निरीक्षण और परीक्षण के आधार पर प्राप्त आँकड़ों, सूचनाओं तथा परिणामों का ध्यानपूर्वक मूल्यांकन करने पर वैज्ञानिक किसी एक निर्णय पर पहुँचते हैं। एक ही परिणाम को हम कई बार प्रयोग कर प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि विज्ञान संबंधी क्रियाएँ तर्कसंगत होती हैं, और एक समान परिस्थिति में बार-बार प्रयोग करने पर हमें समान परिणाम देती हैं। प्रयोग नियमों और सिद्धांतों पर आधारित होते हैं।

उदाहरण के लिए, क्रियाकलाप में आपने कंघे को सूखे बालों में रगड़कर घर्षण उत्पन्न कर लिया, जिसके कारण मेज़ पर बिखरे कागज़ के ढेरों टुकड़े कंघे की ओर खिंचे चले आए। आवेश एक चुंबकीय शक्ति है, जो घर्षण द्वारा उत्पन्न होती है, जिसके कारण विरोधी आवेश की वस्तुएँ आवेशित वस्तु की ओर खिंची चली आती हैं। इसी प्रकार की दैनिक जीवन में अनेक क्रियाएँ हमारे आस-पास होती रहती हैं, जिनका प्रयोग हम जाने-अनजाने करते ही रहते हैं।

विज्ञान में **क्यों तथा कैसे** का विशेष स्थान है। विज्ञान में हम किसी भी बात को आँख मूँदकर, बिना सवाल किए या बिना प्रयोग द्वारा परखे नहीं मानते हैं। महत्त्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रगति ऐसे ही लोगों द्वारा संभव है, जिनमें जिज्ञासा होती है और जो 'क्यों'

और 'कैसे' का जवाब ढूँढ़कर प्रकृति के रहस्यों को सुलझाने का प्रयास करते हैं। आपने भाप का इंजन बनाने वाले जेम्स वॉट के बचपन की कहानी अवश्य पढ़ी होगी। वह रसोईघर में केतली में उबलते हुए पानी से निकलने वाली भाप को तथा भाप से उठते ढक्कन को घंटों तक देखता रहा और भाप की शक्ति को पहचान गया जो बार-बार केतली के ढक्कन को ऊपर ढकेल रही थी। बाद में इसी सिद्धांत के आधार पर उसने भाप का इंजन बनाया।

हरबर्ट स्पेन्सर के अनुसार ''विज्ञान के अध्ययन से जो ज्ञान हमें मिलता है वह हमारे जीवन के मार्ग-दर्शन में अन्य बातों के ज्ञान से कहीं अधिक उपयोगी है।''

विज्ञान के कई गुण होते हैं। आइए, एक-एक करके इनके बारे में जानें। **पहला गुण है,** विज्ञान तथ्यों पर आधारित है। किसी भी क्रिया के वैज्ञानिक आधार को समझने के लिए उस क्रिया से संबंधित तथ्यों को एकत्रित किया जाता है। इन तथ्यों को क्रमबद्ध किया जाता है। इस पूरी प्रक्रिया में तर्कों का प्रयोग किया जाता है। आइए, इसका एक उदाहरण लें –

आप सुबह उठते हैं और देखते हैं कि सूरज निकल आया। बल्कि कहा जाता है सूर्योदय हो गया और शाम होने पर कहते हैं सूरज डूब गया। सत्य यह है कि न तो सूर्य का कभी उदय होता है और न ही सूर्यास्त। सूर्य तो अपने स्थान पर स्थिर है। उसका चक्कर लगाती है, पृथ्वी। पृथ्वी का जो हिस्सा, सूर्य के सामने होता है, वहाँ दिन होता है तथा विपरीत हिस्से में रात रहती है। जब घूमती हुई पृथ्वी का विपरीत हिस्सा सूर्य के सामने पहुँचता है तो वहाँ सवेरा हो जाता है और जहाँ पहले दिन होता है वहाँ रात हो जाती है। इसे आप निम्नलिखित प्रयोग करके भी समझ सकते हैं।

प्रयोग

एक जलती हुई मोमबत्ती अंधेरे कमरे में एक स्थान पर रखिए। उसके सामने एक गेंद रखिए। अब उस गेंद को धुरी पर घुमाते हुए मोमबत्ती से निश्चित दूरी बनाए रखते

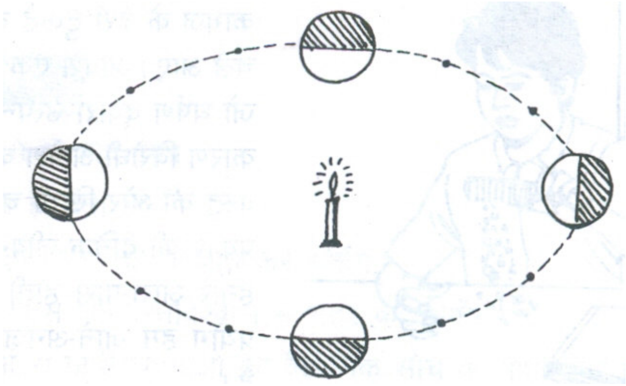

हुए एक परिधि में घुमाइए जैसे कि पृथ्वी घूमती है। आप देखेंगे कि गेंद का वह हिस्सा जो कुछ समय पहले प्रकाशमान था, अब अंधेरे में घिरता जा रहा है और दूसरा अंधियारा हिस्सा प्रकाशित होता चला जा रहा है। यह जानकारी सत्य पर आधारित है। इसका यह अर्थ हुआ कि विज्ञान सत्य पर आधारित होता है। यह विज्ञान का **दूसरा गुण** है।

विज्ञान सत्य पर आधारित है जो प्रयोग द्वारा सिद्ध किया जा सकता है।

किसी भी निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए विज्ञान में प्रयोग किए जाते हैं। प्रयोग विज्ञान का एक अनिवार्य अंग हैं। प्रयोग, कृत्रिम रूप से तैयार की गई वे नियंत्रित परिस्थितियाँ हैं, जिनके द्‌वारा किसी प्रक्रिया को तार्किक रूप से समझाया जा सके। प्रयोगों द्‌वारा जीवन की जटिल से जटिल क्रिया को आसानी से समझा जा सकता है। कोई भी परिकल्पना सच्चाई की कसौटी पर खरी उतरनी चाहिए, यही विज्ञान की विशेषता है।

टिप्पणी

वस्तुपरकता विज्ञान की विशेषता है। इसी से विश्वास पैदा होता है।

प्रयोगों के लिए वैज्ञानिक यंत्रों या उपकरणों का उपयोग करते हैं। इन उपकरणों की सहायता से प्रयोग संबंधी आँकड़े एकत्रित किए जाते हैं। वर्षों पूर्व वैज्ञानिकों ने कई उपकरण बनाए। उनमें से कुछ जैसेः तराजू, चिमटी, परखनली आदि, का हम दैनिक जीवन में आज भी प्रयोग करते हैं। कई वैज्ञानिक आवश्यकतानुसार उपकरणों का स्वरूप बदलकर भी प्रयोग करते हैं।

प्रयोग परिणाम तक पहुँचने का महत्त्वपूर्ण साधन है। विज्ञान की एक और विशेषता है, वस्तुपरकता। यदि विज्ञान में प्रयोगों को दोहराया जाए तो उनके सदैव एक ही प्रकार के परिणाम आएँगे। उन परिणामों की पुष्टि हम जितनी बार चाहें कर सकते हैं। एक ही प्रकार के प्रयोग को बार-बार करने पर एक समान परिणाम प्राप्त होने पर व्यक्ति का एक बात पर विश्वास जम जाता है। यदि हम कहें कि विज्ञान से ही विश्वास पैदा होता है, तो गलत न होगा। प्रयोग द्‌वारा परिणाम तक पहुँचने की विधि को समझाने के लिए आइए, इन उदाहरणों को देखें।

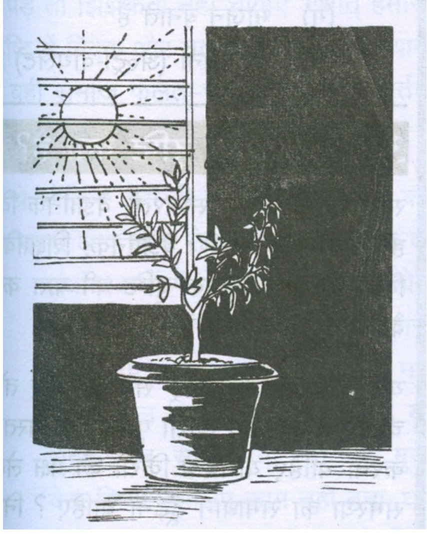

हम सभी जानते हैं कि पेड़-पौधों के विकास के लिए सूरज की रोशनी आवश्यक है। इसे सिद्‌ध करने के लिए बहुत ही सरल प्रयोग किया जा सकता है। प्रयोग की विधि इस प्रकार है :

गमले में एक पौधे को ऐसी जगह पर रखें, जहाँ आधा पौधा धूप में हो और आधा छाया में। कुछ दिन बाद आप देखेंगे कि पौधे के जिस भाग में धूप जा रही है, वे शाखाएँ फल-फूल रही हैं और धूप की ओर मुड़ गई है जबकि छाया में रहने वाला पौधे का भाग, पीला पड़ता जा रहा है। इस सरल प्रयोग द्‌वारा यह सिद्‌ध होता है कि पेड़-पौधों का विकास करने के लिए, भोजन बनाने के लिए सूर्य की रोशनी आवश्यक होती है।

आपने सूरजमुखी के फूल के बारे में सुना होगा कि ज्यों-ज्यों सूरज की दिशा बदलती जाती है, त्यों-त्यों उसका फूल भी घूमता जाता है। तभी तो इसे सूरजमुखी कहा जाता है।

पाठगत प्रश्न 34.1

1. सही विकल्प चुनकर वाक्यों को पूरा कीजिए –
   (क) विज्ञान .... पर आधारित होता है। (कल्पना/तथ्यों)
   (ख) पेड़-पौधों के विकास के लिए .... की ज़रूरत होती है। (सूर्य की रोशनी/चंद्रमा की रोशनी)

दिए गए विकल्पों में सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

2. जब हम कहते हैं कि 'रात हो गई' तब वास्तव में पृथ्वी का विशेष हिस्सा
   (क) सूरज की ओर होता है
   (ख) सूरज की ओर नहीं होता
   (ग) चाँद की ओर होता है
   (घ) चाँद की ओर नहीं होता
3. पौधों को धूप की ज़रूरत होती है, क्योंकि वे सूर्य की रोशनी से
   (क) चमकते हैं
   (ख) पानी बनाते हैं
   (ग) भोजन बनाते हैं
   (घ) पराबैंगनी (अल्ट्रा-वायलेट) किरणें प्राप्त करते हैं

34.2 वैज्ञानिक दृष्टि क्या है?

साक्षरता, वैज्ञानिक साक्षरता, वैज्ञानिक विधि, वैज्ञानिक दृष्टि कुछ ऐसे शब्द हैं जिन्हें हम अक्सर सुनते हैं। वैज्ञानिक, शिक्षाविद्, सामाजिक कार्यकर्ता, आम जनता, सभी विज्ञान तथा वैज्ञानिक दृष्टि की बात करते हैं। क्या आपने कभी सोचा है कि यह वैज्ञानिक दृष्टि क्या है?

यदि हमारे सामने कोई समस्या आए तो उसके प्रति हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए ? क्या हमें किसी पूर्वाग्रह से ग्रस्त होकर या भावावेश में उस समस्या को हल करना चाहिए या बिना किसी का पक्ष लेते हुए खुले दिमाग से सोच-विचार कर उस समस्या का समाधान ढूँढ़ना चाहिए ? निस्संदेह, आप मानेंगे कि बिना किसी पूर्वाग्रह के खुले दिमाग से सोच-विचारकर, किसी भी समस्या का समाधान ढूँढ़ना चाहिए। सोच-समझकर और आँखें खोलकर यानी कि जो आप आँखों से देखें केवल उसी पर विश्वास करने के साथ ही तर्कसंगत तरीके से सोचने और विचारने को ही वैज्ञानिक दृष्टि कहते हैं। वैज्ञानिक दृष्टि की कुछ विशेषताएँ हैं। आइए, इनकी चर्चा करते हैं।

आपको याद होगा कि हमने पहली पुस्तक के छटवें पाठ में चिंतन, विवेचन की प्रक्रिया, संकल्पना तथा इससे जुड़ी अन्य कई बातों के साथ-साथ पूर्वाग्रहों के बारे में भी पढ़ा था। जब हम बिना किसी कारण अपने मन में कोई राय बना लेते हैं और उसे पुष्ट

करने के प्रमाण जुटाते रहते हैं, तो वह पूर्वाग्रह कहलाता है। इसके विपरीत जब किसी बात अथवा घटना के कारणों की जाँच प्रयोग आधारित तथ्यों पर वैज्ञानिक तरीके से की जाए तब वह वैज्ञानिक दृष्टि कहलाती है।

टिप्पणी

किसी बात को जाँच-परखकर और तर्क की कसौटी पर कसने के बाद स्वीकार करना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।

34.2.1 वैज्ञानिक दृष्टि की विशेषताएँ

वैज्ञानिक दृष्टि, तथ्य और सच्चे ज्ञान पर आधारित है। यह हमें विवेकपूर्ण तरीके से सोचने के लिए प्रेरित करती है। यह हमारे अंदर जिज्ञासा की भावना जगाती है और हमें प्रश्न पूछने तथा हमसे प्रश्न पूछे जाने को बढ़ावा देती है। यह किसी तथ्य को जैसे का तैसा स्वीकारने की बजाए कैसे और क्यों जैसे प्रश्न पूछने के लिए बाध्य करता है। वैज्ञानिक दृष्टि, प्रमाण प्राप्त कर, निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए प्रेरित करती है। वैज्ञानिक दृष्टि हमें निरंतर याद दिलाती है कि प्रत्येक नई खोज, न सिर्फ हमारे ज्ञान में वृद्धि करती है बल्कि किसी स्थापित सत्य को एक पुराने या रूढ़ दृष्टिकोण से देखने के लिए प्रोत्साहित करती है। वैज्ञानिक दृष्टि हमें यह भी याद दिलाती है कि किसी भी समस्या संबंधी अपने द्वारा लिए निर्णय को अंतिम नहीं मान लेना चाहिए। नए तथ्यों के सामने आने पर यदि हमें अपने निर्णय को बदलना पड़े तो झिझकना नहीं चाहिए अर्थात् हमारा दृष्टिकोण लचीला होना चाहिए। वैज्ञानिक दृष्टि में विवेक और तर्क का एक विशेष स्थान है। परिवर्तन ही जीवन का मूलमंत्र है और वही समाज फलता-फूलता है जो परिवर्तन से नहीं घबराता और अंधविश्वासी नहीं होता है।

प्राचीनकाल में लोग पृथ्वी को चपटा मानते थे, लेकिन जैसे ही पृथ्वी के गोल होने का ज्ञान मिला, वैसे ही उसे स्वीकार कर लिया गया। आप ठीक से सोचिए इस प्रकार के अंधविश्वासों में कितनी सच्चाई है। लोग अकसर इस प्रकार के अंधविश्वास मानते हुए देखे गए हैं – आज सिर मत धोओ, कल बिल्ली रास्ता काट गई या सुबह-सुबह संतानहीन स्त्री का मुख देख लिया इसलिए काम नहीं बना, घर से निकलते समय खाली बाल्टी मिल गई, आज ये हो गया तो कल वो हो गया .....। यदि रोज़ इसी प्रकार कुछ-न-कुछ होता रहा तो काम कब होगा और जब काम नहीं होगा, तो लोग निठल्ले हो जाऐंगे। निश्चित रूप से जो इन सब बातों पर विश्वास नहीं करते, वे अपना काम पूरी तन्मयता से करते हैं और अपना विकास निरंतर करते रहते हैं। उनकी निजी प्रगति होती है तो देश की भी प्रगति होती

चित्र : अहा भरी बाल्टी...! अब काम बन जाएगा।

टिप्पणी

है। कभी-कभी कुछ लोग यह सोचते हैं कि प्रगति और कार्यसिद्धि परिश्रम से नहीं, बल्कि पूजा-पाठ, तंत्र-मंत्र आदि से होती है। हमारे देश में लड़कियों-स्त्रियों और अनेक प्रकार के रोगों के संबंध में सर्वाधिक अंधविश्वास प्रचलित हैं। ऐसी स्थिति में कुछ लोग ढोंगियों के चक्करों में फँस जाते हैं जो छोटे-मोटे चमत्कार दिखाकर भोले-भाले लोगों को लूट लेते हैं।

- **किसी बात को जाँचे-परखे बिना स्वीकार न किया जाए।**
- **वैज्ञानिक दृष्टि में विवेक और तर्क का विशेष स्थान है।**
- **सत्य सामने आने पर दृष्टिकोण लचीला होना हितकर है।**
- **छोटे-मोटे चमत्कारों के पीछे छिपे कारणों को पहचानना भी वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।**

क्रियाकलाप

आपने यह देखा-सुना होगा कि कुछ स्त्रियाँ अंधविश्वासी परिवार के दबाव में आकर पुत्र-प्राप्ति के लिए तांत्रिकों, ढोंगी-साधुओं आदि के पास जाती हैं और अनेक प्रकार से ठगी जाती हैं। अपना ऐसा कोई अनुभव लिखिए। इस संदर्भ में वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या होगा, इसका भी उल्लेख कीजिए।

34.2.2 वैज्ञानिक दृष्टि और अंधविश्वास

वैज्ञानिक दृष्टि हमें सदा अंधविश्वास और जादू-टोने से दूर रहने के लिए प्रोत्साहित करती है। वैज्ञानिक दृष्टि इन चमत्कारों के पीछे छिपे वैज्ञानिक तथ्यों को समझने में सहायता प्रदान करती है। आइए, कुछ ऐसे ही लोकप्रिय चमत्कारों के पीछे छिपे सत्य को जानने की कोशिश करें।

आपने किसी बाबा को मंत्र-शक्ति से भभूत उत्पन्न करते देखा या सुना होगा। आप भी इस तरह के खेल आसानी से दिखा सकते हैं। आइए, आपको इसकी विधि बताते हैं– सबसे पहले उँगली पर मरक्यूरिक क्लोराइड का पाउडर लीजिए। एल्युमिनियम के एक सिक्के पर उसे रगड़िए।

(क)

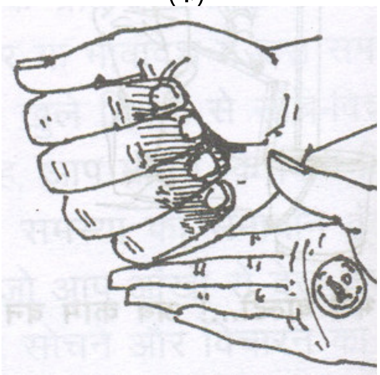

(ख)

चित्र : (क) हाथ में सिक्का (ख) मुट्ठी में भभूत

सिक्के को किसी दर्शक के हाथ में रखकर उसकी मुट्ठी बंद करवा दीजिए। थोड़ी देर बाद जब वह मुट्ठी खोलेगा, तब भभूत जैसी राख जमी हुई मिलेगी और निरंतर निकलती रहेगी। हाथ की गर्मी और पसीने की उपस्थिति में सिक्का गर्म हो जाता है। आप इसी बात को प्रकारांतर से कह सकते हैं कि आपकी मंत्र शक्ति से भभूत उत्पन्न हुई है, जबकि सच्चाई यह है कि मरक्यूरिक क्लोराइड एल्युमीनियम से प्रतिक्रिया कर एल्युमीनियम क्लोराइड की राख बनाता है।

ध्यान रहे मरक्यूरिक क्लोराइड एक विषैला पदार्थ है। इसका प्रयोग सावधानी से करना चाहिए। प्रयोग के तुरंत बाद साबुन द्वारा हाथ साफ कर लें। केवल एल्युमिनियम का सिक्का ही प्रयोग में लाएँ।

निरंतर प्रयोग करते रहने से व्यक्ति में वैज्ञानिक दृष्टि पैदा होती है, जिससे जीवन में सफलता प्राप्त होती है। विज्ञान सदैव क्रियाशील है और कर्म की ओर उन्मुख करता है। बार-बार कर्म करने से सफलता प्राप्त होती है।

पाठगत प्रश्न 34.2

1. वैज्ञानिक दृष्टि को ध्यान में रखते हुए निम्नलिखित कथनों का 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर दीजिए –

    (i) बिल्ली के रास्ता काटने पर क्या अपना कार्य छोड़कर घर वापस आ जाना चाहिए ?

    (ii) क्या चाँद पर पहुँचने पर व्यक्ति को अपना भार कम महसूस होगा ?

    (iii) क्या धातु का बना बड़ा-सा जहाज पानी में डूब जाएगा?

    (iv) किसी कार्य के लिए घर से चलते समय यदि पीछे से कोई टोक दे तो क्या आप रुक जाएँगे ?

    (v) सूर्य सबसे पहले जापान में उगता है ?

    (vi) खड़े होकर दूध पीने से क्या गाय अथवा भैंस दूध देना बंद कर देती है?

    (vii) क्या छोटी-सी लोहे की कील पानी में तैर सकती है ?

    (viii) क्या पत्थर की मूर्तियाँ दूध पी सकती हैं?

    (ix) क्या बरसात के दिनों में खुले पात्र में रखा नमक पानी बन जाएगा ?

    (x) साधु लोग हवा से भभूत पैदा कर सकते हैं ?

    (xi) क्या किसी विधवा स्त्री का दर्शन अशुभ माना जाएगा?

    (xii) किसी ने आपसे कहा था कि रात को पेड़ के नीचे नहीं सोना चाहिए इसलिए आपने मान लिया ?

टिप्पणी

निम्नलिखित प्रश्न का सही विकल्प चुनकर उत्तर दीजिए –

2. वैज्ञानिक दृष्टि का अर्थ है –
   (क) विज्ञान संबंधी पत्रिकाएँ और सूचनाएँ पढ़ना।
   (ख) विज्ञान संबंधी बातें करना।
   (ग) पूर्वाग्रहों पर आधारित निर्णय लेना।
   (घ) बातों को सोच-समझ कर, परख कर निर्णय लेना।

क्रियाकलाप

अखबारों में पढ़े या पड़ोसियों या साथियों से सुने अंधविश्वास से जुड़े अनुभवों के आधार पर किन्हीं तीन घटनाओं का उल्लेख कीजिए और उनके पीछे छिपे वैज्ञानिक कारणों की खोज कीजिए।

34.3 वैज्ञानिक विकास की प्रक्रिया में कुछ मील के पत्थर

विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रगति के बिना सामाजिक तथा आर्थिक विकास असंभव है। इसके बिना कोई भी समाज संपन्नता की राह पर नहीं चल सकता। आज वैज्ञानिक तथा प्रौद्योगिकीय प्रगति का लाभ हम सभी उठा रहे हैं जो न जाने कितने लोगों के अथक परिश्रम का परिणाम है। जब से मानव-सभ्यता का आरंभ हुआ है तभी से मनुष्य ने विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में कई नए अविष्कार किए। कुछ का आज भी हम उसी रूप में प्रयोग करते हैं, जैसे पहिया, तराजू आदि तथा कुछ का विकसित रूप प्रयोग में ला रहे हैं, जैसे – कंप्यूटर, हवाई जहाज, मोटर गाड़ी आदि।

आज हमारे स्विच दबाते ही बिजली का बल्ब जल उठता है। क्षण-भर में घोर अंधेरे वाला कमरा रोशनी से भर उठता है। क्या आप जानते हैं इस बिजली के बल्ब का आविष्कार किसने किया था ? जी हाँ, टॉमस एल्वा एडीसन ने न केवल बिजली के बल्ब का अविष्कार किया बल्कि ग्रामोफोन जैसे अन्य अनोखे अविष्कार भी किए।

ऐसे ही एक आविष्कारक अलैक्जेंडर ग्राहम बैल थे जिन्होंने टेलीफोन का आविष्कार किया। इसकी सहायता से आज हम कुछ ही सैकेंड में अपने बैडरूम में बैठकर देश-विदेश के किसी कोने में बैठे अपने आत्मीयजनों से बात कर सकते हैं। अब तो चलते-फिरते लोग मोबाइल फोन का प्रयोग करते हैं।

ऐसे कई महान आविष्कारक हुए हैं जिनकी महान देन आज भी हम प्रयोग कर रहे हैं। एक बात जो गौर करने योग्य है, वह यह है कि ये सभी आविष्कारक बहुत साधन-संपन्न नहीं थे, परंतु इनमें लगन थी और संघर्ष करने की क्षमता थी। तकनीकी प्रशिक्षण के अभाव के बावजूद इन आविष्कारकों ने अथक परिश्रम तथा कुछ कर दिखाने की ज़िद के कारण ही ये उपलब्धियाँ पाईं, परंतु इन सबके पीछे उनकी वैज्ञानिक दृष्टि प्रमुख आधार थी।

34.4 वैज्ञानिक दृष्टि का महत्त्व और जीवन में उपयोगिता

हमारे देश के अनेक लोग आज भी अंधविश्वासों में लिप्त हैं। बीमारियों के इलाज के लिए वे आज भी टोने-टोटकों, झाड़-फूँक और भभूत आदि में विश्वास करते हैं। अपनी समस्याओं के समाधान के लिए वे ढोंगी, चमत्कारी बाबाओं के आश्रम में जाते हैं। अंधविश्वासों के चक्कर में परिवार की जीविका चलाने का एकमात्र सहारा, घर का मुखिया, उपयुक्त चिकित्सा के अभाव में काल-कवलित हो जाता है। ऐसे व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसका पूरा परिवार आर्थिक तंगी में ही जीवनयापन करने के लिए मजबूर हो जाता है।

अनेक ढोंगी भोले-भाले लोगों के धन या आभूषणों को दुगुना करने का लालच देकर उनसे धन और आभूषण ही लूटकर चलते बनते हैं। ऐसी दुर्घटनाओं के शिकार हुए लोग हाथ मलते रह जाते हैं और पश्चात्ताप करते हैं।

चित्र : अहा! धन दुगना हो जाएगा...!

यदि लोगों में वैज्ञानिक दृष्टि विकसित हो जाए, वे तर्क के आधार पर सही निर्णय लेने लगें और वे यह जान जाएँ कि प्रत्येक कार्य के पीछे कोई-न-कोई कारण छिपा होता है जिसे उन्हें पहचानना है, तो वे अंधविश्वासों और टोने-टोटकों से छुटकारा पा सकते हैं, अपने जीवन को सुखी बना सकते हैं।

यहाँ नीचे हम कुछ अंधविश्वासों, टोने-टोटकों, चमत्कारों, झाड़-फूँक से इलाज के उदाहरण दे रहे हैं। इनके अतिरिक्त आप स्वयं भी ऐसे अनेक उदाहरण ढूँढ़ सकते हैं तथा वैज्ञानिक दृष्टि और तर्क के सहारे अपना अनिष्ट होने से बचा सकते हैं।

घटना/अंधविश्वास	छिपे वैज्ञानिक तथ्य
1. दायाँ अथवा बायाँ अंग फड़कना और उनका शुभ-अशुभ होना	इस प्रकार की सामान्य शारीरिक क्रियाएँ प्रायः शरीर को संतुलन में बनाए रखने के लिए स्वतः ही होती हैं जैसे भूख अथवा प्यास का लगना। ठीक इसी प्रकार शरीर का कोई भी अंग, किसी भी समय फड़क सकता है और संतुलन बनाने के लिए इस प्रकार की क्रिया करता है।
2. रात में विशिष्ट पेड़ों के नीचे सोने से अमंगल होने की आशंका	दरअसल, रात के समय किसी भी पेड़ के नीचे सोने से अमंगल ही होगा, क्योंकि रात में पेड़ प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया बंद कर देते हैं जिसके फलस्वरूप ऑक्सीजन का निकलना भी बंद हो जाता है। साथ ही उनमें श्वसन की प्रक्रिया चालू रहती है जिसमें वे वातावरण से ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं और बदले में कार्बन डाई ऑक्साइड छोड़ते हैं। अतः कुल मिलाकर पेड़ के नीचे ऑक्सीजन की मात्रा कम हो जाती है जो मनुष्य के लिए अपर्याप्त होती है और स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।

घटना/अंधविश्वास	छिपे वैज्ञानिक तथ्य
	जबकि इसके विपरीत प्रातःकाल बागों और उपवनों में घूमना लाभकारी होता है क्योंकि तब पेड़-पौधे ऑक्सीजन निकालते और कार्बनडाईऑक्साइड ग्रहण कर वातावरण को शुद्ध बनाते हैं।
3. यात्रा प्रारंभ करते समय किसी के छींक देने से अनिष्ट की आशंका	छींक आने के कई कारण हो सकते हैं, जैसे– ● साँस-क्रिया को नियमित और सुचारु ढंग से व्यवस्थित करने के लिए ● नज़ला अथवा जुकाम संबंधी समस्या से ग्रसित व्यक्ति अकसर छींकते हैं। इसका अनिष्ट से कोई संबंध नहीं है। ● और ये क्रियाएँ शरीर की आवश्यकता के अनुसार कभी भी हो सकती हैं। इनके लिए किसी यात्रा पर अथवा किसी प्रयोजन के लिए आना-जाना कोई अर्थ नहीं रखता। पर हाँ ! यदि व्यक्ति को ठंड लगने के कारण छींक आई है और ताप/बुखार होने की आशंका है तो ऐसी स्थिति में वाकई घर पर ही रुक जाना चाहिए क्योंकि अस्वस्थ होने पर यात्रा भला सुखद कैसे हो सकती है!
4. यात्रा-संबंधी अंधविश्वास ● पड़वा के दिन नहीं जाना ● किसी विशेष दिन नहीं जाना ● किसी विशेष दिशा में नहीं जाना ● साँझ पड़े, घर भले	इसके पीछे निम्नलिखित वैज्ञानिक तर्क संभव हैं – ● काल का विभाजन व्यक्ति ने अपनी सुविधा के लिए किया है। सोम, मंगल आदि दिनों के नाम अपनी सुविधा के लिए निर्धारित किए गए हैं, परंतु इन्हें शुभ और अशुभ में बाँट लिया जाए यह ठीक नहीं है। यदि आपके घर में कोई प्रिय व्यक्ति रहने आए तो क्या आपका मन उसे भेजने का करेगा? नहीं! आप चाहेंगे कि वह कम-से-कम दो-तीन दिन तो अवश्य ही घर पर रहे। इसीलिए कुछ धारणाएँ धीरे-धीरे प्रचलित हो गईं कि चौथे दिन नहीं जाना या शनिवार को या पड़वा के दिन घर से नहीं निकलना .... आदि।
5. साँप के काटे का तंत्र-मंत्र द्वारा उपचार	● विषैले साँप के काटने पर यदि शरीर में विष फैलने लगा है, तो विष का प्रभाव दूर करने वाली औषधि द्वारा ही इलाज संभव है। ● भारत में पाए जाने वाले लगभग 300 प्रकार के साँपों में से कुछ विषैले होते हैं। पशुओं पर प्रयोग करके सिद्ध किया जा चुका है कि विषैले साँप का काटा हुआ व्यक्ति तंत्र-मंत्र या झाड़-फूँक के द्वारा नहीं बल्कि चिकित्सा द्वारा ही ठीक किया जा सकता है। ● सामान्यतः ढोंगी लोग विषहीन सर्प द्वारा काटे गए व्यक्ति के ही सफल इलाज का दावा करते हैं और

		ठीक करने का श्रेय ले जाते हैं। वे उसका इलाज कर लाभ और आर्थिक प्रसिद्धि पाते हैं तथा उसका प्रचार-प्रसार भी करते हैं।
6.	शराब, तंबाकू आदि नशीले पदार्थों के सेवन को स्फूर्तिदायक मानना	• नशीले पदार्थों में कुछ ऐसे तत्व होते हैं जो शरीर में प्रवेश करके क्षणिक उत्तेजना उत्पन्न करते हैं जिसे लोग स्फूर्ति का पर्याय समझते हैं। लेकिन बाद में बोझिलता, निष्क्रियता, थकावट आदि बहुत समय तक बने रहते हैं। वस्तुतः नशीले पदार्थों का सेवन स्वास्थ्य के लिए बेहद खतरनाक है।

लोक प्रचलित अंधविश्वास और उनके पीछे छिपे तथ्य

भारतीय समाज में ही नहीं वरन् संपूर्ण विश्व में तरह-तरह के अंधविश्वास फैले हुए हैं, शुभ-अशुभ, शकुन-अपशकुन, टोने-टोटके, जादू-टोने आदि प्रचलित हैं। आज भी माताएँ अपने बच्चों की नज़र उतारते देखी गई हैं। दुधारू पशुओं को नज़र से बचाया जाता है। खाली बाल्टी देखकर लोगों का मन खराब हो जाता है। कुछ लोग स्वप्न में भविष्य देखते हैं और कुछ भूत-प्रेत की बातें करते हैं। अमरीका के नीग्रो अपने पास खरगोश का पाँव रखते हैं, ताकि चुड़ैल उनके जूते में साँप का चूरा न रख सके। मिस्र में लोग नील नदी में चलने वाली नावों पर आँख बनाते हैं और मानते हैं कि यह आँख चट्टान से नाव को बचाएगी। चीन में घर के बाहर देवता का चित्र अवश्य लगाया जाता है और शुभ माना जाता है।

इस प्रकार के असंख्य अंधविश्वास हैं, जिनका कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, परंतु कुछ विश्वास ऐसे भी हैं जिनका वैज्ञानिक आधार तो है, लेकिन लोगों को प्रायः उनके कारण ज्ञात नहीं हैं और वे उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी बिना प्रश्न उठाए, मानते चले जाते हैं। इस प्रकार के कुछ उदाहरण हैं, जैसे – जलते दीपक को मुँह से नहीं बुझाना चाहिए। क्या आप इसका कारण जानते हैं ? नहीं न! वह इसलिए क्योंकि मुँह से निकलने वाली हवा यानी कार्बन डाइ आक्साइड जलते दीपक की कार्बन गैस के साथ मिलकर कार्बन मोनोक्साइड गैस बनाती है। आप जानते हैं कि कार्बन मोनोक्साइड एक जहरीली गैस है, जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है –

$$CO_2 + C \rightarrow 2\,CO$$

(कार्बन डाईआक्साइड) (कार्बन) (कार्बन मोनोक्साइड)

इसी प्रकार के बहुत से वहम हमारी दिन-प्रतिदिन की जिंदगी में रच-बस गए हैं जैसे कि पुत्र को घर का चिराग मानना, उसे तारनहार मानना। क्या आप जानते हैं कि पुत्र प्राप्ति के लिए तरह-तरह के जतन किए जाते हैं, मन्नतें माँगी जाती हैं, परंतु यदि फिर भी बेटी पैदा हो जाए तो स्त्री को ही दोषी माना जाता है, उसे तरह-तरह की यातनाएँ, प्रताड़नाएँ दी जाती हैं और पुरुष निर्दोष माना जाता है। विज्ञान का मानना है कि लिंग निर्धारण इस बात पर निर्भर करता है कि उसमें दो एक्स गुणसूत्र हैं अथवा एक एक्स और एक वाई। यदि दोनों एक्स गुणसूत्र हैं तो बेटी पैदा होगी किंतु यदि एक एक्स और एक वाई है तो बेटा पैदा होगा। चूंकि स्त्री में दोनों ही एक्स गुणसूत्र होते हैं और पुरुष में एक

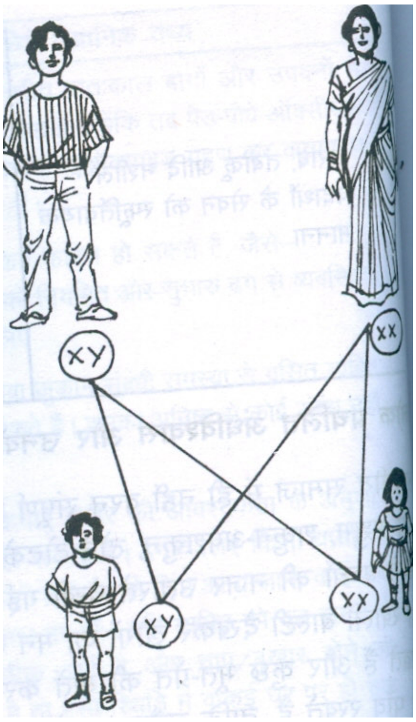

एक्स व एक वाई, अतः संतान बेटी हो अथवा बेटा, इसका निर्धारण पुरुष का गुणसुत्र ही करता है। स्त्री तो दोनों में से किसी एक को समान रूप से ही ग्रहण करती है। पुत्र अथवा पुत्री के जन्म में किसी भी प्रकार से स्त्री का कोई दोष नहीं होता फिर भी कुछ घरों में आज भी इस बात पर स्त्री को प्रताड़ित किया जाता है। फिर संतान का बेटी होना कोई दोष नहीं है। हम अपने आस-पास देखें तो पाएँगे कि लड़कों की तरह लड़कियाँ भी परिवार, समाज और देश के लिए गौरवपूर्ण उपलब्धियाँ अर्जित करती हैं।

कई जगह कुछ अंधविश्वास कुछ स्वार्थी लोगों द्वारा जान-बूझकर फैलाए जाते हैं, जिससे वहाँ के निवासियों में एक प्रकार का डर बैठ जाए और वे अपनी योजना में सफल हो जाएँ। जैसे, पहले यूरोप में यदि किसी महिला को मारना या मरवाना होता था, तो उसे डायन बना दिया जाता था और डायन आ गई .... डायन आ गई .... कहकर परेशान करके अंततः उसे मरवा दिया जाता था। उसी प्रकार हमारे पहाड़ी क्षेत्रों में, जहाँ पानी के अच्छे स्रोत हैं, वहाँ बाँध सरलता से बनाए जा सकते हैं परंतु कुछ राजनेताओं ने अपनी तुच्छ स्वार्थ सिद्धि के लिए यह भ्रम फैला दिया है कि पानी से बिजली बनाने से पानी की शक्ति घट जाती है जबकि ऐसा कुछ भी नहीं है। जब पानी की तेज धार टरबाइन को घुमाती है, तो उसमें निहित ऊर्जा विद्युत में परिवर्तित हो जाती है। इससे पानी की शक्ति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

इसी प्रकार समाज में तरह-तरह के कई अपशकुन भी फैले हुए हैं। कुछ उदाहरण स्वरूप इस प्रकार हैं –

1. अपशकुन

(क) शरीर संबंधी

(i) दाहिनी या बाईं आँख के फड़कने से अनिष्ट होना।

(ii) छींकने पर यात्रा करने से अनिष्ट की आशंका या काम बिगड़ने की संभावना।

(ख) पशु-पक्षियों से संबंधित

(i) बिल्ली के रास्ता काटने पर यात्रा करने से अमंगल की आशंका।

(ii) छत पर बैठे कौए की काँव-काँव से अतिथि के आगमन की पूर्व सूचना।

(iii) असमय कुत्तों के भौंकने से अनिष्ट की आशंका।

(iv) घर में साँप दिखने पर अनिष्ट की आशंका।

(v) अनजाने में बिल्ली की हत्या से अनिष्ट निवारण के लिए बिल्ली की स्वर्ण निर्मित मूर्ति दान करना।

(ग) स्त्री संबंधी

(i) संतानहीन स्त्री अथवा विधवा स्त्री के दिखाई पड़ने पर कार्यसिद्ध न होना।

(ii) जिसके घर लड़की जन्म ले उसे अभागा मानना।

(घ) यात्रा संबंधी

(i) पड़वा के दिन यात्रा करना अशुभ मानना।

(ii) तीन व्यक्तियों के एक साथ यात्रा करने से कार्य में असफलता की आशंका।

(ङ) स्वप्न संबंधी

(i) स्वप्न में शादी-ब्याह, दुल्हन आदि शुभ अवसरों को देखने पर अमंगल होने की संभावना।

(ii) रात में देखे गए सपनों से अनिष्ट की कल्पना और उसके पूर्व निवारण के लिए पूजा-पाठ करना या दान-दक्षिणा आदि देना।

(च) वृक्षों से संबंधित

(i) रात के समय कुछ विशेष पेड़ों के नीचे जाने से अमंगल होने की आशंका जैसे पीपल, आँवला, इमली आदि।

(ii) पीपल के पेड़ पर भूतों का निवास मानना।

(iii) आम के पेड़ को काटने पर अमंगल की आशंका।

(iv) काँटेदार पौधों के रखने से घर में अमंगल

टोना-टोटका/झाड़-फूँक

(क) टोने-टोटके आदि से सामान्य तथा असाध्य रोगों तक का इलाज संभव। राजयक्ष्मा, पीलिया आदि का नीम की टहनी से मुँह पर हवा करने (लोक भाषा में झाड़ देने) से पीलिया के रोगी को स्वस्थ कर देने का दावा।

लोक प्रचलित उपचार

– यात्रा के लिए दही-पेड़ा खाकर घर से निकलना।

– लाल मिर्च को आग में जलाकर बच्चों की नज़र उतारना।

गंडे-ताबीज द्वारा उपचार

(i) बच्चों और बड़ों के रोगों का सफल उपचार और पूर्ण स्वास्थ्य का दावा। बिगड़े काम बनाने का आश्वासन, परीक्षा में सफलता, नौकरी पाने का आश्वासन।

(ii) बाँझ स्त्रियों को संतान लाभ और पुत्र-रत्न की प्राप्ति का दावा।

(iii) ज्योतिष द्‌वारा चोर को पहचानना और चोरी का माल बरामद करवाने का दावा।

(iv) घर से भागे हुए व्यक्ति या खोए हुए व्यक्ति का पता बताने का दावा।

मंत्र-तंत्र द्‌वारा

(i) मंत्र-तंत्र द्‌वारा नोट और आभूषण दुगने करना।

(ii) साँप के काटे का झाड़-फूँक से उपचार करना।

(iii) मिरगी के रोगी को देवी के प्रकोप से प्रभावित बताकर उसका मंत्र-तंत्र से उपचार करना।

(iv) मकानों को भुतहा (भूत-प्रेत आविष्ट) बताकर उन्हें मंत्र-तंत्र द्‌वारा भूत-मुक्त करने का दावा।

(v) चमत्कार द्‌वारा हवा से घड़ी, पेन, जेवर आदि पैदा करना। मंत्र से इंजन रोक देने या किसी व्यक्ति को गायब करने का दावा आदि।

भारतीय ग्रामीण समाज में ही नहीं अपितु शहरी समाज में अनेक लोग आज भी अंधविश्वासी हैं, टोने-टोटकों और चमत्कारों में विश्वास करते हैं। इस तरह के अनेक अंधविश्वास समाज में प्रचलित हैं जिनके कारण अनेक लोग परेशान होते हैं। शारीरिक कष्ट भोगते हैं और आर्थिक हानि उठाते हैं।

विज्ञान का आधार 'देखना है' या कहें कि 'प्रत्यक्ष रूप से देखना है' और अंधविश्वास का मूल है 'अदृश्य' या 'परोक्ष'। इसलिए विज्ञान पुरुषार्थ और कर्म में विश्वास करता है और अंधविश्वास भाग्यवाद पर बल देता है।

अंधविश्वास को विज्ञान के आधार पर गलत सिद्‌ध कर परिवर्तित भी किया जा सकता है। धर्मग्रंथ बाइबिल में यह सिद्‌धांत स्वीकार्य था कि सूर्य पृथ्वी का चक्कर लगाता है। एक महान वैज्ञानिक गैलीलियो ने ग्रहों की गति का अध्ययन कर यह सिद्‌ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर भी घूमती है और सूर्य की परिक्रमा भी करती है। इस घोषणा से रोम का पोप भयभीत हो उठा। गैलीलियो को अपना मत बदलने के लिए अनेक दबाव और प्रलोभन दिए गए। परंतु विज्ञान का आधार सत्य है तो वह कैसे बदलता! अतः धर्मग्रंथ बाइबिल को सुधारा गया। विज्ञान और अंधविश्वास की इस लड़ाई में विजय विज्ञान की ही हुई।

पूर्वाग्रह, अंधविश्वास, अदृश्य या परोक्ष को मानना – ये सब क्या है, इस विषय में आप जान चुके हैं, इन सब का गहरा संबंध है। वैज्ञानिक दृष्टि इन सबका विरोध करती है और चीजों को सही रूप में देखने की दृष्टि का निर्माण करती है। लेकिन वैज्ञानिक दृष्टि की स्थापना और जीवन में उसका पालन करना इतना आसान नहीं है। बड़े-बड़े वैज्ञानिकों को इसके लिए कष्ट सहने पड़े हैं। पर सही जीवन जीने के लिए चुनौतियों का सामना तो करना ही पड़ता है। इसकी सबसे बड़ी जिम्मेदारी युवकों पर ही हैं।

टिप्पणी

उन्हें सभी प्रकार के पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों, स्त्री-पुरुष के भेदभाव, भावुकतापूर्ण फैसलों से बचकर ही वह करना चाहिए जो वैज्ञानिक और विवेकपूर्ण हो। इससे हमारा और हमारे देश का विकास हो सकता है। कोई भी बात केवल इसलिए ठीक नहीं होती कि उसे हमारे बड़े-बूढ़े या घनिष्ठ मित्र कह रहे हैं बल्कि वह तब ठीक होती है जब तर्कपूर्ण और बुद्धिसम्मत हो। यही बात महात्मा बुद्ध ने भी अपने शिष्यों से कही थी।

वैज्ञानिक प्रगति ने असंख्य अंधविश्वासों और मान्यताओं को बदल दिया है परंतु अभी भी इस प्रकार की कई मान्यताएँ शेष हैं जो सभी के सहयोग से शीघ्र ही समाप्त होंगी।

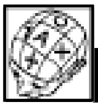

34.5 आपने क्या सीखा

1. आँखों से देखी, प्रत्यक्ष रूप से प्राप्त सत्य जानकारी विज्ञान है।
2. विज्ञान में किसी भी स्थिति को प्रयोग द्वारा सत्य सिद्ध किया जा सकता है।
3. जीवन में सत्य तक पहुँचने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है, किसी बात को जाँच परख कर, तर्क की कसौटी पर कस कर स्वीकार करना ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण है।
4. यदि कोई तथ्य सच पर आधारित है तो उसे स्वीकार करने में कोई हिचक नहीं होनी चाहिए। इससे स्थिति में सुधार आता है। दृष्टिकोण लचीला रखना जीवन में सफलता देता है।
5. प्रत्यक्ष दृष्टि का आधार विज्ञान है और अदृश्य तथा परोक्ष का आधार अंधविश्वास।
6. अंधविश्वासी व्यक्ति बिना सोचे-समझे शीघ्र ही दूसरों की बातों पर विश्वास कर लेते हैं और जाने-अनजाने अपना अहित करवा बैठते हैं।
7. समाज के कुछ व्यक्ति अथवा राजनेता अपनी तुच्छ स्वार्थ-सिद्धि के लिए भी कभी-कभी अंधविश्वास फैलाते हैं और आम जनता को बेवकूफ बनाते हैं।
8. वैज्ञानिक दृष्टि अथवा तर्क के सहारे टोने-टोटके, चमत्कार, जादू, झाड़-फूँक आदि लोक प्रचलित अंधविश्वासों से बचा जा सकता है।
9. कुछ लोक प्रचलित विश्वासों के पीछे भी विज्ञान छिपा होता है जिसे क्यों, कब, कैसे आदि प्रश्न करके समझा जा सकता है।

34.6 योग्यता विस्तार

1. विज्ञान संबंधी विषयों को पत्र-पत्रिकाओं, समाचार-पत्रों, पुस्तकों में अधिक से अधिक पढ़िए। इससे वैज्ञानिक दृष्टि स्वत: ही निर्मित होती है।
2. पाठ में दिए गए अंधविश्वासों, टोने-टोटकों के अतिरिक्त कुछ अन्य की आप भी एक सूची बनाइए और उसके पीछे छिपे वैज्ञानिक तथ्यों का पता लगाइए। ऐसे अंधविश्वासों से अपने आपको दूर रखिए और दूसरों में भी वैज्ञानिक दृष्टि जगाकर उनका उपकार कीजिए।

34.7 पाठांत प्रश्न

1. विज्ञान क्या है? किन्हीं पाँच विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए।
2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण क्या है? उदाहरण सहित उत्तर लिखिए।
3. लोक जीवन में वैज्ञानिक दृष्टि का क्या महत्त्व है? उदाहरण सहित उत्तर की पुष्टि कीजिए।
4. राजयक्ष्मा और पीलिया जैसे रोगों के इलाज के लिए डॉक्टर के पास जाना उचित है या झाड़-फूँक वाले ओझा के पास जाना? अपने उत्तर को तर्क देकर समझाइए।
5. आप अपनी आर्थिक समृद्धि के लिए कोई काम-धंधा करेंगे या धन दुगुना करने वाले साधुओं के पास जाएँगे? कार्य-कारण संबंधों को ध्यान में रखकर उत्तर दीजिए।
6. साँप के द्वारा काटे गए व्यक्ति को इलाज के लिए आप तंत्र-मंत्र से इलाज करने वाले के पास ले जाएँगे या अस्पताल में डॉक्टर के पास? अपने निर्णय के पक्ष में उचित तर्क दीजिए।
7. यात्रा के लिए चलते समय किसी के छींकने पर या बिल्ली के रास्ता काटने पर आप अपनी यात्रा स्थगित क्यों नहीं करेंगे? वैज्ञानिक दृष्टि के आधार पर उत्तर दीजिए।
8. क्या आप मकान की मुंडेर पर बैठे कौए की काँव-काँव सुनकर आगामी अतिथियों के लिए भोजन की तैयारी करने लगेंगे? यदि नहीं, तो क्यों ?
9. घर में चोरी होने पर या प्रिय व्यक्ति के खो जाने पर आप पुलिस को रिपोर्ट करेंगे अथवा चोर को ढूँढ़ निकालने का दावा करने वाले किसी व्यक्ति के पास जाएँगे? तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
10. आप घड़ी खरीदने के लिए घड़ी की दुकान पर जाना पसंद करेंगे या हवा से घड़ी पैदा करने वाले चमत्कारी साधु बाबा के पास? अपने उत्तर का सकारण स्पष्टीकरण लिखिए।
11. यदि अनजाने में आपसे किसी बिल्ली की हत्या हो जाती है, तो क्या आप सोने से बनी बिल्ली की मूर्ति का दान करेंगे? तर्क देते हुए अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए।
12. क्या कन्या के जन्म के लिए माँ उत्तरदायी होती है? वैज्ञानिक दृष्टि के आधार पर तर्कसंगत उत्तर दीजिए।
13. "लड़के की तरह लड़की का जन्म भी परिवार, समाज और देश के लिए गौरव का विषय हो सकता है।" – इस संबंध में अपने विचार लिखिए।

34.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

34.1 1. (क) तथ्यों (ख) सूर्य की रोशनी

2. (ख)

3. (ग)

34.2 1. (i) नहीं (ii) हाँ (iii) नहीं

(iv) नहीं (बात सुनकर, अपने काम में लगेंगे)

(v) नहीं (vi) नहीं (vii) नहीं (viii) नहीं

(ix) हाँ (x) नहीं (xi) नहीं (xii) नहीं

2. (घ)

टिप्पणी

35

संचार माध्यम और उनके प्रकार

आजकल मीडिया शब्द का खूब प्रयोग होने लगा है। आम बोलचाल में भी लोग इसका इस्तेमाल करने लगे हैं। आपने भी जरूर सुना होगा। क्या आप बता सकते हैं कि आखिर मीडिया है क्या? जी, अखबार, रेडियो, टेलीविजन, फोन, इंटरनेट आदि को मीडिया की श्रेणी में रखा जाता है। मीडिया यानी संचार माध्यम। क्या आपने कभी इस बात पर विचार किया है कि संचार माध्यमों का हमारे जीवन में क्या महत्त्व है? आइए, इस पाठ में हम संचार माध्यमों के बारे में जानते हैं। ये कितने प्रकार के होते हैं और हमारे लिए इनकी क्या उपयोगिता है, समझते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- संचार माध्यमों का महत्त्व स्पष्ट कर सकेंगे;
- संचार माध्यम के प्रकार बता सकेंगे;
- समाचारपत्रों की उपयोगिता का उल्लेख कर सकेंगे;
- नए संचार माध्यमों जैसे इंटरनेट, मोबाइल फोन आदि की विशेषताएँ बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. आप हर दिन नई-नई सूचनाएँ प्राप्त करते हैं। क्या बता सकते हैं कि हम तक सूचनाएँ या समाचार कैसे पहुँचते हैं। इन्हें पहुँचाने वाले कौन-कौन से माध्यम हैं? उनमें से किन्हीं चार के नाम लिखिए–

   1. .... 2. ....

   3. .... 4. ....

टिप्पणी

2. आप अखबार पढ़ते हैं, रेडियो भी सुनते हैं। अखबार और रेडियो के समाचारों में क्या अंतर होता है, संक्षेप में लिखिए–

....

....

....

....

....

35.1 आइए समझें

संचार माध्यम का महत्त्व

किसी भी सूचना, विचार या भाव को दूसरों तक पहुंचाना ही मोटे तौर पर संचार या कम्युनिकेशन कहलाता है। एक साथ लाखों-करोड़ों लोगों तक एक सूचना को पहुँचाना ही संचार या जनसंचार या मास कम्युनिकेशन मीडिया कहलाता है। मानव सभ्यता के विकास में संचार की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। वैसे तो सभ्यता के विकास के साथ ही मनुष्य किसी न किसी रूप में संचार करता रहा है। जब आज की तरह टेलीफोन, इंटरनेट आदि की सुविधाएँ नहीं थीं, तब लोग चिट्ठी लिख कर अपना हाल-समाचार लोगों तक पहुँचाते और दूसरों का समाचार जानते थे। आपको यह जान कर हैरानी होगी कि चिट्ठी लिखने का प्रचलन भी बहुत पुराना नहीं है। जब डाक व्यवस्था नहीं थी तब लोग संदेश भेजने वालों जिन्हें संवदिया कहा जाता था, के माध्यम से एक गाँव से दूसरे गाँव तक संदेश भेजते या मँगाते थे।

पुराने समय में राजा के हरकारे पैदल या घोड़े की सवारी करते हुए राजा के संदेश राजधानी से दूसरी जगहों पर ले जाते और वहाँ से ले आते थे। आपने यह भी कई कहानियों में सुना होगा कि लोग कबूतरों के ज़रिए अपना संदेश भेजा करते थे। यही व्यवस्था बाद में एक सरकारी विभाग डाक-विभाग-बनाकर सबके लिए सुलभ कर दी गई थी। अब हर कोई एक निश्चित शुल्क देकर अपना संदेश एक स्थान से दूसरे स्थान तक आसानी से भेज सकता है। अब तो डाक व्यवस्था में इतने आधुनिक उपकरणों का इस्तेमाल किया जाने लगा है कि संदेश तार के ज़रिए पलक झपकते एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचा दिया जाता है। क्या आप जानते हैं कि तार जिस मशीन से भेजा जाता है उसका ही विकसित रूप टेलीप्रिंटर कहा जाता है। इसके अलावा फैक्स, ई-मेल के ज़रिए पलक झपकते सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जा सकता है। इन उपकरणों के आ जाने से सिर्फ़ डाक प्रणाली में नहीं बल्कि संचार माध्यमों को सूचनाएँ इकट्ठी करने और प्रसारित करने में भी काफ़ी सुविधा हुई है। इन उपकरणों के बारे में हम पहले पढ़ चुके हैं।

संचार का अर्थ सिर्फ़ व्यक्ति का अपना हाल-समाचार दूसरों तक पहुँचाने तक सीमित नहीं है। हर व्यक्ति अपने या अपने संबंधियों की सूचनाएँ जानने के अलावा देश-दुनिया की खबरों के बारे में जानने का इच्छुक होता है। उसके आस-पास क्या हो रहा है,

दुनिया में कहाँ क्या घटना घट रही है, सबकी जानकारी प्राप्त करना चाहता है। सूचनाओं की इसी भूख के चलते संचार माध्यमों का लगातार विकास और विस्तार होता गया। आज अमेरिका में राष्ट्रपति का चुनाव होता है या ईराक में लड़ाई छिड़ती है तो हर किसी की निगाह उस ओर लगी रहती है कि वहाँ क्या हो रहा है। वह हर पल की खबरें जानना चाहता है। अगर आस्ट्रेलिया में क्रिकेट मैच हो रहा होता है तो आपकी जिज्ञासा लगातार बनी रहती है कि किस टीम की क्या स्थिति चल रही है। इसी तरह तो लोग व्यवसाय या किसी व्यापार से जुड़े हैं या शिक्षा संबंधी जानकारी चाहते हैं उनके लिए भी हर पल बाजार में वस्तुओं की कीमतों और शेयरों के उतार-चढ़ाव की खबरें जानना ज़रूरी होता है, दुनिया में शिक्षा के क्षेत्र में हो रहे प्रयोगों के बारे में जानने की जिज्ञासा रहती है। किसानों को मौसम और खेती में इस्तेमाल होने वाली नई तकनीक की जानकारी काफ़ी मददगार साबित होती है। ज़रा सोचिए, अगर, अखबार, रेडियो, दूरदर्शन, मोबाइल जैसे संचार माध्यम न होते तो क्या ये सूचनाएँ आप तक पहुँच पातीं।

अब संचार की बढ़ती जरूरतों को देखते हुए तरह-तरह के संचार माध्यमों का विकास कर लिया गया है। जल्दी-से-जल्दी सूचनाएँ पहुँचाने की दुनिया भर में होड़ लगी हुई है। पहले निर्धारित समय पर और एक निश्चित समय के लिए समाचारों का प्रसारण हुआ करता था, अब चौबीसों घंटे देश दुनिया की खबरों के प्रसारण लगातार दूरदर्शन के चैनलों में चलते रहते हैं। आप में से बहुत से लोगों को शायद यह जानकारी भी हो कि जल्दी-से-जल्दी सूचनाएँ पहुँचाने के लिए संचार माध्यम क्या उपाय करते हैं, कई लोगों के लिए यह जानना अभी भी काफ़ी रोचक होगा।

35.2 संचार माध्यमों के उद्देश्य

आपने अभी जाना कि विचारों, भावों और सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाना ही संचार माध्यम का मुख्य काम होता है आप यह भी जान चुके हैं कि संचार माध्यमों में समाचार पत्र, रेडियो, दूरदर्शन आदि का महत्त्व बहुत अधिक है जिस कारण इन से जुड़ा प्रेस वर्ग यानी पत्रकार वर्ग आज चौथा खंभा के नाम से जाना जाता है। पत्रकारिता की दुनिया को चौथी दुनिया (Fourth Estate) की संज्ञा दी गई है। संचार माध्यमों के मोटे तौर पर तीन उद्देश्य माने जा सकते हैं–

- सूचना पहुँचाना
- मनोरंजन और
- शिक्षा

हालांकि यह माना जाता है कि संचार माध्यम का मुख्य उद्देश्य सूचनाएँ पहुँचाना होता है लेकिन जब आप रेडियो सुनते हैं या टेलीविजन देखते हैं तो उसमें कार्यक्रमों का बहुत बड़ा हिस्सा मनोरंजन को ध्यान में रख कर प्रसारित किया जाता है। ज़रा सोचिए, रेडियो पर अगर चौबीसों घंटे सिर्फ समाचार प्रसारित किए जाएँ तो आप उसे कितनी देर सुनेंगे। या इसके उलट अगर केवल उस पर गाने प्रसारित किए जाएँ तो

कभी-न-कभी आपको ऐसा ज़रूर लगेगा कि कुछ समाचार प्रसारित किए जाते या देश-दुनिया से जुड़ी जानकारियाँ प्रसारित की जातीं तो कितना अच्छा होता! क्योंकि कोई भी व्यक्ति मात्र मनोरंजन, जानकारी या समाचार से संतुष्ट नहीं होता। इन तीनों के प्रति उसमें सहज जिज्ञासा होती है।

आजकल टेलीविज़न पर इन तीनों के लिए अलग-अलग चैनल शुरू हो गए हैं। अगर आपको समाचार सुनने हैं तो आप समाचार का चैनल ट्यून करते हैं, फिल्म देखनी है तो उसके चैनल पर जाते हैं या मनोरंजन चाहिए तो उसके लिए कई दूसरे चैनल हैं।

सूचना का अर्थ आमतौर पर समाचार लगाया जाता है। यह काफ़ी हद तक सही भी है, क्योंकि समाचारों का विस्तार आज सिर्फ राजनीतिक क्षेत्र तक न होकर समाज के हर क्षेत्र तक हो चुका है। जब आप कोई अखबार पढ़ते हैं या समाचार का कोई चैनल देखते हैं तो उसमें राजनीतिक हलचलों के अलावा खेल, शिक्षा, कृषि, बाजार भाव, शेयर, अर्थ, स्वास्थ्य जगत, अपराध, मौसम आदि की जानकारियाँ भी प्रकाशित-प्रसारित की जाती हैं। बल्कि अखबारों में विज्ञापनों के माध्यम से कंपनियाँ अपने उत्पाद अथवा सेवाओं के बारे में उपभोक्ताओं को विविध प्रकार की सूचनाएँ भी देती रहती हैं। ज़रा सोचिए आपको यह सूचना कहाँ से और किस प्रकार मिली कि नेशनल इंस्टीट्टयूट ऑफ ओपन स्कूलिंग के ज़रिए मुक्त शिक्षा माध्यम से आप बारहवीं की परीक्षा भी दे सकते हैं। इसी तरह अगर आपको कोई सामान खरीदना है और वह सामान कई कंपनियाँ बनाती हैं। आपको ठीक से जानकारी नहीं है कि किस कंपनी का सामान खरीदना आपके लिए ठीक रहेगा। ऐसे में आपको अगर अखबार में या टेलीविज़न पर विज्ञापन के ज़रिए उस वस्तु के बारे में जानकारी मिल जाती है तो आपको खरीदारी में आसानी हो जाती है। इसी तरह नौकरियों के विज्ञापन भी संचार माध्यमों के ज़रिए आपको मिलते रहते हैं। इसके अलावा जनसंख्या नियंत्रण, एड्स के प्रति जागरूकता, बाल विवाह के कुप्रभाव, नशे से समाज और मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले प्रभाव, पर्यावरण प्रदूषण, जल संचय आदि समस्याओं के प्रति लोगों में जागरूकता लाने और उन्हें इनमें सहभागिता निभाने के लिए प्रेरित करने संबंधी अनेक सूचनाएँ संचार माध्यमों के जरिए प्राप्त होती हैं। कुल मिलाकर कहा जा सकता है संचार माध्यम सूचनाओं का एक सशक्त माध्यम होते हैं।

कुछ दिनों पहले भारत सरकार ने अंतरिक्ष में एजूसेट नामक उपग्रह स्थापित किया। इस उपग्रह का मक़सद दूरस्थ शिक्षा में विद्यार्थियों-शिक्षार्थियों को लाभ पहुँचाना है। आप तो जानते हैं कि मुक्त शिक्षा माध्यम से पढ़ाई करने वाले विद्यार्थियों को मुद्रित सामग्री के अलावा रेडियो, टेलीविज़न, टेलीफोन आदि के माध्यम से भी पाठ्यक्रम सहायक सामग्री और शिक्षा से संबंधित जानकारियाँ उपलब्ध कराई जाती हैं। अभी तक इस तरह की जानकारियाँ दूसरे उपग्रहों के माध्यम से उपलब्ध कराई जाती थीं, लेकिन एजूसेट के स्थापित हो जाने के बाद शिक्षा के लिए स्वतंत्र उपग्रह अस्तित्व में आ गया है और शिक्षा संबंधी सामग्री के प्रसारण में काफ़ी सुविधा हो गई है।

आप यह भी जानते हैं कि अब ज़्यादातर रेडियो और टेलीविज़न कार्यक्रम उपग्रह के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। अब समाचार पत्रों के प्रकाशन और उनकी सूचनाओं का संग्रह भी उपग्रह के माध्यम से होने लगा है। इस बारे में आप इन पाठों में विस्तार से पढ़ेंगे।

पाठगत प्रश्न 35.1

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प छाँट कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. निम्नलिखित में से संचार माध्यम किसमें उपयोगी नहीं है–
   (क) मनोरंजन में (ग) पानी बरसाने में
   (ख) सूचनाओं के प्रसारण में (घ) शिक्षा सामग्री एकत्र करने में
2. संचार माध्यमों के विस्तार में इनमें से कौन-सा कारण प्रमुख रहा है–
   (क) लोगों का कृषि के प्रति झुकाव
   (ख) लोगों का पढ़ाई-लिखाई के प्रति झुकाव
   (ग) आधुनिक उपकरणों का आविष्कार
   (घ) लोगों में सूचनाओं की बढ़ती भूख
3. एजूसेट उपयोगी है –
   (क) मनोरंजन के क्षेत्र में (ग) शिक्षा के क्षेत्र में
   (ख) अर्थ-व्यवस्था के क्षेत्र में (घ) गरीबी उन्मूलन में

35.3 संचार माध्यम के प्रकार और उनकी उपयोगिता

आप में से काफ़ी लोग अखबार पढ़ते हैं, रेडियो सुनते और टेलीविज़न देखते हैं। ये सभी संचार माध्यम हैं। लेकिन इनके अलावा भी कई ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इन माध्यमों में 'इंटरनेट' सबसे नया और सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ है। इसके अतिरिक्त विभिन्न कंपनियों, विभागों द्वारा मुहैया कराए जाने वाली प्रचार सामग्री भी संचार का माध्यम साबित हुई है। मगर कुल मिलाकर संचार माध्यमों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है–

1. मुद्रित माध्यम
2. श्रव्य माध्यम
3. दृश्य-श्रव्य माध्यम

1. मुद्रित माध्यम

मुद्रित संचार माध्यम में मुख्यरूप से अखबार और पत्रिकाएँ आती हैं। आप तो जानते हैं कि अखबारों में मुख्य रूप से समाचार प्रकाशित होते हैं। इन जानकारियों में शिक्षा से लेकर खेती-बाड़ी, खेल-कूद, बाजार भाव, सिनेमा, स्वास्थ्य तथा पोषण, टेलीविज़न के कार्यक्रम, फैशन, ज्योतिष भविष्यफल और दुनिया के विभिन्न स्थानों, वहाँ के लोगों और उनके रहन-सहन के बारे में भी जानकारियाँ प्रकाशित होती हैं। देश-दुनिया की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक हलचलों के विश्लेषण तो प्रकाशित होते ही हैं।

अखबार चूँकि हर दिन प्रकाशित होते हैं इसलिए इनमें रोज़ की विभिन्न क्षेत्रों की ताजा खबरें प्रमुखता से प्रकाशित होती हैं। इसलिए इन्हें समाचार पत्र कहा जाता है। दुनिया भर में चूँकि हर क्षेत्र में हर पल कोई-न-कोई नई घटना घटती है और उनमें से हर क्षेत्र की जानकारी हर कोई पाना चाहता है इसलिए हर अखबार अपने-अपने तरीके से खबरों के लिए अलग-अलग पन्ने निर्धारित करता है। आपने अखबार पढ़ते हुए देखा होगा कि आमतौर पर पहले पन्ने पर देश-दुनिया की सबसे महत्त्वपूर्ण खबरें प्रकाशित होती हैं, जैसे प्रधानमंत्री की किसी योजना की घोषणा, कोई महत्त्वपूर्ण फैसला या दुनिया के किसी देश में हुई कोई बहुत महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटना। इसी तरह ज़्यादातर अखबारों में आखिरी पन्ने पर खेल, दूसरे पन्ने पर स्थानीय खबरें और आखिर के दूसरे पन्ने पर अर्थ जगत से जुड़ी खबरें होती हैं। इसके अलावा देश-विदेश की खबरों के लिए अलग से पन्ने निर्धारित किए जाते हैं और संपादकीय के लिए आमतौर पर बीच का पन्ना निश्चित होता है।

चित्र 35.1: तरह-तरह के अखबार

इसमें हर अखबार अपने आकार के मुताबिक अलग-अलग क्षेत्रों की खबरों के लिए पन्नों की संख्या अलग-अलग निर्धारित करता है। किसी अखबार में स्थानीय खबरों के लिए दो पन्ने होते हैं तो किसी में इससे अधिक। कुछ अखबार राज्यवार खबरें भी प्रकाशित करते हैं। इसके अलावा सप्ताह के अलग-अलग दिन अलग-अलग विषयों पर विशेष परिशिष्ट देने का भी प्रचलन कुछ समय से बढ़ा है। अखबार में खबरों को क्षेत्रवार प्रकाशित करने और उनके लिए अलग-अलग पन्ने निर्धारित करने के पीछे पाठकों को पढ़ने में सुविधा का ध्यान रखा जाना ही मुख्य उद्देश्य होता है।

इसे एक उदाहरण से समझा जा सकता है, मान लीजिए आप अखबार रोज पढ़ते हैं पर ऐसे में अगर आपको पता है कि इस तरह की खबरें जो अखबार आप पढ़ते हैं उसमें किस पन्ने पर छपती हैं तो बजाय पूरे अखबार में से वैसी खबरों को तलाशने के आप सबसे पहले वही पृष्ठ खोल कर पढ़ते हैं। इसी तरह अगर आपके किसी मित्र को खेल में रुचि है तो वह खेल का पन्ना खोलता है और उसे खेल से जुड़ी सारी खबरें एक जगह मिल जाती हैं। इस तरह पूरे अखबार में से अपनी रुचि के समाचार छाँटना आसान हो जाता है। वैसे ही अगर आप विद्यार्थी हैं और आपको पता है कि आपके अखबार में सप्ताह में एक दिन सेहत, डाक्टर की सलाह, किशोर शिक्षा, पढ़ाई-लिखाई और रोज़गार से जुड़े अवसरों के बारे में अलग-अलग दिन परिशिष्ट प्रकाशित होता है। वह किस दिन और किस पृष्ठ पर प्रकाशित होता है, पता होने से आप झट से वह पृष्ठ खोलते हैं और अपने काम की सूचनाएँ निकाल लेते हैं।

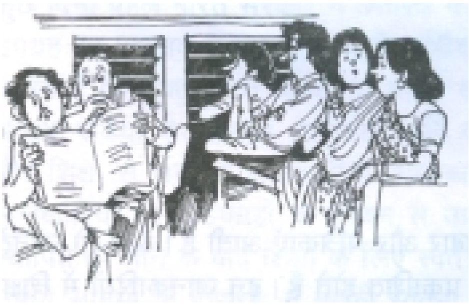

चित्र 35.2: अखबारों की उपयोगिता

हर अखबार रविवार को अलग से परिशिष्ट प्रकाशित करता है, जिसमें समाचारों से अलग हट कर समाज के विविध पक्षों पर जानकारियाँ दी जाती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य लोगों को विविध विषयों के बारे में जानकारी प्रदान करना, उनका मनोरंजन करना और जागरूक बनाना होता है। इसमें आमतौर पर सामाजिक मुद्दों से जुड़े विषय उठाए जाते हैं। इनमें साहित्य भी होता है, फैशन भी होता है, कला के क्षेत्र व महिलाओं व किशोरों से जुड़ी जानकारियाँ और बच्चों के लिए गतिविधियाँ भी होती हैं। इनमें मुख्य रूप से फीचर प्रकाशित होते हैं। फीचर के बारे में तो आप आगे पढ़ेंगे।

अखबार की उपयोगिता

अखबार को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है। तीन खंभों के बारे में तो आप जानते ही हैं। ये हैं पहला विधायिका यानी संसद और विधानसभाएँ दूसरा कार्यपालिका यानी नौकरशाही और तीसरा न्यायपालिका यानी अदालतें। निम्नलिखित वर्गीकरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

लोकतंत्र

विधायिका | **कार्यपालिका** | **न्यायपालिक** | **अखबार/खबरपालिकाएँ**

लोकतंत्र का चौथा खंभा यानी खबरपालिका कहा गया है। इसे संविधान में यह दर्जा प्राप्त नहीं है, बल्कि इसे लोगों ने चौथा खंभा मान लिया है। ऐसा इसलिए कि विधानपालिका कानून बनाती है, कार्यपालिका उसे लागू करती है और न्यायपालिका उसे तोड़ने वालों को दंडित करती है, लेकिन अखबार अक्सर विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका में होने वाली गड़बड़ियों को उजागर करने का काम करता है, लोगों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है। सरकार के फैसलों पर टिप्पणियाँ करता है और नौकरशाही के ढीलमढाल रवैए पर उँगली उठाता है। इस तरह कई बार न्यायपालिका को कानून पर नज़र रखने में मदद पहुँचाता है, सरकार को अपने फैसलों पर दुबारा विचार करने पर मजबूर करता है, नौकरशाही को मुस्तैद बनाता है। आपने अक्सर पढ़ा-सुना होगा कि अखबार में खबरें प्रकाशित होने के बाद कई सामाजिक मुद्दों पर सरकार या न्यायपालिका का ध्यान गया और उसने तुरंत उस पर कार्रवाई की। सरकार ने किसी योजना की घोषणा की पर अखबार ने उसकी खामियों पर सवाल उठाया या उसके पूरा न हो पाने पर खबर छापी तो सरकार को तुरंत नया फैसला करना पड़ा। इस तरह अखबार लोगों को खबरदार करता है और लोकतंत्र की रक्षा करता है। इसीलिए संविधान में प्रेस को स्वतंत्रता दी गई है। सरकार उसकी आज़ादी को बाधित करने की कोशिश नहीं कर सकती। क्या आपने इस बात पर कभी विचार किया है कि प्रेस नहीं होती तो क्या सचमुच लोकतंत्र की रक्षा हो पाती। क्या आप अपने अधिकारों के प्रति इतने सजग हो पाते। सरकार या नौकरशाही के फैसले आपके हक में कितने सही या गलत हैं, आप ठीक-ठीक आकलन कर पाते, इनके खिलाफ सरकार पर दबाव बन पाता। लेकिन अखबार केवल सरकारी फैसलों, योजनाओं, नीतियों या कामकाज के तरीकों की तरफ़ ही लोगों का

ध्यान आकर्षित नहीं करता बल्कि समाज के दूसरे विभिन्न मुद्दों पर भी लोगों को जागरूक बनाता है। शायद आपको पता हो, आज जिस पर्यावरण प्रदूषण को लेकर इतने आंदोलन चल रहे हैं, सबसे पहले इसकी तरफ़ लोगों का ध्यान अखबार में प्रकाशित खबर को पढ़ कर ही गया था। जब अखबार में समाचार छपा कि वाहनों के धुँए, वनों के कटने और प्राकृतिक संपदा के दोहन से पर्यावरण प्रदूषित हो रहा है तो इसकी रोकथाम के लिए अदालत ने सरकार को निर्देश जारी किया था। इसी तरह बढ़ती जनसंख्या, लिंग भेद, भ्रूण हत्या जैसे अनेक सामाजिक मुद्दों पर अखबार अपनी नज़र रखता है और लोगों को जागरूक बनाने की कोशिश करता है। वह देश के अलावा दूसरे देशों की गतिविधियों पर भी नज़र रखता है और उनका अपने देश पर पड़ने वाले प्रभावों से लोगों को अवगत कराता है। आप संपादकीय पन्ने पर छपने वाली टिप्पणियों को पढ़कर बहुत सारे मुद्दों पर पक्ष और विपक्ष में विचारों से अवगत होते होंगे और एक निष्कर्ष पर पहुँचते होंगे। सही और गलत का निर्धारण कर पाते होंगे।

इसके अलावा अखबार लोगों को अपने विचार रखने का एक खुला मंच भी प्रदान करता है। अखबार के ज़रिए न सिर्फ़ आप देश-दुनिया की हलचलों से परिचित होते हैं, उनमें प्रकाशित टिप्पणियों से राय बनाते हैं बल्कि अखबार आपको अपने विचार प्रकट करने का अवसर भी देते हैं। किसी मुद्दे पर आप सहमत या असहमत हैं तो लेख लिख कर या पत्रों के माध्यम से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त कर सकते हैं, सीधे सरकार को संबोधित कर सकते हैं। आपके आस-पास कोई समस्या नज़र आती है तो अखबार के ज़रिए उसे लोगों के सामने ला सकते हैं। अखबारों में अक्सर अलग-अलग मुद्दों, समस्याओं पर लोगों की लंबी बहस आयोजित होती है, लोगों की राय या प्रतिक्रिया भी प्रकाशित होती है। इस तरह अखबार सिर्फ़ अपने तरीके से विचारों या समाचारों को नहीं प्रकाशित करते बल्कि आम लोगों को साथ लेकर चलते हैं, उनके विचारों, समस्याओं और प्रतिक्रियाओं को भी प्रस्तुत करते हैं। क्या आपको नहीं लगता कि अखबार लोकतंत्र में जरूरी हैं!

आपने पढ़ाः

1. अखबार को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है।
2. अखबार खबरपालक का कार्य करते हुए लोकतंत्र की रक्षा करता है।
3. आपको अधिकारों के प्रति सजग करता है।
4. अखबार हर मुद्दे पर प्रहरी की भाँति पैनी नज़र रखता है।
5. अखबार विचार रखने का खुला मंच है।

पत्रिकाएँ

पत्रिकाओं का प्रकाशन सर्वाधिक होता है। ये अखबारों की तरह रोज़ नहीं प्रकाशित होतीं बल्कि साप्ताहिक, पाक्षिक, मासिक, द्विमासिक, त्रैमासिक, छमाही या वार्षिक आधार पर प्रकाशित होती हैं। सावधिक होने की वजह से पत्रिकाओं में ताज़ा सूचनाएँ देने की गुंजाइश कम होती है। इसलिए ज़्यादातर पत्रिकाओं में घटनाओं, समाचारों, सामाजिक-साहित्यिक और कला जगत की हलचलों पर विस्तार से वैचारिक टिप्पणियाँ

टिप्पणी

प्रकाशित की जाती हैं। इन्हें पढ़ने का लाभ यह होता है कि सूचनाओं से लगातार रू-ब-रू होते लोगों को उन पर प्रतिक्रियाएँ जानने, उनकी तह में छिपी वास्तविक को जानने, घटना को विस्तार से समझने का मौका मिलता है।

पत्रिकाएँ चूँकि सावधिक होती हैं, इसलिए इनमें ताज़ा घटनाक्रम का प्रकाशन संभव नहीं होता, दूसरे इनका अगले अंक के प्रकाशन तक इंतज़ार करना पड़ता है। इस अर्थ में पत्रिकाओं में सूचनाएँ देर से अवश्य पहुँचती हैं, मगर इनकी अवधि समाचार पत्रों की अपेक्षा थोड़ी लंबी होती है। समाचार पत्र अगर एक दिन में पूरा नहीं पढ़ा गया तो दूसरे दिन नया पत्र आ जाता है। पर, पत्रिकाओं को एक दिन में नहीं भी पढ़ा जा सका तो दो-तीन दिन में आराम से पढ़ा जा सकता है। इनके सावधिक होने का लाभ यह होता है कि सूचनाओं के विस्तार से प्रकाशन तथा विवेचन की सुविधा होती है। दैनिक अखबार की तरह चूँकि इन्हें प्रकाशित करने की जल्दी नहीं होती इसलिए खबरों की तह में जाने का समय इन्हें ज़्यादा मिल जाता है। इसीलिए कई बार पत्रिकाएँ खबरों की तह में छिपी घटनाओं को भी ढूँढ़ कर ले आती हैं। ऐसे कई उदाहरण आपके सामने आते होंगे।

कुल मिलाकर पत्र-पत्रिकाएँ सूचनाओं का तेज़ी से और प्रामाणिक तौर पर प्रकाशन कर पाते हैं और इससे लोगों को न सिर्फ़ सरकार की योजनाओं, नीतियों के बारे में जानकारी प्राप्त होती है बल्कि जागरूकता भी पैदा होती है। इसमें समाचारों के ज़रिए तो आम आदमी में जागरूकता बढ़ती ही है, विज्ञापनों या सरकारी सूचनाओं के ज़रिए भी बहुत सारी जानकारियाँ प्राप्त होती हैं, जिन्हें काट कर लंबे समय तक दस्तावेज़ के रूप में सहेजा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 35.2

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से सही कथन छाँटिए:
   (क) अखबार सावधिक होते हैं।
   (ख) पत्रिकाओं में मुख्य रूप से समाचारों का विश्लेषण प्रकाशित किया जाता है।
   (ग) अखबार लोगों को जागरूक बनाते हैं।
   (घ) पत्रिकाएँ अखबारों की अपेक्षा ज़्यादा समय तक टिकाऊ होती हैं।
   (च) पत्रिकाओं और अखबारों की खबरों की प्रकृति लगभग एक-सी होती हैं।

2. लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है –
   (क) विधायिका को　　(ग) कार्यपालिका को
   (ख) न्यायपालिका को　　(घ) मीडिया को

---

2. श्रव्य माध्यम

श्रव्य माध्यमों के ज़रिए सूचनाओं का प्रसारण किया जाता है, जिन्हें सिर्फ़ सुना जा सकता है। मुद्रित माध्यमों की तरह इनकी सूचनाओं को पढ़ा या इनसे जुड़ी घटनाओं

के चित्रों को देखा नहीं जा सकता। रेडियो एक श्रव्य माध्यम है। आप पत्र-पत्रिकाओं और रेडियो की सूचनाओं या समाचारों में अंतर महसूस करते होंगे। रेडियो में भी समाचार, विज्ञापन, सूचनाओं आदि का प्रसारण किया जाता है, मगर इनकी विशेषता यह होती है कि मुद्रित माध्यमों के ज़रिए प्रकाशित सूचनाओं का लाभ सिर्फ़ साक्षर व्यक्ति ही उठा पाता है, मगर रेडियो अथवा श्रव्य माध्यम की सूचनाओं का लाभ कम पढ़े-लिखे या निरक्षर व्यक्ति भी उठा सकते हैं। दूसरे इसमें मुद्रित माध्यमों की तरह इसका लाभ उठाने के लिए रोज़ पैसे खर्च करने की ज़रूरत नहीं पड़ती। रेडियो सेट एक बार खरीद लेने के बाद लंबे समय तक इसके माध्यम से सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं। इसके अलावा इसे कहीं भी उठा कर ले जाया जा सकता है जैसे खेत में काम करते समय किसान खेत में, फैक्टरी में काम करने वाला मजदूर फैक्टरी में काम करते हुए या ड्राइवर गाड़ी चलाते हुए भी इसे सुन सकता है। पत्र-पत्रिकाओं की तरह इसकी सूचनाओं का लाभ उठाने के लिए दूसरे काम छोड़ने की ज़रूरत नहीं होती।

रेडियो की पहुँच और प्रभाव अखबार से अधिक है, क्योंकि निरक्षर भी इसका लाभ उठा सकते हैं। रेडियो पर आजकल एफ.एम. चैनल ज्ञानवाणी के ज़रिए विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम पर आधारित कार्यक्रम भी प्रसारित होते हैं। इससे जो विद्यार्थी कक्षा में नहीं जा पाते, कोई दूसरा काम करते हैं, वे भी लाभ उठा सकते हैं। ये कार्यक्रम इतने रोचक और ज्ञानवर्धक होते हैं कि पुस्तकें पढ़ते समय जो परेशानियाँ आपको महसूस होती हैं, इन कार्यक्रमों को सुनने से आसानी से समझ आ जाती हैं। आपने भी क्या ऐसा महसूस किया? पुस्तकों में प्रकाशित सामग्री को पढ़ने में ये सहायक हैं या नहीं?

रेडियो में भी लगभग वही सभी प्रमुख समाचार, सूचनाएँ होती हैं जो पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं। मगर इनमें अंतर केवल इतना होता है कि रेडियो में समाचारों-सूचनाओं के लिए समय निर्धारित होने के कारण इनके विस्तार की गुंजाइश कम होती है। इनमें विशेष रूप से प्रमुख समाचार ही प्रसारित हो पाते हैं, जबकि अखबारों में स्थानीय और राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय खबरों के लिए काफ़ी जगह बन जाती है। साथ ही इनमें घटनाओं के चित्र भी प्रकाशित किए जा सकते हैं, जोकि रेडियो में संभव नहीं हैं। इनकी सूचनाओं या समाचारों को अखबार-पत्रिकाओं की सूचनाओं-समाचारों की तरह काट कर लंबे समय तक रख पाना संभव नहीं है। दूसरे, इसमें प्रसारित होने वाले समाचारों को ध्यान से न सुना जाए तो जो समाचार छूट जाते हैं उन्हें अखबार की तरह दुबारा पढ़ कर समझना संभव नहीं होता। अगले प्रसारण तक इंतजार करना पड़ता है। इसके अलावा इसमें समाचारों के लिए समय निर्धारित होने के कारण समय पर रेडियो खोलना ज़रूरी होता है। अखबार में यह सुविधा होती है कि जब मर्जी पढ़ा जा सकता है, रेडियो की तरह इसमें समय की कोई पाबंदी नहीं होती।

रेडियो के अलावा श्रव्य माध्यम के रूप में इन दिनों टेपरिकॉर्डर का भी प्रचलन तेजी से बढ़ा है। इसमें सूचनाओं को रिकार्ड करके रखा जा सकता है, जिसे जब मर्जी सुना जा सकता है। यह माध्यम विद्यार्थियों के लिए काफी उपयोगी साबित हो रहा है। आप भी इस माध्यम का लाभ उठाते होंगे। पाठ्यपुस्तकों के अलावा दूर शिक्षा प्रणाली के

ज़रिए शिक्षा प्रदान कराने वाले संस्थान ऑडियो कैसेट भी देते हैं, जिनमें पाठ्यक्रम के अलावा कई पाठ्यक्रम सहायक सामग्री उपलब्ध होती है। इन कैसेटों को आप अपनी सुविधा के अनुसार सुन कर लाभ उठा सकते हैं।

चुनावों के दौरान राजनीतिक पार्टियाँ भी अपने प्रचार-प्रसार के लिए ऑडियो कैसेट का इस्तेमाल करने लगी हैं। कई कंपनियाँ अपने विज्ञापनों का प्रसारण इसके ज़रिए करती हैं। जो लोग कस्बों में रहते हैं उन्होंने सिनेमा का प्रचार करने वाले वाहनों को लाउडस्पीकरों पर प्रचार करते देखा होगा। महानगरों में लाल बत्तियों पर ट्रैफिक पुलिस का प्रचार प्रसारित होते सुना होगा। लाउडस्पीकर भी संचार का एक श्रव्य माध्यम ही है।

3. दृश्य-श्रव्य माध्यम

दृश्य-श्रव्य माध्यम के ज़रिए न सिर्फ़ कार्यक्रमों को सुना जा सकता है बल्कि घटनाओं के चित्र भी देखे जा सकते हैं और इनसे संबंधित प्रमुख सूचनाओं को पढ़ा भी जा सकता है। टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम ही है। आप टेलीविज़न तो देखते ही हैं। क्या इस पर प्रसारित होने वाले समाचारों और रेडियो पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में अंतर बता सकते हैं? दोनों में से किस माध्यम के कार्यक्रम आपको अधिक रोचक लगते हैं। ज़ाहिर है टेलीविज़न के लगते होंगे। क्योंकि इस पर चित्र भी प्रसारित होते हैं। लेकिन क्या आपने कभी यह सोचा है कि टेलीविजन के कार्यक्रमों को क्या आप आँख बंद करके या कोई दूसरा काम करते हुए आनंद उठा सकते हैं? नहीं न! परंतु रेडियो के कार्यक्रमों का आप आनंद उठा सकते हैं। लेकिन टेलीविज़न के कार्यक्रम, समाचार, सूचनाएँ आपको ज़्यादा रोचक इसलिए लगती हैं, आपके मन पर ज़्यादा समय तक अंकित रहती हैं कि इसमें श्रव्य के साथ-साथ विजुअल यानी दृश्य सामग्री भी होती है। कई बार आपने महसूस किया होगा कि जिन बातों को पढ़ या सुन कर आप नहीं समझ पाते उन्हें देख कर आसानी से समझ जाते हैं और वह आपको लंबे समय तक याद भी रहती है। कई बार लिखकर या बोलकर जिन बातों को समझा पाना या अभिव्यक्त कर पाना मुश्किल होता है उन्हें एक चित्र के माध्यम से बहुत आसानी से कहा जा सकता है। टेलीविज़न पर भी ऐसा ही होता है। इसमें समाचारों को बोल कर तो प्रसारित किया ही जाता है, उनसे संबंधित चित्रों को दिखा कर और जहाँ ज़रूरी हुआ लिखित रूप में भी प्रस्तुत कर अधिक प्रभाव पैदा किया जा सकता है। इसी तरह इस पर प्रसारित होने वाले पाठ्यक्रम विषयक कार्यक्रम भी रोचक और प्रभावशाली रूप में तैयार किए जा सकते हैं।

चित्र 35.2: दूरदर्शन अधिक रोचक

द श्य और श्रव्य गुणों के कारण टेलीविज़न का प्रभाव व्यक्ति के मन पर सीधा पड़ता है।

टिप्पणी

आजकल दूरदर्शन एक महत्त्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में विकसित हो चुका है। जबसे चौबीसों घंटे के कार्यक्रम प्रसारित होने लगे हैं इसके माध्यम से समाज के विविध पक्षों को दिखाने, हर पल की घटनाओं को प्रसारित कर पाने की सुविधा बढ़ी है। अत्याधुनिक उपकरणों के विकास से एक जगह से दूसरी जगह सूचनाएँ भेज पाना आसान हो गया है। अब तो घटना स्थल से भी सीधे आँखों देखा हाल तुरंत प्रसारित किया जा सकता है। इसलिए आप देखते होंगे कि कई बार टेलीविज़न पर किसी भी घटना के तत्काल समाचार आपके सामने होते हैं, किसी दूसरे देश में बैठे व्यक्ति से उस पर टिप्पणी ली और प्रसारित की जा सकती है। सबसे बड़ी बात कि चित्रों को अधिक से अधिक संख्या में प्रसारित किए जाने से सूचनाओं, समाचारों की प्रामाणिकता बढ़ जाती है। इसलिए आज इसके दर्शकों की संख्या दूसरे संचार माध्यमों की तुलना में तेज़ी से बढ़ रही है। इस कारण विभिन्न कंपनियाँ और सरकार भी अपने कार्यक्रमों, नीतियों, योजनाओं का प्रसारण करना, उनके बारे में विज्ञापन के ज़रिए लोगों तक सूचनाएँ पहुँचाना इस माध्यम के ज़रिए अधिक उचित समझते हैं।

टेलीविज़न के ज्ञानदर्शन चैनल द्वारा पाठ्यसामग्री या पाठ्यक्रम सहायक सामग्री का प्रसारण भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण संचार माध्यम के रूप में उभर कर सामने आया है। जैसा कि हम आपको पहले ही बता चुके हैं, पाठ्यक्रमों के प्रसारण के लिए अब एक अलग से एजूसेट नामक उपग्रह भी अंतरिक्ष में स्थापित किया जा चुका है, जिससे विद्यार्थियों, शोधार्थियों यहाँ तक कि अध्यापकों के लिए शिक्षा संबंधी सूचनाएँ प्राप्त करने, दुनिया में चल रहे शिक्षा संबंधी प्रयोगों के बारे में जानने और उनका इस्तेमाल करने में काफ़ी आसानी हो गई है। जिस तरह फिल्म, संगीत, मनोरंजन या समाचारों के अलग-अलग चैनल शुरू हो गए हैं उसी तरह विद्यार्थियों के लिए भी अलग से शिक्षा चैनल शुरू किया जा रहे हैं, जिस पर अलग-अलग समय में अलग-अलग विषयों और कक्षाओं के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण होने लगा है। इस चैनल के ज़रिए राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान भी अपने विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रमों का प्रसारण करता है।

कभी-कभी टेलीकॉन्फ्रेंसिंग कर विद्यार्थियों की समस्याओं का समाधान भी किया जाता है। टेलीविज़न पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रम समाचार पत्रों और रेडियो की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं। लेकिन इन पर भी प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों का समय निर्धारित होता है, इसलिए अगर उस समय पर उन्हें देखना चूक जाएँ तो उनका लाभ उठा पाना संभव नहीं होता।

पाठगत प्रश्न 35.3

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रेडियो प्रभावी है–

   (क) दृश्य-श्रव्य माध्यम से   (ग) मुद्रित माध्यम से

   (ख) दृश्य माध्यम से   (घ) मनोरंजक माध्यम से

2. श्रव्य माध्यमों की सूचनाएँ
   (क) ज़्यादा प्रभाव डालती हैं
   (ख) ज़्यादा विस्तार से प्रसारित की जाती हैं
   (ग) मुद्रित माध्यमों की तरह संकलित नहीं की जा सकतीं
   (घ) कभी भी कहीं भी उपयोग की जा सकती हैं

3. दृश्य-श्रव्य माध्यमों के कार्यक्रम
   (क) रोचक और प्रभावशाली होते हैं
   (ख) इनमें लिखित रूप में संदेश देने की गुंजाइश नहीं होती
   (ग) सिर्फ़ चित्र होते हैं
   (घ) कभी भी उपयोग किए जा सकते हैं

35.4 नए संचार माध्यम

आजकल आप अक्सर लोगों से मोबाइल फोन पर बात करते होंगे। अपने दोस्तों को यह भी कहते कई बार सुना होगा कि इंटरनेट के ज़रिए अमुक मुद्दे पर जानकारी ज़्यादा उपलब्ध है। ये दोनों संचार के नए माध्यम के रूप में इन दिनों बहुत तेज़ी से उभरे हैं।

मोबाइल फोन

यह घर के साधारण फोन से कई मामलों में थोड़ा भिन्न है। घर के फोन को एक तार के ज़रिए जोड़ा गया होता है इसलिए इसे उठाकर कहीं भी ले जाना आसान नहीं होता जबकि मोबाइल फोन बिना तार (वायरलेस) के काम करता है, जिसे लेकर आसानी से कहीं भी जाया जा सकता है। इसलिए अब लोगों को फोन जेब में लेकर चलने की सुविधा को देखते हुए इनके सेट काफ़ी छोटे-छोटे तैयार किए जाने लगे हैं। मगर यह एक दूसरे से बातचीत करने के अलावा इसका उपयोग संदेश भेजने-पाने (एस.एम.एस.), फोटो खींचने और तुरंत उसे दूसरे व्यक्ति के पास भेजने, किसी की बातचीत रिकॉर्ड करने और उसे दूसरे के पास भेजने, फिल्में देखने, गाना सुनने, समाचार सुनने के लिए भी किया जाता है। इस तरह समाचार एकत्र करने वाले संवाददाताओं के लिए तो काफ़ी उपयोगी सिद्ध हुआ ही है आम आदमी के लिए भी कई मायनों में कारगर साबित हो रहा है। यह उन फोन सेटों में उपलब्ध होता है जिसमें मल्टी मीडिया डिस्क यानी एम.एम.एस होता है। अब तो ऐसे मोबाइल फ़ोन भी उपलब्ध हैं जिन पर 10 से 20 मिनट की फ़िल्म बनाई जा सके। उसे भेजा जा सके। इसके द्वारा इंटरनेट सर्च इंजन से सूचनाएँ भी प्राप्त की जा सकती हैं संक्षेप में कहें तो इंटरनेट का उपयोग भी मोबाइलफोन पर संभव है। यानीकि दुनिया आपकी मुट्ठी में।

इस फोन की खासियत यह है कि जिस व्यक्ति के पास यह है वह चाहे देश-दुनिया

के किसी भी कोने में बैठा हो, चल रहा हो, उससे आसानी से संपर्क किया जा सकता है। इसके अलावा कोई भी व्यक्ति दुनिया के किसी भी कोने से घटना या दृश्य के चित्र खींच कर दूसरे स्थान पर तुरंत भेज सकता है। पहले ऐसा करना काफ़ी मुश्किल काम होता था। पहले कैमरे से चित्र खींचा जाता था, फिर उसका प्रिंट निकाला जाता था, फिर उन्हें भेजा जाता था जिसमें काफ़ी समय लग जाता था। अब चित्र खींचने के बाद तुरंत भेजा जा सकता है। टेलीविज़न पर समाचार प्रसारित करने वाले चैनल तो इसी प्रणाली पर काम करने वाले डिजिटल कैमरों का उपयोग भी करने लगे हैं। डिजिटल कैमरे में साधारण कैमरे की तरह रील डालने की ज़रूरत नहीं होती। कैमरे के भीतर उसकी मेमोरी यानी स्मृति निर्धारित होती है जिसकी क्षमता के मुताबिक कैमरा दृश्य का बिंब कूट भाषा में दर्ज कर लेता है। उस कूट भाषा को जब कंप्यूटर के माध्यम से खोला जाता है तो वह दृश्य दिखाई देने लगता है।

संचार क्रांति के इस युग में मोबाइल फोन सूचनाएँ पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बन कर उभरा है। विशेष रूप से रेडियो और टेलीविजन पर सूचनाएँ-समाचार भेजने-प्राप्त करने में इससे काफ़ी सुविधा हुई है। पहले सूचना भेजने के लिए फैक्स या टेलीग्राम करना पड़ता था, अब मोबाइल फोन से ही लिखित, वाचिक या चित्र के रूप में सूचनाएँ भेजी जाने लगी हैं। इसके अलावा मोबाइल धारक अगर किसी से बात करने की बजाय लिखित रूप में संदेश भेजना चाहता है तो वह एस.एम.एस. यानी शॉर्ट मेसेज सर्विस का इस्तेमाल कर सकता है। यही नहीं मोबाइल को कंप्यूटर से जोड़कर इंटरनेट सुविधा का भी लाभ उठाया जा सकता है।

कंप्यूटर और इंटरनेट

कंप्यूटर अब किसी के लिए अपरिचित नहीं रह गया है। यह एक ऐसा उपकरण है, जिसके कारण संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई है। इस पर अखबारों, रेडियो, टेलीविज़न के लिए समाचार लिखे जा सकते हैं, संपादित किए जा सकते हैं और प्रकाशित-प्रसारित किए जा सकते हैं। पहले जहाँ अखबारों की डिज़ाइन काट और चिपका कर तैयार की जाती थी अब उसकी ज़रूरत नहीं रह गई है। अब कंप्यूटर पर समाचारों को टाइप कर फोटो स्कैन कर पूरा का पूरा अखबार बहुत कम समय में तैयार किया जाने लगा है। यही नहीं, अखबार के पूरे के पूरे पन्ने को एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा और सीधे मशीन पर प्रकाशित किया जा सकता है। जैसा कि आपको हम पहले ही बता चुके हैं अखबारों के प्रकाशन के लिए समय की कमी रहती है इसलिए कंप्यूटर पर अखबारों की डिजाइन की सुविधा उपलब्ध हो जाने से देर रात तक के ताज़ा समाचारों का इंतज़ार कर उनका प्रकाशन कर पाना अब आसान हो गया है। यही नहीं अब रंगीन अखबार का प्रकाशन काफ़ी आसान और सस्ता हो गया है। सुंदर से सुंदर तरीके से इनका प्रकाशन संभव है।

इसी तरह रेडियो और टेलीविज़न पर भी समाचारों और दूसरे कार्यक्रमों को तैयार करने में काफ़ी आसानी हो गई है। जब से टेलीविजन पर समाचार चैनलों की होड़ शुरू हुई है, ताज़ा से ताज़ा समाचारों के प्रसारण की होड़ मच गई है। कंप्यूटर के आ जाने से

अब कहीं भी समाचार, चित्रों, सूचनाओं का संकलन करना आसान हो गया है। समाचार संकलन के साथ ही बहुत कम समय में कंप्यूटर के माध्यम से इनका संपादन
अ ा ॅ र
निर्धारित समय में प्रसारण आसान हो गया है। देश या दुनिया के किसी भी कोने में बैठा संवाददाता समाचारों का संकलन, संपादन कर अपने मुख्य कार्यालय अथवा प्रसारण केंद्र को इंटरनेट के ज़रिए भेज सकता है, जिसे जस का तस प्रसारण किया जा सकता है। पहले ऐसा कर पाना संभव नहीं था। संवाददाता जो समाचार, सूचना अपने केंद्र को भेजता था उसका संपादन करने में काफ़ी समय लग जाता था, फिर से निर्धारित समय में प्रसारण योग्य बनाने के लिए काफ़ी कतर-ब्योंत करनी पड़ती थी। यही नहीं फिल्म निर्माण में भी कंप्यूटर के आने से बहुत आसानी हो गई है, खासकर उनके संपादन में।

इंटरनेट

इंटरनेट का अर्थ है कंप्यूटरों का जाल। यह जाल स्थानीय स्तर पर भी तैयार किया जा सकता है और राष्ट्रीय अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी। जब कई कंप्यूटरों को सर्वर के ज़रिए जोड़ दिया जाता है तो वे एक जैसे वातावरण में काम करने लगते हैं। इसी तरह जब इन्हें उपग्रह के ज़रिए जोड़ दिया जाता है तो दुनिया भर में कंप्यूटरों का एक जाल तैयार हो जाता है। इंटरनेट सर्वर के ज़रिए जुड़े कंप्यूटरों से कई मायनों में भिन्न होता है। इंटरनेट में कार्यक्रम तैयार कर लिखित या चित्र रूप में टेलीविज़न की तरह प्रसारित किए जाते हैं। जिस तरह आप अलग-अलग चैनल बदल कर टेलीविज़न के अलग-अलग कार्यक्रम देख सकते हैं, उसी तरह इंटरनेट पर साइट लॉग ऑन करके अपनी मनचाही सूचनाएँ इकट्ठी कर सकते हैं। इस तरह इंटरनेट एक प्रकार की समृद्ध लाइब्रेरी है। जिस तरह लाइब्रेरी से मनचाही पुस्तक निकाल कर पढ़ी जा सकती है उसी तरह इंटरनेट की अलग-अलग साइटों से जानकारियाँ हासिल की जा सकती हैं। अगर आपको यह जानकारी नहीं है कि किस विषय पर जानकारी कहाँ, किस साइट पर मिलेगी तो आप सर्च इंजन में अपना विषय टाइप कर इसकी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

चित्र 35.3: साइबर केफे पर इंटरनेट का उपयोग

इंटरनेट एक तरह से मुद्रित, दृश्य-श्रव्य माध्यमों का मिला-जुला रूप है। यह न सिर्फ जानकारियाँ इकट्ठी करने का साधन है बल्कि इसके ज़रिए संदेश भी पलक झपकते दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में भेजा जा सकता है। इसके जरिए लोगों से बात की जा सकती है, उनके चित्र प्राप्त किए जा सकते हैं, अनुसंधान किए जा सकते हैं

और दुनिया भर में उनका प्रसार किया जा सकता है। अब तो आप इंटरनेट के ज़रिए घर बैठे खरीदारी भी कर सकते हैं, नए-नए मित्र बना सकते हैं। इस तरह इंटरनेट एक त्वरित और बहु उपयोगी संचार माध्यम के रूप में विकसित हुआ है। जहाँ पहले एक फाइल को एक शहर या विभाग से दूसरे विभाग में भिजवाने और वहाँ से कार्यवाही हो कर वापस आने में कई दिन लग जाते थे, अब इंटरनेट के ज़रिए पल भर में यह काम किया जा सकता है। दुनिया के किसी भी कोने में बैठा व्यापारी या व्यवसायी दूसरे व्यवसायी से बातचीत कर इंटरेनट के ज़रिए सौदा तय कर सकता है। सरकार के विभाग दूसरे विभागों से परामर्श कर सकते हैं। एक किसान दुनिया के बाजारों में अपनी फसलों की कीमतों का अध्ययन कर सकता है, नए-नए बीज, खाद, उपकरणों और कृषि योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है।

अब लाखों की संख्या में इंटरनेट साइट उपलब्ध हैं, जिनमें बहुत सारी निजी कंपनियों द्वारा तैयार की गई हैं तो सरकारी विभागों, निजी संस्थाओं और स्वयंसेवी संगठनों द्वारा भी तैयार की गई हैं। सभी विभिन्न क्षेत्रों की जानकारियाँ, अनुसंधान, अवसर आदि की जानकारियाँ उपलब्ध कराती हैं। आपके राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की भी एक साइट है, जिसका पता आपकी पुस्तकों के पीछे दिया गया है। इसे लॉग ऑन करके आप यहाँ की गतिविधियों और विभिन्न योजनाओं की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसी तरह दूसरी शिक्षा संस्थाओं की भी साइट हैं। अब तो इंटरनेट के ज़रिए आप नौकरी और रोज़गार के अवसरों की जानकारियाँ भी हासिल कर सकते हैं। यही नहीं कई शैक्षणिक संस्थान तो इंटरनेट के ज़रिए परीक्षाएँ भी आयोजित करने लगे हैं।

इंटरनेट के उपयोग में एक सुविधा यह होती है कि रेडियो, टेलीविज़न या पत्र-पत्रिकाओं की तरह इसके उपयोग के लिए निश्चित समय सीमा का ध्यान रखना ज़रूरी नहीं होता। इसे जब मर्जी खोल कर उपयोग किया जा सकता है। हाँ, यह बाकी संचार माध्यमों की अपेक्षा थोड़ा महँगा अवश्य है। इसके उपयोग के लिए एक कंप्यूटर और एक फोन या इंटरनेट कनेक्शन की ज़रूरत होती है। मगर जिन लोगों के पास ये साधन नहीं हैं वे भी साइबर कैफे में जाकर प्रति घंटे की दर से भुगतान कर इसका उपयोग कर सकते हैं। अब तो छोटे-छोटे कस्बों में भी साइबर कैफे खुल गए हैं। अगर आपने अभी तक इंटरनेट का उपयोग नहीं किया है तो किसी साइबर कैफे में जाकर इसका इस्तेमाल कीजिए और देखिए कि यह कितना रोचक, ज्ञानवर्धक और उपयोगी संचार माध्यम है।

पाठगत प्रश्न 35.4

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. मोबाइल फोन के माध्यम से

   (क) सिर्फ बात की जा सकती है

टिप्पणी

(ख) सिर्फ संदेश भेजा जा सकता है

(ग) लिखित, वाचिक, चित्र रूप में सूचनाओं का आदान-प्रदान संभव है।

(घ) सूचनाएँ भेजना कठिन प्रक्रिया है

2. निम्नलिखित में से गलत कथन छाँटिए:

(क) इंटरनेट का इस्तेमाल सहज नहीं है

(ख) इंटरनेट के ज़रिए दुनिया भर में त्वरित रूप से सूचनाओं-संदेशों का आदान-प्रदान किया जा सकता है

(ग) मोबाइल फोन इंटरनेट का भी काम कर सकता है

(घ) इंटरनेट पर दृश्य-श्रव्य कार्यक्रमों का लाभ भी उठाया जा सकता

35.5 आपने क्या सीखा

- संचार माध्यमों के ज़रिए देश-विदेश की विभिन्न क्षेत्रों से जुड़ी सूचनाएँ और जानकारियाँ प्राप्त की जा सकती हैं।
- ये न सिर्फ़ समाचारों का सशक्त माध्यम होते हैं बल्कि लोगों को जागरूक बनाने का भी काम करते हैं इसीलिए इन्हें लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है।
- ये मुख्य रूप से तीन प्रकार के होते हैं—मुद्रित, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य।
- मुद्रित माध्यमों के अंतर्गत अखबार और पत्रिकाएँ आती हैं।
- रेडियो और टेपरिकॉर्डर श्रव्य माध्यम हैं।
- टेलीविज़न दृश्य-श्रव्य माध्यम हैं।
- इंटरनेट मुद्रित, श्रव्य और दृश्य-श्रव्य माध्यम का मिला-जुला रूप है।
- अखबारों में हर दिन नए समाचार होते हैं इसलिए इनकी आयु एक दिन की होती है जबकि पत्रिकाएँ सावधिक होती हैं और इनमें मुख्य रूप से समाचारों के विश्लेषण छपते हैं इसलिए इनकी आयु अखबारों की अपेक्षा अधिक होती है।
- श्रव्य और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की सूचनाएँ-कार्यक्रमों का प्रसारण निश्चित अवधि में होता है इसलिए इनके प्रसारण का लाभ उठाने के लिए उस समय का ध्यान रखना आवश्यक होता है।
- अखबारों-पत्रिकाओं की सूचनाओं-समाचारों को काट कर सहेज कर रखा जा सकता है जबकि रेडियो या टेलीविज़न के कार्यक्रमों को ऐसा कर पाना कठिन है।
- मोबाइल और इंटरनेट सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान और संकलन के मामले में सबसे तेज़ संचार माध्यम हैं।

35.6 योग्यता विस्तार

- उपलब्ध समाचार पत्र के विभिन्न पहलुओं और स्तंभों का सूचीकरण कीजिए।
- अपने शहर के निम्नलिखित स्थानों का संदर्शन कीजिए और विविध क्रियाकलापों की ज्ञान वृद्धि कीजिए:

  आकाशवाणी भवन, दूरदर्शन केंद्र।
- रेडिया, दूरदर्शन तथा अन्य समाचार चैनलों से प्रसारित खबरों में अंतर की सूची बनाइए।

35.7 पाठांत प्रश्न

पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए:

1. मीडिया से आपका क्या तात्पर्य है? यह किस प्रकार लोगों को जागरूक बनाने में उपयोगी है।
2. मुद्रित और दृश्य-श्रव्य माध्यमों की सूचनाओं की प्रकृति में क्या अंतर होता है?
3. एजूसेट की क्या उपयोगिता है?
4. इंटरनेट की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए।
5. सूचनाओं के आदान-प्रदान में मोबाइल फोन की भूमिका पर टिप्पणी लिखिए।
6. मीडिया सामाजिक बदलाव में किस तरह से भूमिका निभाता है।
7. क्या आप नारी अधिकार, महिला सशक्तिकरण के पक्षधर हैं? अपनी बात को जन-जन तक कैसे पहुँचाएंगे? ऐसे में आपकी मीडिया से क्या अपेक्षाएँ हैं? लिखिए।
8. लिंग भेद, किशोर-किशोरियों की समस्याओं और यौन उत्पीड़न के किस्से आप आए दिन सुनते रहते हैं। क्या आपको लगता है संचार माध्यम इन्हें बढ़ावा दे रहे हैं या फिर इन पर काबू पाने में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। तर्क सहित उत्तर की पुष्टि कीजिए।

35.8 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

35.1 1. (ग) 2. (घ) 3. (ग)

35.2 1. (ख), (ग), (घ) 2. (घ)

35.3 1. (ग) 2. (ग) 3. (क)

35.4 1. (ग) 2. (क)

301hi35B

35
भारतीय विज्ञान

भारतीय विज्ञान की परंपरा दुनिया की प्राचीनतम वैज्ञानिक परंपराओं में एक है। भारत में विज्ञान का उद्‌भव ईसा से 3000 वर्ष पूर्व हुआ है। हड़प्पा तथा मोहन-जोदड़ो की खुदाई से प्राप्त सिंधु घाटी के प्रमाणों से वहाँ के लोगों की वैज्ञानिक दृष्टि तथा वैज्ञानिक उपकरणों के प्रयोगों का पता चलता है। प्राचीन काल में चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में चरक और सुश्रुत, खगोल विज्ञान व गणित के क्षेत्र में आर्यभट्‌ट, ब्रह्मगुप्त और आर्यभट्‌ट द्वितीय और रसायन विज्ञान में नागार्जुन की खोजों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनकी खोजों का प्रयोग आज भी किसी-न-किसी रूप में हो रहा है। आज विज्ञान का स्वरूप काफी विकसित हो चुका है। पूरी दुनिया में तेजी से वैज्ञानिक खोजें हो रही हैं। इन आधुनिक वैज्ञानिक खोजों की दौड़ में भारत के जगदीश चंद्र बसु, प्रफुल्ल चंद्र राय, सी. वी. रमन, सत्येंद्रनाथ बोस, मेघनाथ साहा, प्रशांतचंद्र महाललोबिस, श्रीनिवास रामानुजम, हरगोविंद खुराना आदि का वनस्पति, भौतिकी, गणित, रसायन, यांत्रिकी, चिकित्सा विज्ञान, खगोल विज्ञान आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान है।

इस पाठ में हम भारतीय विज्ञान के उद्‌भव, विकास, उपलब्धियों तथा संभावनाओं पर विस्तार से चर्चा करेंगे।

उद्‌देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- प्राचीन भारत की गौरवशाली वैज्ञानिक परंपरा के बारे में बता सकेंगे;
- प्राचीन भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का वर्णन कर सकेंगे;
- प्राचीन भारत की वैज्ञानिक परंपरा का दुनिया की अन्य प्राचीन वैज्ञानिक परंपराओं से तुलना कर सकेंगे;
- मध्यकालीन भारत में हुई वैज्ञानिक प्रगति का विवरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;

- आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों की प्राचीन उपलब्धियों से तुलना कर सकेंगे;
- विभिन्न क्षेत्रों में आधुनिक वैज्ञानिक उपलब्धियों का विश्लेषण कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

नीचे दिए गए चित्र को ध्यान से देखिए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

(ii) उक्त चित्र में दर्शाया गया यह लौह स्तंभ कहाँ स्थित है ?

——————————————————

(ii) आपके विचार से यह लगभग कितना पुराना होगा ?

——————————————————

(iii) इस लौह स्तंभ की क्या विशेषता है?

——————————————————

जी, हाँ ! यह दिल्ली में कुतुबमीनार के परिसर में स्थित एक लौह स्तंभ है, जो चौथी सदी में यहाँ स्थापित किया गया था। आज से 1700 साल पहले बने इस लौह स्तंभ की विचित्रता यह है कि आज तक इस में कहीं भी जंग नहीं लगी है। आप सोचिए, इसमें जंग क्यों नहीं लगी? इसके पीछे क्या वैज्ञानिक कारण हैं?

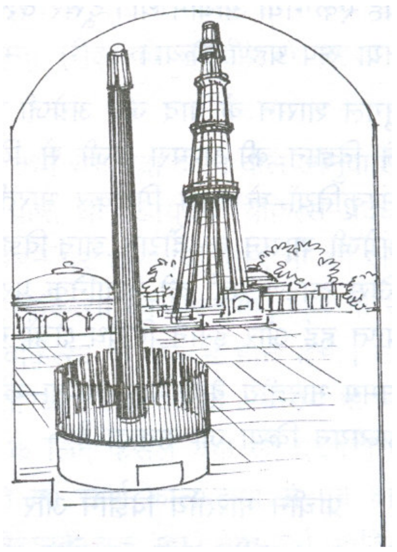

चित्र 35.1

35.1 आइए, समझें

भारतीय विज्ञान : विकास के विभिन्न चरण तथा उपलब्धियाँ

भारतीय विज्ञान का विकास प्राचीन समय में ही हो गया था। अगर यह कहा जाए कि भारतीय विज्ञान की परंपरा दुनिया की प्राचीनतम परंपरा है, तो अतिशयोक्ति न होगी। जिस समय यूरोप में घुमक्कड़ जातियाँ अभी अपनी बस्तियाँ बसाना सीख रही थीं, उस

समय भारत में सिंधु घाटी के लोग सुनियोजित ढंग से नगर बसा कर रहने लगे थे। उस समय तक भवन-निर्माण, धातु-विज्ञान, वस्त्र-निर्माण, परिवहन-व्यवस्था आदि उन्नत दशा में विकसित हो चुके थे। फिर आर्यों के साथ भारत में विज्ञान की परंपरा और भी विकसित हो गई। इस काल में गणित, ज्योतिष, रसायन, खगोल, चिकित्सा, धातु आदि क्षेत्रों में विज्ञान ने खूब उन्नति की। विज्ञान की यह परंपरा ईसा के जन्म से लगभग 200 वर्ष पूर्व से शुरू होकर ईसा के जन्म के बाद लगभग 11 वीं सदी तक काफी उन्नत अवस्था में थी। इस बीच आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, बोधायन, चरक, सुश्रुत, नागार्जुन, कणाद से लेकर सवाई जयसिंह तक वैज्ञानिकों की एक लंबी परंपरा विकसित हुई।

मध्यकाल यानी मुगलों के आने के बाद देश में लगातार लड़ाइयाँ चलती रहने के कारण भारतीय वैज्ञानिक परंपरा का विकास थोड़ा रुका अवश्य, किंतु प्राचीन भारतीय विज्ञान पर आधारित ग्रंथों के अरबी-फारसी में खूब अनुवाद हुए। यह एक महत्त्वपूर्ण चरण था, जिसका परिणाम हुआ कि भारतीय वैज्ञानिक परंपरा दूर देशों तक पहुँची जिसने सभी को प्रभावित किया। भारतीय वैज्ञानिक परंपरा के विकास का यह एक नया आयाम था। दूसरे देशों की वैज्ञानिक परंपराओं के साथ मिलकर इसने नया रूप ग्रहण किया।

मुगल शासन के बाद जब अंग्रेजी शासन स्थापित हुआ तो भारत में एक बार फिर से विज्ञान की परंपरा तेजी से विकास की ओर उन्मुख हुई। अब तक विभिन्न संस्कृतियों के साथ मिलकर भारतीय वैज्ञानिक परंपरा काफी प्रौढ़ हो चुकी थी। अंग्रेजी शासन के दौरान ज्ञान-विज्ञान के विविध स्रोत और संसाधन विकसित हुए, जिस कारण यहाँ की वैज्ञानिक परंपरा को विकसित होने के लिए खूब उर्वर भूमि प्राप्त हुई और इसने विविध क्षेत्रों में उपलब्धियाँ हासिल की।

समग्र भारतीय वैज्ञानिक परंपरा को निम्नलिखित दो चरणों में बाँटकर विस्तार से अध्ययन किया जा सकता है –

1. प्राचीन भारतीय विज्ञान और
2. मध्यकालीन तथा आधुनिक भारतीय विज्ञान

35.2 प्राचीन भारतीय विज्ञान

भारत में वैज्ञानिक अनुसंधानों और अविष्कारों की परंपरा आदिकाल से चली आ रही है। जिस समय यूरोप में घुमक्कड़ जनजातियाँ बस रही थीं उस समय सिंधु घाटी के लोग सुनियोजित नगर बसाकर रहते थे। मोहन जोदड़ो, हड़प्पा, काली बंगा, लोथल, चंहुदड़ों बनवाली, सुरकोटड़ा आदि स्थानों पर हुई खुदाई में मिले नगरों के खंडहर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। इन नगरों के भवन, सड़कें, नालियाँ, स्नानागार, कोठार आदि पक्की ईंटों से बने थे। यहाँ के निवासी जहाजों द्वारा विदेश से व्यापार करते थे। माप-तौल का ज्ञान उन्हें था। परिवहन के लिए बैलगाड़ी का उपयोग होता था। कृषि उन्नत अवस्था में थी। वे काँसे का उपयोग करते थे। काँसे के बने हथियार और औजार इसका प्रमाण है। सुनार सोने, चाँदी और बहुमूल्य रत्नों के

आभूषण बनाते थे। इसका अर्थ यह हुआ कि ये लोग खनन विद्या में पारंगत थे। कठोर रत्नों को काटने, गढ़ने, छेद करने के लिए उनके पास उन्नत कोटि के उपकरण थे। ये लोग ऊनी और सूती वस्त्र बनाना जानते थे। इन लोगों की संस्कृति को इतिहासकार हड़प्पा संस्कृति के नाम से जानते थे।

आपने इतिहास में वैदिक काल के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। ये लोग खगोल विज्ञान का अच्छा ज्ञान रखते थे। वैदिक भारतीयों को 27 नक्षत्रों का ज्ञान था। वे वर्ष, महीनों और दिनों के रूप में समय के विभाजन से परिचित थे। 'लगध' नाम के ऋषि ने 'ज्योतिष वेदांग' में तत्कालीन खगोलीय ज्ञान को व्यवस्थित कर दिया था।

गणित और ज्यामिति का वैदिक युग में पर्याप्त विकास हुआ था। वैदिककालीन भारतीय 10^{12} तक गिन सकते थे। इसके विपरीत उसी कालखंड में यूनानी केवल 10^4 तक और रोमवासी 10^8 तक गणना कर सकते थे।

वैदिक युग की विशिष्ट उपलब्धि चिकित्सा के क्षेत्र में थी। मानव शरीर के सूक्ष्म अध्ययन के लिए वे शव विच्छेदन (पोस्ट मार्टम) प्रक्रिया का कुशलता से उपयोग करते थे। प्राकृतिक जड़ी-बूटियों और उनके औषधीय गुणों के बारे में लोगों को विशद ज्ञान था। तत्कालीन चिकित्सक स्नायुतंत्र और सुषुम्ना (रीढ़ की हड्डी) के महत्त्व से भली-भाँति परिचित थे।

मौसम-परिवर्तन शरीर, में सूक्ष्मजीवों की उपस्थिति तथा रोग पैदा करने वाले आनुवांशिक कारकों आदि के सिद्धांतों को वहाँ से मान्यता प्राप्त थी। आयुर्वेद चिकित्सा-पद्धति का बहुतायत में उपयोग होता था। आवश्यकता पड़ने पर शल्य-चिकित्सा भी की जाती थी। बाद में तो अरबों तथा यूनानियों ने भी शल्य-चिकित्सा को अपनाया। फिर तो रोम साम्राज्य में भारतीय जड़ी-बूटियों की भी माँग चिकित्सा के क्षेत्र में होने लगी। उसी समय वनस्पतियों और जंतुओं के बाह्य तथा आंतरिक संरचनाओं के अध्ययन भी किए गए। कृषि के क्षेत्र में मिट्टी की उवर्रता बढ़ाने के लिए फसल चक्र की पद्धति तब भी अपनाई जाती थी। भारत में वैज्ञानिक प्रगति का स्वर्ण काल ईसा से पूर्व चौथी शताब्दी से लेकर ईसा के बाद छठी या सातवीं शताब्दी तक रहा। धातु-कर्म, भौतिकी, रसायन-शास्त्र जैसे विज्ञानों का विकास भी इस युग में हुआ था। मौर्यकाल में युद्ध के लिए अस्त्रों और शस्त्रों का विकास किया गया था। कुछ यांत्रिक अस्त्रों, जैसे – प्रक्षेपकों का विकास तथा सिंचाई में अभियांत्रिकी का उपयोग उल्लेखनीय है। इस काल में भू-सर्वेक्षण की तकनीक अत्यंत विकसित थी। विशालकाय प्रस्तर स्तंभों के निर्माण में अनेक प्रकार के वैज्ञानिक कौशलों का उपयोग इस युग की एक अन्य विशेषता है।

इसके बाद गुप्तकाल में विज्ञान की सभी शाखाओं में उल्लेखनीय प्रगति हुई। बीज गणित, ज्यामिति, रसायन शास्त्र, भौतिकी, धातुशिल्प, चिकित्सा, खगोल विज्ञान का विकास चरम सीमा पर था। इस युग में अनेक ख्याति प्राप्त वैज्ञानिक हुए जिनके अनुसंधानों और आविष्कारों का लोहा तत्कालीन सभ्य समाज के लोग मानते थे।

पाठगत प्रश्न 35.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

1. 'लगध' नामक ऋषि का संबंध विज्ञान की किस शाखा से था ?

   (क) ज्योतिष विज्ञान (ग) भौतिक विज्ञान
   (ख) रसायन विज्ञान (घ) खगोल विज्ञान

2. वैदिक कालीन भारतीय कितने अंकों तक की गणना कर सकते थे ?

   (क) 10^{14} (ग) 10^{8}
   (ख) 10^{12} (घ) 10^{4}

3. वैदिक काल के लोग इनमें से किस धातु का प्रयोग नहीं करते थे ?

   (क) काँसा (ग) लोहा
   (ख) ताँबा (घ) चाँदी

35.3 प्राचीन भारतीय विज्ञान की उपलब्धियाँ

प्राचीन भारतीय विज्ञान की परंपरा और विकास के बारे में आप ऊपर पढ़ चुके हैं। निश्चित रूप से आपके मन में प्राचीन वैज्ञानिकों और उनकी वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में जानने की जिज्ञासा पैदा हो रही होगी। तो आइए, प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियों के बारे में विस्तार से चर्चा करें।

1. खगोल विज्ञान

यह विज्ञान भारत में ही विकसित हुआ। प्रसिद्ध जर्मन खगोल विज्ञानी कॉपरनिकस से लगभग 1000 वर्ष पूर्व आर्यभट्ट ने पृथ्वी की गोल आकृति और इसके अपनी धुरी पर घूमने की पुष्टि कर दी थी। इसी तरह आइजैक न्यूटन से 1000 वर्ष पूर्व ही ब्रह्मगुप्त ने पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत की पुष्टि कर दी थी। यह एक अलग बात है कि किन्हीं कारणों से इनका श्रेय पाश्चात्य वैज्ञानिकों को मिला।

भारतीय खगोल विज्ञान का उद्भव वेदों से माना जाता है। वैदिककालीन भारतीय धर्मप्राण व्यक्ति थे। वे अपने यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ लग्न देखकर किया करते थे। शुभ लग्न जानने के लिए उन्होंने खगोल विज्ञान का विकास किया था। वैदिक आर्य सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन गति से परिचित थे। वैदिककालीन खगोल विज्ञान का एक मात्र ग्रंथ 'वेदांग ज्योतिष' है। इसकी रचना 'लगध' नामक ऋषि ने ईसा से लगभग 100 वर्ष पूर्व की थी।

महाभारत में भी खगोल विज्ञान से संबंधित जानकारी मिलती है। महाभारत में चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की चर्चा है। इस काल के लोगों को ज्ञात था कि ग्रहण

केवल अमावस्या और पूर्णिमा को ही लग सकते हैं। इस काल के लोगों का ग्रहों के विषय में भी अच्छा ज्ञान था। 'वेदांग ज्योतिष' के बाद लगभग एक हजार वर्षों तक खगोल विज्ञान का कोई ग्रंथ नहीं मिलता।

पाँचवीं शताब्दी में आर्यभट्ट ने सर्वप्रथम लोगों को बताया कि पृथ्वी गोल है, और यह अपनी धुरी पर चक्कर लगाती है। उन्होंने पृथ्वी के आकार, गति और परिधि का अनुमान भी लगाया था। आर्यभट्ट ने सूर्य और चंद्र ग्रहण के सही कारणों का पता लगाया। उनके अनुसार चंद्रमा और पृथ्वी की परछाई पड़ने से ग्रहण लगता है। चंद्रमा में अपना प्रकाश नहीं है, वह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित है। इसी प्रकार आर्यभट्ट ने राहु-केतु द्वारा सूर्य और चंद्र को ग्रस लेने के सिद्धांत का खंडन किया और ग्रहण का सही वैज्ञानिक सिद्धांत प्रतिपादित किया। आर्यभट्ट ने 'आर्यभटीय' तथा 'आर्य सिद्धांत' नामक ग्रंथों की रचना की थी।

आर्यभट्ट के बाद छठी शताब्दी में वराहमिहिर नाम के खगोल वैज्ञानिक हुए। विज्ञान के इतिहास में वे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने कहा कि कोई ऐसी शक्ति है, जो वस्तुओं को धरातल से बाँधे रखती है। आज इसी शक्ति को गुरुत्वाकर्षण कहते हैं। वराहमिहिर का कहना था कि पृथ्वी गोल है, जिसके धरातल पर पहाड़, नदियाँ, पेड़-पौधे, नगर आदि फैले हुए हैं। 'पंचसिद्धांतिका' और 'सूर्य सिद्धांत' उनकी खगोल विज्ञान संबंधी पुस्तकें हैं। इनके अतिरिक्त वराहमिहिर ने 'वृहत्संहिता' और 'वृहज्जातक' नाम की पुस्तकें भी लिखी हैं।

इसके बाद भारतीय खगोल विज्ञान में ब्रह्मगुप्त का भी काफ़ी महत्त्वपूर्ण योगदान है। इनका कार्यकाल सातवीं शताब्दी से माना जाता है। वे खगोल विज्ञान संबंधी गणनाओं में संभवतः बीजगणित का प्रयोग करने वाले भारत के सबसे पहले महान गणितज्ञ थे। 'ब्रह्मगुप्त सिद्धांत' इनका प्रमुख ग्रंथ है। इसके अतिरिक्त जीवन के अंतिम वर्षों में ब्रह्मगुप्त ने 'खंड खाद्यक' नामक ग्रंथ भी लिखा था। इन्होंने विभिन्न ग्रहों की गति और स्थिति, उनके उदय और अस्त, युति तथा सूर्य ग्रहण की गणना करने की विधियों का वर्णन किया है। ब्रह्मगुप्त का ग्रहों का ज्ञान प्रत्यक्ष वेध (अवलोकन) पर आधारित था। इनका मानना था कि जब कभी गणना और वेध में अंतर पड़ने लगे तो वेध के द्वारा गणना शुद्ध कर लेनी चाहिए। ये पृथ्वी को गोल मानते थे तथा पुराणों में पृथ्वी को चपटी मानने के विचार की इन्होंने कड़ी आलोचना की है। ब्रह्मगुप्त आर्यभट्ट के अनेक सिद्धांतों के साथ पृथ्वी के अपनी धुरी पर घूमने के सिद्धांत के भी आलोचक थे। ब्रह्मगुप्त पृथ्वी की आकर्षण शक्ति के सिद्धांत से सहमत थे। उनके अनुसार 'वस्तुएँ पृथ्वी की ओर गिरती हैं क्योंकि पृथ्वी की प्रकृति है कि वह उन्हें अपनी ओर आकर्षित करे।'

ब्रह्मगुप्त के बाद खगोल विज्ञान में भास्कराचार्य का विशिष्ट योगदान है। इनका समय बारहवीं शताब्दी था। वे गणित के प्रकांड पंडित थे। इन्होंने 'सिद्धांत शिरोमणि' और 'करण कुतुहल' नामक दो ग्रंथों की रचना की थी। खगोलविद् के रूप में भास्कराचार्य अपनी 'तात्कालिक गति' की अवधारणा के लिए प्रसिद्ध हैं। इससे खगोल वैज्ञानिकों को ग्रहों की गति का सही ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है।

भास्कर ने एक तो गोले की सतह और उसके घनफल को निकालने के जर्मन ज्योतिर्विद केपलर के नियम का पूर्वाभ्यास कर लिया था। दूसरे उन्होंने सत्रहवीं शताब्दी में जन्मे आइजैक न्यूटन से लगभग 500 वर्ष पूर्व गुरुत्वाकर्षण सिद्धांत का प्रतिपादन किया था।

2. गणित

अधिकतर खोज और अविष्कार जिन पर आज यूरोप को इतना गर्व है, एक विकसित गणितीय पद्धति के बिना असंभव थे। यह पद्धति भी संभव नहीं हो पाती यदि यूरोप भारी-भरकम रोमन अंकों के बंधन में जकड़ा रहता। नई पद्धति को खोज निकालने वाला वह अज्ञात व्यक्ति भारत का पुत्र था। मध्ययुगीन भारतीय गणितज्ञों, जैसे ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी), महावीर (नवीं शताब्दी), और भास्कर (बारहवीं शताब्दी) ने ऐसी कई खोजे कीं, जिनसे पुनर्जागरण काल या उसके बाद तक भी यूरोप अपरिचित था। इसमें कोई मतभेद नहीं कि भारत में गणित की उच्चकोटि की परंपरा थी। आइए, इस पर कुछ विस्तार से चर्चा करें।

2.1 अंकगणित

हड़प्पाकालीन संस्कृति के लोग अवश्य ही अंकों और संख्याओं से परिचित रहे होंगे। इस युग की लिपि के अब तक न पढ़े जा सकने के कारण निश्चित रूप से कुछ नहीं कहा जा सकता। लेकिन भवन, सड़कों, नालियों, स्नानागारों आदि के निर्माण में अंकों और संख्याओं का निश्चित रूप से उपयोग हुआ होगा। माप-तौल और व्यापार क्या बिना अंकों और संख्याओं के संभव था? हड़प्पाकालीन संस्कृति की लिपि के पढ़े जाने के बाद निश्चित ही अनेक नए तथ्य उद्घाटित होंगे।

इसके बाद वैदिककालीन भारतीय अंकों और संख्याओं का उपयोग करते थे। वैदिक युग के एक ऋषि मेधातिथि 10^{12} तक की बड़ी संख्याओं से परिचित थे। वे अपनी गणनाओं में दस और इसके गुणकों का उपयोग करते थे। 'यजुर्वेद संहिता' अध्याय 17, मंत्र 2 में 10,00,00,00,00,000 (एक पर बारह शून्य, दस खरब) तक की संख्या का उल्लेख है। ईसा से 100 वर्ष पूर्व का जैन ग्रंथ 'अनुयोग द्वार सूत्र' है। इसमें असंख्य तक गणना की गई है, जिसका परिमाण 10^{140} के बराबर है। उस समय यूनान में बड़ी-से-बड़ी संख्या का नाम मिरियड (Myriad) था, जो 10,000 (दस सहस्त्र) थे और रोम के लोगों की बड़ी-से-बड़ी संख्या का नाम मिल्ली (Mille) था, जो 1000 (सहस्त्र) थी। शून्य का उपयोग पिंगल ने अपने छंदः सूत्र में ईसा के 200 वर्ष पूर्व किया था। इसके बाद तो शून्य का उपयोग अनेक ग्रंथों में किया गया है। लेकिन ब्रह्मगुप्त (छठी शताब्दी) पहले भारतीय गणितज्ञ थे जिन्होंने शून्य को प्रयोग में लाने के नियम बनाए। इनके अनुसार–

- शून्य को किसी संख्या से घटाने या उसमें जोड़ने पर उस संख्या पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
- शून्य से किसी संख्या का गुणनफल भी शून्य होता है।

टिप्पणी

- किसी संख्या को शून्य से विभाजित करने पर उसका परिणाम अनंत होता है।
- उन्होंने यह गलत कहा कि शून्य से विभाजित करो तो परिणाम शून्य होता है क्योंकि आज हम जानते हैं कि यह अनंत की संख्या होती है।

अब यह निर्विवाद रूप से सिद्ध हो गया है कि संसार को संख्याएँ लिखने की आधुनिक प्रणाली भारत ने ही दी है।

2.2 ज्यामिति

ज्यामिति का ज्ञान हड़प्पाकालीन संस्कृति के लोगों को भी था। ईंटों की आकृति, भवनों की आकृति, सड़कों का समकोण पर काटना इस बात का द्योतक है कि उस काल के लोगों को ज्यामिति का ज्ञान था। वैदिक काल में आर्य यज्ञ की वेदियों को बनाने के लिए ज्यामिति के ज्ञान का उपयोग करते थे। 'शुल्ब सूत्र' में वर्ग और आयत बनाने की विधि दी हुई है। भुजा के संबंधों को लेकर वर्ग के समान आयत, वर्ग के समान वृत्त आदि प्रश्नों पर इस ग्रंथ में विचार किया गया है। किसी त्रिकोण के बराबर वर्ग खींच ऐसा वर्ग बनाना जो किसी वर्ग का दो गुणा, तीन गुणा अथवा एक तिहाई हो, ऐसा वर्ग बनाना, जिसका क्षेत्रफल उपस्थित वर्ग के क्षेत्र के बराबर हो, इत्यादि की रीतियाँ भी 'शुल्ब सूत्र' में दी गई हैं।

आर्यभट्ट ने वृत्त की परिधि और व्यास के अनुपात (पाई π) का मान 3.1416 स्थापित किया है। उन्होंने पहली बार कहा कि यह पाई का सन्निकट मान है।

2.3 त्रिकोणमिति

त्रिकोणमिति के क्षेत्र में भारतीयों ने जो काम किया, वह अनुपमेय और मौलिक है। इन्होंने ज्या, कोटिज्या और उत्क्रमज्या का आविष्कार किया। वराहमिहिर कृत 'सूर्य सिद्धांत' (छठी शताब्दी) में त्रिकोणमिति का जो विवरण है, उसका ज्ञान यूरोप को ब्रिग्स के द्वारा सोलहवीं शताब्दी में मिला। ब्रह्मगुप्त (सातवीं शताब्दी) ने भी त्रिकोणमिति पर लिखा है और एक ज्या सारणी भी दी है।

2.4 बीजगणित

भारतीयों ने बीजगणित में भी बड़ी दक्षता प्राप्त की थी। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, भास्कराचार्य, श्रीधराचार्य आदि प्रसिद्ध गणितज्ञ थे। बीजगणित के क्षेत्र में सबसे बड़ी उपलब्धि है अनिवार्य वर्ग समीकरण का हल प्रस्तुत करना। पाश्चात्य गणित के इतिहास में इस समीकरण के हल का श्रेय 'जॉन पेल' (1688 ई.) को दिया जाता है और इसे 'पेल समीकरण' के नाम से ही जाना जाता है, परंतु वास्तविकता यह है कि पेल से एक हजार वर्ष पूर्व ब्रह्मगुप्त ने इस समीकरण का हल प्रस्तुत कर दिया था। इसके लिए ब्रह्मगुप्त ने दो प्रमेयकाओं की खोज की थी। अनिवार्य वर्ग समीकरण के लिए भारतीय नाम वर्ग-प्रकृति है।

3. चिकित्सा

भारत में चिकित्सा विज्ञान की सुदीर्घ परंपरा है। चिकित्सा शास्त्र को वेद तुल्य सम्मान दिया गया है। यही कारण है कि भारतीय चिकित्सा पद्धति को आयुर्वेद की संज्ञा से

टिप्पणी

अभिनिहित किया जाता है। भारतीय चिकित्सा पद्धति के विषय में सर्वप्रथम लिखित ज्ञान 'अथर्ववेद' में मिलता है। अथर्ववेद में विविध रोगों के उपचारार्थ प्रयोग किए जाने संबंधी भैषज्य सूत्र संकलित हैं। इन सूत्रों में विभिन्न रोगों के नाम तथा उनके निराकरण के लिए विभिन्न प्रकार की औषधियों के नाम भी दिए गए हैं। जल चिकित्सा, सूर्य किरण चिकित्सा और मानसिक चिकित्सा के विषयों पर इसमें विस्तृत विवरण मिलता है। अथर्ववेद के बाद ईसा से लगभग 600 वर्ष पूर्व काय चिकित्सा पर 'चरकसंहिता' और शल्य चिकित्सा पर 'सुश्रुत संहिता' मिलती हैं। ये चिकित्सा शास्त्र के प्रामाणिक और विश्वविख्यात ग्रंथ हैं।

3.1 चरक संहिता

महर्षि चरक को काय चिकित्सा का प्रथम ग्रंथ लिखने का श्रेय दिया जाता है। 'चरक संहिता' को औषधीय शास्त्र में आयुर्वेद पद्धति का आधार माना जाता है। आयुर्वेद का अर्थ है 'जीवन का शास्त्र'।

चरक संभवतः इस बात को जानते थे कि शरीर में हृदय एक मुख्य अवयव है। उन्हें शरीर में रक्त संचार क्रिया का भी ज्ञान था। वे यह भी जानते थे कि कुछ बीमारियाँ ऐसे कीटाणुओं के कारण होती हैं जिन्हें हम अपनी आँखों से सीधा नहीं देख सकते। 'चरक संहिता' तत्कालीन प्रशिक्षित चिकित्सकों और चिकित्सालयों का भी विवरण मिलता है। चरक पहले चिकित्सक थे, जिन्होंने चयापचय, पाचन और शरीर प्रतिरक्षा के बारे में बताया। 'चरक संहिता' में शरीर विज्ञान, निदान शास्त्र और भ्रूण विज्ञान के विषय में जानकारी मिलती है। चरक को आनुवांशिकी के मूल सिद्धांतों का भी ज्ञान था। उन्हें उन कारणों का पता था जिससे बच्चे का लिंग निश्चित होता है। 'चरक संहिता' का अनुवाद अनेक विदेशी भाषाओं में हुआ है।

3.2 सुश्रुत संहिता

सुश्रुत रचित यह ग्रंथ भारतीय शल्य चिकित्सा पद्धति का विश्वविख्यात ग्रंथ है। इस संहिता में सुश्रुत ने अपने से पहले के शल्य चिकित्सकों के ज्ञान और अनुभवों को संकलित कर एक व्यवस्थित रूप दिया है। अपनी संहिता में उन्होंने लिखा है कि चिकित्सा विज्ञान के विद्यार्थी मृत शरीर के विच्छेदन से अपने कार्य में कुशल बनते हैं। सुश्रुत के अनुसार शव विच्छेदन एक प्रक्रिया है। सुश्रुत ने शल्य चिकित्सा के लिए 101 उपकरणों की सूची भी दी है। उनका कहना था कि इनके अतिरिक्त आवश्यकतानुसार स्वयं भी उपकरण तैयार करने चाहिए। उनकी सूची में चिमटियाँ, चाकू, सूइयाँ, सलाइयाँ तथा नलिका आकृति के वे सब उपकरण हैं जिनका प्रयोग आज का शल्य चिकित्सक करता है। शल्य चिकित्सा से पहले उपकरणों को गर्म करके कीटाणु रहित करने की बात भी उन्होंने कही है। सुश्रुत भूज नलिका में पाए जाने वाले पत्थर निकालने में, टूटी हड्डियों को जोड़ने और मोतियाबिंद की शल्य चिकित्सा में बहुत दक्ष थे। सुश्रुत को पूरे संसार में आज प्लास्टिक सर्जरी का जनक कहा जाता है। सुश्रुत संहिता में नाक, कान और ओंठ की प्लास्टिक सर्जरी का पूरा विवरण दिया गया है। चरक और सुश्रुत की ही परंपराओं को अनेक सुप्रसिद्ध चिकित्सकों ने आगे बढ़ाया। महर्षि अजेय ने नाड़ी और श्वास की गति पर प्रकाश

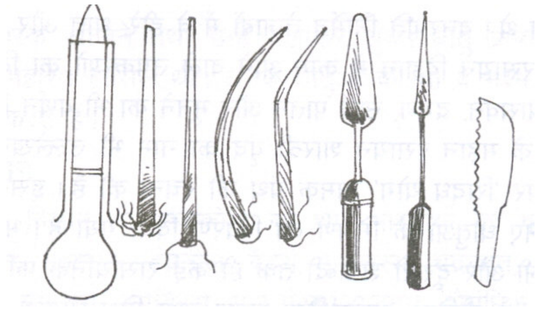

चित्र: सुश्रुत के समय में प्रयुक्त चिकित्सा औजार

डाला। महर्षि पतंजलि ने योग से शरीर को निरोग रखने के उपाय बताए। आधुनिक चिकित्सक भी अब हृदय के रोगों के लिए योग का सहारा लेते हैं। आचार्य जीवक भगवान बुद्ध के चिकित्सक थे। उन्होंने अनेक असाध्य रोगों की चिकित्सा की विधियाँ बताई हैं। वृद्धजय में गिने जाने वाले वाग्भट्ट ने 'अष्टांग संग्रह' और 'अष्टांग हृदय संहिता' की रचना की थी। इनमें आयुर्वेद का संपूर्ण ज्ञान समाहित हो गया है। माधवाकर रोग निदान और रोग लक्षणों पर प्रकाश डालने वाले पहले आचार्य थे। 'चरक संहिता' के संपादक दृढ़बल तथा 'भावप्रकाश' के लेखक भावमिश्र चिकित्सा जगत के महान आचार्य थे।

3.3 पशु चिकित्सा

भारत में पशु चिकित्सा विज्ञान भी काफ़ी विकसित था। घोड़ों, हाथियों, गाय-बैलों की चिकित्सा से संबंधित अनेक ग्रंथ उपलब्ध हैं। शालिहोत्र नामक पशु चिकित्सक के 'हय आयुर्वेद', 'अश्व लक्षण शास्त्र' तथा 'अश्व प्रशंसा' नाम के तीन ग्रंथ उपलब्ध हैं। इनमें घोड़ों के रोगों और उनके उपचार के लिए औषधियों का विवरण है। इन ग्रंथों के अनुवाद अनेक विदेशी भाषाओं में हुए। पालकप्य के 'हास्ते-आयुर्वेद' में हाथियों की शरीर रचना तथा उनके रोगों का विवरण, उनके रोगों की शल्य क्रिया और औषधियों द्वारा चिकित्सा, देखभाल और आहार का विवरण चरक, और सुश्रुत की संहिताओं में भी मिलता है।

4. भौतिकी

प्राचीन काल में भारत में अन्य विज्ञानों के साथ-साथ भौतिकी का भी प्रचलन था। कणाद ऋषि ने छठी शताब्दी ईसा पूर्व ही इस बात को सिद्ध कर दिया था कि विश्व का हर पदार्थ परमाणुओं से मिलकर बना है। उन्होंने परमाणुओं की संरचना, प्रवृत्ति तथा प्रकारों की चर्चा की है।

5. रसायन विज्ञान

भारत में रसायन विज्ञान की भी बहुत पुरानी परंपरा है। प्राचीन तथा मध्य काल में संस्कृत भाषा में लिखित रसायन विज्ञान के 44 ग्रंथ उपलब्ध हैं। नागार्जुन (दसवीं शताब्दी) ने रसायन विज्ञान पर 'रस रत्नाकर' नामक ग्रंथ लिखा है। इस ग्रंथ में पारे के यौगिक बनाने के प्रयोग दिए गए हैं। चाँदी, सोना, टिन और ताँबे के अयस्क भूगर्भ से निकालने और उन्हें शुद्ध करने की विधियों का विवरण भी दिया गया है। नागार्जुन पारे से संजीवनी बनाने के लिए पशुओं और वनस्पति के तत्त्वों तथा अम्ल और खनिजों

का उपयोग करते थे। वनस्पति निर्मित तेजाबों में वे हीरे, धातु और मोती गला लेते थे। नागार्जुन ने रसायन विज्ञान में काम आने वाले उपकरणों का विवरण भी दिया है। इस ग्रंथ में आसवन, द्रवण, उर्ध्व पातन और भूनने का भी वर्णन है। नागार्जुन के अतिरिक्त भारत के महान रसायन शास्त्री वृंद का नाम भी उल्लेखनीय है। इन्होंने औषधि रसायन पर 'सिद्ध योग' नामक ग्रंथ की रचना की है। इसमें विभिन्न रोगों के उपचार के लिए धातुओं के मिश्रण का विवरण दिया गया है। भारत में रसायन शास्त्रियों ने पहली और दूसरी शताब्दी तक ही कई रासायनिक फॉर्मूले खोज लिए थे। पारद (पारा) के यौगिक, अकार्बनिक लवण तथा मिश्र धातुओं का प्रयोग और मसालों से कई प्रकार के इत्र बनाए जाते थे।

6. धातु विज्ञान

भारत में हड़प्पा कालीन संस्कृति के समय से ही अनेक धातुओं का उपयोग होता आ रहा है। धातुओं को प्राप्त करने के लिए कई विज्ञानों का सहारा लेना पड़ता है। धातुओं के अयस्कों की खोज के लिए भू-विज्ञान में दक्षता अनिवार्य है। अयस्कों से धातु निकालने तथा उन्हें मिश्रित धातु बनाने के लिए रसायन विज्ञान और धातु विज्ञान की दक्षता अपेक्षित है। भारत को प्राचीन काल से ही इन सभी विज्ञानों में दक्षता प्राप्त है। धातु विज्ञान में भारत की दक्षता उच्च कोटि की थी। ईसा पूर्व 326 ई. में पोरस ने 30 पौंड वजन का भारतीय इस्पात सिकंदर को भेंट में दिया। एक राजा दूसरे राजा को अनुपमेय, दुर्लभ और अतिविशिष्ट वस्तुएँ ही भेंट किया करते थे। भारतीय इस्पात ऐसी ही अति विशिष्ट वस्तु थी। उस काल में भारतीय इस्पात इतनी उच्चकोटि का होता था कि विशेष प्रकार के औजार और अस्त्र-शस्त्र बनाने के लिए तत्कालीन सभ्य देशों में उसकी बहुत माँग थी।

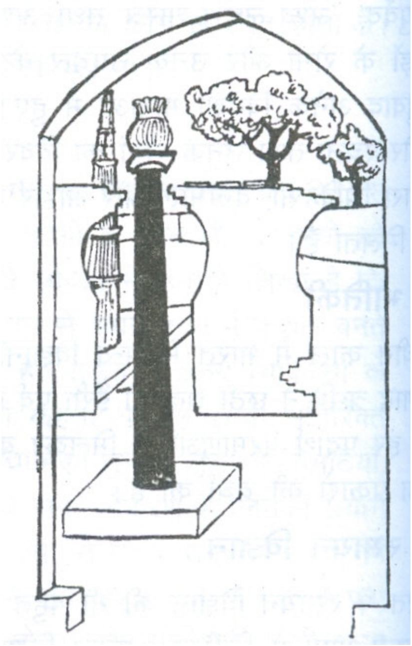

चित्रः कुतुब परिसर में लौह स्तंभ

दिल्ली के महरौली इलाके में कुतुबमीनार के निकट खड़ा लौह स्तंभ (चौथी शताब्दी) 1700 वर्षों की सर्दी गर्मी और बरसात सहकर भी जंगविहीन बना हुआ है। यह भारत के उत्कृष्ट लौह कर्म का नमूना है। महरौली के लौह स्तंभ जैसा ही लगभग 7. 5 मीटर ऊँचा एक प्राचीन लौह स्तंभ कर्नाटक की पर्वत श्रृंखलाओं में खड़ा है। इस पर भी जंग का कोई प्रभाव नहीं हुआ है। यही नहीं उड़ीसा के कोणार्क मंदिर (तेरहवीं शताब्दी) में लगभग 10.5 मीटर लंबा तथा 90 टन के भार वाला लोहे का स्तंभ भी आज तक जंगविहीन है। यही नहीं इतने भारी स्तंभ को ढालकर बनाना ही भारत की मध्य कालीन प्रणाली की विस्मयकारी उपलब्धि है। लोहा ही नहीं सोना, चांदी, ताँबा, टिन, जस्ता जैसी अनेक

टिप्पणी

धातुओं के अयस्क खोजने तथा उन्हें गलाकर शुद्ध धातु प्राप्त करने में भारतीय वैज्ञानिकों को महारत हासिल थी। अनेक धातुओं की तो वे भस्म बनाकर औषधि के रूप में प्रयोग करते हैं।

7. रत्न विज्ञान

भारत का रत्न विज्ञान भी उच्चकोटि का था। भारतीयों को वज्र (हीरा), मरफत, पद्मराग, मुक्ता, महानील, इंद्रनील, वैदर्य, ग्रंथशस्य, चंद्रकांत, सूर्यकांत, स्फटिक, पुलक, कर्केतन, पुष्पराग, ज्योतिरस, राज पट्ट, राजमय, सौगंधिक, जंज, शंख, गोमेद, रुधिराक्ष, भल्लातक धूली, तथक, सीस, पीलू, प्रवाल, गिरिवज्र, भुजंगमणि, वज्रमणि, हिट्टिभ, पिंड़, भ्रामर, उत्पल आदि रत्नों का ज्ञान था। इन रत्नों को भूमि या जल से निकालना, उन्हें आभूषणों में जड़े जाने योग्य बनाना, हमारे विज्ञान और अभियंत्रिकी दोनों का ही कमाल था। हीरा संसार में कठोरतम पदार्थ है। इसे काटने के लिए उपकरण भी प्राचीन काल में भारतीयों ने विकसित किए थे।

इनके अतिरिक्त जलयान निर्माण में मध्यकाल तक भारत यूरोप से आगे था। वस्त्र निर्माण में भारत ने असाधारण दक्षता प्राप्त की थी। शताब्दियों पहले भारत में कपड़े रंगने के लिए 100 से अधिक वनस्पति और खनिजों से प्राप्त रंगों का उपयोग होता था। विज्ञान की अन्य अनेक शाखाओं में भारत की उच्चकोटि की उपलब्धियाँ थीं।

दसवीं शताब्दी के बाद विदेशी आक्रमणकारियों ने समस्त उत्तर भारत को पदाक्रांत कर दिया था। चारों ओर अव्यवस्था और अराजकता थी। ऐसी स्थिति में वैज्ञानिक अनुसंधान करने का किसे होश था। केवल दक्षिण भारत के कुछ भागों में वैज्ञानिक गतिविधियाँ चलती रहीं। अंग्रेजों के आगमन के बाद काफ़ी समय तक छिटपुट लड़ाइयाँ चलती रहीं। अंग्रेजों का लगभग पूरे भारत पर आधिपत्य हो जाने के बाद विज्ञान के क्षेत्र में कुछ भारतीयों ने महत्त्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त कीं।

पाठगत प्रश्न 35.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. ''सूर्य सिद्धांत'' का प्रतिपादन किसने किया था?
   (क) ब्रह्मगुप्त (ग) वराहमिहिर
   (ख) आर्यभट्ट (घ) भास्कराचार्य

2. भास्कराचार्य का संबंध विज्ञान की किस शाखा से था?
   (क) भौतिकी (ग) धातु विज्ञान
   (ख) रसायन (घ) गणित और खगोल

3. भारतीय चिकित्सा विज्ञान के बारे में सबसे पहला प्रमाण कहाँ मिलता है?
   (क) छंदः सूत्र (ग) अथर्ववेद
   (ख) सिद्धांत शिरोमणि (घ) वृहज्जातक

4. रसायन विज्ञान पर लिखी गई पुस्तक 'रस रत्नाकर' के रचयिता कौन हैं?
   (क) कणाद
   (ख) चरक
   (ग) सुश्रुत
   (घ) नागार्जुन
5. भारत के पहले शल्य चिकित्सक कौन थे?
   (क) नागार्जुन
   (ख) चरक
   (ग) सुश्रुत
   (घ) भास्कराचार्य

35.4 आधुनिक भारतीय विज्ञान की परंपरा का विकास

भारत में आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा का विकास मुख्य रूप से ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के बाद से शुरू हुआ। यहाँ एक बात मुख्य रूप से ध्यान देने की है। वह यह कि आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा प्राचीन वैज्ञानिक परंपरा से बहुत भिन्न नहीं है। बल्कि उसी को आगे बढ़ाने वाली एक कड़ी के रूप में विकसित हुई है। दोनों परंपराओं के विकास में एक मूलभूत अंतर है, वह है यांत्रिकी का विकास। आपने ऊपर पढ़ा कि प्राचीन भारतीय परंपरा ने विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में तो काफ़ी तेजी से विकास कर लिया था, किंतु यांत्रिकी यानी मशीनी स्तर पर कोई महत्त्वपूर्ण उपलब्धि हासिल नहीं की। आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा यहीं से प्राचीन वैज्ञानिक परंपरा से खुद को अलग कर लेती है। पूरे आधुनिक परिदृश्य को देखें तो आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा की सबसे बड़ी उपलब्धि रही है, यांत्रिकी का विकास। अब तक जो भी प्राचीन वैज्ञानिक उपलब्धियाँ थीं उन्हीं को आधार बनाते हुए यांत्रिकी का विकास किया गया और यह परंपरा पूरी दुनिया में प्रचलित हो गई। फिर यांत्रिकी के विकास से विज्ञान में नए अनुसंधानों के अनेक रास्ते खुले, जैसे – कंप्यूटर के विकास से रसायन, भौतिक, जीव विज्ञान आदि हर क्षेत्र में नए-नए प्रयोगों में आसानी हो गई।

आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा के एक-साथ पूरी दूनिया में प्रसार के पीछे मुख्य कारण था दुनिया के ज़्यादातर देशों में अंग्रेजों का राज। इसी प्रकार जिस भी यांत्रिक अथवा वैज्ञानिक परंपरा का विकास हुआ वह थोड़े-से अंतर पर अथवा एक-साथ पूरी दुनिया में प्रचलित हो गई। अतः आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा ने देश और काल की सीमाएँ भी तोड़ी। इसी तरह अलग-अलग देशों के वैज्ञानिकों ने तो अपने स्तर पर वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हासिल की ही, दूसरे वैज्ञानिकों की खोजों से प्रेरणा लेकर कई नई खोजें भी कीं और साथ ही दूसरों की खोजों को भी आगे बढ़ाया। इस तरह भारतीय आधुनिक वैज्ञानिक परंपरा के विकास का अध्ययन करते समय हमें मुख्य रूप से दो पक्षों पर ध्यान रखना आवश्यक होगा–

1. आधुनिक भारत की मौलिक वैज्ञानिक परंपरा और
2. आधुनिक भारत की मिश्रित वैज्ञानिक परंपरा

1. आधुनिक भारत की मौलिक वैज्ञानिक परंपरा

इस परंपरा के अंतर्गत उन वैज्ञानिक खोजों को रखा जा सकता है, जो भारत में जन्मे और भारत में ही रहकर, यहीं के संसाधनों से यहीं वैज्ञानिक खोजें कीं और

दुनिया के सामने मिसाल कायम की। वैसे तो अंग्रेजों के आने के बाद ज़्यादातर वैज्ञानिक खोज अंग्रेजों के द्वारा ही की गई, किंतु उनके साथ-साथ भारतीय वैज्ञानिकों ने भी अनेक प्रयोग किए और उपलब्धियाँ हासिल कीं। 14 नवंबर 1941 को केंद्रीय एसेम्बली में पारित प्रस्ताव सी. एस. आई. आर. की स्थापना इस दिशा में पहला कदम था। फिर 26 सितंबर 1942 को सर ए. रामास्वामी मुदालियर और डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर के प्रयासों के फलस्वरूप कौंसिल ऑफ साइंटिफिक एण्ड इंडस्ट्रियल रिसर्च (सी. एस. आई. आर.) यानी वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद् की स्थापना, नई दिल्ली में एक स्वायत्त संस्था के रूप में हुई। हालाँकि इसकी नींव अंग्रेजों के कार्यकाल में ही पड़ गई थी परंतु काम-काज के सारे नियंत्रण अंग्रेजों के पास होने के कारण विकास कार्य नगण्य ही था। इसलिए हमारा देश लगभग हर वस्तु, सुई, टूथपेस्ट जैसी रोज़मर्रा की आवश्यक वस्तुओं के लिए भी दूसरे देशों पर निर्भर था। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद विभाजन के कारण तो और भी नुकसान पहुँचा। इससे सर्वाधिक क्षति सूत और जूट उद्योग को हुई, लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद भारत का वैज्ञानिक विकास देश के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू के समय में हुआ। उन्होंने देश के वैज्ञानिक विकास के लिए लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण यानी साइंटिफिक टेम्पर जगाने का संकल्प लिया। अपने वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण ही उन्होंने इस कार्य को डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर को सौंप दिया, जिसे डॉ. भटनागर ने सहर्ष स्वीकारा। परिणामस्वरूप उन्हें औद्योगिक अनुसंधान का प्रणेता होने का गौरव प्राप्त हुआ। वैज्ञानिक अनुसंधान और आविष्कारों के लिए दिया जाने वाला देश का सर्वोच्च शांतिस्वरूप भटनागर पुरस्कार इन्हीं के नाम पर वैज्ञानिकों को दिया जाता है। देश के समुचित वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के लिए डॉ. भटनागर ने अथक परिश्रम किया और इसके लिए उन्हें पं. नेहरू का भरपूर सहयोग मिला जिसके परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की कड़ी स्थापित होती चली गई। इस कड़ी की पहली प्रयोगशाला पुणे स्थित राष्ट्रीय रासायनिक प्रयोगशाला थी, जिसका उद्घाटन 3 जनवरी, 1950 को पं. नेहरू ने किया। इसके बाद दिल्ली में राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला तथा जमशेदपुर में राष्ट्रीय धात्विक प्रयोगशाला की स्थापना हुई। 10 जनवरी 1953 को नई दिल्ली में सी. एस. आई. आर. मुख्यालय का उद्घाटन हुआ। 1 जनवरी 1955 को जब डॉ. भटनागर की मृत्यु हुई थी तब तक देश में विभिन्न स्थानों पर लगभग 15 राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं की स्थापना हो चुकी थी और ये सभी प्रयोगशालाएँ किसी-न-किसी उद्योग से जुड़ी थीं। इन सभी प्रयोगशालाओं का उद्घाटन और शिलान्यास पं. नेहरू द्वारा ही संपन्न हुआ। प्रयोगशालाओं की बढ़ती कड़ी को 'नेहरू-भटनागर प्रभाव' कहा गया है। विज्ञान के विकास में अत्यधिक रुचि लेने वाले पं. नेहरू को आज भी आधुनिक भारतीय विज्ञान का जनक माना जाता है। वास्तव में विज्ञान के विकास में नेहरू का योगदान अविस्मरणीय है।

पं. नेहरू की मृत्यु के बाद उनका 'वैज्ञानिक भारत' का सपना साकार हुआ। भारत की तृतीय प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के अथक प्रयासों से आज स्थिति यह है कि भारत विज्ञान के किसी भी क्षेत्र में पीछे नहीं है। विकास की इस कड़ी में द्वितीय प्रधानमंत्री श्री लालबहादुर शास्त्री के 'अधिक अन्न उपजाओ' अभियान ने जहाँ हरित क्रांति के द्वारा खोले, वहीं अन्य क्षेत्रों में भी वैज्ञानिक प्रगति हुई। परिणामस्वरूप

आजादी के बाद के इन वर्षों में कृषि, चिकित्सा, परमाणु ऊर्जा, इलेक्ट्रॉनिकी, संचार, अंतरिक्ष, परिवहन और रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति के कारण आज भारत देश विकासशील देशों की श्रेणी में अग्रणी है। कृषि से लेकर अंतरिक्ष अनुसंधान तक की कठिन यात्रा भारतीय वैज्ञानिकों ने सुविधाओं के अभाव में भी कितनी सफलतापूर्वक तय की है इसका प्रमाण हर क्षेत्र में हुई वे अद्भुत खोज और उपलब्धियाँ हैं, जिन्होंने संपूर्ण विश्व के वैज्ञानिक क्षेत्रों में हलचल मचा दी है।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था का मुख्य अंग रही है। देश की कुल आबादी के लगभग 70 प्रतिशत व्यक्ति कृषि व्यवसाय से जुड़े हैं। भारतीय कृषि के व्यवसाय में बीसवीं सदी के छठवें दशक को मील का पत्थर कहा जाता है। डॉ. बी. पी. पाल, डॉ. एस. एम. स्वामीनाथन और डॉ. नॉरमन बोरलॉग के प्रयासों से भारत में आई हरित क्रांति के फलस्वरूप हम खाद्यान्न उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर हैं। कूरियन ने श्वेत क्रांति द्वारा हमें दुग्ध उत्पादन में भी शीर्ष स्थान पर पहुँचा दिया है, तो पशु-पालन, मछली-पालन, कुक्कुट पालन में हम स्वावलंबी बन चुके हैं। वर्ष 1905 में पूसा, बिहार में इम्पीरियल एग्रीकल्चरल रिसर्च इंस्टीट्यूट की स्थापना से लेकर वर्तमान इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चरल रिसर्च (आई.सी.ए.आर.) यानी भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तक हमने लंबा सफर तय करके कम समय में अधिक उपज देने वाली नई-किस्में और संकर जातियाँ विकसित कर ली हैं। क्या आप जानते हैं कि कपास की पहली संकर जाति भारतीय कृषि वैज्ञानिकों ने विकसित की है। कृषि वैज्ञानिकों ने अनुमानित खाद्य आवश्यकता पूर्ति तक पहुँचाने के लिए अनुसंधान कार्य तेज कर दिए हैं।

10 अगस्त 1948 को परमाणु ऊर्जा के शांतिपूर्ण उपयोग के लिए डॉ. होमी जहाँगीर भाभा के प्रयासों से परमाणु ऊर्जा आयोग का गठन हुआ था। तब से लेकर आज तक हुए विकास के फलस्वरूप हम खनिज अनुसंधान के लिए ईंधन निर्माण, व्यर्थ पदार्थों से ऊर्जा उत्पादन, कृषि चिकित्सा उद्योग एवं अनुसंधान में आत्मनिर्भर हो गए हैं। परमाणु ऊर्जा के अंतर्गत नाभिकीय अनुसंधान के क्षेत्र में मुंबई स्थित भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र यानी भाभा एटोमिक रिसर्च सेंटर (बार्क) की भूमिका सराहनीय है। यहाँ हो रहे नित नए अनुसंधानों के कारण हम पोखरण-2 का सफल परीक्षण कर विश्व की परमाणु शक्ति वाले देशों की पंक्ति में आ खड़े हुए हैं।

विश्व के चौथे सबसे बड़े उद्योग इलेक्ट्रॉनिकी ने समूचे भारत में क्रांति ला दी है। इसके उत्पादन में तेजी लाने के लिए सन् 1970 में भारत सरकार ने इलेक्ट्रॉनिकी विभाग की स्थापना की। यह विभाग इलेक्ट्रॉनिकी उद्योग के प्रत्येक क्षेत्र में नीतियाँ तैयार करता है। सूचना प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से कंप्यूटर तथा संचार की दिशा में हो रहे विकास ने दूरसंचार तथा कंप्यूटर उद्योग में क्रांति ला दी है। डिजीटल प्रौद्योगिकी पर आधारित मोबाइल, सेलुलर, रेडियो, पेजिंग, इंटरनेट के आगमन ने सूचना और संचार के क्षेत्र में काफ़ी परिवर्तन ला दिया है। प्रत्यक्ष प्रमाण आज हमारे सामने हैं। इलेक्ट्रॉनिक विभाग का संकल्प इसका लाभ जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पहुँचाना और प्रत्येक भारतीय के जीवन को बेहतर बनाना है। सी-डेक द्वारा परम

10,000 सुपर कंप्यूटर का निर्माण हमारी एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

परिवहन के क्षेत्र में हुई व्यापक प्रगति से लगभग सुदूर क्षेत्रों में बसे ग्रामीण क्षेत्रों को सुविधा हुई है। यही कारण है कि महीनों में पूरी होने वाली यात्रा आज चंद घंटों में पूरी हो जाती है। पर्याप्त अनुसंधान और विकास के फलस्वरूप आज भारत नई तकनीकों और सुविधाओं के साथ प्रगति की ओर बढ़ रहा है। रेल, सड़क, जल और वायु परिवहन के क्षेत्र में यद्यपि विकास तेजी से हुआ है, परंतु विश्व की अग्रणी पंक्ति में पहुँचने के लिए इस क्षेत्र में अभी भी बहुत कार्य करने की आवश्यकता है।

[redacted] सही विकल्प छाँटकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. काउंसिल ऑफ साइंटिफिक एंड इंडस्ट्रियल रिसर्च की स्थापना कब हुई थी?
   (क) 1951 (ग) 1947
   (ख) 1942 (घ) 1967

2. लोगों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण जगाने का संकल्प किसने किया था?
   (क) पं. जवाहरलाल नेहरू (ग) डॉ. होमी जहाँगीर भाभा
   (ख) डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर (घ) स्वामीनाथन

3. डॉ. होमी जहाँगीर भाभा की वैज्ञानिक उपलब्धि किस क्षेत्र में थी?
   (क) चिकित्सा (ग) परमाणु
   (ख) कंप्यूटर (घ) कृषि

4. अधिक अन्न उपजाने का नारा देकर हरित क्रांति के द्वार किसने खोले ?
   (क) जवाहरलाल नेहरू (ग) इंदिरा गांधी
   (ख) लालबहादुर शास्त्री (घ) भारतीय कृषक संघ

5. राष्ट्रीय धात्विक प्रयोगशाला भारत के किस शहर में है :
   (क) धनबाद (ग) दिल्ली
   (ख) जमशेदपुर (घ) बंगलौर

35.5 प्रसिद्ध आधुनिक भारतीय वैज्ञानिक और उनकी उपलब्धियाँ

आधुनिक युग में भारत में विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में नए-नए प्रयोग लगातार होते रहे, किंतु कुछ भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन हुआ। प्रमुख वैज्ञानिकों में जगदीश चंद्र बोस, सी.वी. रमण, होमी जहाँगीर भाभा, शांतिस्वरूप भटनागर, एम. एन. साहा, प्रफुल्लचंद्र राय, हरगोविंद खुराना आदि नाम

उल्लेखनीय हैं। जगदीश चंद्र बोस ने उचित साधनों और उपकरणों के अभाव में भी अपना कार्य जारी रखा। उन्होंने लघु रेडियो तरंगों का निर्माण किया। विद्युत चुंबकीय तरंगों के प्रयोग उन्होंने मारकोनी से पहले ही पूरे कर लिए थे। पौधों में जीवन के लक्षणों की खोज उनकी महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

सी.वी. रमण एक प्रतिभावान वैज्ञानिक थे। उन्होंने प्रकाश किरणों की गुणधर्मिता तथा आकाश और समुद्र के रंगों की व्याख्या पर विशेष शोध किया। अपने शोध के लिए उन्हें 1930 में नोबेल पुरस्कार भी मिला। एस. रामानुजम असाधारण प्रतिभावान गणितज्ञ थे। गणितीय सिद्धांतों के क्षेत्र में उनके अनुसंधान के कारण उन्हें बहुत यश और ख्याति मिली। इसी विद्वत-श्रृंखला में एक प्रसिद्ध वनस्पति और भूभर्ग शास्त्री बीरबल साहनी भी थे।

बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का शिखर छूने वाले वैज्ञानिकों में एम. एन. साहा, एस. एन. बोस, डी. एन. वीजिया और प्रफुल्लचंद्र राय के नाम उल्लेखनीय हैं।

35.6 स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियाँ

आजादी के बाद जहाँ भारत ने समाज के हर क्षेत्र में तेजी से विकास किया वहीं विज्ञान के क्षेत्र में भी अनेक उपलब्धियाँ हासिल कीं। स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार में विज्ञान और प्राकृतिक संसाधनों का एक पृथक मंत्रालय बनाया गया। यह मंत्रालय प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने अपने अधीन रखा था। नेहरू जी भारत के बहुमुखी विकास के लिए प्रतिबद्ध थे। उन्होंने वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए सब तरह के साधन और सुविधाएँ जुटाईं।

उपलब्ध क्षमता और प्रोत्साहन के कारण 59 वर्षों में ही भारत ने विश्व की वैज्ञानिक और प्रौद्योगिकी की महानतम शक्तियों में तीसरा स्थान प्राप्त कर लिया है। परिणामस्वरूप भारत कच्चे माल के निर्यात से अब विश्व की सर्वाधिक मजबूत औद्योगिक अर्थव्यवस्था में से एक बन गया है।

भारत ने विज्ञान के अन्य विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की है। खगोल विज्ञान में प्राचीन अध्ययनों के आधार पर ही भारत के वैज्ञानिक अंतरिक्ष अनुसंधान कार्यों में लगे हैं। आज भारत के अंतरिक्ष वैज्ञानिक अपने बलबूते पर उपग्रह बनाकर और अपने ही शक्तिशाली राकेटों से उन्हें अंतरिक्ष में स्थापित करने में समर्थ हैं।

पूर्णतः स्वदेश में निर्मित ध्रुवीय प्रक्षेपण यान पी.एस.एल.वी.सी. 2 ने 26 मई 1999 को 11 बजकर 52 मिनट पर श्रीहरिकोटा से एक सफल उड़ान भरी और एक भारतीय उपग्रह तथा दो विदेशी उपग्रहों को अंतरिक्ष में निर्धारित कक्षा में स्थापित कर दिया। अंतरिक्ष कार्यक्रमों में भारत काफ़ी आगे पहुँच चुका है। इसके साथ ही भारत के दूर संवेदी नेटवर्क में 634 ग्रह शामिल हो गए हैं। हमारा यह दूर संवेदी नेटवर्क संसार का सबसे बड़ा दूरसंवेदी नेटवर्क है। अंतरिक्ष कार्यक्रमों का विकास संचार माध्यमों तथा रक्षा मामले संबंधी सफलताओं में काफ़ी सहायक सिद्ध हुआ है। आज भारत विभिन्न दूरियों तक मार करने वाले प्रक्षेपास्त्र बनाने में समर्थ है। प्रतिरक्षा के क्षेत्र में अनेक उल्लेखनीय सफलताएँ मिली हैं।

भारत ने परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में भी आश्चर्यजनक प्रगति की है। परमाणु ऊर्जा का मुख्यतः उपयोग कृषि और चिकित्सा जैसे शांतिपूर्ण कार्यों के लिए किया जा रहा है।

परमाणु और अंतरिक्ष से जुड़ा विषय इलैक्ट्रॉनिकी है। भारत ने सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आश्चर्यजनक प्रगति की है। परम 10,000 सुपर कंप्यूटर बनाकर हम इस क्षेत्र में अग्रणी देशों की पंक्ति में आ गए हैं। हम अब सूचना प्रौद्योगिकी से संबंधित उपकरणों का निर्यात विकसित देशों को भी कर रहे हैं। भारत के सूचना प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षित इंजीनियरों की अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी और जापान जैसे विकसित देशों में भारी माँग है।

वैज्ञानिक अनुसंधानों के बलबूते पर भारत ने जलयान निर्माण, रेलवे उपकरण, मोटर उद्योग, कपड़ा उद्योग आदि में आशातीत सफलता प्राप्त की है। आज हम भारत की उद्योगशालाओं में बनी अनेक वस्तुओं का निर्यात करते हैं।

पाठगत प्रश्न 35.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. पी.एस.एल.वी. 2 का परीक्षण कहाँ किया गया ?

   (क) चांदीपुर (ग) कच्छ का रण

   (ख) श्री हरिकोटा (घ) सियाचीन ग्लेशियर

2. इनमें से कौन प्रसिद्ध वनस्पति विज्ञानी और भूगर्भ शास्त्री थे?

   (क) जगदीश चंद्र बोस (ग) सी. वी. रमण

   (ख) मेघनाथ साहा (घ) बीरबल साहनी

35.7 आधुनिक भारत की मिश्रित वैज्ञानिक परंपरा तथा उपलब्धियाँ

आधुनिक विश्व के विभिन्न देशों में अलग-अलग स्तर पर वैज्ञानिक प्रयोग होते रहे हैं, जिनमें से अधिकांश प्रयोग और अनुसंधान ऐसे हैं, जिन पर एक साथ कई देश काम कर रहे थे। ऐसी दशा में कई खोजें मिश्रित रूप में हुईं और उनका अलग-अलग स्तरों पर विकास हुआ। जैसे कंप्यूटर को ही ले लें। कंप्यूटर की खोज किसी एक वैज्ञानिक अथवा देश ने अकेले नहीं की, बल्कि इस पर एक साथ कई देशों में अलग-अलग स्तरों पर काम चलता रहा और आज कंप्यूटर का जो वर्तमान रूप हैं, वह विभिन्न देशों की मिश्रित वैज्ञानिक उपलब्धियों का विकसित रूप है। कंप्यूटर के क्षेत्र में भारत की उपलब्धियाँ सराहनीय हैं। आज भारत कंप्यूटर सॉफ्टवेयर बनाने वाले दुनिया के कुछ गिने हुए अग्रणी देशों में से एक है। कंप्यूटर आधुनिक विश्व की एक ऐसी उपलब्धि है, जो समाज के हर क्षेत्र के लिए क्रांति साबित हुआ है चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो, उद्योग जगत हो, शिक्षा-जगत हो, वैज्ञानिक अनुसंधानों का काम हो अथवा घरेलू कामकाज। हर जगह कंप्यूटर सहायक सिद्ध हो रहा है। इसकी खोज से हर क्षेत्र में सुविधाएँ बढ़ी हैं। पलक झपकते ही तमाम

सूचनाएँ दुनिया के कोने-कोने तक पहुँचने लगी हैं और सूचनाओं के आधार पर नित नए प्रयोगों के नए रास्ते भी खुलने लगे हैं।

इसी तरह चिकित्सा के क्षेत्र में कैट-स्कैनर, रक्षा विज्ञान के क्षेत्र में मिसाइलें, राडार और परमाणु अस्त्र, सूचना जगत में उपग्रहों, परिवहन के क्षेत्र में मोटर कारों व वायुयानों तथा कृषि के क्षेत्र में रासायनिक उर्वरकों और कृषि उपकरणों का विकास भी मिश्रित वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं। भारत इन सभी क्षेत्रों में सहभागी है। आज भारत न सिर्फ दूसरे देशों से तकनीक लेकर अद्भुत कार्य कर रहा है बल्कि मौलिक स्तर पर भी अपना योगदान कर रहा है। भारत हर प्रकार से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में वैज्ञानिक विकास में अग्रणी है।

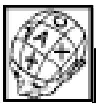

35.8 आपने क्या सीखा

1. भारत में प्राचीन काल से ही एक समृद्ध वैज्ञानिक परंपरा रही है। चाहे वह भवन निर्माण का क्षेत्र हो चाहे खगोल विज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, धातु विज्ञान अथवा रत्न विज्ञान का। हर क्षेत्र में भारत में प्राचीन काल से ही विज्ञान का प्रयोग होता रहा है और दुनिया के सामने प्राचीन भारतीय वैज्ञानिक परंपरा एक प्रेरणा के स्रोत के रूप में मौजूद रही है।
2. आधुनिक काल में सी.एस.आई.आर. की स्थापना और उसके अंतर्गत राष्ट्रीय रसायन प्रयोगशाला, राष्ट्रीय भौतिकी प्रयोगशाला, धात्विक प्रयोगशाला जैसी विभिन्न वैज्ञानिक संस्थाओं की स्थापना की गई, जिससे विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय वैज्ञानिकों को अनुसंधान में काफ़ी सरलता हो गई।
3. आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों में सी. वी. रमण, मेघनाद साहा, शांतिस्वरूप भटनागर, जगदीश चंद्र बोस, प्रफुल्लचंद्र राय, होमी जहांगीर भाभा तथा हरगोविंद खुराना के नाम प्रमुख रूप से उल्लेखनीय हैं।
4. आधुनिक युग में भारत में मौलिक अनुसंधानों के साथ-साथ मिश्रित वैज्ञानिक परंपरा का भी विकास तेजी से हुआ, जिसमें कंप्यूटर, मोटरकार, रक्षा उपकरण, कृषि उपकरण, चिकित्सा उपकरण आदि प्रमुख हैं।
5. आज भारत कृषि, रक्षा-विज्ञान, रसायन, भौतिकी, इलेक्ट्रॉनिक, चिकित्सा, सूचना आदि क्षेत्रों में वैज्ञानिक उपकरणों के बल पर आत्मनिर्भर हो चुका है।

35.9 योग्यता विस्तार

1. भारतीय वैज्ञानिकों तथा विदेशी वैज्ञानिकों के बारे में जानकारी खोजिए। उनकी खोजों के बारे में पत्र-पत्रिकाओं में पढ़िए। आप चाहें तो उन्हें संगृहीत कर एक दस्तावेज तैयार कर सकते हैं।
2. आपके आस-पास, घर-बाहर हर जगह विज्ञान अपना खेल दिखा रहा है उन्हें सूचीबद्ध कर पुस्तकालय से उनके खोजकर्त्ता के नाम जानिए तथा उनके बारे में पढ़िए।

टिप्पणी

35.10 पाठांत प्रश्न

1. प्राचीन भारत की किन्हीं पाँच वैज्ञानिक उपलब्धियों के नाम लिखिए।
2. खगोल विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए इस क्षेत्र में काम करने वाले प्रमुख वैज्ञानिकों के नाम बताइए।
3. गणित के क्षेत्र में प्राचीन भारत की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए विश्व के विभिन्न देशों की इस क्षेत्र में उपलब्धियों से तुलना कीजिए।
4. आधुनिक भारतीय विज्ञान के स्वरूप की विशेषताएँ बताइए।
5. किन्हीं चार आधुनिक भारतीय वैज्ञानिकों के नाम बताइए तथा उनकी खोजों का उल्लेख कीजिए।
6. किन्हीं चार भारतीय वैज्ञानिक संस्थानों के नाम लिखिए।

35.11 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

35.1	1. (घ)	2. (ख)	3. (ख)		
35.2	1. (ग)	2. (घ)	3. (ग)	4. (घ)	5. (ग)
35.3	1. (ख)	2. (क)	3. (ग)	4. (ख)	5. (ख)
35.4	1. (ख)	2. (घ)			

टिप्पणी

301hi36A

36
संचार की प्रक्रिया

पिछले पाठ में आपने संचार माध्यमों के प्रकार और हमारे जीवन में उनकी उपयोगिता के बारे में जाना। आपके मन में सहज ही जिज्ञासा उभरती होगी कि हर दिन अखबारों और दूसरे संचार माध्यमों में जो इतने सारे देश-विदेश और विभिन्न क्षेत्रों के समाचार छपते हैं उन्हें कौन जुटाता है, कैसे समाचार केंद्रों तक भेजता है और कैसे इतने कम समय में अखबार छप कर तैयार कर दिए जाते हैं और सुबह होते-होते घरों तक पहुँचा दिए जाते हैं। कैसे टेलीविज़न पर पलक झपकते समाचार प्रसारित कर दिए जाते हैं। आइए इस पाठ में हम समाचार के स्रोतों, समाचार संकलन और संचार की प्रक्रिया के बारे में अध्ययन करते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- समाचार का अर्थ स्पष्ट कर सकेंगे;
- समाचार के स्रोतों का उल्लेख कर सकेंगे;
- समाचार संकलन की प्रक्रिया के बारे में समझा सकेंगे;
- समाचार संपादन और उनके स्थान निर्धारण के बारे में प्रकाश डाल सकेंगे।

क्रियाकलाप

अगर आपके मुहल्ले में काफ़ी समय से कूड़ा जमा है और उठाने वाली गाड़ी नहीं आती। इसकी सूचना आप नगर निगम कार्यालय को भी दे चुके हैं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो सकी है। इसके लिए आप क्या उपाय करेंगे कि कूड़ा उठाया जा

सके। क्या अखबार इसमें कोई मदद कर सकता है? अगर हाँ तो आप अपने स्थानीय अखबार में खबर छपवाने के लिए क्या करेंगे?

....

....

....

क्या आप बता सकते हैं कि अखबार तक समाचार कैसे पहुँचते हैं?

....

....

....

36.1 आइए समझें

संचार की प्रक्रिया

संचार मुख्य रूप से दो स्तरों पर होता है। पहला एक व्यक्ति का दूसरे व्यक्ति से सीधा संचार। इसमें आपसी बातचीत को रखा जा सकता है। इसमें एक व्यक्ति कुछ कहता है और दूसरा तुरंत अपनी प्रतिक्रिया प्रकट कर देता है। यह किसी साधन या माध्यम की आवश्यकता पर निर्भर नहीं करता।

संचार के दूसरे स्तर में किसी माध्यम का सहारा लेकर एक व्यक्ति या स्रोत से अनेक लोगों तक एक साथ कोई संदेश पहुँचाया जाता है जैसा कि पहले बताया जा चुका है, इन्हें ही जनसंचार माध्यम अथवा मास मीडिया कहा जाता है। समाचारपत्र और पत्रिकाएँ, पुस्तकें, इश्तहार, रेडियो, दूरदर्शन, फिल्म आदि इसी श्रेणी में आते हैं।

संचार माध्यम से कोई संदेश प्रेषक (भेजने वाले) से प्राप्तकर्ता (पाने वाले) तक कैसे पहुँचता है, इस प्रक्रिया को समझ लेने से संचार माध्यमों के बाकी पहलुओं को समझने में आसानी रहेगी। प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक सूचना के पहुँचने की प्रक्रिया इस प्रकार संभव होती है :

प्रेषक → संदेश → माध्यम → प्राप्तकर्ता

परंतु यह प्रक्रिया अधूरी है। इसमें हमें यह पता नहीं चलता कि यहाँ माध्यम की क्या भूमिका है। उदाहरण के लिए रेडियो या टेलीविज़न पर हम जो सुनते अथवा देखते हैं वह केंद्र के स्टूडियो से प्रसारित किया जाता है। इस प्रक्रिया में प्रसारण ट्रांसमीटर और हमारे टेलीविज़न सेट का भी उल्लेखनीय योगदान रहता है। स्टूडियो में बोले या दर्शाए गए शब्दों और चित्रों का ध्वनियों के रूप में कोडीफिकेशन होता है, यानी शब्द व चित्र तरंगों में बदल जाते हैं। इसे कोडीकरण कहते हैं। विकोडीकरण (डीकोडिफिकेशन) होने अर्थात् पुनः ध्वनि और चित्र के रूप में परिवर्तित होने पर हमारे कान व आँखें उसे सामान्य रूप में ग्रहण करती हैं। यह प्रक्रिया इस प्रकार होती है :

प्रेषक → संदेश → कोडिंग → माध्यम → डीकोडिंग → प्राप्तकर्ता

ध्यान देने की बात है कि संचार प्रक्रिया एकतरफा गतिविधि नहीं है। संचार पूर्ण तभी माना जाता है जब संदेश को प्राप्त करने वाले की प्रतिक्रिया प्रेषक तक पहुँचती रहे। इसे फीडबैक या प्रतिक्रिया कहा जाता है। यह फीडबैक भी उसी प्रक्रिया से पहुँचती है, जिस प्रक्रिया से मूल संदेश भेजा जाता है। अंतर केवल यही है कि प्राप्तकर्ता तब प्रेषक का स्थान ले लेता है और मूल प्रेषक को प्राप्तकर्ता की भूमिका मिल जाती है। यह प्रक्रिया होगी :

फीडबैक → प्रेषक → संदेश → कोडिंग → माध्यम → डीकोडिंग → प्राप्तकर्ता

लेकिन कभी–कभी यह प्रक्रिया अपनाने पर भी संचार का कार्य सफलता से नहीं हो पाता। ऐसा तभी होता है जब इस प्रक्रिया में एक और तत्त्व यानी बाधा जुड़ जाता है। इसका मतलब यह है कि प्रेषक जो संदेश देना चाहता है, उसे प्राप्तकर्ता उसी अर्थ में ग्रहण नहीं कर पा रहा। कहा कुछ जाता है, पर समझा कुछ और जाता है। यह प्रक्रिया है :

प्रेषक → संदेश → कोडिंग → माध्यम → डीकोडिंग → प्राप्तकर्ता

बाधा को नॉएज़ या शोर भी कहा जाता है, ऐसी स्थिति में सूचना का प्राप्तकर्ता अपनी मनः स्थिति के अनुसार संदेश ग्रहण करता है।

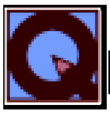

पाठगत प्रश्न 36.1

खाली स्थान भरिए :

1. जिस माध्यम से एक साथ से अनेक लोगों तक संदेश पहुँचाया जाता है उसे .... माध्यम कहते हैं।
2. संदेश को ग्रहण करने की प्रतिक्रिया को संदेश प्रेषित करने वाले तक पहुँचाने की प्रक्रिया .... कहलाती है।
3. संचार तभी पूर्ण होता है जब प्रेषक व ग्रहणकर्ता के बीच कोई .... न हो।

36.2 समाचार का अर्थ

कोई भी घटना, जिसके बारे में जानने की सहज जिज्ञासा उत्पन्न होती है समाचार की श्रेणी में आती है। संचार की व्यावहारिक तथा तकनीकी भाषा में इसे ही संचार, संवाद या न्यूज़ कहते हैं। नयापन या नवीनता समाचार का आधारभूत गुण है। बहुत सी घटनाएँ हमारे आसपास सहज रूप से घटती रहती हैं जो समाचार की श्रेणी में नहीं आ पातीं, मगर जैसे ही उसमें कोई विशिष्ट तत्त्व जुड़ जाता है या वह घटना असाधारण बन जाती है वह समाचार बन जाती है। उदाहरण के लिए कोई कुत्ता

किसी व्यक्ति को काट ले तो वह एक सामान्य घटना कहलाएगी, क्योंकि ऐसी घटनाएँ समाज में अक्सर सामने आती रहती हैं। मगर अगर कोई व्यक्ति किसी कुत्ते को काट ले और वह मर जाए तो उस घटना को लेकर सभी के मन में सहज ही जिज्ञासा पैदा होगी। इसी प्रकार एक और उदाहरण लेते हैं शादियाँ तो हर देशकाल में होती रहती हैं 23 वर्ष की दुल्हन और 27 का दूल्हा, यह सामान्य घटना कहलाएगी, क्योंकि ऐसी घटनाएँ समाज में अक्सर सामने आती है। मगर कोई 55 वर्ष का दूल्हा 8 बरस की लड़की से शादी करे और कुछ वर्ष बाद वह माँ बन जाए तो इसको लेकर सब के मन में सहज जिज्ञासा होगी।

यह तो सामान्य उदाहरण हुए। लेकिन कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिनसे जुड़ी हर सूचना समाचार का रूप ले लेती है। जैसे सरकार कोई फैसला करती है, प्रधानमंत्री या किसी विभाग का कोई मंत्री सार्वजनिक रूप से या प्रेस को बुला कर कोई बात करता है तो वह समाचार हो जाता है क्योंकि उसकी बातें देश की किसी समस्या या योजना से जुड़ी होती हैं। इसी तरह बाजार के भाव या शेयरों की कीमतों में उतार-चढ़ाव या खेल के क्षेत्र में हासिल किया गया कोई कीर्तिमान समाचार की श्रेणी में आते हैं।

अद्यतन या नवीनतम जानकारी प्राप्त करना ही समाचार है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि हर वह घटना या विचार जो लोगों की सामान्य जिज्ञासा का विषय बनते हैं या जिनका संबंध समाज की अधिकांश जनता से जुड़ा होता है समाचार की श्रेणी में रखे जा सकते हैं। इसी आधार पर अखबार या दूसरे समाचार माध्यम समाचारों का चयन करते हैं।

36.3 समाचार संकलन और संपादन

आपके सामने अक्सर ऐसी घटनाएँ आती होंगी जिनके बारे में आप सोचते होंगे कि वह कल ज़रूर अखबार और टेलीविज़न पर दिखाया जाएगा, कई बार ऐसा होता भी है मगर कई बार ऐसा नहीं होता। आप सोचते होंगे कि अखबारों ने जानबूझ कर उस घटना को नज़रअंदाज कर दिया। कई बार अखबार तक उस घटना की सूचना नहीं मिल पाने या स्थान की कमी होने के कारण दूसरी घटनाओं से उसके कम महत्त्वपूर्ण होने के कारण उस घटना का छूट जाना संभव भी है, लेकिन अगर समाचार माध्यम को लगता है कि वह घटना समाचार की श्रेणी में नहीं आती तो वह उसे जानबूझ कर छोड़ देता है।

चित्र 36.1: संपादन कार्य आसान नहीं!

उदाहरण के लिए मान लीजिए कि आपके कस्बे में फल, सब्जी, मूँगफली या इसी तरह की दूसरी चीजें बेचने वालों के सड़क के किनारे ठेले लगा कर खड़े होने की वजह से सामान्य यातायात प्रभावित होता है। उन्हें हटाने के लिए स्थानीय पुलिस अभियान

छेड़ती है। यह घटना समाचार की श्रेणी में हो सकती है, लेकिन अगर कोई अखबार इसे प्रकाशित नहीं करता तो इसके पीछे उसकी सोच यह हो सकती है कि यह तो पुलिस की जिम्मेदारी बनती है और उसने ठेले वालों को हटा कर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया। इसमें कोई नई बात नहीं है। लेकिन अगर पुलिस इस अभियान में कुछ स्थायी दुकानों में तोड़-फोड़ करती है और वहाँ के दुकानदार पुलिस के खिलाफ आंदोलन पर उतर आते हैं तो वह घटना विशेष बन जाती है। हर अखबार या समाचार माध्यम उसे समाचार बनाना चाहेगा। इस पर प्रशासन और दुकानवालों, दोनों पक्षों की राय प्रकाशित की जा सकती है। क्योंकि वह घटना सहज ही अधिकांश लोगों की जिज्ञासा का कारण बन जाती है।

मीडिया आम आदमी से जुड़ी समस्याओं का समाधान खोजने में एक प्रकार से सरकार और प्रशासन की मदद करता है।

अब मान लीजिए ठेले वालों का जमावड़ा सड़क पर इसी तरह बना रहता है और उससे यातायात को परेशानी उठानी पड़ती है और कई बार शिकायत के बावजूद पुलिस या प्रशासन उन्हें वहाँ से हटाने की कोशिश नहीं करता तो यह भी समाचार बन सकता है, क्योंकि पुलिस-प्रशासन अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह नहीं करता और अव्यवस्था को नज़रअंदाज करता है। ऐसे में समाचार माध्यम अपनी जिम्मेदारी का निर्वाह करता है। आप तो जानते ही हैं कि समाचार माध्यम कई बार ऐसे काम भी करते हैं जिसे करने से सरकार या प्रशासन कतराता है। समाचार माध्यम आम आदमी की समस्याओं को सामने लाकर सरकार, प्रशासन या न्यायपालिका का ध्यान आकर्षित कराने की कोशिश करता है। मीडिया के इस तरह के कई प्रयासों से आम आदमी के हितों से जुड़ी समस्याओं का निदान करने की तरफ सरकार और प्रशासन मजबूर होते हैं।

समाचार संकलन

आप सोचते होंगे कि रोज़ देश भर में लाखों घटनाएँ घटती हैं और सभी समाचार माध्यम उनके बारे में सूचनाएँ देने की कोशिश करते हैं। कहीं दुर्घटना होती हैं, कहीं न्यायपालिका में किसी महत्त्वपूर्ण मसले पर फैसला आता है, कहीं सरकार और उसके विभिन्न मंत्रालय जनहित में फैसले करते हैं, एच.आई.वी. 'एड्स' जागृति शिविर लगाए जाते हैं। कहीं विभिन्न खेल चल रहे होते हैं, कहीं बाजार भाव और शेयर बाजार का उतार-चढ़ाव होता है, कहीं शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया होता है, दुनिया के विभिन्न देशों में कोई-न-कोई महत्त्वपूर्ण घटना है – इन सभी जगहों से समाचार जुटाना कैसे संभव हो पाता है? समाचार प्राप्त करने के मुख्य स्रोत निम्नलिखित हैं:

- संवाददाता
- संवाददाता सम्मेलन
- समाचार ब्यूरो
- समाचार ऐजेंसियाँ
- मोबाइल
- इंटरनेट
- ओबी वैन

आपने देखा होगा आपके इलाके में जब कोई महत्त्वपूर्ण घटना घटती है तो विभिन्न समाचार माध्यमों के संवाददाता इकट्ठे हो जाते हैं और उस घटना के बारे में विभिन्न लोगों से पूछताछ कर जानकारी जुटाते हैं। खबरें जुटाने का प्राथमिक तरीका यही होता है, लेकिन इसके अलावा भी खबरें जुटाने के कई तरीके हैं। हर अखबार या समाचार माध्यम खबरें जुटाने के लिए संवाददाताओं की नियुक्ति करता है। इन

संवाददाताओं को क्षेत्र विशेष के आधार पर काम बाँटे जाते हैं, जैसे कुछ को राजनीतिक समाचारों के संकलन की जिम्मेदारी दी जाती है तो कुछ को ड्रग्स, नशाखोरी जैसे अपराध, कुछ को खेल, कुछ को स्वास्थ्य, नारी समस्या, कुछ को बाजार भाव तो कुछ को स्थानीय समाचारों के संकलन की। इसी तरह छोटे-छोटे कस्बों, मुहल्लों के भी संवाददाता नियुक्त किए जाते हैं और कुछ विदेशों में भी। जिस क्षेत्र में समाचारों की गुंजाइश अधिक होती है, उसमें संवाददाताओं की संख्या भी उसी के अनुरूप रखी जाती है, जैसे राजनीतिक समाचारों की संभावना अधिक होती है इसलिए इस क्षेत्र के लिए संवाददाताओं की संख्या अधिक रखी जाती है। अलग-अलग राजनीतिक पार्टियों की जिम्मेदारी अलग-अलग संवाददाता को दी जाती है। कोई कांग्रेस की खबर लाता है तो कोई भाजपा की, कोई कम्युनिस्ट पार्टी या दूसरी पार्टियों की। इसी तरह सरकार की खबरें लाने के लिए भी संसद के दोनों सदनों के अलग-अलग संवाददाता रखे जाते हैं, और फिर विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के लिए अलग।

प्रत्येक संवाददाता घूम-घूम कर खबरें एकत्रित करता है, संचार माध्यमों और अखबारों को भेजता है।

आप सोचते होंगे कि ये संवाददाता दिन भर घूम-घूम कर किस तरह खबरें जुटाते होंगे। दरअसल जिस तरह समाचार माध्यमों को समाचारों की ज़रूरत होती है उसी तरह सरकार और उसके विभिन्न मंत्रालयों-विभागों को भी अपनी सूचनाएँ लोगों तक पहुँचाने की ज़रूरत होती है। लगभग हर सरकारी विभाग में एक सूचना कार्यालय होता है जिसकी जिम्मेदारी विभाग से जुड़े कार्यक्रमों और गतिविधियों की जानकारी प्रदान करना होता है। आमतौर पर संवाददाता विभाग प्रेस वार्ता भी बुलाते हैं, जिसे सामान्यतया प्रेस कॉन्फ्रेंस या संवाददाता सम्मेलन कहा जाता है।

संवाददाता सम्मेलन

समाचारों का एक और प्रमुख स्रोत है–संवाददाता सम्मेलन। संवाददाता सम्मेलनों में देशी-विदेशी अखबारों, प्रसारण संगठनों और समाचार एजेंसियों के पत्रकारों के सामने नई जानकारी दी जाती है और संचार माध्यमों के ये प्रतिनिधि अपने-अपने माध्यम के ज़रिए लोगों तक समाचार पहुँचाते हैं। संवाददाता सम्मेलनों में अखबारों के फोटोग्राफर तथा दूरदर्शन संगठनों व वीडियो कार्यक्रम बनाने वाली संस्थाओं की कैमरा टीमें भी शामिल होती हैं।

संवाददाता सम्मेलन प्रधानमंत्री, मंत्री, सचिव, मुख्यमंत्री तथा गैर सरकारी संस्थाओं, बैंकों आदि द्वारा विशेष मौकों पर आयोजित किए जाते हैं।

संवाददाता सम्मेलन प्रधानमंत्री, अन्य मंत्रियों, सचिवों, राज्यों के मुख्यमंत्रियों, राजनीतिक दलों के नेताओं या प्रवक्ताओं के अलावा गैर सरकारी संस्थाओं, बैंकों, व्यापारिक संगठनों, तथा स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी बुलाए जाते हैं। जब कोई नेता विदेश यात्रा पर जाता है तो वहाँ पहुँचने पर, यात्रा के अंत में तथा यात्रा के बाद अपने देश में पहुँच कर संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करता है। कई बार संवाददाता वैसे ही कई मौकों पर किसी नेता या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति को घेर कर अनौपचारिक रूप से सवाल-जवाब करते हैं और उस समय की घटनाओं के बारे में उनकी राय जानने की कोशिश करते हैं।

वैसे तो संवाददाता सम्मेलन आमतौर पर किसी के द्वारा अपनी तरफ से कोई बात बताने के लिए आयोजित किए जाते हैं, परंतु संवाददाता किसी भी तरह के प्रश्न पूछ

सकते हैं। संवाददाता सम्मेलन का सामना करना अपने आप में एक कला है, क्योंकि पत्रकार कई बार परेशानी में डालने वाले सवाल पूछते हैं, जिनका जवाब बहुत ही सूझबूझ के साथ देना पड़ता है। युद्ध, अकाल, चुनाव या किसी विशेष राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय संकट के दौरान प्रायः हर रोज़ संवाददाता सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं, जिनमें ताजा स्थिति बताई जाती है।

इसी प्रकार खेलों के समाचार जुटाने के लिए मैदान में लगातार उपस्थित रहना जरूरी होता है। टेलीविज़न के कैमरे तो लगे ही रहते हैं बाकी समाचार माध्यमों के खेल संवाददाता भी वहाँ उपस्थित होते हैं। इसी तरह बाजार की स्थिति के बारे में जानकारी जुटाने के लिए लगातार बाजार पर नज़र रखनी पड़ती है। हालांकि आजकल शेयर बाजार और स्टॉक एक्सचेंज इंटरनेट के ज़रिए जुड़ चुके हैं इसलिए बाजार की पल-पल की खबरें जानना आसान हो गया है। लेकिन सरकार के फैसलों और योजनाओं की घोषणाओं की सूचना के लिए पत्रकारों को लगातार वित्त या वाणिज्य मंत्रालय के संपर्क में बने रहना पड़ता है।

लेकिन कई बार सामाजिक हलचलों या घटनाओं की जानकारी तुरंत मिल पाना कठिन होता है। ऐसे में कई बार जहाँ घटना घटती है उस इलाके के लोग संवाददाता से संपर्क करके जानकारी देते हैं और वह घटनास्थल पर पहुँच कर पूरी सूचना इकट्ठी करता है। कई बार इलाके के पुलिस स्टेशन से इसकी जानकारी मिल जाती है। कुछ समाचार ऐसे भी होते हैं, जिन्हें सरकार या विभागों के लोग जानबूझ कर छिपाने या भ्रष्टाचार से जुड़ा कोई मामला हो तो उसे अक्सर छिपाने की कोशिश की जाती है, लेकिन चूँकि समाचार माध्यम जनहित में काम करते हैं इसलिए उनका खुलासा करना उनका धर्म बनता है।

मगर ऐसे समाचार जुटाना खासा मुश्किल काम होता है। इसमें जोखिम यह होता है कि किसी भी तरह की असावधानी या गलत तथ्यों की वजह से समाचार माध्यम को बदनामी का सामना करना पड़ सकता है। जिस विभाग या व्यक्ति को लक्ष्य बनाकर समाचार लिखा गया है वह उस संवाददाता या समाचार संस्थान पर मानहानि या अपराध का मुकदमा भी दायर कर सकता है। ऐसे में सावधानी के साथ-साथ तथ्यों को जुटाने के लिए संवाददाता को पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक जासूस की तरह काम करना पड़ता है।

समाचार संकलन की तकनीक

सूचना तकनीक के विस्तार और व्यापक इस्तेमाल से आजकल सूचनाएँ और समाचार जुटाने के काम में जितनी तेज़ी आई है उसके मुताबिक कुछ सहूलियतें भी बढ़ी हैं। पहले दूरदराज़ के इलाकों से खबरें जुटाने का काम जितना कठिन था, आज उतना ही आसान हो गया है। इंडोनेशिया में आए समुद्री तूफान के समय समाचार माध्यमों में प्रकाशित-प्रसारित होने वाली खबरों पर आपने ध्यान दिया होगा तो इसका अंदाजा लगाया जा सकता है। मोबाइल फोन, इंटरनेट, ओबी वैन आदि के ज़रिए आज सूचनाओं का तुरंत प्रसारण काफी आसान हो गया है। कोई भी पत्रकार घटना स्थल से फोन के ज़रिए तुरंत घटना का ब्योरा भेज सकता है या इंटरनेट के ज़रिए लिखित

मोबाइल फोन, इंटरनेट, ओबी वैन के माध्यम से समाचार/सूचनाएँ एकत्रित कर तत्काल प्रसारित की जा सकती हैं।

रूप में समाचार भेज सकता है, जिसे संपादकीय कार्यालय में संपादित करके तुरंत प्रकाशित कर लिया जाता है। इसी तरह टेलीविजन पर सूचनाओं का प्रसारण ओबी वैन के ज़रिए तुरंत आँखों देखा हाल जैसा प्रसारित किया जा सकता है। आप टेलीविज़न पर अक्सर देखते होंगे कि किसी भी घटना स्थल पर पहुँच कर संवाददाता घटना की स्थिति का आँखों देखा हाल तुरंत प्रस्तुत कर देते हैं। ऐसा ओबी वैन के ज़रिए ही संभव होता है।

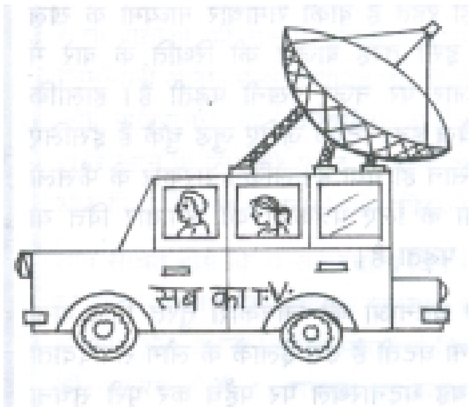

चित्र 36.2: ओबी वैन

ओबी वैन एक तरह का चलता-फिरता प्रसारण केंद्र होता है। एक गाड़ी पर डिश एंटीना लगा कर उससे सीधे कैमरे को जोड़ दिया जाता है, जो समाचार केंद्र से उपग्रह के ज़रिए जुड़ा होता है। घटना स्थल के चित्रों को इस गाड़ी के ज़रिए सीधे समाचार केंद्र तक भेज दिया जाता है और वहाँ से सीधा प्रसारण कर दिया जाता है। इस तरह पहले जो समाचार संकलित कर समाचार केंद्र तक लाने और फिर उसे संपादित कर प्रसारित करने में काफी समय लग जाता था वह अब बच जाता है। अब संवाददाता ही काफ़ी हद तक समाचारों का संपादन कर लेता है।

मगर बहुत सी खबरें ऐसी होती हैं, जिनके संकलन के लिए समाचार माध्यमों को खुद घटना स्थल पर जाने की ज़रूरत नहीं होती। कुछ सूचनाएँ समाचार कार्यालय तक नियमित रूप से पहुँचती रहती हैं। ये खबरें ज़्यादातर समाचार एजेंसियाँ भेजती हैं या विभिन्न विभागों, सामाजिक संस्थानों या नागरिक संगठनों द्वारा विज्ञप्ति के रूप में फ़ैक्स, ई-मेल के ज़रिए भेजी जाती हैं। इसके लिए समाचार माध्यम अलग-अलग शहरों और स्थानों पर अपने समाचार ब्यूरो स्थापित करता है और टेलीप्रिंटर, इंटरनेट, फ़ैक्स जैसे तकनीकी संसाधनों का इस्तेमाल करता है। समाचार संकलन के तकनीकी पक्षों और विभिन्न समाचार एजेंसियों के ज़रिए किस तरह समाचार जुटाए जाते हैं, इसकी जानकारी हम आगे विस्तार से प्राप्त करेंगे।

पाठगत प्रश्न 36.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए

1. समाचार की श्रेणी में मुख्यतः वे घटनाएँ आती हैं जो –
   (क) प्रधानमंत्री कार्यालय से जारी होती हैं
   (ख) सभी की रुचि और जिज्ञासा का विषय होती हैं
   (ग) संवाददाता जुटाते हैं
   (घ) प्रेस वार्ता में जारी होती हैं

2. इनमें से कौन समाचार संकलन का माध्यम नहीं होता

   (क) संवाददाता (ग) अफवाह

   (ख) समाचार एजेंसियां (घ) विज्ञप्ति

3. आधुनिक तकनीकी साधनों के आ जाने से–

   (क) समाचारों की गुणवत्ता प्रभावित हुई है

   (ख) समाचारों के संपादन में असुविधा हुई है

   (ग) खबरों की विश्वसनीयता कम हुई है

   (घ) समाचारों के संकलन और प्रकाशन में तेजी आई है

36.4 समाचार ब्यूरो

समाचार ब्यूरो एक प्रकार से समाचार संकलन केंद्र की तरह काम करता है। चूँकि समाचार माध्यम के मुख्य कार्यालय में बैठे रह कर हर शहर या प्रमुख राजनीतिक, व्यावसायिक केंद्रों की गतिविधियों की जानकारी जुटा पाना आसान नहीं होता इसलिए इन स्थानों पर समाचार ब्यूरो स्थापित किए जाते हैं उदाहरण के लिए अगर कोई अखबार दिल्ली से निकलता है तो उसके लिए बिहार के भागलपुर या मुंबई के किसी मुहल्ले की खबरें जुटा पाना बहुत आसान नहीं होगा, जब तक कि उसके संवाददाता वहाँ उपस्थित न हों। अगर वहाँ की खबरें देर-सवेर मिल भी जाएँ तो घटना की वास्तविक जानकारी या उसकी सच्चाई को लेकर आशंका बनी रहेगी। इस तरह की खबरों में विश्वसनीयता का खतरा बना रहेगा। इसलिए हर समाचार माध्यम अपने संवाददाताओं के ज़रिए प्राप्त खबरों पर ही ज़्यादा भरोसा करते हैं। ऐसे में समाचार ब्यूरो स्थापित करना बहुत ज़रूरी हो जाता है।

समाचार ब्यूरो में संवाददाताओं की नियुक्ति होती है, जो अपने-अपने क्षेत्र के मुताबिक समाचारों का संकलन करते हैं और इंटरनेट या समाचार माध्यम के नेटवर्क के ज़रिए समाचार केंद्र के मुख्यालय तक भेज देते हैं। कई अखबारों के स्थानीय संस्करण भी प्रकाशित होते हैं। जो अखबार ऐसा करते हैं उनका स्थानीय कार्यालय ही एक तरह से ब्यूरो का काम करता है। उसके संवाददाता जो खबरें लेकर आते हैं उनका प्रयोग स्थानीय स्तर पर तो होता ही है, राष्ट्रीय संस्करण के लिए भी कर लिया जाता है।

हालांकि देश के हर शहर में ब्यूरो खोलना किसी भी समाचार माध्यम के लिए काफ़ी खर्चीला काम हो सकता है इसलिए ये मुख्य रूप से बड़े शहरों, राज्यों की राजधानियों में खोले जाते हैं बाकी जिला या ब्लॉक स्तर की सूचनाएँ जुटाने के लिए स्ट्रिंगर रखे जाते हैं। स्ट्रिंगर अपने आसपास की जो खबरें भेजते हैं उस आधार पर उन्हें भुगतान किया जाता है। इस तरह समाचार माध्यम का कार्यालय खोलने, तकनीकी सुविधाएँ प्रदान कराने और उनमें नियुक्त कर्मचारियों के वेतन का खर्च काफ़ी कम हो जाता है।

36.5 समाचार एजेंसियाँ

समाचार एजेंसियाँ समाचार माध्यमों को समाचार बेचने का काम करती हैं। चूँकि

टिप्पणी

किसी भी समाचार माध्यम के लिए हर स्थान पर अपने संवाददाता नियुक्त करना संभव नहीं होता इसलिए वे बहुत सारी खबरों के लिए समाचार एजेंसियों पर निर्भर करते हैं। समाचार एजेंसियाँ भी विभिन्न शहरों, स्थानों पर अपने संवाददाताओं की नियुक्ति उसी प्रकार करती हैं जैसे कोई समाचार माध्यम करता है। इनके संवाददाता भी समाचार माध्यमों के संवाददाताओं की तरह ही खबरें जुटाने का काम करते हैं।

चूँकि एजेंसियाँ खबरें बेचती हैं इसलिए वे विभिन्न क्षेत्रों के समाचार पूरे तथ्यों और पूर्ण ब्योरे के साथ जुटाने की कोशिश करती हैं। उनकी खबरों में विश्वसनीयता होती है। समाचारों के अलावा ये एजेंसियाँ फोटो और फीचर भी तैयार करती हैं और समाचार माध्यम इन्हें भुगतान करके खरीदते हैं।

भारत में प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पी.टी.आई.) और यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया (यू.एन.आई.) प्रमुख समाचार एजेंसियाँ हैं। पी.टी.आई. की हिंदी समाचार एजेंसी का नाम 'भाषा' और यू.एन.आई. की हिंदी सेवा का नाम 'यूनीवार्ता' है। इसके अलावा एसोसिएटेड प्रेस (ए.पी.) और एफ.पी. जैसी कई विदेशी समाचार एजेंसियाँ भी हैं। समाचार संस्थानों या माध्यमों को इन एजेंसियों से समाचार खरीदना इसलिए सस्ता और सुविधाजनक होता है कि उनके लिए देश या दुनिया के सभी स्थानों पर अपने संवाददाता नियुक्त करना या समाचार ब्यूरो गठित करना आसान नहीं होता। ऐसे में समाचार एजेंसियों से समाचार खरीद कर वे अपना ज़्यादातर काम चलाती हैं। कई छोटे अखबार या पत्रिकाओं के लिए इनकी मदद से समाचारों के प्रकाशन में आसानी रहती है।

लगभग सभी समाचार माध्यम अपने समाचार संसाधनों के अलावा समाचार एजेंसियों की मदद पर आश्रित होते हैं। इन एजेंसियों से समाचार खरीदने के आमतौर पर दो तरीके होते हैं। पहला तो यह कि मासिक भुगतान पर इनसे सभी समाचार और फोटो खरीदे जाएँ। दूसरे, कुछ खास या ज़रूरत के समाचारों या फोटो को निर्धारित भुगतान करके समाचार खरीदे जाएँ। जो नियमित प्रकाशित होने वाले समाचार पत्र या टेलीविज़न चैनल हैं वे मुख्य रूप से मासिक भुगतान पर खबरें खरीदना ज़्यादा उचित समझते हैं। भुगतान पर सदस्यता प्राप्त करने वाले माध्यमों को समाचार एजेंसियाँ टेलीप्रिंटर या इंटरनेट के ज़रिए समाचार और फोटोग्राफ भेजती हैं। आपने देखा होगा कि अखबारों के समाचारों और फोटो के साथ उन्हें जारी करने वाली एजेंसियों के नाम भी लिखे होते हैं। कई बार समाचार पत्र एजेंसियों के साथ अपने संवाददाता की लाई खबरों को जोड़ कर प्रस्तुत करते हैं। ऐसे में वे समाचार के साथ लिखते हैं कि हमारे संवाददाता और एजेंसियाँ क्योंकि जो अखबार कई एजेंसियों से समाचार खरीदते हैं वे उन सभी की खबरों को मिला कर एक परिपूर्ण खबर बनाते हैं।

सूचना कार्यालय

संचार माध्यमों को अन्य कई स्थानों तथा सूत्रों से अपने आप भी समाचार मिलते रहते हैं। इनमें मुख्य हैं–सरकारी मंत्रालयों और विभागों के समाचार जारी करने वाले सूचना कार्यालय। दिल्ली में केंद्र सरकार का पत्र सूचना कार्यालय तथा राज्यों की राजधानियों में राज्य सरकारों के सूचना निदेशालय या कार्यालय प्रतिदिन आम जनता के हित की जानकारी या सरकारी नीतियों व कार्यक्रमों से संबंधित सूचनाएँ जारी करते हैं, जो अख़बारों तथा संचार माध्यमों में पहुँचाई जाती है। इसके अलावा राजनीतिक दल,

सूचना कार्यालय में सूचनाएँ समाचार का रूप लेती हैं।

टिप्पणी

विश्वविद्यालय, सार्वजनिक प्रतिष्ठान, औद्योगिक तथा व्यापारिक संगठन अपने-अपने काम के बारे में जानकारी देने के लिए प्रेस विज्ञप्तियाँ जारी करते हैं, जो समाचार का रूप ले लेती हैं।

विदेशी प्रसारण संगठन

आपने बी.बी.सी. का नाम अक्सर सुना होगा। बी.बी.सी. लंदन की रेडियो प्रसारण संस्था है, जिसके समाचार विश्व के लगभग सभी देशों में सुने जाते हैं। इसी तरह अन्य देश भी विदेशों के लिए समाचार प्रसारित करते हैं। हमारे देश से भी पश्चिमी देशों, एशिया, अफ्रीका आदि के लिए अंग्रेज़ी, हिंदी तथा उन देशों की भाषाओं में समाचार, वार्ताएँ आदि प्रसारित की जाती हैं। इन विदेशी प्रसारणों को यहाँ सुनकर (जिसे मॉनिटरिंग कहते हैं) उनका इस्तेमाल किया जाता है। रेडियो आस्ट्रेलिया से सुने गए समाचार के आधार पर ही आकाशवाणी आस्ट्रेलिया का समाचार आप तक पहुँचा देती हैं। हाँ, इनकी सच्चाई का पता लगाने में सावधानी अवश्य बरतनी पड़ती हैं। आकशवाणी में इन सभी विदेशी प्रसारणों को सुनकर समाचार ग्रहण करने के लिए अलग से मॉनिटरिंग विभाग काम करता है। पड़ोसी देशों के समाचारों तथा अन्य कार्यक्रमों की व्यापक रूप से मॉनिटरिंग होती है।

संसद और विधानमंडल

आप जानते होंगे कि संसद देश की सबसे बड़ी और सबसे प्रधान संस्था है, जिसमें हमारे चुने हुए प्रतिनिधि कानून बनाते हैं और देश के भले-बुरे पर विचार करते हैं। लोकसभा और राज्यसभा में विभिन्न मसलों पर विचार होता है, तथा सरकार और विपक्ष के बीच बहस होती है तथा सब तरह की नीतियाँ तैयार की जाती हैं, सदन की बैठक का पहला एक घंटा प्रश्नकाल कहलाता है, जिसमें सदस्य सरकार से तरह-तरह के प्रश्न पूछते हैं। मंत्री उन सवालों के उत्तर देते हैं। ये प्रश्न मौखिक व लिखित दोनों प्रकार के होते हैं। ये उत्तर भी संचार माध्यमों में समाचार के रूप में इस्तेमाल होते हैं, क्योंकि इनमें देश की प्रगति की तस्वीर सामने आती है।

संसद में आम बजट व रेल बजट भी स्वीकार किए जाते हैं, और नए कर लगाए जाते हैं।

इसी तरह राज्यों की विधान सभाओं और विधान परिषद की कार्यवाही के आधार पर भी समाचार तैयार किए जाते हैं। इन सदनों में पत्रकारों के बैठने का विशेष स्थान होता है, जिसे 'पत्रकार दीर्घा' या 'प्रेस गैलरी' कहते हैं। ये पत्रकार संसद और विधान सभाओं की कार्यवाही के समाचार तत्काल अपने-अपने संचार माध्यमों को भेजते रहते हैं। आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से संसद की कार्यवाही के बारे में अलग से समाचार भी प्रसारित होते हैं। अब संसद के विभिन्न सत्रों का दूरदर्शन पर सीधा प्रसारण किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 36.3

उपयुक्त शब्दों का प्रयोग करते हुए खाली स्थान भरिए :

1. .... संवाददाता समाचारपत्र के वेतनभोगी संवाददाता नहीं होते।

2. संवाददाता सम्मेलन का सामना करना अपने आप में एक ....है।
3. पत्र सूचना कार्यालय ....सरकार की नीतियों व कार्यक्रमों की सूचनाएँ आम जनता के लिए जारी करता है।
4. ....और विधानमंडल भी समाचारों के प्रमुख स्रोत हैं।

36.6 समाचार संपादन

समाचारों का संकलन करने के बाद प्रायः एजेंसियों से प्राप्त होने वाली खबरों को मिला कर संवाददाता समाचार तैयार करते हैं। इसके बाद उन समाचारों को समाचार संपादक के पास भेजा जाता है। वे उपसंपादकों की मदद से समाचारों की भाषा और तथ्यों का संपादन करते हैं। साथ ही वे यह भी निर्धारित करते हैं कि कौन सी खबर किस महत्त्व की है, उसके अनुसार उसे स्थान प्रदान करते हैं। खबरों के शीर्षक और उपशीर्षक लगाते हैं। अगर समाचार अति महत्त्व का है तो उसमें उसके विविध पहलुओं से संबंधित बॉक्स भी लगाया जाता है।

हालांकि अब कंप्यूटर में प्रकाशन और पेज बनाने से संबंधित कई सुविधाएँ उपलब्ध हैं इसलिए संपादन और पेज मेकिंग में काफ़ी आसानी हो गई है। पहले समाचारों को जुटाने के बाद उन्हें कंपोज कराना फिर स्थान के अनुसार काटना और चिपका कर पेज तैयार करना कठिन होता था। फोटो लगाने के लिए भी खासी मशक्कत करनी पड़ती थी। अब कंप्यूटर पर कंपोज करके आसानी से पेज बनाया जा सकता है। पहले पेज बनाना कठिन काम होता था। चिमटी से एक-एक अक्षर उठा कर सजाया जाता था। फोटो छापने के लिए भट्ठी में लोहे को गला कर उसका ब्लॉक तैयार किया जाता था। फिर उसे सेट किया जाता था। पेज में किसी भी प्रकार का बदलाव कठिन होता था। उसके बाद जब कंप्यूटर आया तो उस पर कंपोज करके उसका प्रिंट निकाल कर बटर पेपर पर खबरों को आकार में काट कर पेज पर चिपकाया जाने लगा और फिर उसकी प्लेट बनाई जाती थी।

कंप्यूटर के आने से सुविधाएँ:
- **समाचार संपादन में**
- **पेज मेकिंग में**
- **चित्र लगाने में**
- **फोटो लगाने में**
- **वर्तनी की एकरूपता**
- **समय की बचत**

अब इन परेशानियों से काफ़ी हद तक मुक्ति मिल गई है। अंग्रेजी में तो प्रूफ पढ़ने का झंझट भी खत्म हो गया है। कंप्यूटर गलत शब्दों को अपने आप रेखांकित करता चलता है, जिसे खुद ही तत्काल सुधार लिया जाता है। स्पेल चेकर (वर्तनी जाँचक) की सुविधा भी अब उपलब्ध है हालांकि हिंदी में भी अब कई सॉफ्टवेयर ऐसे तैयार कर लिए गए हैं जो अंग्रेजी की तरह गलत शब्दों को रेखांकित करते चलते हैं, लेकिन चूँकि हिंदी में अलग-अलग संस्थान अलग-अलग वर्तनियाँ इस्तेमाल करते हैं इसलिए यह सुविधा अंतिम रूप से प्रभावी नहीं हो पाई है। हाँ इतनी सुविधा ज़रूर हो गई है कि अब समाचारों को कंप्यूटर पर सीधा कंपोज करके उसे पेज पर सेट करना आसान हो गया है। अब अलग-अलग खबरों के प्रिंट निकाल कर उन्हें चिपकाने का झंझट नहीं रह गया है। पेज मेकर सीधे खबरों को पेज पर सेट कर देता है और जहाँ फोटो की ज़रूरत है उसे लगा देता है। खबरों को काटना या छोटा बड़ा करना भी अब पल भर में किया जा सकता है। इस तरह अब पेज बनाना मुश्किल से आधे-एक घंटे का काम होता है।

टिप्पणी

खबरें जुटाना, उन्हें तैयार करना और संपादित करके अंतिम रूप देने में ज़्यादा वक्त लगता है अपेक्षाकृत पेज बनाने के।

अब तो कंप्यूटरों की सुविधा हो जाने से न सिर्फ पेज बनाने में सुविधा हो गई है, पहले की अपेक्षा काफ़ी आकर्षक तरीके से साफ-सुथरा पेज बनाना संभव हो गया है बल्कि एक स्थान से दूसरे स्थान पर खबरों को भेजना और पूरे के पूरे पेज को भेजना आसान हो गया है। पहले यह सुविधा नहीं थी। अब तो कई अखबारों के पेज दिल्ली में तैयार होते हैं और देश के दूसरे शहरों में भी जस के तस भेज दिए जाते हैं। इस तरह पूरे देश में एक ही तरह की साज सज्जा के साथ अखबार देखे-पढ़े जा सकते हैं। खास कर हर अखबार अपने संपादकीय पृष्ठ इसी तरह प्रकाशित करते हैं। यही नहीं कई अखबार तो अब तैयार कहीं और होते हैं और प्रकाशित कहीं और होते हैं। अंग्रेजी अखबार हिंदू ने पहली बार इस तकनीक का इस्तेमाल किया। वह चेन्नई में तैयार किया जाता था और उसका दिल्ली के आस-पास बिकने वाला संस्करण हरियाणा के गुड़गाँव में छपता था। अब इस तकनीक का इस्तेमाल लगभग सभी बड़े अखबार करने लगे हैं। पेज एक जगह तैयार होते हैं और दूसरी जगह से प्रकाशित होते हैं। हिंदुस्तान टाइम्स दिल्ली में तैयार होता है और गुड़गाँव या नोएडा के प्रेस में छपता है। इस तरह समय की काफ़ी बचत होती है।

अब अखबार छापने वाली इतनी आधुनिक मशीनें बन गई हैं कि वे प्लेट की बजाय कंप्यूटर पर तैयार पेज को सीधा लेकर छाप सकती हैं। अब घंटे भर में हजारों अखबार पूरी तरह छाप कर तैयार कर लिए जाते हैं। ये मशीनें कई पेज एक साथ छापती हैं, उन्हें पढ़े जाने की स्थिति में काट और मोड़ कर तैयार करती हैं और साथ ही गिनती करके बंडल तैयार करती चलती हैं। इस तरह उन बंडलों को सीधे ट्रकों पर लाद कर बाजार में पहुँचाया जाता है। जिन अखबारों की लाखों प्रतियाँ छपती हैं और कई संस्करण प्रकाशित होते हैं उनमें इन मशीनों का बहुत बड़ा योगदान होता है। अब डेढ़-दो घंटे में लाखों अखबार छाप कर तैयार कर लिए जाते हैं। पहले ऐसा संभव नहीं था। सुविधाजनक मशीनों के आ जाने का लाभ यह हुआ है कि समाचार माध्यमों को समाचारों की गुणवत्ता निखारने और अधिक-से-अधिक समाचार जुटाने और प्रस्तुत करने के लिए काफ़ी वक्त मिल गया है।

इन तकनीकी संसाधनों से सिर्फ अखबारों या पत्रिकाओं को नहीं, टेलीविज़न चैनलों को भी काफ़ी सुविधा हो गई है। कंप्यूटर आधारित तकनीक और उपग्रह माध्यम से सूचना केंद्रों के जुड़ जाने से जहाँ समाचारों का त्वरित प्रसारण संभव हुआ है वहीं समाचारों, चित्रों के संपादन में भी सहूलियत हुई है। यही वजह है कि आज टेलीविज़न चैनल चौबीसों घंटे समाचारों का प्रसारण कर पाने में सक्षम हो पाए हैं। अब बिहार के किसी गाँव में या पांडिचेरी के किसी द्वीप पर समाचार जुटाने गए संवाददाता से तुरंत संपर्क किया जा सकता है और उसकी भेजी खबरों को तुरंत प्रसारित किया जा सकता है। यह मोबाइल फोन या ओबी वैन के ज़रिए काफ़ी हद तक संभव हो पाया है।

पाठगत प्रश्न 36.4

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुन कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. समाचार ब्यूरो में
   (क) संबंधित समाचार माध्यम के संवाददाता होते हैं
   (ख) किसी भी समाचार माध्यम के संवाददाताओं के बैठने की सुविधा होती है
   (ग) समाचारों के प्रकाशन या प्रसारण से पहले सिर्फ़ विचार-विमर्श किया जाता है।
   (घ) सिर्फ संपादक बैठते हैं
2. समाचार एजेंसियाँ
   (क) हर अखबार की अपनी होती है
   (ख) अखबारों से खबरें जुटा कर संकलित करती हैं
   (ग) समाचार माध्यमों को समाचार बेचती हैं
   (घ) सिर्फ टेलीविज़न चैनलों को खबरें देती हैं
3. समाचार के संपादन में
   (क) समाचार संपादक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है
   (ख) संवाददाता की भूमिका नहीं होती
   (ग) पाठकों से राय ली जाती है
   (घ) सिर्फ भाषा ठीक की जाती है

36.7 आपने क्या सीखा

- जन साधारण की रुचि और जिज्ञासा से जुड़ी किसी भी घटना को समाचार की श्रेणी में रखा जा सकता है।
- समाचारों के चुनाव में जनता की रुचि और जिज्ञासा का ध्यान रखते हुए उनके महत्त्व के आधार पर उन्हें प्रकाशित या प्रसारित किया जाता है।
- समाचारों के संकलन में आधुनिक तकनीकों जैसे मोबाइल फोन, कंप्यूटर और ओबी वैन आदि के आ जाने से काफ़ी तेजी आई है।
- समाचारों के संकलन में संवाददाता, समाचार एजेंसियों, नागरिक संगठनों और सरकारी विभागों की तरफ से जारी विज्ञप्तियों को आधार बनाया जाता है।
- संचार माध्यमों में समाचार एकत्र करने के अनेक स्रोत हैं, जिनमें संवाददाता, संवाददाता सम्मेलन, समाचार एजेंसियाँ, सूचना कार्यालय तथा संसद और विधानमंडल प्रमुख हैं।

- समाचार ब्यूरो प्रायः विभिन्न महत्त्वपूर्ण शहरों और प्रदेशों की राजधानियों में अपने कार्यालय स्थापित करते हैं, जहाँ उनके संवाददाता नियुक्त होते हैं।
- समाचार एजेंसियाँ भी अपने संवाददाताओं के माध्यम से समाचारों का संकलन करती और समाचार माध्यमों को बेचती हैं।
- समाचारों के चयन और संपादन में समाचार संपादक की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। वह संवाददाता की भेजी खबर की भाषा और तथ्यों का संपादन, संशोधन कर उसके शीर्षक लगाता है और उसके महत्त्व के अनुरूप स्थान देता है।
- कंप्यूटर और अखबार छापने वाली आधुनिक मशीनों के आ जाने से जहाँ अखबारों के प्रकाशन में आसानी हुई है वहीं ओबी वैन के प्रचलन से टेलीविज़न चैनलों को खबरों के तुरंत प्रसारण में काफ़ी सुविधा हुई है।

36.8 पाठांत प्रश्न

1. संचार प्रक्रिया का संक्षिप्त विवेचन कीजिए।
2. 'समाचार' का अर्थ स्पष्ट कीजिए। आपके अनुसार किस तरह की घटना को समाचार का दर्जा दिया जा सकता है, उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए।
3. समाचारों का चुनाव करते समय किन बातों को ध्यान में रखा जाता है?
4. समाचार संकलन की कौन-कौन सी प्रक्रियाएँ हैं?
5. सूचना और समाचार के अंतर को स्पष्ट कीजिए।
6. टेलीविज़न और अखबारों के समाचार संकलन की प्रक्रिया में क्या अंतर होता है?
7. आधुनिक तकनीकों के आ जाने से समाचारों के प्रसारण या प्रकाशन में किस तरह की सुविधाएँ हुई हैं। किसी एक तकनीक का उदाहरण देकर स्पष्टीकरण कीजिए।
8. निम्नलिखित पर टिप्पणी लिखिए:

   स्ट्रिंगर, ओबी वैन, 'भाषा' और 'यूनीवार्ता', समाचार ब्यूरो, संवाददाता
9. अगर आपके पड़ौस में एक लेडी डाक्टर द्वारा गर्भ में लिंग की जाँच की जाती है जो कि कानूनन अपराध है, आस-पड़ोस वालों ने इसके खिलाफ शिकायत भी दर्ज करवाई लेकिन कोई उचित कार्रवाई नहीं हो सकी है। इसके लिए आप क्या उपाय करेंगे कि गर्भ में लिंग की जाँच बंद की जाए ताकि भ्रूण हत्या न हो। क्या अखबार, रेडियो या टेलीविज़न आपकी कोई मदद कर सकता है? अगर हाँ, तो स्थानीय मीडिया में यह खबर सुर्खियों में देने के लिए आप क्या करेंगे?

36.9 योग्यता विस्तार

अपने शहर के किसी समाचार-पत्र के कार्यालय में संपर्क स्थापित कर एक पत्रकार से वार्तालाप कीजिए और विस्तार से जानकारी प्राप्त कीजिए।

36.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

36.1	1. जन संचार	2. फीडबैक	3. बाधा/शोर	
36.2	1. (ख)	2. (ग)	3. (घ)	
36.3	1. अंशकालिक	2. कला	3. केंद्र	4. संसद
36.4	1. (क)	2. (ग)	3. (क)	

301hi36B

36

जनसंख्या-व`द्धि और विज्ञान

पिछले पाठों को पढ़ते हुए आपने विज्ञान के महत्व को समझा होगा। साथ ही आपने यह भी देखा होगा कि हमारे देश में विज्ञान ने काफी विकास किया है। आज दुनिया में जब भी कहीं विज्ञान के विकास की चर्चा की जाती है, तो हमारे देश का नाम जरूर लिया जाता है। लेकिन विज्ञान के इतने व्यापक स्तर पर विकास कर लेने के बाद भी हमारे देश का नाम विकसित देशों की सूची में नहीं आता। आज भी इसकी गिनती विकासशील देशों में ही की जाती है। क्या आपने कभी सोचा कि इसका कारण क्या है ? इसका कारण है, हमारे देश का विशाल जनसमूह यानी जनसंख्या–बढ़ती आबादी। जनसंख्या अधिक होने के कारण हर आदमी तक सही ढंग से विज्ञान का लाभ नहीं पहुँच पाता और यही कारण है कि हमारे देश को जितना विकास करना चाहिए उतना नहीं कर पाता।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- जनसंख्या-व`द्धि का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- दुनियाभर के देशों में हो रही जनसंख्या की व`द्धि के बारे में बता सकेंगे;
- जनसंख्या-व`द्धि के कारण समझा सकेंगे;
- भारत में जनसंख्या-व`द्धि के कारण उत्पन्न समस्याओं का विश्लेषण कर सकेंगे;
- जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में विज्ञान द्वारा किए जा रहे उपायों की सूची बना सकेंगे;
- जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता सिद्ध कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. आपने जगह-जगह परिवार नियोजन के लिए लगे पोस्टर और विज्ञापन देखे

टिप्पणी

होंगे। उन्हें देख कर आपके मन में कुछ-न-कुछ विचार अवश्य उभरते होंगे। उन्हें एक साफ कागज पर लिखिए।

2. परिवार नियोजन संबंधी चार नारे एकत्रित कर यहाँ लिखिए।

(क) --

(ख) --

(ग) --

(घ) --

36.1 आइए, समझें

जनसंख्या-व`द्धि का स्वरूप

जनसंख्या-व`द्धि के स्वरूप को समझने के लिए कुछ पारिभाषिक शब्दों को जान लेना जरूरी है। आइए, पहले उन शब्दों की परिभाषा समझते हैं।

जन्मदर : प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर पैदा होने वाले जीवित बच्चों की संख्या को **जन्मदर** कहते हैं।

म`त्युदर :** प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर म`त व्यक्तियों की संख्या को **म`त्युदर कहते हैं।

यानी एक साल में पैदा हुए बच्चों की संख्या में से उस साल में मरने वालों की संख्या को घटा दें तो **जनसंख्या-व`द्धि** का पता चलता है।

प्रतिवर्ष पैदा होने वाले बच्चों की संख्या – मरने वाले व्यक्तियों की संख्या = जनसंख्या-व`द्धि

क्या आप जानते हैं कि दुनिया में सबसे अधिक तेजी से जनसंख्या-व`द्धि कहाँ होती है? जी हाँ! भारत में। पूरी दुनिया में हर साल 8 करोड़ की जनसंख्या-व`द्धि होती है, जिसमें से 2 करोड़ की व`द्धि अकेले भारत करता है। यानी पूरी दुनिया की कुल जनसंख्या-व`द्धि का एक चौथाई हिस्सा अकेले भारत करता है। भारत में प्रति मिनट 52 बच्चे पैदा होते हैं। इसी तरह जनसंख्या की द`ष्टि से भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। पहले स्थान पर चीन है। किंतु क्षेत्रफल की द`ष्टि से दुनिया में भारत का सातवाँ स्थान है। यानी क्षेत्रफल के अनुपात में भारत की जनसंख्या कई गुना अधिक है। इसीलिए यहाँ जनसंख्या-व`द्धि के कारण जनजीवन से जुड़ी अनेक परेशानियाँ पैदा हो गई हैं।

भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है। वहाँ ठीक से जनसंख्या नियंत्रण के उपायों का प्रयोग न हो पाने के कारण जन्मदर अधिक है। किंतु शहरों में रोजगार की तलाश में गाँव के लोगों का तेजी से पलायन होता है, जिस कारण शहरों में जनसंख्या-व`द्धि काफी तेज हो गई है। दिल्ली का ही उदाहरण लें। यहाँ हर साल 20 लाख लोग रोजगार की तलाश में गाँवों तथा बाहर के क्षेत्रों से आकर बस जाते हैं। लगभग यही स्थिति मुंबई, बेंगलूर तथा दूसरे महानगरों में भी है। इस तरह गाँव से लोगों के शहरों में आकर बसते चले जाने के कारण वहाँ रहने के स्थान की कमी, पीने के पानी की समस्या, बिजली तथा यातायात की समस्या बढ़ जाती है। इसके साथ ही भारी मात्रा में कचरा पैदा होता है, जिससे तरह-तरह की बीमारियाँ पैदा होती हैं।

36.2 विश्व में जनसंख्या-व`द्धि का स्वरूप

दुनिया की कुल आबादी छह अरब से भी अधिक है। आप ऊपर पढ़ चुके हैं कि आठ करोड़ प्रति वर्ष के हिसाब से दुनिया की आबादी बढ़ रही है। ध्यान देने की बात तो यह है कि इस बढ़ती आबादी का सबसे अधिक हिस्सा विकासशील देशों का है। जहाँ अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन, जर्मनी आदि जैसे विकसित देशों में जनसंख्या-व`द्धि की दर 0.1% है, चीन समेत अन्य विकासशील देशों की औसत जनसंख्या-व`द्धि 2.0% है। इस बढ़ती हुई जनसंख्या में अधिकांश योगदान अफ्रीकी और एशियाई देशों का है। 1900 से लेकर 1975 तक दुनिया में हुई कुल जनसंख्या-व`द्धि का 80% हिस्सा विकासशील देशों का रहा, जो अब बढ़कर 98% तक पहुँच गया है।

अफ्रीकी देशों में जनसंख्या-व`द्धि का औसत दर 2.5% है। ईरान, इराक, कुवैत, यमन, ओमान, कतर, सीरिया आदि मुस्लिम देशों में जनसंख्या-व`द्धि की औसत दर 2.2% है। भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, अफगानिस्तान, बंगलादेश, नेपाल और भूटान जैसे दक्षेस (सार्क) देशों में औसत जनसंख्या-व`द्धि की दर 1.9% है। यही कारण है कि इन्हीं देशों में बेरोजगारी, निरक्षरता तथा भ्रष्टाचार जैसी जटिल समस्याएँ हैं।

चित्र : जनसंख्या वद्धि का स्वरूप

सन् 2000 तक भारत की कुल आबादी बढ़कर 1 अरब हो गई थी। इस द`ष्टि से दुनिया का हर 60 वाँ व्यक्ति भारतीय है। आज 2007 में भारत की जनसंख्या 1,02,87,37,436 है। जिनमें 53,22,23,090 पुरुष तथा 49,65,14,346 महिलाएँ हैं। जनसंख्या-व`द्धि के कारण भारत दुनिया के कुछ समस्याग्रस्त देशों में से एक है। यहाँ जन्मदर तथा म`त्यु दर में लगभग 4 गुने का अंतर है। यदि भारत में जनसंख्या-व`द्धि पर नियंत्रण नहीं किया गया तो यह वर्तमान जनसंख्या कुछ ही दशकों में दो गुनी हो जाएगी और अनुमान है कि 2025 तक आते-आते खाद्यान्न तथा पीने के पानी का भयानक संकट पैदा हो जाएगा।

पाठगत प्रश्न 36.1

कोष्ठक में दिए विकल्पों में से सही विकल्प छाँट कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. जनसंख्या-व`द्धि कहते हैं ....

   (क) म`त्युदर तथा जन्मदर के योग को

   (ख) जन्मदर तथा म`त्युदर के अंतर को

   (ग) प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर पैदा होने वाले बच्चों को ,

   (घ) प्रतिवर्ष प्रति हजार व्यक्ति पर म`त व्यक्तियों की संख्या को

2. भारत में प्रतिवर्ष ....की जनसंख्या-व`द्धि होती है।

   (क) 1 अरब (ग) 2 करोड़

   (ख) 8 करोड़ (घ) 10 करोड़

3. जनसंख्या की द`ष्टि से भारत दुनिया का .... सबसे बड़ा देश है।

   (क) पहला (ग) तीसरा

   (ख) दूसरा (घ) चौथा

4. भारत में जन्मदर तथा म`त्युदर के बीच का अंतर लगभग ....गुना है।

   (क) 2 (ग) 4

   (ख) 3 (घ) 5

36.3 जनसंख्या-व`द्धि के कारण

हमारे देश में जनसंख्या-व`द्धि के अनेक कारण हैं। उन्हीं कारणों में से एक कारण यह भी है कि तरह-तरह की दवाइयों, चिकित्सा पद्धतियों तथा वैज्ञानिक उपकरणों की खोज व प्रयोगों से विज्ञान ने म`त्युदर पर तो अवश्य नियंत्रण पा लिया, किंतु जन्मदर की व`द्धि पर नियंत्रण न पा सका जिसके चलते एकदम से जनसंख्या में व`द्धि शुरू हुई, जो आज तक जारी है।

जनसंख्या बढ़ती गई और लोगों ने तेजी से अपने विकास और जीवन में सुविधाओं के ख्याल से वैज्ञानिक उपकरणों का अंधाधुंध प्रयोग शुरू कर दिया जिस कारण पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन परत में छेद की आशंका, लोगों का जीवनयापन के लिए शहरों की तरफ पलायन, पीने के पानी की समस्या, गरीबी, बेरोजगारी, पारिस्थितिकीय समस्या तथा एड्स जैसे भयानक रोगों की समस्या उत्पन्न हो गई। इस तेजी से बढ़ती जनसंख्या के कारण न सिर्फ हमारे देश में बल्कि पूरी दुनिया में संकट गहरा गया है। आप भी अख़बारों में पढ़ कर टेलीविजन तथा रेडियो पर देख-सुनकर इन समस्याओं से कुछ हद तक परिचित हो गए होंगे।

लेकिन ऐसा नहीं है कि जनसंख्या-व`द्धि और इससे उत्पन्न समस्याओं को बढ़ाने में विज्ञान का ही हाथ है। जनसंख्या-व`द्धि को रोकने में विज्ञान की काफी बड़ी भूमिका है। जिन देशों में जनसंख्या-व`द्धि बिल्कुल सामान्य हो गई है उन देशों में विज्ञान, विकास कार्यों में भी लोगों की काफी मदद कर रहा है और जिन देशों में जनसंख्या-व`द्धि से ज्यादा समस्याएँ पैदा हो गई हैं उन देशों में इन समस्याओं से निपटने में भी विज्ञान सक्रिय भूमिका निभा रहा है।

हमारे देश में जनसंख्या-व`द्धि के अनेक कारणों में से प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं–

1. बेहतर चिकित्सा सुविधा

पहले उचित चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध न होने के कारण लोग छोटी-मोटी बीमारियों में अपंग हो जाते थे अथवा म`त्यु को प्राप्त हो जाते थे। किंतु विज्ञान की तरक्की के

टिप्पणी

साथ-साथ वैज्ञानिकों ने मलेरिया, काला-अजार, टी. बी., टिटनेस, पोलियो जैसी आम तथा भयानक बीमारियों पर तो नियंत्रण पा ही लिया, स्वास्थ्य संबंधी अन्य परेशानियों का उपचार भी ढूँढ़ लिया। तरह-तरह के चिकित्सा उपकरणों का विकास हुआ। देश के कोने-कोने में अस्पताल खोले गए तथा मुफ्त चिकित्सा सुविधाएँ उपलब्ध करवाई गईं। आदमी की औसत उम्र पहले से बढ़ गई। इस तरह म`त्युदर में काफी कमी आई, किंतु जन्मदर पर इतनी तेजी से नियंत्रण के उपाय नहीं किए गए, जिसका नतीजा यह निकला कि देश में जनसंख्या-व`द्धि तेज हो गई।

चित्र : बेहतर चिकित्सा

हमारे पास आजादी से पहले का जो आँकड़ा उपलब्ध है, उससे पता चलता है कि आजादी से पहले हमारे देश में जनसंख्या-व`द्धि की दर बहुत कम थी। आजादी के पहले जो जनसंख्या 32 करोड़ के आस-पास थी वही आजादी के बाद एकदम से बढ़नी शुरू हुई और आज लगभग तीन गुनी हो गई है।

2. अशिक्षा

आज भी हमारे देश में आधे से अधिक लोग निरक्षर हैं। जो पढ़े लिखे हैं उनमें से भी ज्यादातर लोगों की पढ़ाई-लिखाई ठीक से नहीं हुई है। इसका परिणाम यह हुआ है कि लोगों के मन से अंधविश्वास नहीं निकल पाए हैं। लोगों को देश की बढ़ती हुई जनसंख्या से उत्पन्न होने वाली समस्याओं की जानकारी नहीं है।

कम पढ़े-लिखे होने या निरक्षर होने के कारण लोगों को परिवार नियोजन के उपायों की ठीक से जानकारी नहीं है। वे आज भी बच्चों को भगवान और अल्लाह की देन मानते हैं। महिलाओं का शिक्षा-स्तर पुरुषों की अपेक्षा काफी कम है जिससे वे अपने स्वास्थ्य के प्रति सचेत नहीं हैं, तथा अधिक बच्चे पैदा होने से उत्पन्न समस्याओं से अनभिज्ञ हैं। अधिकांश लोगों के मन में आज भी यह धारणा बैठी हुई है कि नसबंदी के बाद शरीर कमजोर हो जाता है और काम करने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए वे नसबंदी नहीं कराते और जनसंख्या बढ़ाते जाते हैं।

3. अंधविश्वास

आज भी अधिकांश लोगों का मानना है कि बच्चे ईश्वर की कृपा से प्राप्त होते हैं, इसलिए ईश्वर की इच्छा को रोकने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। इस तरह एक के बाद एक वे कई बच्चे पैदा करते चले जाते हैं। कुछ लोगों का मानना है कि संतान अधिक होने से बच्चे पिता के काम में हाथ बँटाते हैं जिससे उन्हें बुढ़ापे में आराम मिलता है। कुछ लोगों का मानना है कि परिवार नियोजन के लिए नसबंदी कराने से ईश्वर नाराज हो जाता है। इस तरह प्रचलित अंधविश्वास जनसंख्या पर नियंत्रण पाने में मदद करने की बजाय उसे बढ़ाते जाते हैं।

4. बाल-विवाह अथवा कम उम्र में विवाह

आज भी हमारे देश में बाल-विवाह तथा कम उम्र में विवाह जैसी कुप्रथाएँ प्रचलित हैं। बहुत से माता-पिता यह मानते हैं कि किशोर होते ही संतान विवाह योग्य हो जाती है। शारीरिक परिवर्तन को वे विवाह की आवश्यकता मानने लगते हैं जबकि यह एक भ्रम है। शारीरिक परिवर्तन बचपन से लेकर बुढ़ापे तक चलने वाली सहज प्रक्रिया है। इसका अर्थ यह नहीं कि लड़का या लड़की शारीरिक मानसिक परिपक्वता को या विवाह-योग्य उम्र को प्राप्त कर चुका है। इस अपरिपक्व उम्र में शारीरिक संबंध अनेक प्रकार से घातक होता है। प्रायः लड़के-लड़कियाँ किशोरावस्था में होने वाले शारीरिक और भावानात्मक परिवर्तनों से अपरिचित होते हैं। जल्दी शादी हो जाने के कारण किशोर जल्दी माँ-बाप बन जाते हैं। इससे बच्चे तो ज्यादा पैदा होते ही हैं, उनके स्वास्थ्य पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। अतः सरकार ने यह कानून बनाया कि 18 वर्ष से कम उम्र में लड़कियों की तथा 21 वर्ष से कम उम्र में लड़कों की शादी कानूनन अपराध है।

कम उम्र में शादी हो जाने से किशोर-किशोरियों को अपने भविष्य की चिंता नहीं होती और वे बढ़ती जनसंख्या के दुष्परिणामों से परिचित नहीं हो पाते। कम उम्र में विवाहित होने वाले अधिकांश युवा आर्थिक रूप से दूसरों पर आश्रित होते हैं। इस तरह बच्चा पैदा कर लगातार अन्य आश्रितों की संख्या भी बढ़ाते जाते हैं। परिणाम स्वरूप कमाने वालों की संख्या कम तथा खाने वालों की संख्या अधिक होने से परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ता जाता है।

चित्र : किशोरावस्था में विवाह

5. लड़के की चाह में लड़कियाँ पैदा करते चले जाना

लोग सोचते हैं कि लड़का ही पिता की जायदाद का असली वारिस होता है, वही पिता के साथ रहता है। बेटियाँ तो पराई होती हैं। बेटा ही पिता की सेवा करता है तथा अंतिम संस्कार तक उसके साथ रहता है। इस तरह एक बेटे की चाह में लोग कई-कई लड़कियाँ पैदा करते चले जाते हैं। वे लड़कियों और लड़कों के बीच भेदभाव को भी बढ़ावा देते हैं। इस भेदभाव के चलते लड़के और लड़कों के पालन-पोषण में आरंभ से ही असमानता बरती जाती है। व्यवहार से लेकर खान-पान तक की असमानता। परिणामस्वरूप लड़कियाँ युवावस्था या बुढ़ापे में रोगों का शिकार अधिक होती हैं। जबकि आवश्यकता इस बात की होती है कि लड़कियों के खान-पान पर आरंभ से ही ध्यान देना बहुत आवश्यक है क्योंकि माँ बनने की प्रक्रिया में उनके शरीर की पौष्टिक तत्वों की माँग अधिक होती है। कुछ लोक मूक-बधिर तथा विकलांग बच्चों के पैदा होने के बाद स्वस्थ बच्चा पैदा करने के लालच में भी जनसंख्या बढ़ाते चले जाते हैं।

इसके अलावा कई पिछड़े इलाकों तथा पढ़े-लिखे लोगों के बीच मनोरंजन की कमी के

कारण वे सहवास को ही एकमात्र संतुष्टि का साधन समझने लगते हैं जिससे जनसंख्या बढ़ती जाती है।

दूसरी तरफ रोजगार की तलाश में लोगों का शहरों की तरफ पलायन भी शहरों की जनसंख्या-व`द्धि का कारण बनता है।

क्रियाकलाप

मान लीजिए आपका एक मित्र है जो अभी किशोर है। वह अपने माता-पिता का आज्ञाकारी पुत्र है। माता-पिता उसका विवाह करना चाहते हैं। आपके विचार से क्या आपके मित्र को माता-पिता की यह आज्ञा मान लेनी चाहिए या द`ढ़ता से इसका विरोध करना चाहिए। माता-पिता से असहमत होते हुए कानून, स्वास्थ्य, कैरियर, देश के विकास, जनसंख्या व`द्धि आदि की द`ष्टि से उसके क्या तर्क होंगे? उन्हें यहाँ लिखिए।

....

....

....

....

पाठगत प्रश्न 36.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँटकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से कौन-सा जनसंख्या-व`द्धि का कारण नहीं है?

   (क) अशिक्षा   (ग) औद्योगिक विकास

   (ख) अंधविश्वास   (घ) बेहतर चिकित्सा सुविधा

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है।

   (क) शिक्षा की कमी के कारण लोगों को जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की ठीक-ठीक जानकारी नहीं है।

   (ख) लोग सोचते हैं कि नसबंदी से शरीर कमजोर पड़ जाता है और वे ठीक से काम नहीं कर पाएँगे, यह बहुत गलत धारणा है।

   (ग) जो लोग ऐसा सोचते हैं कि सिर्फ लड़का ही पिता की जायदाद की देखभाल ठीक से कर सकता है और वे लड़का पैदा करने की चाह में कई लड़कियाँ पैदा कर जाते हैं, यह बहुत गलत है।

   (घ) अब कोई भी दो से अधिक बच्चे पैदा नहीं करता।

36.4 जनसंख्या-व`द्धि से उत्पन्न समस्याएँ

अभी तक जनसंख्या को लेकर जो कुछ भी चर्चा इस पाठ में की गई है उससे आप यह तो समझ ही गए होंगे कि दुनिया के बाकी देशों की अपेक्षा भारत में जनसंख्या बहुत तेजी से बढ़ी है। जनसंख्या-व`द्धि के कारण हमारे देश में अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं। इन सभी समस्याओं के पीछे कोई-न-कोई वैज्ञानिक कारण अवश्य है। जनसंख्या-व`द्धि का सबसे बुरा प्रभाव पर्यावरण पर पड़ा है, जिससे जीवन संबंधी अनेक कठिनाइयाँ पैदा हो गई हैं। जनसंख्या-व`द्धि से उत्पन्न प्रमुख समस्याओं के बारे में हम यहाँ चर्चा करेंगे।

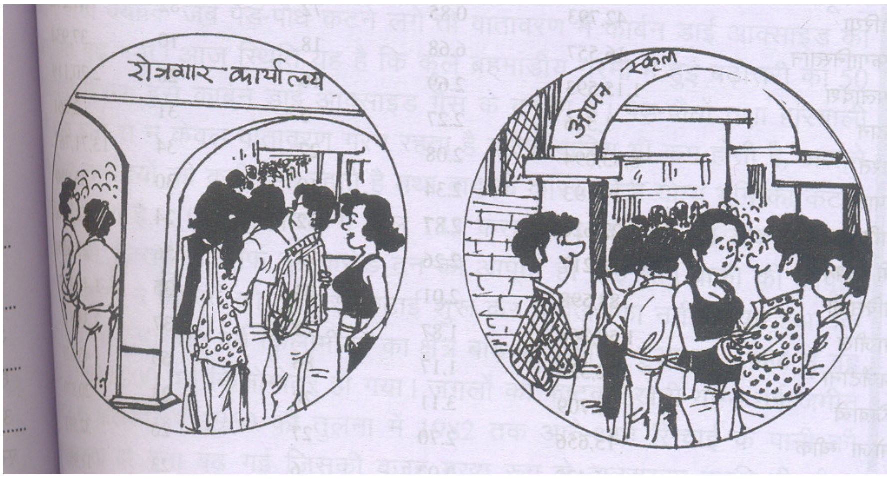

जनसंख्या-व`द्धि से समस्याएँ : हर जगह लंबी पंक्ति

विश्व का जन सांख्यिकीय रुझान

	जनसंख्या (हजार में) (1990)	वद्धि दर प्रतिशत (1990–95)	शहरी जनसंख्या प्रतिशत (1990–95)	वर्तमान जनसंख्या को दो गुना होने में लगने वाला समय	2020 में जनसंख्या (हजार में)
विश्व	52,92,195	1.73	45	40	80,91,628
अल्प विकसित देश	40,85,630	2,08	37	34	67,49581
विकसित देश	12,06,556	0.48	73	14.6	13,42,048
संयुक्त राज्य अमेरिका	2,49,224	0.71	75	99	2,94,750
कनाडा	26,521	0.77	77	91	31,491
संयुक्त सोवियत गणतंत्र	2,88,595	0.68	66	102	3,43,871
बुल्गारिया	9,010	0.06	68	1207	8,985
चेकोस्लोवाकिया	15,667	0.26	77	267	17,061
जर्मन गणतंत्र	16,249	.0.04	44	.	15,970
हंगरी	10,552	.0.08	61	.	10,291
यूनाइटेड किंगडम	57,237	0.22	89	321	59,544
स्वीडन	84,444	0.15	84	458	8,604
डेनमार्क	5,143	0.06	87	1228	4,973
स्पेन	39,187	0.37	78	190	42,122

इटली	57,061	0.02	69	3684	54,138
स्विटजरलैंड	6,609	0.22	60	320	6,810
फ्रांस	56,138	0.35	74	198	60,169
ऑस्ट्रिया	7,583		0.05	58	14587,441
न्यूजीलैंड	3,392	0.82	84	85	4,051
ऑस्ट्रेलिया	16,873	1.18	85	59	22,309
संयुक्त अरब अलीरात	1,589	2.24	78	31	2,559
कुवैत	2,039	2.82	96	25	3,593
चीन	11,39,060	1.42	33	49	14,76,852
जापान	1,23,460	0.39	77	179	1,29,029
कोरिया	42,793	0.85	72	82	51,178
अफगानिस्तान	16,557	6.68	18	10	37,934
बंगलादेश	1,15,593	2.69	16	26	2,20,119
भूटान	1,516	2.27	5	31	2,861
भारत	8,53,094	2.08	27	34	13,71,767
नेपाल	19,193	2.34	10	30	33,080
पाकिस्तान	1,22,626	2.87	32	24	2,48,116
श्री लंका	17,217	2.26	21	56	23,656
मैक्सिको	88,598	2.01	73	35	1,42,135
ब्राजील	1,50,368	1.87	75	37	2,33,817
अर्जेंटीना	32,322	1.17	86	60	43,837
जिंबाब्वे	9.709	3.11	28	23	20,870
मोजा म्बीक	15,656	2.70	27	26	32,593
बुरूंडी	5,472	3.02	6	23	11,950
अंगोला	10,020	2.81	28	25	22.438
अल्जीरिया	24,960	2.80	52	25	48,484
दक्षिण अफ्रीका	35,282	2.18	59	32	61,406
नाइजीरिया	1,08,542	2.25	35	22	2,55393

सन् 1901 से 1991 तक भारत में जनसांख्यिकीय रुझान

जनगणना का वर्ष	कुल जनसंख्या (करोड़ में)	एक दशक में प्रति 1000 की जनसंख्या में जन्म दर	एक दशक में प्रति 1000 की जनसंख्या में मत्यु दर	वार्षिक औसत वद्धि दर %	ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत	शहरी जनसंख्या का प्रतिशत	प्रति हजार पुरुषों पर स्त्रियाँ
1901	23.84	.	.	.	89.2	10.8	972
1911	25.21	49.2	42.6	0.56	89.7	10.3	964
1921	25.21	48.1	47.2	(.)0.03	88.8	11.2	955
1931	27.09	46.4	36.2	1.04	88.0	12.0	950
1941	31.87	45.9	37.2	1.33	86.1	13.9	945
1951	36.11	39.9	27.4	1.25	82.7	17.3	946
1961	43.92	41.7	23.8	1.95	82.0	18.0	941
1971	54.82	41.2	19.0	2.20	80.1	19.9	930
1981	68.52	37.2	15.0	2.25	76.7	23.3	934
1991	84.62	29	10.0	2.21	74.3	25.7	927

1. पारितंत्रीय (ईकोलोजिकल) समस्या

पारितंत्र उस समूचे वातावरण को कहते हैं, जिसमें जीवधारी आपसी सहयोग के साथ रहते हैं। इस तरह पृथ्वी पर पाए जाने वाले पेड़-पौधे, नदी-तालाब, पर्वत-घाटी, खेत तथा जीव-जंतु सभी पारितंत्र के अंतर्गत आते हैं। जनसंख्या-वृद्धि के कारण पारितंत्र संबंधी अनेक समस्याएँ पैदा हो गई हैं। जनसंख्या-वृद्धि के कारण लोगों के रहने के लिए आवास तथा अन्न के लिए उपजाऊ जमीन की जरूरत भी बढ़ गई। इसका परिणाम यह निकला कि जहाँ जंगलों वाले भाग थे वहाँ से जंगल तथा पेड़-पौधों को काटकर रहने के लिए आवास तथा खेती योग्य जमीन बनाई जाने लगीं। जंगलों के कटने से औषधि योग्य वनस्पतियाँ नष्ट होने लगी। इसके अलावा वातावरण में प्रदूषण बढ़ने लगा क्योंकि जब पेड़-पौधे कटने लगे तो वातावरण में कार्बन डाई आक्साइड का अनुपात बढ़ गया। आज स्थिति यह है कि कुल ब्रह्मांडीय गरमी में हुई बढ़ोत्तरी का 50 प्रतिशत हिस्सा इस कार्बन डाई आक्साइड गैस के कारण है। पेड़-पौधों तथा हरियाली के कम होने से न केवल वातावरण गरम रहता है बल्कि बारिश भी कम होती है, जलाने के लिए लकड़ियों की कमी बनी रहती है तथा बाढ़ के कारण खेती योग्य भूमि का कटाव तेज हो जाता है। 1982 में भारत में कुल 133 करोड़ टन जलावन की लकड़ियों की जरूरत थी, जिसमें से सिर्फ 39 करोड़ टन की आपूर्ति हो पाई थी। बाकी की आपूर्ति के लिए लोगों ने जंगलों की तेजी से कटाई शुरू कर दी जिसका नतीजा यह हुआ कि 1970 में जो 230,000 वर्ग किलोमीटर का क्षेत्र बाढ़ से प्रभावित हुआ था, 1984 में वह बढ़ कर 590,000 वर्ग किलोमीटर हो गया। जंगलों को काटकर खेती योग्य नई जमीन बनाने के फलस्वरूप 1960 की तुलना में 1982 तक आते-आते सिंचाई के पानी की आवश्यकता दो गुना बढ़ गई जिसकी वजह मुख्य रूप से जनसंख्या वृद्धि ही थी।

2. पर्यावरण प्रदूषण

जनसंख्या-वृद्धि के साथ-साथ मनुष्य की जरूरतें भी बढ़ीं, जिस कारण मनुष्य ने प्रकृति का दोहन शुरू कर दिया। वैज्ञानिक प्रगति के साथ-साथ औद्योगिक विकास भी तेज हुआ। इस कारण पर्यावरण के हर घटक जैसे जल, मृदा, वायु आदि में प्रदूषण बढ़ा। औद्योगिक कचरा नदियों में प्रवाहित किए जाने से जल-प्रदूषण बढ़ा। गाड़ियों के निर्माण से यातायात तथा माल-ढुलाई में तेजी आई। इस तरह वाहनों से निकलने वाला धुँआ भी वायु-प्रदूषण का कारण बना। पर्यावरण प्रदूषण के विभिन्न स्वरूप तथा कारण निम्नलिखित हैं–

(क) वायु प्रदूषण

कल-कारखानों तथा मोटर-गाड़ियों से निकलने वाला धुँआ वातावरण में घुलकर इसे प्रदूषित कर देता है। इस रासायनिक धुँए में कार्बन डाई-आक्साइड, कार्बन मोनोआक्साइड, सीसा, सल्फर डाई-आक्साइड, हाइड्रोजन सल्फाइड तथा नाइट्रोजन आक्साइड जैसी जहरीली गैसें होती हैं, जो न सिर्फ आदमी के स्वास्थ्य को बल्कि पृथ्वी के अन्य जीव-जंतुओं तथा पेड़-पौधों को भी प्रभावित करती हैं। इस प्रदूषण के कारण जहाँ लोगों में मानसिक विक्षिप्तता, अस्थमा तथा अन्य साँस संबंधी बीमारियाँ बढ़ रही हैं वहीं पेड़-पौधों तथा वनस्पतियों की कई दुर्लभ प्रजातियाँ भी लुप्त होती जा रही हैं। फसलों पर भी इनका बुरा प्रभाव पड़ रहा है।

हमारे देश में दिल्ली सबसे अधिक प्रदूषित शहर है। इतना ही नहीं प्रदूषण की द`ष्टि से दिल्ली दुनिया का चौथा सबसे अधिक प्रदूषित शहर है। वायु प्रदूषण को कम करने के उद्देश्य से दिल्ली सरकार ने सभी फैक्टरियों को दिल्ली से बाहर स्थान देने का कदम उठाया साथ ही वाहनों से होने वाले प्रदूषण से बचने के लिए कॉम्प्रैस्ड नेचुरल गैस (सी. एन.जी.) बसों तथा ऑटोरिक्शा चलाने की स्वीकृति प्रदान की जिससे बहुत सीमा तक इसे नियंत्रित किया गया।

(ख) कूड़ा-कचरा आदि से प्रदूषण

जनसंख्या-व`द्धि के कारण लोगों द्वारा प्रयुक्त वस्तुओं के अवशेष, घरेलू कचरा, मानव-मल तथा औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाले कचरे की मात्रा भी काफी बढ़ी है। लोग यह कचरा मुहल्ले तथा बस्ती के किसी कोने में डाल देते हैं, जो सड़ कर बदबू तथा प्रदूषण फैलाता है। इस पर बैठने वाले मच्छर तथा कीटाणु तरह-तरह की बीमारियों को जन्म देते हैं। महानगरों में डेंगू नामक नई बीमारी इन्हीं कचरों पर पनपने वाले मच्छरों के काटने से होती है।

(ग) ध्वनि प्रदूषण

बड़ी-बड़ी औद्योगिक इकाइयों तथा सघन बसी छोटी बस्तियों में चलने वाली मशीनों की आवाज से भी प्रदूषण फैलता है जिसे ध्वनि प्रदूषण कहते हैं। ध्वनि प्रदूषण से व्यक्ति में बहरापन, चिड़चिड़ापन तथा दिल संबंधी बीमारियाँ पैदा होती हैं। महानगरों में चलने वाले वाहनों तथा हवाई जहाजों के कारण भी भयानक ध्वनि प्रदूषण होता है। तेज आवाज करती हुई मशीनों के बीच निरंतर काम करते रहने से बहरापन बढ़ता चला जा रहा है।

इस तरह अभी हाल ही में किए गए एक सर्वेक्षण से पता चला है कि जिन देशों में जनसंख्या-व`द्धि अधिक हुई है उन्हीं देशों में पर्यावरण प्रदूषण भी तेजी से बढ़ा है। इनमें अल्पविकसित देशों का सबसे अधिक योगदान है। अनुमान है कि सन् 2025 तक दुनिया में जो कुल प्रदूषण होगा उसमें 82 हिस्सा केवल 65 अल्पविकसित देशों का होगा। कुल प्रदूषण का 24 से 31 प्रतिशत भाग मात्र जनसंख्या-व`द्धि के कारण है। शेष प्रदूषण अन्य दूसरे कारणों से बढ़ रहा है।

3. ओजोन परत में छेद की आशंका

ओजोन एक स्वतः उत्पन्न होने वाली गैस है, जो प`थ्वी के चारों ओर सुरक्षा कवच या छतरी के रूप में मौजूद है। जब सूरज की रोशनी आती है तो ओजोन गैस उसकी हानिकारक पराबैंगनी किरणों को सोख लेती है जिससे वनस्पतियों तथा जीवों पर उसका बुरा असर नहीं पड़ पाता। लेकिन अब क्लोरोफ्लोरो कार्बन जैसी कुछ रासायनिक गैसें ओजोन से क्रिया करके उसे नष्ट करने लगी हैं जिससे ओजोन-परत में छेद हो रहा है और पराबैंगनी किरणें सीधे प`थ्वी पर पहुँच कर जनजीवन को प्रभावित करने लगेंगी।

ओजोन से अभिक्रिया करने वाली क्लोरोफ्लोरो कार्बन नामक गैस रेफ्रीजरेटर, वातानुकूलन

यंत्र तथा शीतग`हों में लगे संयंत्रों में प्रयुक्त होती है। इस तरह के यंत्रों का दुनिया में सबसे अधिक प्रयोग चीन तथा भारत में होता है। यही कारण है कि क्लोरोफ्लोरो कार्बन नामक गैस का उत्पादन और उत्सर्जन सबसे अधिक अल्पविकसित देशों में हो रहा है और कुल ब्रह्मांडीय गरमी (ग्लोबल वार्मिंग) का 20% हिस्सा इस कारण से बढ़ता चला जा रहा है।

4. ब्रह्मांडीय तापमान (ग्लोबल वार्मिंग) का बढ़ना

कार्बन डाई-आक्साइड, मीथेन, नाइट्रस आक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन तथा ओजोन, इन पाँच गैसों को ग्रीन हाउस गैसें कहते हैं। ये गैसें प`थ्वी की सतह पर तापमान को संतुलित करती हैं, जिससे कृषि उत्पादन तथा पेड़-पौधों के विकास में मदद मिलती है। किंतु अधिक वाहनों के प्रयोग, प्रशीतक यंत्रों के प्रयोग तथा कल-कारखानों से निकलने वाले रासायनिक धुँए के कारण वातावरण में इन गैसों की मात्रा दिन पर दिन बढ़ती जा रही है जिससे ब्रह्मांडीय तापमान भी दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। इनमें से सबसे अधिक मात्रा कार्बन डाई-आक्साइड की बढ़ रही है। कुल ब्रह्मांडीय तापमान का 50 प्रतिशत हिस्सा सिर्फ इसी गैस के कारण बढ़ता जा रहा है। 1950 में दुनिया में कुल 2.4 अरब टन कार्बन डाई-आक्साइड उत्सर्जित होती थी जो 1985 में बढ़ कर 6.8 अरब टन हो गई यानी 1.9 प्रतिशत प्रतिवर्ष के हिसाब से यह बढ़ रही है। इसी प्रकार मीथेन तथा नाइट्रस आक्साइड की मात्रा भी अब काफ़ी अधिक है।

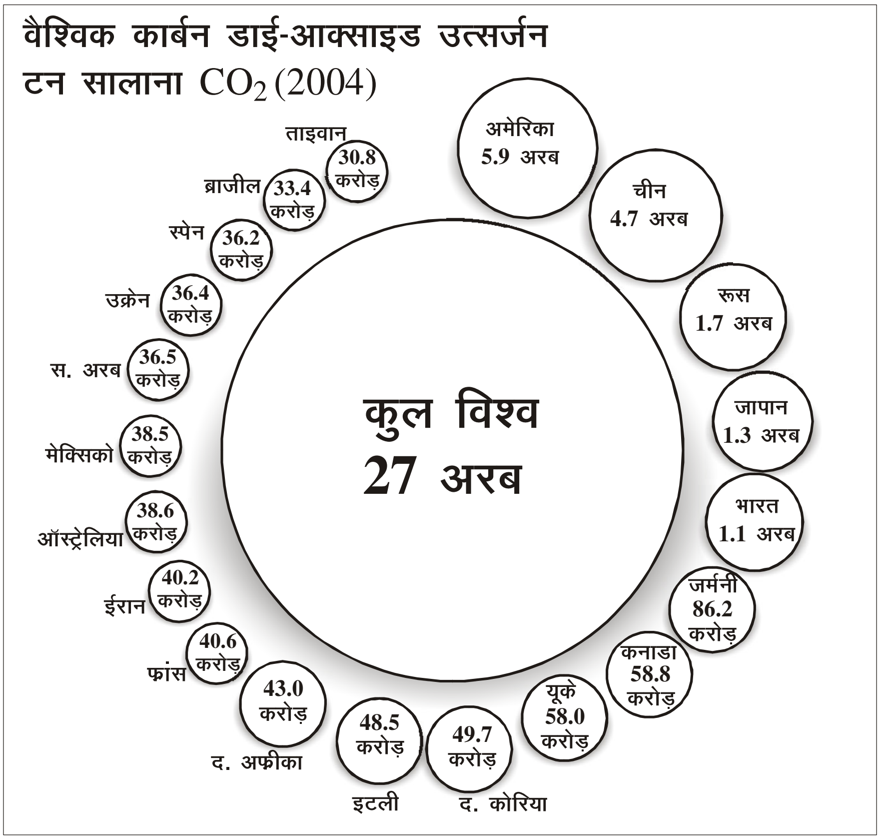

चित्र : विश्व में बढ़ती कार्बन डाई-आक्साइड की मात्रा की स्थिति

ये गैसें जंगलों के कटने तथा असिंचित भूमि के बढ़ने के कारण बढ़ रही है। आप पहले पढ़ चुके हैं क्लोरोफ्लोरो गैस प्रशीतक यंत्रों से उत्सर्जित होती है, जो स्वतः उत्पन्न होने वाले सुरक्षा कवच, ओजोन गैस की परत को नष्ट कर रही है। इस तरह हर साल ब्रह्मांडीय तापमान बढ़ रहा है, जिससे प`थ्वी पर वनस्पतियों तथा पेड़-पौधों के विकास में बाधा उत्पन्न हो गई है। अतः कृषि उत्पादन में कमी की आशंका व्यक्त की जाने लगी है।

5. प्राकृतिक संसाधनों का दोहन

जैसे-जैसे जनसंख्या बढ़ी है लोगों की आवश्यकताएँ भी बढ़ी हैं। इस तरह लोगों ने प्राकृतिक संसाधनों का दोहन कर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करनी शुरू कर दी। मनुष्य ने प्राकृतिक संसाधनों का जिन क्षेत्रों में दोहन शुरू किया, वे निम्नलिखित हैं–

(क) जंगलों का कटना

आवास तथा जलावन की लकड़ियों की आवश्यकता की पूर्ति के लिए लोगों ने जंगल काटने शुरू किए।

(ख) ऊर्जा के लिए कोयले की खपत

जनसंख्या के साथ-साथ बिजली की खपत भी बढ़ी है। आज भारत में बिजली की खपत 55,000 मेगावाट है, जो कि न्यूयार्क की तुलना में दो गुनी है। इस तरह भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा कोयले की खपत करने वाला देश है। 1950 में यहाँ 33 करोड़ टन कोयले की खपत होती थी, जो 1989 तक बढ़ कर 191 करोड़ टन तक पहुँच गई। इस तरह कोयले की खपत बढ़ने से उसकी खुदाई में भी तेजी बढ़ गई और बढ़ती जा रही है।

(ग) म`दा प्रदूषण

प्रयुक्त कीटनाशक, पीड़नाशक आदि कल-कारखानों के रासायनिक तत्व, कृषि में उचित मिट्टी की उर्वरा शक्ति को नष्ट कर देते हैं।

(घ) पानी की कमी

आप जानते हैं कि जंगलों के कटने से वर्षा कम होगी क्योंकि पेड़-पौधे वर्षा कराने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। साथ ही वायुमंडल का तापमान बढ़ रहा है जिससे ग्लेशियर (बर्फ के पहाड़) तेजी से पिघलते जा रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने से भविष्य में ग्लेशियर कम होंगे और नदियों में जलस्तर कम होगा साथ ही प्रदूषण के कारण नदियों का पानी पीने योग्य व सिंचाई योग्य नहीं रहेगा। फलस्वरूप प्रतिवर्ष 131.4 वर्ग किलोमीटर ग्लेशियर कम होता जा रहा है।

6. कृषि योग्य भूमि की कमी

जनसंख्या-व`द्धि के कारण अन्न की खपत बढ़ती जा रही है। किंतु इसके विपरीत लोग जमीनों पर आवास का निर्माण करते जा रहे हैं, जिससे कृषि योग्य भूमि की कमी होती

जा रही है। जनसंख्या-व`द्धि इतनी अधिक है कि उसके अनुपात में कृषि उत्पादन को नहीं बढ़ाया जा सकता। इस तरह खाद्यान्न की समस्या उत्पन्न हो रही है। अनुमान है कि 2025 तक यदि भारत में 25% अन्न का उत्पादन नहीं बढ़ा लिया गया तो भुखमरी की समस्या खड़ी हो जाएगी।

7. स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ

ज्यादा बच्चे पैदा करने से माँ तथा बच्चे दोनों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। जो लोग अंधविश्वास तथा कम शिक्षा के कारण जनसंख्या नियंत्रण की गंभीरता नहीं समझ पाते और बच्चे पैदा करते चले जाते हैं अथवा लड़के की इच्छा में लड़कियाँ पैदा करते चले जाते हैं, अक्सर उनकी पत्नियाँ बीमार रहती है, बच्चों को भी उचित पोषण नहीं मिल पाता जिससे वे कुपोषण, अपंग तथा कमजोर हड्डियों वाले तथा विभिन्न बीमारियों के शिकार हो जाते हैं, उनका ठीक से मानसिक विकास नहीं हो पाता। दूसरी तरफ लगातार कई बच्चे पैदा करते जाने के कारण माँ भी कमजोर हो जाती हैं तथा बीमार रहने लगती है। ऐसी महिलाएँ अक्सर कम उम्र में या तो असाध्य रोगों का शिकार हो जाती हैं या म`त्यु को प्राप्त होती हैं।

इसके अलावा रासायनिक कचरे तथा घरेलू कचरे से उत्पन्न प्रदूषण में पल रहे मच्छरों तथा कीटों के काटने से डेंगू जैसी नई शहरी बीमारियों का भी जन्म हुआ है जिसके इलाज में थोड़ी-सी भी लापरवाही जानलेवा सिद्ध होती है। जनसंख्या-व`द्धि के कारण जो तरह-तरह की बीमारियाँ फैलती हैं उनके इलाज के लिए अस्पतालों में भीड़ लगी रहती है जिससे इलाज में असुविधा होती है। अस्पतालों में सभी प्रकार की आधुनिकतम सुविधाएँ उपलब्ध होने पर भी भीड़ के कारण उनका लाभ सभी को नहीं मिल पाता। इन बीमारियों के अतिरिक्त आज के समय की सबसे भयंकर बीमारी एड्स के फैलने का एक कारण जनसंख्या व`द्धि भी है। जनसंख्या-व`द्धि के कारण गाँवों की आबादी का पलायन शहरों की ओर होता है। इस आबादी का एक हिस्सा अपनी शारीरिक जरूरतों को पूरा करने के लिए असुरक्षित अप्राकृतिक यौन संबंध बनाते हैं और इस बीमारी का शिकार होते हैं।

8. गरीबी तथा बेकारी

हमारे देश में जिस गति से जनसंख्या बढ़ रही है उस अनुपात में आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा। कृषि-योग्य भूमि पर जनसंख्या का दबाव बढ़ता जा रहा है जिससे लोग जीवनयापन के दूसरे स्रोतों की तलाश में भटकते हैं। किंतु वर्तमान जनसंख्या के अनुपात में रोजगार के अवसर कम हैं। इस तरह आज गरीबी तथा बेकारी की समस्या बढ़ती जा रही है। हमारे देश में आज भी 52.2 प्रतिशत लोग गरीबी-रेखा के नीचे जी रहे हैं।

चित्र : बढ़ती गरीबी

टिप्पणी

जिनकी आय 328 रुपए प्रति माह से कम होती है वे गरीबी रेखा के नीचे आते हैं।

9. नैतिक मूल्यों में पतन तथा बढ़ता अपराधीकरण

जनसंख्या-व`द्धि के कारण आबादी सघन होती जा रही है जिससे लोगों के बीच छोटे-छोटे स्वार्थों के लिए वैमनस्यता उत्पन्न हो रही है। नैतिक मूल्यों में गिरावट आ रही है। गरीबी तथा रोजगार के अवसर कम होने के कारण लोगों में अपराध की प्रव`त्तियाँ बढ़ रही हैं। नैतिक मूल्यों में आई गिरावट के कारण उन्मुक्त यौन संबंधों की बात की जाने लगी है। इस तरह एड्स नामक बीमारी बढ़ने का एक कारण यह भी है। हालाँकि इसके पीछे भी जनसंख्या-व`द्धि मुख्य कारण है। एड्स एक संक्रामक रोग है जो निम्नलिखित तरीकों से फैल सकता है।

- असुरक्षित यौन संबंधों से
- डाक्टर की संक्रमित सुई से
- संक्रमित गर्भवती माँ से बच्चे को
- संक्रमित खून चढ़ाने से

पाठगत प्रश्न 36.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प छाँट कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. पारितंत्रीय समस्या का संबंध है ....
   (क) कल-कारखानों के बढ़ने से
   (ख) लोगों के शहरों में बसते चले जाने से
   (ग) जंगलों के कटने से
   (घ) नई बीमारियों से

2. निम्नलिखित में से किसके द्वारा पर्यावरण प्रदूषण नहीं फैलता।
   (क) कार्बन डाई-आक्साइड, कार्बन मोनो आक्साइड, क्लोरोफ्लोरो कार्बन आदि रासायनिक गैसों से
   (ख) औद्योगिक इकाइयों से निकलने वाली जहरीली गैसों, जहरीले पानी तथा कचरे से
   (ग) व`क्षारोपण तथा प्राकृतिक संसाधनों के इस्तेमाल से
   (घ) मोटर-गाड़ियों के धुँए तथा प्रशीतक यंत्रों की गैस से

3. ओजोन परत में छेद की आशंका बढ़ गई है, क्योंकि.............................
   (क) पराबैंगनी किरणों का प्रभाव तेज हो गया है
   (ख) प्रशीतक यंत्रों से निकलने वाली क्लोरोफ्लोरो कार्बन गैस ओजोन परत के साथ अभिक्रिया करके उसे लगातार नष्ट कर रही है

टिप्पणी

(ग) हवाई जहाजों की संख्या बढ़ गई है

(घ) लड़ाइयों में मिसाइलों से गोले ज्यादा दागे जाने लगे हैं

4. ब्रह्मांड का तापमान बढ़ रहा है। इससे आने वाले दिनों में.............................

(क) प्रदूषण और बढ़ेगा

(ख) ग्लेशियर पिघल कर नष्ट हो जाएँगे

(ग) सर्दी का मौसम नहीं होगा

(घ) लोगों को छाता खरीदना ज़रूरी हो जाएगा

5. एड्स नामक बीमारी होती है............

(क) पर्यावरण प्रदूषण से

(ख) भोजन में विटामिनों की कमी से

(ग) असुरक्षित यौन-संबंधों के कारण

(घ) मच्छर के काटने से

35.5 जनसंख्या नियंत्रण के उपाय

जनसंख्या-व`द्धि से उत्पन्न समस्याओं को देखते हुए इसे नियंत्रित करने के लिए सरकार तथा स्वयं सेवी संगठनों द्वारा कई वैज्ञानिक तथा सामाजिक उपाय किए गए हैं। उनमें से प्रमुख उपाय निम्नलिखित हैं–

संपूर्ण विश्व को जनसंख्या-वद्धि के प्रति सभी को जागरूक बनाने के उद्देश्य से एक दिन सुनिश्चित किया गया है, जो **विश्व जनसंख्या दिवस** के रूप में 11 जुलाई को मनाया जाता है।

(क) गर्भ निरोधक का प्रयोग

इसके अंतर्गत कंडोम अथवा निरोध का प्रयोग, नसबंदी, कॉपर-टी का प्रयोग तथा गर्भ निरोधक गोलियों के प्रयोग पर बल दिया जाता है। इन चारों उपायों में नसबंदी सबसे अधिक प्रभावकारी माध्यम है। इसमें प्रजनन नलिका को बंद कर दिया जाता है। नसबंदी को लेकर कुछ लोगों में भ्रामक धारणाएँ फैली हुई हैं कि इससे शरीर कमजोर हो जाता है और आदमी की कार्यक्षमता कम हो जाती है। किंतु यह बहुत ही गलत धारणा है। अब तो नसबंदी लेजर किरणों द्वारा होने लगी है, जिससे बिना चीरफाड़ के प्रजनन नलिका अवरुद्ध कर दी जाती है और महिला या पुरुष तुरंत काम पर वापस जा सकता है।

कंडोम एक प्रकार का गर्भ निरोधक तो है ही आजकल इसके प्रयोग का प्रचार-प्रसार एड्स से बचने के लिए भी किया जा रहा है।

(ख) जनसंख्या शिक्षा

यह परिवार नियोजन से अलग कार्यक्रम है, जो सरकार तथा स्वयं सेवी संगठन, दोनों अपने-अपने स्तर पर चलाते हैं। इसके माध्यम से लोगों को बढ़ती हुई जनसंख्या, उसके दुष्प्रभावों, खान-पान संबंधी गड़बड़ियों, बीमारियों, विवाह योग्य सही उम्र आदि की जानकारी दी जाती है। अब तो स्कूलों में जनसंख्या शिक्षा अनिवार्य कर दी गई है, ताकि युवाओं में जनसंख्या के प्रति जागरूकता आ सके। जनसंख्या शिक्षा से भविष्य में

उत्पन्न होने वाले खतरों को टाला जा सकता है। लोगों को जागरूक बनाकर उनमें फैली भ्रांत धारणाओं को तथा जनसंख्या-व`द्धि को कम किया जा सकता है।

(ग) यौन शिक्षा

आज भी यौन संबंधों को समाज में परदे की चीज समझा जाता है जिससे लोग यौन संबंधी समस्याओं पर बात करने से भी कतराते हैं। यौन संबंधी सही जानकारी न होने से लोग असमय अथवा ज्यादा देर तक बच्चे पैदा करते जाते हैं। यौन संबंधी सही जानकारी होने से जनसंख्या-व`द्धि में काफी कमी आने की संभावना है।

(घ) महिला शिक्षा

आज भी हमारे देश में महिलाओं की शिक्षा का स्तर पुरुषों की अपेक्षा काफी कम है। महिलाओं के शिक्षित न होने से वे जनसंख्या-व`द्धि के दुष्प्रभावों से अवगत नहीं होतीं, वे अपने खान-पान पर सही ढंग से ध्यान नही दे पातीं। जनसंख्या नियंत्रण के उपायों की सही जानकारी उन्हें नहीं मिल पाती और वे जनसंख्या नियंत्रण में योगदान नहीं दे पातीं। पढ़ी-लिखी महिलाएँ जनसंख्या नियंत्रण के प्रति काफी जागरूक हैं। केरल में महिलाओं का शिक्षा-स्तर अधिक है इसलिए वहाँ जनसंख्या-व`द्धि भी कम है और उत्तर प्रदेश में महिलाओं का शिक्षा-स्तर कम होने से वहाँ जनसंख्या-व`द्धि की दर अधिक है।

इस तरह जब महिलाएँ शिक्षित होंगी तो अपने तथा अपने बच्चे के भविष्य, स्वास्थ्य तथा पोषण के बारे में भी जागरूक होगी और जनसंख्या-व`द्धि पर नियंत्रण होगा। परिणामस्वरूप स्वस्थ, शिक्षित समाज का निर्माण होगा।

(च) जनसंचार माध्यमों द्वारा प्रचार-प्रसार

सरकार रेडियो तथा टेलीविजन पर परिवार नियोजन तथा जनसंख्या शिक्षण संबंधी कार्यक्रमों को बढ़ावा देती है। साथ ही जनसंख्या-व`द्धि से उत्पन्न समस्याओं तथा उन्हें रोकने के उपायों का प्रचार-प्रसार भी करती है। इससे भी लोगों में जनसंख्या नियंत्रण के प्रति जागरूकता आ रही है।

(छ) जन-संपर्क

कई स्वयं सेवी संगठन भी लोगों के बीच जाकर उनसे बातचीत करते हैं। उन्हें नुक्कड़ नाटकों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा तरह-तरह की प्रतियोगिताओं के माध्यम से जनसंख्या-व`द्धि से उत्पन्न समस्याओं के बारे में बताते हैं तथा उन्हें जागरूक बनाते हैं।

36.6 प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के उपाय

जनसंख्या-व`द्धि के कारण सबसे बुरा प्रभाव प्राकृतिक संसाधनों पर पड़ा है जिससे जीवन में अनेक संकट पैदा हो गए हैं इसलिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता बढ़ गई है। इनके संरक्षण के कुछ निम्नलिखित उपाय सुझाए गए हैं–

- व`क्षारोपण
- बिजली तथा तेल से चलने वाली मशीनों के स्थान पर सौर ऊर्जा का प्रयोग
- वन जीवों के संरक्षण पर बल, वन जीवों के शिकार पर प्रतिबंध
- प्रदूषण रहित गाड़ियों के निर्माण तथा प्रयोग पर बल
- औद्योगिक कचरे को नदियों में बहाने पर रोक
- जहरीली गैसें उत्सर्जित करने वाली औद्योगिक इकाइयों को शहरों से दूर ले जाना
- प्लास्टिक के प्रयोग पर रोक
- औद्योगिक तथा घरेलू कचरे को इकट्ठा कर उससे पुनः ऊर्जा प्राप्त करना तथा अन्य वस्तुओं का उत्पादन करनाः जैसे–मल तथा घरेलू कचरे से बिजली उत्पादन, खाद तथा कागज आदि का निर्माण करना।

36.7 आपने क्या सीखा

1. भारत में सबसे अधिक जनसंख्या-व`द्धि होती है। भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।
2. विकसित देशों की अपेक्षा विकासशील देशों में जनसंख्या-व`द्धि की औसत दर अधिक है।
3. बेहतर चिकित्सा सुविधा, अंधविश्वास, अशिक्षा, कम उम्र में विवाह तथा लड़के की चाह में लड़कियाँ पैदा करते जाने के कारण हमारे देश की जनसंख्या बढ़ती जा रही है।
4. जनसंख्या-व`द्धि के कारण पारितंत्रीय समस्या, पर्यावरण प्रदूषण, ओजोन परत में छेद की आशंका, ब्रह्मांडीय तापमान का बढ़ना, कृषि योग्य भूमि की कमी, पीने के पानी तथा सिंचाई के पानी की कमी, प्राकृतिक दोहन, स्वास्थ्य संबंधी समस्या, गरीबी, बेकारी तथा अपराधीकरण जैसी समस्याएँ उत्पन्न हो गई हैं।
5. जनसंख्या नियंत्रण के लिए गर्भ निरोधक उपायों की जानकारी, जनसंख्या शिक्षा, महिला शिक्षा, यौन शिक्षा तथा संचार माध्यमों द्वारा प्रचार-प्रसार किया जाता है।
6. जनसंख्या नियंत्रण इसलिए जरूरी है कि हर आदमी को ठीक से भोजन, शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ तथा काम के अवसर उपलब्ध हो सकें। यातायात की समुचित व्यवस्था हो सके, पर्यावरण प्रदूषण, डेंगू और एड्स जैसी संक्रामक बीमारियों पर नियंत्रण पाया जा सके, आर्थिक विकास हो सके, जिससे गरीबी तथा अपराध की प्रव`त्तियों को रोका जा सके।

36.8 पाठांत प्रश्न

1. निम्नलिखित का संक्षेप में उत्तर दीजिएः

   (क) म`दा प्रदूषण कैसे होता है?

(ख) जन्मदर किसे कहते हैं?

(ग) म`त्युदर किसे कहते हैं?

(घ) गरीबी-रेखा किसे कहते हैं?

2. भारत में जनसंख्या-व`द्धि का क्या स्वरूप है स्पष्ट कीजिए?
3. जनसंख्या को विज्ञान किस तरह प्रभावित करता है?
4. जनसंख्या-व`द्धि का पर्यावरण पर किस प्रकार प्रभाव पड़ता है?
5. जनसंख्या शिक्षा से आप क्या समझते हैं?
6. भारत में जनसंख्या-व`द्धि के प्रमुख कारणों पर प्रकाश डालिए।
7. निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए–

   (क) पारितंत्रीय समस्या

   (ख) ओजोन परत में छेद

   (ग) ग्रीन हाउस प्रभाव तथा ब्रह्मांडीय तापमान का बढ़ना

   (घ) प्राकृतिक दोहन
8. यौन संबंध के क्षेत्र में संयम बरतना क्यों आवश्यक है? तर्क देते हुए उत्तर लिखिए।
9. किशोरावस्था में माँ बनने के दुष्परिणामों पर एक टिप्पणी लिखिए।
10. यौन शिक्षा के अभाव में किशोर तथा युवा पीढ़ी को कौन-कौन सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है?

36.9 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

36.1	1. (ख)	2. (ग)	3. (ख)	4. (ग)	
36.2	1. (ग)	2. (घ)			
36.3	1. (ग)	2. (ग)	3. (ख)	4. (ख)	5. (ग)

टिप्पणी

301hi37A

37

संचार माध्यमों के प्रमुख अवयव

पिछले पाठों में आपने विभिन्न संचार माध्यमों के स्वरूप, प्रकार, समाचार संकलन की प्रक्रिया तथा उनके प्रकाशन-प्रसारण संबंधी पहलुओं के बारे में विस्तार से पढ़ा। इन संचार माध्यमों यानी पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो, दूरदर्शन आदि के कुछ और महत्त्वपूर्ण अंग भी हैं, जो इनके मुख्य उद्देश्य अर्थात् मनोरंजन, सूचना और शिक्षा में सहायक बनते हैं। जिस तरह हमारे शरीर में मुँह, आँख, कान, हाथ, पाँव के अलावा और भी बहुत से अंग हैं जो हमारे जीवन के लिए आवश्यक हैं, इसी तरह जनसंचार के ऐसे अनेक अंग हैं, जिनके अध्ययन के बिना जनसंचार के बारे में हमारा ज्ञान अधूरा रहेगा। इस पाठ में हम ऐसे ही कुछ प्रमुख अंगों की चर्चा करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- संचार माध्यमों के प्रमुख अवयवों की पहचान कर सकेंगे;
- विज्ञापन के महत्त्व की चर्चा कर सकेंगे;
- अखबार, रेडियो तथा दूरदर्शन के विज्ञापन का स्वरूप स्पष्ट कर सकेंगे;
- फोटो तथा कार्टून में अंतर बता सकेंगे;
- वार्ता, भेंटवार्ता तथा फीचर में भेद कर सकेंगे;
- आँखों देखा हाल तथा धारावाहिक की अलग-अलग व्याख्या कर सकेंगे।

क्रियाकलाप

1. अखबार तो आप पढ़ते ही हैं। उसमें समाचारों के अलावा और क्या-क्या चीजें प्रकाशित होती हैं। किन्हीं चार का उल्लेख कीजिए।

   1...3...

   2...4...

2. क्या आपने कभी सोचा है कि अखबार या पत्रिकाओं में फोटो प्रकाशित करने के पीछे क्या उद्देश्य होता है? संक्षेप में बताइए–

....

....

....

....

37.1 आइए समझें

संचार माध्यम के प्रमुख अवयवों का परिचय

संचार माध्यम के प्रमुख अवयव हैं :
1. विज्ञापन
2. फोटो
3. कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र
4. भेंटवार्ता
5. वार्ता
6. परिचर्चा
7. आलेख
8. फीचर
9. धारावाहिक
10. आँखों देखा हाल

आपने अख़बार पढ़ते, रेडियो सुनते अथवा दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखते समय निश्चित रूप से महसूस किया होगा कि इनमें एक ही तरह की सामग्री नहीं होती। अखबारों में समाचार प्रमुख होते हैं लेकिन उनके साथ-साथ विज्ञापन, संपादकीय, लेख, चित्र, कार्टून आदि विविध प्रकार की सामग्रियों से उसे सजाया जाता है। इसी प्रकार रेडियो पर भी समाचारों के अलावा भेंटवार्ताएँ, वार्ताएँ, धारावाहिक रचनाएँ, गीत-संगीत, नाटक आदि का भी प्रसारण होता है। बीच-बीच में (ब्रेक के बाद) विज्ञापन भी प्रसारित होते हैं। यही प्रक्रिया दूरदर्शन पर भी होती है। वहाँ भी अलग-अलग प्रकार की सामग्री दिखाई जाती है। शायद आप उन सब से परिचित होंगे किंतु उनके बारे में विशेष रूप से जानने के उत्सुक होंगे। आइए, अब इस पाठ में हम आपका परिचय संचार माध्यमों में प्रयोग होने वाले प्रमुख अवयवों से करवाते हैं।

1. विज्ञापन

विज्ञापन उपभोक्ताओं के बीच वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने का एक साधन है, किंतु साथ ही यह संचार माध्यमों की आय का भी मुख्य स्रोत होता है। यदि अखबारों में विज्ञापन प्रकाशित न हों तो जो अखबार हमें एक-डेढ़ रुपए में मिलता है, वह 8-10 रुपए में मिलेगा। इसी तरह रेडियो और दूरदर्शन पर भी खूब विज्ञापन प्रसारित होते हैं, जिनसे दोनों माध्यमों की आय होती है। आकाशवाणी की 'विविध भारती' सेवा मूलतः विज्ञापन प्रसारण सेवा ही है। दूरदर्शन पर भी छोटे-बड़े विज्ञापन विभिन्न कार्यक्रमों से पहले और बाद में प्रसारित किए जाते हैं। विज्ञापनों की दरें किसी अखबार की प्रसार संख्या यानी उसे पढ़ने वाले लोगों की संख्या के हिसाब से तय होती हैं। विज्ञापन देने वाले व्यापारिक संगठन अखबारों के पाठक वर्ग के आर्थिक, सामाजिक स्तर को ध्यान में रखकर विज्ञापन छपवाते हैं।

उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री के लिए अखबार तथा रेडियो/दूरदर्शन विज्ञापन प्रकाशित/प्रसारित करते हैं।

कुछ विज्ञापन लोकहित में प्रकाशित या प्रसारित किए जाते हैं। राष्ट्रीय एकता, सांप्रदायिक सद्भाव, परिवार नियोजन, रोगों से बचाव, नशीले पदार्थों से परहेज जैसे विज्ञापन इसी श्रेणी में आते हैं। इस तरह के विज्ञापन प्रायः सरकारी विभाग या स्वयंसेवी संस्थाएँ देती हैं।

पत्र-पत्रिकाओं, रेडियो और दूरदर्शन में प्रकाशन/प्रसारण के अलावा विज्ञापन के और भी अनेक माध्यम हैं। सिनेमा स्लाइड, इश्तेहार, होर्डिंग, रेलगाड़ियों, बसों, ट्रकों, दीवारों

पर लिखवाना, खेल प्रतियोगिताओं, प्रदर्शनियों, मेलों आदि के मौकों पर किसी वस्तु या संदेश का प्रचार-प्रसार इसी श्रेणी में आता है। विज्ञापनों की भाषा और सजावट उसके पाठकों/दर्शकों के स्तर के अनुसार होती है। आमतौर पर आकर्षक और लुभाने वाले शब्द या मुहावरे इस्तेमाल करके ग्राहकों को आकर्षित किया जाता है। आजकल दूरदर्शन पर इतने सुंदर और लुभावने विज्ञापन आ रहे हैं कि लोग, खास कर बच्चे, इन्हें देखने में बहुत रुचि लेते हैं।

आपने अखबार, रेडियो तथा दूरदर्शन पर प्रकाशित अथवा प्रसारित होने वाले विज्ञापनों की ओर ध्यान दिया होगा तो देखा होगा कि एक ही वस्तु का विज्ञापन अलग-अलग माध्यमों पर अलग-अलग ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसके पीछे संचार माध्यमों के स्वरूप मुख्य कारण होते हैं।

चूँकि अखबार संचार माध्यम की मुद्रित विधा है इसलिए इसमें प्रकाशित होने वाले विज्ञापनों को सुंदर-सुंदर चित्रों तथा वाक्यों से सजाया जाता है, जिससे कि वह एक दृष्टि में देखते ही पाठक को अपनी तरफ आकर्षित कर लें।

किसी संदेश का प्रचार भी विज्ञापन द्वारा किया जाता है।

रेडियो एक सशक्त श्रव्य माध्यम है अतः इस पर केवल किसी भी संदेश को सुना जा सकता है। इसलिए रेडियो पर प्रसारित होने वाले विज्ञापनों में गीत-संगीत के टुकड़े, विशेष प्रकार की ध्वनियों और वाक्यों का प्रयोग किया जाता है, जिससे कि श्रोता का ध्यान आसानी से आकर्षित हो सके। कई बार विज्ञापनों के द्वारा मनोरंजन भी करने का प्रयास किया जाता है ताकि काफ़ी देर तक लोगों के मन में विज्ञापन का प्रभाव बना रहे।

दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापनों में चित्रों के साथ-साथ रेडियो की भाँति ध्वनियों तथा गीत-संगीत का भी प्रयोग किया जाता है। जहाँ ज़रूरत होती है वहाँ लिखित रूप भी दिया जाता है। इसमें विज्ञापनों की गुणवत्ता निर्धारित करते समय यह ध्यान में रखा जाता है कि विज्ञापन देखने और सुनने दोनों में आकर्षक हों और विज्ञापनदाता का ठीक-ठाक संदेश भी पहुँचा सकें। आजकल तो इंटरनेट पर किसी वेबसाइट को देखते समय भी अनेक आकर्षक विज्ञापन चलते रहते हैं और मोबाइल फोन में भी अक्सर विज्ञापन वाले संदेश आते रहते हैं।

2. फोटो

पत्र-पत्रिकाओं में फोटो का महत्त्व बहुत बढ़ गया है। रंगीन छपाई के क्षेत्र में प्रगति होने के साथ-साथ फोटो छापने की अनिवार्यता भी बढ़ती जा रही है। रेडियो में तो फोटो देना संभव नहीं है, पर बिना चित्रों के दूरदर्शन और पत्र-पत्रिकाओं की तो कल्पना ही नहीं की जा सकती। फोटोग्राफी की तकनीक अब इतनी विकसित हो चुकी है कि उपग्रह के ज़रिए दूर से फोटो तत्काल प्रेषित किए जा सकते हैं।

उपग्रह द्वारा तत्काल फोटो खींच कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजा जा सकता है।

यदि किसी समाचार के साथ उससे संबंधित फोटो दे दिए जाएँ तो उसका प्रभाव बढ़ जाता है। जिन पत्रिकाओं में फोटो कम छपते हैं, उनके प्रति पाठक का आकर्षण कम होता है। खेल, फिल्म, कला, विज्ञान आदि विषयों की पत्रिकाएँ तो बिना चित्रों के छप

ही नहीं सकतीं। कुछ फोटो अपने आप में समाचार होते हैं। संचार माध्यमों के फोटोग्राफर भी किसी संवाददाता या पत्रकार से कम नहीं होते। वास्तव में फोटोग्राफी कला भी है और पत्रकारिता भी। फोटो के कारण किसी समाचार या खबर की विश्वसनीयता बढ़ जाती है। दूरदर्शन तो है ही दृश्य माध्यम, और फोटो उसका आधार है। कैमरामैन या फोटोग्राफर कई कोणों से तथा कई पहलुओं को ध्यान में रखकर एक ही घटना के असंख्य चित्र खींचता है, जिनमें से सबसे सटीक चित्र छाँटकर प्रकाशित या प्रसारित किया जाता है। कुछ अखबारों के फोटोग्राफर तो अंतर्राष्ट्रीय स्तर की ख्याति प्राप्त कर चुके हैं। यों तो फोटो अपने आप में मुखर होता है और उसकी रेखाएँ और रंग ही बोलते हैं, पर कभी-कभी उसका शीर्षक (कैप्शन) इतना चुटीला और मन को छू लेने वाला होता है कि जितना प्रभाव एक चित्र और चार-पाँच शब्दों से हो जाता है, उतना 20-25 पृष्ठों या दो घंटे के भाषण से भी नहीं हो सकता।

दूरदर्शन पर दिखाए जाने वाले विज्ञापनों में तो चित्र ही महत्त्वपूर्ण होते हैं। यद्यपि वहाँ पर चित्रों के साथ-साथ ध्वनि का भी महत्त्व होता है। लेकिन कई बार विज्ञापनदाता चित्र के साथ कुछ वाक्य लिखकर ही बिना किसी ध्वनि के अपना संदेश दर्शकों तक पहुँचा देता है।

फोटो पत्रकारिता एक स्वतंत्र विधा के रूप में उभरी है।

अब तो फोटो पत्रकारिता एक स्वतंत्र विधा के रूप में उभर चुकी हैं। 'राष्ट्रीय सहारा' नामक दैनिक-पत्र **फोटो फीचर** के नाम से हर सप्ताह किसी स्थान, घटना अथवा प्रकृति के सौंदर्य को चित्रित करता है।

3. कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र

कार्टून अथवा व्यंग्य चित्र भी अब पत्र-पत्रिकाओं का अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं। और ये व्यंग्यचित्र परोक्ष रूप से अपना संदेश प्रेषित करते हैं। कार्टून बनाना भी फोटोग्राफर की तरह एक कला है, किंतु इसमें कैमरे जैसे उपकरण नहीं बल्कि मात्र पेंसिल या कलम और कागज़ की आवश्यकता पड़ती है, जिससे कार्टूनिस्ट आड़ी-तिरछी रेखाएँ खींच कर किसी घटना, व्यक्ति, या विचार पर ऐसी तीखी टिप्पणी कर डालते हैं कि बड़े-बड़े लेख और संपादकीय भी उनके सामने फीके पड़ जाते हैं। कार्टून असल में स्वस्थ लोकतंत्र का लक्षण है। कार्टूनकार बड़े से बड़े नेता, विद्वान, अभिनेता या संत-महात्मा तक को माफ नहीं करते। किसी को बिल्ली बना दिया जाता है तो किसी को लोमड़ी। कोई मक्खी या तितली के रूप में चित्रित किया जाता है तो कोई रीछ या कुत्ते के रूप में। मज़े की बात यह है कि कोई भी इसमें बुरा नहीं मानता। कार्टून का उद्देश्य किसी पर कीचड़ उछालना या मज़ाक उड़ाना नहीं बल्कि किसी घटना या विचार को तीखेपन तथा कचोट के साथ प्रस्तुत करना है। कार्टून किसी समाचार को टिप्पणी के

साथ पेश करता है। दुनिया के सभी छोटे-बड़े अखबार और पत्रिकाओं में कार्टून के लिए स्थान अवश्य रहता है। कुछ पत्रिकाएँ तो कार्टून पत्रिका के रूप में ही निकलती हैं। कार्टून किसी भाषा का भी मोहताज नहीं होता, पर कई बार कार्टून में बनाए गए पात्रों को स्पष्ट करने के लिए भाषा का भी इस्तेमाल किया जाता है। यह केवल कुछ शब्दों या एकाध वाक्य के रूप में होती है।

अब दूरदर्शन पर भी समाचारों के साथ अथवा राजनीतिक टिप्पणियों के साथ कार्टून दिखाए जाने का प्रचलन शुरू हो गया है।

कार्टून के माध्यम से फिल्में भी बनाई जाती हैं, जो बच्चों को विशेष रूप से पसंद आती हैं। इन्हें ऐनीमेशन फिल्में कहा जाता है।

अब कार्टूनिस्ट पेंसिल अथवा कलम के साथ-साथ कंप्यूटर की सहायता से भी कार्टून बनाते हैं। समाचार पत्रों में कार्टूनिस्टों को संपादकों और संवाददाताओं के समान प्रतिष्ठा तथा वेतन मिलता है।

टिप्पणी

किसी भी विषय की व्यंग्यात्मक प्रस्तुति कार्टून कहलाती है।

पाठगत प्रश्न 37.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. रेडियो की 'विविध भारती' सेवा मुख्य रूप से किस प्रकार की सेवा है?
   (क) गीत-संगीत सुनवाने की सेवा
   (ख) विज्ञापन प्रसारण सेवा
   (ग) चुटकुले सुनवाने की सेवा
   (घ) नाटक प्रसारण सेवा
2. क्या रेडियो पर विज्ञापन प्रसारित करने के लिए चित्रों की आवश्यकता होती है?
   (क) हाँ (ग) नहीं
   (ख) कभी-कभी (घ) जरूरत पड़ने पर
3. समाचारों के साथ चित्र इसलिए दिए जाते हैं ताकि
   (क) देखकर लोगों को आनंद आए
   (ख) समाचार कम देने पड़ें
   (ग) खबरों की विश्वसनीयता बढ़ जाए
   (घ) अखबार देखने में सुंदर लगे।
4. किसी भी पत्र-पत्रिका में नियमित रूप से प्रकाशित कार्टून का उद्देश्य
   (क) अखबारों या पत्रिकाओं की बिक्री बढ़ाना होता है;
   (ख) किसी विषय को तीखेपन तथा कचोट के साथ प्रस्तुत करना होता है;
   (ग) नेताओं का मज़ाक उड़ाना होता है;
   (घ) रीति निभाना होता है।

टिप्पणी

4. भेंटवार्ता

भेंटवार्ता भी फोटो तथा कार्टून की तरह समाचार की विश्वसनीयता बढ़ाते हैं। इसमें किसी घटना, विषय या समस्या से जुड़े एक या अधिक लोगों से कोई संवाददाता या पत्रकार एकांत में सवाल-जवाब करके कुछ जानकारी प्राप्त करता है। भेंटवार्ताएँ पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती हैं और साथ ही रेडियो तथा दूरदर्शन से प्रसारित भी होती हैं। कभी-कभी भेंटवाताओं से बहुत बड़े समाचार भी निकल आते हैं। भेंटवार्ताएँ किसी खास समाचार अथवा घटना के बारे में भी हो सकती हैं और किसी राजनेता, अधिकारी या विषय के जानकार से सामान्य तौर पर बातचीत भी हो सकती हैं। आकाशवाणी से तो 'समाचार दर्शन' या 'न्यूजरील' जैसे कार्यक्रम भी प्रसारित किए जाते हैं जो पूरी तरह भेंटवार्ताओं पर आधारित हैं।

किसी घटना, विषय या समस्या पर विषय विशेषज्ञ से विशिष्ट बातचीत भेंटवार्ता कहलाती है।

दूरदर्शन के समाचारों तथा समसामयिक कार्यक्रमों में भेंटवार्ताओं का खूब इस्तेमाल किया जाता है। किसी घटना या समाचार के अलग-अलग पहलू समझने और पाठकों, श्रोताओं और दर्शकों तक पहुँचाने में भेंटवार्ता विधा बहुत उपयोगी है। उदाहरण के लिए कहीं दंगा हो जाए तो पीड़ित लोगों, वहाँ मौजूद व्यक्तियों, पुलिस तथा किसी सामाजिक कार्यकर्ता के विचार प्रकाशित/प्रसारित कर दिए जाएँ तो सारी बात की सच्चाई सामने आ जाएगी। भेंटवार्ताएँ आमतौर पर रिकार्ड कर ली जाती हैं और उनका संपादन करके आवश्यकता के अनुरूप उनके अंश या पूरे रूप में प्रकाशित/प्रसारित की जाती हैं।

भेंटवार्ता या इंटरव्यू लेने वाले पत्रकार को अत्यंत विनम्र, विवेकशील और मृदुभाषी होना चाहिए, तभी वह किसी व्यक्ति से सच्चाई मालूम करने में सफल हो सकेगा। धीरज और संयम उसके अन्य गुण हैं। समाचार को विश्वसनीयता के साथ पेश करने की यह उत्तम विधा है। भेंटवार्ताओं को प्रकाशित करने से पहले व्यक्ति विशेष से कथनों की पुष्टि करवा लेनी चाहिए।

इंटरव्यू लेने वाले पत्रकार को अत्यंत विनम्र, विवेकशील और मृदुभाषी होना चाहिए।

भेंटकर्ता को प्रश्न पूछते हुए ऐसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए जो उस व्यक्ति की समझ में आती हो और जिसे पाठक और श्रोता समझ सकते हों। प्रश्न सरल भाषा में और स्पष्ट होने चाहिए।

आपने समाचारों के स्रोत के रूप में संवाददाता सम्मेलन के बारे में पढ़ा। संवाददाता सम्मेलन भी एक तरह से भेंटवार्ता का विस्तृत रूप है। सामान्य भेंटवार्ता में प्रायः एक व्यक्ति से एक पत्रकार प्रश्न करता है, जबकि संवाददाता सम्मेलन में बारी-बारी से अनेक पत्रकार प्रश्न पूछते हैं। राजनेताओं से की गई भेंटवार्ताओं में बड़ी चतुराई से प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनमें ऐसी जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया जाता है, जो राजनेता आसानी से बताना नहीं चाहते।

5. वार्ता

वार्ता या टॉक आकाशवाणी की विधा है, जिसमें किसी विषय पर विस्तार से चर्चा की जाती है। इसमें कोई जानकार व्यक्ति निर्धारित समय में दिए गए विषय के विभिन्न पहलुओं पर सरल और सुबोध भाषा में प्रकाश डालता है। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि विषय अधिकतम लोगों के हित व रुचि का हो। ये विषय सामयिक भी हो सकते हैं और स्थायी महत्त्व के भी।

चूँकि वार्ता में एक ही व्यक्ति की भागीदारी होती है, इसलिए इसकी अवधि 5 से 10 मिनट की रहती है, ताकि श्रोता ऊबने न लगें। वार्ताकार स्वयं अपनी आवाज़ में वार्ता प्रसारित करे तो उसका प्रभाव अच्छा होता है। यदि उसकी आवाज़ प्रसारण योग्य न हो तो उद्घोषक या समाचार वाचक भी वार्ता पढ़ सकते हैं। बीच-बीच में उदाहरणों, उक्तियों आदि का हवाला देने से वार्ता में रोचकता का पुट आ जाता है।

टिप्पणी

किसी विषय पर विस्तार से चर्चा वार्ता कहलाती है। यह आकाशवाणी की एक विधा है।

विषय की स्पष्टता, विचारों की निष्पक्षता और भाषा की सरलता के साथ-साथ सफल वार्ता की एक महत्त्वपूर्ण पहचान है उसका सही प्रस्तुतीकरण। बोलते समय यदि आवाज़ का कुशलता के साथ उपयोग किया जाए तो श्रोता का ध्यान भंग नहीं होता और विषय उस तक अच्छी तरह पहुँच जाता है। समाचार प्रभाग की सामयिकी, समाचार चर्चा, समाचार दर्शन, सप्ताह की झाँकी, स्पॉटलाइट, वाक्यांश, राज्यों की चिट्ठी आदि प्रमुख कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों के अलावा वार्ताओं का अखिल भारतीय कार्यक्रम भी है, जिसमें सप्ताह में एक बार आकाशवाणी के सभी केंद्रों से एक साथ कोई वार्ता प्रसारित की जाती है। अब आकाशवाणी के सुबह के समाचारों के बदले हुए स्वरूप में प्रतिदिन एक वार्ता भी प्रसारित की जाती है। साथ ही दैनिक समाचारपत्रों में प्रकाशित मुख्य समाचारों की सूचना भी प्रसारित होती है।

6. परिचर्चा

किसी विषय या समस्या पर कई विशेषज्ञों की आपस में विस्तार से बातचीत परिचर्चा कहलाती है। यह रेडियो और दूरदर्शन की एक लोकप्रिय विधा है।

परिचर्चा एक तरह से वार्ता का ही विस्तार है। इसमें तीन या उससे अधिक लोग एक साथ बैठकर आपसी बातचीत के माध्यम से किसी विषय या समस्या को श्रोताओं/दर्शकों के सामने रखते हैं। कोशिश यह होनी चाहिए कि इसमें भाग लेने वाले लोग विषय के अलग-अलग पहलुओं से जुड़े हुए हों। उदाहरण के लिए यदि मुक्त विद्यालयी शिक्षा पद्धति की उपयोगिता या विद्यार्थियों के निर्णय लेने की क्षमता पर परिचर्चा आयोजित की जाए तो उसमें शिक्षा मंत्रालय के किसी वरिष्ठ अधिकारी, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान में शिक्षा प्राप्त व्यक्ति या शिक्षा पा रहे विद्यार्थी, किसी अध्यापक, शिक्षा शास्त्री और किसी समाजसेवक अथवा पत्रकार को शामिल किया जा सकता है।

परिचर्चाएँ आकाशवाणी तथा दूरदर्शन दोनों माध्यमों में प्रसारित की जाती हैं। यह दूरदर्शन की तो बहुत ही लोकप्रिय विधा है। चुनाव, बजट, कानून, खेल तथा अन्य राष्ट्रीय मसलों पर अक्सर परिचर्चाएँ प्रसारित की जाती हैं। पत्र-पत्रिकाओं में भी लिखित विचार प्रकाशित किए जाते हैं।

परिचर्चा में किसी एक व्यक्ति को संयोजक (मॉडरेटर) तय किया जाता है, जो एक तरह से सूत्रधार होता है और परिचर्चा का संचालन करता है। उसे ध्यान रखना होता है कि विषय के सभी मुख्य पहलुओं पर विचार हो जाए और उसमें भाग लेने वाले सब लोगों को अपनी राय व्यक्त करने का मौका मिले। परिचर्चा का उद्देश्य विषय के विभिन्न पहलुओं की जानकारी श्रोताओं/दर्शकों को देना है, इसलिए इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि कहीं चर्चा बहस का रूप न ले ले। परिचर्चा प्रायः 20 मिनट से एक घंटे तक की हो सकती है। परिचर्चा सफल तभी होगी जब वह अनौपचारिक तथा घरेलू वातावरण में की जाए।

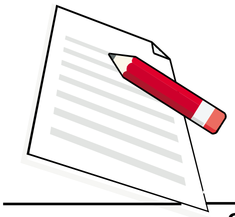

टिप्पणी

परिचर्चा में भाग लेने वालों को यह ध्यान रखना चाहिए कि उनका असली मकसद श्रोताओं/दर्शकों को विषय की सही जानकारी देना है अपने ज्ञान व विद्‌वता का सिक्का जमाना नहीं। उन्हें ऐसी भाषा का इस्तेमाल करना चाहिए जिसे आम लोग आसानी से समझ लें। गहरी से गहरी बात को सरल और बोलचाल की भाषा में पेश करना ही अच्छे परिचर्चाकार की पहचान है।

7. आलेख

आलेखों का स्वरूप भी रेडियो वार्ता की तरह ही होता है। जब कोई भी वार्ता अखबार/पत्रिका में प्रकाशित होती है तो उसे आलेख कहा जाता है। वार्ताओं की तरह आलेख भी विभिन्न विषयों पर लिखे जाते हैं। इसमें राजनीतिक समसामयिक घटनाएँ, नारी अधिकार, यौन शोषण, बच्चों, किशोरों की दशा-दिशा की राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्याएँ, साहित्य, कला, संस्कृति, कृषि, नीति, बजट, आर्थिक परिदृश्य आदि विषय आते हैं। इन आलेखों के प्रकाशित होने के अनुरूप ही इसे संपादकीय, समीक्षा, टिप्पणी, चर्चा आदि नामों से जाना जाता है।

समसामयिक घटना पर आधारित पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित लेख आलेख कहलाते हैं।

आलेख प्रायः गंभीर विषयों पर लिखे जाते हैं। बिना आलेख के समाचारपत्र अधूरे होते हैं।

8. संपादकीय

संपादकीय में किसी महत्त्वपूर्ण घटना, सरकार के फैसले, सामाजिक समस्या आदि पर टिप्पणी होती है। समाचार जहाँ घटनाओं या स्थितियों की तथ्यात्मक जानकारी देते हैं, वहीं संपादकीय उन पर विचारात्मक टिप्पणी करते हैं। संपादकीय से समाचार पत्रों की दृष्टि का अंदाजा भी लगाया जा सकता है। इसमें किसी घटना, समस्या या नीतिगत फैसले पर संपादक क्या टिप्पणी करता है उससे उसके साहस और विचारों का पता चलता है।

कई बार संपादकीय पढ़ने के बाद सरकारें फैसला बदलने पर मज़बूर हो जाती हैं, किसी घटना पर तुरंत कार्रवाई के लिए तत्पर हो जाती हैं। जिस नियम पर संपादकीय लिखा जाता है उसे माना जाता है कि गंभीर मुद्‌दा है। इससे पाठकों में जागरूकता भी पैदा होती है। कई बार किसी समाचार को पढ़कर पाठक उतना आंदोलित नहीं होता जितना संपादकीय पढ़कर हो जाता है।

किसी विशिष्ट समाचार पर विशेष विचारात्मक टिप्पणी संपादकीय कहलाती है।

संपादकीय मुख्यतः अखबारों और पत्रिकाओं में संपादक की ओर से संपादकीय पृष्ठ पर लिखा जाता है। कभी-कभी संपादकीय अति महत्त्वपूर्ण होने पर प्रथम पृष्ठ पर भी स्थान पा जाता है।

9. फीचर

आप जानते हैं कि समाचार पत्रों में हम दैनिक जीवन में घटित महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ देते हैं, जबकि फीचर में किसी समाचार के व्यापक प्रभाव का दर्शन और मूल्यांकन होता है। साथ ही एक शब्दचित्र खींचा जाता है। यह विशेष सत्य पर आधारित होता है जो पाठक अथवा दर्शक की जिज्ञासा, सहानुभूति, आशंका, विनोद, संत्रास आदि संवेदनाओं को उत्पन्न करने में सहायक होता है। किसी अच्छे फीचर को पढ़ अथवा देखकर संतोष प्राप्त होता है और भावनाओं की तुष्टि होती है। यह मूलतः मनोरंजन के साथ सूचना देने के उद्‌देश्य से लिखा जाता है।

व्यावहारिक बातों अथवा घटनाओं की मनोरंजक प्रस्तुति फीचर कहलाती है।

एक फीचर में व्यावहारिक क्षेत्र की बात को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। इसी प्रकार सूचना का अधिकार, भोज्य पदार्थ, बागवानी, मशीनों की मरम्मत, डाक टिकट, लिंग भेद, एच.आई.वी./एड्स, फूलों की खेती आदि जैसे किसी भी विषय पर फ़ीचर आधारित हो सकता है। फ़ीचर के अन्य अनेक विषय हो सकते हैं। बच्चों व किशोरों की समस्याएँ जैसेः धैर्यशीलता, परीक्षा से पूर्व स्ट्रैस मैनेजमेंट अर्थात तनाव मुक्त कैसे रहा जाए, बच्चों में मादक पदार्थों का बढ़ता सेवन और रोकथाम, खाली समय का सदुपयोग कैसे करें, रुचियाँ–अभिरुचियाँ। शौर्य-बहादुरी की गाथाएँ, बाल विवाहः कुप्रथा, लिंगभेद की समस्या, एचआईवी एड्स रोग/भ्रांतियों के प्रति जागरूकता इत्यादि।

फीचर का शीर्षक सदैव आकर्षक और दिल को छू लेने वाला होता है। फीचर अखबार और पत्रिका में प्रकाशित होता है, रेडियो पर सुना जा सकता है और दूरदर्शन पर देखा भी जा सकता है।

टिप्पणी

व्यावहारिक बातों अथवा घटनाओं की मनोरंजक प्रस्तुति फीचर कहलाती है।

10. धारावाहिक

धारावाहिक शब्द का प्रचलन सभी संचार माध्यमों में लगभग एक ही रूप में है। धारावाहिक का अर्थ होता है किसी भी लंबी सामग्री को निर्धारित समय पर क्रमशः प्रकाशित अथवा प्रसारित करना। धारावाहिक को अंग्रेज़ी में सीरियल कहा जाता है। अखबारों में साहित्य, कला तथा संस्कृति, बच्चों के प्राकृतिक स्वास्थ्य से संबंधित किसी घटना अथवा समस्या पर आधारित खबरें तथा सामग्री भी धारावाहिक रूप में प्रकाशित की जाती है। अखबारों में लंबी कहानियों, उपन्यासों आदि को भी धारावाहिक रूप में प्रकाशित किया जाता है।

किसी लंबी सामग्री को निर्धारित समय पर क्रमशः प्रकाशित अथवा प्रसारित करना धारावाहिक कहलाता है।

रेडियो पर कहानी, नाटक तथा संगीत समारोहों से संबंधित कार्यक्रमों के अलावा किसी समस्या से जुड़ी वार्ताएँ भी धारावाहिक रूप में प्रसारित की जाती हैं।

दूरदर्शन पर धारावाहिक का प्रचलन अधिक है। दूरदर्शन पर धारावाहिक रूप में कहानियाँ, नाटक, फिल्में तथा प्रतियोगितापरक कार्यक्रम अधिक दिखाए जाते हैं। अलग-अलग विषयों जैसे संगीत, नृत्य तथा किसी घटना से संबंधित धारावाहिक भी प्रसारित होते हैं। कहानियों तथा फिल्मों पर आधारित धारावाहिक न होकर, 'नूपुर' तथा 'परमवीर चक्र' नामक धारावाहिक नृत्य तथा फौजी घटनाओं पर आधारित प्रचलित धारावाहिक थे। 'हम लोग', 'शांति' आदि धारावाहिक सबसे पहले लंबे समय तक चलने वाले लोकप्रिय धारावाहिक रहे हैं। आजकल भी 'कहानी घर-घर की', 'कुसुम', कालचक्र, यात्रा जैसे अनेक धारावाहिक घर-घर देखे जा रहे हैं।

पाठगत प्रश्न 37.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. वार्ताएँ .... पर सुनाई जाती हैं।

   (क) रेडियो   (ग) लाउडस्पीकर

   (ख) दूरदर्शन   (घ) किसी भी संचार माध्यम

2. परिचर्चा में .... व्यक्ति भाग लेते हैं।

   (क) एक (ग) तीन

   (ख) दो (घ) तीन या उससे अधिक

3. धारावाहिक ....पर प्रस्तुत किया जाता है।

   (क) रेडियो (ग) अखबार

   (ख) दूरदर्शन (घ) तीनों माध्यमों

---

11. आँखों देखा हाल

हमारे देश में आँखों देखा हाल का पहला उदाहरण महाभारत के समय का है जब संजय ने धृतराष्ट्र को कौरव-पांडव युद्ध का विस्तृत वर्णन सुनाया था। उसमें नेत्रहीन होते हुए भी धृतराष्ट्र को युद्ध की पूरी जानकारी राजमहल में बैठे-बैठे मिल जाती थी। जो बात हमने महाभारत में पढ़ी थी उसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने हमारे सामने संभव कर दिखाया है। रेडियो से आँखों देखा हाल सुनने से आगे बढ़कर अब टेलीविज़न पर हम सब कुछ अपने सामने होते देखते भी हैं और सुनते भी हैं।

आँखों देखा हाल प्रसारण माध्यमों की सबसे अधिक विश्वसनीय विधा है। इसमें दर्शक/श्रोता तथा वास्तविक घटना के बीच कम दूरी रहती है। टेलीविज़न में तो यह दूरी नाम मात्र की रह जाती है, क्योंकि उसमें कैमरे की आँखों से सब कुछ दर्शक के सामने ही आ जाता है और कमेंटेटर या आँखों देखा हाल बताने वाला व्यक्ति सिर्फ सहायक जानकारी देता है।

आँखों देखा हाल प्रसारण माध्यमों की सबसे अधिक विश्वसनीय विधा है।

आँखों देखा हाल मुख्य रूप से खेल प्रतियोगिताओं, महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों और राष्ट्रीय समारोह, किसी महान व्यक्ति की मृत्यु आदि के बारे में प्रसारित किया जाता है। 15 अगस्त, 26 जनवरी, मंत्रियों के शपथ-ग्रहण समारोह, अलंकरण समारोह जैसे बड़े आयोजनों का आँखों देखा हाल आप अक्सर सुनते/देखते होंगे। इसी तरह प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति की मृत्यु, उनकी शवयात्रा और अंतिम संस्कार का आँखों देखा हाल रेडियो तथा दूरदर्शन से प्रसारित किया जाता है। अब तो संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण होता है और इसके लिए अलग से दो चैनल भी शुरू किए जा चुके हैं। सबसे अधिक लोकप्रिय आयोजन होते हैं खेल प्रतियोगिताएँ। इनमें भी क्रिकेट की कमेंटरी सुनने, देखने वालों की संख्या बहुत अधिक है। कभी-कभी ऐतिहासिक उपलब्धियों की कमेंटरी भी सुनाई जाती है। उदाहरण के लिए कुछ वर्ष पूर्व जब भारतीय अंतरिक्ष यात्री राकेश शर्मा अंतरिक्ष में गए तो मॉस्को से उस घटना का आँखों देखा हाल आकाशवाणी ने प्रसारित किया था।

आँखों देखा हाल सुनने व देखने वालों में अनपढ़, शिक्षित तथा कम पढ़े-लिखे सब तरह के लोग होते हैं। इसलिए कमेंटेटर को सरल और बोलचाल की भाषा का इस्तेमाल करना आना चाहिए। जिस तरह का कार्यक्रम होगा, उस तरह के कुछ तकनीकी और विशेष शब्द तो बोलने ही पड़ते हैं, लेकिन सामान्य वर्णन में कठिन और भारी-भरकम शब्दों से बचना चाहिए। कमेंटेटर को खेल या विशेष अवसर से संबंधित शब्दावली की पूरी जानकारी के साथ-साथ उन शब्दों के शुद्ध उच्चारण का भी ज्ञान होना आवश्यक है। जिस अवसर का हाल सुनाया या दिखाया जाए उसके सभी पहलुओं की समुचित

टिप्पणी

जानकारी के बिना कमेंटेटर अपना कर्त्तव्य पूरा नहीं कर सकता। उदाहरण के लिए क्रिकेट के मैच के कमेंटेटर को उसके सब तरह के तकनीकी शब्दों, किस मैच में कौन हारा, कौन जीता, किस देश का कौन-सा खिलाड़ी किस क्षेत्र में आगे है, किस-किस ने क्या-क्या रिकार्ड बनाए हैं, आदि की जानकारी होनी चाहिए। हमारे यहाँ जसदेव सिंह जैसे कमेंटेटर हैं, जो ओलंपिक खेल प्रतियोगिता से लेकर स्वतंत्रता दिवस समारोह तक हर प्रकार के कार्यक्रमों का आँखों देखा हाल समान कुशलता व रोचकता के साथ प्रस्तुत कर सकते हैं।

12. अन्य

उपरोक्त के अलावा भी बहुत सारे अवयव ऐसे हैं, जो संचार माध्यमों को निरंतर कार्य करते रहने में सहायता प्रदान करते रहते हैं। इनमें से कुछ तो नियमित प्रकाशित-प्रसारित होते हैं और कुछ साप्ताहिक अथवा मासिक रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

साहित्य से संबंधित सामग्री जैसे कहानी, कविता, नाटक, पुस्तक समीक्षा आदि साप्ताहिक अथवा मासिक रूप से अखबार, रेडियो तथा दूरदर्शन तीनों माध्यमों द्वारा प्रस्तुत की जाती हैं। इसी प्रकार बाल-जगत कार्यक्रम के अंतर्गत चुटकुले, बच्चों के लिए कहानियाँ, कविताएँ, प्रतियोगिताएँ आदि प्रकाशित-प्रसारित होते हैं। बच्चों के लिए भाषा शिक्षा तथा संगीत शिक्षा जैसे कार्यक्रम आकाशवाणी पर नियमित रूप से प्रसारित किए जाते हैं।

फिल्में तथा कला-संस्कृति से संबंधित कार्यक्रम भी संचार माध्यमों के मुख्य आकर्षण होते हैं। आपने अखबार पढ़ते समय ध्यान दिया होगा कि खान-पान, रोज़गार, प्रोपर्टी व्यवसाय, शेयर बाजार, अध्यात्म, खेलकूद, कृषि आदि से संबंधित विशेष सामग्री नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। इनके अतिरिक्त भविष्यफल, पाठकों के पत्र, एच. आई.वी. एड्स समाज के सामूहिक स्वास्थ्य के लिए कैसे घातक जैसी प्रतिक्रियाएँ तथा सुभाषित वाक्यों जैसी सामग्रियाँ भी अखबारों में नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं। रेडियो तथा दूरदर्शन पर समाचारों और गंभीर विषयों से संबंधित सामग्रियों के अलावा गीत, गज़ल, चित्रपट, फिल्म, संगीत, लोक गीत आदि विविध मनोरंजक कार्यक्रम नियमित प्रसारित होते हैं।

पाठगत प्रश्न 37.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए :

1. आँखों देखा हाल .... पर प्रस्तुत किया जाता है।

   (क) अखबार   (ग) दूरदर्शन

   (ख) सिर्फ रेडियो   (घ) रेडियो और दूरदर्शन दोनों

2. फीचर .... होता है।

   (क) रोचक, व्यावहारिक तथा किसी एक विषय पर आधारित

   (ख) कई विषयों पर आधारित

(ग) जटिल विषय पर आधारित

(घ) में भावनाओं का महत्त्व नहीं

3. आलेख में .... का विश्लेषण होता है।

(क) समाचारों

(ख) खेलों

(ग) किसी घटना

(घ) किसी भी घटना अथवा समस्या

4. धारावाहिक किसे कहते हैं? किन्हीं दो प्रसिद्ध दूरदर्शन धारावाहिकों के नाम लिखिए।

37.2 आपने क्या सीखा

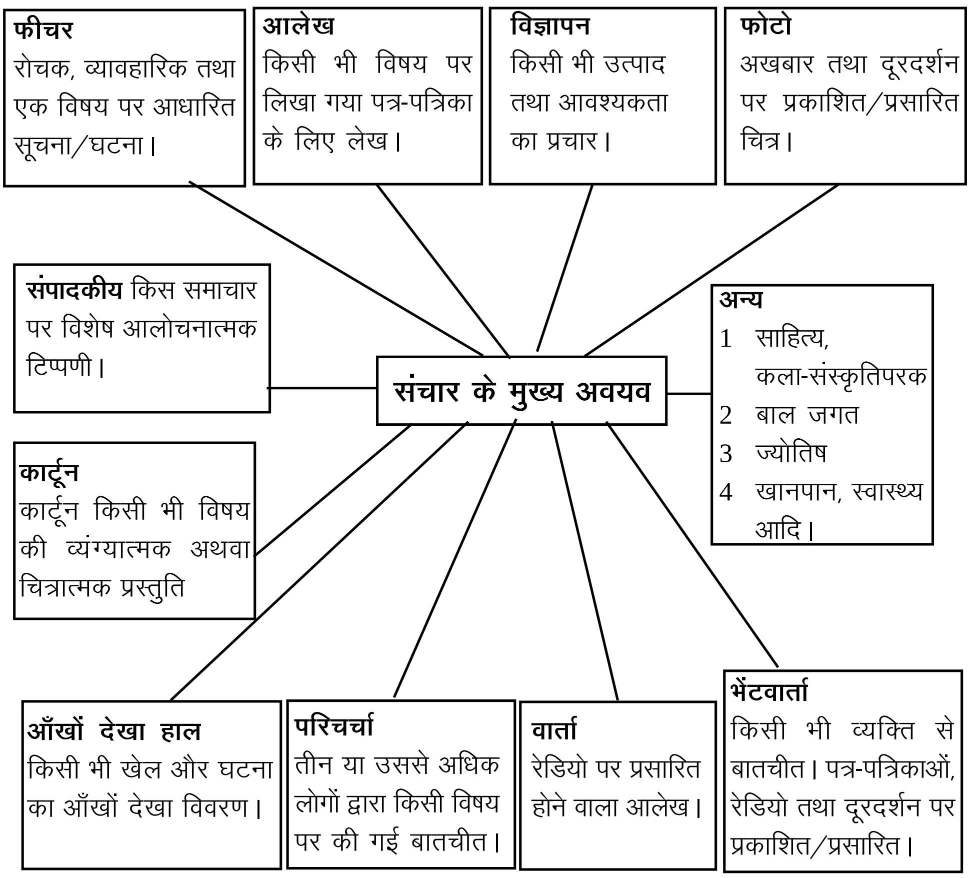

37.3 योग्यता विस्तार

1. समाचार-पत्र और विभिन्न पत्रिकाओं के स्तंभों का वाचन कीजिए।
2. पत्र-पत्रिकाओं और अखबारों से काटकर निम्नलिखित की अलग-अलग फाइलें तैयार कीजिए :

   1. कार्टून, 2. फोटो फीचर, 3. विज्ञापन, 4. संपादकीय

37.4 पाठांत प्रश्न

1. वार्ता तथा भेंटवार्ता में क्या अंतर होता है? दोनों के बारे में विस्तार से समझाइए।
2. फीचर किसे कहते हैं तथा इसे कैसे प्रस्तुत किया जाता है?
3. विज्ञापन किसे कहते हैं? उनकी उपयोगिता स्पष्ट कीजिए।
4. पल्स पोलियो की रोकथाम के लिए एक जन अभियान चलाए जाने की ज़रूरत है। इसके लिए समाचार पत्र हेतु एक विज्ञापन तैयार कीजिए।
5. किशोरों में धूम्रपान की बढ़ती प्रवृत्ति की रोकथाम पर सीमित शब्दों और ध्वनि के माध्यम से एक प्रभावी विज्ञापन तैयार करें जिसे टेलीविज़न पर दिखाया जा सके।
6. निम्नलिखित पर टिप्पणी कीजिए :

   (क) फोटो (ख) कार्टून (ग) आलेख (घ) आँखों देखा हाल
7. आपके शहर में 'संजीवनी' नामक संस्था ने एड्स जागरूकता अभियान के तहत एक संगोष्ठि का आयोजन किया है। इसमें देश-विदेश के जाने माने स्वास्थ्य विशेषज्ञ और जागरूकता अभियान से जुड़े फिल्म अभिनेता अभिताभ बच्चन भी भाग ले रहे हैं। संगोष्ठि के संबंध में एक समाचार आइटम तैयार करें।
8. भ्रूण हत्या के विरोध में सभी राजनीतिक दलों ने दिल्ली के जंतर-मंतर पर आज विरोध प्रदर्शन किया। भ्रूण हत्या के कारण देश के कई राज्यों में बालक-बालिकाओं के बीच बढ़ते अंतर और राजनीतिक दलों के विरोध प्रदर्शन के बारे में एक समाचार रिपोर्ट रेडियो के लिए तैयार करें।

37.5 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

37.1	1. (ख)	2. (ग)	3. (ग)	4. (ख)
37.2	1. (क)	2. (घ)	3. (घ)	
37.3	1. (घ)	2. (क)	3. (घ)	

4. नियत दिन, नियत समय पर प्रकाशित/प्रसारित कार्यक्रम; हम लोग, महाभारत।

301hi37B

37

कंप्यूटर और हिंदी

कंप्यूटर ने गत दस-पंद्रह वर्षों से संपूर्ण विश्व में धूम मचा दी है। अब तो यह सब की जिंदगी में पूरी तरह से रच-बस गया है। शायद ही कोई ऐसा कार्यक्षेत्र हो जहाँ कंप्यूटर की पहुँच न हो। शिक्षा का क्षेत्र हो या मनोरंजन का, व्यवसाय का हो या विज्ञान और तकनीक का, राजनीति का हो, या चिकित्सा का – कोई भी क्षेत्र कंप्यूटर के बिना अधूरा है। इस नए क्रांतिकारी वातावरण में सभी कुछ कंप्यूटरमय हो चुका है। आज कंप्यूटर अंग्रेज़ी भाषा में ही नहीं कई भारतीय भाषाओं में भी कार्य कर रहा है।

आइए, कंप्यूटर संबंधी विभिन्न जानकारियों को पाने और विशेष रूप से हिंदी भाषा के संबंध में इसकी उपयोगिता को जानने के लिए प्रस्तुत पाठ पढ़ते हैं।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- देश में आई कंप्यूटर क्रांति का विवरण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर की उपयोगिता पर चर्चा कर सकेंगे;
- कंप्यूटर-विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि संक्षेप में लिख सकेंगे;
- कंप्यूटर पर काम करने की प्रारंभिक विधि का परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- हिंदी भाषा में उपलब्ध सॉफ्टवेयर की जानकारी दे सकेंगे;
- कंप्यूटर से जुड़े अन्य सूचना-तंत्र का हिंदी में उपयोग बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

समाचार-पत्र अथवा पत्रिकाओं से किन्हीं चार प्रचलित कंपनियों के कंप्यूटरों के चित्र काट कर यहाँ चिपकाइए तथा उनके नामों और कोई दो विशेषताओं का संक्षेप में उल्लेख कीजिए।

37.1 आइए समझें

बैंकों, रेलवे स्टेशनों, कुछ दुकानों आदि में कंप्यूटर पर काम करते लोगों को आपने अवश्य देखा होगा। आप जानते ही हैं कि आज कंप्यूटर का उपयोग न केवल आँकड़ों का हिसाब-किताब रखने में होता है अपितु इसके द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में भविष्यवाणियाँ भी की जाती हैं। चाहे वह राजनीतिक चुनाव में पार्टियों की हार-जीत का मसला हो अथवा मौसम संबंधी पूर्वानुमान लगाना हो, या किसी व्यक्ति को अपना भविष्य जानना हो। छोटे-बड़े सभी क्षेत्र में कंप्यूटर ने आमूलचूल परिवर्तन कर दिया है। जनगणना का कार्य करने में पहले महीनों लगा करते थे आज यह कार्य चंद दिनों में संपन्न हो जाता है। यह सभी कुछ संभव हुआ इलेक्ट्रानिकी के आने से। आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति का मुख्य कारण इलैक्ट्रोनिकी ही है। इसी की बदौलत आज हम इलेक्ट्रोनिकी युग में जी रहे हैं और सभी भौतिक सुविधाओं का उपभोग कर रहे हैं।

आइए, इस पाठ का प्रारंभ हम कंप्यूटर के कारण देश भर में हो रही हलचल की चर्चा से करते हैं।

37.2 कंप्यूटर एक क्रांति

आज हमें स्वतंत्र हुए साठ वर्ष बीत चुके हैं। सन् 1947 में हम स्वतंत्र हुए थे। यदि आज की तुलना साठ वर्ष पहले के भारत से की जाए तो स्पष्ट रूप से कृषि, चिकित्सा, दुग्ध-उत्पादन, अंतरिक्ष तक पहुँच, रक्षा, अनुसंधान, परमाणु ऊर्जा, औद्योगिक विकास, प्रौद्योगिकी विकास और संचार प्रणाली, शिक्षा आदि के क्षेत्रों में हम बहुत आगे पहुँच चुके हैं।

भारत में साठ वर्ष पूर्व कुपोषण, संक्रामक रोग, अकाल, बिजली-पानी की कमी जैसी समस्याएँ अधिक हुआ करती थीं। परंतु देश ने विज्ञान के कारण प्रत्येक क्षेत्र में पर्याप्त उन्नति की है और ढेर सारी उपलब्धियाँ पाई हैं। देश में एक ओर हरित क्रांति ने

खाद्यान संबंधी समस्याओं पर नियंत्रण किया तो दूसरी ओर श्वेत क्रांति ने दुग्ध-उत्पादन के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण उन्नति की। ये दोनों ही क्रांतियाँ विज्ञान और तकनीकी विकास के कारण ही संभव हो पाईं। इसी विज्ञान ने जब अपनी पहुँच चंद्रमा और अंतरिक्ष तक संभव की तो सूचना प्रौद्योगिकी, दूर संचार, मौसम विभाग आदि के क्षेत्र में जो क्रांतिकारी परिवर्तन आए वे किसी से भी छिपे नहीं हैं।

जी हाँ! आप समझ गए होंगे कि अंतरिक्ष में उपग्रह की पहुँच के कारण ही हम मिनटों में दूर बैठे किसी भी व्यक्ति से फोन पर बात कर सकते हैं। पत्र-पत्रिकाओं में सुंदर, रंगीन चित्रों के साथ विस्तृत समाचार पढ़ सकते हैं। यही नहीं, कुर्सी पर बैठे-बैठे दूरदर्शन पर रिमोट द्वारा कई-कई चैनलों पर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का आनंद उठा सकते हैं। 'आज तक' और 'आँखों देखी' जैसे समाचार आधारित कार्यक्रमों द्वारा विभिन्न घटनाओं की विस्तार से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। ये सभी कुछ विज्ञान और तकनीकी के कारण और विशेष रूप से इलैक्ट्रॉनिकी के कारण संभव हुआ। इस क्षेत्र में क्रांतिकारी बदलाव, विशेष उत्साही युवाओं के कार्य में लगे रहने के कारण दिखलाई दे रहा है। ज्यों-ज्यों भारत की जनसंख्या में बेतहाशा वृद्धि हो रही है त्यों-त्यों उन्हें जीवन से जुड़े हर क्षेत्र में बेहतर सेवाएँ प्रदान करना एक चुनौती बनती जा रही है, सभी के पास समय कम और कार्य अधिक है। ऐसी स्थिति में कंप्यूटर नामक मशीन का आविष्कार होना एक महत्त्वपूर्ण घटना मानी जा सकती है। कंप्यूटर एक ऐसी मशीन है जो उपलब्ध सूचना और निर्देशों के आधार पर कुशलतापूर्वक गणना करके आपके सामने पल-भर में शुद्ध परिणाम प्रस्तुत ही नहीं कर देती, बल्कि अपनी स्मृति में सभी कुछ सुरक्षित रखती है, उसका स्वरूप बदला जा सकता है, कंप्यूटर से उसकी प्रति बनाई जा सकती है, उसे तालिका-रूप में बदला जा सकता है। इसके द्वारा पाई-चार्ट या ग्राफ आदि के रूप में आँकड़ों को प्रस्तुत किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त आज और भी बहुत कुछ इस कंप्यूटर के माध्यम से संभव है।

37.3 कंप्यूटर की विशेषताएँ

आप पढ़ चके हैं कि कंप्यूटर अपनी विशिष्टताओं के कारण अनेक क्षेत्रों में उपयोगी सिद्ध हो रहा है। आइए, जानें कि वे क्या हैं? कंप्यूटर अपनी तीव्र गति, शुद्धता, यथार्थता, अपार सूचनाओं तथा आँकड़ों के स्मृति-भंडारण की विशेषताओं के कारण किसी भी कार्य को पूर्ण समर्थता के साथ संपन्न करता है। यह कभी थकता नहीं है, रात-दिन घंटों तक यह काम कर सकता है, बड़े-से-बड़ा और जटिल-से-जटिल कार्य यह सरलता के साथ कर सकता है। यह मानव के समान प्रत्येक कार्य करने में सक्षम है। परंतु यह एक मशीन होने के कारण भावनाहीन है, इसके पास न ज्ञान है, न अनुभव। किसी भी प्रयोक्ता से यह भेदभाव नहीं करता। यह तो मात्र मानव द्वारा दिए गए निर्देशों का क्रमशः पालन करता चला जाता है। यह स्वयं निर्णय नहीं ले सकता। इसकी प्रमुख विशेषता है कि यह अपार आँकड़े याद रख सकता है और आवश्यकता जाहिर करने पर आपको विविध प्रकार की सूचनाएँ उपलब्ध भी करा सकता है।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्न 37.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. निम्नलिखित में से कंप्यूटर क्या नहीं कर सकता
   (क) अनगिनत संख्याओं की पहचान
   (ख) लंबे समय तक निर्देशों का पालन
   (ग) आँकड़ों की त्रुटिहीन गणना
   (घ) प्रयोक्ता की आवाज की पहचान

2. कंप्यूटर की विशेषता है इसकी
   (क) मानव-बुद्धि की कमी
   (ख) कार्य करने की तीव्रता
   (ग) लंबे समय तक गणना करने पर अशुद्ध गणना करना
   (घ) स्मरण शक्ति का अभाव

37.4 कंप्यूटर का विकास

कंप्यूटर का विकास सबसे पहले गणना करने वाले एक यंत्र के रूप में किया गया था। शुरू-शुरू में इसका प्रयोग केवल संख्याओं को जोड़ने-घटाने अथवा गुणा-भाग करने के लिए किया जाता था, किंतु निरंतर सुधारों और विकास के विभिन्न चरणों को पार करते हुए आज कंप्यूटर का प्रयोग-क्षेत्र काफ़ी व्यापक हो गया है। आज दुनिया का शायद ही कोई ऐसा क्षेत्र हो, जिसमें कंप्यूटर की उपयोगिता न हो।

कंप्यूटर की खोज सबसे पहले 1642 में फ्रांस के एक वैज्ञानिक ब्लेज पास्कल ने परिकलन यंत्र के रूप में की, जिसकी मदद से सिर्फ संख्याओं को जोड़ा और घटाया जा सकता था। उसके बाद जर्मन वैज्ञानिक विलियम लाइब्नीत्स ने एक गुणन यंत्र बनाया जिससे संख्याओं को जोड़ने-घटाने के अलावा उनका गुणन और भाग भी निकाला जा सकता था। उसके बाद 1889 में अमेरिकी गणितज्ञ हर्मन हालरिथ ने गणना के लिए कार्डों में छेद करने की एक नई प्रणाली का आविष्कार किया। यह बिजली से चलता था। सही अर्थों में यह पहला कंप्यूटर था। फिर उन्होंने एक कंप्यूटर निर्माण संस्था बनाई और इस पर नए-नए शोध शुरू हो गए। उनकी छिद्रित कार्ड पद्धति आज भी दुनियाभर में कर्मचारियों की हाजिरी लगाने अथवा गणना के अन्य कार्यों में किया जाता है, जिसे आई. बी. एम. कार्ड के नाम से जाना जाता है।

कंप्यूटर की अपार संभावनाओं को देखते हुए पूरी दुनिया में तेज़ी से शोध होने लगे। इस तरह कई वैज्ञानिकों के कठिन परिश्रम और शोधों के बाद आधुनिक कंप्यूटर हमारे सामने आया। कंप्यूटर के आविष्कार का श्रेय किसी एक व्यक्ति को नहीं, बल्कि कई व्यक्तियों को जाता है। पहले कंप्यूटर इतने बड़े होते थे कि उन्हें एक बड़े कमरे में रखा जाता था। वे बहुत जल्दी गरम हो जाते थे और उनकी कार्य क्षमता भी कम थी। अब

सभी के सहयोग से इसमें इतने अधिक परिवर्तन आ चुके हैं कि आज कंप्यूटर को एक मेज पर ही नहीं रखा जा सकता है बल्कि इन्हें गोदी में रख कर भी कार्य किया जा सकता है, इसी विशेषता के कारण इन्हें 'लेपटॉप' (गोदी कंप्यूटर) कहा जाता है। आकार छोटा होने के कारण इन्हें कहीं भी ले जाया जा सकता है।

लगभग एक शताब्दी के गहन अनुसंधान के बाद वर्ष 1937 में मार्क नामक प्रथम कंप्यूटर का निर्माण किया जा सका। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान पहली बार कंप्यूटर का प्रयोग बड़े पैमाने पर किया गया। इसका प्रयोग हवाई जहाजों के डिज़ाइन तैयार करने और उनके संचालन में किया गया। आज कंप्यूटर दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों में बिना किसी मुश्किल के वर्षों का काम दिनों और दिनों का काम घंटों में कर देता है।

भारत में कंप्यूटर का विकास 1965 में शुरू हुआ, किंतु 1984 में राजीव गांधी के प्रयास से इस प्रौद्योगिकी को पर्याप्त महत्त्व मिला। शुरू-शुरू में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी पूरी तरह आयात पर निर्भर थी, किंतु वर्ष 1998 के प्रारंभ में भारत ने सुपर कंप्यूटर 'परम 10,000' का विकास कर पूरी दुनिया को आश्चर्यचकित कर दिया। इस कंप्यूटर के विकास के बाद भारत विश्व की प्रमुख पाँच कंप्यूटर शक्तियों में गिना जाने लगा है।

37.5 कंप्यूटर की उपयोगिता

कंप्यूटर का प्रयोग आज समाज के हर क्षेत्र में होने लगा। इसकी उपयोगिता को देखते हुए इसमें तरह-तरह की सुविधाएँ प्रदान की जाने लगी है। कंप्यूटर की उपयोगिता को ठीक से समझने के लिए पहले कंप्यूटर की बनावट और कार्य-प्रणाली की संक्षिप्त जानकारी आवश्यक है:

कंप्यूटर के दो प्रमुख अंग होते हैं—हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर

1. हार्डवेयर

कंप्यूटर तथा कंप्यूटर से जुड़े अन्य सभी यंत्रों को हार्डवेयर कहते हैं। इसमें कंप्यूटर के चारों खंड – केंद्रीय संसाधन एकक, आंतरिक स्मृति, बाह्य स्मृति, निवेश और निर्गम एकक, सभी प्रकार की निवेश या निर्गम युक्तियाँ जैसे कुंजी पटल, प्रिंटर आदि। सभी प्रकार की स्मृति युक्तियाँ, टेपरिकार्डर, डिस्क ड्राइव, फ्लोपी, काम्पेक्ट डिस्क (सी. डी.), पेन ड्राइव, मोडेम आदि आते हैं। सरल शब्दों में कहें तो कंप्यूटर के वे हिस्से जिन्हें हम देख और छू सकते हैं, हार्डवेयर कहलाते हैं।

2. सॉफ्टवेयर

कंप्यूटर के संचालन के लिए जिन प्रोग्रामों की आवश्यकता होती हैं उन्हें 'सॉफ्टवेयर' कहते हैं। सॉफ्टवेयर पाँच प्रकार के होते हैं—प्रचालक, भाषा संसाधक, उपयोगिता प्रोग्राम, उपनित्य क्रम और नित्य क्रम। हार्डवेयर क्षेत्र की अपेक्षा सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में अपूर्व योग्यता दर्शाने से भारत ने अपनी पहचान अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कायम की है। कंप्यूटर का उपयोग करने के लिए कंप्यूटर सॉफ्टवेयर को कार्य और क्षेत्र के अनुसार बनाया जाता है, फिर उन्हें कंप्यूटर में प्रतिस्थापित करके उनका उपयोग

किया जाता है। आज न सिर्फ गणना करने, बल्कि वैज्ञानिक अनुसंधानों में कृषि-क्षेत्र, अर्थ-जगत, मौसम विज्ञान, हवाई जहाजों के संचालन-नियंत्रण, परीक्षा-प्रणाली, पढ़ाई-लिखाई, ट्रैफिक कंट्रोल, संचार-माध्यमों के संचालन-नियंत्रण, अखबारों-पुस्तकों के प्रकाशन, सूचनाएँ संग्रह करने, पुस्तकालय-प्रबंधन आदि से जुड़े विभिन्न क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जाने लगा है।

सूचना जगत की लोकप्रियता और आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए तरह-तरह के उपयोगी सॉफ्टवेयर विकसित कर लिए गए हैं। इन्हीं सॉफ्टवेयरों के विकास का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है – 'भारतीय भाषाएँ', भाषाओं में काम करने वाले सॉफ्टवेयर के विकास से कंप्यूटर की उपयोगिता काफ़ी बढ़ गई है। अब कंप्यूटर गाँवों तक पहुँच गया है। आंध्र प्रदेश भारत का पहला ऐसा राज्य है जहाँ ग्राम-पंचायतों को भी कंप्यूटर से जोड़ दिया गया है। वहाँ हर दफ़्तर में कंप्यूटर की सुविधा प्रदान करा दी गई है। इसी तरह देश के अन्य राज्यों में भी कंप्यूटर का प्रसार गाँवों तक करने की योजना पर काम चल रहा है। भारतीय भाषाओं में सॉफ्टवेयर के विकास से अब समस्त किसान भी, जो अंग्रेज़ी बिल्कुल नहीं जानते कम-से-कम कीमत में अपने काम का कंप्यूटर खरीद कर उसका उपयोग कर सकते हैं। अब तो 'सिंगल कंप्यूटर' यानी अलग-अलग उपयोग के मुताबिक तैयार किए गए चिपों के कंप्यूटर तैयार किए जा रहे हैं, जिन्हें आसानी से कहीं भी ले जाया जा सकता है और जिसका आम आदमी भी आसानी से उपयोग कर सकता है।

3. सुपर कंप्यूटर

सुपर कंप्यूटर उन कंप्यूटरों को कहा जाता है जिनका स्मृति भंडार यानी मेमोरी 52 मेगाबाइट हो और जो 500 एम. बी. फ्लॉपी की क्षमता से काम करते हैं। वैसे तो सुपर कंप्यूटर के अनेक कार्य हैं, किंतु विशेष रूप से इसकी आवश्यकता निरंतर परिवर्तित हो रहे अनेक आंकड़ों को सामनुक्रमित करने के लिए पड़ती है। भारत में 'परम 10,000' नामक सुपर कंप्यूटर का विकास सन् 1998 में किया गया। यह भारत की एक महान उपलब्धि है, क्योंकि इसके निर्माण से भारत ने उच्च कंप्यूटर प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अमेरिका तथा कई अन्य विकसित देशों का वर्चस्व समाप्त कर दिया है। यह कंप्यूटर एक सेकेंड में एक खरब गणितीय गणना करने में सक्षम है।

'परम 10,000' कंप्यूटर से मौसम विज्ञान और भूकंप आदि से संबंधित पूर्वानुमान लगाने, तेल और प्राकृतिक गैस के भंडारों का पता लगाने, दूर संवेदी आकलन करने, अस्पतालों में चिकित्सा संबंधी अनेक जानकारियाँ प्रदान करने तथा भौगोलिक सूचनाओं को संशोधित करने में तो मदद मिलेगी ही रक्षा के क्षेत्र में भी इससे अनेक महत्त्वपूर्ण कार्य किए जा सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 37.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. कंप्यूटर की खोज सबसे पहले किसने की?

   (क) ब्लेज पास्कल (ग) विलियम लाइब्नीत्स

(ख) आई. बी. एम.   (घ) एक अज्ञात वैज्ञानिक

2. भारत में कंप्यूटर के विकास की शुरूआत कब हुई?
   (क) 1955   (ग) 1988
   (ख) 1965   (घ) 1997
3. भारत ने 'परम 10,000' का विकास कब किया?
   (क) 1984   (ग) 1995
   (ख) 1986   (घ) 1998
4. 'सॉफ्टवेयर' क्या है?
   (क) बाह्य स्मृति   (ग) कंप्यूटर की स्मृति युक्तियाँ
   (ख) कंप्यूटर संचालन संबंधी प्रोग्राम   (घ) कंप्यूटर के की-बोर्ड में लगा एक बटन
5. भारत '10,000 परम' को सुपर कंप्यूटर कहा गया क्योंकि इसकी स्मृति भंडारण की क्षमता .... है।
   (क) 56 मेगा बाइट   (ग) 52 मेगा बाइट
   (ख) 42 गीगा बाइट   (घ) 62 गीगा बाइट

37.6 कंप्यूटर पर कार्य करना आसान है

आप जानते हैं कि कंप्यूटर एक मशीन है। यह आपके द्वारा दिए गए निर्देशों के अनुसार कार्य करती है। इधर आपने बटन दबाया और उधर काम शुरू हो गया। कंप्यूटर आजकल घर-घर में निजी कंप्यूटर के रूप में प्रयोग किए जा रह हैं। चतुर्थ पीढ़ी के कंप्यूटर अधिक 'यूजर-फ्रेंडली' थे और आज भी हैं, यानी कि इस पर प्रयोक्ता आसानी से कार्य कर सकता है। इसमें प्रयोक्ता और कंप्यूटर के बीच संबंध स्थापित करना कठिन नहीं होता। डिस्क ऑपरेटिंग सिस्टम कंप्यूटर और प्रयोक्ता को जोड़ देता है और यह आसानी से कार्य करने का वातावरण तैयार कर देता है। इस पर पूर्व कंप्यूटरों के समान एक-एक कार्य संपन्न करने के लिए कमांड लिखने की आवश्यकता नहीं होती और एक व्यक्ति आखिर कितने कमांड याद रखे! अत: अधिकतर कमांडों को यहाँ आइकोन अर्थात् हर कमांड को चित्र द्वारा दर्शाया गया है। उदाहरण के लिए यदि लिखा हुआ हिस्सा काटकर कहीं और जोड़ना है तो आप इस हिस्से को काला करके कैंची का बटन दबाइए और जहाँ जोड़ना हैं वहाँ कर्सर ले जाकर पेस्ट का बटन दबा दीजिए, इससे वह हिस्सा वहाँ छप जाएगा। इस प्रकार दूसरी बात यह है कि इसमें मीनू कार्ड दिया गया है बिल्कुल उसी प्रकार जिस प्रकार आप किसी रेस्तराँ में जाकर पसंद का भोजन माँगने के लिए मीनू कार्ड देखते हैं और निर्णय लेते हैं कि आपको क्या खाना है और क्या नहीं, ठीक उसी प्रकार आप कंप्यूटर में दिए गए मीनू से ज़रूरत का प्रोग्राम चुनकर अपना कार्य प्रारंभ कर सकते हैं।

यदि आप प्रकाशन के क्षेत्र में काम करते हैं तो डी.टी.पी. यानी डेस्क टॉप पब्लिशिंग संबंधी पेज मेकर सॉफ्टवेयर कार्यक्रम आपकी हर प्रकार से मदद करने को तैयार है।

इस सॉफ्टेवर में आप किसी विशेष पत्रिका के पृष्ठों को विशिष्ट प्रकार से डिज़ाइन कर सकते हैं, महत्त्वपूर्ण बातों को नाना प्रकार से बॉक्स में दे सकते हैं, पृष्ठ को आवश्यकतानुसार एक-दो-तीन या अधिक कॉलम में बाँट सकते हैं, सूचनाओं को किसी भी रूप में आड़ा-तिरछा, जैसे चाहें वैसे प्रस्तुत कर सकते हैं। जिस पुस्तक को आप पढ़ रहे हैं, यह भी डी.टी.पी. के पेजमेकर सॉफ्टवेयर में ही तैयार की गई है।

डी.टी.पी. में काम करने के लिए सबसे पहले हमें पृष्ठ का आकार निर्धारित करना होता है। उसके बाद हम अपना कार्य शुरू कर देते हैं। डी.टी.पी. सॉफ्टवेयर में अधिकतर पत्र-पत्रिकाओं, पेम्फलेटों, विजिटिंग कार्डों, शादी के कार्ड आदि का प्रकाशन करते हैं। इन्हें तरह-तरह से सजा सकते हैं। डी.टी.पी. में आजकल तालिका, बेलेंसशीट, कैलेंडर और अनेक प्रकार के अधिक-से-अधिक डिज़ाइनिंग से जुड़े कार्य क्षण भर में किए जा सकते हैं। नीचे दिए गए नमूने के अनुसार सामग्री को विविध फॉन्टों, आकारों और शैलियों में तैयार किया जा सकता है। इस प्रकार का कार्य आप मौका मिलने पर कंप्यूटर पर अवश्य करके देखें।

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (16 फोंट साइज, मोटा आकार)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (14 फोंट साइज, तिरछा आकार)

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (8 फोंट साहज, सामान्य आकार)

पहले लोग हाथ से डिज़ाइनिंग का कार्य करते थे। जब से दुनिया में कंप्यूटर आया है तब से किताबी कार्य भी डी. टी. पी. द्वारा होता है। हम अगर बेलेंसशीट तैयार करना चाहते हैं तो इसे भी कंप्यूटर के द्वारा तैयार कर सकते हैं। इसी प्रकार की एक लंबी तालिका हमने पिछले पाठ में दी है, जो कंप्यूटर में डी. टी. पी. सॉफ्टवेयर से ही तैयार की गई है। कंप्यूटर में हम जो भी कार्य करते हैं उसे डाटा कहते हैं। इस डाटा को यदि कहीं और ले जाना हो तो फ्लॉपी डिस्क का प्रयोग किया जाता है। आजकल सी. डी., डी.वी.डी. और जिप ड्राइव या पेन ड्राइव का भी प्रयोग इस कार्य के लिए होने लगा है।

इसी प्रकार यदि आपको लंबा-चौड़ा डाटा सँभालना है तो आप फॉक्स-प्रो या कॉमन बिजिनेस ऑरियेंटल लेंगुएज में कार्य कर सकते हैं। आवश्यकतानुसार प्रत्येक क्षेत्र में नए-नए सॉफ्टेयर प्रोग्राम विकसित किए जाते हैं। उदाहरण के लिए भारतीय रेल ने आरक्षण के लिए अपना प्रोग्राम तैयार किया है जो अद्यतन जानकारी प्रदान करता रहता है। बैंक में प्रयोग होने वाला सॉफ्टवेयर, सभी खातेदारों के खातों का विवरण एक नज़र में प्रस्तुत कर देता हैं। अब तो चित्रकार अपनी संपूर्ण सृजनशक्ति कंप्यूटर से ही चित्र बनाने में लगाते हैं और सुंदर व आकर्षक

क्लिपआर्ट से प्राप्त कार्टून चित्र

चित्रों की रचना करके जनमानस को अचंभित कर रहे हैं। उदाहरण के लिए बराबर में कंप्यूटर से बने चित्र देखिए।

पाठगत प्रश्न 37.3

दिए गए विकल्पों में से उचित विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. डिस्क ऑपरेटिंग सिस्टम का क्या कार्य होता है?
   (क) एक प्रयोक्ता का दूसरे प्रयोक्ता से संबंध जोड़ना
   (ख) एक प्रयोक्ता का कंप्यूटर सिस्टम से संबंध जोड़ना
   (ग) एक कंप्यूटर सिस्टम का दूसरे कंप्यूटर से संबंध जोड़ना
   (घ) कई कंप्यूटरों को एक साथ जोड़ना
2. डेस्कटॉप पब्लिशिंग पर कार्य करते हुए आप क्या नहीं कर सकते?
   (क) फोंट के आकार में बदलाव
   (ख) फोंट को तिरछा करना
   (ग) चित्र बनाकर उसका संपादन कार्य करना
   (घ) सामग्री को आढ़ा-तिरछा करना

37.7 सूचना प्रौद्योगिकी और भारतीय भाषाएँ

सूचना प्रौद्योगिकी अपने छोटे नाम आई.टी. (इन्फोर्मेशन टेक्नोलॉजी) के नाम से आज सारे संसार में जानी जाती है। भारत देश के प्रौद्योगिकी संस्थान इस क्षेत्र में अनेक पाठ्यक्रम चला रहे हैं, जिन्हें विदेशी संस्थान भी मान्यता प्रदान कर रहे हैं। इनमें प्रमुख हैं–वेब डिज़ाइनिंग, ई-कामर्स, फोटोशॉप, कोरल ड्रॉ आदि। आजकल सूचना प्रौद्योगिकी से जुड़े प्रत्येक क्षेत्र–टाइपराइटिंग, टेलीप्रिंटिंग, फैक्स, ई-मेल, ई-कार्ड, ई-समाचार, ई-पत्रिका, आदि में, न केवल अंग्रेज़ी बल्कि सभी भारतीय भाषाओं में कार्य हो रहा है। सूचना क्षेत्र में यह क्रांति 'इस्की' नामक सॉफ्टवेयर के प्रयोग से आई है। **'इस्की'** अर्थात् **'इंडियन स्टैंडर्ड कोड'**। यह एक प्रकार की कोड प्रणाली है। इसके अंतर्गत भारतीय और दक्षिण पूर्व एशिया की लिपियों को समाहित किया गया। रोमन लिपि के लिए विशेष रूप से विकसित 'आस्की' को भी 'इस्की' के अंतर्गत समाहित किया गया। 'इस्की' के आधार पर सभी भारतीय लिपियों के लिए इंस्क्रिप्ट नाम का समान कुंजीपटल का विकास किया गया है। यह कुंजीपटल अंग्रेजी के क्वेर्टी कुंजी पटल पर आधारित है। इसकी मदद से सभी भाषाओं में परस्पर लिप्यंतरण किया जा सकता है और किसी भी लिपि में कुंजीयन का कार्य किया जा सकता है। यह क्रांतिकारी परिवर्तन **जिस्ट** (Gist) प्रौद्योगिकी के कारण आया। कंप्यूटर को भारतीय भाषाओं के अनुकूल बनाने की दिशा में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के कंप्यूटर इंजीनियरों ने जिस्ट के रूप में उपहार प्रदान किया, जिसे एक चमत्कार ही कहा जाएगा। **'जिस्ट'** वस्तुतः एक एक्रोनिम है जो **'ग्राफिक्स एंड इंटेलिजेंस बेस्ड**

स्क्रिप्ट टेक्नोलॉजी' के प्रथम अक्षरों से बना है। इन सभी दिशाओं में विकास का परिणाम हुआ कि आज आप विंडोज 95, विंडोज 2000, पेजमेकिंग, डेस्क टॉप पब्लिशिंग के वातावरण में कोई भी कार्य भारतीय भाषाओं में भी कर सकते हैं। सभी भारतीय भाषाओं में अनगिनत फोंट मौजूद हैं जो आपको अच्छा लगे उसका प्रयोग आप कर सकते हैं। यद्यपि ये सुविधाएँ विंडोज़ 95, 98 में भी उपलब्ध थीं परंतु अब विंडोज 2005-6 के आने से यह कार्य और भी अधिक आसान हो गया है।

आज आप नेटजाल, वेब की दुनिया नामक वेबसाइटों के द्वारा सभी भारतीय भाषाओं में न केवल अपार जानकारियाँ प्राप्त कर सकते हैं, बल्कि (कामनाकार्ड) की सेवाएँ लेकर अवसरानुसार मनचाहे मित्र या रिश्तेदार को मनचाहा कार्ड अथवा संदेश मनचाही भाषा में मिनटों में भेज सकते हैं। यूनीकोड के आने से हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं में इंटरनेट द्वारा डाटा स्थानांतरण सरलता से किया जा सकता है।

37.8 कंप्यूटर और हिंदी भाषा

भारतीय भाषाओं में काम करने वाले सॉफ्टवेयरों के विकास से सबसे अधिक क्रांति सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में आई है। इन भाषाओं में सबसे पहले हिंदी भाषा में काम करने के लिए सॉफ्टवेयर विकसित किए गए। भारत में पहला व्यक्तिगत हिंदी कंप्यूटर 15 दिसंबर 1997 को प्रस्तुत किया गया। यह पहली और एक मात्र कंप्यूटर संचालित हिंदी-प्रणाली है और इसका डाटा-विकास का कार्य आई. बी. एम. ने किया है। आई. बी. एम. ने हिंदी कंप्यूटर डॉस के रूप में पी. सी. 386 का कम मूल्यों में निर्यात करने का निर्णय लिया। अब ये कंप्यूटर हिंदी भाषी लोगों के लिए सस्ते दामों पर उपलब्ध हैं। इनसे बेहतर प्रणाली के कंप्यूटर जैसे–पैन्टीयम–I,II,III, और IV उपलब्ध हैं और इस क्षेत्र में अधिकाधिक प्रयोग किए जा रहे हैं।

फरवरी 1998 में क्षेत्रीय भाषा में कंप्यूटर प्रणाली विकसित करने का काम भारत की दो सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर कंपनियों एम. ए. आई. (MAI) और एन. आई. एस. सी. ओ. एम. (NISCOM) ने प्रारंभ किया। इन्होंने गैर अंग्रेजी भाषी लोगों की आवश्यकता को देखते हुए 'भारत भाषा' नाम से एक परियोजना की शुरूआत की। गोदरेज बायस, एच. सी. एल. सूचना प्रणाली, निट (NIIT), टाटा, आई. बी. एम. तथा ज़ेनिथ ने इस परियोजना में सहभागिता निभाने पर सहमति जताई। इनके अतिरिक्त सी-डैक, सॉफ्टेक, सोनाटा, सांइरस, ए. सी. ई. एस. एस. आर. जी. वी-सोफ्ट, आर. के. कंप्यूटर्स नामक कंपनियों ने आई. एस. एम. अक्षर फॉर विंडोज़, प्रकाशक, श्रीलिपि, आकृति, विंकी, ए. पी. एस., सुविंडोज़ आई.एस.एम. नामक सॉफ्टवेयर तैयार किए हैं जो अंग्रेजी और हिंदी के अतिरिक्त अन्य भारतीय भाषाओं में भी काम करते हैं। इन सभी का प्रयोग एम. एस. वर्ड और एक्सल, पावर पॉइंट के वातावरण में कार्य करने के लिए किया जाता है। ये सभी विडोज़ 95, 98, 2000 के प्लेटफार्म पर कार्य करते हैं। आई. एस. एम., प्रकाशक, श्रीलिपि सभी भारतीय भाषाओं में कार्य कर रहा है। आकृति में हिंदी और मराठी भाषा उपलब्ध है। इस परियोजना के अंतर्गत देवनागरी, गुजराती, गुरुमुखी लिपियों के लिए शुशा (SHUSHA) नाम की एक नई फॉन्ट प्रणाली का विकास कर लिया गया है तथा अब बांग्ला, असमिया और उड़िया लिपियों के लिए भी इसी तरह की फॉन्ट प्रणाली जल्दी की उपलब्ध होने जा रही है।

अक्षर फॉर विंडोज़ में दिव्या तथा निशा फॉन्ट में कार्य करने की विशेषताओं के अतिरिक्त कई अन्य विशेषताएँ भी हैं। इसमें हिंदी शब्द को स्पेल चैक तथा हिंदी के शब्द ढूँढ़ कर बदलने का कार्य भी किया जा सकता है।

मुंबई की एबेकस सॉफ्टवेयर निर्माता कंपनी ने लिनोटाइप हेल पैकेज तैयार किया है जिससे अरबी, फारसी, उर्दू भाषाओं में भी कार्य किया जा सकता है, इसका नाम ओरिब्सा है। इस सॉफ्टवेयर को दुबई में लगी जिंटेक्स 96 प्रदर्शिनी द्वारा सर्वोत्तम मौलिक अरबी सॉफ्टवेयर का पुरस्कार भी मिल चुका है।

37.9 कंप्यूटर और हिंदी भाषा संबंधी विविध कार्यक्रम

कंप्यूटर की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए भारत सरकार ने इसे जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। लेकिन इसके लिए सबसे जरूरी बात थी भारतीय भाषाओं में काम करने के लिए मानक लिपि और फॉन्ट्स का विकास। सभी जानते हैं कि कंप्यूटर की भाषा मुख्य रूप से अंग्रेजी है। भारतीय भाषाओं के फॉन्ट्स तैयार करने का काम कठिन था, किंतु यहाँ के वैज्ञानिकों ने मिलकर इस काम को किया। कम-से-कम बाइट में अधिक-से-अधिक सूचनाएँ इकट्ठी करने के लिए अक्षर या अल्फाबेट कोड बताना जरूरी होता है। देवनागरी में यह कोड बनाने का काम आई. आई. टी. कानपुर में 1983 में शुरू हुआ। 1983 में इसके लिए पहली समिति का गठन किया गया। फिर 1986 में दूसरी समिति गठित की गई। 1990-91 में भारतीय मानकीकरण ने 'इस्की' कोड को मान्यता दी। इस कोड का निर्धारण भारतीय मानक ब्यूरो, इलेक्ट्रानिक विभाग, एन. आई. सी. सी-डैक और अन्य भाषा विशेषज्ञों की साझा कोशिशों से संभव हुआ। विंडो, टेलीप्रिंटर, टी. वी. आदि सभी माध्यमों में यह कोड सफल रहा है।

इस्की कोड के आधार पर सभी भारतीय भाषाओं (उर्दू को छोड़कर) इंस्क्रिप्ट नाम से समान 'की बोर्ड' (कुंजीपटल) का विकास किया गया। यह 'की बोर्ड' अंग्रेजी के क्वेर्टी 'की-बोर्ड' पर ही आधारित है। इसके माध्यम से न केवल भारतीय भाषाओं में बल्कि अंग्रेजी में भी टाइपिंग या कुंजीयन कार्य बखूबी किया जा सकता है। भारत के प्रथम सुपर कंप्यूटर के निर्माता सी-डैक ने 'इस्की' मानक कोड के आधार पर आई. आई. टी. कानपुर के सहयोग से 'जिस्ट' नामक भाषा टेक्नोलॉजी का विकास किया। 'जिस्ट' एक ऐसा कंप्यूटर चिप होता है जिसमें अनेक भाषाओं को एक ही की-बोर्ड पर संचालित किया जा सकता है। आज इस टेक्नोलॉजी के अंतर्गत कंप्यूटर से संबंधित सभी प्रकार के अनुप्रयोगों को हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में संपन्न करने की सुविधा मौजूद है। इसकी सहायता से डॉस, विंडोज़ और यूनिक्स परिवेश के अंतर्गत सभी भारतीय भाषाओं में शब्द संसाधन और डाटा संसाधन का कार्य किया जा सकता है। इनमें हिंदी स्पेलचेकर और ऑन लाइन शब्द कोश के साथ-साथ ई-मेल और वेब प्रकाशन की सुविधा भी प्रदान की गई है। इसके अलावा भारतीय भाषाओं में उच्चकोटि का प्रकाशन कार्य करने के लिए 'इंस्फॉक' नामक मानक फॉन्ट का विकास किया गया है। लिस्प (LISP) के ज़रिए फिल्मों के उपशीर्षक भारतीय भाषाओं

में बनाए जा रहे हैं। इसी प्रकार डबिंग के लिए बटरफ्लाई, सी. डी. रोम तैयार करने के लिए कैमेलियन तथा टी. वी. पर सरलता से समाचार वाचन के लिए मल्टी प्रॉम्पटर आदि का निर्माण भी किया गया है। इसी प्रकार से हिंदी में कार्य करने के लिए कंप्यूटर से अन्य प्रोगाम भी तैयार किए गए हैं।

(क) हिंदी पी. सी. डॉस

भारत में भाषा संबंधी समस्याओं को दूर करने के लिए टाटा-आई. बी. एम. का एक द्विभाषी ऑपरेटिंग सिस्टम हिंदी में पी. सी. डॉस जो न्यूनतम क्षमता वाली मशीन पर लगाया जा सकता है, पी. सी. 386 हार्डवेयर के लिए अनुकूल है। टाटा आई. बी. एम. की इस नई पहल से देश की बहुसंख्यक जनता कंप्यूटर पर अपनी भाषा में काम कर सकेगी।

(ख) द्विभाषिक बैंकिंग साधन

बैंकों में हिंदी में काम-काज को आसान बनाने के लिए 'बैंक मित्र' नामक एक सॉफ्टवेयर तैयार किया गया है। यह विंडो वातावरण में कार्य करने वाला द्विभाषिक बैंकिंग साधन है। यह अंग्रेजी के साथ-साथ हिंदी तथा सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में भी काम करता है, इस सॉफ्टवेयर की मदद से ग्राहक सेवा संबंधी सभी कार्य किए जा सकते हैं।

(ग) लीप ऑफिस

यह मुख्यतः भारतीय भाषाओं के लिए तैयार किया गया शब्द संसाधन है। इसके अतिरिक्त इससे प्रचलित विंडो आधारित अधिकांश एप्लीकेशनों जैसे एम0एस0 ऑफिस, पेजमेकर, एक्सेल आदि प्लेटफार्म पर भारतीय भाषाओं में काम किया जा सकता है। इस सॉफ्टवेयर से आप देवनागरी, असमी, बंगाली, गुजराती, उड़िया, कन्नड़, मलयालम, तमिल, पंजाबी, तेलुगु आदि 10 भारतीय भाषाओं की लिपियों में काम कर सकते हैं। इसमें अंग्रेजी लिपि के समान ही फॉन्ट उपलब्ध हैं। इस पैकेज की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार हैं—कंपोज़ और एडिट करने के लिए एक प्रोग्राम, पाठ को भारतीय लिपि में परिवर्तित और मुद्रित करना, अंग्रेजी शब्दों और वाक्यांशों का हिंदी, मराठी और गुजराती में अनुवाद करने के लिए उपयोगी राजभाषा शब्दकोश, प्रमुख भारतीय भाषाओं के लिए स्पेल लोडिंग आदि।

(घ) मैट

यह अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने का सॉफ्टवेयर है। यह पैकेज लिरिक्स पर चलता है, जो मुक्त डोमेन आपरेटिंग सिस्टम है तथा यूनिक्स के अनुकूल है। यह सॉफ्टवेयर 85 प्रतिशत पद व्याख्या (पारजिंग) तथा 60 प्रतिशत सही अनुवाद प्रस्तुत करता है। इस सॉफ्टवेयर में अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करने के लिए संपादन सुविधा भी है। इस सॉफ्टवेयर को इस तरीके से तैयार किया गया है कि इसे अंग्रेजी में किसी भी भारतीय भाषा में 30 प्रतिशत अतिरिक्त प्रयास करके तैयार किया जा सकता है। इसके अलावा राजभाषा विभाग, सी-डैक, पुणे के माध्यम से कंप्यूटर साधित अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर का विकास करवा रहे है। इस परियोजना के अंतर्गत प्रशासकीय क्षेत्र में

प्रयोग में आने वाले अंग्रेजी के पत्र, प्रपत्र, आदेशों, कार्यालय ज्ञापन तथा संकल्प आदि का कंप्यूटर की सहायता से अंग्रेजी से हिंदी में अनुवाद करने में सुविधा हो जाएगी।

इन परियोजनाओं के अलावा राजभाषा विभाग ने कंप्यूटर के माध्यम से हिंदी सिखाने तथा हिंदी के कार्यक्रम संचालित करने के लिए कई सी. डी. प्रोग्राम भी बनाए हैं। इनमें 'गुरु' प्रमुख है। इसके अलावा अंकुर, सुविंडो, श्रीलिपि आदि हैं। इसके अतिरिक्त 'लीला प्रबोध', हिंदी प्रवीण, लीला हिंदी आदि नाम से हिंदी सिखाने के लिए सॉफ्टवेयर भी बनाए गए हैं।

(च) लीला प्रबोध

राजभाषा विभाग ने सी-डैक, पुणे की सहायता से हिंदी शिक्षण के लिए 'लीला प्रबोध', 'प्रवीण' और 'प्राज्ञ' नामक एक ऐसा सॉफ्टवेयर तैयार किया है, जिसकी सहायता से अहिंदी भाषी हिंदी सीख सकते हैं। इस सॉफ्टवेयर द्वारा देवनागरी वर्ण की लेखन विधि ग्राफिक्स के रूप में चित्रित होती है। हिंदी शिक्षण कार्यक्रम में देवनागरी के वर्णों की रचना-विधि और उसके उच्चारण के संबंध में आवश्यक जानकारी मिलती है। इसकी मदद से पाठों में आए वाक्यों, शब्दों और वर्णों का मानक उच्चारण प्रशिक्षणार्थी सुनकर भी कर सकता है और जितनी बार चाहे उतनी बार उसका अभ्यास कर सकता है। यह डॉस वातावरण में कार्य करता है। इसमें हर पाठ के अंत में मूल्यांकन के लिए कुछ प्रश्न भी दिए गए हैं जिन्हें हल करने के बाद ही प्रशिक्षणार्थी अगले पाठ को खोल सकता है, आगे पढ़ सकता है। भारत सरकार के गृह मंत्रालय के अंतर्गत कार्यरत राजभाषा विभाग हिंदी में कंप्यूटर प्रशिक्षण के वर्षभर में लगभग पाँच निःशुल्क कार्यक्रम प्रायोजित करता है। इस कार्यक्रम में केंद्र सरकार और सरकारी उपक्रमों से जुड़े बैंक के पदाधिकारी आवेदन कर सकते हैं।

(घ) आओ हिंदी पढ़ें

दिल्ली स्थित सेंटर फॉर कंप्यूटर एजुकेशन ने 'आओ हिंदी पढ़ें'_श्रृंखला के अंतर्गत मल्टीमीडिया सी. डी. तैयार की हैं। जिनके द्वारा 'संज्ञा', 'सर्वनाम' और 'विशेषण' के बारे में विस्तार से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। यह सामग्री विद्यालय में पढ़ रहे बच्चों के लिए उपयोगी और रुचिकर है। इसी प्रकार इन्होंने पंचतंत्र की कहानियों पर आधारित मल्टीमीडिया सी. डी. तैयार की है, जिसमें सजीव चित्रों द्वारा कथा का वर्णन किया गया है, साथ ही एनीमेशन और ध्वनि की सहायता से कहानियाँ अधिक आकर्षक और रोचक रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

पाठगत प्रश्न 37.4

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनकर प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. 'इस्की' कोड को मान्यता कब प्राप्त हुई?

   (क) 1998   (ग) 1995

   (ख) 1986   (घ) 1991

2. लीला प्रबोध....................का एक सॉफ्टवेयर है।

(क) हिंदी सिखाने (ग) पेज बनाने

(ख) अनुवाद करने (घ) शब्द-संसाधन करने

3. 'बैंक मित्र' विशेष रूप से ....तैयार किया गया है।

(क) अनुवाद करने के लिए (ग) बैंकों के काम-काज के लिए

(ख) पेज बनाने के लिए (घ) हिंदी सिखाने के लिए

37.10 कंप्यूटर पर हिंदी और इंटरनेट की दुनिया

कंप्यूटर के विकास से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में काम करने की काफी सुविधाएँ प्राप्त हो गई हैं। कंप्यूटरों की उपयोगिता को ध्यान में रखते हुए दुनिया भर के कंप्यूटरों को उपग्रह के माध्यम से जोड़ने की पहल की गई। इसे इंटरनेट यानी कंप्यूटरों का जाल कहा जाता है।

इंटरनेट के आ जाने से सूचनाएँ पल भर में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में पलक झपकते ही भेजी जा सकती हैं। ऑफिसों की फाइलें अपने एक ऑफिस से दूसरे ऑफिस तक पहुँचाने में कई दिन लग जाते थे, अब वह पल भर में भेजी जा सकती हैं और उस पर कार्यवाही होकर पलभर में ही वापस भी आ सकती हैं। यही नहीं सूचना जगत में इंटरनेट से क्रांति-सी आ गई है। कोई भी सूचना पल भर में ही कहीं भी पहुँचाई जा सकती है।

इंटरनेट की उपयोगिता को देखते हुए अब इस पर हिंदी में भी कई वेब साइट्स खुल गई हैं। बेव दुनिया डॉट काम (webdunia.com) ऐसी ही एक साइट है जिस पर आप सिर्फ हिंदी भाषा में सूचनाएँ प्राप्त कर सकते हैं। इसमें समाचारों के अलावा समाज के हर क्षेत्र से संबंधित सूचनाएँ हिंदी में उपलब्ध हैं। इसी तरह रेडिफ डाट काम (rediff.com) तथा इंडिया डाट काम (india.com) पर भी हिंदी की साइट्स तथा पोर्टल मौजूद हैं। अब तो हिंदी में छपने वाले प्रमुख समाचार-पत्र तथा पत्रिकाएँ भी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। अब दुनिया में कहीं भी छपने वाला हिंदी का अखबार अथवा पत्रिका आप घर बैठे इंटरनेट के माध्यम से देख और पढ़ सकते हैं। हिंदी में खोली गई बेवसाइटों की एक विशेषता यह भी है कि इसमें आप हिंदी में ही कमांड दे सकते हैं तथा सूचनाएँ प्राप्त करने के लिए लिख सकते हैं। हिंदी साहित्य प्रेमी अनुभूति अभिव्यक्ति डॉट कॉम की साइट खोलकर पूरा-पूरा आनंद प्राप्त कर सकते हैं और साहित्य की अलभ्य सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।

हम सभी इक्कीसवीं सदी में प्रवेश कर चुके हैं। आज कंप्यूटर हर गली, हर चौराहे पर हम सभी की मदद के लिए खड़ा है। हमें नया रास्ता दिखाता है। आशा है कि भविष्य में यह प्रगति के और नए रास्ते खोलेगा। इससे हम सभी को विशेष रूप से भारतीय भाषाओं के संदर्भ में बहुत-सी आशाएँ हैं। आगे आने वाला समय, विशेष रूप से हिंदी के लिए चुनौतियों से भरा हुआ होगा। अभी हमें अधिक-से-अधिक पुस्तकों को ई-पुस्तकों में परिवर्तित करना है। अधिक-से-अधिक वेब ठिकानों का निर्माण करना है, जिससे भारतीय ज्ञानकोष से विश्व के लोग परिचित हों और यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर को पहचानें। ऐसे में आवश्यकता है स्वचालित अनुवाद करने वाले सॉफ्टवेयर की, जो दूसरी भाषाओं में उपलब्ध सामग्री को हिंदी में और हिंदी की

सामग्री को दूसरी भाषाओं में उपलब्ध कराएँ। ऐसा सॉफ्टवेयर निर्मित करने का प्रयास चल रहा है।

आज उच्चारण की पहचान करने वाले कंप्यूटर भी अस्तित्व में आ चुके हैं। ये अभी केवल अंग्रेज़ी भाषा में ही उपलब्ध हैं। आने वाले समय में ये निश्चित रूप से हिंदी तथा भारतीय भाषाओं में भी उपलब्ध होंगे, तब हमारा कार्य और भी आसान हो जाएगा। ऐसी स्थिति में हो सकता है कि लेखन का अस्तित्व ही समाप्त हो जाए और हम सभी बोल कर सभी समस्याओं का हल खोज लें।

37.11 आपने क्या सीखा

1. कंप्यूटर एक मशीन है जो दिए गए निर्देशों का क्रमशः पालन करती है। कंप्यूटर तेजी से गणना कर शुद्ध परिणाम निकालने में सक्षम है। यह बड़े-से-बड़े आँकड़ों की गणना कम-से-कम समय में कर सकता है।
2. कंप्यूटर जीवन का अभिन्न अंग बन गया है। बैंकों में, दुकानों पर, व्यापार, फिल्म उद्योग, फोटोग्राफी, रंगीन चित्र निर्माण, अखबार पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन, बिजली का बिल, पानी-टेलीफोन का बिल आदि से जुड़े सभी कार्य कंप्यूटर द्वारा सरलता से नियोजित हो जाते हैं।
3. सामग्री में जोड़-घटाव, संपादन, बदलाव आदि अनेक सुविधाएँ उपलब्ध होने के कारण कंप्यूटर पर कार्य करना आसान है।
4. कंप्यूटर पर समाचार पत्र-पत्रिकाएँ, शादी के कार्ड, विज़िटिंग कार्ड, तरह-तरह के पैंफ्लेट, विज्ञापन आदि डी. टी. पी. में पेजमेकर द्वारा आसानी से बनाए जा सकते हैं। इस प्रकार का कार्य घर पर कंप्यूटर रखकर भी प्रारंभ किया जा सकता है।
5. कंप्यूटर के वे भाग जिन्हें हम छू सकते हैं हार्डवेयर कहलाते हैं, जैसे–की-बोर्ड, प्रिंटर, हार्ड डिस्क में मदर बोर्ड आदि। कंप्यूटर के वे भाग जो कंप्यूटर के संचालन में प्रतिभागी होते हैं, उन्हें हम प्रोग्राम कहते हैं। ये प्रोग्राम ही सॉफ्टवेयर कहलाते हैं।
6. अंग्रेज़ी और हिंदी में ही नहीं भारत की अनेक भारतीय भाषाओं में भी कंप्यूटर पर कार्य सरलता से किया जा सकता है।
7. 'इस्की' नामक कोड प्रणाली द्वारा सभी भारतीय भाषाओं में आसानी से कार्य किया जा सकता है।
8. भारत ने सॉफ्टवेयर के क्षेत्र में परम 10,000 सुपर कंप्यूटर का निर्माण कर विश्व में अग्रणी स्थान प्राप्त कर लिया है।
9. हिंदी भाषा में कंप्यूटर पर कार्य करने के लिए कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध हैं, जैसे–आई. एस. एम., अक्षर फॉर विंडोज़, प्रकाशक, श्रीलिपि, आकृति, विंकी, ए. पी, एस. सुविंडोज़ आदि।
10. लिनोटाइप हल पैकेज के ओरिब्सा की सहायता से अरबी-फारसी और उर्दू में भी कंप्यूटर में कार्य किया जा सकता है।

टिप्पणी

11. इंटरनेट पर हिंदी में वेब दुनिया, नेटजाल, रेडिफ डॉट काम नामक साइट्स उपलब्ध हैं जिनकी सहायता से हिंदी भाषा में विश्व स्तर पर सूचनाएँ प्राप्त की जा सकती हैं, अनुभूति, अभिव्यक्ति डॉट बॉय जैसी पत्र-पत्रिकाएँ पढ़ी जा सकती हैं, किसी भी प्रकार के ग्रीटिंग कार्ड भेजे जा सकते हैं जो ई-पत्र, ई-कार्ड के नाम से विख्यात हैं।

12. भविष्य में भारतीय भाषाओं के लिए चुनौतियाँ–
    - हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के प्रमुख ग्रंथ सी. डी. के रूप में उपलब्ध हों।
    - अधिक-से-अधिक ई-पुस्तकों का निर्माण
    - अधिक-से-अधिक वेब ठिकानों का निर्माण
    - पूर्णतः स्वचालित अनुवाद प्रणाली का निर्माण
    - आवाज/उच्चारण को पहचानने वाले कंप्यूटरों का निर्माण

37.12 योग्यता विस्तार

1. 'कंप्यूटर संचार सूचना', 'इलेक्ट्रोनिकी आपके लिए' जैसी कंप्यूटर संबंधी पत्रिकाओं को प्राप्त कर पढ़िए।
2. पास के साइबर कैफे में जाकर बताई गई बेव साइट्सों को खोलिए और अपनी जानकारी बढ़ाइए।

37.13 पाठांत प्रश्न

1. ''कंप्यूटर के आने से सूचना और संचार के क्षेत्र में क्रांति आ गई है'' सिद्ध कीजिए।
2. कंप्यूटर की कोई पाँच विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
3. हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर में अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. हिंदी में उपलब्ध सॉफ्टवेयर के बारे में विस्तारपूर्वक टिप्पणी लिखिए।
5. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए–
   (क) कंप्यूटर का विकास (ख) शिक्षा के क्षेत्र में कंप्यूटर
   (ग) इंटरनेट और हिंदी (घ) लीला प्रबोध (ङ) जिस्ट कार्ड
6. कंप्यूटर और हिंदी भाषा के बारे में संक्षिप्त नोट लिखिए।
7. कंप्यूटर और हिंदी तथा भारतीय भाषाओं के लिए भावी चुनौतियाँ क्या हैं? स्पष्ट कीजिए।

37.14 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

37.1	1. (घ)	2. (ख)			
37.2	1. (क)	2. (ख)	3. (घ)	4. (ख)	5. (ग)
37.3	1. (ख)	2. (ग) फोटोशॉप में संभव			
37.4	1. (घ)	2. (क)	3. (ग)		

टिप्पणी

301hi38A

38

संचार माध्यम की भाषा

अब तक आपने पढ़ा कि संचार हमारे जीवन की बहुत आवश्यक और उपयोगी प्रक्रिया है। अख़बार, रेडियो और टेलीविज़न हमें नई-नई जानकारी देने के साथ-साथ हमारे जीवन में परिवर्तन लाते हैं। आपने यह भी जाना कि समाचार किसे कहते हैं और समाचार कहाँ से प्राप्त होते हैं। एक स्थान पर हमने आपको बताया था कि समूचा संचार-कार्य भाषा के ज़रिए होता है। इस प्रकार भाषा संचार माध्यमों का प्राण है। भाषा के बिना संचार माध्यम निर्जीव है। इस पाठ में हम यह जान सकेंगे कि संचार माध्यमों की भाषा का स्वरूप कैसा होना चाहिए। साथ ही आपको बताया जाएगा कि जनसंचार माध्यमों की भाषा का विकास किस प्रकार होता है। समाचारपत्रों और प्रसारण माध्यमों की भाषा में अंतर भी स्पष्ट रूप से बताया जाएगा।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- समाचारपत्रों की भाषा का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भाषा के निर्माण और विकास की प्रक्रिया को समझा सकेंगे;
- यह बता सकेंगे कि अनुवाद करते समय किन बातों का ध्यान रखना ज़रूरी है;
- रेडियो और दूरदर्शन की भाषा की विशेषताएँ बता सकेंगे;
- समाचारपत्रों तथा प्रसारण माध्यमों की भाषा की तुलना कर सकेंगे;
- लिखित तथा मौखिक माध्यमों में प्रयुक्त हिंदी भाषा में अंतर बता सकेंगे।

क्रियाकलाप

हिंदी के दो अख़बारों में से पाँच समाचार काटकर अलग कागज पर चिपकाइए और समाचारों को पढ़कर उनकी भाषा पर चार बिंदु यहाँ लिखिए।

1......................2......................3......................4......................

38.1 भाषा के प्रकार

जिस तरह बिना हवा के हम जी नहीं सकते उसी तरह साधारणतः बिना भाषा के संचार नहीं किया जा सकता। संचार का मुख्य साधन भाषा है। बिना भाषा के संचार निर्जीव है। समाचारपत्रों के बारे में तो यह बात एकदम सही है, क्योंकि भाषा में ही तो अख़बार छपते हैं। रेडियो और दूरदर्शन में भी भाषा का प्रयोग किया जाता है, जिसे वाचिक भाषा कहते हैं। परंतु क्या आप यह जानते हैं कि प्रसारण से पहले लिखित रूप में ही सामग्री को तैयार किया जाता है।

मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि समाचारपत्रों की भाषा आम पाठक की भाषा होती है। जब भी किसी अख़बार के प्रकाशन की योजना बनती है तो सबसे पहले इस बात पर विचार किया जाता है कि उसके पाठक वर्ग में किस तरह के लोग होंगे। उदाहरण के लिए हिंदी के प्रमुख अख़बारों में से **नवभारत टाइम्स** के पाठक **पंजाब केसरी** या **जनसत्ता** के पाठकों से अलग हैं। अगर आप ध्यान से देखेंगे तो **नवभारत टाइम्स** और **जनसत्ता** की भाषा यानी शब्दावली तथा वाक्य रचना में अंतर होता है। इसी तरह किसी छोटे कस्बे से निकलने वाले अख़बार तथा राजधानी से निकलने वाले समाचारपत्र की भाषा में कुछ अंतर रहता है। मज़दूरों के लिए छपने वाली किसी पत्रिका और विश्वविद्यालय के अध्यापकों के लिए छपने वाली पत्रिका का भाषा-स्तर निश्चय ही अलग-अलग होगा।

जिस तरह पाठक वर्ग बदलने पर भाषा का स्वरूप बदल जाता है, उसी तरह विषय के अनुसार भाषा में परिवर्तन आ जाता है। विज्ञान से संबंधित पत्रिका और व्यापार से संबंधित पत्र की भाषा में अंतर अवश्य दिखाई देगा। कृषि के बारे में छपने वाले अख़बार में जिस तरह के शब्द, वाक्य, कहावतें या मुहावरे इस्तेमाल किए जाते हैं, वैसे ही शब्द या मुहावरे संचार संबंधी पत्रिका में प्रयोग नहीं किए जाते। यही क्यों, एक ही समाचारपत्र या पत्रिका में अलग-अलग विषयों पर लिखे गए लेख अथवा समाचार की भाषा में अंतर लाना पड़ता है। उदाहरण के लिए खेलों के समाचारों को पढ़ते समय आप ऐसी भाषा की उम्मीद करते हैं, जिसमें फड़कते हुए तथा गति वाले शब्द और वाक्य हों, जबकि संगीत अथवा साहित्य के समाचारों व लेखों की भाषा अलग हो जाती है। इसी तरह आर्थिक समाचारों और लेखों में नए तरह के शब्द प्रयोग किए जाते हैं जैसे कि सोना लुढ़का, चाँदी चमकी, गेहूँ में उछाल आदि।

38.2 भाषा का विकास

भाषा का विकास लगातार होता रहता है। जो भाषा जितनी ज़्यादा इस्तेमाल होती है, उसका उतना ही विस्तार और विकास होता है। आप जानते होंगे कि हमारे यहाँ अंग्रेजों के आने से पहले सरकारी, दरबारी और अदालती कामकाज फ़ारसी और फिर उर्दू में होता था। ब्रिटिश शासन में भी भारत में अंग्रेज़ी के साथ-साथ उर्दू में काम होता रहा। इसका नतीजा यह हुआ कि सारी शब्दावली फ़ारसी में और फिर अंग्रेज़ी में विकसित हुई। किंतु जब स्वतंत्रता के बाद हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया और

हिंदी में ही केंद्र तथा कुछ राज्यों में कामकाज होने लगा तो हिंदी में नए-नए शब्दों का विकास होने लगा। हमने प्रारंभ में ही लोकसभा, राज्यसभा, विधान परिषद, विधानसभा, सचिवालय, मंत्रिमंडल, सरकार, आयोग, प्रशासन जैसे शब्द बना लिए और अब सभी भारतीय भाषाओं में यही शब्द पारिभाषिक शब्द बन चुके हैं। बाद में जैसे-जैसे नए विषय तथा नए तरह का कामकाज सामने आया, नई शब्दावली और वाक्य रचना भी विकसित होने लगी।

अधिकतम नवीनतम जानकारी प्राप्त करना ही समाचार है।

समाचारपत्रों की भाषा भी इसी तरह विकसित होती रहती है। ध्यान देने की बात यह है कि संचार में हमारा लक्ष्य भाषा को सँवारना नहीं, बल्कि अपनी बात को लोगों तक पहुँचाना होता है। यह सही है कि भाषा जितनी सुगठित और मँजी हुई होगी, हमारी बात का असर भी उतना ही गहरा होगा। लेकिन भाषा को हमें माध्यम और साधन मानकर ही चलना चाहिए। साहित्य और पत्रकारिता में यही अंतर है। कई बार साहित्य की भाँति पत्रकारिता में भी भाषा को चमत्कारिक बनाने के लोभ से उसे दुरूह और बोझिल बना दिया जाता है।

समाचारपत्रों की भाषा का मूल्यांकन करते हुए इस तथ्य की अनदेखी नहीं की जानी चाहिए कि अख़बार बहुत जल्दी में छापे जाते हैं और उनके लिए समाचार आदि लिखने का काम भी अक्सर शीघ्रता से होता है। फिर भी भाषा के महत्त्व को मूल सामग्री से कम नहीं किया जा सकता। अगर भाषा क्लिष्ट या ढीली-ढाली है तो संदेश भी बेकार हो जाता है। पाठक को पढ़ने में रुचि न रहे या बात उसके पल्ले ही न पड़े तो सारी मेहनत ही व्यर्थ चली जाएगी। समाचारपत्रों के समान भाषा के विकास में रेडियो और दूरदर्शन का योगदान भी है।

पाठगत प्रश्न 38.1

1. उचित शब्द से रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए:
   (क) बिना भाषा के संचार माध्यम .... है।
   (ख) विज्ञान से संबंधित रचना और व्यापार से संबंधित रचना में .... अवश्य दिखाई देगा।
   (ग) जो भाषा जितनी .... इस्तेमाल होती है, उसका उतना ही अधिक ....होता है।
   (घ) पत्रकारिता की भाषा साहित्य की भाषा से ....होती है।
2. वाचिक भाषा किसे कहते हैं? इसे किस रूप में तैयार किया जाता है?

38.3 समाचारपत्रों की भाषा

1. वर्तनी की समस्या

अभी तक हमने हिंदी समाचारपत्रों की भाषा के विभिन्न स्वरूपों को देखा और उनके गुण-दोषों की चर्चा की। आइए, अब हम एक ऐसी बात पर विचार करें, जो सबसे अधिक खटकने वाली है, यह है समाचारपत्रों की भाषा और वर्तनी में एकरूपता का अभाव। यह दोष हिंदी के लगभग सभी समाचारपत्रों में पाया जाता है। इसके मुख्य पहलू इस प्रकार हैं :

- हिंदी भाषी क्षेत्रों में अलग-अलग स्थानों पर हिंदी के अलग-अलग रूप पाए जाते हैं।
- हिंदी भाषी क्षेत्र में अनेक बोलियाँ हैं, जिनमें अनेक असमानताएँ हैं।
- अधिकांश हिंदी भाषी पढ़ने-लिखने में तो हिंदी के मानक रूप का प्रयोग करते हैं किंतु अपने परिवार के सदस्यों, सगे-संबंधियों और मित्रों से अपनी स्थानीय बोली में बात करते हैं।
- हिंदी भाषा का मानक रूप तो पूरे हिंदी क्षेत्र में एक-सा है लेकिन हिंदी की बोलियों—ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि में अंतर है।

इस प्रकार लगभग प्रत्येक हिंदी भाषी अनिवार्य रूप से द्विभाषी है, अतः वह अपनी प्रादेशिक भाषा, शब्दावली, प्रयोगों और मुहावरों से प्रभावित होता रहता है। यदि हम विभिन्न हिंदी क्षेत्रों से प्रकाशित होने वाले अख़बारों की भाषा की तुलना करें, तो यह अंतर स्पष्ट रूप से सामने आ जाएगा।

हिंदी अख़बारों की भाषा में एकरूपता का अभाव होने का कारण यह भी है कि हिंदी के अनेक शब्दों की वर्तनी के विषय में अभी तक एकरूपता कायम नहीं की जा सकी है। इसका कारण यह है कि संस्कृत व्याकरण से हिंदी के शब्दों की वर्तनी को नियमित करना संस्कृत न जानने वाले हिंदी प्रेमियों को स्वीकार्य नहीं है। उच्चारण के आधार पर वर्तनी को स्वीकार करने में भी अनेक बाधाएँ हैं, क्योंकि हिंदी क्षेत्र इतना बड़ा है कि इसके विभिन्न भागों में शब्दों के उच्चारण में भी बहुत असमानताएँ हैं। वर्तनी में एकरूपता लाने की दिशा में शासकीय संस्थाओं द्वारा किए गए प्रयासों के बाद भी अपेक्षित परिणाम नहीं निकल सका है। आज भी विभिन्न हिंदी राज्यों की वर्तनी में अंतर मिलता है। इसलिए इस समस्या का हल समाचार पत्रों को अपने स्तर पर करना चाहिए।

हिंदी समाचारपत्रों में अन्य भारतीय भाषाओं तथा विदेशी भाषाओं के व्यक्तिवाचक नामों की वर्तनी में हास्यास्पद भेद पाए जाते हैं। हिंदी में जैसा बोला जाता है, प्रायः वैसा ही लिखा जाता है; जबकि अन्य भाषा के शब्दों के विषय में यह तथ्य सही नहीं है, अतः उनके उच्चरित और लिखित रूप दोनों पर विचार करना आवश्यक है। हिंदी समाचार पत्रों को बहुत कुछ मूल सामग्री अंग्रेजी में प्राप्त होती है, जो इस प्रकार की वर्तनीगत अशुद्धि का मूल कारण है। इस दिशा में एक उल्लेखनीय बात यह है कि अलग-अलग हिंदी क्षेत्रों के हिंदी अख़बारों में वर्तनी का अंतर तो मिलता ही है, साथ ही एक ही

टिप्पणी

अख़बार में एक ही शब्द की अलग-अलग वर्तनी भी मिलती है। वर्तनी का यह अंतर हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा में बड़ा बाधक है, अतः इसे दूर करना हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा को बढ़ाने के लिए आवश्यक है। कंप्यूटर युग में तेजी से 'स्पेल चेकर' (वर्तनी जाँचक) विकसित हो रहे हैं।

2. शब्द और वाक्य प्रयोग

हिंदी समाचारपत्रों को सामान्य साक्षर लोगों से लेकर विद्वान तथा भाषा-विशारद तक सभी स्तरों के पाठक पढ़ते हैं। इसलिए भाषा की सरलता के साथ-साथ उसकी स्तरीयता का भी ध्यान रखना चाहिए। जहाँ तक शब्दों का प्रश्न है, समाचारपत्रों में हिंदी पर्याय के साथ-साथ तकनीकी शब्दों के अंग्रेजी रूप भी ज्यों के त्यों लिए जाने चाहिए। उदाहरण के लिए स्टेशन, टेलीफ़ोन, बस, कार, पेन, स्कूल, कॉलेज, अफसर, फ्रिज, टेलीविज़न, रेडियो, साइकिल, मशीन, बटन आदि सैकड़ों ऐसे शब्द हैं, जो हमारी भाषा के अंग बन गए हैं। इसी तरह नई-नई खोजें होती हैं और नए तत्त्व, यंत्र या उपकरण सामने आते हैं, तो उनके नाम प्रायः उसी रूप में अपना लिए जाते हैं और यह उचित भी है। उदाहरण के लिए कंप्यूटर, यूरिया, क्लोरीन, रेडियम, इंटरनेट आदि।

परंतु इस तरह के शब्दों का अधिक प्रयोग अनुचित है। जो शब्द हमारी अपनी भाषा में मौजूद हैं, उनके भी अंग्रेज़ी पर्याय प्रयोग किए जाने लगे तो भाषा का स्वरूप बिगड़ जाएगा। कुछ अख़बार गोलीबारी के लिए 'फायरिंग', राज्यपाल के लिए 'गवर्नर' निदेशक के लिए 'डायरेक्टर', मंत्रिमंडल के लिए 'कैबिनेट',जाँच के लिए 'एन्क्वायरी' आदि शब्दों के प्रयोग धड़ल्ले से कर रहे हैं। यह सर्वथा अनुचित है। दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाने में संकोच न करना अपने आप में गुण है। परंतु आँख मूँद कर हर शब्द का अनावश्यक रूप से प्रयोग करना अवगुण है। इससे भाषा समृद्ध बनने की बजाय शिथिल बनती जाती है। कठिन और बोझिल शब्दों का प्रयोग यदि भाषा की सुबोधता को कम करता है, तो हल्के और विदेशी लगने वाले शब्दों का प्रयोग भाषा की गुणवत्ता को कम करता है।

यही बात वाक्यों के बारे में कही जा सकती है। समाचारपत्रों में जहाँ एक ओर शिथिल वाक्य-रचनाएँ देखने को मिलती हैं, वहीं दूसरी ओर कुछ ऐसी जटिल वाक्य-रचनाएँ भी देखी जा सकती हैं, जो साधारण पाठकों की समझ में नहीं आतीं। जटिल वाक्य-संरचना प्रायः संपादकीय लेखों में देखने को मिलती है। आइए, हम यहाँ इस प्रकार के कुछ उदाहरण देखें। ये उदाहरण दिल्ली के एक प्रमुख अख़बार से लिए गए हैं :

1. "इतिहास में जो छलावेदार गलियारे हैं, उनमें अनंतता तक दर्पण ही दर्पण लगे हुए हैं। उन्हीं में सब जानते बूझते क्या भटकता होगा?"

यह वाक्य संपादकीय लेख का है। इसमें लेखक ने ऐसी घुमावदार भाषा का प्रयोग किया है, जिसे विरले पाठक ही समझ सकते हैं। जबकि अख़बारों में इस प्रकार की भाषा लिखी जानी चाहिए, जिसे ज़्यादातर पाठक समझ सकें, क्योंकि संपादकीय लेख

टिप्पणी

के माध्यम से संपादक अपनी बात सर्वसाधारण तक पहुँचाना चाहता है। ये सभी जानते हैं कि अख़बारों के पाठकों का बौद्धिक स्तर भिन्न-भिन्न होता है और उसका लक्ष्य कम योग्यता वाला पाठक होना चाहिए।

2. *''कुछ अत्यंत वयस्क राष्ट्रों में तो ऐसे विशेष पर्व पर कोई अतिरिक्त उत्साह दिखता ही नहीं–उसे एक बचपना समझा जाता है–क्योंकि स्वतंत्रता या मुक्ति सारी जनता के संपूर्ण दर्जे और अवसर की बराबरी, अहैतिक अन्याय से मुक्ति, भय और अभाव के भय से आजादी के रूप में इतनी रच-बस गई है कि वह एक निरंतर स्वतंत्रता दिवस के रूप में हमेशा विद्यमान रहती है।''*

यह अंश 15 अगस्त के संपादकीय लेख का है। सरल शब्दों से युक्त होते हुए भी यह वाक्य इतना बड़ा है कि पाठक शायद ही इसे समझ सकें। साधारण पाठक तो इसकी भाषा में ही उलझ कर रह जाएँगे। अख़बार में इतने बड़े और जटिल वाक्य नहीं लिखे जाने चाहिए, जिन्हें समझने के लिए पाठक को अपने दिमाग पर बहुत जोर डालना पड़े। कोई भी पाठक भाषा सीखने के लिए अख़बार नहीं पढ़ता बल्कि ख़बरें जानने के लिए पढ़ता है। अतः अख़बारों में सरल सुबोध भाषा का ही प्रयोग होना चाहिए।

3. भाषा का आदर्श रूप

हम पहले बता चुके हैं कि समाचारपत्रों का मूल उद्देश्य भाषा का विकास नहीं है, किंतु भाषा का जो स्वरूप समाचारपत्रों के पठन-पाठन और वाचन द्वारा समाज के हर वर्ग तक पहुँचता है, उसका भाषा के निर्माण में प्रमुख स्थान रहता है। समाचारपत्र एक ऐसा समर्थ माध्यम है, जिससे किसी भाषा के प्रचार और लोकरुचि के निर्माण में बहुत सहायता मिलती है। आज बहुत से विद्वानों की तो यह मान्यता है कि समाचारपत्र राष्ट्रभाषा के लिखित स्वरूप का मानकीकरण करते हैं। अतः हिंदी के समाचारपत्रों का यह दायित्व है कि वे भाषा के प्रयोग में लापरवाही न बरतें। वे इस प्रकार की सरल, सुबोध और शुद्ध भाषा का प्रयोग करें, जो हिंदी को एक आदर्श रूप प्रदान कर सके।

सामान्यतः हिंदी के समाचारपत्रों का पाठक जब किसी समाचार या घटना के विषय में चर्चा करता है, तो वह उसी भाषा का प्रयोग करता है, जो उसे समाचारपत्र से मिलती है। संचार-साधनों के विस्तार के कारण अब ग्रामीण क्षेत्र भी आधुनिक प्रगति से जुड़ गए हैं। अब ग्रामीण जनता भी समाचारपत्रों को पढ़ती है और उनके द्वारा दिए गए समाचारों और विचारों पर चर्चा करती है। दैनिक समाचारपत्रों की भाषा का नवीनीकरण हर 24 घंटे के बाद होता रहता है, अतः समाचारपत्रों की भाषा का प्रभाव स्थायी हो जाता है। समाचारपत्र अपनी भाषा की इस शक्ति से हिंदी के मानक स्वरूप की स्थापना कर सकते हैं। किंतु जैसा कि ऊपर आपने पढ़ा आज भी हिंदी समाचारपत्रों में भाषा के प्रति सजगता का अभाव पाया जाता है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी समाचारपत्र भाषा के प्रयोग में पूरी तरह सजग रहें और अपने समाचारों में हिंदी के ऐसे मानक रूप का प्रयोग करें, जो समाज में हर वर्ग के लिए आदर्श बन सके।

पाठगत प्रश्न 38.2

उचित शब्द भर कर निम्नलिखित वाक्यों को पूरा कीजिए:

1. समाचारपत्रों में भाषा की .... के साथ-साथ स्तरीयता का भी ध्यान रखना चाहिए।
2. दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपनाना अपने आप में ....है, परंतु आँख मूँद कर विदेशी शब्दों का इस्तेमाल करना ....है।
3. लोग भाषा ....के लिए नहीं, बल्कि नई जानकारी हासिल करने के लिए अख़बार पढ़ते हैं।
4. एकरूपता का ....हिंदी भाषा का एक मुख्य दोष है, जो समाचारपत्रों के ....से दूर किया जा सकता है।
5. ....की भिन्नता और त्रुटियों से हिंदी समाचारपत्रों की प्रतिष्ठा कम होती है।

38.4 प्रसारण माध्यमों की भाषा

रेडियो और टेलीविज़न को हमारे देश में क्रमशः आकाशवाणी तथा दूरदर्शन कहा जाता है। इन प्रसारण माध्यमों के द्वारा मनोरंजक, ज्ञानवर्धक तथा सूचनापरक आदि सब तरह के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। परंतु यहाँ हम मुख्य रूप से समाचारों तथा समसामयिक कार्यक्रमों की भाषा का विवेचन करेंगे। ये कार्यक्रम सबसे अधिक लोगों द्वारा सुने-देखे जाते हैं और पत्रकारिता तथा संचार की श्रेणी में आते हैं। समाचारपत्रों तथा प्रसारण माध्यमों के समाचार बुलेटिनों और समसामयिक कार्यक्रमों की भाषा बुनियादी तौर पर एक जैसी होती है, क्योंकि दोनों तरह के माध्यमों का वास्ता आम लोगों से पड़ता है। पाठकों और श्रोताओं/दर्शकों में सामान्य रूप से साधारण समझ वाले व्यक्ति से लेकर विद्वान तक होते हैं। फिर भी दोनों में अंतर रहता है, क्योंकि इन माध्यमों की प्रवृत्ति और स्वरूप एक-दूसरे से काफी भिन्न हैं। अख़बार पढ़ा जाता है, रेडियो सुना जाता है और दूरदर्शन देखा जाता है।

1. रेडियो की भाषा

रेडियो प्रसारणों में भाषा का विशेष महत्त्व है, क्योंकि इसे अनपढ़ तथा एकदम निरक्षर लोग भी सुनते हैं। सच तो यह है कि हमारे देश की स्थितियों में संचार माध्यम के रूप में रेडियो की उपयोगिता सबसे ज़्यादा है। इसलिए रेडियो के समाचार तथा अन्य कार्यक्रमों को तैयार करने वालों की ज़िम्मेदारी काफी बढ़ जाती है।

चूँकि रेडियो केवल सुना जाता है, इसलिए इसे सुनते-सुनते ध्यान भटक जाने की संभावना सबसे अधिक होती है। कभी-कभी रेडियो सुनते हुए हम कोई और काम भी करने लग जाते हैं। कुछ विद्यार्थी तो रेडियो सुनते-सुनते पढ़ाई भी करते रहते हैं।

हल्के-फुल्के गाने या संगीत सुनते हुए ही ऐसा किया जा सकता है। यही कारण है कि रेडियो के कार्यक्रमों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि लोगों की रुचि उनमें बनी रहे। यदि भाषा जटिल और बोझिल होगी, तो कोई भी उसे ध्यान से नहीं सुनेगा। इसलिए प्रसारण की भाषा सरल और सब तरह के श्रोताओं को समझ में आने वाली होनी चाहिए। इसका सबसे प्रमुख कारण तो यह है कि सरल भाषा को सामान्य तथा विद्वान, निरक्षर तथा साक्षर और बच्चे तथा बड़े समान रूप से समझ लेते हैं। दूसरा कारण यह है कि प्रसारित संदेश मुद्रित सामग्री की भाँति नहीं होता, (जिसका कोई अंश समझ न आने पर पिछले पृष्ठ को पलट कर आप संदर्भ से जोड़ सकें अथवा कठिन शब्द का अर्थ जानने के लिए शब्दकोश देख सकते हैं) और न ही श्रोता इस स्थिति में होता है कि किसी विद्वान या ज्ञानी व्यक्ति से परामर्श कर सके। एक बार जो वाक्य, उक्ति अथवा शब्द प्रसारित हो गया, वह हवा के झोंके की भाँति आगे निकल जाता है। इसलिए सफल प्रसारण की बुनियादी आवश्यकता है–भाषा की सरलता और सुबोधता।

अब प्रश्न यह है कि सरल भाषा का स्वरूप कैसा हो ? हिंदी को ही लें। एक मत यह है कि उर्दू के वक़्त, फ़िक्र, महसूस, मौजूद, कसम, अफ़सोस, खुशी, सदी, सिलसिला, कर्ज़, ख़ास, जोख़िम, तालीम, दावत, चीज़, पाक, फिजूल जैसे प्रचलित शब्दों का हिंदी के समाचारों, वार्ताओं तथा कार्यक्रमों में प्रयोग किया जाए। दूसरा पक्ष यह है कि हिंदी संस्कृत प्राकृत से विकसित है तथा अन्य भारतीय भाषाएँ भी संस्कृत के निकट हैं। अतः संस्कृतनिष्ठ शब्द जैसे उन्मूलन, मानचित्र, प्रोत्साहन, यथावश्यक, वस्तुस्थिति, सर्वेक्षण, प्रावधान, विश्वसनीय, परिस्थिति, शताब्दी, उपस्थित, क्रमशः, निमंत्रण, स्वतंत्रता, प्रकोष्ठ, परिवर्तन, सर्वाधिक, विश्लेषण तथा इसी प्रकार के शब्द प्रयोग किए जाएँ, जिससे वह सिर्फ हिंदी भाषी जनता ही नहीं, बल्कि सभी भाषा-भाषी हिंदी को समझ सकें।

वास्तव में दोनों पक्ष अपनी-अपनी जगह सही हैं। किंतु शब्दों का मापदंड है उनका अधिक से अधिक लोगों द्वारा बोला तथा समझा जाना और बोलचाल में प्रयुक्त किया जाना। इसलिए उर्दू के जो शब्द हिंदी में बोलचाल के अंग बन गए हैं, उनके प्रयोग करना यथेष्ट है तथा संस्कृत के जो शब्द लंबे समय ये प्रयोग में आ रहे हैं, उन्हें लेना हितकर है। उदाहरण के लिए 'प्रोत्साहन' और 'बढ़ावा', 'विशेष' और 'खास', 'भाग लिया' तथा 'हिस्सा लिया', 'उपस्थित' तथा 'हाज़िर', 'उत्तर' तथा 'जवाब', 'प्रयास' तथा 'कोशिश', प्रसन्नता' तथा 'खुशी' दोनों प्रकार के शब्दों का प्रयोग किया जा सकता है। मूल बात है शब्द के प्रसारणकर्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे इस बात का ज्ञान हो कि कौन से शब्द सामान्य व्यक्ति द्वारा समझे जा सकते हैं।

यही कारण है कि आकाशवाणी में 'किंतु', 'अपितु', 'एवं', 'अन्यथा', 'यद्यपि', 'यदि', 'तथापि', की बजाय क्रमशः 'लेकिन', 'बल्कि', 'और', नहीं तो, 'हालाँकि', 'अगर', 'तो भी', आदि का प्रयोग अधिक होता है। इसी प्रकार 'उपरांत', 'पश्चात्', 'पूर्व', 'सम्मुख','पुनः', के स्थान पर 'बाद', 'के बाद', 'पहले', 'सामने', 'फिर', शब्दों का प्रयोग बेहतर माना जाता है। शब्दों का चयन करते समय यह भी ध्यान में रखा जाता है कि इन्हें बोलने के लिए जीभ को ज़्यादा कष्ट न उठाना पड़े। उदाहरण के लिए ''*श्रमिकों को विश्राम का अवसर सुलभ नहीं हुआ*'' वाक्य के स्थान पर ''*आसानी से मजदूरों को आराम करने*

टिप्पणी

का अवसर नहीं मिला'' बोला जा सकता है। इसी प्रकार *''उन्होंने इस बात पर अफसोस ज़ाहिर किया कि मुल्क की तरक्की रुक गई है''* को यों बोलना अधिक आसान होगा : *''उन्होंने इस बात पर अफसोस प्रकट किया कि देश की प्रगति रुक गई है।''*

2. दूरदर्शन की भाषा

आप पढ़ चुके हैं दूरदर्शन आज का सबसे अधिक प्रभावशली संचार माध्यम है। दूरदर्शन मुख्य रूप से मनोरंजन का साधन माना जाता है, जिसमें धारावाहिक, नाटक, फिल्में, चित्रहार, हास्य नाटिकाएँ, तथा और भी कई तरह के कार्यक्रम दिखाए जाते हैं। इन सब कार्यक्रमों की भाषा की चर्चा हम नहीं करेंगे, हालाँकि इन कार्यक्रमों में भी भाषा का महत्त्व कम नहीं होता। किंतु इनमें भाषा गौण होती है और चित्र अथवा दृश्यों के अंश का महत्त्व अधिक होता है। जैसे कि समाचारपत्रों और रेडियो की भाषा के विवेचन में हमने समाचारों की भाषा पर अधिक बल दिया था, दूरदर्शन की भाषा पर विचार करते हुए भी समाचारों की भाषा पर ही मुख्यतया प्रकाश डाला जा रहा है।

जहाँ तक दूरदर्शन समाचारों के वाचन पक्ष या श्रव्य पक्ष का सवाल है, इन पर वे सभी बातें लागू होती हैं, जो हम रेडियो समाचारों के बारे में बता चुके हैं। दूरदर्शन समाचारों में भी शब्द, वाक्य रचना तथा अनुवाद के मामले में वे सभी सावधानियाँ बरतनी पड़ती हैं, जो रेडियो समाचारों का लेखन-संपादन करते हुए बरती जाती हैं। फिर भी दूरदर्शन समाचारों का लेखन, संपादन और प्रस्तुतीकरण रेडियो समाचारों से भिन्न हैं। दूरदर्शन के समाचार और उनके भाषा संबंधी कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार हैं:

- दूरदर्शन के समाचारों में भाषा का प्रयोग अपेक्षाकृत कम और चित्रों तथा दृश्यों का उपयोग अधिक किया जाता है। इसलिए समाचार के साथ जो कुछ दिखाया जाता है, उसका वर्णन शब्दों में करना हमेशा ज़रूरी नहीं होता। उदाहरण के लिए गणतंत्र दिवस की परेड का समाचार देने के लिए जहाँ समाचारपत्रों तथा रेडियो समाचारों में यह लिखा जाता है कि ''वायुसेना के बैंड दस्ते ने हरे रंग की कलगी वाली पगड़ी पहनी हुई थी और कदम से कदम मिलाते हुए उन्होंने राष्ट्रपति को सलामी दी'' वहाँ दूरदर्शन समाचारों में इतना कहना काफी है, *''यह है वायुसेना का बैंड दस्ता''*, बाकी दर्शक देखकर जान लेंगे।
- किसी सांस्कृतिक कार्यक्रम, नृत्य कार्यक्रम, पुरस्कार वितरण जैसे सामान्य ढंग के समाचारों का पूरा विवरण देने की बजाय यही बताना पर्याप्त रहता है कि यह कार्यक्रम किस अवसर पर आयोजित किया गया और किस की ओर से हुआ। बाकी कार्यक्रम के लिए इतना ही काफी है, *''पेश है कार्यक्रम की झलक''*। दूरदर्शन में दृश्यमूलक शब्दों जैसे कि झाँकी, झलक, तस्वीर आदि का अधिक प्रयोग होता है।
- चूँकि दर्शक समाचार वाचक या रिपोर्ट प्रस्तुत करने वाले को प्रत्यक्ष रूप से देख रहे होते हैं, इसलिए वाचक के चेहरे के हाव-भाव से भी समाचार का प्रभाव उन तक पहुँचता है। इससे भी शब्दों का महत्त्व कम हो जाता है और दर्शक चित्र, भाव तथा शब्द तीनों के योग से समाचार का अर्थ ग्रहण करते हैं।

- रेडियो की तरह दूरदर्शन को भी अनपढ़ तथा पढ़े-लिखे लोग समान रूप से देखते हैं, इसलिए इसके वाक्य छोटे, सरल, सीधे होने चाहिए तथा ऐसे शब्दों का चयन किया जाना चाहिए जो सुनने में मधुर लगें। भाषा में गतिमयता (रवानी), सहजता और सुबोधता होना बहुत ज़रूरी है। वाक्यों का वाचन करते समय अवरोध पैदा करने वाले शब्दों के स्थान पर प्रचलित सरल पर्यायवाची शब्द प्रयोग किए जा सकते हैं।

- आपने दूरदर्शन पर समाचार देखते हुए गौर किया होगा कि समाचार के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश कभी-कभी लिखकर भी दिखाए जाते हैं। यह लिखावट किसी समाचार के मुख्य पक्ष को उजागर करने के लिए या संख्या संबंधी पहलुओं को स्पष्ट करने के लिए टी.वी. के पर्दे पर दिखाई जाती है, जिससे उसका अधिक प्रभाव पड़े और सुनने के साथ-साथ पढ़ने से संख्याएँ पूरी तरह समझ में आ जाएँ। इन लिखावटों को कम-से-कम शब्दों में पेश किया जाता है, जिससे वे कम-से-कम समय में पढ़ी जा सकें और उन्हें जल्दी से बदला जा सके। बजट, आर्थिक नीति, कृषि नीति, उद्योग नीति में परिवर्तन तथा इसी तरह के समाचारों में, जिनमें संख्याएँ व आँकड़े दिए जाते हैं, इस तरह की लिखावट को आपने अक्सर देखा होगा। उदाहरण के लिए समाचार में यह बताया जाता है, *''बजट में कृषि के लिए' 13,000 करोड़ रुपए तथा 'उद्योग' के लिए 11,000 करोड़ रुपए का प्रावधान किया गया है।''* किंतु पर्दे पर इतना मात्र लिखा हुआ दिखाया जाएगा, *'बजट प्रावधान : कृषि : 13,000 करोड़ रुपए, उद्योग : 11,000 करोड़ रुपए'* इसी प्रकार पर्दे पर दाईं ओर ऊपर की ओर जहाँ दूरदर्शन का 'लोगो' दिखाया जाता है कभी-कभी लिखावट अंकित की जाती है। इस हिस्से को दूरदर्शन की शब्दावली में 'विंडो' कहते हैं इसी 'विंडो' में चित्र, मानचित्र, फोटो आदि भी दिखाए जाते हैं। यहाँ केवल समाचार का शीर्षक अंकित किया जाता है, जिससे दर्शकों को ध्यान रहे कि वे किस विषय का समाचार सुन रहे हैं। इस तरह की लिखावट में दो-तीन शब्द ही इस्तेमाल किए जाते हैं, जैसे कि 'लोकसभा समाचार', 'विदेश मंत्रियों की बैठक', 'आयात-निर्यात नीति' आदि।

दूरदर्शन कार्यक्रमों और समाचारों की भाषा पर अंग्रेजी शब्दों का अधिक प्रयोग करने का आरोप लगाया जाता है। इसे ठीक करना आवश्यक है। नए तथा तकनीकी शब्दों का ज्यों का त्यों इस्तेमाल करना तो जरूरी हो सकता है परंतु जिन शब्दों के हिंदी पर्याय पूरी तरह प्रचलित हैं उनको बार-बार अंग्रेजी में सुनना दर्शकों को बुरा लगता है।

3. संचार माध्यमों की वाक्य संरचना

शब्द भाषा की मूल इकाई है, परंतु वाक्यों से पृथक् उनका कोई अस्तित्व नहीं है। इसलिए वाक्य ऐसे बोले जाएँ, जो सीधे श्रोता की समझ में आ जाएँ। उसे वाक्य का अर्थ निकालने के लिए बौद्धिक कसरत न करनी पड़े। वाक्य यदि जटिल होंगे तो सरल शब्दों की नियति भी कीचड़ में गिरे फूलों से अधिक नहीं होगी। इसके लिए सबसे बड़ी

आवश्यकता है वाक्यों का छोटा होना। लंबे वाक्यों में उलझा देने से श्रोता अर्थ का अनर्थ कर बैठेगा तथा प्रसारण का लक्ष्य ही विफल हो जाएगा। जिस बात को मुद्रित या लिखित माध्यम में एक वाक्य में कह कर चमत्कार उत्पन्न करने का प्रयास किया जाता है, उसे प्रसारण माध्यम में दो या तीन वाक्यों में कहा जाना चाहिए। इसका उदाहरण देखें : *''राष्ट्रपति श्री वेंकटरमन ने आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में युवकों से समय की चुनौती का डटकर मुकाबला करने का आह्वान किया तथा लोगों को अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहने की चेतावनी दी।''*

व्याकरण की दृष्टि से इस वाक्य में कोई त्रुटि नहीं है और न ही इसमें बहुत कठिन शब्दों का प्रयोग किया गया है। परंतु यह वाक्य प्रसारण के लिए ठीक नहीं है। आकाशवाणी का संपादक इस समाचार को इस प्रकार बनाएगा : *''राष्ट्रपति ने लोगों से कहा है कि वे अलगाववादी शक्तियों से सावधान रहें। श्री वेंकटरमन आज चंडीगढ़ में पंजाब विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में बोल रहे थे। उन्होंने युवकों से कहा कि वे समय की चुनौती का डटकर मुकाबला करें''*।

कई बार वाक्य छोटे तो होते हैं, किंतु उनकी संरचना इतनी जटिल होती है कि समझने के लिए मस्तिष्क पर दबाव डालना पड़ता है। एक बानगी प्रस्तुत है :

> *''डाक्टर मनमोहन सिंह के बजट ने उदारता के युग का सूत्रपात करके अर्थव्यवस्था को नई दिशा दी है, जो चार दशकों से बनी हुई उस स्थिति के विपरीत है, जिसकी निंदा समाजवाद के विरोधी ''परमिट कोटा राज'' कह कर करते रहे हैं।*

यह वाक्य बहुत बड़ा नहीं है, किंतु जटिल होने के कारण तत्काल समझ में नहीं आता। इसे सरल बनाने के लिए दो वाक्यों में तोड़ना हितकर है। हालाँकि कम समय में अधिक बात कहना प्रसारण का मूल सिद्धांत है किंतु अस्पष्ट तथा अबूझ बात कहना तो समय को ही व्यर्थ करना है। इसलिए भाषा को सरल बनाने के लिए यदि कुछ सैकिंड अधिक खर्च करने पड़ें तो भी संकोच नहीं करना चाहिए। इस वाक्य को रेडियो वार्ताकार यों कहेगा :

> *''डाक्टर मनमोहन सिंह के बजट ने अर्थव्यवस्था में उदारता के युग का सूत्रपात किया है। यह नई दिशा पिछले चार दशकों से चले आ रहे ''परमिट कोटा राज'' के विपरीत है।*

आकाशवाणी और दूरदर्शन का क्षेत्र बहुत व्यापक है। अलग-अलग वर्गों के लिए अलग-अलग कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। कुछ कार्यक्रम ऐसे भी हैं जो विशिष्ट तथा शिक्षित वर्गों के लिए हैं। इनमें उसी के अनुरूप साहित्यिक अथवा स्तरीय भाषा का प्रयोग किया जा सकता है। संगीत के पाठ के प्रसारण में संगीत से संबंधित शब्दावली का प्रयोग किया जाएगा, जिसे सामान्य श्रोता नहीं समझ सकता। इसी प्रकार किसी साहित्यकार की साहित्यिक उपलब्धियों के बारे में प्रसारित वार्ता यदि उच्च स्तर की

भाषा में पढ़ी जाती है तो कोई दोष नहीं। टैक्नालॉजी, विज्ञान, चिकित्सा, इंजीनियरी, एकाउंटेंसी आदि अनेक विशिष्ट विषय हैं, जिनकी चर्चा करते समय संबंधित विषय में सीमित रूप से प्रयोग होने वाले शब्द अथवा वाक्य का प्रयोग करना आवश्यक होता है।

38.5 समाचार-वाचन

रेडियो और दूरदर्शन के समाचारों को श्रोताओं तथा दर्शकों तक पहुँचाने में एक और सूत्र की भूमिका रहती है और वह है समाचार वाचन। समाचार लेखन और संपादन कितना ही सटीक, उत्तम और रोचक क्यों न हो यदि उनका वाचन ठीक तरह से नहीं किया जाएगा तो उनका पूरा असर नहीं होगा। बल्कि कई बार तो समाचार वाचक बेजान समाचार बुलेटिन में भी अपनी आवाज़ तथा कौशल से जान डाल देते हैं। वाचन का अर्थ है, जिसमें साफ, लयपूर्ण और सधे हुए स्वर, शुद्ध उच्चारण, भाषा का ज्ञान तथा समाचार पढ़ने की विशिष्ट शैली की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि प्रसारण माध्यमों में संपादकों की भूमिका गौण मानी जाती है और श्रोता और दर्शक समाचार वाचकों को ही वास्तविक समाचार प्रसारक मान बैठते हैं। जिस प्रकार फिल्मों में निर्देशक, लेखक, संगीतकार, फोटोग्राफर आदि को लोग कम जानते हैं और फिल्म के हीरो और हीरोइन ही प्रसिद्ध होते हैं, उसी तरह प्रसारण माध्यमों, रेडियो और दूरदर्शन में संपादक, प्रस्तुतकर्ता, कैमरामैन आदि अज्ञात और अदृश्य रहते हैं और समाचारवाचक श्रोताओं तथा दर्शकों के बीच मान-सम्मान पाते हैं, इसलिए इनकी ज़िम्मेदारी बहुत बढ़ जाती है।

रेडियो में समाचार वाचक को समाचार का पूरा प्रभाव केवल अपनी आवाज़ के ज़रिए श्रोताओं तक पहुँचाना होता है। वाचक को समाचार के हाव-भाव के मुताबिक अपनी आवाज में उतार-चढ़ाव लाना पड़ता है। वीरता और साहस की घटनाओं और खेलों के समाचार पढ़ने की शैली तथा मृत्यु या धार्मिक समाचार पढ़ने की शैली एक-सी नहीं हो सकती। पूरी तरह एकाग्रचित्त होकर समाचार पढ़ना ज़रूरी है क्योंकि ध्यान इधर-उधर बँट जाने से कोई शब्द या वाक्यांश छूट सकता है या वाणी लड़खड़ा सकती है। रेडियो समाचार वाचक की कुशलता इसी में है कि वह अदृश्य रहकर भी श्रोताओं को दृश्य व्यक्ति की भाँति बाँधे रखे। समाचार वाचक को स्टूडियो में आने से पहले सभी समाचारों का अच्छी तरह अभ्यास करना चाहिए और नए-नए शब्दों, नामों, स्थानों आदि के सही उच्चारण का पता लगाना चाहिए। अच्छे वाचन के लिए समाचारों की अच्छी भाषा काफी हद तक ज़िम्मेदार होती है। यदि समाचारों की भाषा सुबोध व सरल होगी, वाक्य जटिल न होकर सरल व छोटे होंगे तथा क्लिष्ट शब्दों की बजाय आसानी से बोले जा सकने वाले शब्दों का प्रयोग किया जाएगा तो समाचार वाचन भी मधुर और प्रभावशाली बन पड़ेगा। वास्तव में समाचार लेखन, संपादन और वाचन एक-दूसरे से जुड़े होते हैं।

दूरदर्शन समाचार के वाचकों का काम रेडियो समाचार वाचकों के मुकाबले कुछ अर्थों में सरल होता है तो कुछ अर्थों में कठिन भी है। दूरदर्शन के समाचार वाचक को दर्शक प्रत्यक्षतः देखते हैं, इसलिए उसे अपने दर्शकों से तालमेल बिठाने में सुविधा होती है। जो काम रेडियो वाचक को केवल ध्वनि के माध्यम से करना होता है। उसे दूरदर्शन का

टिप्पणी

वाचक ध्वनि के साथ-साथ हाव-भाव से भी करता है। परंतु चूँकि वह दर्शकों के सामने रहता है, इसलिए उसे अधिक आत्मविश्वास तथा दृढ़ता से काम लेना पड़ता है। इसके अलावा दूरदर्शन समाचार वाचक को रेडियो वाचक के गुणों के साथ-साथ रूप-रंग में अच्छा होना चाहिए और फ्लैश लाईट की गर्मी और चमक झेलने की क्षमता उसमें होनी चाहिए। उसे अपनी वेश-भूषा तथा मेकअप पर भी ध्यान देना होता है।

दूरदर्शन समाचार वाचक का कार्य इस दृष्टि से भी जटिल है कि उसे लगातार समाचार पढ़ते नहीं जाना होता। उसे दृश्य या चित्र के अनुसार खबर पढ़नी होती है और बराबर यह ध्यान रखना होता है कि कहाँ और कब उसे रुकना है और कब फिर पढ़ना शुरू करना है। समाचार वाचक का दायित्व सचमुच बहुत बड़ा है, क्योंकि एक साथ लाखों, करोड़ों श्रोता/दर्शक उसकी आवाज सुन रहे होते हैं और उसकी गलती इन लोगों को दुखी कर सकती है। गलती हो जाने पर उसमें तुरंत क्षमा-याचना करने के साथ ही बुलेटिन को सुचारु रुप से पढ़ने की क्षमता होनी चाहिए।

पाठगत प्रश्न 38.3

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

1. छोटे-छोटे वाक्यों के प्रयोग से भाषा

   (क) उलझ जाती है, (ग) सरल हो जाती है,

   (ख) जटिल हो जाती है, (घ) गूढ़ हो जाती है।

2. समाचार वाचक को ध्यान नहीं रखना चाहिए :

   (क) श्रोताओं का, (ग) सीमित समय का।

   (ख) आरोह-अवरोह, (घ) आने-जाने वालों का।

3. रेडियो समाचार वाचक के कोई दो गुण लिखिए।

38.6 अनुवाद की छाया

कई बार अंग्रेज़ी शब्दों के दुरूह अनुवाद से हमारी भाषा बोझिल बन जाती है तो कभी-कभी अंग्रेज़ी शब्दों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण अपनी भाषा को पहचानना तक मुश्किल हो जाता है। आकाशवाणी के प्रसारणों में टेलीफोन, इंजीनियर, डाक्टर, मशीन, कंप्यूटर, रेलवे स्टेशन, एजेंसी, टीम, स्टांप, क्रीज, मैच, गोल, कंपनी, टैक्नालोजी, कार्टूनिस्ट, कांस्टेबल, फेलो, फोटोग्राफर, बजट, कर्फ्यू आदि अनेक शब्द प्रयोग किए जाते हैं, जो बोलचाल में हिंदी के अपने शब्द बन चुके हैं। दूसरी ओर ऐसे शब्द हैं, जो अंग्रेज़ी तथा हिंदी शब्दों को मिलाकर बने हैं। न वे पूरी तरह अंग्रेज़ी शब्द हैं और न ही संस्कृत के आधार पर उन की रचना की गई है। ये शब्द हैं, रेलगाड़ी, टेलीफोन केंद्र, बस अड्डा, डाक टिकट आदि।

भाषा के प्रचलित रूप के प्रयोग पर बल देने का ही परिणाम है कि आकाशवाणी में एक ही अर्थ को अभिव्यक्त करने के लिए हिंदी तथा अंग्रेजी दोनों पर्याय खुलकर प्रयोग होते हैं। यहाँ यह ध्यान रखने की बात है कि एक ही कार्यक्रम में किसी शब्द का बार-बार प्रयोग करना रोचकता में बाधक होता है। इसलिए किसी अर्थ में एक बार हिंदी शब्द और दूसरी बार उसका प्रचलित अंग्रेज़ी पर्याय प्रयोग कर लिया जाता है। उदाहरण के लिए थाना और पुलिस स्टेशन, स्कूल तथा विद्यालय, कालेज और महाविद्यालय, प्रेस और समाचारपत्र, बिल और विधेयक, समिति और कमेटी, ग्रुप और समूह, इकाई और यूनिट आदि बेझिझक प्रयोग किए जाते हैं। किंतु इसका मतलब यह नहीं कि विश्वविद्यालय के स्थान पर यूनिवर्सिटी, कर्मचारी के लिए एंप्लॉई, सदस्य के लिए मेंबर, अस्वीकार की बजाय रिजेक्ट, खिलाड़ी की जगह प्लेयर या पुलिस चौकी के स्थान पर पुलिस आउटपोस्ट शब्द भी इस्तेमाल किए जाएँ। नहीं, ऐसा नहीं होगा, क्योंकि ये शब्द आम आदमी के गले से नहीं उतरते, जबकि पहले बताए गए शब्द सामान्य हिंदी भाषी व्यक्ति के गले का हार बन चुके हैं। समस्या तब आती है जब किसी ऐसे अंग्रेज़ी शब्द का प्रयोग करना हो, जिसका अपनी भाषा में कोई पर्याय प्रचलित ही न हो। ऐसे में उस शब्द की संक्षिप्त व्याख्या सहित मूल शब्द भी साथ में बोलना चाहिए ताकि श्रोता अर्थ भी समझ लें और शब्द से भी परिचित हो जाएँ। जैसे दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका जन संगठन 'स्वापो' (SWAPO) या दक्षिण एशियाई सहयोग संगठन 'सार्क' (SAARC)। अब 'दक्षेस' का प्रचलन भी हो गया है।

इसी प्रकार हिंदी तथा भारतीय भाषाओं की पत्रकारिता के साथ एक अनिवार्य समस्या यह है, कि बहुत से समाचारों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद किया जाता है।

हमारे देश में विभिन्न क्षेत्रों में अधिकांश काम अंग्रेज़ी में हो रहा है, अतः विविध क्षेत्रों, विभागों, संस्थाओं आदि के समाचारों की मूल सामग्री अंग्रेज़ी में ही तैयार की जाती है। इसलिए समाचारपत्रों की भाषा कभी-कभी कृत्रिम भी लगती है। किंतु यदि कुछ मूलभूत बातों के मामले में सावधानी बरती जाए तो अनुवाद की इस छाया से काफी हद तक बचा जा सकता है। उदाहरण के लिए *"The awards were given away by the Principal."* वाक्य का शाब्दिक अनुवाद होगा *''पुरस्कार प्राचार्य द्वारा दिए गए।''* यह वाक्य सही होते हुए भी हिंदी की अपनी प्रकृति से मेल नहीं खाता। हिंदी कर्तृप्रधान भाषा है, अर्थात हमारे वाक्यों में कर्ता को प्रमुखता दी जाती है जबकि अंग्रेजी कर्मप्रधान भाषा है। उसके वाक्यों में कर्म को प्रधानता मिलती है। इसलिए हमें *'द्वारा'* जैसे शब्द प्रयोगों का मोह छोड़ते हुए अपनी भाषा के स्वभाव के अनुसार उपरोक्त वाक्य का अनुवाद यों करना होगा–*''प्राचार्य महोदय ने पुरस्कार दिए।''*

अंग्रेज़ी में जटिल वाक्य बनाने की परंपरा है। उदाहरण के लिए "The Police, who was present in the Function, immediately controlled the mob which tries to disturb the meeting." वाक्य लें।

यदि हम इस जटिल वाक्य का अनुवाद इसी तरह कर देंगे तो हमारे पाठकों को इसका असली मतलब समझने के लिए इसे तीन बार पढ़ना होगा। हमारी कोशिश यह होनी चाहिए कि वाक्य को पढ़कर उसका अर्थ समझकर उसे अपने शब्दों में छोटे सरल

वाक्यों में लिखें। इसे हम यदि एक वाक्य में लिखना चाहें तो यों लिख सकते हैं, *''समारोह में मौजूद पुलिस ने सभा में गड़बड़ पैदा करने पर उतारू भीड़ पर तत्काल काबू पा लिया।''* इसे मिश्रित वाक्य में भी लिखा जा सकता है, *'' भीड़ ने सभा में गड़बड़ करने की कोशिश की, लेकिन वहाँ मौजूद पुलिस ने तत्काल उस पर काबू पा लिया।''*

अतः निष्कर्ष निकलता है कि

- जटिल वाक्यों को समझने लायक रूप में पेश करने के लिए छोटे-छोटे दो या उससे अधिक वाक्य भी बनाए जा सकते हैं।
- शब्दों का, विशेषकर पारिभाषिक शब्दों का, अनुवाद भी अक्सर करना पड़ता है। इसमें अनुवाद में समरूपता बनाए रखना बहुत ज़रूरी है। किसी पारिभाषिक शब्द का जो हिंदी रूप प्रचलित हो गया है, उसका वही रूप सब जगह इस्तेमाल किया जाए तो ठीक रहता है। जैसे–''नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग'' को कहीं ''राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान'' और कहीं ''राष्ट्रीय खुला विद्यालयी शिक्षा संस्थान'' लिखा जाए तो भ्रम पैदा हो सकता है। अतः एक मानक रूप सुनिश्चित करना आवश्यक है।

यह ठीक है कि अख़बारों का उद्देश्य भाषा का स्वरूप विकसित करना नहीं है, किंतु उसके रूप को बिगाड़ने का भी उन्हें कोई अधिकार नहीं है। कई बार एक अंग्रेज़ी शब्द का दिल्ली के अख़बारों में कोई और पर्याय इस्तेमाल किया जाता है और राजस्थान या मध्यप्रदेश के समाचारपत्रों में भिन्न शब्द प्रयोग किए जाते हैं। सामान्य शब्दों के तो जितने अधिक पर्याय होंगे, उतना ही अधिक प्रभाव पड़ता है, परंतु पारिभाषिक व तकनीकी शब्दावली में एकरूपता और समरूपता आवश्यक है। उदाहरण के लिए 'यूनिवर्स' शब्द के लिए आप ब्रह्मांड, संसार, विश्व, दुनिया कोई भी पर्याय लिख सकते हैं, किंतु जब 'यूनिवर्सिटी' का अनुवाद करेंगे तो उसके लिए 'विश्वविद्यालय' ही लिखा जाना चाहिए।

शब्दों का अनुवाद करते समय संदर्भ का ध्यान रखना चाहिए, क्योंकि कभी-कभी संदर्भ बदलते ही शब्द का अर्थ एकदम बदल जाता है। 'Address' शब्द के दो अर्थ हैं–एक है 'भाषण' तथा दूसरा है 'पता'। आपको यह देखना होगा कि किस संदर्भ में उसका 'पता' पर्याय लिखना है और किस संदर्भ में 'भाषण'। इसी प्रकार 'House' का अर्थ है 'घर' और 'सदन'। एक वाक्य है *"The President announced this in his address to the House"*. दूसरा वाक्य है *"Please give your House Address"*. इन दोनों वाक्यों में 'House' तथा 'Address' शब्द आए हैं परंतु इनके अर्थ एकदम अलग हैं। पहले वाक्य में इनका अर्थ 'सदन' और 'भाषण' है तो दूसरे वाक्य में 'घर' और 'पता' है।

पाठगत प्रश्न 38.4

निम्नलिखित कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही कथन पर (√) तथा ग़लत कथन पर (×) का चिह्न लगाइए :

1. शब्दशः अनुवाद के कारण भाषा कृत्रिम लगती है। ( )
2. अंग्रेज़ी कर्म प्रधान भाषा है जबकि हिंदी कर्तृप्रधान । ( )
3. अनुवाद में शब्द पर नहीं अर्थ पर ध्यान दिया जाना चाहिए। ( )
4. विदेशी शब्दों का प्रयोग बिल्कुल नहीं करना चाहिए। ( )

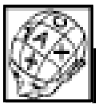

38.7 आपने क्या सीखा

1. भाषा संचार माध्यमों का प्राण है।
2. समाचारपत्रों की भाषा रेडियो और दूरदर्शन की भाषा से भिन्न होती है।
3. समाचारपत्रों की भाषा में शब्द और वाक्य रचना सरल और सीधी होती है, जिससे वह उस जन-समूह तक पहुँच सके, जहाँ कम पढ़े-लिखे मजदूर और विश्वविद्यालय के शिक्षक तथा विद्वान रहते हैं।
4. रेडियो और दूरदर्शन की भाषा आम बोलचाल की भाषा होती है, जिसे अनपढ़, साक्षर और पढ़े-लिखे विद्वान व्यक्ति भी सुनते और देखते हैं।
5. संचार माध्यमों में जटिल और बोझिल भाषा के प्रयोग से बचा जाता है।
6. दूरदर्शन में भाषा प्रयोग अपेक्षाकृत कम होता है, क्योंकि उसमें चित्रों और दृश्यों का प्रयोग अधिक किया जाता है।
7. अनुवाद से संचार माध्यमों की भाषा दुरूह और बोझिल हो जाती है। इससे बचने के लिए लक्ष्य भाषा में उन्हीं शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जो सरलता से खप जाएँ और भाषा में रवानी पैदा करें।
8. समाचारवाचक में मधुर आवाज़, प्रभावी वाचन, और समाचार संपादन का गुण होना आवश्यक है। लाखों-करोड़ों श्रोताओं और दर्शकों तक अपनी बात को सही-सही अर्थों में पहुँचाना समाचार वाचक का बहुत बड़ा दायित्व है।

38.8 योग्यता विस्तार

1. हिंदी के प्रचलित समाचारपत्रों को पढ़िए और उसकी भाषा का मिलान अपनी इस पुस्तक की भाषा से कीजिए।
2. इस पुस्तक में पीछे दी गई पारिभाषिक शब्दावली को पढ़िए और समाचारपत्रों में उनके प्रयोग पर ध्यान दीजिए।
3. आकाशवाणी से धीमी गति से प्रसारित समाचारों को सुनिए और साथ-साथ लिखिए।
4. दूरदर्शन का राष्ट्रीय प्रसारण, आज तक, एनडीटीवी इंडिया, टोटल टी.वी. आदि से प्रसारित समाचारों को सुनिए और भाषा में अंतर नोट कीजिए।

38.9 पाठांत प्रश्न

1. संचार माध्यमों में प्रयुक्त भाषा की प्रमुख विशेषताएँ लिखिए।
2. ''समाचारपत्रों में प्रयोग की जाने वाली वर्तनी में एकरूपता होनी चाहिए'' से क्या तात्पर्य है? इसे किस प्रकार सुरक्षित रखा जा सकता है?
3. रेडियो और दूरदर्शन की भाषा में क्या अंतर होता है, स्पष्ट कीजिए।
4. संचार माध्यमों में अनुवाद की आवश्यकता क्यों पड़ती है तथा उसका भाषा पर क्या प्रभाव पड़ता है?
5. अनुवाद में संदर्भ का क्या महत्त्व है? उदाहरण दे कर सुस्पष्ट कीजिए।
6. हिंदी अखबारों और इलैक्ट्रानिक समाचार माध्यमों में भाषा और वर्तनी संबंधी एकरूपता का अभाव देखने को मिलता है। शब्दों के उच्चारण में भी असमानताएँ हैं। इस विषय में एक आलेख तैयार करें।
7. क्या प्रसारण माध्यमों की प्रवृत्ति और स्वरूप से संचार माध्यमों की भाषा का स्वरूप बदला है। सोदाहरण टिप्पणी कीजिए।

38.10 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

38.1 1. (क) निर्जीव (ख) अंतर (ग) अधिक, विकास (घ) भिन्न

2. रेडियो या दूरदर्शन में प्रयुक्त भाषा, लिखित रूप में

38.2 1. सरलता 2. गुण, अवगुण 3. सीखने 4. अभाव, माध्यम 5. वर्तनी

38.3 1. (ग) 2. (घ)

3. स्पष्ट और प्रभावी आवाज़, समाचार के हाव-भाव के अनुसार लय पूर्ण स्वर

38.4 1. (√) 2. (√) 3. (√) 4. (×)

301hi38B

38
विज्ञान की भाषा

मान लीजिए आपने किसी पत्रिका या समाचार-पत्र में आधुनिक वैज्ञानिक विकास पर निम्नलिखित वाक्य पढ़ा—

> *<u>सूचना प्रौद्योगिकी</u> में हुए अभूतपूर्व विकास के कारण सूचना क्षेत्र की गतिविधियों को विशेष बल मिलता है और <u>संचार-साधनों</u> की कार्यकुशलता में अपार वृद्धि हुई है।*

यह कथन आपको कितना समझ में आ रहा है? दूसरे शब्दों में इस कथन में कौन-कौन से शब्द बाधा पहुँचा रहे हैं। वास्तव में इस वाक्य को ठीक से समझने के लिए दो शब्दों का अर्थ जानना आवश्यक है—**सूचना प्रौद्योगिकी** और **संचार-साधन।** इन शब्दों की जानकारी न होने पर भी निम्नलिखित बातें स्पष्ट हो रही हैं—

सूचना प्रौद्योगिकी से

(i) सूचना क्षेत्र की गतिविधियाँ बढ़ी हैं।

(ii) संचार-साधन की कार्यकुशलता बढ़ी है।

इनके बारे में आगे विस्तार से चर्चा करेंगे।

विज्ञान की भाषा के संदर्भ में हम इस पाठ में शब्दावली, संकेत आदि विशेषताओं का अध्ययन करेंगे, जिससे आप ज्ञान-विज्ञान संबंधी पाठों को आसानी से पढ़ सकेंगे और इन्हीं शब्दों और संकेतों का प्रयोग करते हुए अपने विचार अभिव्यक्त कर सकेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- सामान्य भाषा और विज्ञान की भाषा में अंतर कर सकेंगे;
- विज्ञान की भाषा के प्रमुख अभिलक्षणों पर टिप्पणी कर सकेंगे;
- वैज्ञानिक साहित्य में पारिभाषिक शब्दावली की भूमिका बता सकेंगे;

- भाषा में वैज्ञानिक शब्दों का ठीक से प्रयोग करना सीख सकेंगे;
- विज्ञान की भाषा के बोधन के विकास के लिए तालिका, सारणी, चार्ट आदि सहयोगी साधनों के महत्त्व को स्पष्ट कर सकेंगे; और
- वैज्ञानिक विषयों के तार्किक प्रस्तुतीकरण की विधि बता सकेंगे।

टिप्पणी

क्रियाकलाप

नीचे लिखे अनुच्छेदों को ध्यानपूर्वक पढ़िए–

अनुच्छेद (क)

पृथ्वी ग्रह के चारों ओर कार्बन मोनो-आक्साइड व कार्बन डाई-आक्साइड मिश्रित दूषित वायु की तेज आँधियाँ चल रही थीं जिस कारण तापमान बढ़कर लगभग 75 डिग्री सेल्सियस तक जा पहुँचा। ओजोन की परत पूर्णतः नष्ट हो जाने के कारण सूर्य से निकलने वाली पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर पड़ रही थीं।

पृथ्वी पर केवल वे ही प्राणी और वनस्पतियाँ जीवित बचे जिन्होंने डार्विन के ''प्राकृतिक चयन'' और ''योग्यतम की उत्तरजीविता'' सिद्धांतों के अनुरूप स्वयं को प्राकृतिक परिवर्तन के अनुसार अनुकूल बना लिया था। प्राकृतिक आपदाओं का सामना न कर पाने वाले जीव समाप्त हो गए थे।

अनुच्छेद (ख)

पृथ्वी का संपूर्ण वातावरण दूषित हो चला था। दूषित हवाओं की तेज आँधियों के चलने के कारण तापमान बढ़ गया था और अत्यधिक गर्मी पड़ने लगी थी। सूरज की घातक किरणें वायुमंडल को भेद कर पृथ्वी पर उड़ रही थीं।

पृथ्वी पर वे ही जीव-जंतु जीवित रह पाए, जो इस भीषण गर्मी और घातक किरणों के प्रभाव से बच सके। जो इस प्रभाव की चपेट में आए, वे सब नष्ट हो गए, महान वैज्ञानिक डार्विन के मत के अनुसार समर्थ रह गए, कमजोर बह गए।

क्या आपने उपर्युक्त दोनों अनुच्छेदों को पढ़ा? आपको पहले अंश की अपेक्षा दूसरा अंश अधिक सरल लगा होगा क्योंकि यह बोलचाल की भाषा के निकट है। पहले अनुच्छेद में कई पारिभाषिक शब्द हैं, जैसे–ओजोन की परत, पराबैंगनी किरणें, 'योग्यतम की उत्तरजीविता' जो इसे समझने में बाधा पैदा करते हैं। पहला अनुच्छेद विज्ञान की भाषा में है, दूसरा अंश लोकप्रिय विज्ञान वार्ता है, जो आम आदमी (हाँ, पढ़े–लिखे जरूर पर वैज्ञानिक क्षेत्र के नहीं) के लिए लिखा गया है।

38.1 आइए समझें

भाषा और विज्ञान की भाषा

क्या आप जानते हैं प्रस्तुत पाठ में भाषा से हमारा क्या अभिप्राय है? क्या केवल हिंदी,

अंग्रेजी, या जर्मन, फ्रैंच, आदि भाषाएँ या फिर कोई और? यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इस पाठ में भाषा से अभिप्राय विज्ञान की भाषा से है।

टिप्पणी

भाषा के अनेक रूप होते हैं। भाषा कवियों और लेखकों के पास जाकर जहाँ साहित्यिक हो जाती है वहीं वैज्ञानिकों के पास आकर अधिक कथनात्मक, तथ्यात्मक तथा तार्किक हो जाती है। विज्ञान की भाषा सरल, सार्वभौमिक और तार्किक होती है। उदाहरण के लिए 'पानी' शब्द को देखें। यह 'पानी' शब्द कवियों के लिए आँख से जुड़कर 'शर्म' और 'अश्रु' बनता है तो गंगा के साथ संबद्ध होकर श्रद्धेय 'गंगाजल' या 'मोक्षदायक जल' कहलाता है परंतु वैज्ञानिकों के पास आकर यही पानी सारी भावनाओं से दूर मात्र एक तरल पदार्थ है, जिसे H_2O सूत्र द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। (H_2O) अंग्रेजी तथा गणित के अक्षरों और अंकों का समूह मात्र नहीं है, बल्कि एक विशिष्ट श्रेणी का परिचायक पदार्थ है। यह विज्ञान में ठोस, द्रव या गैस तीनों अवस्थाओं में प्राप्त होता है। ये अवस्थाएँ विभिन्न ताप पर उपलब्ध होती हैं। द्रव रूप में जल सामान्य ताप पर तरल अवस्था में होता है। ताप बढ़ाने पर गैस और इसका ताप कम करने पर ठोस बर्फ के रूप में प्राप्त किया जा सकता है।

साधारणतः लेखक, पाठक को ध्यान में रखकर सरल अथवा अपेक्षाकृत कठिन अथवा साहित्यिक या सूचनापरक भाषा लिखते हैं परंतु विज्ञान की भाषा साहित्यिक भाषा से भिन्न है, यह हम ऊपर बता चुके हैं। यह भाषा पर विज्ञान का प्रभाव दर्शाता है। इसका सीधा संबंध वैज्ञानिक खोजों और उपलब्धियों से है, जिन्हें भाषा के कारण ही आज हम पढ़ अथवा सुन पाते हैं। वर्षों से वैज्ञानिक सूचनाएँ, तथ्य, प्रक्रियाएँ आदि भिन्न-भिन्न भाषाओं में संगृहीत होती रही हैं तथा समय के साथ सूत्रों में बंध कर तथा अन्य भाषाओं में अनूदित होकर समाज को लाभ पहुँचाती रही हैं। उदाहरण के लिए यदि आज हम कोई नया प्रयोग करें, कोई नया सिद्धांत कायम करें तो वह एक नई खोज कहलाएगी और उसे भाषा में लिपिबद्ध कर लें तो दूसरे लोग लंबे समय तक उससे लाभ उठा सकते हैं। इसके लिए हमें भाषा तथा चित्रों के माध्यम से उसे सँजोना ही होगा अन्यथा हम अपने प्रयोग को अपने जीवन की सीमित अवधि में सीमित लोगों तक ही पहुँचा पाएँगे। भावी पीढ़ी उसके लाभ से वंचित रह जाएगी।

38.2 विज्ञान की भाषा की विशेषताएँ

अभी हमने पढ़ा कि किस प्रकार विज्ञान की भाषा सरल-सहज और आम बोल-चाल की भाषा से भिन्न होती है। इसकी कई विशेषताएँ हैं, आइए, उन्हें भी जानें।

विज्ञान की भाषा सुनिश्चित, स्पष्ट और सुबोध होती है। वैज्ञानिक अपनी बात को सरल भाषा में तर्कपूर्ण ढंग से कहता है। वह वाक्यों का दुहराव, अनावश्यक विस्तार और क्लिष्ट शब्द जाल से बचता है। विज्ञान में स्पष्टता और यथार्थता का बहुत महत्त्व है। सहजता, सरलता और सीधे-सीधे बात को कहना, वैज्ञानिक भाषा का गुण है।

विज्ञान की भाषा की एक विशेषता है–**तार्किकता** अर्थात् जिसे तर्क से सिद्ध किया जा सके, जिसमें कार्य-कारण संबंध स्पष्ट नज़र आए। विज्ञान की भाषा में 'जहाँ तक हो सके...', 'माना जाए तो ...', 'ऐसा हो जाए तो...' 'कभी-कभी... ' जैसे शब्दों के लिए स्थान कम होता है अर्थात् इसका स्वरूप ऐसा होता है जिसमें सभी कुछ निश्चित होता है। सामान्यतः जब हम जीवन में विज्ञानेतर क्षेत्रों में भाषा का प्रयोग करते हैं तब बहुत-सी अनिश्चितताओं भरी बातें आती हैं तथा हम उन्हें तर्क की कसौटी पर बिना कसे ही मान लेते हैं और अपना लेते हैं। तब इस प्रकार की अनिश्चितता बताने वाले शब्दों का प्रयोग होता है। हमारे यहाँ प्रचलित विभिन्न अंधविश्वास और रूढ़ियाँ इसका प्रमाण हैं। उदाहरण के लिए, बिल्ली का रास्ता काटना कुछ लोग अशुभ मानते हैं, जबकि किसी अन्य से पूछें तो वह कहेगा कि अपनी-अपनी मानने की बात है। मुझे तो ऐसा नहीं लगता है। कोई कहेगा कि मैंने अक्सर देखा है कि जब-जब बिल्ली मेरे आगे से गई है तब-तब मैं जिस काम के लिए जा रहा था वह बिगड़ गया। कोई कहेगा कि मेरे परिवार के वृद्धजन इसे अशुभ मानते हैं अतः मैं भी मानता हूँ और मेरे घर में यह माना जाता है।

अभिप्राय यह है कि इन मान्यताओं के पीछे कोई ठोस सत्य नहीं होता। इस प्रकार की अनेक मान्यताओं को ऐसे ही मान लिया जाता है। पर यदि विज्ञान के क्षेत्र में कुछ घटित होता है तो वह आस्था, विश्वास, अंधविश्वास की बात नहीं रह जाती, उसके पीछे के कारण को हम जानने का प्रयास करें तो उसे जानने में सक्षम भी हो जाएँगे क्योंकि विज्ञान प्रयोगों द्वारा सिद्ध करके ही हमें कुछ सिद्धांत देता है तथा हम उसकी वास्तविकता की जाँच स्वयं भी कर सकते हैं क्योंकि वह विज्ञान पर आधारित होता है। विज्ञान के हर कार्य के पीछे कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है, तर्क अवश्य होता है। इसी कारण विज्ञान की भाषा भी **तार्किक** होती है।

आइए, इससे संबंधित एक वैज्ञानिक उदाहरण की चर्चा करें–हम साधारण अवस्था में बच्चों को समझाते हुए कह सकते हैं कि गर्मी आ गई है, घड़े में पानी रखना शुरू कर दो। पर यदि बच्चे पूछें, क्यों? तब इसका जवाब यह नहीं होगा कि हमारे पूर्वज ऐसा ही करते आए हैं या कि हमारा मन कहता है कि घड़े में पानी रखना अच्छा होता है। हमें इसका वैज्ञानिक कारण उन्हें बताना होगा कि गर्मियों में घड़े में पानी ठंडा रहता है, वह इसलिए क्योंकि मिट्टी के घड़े में छोटे-छोटे छिद्र होते हैं जिनमें से पानी लगातार रिसता रहता है। यह पानी गर्मियों की शुष्क हवा के कारण शीघ्र ही भाप बन जाता है। इस प्रकार मटके के चारों तरफ की वायु में नमी रहती है और घड़े में रखा पानी ठंडा बना रहता है। यह सच्चाई है, जिसे आप स्वयं भी जाँच सकते हैं।

इसी प्रकार यदि हम कहें कि 'रात को आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे' तो साहित्यिक भाषा में संदर्भ के अनुसार इसका प्रतीक अर्थ, निराशा में थोड़ी-सी आशा भी हो सकता है। पर विज्ञान में टिमटिमाने का यह स्पष्ट कारण है कि तारों का प्रकाश व्यक्ति की आँखों तक वायु में से गुजर कर आता है। हम सभी जानते हैं कि वायु निरंतर गतिशील रहती है और उसकी तहों की सघनता बदलती रहती है इसलिए तारों से आने वाली किरणें भिन्न-भिन्न कोणों में मुड़ी रहती हैं, जिसके कारण रात को तारे टिमटिमाते हुए दिखाई देते हैं।

प्रयोगों द्वारा हर सिद्धांत की पुष्टि किए जाने के कारण वैज्ञानिक प्रक्रिया पर्याप्त लंबी होती है जिसे भाषा में बाँधने पर अधिक विस्तार हो जाता है और कभी-कभी तो भाषा में विवरण देना बहुत जटिल हो जाता है, अतः लघु रूप में तथ्यों को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करना ही विज्ञान की भाषा की विशेषता है, इसलिए यह सूत्रबद्ध तरीके से हर घटना की व्याख्या करने में सक्षम होती हैं सूत्रबद्धता के कारण ही बड़ी-से-बड़ी और लंबी-से-लंबी प्रक्रिया को कम स्थान और समय में समझा जा सकता है। सूत्रों के प्रयोग से ही वैज्ञानिक भाषा में संक्षिप्तता आती है। हम सभी जानते हैं कि विज्ञान में किसी भी क्रिया का कोई-न-कोई कारण अवश्य होता है अतः वैज्ञानिक तथ्यों में सदैव कार्य-कारण संबंध होता है और भाषा में भी **कार्य-कारण संबंध** स्पष्ट झलकता है।

उदाहरण के लिए हम कहें कि खाने का सोडा, जिसे वैज्ञानिक भाषा में सोडियम बाइकार्बोनेट कहते हैं, सोडियम कार्बोनेट तथा कार्बन डाइ-ऑक्साइड की अभिक्रिया से बनाया जाता है। यह हमने हिंदी में देवनागरी लिपि में लिखा, परंतु इसी बात को हम वैज्ञानिक सूत्रों के सहयोग से समीकरण द्वारा भी कह सकते हैं। जैसे–

$$Na_2\,Co_3\,(aq) + Co_2\,(g) + H_2O\,(l) \longrightarrow 2\,NaHCo_3\,\,(aq)$$

(सोडियम कार्बोनेट) (कार्बन डाइ-आक्साइड) (पानी) (सोडियम बाईकार्बोनेट)

इसी प्रकार सोडियम कार्बोनेट अथवा धोने का सोडा (Na_2Co_3) अथवा सोडा क्षार सॉल्वे प्रक्रम अथवा अमोनिया सोडा प्रक्रम द्वारा बनाया जाता है। इस प्रकार सूत्रबद्ध रूप में प्रक्रियाओं का वर्णन विज्ञान की भाषा की विशेषता है।

38.2.1 पारिभाषिक शब्दावली

विज्ञान की भाषा की प्रमुख विशेषता है उसकी विशिष्ट पारिभाषिक शब्दावली। क्या आप बता सकते हैं कि पारिभाषिक शब्दों की आवश्यकता क्यों होती है? वह सामान्य भाषा के शब्दों से भिन्न क्यों है? आइए, इन सवालों के उत्तर जानने का प्रयास करें।

पाठ के प्रारंभ में आपने पत्रिका में दी हुई कुछ पंक्तियाँ पढ़ी थीं, उन्हें पुनः पढ़िए इन पंक्तियों में दो शब्दों 'सूचना प्रौद्योगिकी' और 'संचार-साधन' के कारण कठिनाई पैदा हो रही थी। आइए, उस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए इन शब्दों के अर्थ जानने का यत्न करते हैं।

उक्त उदाहरण से यह स्पष्ट है कि विज्ञान की भाषा में विशिष्ट शब्दों और संकल्पनाओं का अर्थ स्पष्ट न होने पर चीजों को समझना कठिन हो जाता है। ये शब्द और संकल्पनाएँ विज्ञान की विभिन्न शाखाओं और रूपों में वैज्ञानिक प्रकृति के अनुसार असंख्य रूपों में विद्यमान हैं, परंतु विज्ञान के निश्चित क्षेत्र में ये निश्चित अर्थ ही देते हैं। इसे विस्तार से जानने के लिए आइए, इन्हें ठीक से समझें–**सूचना प्रौद्योगिकी** विज्ञान का वह क्षेत्र है जिसमें कंप्यूटर, उपग्रह आदि के द्वारा सूचनाएँ भेजना, उनका उपयोग करना, सूचनाएँ प्राप्त करना आदि कार्य समाविष्ट हैं। सूचना प्रौद्योगिकी में इंटरनेट, टेलीविजन, रेडियो, संचार प्रणाली, टेलीफोन तंत्र आदि

टिप्पणी

व्यवस्थाएँ आती हैं, जो आम उपभोक्ताओं को सूचनाएँ भेजती और प्राप्त करती हैं। संचार-साधन के अंतर्गत रेडियो सेट, घर का टेलीविजन सेट, टेलीफोन, कंप्यूटर सेट आदि शामिल हैं। इस पुस्तक के प्रारंभिक पृष्ठों में आप इनके बारे में सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी' माड्यूल में विस्तार के पढ़ सकते हैं। अब हम **संचार-साधनों** की कार्यकुशलता की चर्चा कर लें। वास्तव में व्यक्ति कार्यकुशल (या कार्य करने में कुशल) होते हैं। यंत्र की कार्यकुशलता होने का तात्पर्य है कि वे पहले की अपेक्षा अधिक सुविधाओं पर प्रदान करते हैं। इन शब्दों के ज्ञान से आप इस कथन को अच्छे ढंग से समझ सकते हैं। ये शब्द पारिभाषिक शब्द कहे जाते हैं।

इस संदर्भ में यहाँ प्रयुक्त 'बल' शब्द पारिभाषिक शब्द नहीं है। भौतिकी में बल (force) पारिभाषिक शब्द है। यहाँ बल मिलना सामान्य भाषा में प्रयुक्त होने वाला शब्द प्रयोग है।

इसी तरह रसायन विज्ञान की एक अभिक्रिया को लीजिए।

$$2H_2 + O_2 \longrightarrow 2H_2O$$

जो व्यक्ति रसायन विज्ञान की संकल्पनाओं से अपरिचित है, वह इस अभिक्रिया को नहीं जान सकता। इसे जानने के लिए इन संकेतों को जानना आवश्यक है–

H– हाइड्रोजन, O– आक्सीजन, H_2O– पानी

हम खाने में नमक का प्रयोग करते हैं। वैज्ञानिक इसे क्षार कहते हैं क्योंकि यह एक विशिष्ट क्षार तत्त्व सोडियम क्लोराइड (NaCl) है। रसायन विज्ञान में और भी क्षार तत्त्व हैं, जैसे अमोनियम सल्फेट, सोडियम कार्बोनेट। हम इन सबको नमक नहीं कह सकते, न ही इन्हें खा सकते हैं। क्षार एक बड़े वर्ग के पदार्थों का नाम है। उसको नमक कहेंगे, तो खाने के नमक से अंतर नहीं कर पाएँगे। 'क्षार' रसायन शास्त्र का पारिभाषिक शब्द हैं, नमक बोलचाल का शब्द है।

कुछ शब्द ऐसे भी होते हैं जो अधिकतर जीव विज्ञान के संदर्भ में ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे– सरीसृप, स्तनपायी, अंडज इत्यादि। सामान्य लोग इनका प्रयोग बहुत ही कम करते हैं। यदि सामान्य व्यक्ति इनके बारे में बताना भी चाहेंगे तो कहेंगे कि रेंगने वाले जानवर (सरीसृप), बच्चों को स्तनपान कराने वाले जानवर (स्तनपायी) और अंडे देने वाले प्राणी (अंडज)। ये तीनों शब्द, वैज्ञानिक और पारिभाषिक शब्द हैं जिनसे सामान्य व्यक्ति परिचित नहीं होता जबकि विज्ञान के क्षेत्र में ये पारिभाषिक शब्द सार्वभौमिक होते हैं। विशिष्ट लक्षणों से युक्त होने के कारण उसमें कुछ ऐसे तत्त्व होते हैं जो सब स्थानों और सब कालों में समान ही रहते हैं।

इसी तरह एक बोलचाल का शब्द है–रफ्तार (Speed) लेकिन भौतिक विज्ञान में यह गति (velocity) और त्वरण (acceleration) का मिला-जुला रूप है और इन दोनों में अंतर है। गति किसी एक समय में विद्यमान स्थिर गति (Constant Speed) को प्रकट करती है, जबकि त्वरण में गति स्थिर न रहकर बदलती रहती है, जैसे-गाड़ी पल-पल में गति बढ़ाते हुए 30,40,45 की रफ्तार पकड़ती है। इस अंतर को हम बोलचाल की भाषा में प्रकट नहीं कर सकते।

इसी प्रकार उदाहरण के लिए सामान्य भाषा में हम कहते हैं कि उस लड़के में बहुत ऊर्जा (energy) है। यहाँ यह शब्द ताकत (strength) या शक्ति (Power) का पर्याय है, जो बोलचाल का शब्द है। लेकिन, भौतिक विज्ञान में हम ऊर्जा (energy), बल (force) आदि शब्दों को विशिष्ट अर्थों में प्रकट करते हैं। 'बल' लगाने से गाड़ी चलती है, उस 'बल' को हम ऊर्जा के मान से मापते हैं, जैसे–इस कार्य में किस प्रकार की और कितनी ऊर्जा खर्च होती है।

टिप्पणी

हिंदी में अनेक शब्द ऐसे हैं जो मूल शब्द एक होते हुए भी विभिन्न क्षेत्रों में अलग-अलग पर विशिष्ट अर्थ देते हैं। एक ही शब्द भिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ रखते हैं। आइए, इस प्रकार के उदाहरण देखें–

एक 'मूल' शब्द के भिन्न संदर्भों में भिन्न अर्थ

'मूल' (root)

वनस्पति विज्ञान 'जड़'	हिंदी व्याकरण में 'धातु'	गणित 'मूल' (वर्गमूल)
↓	↓	↓
बरगद के पेड़ की जड़ें दूर-दूर तक फैली होती हैं।	'चल' धातु से चलना, चलाना, चलाया जाना आदि	एक सौ का वर्गमूल दस होगा। $\sqrt{100} = 10$

इसी प्रकार उदाहरण के लिए 'वेग' शब्द का विभिन्न क्षेत्रों में प्रयोग देखिए–

'वेग'

मनोवेग	प्रवाह	शक्ति
(मन+वेग)	नदी का वेग	शारीरिक वेग
मनोविज्ञान में	वेग + मापी	
	वेग + रोधक	
	वेग + वृद्धि	

'धातु' शब्द के भी विविध विषय क्षेत्रों से संबंधित अलग-अलग अर्थ हैं, उदाहरण के लिए खनिज क्षेत्रों में लोहा ताँबा आदि पदार्थ। व्याकरण में शब्द का मूल रूप धातु कहलाता है और जीव विज्ञान में रक्त, मज्जा आदि शरीर में उपस्थित पदार्थ भी धातु ही हैं। जीव विज्ञान में 'द्रव' शब्द से शरीर में विद्यमान हार्मोन, एन्जाइम, पानी, प्लाज़्मा सभी का बोध नहीं किया जा सकता। 'द्रव' भौतिक विज्ञान का शब्द है जो किसी भी पदार्थ की तरल अवस्था को सूचित करता है। जैसे 'बर्फ' जल की 'ठोस' अवस्था है, पानी 'द्रव' है, भाप 'वाष्प' की स्थिति है। सामान्य बोलचाल की भाषा में तरल पदार्थों को अलग-अलग बताया जाता है, जैसे–हार्मोन, एन्ज़ाइम, रेड ब्लड सैल

(आर. बी. सी.), वाइट ब्लड सैल (डब्ल्यू. बी. सी.) आदि के संदर्भ में पारिभाषिक शब्दों का उपयुक्त प्रयोग आवश्यक होता है।

टिप्पणी

अकसर यह सवाल किया जाता है कि हम सामान्य बोलचाल के शब्दों को ही पारिभाषिक अर्थ में क्यों न ले लें? यदि हमारे पास सामान्य बोलचाल में 'सतह' शब्द है, तो विज्ञान में 'तल' क्यों बनाते हैं? वह इसलिए क्योंकि 'सतह' शब्द से हम अन्य नए शब्द आसानी से नहीं बना सकते जबकि 'तल' शब्द से अन्य शब्द बनाना और समझना आसान होता है, जैसेः—

सम = बराबर, एक-सा
उत् = ऊपर
अव = नीचे

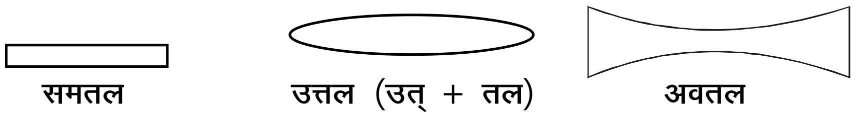

इसी तरह तलीय (तल से संबंधित), समतलन (तल को सम बनाना) आदि शब्द भी निर्मित किए जा सकते हैं।

पारिभाषिक शब्द विषय विशेष की विशिष्ट संकल्पनाओं के शब्द हैं। ये संकल्पनाएँ समझ में आ जाएँ तो भाषा आसानी से समझ में आ सकती हैं।

भौतिकी विज्ञान की भाषा

आप जानते हैं कि किसी वस्तु को सरकाने के लिए हम 'ताकत' लगाने की बात करते हैं। कितनी ताकत? इसका हिसाब कैसे लगाएँगे? आप जानते हैं कि हम बीस किलो के पत्थर को आसानी से नहीं सरका सकते, जबकि 100 किलो की मोटर-गाड़ी को सरका सकते हैं। दरअसल, इसका कारण घर्षण बल से जुड़ा हुआ है। घर्षण बल किसी भी वस्तु की गति का विरोध करता है और लगाए गए बल की विपरीत दिशा में कार्य करता है। घर्षण बल मुख्यतः दो बातों पर निर्भर करता है—एक तो वस्तु पर लगने वाला अभिक्रिया बल जो कि प्रायः वस्तु के भार के समानुपाती होता है तथा दूसरे वस्तु और सतह के मध्य खुरदरापन या चिकनापन पर। यदि आप किसी गेंद को संगमरमर या काँच के फर्श पर लुढ़काएँगे तो आपको अंदाजा लग जाएगा कि चिकने फर्श पर घर्षण कम होता है। इसके अलावा किसी वस्तु को खिसकाने की अपेक्षा लुढ़काने में भी घर्षण बल कम लगता है क्योंकि ऐसी स्थिति में गति का घर्षण बल कम लगता है और गति का घर्षण गुणांक अपेक्षाकृत कम होता है।

घर्षण बल = घर्षण गुणांक x अभिक्रिया बल

तथा कार्यकारी बल = लगाया गया बल − घर्षण बल

यही कार्यकारी बल वस्तु को गति प्रदान करता है।

इसलिए पत्थर सरकाते समय नेट बल (net force) कम हो जाता है।

बल − घर्षण बल = नेट बल।

वही नेट बल वस्तु को गति देने का निर्णायक तत्त्व है। हम गणितीय ढंग से बता सकते हैं कि कितने वज़न को सरकाने के लिए कितना नेट बल चाहिए।

इस चर्चा से स्पष्ट होता है कि इस संदर्भ में 'बल' शब्द का प्रयोग वस्तु की गति को नापने के लिए आवश्यक है जिसे लगाए गए बल, घर्षण के बाद प्राप्त नेट बल (net force) के संदर्भ में समझा जा सकता है। बोलचाल का शब्द 'ताकत' इस प्रक्रिया को समझाने में समर्थ नहीं है।

टिप्पणी

38.2.2 सूत्रबद्धता

उपर्युक्त चर्चा से एक बात स्पष्ट रूप से हमारे सामने आती है। नेट बल की संकल्पना जानने के बाद हम उसकी परिगणना का सूत्र बना सकते हैं। भौतिक विज्ञान, गणित आदि विषय क्षेत्रों में सूत्रबद्ध कथन की बहुतायत है। उदाहरण के लिए किसी क्षेत्र का क्षेत्रफल मालूम करने के लिए एक सूत्र है–

खेत का क्षेत्रफल = लंबाई x चौड़ाई (Area = length x width)

गणित की भाषा

अर्थात् लंबाई का चौड़ाई से गुणा करें तो हमें क्षेत्रफल मिलता है। इसका संक्षिप्त सूत्र होगा $A=l \times w$ या $A = l.w.$ इसी तरह वृत्त के क्षेत्रफल का सूत्र πr^2 है । यानी हम 22/7 को वृत्त की त्रिज्या के वर्ग से गुणा करें। गणित के जानकार इन गणितीय सूत्रों को देखते ही समझ जाते हैं कि क्या कहा जा रहा है। गणितीय सवाल भी इस तरह बनाए जाते हैं। उदाहरण के लिए–

मान लीजिए $\times = 3$

ज्ञात/कीजिए $2\times^2 + 4\times + 3$ (या) सिद्ध कीजिए $2\times^2 - 4\times - 6 = 0$

$2(3)^2 - 4(3)^{-6} = 0$
$2\times 9 - 12 - 6 = 0$
$18 - 12 - 6 = 0$
$6 - 6 = 0$

इन प्रश्नों को अगर उच्चरित भाषा में करें, तो वह उतना बोधगम्य नहीं होगा।

रसायन विज्ञान की भाषा

रसायन विज्ञान में भी हम मूल तत्त्वों तथा अणुओं/आयनों को संकेतों से दिखाते हैं। जैसे– Na सोडियम, Cl क्लोरिन, O आक्सीजन, H हाइड्रोजन, NaCl सोडियम क्लोराइड का सूत्र है, H_2O पानी का आदि। इसी तरह हम अभिक्रियाओं (reaction) को भी सूत्रबद्ध ढंग से दिखाते हैं।

$$H_2O + ...x. \longrightarrow y$$

रसायन विज्ञान की भाषा में इस अभिक्रिया को सामान्य शब्दों में कहें तो वाक्य बनेगा, पानी के साथ ...x... को मिलाया जाए तो ...y... बनता है।

यह एक सरल अभिक्रिया है, लेकिन जटिल अभिक्रिया को भाषा के माध्यम से व्यक्त करना बहुत कठिन होता है।

38.2.3 संक्षिप्तता

वैज्ञानिक भाषा की एक अन्य विशेषता इसकी संक्षिप्तता है।

इसे ऐसे समझने का प्रयास करें, मान लीजिए एक शब्द है 'वाष्पन', विज्ञान से जुड़े विद्यार्थी जानते हैं कि यह एक प्रक्रिया या प्रविधि है, जिसका अभिप्राय है, 'द्रव' से

टिप्पणी

जीव विज्ञान की भाषा

गैस अथवा 'वाष्प' बनने की प्रक्रिया। ऐसा ही एक शब्द है–'परपोषण' जिसका अर्थ है–वे जीव जो अपना भोजन दूसरों से प्राप्त करते हैं। वे अपना भोजन स्वयं नहीं बना पाते यानी कि अकार्बनिक पदार्थों से अपना भोजन बना सकने वाले प्राणियों पर निर्भर रहना और 'स्वपोषी' (अपना भोजन स्वयं बनाने वाले प्राणीयों) या सड़े-गले कार्बनिक पदार्थों से पोषण प्राप्त करना और अपना जीवनयापन करना ही 'परपोषण' कहलाता है।

उपर्युक्त उदाहरणों में वास्तव में 'परपोषण' अपने में गहन अर्थ लिए है जिसे समझाते हुए अनेक शब्दों का प्रयोग करना पड़ता है। परंतु संदर्भ में प्रयोग करते समय इतना ही कहना पर्याप्त हैं कि अमुक जीव 'परपोषी' या 'स्वपोषी' है। इसी प्रकार किसी भी प्रविधि जैसे–कपड़े धोने का सोडा बनाने की प्रविधि का हम चाहें तो कुछ सूत्रबद्ध पंक्तियों की बजाय सामान्य भाषा का प्रयोग करते हुए, पाँच पृष्ठों में भी बता सकते हैं। विज्ञान से इतर विषयों जैसे साहित्य, सामाजिक ज्ञान, गृहविज्ञान आदि विषयों में प्रायः एक ही बात को विस्तारपूर्वक कहा जाता है। उदाहणार्थ कपड़े धोने का सोडा बनाने की प्रविधि गृहविज्ञान में बताई जाए तो काफी विस्तारपूर्वक बताई जाएगी। विस्तारपूर्वक होने के कारण ही विज्ञानेतर विषयों की भाषा में कभी-कभी दोहराव भी आ जाता है। 'विज्ञान की भाषा' **दोहराव के दोष से मुक्त रहती है और संक्षिप्त तथा स्पष्ट होती है।**

विज्ञान की भाषा में अभिव्यक्ति के लिए आवश्यकतानुसार कुछ नये नियम तथा शब्द भी निर्मित होते हैं जैसे गणित के चिह्न या प्रतीक (+, –,) सूत्र अथवा पीछे दिए गए उदाहरण में H_2O (पानी), NaCl (नमक) $2NaHCo_3(aq)$ (खाने का सोडा) अथवा Na_2Co_3 (कपड़े धोने का सोडा) या फिर रसायन विज्ञान में अभिक्रियाओं में वाष्प बनने के लिए प्रयुक्त ($\uparrow$)चिह्न अथवा दोनों ओर की प्रक्रिया के लिए ($\rightleftharpoons$) चिह्न प्रयुक्त होता है। यह भाषा आम बोलचाल में प्रयोग नहीं की जाती। इसके विपरीत कुछ अपवादों को छोड़कर इतिहास, राजनीति, हिंदी, अंग्रेजी में आम बोलचाल के ही शब्द प्रायः प्रयोग में आते हैं।

38.2.4 वाक्य रचना की विशिष्टता

विज्ञान में अवधारणाएँ एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं। अतः विज्ञान की भाषा में वाक्यों की सुगुंफिता मिलती है अर्थात् वैज्ञानिक भाषा में वाक्य एक-दूसरे से जुड़े होते हैं तथा मिलकर किसी एक अवधारणा को स्पष्ट करते हैं। उदाहरण के लिए प्रतिजैविक (Antibiotic) को हम समझना चाहें तो कहेंगे सूक्ष्म जीवों द्वारा या अन्यथा उत्पन्न रासायनिक पदार्थ, जो हल्के विलयनों में जीवाणुओं (बैक्टीरिया) तथा अन्य सूक्ष्म जीवों का विनाश अथवा उनकी वृद्धि का दमन कर सकता है, जैसे पैनिसिलिन। इसी प्रकार रेडियोऐक्टिविता को समझाते हुए कहेंगे कि यह एक ऐसी घटना है जो उच्च परमाणु क्रमांक वाले कुछ तत्त्वों, जैसे– यूरेनियम, थोरियम अथवा उनके विखंडन से प्राप्त उत्पाद (जैसे–रेडियम) आदि के नाभिकीय विघटन के कारण घटित होती है। तत्त्वों के इस स्वतः विघटन के फलस्वरूप एल्फा, बीटा और गामा विकिरणों की प्राप्ति होती है।

उपर्युक्त उदाहरण देखें तो हमें ज्ञात होगा कि विज्ञान की विशिष्ट भाषा-शैली में वाक्य इस प्रकार निर्मित होते हैं कि उनमें आपस में कार्य-कारण संबंध श्रृंखला चलती रहती

टिप्पणी

है। जैसे, ऐसा तब होगा जब ऐसी-ऐसी स्थिति होगी अथवा अमुक घटना तब तक घटित नहीं हो सकती जब तक कि अमुक-अमुक पदार्थ आपस में नहीं मिले........आदि। इसी कारण इस भाषा में उदाहरणों की बहुलता भी मिलती है क्योंकि हर सिद्धांत को उदाहरणों द्वारा सिद्ध करना अथवा करवाना इस विषय की विशेषता है।

आइए, इस विशेषता को उदाहरण के साथ समझते हैं। आप जानते हैं कि गर्मी में हम सभी को पसीना आता है। पसीने के वाष्पन से हमारी त्वचा ठंडी हो जाती है। 'वाष्पन' वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई द्रव अपने क्वथनांक से भी कम ताप पर वाष्प में परिवर्तित हो जाता है। सामान्य ताप पर किसी पात्र से पानी या द्रव का वाष्पन एक सामान्य प्रक्रिया है तथा ताप अधिक होने पर यह प्रक्रिया अधिक तीव्र हो जाती है। द्रव वाष्पन के लिए आवश्यक ऊष्मा वातावरण से ही लेता है जिसके फलस्वरूप आस-पास का वातावरण ठंडा हो जाता है। यही कारण है कि गर्मियों में पसीने के वाष्पन से त्वचा ठंडी होती है, घड़े का पानी ठंडा होता है और गर्मियों में कुत्तों को जीभ बारह निकाल कर साँस लेने में विशेष आनंद की प्राप्ति होती है।

उक्त गद्यांश की भाषा का यदि विश्लेषण करें तो निम्नलिखित बिंदु स्पष्ट होते हैं—1. इसमें वाष्पन की प्रक्रिया को समझाया गया है। 2. इसमें वाष्पन, क्वथनांक, द्रव, ताप, ऊष्मा और वातावरण पारिभाषिक शब्द हैं। 3. वाष्पन की परिभाषा बताई गई है। 4. इसमें 'वाष्प' एक मूल शब्द है जिससे 'वाष्पन' बना है। 'वाष्प' मूल से कई अन्य शब्द भी बन सकते हैं—जैसे वाष्पीकरण, वाष्पायन, वाष्पदाब आदि। 5. उक्त उदाहरण में तथ्यात्मकता का गुण भी है—जैसे-जैसे ताप बढ़ता है, वाष्पन की प्रक्रिया भी तीव्र होती है। 6. इस प्रक्रिया में सार्वभौमिकता है क्योंकि जहाँ-जहाँ, जितनी गर्मी होगी वहाँ वाष्पन की प्रक्रिया उतनी तीव्र होगी। 7. कार्य-कारण संबंध है—यदि गर्मी है तो द्रव का वाष्पन होगा। तीव्र गर्मी में द्रव का वाष्पन भी तीव्र होगा। 8. उक्त गद्यांश में वाष्पन की प्रक्रिया जीवन में उपयोगी उदाहरण देकर स्पष्ट की गई है।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि वैज्ञानिक भाषा अन्य विषय क्षेत्रों की भाषा से भिन्न है तथा उसकी संक्षिप्तता, तथ्यात्मकता, सुगुंफित वाक्य रचना, कार्य-कारण का संबंध, उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण इसकी प्रमुख विशेषताएँ हैं। हमें चाहिए कि उन्हें पहचानें तथा उसी के अनुसार भाषा का प्रयोग करें तभी विज्ञान विषय को अधिक बेहतर तरीके से समझा जा सकता है।

पाठगत प्रश्न 38.1

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए—

1. विज्ञान की भाषा सामान्य भाषा से भिन्न है क्योंकि यह—
   (क) सूत्रबद्ध, संक्षिप्त, तथ्यपरक और सार्वभौमिक है।
   (ख) सूत्रबद्ध, विस्तृत, तार्किक और उलझी हुई है।
   (ग) क्लिष्ट, सूचनापरक, तार्किक और जटिल है।
   (घ) सरल, साहित्यिक, सुगुंफित और संकल्पनात्मक है।

2. विज्ञान की भाषा अधिक प्रभावित होती है–
   (क) अखबारों में प्रकाशित कविताओं और कहानियों से
   (ख) वैज्ञानिक खोजों और उपलब्धियों से
   (ग) रेडियो-दूरदर्शन में प्रयुक्त भाषा से
   (घ) जन-सामान्य में प्रचलित शब्दावली से

3. विज्ञान की भाषा
   (क) तार्किक होती है,
   (ख) पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली से युक्त होती है,
   (ग) तटस्थ और संक्षिप्त होती है,
   (घ) उपर्युक्त सभी विशेषताओं से युक्त होती है।

4. निम्नलिखित तथ्य 'सही' हैं अथवा 'गलत' बताइए–
   (क) विज्ञान की भाषा सार्वभौमिक होती है।
   (ख) विज्ञान की भाषा सूत्रबद्ध नहीं होती।
   (ग) विज्ञान के कुछ पारिभाषिक शब्द विज्ञान के अतिरिक्त अन्य क्षेत्रों में अन्य प्रयोजनों के लिए प्रयोग किए जाते हैं।
   (घ) किसी वैज्ञानिक प्रक्रिया को ठीक प्रकार से समझने के लिए तरह-तरह के उदाहरण देकर बताया जाता है।
   (ङ) जिस रासायनिक अवधारणा को सामान्य भाषा में पूरे पृष्ठ पर लिखकर बताया जाता है उसे वैज्ञानिक कुछ सूत्रों द्वारा, कुछ पंक्तियों में बता सकते हैं।
   (च) विज्ञान की भाषा दोहराव के दोष से मुक्त होती है।
   (छ) विज्ञान की भाषा में प्रतीकों और चिह्नों का प्रयोग सामान्यतः नहीं होता। इसमें प्रक्रियाओं और घटनाओं को विस्तारपूर्वक समझाया जाता है।
   (ज) विज्ञान की भाषा संक्षिप्त होती है इसलिए उसमें उदाहरणों द्वारा बात को नहीं समझाया जाता।

38.3 शिक्षा मंत्रालय द्वारा शब्दावली आयोग की स्थापना

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अप्रैल 1960 में राष्ट्रपति के आदेशानुसार शिक्षा मंत्रालय (मानव संसाधन विकास) ने अक्तूबर 1961 में वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली के स्थायी आयोग की स्थापना की। इस आयोग के अनेक कार्य निश्चित किए गए जिनसे वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली सशक्त और समर्थ हो सके और विभिन्न कार्य-क्षेत्रों में उनकी उपयोगिता, कार्य-क्षमता में वृद्धि हो।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक और शब्दों के प्रयोग और शब्दावली निर्माण संबंधी नियम निर्धारित किए जो इस प्रकार हैं–

1. अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को यथासंभव उनके प्रचलित अंग्रेजी रूपों में ही अपनाना चाहिए और हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं की प्रकृति के अनुसार ही उनका लिप्यंतरण करना चाहिए। अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली के अंतर्गत निम्नलिखित उदाहरण दिए जा सकते हैं–

   (क) तत्त्वों और यौगिकों के नाम जैसे हाइड्रोजन, कार्बन डाइ-आक्साइड आदि।

   (ख) तोल और माप की इकाइयाँ और भौतिक परिमाण की इकाइयाँ, जैसे-डाइन, कैलॉरी, ऐम्पियर आदि।

   (ग) ऐसे शब्द जो व्यक्तियों के नाम पर बनाए गए हैं, जैसे–मार्क्सवाद (कार्ल मार्क्स), बेल (बेल), बॉयकाट (कैप्टेन बॉयकाट), गिलोटिन (डॉ. गिलोटिन), गरीमैंडर (मि. गैरी), एम्पियर (मि. एम्पियर), फारेनहाइट तापक्रम (मि. फारेनहाइट) आदि।

   (घ) वनस्पतिविज्ञान, प्राणिविज्ञान, भूविज्ञान आदि की द्विपदी नामावली।

   (ङ) स्थिरांक जैसे π, ϕ आदि

   (च) ऐसे अन्य शब्द जिनका आमतौर पर सारे संसार में व्यवहार हो रहा है, सार्वभौमिक शब्द, जैसे–रेडियो, पैट्रोल, रेडार, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन, न्यूट्रॉन आदि।

   (छ) गणित और विज्ञान की अन्य शाखाओं के संख्यांक, प्रतीक, चिह्न और सूत्र, जैसे साइन, कोसाइन, टेन्जेन्ट, लॉग आदि (गणितीय संक्रियाओं से प्रयुक्त अक्षर रोमन या ग्रीक वर्णमाला के होने चाहिए)।

2. प्रतीक, रोमन लिपि में अंतर्राष्ट्रीय रूप में ही रखे जाएँगे परंतु संक्षिप्त रूप नागरी और मानक रूपों में भी, विशेषतः साधारण तौल और माप में लिखे जा सकते हैं, सेन्टीमीटर का प्रतीक जैसे cm. हिंदी में भी ऐसे ही प्रयुक्त होगा, परंतु नागरी संक्षिप्त रूप से. मी. हो सकता है। यह सिद्धांत बाल-साहित्य और लोकप्रिय पुस्तकों में अपनाया जाएगा, परंतु विज्ञान और प्रौद्योगिकी की मानक पुस्तकों में केवल अंतर्राष्ट्रीय प्रतीक, जैसे cm. ही प्रयुक्त करना चाहिए।

3. ऐसे देशी शब्द जो सामान्य प्रयोग के वैज्ञानिक शब्दों के स्थान पर हमारी भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं, जैसे–Telegram के लिए 'तार', atom के लिए 'परमाणु' आदि, ये सभी प्रचलित रूप में प्रयोग किए जाने चाहिए।

4. अंग्रेजी, पुर्तगाली, फ्रांसीसी आदि भाषाओं के ऐसे विदेशी शब्द जो भारतीय भाषाओं में प्रचलित हो गए हैं–जैसे टिकट, सिगनल, रेस्टरॉ, डीलक्स, इंजन, मशीन, लावा, मीटर, लीटर, प्रिज्म, टॉर्च आदि इसी रूप में अपनाए जाने चाहिए।

5. संकर शब्द – पारिभाषिक शब्दावली में संकर शब्द, guaranteed के लिए 'गारंटित', classics के लिए 'क्लासिकी', codifier के लिए 'कोडकार' आदि, के रूप सामान्य और प्राकृतिक भाषाशास्त्रीय प्रक्रिया के अनुसार बनाए गए हैं और

ऐसे शब्दरूपों को पारिभाषिक शब्दावली की आवश्यकताओं तथा सुबोधता, उपयोगिता और संक्षिप्तता का ध्यान रखते हुए व्यवहार में लाना चाहिए।

सारांश यह है कि वैज्ञानिक भाषा की चर्चा करते हुए हमें उपर्युक्त सभी सिद्धांतों का ध्यान रखना चाहिए।

टिप्पणी

विज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों, अवधारणाओं को प्रेषित करते हुए कभी-कभी भाषा में यह समस्या आती है कि अमुक वस्तु का लिंग क्या है? हिंदी में लिंग पूरी संरचना को प्रभावित करता है। आयोग के अनुसार अन्यथा कारण न होने पर अंतर्राष्ट्रीय शब्दों को पुल्लिंग रूप में ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए। ऐसी ही समस्या संकर शब्दों, संधि और समास, हलंत, पंचम वर्ण के प्रयोग, सर्वनाम, विशेषण, संज्ञा-भेद में भी आती है, परंतु आयोग ने कमोवेश सभी के हल हमें दिए हैं। हमें चाहिए कि हम उन्हें ध्यान में रखते हुए ही विज्ञान की भाषा का निर्धारण करें।

कुछ लोगों का मानना है कि अमुक भाषा विज्ञान के लिए उपयुक्त नहीं है। आधुनिक समय में कंप्यूटर की भाषा पर भी ये चर्चा आम होती है। डॉ. हरिमोहन ने गुणाकर मुले का उद्धरण देते हुए कहा है कि 'कंप्यूटर का विकास प्रमुख रूप से अंग्रेजी माध्यम में होने के कारण इसकी कार्य-प्रणाली को समझने में बहुतों को आज भी बड़ी कठिनाई होती है, लेकिन कंप्यूटर के लिए विश्व की सभी भाषाएँ समान महत्त्व की हैं। कंप्यूटर की अपनी 'एक और शून्य' की मशीनी भाषा है इसलिए कंप्यूटर के बुनियादी सिद्धांतों को किसी भी भाषा में समझा जा सकता है।''

विज्ञान की भाषा में एक गुण यह अवश्य होना चाहिए कि वह किसी भी विशेष प्रजाति के विभिन्न प्राणियों या पदार्थों के मध्य समानता स्थापित कर सके जिससे कोई भी वैज्ञानिक विभाजन को अधिक सरलता से समझ सकें। उदाहरणार्थ 'इथेन' (ethene), यह गैस अपने संपूर्ण परिवार के सदस्यों के साथ जुड़कर एक विशेष पहचान देती है और बताती है कि यह अमुक समूह की सदस्य है। जैसे–इन गैसों को ही लें, मिथेन (कार्बन–1), इथेन (कार्बन-2), प्रोपेन (कार्बन-3) आदि। अभिप्राय यह है कि इस भाषा में भी सामाजिकता की प्रवृत्ति हो तो अर्थ ग्रहण सरल हो जाता है।

भाषा की यादृच्छिकता यहाँ भी कायम रहती है, परंतु यहाँ एक शब्द के लिए एक ही अवधारणा होती है। उनमें अर्थालंकार या द्वितीय अर्थ नहीं होते। यहाँ शब्द भी ऐसे होते हैं जो तार्किक मापों से समृद्ध होते हैं तथा इनमें एक विशेष दृष्टिकोण निहित होता है। इस भाषा में सिद्धांत के साथ उदाहरणों की प्रमुख भूमिका रहती है। निष्कर्ष यह है कि विज्ञान की भाषा विशिष्ट गुणों से संपन्न होती है जिसका सावधानी पूर्वक प्रयोग करके हम आज के इस वैज्ञानिक जगत में कदम-से-कदम मिलाकर चल सकते हैं तथा अपनी और अपने समाज की उन्नति कर सकते हैं।

पाठगत प्रश्न 38.2

दिए गए विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

1. वैज्ञानिक जानकारी संप्रेषित करते समय विशेष रूप से किसका ध्यान रखना चाहिए–
   (क) पाठक अथवा श्रोता के बौद्धिक स्तर का,
   (ख) उपयुक्त शब्द चयन और शब्द निर्माण,
   (ग) स्पष्ट और सरल वाक्य संरचना का,
   (घ) उपर्युक्त सभी का
2. निम्नलिखित में से कौन-सा संकेत चिह्न अंतर्राष्ट्रीय नहीं है।
   (क) (ख) +
   (ग) π (घ) b
3. निम्नलिखित में से कौन-सा स्थिरांक है।
   (क) cm (ख) ऐम्पियर
   (ग) (घ) लॉग
4. आयोग के नियमानुसार निम्नलिखित में से किसे विदेशी रूप में ही अपना लिया जाए
   (क) टेलीग्राम (ख) पोस्ट
   (ग) कोडीफायर (घ) टिकट

क्रियाकलाप

नीचे दर्शाई गई तालिका को दिए गए स्थान में वृक्ष आरेख में परिवर्तित कर बनाइए।

गर्मी के फल	आम, तरबूजा, लीची
सर्दी के फल	संतरे, सेब, अमरूद

आपने पाठ–30 में (तालिका, आरेख निर्माण........आदि) में तालिका, आरेख पाईचार्ट, प्रवाह चार्ट, के बारे में अवश्य पढ़ा होगा। आपने मानचित्र, ग्राफ और दंड चित्र का निर्माण करना भी इस पाठ में सीखा है। आप यह जानते हैं कि इस प्रकार के प्रस्तुतीकरण के प्रयोग से सूचनाओं को अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है। विज्ञान में इन सभी का अपेक्षाकृत अधिक प्रयोग होता है।

38.4 तालिका और सारणी का प्रयोग

2x1=2
2x2=4
2x3=6
2x4=8
2x5=10

उपर्युक्त क्रियाकलाप में हमने छोटी-सी तालिका ली है जिसे शब्दों में आसानी से बयान किया जा सकता है परंतु यदि अनेक प्रकार की संबंधित सूचनाएँ एक स्थान पर रखनी हों तब भाषा में उन्हें बाँधना कठिन हो जाएगा और उलझाव भी पैदा करेगा। आप जानते हैं कि तालिका निर्माण द्वारा विस्तृत सूचनाओं को बोध के स्तर पर सुगम

बनाया जाता है। इसी प्रकार सारणी भी कई सूचनाओं को एक साथ सरलता से समझाने में सफल होती है। यदि सूचनाओं को वाक्यों में कहा जाए तो विस्तार अधिक हो जाता है। इतना ही नहीं, विज्ञान में कई बार भिन्न शब्दों का प्रयोग किए बिना बहुत सारी बातें सारणी के माध्यम से अंकों द्वारा ही कह दी जाती हैं। तुलनात्मक स्थिति स्पष्ट करने के लिए तालिका का उपयोग सर्वाधिक उपयुक्त माना जाता है।

टिप्पणी

सारणी का सबसे अच्छा और परिचित उदाहरण पहाड़े हैं। इसे अंग्रेजी में टेबिल कहा जाता है।

आपने रेलवे की समय सारणी-ज़रूर देखी होगी जिसमें स्टेशन पर रेल के आने और जाने के समय की सूचना मिलती है। इसके द्वारा एक नज़र में हम दिल्ली से चेन्नई जाने वाली सारी गाड़ियों के समय की जानकारी प्राप्त कर लेते हैं। अगर इन सब सूचनाओं को वाक्यों में अभिव्यक्त करें तो निम्नलिखित वांछित सूचनाएँ मुश्किल से ही जान पाएँगे।

(i) एक स्टेशन पर कौन-सी गाड़ियाँ आती हैं, कब आती हैं?

(ii) एक गाड़ी कहाँ-कहाँ रुकती है और किन्हीं दो स्टेशनों के बीच उसकी यात्रा का समय क्या है?

(iii) कितनी गाड़ियों में वातानुकूलित डिब्बे हैं?

(iv) हर स्टेशन पर गाड़ी कितनी देर रुकती है आदि।

सूत्र $\times^0F=\times-32 \quad 5/5\,^0C$

समय-सारणी उठाकर स्वयं ही देख लीजिए।

इसी प्रकार आइए, देखें कि कुछ भौतिक गणनाओं को हम गणितीय सूत्रों से किस प्रकार प्रकट करते हैं। हम जानते हैं कि शहर के तापमान को सेंटीग्रड और फॉरेनहाइट, दोनों पैमानों पर पढ़ा जा सकता है और एक-दूसरे में बदला जा सकता है। इसका सूत्र है–

$$\times^0C=\times 9/5+32\ ^0F \text{ जैसे } 10^0C=50^0F$$

तापमान जानने के लिए इस सूत्र के आधार पर बार-बार गणना करनी पड़ती है। सुविधा के लिए इसे बिना किसी भाषा का प्रयोग किए, सारणी के रूप में दिखाया जा रहा है।

^0C	^0F
0	32
5	41
10	50
15	59
20	68

या

^0C	^0F
50	10
60	15.5
70	21.1
80	27.4
90	32.2
100	37.7

गणितीय सूत्र वाली सारणियों को हम ग्राफ (आरेख) से भी दिखा सकते हैं। उदाहरण के लिए सेंटीग्रेड और फॉरेनहाइट का आरेख देखिए–इस आरेख से हम किसी भी एक तापमान को दूसरी पद्धति में आसानी से बदलकर समान मान मालूम कर सकते हैं।

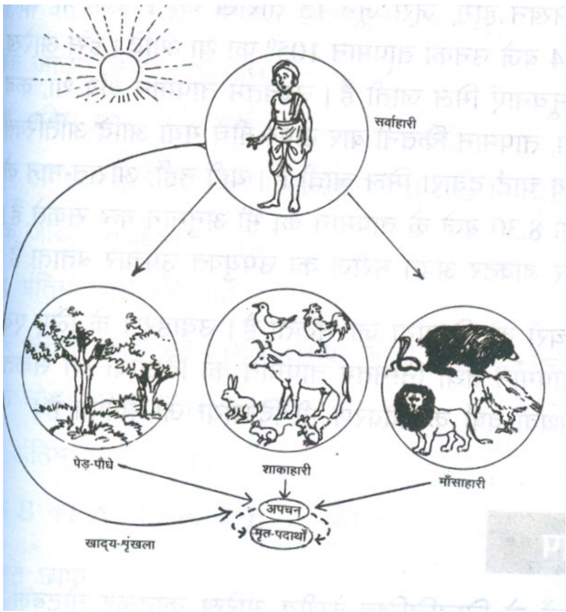

साथ में दी गई तस्वीर को देखिए। इस चित्र का सूत्र वाक्य होगा–सूर्य ऊर्जा का स्रोत है और सूर्य की ऊर्जा से ही पेड़-पौधे उगते हैं। एक लोकोक्ति है कि ''एक तस्वीर, हजार शब्दों के बराबर है'' इस तस्वीर में भी हम इसी बात को चरितार्थ होते देख सकते हैं। यह तस्वीर देखकर आप बताइए कि खाद्य-श्रृंखला कैसे बनती है, रेखाओं के तीर चिह्न क्या सूचनाएँ देते हैं? यह शब्द अपरिचित लगे तो उसकी तरफ आने वाली रेखाओं को देखिए। अब चारों जीवधारियों से रेखाएँ निकलकर शब्दों पर केंद्रित होती हैं–मृत पदार्थों और अपचन। तस्वीर के सहारे आप अपचन का तात्पर्य समझ सकते हैं? नहीं समझ पाए हों तो उससे निकलने वाले तीर को देखिए। आप जानते हैं कि पौधों को मिट्टी से खुराक मिलती है। अब अपचन का तात्पर्य समझाइए।

टिप्पणी

38.5 रेखीय चार्ट

दंड चार्ट का उपयोग आम तौर पर विभिन्न स्थितियों की तुलना के लिए किया जाता है, जैसे–शहरों की आबादी, अलग-अलग विषयों में छात्रों के औसत अंक, जन-गणना के अनुसार हर दस साल में आबादी आदि। लेकिन अगर हम पूरे वर्ष के दैनिक तापमान का चार्ट बनाना चाहें, तो दंडों से यह विवरण नहीं दिखा सकते। आइए, एक रोगी के एक दिन के शारीरिक तापमान का रेखीय चार्ट देखें जो हर घंटे में लिया गया है। चौबीस घंटे के तापमान को एक बिंदु से दिखाया जाता है, फिर हर बिंदु को इस प्रकार के रेखीय चार्ट में एक रेखा से जोड़ दिया जाता है।

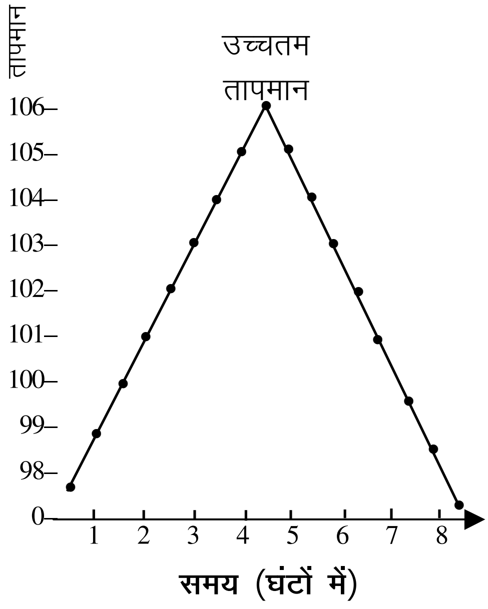

टिप्पणी

इस चार्ट से हमें क्या सूचनाएँ मिलती हैं? अगर इस जानकारी को वाक्यों में कहना हो तो हमें लगभग 30 वाक्य लिखने होंगे, जैसे जून 15 तारीख को 1 बजे श्री रतन सिंह का तापमान 99^0 फा, था। 4 बजे उनका तापमान 105^0 फा था आदि। इस आरेख में एक दृष्टि में सारी अपेक्षित सूचनाएँ मिल जाती हैं। उच्चतम तापमान कब था, कब से कब तक सामान्य तापमान था, तापमान कितनी बार ऊपर-नीचे गया आदि अतिरिक्त सूचनाएँ भी इस प्रकार के रेखीय चार्ट द्वारा मिल जाती हैं। यही नहीं, औसत-मान के आधार पर हम चाहें तो 1.30 या 8.30 बजे के तापमान का भी अनुमान कर सकते हैं। इसी प्रकार के चार्ट को देखकर डाक्टर अपने मरीज का उपयुक्त उपचार बताता है।

रेखीय चार्ट में एक से अधिक चरों को दिखाया जा सकता है। उदाहरण के लिए एक ही चार्ट में दिन के उच्चतम तापमान तथा निम्नतम तापमान को दिखाया जा सकता है। साथ ही हवा का दबाव अथवा वर्षा का विवरण भी दिखाया जा सकता है।

क्रियाकलाप

1. अखबारों या पत्र-पत्रिकाओं से निम्नलिखित रेखीय आरेख काटकर नोटबुक में चिपकाइए और उनका विश्लेषण लिखिए–
   (i) स्टॉक मार्केट की दरें
   (ii) तापमान और वर्षा
   (iii) जन-गणना के आधार पर भारत की आबादी (पुरुष, स्त्री और कुल योग)
   (iv) उपभोक्ता वस्तुओं की कीमतें
2. समाचार-पत्र से पिछले 10 दिनों के भारत के पाँच शहरों–दिल्ली, चेन्नई, मुंबई, कोलकाता और हैदराबाद के उच्चतम तापमान के आँकड़े लेकर रेखीय आरेख के रूप में दिखाइए।

38.6 प्रवाह चार्ट

अब हम आपको प्रवाह चार्ट की संकल्पना से परिचित कराना चाहेंगे। इसे अंग्रेजी में फ्लो चार्ट कहते हैं। यह एक आरेख प्रस्तुति है जिसके द्वारा प्रक्रियाओं को क्रमशः दर्शाया जाता है। आजकल यह प्रस्तुति कंप्यूटर के क्षेत्र में समस्या का समाधान करने के लिए प्रोग्रामिंग करने में की जाती है। इसे बनाने के लिए आवश्यक सूचनाओं को तर्क संगत तरीके से क्रमबद्ध किया जाता है। इनमें प्रक्रिया का प्रवाह सामान्यतः बाएँ से दाएँ या शीर्ष से तल की ओर होता है। आइए, एक उदाहरण देखें। यह छात्रों के अंकों का औसत निकालने का कार्यक्रम है–

इस प्रकार के प्रवाह चार्ट का उपयोग कंप्यूटर के कार्य करने के निर्देश के तौर पर होता है। चौखाने में दिए निर्देश का पालन कर कंप्यूटर अगली संक्रिया करता है। हीरे का आकार विकल्प देता है। इसी कार्यक्रम को हम सामान्य भाषा में भी व्यक्त कर सकते हैं।

जैसे

पहला कार्ड लो, छात्र संख्या जोड़ो (A=0+1=1)

अंक जोड़ो (B=0+68=68)

यह अंतिम कार्ड है ? नहीं ✕

फिर अगला कार्ड लो। छात्र संख्या जोड़ो (A=1+1=2)

अंक जोड़ो (B=68+54=122)

यह अंतिम कार्ड है? नहीं

फिर अगला कार्ड लो। छात्र संख्या जोड़ो। (A=2+1=3)

अंक जोड़ो (B=122+67=189)

यह अंतिम कार्ड है? हाँ

अंक B को A से भाग दें B/A औसत ....( )

औसत छापो।

कार्यक्रम समाप्त करो।

यह कार्यक्रम केवल तीन छात्रों के लिए था। अगर 100 छात्र-छात्राओं के अंकों का औसत निकालना हो तो हमें X की तरह के 400 वाक्य लिखने पड़ते। 1000 की औसत के लिए 4000 वाक्य। यह प्रवाह चार्ट ऐसी स्थितियों में संक्षेप में सारी सूचनाएँ देता है।

आप कह सकते हैं कि बोलचाल की भाषा में हम भी संक्षिप्त रूप अपना सकते हैं–

एक-एक कार्ड लेते चलो, जब तक सारे कार्ड समाप्त न हो जाएँ। लेकिन कंप्यूटर ऐसे निर्देश नहीं ले सकता। उसे हर बार अगली संक्रिया का आदेश मिलना चाहिए क्योंकि वह मनुष्यों की तरह सोच नहीं सकता। इसलिए प्रवाह चार्ट प्रारंभ से समाप्ति तक, हर एक सोपान का स्पष्ट निर्देश उपस्थित करता है। इतना ही नहीं, बहुत जटिल संक्रियाओं को भी हम प्रवाह चार्ट में बता सकते हैं जो भाषा में सुबोध नहीं होते।

यदि हम विज्ञान की भाषा का प्रयोग करेंगे तो अनेक दुविधाओं से मुक्त होकर, अधिक बेहतर तरीके से अपने विचार संप्रेषित कर पाएँगे।

टिप्पणी

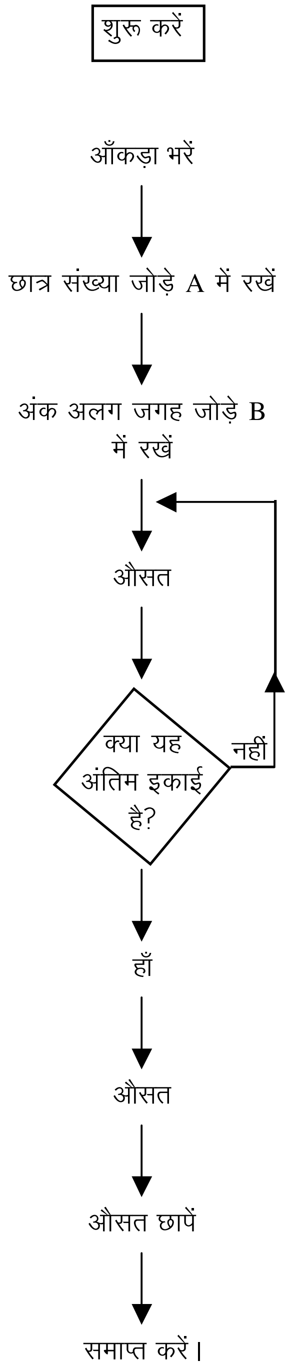

क्रियाकलाप

अब आप एक प्रवाह चार्ट की योजना बनाएँ, जो लंबी नामों की सूची में से स्त्रियों और पुरुषों की संख्या बताएँ। पहले संक्रियाओं को वाक्य में लिख लें, हर बार कंप्यूटर को

टिप्पणी

क्या करना है, फिर उसे प्रवाह चार्ट के रूप में बदलें। संकेतों के बारे में फिर से जानकारी दी जा रही है।

प्रारंभ या अंत की संक्रिया

संक्रिया (कोई काम को कंप्यूटर को करना है)

विकल्प या सोपान (हाँ/नहीं के उत्तर के रूप में)

और आगे, अगर आपने कुल आबादी (z) को स्त्रियों की संख्या (x) तथा पुरुषों की संख्या (y) के रूप में मालूम कर लिया है तो प्रवाह चार्ट में x तथा y के अनुपात निकालने के सोपान जोड़िए।

38.7 आपने क्या सीखा

1. भाषा और ज्ञान परस्पर अन्योन्याश्रित हैं। भाषा के बिना ज्ञान प्राप्ति तथा ज्ञान के बिना भाषा का सही प्रयोग असंभव है।

सामान्य भाषा	विज्ञान की भाषा
1. सृजनशील पुनरुक्ति युक्त, संदिग्ध और कल्पना पर आधारित, व्यक्तिनिष्ठ अभिव्यक्ति	1. प्रमाणसिद्ध, संक्षिप्त, तर्क पर आधारित, संदिग्धता रहित अभिव्यक्ति, वस्तुनिष्ठ अभिव्यक्ति
2. पर्यायवाची शब्द, श्लेष-उपमा आदि अलंकारों से युक्त, विस्तृत कथन	2. पारिभाषिक शब्द से युक्त, सूत्रबद्ध भाषा
3. बोलचाल पर आधारित, तकिया–कलाम का प्रयोग, बात से बात निकलना, वक्ता या पाठक का ध्यान आकृष्ट करने की उक्तियाँ।	3. तालिका, आरेख (प्रवाह, रेखीय...) आदि संप्रेषण के शक्तिशाली माध्यम

2. अन्य विषय-क्षेत्रों की भाषा, विज्ञान की भाषा से पूर्णतया भिन्न है। विज्ञान की भाषा, पारिभाषिक तथा तकनीकी शब्दावली से युक्त होती है। तार्किकता, संक्षिप्तता, तथ्यात्मकता, दोहराव से मुक्त होना, उदाहरणों से पुष्ट होना, इसकी विशेषता है।
3. विज्ञान की भाषा साहित्यिक और सामान्य भाषा से भिन्न होती है। इसमें सार्वभौमिकता और कथनात्मकता का गुण प्रमुख रूप से होता है।
4. वाक्य-संरचना सरल, स्पष्ट और मुख्यतः कार्य-कारण संबंध पर आधारित होती है।
5. इसमें सूत्रों, संकेतों और प्रतीक चिह्नों का आवश्यकतानुसार भरपूर प्रयोग होता है जिससे स्पष्टता और संक्षिप्तता आ जाती है।
6. विज्ञान में संभावनाओं, अंधविश्वासों और रूढ़ियों का कोई स्थान नहीं होता। अतः विज्ञान की भाषा में 'माना जाए तो...', 'हो सकता है..', 'यदि संभव हो...' जैसे वाक्यांशों का प्रयोग भी नहीं होता।

7. पारिभाषिक शब्दावली, संकल्पनात्मक शब्दावली के प्रयोग से विज्ञान की भाषा स्पष्ट और संक्षिप्त बनती है।

8. विज्ञान के क्षेत्र में निश्चित अवधारणा के लिए सुनिश्चित शब्दावली प्रयुक्त होती है जिससे सूक्ष्मातिसूक्ष्म तथ्यों को अलग किया जाता है। जैसे हृदय से रक्त शरीर के विभिन्न अंगों तक पहुँचाने वाली नलिका 'धमनी' कहलाती है और पूरे शरीर से हृदय तक पहुँचाने वाली नलिका 'शिरा' कहलाती है।

9. कुछ ऐसे मूल शब्द भी हैं, जो विज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में विज्ञानेतर विषयों में संदर्भ के अनुसार अलग-अलग अर्थ देते हैं जैसे 'घन' शब्द हिंदी भाषा के सामान्य प्रयोग में बादल कहलाता है, परंतु गणित के क्षेत्र में जाकर यह n^3 (किसी संख्या पर तीन की घात) हो जाता है। किसी वस्तु की लंबाई-चौड़ाई और ऊँचाई का गुणन 'घन' कहलाता है।

10. विज्ञान में शब्दों का चयन सोच-समझकर किया जाता है जिससे उससे जुड़े अन्य संबंधित शब्द भी निर्मित किए जा सकें।

11. विज्ञान विषयों में तालिका, सारणी, आरेख, प्रवाह चार्ट या रेखाचित्र का भरपूर प्रयोग किया जा सकता है इससे सूचनाओं को स्पष्ट रूप में क्रमानुसार समझा जा सकता है।

टिप्पणी

38.8 योग्यता विस्तार

1. विज्ञान संबंधी अधिकाधिक पत्रिकाओं या पुस्तकों का अध्ययन कीजिए अथवा दूरदर्शन आदि पर कार्यक्रम देखिए। यह सब देखते अथवा पढ़ते हुए उनकी भाषा पर गौर कीजिए तथा बाद में उपलब्ध विद्वानों के मध्य उनकी भाषा पर चर्चा कीजिए।

2. यदि संभव हो तो एक ही कार्यक्रम को कम-से-कम दो भाषाओं में देख अथवा सुनकर उनकी अर्थ-ग्राह्यता के अंतर को लिपिबद्ध कीजिए।

38.9 पाठांत प्रश्न

1. विज्ञान तथा भाषा के अंतर्संबंध को रेखांकित कीजिए।
2. विज्ञान की भाषा अन्य विषय-क्षेत्रों की भाषा से किस प्रकार भिन्न है?
3. विज्ञान की भाषा की कोई चार विशेषताएँ उदाहरण सहित बताइए।
4. वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना कब हुई? उसके प्रमुख सिद्धांत क्या हैं?
5. वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग का विज्ञान की शब्दावली निर्माण में क्या योगदान है?
6. निम्नलिखित तालिका को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए–

टिप्पणी

पशुओं के सामान्य रोग

पालतू जानवरों में अनेक प्रकार के रोगजनकों के संक्रमण से विभिन्न रोग हो जाया करते हैं, ये रोगजनक बैक्टीरिया, वाइरस, कवक तथा प्रोटोजोआ द्वारा हो सकते हैं।

(i) मवेशियों (गायों) में

रोगजनक की श्रेणी	**रोग**	**लक्षण**
बैक्टीरिया	ऐंथ्रैक्स	शरीर पर सूजन, दूध के उत्पादन में कमी, सूखी खाँसी, फेफड़ों में असर।
वाइरस	पैर और भूख पका रोग, रिंडरपेस्ट	अत्यधिक लार का निकलना, लंगड़ाना तथा ज्वर, खूनी धब्बे तथा उच्च ज्वर, छेरा।
कवक	रिंगवर्म	सिर और गर्दन पर गोल-गोल खुरंड।
प्रोटोज़ोआ	ट्रिपैनोसोम-रोग	रुक-रुक कर ज्वर आना और मृत्यु हो जाना।

(i) प्रोटोजोआ वर्ग के जीवों से कौन-सा रोग होता है?

(ii) वाइरस द्वारा रोग होने के प्रमुख लक्षण क्या हैं?

(iii) सूखी खाँसी और फेफड़ों पर प्रभाव किस श्रेणी के संक्रमण द्वारा होता है।

(iv) ट्रिपैनोसोम रोग के क्या लक्षण हैं?

(v) ऐंथ्रैक्स रोग क्यों होता है? उसके लक्षण बताइए।

7. निम्नलिखित सूचनाओं को तालिकाबद्ध कीजिए?

खनिज दो प्रकार के होते हैं– धातुक और अधातुक। धातुक खनिज हैं– लोहा, ताँबा, सीसा, एल्युमीनियम, सोना तथा यूरेनियम। अधातुक खनिज हैं– ऐस्बेस्टॉस, फॉस्फेट तथा गंधक। इन खनिजों से प्राप्त प्रमुख उत्पाद तथा प्रयोग निम्नलिखित हैं–

लोहा – इस्पात, परिवहन, मशीनरी निर्माण आदि
ताँबा – बिजली का सामान, मिश्र धातु निर्माण
सीसा – बैटरी, रंग आदि
एल्युमीनियम – विमान, इमारती सामग्री, बिजली के तार आदि।
सोना – जेवर, दंत उपचार, मुद्रा आदि
रेडियम – चिकित्सा तथा औद्योगिक उपयोग

यूरेनियम	–	नाभिकीय अस्त्र, विद्युत आदि
ऐस्बेस्टॉस	–	रोधन, छत डालना, मृत्तिका शिल्प आदि
फॉस्फेट	–	उर्वरक, रसायन आदि
गंधक	–	उर्वरक, अम्ल, रसायन आदि

8. 'धन' शब्द को विभिन्न विषय क्षेत्रों और संदर्भों में प्रयोग के आधार पर वर्गीकृत कीजिए।

9. निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और इसकी भाषा की कोई पाँच वैज्ञानिक विशेषताओं का चुनाव कीजिए–

   (क) फोटोग्राफी में प्रकाश रासायनिक अभिक्रिया का उपयोग होता है। फोटोग्राफिक फिल्म में यौगिक सिल्वर ब्रोमाइड (AgBr) होता है। जब प्रकाश इस फिल्म पर पड़ता है तो यह यौगिक रासायनिक रूप से प्रभावित हो जाता है। फिल्म को डेवेलप करने पर फोटोग्राफी प्रतिबिम्ब प्राप्त होता है।

   (ख) किसी परमाणु का द्रव्यमान इसमें विद्यमान प्रोटॉनों तथा न्यूट्रोनों के संयुक्त द्रव्यमान के बराबर होता है। मर्करी के लिए परमाणु द्रव्यमान 80+120=200 है। परमाणु द्रव्यमान इकाई है। किसी तत्त्व की परमाणु संख्या परमाणु में विद्यमान केवल प्रोटॉनों की संख्या के बराबर होती है। मर्करी (Hg) की परमाणु संख्या 80 है। परमाणु संख्या एक पूर्ण संख्या है।

10. विज्ञान की भाषा में प्रयुक्त निम्नलिखित मूलशब्दों से बनने वाले तीन-तीन नए शब्द उदाहरण के अनुसार निर्मित कीजिए–

    अनुपात – समानुपात, आनुपातिक, व्युत्क्रमानुपात, यथानुपात
    क्रिया –
    तल –
    आकर्षण
    बिम्ब –
    विद्युत –
    अंतर –
    युग्म –
    रक्त –

11. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

    सौर चूल्हे सूर्य की गर्मी का प्रयोग करते हैं। इसमें वस्तु को एक काले रंगे हुए, पारदर्शी ढक्कन वाले उत्तम प्रकार के ऊष्मारोधी बक्से में कैद कर लिया जाता

टिप्पणी

है। सूर्य की रोशनी में रखने पर इसके भीतर का तापमान लगभग 140 सेल्सियस तक पहुँच जाता है, जो चूल्हे के अंदर रखे बर्तनों में रखा खाना पकाने के लिए पर्याप्त होता है। सौर चूल्हों में लैंस या परावर्तक लगे होते हैं जिससे सौर किरणें संकेंद्रित हो सकें और ऊँचा तापमान दे सकें। सौर चूल्हे के निम्नलिखित प्रमुख लाभ हैं–

- ईंधन तथा धन की बचत होती है।
- खाना अधिक देर तक गरम रहता है।
- प्रदूषण से मुक्त है।

(i) सौर चूल्हे में खाना पकाने के लिए अधिकतम तापमान कितना रखा जा सकता है?

(ii) निम्नलिखित शब्दों का अर्थ स्पष्ट कीजिए –

पारदर्शी ढक्कन, ऊष्मारोधी बक्से, सौर विकिरण

(iii) सौर चूल्हे में लैंस अथवा परावर्तक क्यों लगाए जाते हैं?

(iv) सौर चूल्हे में खाना पकाने के कोई दो लाभ बताइए।

(v) सौर चूल्हे में खाना देर तक गरम क्यों रहता है?

38.11 उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

38.1	1. (क)	2. (ख)	3. (घ)	
	4. (क) सही	(ख) गलत	(ग) सही	(घ) सही
	(ङ) सही	(च) सही	(छ) गलत	(ज) गलत
38.2	1. (घ)	2. (घ)	3. (ग)	4. (घ)

BOARD OF SCHOOL EDUCATION HUBLI

BSEH

For more information please visit QR code

www.bseh.ac.in

contact@bseh.ac.in